

इस नम्बर के खास लेख हम्या क्रिया

यहा भटक १

—डान्टर भगवानदास

चीन हा नृमि सुधार ज्ञान्दालन

---भं। हरियनलभ परीम्य

एजवंट त्याहन्मटाइन

---महान्मा भगवानदीन

मेरा सा काली का रूप

—श्री सदनगोपाल

तम्बई का एक दुख भग नजाग

—पंडिन मृन्द्रकाल

प्रमा वियोग और वर्षा

---विश्वस्भरनाथ पाँड

इसके अलावा

مستنون القون ولحوارد م

أيلموت أحسماس

ساسمها دوا الهكواني فالمن

ميوبي مأن بالي الأرواب

حسنموس مدين كونياس

بمنتم باليف ديم نوا نطاره

سينزب سانوالا

يريم وبوالم أدر ورسا

ستوينهم للها المحسد

44. _ u'

ंस विदेस के मसलों पर हमारी राथ में ज़करी सम्पादकी नोट

دیسی بایس کے معلوم ہو ہماری رائے میں باروری سمادھی تواقد

ने कलचर सांसाइटी, इलाहाबाद (अं) अं।। 'अं।



The Company of the State of States

NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

Editorial Board

Dr. Tara (hand M.A., D. Phil. (Oxon) Mahatma Bhagwan Din Dr. Syed Mahmud, M.A., Ph.D., Bar-at-Law Pandit Sundarlat Bishambhar Nath Pande

Editor-in-Charge

Bishambhar Nath Pande

Asst. Editors

Suresh Rambhai Mujib Rizvi

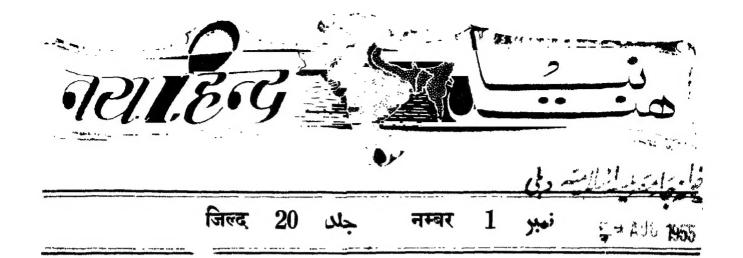
Annual Subscription

Inland Rs. 6/-Foreign Rs. 10/-Single Copy As. /10/- only

Can be had from

Manager, NAYA HIND

145, MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3.



जुलाई 1955 डाँग ५२

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी अंद्यू प्राची अंद्यू अंद

न् राष्ट्री 1955 جرلائی

घ्स से		सफ़ा	ں سے منحم	کیا کس
हराँ भटके ? —डाक्टर भगवानदास	-m2	1	کہاں بھٹکے ؟ ۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔	.1
वीन का भूमि सुधार द्यान्दोलन —श्री हरिवल्लभ परीख	•	6	چین کا یهومی سدهار آندولن -شری عری ولبه پریکه	.2
र्तावर्ट आइन्सटाइन महात्मा भगवानदीन		16	ایلبرت آئنس ئاین مهاتما بهکوان دین	.3
रेरी माँ बोली का रूप श्री मदन गोपाल		21	میری ماں ہولی کا روپ 	.4
रम्बई का एक दुखभरा नज़ारा पंडित सुन्दरलाल		27	مبئی کا ایک دکه بهرا انظاره مبئی کا ایک دکه بهرا انظاره سیندت سندر لال	.5
उच्च जीवन —लेखक—स्व० डा० हरिप्रसाद देसाई	•••	-	اُرچ جهرن	.6
—श्रद्धवादक—श्री गुनवंत मेहता सेम, वियोग श्रीर वर्षा	•••	32	سلیکهکسسورگیم داکر فری پرساد دیسائی سانرادکسشوی گنونت مهتا	
—विश्वन्भरनाथ पांडे	•••	37	پریم ویوگ اور ورشا مسوشومبهر نانه یاندے	.7
सारी राय— 45 एटमी जंग के ख़िलाफ़ साइन्सदानों की अपील—			ھماری رائے۔۔ ایٹمی جنگ کے خلاف سائنس دانوں کی	,8
गोश्या का सत्याबह और उससे सब जी. का टीका—कानपुर के मजदूरों —सुन्दरलाल.	•	اپیل ۔ گووا کا ستیاگرہ اور اُس سے سبق۔ بی. سی. جی. کا ئیکا۔ کانبوور کے مزدوروں کی هوتال ۔ سندر لال .		

THE CONTROL OF THE CO

डाक्टर भगवान दास

हम दो छोटी और सुन्दर कहानियाँ नीचे देते हैं, एक हिन्दू धर्म की किताबों से और दूसरी इसलामी किताबों से. हैं अंधे एक ऐसी जगह पहुंचे जहाँ एक हाथी खड़ा हुआ था. वह हाथी के रूप के बारे में एक दूसरे से मगड़ने लगे. एकं ने हाथी की दुम को टटोलकर कहा कि हाथी एक मांद की तरह है. दूसरे ने हाथी की सुँद को टटोलकर कहा कि हाथी एक बढ़े अजगर की तरह है. तीसरे का हाथ हाथी के कान पर पड़ा. वह कहने लगा कि हाथी एक बड़े झाज की तरह है. चौथे ने हाथी के पेट को टटोलकर कहा कि हाथी एक बड़े ढोल की तरह है. पाँचवें ने हाथी की टांग को थपथपा कर देखा और कहा कि हाथी एक मोटे खंभे की तरह है. इंट ने हाथी के एक दाँत को झूकर कहा कि हाथी एक बड़े सोटे की तरह है. सबको अपनी अपनी बात का पक्का विश्वास था. हर एक दूसरे की बात को रालत मान रहा था. हठ और कगड़ा बढ़ने लगा. इतने में एक सातवाँ आदमी उधर से निकला. उसके आँखें थीं. वह देख श्रीर समम सकता था. उसने उनमें से हरेक को सममाया कि हाथी उन सबके अलग अलग खयालों का मेल है. उसने उन्हें यह भी बतलाया कि हाथी कोई बेजान मिट्टी या लकड़ी की चीज नहीं है. वह एक प्राणी है जो अपने इन सब श्रंगों से काम लेता है.

इसी तरह हमारी सब श्रलग श्रलग माही साइंसें इस माहो (भौतिक) दुनिया के किसी एक पहलू से वास्ता रखती हैं. दुनिया का हरम जहब श्रात्मा या परमात्मा की किसी एक सिफत या एक पहलू पर जोर देता है. लेकिन वह चीज जिसे हम तसन्दुफ, वेदान्त श्रीर जिन्दगी की श्रसली फिलोसोकी कहते हैं श्रीर जिसे मजहबी साइन्स या साइन्सी मंजहब भी कहा जा सकता है वह इन सब धर्मों के श्रलग श्रलग पहलुओं को मिलाकर उनका संगम या समन्वय करती है.

दूसरी कहानी यह है—चार मुसाफ़िर, एक कसी, एक अरब, एक ईरानी श्रीर एक तुर्क जिन्दगी की सड़क पर साथ साथ चले जा रहे थे. रेतीली, पथरीली, कंटीली, कहीं बरफ़ की तरह ठंडी श्रीर कहीं जलती हुई राहों पर चलते चलतें उन चांरों को भूख श्रीर प्यास सताने लगी. उन्हें किसी ऐसे कानें की ज़रूरत थी जिससे उन्हें शांति श्रीर

قاكر بهكران داس

هم در چبوئی اور سندر کهانیاں نیجے دیتے هیں' ایک هندو دهرم کی کتابیل سے اور دیسری اسلامی کتابیل سے . چهه اندهے ایک ایسی جگه یہونچے جہاں ایک ها ہی کوڑا ہوا تھا ۔ وہ ھاتھی کے روپ کے بارے میں ایک دوسرے سے جھکڑنے لکے ایک نے ھاتھی کی دم کو تٹول کر کہا که ھاتھی ایک جهارو کی طرح هے . دوسرے نے هاتھی کی سولو کو تبرل کر کہا که هاتهی ایک بوے اجار کی طرح هے . تیسرے کا ھاتھ ماتھی کے کان پر ہڑا . وہ کہنے لکا کہ ھاتھی ایک بڑے چھاج کی طارح ہے . چھوتھے نے ھاتھی کے پیٹ کو ٹٹول کر کہا که مانھی ایک بڑے دعول کی طرح ہے . پانچویں نے ھاتھی کی تانگ کر تھپ تھھا کر دیکھا اُور کھا که ھاتھی ایک موثے کھمنے کی طرح ہے چہتے نے ھاتھی کے ایک دانت کو چھو کر کہا کہ ھاتھی ایک برے سوئے طرح ھے . سب کو اونی اپنی بات کا یکا وشواس تھا . ہو ایک دوسرے کی بات کو غلط ماں رها تها . هت اور جهكرا برها الله الناء مين ايك ساتوان أَدمى أدعر سے نكلاً . أُسكم آنكهيں تهيں وعديك اور سمجة سكتا قبا . اُسنے اُن میں سے هر ایک کو سمجمایا کہ ماتھی اُن سب کے الگ انگ خیالرں کا میل ہے اُسنے اُنہیں یہ بھی بتالیا که هاتهی کوئی بینجان متی یا لکتی کی چیز نهیں هے . ون ایک براني هے جو اپنے اِن سب انگهن سے کام لیتا هے .

اسی طوح هماری سب الگ الگ مادی سائنسیں اِس مادی سائنسیں اِس مادی (بہونک) دنیا کے کسی ایک پہلو سے واسطه رکھتی هیں . دنیا کا هر مزهب آنما یا پرمانما کی کسی ایک صفت یا ایک پہلو پر زور دیتا هے . لیکن وہ چیز جسے هم تصوف ویدانت اور رندگی کی اصلی فلاسنی کہتے هیں اور جسے مذهبی سائنس یا سائنسی مذهب بھی کہا جا سکتا هے وہ اُن سب دهرمیں کے انگ الگ پہلوؤں کو ملاکر اُنکا سنگم یا سمنوے کرنی هے .

دوسری کہائی یہ هے چار مسائو' ایک رومی' ایک عرب' ایک ایرائی اور ایک ترک زندگی کی سرّک پر ساتھ ساتھ چلے جا رہے تھے . ریتیلی' پتہریلی' کٹیلی' کہیں ہوف کی طرح تھنڈی اور کہیں جلتی ہوئی راهوں پر چلتے چلتے ان چاروں کو بھوک اور پیاس ستانے لئی ۔ انہیں کسی ایسے کہانے کی موروت تھی جس سے انہیں شانٹی اور ایسے کہانے کی موروت تھی جس سے انہیں شانٹی اور

شکتی ملے، وہ ایک دوسرے کی ہولی نہیں سمجھتے تھے. آنکلیوں سے اِشارہ کو کے اُٹھوں نے اپنے چاورں کے پلس کے سب دام درم جمع کثے. اس لئے که اِس سے کتھے کھانا خریدیں ، پر سوال ہوا که کیا چیز خریدی جائے ، عرب نے کہا کہ عنب کریدا جائے ، ترک لے غوا کر کہا عظم خریدو . أيرالي نے كها الكو خريدنا چلعلى . روسي نے كوك كر كها أسطافيل لله جانهن ولا جهكرني لك . أذكهين الل هو گئیں ، متهیاں بیعینے لکیں ، هاتهایائی کی نوبت آگئی ، . إنني مين أيك يهيري للائر يهل بيجني والاياس سے نكلا . إس طرح کے پھاری لگانے والے عام طور پر بہت سی زبانوں کے خاص خاص شبدوں سے والف ہوتے ھیں . اُنھیں طرح طرح کے گلعکوں سے واسطه يوتا ہے ، أن چاروں كے بديم ميں جاكر اس نے اپنا ٹوکرا جس میں جیون کا میوہ بہرا ہوا تھا اُن کے سامنے کھول کو رکھ دیا ، متھیاں تعلیٰ یو گئیں ، آنکھیں درماکئیں ، آواز میں متهاس آگئی ' چہرے مسکرانے لکے ، چاروں کو اس توکرے کے اندر اپنی دل چلعی چیز دکھائی دے کئی . عربی عنب ' تركى عَظم' ايراني انگرز' روسي اسطافهل' بهاري داكه، سلسکرت دراکش اور انگریوی گریپ سب کے آیک ھی سفنی هين سب أيك هي ميته يهل كو ظاهر كرتے هيں .

هم میں سے مور ایک نے دوسروں کو باهر رکھنے کے لئے اپنے چاروں طرف ایک دائرہ کھینچ لیا ہے . همارے اپنے دائرے سے باهر سب همیں ناستک' کا فر' ملینچھ اور غیر دکھائی دیتے هیں ۔ پریم لے گیاں کے ساتھ مل کر ایک بڑا دائرہ کھینچا جس کے اندر سب چھوئے دائرے سما گئے ۔

صونی کہتا ہے کہ:--

نقط تفاوت ہے نام ھی کا' دراصل سب ایک ھیں' یارو ا جو آب صانی کہ موج میں ھے' ﴿ اُسی کا جلوہ حباب میں ھے! اُسی کا جلوہ حباب میں ہے!

یعنی کیول ناموں کا فرق ہے ۔ اے یارو! حقیقت میں سب ایک ہیں جو صاف پانی دریا کی اور میں چمک رہا ہے اُسی کی چمک بدلے کے اندر بھی ہے ۔

پیارے بھائیو اور بہنو ا کہاں کہاں سے کوئی دور سے اور کوئی نودیک سے آکو هم یہاں زندگی کی راہ پر مل گئے هیں . هم سب بھرکے اور پیاسے هیں . سب کو آس کھانے اور اُس پانی کی ضرورت ہے جو همیں سنچی زندگی دےسکے . وہ کھانا اور پانی آئیں آپریم ہے . یہ پریم آدمی کے اپنے اندر آبلتا ہے پر اُس سے آبلتا ہے جب آدمی اُس بات کو متحسوس کرنے لئے که سے آبلتا ہے جب آدمی اُس بات کو متحسوس کرنے لئے که ایک هی پرماتیا سب جکہ اور گیت گیٹ کے اندر مهجود ہے . پر هم میں سے بہت سہی کے اندر ابھی سنچی پیاس کی کی

राकि मिले. वह एक दूसरे की बोली नहीं सममते थे. उंगलियों से इशारा करके उन्होंने अपने चारों के पास के सब दान विरम जमा किए, इसलिए कि उससे क्रब खाना खरीदें. पर सवाल हुआ कि क्या चीज खरीदी जाय. अरब ने कहा कि 'अनव' खरीदा जाय. तुर्क ने गुर्यकर कहा 'उजम' करीदो. ईरानी ने कहा 'बंगूर' खरीदना चाहिए. रूमी ने करक कर कहा 'अस्ताकील' लिये जायें. वे मगदने लगे. आँखें लाल हो गई. मुट्टियाँ मिचने लगीं. हाथापाई की नीवत आ गई. इतने में एक फेरी लगाकर फल बेचने वाला पास से निकला. इस तरह के फेरी लगाने वाले आम तौर पर बहुत सी जबानों के खास खास शब्दों से वाक्रिफ होते हैं. उन्हें तरह तरह के गाहकों से बास्ता पड़ता है. उन चारों के बीच में जाकर इसने अपना टोकरा जिसमें जीवन का मेवा भरा हुआ था उनके सामने खोलकर रख दिया. सुट्टियाँ ढीली पड़ गई'. श्राँखें नरमा गई'. श्रावाज में मिठास आ गई, चेहरे मुस्कुराने लगे. चारों को उस टोकरे के अंदर अपनी दिल चाही चीज दिखाई दे गई. अरबी अनब, तुर्की चजम, ईरानी श्रंगूर, रूमी धसताफील, पहलवी दाख, संस्कृत द्राक्ष और श्रंप्रेजी पेप सबके एक ही मानी हैं, सब एक ही मीठे फल को जाहिर करते हैं.

हम में से हरेक ने दूसरों को बाहर रखने के लिए अपने चारों तरफ एक दायरा खींच लिया है. हमारे अपने दायरे से बाहर सब हमें नास्तिक, काफिर, मलेच्छ और गैर दिखाई देते हैं. प्रेम ने ज्ञान के साथ मिलकर एक बड़ा दायरा खींचा जिसके अंदर सब छोटे दायरे समा गए. सूकी कहता है कि:—

> फ़क़त तफ़ाबत है नाम ही का, दर अस्ल सब एक ही हैं, यारो ! जो आबे साफ़ी कि मौज में है, उसी का जलवा हवाब में है!

यानी केवल नामों का फ्रक है. ऐ यारो ! हकीक़त में सब एक हैं. जो साफ पानी दिरया की लहर में चमक रहा है उसी की चमक बुलबुले के अंदर भी है.

प्यारे भाइयो और बहनो ! कहाँ कहाँ से, कोई दूर से और कोई नजदीक से आकर हम यहाँ जिन्दगी की राह पर मिल गए हैं. हम सब भूखे और प्यासे हैं. सबको उस खाने और उस पानी की जरूरत है जो हमें सच्ची जिन्दगी दे सके. वह खाना और पानी 'प्रेम' है. यह प्रेम आदमी के अपने अंदर डवलता है, पर उस समय उबलता है जब आदमी इस बात को महसूस करने लगे कि एक ही जान, एक ही परमात्मा सब जगह और घट घट के अंदर मौजूद है. पर हममें से बहुत सों के अंदर अभी सच्ची प्यास की कभी है.

मौलाना रूम ने कहा है :-

''पानी मत ढूँ दू, पहले अपने अंदर प्यास पैदा कर. जब सच्ची प्यास पैदा होगी तो पानी अपने आप तेरे आगे और पीछे, ऊपर और नीचे फ़ब्बारों की तरह फूटने लगेगा.''

बढ़े लोग जिनके दिल दया श्रीर प्रेम से लबालब भरे थे. जिनके लिए कोई गैर न था. बढ़े बढ़े धर्मों की पाक किताबों को लिखने और तरतीब देनेवाले, जो अब भी हमेशा प्रेम के साथ मनुष्य जाति पर उसी तरह निगाह रखते हैं जिस तरह माएं अपने छोटे बच्चों पर निगाह रखती हैं. वे बड़े लोग हमारे लिए जीवन के अच्छे से अच्छे मेवों और मीठे से मीठे फलों के बाग लगाकर छोड़ गए हैं. उनकी लगाई हुई अंगूरों की बेलें बारहमासी बेलें हैं. उनके अंगर जितने अधिक तोड़े जावें उतने ही फलते और बढते रहते हैं. उनकी इन सदा-बहार बेलों से हमने कुछ गुच्छे चुनकर जमा कर दिए हैं, ताकि सब उनमें बराबर का हिस्सा बटा सकें, सब उनका श्रानन्द ले सकें. श्रीर जब कभी हम बाहर परदेस जावें या अपने अपने घरों को लीटें तो इन फलों की मिठास हमारी जबानों श्रीर हमारे होठों पर बनी रहे. हम जहाँ जावें इस एकता श्रीर प्रेम के सन्दर बीज हमारे साथ हों और हम यहाँ वहाँ और सब जगह इन बीजों को बिखेरते रहें.

यक हिन्दुस्तानी संत ने कहा है :—

"श्रव हों कासों बैर करीं,

"कहत पुकारत प्रभु निज मुखते

"घट घट हों विहरों,

"श्राप समान सबै जग लेख्यों,

"भक्तन श्रिधिक डरों,

"श्रव हों कासों बैर करों"
कबीर साहब ने कहा है :—

"घट घट रमता राम रमैया "कटुक बचन मत बोल ! तोहे राम मिलेंगे." एक अंग्रेज किव ने कहा है :—

"So many castes, so many creeds, "So many paths that wind and wind, "when all, the sad world needs, "Is the art of being kind!"

यानी बहुत सी जात पात हैं, बहुत से म्रलग म्रलग धर्म हैं, बहुत से रास्ते हैं जिन पर लोग चक्कर खाते रहते हैं. गर इस दुखी दुनिया को जिस एक चीज की जरूरत है वह है सब के साथ में म का बरताव!

सब के साथ प्रेम का बरताव करना तभी आ सकता है जब हम मेहनत के साथ इस बड़ी सच्चाई को अपने दिलों

مولانا روم نے کہا ھے :-

پائی مت تھونتھ' پہلے اپنے اندر پیاس پیدا کر . جب سچی پیاس پیدا ہوگی تو پائی اپنے آپ تیرے آگے اور پیچے' اوپر اور نیچے فراروں کی طرح پھوٹنے لاء کا ۔''

پڑے لوگ جنکے دال دیا اور پریم سے لبالب بھرے تھے' جن کے لئے کوئی غیر نہ تھا' بڑے بڑے دھرموں کی پاک کتابوں کو لکھنے اور ترتیب دینے والے' جواب بھی ھمیشہ پریم کے ساتھ منشیہ جاتی پر اُسی طرح نگاہ رکھتے ھیں جس طرح مائیں اپنے چھوٹے بچوں پر نگاہ رکھتی ھھن' وہ بڑے لوگ ھمارے لئے جیون کے اچھے میوں اور میتھے سے میتھے پھازں کے باغ لگائر چھوڑ گئے ھیں ۔ اُن کی لگائی ھوئی انکوروں کی بیلیں بارہ ماسی بیلیں ھیں ، اُن کی اگائی ھوئی انکوروں کی بیلیں بارہ ماسی پیلیے اور بڑھتے رھتے ھیں. اُن کی اُن کی اِن سدا بہار بیلوںسے ھم نے کچھ پیلتے اور بڑھتے رھتے ھیں، اُن کی اِن سدا بہار بیلوںسے ھم نے کچھ بیا سب اُن کا آمند لے سکیں ، اور جب کبھی ھم باھر پردیس جاویں یا اپنے اپنے گھروں کو لوڈیں تو اِن پہلوں کی پردیس جاویں یا اپنے اپنے گھروں کو لوڈیں تو اِن پہلوں کی متھاس ھماری زبانوں اور ھمارے ھونٹوں پر بنی رھے ، ھم جہاں جاویں اِس ایکتا اور پریم کے سندر بیج ھمارے ساتھ ھوں اور ھم جہاں ہواں اور سب جکہ اِن بیجوں کو پکھیرتے رھیں ۔

ایک هندستانی سنت نے کہا هے:

''اب هوں کا سوں بیر کروں'
''کہت پکارت پربھو نیج مکھ تے
''گہت گھت هوں رهروں''
''آپ سمان سبے جک لیکھیڈوں'
''بھکتن ادھک ترون''
''اب هوں کاسوں بیر کروں۔''

"گہٹ گہٹ رستا رام رمیا. کٹک بچن ست بول'! تو ہے رام ملیںگے." ایک انکریز کہی نے کہا ہے:—

"So many castes, so many creeds, "So many paths that wind and wind, "When all, the sad world needs, "Is the art of being kind!"

یعنی بہت سی جات پات ھیں' بہت سے الگ آلگ دھرم ھیں' بہت سے رأستے ھیں جن پر لوگ چکر کھاتے رھتے ھیں ۔ پر اس دکھی دنیا کو جس ایک چیز کی ضرورت ہے وہ ہے سب کے ساتھ پریم کا برتاؤ!

سب کے ساتھ پُریم کا ہرتاؤ کرنا تبھی آسکتا ہے جب ھم محتنت کے ساتھ اس بڑی سچائی کو اپنے دلوں

155

श्रीर दिमारों में जमा लें कि एक ही बे-अंत, श्रनंत और ज्यापक श्रात्मा हमारे अपने श्रीर सबके श्रंदर रमी हुई है. जीवन का एक समन्दर है जो लगातार वह रहा है. वही भ्रेम है, वहीं ईश्वर है, प्रेम ही ईश्वर है, ईश्वर प्रेम है, क्योंकि ईश्वर सबके श्रंदर मौजूद है. इस एकता को अनुभव करना ही ईश्वर भक्ति या इश्के हक्षीकी है.

जपनिषद में लिखा है:—
"यदा चर्मवदाकाशं वेष्टियप्यंति मानवाः
"तदा देवं श्रविज्ञाय दुखस्यांता भविष्यति"

यानी जिस दिन लोग सारे आकाश को एक चटाई की तरह लपेट कर अपने हाथ में ले लेंगे उस दिन ही बिना सबके अंदर एक ईश्वर को देखे दुनिया के दुख का अंत हो सकेगा.

सूकी कहता है :--

"शाद बाश ! ऐ इरक खुश सीदाए मा ! "ऐ दवाए जुम्ला इस्लतहाए मा ! "ऐ इलाजे नखवतो नामूसे मा ! "ऐ तू अफ्लात्नो जालीनूसे मा ! "वेद, अवस्ता, अलक्षुरान, इंजीलनीज, "काबआं, बुतखानयां, आतशकदा, "कल्बे मन, मक्तबूल करदा जुमला चीज, "चूं मरा जुज इरक्ष नै दीगर खुदा !"

यानी ऐ मेरे प्यारे पागलपन, ऐ प्रेम ! खुश रहो. तुम ही मेरी सारी बीमारियों की दवा हो ! तुम ही मेरे घमंड श्रीर मेरी खुदी का इलाज हा ! मेरे श्रंदर के रोगों के लिए तुम श्रफ्लातून फिलोसाफ़र हो श्रीर तुम ही मेरी बाहर की बीमारियों के लिए जाज़ीनूस हकीम हो ! वेद, जिंद श्रवस्ता, कुरान, इंजील, काबा, बुतखाना श्रीर श्रातशकदा, मेरे दिल ने इन सब को श्रपना लिया है, चूंकि मेरे लिए श्रव सिवा 'प्रेम' के श्रीर कोई मजहव ही नहीं रहा.

शेख सादी ने अपनी मशहूर किताब 'मामुकीमां' में लिखा है:-

"ताबे आमोस्तेम श्रवजदे इश्क "रक्षमे गौर श्रजी नभी दानेम "कि बचशमाने दिल मबीं जुज दोम्स "हरचे वीनी बिदां कि मजहरे श्रोस्त "चूं कि बाक्रिक ग्रुदेम ज परद्येराज "दम बद्म ई तराना मी गोयेम "कि बचशमाने दिल मबीं जुज दोस्त "हर चे बीनी बिदां कि मजहरे श्रास्त!"

यानी जब से इमने प्रेम की श्रिलिफ, बे, ते पढ़ी है तब से सिवाय इसी एक बात के श्रीर कोई बात हम जानते ही नहीं कि दिल की श्राँखों से किसी को भी सिवाय दोस्त के ارر دمانیں میں جمالیں که ایک هی بے انت انت اور وبایک اتبا همارے اپنے اور سب کے اندر رمی هوئی هے ، جیبوں کا ایک سمادر هے جو لگانار به رها هے وهی پریم هے وهی ایشور هے پریم هی ایشور هے اندر موجود هی ایشور هے اندر موجود هے ایشور بیکتی یا عشق حقیقی هے ایس ایکتا کو انوبھو کرنا هی ایشور بھکتی یا عشق حقیقی هے ۔

أُپنشد ميں لكها ہے :-

'ویدا چرموآوکلام . ویشت اِشهنتی مانواه "دروم آوکیائے دکھسیه انتو بهرشیتی .'

یعنی جس دن لوگ مارے آکاش کو ایک چٹائی کی طرح لہدے کو اپنے ھام میں لے لینکے اُس دن یہی بنا سب کے اندر ایک ایشور کو دیکھے دنیا کے دکھ کا انت ھو سکیگا ۔

صوفی کہتا ہے :—

'شاد باش ا اے عشق ! خوش سودانے ما ا ''اے دوائے جاء علامائے ما ا ''اَے علاج نخوت وناموس ما ا ''اَے تو اللاطوں وجالینوس ما ا ''وید اوستا' القران' انجیل نیز' ''لعبه و' بتخانه و' آتشکده' ''فلب من' مقبول کرده جمله چیز' ''چوں مواجز عشق نے دیگر خدا ا''

یعنی اے میرے پیارے پاگل پن ا آے پریم ا خوش رهو.
تم هی میری ساری بیماریوں کی درا هو ا نم هی مهرے گهمند
اور میری خودی کا علاج هو ا میرے اندر کے روگوں کے لئے تم
اللطوں فلا سفر هو اور نم هی مهری باهر کی بیماریوں کے لئے تم
جالینوس حکیم هو اوید' زند اوستا' دران' انتجیل' کعبه'
یتخانه اور آنشکده' میرے دل نے اِن سب کو اپنا لیا هے'
چونکه مهرے لئے اب سوا 'پریم' کے اور دوئی مذهب هی

رسی سعدی نے اپلی مشہور کتاب 'مامقیماں' میں لتھا گئے :—
''تابع آموختیم ابجد عشق
''ترقم غیر ازبی نمی دانیم
''کہ بہ چشمان دل مبیں جز دوست
''هرچہ بینی بدان که مظہر اوست!
''چوں که وانف شدیم زیردگ راز
دم بدم این ترانه میکوئیم
''دی به چشمان دل مبیں جز دوست
''دی به چشمان دل مبیں جز دوست
''دی به چشمان دل مبیں جز دوست
''در چه بینی بدان که مظہر اوست!''

یعنی جب سه هم نے پریم کی انف کے نے کی پرتھی ہے تب سے سوا اسی ایک بات کے اور دوئی بات هم جانتے هی نہیں که دبل کی انتہوں سے کسی کو بھی سوائے درست کے

और कुछ नहीं देखना चाहिए. जो कुछ तू देखता है समम ले कि सब उसी एक ईश्वर का जलवा है. जब से हम भेद के परदे से वाकिक हुए हैं तब से हर दम हम यही राग गा बड़े हैं कि दिल की आँखों से किसी को भी सिवाय दोस्त के चौर कुछ नहीं देखना चाहिए. जो कुछ तू देखता है समम ले कि सब एसी एक ईश्वर का जलवा है.

'बर्ल्ड फेलोशिप आफ फेप्स' में जो गाना सब धर्मी की

तरफ से गाया गया था उसका मतलब यह है:--"द्वनिया के सब रहनेवाले भाई भाई हैं!

''सबके भले में हरेक का भला है.

"सबका निकास एक से है, एक ईश्वर सबका ईश्वर है.

"एक क्रान्न सबके ऊपर है.

"एक मंजिल सबके सामने है.

"एक जीवन सबको लपेटे हैं.

"सबका रास्ता प्रेम है.

"लोभ, लालच, हर, घमंड श्रीर नकरत

"इन्होंने बहुत दिनों हमें वीरान किए रक्खा,

"इनका राज श्रव खतम हुश्रा.

"नसल, रंग, संप्रदाय श्रीर जात पात.

"सब एक बीते हुए बुरें सपने की तरह मुरका गए.

"आदमी ने आखिर जागकर यह सीख लिया

"कि सबके श्रंदर एक ही जान है !"

उस जलसे में सबकी तरफ से नीचे लिखी प्रार्थना की

गई थी:-

"अमन और खुशहाली लोगों में फिर से वापस आ जाएँ ! "सब मिलकर काम करें, एक प्रेम सब को बाँधे हुए हो ! "एक भाई चारा सबको लिए हुए हो, सबको धीरज हो !

"सबमें आतम संयम का बल हो !

"सब एक दूसरे की पिछली बातों को भूल जाएँ,

"सब सबके भविष्य को बनाना श्रपना पोक फर्ज सममें,

"श्रमन श्रीर ख़ुशहाली सब में लौट श्रावें !"

क़रान में ईश्वर से प्रार्थना की गई है :--

"एहदेनस् सिरातल् मुस्तकीम"

यानी हे इंश्वर ! हम सबको सीधी राह दिखता.

वेद में लिखा है :--

"भग्ने ! नय सुपथा !"

यानी हे ईश्वर हमें सीधे रास्ते पर ले चल !

महाभारत में लिखा है:-

"सर्वेस्तरतु दुर्गाणि सर्वौ भद्राणि पश्यतु !

"सर्वः सद् बुद्धिमाप्रोतु सर्वः सर्वत्र नंद्तु !"

यानी सब अपनी अपनी कठिनाइयों को पार कर सकें, सबको भलाई ही भलाई दिखाई दे, सबको नेक समम हो,

श्रीर सब सब जगह ख़ुश रहें ! यही सीधा रास्ता है.

श्रोम् ! श्रामीन ! एमन !

اہر کھونہیں دیکھنا چاھئے۔ جو کچے تو دیکھنا کے سمجے لے که سب أسى ایک آیشور کا جلوہ ہے۔ جب سے هم بهید کے یردے سے واقف هوئے میں تب سے مردم هم يہى راك كارهے ميں كه دل كى أنكهوں سے کسی کو بھی سوائے دوست کے اور کھے تہیں دیکھنا چاہئے۔ جو کچھ تو دیکھتا ہے سمجھ لے کہ سب اُسی ایک ایشور کا جلوہ

ورلڌ فيلوشپ اُف فيتهس' مين جو گاڻا سب دهرمون كى طرف سے كايا كيا تها أوسكا مطلب يه هے :-

"دائيا كے سب رهنے والے بھائى بھانى هيں ا

"سب کے پہلے یں ہر ایک کا بہلا ھے.

"سب کا نکاس ایک سے ھے ایک ایشر سب کا ایشر ھے.

"ایک فائرن سب کے اور ہے ،

''ایک منزل سب کے سامنے ہے۔

"ایک چیوں سب کو ایوئے ہے.

"سب كا راسته يرم في .

"الوبه" قاليم" ذر" كهمند أور تنفرت

"إنهرن نے بہت دنوں معمیں ویران کئے رکھا"

"إن كا راج اب حتم عوا .

"نسل رنگ سهردانه اور جات یات

وسب ایک بیتے ہوئے بڑے سپنے نی طرح مرجها گئے.

"أرمى لے آخر جاگ کریہ سیکھ لھا

"که سب کے احدر ایک هی جان فے !"

أس جلسے میں سب کی طرف سے نیجے لکھی پرارتھنا کی

"امن اور خوشحالی لوگوں میں پھر سے واپس آجائیں ا "سب مل كر كام درين ايك پريم سب كو ، نده هوا عوا "ایک بھانی چارہ سب کو لئے ھو' سب کو دھیرے ھو!

"سب مين انه سنيم كا بل نفوا ا

"سب ایک دوسرے نی پنچهلی بانوں کو بھرل جانیں ا "سب سب کے بھرشیہ دو بنادا اینا یاک فرض سمجھیں ا

"أمن أور حوشتمالي سب مين لوث أوين أ"

فرأن میں ایشور سے پرارتہا دی گئی ہے: --

"العدنا الصراط المستقيم!"

یعنی ہے ایشور ا هم سب خو سیدھی راہ دکھا! ا

وید میں لکھا گے:-

"اكنے! نئے سيتھا!"

یعنی هے ایشور همیں سیدھے راستے پر لے چل!

مهابهارت ميں لکھا ہے: --

"سروسترتو درگاتی سروبهدرانی پشیتو ا

واسروه سديدهم أينو توا سروه سرونولند تو إنا

یعنی سب اپنی اپنی نقهنائیوں کو پار در سمیں' سب کو بهلائی هی بهلانی دنهای دے سب دو نیک سمج هرا اور سب سب جكه حوش رهين ! يهى سيدها رأسته هي .

أرم ا أمين ا أيمن ا

श्री हरिबल्लभ परीख

[लेखक सितम्बर 1954 में शुभेच्छु मंडल के सदस्य की हैसियत से चीन गये थे. इस लेख में उनका चाँसों देसा वर्णन है—एडीटर]

आपके पास कितनी जमीन है ? 2.6 माड के हिसाब से 15 माड जमीन है. गुस्कुराते हुये दक्षिण चीन के एक बौध मठाधीरा ने कहा. चीन में आप कहीं भी चले जाइये पूर्व से पश्चिम तक और उत्तर से दक्षिण तक जमीन के बारे में आप चाहे किसान से पूछें, जमीनदार से पूछें, संत या महंत से पूछें—एक ही जवाब मिलेगा, 2.6 माड. इस 2.6 माड में क्या कमाल है, यह हमें विस्तार से समकता होगा.

चीन के भूमि सुधार आन्दोलन को हमें दो हिस्सों में बांटना होगा—एक जमीन का फिर से समान बटवारा और दूसरा ज्यादा पैदावार. अब हम इन दोनों सवालों पर सिलसिले बार विचार करें.

चीन भारत की तरह खेती प्रधान देश है. चीन की 60-70 कीसदी जनता खेती पर ही गुजारा करती है. स्वाभाविक रूप से चीन के नेताओं ने जमीन के सवाल को सबसे पहले हाथ में लिया. उनका ऐसा करना मुनासिब और जरूरी था. किसी भी लोकशाही सरकार के अपने बहुजन समुदाय की मांगों का उनके मुख दु:ख को सममने ब मुलमाने की कोशिश सबसे पहले करनी ही चाहिये.

जनता का जीवन जमीन के साथ जुड़ा हुआ था. जमीन अधिकतर जमीनदारों के हाथ में थी. जमीन पर मजदूरी करने वाले किसानों को तबाह करने व शोषण करने के अनेक अधिकार भी जमीनदारों को हासिल थे. गरज यह कि साधन सम्पत्ति और हुकूमत पर जमीनदारों का कन्जा था. यही ज्रिया था जिससे वह चीन की मेहनतकश जनता का बेरोक टोक शोषण कर सकते थे.

1949 में लोकराज कायम हुआ. उसने अपनी जमीन सम्बन्धी नीति साफ की. जमीनदारों की सिंदयों से चली आती ताकत को यह सबसे बड़ी चुनौती थी. सियासी ताकत लोगों के हाथ में आ चुकी थी. हुकूमत पर जनता ने अधिकार पा लिया था. अब सवाल साधन और दौलत

شرى هروللبه پريكه

الیکھک ستمبر 1954 میں شوبھیچھو منذل کے سدسیہ کی حیثیت سے چین گئےتھے . اُس لیکھ میں اُن کا آنکھوں دیکھا ورنس ہے۔۔ادیڈر .]

آپ کے پاس کتنی زمین ہے 9 2.6 ماؤ کے حساب سے 15 ماؤ رمین ہے مسکراتے ہوئے دکھن چین کے ایک ہودہ مثبا دھیش نے کہا ۔ چین میں آپ کہیں بھی چلے جانیہ پورب سے پچھم تک اور اتر سے دکھن تک زمین کے بارے میں آپ چاھے کسلی سے پوچھیں' سنت یا مہنت سے پوچھیں' سنت یا مہنت سے پوچھیں' ایک ھی جواب ملے کا۔۔۔۔2.6 ماؤ ۔ اس 2.6 ماؤ میں کیا کمال ہے' یہ ہدیں وستار سے سمجھنا ہوگا ۔

چین کے بھوی سدھار آندوان کو ھمیں دو حصوں میں ہانگنا ھوگا۔ ایک زمین کا پھر سے سمان بقوارہ اور دوسرا زیادہ پیداوار اب ھمان دونوں سوالوں پر سلسلے وار وچار کریں ۔

چین بھارت کی طرح کھیتی پردھان دیش هے ، چین کی 60-70 نیصدی جنتا کھیتی پر ھی گذارہ کرتی هے . سوابھارک ررپ سے چین کے نیتاؤں نے زمین کے سوال کو سب سے پہلے ہاتھ میں لیا ۔ ان کا ایسا کرنا ساسب اور ضروری تھا ، کسی بھی لوک شاھی سوکار کے اپنے بھوجن سمودایہ کی مانگوں کو ان کے سکھ دکھ کو سمجھنے و ساجھانے کی کوشش سب سے پہلے کی کوشش سب سے پہلے کرنے ھی چاعگے ۔

جنتا کا جیرن زمین کے ساتھ جوڑا ہوا تیا ۔ زمین اصفک تو زمینداروں کے ہاتھ میں تھی ، زمین پر مزدوری درنے والے کسائوں کو تباہ کرنے و شوشن کرنے کے انیک ادھیکار بھی زمینداروں کو حاصل تھے ، غرض یہ کہ سادھن ' سمپتی اور حکومت پر زمینداروں کا فیضہ نھا ، یہی فریعہ بھا جس سے وہ چین کی محنت کش جنت کا پروک توک شوشن کی محنت کش جنت کا پروک توک

1949 میں لوک راج قائم ہوا اس نے اپنی زمین سمبندھی نیتی صاف کی ۔ زمینداروں کی صدیوں سے چلی آتی طاقت کو یہ سب سے بڑی چنوتی تھی ، سیاسی طاقت لوگوں کے ہاتھ میں آچکی تھی ، حکومت یو جنتا نے ادھیکار یا لھا تھا، آب سوال سادھن اور دولت

को जनता के हाथ में पहुंचाने का था. 1949 से ही चीनी अगुवाओं ने अमीन के प्रश्न पर जनमत तैयार करना शुरू कर दिया था. 1950 में अमीन सुधार कानून बना दिया. इस कानून में अमीन सम्बन्धी सारे प्रश्नों पर क्रान्तिकारी तरीके से दिचार किया गया. अमीन पर जोतने वाले का अधिकार, समान रूप से माना गया. आज तक के अमीन सम्बन्धी पुरतैनी अधिकारों को इससे अवरदस्त चोट पहुंची. यहां एक महत्वपूर्ण सवाल खड़ा होता है. 1950 में इसे कानून का रूप देने में चीनी अगुवाओं ने जल्दवाओं से काम लिया है क्योंकि एक वर्ष में जनमत तैयार होना संभव नहीं माना जाता. यह प्रश्न सब को सूमेगा. हमने भी इस सवाल की सफाई मांगी. इसकी सफाई में आपको चीन के महान किसान नेता और मौजूदा लाकराज के छिष मंत्री के मुख से सुनाउंगा. कृषि मंत्री श्री लियाओ-हू- मेन ने बताया :--

"लोगों का मन बदले बिना कोई कानून कारगर साबित नहीं हो सकता, और इस जमीन सम्बन्धी कानून को तो इन सदियों पुरानी परम्परा का विरोध करना था जो अबाधित ह्रप से आज तक सत्ता पर आसीन थी. इसका मुकाबला जन जाप्रति के बिना असंभव था. सिर्फ कानून बनाकर हम इस सवाल का हल नहीं पा सकते थे. मैं यहां एक चीज साफ करना चाहुँगा. ज्मीन सुधार क्रानून के लिये लोकमत अनुकूल था काकी से ज्यादा. मैं आगे चलकर यह भी कहना चाहुँगा कि लोक या जनता का श्रर्थ जिस देश के राव्दकोश में आम जनता, करोड़ों मेहनतकश किसान मजदूर होता हो, इन सब देशों में जीवन के इस बुनियादी इक को हासिल करने के लिये जनमत एकदम अनुकूल है. यह दूसरा सवाल है कि कहीं इसे हल करने वाला नेवृत्व बोरवार रहा हो, कहीं कमजीर, कहीं इस अधिकार में हकावट डालने वाले सत्ताधारी हैं, कहीं इनकी सत्ता दूटती जा रही है. प्यासों की जमात को यह पूछना कि आपका मत पानी पीने का हो तो आपको पानी दिया जायेगा, इसमें जितनी अक्रलमन्दी है, उतनी ही अक्रलमन्दी इस द्लील में है कि जनमत तैयार होने पर जोतने वाले मेहनतकश मजदरों को जमीन दिलाने का कदम उठाया जायेगा. रोटी जन साधारण की बुनियादी जरूरत है. इसे पूरा करने के लिये जमीन का जातने वाले के पास होना भी उतना ही ज़रूरी है. जब उसे ज़मीन मिलती है तो जनता का ज़ुश होना और उसके उत्साह में बढ़ती होना स्वाभाविक ही है. स्मिलिये इमने एक वर्ष में ही क़ानून बनाया. इसका श्तिहास बहुत पुराना है. जन आन्दोलन के इतिहास के साथ साथ इसका इतिहास चला है. इस प्रश्न पर हमारा नजरिया बरसों पहले तय हो चुका था. जनता के

کو جنتا کے ھاتھوں میں پہلچائے کا تھا۔ 1949 سے ھی چینی اگواؤں نے زمین کے پرشن پر جنبت تیار کرنا شروع کر دیا تھا۔ 1950 میں زمین سدھار قانوں بنا دیا . شروع کر دیا تھا . 1950 میں زمین سمبندھی سارے پرشنوں پر کرائتکاری طریقے سے وچار کیا گیا . زمین پر جوتنے والے کا ادھیکار سمان روپ سے مانا گیا . آج تک کے زمین سمبندھی پشتینی ادھیکاروں کو اس سے زبردست چوت پہنچی . یہلی ایک مہتوپورں سوال کوڑا ھوتا ھے . 1960 میں اسے قانوں کا روپ دینے میں چینی اگواؤں نے جلدی بازی سے کام لیا ھے کیوئند ایک برس میں جنبت تیار ھونا سمبھو نہیں جانا جاتا . یہ پرشن سپ کو سوجھے کا ھمنے بی اس سوال کی سفائی مانگی اس کی صفائی میں آپ کو چین کے بہاں کساں نیتا اور موجودہ لوک راج کے کرشی منتری کے مہاں کساں نیتا اور موجودہ لوک راج کے کرشی منتری کے مہو سے سناوں کا . کرشی منتری شری لیا او . ھو . میں نے بتایا: —

''لوگوں کا میں بدلے بنا کوئی قانون کارگر ثابت نہیں هر سمتهٔ اور اس زمین سمبندهی قانون کو تو آن صدیون پرانی يرمهرا كا وروده كرنا تها جو ابادعت روپ سے آج تك ستا پر آسین تھی اس کا مقابلت جن جاگرتی کے بنا اسبھو تها مرف فانون بناكر هم أس سوال كاحل نهين يا سكتم تھے . میں یہاں ایک چیز صاف کرنا چاھوں کا . زمین سدھار قانون کے اللہ لوک مت انوکول تھا کافی سے زیادہ . میں آگے چل کرید بھی کہنا چاھوں کا که لوک یا جنتا کا ارته جس دیش کے شہدکرش میں عام جلتا کررزوں محنت کش کسان مهدور هوتا هو او سب ديشوں ميں جيون كے اس بنيادى حُق كُو حُامِلٌ كُرِنْ كَ لِنَّهِ جِنْمَتَ أَيْكَ دَمَ أَنْوَكُولَ هِ . يَهُ درسراً سوال هے که کہیں اسے حل کرنے والا نیترتو زوردار رها هو كهين كمورر كهين اس الدهيكارمين ركاوت دالله واله ستادهاري هیں کہیں ان کی ستا تُوئتی جارهی هے . پیاسوں کی جماعت کو یہ یوچھنا کہ آپ کا ست پانی پھنے کا هو تو آپ کو یائی دیا جاے گا' اس میں جتنی عقلمندی هے' اتنی می عقلمندی اس دليل ميں هے كه جنست تيار هوئے هر جوتنے والے مصنت کھی مزدوروں کو زمین دلانے کا قدم أنها یا جائے گا ، روئی جن سادھارن کی بنیادی ضرورت ہے . اسے پیرا کرنے کے لئے زمین کا جہتنے والے کے پاس هونا بھی اتنا هی ضروری ہے ، جب أس زمین ملتی هے تو جنتا کا خوش هونا اور اس کے انساہ مُیں بڑھتی ہونا سرابھارک ھی ھے اُس لئے ہملے ایک برس میں هی تانوں بنا یا . أسكا اليهاس بهت بوانا هے . جُن آدرولن کے ایتہاس کے ساتھ ساتھ اس کا ایتہاس چا ہے. اس پرشی پر همارا نظریه برسوں پہلے طه هو چکا تها . جنتا کے

सामने साफ था. इसीलिये जमीन बंटवारे का कानून इतना सकल हो सका और लोकप्रिय बना. जनमत हमारे साथ है. यही इसका सबसे बड़ा प्रमाण है."

इस चतुर लोकनायक की बात से हमें चीन की भूमि क्रान्ति की पूर्व भूमिका मिल जाती है. अब हम इस मूमिका की रोशनी में उन सारी बातों की जांच पड़ताल कर सकेंगे जो इस आन्दोलन के कारण उपस्थित हुई; मसलम् अमीनदारों के ऊपर क्या प्रतिक्रिया हुई ? धनी किसानों ने किसका साथ दिया ? ग्रीब किसानों, मजदूरों व उद्योग-धन्धे बालों ने किस तरह संगठित हाकर कोशिश की ? शहर के बुद्धि-जीवियों ने देहाती अमजीवियों के इस आन्दोलन को कैसे अपनाया ? 11 करोड़ 50 लाख एकड़ जमीन किस तरह वे अमीन व कम जमीन किसानों में बाँटी गई ?

🛂 ' सबसे पहले चीन के अगुवाओं ने गुल्क के सामने एक ंबात पेश की. उसमें उन्होंने साक बताया कि जब तक तल्ले की पैदाबार देश में बढ़ेगी नहीं तब तक देश में खौद्योगी-करण कभी सफल नहीं हो सकेगा. देश की खुशहाली का पूरा दारोमदार ग़ल्ले की पैदाबार पर है. अन्न उत्पादन बढ़ेगा तो ही देश का जीवन मान बढ़ेगा. जीवन मान के बढ़ने से आम ज़नता की मांगें बढ़ेंगी और उन्हें पूरा करने के लिये श्रीधीगीकरण जरूरी होगा श्रीर सफल भी. इसिलिये जमीन सुधार आन्दोलन को सफल बनाने में हमें जी जान से जुट जाना चाहिये. इस ऋपील का चीनी जनता ने स्वागत किया श्रीर हृदय से इस काम को पूरा करने में सब कंथे से कंधा निलाकर जुट गये. पांच-पचीस नहीं, सी-हजार नहीं, 30-30 लाख मई-श्रीरतों ने, जिनमें मिल मजदूर से लगाकर मिल के मैनेजर भी शामिल थे, विद्वान थे, प्रोफेसर थे, प्रधान श्रीर प्रधान की पत्नियां भी थीं, हरेक तवक़े के बुद्धि जीवी लोग थे, इस तरह सब कोई जमाने की मांग को पूरा करने के लिये मैदान में आ खड़े हुये. इन 80 लाख सैनिकों को कोरिया के लड़ाई के मोरचे पर नहीं भेजा गया. इस महा क्षीज को देहातों की श्रोर कुच करवाया गया. इस फौज को नाम दिया गया, "भूमि सुधार देल." इन दलों को अनेक दुकड़ों में वांटा गया. सूबा, ज़िला, तहसील ब देहात तक की योजना बनाई गई. हर टोली को योजना पूर्वक हिस्सा सौंप दिया गया. भूमि सुधार दलों का मुख्य काम था देहातों में किसान सभात्रों की रचना करना. इन किसान सभाओं को अपने अधिकार व कर्ज का भान करवाना. वर्षों से दबे कुचले देहातों में हिम्मत पैदा करके उन्हें आगे बदाना, और जमीनदारों के दांव पेंच से षचाना.

बहुत बढ़े जमीनदार चांग-काई शेक के साथ भाग चुके

سامنے صاف تھا اسی لئے زمین بتوارے کا قانون اتفا سول هو سکا اور لوک پریه بنا جندت همارے ساتھ هے؛ یہی اس کا سب سے بڑا پرمان هے؛

اس چار لوک نایک کی بات سے هدیں چین کی بہومی کوآنگی کی پورو بھومیکا مل جاتی ہے ۔ اب هم اس بھومکا کی روقائی میں اُن ساری باتوں کی جانیج پرتال کر سکیں گے جو اِس اندولن کے کارن آپستیت ہوئیں؛ مشلاً زمیندلروں کے آرکیو گیا پرتکیویا ہوئی آ دھنی کسانوں نے کسکا ساتھ دیا آ فورب کسانوں' مؤدوروں و ادیوگ دھندھے والوں نے کس طرح سلکتیت ہوگر کرشش کی آ شہر کی بدھ جنویوں نے دیہاتی شرم جنویوں کے اس اندولن کو کیسے آپنایا 11 کورز 50 دیاتی شرم جنویوں کے اس اندولن کو کیسے آپنایا 11 کورز 50 گئی آ

سب سے پہلے چین کے اگواؤں نے ملک کے سامنے ایک بات پیش کی اس میں انہوں نے صاف بتایا که جب تک الله على بيداولر ديش ميں برھے كى نہيں تب تك ديش ميں أوديوكي كرن كبهي سبهل نهين هو سكم كا. ديش كي خوشحالي کا پورا دارومدار غلم کی بیداوار پر هے ، ان اتهادی بزها تو هی دیش کا جیوں ماں بڑھا ، جیوں ماں کے بڑھنے سے جنتا کی مانکیں ہڑھیں گی اور اُنہیں پورا کرلے کے لئے أوديوكي كرن ضروري هوكا أور سيهل بهي أس لله زمين سدهار أندولي كو سيهل بناليمين هدين جي جان سے جت جانا چاهئے اس اپیل کا چینی جنتا نے سواکت کیا اور ھردئے سے اس کام کو پورا کرنے میں سب کندھ سے کندھا ملا کر جٹ گئے ۔ ہائیج پچیس نہیں' سو هزار نہیں' 30-30 لکھ مرہ عورتوں کے' جن میں مل مزدور سے لکا کر مل کے منیجر بھی شامل تھے' ویدوان تھے' درونیسر تھے' دردهان اور دردهان کی یتنیاں بھی تھیں ' ھر ایک طبقے کے بدھجیری لوگ تھے' اس طرح سب کوئی زمانے کی مانگ کو پورا کرنے کے لئے میدان میں اً کھڑے ہوئے ان 30 الکھ سینکوں کو کوریا کے لڑائی کے مورچے پر ٹہیں بھیجا گیا ، اس مہا نہج کو دھاتوں کی اور کوچ کروایا گیا ۔ اس فوج کا تام دیا گیا "بهرسی سدهار دل" ۔ اِن دلوں کو انیک تروس میں بانتا گیا. موبه اضاع تحصیل و دیہات تک کی یوجنا بنالی گئی ، هر تولی کو یوجنا پرروک حصه سوئپ دیا گیا . بهومی سدهار دارس کام مکهیه کا تها دهاترس میس کسان سبهاوں کی رچنا درنا۔ ان کسان سبهاوں کو اپنے ادھکار و فرض کا بهل کروانا، برسوں سے دیے' کھلے دھاتوں میں ھست پیدا کرکے انہیں آکے برھانا اور زمینداروں کے دانوں بھیے سے بحیانا .

بہت ہے۔ زمیندار چانگ-کائی-شیک کے ساتھ بھاگ چکے

बे. जो बचे वे उन्होंने श्रुक कुक में अपनी श्रांक्त मर जमीन सुवार आन्दोलन को नाकामयाब बनाने की कोशिश की. तरह तरह के प्रपंत्र रचे. कहीं कहीं किसान सभा के कार्य- इर्ता की के पैसे और कियों द्वारा खरीव लिया. यह सब अहं की तेल बार को लाठी से रोकने जैसा मूर्ख प्रयस्म जावित हुआ. वहां भी जमता जान उठी थी. उसे योग्य क्थ किस चुका था. पुरानी समाज व्यवस्था को सतम करने के लिये 80 बाबा समाज सेवकों का दल बादल की तरह गरज कर दूट पढ़ा था. प्रेम और शक्ति का मानवता रूपी महासागर आज आशा के आकाश पर से उमड़ पढ़ा था. अभा सकता इन 30 लाख साथियों के सहारे वहाने के लिये सकत हो उठी थी.

जमीन शुवार इत के सैनिक तीन तीन महीने तक वृंहातों में बारी से ठहरते थे. अनेक् अध्य मेलते थे. जनता में नव आगृति फैलाते थे. सरकार की अपूम शुधार नीति का पूरा साथ देते थे. गुल्क किस राह पर जा रहा है, जाना चाहता है, इसकी पूरी तस्वीर जनता के सामने पेश करते थे.

श्रुह्म के दिनों की कुछ गड़बड़ी को छोड़ कर अधिकतर जमीनदारों ने जमाने की मांग को समम लिया. हवा के अतुकृत अपने की बनाने की कोशिश करने लगे. कुछ अभीनदार अब भी वेसे बाकी थे जिनका अस्तित्व किसानों को असर रहा था, जिनको देखकर किसानों के दिल आग कंगला हो उठते थे. ये वो जमीनदार थे जिन्होंने किसानों की बहिन बेटियों की इज्जत लुटी थी. आज भी ऐसी अनेक बेटियां इन लोगों के घर में दास कन्याओं के रूप में नरका-गार काट रही थीं, इनमें से कुछ जमीनदारों ने अनेक माताओं से उनके पुत्र छीन लिये थे. अनेक सथवाओं को विभवा बनाया था: दो दो चार चार साल के मासम बच्चों से उसके भा बाप खीन लिये थे. बच्चों को सवा के लिये भनाभ बना दिया था. ऐसे कुछ जमीनदारों का अस्तित्व मांक्स भे बाद लोगों को इद से क्यादा खटकने लगा. इन्हों ने मये लोकराज के सामने धूल उड़ाने का द:साहस करके अपने सर्वनारा को न्बीता दिया. जनता और नेताओं ने महत्त्स किया कि जन विकास के मार्ग में यह बहुत बढ़ी अदंबने सदी कर रहे हैं. आगे बढ़ने से पहले जनता के दिलों से दर्द भीर डर को निकाल भगाना होगा. चीनी केराओं ने ऐसे इब जालिम जमीनदारों को जाम सभा के सामने पेश किया. किसानों को कहा कि निवर होकर अपनी कार्ते केश करो.

एक की ने जमीत्रपार की तरफ वंगुली वठाकर कहा— "बताको तुमने ही मेरी पांच माच जमीन छीन ली थी न ? जब मेरा पति बिस्तरे पर बीमार पड़ा था, तुमने ही आपा-वियों को इसे महारोजी क्वाकर जिल्हा जला दिया! बोलो تھ ، جو بچے تھے انہوں لے شروع شووع میں اپنی شاہی ہور زمین سدھار آندوان کو ناکامیاب بنانے کی کوشش کی طرح لاوے کے پرپنچ رچے ، کہیں کہیں کسان سبھا کے کاریہ کرتاوں کو پیسے اور استریوں دوارا خرید لیا ، یہ سب یاوہ کی تیز دھار کو لائی سے روکلہجیسا مورک پریتن ناہمہ ہوا، وہاں کی جنتا جاگ آئی تھی ، اسے یوگیہ پتھ مل چکا تھا ، پرائی سماج ویوستھا کو ختم کرنے کے لئے 30 لاکھ سماج سیوکوں کا دل بادل کی طرح گوج کر توسیزا تھا ، پریم اور شکتی کا مائوتا روپی مہاساگر آج آشا کے توسیر سے آمر پرا تھا ، آج تک کی نوبل چنتا 30 لاکھ ساتھوں کے سہارے چلنے کے لئے سیل ہو آئی تھی ،

زمین سدهار دل کے سینک تین تین مہیئے تک دوہاتوں میں ہاری باری سے ٹھہرتے تیے ۔ انیک کھٹ جھیلتے تیے ، جاتا میں نوجاگرتی پھیلاتے تیے ، سرکار کے بھرمی سدھار نیتی کا پورا ساتھ دیتے تیے ملک کس راہ پر جا رہا ہے' جاتا چاہتا ہے' اس کی برری تصویر جنتا کے سامنے پھٹ کرتے تھے ،

شروع کے دنس کی کچھ گزیزی کو چھوڑ کر اُدھکتر امینداروں نے زمانے کی مالک کو سمجھ لیا ، ہوا کے انوکول اپنے الو بنائے کی کوشش کرنے لگے ، کچھ زمیندار اب بھی ایسے باقی نے جن کا اسٹیتو کسائوں کو اکھر رہا تھا ، جن کو دیکھ کر السائوں کے دل آگ بکولا ہو اُٹھتے تھے ، یہ وہ زمیندار تھے جنہوں نے کسانس کی بہی بیتیس کی عزت لرقی تھی ۔ آج بھی ایسی نیک بیٹیاں ان لوگوں کے گھر میں داس کنیاؤں کے روپ میں الله رهی تهین ان میں سے کچے زمینداروں نے انیک انیک باتاوں سے اُن کے یتر چھین لئے تھے۔ انیک سدھواؤں کو دھوا بنایا تھا؛ دو دو چار چار سال کے معصوم بحص سے ان کے اس باپ چهدن لله ته ، بحور کو سدا کے لله اناته بنا دیا تها، یسے کچھ زمینداروں کا استیتو معتی کے بعد لوگیں کو حدد سے یادہ کھٹکنے اگا ۔ اُنہوں نے نئے لوک واج کے سامنے دھول اُوانے ا درساهس کر کے آپنے سروناش کو ٹیرتا دیا ، جنتا آور بیتاؤں نے محسرس کیا کہ جام رکاس کے مارگ میں یہ بہت ری اُرچن کرری کر رہے میں . آگہ برمنے سے بہلے جنتا کے الی سے درد اور در کو تکال بھکانا ہوگا ، چینی نیتارں نے ایسے جه ظالم زمینداروں کو عام سبھا کے سامنے پیش کیا ، کسالوں و کہا کہ تُدر هو کر اپنی ہاتیں پیش کرو ۔

آیک استری نے زمیندار کی طرف انگلی اُتھا کر پا۔"بتای تم نے ھی میری پاتیج مار زمین چھن لی ہی نه ؟ جب میرا پتی بسترے پر بیمار پڑا تھا' تم نے ہے جاپانیوں کو اُسے مہارگی بتا کو زائدہ جلا دیا ! بولو

यह सब है या नहीं ?" ऐसे कुछ विशेष अत्याचारियों को मीत के घाट उतारा गया. ज्यादा तर जमीनदारों को सुधरने का मीक्षा दिया गया. जनको भी 2.6 माउ के हिसाब से जमीन दी गई ताकि वे भी मेहनत करके गुजारा कर सकें. समम्बद्ध और अच्छे जमीनदारों का प्राम विकास योजनाओं में उपयोग कर लिया गया.

जमीनदारों की अधिकतर जायदाद को बेजमीन किसानों में बाटा गया. जरूरत से ज्यादा जो साधन सम्पत्त थी वह भी जरूरतमंदों के पास पहुंचाई गई. बंटबारे में ममोले किसानों को न बहुत लाभ हुआ और न नुक्रसान. गरीब किसान और बेजमीन मजदूरों को जिनकी तादाद काशी बड़ी है, काफी लाभ पहुंचा. इस प्रकार 11 करोड़ 55 लाख एकड़ जमीन 30 करोड़ किसानों में बांटी गई. बेकारी व वे राजगारी की एक बहुत बड़ी समस्या इस से हल हो गई. लेन देन व भूमि संबंधी जो भी काग्रजी दस्तावेज मौजूद थे उन सब की आम जगह पर होली जलाई गई.

पूरे चीन में किसान सभाशों की रचना ने नया उत्साह व साहस पैदा किया, जनता को अपनी शक्ति का ख्यात हुआ और यह विश्वास भी पैदा हुआ कि हम भी कुछ कर सकते हैं. अब इन किसान सभाओं का सब से पहला काम था गांव में वर्गीकरण करने का. गांव को मोटे तौर पर पांच वर्गों में बांटा गुया. जमीन की समस्या हल करने के लिये वर्गीकरण आवश्यक था:—

1. जमीनदार:--वह जो खुद काश्त न करता हो, किंतु ज्यादा जमीन का मालिक हो.

2. धनी किसान :—त्रह जो खुद काश्त करता हो, किन्तु श्रधिक जमीन दूसरों को उठवाता हो.

3. मफोला किसान :—जिसके पास जमीन अपनी हो, और किसी तरह गुजारा कर लेता हो.

4. रारीव किसान:—नाम मात्र की जमीन हा, काश्त करने पर भी जो भखा रहता हो.

 जो दूसरों की जमीन पर मजदूरी करते हों श्रीर पूरी मेहनत करने पर भी जिन्हें भर पेट रोटी न मिलती हो.

इसके आधार पर प्राम सभाओं ने 1950 में बने जमीन सुधार कानून के अनुसार बंटवारे का कार्य शुरू किया. यह 1953 तक चलता रहा. आज पूरे चीन में जमीन का समान रूप से बंटवारा हो गया है. 2.6 माउ जमीन हर व्यक्ति को मिली जो बंटवारे के दिन तक जिन्दा था या पैदा हो चुका था. इस 2.6 माउ ने जादू का काम किया. यही वह जादू है जिसने चीन की जनता के सुरमाये हुये चेहरों में फिर से जान भर दी. इस क्रान्ति ने जनता में उत्साह पैदा किया. उत्पादन काफी से ज्यादा बढ़ने लगा. 1949 से 1952 में 45 फीसदी उत्पादन बढ़ा. लड़ाई से

یه سیج ه یا نهیں ؟ " آیسے کچھ وشیش آنیاچاریوں کو موت کے گیات آثارا گیا ۔ زیادہ تر زمینداروں کو سدھرنے کا موقع دیا گیا ۔ ان کو بھی 6 ک مار کے حساب سے زیمی دنی گئی تا که وہ بھی محملت کر کے گذارہ کر سکھں۔ سمجھدار اور اچھ زمهنداروں کا گرام وکلس یوجنا میں اپھوک کو سکھا ۔

ومینداروں کی ادھکتر جانداد کو بے زمین کسانوں میں بانڈا گیا ، ضرورت سے زیادہ جو سادھن سبہتی تھی وہ بھی ضرورتمندوں کے پاس پہنچائی گئی ، بتوارے میں مجھول کسانوں کو نب بہت لابھ ھوا اور نہ نقصان ، غریب کسان اور بے زمین مزدوروں کوجن کی تعداد گئی بڑی ہے؛ کانی لابھ پہنچا ایس پرکار 11 کروز 55 لاکھ ایکٹ زمھن 30 کروز کسانوں میں بانٹی پرکار 11 کروز کی ایک بہت بڑی سمسیا اس سے گی ، بیکاری و بے روزگاری کی ایک بہت بڑی سمسیا اس سے حل ھوگئی، لین دین و بھومی سمبندھی جو بھی کاغذی دستاریز موجود تھے اُن سب کی عام جگه پر عولی جلائی گئی ،

پورے چین میں کسان سبھاؤں کی رچنا نے نیا آتساہ و سامس نیدا کیا جنتا کو اپنی شکتی کا خیال ہوا اور یہ وشواس بھی پیدا ہوا کہ ہم بھی کچھ کر سکتے ہیں، آب ان کسان سبھاؤں کا سبب سے پہلا کام تھا گاؤں میں ورگی کرن کرنے گا ۔ گاؤں کو موتے طور پر پانچ ورگوں میں بانگا گیا ۔ زمین کی سمسیا حل کرنے کے لئے ورگی کرن اوشیک تھا :۔۔

ال زمیندار: --وه جو خودکاشت نه کوتا هو کنتو زیاده زمین کا ماک هو .

.2 دهنی کسان :—وه جو خرد کاشت کرتا هو کنتو ادهک زمین موسروں کو آئهواتا هو .

کی مجھولا کسان : سنجس کے پاس زمیں اپنی مو، اور کسی طرح گزارہ کر لوتا مو .

4. غویب کساس :--نام ماتر کی زمین هو کاشت کرنے پر بہرے جو بھوکا رهتا هو .

ن جو درسروں کی زمین پر مردوری کرتے هوں اور پوری محملت کرنے پر بھی جنہیں بھر پیٹ روئی نه ملکی هو.

اس کے آدھار پر گرام سبھاؤں نے 1950 میں بنے زمین سبھار قانوں کے انوسار بٹوارے کا کاریہ شروع کیا۔ یہ 1958 تک چلتا رھا ، آج پورے چین میں زمین کا سمان روپ سے بٹوارہ ھو گیا تھ ۔ 2.6 ماو زمین ھر ویکٹی کو ملی جو بٹوارے کے دن نکب زندہ تیا یا پیدا ھرچکا تھا ، اس 2.6 ماو نے جادو کا کام کیا ، یہی وہ جادو ہے جس نے چین کی جنتا کے مرجھائے ھوئے چہروں میں پھر سے جلس بہردی ، اس کرائٹی نے جنتا میں آنساہ پیدا کیا ، آنیادی کافی سے زیادہ برہانے سے میں آنساہ پیدا کیا ، آنیادی کافی سے زیادہ برہانے سے میں آنساہ پیدا کیا ، آنیادی کیادہ برہانے سے میں آنیادی برہا ، لوائی سے

पहले के 1937 के जंकों को लें तो भी 1952 में 9 कीसदी छत्पादन बढ़ा. इससे किसानों की करीद करने की राक्ति में 76 कीसदी की बढ़ोतरी हुई. जिन दूकानों पर सिवा जमीन-दारों के कोई नजर नहीं जाता था वहां जाज किसानों के मुंड के मंड जाते हैं.

जब जान्दोलन का दूसरा हिस्सा शुरू होता है जिसे हम भूमि सुधार व उत्पादन बढ़ाने वाला हिस्सा कहेंगे. हां, तो जमीन का बंटबारा हो जाने से जमीन के बहुत छोटे छोटे टुक्क हो गये. भारत में भूदान जान्दोलन के कारण जमीन के टुक्क दुक हो जायेंगे, और फलस्वरूप देश के उत्पादन को तुक्कसान पहुंचिंगा, यह दलील हमारे भारत के कार्य शासियों ने की थी और बढ़ा शोर मचा दिया था. चीन के बंटवारे ने यह सावित कर दिया कि बढ़े पैमाने पर भी छोटे टुक दे होने से उत्पादन घटता नहीं बढ़ता है. भारत के भूमि जान्दोलन का भी यही जनुभव हो रहा है.

समाजवाद का आधार योजना है. वह योजनापूर्वक आगे बढ़ता है. जमीन के बंटवारे के मौके पर उसने समाज को पांच वर्गों में बांटा. ठीक वैसे ही उत्पादन बढ़ाने के लिये भी उसने किसानों को चार विभागों में बांट दिया.

व्यक्तिगत खेती:—जिनके पास पूरे साधन हों, जो खुद काश्त करते हों, इसमें धनी किसानों का क़रीब क़रीब सारा बर्ग शामिल हुआ. उसके लिये यह अनुकूल योजना थी.

सहयोगी बल खेती:—इसे मिच्युझल एड टीम्स के नाम से प्रचारित किया. पुराने छोटे किसान व मजदूरों के पांच पांच दस दस कुटुम्बों को इकट्ठा करके उनकी सहयोगी टोलियां बनाई गई. क्योंकि बंटवारे में सब को सब प्रकार के साधन व जानवर नहीं मिल सके थे इन टोलियों द्वारा वह कमी पूरी की गई. ग्रुक्त में गांव में ऐसी एक दो टोलियां मुश्किल से बनी थीं. मगर इसकी शान देखकर गांव गांव में टोलियों की धूम सी मच गई. कहीं कहीं तो ऐसी 16-20 टोलियां एक ही देहात में बन गई हैं. जमीन और साधनों पर का अधिकार इन दोनों किस्स की खेती में किसान का ही रहता है. चीन में 60 कीसदी किसान आज इन सहयोगी दलों की खेती में शामिल हैं. व्यक्तिगत खेती से इस सहयोगी दलों की खेती में शामिल हैं. व्यक्तिगत खेती से इस सहयोगी दल खेती में 20 कीसदी उत्पादन अधिक बढ़ा है.

खेती उत्पादक सहकारी मंडलियां :—इसमें ममोले किसान व पुराने जमीदनार ज्यादा शरीक हुए. जो आज के पहले खुद काश्त नहीं करते थे उनके लिये इसमें शरीक होना लाभदायक था. 10, 15 और कहीं कहीं अधिक कुटुम्बों की ऐसी मंडलियां हैं. खाद बीज आदि सारी खेती संबंधी बातों का क्याल मंडली का व्यवस्थापक मंडल करता है. शामिल खेती होती है. उत्पादन को तीन हिस्सों में बांटा जाता है. (1) रिजय फंड, जो नये मशीन साधन व खरीदने के काम

لے کے 1937 کے انہوں کو لیں تو بھی 1952 میں 9 فیصدی بادن ہڑھا، اِس سے کسائوں کی خوید کرنے کی شکتی میں 76 بصدی کی ہڑوتری ہوئی . جن دوکائوں پر سوا زمینداروں کے بئی نظر نہیں آتا تھا' وہاں آج کسائوں کے جہلت کے جہلت عاتم ہیں ،

اب آندولن کا دوسرا حصه شروع هوتا فی جسے هم بهومی سعار و آتیادن برهانے والا حصه کہیں گے ، هاں تو زمین کا نقوارہ هرجانے سے زمین کے بہت چہوتے چھرتے ٹکڑے هوگئے ، ہارت میں بهودان آندولن کے کارن زمین کے ڈکڑے ٹکڑے هو جائیں گے اور مل سورپ دیش کے آتیادی کو نقصان پہوٹنچے گا تعدیل همارے بهارت کے ارتب شاسلادوں نے کی تھی اور برتا بورمنچا دیا تھا . چین کے بنتوارے نے یہ تابت کو دکھایا که برت یمانے پو بھی چھوٹے ٹکڑے هونے سے آتیادی برخمتا نہیں گھتتا ہے ۔ یمان کے بھرمی آندولن کا بھی یہی انوبھو هو رہا ہے .

"سماج واد کا آدھار یوجنا ہے، وہ یوجنا پوروک آگے ہوتھا ہے۔ میں کے بنقرارے کے موقع پر اُسنے سماج کو پانچ ورگوں میں اثقا ۔ تھیک ویسے ھی اُتھادی بڑھائے کے لئے بھی اُسنے کسائوں و چار وبیاگوں میں بائٹ دیا ۔

ویکٹی گت کریٹی : جن کے پاس پورے سادھن عون' ہو خود کاشت کرتے ھوں' اِسمیں دھنی کسانوں کا قریب قریب سارا ورگ شا، ل ہوا، اُسکے لئے یہ انوکول یوجنا تھی۔

سهیوگی دل کهیتی :—اُسے موچوئیل اید تیمس کے نام سے ریدچارت کیا . پرانے چھوئے کسان و مزدوروں کے پانچ پانچ دس سی کلمبوں کو اِنتھا کر کے اُنکی سهیوگی ٹولیاں بنائی گئیں ، ایونکه بنتوارے میں سب کے سب پرکار کے سادھن و جانور نہیں مل سکے تھے اِن تواوروں دوارا وہ کمی پوری کی گئی ، شروع میں گاؤں میں ایسی ایک دو ٹولیاں مشکل سے بنی تھیں ، مگر اسکی شان دیکھر گؤں گاؤں میں تواییں کی دھوم سی سچ گئی ، کہیں کہیں تو ایسی 20-15 ٹولیاں ایک ھی دیہات میں بن کئی ھیں .زمین اور سادھنوں پر کا ادھکار اِن دونوں قسم کی کھیتی میں کسان آج میں کسان آج اِن سهیوگی داوں کی نهیتی میں شامل ھیں ، ویکتی گئت کھیتی سے اِس سهیوگی دال کھیتی میں شامل ھیں ، ویکتی گئی ایسی اِن سهیوگی دال کھیتی میں 20 فیصدی آنہادی ادھک برتا ھے .

کھیتی آنیادک سپکاری ملتلیاں :-اِسمیں مجھولے کسان و پرانے زمیندار زیادہ شریک ہوئے. جو آج کے پہلے خود کاشٹ نہیں کرتھے آنکےلئے اِسمیں شریک ہونا ابھدا کی تھا۔ 16-10 اورکہیں کہیں ادھک کتمبوں کی اِیسی منتالیاں ہیں، کھاد' بیج آدی ساری کھیتی سمبندھی باتوں کا خیال مندلی کا ویوستھاپک منتل کرتا ہے . شامل نہیتی ہوتی ہے، اُتھادی کو تیں حصوں میں ہانتا جانا ہے . شامل نہیتی ہوتی ہے، اُتھادی کو تین حصوں میں ہانتا جانا ہے . (1) رزور فنذ' جو نئے مشھی سادھی و خویدلے کے کام

ाता है. (2) एक हिस्सा समासदों को ज्बीन, जानकर व ाधन के अनुपात में बांटा जाता है. (3) वीखरा हिस्सा चद्री के रूप में बंटता है. की पुरुष सब की समान चढ़री मानी गई है. शुरू में क्लाइन का आधा हिस्सा मीन के हिस्सेदारों के लिये चलग कर दिया जाता था. म्ल्स अब नये साधनों से उत्पादन बढ़ने लगा है. तब से मीन का हिस्सा (Land Share) कम किया जा रहा . मजदूरी का हिस्सा बढ़ाया जा रहा है, सहकारी द्लों ो अपेक्षा सहकारी उत्पादन मंडलियों में 15 फीसदी यादा उत्पादन हुआ है. चीन के प्राम-अर्थशाकियों के व्यनानुसार जमीन का हिस्सा घव धीरे धीरे घटता जायेगा. गैर वह दिन दूर नहीं जब लैन्ड शेयर खतम हो जायेगा ौर तब ही व्यक्तिगत जमीन पर श्रधिकार जमाये रखने का ोह किसान छोड़ देंगे. मगर आज सरकार इस दिशा में स्द्रवाजी करना नहीं चाहती. इसके लिये किसान खद जब क तैयार नहीं होता, तब तक धीरज घरने का चीनी ागुवाओं ने फ़ैसला किया है. एक लाख से ज्यादा ऐसी हकारो अलादन मंडलियां बन चुकी हैं.

संयुक्त स्वेती :—Collectivefarming

राज्य फार्म :—State Farm

इनकी संख्या आज बहुत कम है. क़रीब 250 से 300 युक्त खेती मन्डलियां हैं. अब , झोटे किसानों में संयुक्त ती की ओर उत्साह बढ़ने लगा है. उन्हें यह महसूस होने गा है कि जमीन का हिस्सा बांट देने से हमें मजदूरी धिक मिलेगी. यहां थोड़ा संघर्ष मम्मेले किसानों व धनी उसानों के साथ आता है. मैंने आगे बताया कि इस दिशा जल्दबाजी करने के लिये बीनी नेता तैयार नहीं हैं. जन- अपति फैनाकर ही सच्चे झान व प्रत्यच्च परिचामों के आर पर ही इस समस्या का हल किया जायेगा. आज तो हां संयुक्त खेती चल रही है वहां इन्न किसान इससे अलग हते हैं, तो भी उन पर दवाव नहीं डाला जाता.

सरकारी सहायता :—सरकार किसानों को और ह्योगी मन्डलियों को खेती के साधन खरीदने के लिये, होटी मोटी जल सिंचाई योजना बनाने के लिये, छोटी व लम्बी हस्तों का करजा देती है. ज्याज का दर 8-4 फीसदी से बादा नहीं होता. बड़े सरल तरीक़े से यह कर्जा किसानों क पहुँचाया जाता है. पीपुल्स बैंक (चीन की जनता बैंक) राखाओं द्वारा चार वर्ष में 600 करोड़ रुपये का कर्जा हसानों को दिया गया है. कोई भी किसान बड़ी सरलता से जी उठा सकता है. अकाल या कम फसज के मौके पर बैंक री की पूरी किस्त माफ कर देता है. बिशेषता यह है कि सल का निर्णय प्राम सभा करती है. प्राम सभा के फैसले रिशानीय सरकार (तहसील गवनंमेंट) इस मामले में श्वारी मानती है.

م و و الك حدد سيها منون كو زمان ، جالور و ماهي ع أريات مين بالله جالا هـ. (8) تيسرا حمه مودوری کے روپ میں بنتہ ہے استری پروش سبکیسمان مومورس مالي كلي هـ . شروع مين أتهادي كا أدعا حصة زمين کے مسلولوں کے لئے الگ الگ کر دیا جاتا تھا۔ کنتو اب نئے سادھنوں عه أتهام برمن الله م تب مه زمين كا جمع (Land @hare) كم كها جه رها هم سيكوى دابس كي أيبكشة سيكوى ألياس ملكاوس مين 15 نيمدي ورادة أنياس هوا ه. جين کے گرام ارتو شاستویوں کے کامنا نہسار زمین کا حصہ اب دعورے معور عليه جائية . أور وه دي دور تهيل جب ليند شيئر عَمْم هو جاليك أور تب هي ويكتي كت زمين ور أنهيكا جماله وكها كا موته كسان جهور ديلك . حكو أب سركار اس دها مهن جدیاتی کرنا نہیں چاہتی . اِس کے لئے کسان خود جب تک قیار ٹہیں ہوتا تب تک دعورے دھرنے کا چینی اگراوں نے فيصاع كيا هـ . أيك لائه سه زيادة أيسى سبكاري أتيادين مندليان بن چي هيں .

Collective Farming - المنابعة كالمنابعة المنابعة المنابع

راجه نارم: State Farm-: راجه

انبی سنعها آج بہت کم ہے قویب 250 سے 300 سبلیکت بہتیکت کہ نہیں اب چھوٹے کسانوں میں سنیکت کیے تی آور آنساء بوہنے لگا ہے آنہیں یہ محسوس ہونے لگا ہے کہ رمین کا حجت باقت دینے سے ہمیں مزدوری ادھک ملیکی ، پیار تیوڑا سنگوش مجھولے کسانوں و دھنی کسانوں کے سانے آنا ہی سانے آگے بتایا کہ اِس دشا میں جلیبازی کرنے کے لئے چینی تیبتا تیار نہیں ہیں ، جن جاگرتی پھیلا کر ھی سچے گیاں و برتیکھی پریناموں کے آدھار پر ھی اِس سمسیا کا حل کیا جائیگا ، پرتیکھی پریناموں کے آدھار پر ھی اِس سمسیا کا حل کیا جائیگا ، آگے تو جہاں سنیکت کیپٹی چل وھی ہے وہاں کتھ کسان اُس سے آنگ رہتے ہیں وال پر دہاؤ نہیں ڈالا جاتا ،

سرکاری سہایتا سرکار کسائری کو اور سہبوگی منتایوں کو کھیتی کے سادھی خریدئے کے اٹنے' چہوٹی موٹی جل سنچائی یہجیا بائٹے کے لئے' چہوٹی و لیبی قسطوں کا قرضہ دیتی ہے ، بیاج کا در ہے قاندی نیصدی سے زیادہ نہیں ھوتا، بڑے سرل طریقے سے یہ قرضہ کسائرں تک پہرنچایا جاتا ہے . پیپلس بینک (چین کی جانتا بینک (پیلس میں 600 کررز کی جانتا بینک اورث میں کسان بڑی رریئے کا قرضہ کسائوں کو دیا گیا ہے . کوئی بھی کسان بڑی سولتا سے قرضہ آئیا سکتا ہے ، اکال یا کم فصل کے موقع پر بینک پریمی قسط معاند کو دیتا ہے . وشیشتا یہ ہے که فصل کا نیصلے کو استہائیہ نوصل کا نیصلے کو استہائیہ سرکار (تحصیل گرنمات) اس معاملے میں آخوی سرکار (تحصیل گرنمات) اس معاملے میں آخوی

زمهن پر آیک هی پرکار کا ٹیکس لیا جاتا ہے " یہ ٹیکس انہادی کے انہادی کے انہادی کے روپ میں اکتبا کیا جاتا ہے ۔ یہ ٹیکس اُنہادی کے 7 سے 10 نیمس اُنہادی کے 7 سے 10 نیمس تک ہوتا ہے ۔

چینی گلال کی جہائی: کی جین کے بیومی کی جین کے بیومی کمسٹی آسکے پربناموں پر سے بھی ہو سکتی ہے ۔ چین کے بیومی سمجھار آندولی کا کیا نتیجہ ہوا' آسے سمجھنے کے لیئے ہیں بہتھار آندولی کا کیا نتیجہ ہوا' آسے سمجھنے کے لیئے ہیں گئی میں چین گئی میں کی جانچ کرنی ہوئی ۔ جین چین گئی میں گئی کر ابادی 1542 ریکیتوں کی ہے ۔ کل زمین 4800 ماو یعنی 715 ایکڑ ہے . 20 زمیدلر' 22 کل زمین 60 مجھولے کسلن' 110 غریب کسان اور 120 کیست مردور ہیں ، بنتوارے سے پہلے 95 فیصدی زمین نور 10 کیست مرف 5 فیصدی زمین پر گذارا کرتے تھ ، 50 فیصدی مکل اور 10 فیصدی کیمیت کے ساتھن ہی ۔ 10 فیصدی مکل اور 10 فیصدی کیمیت کے ساتھن ہی ۔ 24 کلمیس کے پاس ہی تھ ۔ فیصدی کیمیت کے ساتھن ہی ۔ 42 کلمیس کے پاس ہی تھ ۔ فیصدی کیمیت رمین ماں انتشاء بدل گیا ، سب کو 60 کوماؤ کے حساب فیصدی ریکئی زمین مای ، ادھک مکل و سادھنوں کا بنتوارہ بھی پر زمین کسان میں دیا گیا ' بنتوارے کا سارا کام گرام سبھا نے درمین کسانوں کے بیچ کیا گیا ' بنتوارے کا سارا کام گرام سبھا نے درمین کسانوں کے بیچ کیا گیا ' بنتوارے کا سارا کام گرام سبھا نے درمین کسانوں کے بیچ کیا گیا ' بنتوارے کا سارا کام گرام سبھا نے

معتی سے پہلے بہاں 1 ماؤ زمین میں 200 کیٹی 11/4 رول اناج پیدا هوتا تها ، بنظرارے کے بعد 1952 میں ایک ملو زمین میں 340 کیٹی اناج ہوا . 1953 میں 469 كيتي ، 1951 مين 7 سهكاري دل ته ، 1962 مين 18 بنه . 1903 میں کھیتی آنپادک منڌلی کی استھاپنا کی گئی، اسس 34 كلمب شريك هوال . منذلي نے 7 مكل بشور كے ليل بنائے ا 12 مکل غله جمع کرنے کے گردآم کے لیئے بنائے . مکتی سے پہلے گاؤں میں 7 کس تھے' مکتی کے بعد آج کانے کس ھیں . 7 وره سے اوپر کے بنچے اسکول میں پڑھتے ھیں " راتری ورگ میں یوا اور ہوڑھے بھی • ایک کاؤں سبھا ھے، جو هر سال نشجت سدسيون دوأرا كان كا كاروبار جالتي هـ . كان کا سارا کاربار کاؤں سبھا ھی کر لیتی ھے . زمینداروں کو گرام سمها میں ووت دیدے کا ادھیکار نہیں ہے؛ کنتو گاؤں سبھا ایسا ادهیکار دے سکتی هے جب آسے یه محسوس او که یه ویکتی سماج کے هت میں هی کام کريگا ، جين چين گاؤں ،سهائے 22 میں سے 10 زمینداورں کو ایسا ادیقیکار دے رئیا ہے .

سہکاری آتہادن کھیتی مندلی کے پاس 1400 ماؤ زمین ہے۔ 2720 ماؤ ہے۔ 180 ماؤ زمین ہے۔ 2720 ماؤ ربیتی گت کسانس کے پاس ہے ۔

گاؤں میں ایک استری مندل ہے. وہ مندل کاؤں کی استری میں ایک استریوں کو استریوں کو پڑھائے کا کام مندل کرتا ہے. چھوٹے گھریلو اُدیوگوں کی نطبم بھی یہی مندل دیتا ہے. سینا میں جس کے بعل گئے ھیں کئے ھیں گئے ھیں گئے ھیں گئے ھیں گئے ھیں

जमीन पर एक ही मकार का टेक्स लिया जाता है. यह टेक्स जनाज के रूप में इकड़ा किया जाता है. यह टेक्स उत्पादन के रूप में इकड़ा किया जाता है. यह टेक्स उत्पादन के 7 से 10 की सदी तक होता है.

चीनी गांव की मांकी:—किसी भी चीज की सक्वी करीटी कार परियामों पर से ही हो सकती है. चीन के मूमि सुनार जांदोलन का क्या नतीजा हुजा, इसे समझने के लिये हमें चीन के देहातों की जांच करनी होगी. जेनचेन गाँव में 332 कहु जान की कुल जावादी 1642 व्यक्तियों की है. कुछ जान 4300 मार यानी 715 एकड़ है. 20 जमीनदार 22 माजदार किसान, 60 ममोले किसान, 110 ग्रीव किसान जीर 120 खेत मजदूर हैं. बंटवार से पहले 95 की सही जमीन 45 कुटुम्बों के पास थी. बाकी के 290 कुटुम्ब सिर्फ 5 की सदी जमीन पर गुज़ारा करते थे. 50 की सदी मकान जोर 10 की सदी खेती के साधन भी 42 कुटुम्बों के पास ही थे. बंटवार के बाद सारा नक्शा बदल गया. सब को 9.6 मार के हिसाब से की व्यक्ति जमीन मिली. अधिक मकान व साधनों का बंटवारा भी बेजमीन किस वों के बीच किया गया. बंटवार का सारा काम प्राम

समा ने ही पूरा किया. मुक्ति से पहले यहाँ 1 माउ जमीन में 200 केटी: 1 1/4 रवल अनाज पैदा होता था. बटवारे के बाद 1952 में एक साद जमीन में 340 केटी बनाज हुआ. 1953 में 489 केटी. 1951 में 7 सहकारी दल थे. 1952 में 18 बने, 1943 में खेती उत्पादक मन्डली की स्थापना की गयी. इसमें 34 इट्टम्ब शरीक हुए. मन्डली ने 7 मकान पश्चओं के लिये बनाबे, 12 मकान रास्ला जमा करने के गोदाम के लिये बनाये. मुक्ति से पहले गाँव में 7 कमरे थे, मुक्ति के बाद आज 22 कमरे हैं. 7 वर्ष से उपर के बच्चे स्कूल में पढ़ते हैं. रात्री वर्ग में जवान और बूढ़े भी. एक गाँव सभा है जो हर साल निश्चित सदस्यों द्वारा गाँच का कारोबार चलाती है, गाँव का सारा कारोबार गाँव सभा ही कर लेती है. जमीनदारों को प्रामसभा में बोट देने का अधिकार नहीं है. किन्तु गाँव समा ऐसा अधिकार दे सकती है, जब उसे यह महसूस हो कियह न्यक्ति समाज के हित में ही काम करेगा, जेनचेन गाँव सभा ने 22 में से 10 जमीनदारों को ऐसा अधिकार वे रखा है.

सहकारी उत्पादन खेती मन्डली के पास 1400 माड जमीन है! सहकारी दलों के पास 180 माड जमीन है. 2720 माड व्यक्तिगत किसानों के पास है.

नौंद में एक सी मंडल है. वह मंडल गाँव की की सुधार मान्दोलन को संवाजन करता है. निरक्षर कियों को पढ़ाने का कास मंडल करता है. छोटे छोटे घरेलू उद्योगों की दालीम भी यही मंडल देता है. सेता में जिन के पति गये हुए हैं, या जिनके बेटे सेना में गये है पैसी परिनमों भीर माताओं का बोक इसका करने की

जिन्मेबारी भी इस संस्था की होती है.

जमीन के बारे में धव कोई मत्मवा नहीं है, और न अब सरकल इन्सपेक्टर या पटवारी की ही जकरत है. सारा काम मामसभा करती है. कर भी मामसभा ही सरकारी गोदामों पर पहुंचाती है. गाँव के सब छोटे छोटे मामदे मामसभा में निपट जाते हैं. पुलिस के बारे में पूछते ही सोग कहते हैं कि अब पुलिस क्यों चाने लगी। अब यो चौंग की सरकार भाग चकी है.

जमीनवारों को शुरू शुरू में कुछ बेचेनी रही। अब वे भी जानंद से निर्वित होकर रहने लगे हैं। मेहनत मराष्ट्रकत करने लगे हैं. अब उन्हें यह विश्वास हो गया है कि हम भी अपने पैरों पर खड़े हो सकते हैं. सब से बड़ी बात यह है कि अब जहाँ वे हैं. वहाँ से उहें कोई सरकार नीचे नहीं फेंक सकती. अब वे भरावल पर हैं जहाँ से वे कहीं नहीं गिर सकते. मेहनत की रीटी आनंद की धेरक होती है, इसिलये अब चीन के जमीनदारों में एक नया उत्साह भीर भारत विश्वास देखने को मिलता है. जमीनदार, साधा-रण किसान, भनी किसान, खेत मजदूर सब आनंदपूर्वक अपने दिन बिता रहे हैं. ग्रुल्क किस राह पर जा रहा है, जाना बाहता है, इसका सब को ज्ञान है. यह बहुत बड़ी बात है, जो इसने चीन के सभी देहातियों व कामदारों में देखी. चीन की जुशहाली का मुख्य कारण एक ही है, जौर बह है, एक ध्येय, एक स्वार्थ. स्वार्थों की विभिन्नता ही संधर्षों को जन्म देती है. जहाँ स्वार्थ समान होता है, एक होता है, बहाँ सब कोई एक ही दिशा में पूरे जोर से कोशिश करते हैं. समाज के सुख की यह गुहचाबी है.

भूमि सुधार आंदोलन का फलिसार्थ यह आया कि 30 करोड़ लोगों को काम मिला. 11 करोड़ 0 लाख एकड़ जमीन का समान बंदवारा हुआ जो चीन की कुल काबिल कारत जमीन का आधा हिस्सा है.

14 करोड़ मन रास्ता जो कई तरह के लगानों के रूप में अमीनदार बसूल करते थे, यह किसानों के घर में बचा.

किसानों को मेहनत करने के साधन भिले. अनाज अगाने लायक जमीन मिली, रहने के लिये घर मिले.

रास्ते के दाम तय करने के काम सट्टे बाजों के हाथ से निकत्तकर किसान पंचायतों के हाथ में आया, यह भी एक महत्वपूर्ण बात है जिसने उत्पादन के बढ़ाने में योग दिया है.

फालत् समय में चलने वाले प्रामीण धन्धों व गृह उद्योगों के लिये बाज़ार तय कर दिया. न उसे मिल उद्योग के साथ होड़ जेने की जरुरत है, और लाजारी से अपना ایسی پتلهرس اور ماتاوں کا بوجھ هلکا کرنےکی ومعواری بھی اِس سنستھا کی هرتی هے .

زمین کے بارے میں اب کوئی جھاڑا نہیں ہے اور نہ اب سوکل انسیاح یا پاتواری کی ھی ضرورت ہے سارا کام گرام سیا کرتی ہے ۔ سارا کام گرام سیا کرتی ہے ۔ کر بھی گرام سیا ھی سرکاری گرداموں پر پیونچاتی ہے ۔ گرن کے سٹ چیوٹ چیوٹ جھاڑے گرامسیا میں نہیں جاتے ھیں ، پواس کے بارے میں پوچھتے ھی لوگ ئیتے ھیں کہ اب بولس کیوں آنے لگی ، اب تو چانگ کی سرکار بھاگ چکی ہے .

ومهدارس کو شروع شرع میں کچھ بےچنی رهی اب وے بھی اُند سے نشجینت ہو کر رہنے لکے میں . محلت مشقت كرني لكم هيل . أب أبهيل يه وشواس هو كيا هم كه هم بھی اُپنے پیروں پر کہڑے هو سکتے هیں . سب سے ہڑی بات یہ ہے کہ اب جہاں وے هیں وهاں سے اُنہیں کوئی سرکار نیچے نہیں بھینک سکتی اب رے دوراتل پر ھیں جہاں سے وے کہیں مہیں گر سکتے ، مصنت کی روثی آنند کی یریرک ہوتی ہے، اسائے اب چین کے زمینداروں میں ایک نها اتساه اور اتم وشواس ديمهني كو ملكا هي زميندار سادهاري کسان دهنی کسان کهیت مزدرر سب آنند پرروک اینے دن بنا ره هيس ملك كس راه برجا رما هـ؛ جانا چامنا هـ؛ اسكا سب كو گيان هے. يه بہت برس بات هے؛ جو هم نے چهن كے سبهی دیهاتیوں و کامداروں میں دیکھی، چین کی خوشحالی کا معهد ایک هی هـ؛ اور وهه؛ ایک دهیه؛ ایک سوارته. سوارته کی وبهنتا هي سنگهرشوں کو جنم ديتي هے . جہاں سوارته سماري هرتا هے؛ ایک هرتا هے؛ وهال سب كوئي ایک عى دشا ميں <u>پور ـــ</u> زور سے کوشھ کرتے ھیں . سماج کے سکھ کی یہ گرو چاہی ہے ،

بهومی سدهار آندوان کا پهلیتارته یه آیا که 80 کرور لوگوں کو کام ملا . 11 کرور 50 لاکھ ایکر زمین کا سمان بنٹورہ ہوا جو چین کی ال فاہل کاشت زمین کا آدھا حصہ ہے ۔

14 کروز من غله جو کئی طرح کے لگانوں کے روپ میں زمین ارموال کرتے تھے کی کسانوں کے گھر میں بیچا .

کسانیں کو محمنت کرنے کے سادھن ملے، آناج آگانے لائق زمین ملی' رہنے کے لئے گھر ملے .

علے کے دام طے کرنے کے کام ستے بازوں کے ہاتھ سے نکل کو کسان پنچایتوں کے ہاتھ میں آیا' یہ بھی ایک مہتوپوروں ہات ہے جسنے آنیادی کے بڑھانے میں یوگ دیا ہے .

فالتو سے میں چلنے والے گرا میں دھندھوں و گرہ آدیوگوں کے لئے بازار طے کردیا ، آسے مل آدیوگ کے ساتھ ھوڑ لینے کی ضرورت ھے اور نہ الچاری سے اپنا माल बेबने की. वस वर् बनाता बला जाये। सरकार व समाज क्से योग्य क्रीमतों पर खरीद लेने के लिये बाध्य हैं. इस बीज ने अनेक ग्रीब बेकार कारीगरों में जान फूँक दी. जिसे हमेशा अपनी कला बेबने के लिये दर दर घूमना पढ़ता था और बाखीर में सस्ती क्रीमतों पर बेबने के लिये मजबूर होना पढ़ता था, वह बात बिलकुल खतम हो गयी. इससे ग्रामीया घन्यों में बढ़ोतरी हुई.

यह सब बीजें हैं जो किसी भी समाज के सुसी ब दुखी होने की बात बताती हैं. यह सब बीज होते हुए भी बीन स्वर्ग नहीं, बना है. उसे अभी काफी लम्बा सफ्र तय करना है. इतना ही हम कह सकते हैं कि वह आज टीक दिशा में तेजी से चला जा रहा है. مال بیرچنے کی . یس وہ بنکا چلا جائے . سرکار و سماج أست وگھ قیمترں پر خرید لینے کے لئے بادھیہ ہے اس چیز انک خریب ہے کار کاریکروں میں جان پیوٹک دی . جسے سیشہ اپنی ظا بیرچانے کے لئے در در گیرمنا پڑتا تیا اور آخیر بس سستی قیمتوں پر بیرچنے کے لئے مجبور ہونا پڑتا تیا کا بات یاکل ختم ہوگئی ، اِس سے گرامین دھادھوں میں بھوتری ہوئی ،

یہ سب چھڑیں ھیں جو کسی بھی سماج کے سکبی و دہھی اور کے سکبی و دہھی اور کی بات بلاتی ھیں ، یہ سب چھڑ ہوتے ھوٹے بھی جان اورک نہیں بنا ھے ، آسے آبھی کانی لمبا سنر طے کرنا ھے ، اونا لیے ، میں توزی سے چلا ہے ، میں توزی سے چلا میا میں توزی سے چلا میا میں توزی سے چلا میا ھے ،



700 PAGES, 32 ILLUSTRATIONS 2 COLOURED MAPS

"CHINA TODAY"

PRICE

BY PANDIT SUNDARLAL

Rs. 780

A vivid narration of the glorious and wonderful achievements of New China...A picture of China which is both convincing and authentic...the best book that has come out so far on New China in the English language ...the most objective in approach and comprehensive in treatment.

—National Herald, Lucknow.

Highly informative...throws vivid light on conditions obtaining in that country...s book which deserves to be widely known —Leader, Allshabad.

Encelopsedic...characterized by scute observation of detail as well as by...instinctive grasp of the fundamental perspective...To read it is veritably like accompanying the Mission on its thrilling voyage of discovery in New China.

—Blitz, Bombay

A mine of information which gives a picture of China as nothing else dose...the best guide to New. China...Those who would like to understand what is happeing in New China can do not better than to study it.

—Bharat Jyoti, Bombay

The wealth of information it gives on China new and old...makes fascinating reading...is comprehensive and informative and must therefore interest all students of public affairs.

—Indian Express. Madras

China Today is an eloquent tribute to his (Pandit Sundarlal's) shrewd understanding of men and matter... brings to light the mighty endeavour of the Chinese People to rebuild their great nation on firm new foundations for a tomorrow which is theirs.

—Vigil, Delhi.

مهاتما بهعوان دين

ENGLES ENGLES ENGLES EN ENGLES

महारमा भगवानवीन

इच्छुक थे जिसने भारत के महात्मा गांधी. जैसे कोई गांधी

जी से यह आशा नहीं कर सकता कि वह कभी कोई ऐसी

बात कहेंगे जिससे कोई बादमी आफ़त में पढ़ जाय, वैसे

ही बाइन्सटाइन महाशय से ऐसी आशा नहीं की जा

सकती, गांधी जी दुनिया को आफत में हालें, क्या दुनिया

का कोई भी आदमी ऐसा सोच संकता है ? आइन्सटाइन के बारे में भी ऐसा नहीं सोचा जा सकता. पर, सीधे

ना सीधे बाइन्सटाइन के सापेक्ष्य सिद्धान्त ने बमरीका को

पटम बम बनाने के लिए प्रेरित किया. लेकिन एटम बम के

बन जाने पर बाइन्सटाइन ने कोशिश की कि उसका

सच्चे अथों में पलबर्ट आइन्सटाइन शान्ति के इतने

مع أرتين ميں أيابرت أنستائن شائتی كے إناء إجهك على بهتاء بهارت كے مهاتا كاندهی . جوسے كوئى الندهی جی سے بهتاء بهاں فر سكتا كه رة كبهى كوئى أيسى بات كبهاكے جس سے كوئى أدمى أنت ميں بر جائے ويسے هى أننستائن مهاشئے سے كوئى أشا نهيں كى جا سكتى . كاندهى جى دنيا كو أنت ميں دائيں كيا دائيا كا كوئى بهى أدمى أيسا سوچ سكتا هے ؟ أنستائن كے بارے ميں بهى أيسا نهيں سوچا جا سكتا . پر أنستائن كے بارے ميں بهى أيسا نهيں سوچا جا سكتا . پر أنستائن كے بارے ميں جانے پر ايكن أيتم بم كے بن جانے پر أنستائن نے كوشش كى كه أسكا أستعمال نه هو پر رة روك النستائن نے كوشش كى كه أسكا أستعمال نه هو پر رة روك نه يائے .

इस्तेमाल न हो, पर वह रोक न पाये.

इन शान्ति के देवता आइन्सटाइन का सापेश्च सिद्धान्त
बहुत बड़ी चीज है. उस पर किताबों पर किताबें लिखी जा
चुकी हैं. उस सिद्धान्त के ठीक-ठीक जानकार इने-गिने हैं.
किर भी गियात के एक समीकरण में उनके सिद्धान्त का जो
निचोड़ है, वह ऐसा जरूर है जो मामूली आदमी की
समम में आ जाय. यही वह निचोड़ है जिसने एटम बम को
जन्म दिया. इसी ने शान्ति के दूत एलबटे आइन्सटाइन की
शान्ति की सफेद चादर पर एक धव्वा डाल दिया.

اِن شائتی کے دیوتا آنستائی کا ساپیکش سدھانت بہت ہری چھو تھ ۔ اُس پر کالبوں پر کتابیں لکھی جا چکی ھیں ۔ اُس سمالت کے ٹھیک ٹھیک جانکار اِنے گنے ھیں ، پھر بھی گنرت کے ایک سمیکرں میں آئے سدھانت کا جو نچور ھے وہ ایسا ضوور ھے جر معمرلی آدمی کی سمجھ میں آجائے ، یہی وہ نحجور ہے جسنے ایلم ہم کو جام دیا ، اِسی نے شائتی کے دوت اطهرت آئلستائی کی شائتی کی سفید چادر پر ایک دھبه تائل دیا ،

उस समीकरण का खुलासा यह है:-

أس سيهكرن كا خلاصة يه هے:-

जितनी मात्रा है यानी जितनी कोई चीज है, अगर उसको प्रकाश की चाल के वर्ग से गुएग किया जाय तो जो गुरानफल होगा, उतनी ही शक्ति उस चीज से पैदा होगी. वूसरे शब्दों में इसे यों समिमिये, एक प्राम मात्रा में नी करब अर्ग की शक्ति छिपी रहती है. यानी एक प्राम पदार्थ, जो बिजली पैदा करेगा, वह ढाई करोड़ किलोवाट खंडों के बराबर होगी. किलोवाट को साफ-साफ सममने के लिए इतना कहना काफी है कि लखनऊ का रेडियो स्टेशन पचास किलोबाट ताकृत से चलाया जाता है. इसी से आप अंदाजा लगा सकते हैं कि आइन्सटाइन ने दुनिया के लोगों के हाथ शक्ति के कितने बड़े खजाने की कोठरी के ताले की कुंजी सींप दी.

جننی ماتوا ہے یعنی جننی کوئی چیز ہے' اگر اسکو پرکاشی کی چال کے ورگ سے گنا کیا جائے تو جو گنزں بھل ہوگا' اُتنی میں شکتی اُس چیز سے پیدا ہوگی ، دوسرے شہدوں میں اِسے پوں سنجیئے' ایک گرام ماتوا میں نو کھرنے ورگ کی شکتی وقد تھائی گروز تلووات گھنٹوں کے برابو ہوگی ، کلووات کو صاف صلف سمجھنے کے لئے اِتنا کہنا کانی شے کہ لکھنٹو کا ریڈیو اسٹیشن بھاس کلووات طانت سے چالیا جاتا ہے ، اِسی سے آپ اندازہ بھی کہ آئنسٹائن نے دئیا کے لوگوں کے ھاتھ شکتی کے کلئے بڑے خوالے کی کوتھری کے قالے کی کلنجی سوئپ دی ،

अमरीका ने इसी कुंजी से ताला खोला और जापान पर पटम बम गिरा कर उस लढ़ाई का अन्त कर दिया जो उस लड़ाइयों में सबसे बड़ी थी जिनका इतिहास में जिक आवा है.

امریت نے اِس کنجی سے تالا کھولا اُور جاپان پر ایتم ہم گرا کر آئی لوائی کا انت کر دیا جو اُن لوائھوں میں سب سے بری تھی جنکا اِنہاس میں ڈکر آنا ہے ، महुत से लोगों ने लड़ाई की विजय का जानन्द माना होगा, पर अमरीकी आइन्सटाइन का दिल तो धक रह गया होगा.

आइन्सटाइन जैसे आद्मियों को किसी देश का निवासी कहना भला नहीं मालूम होता. वे दुनिया भर को प्यार करते थे और सारी दुनिया उनका आदर करती है. आइन्सटाइन थे तो जर्मनी निवासी, पर न जाने क्यों हिटलर को भालूम हुआ कि वह उनकी आँख का काँटा है. दूसरी जड़ाई छिड़ने पर उनका जर्मनी से देश निकाला हो गया और वह अमरीका पहुंच गये. कुछ वर्षों से वह अमरीका वासी बन गये थे. इसलिये उन्हें अमरीकी कहना पड़ता है.

आइन्सटाइन ने अपने जीवन से यह सिद्ध कर दिया कि विज्ञान की सड़क की आखिरी मंजिल वही है जो धर्म की सड़क की. विज्ञान सत्य की खोज में लगता है. यही हाल धर्म का है. गाँधी जी के शब्दों में यदि सत्य परमात्मा है, तब यह कहा जा सकता है कि हर विज्ञानी परमात्मा की खोज में लगा हुआ है.

अपने को हिम्मत के साथ महात्मा कहने वाले बर्नार्डशा का तो यह कहना है कि 'जिन लोगों ने जगत का भेद खोला, आइन्सटाइन उनमें से एक थे' और शा ने ऐसे कुल तीन आदमी गिनाये हैं—एक पाइथागोरस, दूसरे न्यूटन, तीसरे आइन्सटाइन. (हमारे लिये इनके प्यारे नाम ये हो सकते हैं—बाबा पीथागोरस, महात्मा नवतन, महर्षि अंशतनु.) एशिया आम तौर से और भारत छ।स तौर से अपने नायकों को भगवान कहने लगता है, अवतार कहने लगता है. अगर कहीं आइन्सटाइन ने हमीरे यहाँ जन्म लिया होता तो क्या उनकी गिनती अवतारों में नहीं हुई होती ?

आइन्सटाइन अपने समय के ऐसे प्रकाश थे जो उन आँखों में चकाचौंध डाल देते थे जो उल्टी राह चल रही हाती थीं. तभी तो वह जमनी से निकाले गये और अमरीका में बंदी रहे, सीधे अथीं में वह बंदी भले ही न हों. जितनी हमधीनता उन्हें मिलनी चाहिये, उतनी तो अमरीका उन्हें दे ही नहीं सकता था, क्योंकि अमरीका के पास उतनी स्त्राधीनता है ही नहीं. पर दुख तो यह है कि उनको उतनी भी स्वाधीनता प्राप्त नहीं थी जितनी कि एक माम्ली अमरीकी को है या जितनी हमें-तुम्हें भारत में हासिल है.

अमरीका में अंचे दर्जे का विज्ञानी होना और परा-धीनता की कोठरी का बंदी होना एकार्थ वाची है. हो सकता है अमरीका वाले अपने देश के विज्ञानियों को सबसे बड़ा सममते हों और उन्हें आदमियों में हीरा मानते हों, पर इससे क्या ? हीरा बनना कौन अच्छी बात है ? हमारे देश के संत कबीर का कहना है:—

> हीरा पाय गांठ गठयायो, बार-बार वाय खोले क्यों ?

بہت سے لوگوں نے لڑائی کی وجثے کا آنان مانا ہوگا پر امریکی آئنسٹائن کا دل تو دھک ردگیا ہوگا۔

آئنستائن جیسے آدمیوں کو کسی دیش کا نواسی کہنا بھلا نہیں معلوم ہوتا ۔ وے دنیا بھر کو پیار کرتے تھے اور ساری دنیا انکا آدر کرتی ہے ۔ آئنستائن تھے تو جرمنی نواسی' پر نا جانے کیوں ہٹلر کو معلوم ہوا کہ وہ آئکی آئے کا کانتا ہے . دوسری لوائی چھڑنے پر آئکا جرمنی سے دیش نکالا ہوگیا اور وہ امریکہ پہونچ گئے ۔ کچھ ورشوں سے وہ امریکہ واسی بن گئے تھے ، اِسلئے آئیس امریکی کہنا پرتا ہے ۔

آننستائی نے اپنے جیری سے یہ سدھ کر دیا کہ وگیاں کی سڑک کی آخری منزل وہی ہے جو دھرم کی سڑک کی ، وگیاں ستیہ کی کھوے میں لکتا ہے ، یہی حال دھرم کا ہے ، گاندھی جی کے شہدوں میں یدی ستیہ پرماتما ہے کہ تب یہ کہا جا سکتا ہے کہ ھر وگیائی پرماتما کی کھوے میں لگا ہوا ہے ،

اپنے کو همت کے ساتھ مہاتما کہنے والے برنوت شاکا تو یہ کہنا ھے کہ 'جس لوگوں نے جکت کا بہود کھولا' آئنسٹائی اُن میں سے ایک تھے؛ اور شائے ایسے کل تھی آدمی گنائے ھیں۔۔ایک یائھتھا گورس' دوسرے 'نبوتی' تیسرے آئنسٹائی . (ھمارے لئے الکے پیارے نام یہ ھو سکتے ھیں۔۔بایا پیتھا گورس' مہاتما نوتی' مہرشی انشتنو .) ایشیا عام طور ساور بھارت خاص طور سے آپ نایکوں کو بھکواں کہنے لکتا ھے، اگو کہیں آ نسٹائی نے ھمارے یہاں جنم لیا ھوتا تو کیا آئکی گنتی اُوتاروں میں فہیں ھوئی ھوتی ؟

آننستائی اپنے سمئے کے ایسے پرکاش تھے جو اُن آئکھیں میں چکاچوندھ دال دیتے تھے جو اُلٹی راہ چل رھی ھوتی تھیں۔ تبھی تو وہ جرمنی سے نکانے گئے اور امریکه میں بندی رھ' سیدھ ارتھیں میں وہ بندی بھلے ھی نہ ھوں ، جتنی سوادھینتا اُنھی منی نہیں سکتا تھا' کیونکه امریکه کے پاس اُننی سوادھینتا ہے ھی نہیں ، پر دکھ تو یہ ہے کہ اُنکو اِتنی بھی سوادھینتا ہے ھی نہیں تبھیں جہنی که ایک معمولی امریکی کو ہے یا جتلی ھمیں تبھیں بھرات میں حاصل ہے۔

امریکہ میں اُونچے درجے کا وگیائی ہونا اور پرادھیلتا کی کوتھری کا بندی ہونا ایکارتہ واچی ہے ۔ ہو سکتا ہے امریکہ والے اپنے دیش کے وگیائیوں کو سب سے بڑا سمجھتے ہوں اور اِنھیں اُدمیوں میں ہیرا مائتے ہوں' پر اِس سے کہا ؟ میرا بننا کون اُچھی بات ہے ؟ ہمارے دیش کے سنت کبیر کا کہنا ہے۔۔

هیرا پائے کانٹھ کٹھیایو ا بار بار وائے کھولے کیوں آیا ठीक इसी तरह अमरीका वाले अपने विज्ञानियों को गांठ गठयाये रखते हैं.

21 मई की वाशिंगटन की खबर है कि एलवर्ट आइन्सटाइन एक विल यानी वसीयत करके छोड़ गये हैं. उस बिल का एक्जीक्यूटर यानी आमिल उन्होंने मिस्टर आंटोनेयन को बनाया है. ओटोनेथन न्यूयार्क युनीवर्सिटी में प्रोफेसर हैं. बिल को पूरा करने के लिए ओटोनेथन को एक बार यूरोप जाना जरूरी है. ओटोनेथन ने यह सब बातें लिख कर अमरीका की सरकार को यूरोप के पासपोर्ट के लिए लिखा. अमरीका की स्टेट डिपाटेमेंट ने पासपोर्ट देने से इस बिना पर इन्कार कर दिया कि ओटोनेथन किसी जमाने में जर्मन कम्यूनिस्ट पार्टी के मेम्बर रह चुके हैं और अब भी वह कम्यूनिस्ट विचारों से सहानुभूति रखते हैं.

प्रोफेसर थोटोनेथन ने कहा है कि इस इन्कार के कारण वह स्वर्गीय थाइन्सटाइन की वसीयत को पूरा नहीं कर सकते. (21 मई के .फी प्रेस जर्नल से)

अमरीका खास तौर से, दुनिया के और देश आम तौर से अपने उन्ने दर्जें के विज्ञानियों के साथ या ज्ञानियों के साथ कैसा बर्ताव करते हैं, इसे हमारे पाठक अच्छी तरह समम लें. यह आज़ाद कहलाने वाले मुल्क कितने आज़ाद हैं और आज़ादी के कितने गहरे पानी में हैं, इससे पता लग सकता है.

आइन्सटाइन की बसीयत के साथ जब यह व्यवहार हो रहा है तो आइन्सटाइन के साथ अमरीका का क्या व्यवहार रहा होगा, इससे अनुमान किया जा सकता है.

घ्या और हिंसा की नींव पर खड़ा शक्ति का महल हमारी राय में सदा काँपता हुआ मिलेगा. इसके विपरीत प्रेम या ऋहिंसा की नींव पर खड़ा शक्ति का महल स्थिर श्रीर श्रटल मिलेगा, परोपकार में लगा मिलेगा, सबका शरण देता मिलेगा, हिंसक शेर बेहद डरपोक होता है: पत्ते की खड़खड़ाहट से भागता है. जैसे वह शिकार की ताक में रहता है, वैसे ही वह यह भी सममता है कि कोई उसकी ताक में है. इस लिये वह डरता है और सतर्क रहता है. इसके विपरीत ऋहिंसक प्राणी कम डरपोक होते हैं. जितने अंशों में वह दूसरों को सताते हैं, उतने ऋंशों में वह भी डरपोक सिलेंगे. हमने हाल ही में किसी पत्र में पढ़ा है कि एक श्रादमी का यह श्रनुभव है कि कैसा ही जंगली जानवर क्यों न हो, श्रगर कोई उसके पास निडर होकर प्रेम-भाव से जायगा तो वह जानवर उसे कभी नहीं सतायेगा, उत्टा प्यार करने लगेगा. अमरीका, जो इतना ढरा हुआ है (अगर ऐसा नहीं होता तो क्या अपने विज्ञानियों के साथ ऐसा व्यवहार करता ?) तभी तो उसे अपने देश में डर

الهک اِسی طرح امریکه والے اپنے وگیالیوں کو کالم کالها کالهائے دوران کالمائے کالهائے ک

ایک وقی معنی کی ولشنگان کی خور هے که ایلبرت آنستائن ایک وقی بعنی وصفت کر کے چور گئے هیں اس ول کا ایکویکھوٹر یعنی عامل آنھوں نے مستر اوٹونیتھی کو بنایا هے اوٹونیتھی نھویارک یونیورستی میں پرونیسر هیں ول کو پورا کرنے کے لئے اوٹونیتھی کو ایک باز یورپ جانا ضروری هے اوٹونیتھی نے یہ سب باتیں تکھکر آمریکہ کی سرکار کو یورپ کے پاسپورت کے لئے لکھا امریکہ کی استیت تیارتمینت نے پاسپورت دینے سے اِس بنا پر اِنکار کر دیا که اوٹونیتھی کسی پاسپورت دینے سے اِس بنا پر اِنکار کر دیا که اوٹونیتھی کسی پاسپورت دینے میمبر دی چکے هیں اور ایک میمبر دی چکے هیں اور ایک بھی وی کمیونست وچاروں سے سہانبھوتی رکھتے هیں اور

پرونیسر اوڈونیتھی نے کہا ہے کہ اِس اِنکار کے کارن وہ سررگیہ آننسٹائن کی وصیت کو پورا نہیں کر سکتے . (21 مئی کے فری پریس جرنل سے)

امریکہ خاص طور سے 'دنیا کے اور دیش عام طور سے اپنے اونچے درجے کے وگیانیوں کے ساتھ یا گیانیوں کے ساتھ کیسا ہوناؤ کرتے ھیں' اِسے ھمارے پائیک اچھی طرح سمجھ لیں ۔ یہ آزاد کہلانے والے ملک کتنے آزاد ھیں اور آزادی کے کتنے گہرے پائی میں ھیں' اِس سے پتد لگ سکتا ھے ۔

آئنسٹائی کی وصیت کے ساتھ جب یہ ویوھار ھو رہا ھے تو آئنسٹائی کے ساتھ امریکہ کا کیا ویوھار رہا ھوگا اِس سے انوماں کیا جا سکتا ھے .

گهرنا اور هنسا کی نیو پر کهرا شکتی کا محل هماری رائے میں سدا کائیتا ہوا ملیکا ، اسکے ویریت پریم یا اهنسا کی نیو پر کهرا شکتی کا محل استهر اور اتل ملیکا ، پروپکار میں لگا ملیکا ، سبکو شرن دیتا ملیکا ، هنسک شیر پے حد ترپوک ہونا ہے؛ پتے کی کهر کهراهت سے بهاگنا ہے ، جیسے وہ شکار کی تاک میں رهنا ہے ، ویسے هی وہ یہ بھی سمجیتا ہے کہ کوئی اسکی تاک میں ہے . اسلئے وہ ترنا ہے اور سترک رهنا ہے ، اسکے ویریت اهنسک پرانی کم ترپوک ہوتے ہیں ، جتنے اسس میں وہ دوسروں کو ستانے میں کم ترپوک ہوتے ہیں ، جتنے اسس میں وہ دوسروں کو ستانے میں کسی پتر میں پرتا ہے کہ ایک آدمی کا یہ انوبھو ہے کہ کیسا هی جائیل جانور کیوں نہ ہوا اگر کوئی اسکے پاس ندر ہو کر پریم بھاؤ سے جائیگا تو وہ جانور آسے کبھی تبیں ستانے کا التا پیار کرنے لکیگا، امریک جو اتنا ترا ہوا ہے (اگر ایسا نہیں ہوتا تو کیا اپنے کہائیوں کے ساتھ ایسا ویوهار کرتا ہو) تبھی تو آسے اپنے دیش میں تو

विवार्ध हे रहा और दूसरे देशों से डर की कीजें जाती

विकार्ध दे रही हैं.

सहिं अशतत ! आप धन्य हैं ! आप अमरीका में थे, पर अपनी मर्जी से नहीं. शेर का वश बलता तो क्या वह विंडहे में रहता ? आप अमरीका में बंदी थे, अपनी मर्जी से नहीं. प्रकाश का बल चलता तो क्या वह चिमनी के अंदर बंद रहता और रंग-बिरंगी चिमनियों का शिकार बनता ? आप जिन अंशों में आजाद थे, उन अंशों में दिनया के लिए आप आदर्श हैं. इसराईल ने आपके सामने प्रेसीडेन्टी भेंट की. आपने उसे छकर लौटा दिया और कह विया कि "मैं प्रेसीडेन्टी के लिए पैदा नहीं हुआ हूँ. मैं जिस काम के लिए पैदा हुआ हूँ, उसमें ख़ुश हूँ." आप त्याग के लिए आजाद थे. त्याग आपका स्वभाव बन गया था. त्याग करने के लिये आपको तनिक भी जोर नहीं लगाना पड़ता था. पार्चल पर लिपटे हुए कागज को उतारने में किसी को प्रयास भी क्यों करना पड़े ? वह गोंद से चिपका हुआ होता ही नहीं, वही हाल आपका था. आप में ममता मोह नाम के लिए थे, जो कुछ आपके पास था या व्यवहार के नाते घापका सममा जा सकता था, वह सब परिप्रह तो था, पर उसके पीछे न मोह था न ममता थी. तो फिर उसके अलग होते हुए आपको दुख-सुख भी क्या होता ?

देह झोड़ते समय हम आपके पास नहीं थे. पर विश्वास के साथ कह सकते हैं कि आपने देह ऐसे ही छोडी होगी जैसे कबीर ने, "दास कबीर जतन से आढी, ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया." इस दुनिया को छोड़ते समय अगर कोई भारतीय आपके पास होता तो वह इस पहलू पर नजर डालता. भला अमरीकी क्यों इस पहल को

देखने लगे १

महर्षि अंशतन्तु ! आप इस दुनिया में ऐसे उलट-फेर कर गये, जो जहां एक और बड़े-बड़े विद्वानों के परे हैं. वहां दूसरी श्रोर ऐसे भी हैं, जो हर चलते फिरते की समम में आ सकते हैं. आपने यह कहकर कितनी बड़ी बात कह दी कि शक्ति और पदार्थ एक ही चीज है, यानी मेटर और इनर्जी एक ही चीज के दो पहलू हैं, एक द्रव्य की दो पर्याय हैं. इतनी बड़ी हिन्मत कीन कर सकता था १ और यह सब सुमाया आपको आपकी पैनी निगाह ने. अब तक लोग यही समसे हुये थे कि सेर भर पानी सेर भर भाप बन जाता है. यह आप ही को पता चला कि नहीं, कुछ कम सेर भाप बनता है. वह कभी कितनी ही कम क्यों न हो. वही शक्ति है, तभी तो आप कह सके कि इतना पानी भाप बनाकर क्यों नष्ट करते हो ? जितनी ताक़त इस भाप में है, उतनी ताक़त तो एक बूँद पानी के लाखवें हिस्से में मीजूद है.

دکھائی دیے رہا ہے اور دوسرے دیھوں سے ترکی نوجیس آتی دکھائی دے رھی ھیں .

مهرشي انشتنو! آپ دهنيه هين! آپ أمريكه مين تهـ پر اپنی مرضی سے نہیں ۔ شیر کا رش چلتا تو کیا وہ پنجوے میں رھتا ؟ آپ امریکہ میں بندی تھے اپنی مرضی سے نہیں . پرکاش کا بل چلتا تو کیا وہ چملی کے اندر بند رہتا اور رنگ برنگی چمنیوں کا شکار بنتا ؟ آپ جن انشوں میں آزاد تھے ا أن انشوں میں دنیا کے لئے آپ آدرش هیں . اسرائیل نے آپکے سامنے پریسیٹدینتی بھینٹ کی۔ آپ نے اُسے چھوکر لوٹا دیا اور کہت دیا که ''میں پریسیتدینتی کے اللہ پیدا نہیں ہوا ہیں، میں جس كام كے لئے پيدا هوا هوں أسيس خوش هوں۔ " أب تیاگ کے لئے آزاد تھے . تیاگ آیکا سوبھاؤ بن گیا تھا . تیاگ کرنے کے لئے آپکو تنک بھی زرر نہیں اگانا پڑتا تھا ۔ پارسل پر لُوْتَے هوئے کاغذ کو اُتارہے میں کسی کو پریاس بھی کیوں کرنا یوے ؟ وہ گوند سے چہکا ہوا ہوتا ہی نہیں۔ یہی حال آپکا تھا ۔ آپ میں ممتا موہ نام کے اللہ تھے. جو کچھ آیکے یاس تھا یا ویوهار کے ناتے آیکا سمجھا جا سکتا تھا' وہ سب دریگرہ تو تھا' پر أسكے يبجهے نه موہ تها نه ممتا تهل . تو يهر أسكے الك هوتے هوئے أيكو دكه سكه بهى كيا هوتا ا

دیہ، چھروتے سیلے هم آیکے پلس نہیں تھے، پر وشواس کے ساته کهه سکتے هیں که آپئے دیهه ایسے هی چهرری هوگی جیسے کبیر نے ''داس کبیر جتن سے اور عی' جیرں کی تھوں دھر ديني چدريا . 4 إس دنيا كو چهورتي سيئه اگر كوئي بهارنيه آپ کے یاس ہوتا تو وہ اِس بہلو پر نظر ڈالٹا ، بھلا امریکی کیوں اس مالو کو دیکھنے لکے ؟

مهرشی انشتنو ! آپ اِس دنیا میں ایسے اُلٹ بھیر کر گئے جو جہاں ایک اُور پڑے بڑے ودرانیوں کے برے ھیں وھاں درسری اُرر ایسے بھی میں ' جو هر چلتے پهرتے کی سمجو میں آسکتے میں ، آپ لے یہ کہہ کر کتنی بڑی بات کہہ دی کہ شکتی اور بدارته ایک هی چیز هے، یعنی میٹر اور اِنرجی ایک هی چیز کے دو پہلو هیں' أیک درویه کی دو بریایه هیں . اِتنی بری همت کون کر سکتا تها او اور یه سب سجهایا آپ کو آپ کی دینی نگاہ نے ، آب تک لوگ یہ سمجھے ہوئے تھے که سیر بھر یانی سیر بهر بهاپ بنتا هے. یه آپ هی کو یته چلا که نهیں' کچه کم سیر بھاپ بنتا ہے، وہ کبہے کتنی ھی کم کیوں تہ ھو' وھی شكتى هـ تبهى تو آپ كهه سكي كه إننا يانى بهاپ بنا كر كيس نشت كرية هو ؟ جتنى طاقت لس بهاپ مين هـ أنني طُاقت تو ایک بوند یانی کے لاکھویں حصہ میں موجود ہے.

बह सब विचार-क्रान्ति नहीं तो क्या है १ इसके लिये इस आपको जितना बड़ा समभें, उतना थोड़ा.

आकाश और काल, एक द्रव्य की दो पर्याय हैं, एक सिक्के के दो पहलू हैं, दोनों एक हैं—इस बात को आपने ऐसे कह डाला, जैसे कोई कह बैठता है कि एक और एक दो होते हैं. पर यह कितनी बड़ी बात है! बढ़े-बढ़े विज्ञानियों के गले उतरने में अटकी थी! पर आज है कि उसे हमा-शुमा समम लेता है. इसके बारे में आपका कहना है कि काल के बिना आकाश की बात ही नहीं की जा सकती. अकेले काल को कहीं जगह ही नहीं है. "इतने घंटे में" कह कर हमें यह कहना ही पढ़ेगा, "इतनी दूर गये." काल की बात कही कि आकाश आया. अब तो दूरी भी घंटों-मिन्टों में नापी जाने लगी!

यह विचार-क्रान्ति नहीं तो क्या है १ आपके यह एह-सान कभी भुलाये जा सकते हैं १

18 अप्रैल सन् 1955 को आप हमें छोड़ कर चल दिये. अब आप हम में नहीं हैं. यों विचारों से आप सारी दुनिया में मीजूद हैं. अब हम में से कुछ आपके गीत गा सकते हैं. आपकी यादगार खड़ी कर सकते हैं. इने-गिने आपके जीवन का अनुकरण कर सकते हैं, उससे भी कम उस राह लग सकते हैं, जिस राह आप चले थे. वे सत्य की ओर कुछ कृदम बढ़ सकते हैं और दुनिया को उस ओर ले जा सकते हैं.

आपके लिए इस क्या प्रार्थना करें, यह इस कुछ नहीं जानते. इस बारे में आप हमें कुछ नहीं बता गये. हां, अपनी चदिया का एक कोना यानी अपना सिर आप डाक्टरों के सुपुर्व कर गये हैं, उसे अध्ययन करके, देखें डाक्टर लोग क्या कहते हैं ?

श्रमन या जंग

"आगर दुनिया की जनता अमन कायम रखने और आखिर तक अमन की रक्षा करने का काम खुद अपने हाथ में ले ले तो अमन कायम रहेगा और मजबूती पकड़ेगा. लेकिन अगर जंग की बातें फैलाने वाले दुनिया की आम जनता को मूटी बातों के जाल में फंसाने, उन्हें थोका देने और एक नई बड़ी जंग में घसीट लाने में कामयाब हो गये तो मुमकिन है जंग न टल सके."

—स्टालिन

یه سب وچار کرانتی نهیں تو کیا ہے ؟ اِسکے لئے هم آپکو جتنا بڑا سمجھیں' اُتنا تهورا ،

آکلفی اور کال ایک درویه کی دو پریایة هیں' ایک سکے دو چہلو هیں' دونوں ایک هیں۔۔۔اِس بات کو آپنے ایہے کہ دالا جیسے کوئی کہ بیٹھتا ہے کہ ایک اور ایک دو هوتے هیں۔ پر یہ کتئی بتی بات ہے! بتے بتے وگیانیوں کے گلے آترنے میں اٹکی تھی! پر آج ہے کہ آت هما شما سمجھ لیتا ہے ' اِسکے ہارے میں آپکا کہنا ہے کہ کال کے بنا آکلفی کی بات هی نہیں کی جا سکتی ، اکیلے کال کو کہیں جگہہ هی نہیں ہے ، ''[تنے کی جا سکتی ، اکیلے کال کو کہیں جگہہ هی نہیں ہے ، ''[تنے گی جا سکتی ، اکیلے کال کو کہیں جگہہ هی نہیں ہے ، ''[تنے گی جا سکتی ، اکیلے کال کو کہیں جگہہ هی نہیں ہے ، ''[تنے گہنتے میں'' کہہ کو همیں یہ کہنا هی پریکا' ''[تنی دور گئے۔'' گہنتے میں' کہہ کو همیں یہ کہنا هی پریکا' ''[تنی دور گئے۔'' میں ناپی جانے لگی !

یہ وچار کرانتی نہیں تو کیا ہے ؟ آپکے یہ احسان کیھی ہوائے جاسکتے ھیں ؟

18 اپریل سن 1955 کو آپ همیں چهور کو چل دیئے . اب آپ هم میں نہیں هیں ، یوں وچاروں سے آپ ساری دنیا میں موجود هیں ، اب هم میں سے کنچه آپہے گیت کا سکتے هیں ، آپکی یادگار کهری کو سکتے هیں ، اِنے گنے آپہے جیوں کا انوکرن کوسکتے هیں اُس سے بهی کم اُس راہ لگ سکتے هیں ' جس راہ آپ چلے تھے ۔ وے ستیم کی اور کنچه ِ قدم بڑھ سکتے هیں اور دنیا کو اُس اور لے جا سکتے هیں .

آپئے لیئے هم کیا پرارتینا کریں' یہ هم کچھ نہیں جانتے ' اِس بارے میں آپ همیں کچھ نہیں بتاگئے ، هاں' اپنی چدریا کا ایک کرنا یعنی اپنا سر آپ ڈاکروں کے سپرد کر گئے هیں' آسے اددهیں کرکے' دیکھیں ڈاکڑ لوگ کیا کہتے هیں ﴿

أمن يا جنگ

" اگر دئیا کی جنتا اُس قائم رکھنے اور اخر تک اُس کی رکشا کرنے کا کام خود اپنے ھاتھ میں لے لے تو اُس قائم رہے کا اور مضبوطی پکڑے گا ۔ لیکن اگر جنگ کی باتیں پھیلانے والے دنیا کی عام جنتا کو جھوتی باتیں کے جال میں پھنسانے' اُنھیں دھوکا دینے اور ایک نئی بڑی جنگ میں گھسیٹ لانے میں کامیاب ھوگئے تو ممکن ہے جنگ میں گھسیٹ لانے میں کامیاب ھوگئے تو ممکن ہے جنگ ٹنہ قل سکے ۔''

ــاستالي

श्री मदन गोपाल

मेरी मां मुजफ्र करनगर के जिले की थी. उसकी बोली میری ماں مطفولکو کے ضلع کی تھی۔اسکی بولی مظفولکو मुजफ़रनगर के जिले में ही नहीं आस पास के कुछ जिलों ا فلع میں می نہیں آس پاس کے کچھ ضاموں میں لگ में लगभग सब लोग बोलते हैं. कुछ तिजारती, कुछ तबारीखी پک سب لوگ بولتے هيں . کنچه تجارتی کنچه تواريخي اور और बहुत कुछ जुगुराकई कारनों से यह बोली धीरे धीरे, ہت کچھ جنرانٹی کارنس سے یہ بولی دھیرے دھیرے چہکے چہکے चुपके चुपके देस में ऐसी फैली कि सारे हिन्दुस्तान और پیس میں ایسی پھیای که سارے هندستان اور یاکستان میں पाकिस्तान में समभी जाने लगी और उस पुल की बजह से سجعی جانے لکی اور اس پل کی وجه سے اب یہ ممکن ہوگیا श्रव यह मुमकिन हो गया कि एक श्राम श्रनपढ़ श्रादमी م ایک عام انیوھ آدمی اس دیس کے کسی فونے میں جاکر इस देस के किसी कोने में जाकर गुजारा कर सकता है. الذارة كو سكتا هے اسلئے كو اسے ديس كى عام ہواي هم كهة इसलिये गो उसे देस की आम बाली हम कह सकते हैं, उसे مكتم هين اص قومي بولي يا راشتر بهاشا كَهِنا تَهْيك نهين . ومی ہولی تو ولا ھی ھوسکتی ھے جو سارے دیس کے کم سے क्रौमी बोली या राष्ट्रभाषा कहना ठीक नहीं. क्रौमी बोली तो वह ही हो सकती है जो सारे देस के कम से कम सत्तर م ستر فیصدی اپنے گھروں میں بولتے هوں ، یہاں اُلٹا حساب कीसदी अपने घरों में बोलते हों. यहां उल्टा हिसाब है. यहां لے . یہاں سترسے بھی زیادہ نیصدی اپنے کنبوں میں اپنی اپنی सत्तर से भी ज्यादा कीसदी अपने कुनवों में अपनी अपनी और ور ہوائی ہواتے ہیں ۔ اسائے اگرچہ یہ دیس کی عام ہولی ہے ا बोली बोलते हैं. इसलिये अगरचे यह देस की आप बोली سے دیس بولی کہنا ٹھیک نہیں .

है, इसे देस बोली कहना ठीक नहीं. उस बोली के नाम के बारे में कुछ मतमेद है. च कि मैं यहां नाम के मागड़े में नहीं पड़ना चाहता इसलिये इस लेख में उसे मेरी मां-बोली या मेरी बोली कहूँगा. श्रीर बोलियों की तरह मेरी बोली भी गिन्ती की कुछ खास आवाजों के जोड़ से बनी हुई है, इसलिये उसका रूप परखने के लिये उसकी खास आवाजों और उनके जोड-तोड का इत्म जरूरी है. मेरी बोली में कहने को तो दस लेकिन असल में कल छै स्वर्रे हैं. कहने को तो अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ और श्रो, श्री दस स्वरें हैं लेकिन सिवाय छोटे श्रीर बड़े श्र के जोड़े के बाक़ी के चारों जोड़े श्रापस में भेदरू नहीं हैं. भेदरू उन आवाजों को कहते हैं जिनके आपस में बदल जाने से सैकड़ों लक्ष्यों के माने कुछ के कुछ हो जाते हैं, मसलन कल काल, खल खाल ऐसे बहुत से जोड़े लक्जों के मेरी बोली में हैं जिनके माने सिर्फ छोटे और बड़े अ के हेरफेर से बदल जाते हैं. बाक़ी चार जोड़ों में यह भेद बद्दत कम पाया जाता है. मैं जानता हूँ कि कुछ जोड़े मेरी बोली में ऐसे आ गये हैं जिनके छोटी बड़ी इ, उ वरौरा के हेरफेर से माने बदल जाते हैं, लेकिन यह जोड़े बहुत कम ही नहीं उनमें से अकसर ऐसे हैं जो हम पढ़े हुए लोगों की राफलत से या शेखी से हमारे पढ़े हुआें की बोली में आ गये हैं, लेकिन जो बहुत दिन मेरी बोली में टिक नहीं सकते. वजह

اس ہولی کے نام کے بارے میں کچے مت بھید ہے ۔ چونکه میں یہاں نام کے جھکڑے میں نہیں پڑنا چاھتا اسلئے اس لیکھ میں اسے میری ماں ہوای یا میری ہولی کہونگا۔ اور ہولیوں کی طرح میری بولی بھی گنتی کی کچھ خاص آوازوں کے چور سے بنی ہوئی ہے؛ اسلئے اسا روپ پرکھنے کے لئے اسکی خاص آوازوں اور انکے جرز توز کا علم ضروری کے . میری ہولی میں کہنے کو تو دس لیکی لعل میں کل چھ سرریں ھیں ۔ کہنے لو تو أَ أَ إِنْ إِي أَنْ أُوا أَتِهُ أَنْ أَوا أَتِهُ أَرِدُ أَوا أَوْ أَوْ دَسِ سَورِينَ هين لیکن سوائے چھوٹے اور بڑے ا کے جوڑے کے بافی کے چاروں جوڑے أيس ميں بهيدرد نہيں هيں . بهيدرو أن أوازوں كو كہتے هيں جنکے آیس میں بدل جانے سے سینکورں لفظوں کے معنے کچھ کے کچھ هو جاتے هيں' مثلاً کل کال' پل کھال ايسے ہت سے جوڑے لفظوں کے میری ہولی میں ھیں جنکے معنے مرف چھوڑے اور بڑے اکے ہیر بھیر سے بدلجاتے ہیں ، بانی چار جوزرں میں یہ بھید بہت کم پایا جاتا ہے . میں جانتا ھوں که کچھ جوڑے میری ہولی میں ایسے آگئے ھیں جنکے چھوٹی بڑی اِی ' اُو وغیرہ کے هیر پھیر سے معنی بدلجاتے هیں لیکن یہ جوڑے بہت کم هی نہیں انمیں سے انثر ایسے هیں چو هم يرهے هوئه لوگوں كى غفلت سے يا شيخى سے ھمارے پڑھے ھوڑں کی ہولی میں آگئے ھیں' لیکن جو بہت دن میری برای میں تک نہیں سکتے۔ رجه

شری مدن گوپال

साक है. मेरी बोली इतनी संबर सुधर गई है कि उसकी आवाओं कम होते होते गिन्ती की रह गई हैं. स्वरें सिर्फ छै!

यह एक अजीव लेकिन अगर जरा सोचो तो एक क़ुद्रती क़ानून या नियम इल्म बोली का है कि जितनी किसी देंस की सभ्यता पुरानी है उतनी ही उस देस की आम बोली की आवाजें गिन्ती में कम और उसके लफ्ज और उसकी मामर थिस थिस कर छोटे हो जाते हैं. इस वक्त दुनिया में सब से पुरानी सभ्यवा चीन की है श्रीर इसलिये जितनी बोली उसकी निखरी, दुनिया की कोई श्रीर बोली नहीं तिखरी. प्रामर तो उसमें नाम को भी नहीं. लक्ष्य एक कड़ी के ब्रीटे और उसकी खावाजों गिन्ती की. शुरू शुरू में जब कि इत्म बोली पच्छिम में अभी पैदा ही हुआ था, पच्छिमी विद्वानों की यह राय ठहरी कि चीनी एक बिगड़ी हुई बोली है. लेकिन जब इस्म बोली फला फूला खौर हजारों बालियों के उगते, बढ़ने, फलने फूलने की खूब जांच पड़ताल की गई को उन्होंने चीनी को अञ्बल, फारसी को दूसरे और मेरी बोली को तीसरे नम्बर पर ठहराया, सोची तो सही, पिन्धमी विद्वान मेरी बोली को खूबसूरती में दुनिया भर की इजारों बांबियों में से तीसरा दर्जी देते हैं. सब से बड़ी वारीफ़ जो उन्होंने की है वह यह है कि उसकी मामर एक पोस्डकार्ड पर लिखी जा सकती है और यह कि उसमें द्वनिया भर की सामाजिक, धार्मिक श्रीर श्रव्बी कितावें-वेद, क्रुरान, इन्जील, नाटक और कहानियां-विला किसी और प्रवान की मद्द के आसानी से बख़बी अदृ हो सकती हैं. ऐसी बोली पर जितना आदमी घमन्ड करे थोड़ा . सेकिन भू कि इमारे स्कूलों में उत्टा पदाया जाता है, स्मारे अन्जान पंडित और लीडर उसे बिगाइने पर तसे इए हैं. क्यों न हों, उनकी आंखों पर संस्कृत और अंग्रेजी त्रैसी भरी जवानों का चश्मा चढ़ा हुआ है. यहां संस्कृत हो असभ्य कहना तो अलग, यह सच भी कहना कि संस्कृत न कभी बोली हुई और न हो सकती है भिड़ों के छत्ते में शब डालना है. संस्कृत की छवा से हमारे पंडित कोली का मर्थ भी नहीं जानते, बोली सिर्फ़ उस जबान को कह सकते जिसके जरिये दुनिया के किसी हिस्से के नक्वे नहीं तो पस्सी कीसदी आद्यी अपना काम धन्दा चलाते हों. वरना ह जबान चाहे उसे पंडित आपस में बोलते हों या रईस. प्रकी हैसियत चोर बोली से ज्यादा नहीं. ऐसी बोली को स्त्रेजी में स्लैंग (Slang) कहते हैं चाहे उसमें लाख किताबें क्षियी सर्ह हों. यही वजह है कि अगरने हमारी युनिवसिटयों । बहुत सी बोली सिस्नाई जाती हैं, किसी में इल्म बोली हीं शिक्काचा जाता, भौर नजब तक संस्कृत का भूत हमारे ह्र पर सवार है यह मजमून कभी सिखाया जायगा, क्योंकि सके सीसने से संस्कृत की पोल खुल जाती है.

ماف ہے - میری بولی آتلی سنور سدھر کٹی ہے کہ اسکی آرازیں کم ھوتے ھوتے گلتی کی رہ گئی ھیں۔ سوریں صرف چے !

به ایک عجیب لیکن اگر زرا سوچو تو ایک قدرتی قاتون یا نیم علم پولی کا هے که جتنی کسی دیس کی سبهیتا پرانی هے اتنی ھی اس دیس کی عام ہولی کی آرازیں گنتی میں کم اور أس كے لفظ اور اسكى كرامر كيس كيس كر چهوئے هوجاتے هيں ۔ السوقت دنیا میں مب سے پرائی سیهینا چین کی ہے اور اسلیم چتنی بولی لسکی نکهری دنیاکی کرئی اور بوای تهیں نکهری ا گراموتو اسمیں لمام کو بھی نہیں . لفظ ایک کڑی کے چھراتہ ارو اسکی آوازیں گفتی کی ، شروع شروع میں جبکه علم ہولی پچهم میں ابھی پیدا ھی ہوا تھا، پچھمی ودوانوں کی یہ رائے تہری که چینی ایک بکڑی هوئی ہولی هے لیکن جب علم بولی پہلا پہولا اور ہزاروں بولیوں کے اُکنے' بڑھنے' پہلنے پھولئے کی خوب جانچ پڑتال کی گئی تو انہوں نے چینی کو لول ٔ فارسی کو دوسرے اور میری ہولی کو تیسوے نمبر پر تہرایا ۔ سو چو تو سهی پچهمی ردوان میری بولی کو خوبصورتی میں دنیا بهر کی هزارس بولیس سے تیسرا درجہ دیتے هیں ۔ سب سے بڑی تعریف جو انہوں نے کی ہے وہ یہ ہے کہ اسکی گرا مر ایک پوسٹکارت پر اکھی جا سکتی ہے اور یہ که اسمیں دنیا بهر کی ساماجک دهارمک اور ادبی کتابیس-وید قرآن انجیل' ناتک اور کہانیاں بلا کسی اور زبان کی مدد کے آسانی سے یشوبی ادا هو سنتی هیں ایسی بولی بر جتنا آدمی گھمنڈ کرے تھوڑا ہے، لیکن چونکه همارے اسکولوں میں انقا پڑھایا جاتا ہے، همارے انجان ہندت اور لیدر اسے بگاڑنے پر تلے ہوئے هیں . کیرں نہ مرس' انکی آنکیں پر سنسکرت اور العريزي جيسي بهدي زباتس كا چشته چرَفا هوا هـ . يهال سلسکرت کو اسبهید کهنا تو الگ ید سے بھی کهنا که سنسکرت نہ کبھی ہولی ہوئی اور د، ہو سکتی ہے بھروں کے چہتے میں هاته دالنا هے . سنسكرت كى كريا سے هدارے پندت يولى كا أرابه بھے نہیں جانتے ، ہولی صرف اس زبان کو کھ، سکتے میں جسکے ذریعہ دنیا کے نسی حسم کے نوے نہیں تو اسی نیصدی أدمى اپنا كام دهندا چاتے هوں . ورثه وه زبان چاهے اسم بندت آیس میں بولتے میں یار تیس' اسی حیثیت چور ہولی سے زیادہ نہیں . ایسی بولی کو انکریزی میں سلینگ (Slang) كيت هيل چاهے اسيل لاءِ كتابيل لهي گئي هول ، يهي وجه هے که اگرچه هماری يونيورسٽيوں ميں بہت سي بولدال سنهائي جاتی هیں کسی میں علم بولی نہیں سکھایا جاتا اور نہ جبتک سنسكرت كا يهوت هماريم سريو سوار هي يه مضمون كيهي سكهايا چائيگا کيونکه اسك سيكيني سے سلسكرت كى پول كيل جاتى ہے .

में पहले जिस माया हूँ कि मावाजों का माहिस्ता आहिस्ता कम होना लक्ष्यों और प्रामर का छोटा होना हर सभ्य देस की बोली का क़दरती स्वभाव है. बोली बनती है किर्फ सबलाब खड़ा करने के लिये. अगर किसी वजह से बोली बह अपना फर्ज अच्छी तरह से अदा न कर सके तो हर सभ्य समाज की कोशिया होती है कि वह उस वजह को दर हरे. मसलन जहां दो आवाजें कुछ आपस में मिलवी जलती हों तो यह मुमकिन ही नहीं, अरालव है कि अगर षारा भी नुक्स प्रवान (इलक्त) या कान में हो जाये तो उस जाबाओं में तमीज करनी मुश्किल हो जाये. इसलिये हर सममस्यर की यही कोशिश होती है कि वह ऐसे लक्ष्य न इस्तेमाल करे जिनकी आवाजों में तमीज ठीक न होने की बजह से मतलब खब्त होने का हर हो. मसलन फ और फ, और म और ज आपस में मिलती जुलती आवाजें हैं इसलिये किसी सभ्य बोली में दोनों नहीं होतीं. जिस बोली में फ है बड़ां फ नहीं रहती और जहां क है वहां ज नहीं रहती. इन्सान ही नहीं हर जीव फिजूल की मेहनत और तक्तीफ से जी चुराता है. हमारे व्योकरितयों ने सुख आवरण की चाहे कितनी निन्दा की हो ईश्वर की ऐसी रचना है कि आदमी कष्ट से बचता है. सच पूछो तो आबसी की सारी सभ्यता की जड़ है उसकी यह रुचि. उसे बुस कहना बेबककी है.

मेरी बोली में बाप को बाप कहते हैं न कि पित्र, पिद्र, फाइर. लड़की को बेटी कहते हैं न कि दोहत्तर, दुस्तर, डाटर. मां को मां कहते हैं न कि मात्र, मादर, मदर, ऐसे निजी रिश्तों के नाम से जाहिर है कि आर्यभाषा का संस्कृत, फारसी श्रीर अंग्रेजी पर ज्यादा असर पड़ा है, मेरी बाली पर कम. मेरी बोली ने बहुत सी बोलियों के लक्ज लिये, आर्य भाषा के भी लिये, लेकिन उसकी जमीन रही हमेशा देसी बोली की यानी उस देसी बोली की जो आयों के यहां आने से पहले बाली जाती थी. अगरचे जमीन संस्कृत की भी देसी बोली की है लेकिन चूं कि उसमें कुछ आर्य भाषा के ज्यादा लक्ष्य लिये गये श्रीर खास कर इस बजह से कि देसी बोली के भी जो लक्ष्य उसमें लिये गये उन्हें संस्कृत बनानेवालों ने बिगाब कर आर्य शकल दी. इस लिये हमारे देस में यह रालत स्थाल आम फैला हुआ है कि संस्कृत एक श्रद्ध आर्थ भाषा है. जमीन दोनों की द्रावड़ी होने की वजह से संस्कृत के बहुत लफ्ज मेरी बोली के क्षप्रजी जैसे हैं, इसलिये बहुत लोग रालती से मेरी बोली को एक आर्व भाषा कहते हैं. असल में मेरी बोली द्रावड़ी है. कहने को मद्रास की बोलियों की द्रावड़ी कहा जाता है, लेकिन उनमें से कोई भी इतनी द्रावड़ी नहीं जितनी मेरी बोली. लिपि बनने से पहले आर्य भाषा में क्या आवाजें शामिल थीं बल्कि कीन कीन सी उसमें शामिल न थीं कहना मुश्किल

میں پہلنے کو آیا میں که آوازیں کا آمسته کم هونا لفظیں اور گرامر کا چھوٹا ہونا ہو سبھیم دیس کی بولی کا قدرتی سبھاؤ ہے ، ہولی بنتی ہے صرف مطلب ادا کرنے کے لئے . الكو كسى وبهده سه يولى يد أينا فرض أيهى طرح سه أدا اله كر سکے تو عبر سبھیہ سمانے کی کرشش ہوتی ہے کہ وہ اُس وجہ کو دور کرے ، مثلاً جہاں دو آوازیں کہو آپس میں ملتی جلتی ہوں تو يه سكن هي نبيس أغلب هه كه أكو ذرأ بهي نقص زبان (حال) یا کلی میں ہو جائے تو ان آوازوں میں تمید کرتی مشکل هوجائے ۔ اسائے هر سنجهدار کی یہی کوشھی هوتی ہے که وہ ایسے لفظ نع استمال کرے جائی آوازوں میں تمیز ٹھیک نہ ھونے کی وجه سه مطلب خيط هونے كا قر هو ، مثلًا به أور ف أور جه أور ز أيسمين ملى جلتي أوازين هين اسلئے كسى سبهية بولى مين دونوں نہیں ہوتیں ۔ جس ہولی میں به ہے وہاں ف نہیں رهتی اور جہاں جھ هے وهاں ز نہیں رهتی ، انسان هی نہیں هر جيو نفيل ئي محنت اور تعليف سے جي چوانا هے . همارے ویا کرٹیوں نے سکم اُچارن کی چاشے کتنی ندا کی ہو ایشور کی ایسی رچنا ہے که آدمی کشت سے بچتا ہے ، سپے پوچھو تو آدمی کی ساری سبهیتا کی جزه اسکی یه رچی . آسه برا کهنا بیوقونی 🖴 .

مهری بولیمیں باپ کو باپ کہتے هیں نه که یتر' پدر' فادر۔ لوکی کو بیتی کہتے هیں نه که دوهتر' دختر' دائر . مان کو ماں کہتے میں قاکد ماتر' مادر' مدر ایسے نجی رشتیں کے نام سے ظاہر هے که آریه بهاشا کا سنسکرت فارسی اور انکریزی پر زیادہ ادر ہوا هے، میری بولی پر کم میری برلی نے بہت سی بولئوں کے لفظ لئے آریه بهاشا کےبھی لئے الیاس أسامی زمين رهي هميشه ديسي مولي كي یعنی اس دیسی ہولی کی جو آریوں کے یہاں آنے سیہلے ہولی جاتی تھی ، اگرچہ زمین سنسکرت کی بھی دیسی ہولی کی ہے لیکن چونکه اسمین کچ آریه بهاشا کے زیادہ لغظ لئے گئے اور خاص کر اسبجه سے که دیسی بولی کے بھی جو لفظ اسمیں لئے گئے انہیں سنسكوت بناني والس لي بكار كر أريه شكل دبى ، أسلتم هماري دیس میں یہ غلط خیال عام پہلا ہوا ہے که سنسکرت ایک شدھ آرید بهاشا هے زمیں دونوں کی دراوری هونےکی وجه سے سنسکرت کے بہت لفظ میری بولی کے لفظوں جیسے ھیں اسلئے بہت لوگ غلطم سے میری بولی کو ایک آریه بهاشا کہتے میں . امل میں میری بولی دراوڑی ہے . کہنے کو مدراس کی بولیوں کو دراوڑی کہا جانا ہے کہ المیں المیں سے کوئی بھی اتنی دراروی نہیں جتنی میری بولی . لهی بننے سے پہلے آریہ بھاشا میں کیا آوازیں شامل تهين بلكة كون كون سى أسين شامل له تهين كَهُنا مشكل

ه ، پچھمی ودوائوں کی یہ رائے کہ ن ت ع ظ وغیرہ جو اجکل عربی میں بہتایت سے پائی جاتی ھیں پرائی آریہ بھاشا کی مول آوازیں تبین درست ھو یا نہ ھو اس میں شک نہیں کہ رز رربے لو لربی جیسی سوریں اس میں ضرور ھونکی جاتی آواز کا ھیں عام ھی نہیں، اسکی گیاں ترا شا اور یان واں جیسی آوازیں میری بولی میں گیس تک نہ سکیں جبکہ بت تن وغیرہ اصلی دراوزی آوازوں نے اپنے پاؤں سنسکرت میں سے جمالیئے ، عام بولی کے ودوائوں کہ یہ رائے ہے کہ جیسے کسی جیو کی قسم اور نسل پہنچائی جاتی ہے اسکے خون کے جز اور بناوت پرکھنے سے اسلیمورے بولی کی نسل اسکی آوازوں سے پہنچائی جاتی ہے اسکے خون کے جز پہنچائی جاتی ہے اسکی آوازوں سے پہنچائی جاتی ہے اسکی آوازوں سے پہنچائی جاتی ہو اسکی آوازوں سے پہنچائی جاتی ہو اسکی آوازوں سے پہنچائی جاتی ہو انہ کے اسکی آوازوں سے

میری ہولی آے چھوٹی اے اور او چھوٹا او ہے جیسے بیٹو میں چھوٹی اور بیٹے میں ہوی آے اور لوت میں چھوٹی اور لوٹے میں ہوں آو ، سنسکوت میں آے اور او دونو آے اور آر سے زیادی بھاری گئے جاتے ھیں۔ سندھی کی یہ بیماری میری بولی کو چهوتک نه سکی، میری بولی میں وینجن اورسور آپس میں خوب پیارسے ملتے میں لیکن کوئی دو سوریں یا دو ویلنجن آپس میں نهیں ملت ، مثلًا اگر کوئی دو ویلجن یا دو سوریں کسی لفظ میں ایک دوسرے سے قریب هوں تو وہ دو سورس یا دو وینجن کبھی ایک کئی میں نہیں ہولے جائینکے، جیسے آئے 'گئے' بھائی' نائی میں دو سوریں یاس یاس تو هیں لیکن درنوں کی کڑی جدا جدا هے ، نا ایک کوی اور اِی دوسری کوی ، انکریزی کا لفظ آئی جسکے معنی میں اور آنکھ ھیں وہ انکریزی میں ایک کہی ہے ، بہت کچھ اسی شکل کی آئی جو میری بولی میں ها ولا بولا جاتا هے دوکریوں میں ایک آ دوسری ای ، دوسری بولیوں کے سائکروں لنظ میری بولی نے لئے لیکن همیشه أنکے انگ تور کو الچکاار ، میں جانتا هوں که میرے جیسے سینکروں بچھ طوئے شیخی خوری یہ جتائیکے لئے که وہ دوسری بولی بھی جانتے میں اسکے لفظوں کو یغیر لحکائے ابنائے ہواتے میں . لهدی یه انکی بهول هے کیونکه ایک بولی دوسری بولی کے لفظ چاھے جتنے فکل لے اور ذکار تک نه لے وا دوسری بولی کی آواز اور ترکیب کبھی ٹہیں مضم کر سکتی . اگر مضم کر لے تو پھر وہ رہ ہولی نہیں رھتی کوسری بولی ھوجائی ہے ، علم بولی کا یہ أيك الرب نيم هے . دارسي كا لفظ درخت همنے ليا ضرور ليكن اینا کے ، فارسی میں بھی درخت کی دو کریاں میں لیک د اور دوس رخت . میری بولی میں بھی دو لیکن پہلی کڑی هے در اور درسری کهت . آجکل سرکاری هندی میں جو جرے ھوئے وینتجنوں کی بھرمار کی جا رھی ہے اس سے صاف ظاھر ھے کہ اُس ھندی کے بنالےولوں کی نیت ماف نہیں .

وینجن بھی میری بولی میں گنتی کے هیں۔ ک کھ گ گ

है. पिछ्डमी विद्वानों की यह राय कि क, क़, रा, ज वरौरा जो आजकल अर्बी में बहुतायत से पाई जाती हैं पुरानी आर्य भाषा की मूल आवाजों थीं दुरुस्त हो या न हो इसमें राक नहीं कि ऋ, ऋ, लू, लू जैसी स्वरें उसमें जरूर होंगी जिनकी आवाज का हमें इस्म ही नहीं. उसकी का. त्र क्ष, और क इ, अ जैसी आवाजों मेरी बोली में पुस तक न सकीं जबकि द, इ, इ बरौरा असली द्रावड़ी आवाजों ने अपने पांच संस्कृत में जमा लिये. इस्म बोली के विद्वानों की यह राय है कि जैसे किसी जीव की किस्म और नसल पहचानी जाती है उसके खून के जुज और बनावट परखने से, इसी तरह बोली की नसल उसकी आवाजों से पहचानी जाती है, न

मेरी बोली में ऐ, ब्रोटी ए और औ, ब्रोटा को है जैसे बैठ में छोटी और बेटे में बड़ी ए और लौट में छोटी और लीटे में बड़ी को. संस्कृत में ए और औ दोनों ए और ओ से प्यादा भारी गिने जाते हैं. सिंधी की यह बीमारी मेरी बोली को जू तक न सकी. मेरी बोली में व्यंजन और स्वर आपस में ख़ब प्यार से मिलते हैं लेकिन कोई दो स्वरें या दो व्यंजन आपस में नहीं मिलते. मसलन अगर कोई दो व्यंजन या दो स्वरें किसी लक्ज में एक दूसरे के क़रीब हों तो बह दो स्वरें या दो व्यंजन कभी एक कड़ी में नहीं बोले जायेंगे. जैसे घाए, गए, भाई, नाई में दो स्वरें पास पास तो हैं लेकिन दोनों की कड़ी जुदा जुदा है. ना एक कड़ी और 🕯 दूसरी कड़ी. अंग्रेजी का लक्ष्य आई जिसके माने में और आंख हैं वह अंग्रेजी में एक कड़ी है, बहुत कुछ उसी शकल की चाई जो मेरी बोली मैं है, वह बोला जाता है दो कड़ियों में, एक बा दूसरी ई. दूसरी बोलियों के सैकड़ों लक्ज मेरी बोली ने लिये, लेकिन इमेशा उनके श्रंग तोड़ कर, लचका कर. में जानता हैं कि मेरे जैसे सैकड़ों पढ़े हुए शेखी खोरी यह जताने के लिये कि वह दूसरी बोली भी जानते हैं उसके लफ्जों को बरौर लचकाए अपनाए बोलते हैं. लेकिन यह उनकी भल है, क्योंकि एक बोली दूसरी बोली के लफ्ज चाहे जितने निगल ले और डकार तक न ले वह दूसरी बोली की आवाज और तरकीव कभी नहीं हजम कर सकती. झगर हरम कर ले तो फिर वह वह बोली नहीं रहती. दसरी बोली हो जाती है. इल्म बोली का यह एक श्रदूट नियम है. फारसी का लक्ष्य दरस्त हमने लिया जरूर लेकिन अपना के. फारसी में भी दरख्त की दो कड़ियां हैं, एक द और दूसरी रखत, मेरी बोली में भी दो लेकिन पहली कड़ी है दर और इसरी खत. आजकल सरकारी हिन्दी में जो जुड़े हये ध्यंत्रनों की भरमार की जा रही है उससे साफ जाहिर है कि उस हिन्दी के बनाने वालों की नियत साफ नहीं.

व्यंजन भी मेरी बोली में गिन्ती के हैं. क, ख, ग, घ,

था था जा का दे, ठ, ४, ठ, त, व, व, व, व, न, नहः प, क, ब, म, म, म्ह, र, द, त, स, ह, इन व्यंजनों में से तक़रीवन आबे इस यानी ह की आवाज लिये हुए हैं. उनमें से बार बेर्क है, बाकी भेरक नहीं माजूम होते. जगर मेरा वह क्यात हरस्त है तो मेरी बोली में सिर्फ 21 व्यंजन हैं. करकारी हिन्दी में 93. य. और म. व और व. स और व और अ बावस में भेक्क नहीं, इसलिये य और व और व और श की सेरी बोली में फरूरत नहीं. असल में मेरी बोली सैक्टों बरस इन बाबाजों से पाक रही. अब फारसी वालों की देखा देखी कह लीग इन आवाओं को फिर बोलने लगे केकिन पू कि यह भेदर नहीं हैं, यह मेरी बोली में जड़ नहीं क्कर सकतीं. अब यह बात जरा काबिले सीर है कि बाबसूद इन जाबाजों के संस्कृत में दोने के, संस्कृत के दो हखार बरस के राज में मेरी बोली इन आवाओं से बची ही, लेकिन फारसी बालों की नकल किये बरौर न रह सकी. बानी वह कि मेरी बोली पर कारसी ने बहुत ज्यादा असर किया है बनिस्वत संस्कृत के. वजह साफ है. फारसी एक बोली है जो बाज घरों में बोली जाती है. ऐसा शायद कोई ही घर होगा जहां संस्कृत बोली जाती हो. साफ है कि संस्कृत एक चोर बोली है जिसका कोई असर किसी बोली पर नहीं हो सकता. मानी यह कि कोई लाख जतन करे. बेरी बोली को संस्कृत रंग नहीं सकती.

बोली की आवाओं की एक और भी तक़सीम है. एक किस्म को ताना, दूसरी को बाना कहते हैं. जो जो आवाज आसानी से हवा को बाहर निकालने के वक्त बोली जाती है उसे बोली का ताना, और जो आसानी से सांस लेते बक बोली जाये उसे बोली का बाना कहते हैं. पच्छिमी विद्वानों का ख्याल है कि जितना किसी बोली का बाना उसके ताने के बराबर हो जाता है, उतनी ही वह बोली बोलनी आसान ही नहीं, मीठी होती है. ऐसा ज्याल है कि जितना ताना बाना बराबर हो जतना ही बोलते बक्त दम लेने के लिये ठेहरने की जरूरत कम होती है. मेरी बोली में चूं कि जुड़े हुए व्यंजन न हैं और न हो सकते हैं इसलिये उसकी हर कड़ा फ़ुलमाड़ी की तरह मुँह से निकलती है. यही बजह है कि मेरी बोली खासकर और हिन्दुस्तात की और बोलियां आप दौर पर अरबी, फारसी, अंग्रेजी वरौरा से बहुद जल्दी बोली जाती हैं. संस्कृत तो कोसों दूर पीछे रह गई. सुरिकल यह है कि मेरे देख में बक्त की कोई क्रीमत नहीं बर्ना कोई मूले से भी संस्कृत के से जुड़े हुए व्यंजन हमारी बोली में न जाता. तेकिन जहां देवनागरी जैसी बक्त खोया. धन लुटाऊ लिपि अपना कर देस की तरक्की में अनुगा लगाया जा सकता है, वहां बोली की मिठास और उसके द्रवाई बहाद की किसे कह ? गैल्ब (Gelb) कहता है

الوالب الما أن الما أت الما أن الم أو الم أو الم ب به م م ر ر ر ل س ح ان ويلجلس ميں سے تقريباً آدھ مرس یعلی ہے کی آواز لئے مرئے میں . ان میں سے چار بهدر دين باتي بهيدر نهين معلوم هوتے . اگر مهرا يه خهال درست هے تر مهری برای میں صرف 21 ریلجی هیں . سرگاری هندي ميں 83. يے اورياں و أورب س اور شا أور هي أيس ميں مهدرو نہیں اس لئے ہے اور و اور شا اور ش کی میری ہولی میں خرورت نهیں . امل میں میری بولی سینکورں برس ان آوازوں سے پاک رهی ، أب فارسی والوں كى ديكها ديكهى كنچ لوك أن آوازوں کو بھر بولایے لیے لیکن چونکه یه بهدرو نہوں هیں یه میری بولی میں جر نہیں پعر سعتیں ، آب یه بات درا تابل غور ہے که باوجود ان آوازوں کے سنسکرے میں ھولیکے سنسکرے کے در مزار برس کے راہے میں میری بولی ان آوازوں سے بحثی رهی، ایمن فارسی والوسکی نقل کئے بنیر قد رہ سکی، یعنی یہ که میری بولی پر فارسی لے بہت زیادہ اثر کیا ہے بنسبت سلسکرت کے وجہ صاف قے ، نارسی ایک بولی ھے جو بعض گھروں میں ہولی جاتی ہے . ایسا شائد کوئی ھی گھر ھوٹا جہاں سلسکرت بولی جاتی هو . صاف هے که سنسکرت ایک چور بولی هے جسکا كوئى اثر كسى بولى پر نهيں هو سكتا . معنے يه كه كوئى لاكھ جتن کرے' میری بولی کو سنسکرت رنگ نہیں سکتی ۔

ہوئی کی آوازوں کی ایک اور بھی تقسیم ھے ایک قسم کو تانا کوسری کو بانا کہتے میں ، جو جو آراز آسانی سے هوا کو باهر نکالنے کے وقت بولی جاتی کے اُسے بولی کا تانا اور جو آسائی سے سائس لیتے رقت ہوای جائے آسے ہولی کا باتا کہتے هيں. پنجهسي ودوانوں کا خيال هے که جتنا کسي بولي کا باتا اسکے تائیے کے برابر مو جادا ہے اتنی می وہ بولی آسان می نہیں' میتبی هوتی هے ایسا خیال هے که جتنا تانا بانا برابر هو أتنا هي بولتے وقت دم لياء كيائة تهيرنے كي ضرورت كم هوتي تھے میری ہولی میں چوٹکه جڑے هوئے وینجن ته هیں اور ته هو سکتے هیں اسلیم اسعی هر کری پهولجهری کی طرح مله سے نعلتی ہے یہی رجه مے که مهری بولی خامکر اور هندوستان کی ارر بولیاں عام طرر پر عربی خارسی انگریزی وغیرہ سے بہت جلدی بولی جاتی هیں، سلسکوت تو کوسوں دور پیچھ رہ گئی، مشکل یہ ھے کہ مہرے دیس میں وتت کی کوئی قیمت نہیں ورانہ کرئی بھولے سے بھی سلسکرت کے سے جرے ھوٹے ویلتوں ھاری برالي نبيس در النا . ليكن جهال ديوناكري جيسا وقت کینیا کسی الله لهی اپنا کر دیس کی ترقی میں ارنکا لگایا جا سکتا ھے وہاں ہوای کی متباس اور اسکے دریائی بہاؤ کی کیسے قدر آ گلب (Gelb) کہتا ہے

कि . फैंच की 350 कड़ियां भीसतन एक मिनट में बोली जाती हैं, जापानी की 310, जर्मनी की 250 भीर अंभेजी की सिर्फ 220. मेरा ख्याल है कि संस्कृत श्रीर उसकी नक़ली हिन्दी की 150 भी नहीं. शायद मेरी बोली फ़ैंच को भी मात करती है, लेकिन इस तरफ कीन ध्यान दे ? क्या रखा है इन बातों में ? मुफ्त की हाथ धिसाई, यह है इमारा इल्स का शीक़ !

मेरी बोली के रूप में है स्वरं, 21 व्यंजन, सब शुद्ध, उनमें कोई मिलाबट या जोड़ नहीं, और इसलिये वह एक भीठी, सुरीली, बहती मौसीकी है. खुबसूरती में सारी द्विनया की बोलियों में उसे तीसरा दर्जा दिया गया है. अगर **ष्समें** जिन्स (लिंग) की बीमारी न होती तो दूसरी गिनी जासी. मामर न होने के बराबर, सीधी सादी सुन्दरी जिसे गहने पाते से नफरत, बोलने में आसान, समभने में वासान, सीखने में श्रासान, उसकी इस श्रासानी ने उसे फैलने में बहुत कुछ मदद दी. बड़ी खराबी उसमें है तो यह कि इसमें एक आदमी दूसरे की आसानी से धोका नहीं दे सकता, और हमारे लीडर चाहते हैं ऐसी जवान जिसमें वह धोका दे सकें या कम से कम लारे लप्पे लगा सकें. यही लीडर कहते हैं यहां है जनता का राज! सब धोका, कहने की बात ! जिस देस में इस देस की आम बोली या उसकी राजधानी की बोली, सरकारी बोली नहीं है, वहां कोई चीज़ जनता की नहीं हो सकती.

که فرینچ کی 350 کویاں اوسطا ایک منت میں ہوئی ہماتی ھیں' جاپائی کی 310' جومنی کی 250 اور انکویزی کی صرف 220. میوا خیال هے که سلستوت اور استی تقلی هندی کی 150 بھی نہیں، شائد میوی بولی فریائچ کو بھی مات کونی هے' لیکن اسطرف کون بھان دے آ کیا رکھا ہے اُن باتوں میں آ مات کی ھاتھ گھسائی 'یہ ہے ھارا علم کا شرق ا

مهری بولی کے روپ میں چھ سوریں' 21 وینجی' سب شدھ' آنمیں کوئی ملاوت یا جوز نہیں اور اسلئے وہ ایک مرتبی' سریلی' بہتی' موسیقی ہے . خوبصورتی میں ساری دنیا کی بولیں میں اسے تیسرا درجته دیا گیا ہے اگر اسمیں جنس (لنگ) کی بیماری نه ہوتی تو دوسری گنی جاتی . گرامر نه ہولیکے برابر' سیدھی سادی سندی جسے گہنے پاتے سے نفرت' بولئے میں آسان سیجھٹے میں آسان' سیکھٹے میں آسان ۔ اسکی اس آسانی نے اسے پھلئے میں آسان' سیکھٹے میں آسان ۔ اسکی فیونا نہیں ہے تو یہ کہ اسمیں ایک آدمی دوسرے کو اسانی سے دھونا نہیں دیسکتا' اور ہمارے لیڈر چاہتے ہیں ایسی زبان جسیس وہ دیونا دے سکیں یا کم سے کم لارے لیے لگا سکیں، یہی لیڈر کہتے ہیں یہاں ہے جنتا کا راج اِسپ دھونا' کہتے کی بات اِ جس دیس میں اس دیس کی عام بولی یا آسکی راجدہائی جس دیس میں اس دیس کی عام بولی یا آسکی راجدہائی کی بہیں جو سکتی،

एक खास भियाद के अन्दर हर सूबे की अदालतों और असेम्बिलयों का काम काज उसी सूबे की भाषा म जारी होना चाहिये. अपील की आख़िरी अदालत की ज़बान हिन्दुस्तानी क्रार दी जाय, लिखावट चाहे देव-नागरी हो या फारसी. सेन्ट्रल गवर्नमेन्ट और असेम्बिलयों की भाषा भी हिन्दुस्तानी ही हो. अन्तरीस्ट्री राज ब्योहार की भाषा अंगरेजी रहे. मुक्ते भरोसा है कि अगर आपको यह तजवीज अपने विचार के मुताबिक नजर न आई और आपने यह खयाल किया कि मैं स्वराज की इच्छा में हद से बाहर चला गया हूँ तो भी आप छूटते ही इसकी हंसी न उड़ाने लगेंगे.

-महात्मा गांधी 🕒

ایک خاص میعاد کے اندر هر صوبے کی عدالتوں اور اسمبلیوں کا کام کا اُسی صوبے کی بھا شا میں جاری هونا چاهیئے ، اپیل کی اُخری عدالت کی زبان هندستانی قرار دی جائے الکھارت چاھے دیوناگری هو یا فارسی ، سینقرل گورنمنٹ اور اسمبلیوں کی بھا شا بھی هندستانی هی هو انتر رائدی راج بیو هار کی بھا شا انگریزی راج ، مجھے بھروست هے که اگر آپ کو یہ تجویز اپنے وچار کے مطابق نظر نے آئی اور آپ نے یہ خیال کیا که میں سوراج کی اِچھا میں حد سے باهر چلا گیا ،هوں تو بھی آپ چھوتیے هی اِس

سمهاتما كاندهى

श्री सुन्द्र लाल

श्री बी. जी. खेर कई साल तक बम्बई के चीक मिनिस्टर रह चुके हैं. उसके बाद वह इंगलैंड में भारत के हाई कमिश्नर थे. हम उन्हें एक जमाने से अच्छी तरह जानते हैं. हमारे दिल में उनका बढ़ा आदर है.

श्री बी. जी. खेर को उनके साथी 'बाला साहब' कहते हैं. वन्बई के पिछले दौरे में हमें बाला साहब से कई बार मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ. पहली बार हम उनसे उनके खार के मकान पर मिले. डेढ़ घंटे तक वह हमें बड़े शीक के साथ यह बताते रहे कि आजकल वह अपना समय किस काम में खर्च करते हैं. उनकी सेवा का मैदान आज कल बम्बई के अन्दर रारीब लोगों की कुछ बस्तियाँ हैं. अगले दिन सुबह हमने उनके साथ जाकर इन बस्तियों की हालत और बाला साहब और उनके साथियों के काम को देखा. इसमें तीन घंटे से अपर खर्च हुए. शाम को फिर उन्होंने हमें अपने काम की बाबत और अधिक जानकारी कराई.

बन्बई की म्युनीसीपेलिटी आजकल एक बड़ी म्युनी-सीपेलिटी है जिसे मेटर बाम्बे यानी बड़ी बम्बई कहते हैं. इस बड़ी बम्बई के अन्दर बांदरा के बूचड़जाने से मिला हुआ दूर तक फैला हुआ एक इलाका है जिसमें लगभग बीस हजार मर्द औरत और बच्चे बसते हैं. इसमें अलग अलग कई बसतियां हैं. इन लोगों की ग़रीबीं, इनकी मुसीबतों और उनके रहन सहन को देख कर हमें बिलकुल यह ख्याल आया कि सच मुच अगर नर्क कहीं धरती पर हो सकता है तो यहीं है.

यह लगभग सारा इलाक़ा निचान में है वहां की अधिकतर धरती पानी और कीचड़ से भरी हुई है. बीस हजार की आबादी में, कहीं कहीं थोड़ी ऊंचाई पर सौ पचास मकान ऐसे हैं जो आदमियों के रहने के मकान कहला सकते हैं. यह आम तौर पर उन लोगों के हैं जो पास के बूचड़काने में ठेकेदारी वरौरा का काम करते हैं या रेल के मुलाजिस हैं जिनमें से कुछ के लिये रेलवे ने क्वार्टर बनवा दिये हैं. यह लोग खुशहाल या कम से कम खाते पीते कहे जा सकते हैं. बाक़ी हजारों मोपड़ों और उनकी हालत को देख कर यह माजूम ही नहीं होता कि उनमें इनसान

شرى سندرلال

شری ہی، جی، کھیر کئی سال تک ہمبئی کے چیف منسر را چکے ھیں اسکے بعد وہ انکلینڈ میں بھارت کے ھائی کمشنر تھے ، ھم اُنھیں ایک زمانے سے اُچھی طرح جانتے ھیں۔ ھمارے دل میں اُن کا بڑا آدر ہے ،

شری ہی، جی. کھرر کو اُن کے ساتھی 'بالا صاحب' کہتے ھھیں، ہمبئی کے پنچھلے دررے میں ھمیں بالا صاحب سے کئی بار ملنے کا سوبھاگیت پراپت ھوا. پہلی بار ھم اُن سے اُن کے کھار کے مکان پر مئے ۔ تیزھ گھنٹے تک وہ ھمیں بڑے شوق کے ساتھ یہ بتاتے رہے که آجکل وہ اپنا سمئے کس کام میں خرچ کرتے ھیں ، اُن کی سیوا کا میدان آجکل ہمبئی کے اندر غریب لوگوں کی کچھ بستیاں ھیں ، آگلے دین صبح ھم نے اُن کے سانھ جاکر اِن ہستیوں کی حالت اور بالا صاحب اور اُن کے ساتھیوں کے کام کو میں دیکھا ، اِس میں تین گینٹے سے اُرپر خرچ ھوئے ، شام کو پھر اُنھوں نے ھمیں اپنے کام کی بابت اور ادھک جانکاری کرائی ،

بہبئی کی میرنسپیلتی اُجکل ایک بڑی میرنسپیلتی ہے جسے گریٹر بامبے یعنی بڑی بمبئی کہتے ھیں، اِس بڑی بمبئی کے اندر باندرا کے بوچڑھانے سے مالا ھوا دور تک پھیلا ھوا ایک علاقہ ہے جس میں لگ بھگ بیس ھزار مرد عورت اور بچے بستے ھیں، اس میں الگ الگ کئی بستیاں ھیں، اِن لوگوں کی غریبی' اِن کی مصهبتوں اور اُن کے رھی سہن کو دیکھکر شمیں بالکل یہ خیال آیا که سیے میچ اگر نرک کہیں دھرتی پو ھوسکتا ہے تو یہیں ہے،

یہ لگ بھگ سارا علائے نتجان میں ہے ، وہاں کی ادھکتر دھرتی پانی اور کیچڑ سے بھری ہوئی ہے ، بیس ہزار کی آبادی میں' کہیں کہیں تھوڑی اونتجائی پر سو پچاس مکان ایسے ہیں جو آدمیوں کے رہنے کے مکان کہلا سکتے ہیں ، یہ عام طور پر آن لوگوں کے ہیں جو پاس کے بوچڑخالے میں تھیکے داری وغیرہ کا کام کرتے ہیں یا ریل کے ملازم ہیں جن میں سے کچھ کے لئے ریارے نے کوارٹر بنوا دیئے ہیں۔ یہ لوگ خوش حال یا کم سے کم کھاتے پھتے کہے جاسکتے ہیں، باتی ہزاروں جھونپڑوں اور ایک کی حالت کو دیاؤہ کر یہ معلم ہی نہیں ہوتا کا ان میں انسان انسان کو دیاؤہ کر یہ معلم ہی نہیں ہوتا کا ان میں انسان

رهید هونکی، نظ دیواری هیں تع دروازے اللہ کپرکیاں تع فرش کا چہت ، کردے خاتوں میں سے بوالے ٹین یا ڈاٹ کے فرش کا جہت ، کردے خاتوں میں سے بوالے ٹین یا ڈاٹ کے گرے جمع کرکے ایک طرح کی جھوٹھزیاں سی ڈال لی گئی چیوج جس میں سے ایک ایک میں چار چار اور پانچ بائچ آدمیوں کا کلبت رهتا ہے ۔ اکثر جات نیجے کیچر ہے ۔ اینت پانچ آدمیوں کا کر لیا گیا ہے ۔ کسی اوسط گاوں کے لوگ اپنے جاتوروں کو ایس طرح کے مالتوں میں نہیں رکھ سکتے ،

اِن لوگوں کے لئے کوئی پاخانے نہیں ھیں، پاس کوئی کیا جہائل بھی نہیں ھی ایک جہونیتی سے درسری جہونیتی یا ایک چہرٹی بستی جانے کے لئے کوئی ٹھیک راستے بھی نہیں ھیں، بالا صاحب اور اُن کے ساتھوں کے ھمراہ جب ھم اِن بستیوں کو دیکھتے ھوئے پھر رھے تھے تو چہرتے چھوئے راستوں پر ھمیں سنبھال سنبھال کر پیر رکھنے پڑتے تھے، یہ ھزاروں مرد' عررت اور بچے جہاں چاھے پاخانے کے لئے بیت، جاتے ھیں ، یہ دیکھکو ھمنے بالا صاحب سے شکانت کی تو آنھوں نے بڑے درد کے ساتھ ھم سے کہا:۔۔'یہ بیچارے اور کو بھی کیا سکتے ھیں ہے اور کہاں بیتھیں ہے۔'

ان بیس هزار لوگوں میں سے بہت سے مسلمان هیں' کچے عیسائی' کچے هریجن اور کچے دوسری جاتوں کے هندو کچے ایسے فریب مسلمان بھی هیں جو هندو مسلم دنگوں کے دوسوں میں شہر کے دوسوے حصوں سے بھاگ بھاگ کر یہاں آئو بس گئے هیں . اِن میں سے کچے شہر میں جگہ جگه جاکو مزدوری کرتے هیں بشرطیکه مزدوری مل جائے . کچے شہر سے کفن کی ردی یا چیتھڑے خرید کر یا جمع کرکے آنھیں بھچ کھند کی ردی یا چیتھڑے خرید کر یا جمع کرکے آنھیں بھچ کھند کی دوس کچے ناداری سے مجبور هوکر اِدھر اُدھر چوری چماری بھی کرلیتے هیں ، غریبی کی تصویر اِس سے بوهکو چماری بھی دنیا میں کہیں اور دیکھئے کو مل سکے اور یہ اُس اُدر یہ اُس اُدر یہ اُس اُدر یہ اُس اُدر جو بنگلوں' آثاریوں اور محلوں سے بھوی ہوئی ہے ،

ان یستیوں تک پہنچنے کا راساته ریل کی کئی چوڑی چوڑی چوڑی قانیں پار کر کے ماتا ہے۔ نہ کوئی پل ہے، نہ کوئی سرک، ہم شری ہی، جی، کبیر کے ساتھ جہاں تک موڈرسے جاسکتے ہے گئے ، شری ہی، جی، کبیر نے ساتھ جہاں تک موڈرسے جاسکتے کہا کہ ریل کے پہائک کو کبارائے کے لئے، تاکه موڈر اِدھر سے اُدھر جاسکے، اُنہیں کبھی کبھی تیڑھ دیڑھ گہنٹے اُنتظار کرتا چڑا ہے ، یہ اُس ناصلے کے لئے جو شاید سو گز بھی نہ موٹا ، اگر اِن بستیوں سے کسی بیبار کو شہر کے کسی اسپتال تک لائے کی کوشش کی جائے یا بچہ ھوئے کی صورت میں کسی کو لیدی چائے یا بچہ ھوئے کی صورت میں کسی کو لیدی چائے یا بحجہ ھوئے کی صورت میں کسی کو لیدی

हते होंगे. न दीबारें हैं न दरबाखे, न सिड़िक्यां न फर्रा, त छत. कूड़ेसानों में से पुराने टीन या टाट के दुकड़े जमा हरके एक बरह की मोंपिड़ियां सी बाल ली गई हैं जिनमें से एक एक में बार बार और पाँच पाँच आदमियों का इनका रहता है. अकसर जगह नीचे कीचड़ है. ईट पत्थरों के दुकड़ों पर लकड़ी बरीरा रखकर उसे किसी तरह सोने हैठने के काम का कर सिया गया है. किसी औसत गाँव के लोग अपने जानबरों को इस तरह के मकानों में नहीं एस सकते.

इन सोगों के लिये कोई पाखाने नहीं हैं. पास कोई हुला जंगल भी नहीं हैं. एक मोंपनी से व्सरी मोंपनी या एक बोटी बस्ती से व्सरी बस्ती जाने के लिये कोई ठीक रास्ते भी नहीं हैं. बाला साहब और उनके साथियों के हमराह जब हम इन बस्तियों को देखते हुए फिर रहे थे तो छोटे होंबे रास्तों पर हमें संभाल संभाल कर पैर रखने पड़ते थे. बह इखारों मर्ब, औरत और बच्चे जहां चाहें पाखाने के लिये बैठ जाते हैं. यह देखकर हमने बाला साहब से रिकायत की तो उन्होंने बड़े दर्द के साथ इमसे कहा:— "यह बेचारे और कर भी क्या सकते हैं? और कहां बैठें ?"

इन बीस इजार लोगों में से बहुत से मुसलमान हैं, इस इसाई, इस हरिजन और इस दूसरी जातों के हिन्दू. इस ऐसे रारीय मुसलमान भी हैं जो हिन्दू मुस्लिम दंगों हे दिनों में शहर के दूसरे हिस्सों से भाग भाग कर यहां आकर बस गए हैं. इनमें से इस शहर में जगह जगह जाकर मजदूरी करते हैं बशरतेकि मजदूरी मिल जाय. इस शहर से काराज की रही या चीथड़े खरीद कर या अस्म करके छन्हें बेच लेते हैं, इस नादारी से मजबूर होकर एयर कथर चोरी चमारी भी कर लेते हैं. गृरीबी की तसवीर एससे बदकर शायद ही दुनिया में कहीं और देखने को सिल सके और यह इस "बड़ी बम्बई" के ठीक अन्दर जो मंगलों, अटारियों और महलों से भरी हुई है.

इन बस्तियों तक पहुँचने का रास्ता रेल की कई चौड़ी बीड़ी शाइनें पार करके मिलता है. न कोई पुल है, न कोई सक्क, इस भी बी. जी. खेर के साथ जहां तक मोटर से जा सक्ते थे गए. श्री बी. जी. खेर ने हमसे किर बड़े दर्द के साथ कहा कि रेल के फाटक को खुलवाने के सिचे, ताकि मोडर इवर से उपर जा सके, उन्हें कभी कभी डेढ़ डेढ़ चंटे हम्बचार करना पड़ा है. यह उस फासले के सिचे जो सायद सी गण भी न होगा. जगर इन बस्तियों से किसी बीमार को शहर के किसी अस्पताल तक लाने की कोशिश ही जाय या बच्चा होने की सूरत में किसी को लेडी बाक्टर ही मदद की अकरत हो सो एक हो फरलाँग पार करने के

لئے پرأ دن لگ سکتا ہے أن أبهاگوں كے لئے شابد دليا كى يہ سہوليتيں هيں هى نہيں ، كہيں كہيں أن تك پہنچنے كے لئے ببيئى واثر وركس كے موٹے موٹے ببيوں (مينس) پر سے كود كود كو جونانا پرتا ہے .

اِس ہر کہا جاتا ہے کہ ہمبئی میونسپیلٹی اِن لوگوں سے اسی حساب سے ٹیکس وصول کرتی ہے جس طرح سڑک کے درسر طرف کے اثاری والوں سے بالا صاحب اور اُن کے ساتھیں نے همیں بتایا که اُس علام سے قریب ایک لاکھ تیکس وصول هوتا هم آور أن ير خرج صرف قريب دو هزار رويهه سالاته . يعلى ایک تیکس جمع کرلے والا ہے جس کو ڈیڑھ سو رویعہ مهینہ ديا جاتا هـ . ممكن هـ إن أنكور مين تهروي بهت غلطي هو . یه همیں زبائی کیول یاد سے بتائے گئے تھے . ایسی حالت میں قدرتی طیر پر بالا صاحب کے شہدوں میں "چوری أور رشوت خوری '' بھی وھاں خوب چلتی ہے . کچھ غندا قسم کے انسان بھی وهاں آسی غرض کے لئے رهنے لکے هدن ، هدیں بتایا گیا کہ اُس بستی کے ایک حصے سے کوئی ایک ادمی خلاف قانوں أن غريبين سے لگ بهگ چودة سو روپية مهينه وصول كر ليتا هے . حال مين سنا هے اس ير مقدمه بهي قائم هوگيا هے ، تنبيجه جو کچے هو ، بڑے اُدسیوں کے جرم بڑے جرم هوتے هیں . اُن کے پاپ ارتیجی اثاریوں اور مخمل کے گدوں میں چھھے رہتے ھیں . غریبوں داداروں اور بدقستوں کے چھوٹے چھوٹے گناہ اور گلدے جنرم أن كى غريبى كے ساتھ لوك كر چمكتے هيں ، كئى دکھ بیری گیٹنائیں آس بستی کے رہنے والوں کی هم نے آن تین گینتس کے اندر باللھی اور آن کے ساتھیوں سے سنیں ، همارا دل برداشت نهیں کرتا کہ هم انہیں یہاں دھراویں ،

آن لوگوں کی تندرستی کی یہ حالت ہے کہ اور بیماریوں کو چھرز دیجھئے حال میں بالا جی اور آن کے ساتھیوں نے جو آن بستیوں کی سروے کرائی اُس میں معلوم ہوا کہ قریب ایک ہزار بیمار اُن بستیوں میں ایسے میں جن پر کوڑھ کا شک ہے ۔ جائکاروں کی رائے ہے کہ اگر اِسے روکا نہ گیا تو تھوڑے دنوں میں یہ سارا علاتہ ایک بڑا کوڑھی خانہ ہو جائیگا ، جن حالتوں میں وہ رہ رہے ہیں اُن کا اور کچھ نتیجہ ہو بھی کیسے سکتا ہے ۔ شری بی جی، نہیر نے اِس بارے میں بمبئی سرکار کے قائری کے انسروں سے پترویوہار شروع کر رکھا ہے ، اس کا جب اور جو کچھ نتیجہ نکل سکے ،

انکلینت سے لوتنے کے کچے دنوں بعد بالا صاحب کا دھیاں ان پستیوں کی طرف گیا ۔ اُنہوں نے اُن کی حالت کو جا کر اچھی طوح دیکیا ۔ اُس علاقے کا تین سنستهاؤں سے سبندھ ھے۔ایک بمبئی میونسپیلٹی ' دوسرے بمبئی سرکار اور تیسرے ریاوے ۔ بالا صاحب نے تینوں کے ساتھ

सेवे पूरा दिव लग सकता है. उन अक्षागों के लिये शायद [निया की यह सहूलियतें हैं ही नहीं. कहीं कहीं उन तक हिंचने के लिये बम्बई बाटर वर्क्स के मोटे मोटे बम्बों मेन्स) पर से कृद कृद कर जाना पड़ता है.

इस पर कहा जाता है कि वन्बई न्युनीसीपेलिटी इन होगों से इसी हिसाब से टेक्स बसूल करती है जिस तरह उदक के दूसरी तरफ के घटारी वालों से. वाला साहव बीद उनके साथियों ने हमें बताया कि उस इलाके से क़रीब क लाख टेक्स बसूल होता है और उन पर खर्च सिर्फ हरीब दो हजार रुपया सालाना. यानी एक टेक्स जमा हरने बाला है जिसको डेढ सौ रुपया महीना दिया जाता है. रमिकन है इन आंकड़ों में थोड़ी बहुत रालती हो. यह हमें ब्बासी केवल याद से बताए गए थे. ऐसी हालत में कूद्रती ीर पर बाला साहब के शब्दों में "चोरी और रिशवत बोरी" भी वहां खुब चलती है. कुछ गुंडा किस्म के इनसान री बडां इसी रारण के लिये रहने लगे हैं. हमें बताया गया के उस बस्ती के एक हिस्से से कोई एक आदमी खिलाफ हानून इन रारीबों से लगभग चौदह सी रुपया महीना स्ति कर लेता है. हाल में सुना है उस पर मुक़द्मा भी हायम हो गया है, नतीजा जो कुछ हो, बढ़े आदमियों के हर्स बढ़े जुर्म होते हैं. उनके पाप ऊंची अटारियों और खिमज़ के गहों में छुपे रहते हैं. रारीबों, नादारों और बद-क्रेस्प्तों के छोटे छोटे गुनाइ और गंदे जुर्म उनकी रारीवी हे साथ लिपट कर चमकते हैं. कई दुख भरी घटनाएं उस स्ती के रहने बालों की हमने उन तीन घंट्रों के अन्दर गला जी और उनके साथियों से सुनीं. हमारा दिल ादीश्त नहीं करता कि हम उन्हें यहां दहरावें.

चन लोगों की तन्दरस्ती की यह हालत है कि और तिमारियों को छोड़ दीजिये हाल में बाला जी और उनके त्राधियों ने जो उन बसतियों की सरवे कराई उसमें मालूम आ कि क़रीब एक हुजार बीमार उन बस्तियों में ऐसे हैं जन पर कोढ़ का शक है, जानकारों की राय है कि अगर स्वे रोका न गया तो थोड़े दिनों में यह सारा इलाका एक हम कोड़ीखाना हो जाएगा. जिन हालतों में वह रह रहे हैं बिका और कुछ नवीजा हो भी कैसे सकता है. श्री बी. जी. बेर ने इस बारे में बस्बई सरकार के डाक्टरी के अफसरों से आ ज्योहार शुरू कर रक्खा है. उसका जब और जो कुछ स्वीजा विकल सके.

इंग्लैंड से ब्रीटने के कुछ दिनों बाद बाला साहब का यान इन बस्तियों की तरफ गया. उन्होंने उन की हालत में बाकर अच्छी दरह देखा. उस इलाक़े का तीन संस्थाओं ह सम्बन्ध है—एक बम्बई न्युनीसिपेलटी, दूसरे बम्बई सकार चौर बीखरे रेलबे. बाला साहब ने तीनों के साथ

بغر ويوهار شروع كيا . يه يتر ويوهار نقول تهين گيا ير اِس سے بالا ماحب کو آدھک اُمید بھی نہیں بندھی . پار ویوهار جاری هے . هم سے باتیں کرتے کرتے ایک بار کھر اُنھوں نے بتی مایوسی سے کہا۔۔'' کوئی پروالا نہیں کرتا! '' پر اِس حالت میں بالماحب نے بڑی سجهداری اور همت سے کلم لیا . اُنہوں نے همسے کہا۔ " ٹوگوں کو یہ سب کلم سرکار هی پر نهیں چبور دینا چاهئے . همیں اینا کام خود كونا چاهئے . اُ اِس اصول كے انوسار أنهوں كے أن أبهاكى بستيوں کی حالت سدهار نے کا کام اپنے هاتھ میں لے آیا . آجکل أن کا نگ بھگ سب سماء إسى ميں بينتا هے، كچھ بہت أچھ نياكي أرو لكن سه كام كرنے والے بھى أن كے ساتھ هوكئے هيں . بالا صاحب نے اپنی نجی پونجی کی ایک خاصی بڑی رقم یعنی لگ بھگ سب کچھ جو اُن کا ایلا تھا اِس کام کے لئے دے دیا ہے ، ہستی کے بحصوں کے لئے آب ایک جہوٹا سا اسعول وہاں بن گیا ہے جس میں آجال لگ بھگ چارسو لڑکے اور اڑکیاں لکھنا پڑھلا سیکھٹے ھیں ، کچھ لوگوں کے رہنے کے لئے کہیں کہیں زمین کو فرا اونجا کر کے اِس طرح کے سیدھ سادے مکان بھی نمونے کے طور یو بنا دیئے گئے هیں جن میں انسان رہ سکیں . ایک چھوٹا سا کا من هال يعنى پنجائت گهر أن كے لئے تيار هوگيا في . بالا صاحب اور ان کے ساتھی اُن لوگوں کے لئے روزار کا بھی انتظام کر رہے میں ، یاس کے ہوچرخانے میں جو بھیریں کٹٹی ھیں أن كي أون كي كت كو أبهي تك ملك كے باهر بهيج دي جاتي تھی ، بالصاحب اور اُن کے سانھیوں نے اب اُس آون دو خرید كو وهين ركهنا شروع كو ديا هے ولا أون أنهين لوگوں سے كتواني جاتي هے اور هاته كرگهوں پر أنهيں سے أس سكمبل اور كرَّنگ كا كيرًا بنوايا جانا هے عملے أن كا حال كا بنا هوا أيك کیبل اور ایک کوئنگ کا تهان بھی دیکھا . سال مہت سندر تھا ۔ پر يه كام ابهى تو من مهي چيتانك بهى نهين ، روئى سے چرخوں پر سوت کاتنے اور اُس سے کھدر بننے کا کام بھی شروع كراً ديا كيا هـ . هاته كا كاغذ بنائے أور صابي بنائے كے كام بهى بہت جلدی شررع هونے والے هيں . بالاصاهب اور أن كے ساتھیوں کے کام میں هندو' مسلمان، هريجن هيں' اونے نيچ كے فرق کی کہیں گندھ تک نہیں ھے . اُن کے ساتھوں میں بھی سب دھرموں کے اور سب طرح کے لوگ بڑی خوشی سے شامل ھیں ، بالاماحب نے ھیں وشواس دلایا که پانچ برس کے الدر وه اس ساری بستی کو ایک "گاردین ستی" یعنی سندر بستی اور هرابهرا باغ بنادینکے .

هم نے بالا صاحب سے پرچھا که وہ بنا کانی دهن کے یا سرکاری مدد کے اس اتنے ہڑے کام کو کیسے پررا کر سکینگے اا انہوں نے بڑی همت کے ساتھ جواب دیا که "جب انہوں نے بڑی همت کے ساتھ جواب دیا که "جب میں جھرے اپنے پاس کا پیستہ خام هو جائے گا تب میں

पत्र ब्योहार ग्रुक्त किया, यह पत्र ब्योहार फुजल नहीं गया पर इस से बाला साहब को अधिक उन्मीद भी नहीं बंधी. पत्र व्योहार जारी है. हम से बातें करते करते एक बार फिर उन्होंने बड़ी मायूसी से कहा-"कोई परवाह नहीं करता !" पर इस हालत में बाला साहब ने बढ़ी सममदारी और हिन्मत से काम लिया. उन्होंने हम से कहा-"लोगों को यह सब काम सरकार ही पर नहीं छोड़ देना चाहिये. हमें अपना काम खुद करना चाहिये." इस असूल के अनुसार उन्होंने उन अभागी बस्तियों की हालत सुधारने का काम अपने हाथ में ले लिया. आजकल उनका लगभग सब समय इसी में बीतता है. कुछ बहुत श्रच्छे त्यागी श्रीर लगन से काम करने वाले भी उनके साथ हो गए हैं बाला साहब ने अपनी निजी पुँजी की एक खासी बड़ी रक्तम यानी लगभग सब कुछ जो उनका अपना था इस काम के लिये द दिया है. बस्ती के बच्चों के लिये अब एक छोटा सा स्कूल वहां वन गया है जिसमें आजकल लगभग चार सौ लड़के और , जबकियां लिखना पढना सीखते हैं. कुछ लोगों के रहने के लिये कहीं कहीं जमीन को जरा ऊँचा करके इस तरह के सीधे सादे मकान भी नमने के तौर पर बना दिये गए हैं जिनमें इनसान रह सकें. एक छोटा सा कामन हाल यानी पंचायत घर उनके लिये तैयार हो गया है. बाला साहब भीर उनके साथी उन लोगों के लिये रोजगार का भी इन्तजाम कर रहे हैं. पास के ब्चड़खाने में जो भेड़ें कटती हैं उनकी ऊँन कटकर अभी तक मुल्क के बाहर भेज दी जाती थी. बाला साहब और उनके साथियों ने श्रव उस कन को खरीद कर वहीं रखना शुरू कर दिया है. वह ऊन जन्हीं लोगों से कतवाई जाती है और हाथ करघों पर उन्हीं से उस से कम्बल और कोटिंग का कपड़ा बुनवाया जाता हैं. हमने उनका हाल का बुना हुआ कम्बल और एक कोटिंग का थान भी देखा. माल बहुत सुन्दर था. पर यह काम अभी तो मन में छटांक भी नहीं. रुई स चरकों पर सूत कातने और उससे खहर बुने का काम भी शुरू करा दिया गया है, हाथ का काराज बनाने और साबुन बनाने क काम भी बहुत जल्दी शुरू होने वाले हैं. वाला साहब श्रीर उनके साथियों के काम में हिन्दू, मुसलमान, हरिजन हैं. ऊँच नीच के प्रक्रिकी कही गंध तक नहां है. उनके साथियों में भी सब धर्मी के और सब तरह के लोग बड़ी ख़ुशी से शामिल हैं. बाला साहब ने हमें विश्वास दिलाया कि पांच बरस के अन्दर वह उस सारी बस्ती को एक "गार्डेन सिटी" यानी प्रन्दर बस्ती और हरा भरा बाग बना देंगे.

हमने बाला साहब से पूछा कि वह बिना काकी धन हे या सरकारी मदद के इस इतने बड़े काम को कैसे पूरा हर सकेंगे ? उन्होंने बड़ी हिम्मत के साथ जवाब दिया कि— 'जब मेरे अपने पास का पैसा खतम हो जायगा तब मैं सरकार से भी मांगूँगा और लोगों से भी मांगूँगा और तुके विश्वास है कि तब दोनों मुक्ते मदद देंगे."

बाला साहब छियासठ बरस पूरे कर चुके. उन्हें दिल की बीमारी है जिसे डाक्टर थाम्बोसिस आफ़ दी हार्ट कहते हैं. बह अधिक चलते चलते धकने लगते हैं. उस दिन सुबह को भी बह थकने लगे. उन्होंने सादे स्वभाव हमारे कंधे पर हाथ रख लिया. इछ दूर चलने के बाद हमने उतने ही सादे स्वभाव उनसे कहा कि—"बाला साहब! आपको अब चलने में लकड़ी इस्तेमाल करनी चाहिये, इससे बड़ी मदद मिलती है." उन्होंने सुनते ही एक दम अपना हाथ हमारे कंधे पर से हटा लिया और कहने लगे—"मैंने लगभग तीस बरस जवानी के दिनों में शौकिया छड़ी हाथ में रक्खी है. अब में तय कर चुका हूँ कि किसी चीज का सहारा लेकर न चलूंगा." सबसुच उन दुखियों की सेवा करने में बाला साहब अपने थाम्बोसिस को भूल जाते हैं.

बात बात में बाला साहब ने हम से यह भी कहा—
"सुन्दरलाल जी! मैं अब यह महसूस करता हूँ कि जितने साल मैंने जीफ, मिनिस्टरी की बह साल मैंने गँबाए. हम लोगों के लिये काम ता यह है." हमने सुना है कि पिछले दिनों बाला साहब को सरकार की तरफ, से किसी प्रदेश की गर्बनी आफ़र की गई थी. उन्होंने इस काम को हाथ में ले लेने के कारण उस से इनकार कर दिया. कांग्रेस संगठन की जिन्मेदारी भी उन पर डालने की कोशिश की गई थी. उन्होंने उस से भी इनकार कर दिया. हाल में हिन्दी कमीशन की सदारत उन्होंने अपने पुराने साथियों के बहुत जिद करने पर और इस तरह की साफ़ शर्तों पर मन्जूर कर ली है कि जिन से उनके इस सेवा काम में फर्क न पड़.

बाला साहब बन्बई के अपने इस सारे पुरामाम को एक तरह का "परिश्रमालय" क़ायम करना कहते हैं. 'परिश्रमालय' नाम उन्हें विनाबा जी ने सुभाया है. परिश्रमालय का अर्थ है 'मराक्कत खाना."

इलाहाबाद के एक उजन जो लगभग पैंतीस बरस सं बम्बई में रहकर मजदूरों और गरीबों की संवा कर रहे हैं हम से कहते थे कि कम या श्रिधिक इस तरह की बस्ती बम्बई में यह एक ही नहीं है. बाला साहब और उनके साथी इस बात का भी जानते हैं कि इस तरह के परिश्रमालयों की भारत भर में जगह जगह जरूरत है. उनकी योजना बहुत बड़ी है. वह इस तरह के सत्तर हजार परिश्रमालय भारत भर में खोल देना चाहते हैं, यानी हर दस गांव पीछे एक ताकि देश से बेरोजगारी और भिखमंगापन मिट सके. बम्बई के आस पास की कुछ जगहों से लागों ने उन्हें बुलाना भी ग्रुष्ठ कर दिया है. बहुतों ने मदद का बादा भी किया है. इमारी दिल से इच्छा है कि बाला साहब की यह महत्वा-कांछा पूरी हो. سرکار سے بھی مائکوئکا اُور لوگوں سےبھی مائکوئکا اُور معجمے شواس ہے کہ تب دوئوں معجمے مدد دینکے۔ "

بالعاحب چهیاسته ، برس پرے کر چکے ، آنهیں دل کی ماری ہے جسے ڈاکٹر تھامبوسس آف دی هارت کہتے هیں . او بھی ولا تھکنے چلتے تھیں ، اُس دن صبح و بھی ولا تھکنے لکے ، آنھوں نے سادے سبھاؤ همارے کندھ ر هاته رکھ لیا ، کچھ دور چلنے کے بعد هم نے اُننے هی سادے سبھاؤ اُن سے کہا کہ "الا صاحب! آپ کو اب چلنے میں لکتی ستممال کرنی چاهئے' اِس سے بڑی مدد ملتی ہے'' ، آنھوں نے منتے هی ایک دم اپنا هاته همارے کندھے پر سے هتا لیا اور کہنے میں نے لگ بیگ تیس برس جوانی کے دئوں میں کوقتے چھڑی هاته میں رکھی ہے ، اب میں طے کر چکا هوں که نموں کو چیز کا سہارا لے کر نم چلوں کا " سیے میے اُن دکھیوں کی سبوا کرنے میں بالا صاحب اپنے تھامبوسس کو بھرل جاتے ہیں ، میوا کرنے میں بالا صاحب اپنے تھامبوسس کو بھرل جاتے ہیں ، میوا کرنے میں بالا صاحب اپنے تھامبوسس کو بھرل جاتے ہیں ، سے میے اُن دکھیوں کی

بات بات میں بالا صاحب نے هم سے یہ بھی کہا۔

السندر الل جی ا میں آب یہ محسوس کرتا هوں کہ جتنے

الل میں نے چیف منستی کی وہ سال میں نے گنوائے ، هم لوگوں

کے لئے کام تو یہ ہے ،'' هم نے سنا ہے کہ پچپلے دئوں بالا صاحب

و سرکار کی طرف سے کسی پردیش کی گورنری آفر کی گئی

ھی ، آنھوں نے اِس کام کو هاتم میں لے لینے کے کارن اُس سے

نکار کو دیا ، کانگریس سنگٹھی کی ذمعداری بھی اُن پر تالنے

نی کوشش کی گئی تھی، آنھوں نے اُس سےبھی انکار کردیا، حال

یک کوشش کی گئی تھی، آنھوں نے اُس سےبھی انکار کردیا، حال

بیں هادی کمیشن کی صدارت آنھوں نے اپنے پرائے ساتھیوں کے

بیس شادی کمیشن کی صدارت آنھوں نے اپنے پرائے ساتھیوں کے

بیس شادی کمیشن کی صدارت آنھوں نے اپنے پرائے ساتھیوں کے

بیس شادی کونے پر اور اُس طرح کی صاف شرطوں پر منظور

بیل ھے کہ جن سے آن کے اِس سیوا کام میں فرق نہ پڑے ۔

بالا صاحب بمبی کے اپنے اِس سارے پروگرام کو ایک

طرح کا ''پریشرمالے'' قائم کرنا کہتے ھیں ، 'پریشرمالے' فام

طرح کا ''پریشرمالے'' قائم کرنا کہتے ھیں ، 'پریشرمالے' فام

غرے کا ''پریشرمالے'' قائم کرنا کہتے ھیں ، 'پریشرمالے' فام

اله آباد کے ایک سجن جو لگ بیگ پینتیس برس سے بہئی میں رہ کو مردورن اور غریبوں کی سیوا کر رقے ھیں ھم سے کہتے تھے کہ کم یا ادھک اِس طرح کی بستی بمبئی میں یہ ایک ھی نہیں ھے ، بالا صاحب اور اُن کے ساتھی اِس بات کو بہی جانتے ھیں کہ اِس طرح کے پریشرمالیوں کی بھارت بھر میں جکہ جکہ فررت ھے ، اُن کی یرجنا بہت بڑی ھے ، رہ اِس طرح کے ستر ھزار پریشرمالے بھارت بھر میں کھول دینا چاھتے ھیں' یعنی ھر دس گاؤں پیچھے ایک ناکہ دیش سے یے درز گاری اور بھک منگاہی میٹ سکے ، بمبئی کے آس پانس کی کچھ کری اور بھک منگاہی میٹ سکے ، بمبئی کے آس پانس کی کچھ جکہیں سے لوگوں نے آنہیں بلانا بھی شروع کر دیا ھے ، بہتوں نے مدد کا وعدہ بھی کیا ھے ، ھماری دل سے آچھا ھے کہ بالا صاحب نے مدد کا وعدہ بھی کیا ھے ، ھماری دل سے آچھا ھے کہ بالا صاحب نے مدد کا وعدہ بھی کیا ھے ، ھماری دل سے آچھا ھے کہ بالا صاحب نے مدد کا وعدہ بھی کیا ھے ، ھماری دل سے آچھا ھے کہ بالا صاحب نے مدد کا وعدہ بھی کیا ھے ، ھماری دل سے آچھا ھے کہ بالا صاحب نے مدد کا وعدہ بھی کیا ھے ، ھماری دل سے آچھا ھے کہ بالا صاحب نے یہ مدد کا وعدہ بھی کیا ھے ، ھماری دل سے آچھا ھے کہ بالا صاحب نے یہ یہ کیا گھی یہ مدد کا وعدہ بھی کیا ھے ، ھماری دل سے آچھا ھے کہ بالا صاحب نے یہ یہ یہ کو کیا گھی یہ مدد کا وعدہ بھی کیا ھے ، ھماری دل سے انہ کیا گھی یہ مدد کا وعدہ بھی کیا ھے ، ھماری دل سے انہ کیا گھی یہ مدد کا وعدہ بھی کیا ہے ۔

नेसक—स्व. डा. इरि प्रसाद देखाई श्रद्धवादक—श्री गुनवंत मेहता

لههک سسورگهه داکتر هری پرساد دیسائی انوادک سشن گنونت مهتا

पहला दिन

बिस्तर में आधी जागृति और आधी नींद में आलसी अवस्था में पड़े रहने से इन्न फ़ायदा नहीं; जागते ही कौरन् चठ बैठो ! हमारा सबसे बड़ा जिस्मानी दुश्मन आलस्य (काहिली) है.

तहे-दिल से इस्तजा करो कि 'सब इन्सानों की तरक्की हो ! सञ्चाई के राहगीरों को हे भगवान ! ताक़त दो कि वे प्यादा हिन्मत और मेहनत से कार्य करते रहें और वे इन्द्रियों के विकारों के सुलाम न बनकर साबित क़दक रहें !'

फर अपने इस्ट देवता का सुमिरन करो, ज्यान धरो, सक्षे भक्ति भाव से भगवान से प्रार्थना करो कि, 'हे भगवान ! आज के दिन तक करने के काबिल काम न करके और न करने के काम करके मैंने जो जो पाप किये हैं, उन सबको माफ करो !' [इस अवसर ५र ऐसे कामों की जाँच-पड़ताल भी करो और जितने याद आयें उन सबको भगवान के सामने निवेदन करो.]

इतना करने से मन की एकामता बढ़ेगी, आत्म परीक्षा करना आएगा, हृद्य पवित्र होगा और एडच जीवन के लिये आग्नह बँघेगा. इसका मतलब यह नहीं कि तुम सारे दिन गंभीर और भारी बने हुए फिरा करो. मासूम हँसी-बिस्सगी में बक्त गुजारना तो जीवन विकास में निहायत खहरी है.

सिर्फ हैवान के माफिक न रहकर मानव जीवन का मुकम्मिल विकास करके, उच्च जीवन हासिल करने का आज से ही पूरा इरावा करलो. इस बात को गाँठ में बांच क्षेत्रे की खास जरूरत है.

दातुन करते वक्त और नहाते समय भी पाक-साफ विचार बराबर जारी रहने दो. पक्का इरादा करो कि, 'मेरी जिस्मानी गंदगी के साथ-साथ मेरी दिली गंदगी भी दूर हों!'

भोजन करते समय भी यह बात ध्यान में रहे कि खुराक केवल किस्म की परवरिश के लिये और सेहत के लिये है, सिर्क खबानी स्वाप के लिये नहीं है. मूक्लड़ बनकह يها دن

بسترمیں آدھی جاگرتی اور آدھی نیند میں آلسی اوستہا میں پڑے رہنے سے کجھ فائدہ نہیں؛ جاگتے ھی فوراً آٹھ میٹھو! ھمارا سب سے بڑا جسمانی دشمن آلسیه (کاھلی) ہے.

تعدل سے التجا کرو کہ 'سب انسانوں کی ترقی ہو! سجائی کے راهیکروں کو ھے بھکواں! طافت دو کہ وے زیادہ محمد اور همت سے کاریہ کرتے رهوں اور وے اندریوں کے وکاروں کے ظلم نے بنکو ٹابت قدم رهیں!'

پھر اپنے اِشت دیوتا کا سمری کرو' دھیاں دھرو' سچے

بھکتی بھاؤ سے بھکواں سے پراتینا کرو کنہ 'ھے بھکواں! آج کے دن

تک کرنے کے قابل کام نئ کرکے اور نئہ کرنے کے کام کرکے مینے
جو جو پاپ کٹھے ھیں' اُن سبکو معان کرو!' [اس اوسر پر
ایسے کاموں کی جانچ پڑتال بھی کرو اور جتنے یاد آئیں اُن
سب کو بھکواں کے سامنے نویدن کرو ۔]

اتنا کرنے سے میں کی ایکاگرتا بڑھیکی' آتم پریکشا کرٹا آئیگا' ھردے پرتر ھوگا اور آرچ جبوں کے لئے آگرہ بندھے گا۔ اُسکا مطلب یہ نہیں کہ تم سارے دیں گمبھر اور بھاری بنے ھوئے پھرا کرو ، معصوم ھنسی دائکی میں وقت گزارتا تو جھوں کے وکلس میں نہایت ضروری ھے ،

صرف حیوان کے موابق نہ رہ کر مانو جیون کا مکل وکلس کرکے' اُرچ جھوں حاصل کرنے کا آج سے ھی پورا اِرادہ کولو ۔ اِس بات کو کانڈی میں باندہ لینے کی خاص فرورت ھے۔

داتوں کرتے وقت اور نہاتے سمام بھی پاک صاف و چار برابر جاری رہنے دو، پکا ارادہ کور کم 'میری جسمانی گئرگی کے ساتھ ساتھ میری دلی گندگی بھی دور ہو!'

بھوجوں کرتے سنٹے بھی یہ بات دھیاں میں رقے کہ خوراک کیول جسم کی پرورش کے لئے اور صحت کے لانے بھے کا صرف زبائی سواد کے لئے ٹیس گے۔ بھکو ہلکو कभी मत खाना. पेट में जितनी भूक लगी हो उससे जरा कम खाना. खाने के बाद अचेतन-सा बन जाना कि जिससे तुरन्त काम न हो सके; ऐसी स्थिति लज्जास्पद है.

भगवान का उपकार मानना कि, जब हजारों इन्सान के पूरे पेट भी नहीं पलते तब उन्हें भोजन मिलता है. भोजन के समय इरादा करना कि, 'खुराक बराबर हजम हो जाओ और जिस्म अपने फर्ज अदा करो और रुहानी नीयतों के रास आओ ! बुरे विकार या मनहूस विचार पैदा न हो !'

खाने के बाद फिर आत्म परीक्षा करो, चारित्र में बसे हुए ऐबों का खयाल करो. ऐब कितना मनहूस करने वाले है, यह सोचते रहो. उनमें से मिलता हुआ सुख कितना क्षिणिक है, इस बात का चिंतन करो !

आईदा ऐसे ऐवों के मातहत न हाने का मजबूत इरावा करो.

ऐसे आत्म निरीक्षण से भगवान, जो कि तुम्हारे ही अंतर में न्यायाधीश की सूरत में बैठा है, उनसे अपनी चाल-ढाल का न्याय कराने से तुम्हारी कल्पना से भी ज्यादा रूहानी तरक्की होने लगेगी.

सारे दिन चलते-फिरते, काम करते करते, जब समय मिले तब आज के बारे में विचार शुद्धि की क्रिया जारी रखो.

शाम के वक्त सैर या मर्दानगी भरे खेल कूद में रहो. पाबंदी और व्यायाम से बदन को चंगा और हट्टाकट्टा करो. तमाम धम अदा किये जा सकने के बल पर पहिले-पहल बदन तो तंदुकस्त होना ही चाहिये.

दुनिया भर के तमाम मंदिरों में देह जैसा चमत्कारक व श्रालीशान मंदिर दूसरा एक भी नहीं है.

सो जाने से पहले प्रातःकाल के माफिक फिर प्रार्थना करो. सारे दिन में तुमने जो कुछ किया हो, उन सबकी श्रंतर्यामी की गवाही में तीन दफा तलाश करो. विचारों में किये गये कुछ पापों को ढूँढ निकालो. कोध, राग, ढे प, ईर्षा, श्रसत्य, व्यभिचार, लोभ या मोह का गोया श्रनजाने में संग हुवा हो, समय का दुरुपयोग किया हो इत्यादि को ख़बरदार पहरेगीर की तरह जाँचो, बार बार तलाश करो या तो डायरी में सविस्तार लिख डालो. बह पढ़ जाश्रो. कुसूर श्रीर गुनाहों के लिये पश्चाताप करा [तोबा करो] भगवान से चमा माँगो श्रीर 'फिर ऐसे विचारों से या कमों से दोष नहीं करूंगा' ऐसा मन में ठानो.

'कल से ही मैं आज से ज्यादा नेक बनूँगा' ऐसा इरादा करने के बाद सो जाश्रो. کبھی مت کہانا، پیٹ میں جتنی بھوگ لگی ہو اُس سے ذرا کم کہانا، کہانے کے بعد اچیتن سا بن جانا که جس سے ترنت کام ذہ ہو سکے ایسی استہتی اجاسید ہے،

بھکواں کا اُپکار ماننا که' جب ہزاروں انسان کے پورے پیٹ بھی نہیں پلاے تب تمہیں بھوجی ملتا ہے۔ بھوجی کے لئے اِرادہ کرنا که' 'خوراک ہزابر ہفم ہو جاؤ اور جسم اپنے فوض ادا کرد اور ررحانی نیتوں کے راس آؤ اِ برے وکار یا منحوس وچار پیدا نه ہو اِ'

کھانے کے بعد پھر آتم پریکشا کرو' چرتر میں بسے ھوٹے عیبوں کا خیال کرو۔ تعیب کتنا منحوس کرنے والے ھیں' یہ سوچتے رھو۔ اُن میں سے ملتا ھوا سکھ کتنا چھلک ھے' اِس بات کا چنتن کرو!

آئندہ ایسے عیبوں کے ماتحت نع ہونے کا مضبوط ارادہ کرو.

ایسے آتم نریکنچھن سے بھکوان' جو تمہارے ھی انتر میں نیائے دھیھی کی صورت میں بیٹھا ہے؛ اُن سے اُپنی چال تھال کا نیائے کوائے سے تمہاری کلپنا سے بھی زیادہ روحانی ترقی ھونے لگیگی۔

سارے دن چلتے پھرتے' کام کرتے کرتے' جب سعے ملے تب آج کے بارے میں وچار شدیقی کی کریا جاری رکھو،

شام کے وقت سیر یا مردانگی بھرے کھیل کود میں رھو۔ پابندی اور ویایام سے بدن کو چنگا اور ھٹا کٹا کرو. تمام دھرم ادا کئے جا سکنے کے بل پر پہلے پہل بدن تو تندرست ھونا ھی چاھیے۔

دنیا بهر کے تمام مندروں میں دیہ، جیسا چمتکارک و عالیشان مندر دوسرا ایک بھی نہوں ہے،

سو جانے سے پہلے پراتھ کال کے مواذی پھر پرارتھنا کرو ، سارے دن میں تہنے جو کچھ کیا ھو' اُن سبکی انتریامی کی گواھی میں تبنی دفعة نلاش کرو ، وچاروں میں کیئے گئے کچھ پاپوں کو تھوندھ نکا لو ، کرودھ' راگ' دوئیش' ایرشا' استیء' وبھچار' لوبھ یاموہ کا گویا انتجانے میں سنگ ھوا ھو' سبئے کا درپیوگ کیا ھو آنیا دی کو خبردار پھرہ کیو کی طرح جانیچو' ہار بار نلاش کرو یا تو تأیری میں سووستار لکھ تألو ، وہ پڑھ جاؤ ، قصور اور گناھوں کے لئے پکٹچا تاپ کرو (توبہ کرو) بھگوان سے چھما مانکو اور 'پھر سے ایسے وچاروں سے یا کرموں سے دوھی نہیں کونگا' ایسا می میں قہانو ،

'کل سے می میں آج سے زیادہ نیک بنونگا' ایسا آرادہ کونے کے بعد سو جاؤ ، आतम परीक्षा, आतम सम्मान और आतम विश्वास जिन्हों ने पाये हैं, वे सब अपने देह रूपी राज्य के बादशाह हैं. प्रथम अपने आप पर स्वराज्य हासिल करो.

88 88 88

दूसरा दिन

'टाइम-टेबुल यानी समय-पत्रक तैयार करो और वा-पार्वदी उसका पालन करो. व्यायाम, पढ़ाई, कर्तव्य-कर्म, आराम और नींद के लिये समय को बराबर बाँट कर मुक्तरेर कर दो. इस युग के आजा व उन्दा ब्रत-नियम टाईम-टेबुल के अनुसार चलने में हैं।

शरीर को साफ रखो. हर रोज दंत मंजन के साथ दातुन करो. जूब कुल्ले करो. दो दका स्नान करो. बख बहुत ही साफ सुथरे रखो.

अपना कमरा साक और सुन्दर बनाओ. सारा घर भगवान के मंदिर जैसा साफ, सुशोभित और सुन्दर रहना चाहिये. पालाने में बदबू न रहे, नालियां साक रहें और घर-आंगन व गलियां साक व आकर्षक (दिल्कश) बनना चाहिये. गंदगी की वजह से मानो भगवान आजकल हमसे रूठ गये हैं. जब स्वच्छता, शाभा, सौंदर्य, फूल व पेड़ श्रीर धूप-दीप से हमारे घर-आंगन पवित्र बनेंगे तब रूठे हुए भगवान मन जायेंगे. फिर जहाँ चौबीस घंटों तक खद भगवान विराजमान होने वाले हैं तब तो वहाँ हमें अपनी गलियाँ, श्राँगन, घर का हर एक कमरा साफ, सुन्दर श्रौर दिलकश बनाना चाहिये. महा पुरुषों की, देवों की श्रीर सुरिट-सींद्र्य के नजारों की प्रेरक तस्त्रीरें घर के हर कमरे में लगा दो. अपनी शक्ति के अनुसार पुस्तकालय रखो. चुनी हुई बढ़िया पुस्तकों की पढ़ाई, इस युग में गुरुओं की रहनुमाई के बराबर है. अन्छे अखबार, महावारी पर्ने श्रीर सामयिक पढ़ते रहो. मित्रों के साथ का समय ज्ञान चर्चा में बिताओ. हमारी आत्मोत्रति हां, ऐसी एकाध गंभीर पुस्तक भी मननपूर्वक पढ़ते रहो.

श्रीर बाद में पढ़े हुए पर लूब सोच-विचार करो. सिर्फ पढ़ा हुआ याद रखने से कुछ नहीं होने का. अवन और पाठन के मानी जो जो सुना श्रीर पढ़ा हुआ हो, हर एक के बारे में मनन श्रीर लगातार विंतन करने की बहुत ज़करत है. मनन के मानी हैं गहरा सोचने की श्रादत. पुस्तकों में जो कुछ भी हो, वह सब सही ही हो, ऐसा मान लेना नहीं चाहिये. हर एक राय पर हम श्रपने स्वतंत्र निजी विचार करके जीवन के श्रीर देश के महान प्रश्नों के बारे में हमें श्रपने सिद्धान्त रचने चाहियें. آتم پریکشا' آتم سمان اور آتم وشواس جنهوں نے پائے ھیں' وے سب دیہ، روپی راجیہ کے بادشاہ ھیں ، پرتھم اپنے آپ پر سوراجی، حاصل کرو ،

\$ \$

دوسرا دن ·

قائم قیبل یعنی سمای پترک تیار کرد اور با پابندی آسکاپالی کرد . ویایام پرهائی کرتویه کرم آرام اور نید کے لیئے سمایے کو برابر بائٹ کر مقرر کردو . اِس یک کے اعلی و عمدہ ورت نیم قائم قیبل کے انوسار چلنے میں هیں .

شریر کو صاف رکھو۔ ھر روز دنت منجن کے ساتھ داتوں کور ۔ خوب فلے کرو ، دو دنعہ اسنان کرو ،وستر بہت ھی صاف ستھرے رکھو ،

اینا کمرہ صاف اور سندر بناؤ ۔ سارا گھر بھکوان کے مندر جيسا صاف سرشوبيت أور سندر رهنا چاهيئي ياحانه مين بديو نه رها نا لیان صاف رهین اور گهر آنکن وگلیان صاف و آکرشک (داکش) بننا چاهدیئے ، گندگی کی وجه سے مانو بهکوان آجکل هم سے روقه گئے هدن ، جب سوچهتا شوبها سوندریم، یهول و یهر اور دهوپ دیپ سے همارے گهر آنکی پوتو بنیکے تب روئهے هوئے بهکوأن من جائنیکے . پهر جهاں چوہیس گھنٹوں تک خود بھکوان وراجمان هونے والے میں تب تو يهال هميل ايني گليال أنكن كهر كا هر ايك كمرة صاف سندر أور دالك بنانا چاهيئه . مهايرشوں كي ديس کی اورسرشت سوندریہ کے نظاروں کی پریرک تصویریں گھر کے هر کمرے میں اللادو . أپنى شكتى كے أنوسار يسكاليه ركبو . چنی هوری برهیا پستکرن کی پرهائی اس یک مین گرؤن کی روانمائی کے برابر ہے اچھے اخبار ماهواری پرچے اور سامیک برها معروں کے ساتھ کا سمے گیان چرچا میں بتاؤ . هماري آتمونتي هو' ايسى ايك آده كمبهدر يستك يهي منون يوروك يزهتم رهو .

اور بعد میں پڑھے ھوئے پر خوب سوچ وچار کرو . صرف پڑھا ھوا یاد رکھنے سے کنچھ نہیں ھوئے کا . شرون اور پائیس کے معنی جو جو سنا اور پڑھا ھوا ھو، ھر ایک کے بارےمیں منن اور لگانار چنان کرنے کی بہت ضرورت ھے مان کے معنی ھیں گہرا سوچنے کی عادت . پستموں میں جو کنچھ بھی ھو، وہ سب سوچنے کی عادت . پستموں میں جو کنچھ بھی ھو، وہ سب سوچنے کی عادت . پستموں میں جو کنچھ بھی ھو، وہ سب سوچنے تھی وچار کرکے جھوں کے اور دیھی کے مہاں پرشنوں کے سوچنے دیائے .

एकान्स में अपने मन के साथ अकेला रहने की आदत हालो. तुम्हारे सिवा तुम्हारा अपना उद्धार और कोई नहीं कर सकेगा, इस भावना को हृद्य में क्रायम करो. राहु या शिन की प्रह्दशा तुम्हारी राह का रोड़ा नहीं बनती. अपना मित्र या तुश्मन तुम अपने आप ही हो. जैसे विचार तुम करोगे वैसे बनोगे. कामनाएँ नेक करोगे तो नेक बनोगे और जैसे कर्म करोगे वैसे फल पाओगे. क्रिस्मत के हामी न बनो, पुरुषार्थ के हामी बनो. स्वार्थ के लिये नहीं, बल्कि झान की आतिर आत्मज्ञान हासिल करना चाहिये. ज्ञान के लिये प्रीति होनी चाहिये. सच्चा ज्ञान दिखावे के लिये नहीं वरन् हमारे अपने विकास के लिये हैं. ज्ञान से हम में लियाकृत तो आती है पर जो जो कर्म संसार में करने का है, हर एक को आला सरीक़े से कर सकते हैं, लेकिन सच्चा फल आत्मोकृति है. इससे विवेक वृत्ति बढ़ती है, तसल्ली होती है और आत्मा-परमात्मा के दर्शन होते हैं.

ह्मानी या भक्त संसार के लिये ना-क्राबिल हो जाता है, यह बात रालत है. सच्चा ह्मानी या सच्चा भक्त तो संसार के लिये ज्यादा शक्तिबान खीर ज्यादा क्राबिल बनता है.

हमारे अन्दर बसे हुए हमारे अंतर्यामी श्रभु ही प्रेम, सत्य, न्याय, दया, और शक्ति का स्वरूप हैं. उस पर ही हमें हर दम अपना प्रेम रखना चाहिये, उस पर पहाड़ की नाईं अविचल श्रद्धा होनी चाहिये. सच्चा विश्वास भी हम उसका ही रख सकेंगे. जब जगत हमारा त्याग करेगा तब उसकी ही शरन हमारे काम आनेवाली है. वह हमारे हाथ-पैरों से और खासोच्छ्वास से भी नजदीक है और हमेशा हम का सन्मार्ग पर चलने की हिदायत करता है. उसकी धीभी कोमल आवाज को पहचानो.

हमेशा वह हमारे साथ बोलता रहता है, लेकिन खास तौर पर जब हम कुछ खोटा काम करने को पाप के मार्ग की छोर खप्रसर होने के लिये खामादा होते हैं तब तो वह हमको अवश्य रोकता है. जब बुद्धि सारासार वस्तु नहीं समक सकती, तब खंतर्यायी के हुक्म के मुताबिक चलना श्रेयस्कर है.

एक ही बार तुम उस आवाज की अगर इन्जत करोगे तो बार बार वह तुम्हारी मदद के लिये दौड़कर खड़ी रहेगी और अधिक से अधिक स्पष्ट बनती जायेगी. लेकिन सुनते हुए भी अगर तुमने अनसुनी कर दी, एक, दो, या तीन बार उस मधुर नाद को दुकरा कर तुम पाप-मार्ग पर जाओगे तो फिर न रहेगा बांस और न बजेगी बांसुरी. फिर वह कल्यायाकारी आवाज तुम को नहीं सुनाई देगी. कान होते हुए भी तुम बहरे हो जाओगे और आहिस्ता आहिस्ता पतन ایکانت میں اپنے میں کے ساتھ اکیلا رہنے کی عادت ڈالو .

تمہارے سوا تمہارا اپنا اُددھار اور کوئی نمیں کو سکیکا' اس بھارنا

کو ھردیئے میں قایم کرو . راھو یا شنی کی گردیشا تمہاری راہ

کا روزا نمیں بنتی . اپنا متر یا دشس تم اپنے آپ ھی ھو .

جیسے وچار تم کرو گے ویسے بنوگے . کامنائیں ٹیک کروگے تو نیک

بنوگے اور جیسے کرم کروگے ویسے پہل پاؤ گے . قسمت کے حامی

ناء بنو' پروشارتھ کے حامی بنو . سوارتھ کے لیئے نمیں' بلکھ گیاں

ناء بنو' پروشارتھ کے حامی بنو . سوارتھ کے لیئے نمیں بلکھ گیاں

مونی چاھئے . سنچا گیاں دکھا وے کے لیئے نمیں ورن ھمارے

اپنے وکلس کے لیائے ھے . گیاں سے هم میں لیافت تو آتی ہے پر جو جو کرم سنسار میں کرنے کا ھے' ھر ایک کو اعلی طریقے سے

جو جو کرم سنسار میں کرنے کا ھے' ھر ایک کو اعلی طریقے سے

جو جو کرم سنسار میں کرنے کا ھے' ھر ایک کو اعلی طریقے سے

ہر متے ھیں' لیکن سنچا پیل آنمونتی ھے اِس سے وریک ورتی

ہرھتی ھے' تسلی ھوتی ھے اور آتما پرماتما کے دوشن ھوتے ھیں .

گیائی یا بھکت سنسار کے لیئے ناقابل ہوجانا ہے' یہ بات غلط ہے ، سچاگیائی یا سچا بھکت تو سنسار کے لھئے زیادہ شکتیمان اور زیادہ قابل بنتا ہے ،

همارے اندر بسے هوئے همارے انتریامی پربھو هی پریم ستیع نیائے دیا اور شکتی کا سروپ هیں . اُسهر هی همهن هردم اپنا پریم رکھنا چاهیئے 'اُسهر پہار کی نائیں اوینچل شردها هوئی چانئے . سنچا وشواس بھی هم اُسکا هی رکھ سکینگے . جب جگت همارا تیاگ کریگا تب اُسکی هی شرن همارے کام آنے والی هے . وہ همارے هاته پدروں سے اور شواسونچهاراس سے بھی نزدیک هے اور همیشه ندمکو سنمارگ پر چانے کی هدایت کرتا هے . اُسکی دهیمی کومل آواز کو پہنچانو .

همیشه و همارے ساتھ بولتا رهتا هے کلین خاص طور پر جب هم کحچھ کھوتا کام کرئے کو پاپ کے مارک کی اور اگرسر هونے کے لیئے آمادہ هوتے هیں تب تو وہ هم کو اُرشیه روکتا هے . جب بدھی ساراسار وستو نہیں سمجھ سکتی تب انتریامی کے حکم کے مطابق چلنا شریسکر هے .

ایک هی بار تم اُس آواز کی اگر عزت کرو گے تو بار بار وہ تہاری مدد کے لیئے دور کر کھڑی رهیگی اور ادھک سے ادھک اسپشت بنتی جائیگی ۔ لیکن سنتے ہوئے بھی اگر تمنے آن سنی کردی' ایک' دو یا تین بار اُس صدھر ناد کو تھرا کر تم پاپ مارگ پر جاؤ گے تو پھر نه رهیگا بانس اور نه بجیکی بانسری ۔ پھر وہ کلیانکاری آواز تمکو نہیں سنائی دیکی ۔ کان ہوتے ہور یہ بھرے ہو جاؤ گے اور آھستہ آھستہ پتن

की राह में फिसल जाओगे ! पाप के आदी बने हुए कितने ही आदमियों ने अंतर्यामी के इस नाद को उकरा दिया है. वैसी दुर्दशा तुम्हारी न हो !

जनत और जहनुम दोनों इस पृथ्वी पर ही हैं. जिन्होंने अंवर्यामी के नाद को ठुकराया है और जो स्वेच्छाचारी जीवन गुजारते हैं वे जीते जी जहनुम में हैं. वे किसी न किसी दिन जरूर पछतायेंगे और उस पछतावे की आग नस नस में समा जायेगी. 'आह ! मुक्ते जहरीले साँपों ने इस लिया !' ऐसा उनका महसूस होगा. आखिरकार वे पछतावे की आग से शुद्ध होकर इस अंवर्यामी की शरन हुँद गें, तो जरूर—बह तो दीन द्यालु है, करूणा सागर है, पतित पावन है—बह फिर तुम्हें सन्मार्ग पर चढ़ा देगा और पहले की माँति आवाज सुनायेगा.

जो अंतर्यामी का नाद सुनते हैं श्रीर उसके श्रनुसार चलते हैं वे जीते जी जन्नत में हैं. जैसा सुख गोपियों को श्री कृष्ण की मधु बंसी सुनकर होताथा वैसा ही सुख हमेशा उनको मिलता है.

'**यमुना पर बज रही बांसुरिया' वह सबर** संते;प निराला है.

में यह मानता हूँ कि आगर कोई योजना इस तरह बनाई जाये जिसमें किसी देश के कच्चे माल को तो खूब काम में लाया जाय पर वहां की जबरदस्त आबादी की रत्ती भर भी परवाह न की जाये तो वह योजना नहीं है मजाक है......हिन्दुस्तान के लिये वही योजनावन्दी टीक हां सकती है जो यहां ही कुज की कुल आबादी से अच्छा से अच्छा काम ले और यहां के कच्चे माल को यहां के लाखों गावों में तकसीम कर दे. ऐसी दी योजना से हिन्दुस्तान का सच्चा हित हो सकता है.

--महात्मा गांधी

کی راہ میں پیسل جاؤ کے ا پاپ کے عادی بنے ہوئے کتنے ہی آدمیوں نے اندر یامی کے اِس ناد کو تھکوا دیا ہے ، ویسی دردشا تمهاری نہ ہو ا

جات اور جہنم دونوں اِس پرتھوی پر هی هیں . جنھوں نے انکر یامی کے ناد کو نھکرا یا ہے اور جو سویجھاچاری جیوں گذارتے هیں وہ جیتے جی جہنم میں هیں . وے کسی نه کسی دن ضورور پچہتائینکے اور اس پنچہتارے کی آگ اُن کی نس نس میں سا جائیگی . ' اُوا ! مجھے زهرائے سائیوں نے تس لیا ! ' ایسا انکو محسوس هوگا . آخرکار رے پیچہتارے کی آگ سے شدھ هو کر اُس انتریامی کی شرن دوندهندیے' تو فرور—و' تو دین دیالو ہے' کرونا ساکر ہے' پہتے پان ہے۔ وہ پہر تمھیں سلمارگ ہو چڑھا دیگا اور پہلے کی بیانتی آواز مسائے گا ،

جو انتر یامی کا ناد سنتے هیں اور آسے انو سار چلتے هیں وہ جیتے جی جنت میں هیں۔ جیسا سکھ گرپیوں کو شری کرشن کی مدهو باسی سنکر هونا بها ویسا هی سکھ همیشہ انکو ملتا هے ۔

المونا ير بيم رهي بالسورياء وه صبر سنتوش لرألا هي .

مهی یه مانتا هوی که اگو کوئی یوجنا ایس طرح بنائی جائے جس میں کسی دیش کے کیچے حال کو تو خوب کام میں لایا جائے پر وہاں کی زبردست آبادی کی رتی بھر بھی پرواہ نہ کی جانے تو وہ یوجنا نہیں ہے مذانی ہے... هندستان کے لئے وهی یوجنا بندی تھیک عو سکتی ہے جو دہاں کی کل کی کل آبادی سے اچھے سے اچھا کام اے اور یہاں کے کیچے مال کو یہاں کے لائھرں گاؤں میں تقسیم کردے ، ایسی ھی یجہنا سے هندستان کا سچا ست عو سکتا ہے .

حسمهاتما كاندقى

NEAR CONCORD C

विश्वम्भरनाथ पाँडे

وشومبهر ناته پاندے

वर्षा रितु आती 'है और जली तथी धर्ती को नई जिन्दगी में शराबोर कर जाती है. इनसान ही नहीं पशु, पश्ची, पेड़ और पौधे, तपन के सताये हुए सभी बरसात की फुहारों में चैन की साँस लेने लगते हैं. हमारे देश में वर्षा रितु को 'वर्षामंगल' का नाम दिया गया है. महाकवि बाल्मीिक, कवि गुरु कालिदास, किवभक्त तुलसीदास और किव-सम्राट रवीन्द्रनाथ सबने वर्षा को अपनी किवताओं के ताने-बाने में बुना है. खड़ी बोली के आदि किव भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र, 'सावन मन भावन' में अपने आप को भूलने का उपदेश देते हैं. हिन्दी और उर्दू किवयों और शायरों की किवताएँ और नजमें वर्षा की मधुर फुहारों में रस से पगी हुई लगती हैं.

भारतेन्द्व बाबू हरिश्चन्द्र सावन के महीने की मादकता का वर्णन करते हुये कहते हैं—

यह सावन मास सुद्दावन है, मन भावन या में न शोक करो, जमुना पे चला जु सबै मिलिके श्री गाय वजाय के शोक दरो.

श्रीर वे सिर्क यहीं तक नहीं रुके. मर्यादा के बन्धन लाँघ कर वह नव यौवनाओं से बिनती करते हैं—

> 'हरिचन्द' की तुम सों यही बिनती यहि पार्वें पती व्रत तार्वें धरो.

टीकाकार और आलाचक शायद कहें कि यहाँ कि की पितंत्रत से मुराद आत्म संयम से हैं, नमसकुशी से हैं; मगर क्या बूँदिनयों के तार सब कुछ भुला देने वाले नहीं होते ? सावन की मड़ी से एक समों बँध जाता है और शायर खिंचकर कल्पना की दुनिया में सैर करने लगता है.

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ने सावन भादों की ऋँधेरी घटाटोप रातों का जिक्र करते हुए पूछा है—

शिष तारा हीना अन्ध तामसी यामिनी,

कहाँ आज विस्मृत विद्वल फिरतीं सारी पुर कामिनी ? चमके दीप्त दामिनी,

चमके दीप्त दामिनी, शून्य पड़ी हैं सारी शैया, कहां गईं पुर कामिनी ? यानी—श्रंधेरी घनी रात जिसमें न चाँद हैं न तारे, ऐसी इस रात में खोई हुई सी व्याकुल गाँव की बालाएँ कहां फिर रही हैं ? ورشا رس آتی ہے اور جای تپی دھرتی کو نئی زندگی میں شرابور کو جاتی ہے ۔ انسان ھی نہیں پشو' پکشی پیت اور پردھ' نہیں کے ستائے ھوئے سبھی برسات کی پھوھاروں میں چین کی سانس لینے لکتے ھیں ، ھمارے دیش مرس ررشا رس کو 'ورشا منکل' کا نام دیا گیا ہے ، مہا کھی والمیک' کوی گرو کانیداس' کوی بھات تلسیداس اور کویسمرات رویندر ناتھ سب نے ورشا کو اپنی کویٹاؤں کے تانے بانے میں بنا ہے ، کھتی بولی کے آدی کوی بھارتیندو با بو ھریشچندر 'سارن می بھاوں' میں اپنے آپ کو بھولنے کا آپدیش دیتے ھیں ، ھندی اور اُردو کویوں اور شاعروں کی کویٹائیں اور نظمیں ورشا کی مدھر پھوھاروں میں رس سے کی کویٹائیں اور نظمیں ورشا کی مدھر پھوھاروں میں رس سے پہلے ھیں ، ھندی اور اُردو کویوں اور شاعروں کی کویٹائیں اور نظمیں ورشا کی مدھر پھوھاروں میں رس سے پہلے ھیں ، ھندی اور اُردو کویوں اور شاعروں کی کویٹائیں اور نظمیں ورشا کی مدھر پھوھاروں میں رس سے

بھارتیندو ہاہو ھریشچندر سارن کے مزینے کی مادکتا کا ورنبی کرتے ھونے کہتے ھیں—

یہ ساوں ماس سوھاوں ہے' من بھاوں یا میں نم شوک کرو' جمونا پہ چلو جو سبے مل کے' آوگائے بجائے کے شوک ھرو ،

اور وے صرف یہیں مک نہیں رکے ، مریادہ کے بندشی لائک کو وہ ثو یووناؤں سے بنتی کرتے میں۔۔

هریشچند کی تم سوں یہی بنتی یہی پاکھیں دعرو۔

قیکا کار اور آلوچک شاید کہیں کہ یہاں کوی کی پتی ورت سے مواد آنم سنیم سے ہے، ناس کشی سے ہے؛ مکر کیا ہوندنیوں کے تار سب کچھ بہلا دینے والے نہیں عوتے ? ساری کی جہڑی سے آیک سمال بندھ جا نا ہے اور شاعر کہنچ کو کلپنا کی دنیا میں سیر کوئے لگتا ہے .

گرو دیو رویندر ناتھ نے سارن بھادوں کی اندھیری گیٹا ٹوپ راتوں کا ذکر کرتے ہوئے پو چھا ھے۔۔

ششى تارا هينا أندة تامسي يامني

کہاں آج وسمرت وہول پھرتی سابی پور کامنی ؟ چمکے دوہت دامنی'

شونیم پریں ھیں ساری شیا' کہاں گئیں پور کامنی ﴿
یعنی الدھیری گہنی رات جس میں نہ چاند ہے نم تارے'
ایسی اِس رات میں کہوئی ہوئی سی ویا کل گارُں کی
ہالائیں کہاں پھر رھی ھیں ﴿

विजती प्रकाश के साथ वमक रही है, सेजें स्ती पड़ी हैं, बीर यह प्राम वधुयें गई कहाँ ? संस्कृत के कवियों ने ऐसी अयंकर वरसाती रात में इन पुर कामिनियों को कड़कती हुई विजलियों, गरजते हुए बाइलों बीर वरसती हुई मूसलाधारों के बीच भी अपने प्रियसमों से अभिसार के लिये घरों से निकाला है.

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ अपनी एक कविता में कहते हैं— वर्षा आई है, नई वर्षा ! वर्षा क्या है ? रस में पगी हुई मोहब्बत है. वन और बागों में सन-सन पवन वह रहा है. आज पेड़ और लताएँ सबने हिरेयाली की चादरें ओढ़ ली हैं. हे कवि ! यह बादल हजारों-हजारों युगों से आकाश में इसी तरह आते हैं और झाते हैं.

हवाएँ नरो में मूम-भूम कर गुल-शोर कर रही हैं. वर्षा क्या है ? हजारों हजारों युगका स्नेह से सना हुआ त्रेम का एक गीत है.

वर्षा अगर वियोगी और वियोगिनों की सुधबुध हरती है तो दूसरी ओर वर्षा का राजा सावन वहनों और बेटियों को मैंके की याद में बिलखाता है. सुसराल में बैठी हुई बहन अपने मैंके में नीम की डाल पर पड़े हुए फूलों की पेंग को याद करती है. रह-रह कर उसका मन सलूनो के लिये मचलता है और वह आहें भर कर कहती है—

बिरन! मेरो सावन बीतो जाय!

दूसरी और एक साजन-विद्याना वर्षा को नये संदेशों का साधन समक्त कर अपने साजन को निमंत्रण देते हुए कहती है—

चा, मिल गाएँ गीत!

नीली-नीली बदली छाई, ठन्डी-ठन्डी बायु छाई, इल्की-इल्की बूँदें बरसें, नैन तेरे दर्शन को तरसें,

आ, मिल गायें गीत, साजन ! प्रीत हमारी रीत. आ, हिल-मिल कर मूला मूलें,

जग के सारे संकट भूलें, सैर करें हम प्रेमनगर की, स्राजा, बरखा की यह रित्र भी,

जाय न यों ही बीत, साजन ! प्रीत हमारी रीत. और जब इस बिनती पर भी साजन नहीं जाता तो वियोगन दुख से भर कर कहती है—

किस विध बीतेगी, उन बिन काली रात ! बिजली पल-पल छिन-छिन तड्पे, बादल कड़-कड़, कड़-कड़, कड़के, पानी रिमिक्स-रिमिक्स ब्रसे,

आई यौवन पर बरसात !

ہجلی پرکاش کے ساتھ چدک رھی ہے،

سیجیں سوئی پڑی ہیں' اور یہ گرام ودھو ٹیں گئیں کہاں ؟ سنستوت کے کویوں نے ایسی بھینٹو برساتی رات میں اِن پور کاملیوں کو کرکٹی ہوئی بجلیوں' گرجتے ہونے بادلوں اور برستی ہوئی موسلادہاروں کے بھیج بھی اُپنے پریتموں سے ابھیسار کے لئے گھروں سے نکالا ہے ۔

رود وروید ناته اپنی ایک کویتا میں کہتے ہیں۔۔ ورشا آئی ہے نئی ورشا!

ورها کیا ہے ؟ رس میں پکی هوئی محبت هے . بن أور بافوں میں سن سن پون بہت رها هے .

آج پیر اور لتائیں سب نے هریالی کی چادریں اورہ لی هیں. هے کہی 1 یہ بادل هزاروں هزاروں یکوں سے آکاش میں اِسی طرح آتے هیں اور چھاتے هیں ،

ھوائیں نشے میں جھوم جھوم کر شور کر رھی ھیں . ورشا کیا ہے ؟ ھزاروں ھزاروں یک کا سنیہ سے سنا ھوا پریم کا ایک گیت ہے .

ورشا اگر ویوگی اور ویوگنوں کی سدھ بدھ ھرتی ہے تو دوسوی آور ورشا کا راجه ساون بہنوں اور بیٹیوں کو میکے کی یاد میں بلکھاتا ہے ۔ سسوال میں بیٹھی ھوئی بہن اپنے میکے میں نیم کی ذال پر پڑے ھوٹے جھولوں کی پینگ کو یاد کوتی ہے ۔ رہ رہ کر اُسکا من ساونو کے لئے محجلتا ہے اور وہ آھیں بھر کر کہتی ہے۔۔

ہرں! میرو ساون بیتو جائے!

· دوسری اور آیک ساجن-وهینا ورها کو نئے سندیشوں کا سادھن سمتھ کو آپنے ساجن کو نمنترن دیتے ہووئے کہتی ہے۔۔۔۔

آ ' مل کائیں گیت !

نیلی نیلی ہدلی چہائی' ٹھنتی تہنتی وایو آئی' هلکی هلکی ہوندیں ہرسیں' نین ترے دوشن کو ترسیں'

أً ول كانين كيت ساجن إ وريت هماري ريت .

آ' هل مل کر جهولا جهولیں' جگ کےسارے سنعت بهولیں' سیر کریں عم پریم ناکر کی' آجا' برکھا کی یا رسا بھی'

جائے نے یوں هی بیت ساجن اِ پریت هماری ربت ، اور جب اِس بنتی پر بھی ساجن نہیں آنا تو ویوگن دکو سے بھر کر کہتی ہے۔۔۔

دو سے ہور مر مہی ہے۔ کس بدھ بیتے گی' اُن بن کالی رات ! بجلی پل پل' چھن چھن ترپے' بادل کر کر' کر کر' کر کے' پانی رم جھم' رم جھم بر سے' آئی یووں پر برسات !

जुलाई '55

جولائي 5ٍ5°

क्या जाने क्या गुजरे मुक्त पर, जी घवराता है रह-रह कर, ऐसा सूना है उन बिन घर, जैसे कोई इस बिनु पात!

पक दूसरी नाषिका का प्रियतम परदेस में तो नहीं है, क्षेकिन फिर भी इतना निदंशी है कि भरी बरसास में अपनी प्रियतमा को छोड़कर जाना चाहता है और वह दुस की भारी उससे मिनत करती है—

प्रियतम ! रह जा जाज की रात !

जाज की रात जिया घवराये,

जाज की रात गई कव जाये,

सुन जा मन की बात, प्रियतम ! रह जा जाज की रात !

बिजली कड़के बावल बरसे,

जाज की रात निकल नहीं घर से,
देख भरी बरसात, प्रियतम ! रह जा जाज की रात !

जाज की रात हिया मोरा धड़के,

जाज की रात जाँख मोरी फड़के,

जोड़ रही हूँ हात, प्रियतम ! रह जा जाज की रात !

जीर उसके प्रियतम का दिल भी क्या कठोर है कि वह
भिन्नतें करने पर भी नहीं ठकता और चला जाता है. रह
जाती है बियोगन जिसे तसल्ली देने बाला और कोई नहीं
सिवाय प्पीहे के, जिसकी कृक सुनकर आहें भरती हुई वह

क्रक पपीहे क्रक !

कहती है-

बादल गरजे रैन ऋँधेरी, सूनी-सूनी दुनिया मेरी, जीना मेरा हा गया दूभर, आँख लगे ना भूक, कूक पपीहे कूक!

तू बनवासी खुल कर राये,
मेरा रोना मुक्ते खुबोये,
तेरी तरह से नेह लगाया,
चूक गई मैं चूक, कूक पपीहे कूक!
मैं भी अकेली तू भी अकेला,
मोह का सागर दुखः का रेला,
तेरे गले में पी का फन्दा,
मेरे मन में हुक, कूक पपीहे कूक!

और तब वह बिरह में भरकर अपने त्रियतम को पाती लिखती है—

धमंग इक जी में उठ रही है, घटाएँ घिर-घिर के झा रही हैं, पड़ोसिनें मूलने को मूला, घने-घने बन को जा रही हैं. کیا جانے کیا گذرہ مجھ پر' جی گھرا تا ہے رہ رہ کر' ایسا سونا ہے آن بین گھر' جیسے کوئی روکھ بنو یاس 1

ایک دوسری نایکا کا پریتم پردیس میں تو نہیں ھے، لیکن پہر بھی اِتنا نردئی ہے که بھری برسات میں اُپنی پریتنا کو چھرز کر جا نا چاھتا ہے اُور وہ دکھ کی ماری اُس سے منت کنے ہے۔۔۔

پریتم! رہ جا آج کی رات!

آج کی رات جیا گھبرائے،

آج کی رات گئی کب آئے،

سی جا میں کی بات، پریتم! رہ جا آج کی رات!

آج کی رات نکل نہیں گھر سے،

دیکھ بھری برسات، پریتم! رہ جا آج کی رات!

آج کی رات میا مررا دھڑ کے،

آج کی رات آنکھ مرری پھڑکے،

آج کی رات آنکھ مرری پھڑکے،

جوڑ رہی ہوں ہات، پریتم! رہ جا آج کی رات.

اور اُسکے پریتم کا دال بھی کیا کٹھور ہے کہ وہ منتھں کرنے پر بھی نہیں رکتا اور چلا جا تا ہے ۔ وہ جاتی ہے ویو گن جسے تسلی دینے والا اور کوئی نہیں سوانے پہیے کے جسکی کوک سی کر آھیں بھرتی ہوئی وہ کہتی ہے۔۔۔

کوک پپیہے کوک!

ہادل گرچے رین اندھیری،

سو نی سو نی دنیا میری،

چینا میرا ھو گیا دوبھر،

آنکھ لگے نا بھوک، کوک پپیہے کوک!

میرا رونا مجھے دبوئے،

تیری طرح سے نیہ لگایا،

چوک گٹیمیں چوک،کرک پپیہےکوک!

میں بھی انیلی تو بھی اکھا،

موہ کا ساگر دکھ کا ریا،

تیرے گئے میں بھی کا پہندا،

میرے میں میں ھوک، کوک پیھہے کوک!

میرے من میں هوک کوک پیهه کوک ا اور تب وہ برہ میں بھر کر آپنے پریتم کو پاتی لکھتی

> أمنگ إک جي ميں أنّه رهي هے' گيٽائيں گهر گهر کے چها رهي هيں' پررسنيں جهولئے کو جهولا' گهنے گهنے بن کو جا رهي هيں.

कहीं पै बादल बरस रहे हैं, कहीं पै बिजली चमक रही है, हरी-हरी डालियों पै चिड़ियाँ, फुक्क रही हैं, चहक रही हैं.

> लगा है सावन घिरा है बादल, पड़ा है मूला लगी हैं लड़ियाँ, बड़े बड़े पेंग चल रहे हैं, पड़ोसिनें गीत गा रही हैं.

उधर पपीहे की पी-कहाँ, छेड़ती है बैठे बिठाए मुक्तको, इधर निगोड़ी यह कोयलें, और भी मेरा जी जला रही हैं.

> जहाँ-जहाँ पड़ चुका है पानी, भरी हुई हैं वहाँ की कीलें, श्रीर उसमें जाकर सुहागिनें सब, मिल छपाछप नहा रही हैं.

हमें नहीं चैन बिन तुम्हारे, अकेले घर में उलफ रही हूँ. पहाड़ से दिन सता रहे हैं, सुहानी रातें रुला रही हैं.

> हो तुम तो परदेस में ऐ साजन, मैं कैसे कार्ट्गी इन दिनों को, ऐ मेरे प्यारे तुम्हारी बातें, बहुत कलेजा दुखा रही हैं.

श्रीर जब इस पाती पाने के बाद भी साजन नहीं श्राता श्रीर साथन बीता जाता है तब वह दुखी श्रीर कातर वियोगन अपनी सहेली से कहती है—

सावन बीता जाय सजनी, प्रीतम घर नहीं आए, कैसे काटूँ रात बिरह की नागिन बन-बन खाए, ठंडी ठंडी पुरुवा सनके बादल घिर-घिर छाए, नन्हीं नन्हीं बूँद टफ्डें श्री बिजली लहराए, याद पिया की मेरे दिल को रह-रह कर तड़पाए, सावन बीता जाय सजनी प्रीतम घर नहीं आये. मोर, पपीहा, कींगुर, सारस मिलकर शोर मचाएँ, नाचें, कूदें, करें किलोलें, फूले नहीं समाएँ, कुंज-कुंज में पढ़े हैं मूले मिलकर सखियाँ मूलें, पेंग बढ़ाएँ, तान उड़ाएँ, अपने मन में फलें, हुँसी खुशी की बात ये मेरे मन को और जलाए, सावन बीता जाये सजनी, प्रीतम घर नहीं आए.

वर्षा के तार धरती को जल मग्न बना रहे हैं. बसुधा की तपन को मिट चुकी मगर वियोगन की तपन कौन کہیں په با دل برس رقے هیں' کہیں په بجلی چبک رهی ه' هری هری آلیوں په چریاں' پیدکارهی هیں'چپکارهی هیں۔

> " کا ہے ساری گھرا ہے بادل' پڑا ہے جھولا لکی ھیں لویاں' بڑے بڑے پینگ چل رہے ھیں' پڑوسلیں گیت کا رھی ھیں۔

ادھر بہبہہ کی پی کہاں' چھبرتی ھیبیٹھ بتھائے سجھکو' ادھر نکرزی یہ کوٹلیں' ارر بھی میرا جی جارھیھیں۔

> جہاں جہاں پر چکا ہے پاتی' بھری ہوئی ہیں وہاں کی جھیلیں' آور آسیوں جا کر سہاگنیں سب' مل جھیا جھپ نہا رھی ہیں۔

همیں نہیں چین ہی تمہارے' اکیلے گیر میں اُلجبرهی هوں' پہاڑ سے دی ستا رہے هیں' سہانی راتیں را رهی هیں۔

> عو تم تو پردیس میں أے ساجن ' میں کیسے کاتونکی اِن دونوں کو' اُے میرے پہارے تمہاری بانیں' بہت کلیجہ دکھا رہی ھیں۔

اور جب اِس پاتی دائے کے بعد بھی ساجن نہیں آنا اور ساون بیتا جاتا ہے تب وہ دکھی اور کاذر ویوگن اپنی سییلی سے کہتی ہے۔

ساوی بیتا جائے سجنی' پریتم گهر نہیں آئے' کیسے کاٹوں رات برہ کی ناگن بن بن کھائے' ٹھنڈی ٹھنڈی پروا سنکے بادل گھر گھر چھائے' ننھی ننھی ہوندیں تپکیں او بادا امرائے'

یاں پیا کی میرے دل کو راہ راہ کر تزیائے، ساوں بیتا جائے سجنی پریٹم گھر نہیں آئے ،

مور' پپیها' جهینگر؛ سارس مل کر شور مچائیں' ناچیں' کردیں' کریں کلولیں' پھوا۔ نہیں سمائیں' کنے کنے میں پڑے ھیں جھوا۔ مل کر سکھیاں جھوایں' پینگ ہوھائیں' تان آرائیں اپنے میں میں پھولیں'

هنسی خوشی کی بات یه میرے میں کو اور جائئے' ساوں بیتا جائے سجنی' پریتم گھر نہیں آنے ۔

ورشا کے تار دھرتی کو جل مکن بنا رہے ھیں . بسودھا کی تہی تو مس چکی مگر ریوگن کی تین کون

پریم ویوک اور ورشا

बुमाए ? वह अपने को कोसती हुई कहती है-

आग लगे इस मन को आग ! लो फिर रात बिरह की आई, चारों ओर उदासी झाई, जान मेरी तन में घबराई, अपनी क्रिस्मत अपने भाग !

> काली और बरसाती रैन, उस बिन नींद को तरसें नैन, जिसके साथ गया सुख चैन, उसकी याद कहे खब जाग!

जिस दिन से वह पास नहीं है, कोई खुशी की रास नहीं है, जीने तक की आस नहीं है, जान को है अब तन से लाग!

> कौन जिये और किस के सहारे, मीठे मीठे बोल सिधारे, गीत कहाँ वह प्यारे-प्यारे, अब वह तान न अब वह राग!

श्रीर तब फिर अपने को मलामत करती हुई कहती है-

> दरस दिखा कर जो छिप जाये, कौन ऐसे से प्रीत लगाये, क्यों अपनी कोई दशा सुनाये, छोड़ मोहब्बत का खटराग! आग लगे इस मन को आग ?

मगर ताना देकर क्या कंभी वियोगन के मन को शान्ति मिलती है ? सूना घर और उदास रातें उसे खाये जाती हैं. वह कहती है—

> घर है सूना रात उदास ! दीरघ दिन ऋँधियारी रातें, कैसे गुज़रेंगी बरसातें, सूटी थीं सब उनकी बातें, रहता है अब यह विश्वास !

> > मैं दुखियारी प्रीत की मारी, पड़ गई सुक पे विपदा भारी, मन में सुलग रही चिनगारी, कौन बुकाए दिल की प्यास!

हाई हैं घनघोर घटायें, चलती हैं पुरशोर हवायें, मन का मीत अगर आजाये, तो पूरी हो मन की आस—घर है सुना रात उदास! بجهائم ال و الني كو كوستى دوئى كوتى هـ—
آگ لكم إس من كو آگ !
لو پر رات بره كى آئى أ چاروں أور أماسى جهائى أ جان مرى تن ميں گهبرائى أ أپنى قسمت أينے بهاگ !

کالی أور برساتی رین ' أس بن نید کو ترسیس نین ' جسکے ساتھ گیا سکھ چین ' أسکی یاد کہے اب جاگ!

جس دن سے وہ پاس نہیں ہے ' کوئی خوشی کی رأس نہیں ہے ' جینے تک کی آس نہیں ہے ' جان کو ہے اب تن سے لاک!

کوں جیئے اور کس کے سہارے ' میتھے میتھے بول سدھارے ' گیت کہاں وہ پھارے پھارے ' اب وہ تان نہ اب وہ راگ !

اور تب پ_ار اپنے کو ملامت کرتی ھوٹی کہتی ۔ ۔۔۔

> درس دکھا کر جو چھپ جائے'' کوں ایسے سے پریت لگائے' کیوں اپنی کوئی دشا سنائے' چھزز سعبت کا کھٹراگ! آگ لکے اِس من کو آگ!

مکو طعنہ دیکر کھا کبھی ویوگن کے من کو شانتی طنی ہے؟ سونا گھر اور اُداس راتیں اُسے کھائے جانی ھیں ، وہ کہتی ہے۔ کہتی ہے۔

گهر هے سوفا رات أداس! دیرگه دن افریقاری راتیں' نیسے گذرینکی برساتیں' جهرئی تھیں سب أثنی باتیں' رهتا هے اب یه وشواس!

میں دکھیاری پریت کی ماری ' پرگائی مجھ پے وپدا بھاری ' من میں سلگ رھی چنگاری ' کون بجھا<u>ئے</u> دل کی پیاس اِ چھائی ھین گھنکھور گھٹائیں '

چھائی ھیں جہاہور جہادیں چلتی ھیں پرشرر ھوائیں ' من کا میت اگر آجائے ' تو پر*ہی* ھو من کی آس۔۔گھر ھے سونا رات اُداس!

جرائ*ي* 55'

भीर ध्सका प्रियतम भी कैसा बेदर्द है जो सुध ही नहीं जेता ! बेदना की लम्बी रातें उसे बेचैन कर देती हैं. वह निराश होकर कहती है—

सीस नवा कर करना रोये,
ड्रोड़ के उत्तम देस.
उसकी चिन्ता रामहि जाने,
जिसका पी परदेस.
सावन और फिर काली बदली,
बूँदनियों के तार.
रीत जगत की प्रीत से खाली,
सपना है संसार!

वियोगन के मन में एक प्रतिक्रिया पैदा होती है. वह माद्दी मोहब्बत का खटराग छोड़कर और सपने के संसार की माया तोड़कर गोकुल और विन्द्रावन की सैर करती है. वह कुंज बनों और कुंज गिलयों में घूमती है. वह कन्हैया की बंसी-ध्विन सुनना चाहती है. वह अब मनुष्य नहीं, भगवान से प्रीत का रिश्ता जोड़ना चाहती है. मगर कन्हैया क्या सहज मिलने वाला है ? उसने तो ब्रज की गोपियों को कला कलाकर हलाकान कर डाला. वियोग के उस इम्तहान में अब यह नई गोपी भी उतरी है. सुबह होती है, सूरज निकलता है. शाम होती है, दिन ढलता है. मगर इस नई गोपी को भी कन्हैया का पैशाम नहीं मिलता—

तड्प तड्प कर भोर हुई,
पर ना आया पैगाम, कन्हैया उजड़ चला मन-प्राम!
बादल गरजे बिजली चमके,
उठी घटायें श्याम, कन्हैया उजड़ चला मन-प्राम!
आँख में आँसू, कसक हृदय में,
भर आई है शाम, कन्हैया उजड़ चला मन-प्राम!
बरसात का मौसम है. कजरारे बादल चारों और छाये
हुए हैं. उन्हें आँख भर कर देखती हुई वियोगन

घटायें घर आई' घनघार,
हवायें चलती हैं पुरशोर.
मस्त पपीहा, बेसुध कोयल,
और पागल है मोर, घटायें घिर आई घनघार !
बिजली चमके बादल बरसे,
आन मिलो चितचार, घटायें घिर आई घनघार !
आसीर में इस नई गोपी की तपस्या अपना फल लाती
है और बिन्द्राबन के कुंज बन से, यमुना के तट से, कदम्ब
के बट से वियोगन के कानों में चितचोर कन्हैया की बाँसुरी

बरसात का यह मौसम, यह नीलगूँ घटाएँ, यह बातो बन का आलम, यह गुलिफ्शाँ फिजाएँ, اور اُسکا پریتم بھی کیسا ہے درد ہے جو سدھ ھی نہیں لیتا ! ویدنا کی لمبی رانیں اُسے بے چین کر دیتی ھیں ، وہ نراھی ھو کر کہتی ہے۔

سیس نوا کر جهرنا روئے'
چھوڑ کے اُتم دیس'
اُس کی چنتا رام ھی جائے'
حسکا پی پردیس'
سارن اُور پھر کائی بدلی'
بوٹدٹھوں کے تار'
ریت جکت کی پریٹ سے خالی'
سینا ہے سنسار!

ویوگن کے من میں ایک پرتیکریا پیدا عوتی ہے . وہ مادی محبت کا کھاراگ چھور کر اور سینے کے سنسار کی مایا تور کر گو کل اور بندرا بن کی سیر کرتی ہے . وہ کنج بنرں اور کنج گلیس میں گھومتی ہے . وہ کنیما کی بنسی دھن سننا چاہتی ہے . وہ اب منشیم نہیں' بھگواں سے پریت کا رشتم جرزنا چاہتی ہے . مگر کنیما کیا سہج ملنے والا ہے آ اسنے تو برج کی گوییوں کو رلا رلا کر علائاں کو تالا . ویوگ کے اِس اِمتحان میں اب یہ نئی گویی بھی اُتری ہے صبح جوتی ہے' سورج نکلتا ہے . شام ہوتی ہے' دن تھلتا ہے . مگر اِس نئی گویی کو بھی شام ہوتی ہے' دن تھلتا ہے . مگر اِس نئی گویی کو بھی کنیما نہیں ملتا۔۔۔

توپ توپ کر بھور ھوئی'
پر نا آیا پھنام' کنھیا اُجو چلا میں گرام اُ
یادل گرچے بجلی چمکے '
آٹھی گھٹائیں شیام' کنھیا اُجو چلا میں گرام اُ
آنکھ میں آنسو' کسک ھردئے میں'
بھر آئی ہے شام' کنھیا اُجو چلا میں گرام اُ
برسات کا موسم ہے ، کجرارے بادل چاروں اُور چھائے
ھوئے ھیں ، اُنھیں آنکھ بھر کو دیکھتی ھوئی ویوگن کہتی

کھانیں گھر آئیں گہنکھور'
موائیں چلتی ھیں پرشور ،
مست پیھہا' پے سدھ کویل'
اور پاگل ہے مہر' گھٹائیں گھر آئیں گھنگھور!
بجلی چمکے بادل برسے'
ان ملو چت چور' گھٹائیں گھر آئیں گھنگھور!
آخیر میں اِس نئی گربی کی تیسیا اپنا پیل لاتی ہے
ار بندواین کے کنیے بن سے' یمونا کے تت سے' کدمب کے بت
سے ویوگن کے کاتوں میں چت چور کنھیا کی بانسری کی دمان سنائی پوتی ہے۔
برسانی کا یہ موسم' یہ نیلکوں گھٹائیں'
برسانی کا یہ موسم' یہ نیلکوں گھٹائیں'

यह रसभरी इवायें. यह रंगो बू के तूफ़ाँ, यह विरज के नजारे, यह जनती ख्याचाँ, जमुना के यह किनारे, यह स्वप्न प्यारे-प्यारे. यह कोयलों की कू-कू, यह मोर की सदाएँ, यह नाषानीने आहु, और यह ग्रीब गाएँ, बह नरशागूँ फ़िजाएँ. सब्जा निकार रहा है, वादी महक रही है, नश्शा बिखर रहा है, बुलबुल चहक रही है, फ़ितरत बहक रही है, यह कीन इस समय में, बंसी बजा रहा है, इस दर्जा मस्त लय में, उस्फृत लुटा रहा है, नरमे वहा रहा है. कोई रिशी है, सन्यास की लगन में, कोई मुनी है, मसरूफ़ कीर्तन में, तौहीद के भजन में. हाँ, आओ पास चलकर, पूछें कि नाम क्या है, तलवों से आँखें मलकर, पूछें कि काम क्या है, उसका पयाम क्या है. ठहरो ज्रा निगाहें, पहचानती हैं उसको, फ़ितरत की जलवागाहें, सब जानती हैं उसकी, और मानती हैं उसको. हाँ-हाँ वे बन्सी बाला, चूकी नजर हमारी, यह बिरज का ग्वाला, है नन्द का मुरारी, और आर्जु हमारी. बंसी में से परीशाँ, नरमे मचल रहे हैं, या सेंकड़ों गुलिस्ताँ, करवट बदल रहे हैं, और फूल उगल रहे हैं.

सावन और वर्ष जिस तरह से प्रियतमा और वियोगनों को वियोग में ज्याकुल कर देती हैं उसी तरह वह नव विवाहता वधू को अपने मैंके और अपने माँ बाप की याद में भर देती हैं. गृरीबों की इस दुनिया में चक्की की सदा पर गाँव की एक दुल्हन वियोग का गीत गाती है. उस कसक भरे तराने को सुनकर शायर कहता है—

सुनो यह कैसी आवाज़ आ रही है,
कोइ गाँव की लक्की गा रही है.
सेहर के धुँधले-धुँधले मन्ज़रों को,
शराब नरमा पिला रही है.
उठी है शायद आटा पीसने को,
कि चक्की की सदा भी आ रही है.
रामों से चूर अपने नन्हे दिल को,
तराना छेड़ कर बहला रही है.

يه رس بهرمي هوأثين . یہ رنگ و ہو کے طوفان یہ برج کے نظارے ' یہ جننتی خیاباں جبنا کے یہ کنارے ا یہ سو یوں بیارے بیارے * یه کوبلوں کی کو کو' یہ مور کی صدائیں ' یه فازنین آهو' اور یه غریب گلس' ية نشهكس نضائيس. سبزة نكهر رها هے؛ رادي مهك رهي هے؛ نشه بهر رها هے بلبل چیک رهی هے ا نطرت بہک رھی ہے. يه كون أس سنته مهن بنسى بنجا رها هه ؟ إس درجة مست له مين الفت الله رها هه ' ننیے بہا رہا ہے۔ شاید کوئی رشی هے' سنهاس کی لکن میں ' شايد كوئي مني هي مصروف كيرتن مين " توحید کے بہجن میں. هان' آؤ يلس چل کو' يو چهين که نام کيا آه ' تنہوں سے آنکھیں مل کو پوچھیں که کام کیا ھے ' اُسکا پیام کیا ہے۔ تهبرو ذرا نگاهین پهچانتی هین أسکو فطرت کی جاوہ گلعیں' سب جانتی هیں اُسکو' اور مانتی هیں آسکو هاں هاں بے بنسی والا چوکی نظر شاری ' یه برج کا گرالا هے نند کا مراری ' اور آرزو هماری ، بلسی میں سے پریشاں نغیے محل رقے هیں ' يا سينكررن گلستان كورث بدل رهم هين ا ارر يهول أكل رهے هيں.

ساوں اور ورشا جس طرح سے پریتما اور ویوگنوں کو ویوگ میں ویائل کر دیتی ھیں اسی طرح وہ نو وواھتا بدھو کو اپنے مہک اور اپنے ماں باپ کی یاد میں بھر دیتی ھیں ، غریبوں کی اِس دنیا میں چکی کی صدا پر کاؤں کی ایک دلین ویوگ کا گیت کانی ھے ، اُس نسک بھرے ترانے کو سن کر شاعر کہتا ھے۔

سنو یه کیسی آراز آرهی هے،
کوئی گاؤں کی لرّکی گا رهی هے،
سحر کے دهندهلے دهندهلے منظروں کو،
شراب نیمه پلا رهی هے.
اُٹھی هے شاید آٹا پیسلے کو،
که چکی کی صدا بھی آرهی هے.
غمرں سے چور اپنے ننیے دل کو،
غمرں سے چور اپنے ننیے دل کو،

किया पर, बस्तियों पर, जंगलों पर, धुद्राधार एक बदली छा रही है. खमाखम मेंह की बूँदें पढ़ रही हैं, कि सावन की परी कुछ गा रही है. यह, बादल हैं कि हैं सावन के सपने ? हवा जिनका उड़ाकर ला रही है. यह बिजली है कि इक मरमर की नागिन ? धुएँ के मील पर लहरा रही है. यह बुँदें हैं कि बिजली आसमाँ से ? सितारे तोड़कर बरसा रही है. मगर वह रामजदा मासूम लङ्की, बराबर गीत गाए जा रही है. यह घर सुसराल होगा शायद इसका, जभी माँ-बाप की सुध आ रही है. जभी मसरूफ है आहो फ़ुग़ाँ में, जभी रामगीन लय में गा रही है. भीर वह गाँव की दुलहन क्या गा रही है ?-यह बरखा हत भी बीती जा रही है! हवा जो गाँव को महका रही है, मेरे मैंके से शायद आ रही है. घटा की ऊदी-ऊदी चुनरियों से, मेरी सिखयों की बू-बास आ रही है. सभे लेने न आए अच्छे बावल, तुम्हारी याद आफत टा रही है. मेरी अम्माँ को हो इसकी खबर क्या, कि 'चन्पा' इस जगह घवरा रही है. न ली भैया ने भी सुध-बुध हमारी. जहाँ से चाह उठती जा रही है.

योंही वह अपनी गुमर्गा रागिनी से, दरो दीवार को तड़पा रही है. सावन इसी तरह आता है और आता रहेगा. साजन की वियोगन और माँ-विछुड़ी बेटी को वह युगों से इसी प्रकार तडपाता रहा है और तड़पाता रहेगा. कालिदास से लेकर तुलसीदास तक और हफीज जलन्धरी से लेकर इन्द्रजीत तक नए और पुराने शायरों के मन को वह इसी तरह ग्म और वियोग के हिंडोले में मुलाता रहा है. सीता के वियोग पर रामचन्द्र जीकी व्यथा का वर्णन तुलसीदास ने भरी बरसात के पट पर कितनी मार्भिकता से किया है. बरसात किवयों झीर शायरों को जुभाती रही है और हमेशा जुभाती रहेगी.

भला क्योंकर थमें श्राँसू कि जी पर,

पेंगें बढ़ाने का जमाना,

उदासी की बदरिया छा रही है.

वह अमरच्यों पे कोयल गा रही है.

نفا پر' بستيس پر' جنالس پر' دهوال دهار ایک بدلی چها رهی هے چهما چهممينهدكي بولديس يورهي هين که ساون کی دری کچے کا رهم هے . یہ بادل میں که میں ساہن کے سینے ؟ یہ بچلی ہے کہ اک مر مرکے ٹاکی ہ دعونیں کے جہیل پر لہرا رھی ھے. یه بودیں هیں که بجلے آسمال سے ؟ ستارے توز کر برسا رھی ہے. مگر وه غمزده معصوم (رکی برابر گیت گئے جا رہی ہے. ية گهر سسرال هوكا شايد أسكا جبهی ملی باپ کی سرھ آرھی ہے۔ جبهی مصروف هے آہ و فغال میں ا جدمی غمکیں لے میں کا رہم سے أور وہ گاؤں كى دلهن كيا كا رهى هے لا --یه برکها رت بهی بیتی جارهی هے! عوا جو کاؤں کو مہکا رعی ہے؛ مرے میکے سے شاید آرھی ھے. گها کی اُردی اُردی چنریوں سے ا میری سکنیوں کی ہو باس آرہی ہے۔ مجه لينه نه آئه آچه باول، تمهاری یاد آفت دها رهی هے. مهری امال کو شو اِسکی خبر کیا كه اچمها إس جكه كهارا رهي هـ. ٹے لی بھیا نے بھی سرم بدھ ھما_{ری}' جهاں سے چاہ اُنّهتی جا رقی ہے. بهلا کیولکر تهمیں آنسو کہ جی پر' آداسی کی بدریا چھا رسی ہے. گیا پینگیں بزندانے کا زمانی وہ اُسریوں یر کویل کا ربھی ہے ، یوئی وہ اپنی غمکیں راگنی سے در و ديرار كو توپا رهى هے.

ساون اِسى طرح آناً هم أور آنا رهم كا . ساجن كى ويوكن اور ماں بعجھڑی بیٹی کو وہ یکوں سے اِسی فرار توپانا رما مے اور توبانا رهیکا . کالیداس سے لے کر تلسی داس تک اور حفیظ جالندھری سے لے کر اندرجیت تک نئے اور پرانے شاعروں کے من کو وہ اِسی طرح غم اور ویوگ کے منتقرالے میں جھالنا رہا ہے . سیتا کے ویوگ پر رامچندر جی کی ریتھا کا وردن تلسی داس نے بھری برسات کے بٹ پر کتنی مارمکتا سے کیا ھے. برسات کویس اور شاعروں کو لبھاتی رھی ہے اور ھمیشه لبیاتی الليكي .



ऐटमी जंग के खिलाफ़ साइन्सदानों की अपील.

9 जुलाई सन् 55 को जनता श्रीर श्रस्तवारों के प्रतिनिधियों से खवाखव भरे हुए लन्दन के एक हाल में
इंगलैन्ड के बयासी बरस की उमर के मशहूर फिलासफर
श्री बरट्रेन्ड रसल ने श्रपनी श्रीर दुनिया के बड़े से बड़े
साइन्सदानों की तरफ से दुनिया की सब शक्तिशाली
सरकारों के नाम एक ऐलान पढ़कर सुनाया. जिन साइन्सदानों के उस ऐलान पर दस्तखत थे उनमें सबसे बड़ा नाम
प्रोक्षेसर श्राइन्सटाइन का है. प्रोक्षेसर श्राइन्सटाइन ने
18 श्रपरैल सन् 1955 को श्रपनी मौत से ठीक पहले
इस ऐलान पर दस्तखत किये थे. ऐलान के खास खास
वाक्य यह हैं:—

"हम आप से इस कौम या उस कौम, इस महाद्वीप या उस महाद्वीप, या इस मजहब या उस मजहब के आदिमियों की हैसियत से बात नहीं कर रहे हैं. हम साइन्स के सेवक हैं और केवल मनुष्यों की हैसियत से, उस इनसानी नसल के लोगों की हैसियत से जिसका रहना न रहना इस समय

खतरे में है, श्राप से बात कर रहे हैं.

"इसमें कोई शक नहीं कि हाइड़ोजिन बमों की लड़ाई में बड़े बड़े शहर बिलकुल मिट जायंगे. पर यह तो एक बहुत छोटी सी दुर्घटना होगी जिसका हमें सामना करना पड़ेगा. अगर लन्दन, न्युयार्क श्रीर मास्को के सब लोग खतम हो जायं तब भी हो सकता है कि कुछ सिद्यों के अन्दर दुनिया फिर इस सदमें से पनप जाने.

"पर खासकर बीकीनी के तजरबे के बाद हमें यह मालूम है कि इस तरह के बमों से जितनी दूर तक हमने सोच रखा था उससे अब कहीं ज्यादा दूर तक तबाही

फैल सकती है.

"सब जानने वालों की राय है और सब एक आवाज से कहते हैं कि हाइड्रोजिन बमों की लढ़ाई से बहुत मुमकिन है कि इनसानी नसल ही हमेशा के लिये खतम हो जावे.

آیڈی جنگ کے خلاف سائنس دانوں کی ایبل

9 جولائی سن 55′ کو جنتا اور اخباروں کے پرتی ندھیوں سے کھچا کھے بھوے ھوے اندن کے ایک عال میں انگلینڈ وسل کے بیاسی بس کی عمر کے مشہور فلاسفر شوی برڈرینڈ وسل نے اپنی اور دنیا کے بڑے سے بچے سائنسدائوں کی طرف سے دئیا کی سب شکتی شائی سوکاروں کے نام ایک اعلان پڑھکر سنایا ۔ جن سائنسدائوں کے اُس اعلان پر دستخط تھے اُن میں سب سے بڑا نام پروفیسر آئنس اُئی کا فے . پووفیسر آئنس ٹائن کے خاص خاص واکیت اس اعلان پر دستخط کے تھے ، اعلان کے خاص خاص واکیت

''الس میں کوئی شک نہیں نه هائدروجن بموں کی لوائی میں بڑے بڑے شہر بالکل مت جارینگے، پر یا نو لیک بہت جہت کھوئی ہس کا عمیں سامنا کران پڑیا ۔ اگر لندن نفویارک اور ماسکو کے سب لوگ ختم هو جائیں نب بھی هو سخا شے که کچھ صدبوں کے اندر دنیا پہر اِس صدمہ سے پنپ جارے .

"پر خاص کر ہیکینی کے تجربہ کے بعد شمین یہ معلوم سے کہ اِس طرح کے یموں سے جتنی دور نک شم نے سوچ رکھا تھا اُس سے اب کہیں زیادہ دور تک نباشی پھیل سکتی ہے۔

'' سب جاننے والوں کی رائے ہے اور سب ایک آواز سے کہتے ھیں که خائذروجن ہموں کی اُڑائی سے بہت ممکن ہے کی انسانی نسل ھی ھمیشہ کے اٹنے ختم عو جائے۔

جرائي 55'

इस बात का बर है कि खगर बहुत से हाइड्रोजिन बम इस्तेशाल किये गए तो सब खादमी मर जायंगे— उनमें से थोड़े से फीरन् मरकर छूट जायंगे चौर बाक्री अधिकतर तरह तरह की भीमारियों से गल गल कर धीरे धीरे बड़ी तकलीफों के साथ मरेंगे. इस बारे में जो लोग सबसे अधिक जानकार हैं वही सबसे अधिक दुखी और निराश हैं.

"दुनिया के आम लोग इस बात को पूरी तरह समक भी नहीं सकते कि वह खुद और उनके सब सगे सम्बन्धी जिन्हें वह प्यार करते हैं इस खतरे में हैं कि वह सबके सब रित रित कर बड़ी तकलीकों के साथ मरें और यह

स्तरा उनकी बिलकुल आँखों के सामने है.

"हम दुनिया को आगाह करना चाहते हैं कि यह आशा करना कि जंग में अगर ऐटम बम और हाइड्रोजिन बम जैसे नए हथियारों पर बंदिश लगा दी गई तो सम्भव है कि दुनिया बाकी रह जावे, बहुत बड़ा थोका है. यदि किसी तरह भी एकबार जंग शुरू हो गई तो इस तरह की बंदिश किसी को भी नहीं रोक सकेगी और जंग के छिड़ते ही दोनों तरफ के लोग हाइड्रोजिन बम तैयार करना शुरु कर देंगे.

"हम बहुत अञ्झी सनद के साथ कह सकते हैं कि जिस तरह के बम ने हीराशिमा के पूरे शहर को मिटा दिया था उससे अब ढाई हजार गुना अधिक शक्ति वाला बम

तैयार किया जा सकता है.

"इस तरह का बम अगर कहीं भी जमीन के अपर या पानी के अन्दर फटा तो सारी जमीन के अपर की हवा में अससे रेडियो ऐक्टिथ परमाणु भर जायंगे. बहां से फिर वह धीरे धीरे एक ऐसी गई या बारिश के रूप में जमीन पर उतरेंगे जो सबका मार कर खतम कर देगी. यही गई थी जिसने जापानी मिछ्नयारों और उनकी पकड़ी हुई मछलियों को सहाकर खतम कर दिया था.

"इस बात को ध्यान में रखते हुए कि भविष्य की किसी भी जंग में ऐटम बम और हाइहोजिन बम जैसे हथियार जरूर काम में लाए जायंगे और इस बात को भी जानते बूमते हुए कि इस तरह के हथियारों से सारी इनसानी नसल के खतम हो जाने का हर है, हम दुनिया की सरकारों पर जार देते हैं कि वह इस बात का सममें और खुले इसे स्वीकार करें कि किसी भी आलमगीर जंग से उनका कोई मवलब या उनकी कोई रारज पूरी नहीं हो सकती. इसीलिये हम दुनिया की सरकारों पर जोर देते हैं कि उनके एक दूसरे के साथ जो भी मगड़े बाक़ी हैं उन सबको तय करने के लिये वह शान्ति के तरीके ही काम में लाएँ.

"हम इनसानों की हैसियत से सब इनसानों से अपील करते हैं कि आप अपनी इनसानियत को याद रखिये और اِس بات کا دَر هے که اگر بہت سے هائدررجن بم استعمال کئےگئے تو سب آدمی مر جائیلئے۔۔۔۔اُن میں سے تہورے سے فوراً مر کو چھوٹ جاویئئے اور باقی ادھک تو طرح طرح کی بیماریس سے گل گل کر دھھرے دھیرے بڑی تکلیفوں کے ساتھ مرینئے ۔ اِس بارے میں جو لوگ سب سے ادھک جانکار ھیں رھی سب سے ادھک جانکار ھیں رھی سب سے ادھک دکھی اور نراش ھیں .

"دنیا کے عام لوگ اِس بات کو پوری طرح سنجے بھی الہمیں سکتے که ولا خود اور اُن کے سب سکے سبندھی جنھیں و پیار کرتے ھیں اِس خطرے میں ھیں که ولا سب کے سب رت در ہری تکلیلس کے ساتھ مریں اور یہ خطرہ اُن کی بالکل آنکھوں کے ساتھ اُد

واهم دنیا کو آگاہ کرنا چاہتے ہیں کہ یہ آشا کرنا کہ جنگ میں آگر ایتم ہم اور ہائڈررجن ہم جیسے نئے ہتھاروں پر بندش لگادی گئی تو سمبھو ہے کہ دنیا ہاتی رہ جارے' بہت ہڑا دھوکا ہے ۔ یعی کسی طرح بھی ایک بار جنگ شروع ہو گئی تو اس طرح کی بندش کسی کو بہی نہیں روک سکے گی اور جنگ کے چھڑتے ہی دونوں طرف کے لوگ ہائڈروجن ہم جنگ کے چھڑتے ہی دونوں طرف کے لوگ ہائڈروجن ہم تھار کرنا شروع کر دینگے ۔

ورهم بہت اچھی سند کے ساتھ کہہ سکتے میں کہ جس طرح کے ہم نے میروشیما کے پورے شہر کو متا دیا نہا آس سے اب تعالی مزار گنا ادھک شکتی والا ہم تیار کیا جا سکتا ہے ۔

''اِس طرح کا ہم اگر کہیں بھی زمین کے ارپر یا پائی کے اندر پہٹا تو ساری زمین کے ارپر کی ہوا میں اُس سے ریڈیو ایکیٹو پرمانو بھر جائیدگے۔ وہاں سے پھر وہ دعیرے دعھرے ایک ایسی گرد یا بارش کے روب میں زمین پر اُترینگے جو سب کو مار کر ختم کر دیگی . یہی گرد تھی جس نے جاپائی مچھاروں اور اُن کی پاڑی ہوئی مجھایوں کو سزائر ختم کر دیا تھا .

''الس بات کو دھیاں میں رکھتے ھونے کہ بھوشیہ کی کسی بھی جنگ میں ایٹم ہم اور ھاستروجن ہم جیسے ھتھار ضرور کلم میں لائے جائیلئے اور اِس بات کو بھی جانتے ہوجھتے ھوئے کہ اِس طرح کے ھتھیاروں سے ساری انسانی نسل کے ختم ھو جانے کا ترھے' ھم دنیا کی سرکاروں پر زور دیئے ھیں کہ وہ اِس بات کو سبجھیں اور کیلے اِسے سویکار کریں که کسی بھی عالمگیر جنگ سے اُن کا کوئی مطلب یا اُن کی کوئی غرض پوری نہیں ھو سکتی ، اِسی لئے ھم دنیا کی سرکاروں پر زور دیئے ھیں کہ اُن کے ایک دوسرے کے ساتھ جو بھی جھکڑے ہاتی ھیں اُن سب کو طے کرنے کے لئے وہ شانتی کے طریقے ھی میں اُنھی ،

ورہم انسانوں کی حیثیت سے سب انسانوں سے اپیل کوتے میں که آپ اپنی انسانیت کو یاد رکھئے اور बाकी सब बातें भूल जाइये. अगर आप ऐसा कर सकें तो एक नए स्वर्ग के लिये दरवाजा आपके सामने खुला हुआ है. अगर आप यह नहीं कर सकते तो सारी इनसानी नसल की भीत का बर आपके सामने है.

"वडी साफ भीर दर्वनाक सवाल हम भापके सामने रख रहे हैं. दुनिया इस सवाल से वच नहीं सकती. सवाल बह है कि इस इनसानी नसल को खतम कर देंगे या इस

मिलकर जंग को हमेशा के लिये छोड़ देंगे ?"

भी बरट्टेम्ड रसल ने 9 जुलाई को लन्दन के उस जलसे में कहा कि वह उसी दिन ऊपर के इस ऐलान की कापियां हस, अमरीका, चीन, कनेडा, .फान्स और इंगलैंड

की सरकारों के मुखियों के पास मेज चुके थे.

पेलान के साथ एक एक चिट्ठी थी जिसमें इन सरकारों के मुखियों से और भी जोरदार राज्यों में अपील की गई है कि वह खले इस पेलान का जवाब दें क्योंकि "इससे क्यादा गहरा सवाल आज तक कभी इनसानी नसल के द्यामने नहीं खाया."

पेलान की कापियां पशिया और योरप सब जगह के

बढ़े बढ़े साइन्सदानों के पास भी भेजी गई हैं.

प्रोफेसर बाइन्सटाइन और श्री बरट्रेंड रसल के बालावा दुनिया के जिन और बढ़े बढ़े साइन्सवानों के इस ऐलान पर दस्तस्त्रत हैं वह यह हैं :---

(1) प्रोफेसर थी. डबलू. त्रिजमैन, अमरीका की हारवर्ड यूनीवर्सिटी के प्रोक्रेसर जिन्हें किजिक्स में नोबुल

प्राइज मिल चुका है.

(2) प्रोफेसर एल. इनकेल्ड, वारसा यूनीवर्सिटी के प्रोफेसर, जिन्होंने प्रोफेसर चाइन्सटाइन के साथ मिल कर "दी एवोल्यूशन श्राफ फिजिक्स ऐन्ड श्राफ दी प्रावलम आफ़ मोरान" नाम की मराहूर किताब लिखी है.

(3) प्रोफ़ेसर जे. मूलर, जो मास्को और भारत में दोनों जगह प्रोफ़ेसर रह चुके हैं और अब अमरीका की इन्डियाना यूनीवर्सिटी में प्रोफ़ेसर हैं. इन्हें भी फिजिया-लोजी और मेडिसिन में नोबुल शाइज मिल चुका है.

(4) प्रोफ़ेसर सी. एफ़. पावल, ब्रिस्टल यूनीवर्सिटी के प्रोफ़ेसर, इन्हें भी फिज़िक्स में नोबुल प्राइज मिल

चुका है.

(5) लन्दन यूनीवर्सिटी के फिजिक्स के ब्रोफेसर जाजक राथलैट.

(6) प्रोफ्रेसर हाई की योकादा, जो जापान की क्योतो यूनीवर्सिटी में प्रोफेसर हैं, इन्हें भी फिजिक्स में नोबुल पाइज मिल चुका है.

भौर (7) .फांस के मशहूर प्रोफ्रेसर फरैंडरिक जूलियो

म्युरी.

ہاتی سب باتیں بھول جائفہ اگر آپ ایسا کو سکیں تو ایک نیٹہ سررگ کے لئے دروازہ آیکے ساملے کیا ہوا ہے . اگر آپ یہ نہیں كو سكتے تو ساري انساني فسل كي موت كا در أيكے سامنے

اليهي صاف أور دردناك سوأل هم أيك سامل وي رها هيں . دنيا اس سوال سے بھے نہيں سکتی . سوال يه هـ که هم انسانی آنسل کو ختم کر دینکی یا هم ملکر جنگ کو مديده كے لئے جهور ديناء 9 "

شری ہرتریند رسل نے 9 جولائی کو لندن کے اُس جلیم میں کیا کہ وہ اُسی میں اوپر کے اِس اعلان کی کاپیان روس امریکی چین کنیدا و فرانس اور انکلیند کی سرکاروں کے معموں کے پاس بہنے چکے تھے ،

اعلان کے ساتھ ایک ایک چٹھی تھی جس میں اِن سرکاروں کے مکھدوں سے اور بھی زوردار شبدوں میں اپیل کی گئی ہے کہ وہ کیلے ایس اعلن کا جواب دیں کھونکہ ''ایس سے زیادہ گہرا سوال أج نک کبھی انسانی نسل کے سامنے

اعیں کی کاییاں ایشیا اور یورپ سب جکه کے بڑے بڑے ساڑنس ڈائن کے یاس بھیجی گئی ھیں ،

یرونیسر آننس ٹاین اور شری برڈرینڈ رسل کے علاوہ دنیا کے جن اور بڑے بڑے سائلسدانوں کے اِس اعلان پر دستخط هیں

- (1) پرونیسر پی. ةبلو، برج مین امریکه کی هارورة یونیورستی کے پرونیسر جنہیں فرکس میں نوبل پرائز مل
- (2) پرونیسر ایل اِلعلد وارسا بونهورستی کے پرونیسر جنهبن نے پرونیسر آئنس تائن کے ساتھ ملکر ''دی ایوولیوشن أف نزكس أيند آف دى يرابلم أف موشن" نام كي مشهور الماب لكهر هه .
- (ال) پرونيسر جے . سوار' جو ماسكو أور بيارت ميں دونوں جكه پرونيسر ره چكم هيل أور أب أمريكه كي انديانا يونيورسايي میں پرونیسر هیں ، اُنهیں بھی فزیالوجی اور میدیس میں نوبل يرائز مل چكا هے .
- (4) پررنیسر سی. ایف. پارل' برسال یونیورساتی کے پرونيسر انهيں بھي نزکس ميں نوبل پرانز مل چکا ھے .

(5) لندن یونیورسٹی کے فزکس کے پروفیسر جازف رانھ ليت .

(6) يرونيسر هائي کي يوکاوا عو جاپان کي کيوتو يونيورساني میں پرونیسر هیں ، اِنهیں بھی فرکس میں توبل پراٹز مل

اور (7) فرانس کے مشہور پرونیسر فریڈرک جولیو کیوری .

श्री बरट्रेंड रसल ने कहा कि "प्रांकेसर .फ डिरिक जूलियो क्युरी के द्रतख़तों से मुफे खास तौर पर ख़ुशी हुई क्योंकि वह एक मशहूर कम्युनिस्ट हैं." प्रांकेसर .फ डिरिक जूलियो क्युरी वर्ल्ड पीस कौंसिल के यानी दुनिया भर की शान्ति परिषद के सदर हैं और दुनिया से जंग को ख़तम करने और शान्ति कायम करने के सबसे बड़े कोशिश करने बालों में से हैं.

प्रोकेसर बाइन्सटाइन के दस्तखतों पर भी खास खुशी बाहिर करते हुए श्री बरट्रेंड रसल ने कहा कि इस ऐलान पर दस्तखत करना प्रोक्षेसर बाइन्सटाइन की जिन्दगी का सबसे बाखिरी काम था और उन्होंने मुक्ते लिखा कि "वह इस ऐलान के एक एक शब्द से सहमत हैं."

श्री बरट्रेंड रसल ने यह भी कहा कि यह ऐलान साइन्सदानों की तरफ से केवल पहला क़दम है. उनका इरादा है
कि इसके बाद सब देशों और सब क़ौमों के साइन्सदानों
की एक कानफरेंस की जावे जिसमें दस्तक़त करने वालों की
तरक से इस तरह का प्रस्ताव पेश किया जावे. उन्होंने यह
भी कहा कि "अब एक बहुत बड़े पैमाने पर आम जनता
में इसके लिये आन्दोलन करना ध्यावश्यक है." पर इस
तरह के आन्दोलन का श्रीगणेश वह साइन्सदानों से ही
कराना चाहते हैं. उन्होंने यह भी कहा कि :—"दुनिया की
जनता की राय का असर अमर्र का की सरकार पर भी
पड़ा है और वह समभदारी की बात करने लगी है. मेरा
ख्याल है कि अगर अमरीका की आम जनता पर इतना
अञ्झा असर न हाता ता पूरवी एशिया की समस्याओं का
हल करने में अमरीका की सरकार अब तक कुछ ऐसी
रालतियां कर बैठी होती जा बरवादकुन होती."

सारी दुनिया के अमन पसन्द लागों के साथ मिलकर हम साइन्सदानों के इस ऐलान और इस अपील का दिल से स्वागत करते हैं. ऐटम बमों श्रीर हाइडोजिन बमों की ईजाद और दुनिया के पढ़े लिखे और सममदार सममे जाने वाले लोगों का उन्हें दुनिया की जनता पर इस्तेमाल करने की सोचना और बार बार धमकी देना इस बात को दिखा रहा है कि हमारी आजकल की सभ्यता नैतिक यानी इखलाकी निगाह से कितनी नीचे गिर चुकी है. हमें विश्वास है कि दुनिया की आम जनता के अन्दर जिस आन्दालन की भी बरट्रेंड रसल ने चरचा की है उसे जब भी दुनिया के साइन्सदीं शुरु करेंगे दुनिया की जनता और हमार देश की जनता उसमें पूरा पूरा सहयाग देगी. दुनिया के साइन्स-हानों का यह ऐलान साइन्स के अपर से सबसे बड़े कलंक को धो देन बाला और साइन्स और साइन्सदानों की इज्जत और उनकी कीर्ति को सैकड़ों गुना बढ़ा देने वाला है. दिनिया की आजकल की सबसे बड़ी मुसीबत में यह ऐलान شری برقریند رسل نے کہا کہ ''پرونیسو فریدرک جولیوکیوری
کے دستخطوں سے مجھے خاص طور پر خوشی ہوئی کیونکہ
وہ ایک مشہور کییونسٹ میں ۔'' پرونیسو فریدرک جولیو
گیوری ورآد پیس کو نسل کے یعنی دنیا بھر کی شانتی پریشد
کے صدر میں اور دنیا سے جنگ کو ختم کرنے اور شانتی تائم
کرنے کے سب سے بڑے کوشش کرنے والوں میں سے میں .

پرونیسر آئنس ٹائن کے دستخوں پر بھی خاص خوشی ظاہر کرتے ہوئے شری برئرنات رسل نے کہا که اِس اعلان پر دستخط کرنا پرونیسر آئلس ٹائن کی زندگی کا سب سے آخری کام تھا اور آنہوں نے مجھے لکھا که ''وہ اِس اعلان کے ایک ایک شبد سے سہبت ہیں ۔''

شری ہر آریند رسل نے یہ بھی کہا کہ یہ اعلان سائنس دائوں کی طرف سے کیول پہلا قدم ہے۔ اُن کا ارادہ ہے کہ اِس کے بعد سب دیشوں اور سب قوموں کے سائنس دائوں کی ایک کانفرنس کی جارے جس میں دستخط کرنے والوں کی طرف سے اِس طرح کا پرستاؤ پیش کیا جارے ، اُنھوں نے یہ بھی کہا کہ ''اب ایک بہت ہڑے پیمانے پر عام جنتا میں اِس کے اندولن کا اُنے اُندولن کو کرنا آرشیک ہے '' پر اِس طرح کے آندولن کا شری گنیش وہ سائنس دائوں سے سی کرانا چاہتے ھیں ۔ اِنھوں نے یہ بھی کہا کہ:۔۔''دئیا کی جنتا کی وائے کا اُنر آمریکہ کی سرکار پر بھی پڑا ہے اور وہ سمجھداری کی بات کونے لگی ہے میرا خیال ہے کہ اگر آمریکہ کی عام جنتا پر اندا اچیا اثر نہ میرار اب تک کچھ ایسی غلطیاں کر بیاھی شوتی جو برباد کن سرکار اب تک کچھ ایسی غلطیاں کر بیاھی شوتی جو برباد کن سوتیں ۔''

ساری دنیا کے اس پسند لوگرں کے ساتی ملکر ہم سائنس دانوں کے اِس اعلان اور اِس اپیل کا دال سے سوائت کرتے آھیں ، ایک مہرس اور ھائڈروجن بموں کی ایجاد اور دنیا کے پڑھے اور سمجیدار سمجیے جانے والے لوگوں کا اُنہیں دنیا کی جنتا پر استعمال کرنے کی سوچنا اور بار بار دھمکی دینا اِس بات کو دکیا رہا ہے کہ ھماری آجکل کی سبھیتا نیتک یعنی اُخلاقی نگاہ سے کتنی نیجے گر چکی ہے ۔ همیں وشواس ہے کہ دنیا کی عام جنتا کے اندر جس آندون کی شری برترینڈ رسل نے چرچا کی ہے اُسے جب بھی دنیا کے سائنس دان شروع کرینگے دنیا کی جنتا اُور ھمارے دیش کی جنتا اُس میں پررا پررا سمبیوگ دے گی ۔ دنیا کے سائنس دانوں کا یہ اعلان سائنس اور سائنس دانوں کی عزت اور اُن کی کیرتی کو سینکروں گنا بڑھا دینے سائنس دانوں کی آجکل کی سب سے بڑی مصیبت میں یہ اعلان سائنس دانوں کی آجکل کی سب سے بڑی مصیبت میں یہ اعلان والا ہے ۔ دنیا کی آجکل کی سب سے بڑی مصیبت میں یہ اعلان والا ہے ۔ دنیا کی آجکل کی سب سے بڑی مصیبت میں یہ اعلان والا ہے ۔ دنیا کی سب سے بڑی مصیبت میں یہ اعلان والا ہے ۔ دنیا کی سب سے بڑی مصیبت میں یہ اعلان والا ہے ۔ دنیا کی سب سے بڑی مصیبت میں یہ اعلان والا ہے ۔ دنیا کی سب سے بڑی مصیبت میں یہ اعلان والا ہے ۔ دنیا کی سب سے بڑی مصیبت میں یہ اعلان والا ہے ۔ دنیا کی سب سے بڑی مصیبت میں یہ اعلان والا ہے ۔ دنیا کی سب سے بڑی مصیبت میں یہ اعلان والا ہے ۔ دنیا کی سب سے بڑی مصیبت میں یہ اعلان والا ہے ۔

प्रेम और अहिंसा के उन उपदेशों की गूँज मालूम होता है जो महात्मा बुद्ध से लेकर गाँधी जी तक संसार के अनेक सक्षे मार्ग दर्शक दुनिया को देते रहे हैं. हम आशा करते हैं कि दुनिया की सरकारें साइन्सदानों की इस अपील पर पूरा पूरा क्यान देंगी. इनसानी नसल के भले और उसकी सलामती के नाम पर हम चाहते हैं कि यह अपील पूरी तरह सफल हो.

13-7-55

—सुन्दरलाल

गोभा का सत्यामह और उससे सबक्र

आज भी दुनिया में इस तरह के लोग मीजूद हैं जो दूसरों की राजकाजी या क्रीमी आजादी के हक को स्वीकार नहीं करते ! क्रीमों की आजादी के हक के खिलाफ लड़ना आज ऐसा ही है जैसा क़ुद्रत के अटल क़ानूनों से लड़ना या आँधी से भिड़ना. पर तुच्छ और तात्कालिक स्वार्थ हमें अन्धा कर देता है. छोटा सा पुर्तगाल शायद इस मामले में लड़ने की हिम्मत न करता लेकिन दुनिया के साम्राजवादियों यानी दूसरों को गुलाम रखने की इच्छा रखने वालों का गुटु अभी दूटा नहीं है. क़ुद्रत के क़ानूनों या इतिहास की शिक्तयों को कोई उलट नहीं सकता. पर पुर्तगाल के इस रख का यह मतलब जरूर है कि अपनी अपनी और दुनिया की आजादी चाहने वालों को अभी कुछ और क़ुरवानियां करनी होंगी.

जाहिर है कोई भारतवासी ऐसा नहीं हो सकता जिसे गोश्रा के सत्याप्रह के साथ पूरी हमद्दीं न हो. उन वीरों को जो गोश्रा के पवित्र और शानदार सत्याप्रह में शरीक हुए हैं और हो रहे हैं, जिनमें से कुछ शहीद भी हो चुके और सैकड़ों ने अकथनीय शारीरिक और मानसिक कष्ट मेले, हम आदर के साथ नमस्कार करते हैं. पुर्तगाली शासकों ने जिस तरह के अमानुषिक ऋत्याचारों को इन निह्थे और अहिंसात्मक सत्याप्रहियों पर रवा रक्खा है उनके लिये हमें पुर्तगालियों से कुछ नहीं कहना. हमें विश्वास है कि हमारे देशवासी, पुर्तगाली सममे जाने वाले इलाक के अन्दर के हों या उससे बाहर के, इन अत्याचारों के कारन अपने संकल्प में और भी पक्के साबित हाते रहेंगे.

गोत्रा के सत्याप्रह में सबसे अधिक ख़ुशी की बात यह हुई कि देश की सब पोलिटिकल पार्टियों के लोग कम्युनिस्ट, जनसंघी, प्रजा सोशिलस्ट और कांगरंसी उसमें कंधे से कंधा मिला कर भाग लेने के लिये बेचैन हैं और ले रहे हैं. यह सुन्दर घटना दो बातें साबित करती है. एक यह कि विचारों और आदशों के थोड़े बहुत करक के होते हुए भी सब पार्टियों के लोग सच्चे, त्यागी और देश भक्त हैं.

پریم اور اهنسا کے آن آپدیشوں کی گونیج معلوم هوتا هے جو مہاتما بدھ سے لے کر گاندهی جی تک سنسار کے انیک سیے سارک درشک دنیا کو دیتے رہے ہیں . هم آشا کرتے میں که دنیا کی سرکاریں سائنس دانوں کی اِس آپدل پر پورا پورا دهیان دینگی۔ انسانی نسل کے بیلے آور اُس کی سلامتی کے نام پر ہم چاہتے ہیں که یہ اپیل پوری طرح سیبل ہو ،

--سندرلال

13 .7 .55

گووا کا ستیاگوہ اور اُس سے سبق

آج بھی دنیا میں اِس طرح کے لوگ موجود ھیں جو دوسروں کی راج کاچی یا قومی آزادی کے حق کو سویکار نہیں کرتے ! قوموں کی آزادی کے حق کے خلاف لونا آج ایسا ھی ھے جیسا قدرت کے اٹل قانونوں سے لونا یا آندھی سے بھوٹا ، پر تھچھ اور تاتکالک سوارتھ ھمیں اندھا کر دیتا ہے، چھوٹا سا پرتگال شاید اِس معاملے میں لوئے کی ھمت نہ کرتا لیکن دنیا کے سامراج وادیوں یعنی دوسرں کو غلام رکھنے کی اِچھا رکھنے وارن کا گھ ایمی قوتا نہیں ھے، قدرت کے قانونوں یا انہاس کی شکتیوں کو کوئی آات نہیں سکتا ، پر پرنگال کے یا انہاس کی شکتیوں کو کوئی آات نہیں سکتا ، پر پرنگال کے جاھنے والوں کو ایمی کچھ اور قربانیاں کوئی ھونگی ،

ظاهر ہے کوئی بھارت واسی ایسا نہیں هوسکتا جسے گووا کے ستھاگرہ کے ساتھ پوری هدردی نه هو، اُن ویروں کو جو گووا کے پوتر اور شاندار ستھاگر، میں شریک هوئے هیں اور هو رہے هیں؛ جن میں سے کچھ شھید بھی هو چکے اور سیکڑوں نے اُکتھنیم شاریوک اور مانسک کشت جھ لے؛ عم آدر کے ساتھ نمسکار کوتے هیں، پرنگالی شاسکوں نے جس طرح کے امانشک اتھاچاروں کو اِن نہتھے اور اهنساتمک ستھاگرهیوں پر روا رکھا ہے اُن کے لئے همیں پرنگالیوں سے کچھ نہیں کہنا ، عمیں وشواس فی که همارے دیھی واسی، پرنگالی سمتجھے جانے والے علانے کے اُن اتھاچاروں کے کارن اُنے سمنکلپ میں اور بھی یکے ثابت هوتے رهینگے .

گووا کے ستیاگرہ میں سب سے ادھک خوشی کی بات یہ ھوئی کہ دیش کی سب پولیڈکل پارٹیس کے لوگ کیونسٹ جس سنکھی، پرجا سوشلسٹ اور کانگریسی اُس میں کندھ سے کندھا ملا کو بھاگ لینے کے لئے یےچین عدں اور لے رہے ھیں ۔ یہ سندر گیٹنا دو باتیں ثابت کرتی ہے ۔ ایک یہ کہ وچاروں اور آدرشوں کے تھوتے ھوئے بھی سب آدرشوں کے تھوتے ھوئے بھی سب پارٹیس کے لوگ ستھے، تیاگی اور دیھی بھات ھیں ۔

इसरी यह कि किसी भी काम में अगर हम मिल जावें और मिल कर काम करें तो हम देश को बहुत अधिक ऊँचा उठा सकते हैं.

हमारी ग्रह से यह राय है कि यह अलग अलग पा-टियां देश के लिये ज़रूरी नहीं हैं. कम से कम राजनीतिक अनाव इन पार्टियों के आधार पर लड़ना एक बीमारी है जो हमें थोरप से लगी है. अंगरेजी पढ़े भारत वासियों ने आँख बन्द करके उसे इंगलैंड जैसे देशों से नकल कर लिया है. हमें इससे काफी नुक्रसान पहुंचा है और पहुंच रहा है. हमें इस बात का भी पूरा विश्वास है कि इन पा-टियों के एक दर्जे तक रहते हुए भी हम में अगर हिम्मत और समभ हो तो हम अपनी विधान सभाओं के लिये इस तरह के आदमी सबकी मिली हुई राय से चुन सकते हैं जिनके लिये हमें चनाव लड़ने, करोड़ों रुपये बरवाद करने और देश के अन्दर कडवापन बढाने की जरूरत न हो. सेन्टर में और प्रान्तों में हम इस तरह की सरकारें भी बना सकते हैं जिनमें सब पार्टियों के अच्छे से अच्छे और डॅंबे से डॅंबे सममदार और चरित्रवान लोग शामिल हों. इस तरह की गवरमेंटों के सामने हम देश के भले के इस तरह के प्रोप्राम भी आसानी से रख सकते हैं जिन पर सब सहमत हों और हम जिन्हें मिलकर पूरा कर सकें. गवरमेंट चलाने के लिये एक सरकार पश्च और एक विरोधी पश्च जरूरी हैं यह एक अन्ध विश्वास, एक पागलपन है जो इमने दूसरों से सीख लिया है. नए चीन में हमें सबसे अच्छी बात यही लगी कि नया चीन लगभग इसी रास्ते पर चला है. रूस के पिछले आम चुनाव में वहां की कम्युनिस्ट पार्टी ने जिन लोगों को नामजद किया और बोट दिये दिलाए उनमें साठ फीसदी ग़ैर कम्युनिस्ट थे. हम इस मामले में चीन या रूस से कहीं बढकर चल सकते हैं बरार्तेकि हमें इतनी समक हो कि भलाई और बराई सबके अन्दर एक बराबर है, अच्छे और बुरे सब में हैं, एक भगवान सबके अन्दर है. जो लोग मतभेदों से शुरु करते हैं उन्हें मतभेद ही दिखाई देते हैं. जो एकता देखना चाहते हैं उनकी आँखें एकता की ही सामग्री ढुँढ निकालती हैं. भावी भारत के लिये हमें यही सबसे श्रेच्छा रास्ता दिखाई देता है.

2-7-55

सुन्द्रलाल

बी. सी. जी का टीका

हम इससे इनकार नहीं करते कि हमारी आजकल की धरकार ने जो हेद सी बरस के विदेशी राज के बाद हमारी पहली देशी सरकार है कई अच्छे काम किये हैं और कर रही है, खासकर अपने प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल هوسری یه که کسی بھی کام میں اگر هم مال جاویں اور ملکر کام كرين تو هم ديش كو بهت أدهك أونعيا أنَّها سكيَّم هين .

هماوی شروع سے یه رائے هے که یه الگ الگ پارٹیال دیش کے لئے ضروری نہیں میں کم سے کم رابے نیتک چناؤ اِن پارٹیس کے آدھار پر لونا ایک بیماری ہے جو ھمیں بورپ سے لکی ہے ۔ انکریزی پڑھے بھارت واساوں نے آنکھ بند کر کے اِسے انگلینڈ جيسے ديھوں سے نقل كر ليا هے ، هيں اِس سے كانى نقصان پہنچا ہے اور پہنچ رہا ہے . همیں اِس بات کا بھی پررا رشراس ہے کہ اِن پارٹیوں کے ایک درجے تک رہتے ہوئے بھی ہم میں اگر همت اور سمجم هو تو هم اپنی ودهان سهاؤں کے لئے اِس طرح کے اُنمی سب کی ملی ہوئی رائے سے چن سکتے میں جن کے لئے همیں چناؤ لونے ' کروروں روپئے بریاد کرنے اور دیش کے اندر کوواین ہوعانے کی ضرورت نہ مو ، سینڈر میں اور يراثتين مينهم إس طرح كيسركارين بهي بدا سكته هين جن مين سب پارٹیوں کے اچھے سے اچھے اور اونجے سے اونجے سمجھدار اور چرتروان لوگ شامل هوں ، اِس طرح کی گورنمنٹوں کے سامنے ھم دیش کے بھلے کے اِس طرح کے پروگرام بھی آسانی سے رکه سکتے هيں جن پر سب سهمت هوں اور هم جنهيں ملكو یورا کر سمیں گورالمات چلانے کے لئے ایک سرکار یمش اور أیک ورودهی یکش ضروری هیں یہ ایک اندھ وشواس' ایک پاکل بن هے جو همنے دوسروں سے سیکھ لیا هے . نیاے چین میں همیں سب سے اچھی بات یہی لکی که نیا چین لگ بھک اِسی راستے پر چلا ہے . روس کے پچھلے عام چناؤ میں وهاں کی کمیونسٹ پارٹی نے جن لوگوں کو قامزد کیا اور روت دائد دائد أن مين سائه في صدى غير كديونست ته . هم اِس معاملے میں چین پا روس سے کہیں بڑھکر چل سکتے ھیں بشرطیعه همیں اتنی سمجه هو که بهلائی اور برائی سب کے اندر ایک برابر هے آچے اور برے سب میں هیں ایک بهکوان سب کے اندر ہے ، جو لوگ مت بھیدوں سے شروع کرتے ہیں أنهیں متبهید هی دکهائی دیتے هیں. جو آیکتا دیکهنا چاهتے هیں آن کی آنکهیں ایکتا کی هی سامکری تھونتھ نکالتی هیں ، بهاری بهارت کے لئے همیں یہی سب سے اچها راسته دکهائی دینا هے.

ـــسندرلال

2, 7, 55

بي. سي. جي. کا ٿيکه

هم اِس سے الکار نہیں کرتے که مماری اُجال کی سرکار لے جو تیزہ سو برس کے ودیشی راج کے بعد هماری بہای دیشی سرکار ہے کئی آچھ کام کثے میں اور کر رمی ه. خاص کر اپنے پردھای منتری پندت جواهرال

نہرو کی اُن کوشھوں کو جو' وہ دیھی کے اندر امن بائے رکھنے'
تلگ سامپردائک، پرورتھوں' جات پات' چھوا چھوت'
غلط قسم کی پرانتیتا آدی کو ختم کرئے' ایک سچے
سیکولر یعنی مذھب کے معاملے میں غیر جانب دار
راج کی جورں کو مضبوط کرنے' دئیا کے دوسرے دیشوں کے
ساتھ پریم سمبندھ تائم کرنے اور ساری انسانی قیم کے لئے جنگ
کے خطروں کو کم کرنے اور دھیرے دھیرے ختم کرنے کی در
رھ ھیں' ھماری زبان اور لیکھنی کبھی بھی سراھتے نہیں تھکتی۔
اِن سب باتوں میں آنہوں نے پچھلے سات برس کے اندر ھمارے
دیش کو اونچا آتھایا ہے اور ایک بڑے درخے تک کاندھی جی
کے بتائے آدرشوں کو فائم رکھا ہے ۔ لیکن کئی باتوں میں ھمارے
اُجکل کے شاسک غلط بھی گئے ھیں اُور جا رہے ھیں ۔ دیش کی
جنتا کے بیلے کے لئے ھمارا یہ فرض ہے کہ عم سچانی اور پریم کے
جنتا کے بیلے کے لئے ھمارا یہ فرض ہے کہ عم سچانی اور پریم کے
ساتھ اُن باتوں کے بارے میں بھی اپنے وجار پرگٹ کرتے رھیں ۔

اِس طرح کی غلطیوں کی ایک مثال همارے صحت وہاک کے کچھ کام هیں ۔ گاندھی جی همیشة کہا کرتے تھے که همارے دیش کو انگریزی راج سے اننا خطرہ نہیں ہے جتنا انگریزیت یعنی پچھم کے آنوکرں سے گاندهی جی اُپنے اِن وچاروں کو تنصیل کے ساتھ ہار بار بیان کر چکے هیں ، هم اُن دیش بھکتوں کی جو همارے صحت وبھاک کے چارج میں هیں نیمت پر شک نہیں کرتے پر پچھمی طریقوں کا اُچت سے ادھک پریم اُن سے کئی کام ایسے کرا رہا ہے جو دیش کے لئے ہائیکر هیں .

دیش بہر کے اندر ہی، سی، جی، کا زوروں کے ساتھ پرچار
ایسا ھی ایک کام ھے ہی، سی، جی، سے آج بہارت کے لوگ
کافی پریچت ھیں ، یہ کچھ پلے ھوئے کیڑے ھیں جو سوئی کے
ذریعہ آدمیوں اور بچوں کے خوں میں داخل کرانے جاتے ھیں
تاکہ اُس خوں کے اندر جو خاص خاص بیماریوں کے کھڑے
ھوں یا آئندہ کبھی پیدا ھو جائیں اُنھیں یہ باھر کے کھڑے
مار کر ختم کر سکیں اور جس کے سوئی بھونکی گئی ھے اُسے ان
بیماریوں سے بچا سکیں ، بی، سی، جی، کا یہ ڈیکھ لوگوں کو
بیماریوں سے بچا سکیں ، بی، سی، جی، کا یہ ڈیکھ لوگوں کو
خاص کر تہاتے ہے بچانے کے لئے لگایا جاتا ھے ، کورزوں
دربیئے کے یہ ٹیکے یورپ سے خرید کر لانے جا رہے ھیں اور دیش ،
کے بچوں پر آزمائے جا رہے ھیں .

اِس طرح کے تھکے بہت سی بھماریوں کے لئے لگائے جاتے ھیں ، اِن سے بہت سی صورتوں میں ایک درجے تک اُبھ بھی ھوتا ھے ، اِن میں شروع کی ایک مثال چیچک کے قیکے کی ھے ، جب کوئی اِس طرح کی بیماری کسی خاص علقے میں زرر کے ساتھ پھلی ھوٹی ہو تو اِس طرح کے تیکے کئی بار اُسے روکئے میں مدد دیتے ھیں ۔ پر دھیرے دھیرے یورپ کے سیجھدار ڈاکروں نے ھی یع پتم لگایا اور دنیا کو بتانا

तेहरू की चन कोशिशों की, जो वह देश के अन्दर अमन बताए रखने, तंग साम्प्रदायिक प्रवृत्तियों, जात पात, छुना हतं. राजव किसम की प्रांतीयता आदि को सतम करने, एक सच्चे सेकुलर यानी मजहब के मामले में रौर जानिक-दार राज की जड़ों को मजबूत करने, दुनिया के दूसरे देशों के साथ प्रेम सम्बन्ध कायम करने और सारी इनसानी कीम के लिये जंग के खतरों को कम करने और धीरे धीरे स्ततम करने की कर रहे हैं, हमारी जबान और लेखनी कभी भी सराइते नहीं शकती. इन सब बातों में उन्होंने पिछले सात बरस के अन्दर हमारे देश को ऊँचा उठाया है और एक बढ़े दरजे तक गाँधी जी के बताए आदशों को कायम रक्खा है. लेकिन कई बातों में हमारे आजकल के शासक रालत भी गए हैं श्रीर जा रहे हैं. देश की जनता के भले के लिये हमारा यह फर्ज है कि हम सच्चाई और प्रेम के साथ उन बातों के बारे में भी अपने विचार प्रकट करते रहें.

इस तरह की रालितयों की एक मिसाल हमारे सेहत विभाग के कुछ काम हैं. गाँधी जी हमेशा कहा करते थे कि हमारे देश को अंगरेजी राज से इतना स्नतरा नहीं है जितना अंगरेजियत यानी पिछ्छम के अन्ध अनुकरण से. गाँधी जी अपने इन विचारों को तफसील के साथ बार बार बयान कर खुके हैं. हम उन देश भक्तों की जो हमारे सेहत विभाग के चार्ज में हैं नीयत पर शक नहीं करते पर पिछ्छमी तरीक़ों का उचित से अधिक प्रेम उनसे कई काम ऐसे करा रहा है जो देश के लिये डानिकर हैं.

देश भर के अन्दर बी. सी. जी. का जोरों के साथ प्रचार ऐसा ही एक काम है. बी. सी. जी. से आज भारत के लोग काकी परिचित हैं. यह कुछ पले हुए कीड़े हैं जो धुई के जरिये आदमियों और बच्चों के खून में दाखिल कराए जाते हैं ताकि उस खून के अन्दर जो खास खास बीमारियों के कीड़े हों या आइन्दा कभी पैदा हो जायं उन्हें यह बाहर के कीड़े मारकर खतम कर सकें और जिसके धुई मोंकी गई है उसे उन बीमारियों से बचा सकें. बी. सी. जी. का यह टीका लोगों को खासकर तपेदिक से बचाने के लिये लगाया जाता है. करोड़ों इपये के यह टीके योरप से ख़रीद कर लाए जा रहे हैं और देश के बच्चों पर आजमाए जा रहे हैं.

इस तरह के टीके बहुत सी बीमारियों के लिये लगाए जाते हैं. इनसे बहुत सी सूरतों में एक व्रजे तक लाम भी होता है. इनमें शुरु की एक मिसाल चेचक के टीके की है. जब कोई इस तरह की बीमारी किसी खास इलाक़े में जोर के साथ फैली हुई हो तो इस तरह के टीके कई बार उसे रोकने में मदद देते हैं. पर धीरे धीरे योरप के समम्मदार डाक्टरों ने ही यह पता लगाया और दुनिया को बताना छुरु किया कि यह जरूरी नहीं है कि किसी खास बीमारी के टीके से बह बीमारी रुक ही जाय, और बहुत बार टीका लगाने के बाद अगर वह बीमारी होती है तो कहीं अधिक ख़तरनाक साबित होती है. चेवक के टीके के बारे में इसकी सेकड़ों मिसालें देखने को मिली हैं. यारप ही के बहुत से देशों में जनता की तरफ से और ख़ुद डाक्टरों की तरफ से इस तरह के टीकों के ख़िलाफ आन्दों बन भी हुए. चेवक के टीके के ख़िलाफ इंगलैएड में अरसा हुआ एक 'नेशनल एएटी वैक्सीनेशन लीग' कायम हुई और उसे पूरी कामयाबी मिली. वहाँ चेचक का टीका सब बच्चों के लिये लाजमी नहीं रहा. कम या प्यादह इसी तरह की तहरीकें योरप के और देशों में भी चेचक के और दूसरे इसी तरह के टीकों के ख़िलाफ, शुरु हुई' और एक न एक दरजे तक कामयाब हुई.

दुनिया के बड़े से बड़े डाक्टरों की यह भी राय है कि इस तरह की बीमारियों का असली कारन आर्थिक होता है. रारीबी सब बीमारियों की जड़ है-यानी खाने की और खास कर पुष्टिकर खाने की कमी श्रीर जीवन की मोटी मोटी जरूरी सहलियतों का न मिलना. इसीलिये डाक्टरों की राय है कि इन बीमारियों का श्रमली इलाज श्रीर इनकी रोक्थाम का असली तरीक़ा जनता की गरीबी को दूर करना है. सबको अन्छा और काफी मात्रा में खाना मिले और जीवन की मामूली सहलियतें मिलें तो बीमारियां अपने आप भाग जाती हैं. बड़े बड़े साइन्सदानों की राय है कि इस तरह की बीमारियों का असली इलाज कमजोर जिस्म के अन्दर बाहर से बीमारियों के जहरीले कीड़ों का दाखिल करना नहीं है बलिक खुन के अन्दर के क़ुद्रती कीड़ों का खुराक और आराम के जिरिये मजबूत करना है. इस विशय पर अमरीका, इंगलैन्ड, जरमनी आदि देशों में हजारों किताबें छप चुकी हैं जिनमें से काकी भारत के बाजारों में भी मिल सकती हैं. पर हमारी हालत यह है कि कभी कभी एक रूसी विद्वान के शब्दों में जिससे हमारी पीकिंग में मुलाकात हुई थी "तरह तरह के कपड़ों से तजरवे करते करते योरप वाले जिन कपड़ों को रालत समम कर उतार कर फेंक देते हैं उन्हें हमारे पिन्छम प्रेमी भारतवासी बड़े शीक से बोहते हैं और बांदे फिरते हैं." पिन्छम के ब्या-पारी भी इस बारे में बहुत होशियार हैं. जो चीज योरप में प्रानी पढ़ जाने के कारन नहीं बिकती उसे हमारे जैसे देशों में खपाकर वह आसानी से करोड़ों बना लेते हैं. लगभग यही मामला आजकल कई तरह की बीमारियों के टीकों का है.

पंचास साल से ऊपर हुआ जब हमारे श्रंगरेख हाकिमों ने खबरदस्ती हर हिन्दुस्तानी के प्लेग का टीका लगाने की شروع کیا که یه ضروری نهیں هے که کسی خاص بیماری کے آیکے سے وہ بیماری رک هی جائے اور بہت بار آیکه لگانے کے بعد اگر وہ بیماری هوتی هے تو کہیں ادهک خطرناک ثابت هوتی هے . چھچگے کے بارے میں اِس کی سیکروں مثالیں دیکھنے کو ملی هیں . یورپ هی کے بہت سے دیشوں میں جلتا کی طرف سے اور خود داکروں کی طرف سے اِس طرح کے آیکوں کے خلاف انگلیند میں آندولن بھی هوئے . چینچک کے آیکے کے خلاف انگلیند میں عرصه هوا ایک 'نیشنل اینآئی ویکسی آیشن لیگ' قائم هوئی اور آسے پوری کامیابی ملی . وهاں چیچک کا آیک، سب بیچوں اور آسے پوری کامیابی ملی . وهاں چیچک کا آیک، سب بیچوں کے لئے لؤمی نهیں رها کم یا زیادہ اِسی طرح کی تحدیکیں یورپ کے اور دیشوں میں بھی چینچک کے اور دوسرے اِسی طرح کے آیکوں کے خلاف شروع هوئیں اور ایک نہ ایک درجه نک کے آیکوں کے خلاف شروع هوئیں اور ایک نہ ایک درجه نک کامیاب هوئیں ،

دنیا کے بڑے سے بڑے ڈائوں کی یہ بھی رائے ہے که اِس طرح کی بیماریوں کا اصلی کارن ارتہک عونا شے ، غریبی سپ میماریس کی جو هے۔ یعنی دیانے کی اور حاص در پشتی در کھانے کی کمی اور جیون کی موتی مرتی صروری سهوایتوں کا نه ملذا۔ اسی لله داکروں دی رانم هے ده این بیماریوںکا اصلی علاج اور انعی روک تھام کا اصلی طریقہ جنتا کی غریبی کو دور کرت ہے . سب کو اچھا اور کادی مادرا میں کھانیا سلے اور جیوں کی معمولی سهولهته ملیں تو بیماریاں اپنے آپ بھاک جانی هیں ، برے ہوے ساننسدانس کی رائے کے نہ اِس طرح کی بیماریوں کا اصلی علاج کمؤور جسم کے افدر باعر سے بیماریوں کے زعر لے کیزوں کا داحل کونا نہیں ہے بلکہ خون کے اسر کے درتی دیروں دو خیراک اور آرام کے ذریعہ مضبوط درنا نے ، اِس وشے پر امریکہ الکلیند کرمنی ادی دیشوں میں هزاروں دناییں چھپ چکی ھھں جن میں سے کامی بھارت کے بازاروں میں بھی مل سکتی ھیں. پر عماری حالت یہ شے نه کبھی دبھی ایک روسی ودوان کے شبدوں میں جس سے بقماری پیکنگ میں ملادات بقوئی نهی "طرح طرح کے کپروں سے سجریے کرتے کرتے بورپ والے جن کهرس کو غلط سمجبکر آتار در پهینک دیتے هیں انهیں همارے پنچهم پریمی بھارت واسی ہڑے شوق سے اور علمے ھیں اور فے بھرتے عیں . ا بچہم کے بیا پاری بھی اس بارے میں بہت عوشیار عیں . جو چھڑ یورپ میں پرانی پر جانے کے کارن نہیں بکتی اُسے عمارے جیسے دیشوں میں کھوا کو وہ اُسانی سے کررزوں بنا لیتے غیں . لگ بیگ بہی معالم آجکل کئی طرح کی بیداریوں کے اليكوس كا هے .

پیچاس سال سے اُرپر ہوا جب ہمارے انکریز حائموں نے زبردستی ہر ہندستانی کے پلیگ کا تیکم لگانے کی कार्रवाई शुरू की थी. लोकमान्य तिलक की कोशिशों और कुछ नीजवानों की क़ुरवानियों ने देश की जनता को शुरू ही में इस सबरें से बचा लिया.

बी. सी. जी. का टीका अब पूरे जोरों के साथ देश के बच्चों पर आजमाया जा रहा है, जिन सममदार देश भक्तों ने इसके खिलाफ आवाज उठाई है उनमें सबसे चमकता नाम श्री सी. राजा गोपालाचारी का है. हाल में मदरास में लेकचर देते हुए चन्होंने कहा कि--- "बी. सी. जी. का प्रवार देश के बच्चों के ऊपर बीमारी के कीडों की जंग को आजमाना है." उन्होंने यह भी कहा कि-"बी. सी. जी. के खिलाफ मैं जो इस ले रहा हूँ वह किसी रोजगारी दुशमनी के कारन नहीं है. मेरा विरोध किसी भावनाओं के आधार पर भी नहीं है. मेरे बिरोध के साइन्सी कारन हैं. मैंने इस विषय पर बहुत किसाबें ध्यान से पढ़ी हैं और उन्हें पढ़कर इस नतीजे पर पहुंचा हूँ कि बी. सी. जी. का प्रचार बहुत बड़ी रालती है और खतरनाक है सरकार ने तय कर लिया है कि इसके प्रचार को जनता में बढ़ावे और लाखों बच्चों के जिस्म में एक जाना बूमा जहर दाखिल करे अब यह मामला हमारी क्रानून सभाशों से सम्बन्ध रखता है. यह उन सब लोगों से सम्बन्ध रखता है जो हमारे शासन के लिये जिम्मेदार हैं. इसका सम्बन्ध श्राम जनता से है, बच्चों के मां बाप से है श्रीर सब सममदार श्रादमियों से है हमारे इस ग़लत काम से जितना नुकसान होता है उतना अन्तर्राष्ट्रीय बदमाशियों से भी नहीं होता. हम जनता में बी. सी. जी. का प्रचार इसलिये कर रहे हैं क्योंकि हम एक ख्याल के पीछे पागल हो गए हैं. इमें अगर सच्चाई की खोज है तो हमें एक योगी की तरह बेलाग होना चाहिये. इमें सोचना यह है कि क्या बी. सी. जी. के टीके लगाना मुकीद है और क्या इन टीकों से कोई नुक्रसान नहीं होता ? इससे कोई कायदा नहीं कि हम लाखों बच्चों के सुइयां भोंकते फिरें इसलिये कि शायद उनमें से कुछ किसी बीमारी से बच जावें. यह सोचना बिलकल रालत है कि बी. सी. जी. हिन्दुस्तान के लिये जरूरी है, बड़े बड़े माहिर और साइन्सदां यह राय जाहिर कर चुके हैं कि खासकर जिन देशों में लोगों को अच्छा श्रीर काकी मात्रा में खाना नहीं मिलता उनमें बी. सी. जी. का इस्तेमाल खतरनाक है"

श्री राजा गोपालाचारी ने कोयमबेट्स के सात बच्चों का हाल सुनाया जिनके बी. सी. जी. लगाया गया था. उनमें कहा जाता है कि दो उसी टीके से मर गए. मदरास ही की तरफ से बी. सी. जी. के कारन कुछ बच्चों के छन्धे हो जाने की खबर भी अखबारों में छप चुकी है. इसपर सरकार ने अपने डाक्टरों की एक कमेटी मुक्तर्रर की. कमेटी की रिपोर्ट पर सरकार ने एक प्रेस नोट निकाल दिया कि

کارروائی شروع کی تھی ۔ اوک مانیہ تلک کی کوششوں اور کھھ نوجوانوں کی قربانیوں نے دیش کی جلتا کو شروع ھی میں اُس خطرے سے بچا لیا ۔

ہی۔ سی. جی. کا ڈیکھ أب پورے زوروں كے ساتھ ديھى کے بنچس پر آزمایا جا رہا ہے . جن سبجهدار دیش بیکتوں نے اِس کے خلاف آواز اُٹھائی ہے اُن میں سب سے چمکتا نام شری سی. راجا کوبالا چاری کا هے . حال میں مدراس میں لعجر دیتے ہوئے اُنہوں نے کہا کہ۔۔''بنی. سی، جی، کا پرچار دیص کے بنچوں کے اُوپر بیماری کے کیزرں کی جنگ کو آزمانا هے " أنهوں نے يه يعي كها كه اللہ سي. جي، كے خالف میں جو رخ لے رہا ہوں وہ کسی روزگری دشمنی کے کارن نہیں ھے میرا ورودہ کسی بھاولاؤں کے آدھار پر بھی نہیں ھے . میرے ورودھ کے سائنسی کارن ھیں ۔ میں نے اِس رشے پر بہت کتابیں دیان سے پڑھی میں اور اُنیں پڑھکر اِس نتیجے پر هالحجاً هي كه بي. سي. جي، كا پرچار بهت بوي غلطي ه اور خطرناک ہے... سرکار کے طے کو لیا ہے کہ اِس کے درچار کو جنتا میں ہوھاوے اور لاہوں بچوں کے جسم میں ایک جانا بهجا زهر دأخل كري... أب يه مدامله هماري قالون سبهاؤل سے سمبلدھ رکھتا ھے ، یہ اُن سب لوگوں سے سمبندھ رکھتا ھے جو همارے شاسن کے لئے ذمردار هیں . اِس کا سمبندھ عام جنتا سے ہے بچوں کے ماں باپ سے مے اور سب سمجودار آدمیوں سے هـ.... همارے أس غلط كلم سے جتنا نقصان هوتا هـ أتنا ائتر راهزيم بدمعاشيوں سے بھی نہيں هوتا ، هم جنتا ميں ہی، سی، جی، کا پرچار اِس لئے کر رہے میں کیرنکہ مم ایک خیال کے پیچھے پاکل هوگئے هیں . همیں اگر سچائی کی کھوے ہے تو همیں ایک یوگی کی طرح ہے لاک هونا چاهئے . همين سوچنا يه هے که کيا ہی، سی، جي کے تيکے لگانا منيد هے أور كيا إن تيعوں سے كوئي تقصان نہيں هونا آ اِس سے کرئے فائیدہ نہیں کم هم لاکھوں بحورں کے دوئیاں بھوئنتے پهريں اِس لئے که شايد أن ميں سے کنچ، کسی بيماری سے بيج جاریں . یه سوچنا باکل غلط هے که بی، سی، جی، هندستان کے لئے ضروری ہے . برے بڑے ماہر اور سائنس داں یہ رائے ظاهر کر چکے هیں که خاص کر جن دیشوں میں لوگوں کو اچھا ارر کانی ماترا میں کیان نہیں ملتا أن میں ہی. سی، جی، کا استعمال خطرناك هي..."

شری راجا گوپالچاری نے کوئمہتور کے سات بھوں کا شری راجا گوپالچاری نے کوئمہتور کے سات بھوں کا حال سنایا جس کے ہی، سی، جی، لگایا گیا تھا، اُن میں کہا جاتا ہے کہ دو اُسی تبہتے سے مر گئے، مدراس ہی کی طرف سے ہی، سی، جی، کے کارن کھچ بھوں کے اُندھے ہمچا نے کی خبر بھی اخباروں میں چھپ جہی ہے، اِس پر سرکار نے اپنے ڈاکتوں کی ایک کمیتی مقرر کی، کمیتی سرکار نے اپنے ڈاکتوں کی ایک کمیتی مقرر کی، کمیتی

جن بچوں کو نقصان پہنچا ہے اُن کے اُس نقصان کا ہی۔ سی، جی جی گیا ہے۔ سی، جی گیا ہے۔ سی جی گیا ہے۔ سی کی۔ ''سرکار کے اِس پریس نوت سے مجھے بڑی نواشا ہوئی ہے ۔ میں اُسے نہیں مانتا''

م شری راجا گریالچاری کی اس صاف رائے کے بعد همیں اس وقے پر کچے ادھک کہنے کی آرشیکتا نہیں ہے ۔ حال میں بوے بجے ہیں ، کہا جاتا ہے کہ بجے بجے ہیں ، کہا جاتا ہے کہ ایک بوے هندستانی روس جا چکے هیں ، کہا جاتا ہے کہ ایک بوے هندستانی نے روس کے صحت منسز سے پوچہا۔۔''کیا آپ امریکت سے دوائیاں خرید کر اپنے بہاں نہیں منگاتے ہیں آور نہ اُن کی جواب دیا۔۔''هم نہ اُن کی درائیاں منگاتے هیں اور نہ اُن کی بیماریاں۔'' یہ جواب کیرل ایک مزاق هی کا جواب نہ تھا ، اِس میں کانی سچائی چہی هوئی ہے ، ہم بی جی ۔ جسے ڈیکوں کو دیش کی چنتا دیمی کے بیٹ بچوں' آئندہ آنے والی نسلوں اور اُن سب کی تندرستی کے لیئے بچوں' آئندہ آنے والی نسلوں اور اُن سب کی تندرستی کے لیئے بہت ہوا اور خطرناک مائنے هیں ۔ جنتا کی بیماریوں کا اُملی علی آن میں گندی اور خطرناک دوانیں ٹیونسنا اور ملک کا یہت ہوادر کام پہنچانا نہوں ہے اُن میں گندی اور خطرناک دوانیں ٹیونسنا اور ملک کے اندر کام پہنچانا' روزی پہنچانا اور جھوں کی وہ سہولیتیں کے اندر کام پہنچانا' روزی پہنچانا اور جھوں کی وہ سہولیتیں کے اندر کام پہنچانا جو تندرستی کا سب سے ہوا ہیمت ہوئی هیں ۔

2. 7. 56

پنجاب کا میں یک پریکٹیشنوس بل اور علاج کے الگ الگ طریقے

همارے صحت وبھاک کی غلطیں میں سے ایک اور بڑی غلطی یہ ہے کہ وہ ایلوپیتھک علاج کا جسے عام طور پر ڈاکٹر، کہتے ھیں اتنا شیدا ہے کہ اُس کے سامنے وہ ویدک، یونائی، ہومهو پیتھی، ٹینچروپیتھی آدی علاجوں اور اُن کے ویدیوں، کھیموں اور ڈاکٹررں کو بس چلے تو نہیں رھنے دینا چاھتا ، یہ بھی ایک خطرناک خبط ہے ، دنیا کی ساری سائنس انڈیکشن یمنی تحجربوں پر قائم ہے ، گاؤں گاؤں آور گلی گلی میں ھمارا اور همارے جیسے لاکھوں آدمیوں کا یہ تحجربه ہے کہ پرانے دیسی طریقوں کے علاجوں سے، ہومیوپیتھک دواؤں سے اور قدرتی علاج کے طریقوں سے دیش کے لاکھوں بیمار اچھے ھوتے ھیں ، ھمیں یہ بھی معلیم ہے کہ ایلوپیتھک علاج جبکہ اور سب علاجوں کی طرح معلیم میں بہتوں کو کمچھ نائیدہ بھی کرتا ہے لاکھوں کو آسسے کانی فقصان معلیم ہے کہ ایلوپیتھی کا علاج عام طور پر اننا مہنگا پرتا ہے کہ نہ کیول عام جبنا کے لئے ھی بانکہ لاکھوں بیچ کے درجے کے لوگوں کے لئے بھی یہ کہ نہ کیول عام جبنا کے لئے ھی بانکہ لاکھوں بیچ کے درجے کے لوگوں کے لئے بھی یہ کہ نہ کیول عام جبنا کے لئے ھی بانکہ لاکھوں بیچ کے درجے کے لوگوں کے لئے بھی یہ کہ انہ کو گئے بھی یہ کہ انہ کیول عام جبنا کے لئے ھی بانکہ لاکھوں بیچ کے درجے کے لوگوں کے لئے بھی یہ کہ انہ کو گئے بھی یہ کہ انہ کو گئے بھی یہ کہ درجے کے لوگوں کے لئے بھی یہ کھی درجے کے لوگوں کے لئے بھی یہ کہ کہ ایلوپیتھی کا علاج عام طور پر اننا مہنگا پرتا ہے کہ نہ کیول عام جبنا کے لئے ھی بانکہ لاکھوں بیچ کے درجے کے لوگوں کے لئے بھی یہ کھوں کا گئے بھی بانکہ لاکھوں بیچ کے درجے کے لوگوں کے لئے بھی یہ کھوں کے لیکھوں کے لیکھوں کے لیکھوں کے لیکھوں کے لیکھوں کے لیکھوں کے لوگوں کے لئے بھی یہ کھوں کے لیکھوں ک

जिन बच्चों को मुक्तसान पहुँचा है उनके उस नुक्तसान का ची. सी. जी. के टीके से कोई सम्बन्ध नहीं. श्री राजा गोपालाचारी ने कहा कि—"सरकार के इस प्रेस नोट से मुक्ते बड़ी निराशा हुई है. मैं उसे नहीं मानता…"

श्री राजा गोपालाचारी की इस साफ राय के बाद हमें इस विषय पर कुछ अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है. हाल में बड़े बड़े हिन्दुस्तानी रूस जा चुके हैं. कहा जाता है कि एक बड़े हिन्दुस्तानी ने रूस के सेहत मिनिस्टर से पूडा-"क्या आप अमरीका से द्वाइयां सरीद् कर अपने यहां नहीं मंगाते ?" उन्होंने जबाब दिया- 'हम न उनकी दवाइयां मेंगाते हैं और न उनकी बीमारियां." यह जवाब केवल एक मजाक ही का जवाब न था. इसमें काकी सच्चाई छिपी हुई है. इस बी. सी. जी. जैसे टीकों को देश की जनता, देश के बद्चों, आइन्दा आने वाली नसलों और उन सबकी तन्दुरुस्ती के लिये बहुत बुरा और खतरनाक मानते हैं. जनता की बीमारियों का असली इलाज उनमें गन्दी और खतरनाक दवाएं ठ्रॅसना और मुल्क का पैसा बरवाद करना नहीं है. असली इलाज है एक एक मोंपड़े के अन्दर काम पहुँचाना, रोजी पहुँचाना और जीवन की वह सहूलियतें पहुँचाना जो तनदुरुस्ती का सबसे बड़ा बीमा होती हैं.

2-7-55 — सुन्दरलाल

पंजाब का मेडिकल प्रेक्टिशनर्स बिल और इलाज के अलग अलग तरीक्रे

हमारे सेहत विभाग की रालतियों में से एक और बड़ी रालसी यह है कि वह एलोपैथिक इलाज का जिसे जाम तौर पर डाक्टरी कहते हैं इतना शैदा है कि उसके सामने वह वैद्यक, यूनानी, होमियोपैथी, नेवरोपैथी आदि इलाजों भीर उनके वैद्यों, हकीमों और डाक्टरों को बस चले तो नहीं रहने देना चाहता. यह भी एक खतरनाक खब्त है. द्वितया की सारी साइन्स इनडेक्शन यानी तजरबों पर क्रायम है. गाँव गाँव और गली गली में हमारा और हमारे जैसे लाखों आदिमयों का यह तजरवा है कि पुराने देसी तरीकों के इलाजों से, होमियोपैथिक दवाओं से और क़ुद्रती इलाज के तरीक़ों से देश के लाखों बीमार अच्छे होते हैं भौर आसानी से भौर कम खर्च में अच्छे होते हैं. हमें यह भी माजूम है कि ऐलोपैथिक इलाज जबकि और सब इलाजों की तरह बहुतों को कुछ फायदा भी करता है लाखों को उससे काकी तुक्रसान भी पहुँचा है. देशवासियों को यह भी अच्छी तरह मालूम है कि ऐलोपैथी का इलाज आम तौर पर इतना मंहगा पड़ता है कि न केवल आम जनता के लिये ही बहिक लाखों बीच के दरजे के लोगों के लिए भी यह

नाममकिन है या बरबादकुन है. सरकारी अस्पतालों की हम वन आम बुराइयों में यहां जाना नहीं चाहते जिनसे देख का एक एक बच्चा गली गली में परिचित है. इसीलिये नए चीन में एलोपैथिक तरीक़े को अपने यहां ज्यादा से ज्यादा तरक्की देने के साथ साथ देश के पराने इलाज के तरीक़ों भीर सैकड़ों पुरानी दवाओं को भी न केवल जिल्दा ही रक्सा है बल्कि बढ़ने और तरक्की करने का भी पूरा मौका विया है. चीन का पुराना तरीक्षा विलक्कल हमारे देशी तरीक्रे से मिलता है. वही नज्ज देखने का ढंग, वही कफ, बात और पित्त और बही देशी जड़ी बृटियों के काढ़े. चीन की नई सरकार ने इन तरीक़ों को जूब बदाया है और बढ़ने का मौक्रा दिया है. लाखों चीनी बीमार इन पुराने और सस्ते तरीक्षों से अच्छे होते हैं. हमने ख़ुद पुराने ढंग के चीती वैद्यों से बातें की हैं और उनकी दवाएं इस्तेमाल की हैं. इस की सरकार भी ऐलोपैधी के साथ साथ होमियोपैथी को तरक्षकी देने की पूरी कोशिश कर रही है और डजबे-किस्तान में उसने सैकड़ों पुरानी दवाओं और जड़ी बृटियों बरौरा की खोज और उनसे तजरबे करके बड़ी बड़ी मुहलिक बीमारियों को उनके जरिये कायू में कर लिया है.

हाल में पंजाब स्टेट एसम्बली के अन्दर 'पंजाब स्टेट मेडिकल प्रैक्टिशनर्स बिल' नाम से एक नया कानून पेश हमा जिसमें ऐलापेशिक डाक्टरों के अलावा दसरी तरह के इलाज करने वालों को भी पंजाब के अस्पतालों में मौका दिये जाने की बात तजबीज की गई है. यूनियन हेल्थ मिनिस्टर राजक्रमारी अमृत कौर ने शिमले में इस पर बड़ी नाराजागी और गुस्सा जाहिर किया और यहां तक कह डाला कि अगर इस तरह के शैर सनदयाप्रता लोगों को अस्पतालों में मौक्रा देने की तजबीज की गई तो वह यूनियन प्रेसीडेन्ट से सिफारिश करेंगी कि वह उस क़ानून को मनजूरी न दें. हम राजकुमारी बहन से अच्छी तरह परिचित हैं. हम दोनों गाँधी जी के चरणों में बैठे हैं. हमें राजकुमारी बहन की देशभक्ति या नेक नियती में शक नहीं. पर हम बढ़े दुख के साथ यह कहे बिना नहीं रह सकते कि वह ग़रीब जनता के जीवन से बहुत दूर चली गई हैं. वह उस पच्छिमीयता की जरूरत से ज्यादा विश्वासी हैं जिससे गाँधी जी मुल्क को बचाना चाहते थे. ऐलोपैथी इलाज का एक तरीका है, एक खास उसूल है. उसे तरक्की का मौका मिलना चाहिये, पर एक तरीक्रे पर इतना अधिक विश्वास और इलाज के दूसरे तरीकों पर और दूसरे उसूलों से इतना परहेज खुद रालत और खतरनाक है. इमें अगर देश की आम जनता के साथ प्रेम है और उनकी दालत को समक कर प्रेम है तो इस देश के अन्दर हमें इलाज के इन सब तरीकों को जिल्हा रहने, तरककी करने और जनता की सेवा فاسمى هے يا بربادكن هے سركاري اسپتالوں كى هم أن عام برائهن میں بہاں جانا نہیں چاہتے جیسے دیش کا ایک ایک بجه گلی گلی میں پریجت ہے . أسى لئے نئے چین نے أيلو-یہدیک طریقے کو اپنے یہاں زیادہ سے زیادہ ترقی دینے کے ساتھ ساتھ دیش کے پرانے علم کے طریقیں اور سیکڑیں پرائی دواؤں کو بھی الله كيول زادة هي ركها هے يلكه برهائے أور ترقى كرا كا بھى پوراً موقعه دیا هے ، چین کا پرانا طریقه بلکل هبارنے دیشی طریقے سے ملتا ہے ، وہی نبض دیکھنے کا ڈھنگ وھی کف ، بات اور پت اور وهی دیشی جزی بوئیس کے کارھ ، چین کی ائی سرکار نے ان طریقیں کو خوب بڑھایا شے اور بڑھنے کا موقه دیا ھے . الكهوس چينى بيمار أن پرانے أور سستم طريقوں سے أچهم هوتے هيں . ھمنے خود پرائے تھنگ کے چینی ویدیوں سے بانیں کی میں اور اُن کی دوائیں استعمال کی ھیں ووس کی سرکار بھی ایلوپیتھی کے ساتھ ساتھ ھومھوپیتھی کو ترقی دینے کی پوری کرشھی کر رھی ھے اور آزبیکستان میں اُس نے سیکروں پرائی دواؤں اور جری ہوتیوں وغیرہ کی کھوے اور اُسے تجوہہ کرکے بڑی بڑی مہلک بیماری کو أن كے ذريعة قابو ميں كر ليا هے .

حال میں بنجاب اِسلیث اسمبای کے اندر اپنجاب اِسلیث مدّيكل پريئشنرس بل' نام سے أيك نيا قانون پيش هوا جس میں ایلوپیتھک تا اقروں کے علاوہ دوسری طرح کے علاج کرنے والوں کو بھی پنجاب کے اسھتالوں میں موقعه دیئے جائے کی بات نجويز كي كلى هي ، يونين هيلته منسقر راج كماري أمرت کور نے شملے میں اس پر بڑی تارانکی اور عصه ظاهر کیا اور یہاں تک کیه ڈالا که اگر اس طرح کے غیر سند یادته لوگوں کو اسپتالی میں موقعه دینے کی تجویز کی گئی تو وہ یونیون پریسوڈنٹ سے سفارش کرینکی که وہ اُس قانوں کو منظوری نه دیں . هم راج کماری بهن سے اچھی طرح پریتیت هیں ، هم درنوں کاندھی جی کے چرنوں میں بنتھ میں ، میں راج کاری بہن کی دیش بھکتی یا نیک نیتی میں شک نہیں ، پر هم ہڑے دکھ کے ساتھ یہ کہے بنا نہیں رہ سکتے که وہ غریب جنتا کے جُهون سے بہت دور چلی گئی هیں ، وہ اُس پنچھیتا کی فرورت سے زیادہ وشواسی میں جسسے کاندھی جی ملک کو بجانا چاهتے نے . ایلوپیتی علج کا ایک طریقہ هے' ایک خاص اصول ہے . اسے ترقی کا موقعة مللًا چاہئے . پر ایک طریقے پر اتنا ادھک رشواس اور عالم کے دوسرے طریقوں پر اور دوسرے اصولوں سے ابنا پرھیز خود غلط اور خطرناک هے ، همیں اگر دیش کی علم جنتا کے ساتھ پریم ہے اور اُن کی حالت کو سمجعر پریم ھے تو اِس دیھن کے اندر ھمیں عالم کے اِن سب طریقوں کو زند رهنه ترقی کرنے اور جنتا کی سهوا

करने के करावर के मौक्ते देने होंगे. इन अलग अलग तरीक़ों

हे अलग अलग उसलों. उनकी भलाइयों और धुराइयों पर गहस की यह जगह नहीं है. योरप और अमरीका से निकलने

शली प्रामाशिक डाक्टरों की लिखी हुई सेहत के ऊपर

[पारों किताबों में से जिसने कहा खास खास भी पढ़ी हैं

ह जानता है कि जर्म थियोरी यानी सास की दों से सास

गिमारियों के सम्बन्ध के उसल में अब काकी करक पड़ कुका है. किसी बीमारी को दूर करने के लिये अब उस

शिमारी के कीड़े का पता लगा कर उसको मारने के लिये

क सास जहर जिस्म में वासिल करने की निसंबत यह

ह्याँ अधिक ठीक, मुकीद और साइन्सी तरीक़ा माना जाता

कि पहले यह मालूम किया जाए कि वह स्नास कीड़ा जिस्म के अन्दर बैठ और पनप कैसे सका. यानी जिस्म की

। रूरी चीजों में या जिस्म के बैलेंस यानी समतोल में क्या

भी आई जिससे यह कीड़ा वहां अपना काम कर सका,

रीर फिर की डे के पीछे पढ़ जाने की निसबत जिस्स की

स कमी को दूर करने की कोशिश की जाय. नहीं तो तरह रह के की दे हवा के अन्दर और हजारों के जिस्मों में भरे

हे हैं. कसौली रिसर्च इन्सटीटियुट के उस समय के

ाइरेक्टर मेजर फाक्स ने एक मर्तवा हमसे कहा था कि

।गर इम रस्ते चलते तन्दुकस्त दिखाई देने वाले दस आद-

ायों को पकड़ कर अचानक उनके थुक या सन का

न्तहान ले लें तो उनमें से अधिकतर में हमें नरह तरह की

।मारियों के कीड़े मिलेंगे, लेकिन जब तक खुन में खास

एड की कमजोरी न हो तब तक कोई कीड़ा असर नहीं

र सकता. यानी असली सवाल कीड़ों के पीछे जेहाद

।लना नहीं है बल्क जुन यानी जिस्म की खास कमी को

रा करना है. अगर हम इस निगाह से देखने की कीशिश

रें तो हमारे वैद्यक, यूनानी, होमियोपैथी श्रीर नेचरोपैथी

सरीके आज के ऐलोपैथी इलाज के तरीके से कहीं ज्यादा

क और कहीं ज्यादा साइंटिफिक हैं. पर यह बहस भी

तकी बहस है. यहां हम देशवासियों की रारीबी और

सों बीमारों के आए दिन के तजरबों की बिना पर केवल

ाना कहना चाहते हैं कि सरकार का फर्ज है कि बिना

उपात इलाज के सब खास खास तरीक़ों के साथ बराबर

'सलुक करे, सबके छोटे छोटे कोरसों वाले कालिज

यम करे, जो उसी खास तरीके के माहिरों के इन्तजाम

हों और प्राइवेट प्रैक्टिस में और सरकारी अस्पतालों में

। जगह सबको बराबर का मौका दे, जिससे लाखों श्रीर

ोदों भादमियों का भूला हो, मुल्क का पैसा बाहर की

सती दवाओं पर खर्च होकर मुल्क को और ज्यादा रारीब्

کرنے کے برابر کے موقعہ دینے هونکے ان انگ الگ طریقوں کے الگ الک امولس' أن كي بهاتيس اور برائيس پر بحث كي يه جنه نهيس ه. یورساور امریکه سے نعلنےوالی یوامانک قاکتروں کی لیمی هوئی محک ع اوپر هزاروں کتابوں میں سے جسلے کچھ خاص خاص بھی پڑھی ھیں وہ جانتا ہے که جرم تھیوری یعلی خاص کیروں سے خاص بیماریوں کے سمبندہ کے اصول میں اب کانی فرق پر چکا ہے . کسی بیماری کو دور کرنے کے لئے آب اُس بیماری کے کیرے کا بتہ لگا کر اُس کو مارنے کے لئے ایک خاص زهر جسم میں داخل کرنے کی نسبت یہ کہیں ادھک تھیک مفید أور سائنسی طریقه مانا جاتا هے که پہلے یه معلوم کیا جائے که وہ خاص کیوا جسم کے اندر بیٹھ اور بنپ کیسے سکا ، یعنی جسم کی ضروری چیزوں میں یا جسم کے بیلنس یعنی سمتول میں کیا کئے آئی جس سے وہ کیرا وہاں اپنا کام کر سکا' اور پھر اور علی کی پیچھے پر جانے کی نسبت جسم کی اُس کمی کو درر کرنے کی کوشش کی جائے ، نہیں تو طرح طرح کے کیرے ھوا کے اندر اور ھؤاروں کے جسموں میں بھرے بڑے ھیں . کسولی ریسرچ انسٹیٹیوٹ کے اُس سے نے ڈائورنڈر میجر مائس نے ایک مرتبہ هم کها تها که اگر هم رستے چلتے تدرست دکھائی دینے والے دس آدمیوں کو یکو کر آچانک اُن کے تھوک یا خوں كا امتحان لے ليں تو أن ميں سے ادھكتر ميں هميں طرح طرح کی بیماریوں کے کیڑے ملینگے کی جب تک خون میں خاص طرح کی کمزوری نه هو تب تک کوئی کیزا اثر نهیں کر سکتا . یعلی اصلی سوال کیروں کے پینچھے جہاں بولنا نہیں گے بلکھ خربی یعنی جسم کی خاص کمی کو پورا کرنا هے ، اگر هم اِس نگاہ سے دیکھنے کی کوشش کریں تو همارے ویدیک یونانی ا هومهربهتهی اور نیچروپیتهی کے طریقے آج کے ایلوپیتھی عالم کے طریقے سے کہیں زیادہ تھیک اور کہیں زیادہ سائنتنک عیں ، پر یع بحث بھی دور کی بحث ہے ۔ یہاں مم دیش واسیوں کی غریبی اور لاکھوں بیماروں کے آئے دین کے تجوریوں کی بنا پر کیول اننا کہنا چاہتے میں که سرکار کا فرض هے که بنا پکش پات علیے کے سب خاص خاص طریقوں کے ساتھ برابر کا سارک کرے' سب کے چھوٹے چھوٹے کورسوں والے کالبحقائم کرے ، جو اُسی خاص طریقھے کے ماهروں کے انتظام میں هوں اور پرائیویت پریکٹس میں اور سرکاری اسپتالوں میں سب جگه سب کو برابر کا موقعه دے جسسے لاکھرں اور کروروں آدمیوں کا بھلا ھو' ملک کا پیست ہامر کی قهمتی دواؤں پر خرچ هوکر ملک کو اور زیادہ غریب اور هماری تندرستیس کو اور زیاده خراب نه کرے اور سائنس کے معاملے میں شری راجا گربالچاری کے شبدوں میں ہم ہوگی كى طوح يولاك هوكر أكم برة سكيل . ـــسندرلال

र हमारी तुन्दुरुस्तियों को श्रीर ज्यादा सराय न करे र साइन्स के मामले में श्री राजा गोपालाचारी के शब्दों हम योगी की तरह बेलाग होकर आगे बढ़ सकें. 2-7-55 ---सुन्द्रलाल

2-7-55

कानपुर के मजदूरों की हड़त।ल

कानपुर की कपदे की मिलों के मजदूरों की इड़ताल को आज दो महीने से ऊपर हो चुके. इड़ताल का कारन मजदूरों, मिल मालिकों और सरकार तीनों के बीच का एक घरेलू फगड़ा है. इम घरेलू इसे इसिलये कहते हैं क्योंकि अभी इछ दिनों तक इन तीनों को इस देश के अन्दर मिल-कर रहना है. इमने आशा की थी कि यह आपसी भगड़ा जल्दी ही तय हो जायगा. इसिलये भी हमने अभी तक उस पर इछ कहना मुनासिब नहीं सममा था. पर हड़ताल ने काफी समय ले लिया और काफी दर्नाक रूप धारन कर लिया. आज दो महीने से हजारों मजदूर और उनके लाखों बाल बच्चे भूखे या आधे पेट सोते हैं. कानपुर शहर से हमारा पचास बरस का पुराना सम्बन्ध है. इसिलये इस हड़ताल के बारे में अपने विचार प्रकट करना हमने अपना धर्म सममा.

सबसे पहला सबाल 'रैशनेलांइजेशन' यानी उस चीज का है जो इस हड़ताल की जड़ है. रैशनेलाइजेशन ष्याजकल की मशीनी सभ्यता की एक स्वाभाविक कड़ी है. मशीनी सभ्यता का रूप ही यह है कि जो काम बहुत से भादमी मिलकर करते हैं वह मशीन के जरिये कम आद-मियों के द्वारा पूरा करा लिया जाय. मिलों से कपड़ा बुनाई के धन्दे में रैशनेलाइजेशन का मतलब यह है कि जिन मशीनों या पुतलियों पर दो या चार आदमी काम करते थे उन पर दो या चार की जगह एक आदमी सारा काम कर सके. इसमें श्रावश्यक हो जाता है कि उस एक श्रादमी की सहितयत के लिये मशीन में कुछ उलट फेर या सुधार कर दिया जावे. इसके लिये उस एक आदमी को कुछ अधिक मजदरी भी कहीं कहीं दे दी जाती है. पर इसका क़ुद्रती नतीजा यह है कि बाक़ी आदमी बेकार हो जाते हैं. इसे 'लेबर सेविंग' कहा जाता है, यानी कम मजदूरों से अधिक काम निकालना.

इस तरह के रैशनेलाइजेशन की जरूरत उन मुल्कों को होती है जिनमें आदमियों की कमी है और जो अपनी मिलों की पैदाबार इसलिये बढ़ाना चाहते हैं ताकि उस पैदाबार को दूसरे पिछड़े हुए देशों में बेच कर वहां से धन चूस सकें. यह व्यवस्था पूँजीवादी व्यवस्था है. यही आर्थिक साम्राजवाद की जड़ है. पर जिस देश के अन्दर आदमियों की कमी न हो और करोड़ों इनसानों की शक्ति बेकारी के कारन पड़ी सड़ती हो उसमें रैशनेलाइजेशन के कोई मानी ही नहीं होते. यह कहना कि रैशनेलाइजेशन लोगों की मेहनत बचाने के लिये किया जाता है बहुत बड़ा फरेब और

کانپور کے مزدوروں کی هوتال

گانہور کی کپڑے کی ملرس کے مؤدورں کی هوتال کو آج دو مہینے سے اوپر ہو چکے ، هوتال کا کارن مؤدورں' مل مالکوں اور سرکار تینوں کے بیچ کا ایک گہریلو جھکڑا تھ ، ہم گھریلو اِسے اِس لئے کہتے ہیں کیونکہ ایھی کچے دئرں تک اِن تینوں کو اِس دیھی کے اندر ملکو رهنا ہے ، هم نے آشآ کی تھی کہ یہ آپسی جھکڑا جلدی هی طے هرجائیکا ، اِس لئے بھی هم نے ابھی تک جھکڑا جلدی هی طے هرجائیکا ، اِس لئے بھی هم نے ابھی تک مسئے لے لیا اور کانی دردناک ررپ دھارن کر لیا ، آج دو مہیئے سے هزاروں مزدور اور اُن کے لاھوں بال بچے بھرکے یا آدھے پیٹ سوتے ہیں ، کانپور شہر سے ہدارا پیچلس برس کا پرانا سبندھ ہے ، اِس لئے اِس هرال کے بارے میں اپنے وچار پرگت کرنا ھمنے اینا دھرم سحجیا .

سب سے پہلا سوال ریشنیلائیزیشن یعنی اُس چنز کا هے جو اِس هوتال کی جو هے ، ریشنیلائیزیشن آجکل کی مشینی سبهیتا کی ایک سوابهاوک کری هے ، مشینی سبهیتا کا روپ هی یہ هے که جو کام بہت سے آدمی ملکر کرتے هیں وہ مشینی کے ذریعہ کم آدمهوں کے دوارا پورا کوا لیا جائے : ملوں سے کپڑا بنائی کے دهند میں ریشینلائیزیشن کا مطلب یہ هے که جن مشینوں یا پتلیوں پر دو یا چار آدمی کام کرتے تھے اُن پر دو یا چار کمی سارا کام کر سکے . اِس میں اُرشیک هو کا جاتا هے که اُس ایک آدمی کی سہولیت کے لئے مشین میں کچھ اُلٹ پیپر یا سدھار کو دیا جارے ، اِس کے لئے اُس ایک کچھ اُلٹ مؤدوری بھی کہیں کہیں دے دی جاتی آدمی کو کچھ ادشی مزدوری بھی کہیں کہیں دے دی جاتی آدمی کو کچھ اُلٹ قرتی تریونی بھی کہیں کہیں دے دی جاتی آدمی کو کھی اُلٹ آدمی کی مؤدوروں ہے ۔ اُلٹ اُلٹ پیپر اِس کا قدرتی تریونی کہا جاتا ہے، یعنی کم مؤدوروں سے اُدھک کام نکالنا ،

اِس طرح کے ربشنیالئیزیشن کی ضرورت اُن ملکوں کو هوتی هے جن میں آدسیوں کی کمی هے اور جو اپنی ملوں کی پیداوار اِس لئے بڑھانا چاہتے هیں تاکه اُس پیداوار کو دوسرے پچھڑے هوئے دیشوں میں بیچکر وہاں سے دھن چوس سکیں . یہ ویوستها پوئجی وادی ویوستها هے . یہی آرتهک سامواجوان کی جر هے . پر جس دیش کے اندر آدمیوں کی کمی نه هو اور کررورں انسانوں کی شکتی بیکاری کے کارن پڑی سرتی هو اُس میں ریشینالئیزیشن کے کوئی معلی هی شہیں هو آئس میں ریشینالئیزیشن کے کوئی معلی هی نہیں هوتے . یه کہنا که ریشینالئیزیشن اوگوں کی محلت بچانے کے لئے کیا جاتا هے بہت بڑا فریب اور

बोका है. इसी तरह की कोशिशों के लिये महात्मा गान्धी ने एक जगह कहा है—"यह लोग मखदूरी बचाने की लगातार कोशिश करते रहते हैं यहां तक कि हजारों आदमी खुली गलियों के अन्दर फाक़े से पड़े मरने लगते हैं." साफ बात यह है कि रैशनेलाइजेशन के जिरये पैदाबार की यानी कपड़े की लागत को कम किया जाता है और पूँजीपतियों के मुनाके को और बढ़ाया जाता है. यह रैशनेलाइजेशन जनता या मजदूरों के मले की बीज नहीं है. रैशनेलाइजेशन जनता या मजदूरों के मले की बीज नहीं है. रैशनेलाइजेशन जनता या मजदूरों के मले की बीज नहीं है. रैशनेलाइजेशन को बढ़ाने बोल है सिवाय इसके कि पैदाबार को बढ़ाने और जिजारती ममुत्व जमाने की फ़िक में हों. हमें बड़े दुख के साथ कहना पड़ता है कि हमारे देश के मिल मालिकों, पूँजीपतियों और कुछ सरकारी लोगों का रुख इधर ही को मुद्रा हुआ दिखाई देता है.

बन्बई और अहमश्रवाद की कुछ मिलों में यह रैशनेलाइजेशन कुरु हो गया है. कानपुर में भी इसको कुरु करने
को कोशिश की गई. लखनऊ सरकार के लोग और कानपुर
के पूँजीपति इस कोशिश में शामिल थे. कानपुर के कुछ
मजदूर प्रेमी और जनता प्रेमी देश भक्तों ने इसका विरोध
किया. श्री शिवनारायन टंडन कानपुर के बहुत प्रतिष्ठित
व्यापारी और कांगरेस के सच्चे सेवक हैं. कांगरेस की तरफ
से वह पार्लिमेपट के मेम्बर भी चुने गए. श्री शिवनारायन
टंडन ने रैशनेलाइजेशन का विरोध किया. उनके विरोध की
परवाह नहीं की गई. यहां तक कि इस विरोध के कारन ही
उन्हें कांगरेस से और पार्लिमेपट की मेम्बरी से इस्तीफ़ा
देना पड़ा. कानपुर की मिलों में रैशनेलाइजेशन जवरदस्ती
लादने की कोशिश की गई. उसका कुद्रती नतीजा है यह
जबरदस्त हड़ताल.

जनता या मजदूर जब किसी चीज को अपने उपर अन्याय सममते हों तो उन्हें शान्त और अहिन्सात्मक रहकर हड़ताल यानी सत्यामह करने और अपनी सच्चाई को साबित करने के लिये अपने उपर कष्ट मेलने का पूरा हक है. इसमें शर्त केवल एक है और वह है उनका पूरी तरह अहिंसात्मक रहना. हम कानपुर की सूती मिल मजदूर सभा के नेता श्री राजाराम शास्त्री और उनके साथ के काम करने वालों को बधाई देते हैं कि उन्होंने इस लम्बी हड़ताल की पूरी शान्ति और अहिंसा के साथ निभावा. दूसरी और सरकार और मिल मालिकों की तरफ से हड़तालियों और उनके नेताओं की गिरफ्तारियों और मजदूरों पर जियादितयों की खबरें भी अखबारों में आती रही हैं. कानपुर की जनता ने जिस प्रेम और उदारता के साथ हड़तालियों का साथ دھونا ہے، اِسی طرح کی کوششوں کے لئے مہاتا گادھی اُلی مودوری بچانے کی لگتار کوشش کرتے رہتے ہیں یہاں تک که ہواروں آدمی لگتار کوشش کرتے رہتے ہیں یہاں تک که ہواروں آدمی لگتی گلیوں کے اندر فاقه سے پڑے مرنے لگتے ہیں ۔'' صاف بات یہ ہے که ریشنائیویش کے ذریعہ پیداوار کی یعنی کپڑے کی لائمت کو کم کیا جاتا ہے اور پونجی پتیوں کے منافع کو اور پڑھایا جاتا ہے ۔ یہ رشینائیویشن جنتا یا مزدوروں کے بہلے کی چیز نہیں ہے ۔ رشینائیویشن اُن میں بیکاری کو بڑھانے والی چیز نہیں ہے کہ پیداوار کو بڑھانے اور ادھک سے ادھک منافع کمانے کی دھن میں ہم دوسرے غریب دیشوں پر اپنا آرتیک اور تجارتی پربھتو جمانے کی فکر میں ہوں ۔ ہیں ہوئیجی پتیوں اور کچے سرکاری لوگوں کا رخے اِدھر ھی کو مزا ہوا دکھائی دیتا ہے ۔

بیبئی اور اهددآباد کی کچے ملوں میں یہ رشیالائیزیشن شروع هو گیا هے . کاتپور میں بھی اِس کو شروع کرنے کی کوشش کی گئی . لکھنٹو سوکار کے لوگ اور کانپور کے پوئنجی پتی اِس کوشش میں شامل تھے ، کانپور کے کچے مزدرر پریمی اور جنتا پریمی دیش یھتوں نے اِس کا ورودھ کیا ، شری شونراین تلتن کانپور کے بہت پرتشتہت بھاپاری اور کانگویس کے سچے سیوک ھیں . کانگریس کی طرف سے وہ پارلیمنٹ کے ممبر بھی چنے گئے ، شری شونراین تلتن نے رشینالائیزیشن کا ورودھ کیا ، آن کے ورودھ کی پرواہ نہیں کی گئی ، یہاں تک کہ اِس ورودھ کے کارن ھی آنہیں کانگریس سے اور پارلیمنٹ کی ممبری سے استمنی دینا پڑا۔ کانپور کی ملوں میں رشینالائیشن زیردستی لادنے کی کوشش کی گئی ، اُس کا قدرتی نتیجہ هے زبردستی لادنے کی کوشش کی گئی ، اُس کا قدرتی نتیجہ هے زبردستی ہوتال ،

جنتا یا مزدور جب کسی چیز کر اپنے اوپر آنیائے سمجھتے هوں تو آنہیں شائت اور اهنساتمک رہ کر هرتال یعنی ستیاکرہ کرنے اور اپنی سچانی کو ثابت کرنے کے لئے اپنے اوپرکشت جھیلنے کا پوراحق ہے اِس میں شرط کیول ایک ہے اور وہ ہے اُن کا پوری طرح اهنساتمک رعنا ، هم کافہور کی سوتی مل مزدور سبھا کے نیتا شری راجارام شاستری اور اُن کے ساتھ کے کام کرنے والوں کو بدھائی دیتے هیں که آنہوں نے اِس لمبی هرتال کو پوری شائتی اور اهنسا کے ساتھ نبھایا ، دوسری اور سوکار اور مل ملکوں کی طرف سے هرتالیوں اور اُن کے ساتھ نبھایا ، دوسری آنی نبھیا اور میں اُتی رہی هیں ، کانپور کی خبریں بھی اخباروں میں آتی رہی هیں ، کانپور کی جلتا نے جس پریم اور اُدارتا کے ساتھ هرتالیوں کا ساتھ جس پریم اور اُدارتا کے ساتھ هرتالیوں کا ساتھ

विया है और उनकी मुसीवतों में हाथ वटाया है वह भी कानपुर के लिये बड़े गीरव की चीज है. हमारा दिल इस मामले में कानपुर के मजदूरों और वहां की जनता के साथ है.

कानपुर के मजदूर काफी कष्ट भोग चुके. वह अपनी सच्चाई साबित कर चुके. सरकार और मिल मालिकों के लिये अब तीन ही रास्ते हैं. सबसे अच्छा इन्साफ का और नेकी का रास्ता यह है कि वह अपनी रेशनेलाइजेशन की तजबीज को वापिस ले लें, मजदूरों की मुसीबतों को ख़म करें और बिलकुल पहले की तरह प्रेम के साथ मिलकर रहें और काम करें. दूसरा रास्ता यह है कि वह गिरफ्तार नेताओं और मजदूरों को रिहा करके श्री राजाराम शाखी और इनके साथियों के साथ बराबरी के ढंग से मिलकर बैठें और तात्कालिक मुलह का कोई रास्ता निकालें तीसरा रास्ता यह है कि वह अपनी फूठी आन को चिपटे रह कर अपनी शक्ति और उनके नेताओं को नीचा विस्ताने की कोशिश करते रहें.

बढ़े दुख की बात है कि हमारे कुछ शासकों और पूँजीपितयों ने यह फूटी आन अंगरेज सरकार से सीख ली है. देश की सरकारों और देश के पूँजीपितयों को इससे जपर उठना चाहिये ताकि शासक और शासित पूँजीपित और मजदूर सब मिलकर इस देश में प्रेम के साथ रह सकें. हमारी भगवान से यही प्रार्थना है कि वह हम सबका ठीक रास्ते पर चलने की हिम्मत दे. आज के अखबारों में खबर छपी है कि श्री राजाराम शास्त्री चीफ मिनिस्टर श्री सम्पूर्णानन्द से मिलने नैनीताल जा रहे हैं. हमें बड़ी खुशी होगी अगर हमारे इस नोट के छपने से पहले कानपुर का यह घरेलू कगड़ा इनसाफ और प्रेम के साथ तय हो चुका होगा.

2-7-55

—सुन्दरलाल

फिर—इस नोट के छपते छपते आज यह खबर मिली कि हबताल समाप्त हो गई. دیا ہے اور آن کی مصیبتوں میں ھاتھ باتایا ہے وہ یعی کانیو کے لئے بڑے گورو کی چیز ہے۔ ھدارا دل اس معاملت میں کانیور کے مزدوروں اور وھاں کی جنتا کے ساتھ ہے ،

کانپور کے مزدور گئی کشت بھوگ چکے وہ آپنی سچائی گابت کر چکے اسرکار اور مل مالکوں کے لئے اب تین ھی راستے ھیں اسب سے اچھا انصاف کا اور نیکی کا راستہ یہ ہے کہ وہ اپنی رشنیائیزیشن کی تجویز کو واپس لے لیں مزدوروں کی مصیبتوں کو ختم کریں اور بالکل پہلے کی طرح پریم کے ساتھ ملکو رھیں اور کام کریں اور بالکل پہلے کی طرح پریم کے ساتھ ملکو رھیں اور کام کریں اور سرا راستہ یہ ہے کہ وہ گرفتار نیتاؤں اور مزدوروں کو رھا کر کے شری راجارام شاستری اور اُن کے ساتھیوں کے ساتھ برابری کے قامنگ سے ملکو بھاتھیں اور تاکہالک ملم کا کوئی راستہ فکالیں انسرا راستہ یہ ہے کہ وہ اپنی جورتی آن کو چھتے وہ کر اپنی شکتی اور پیسے کے بل مزدور اور اُن کے نیتاؤں کو نیچا دایائے کی کوشش کرتے رھیں اور اُن کے نیتاؤں کو نیچا دایائے کی کوشش کرتے رھیں .

ہرے دکھ کی بات ہے کہ ہمارے کچھ شاسکوں اور پوئجی پتیوں نے یہ جبوئی آن انگریز سرکار سے سیکھ لی ہے . دیش کی سرکاروں اور دیش کے پوئنچی پتیوں کر اِس سے ارپر اُٹھنا چاھئے تاکہ شاسک اور شاست پوئنجی پتی اور مزدور سب ملکر اس دیش میں پریم کے ساتھ رہ سکیں . ھماری بھگراں سے یہی پرارتھنا ہے کہ وہ ھم سب کو تھیک راستے پر چلنے کی ھمت دے ، آج کے اخباروں میں خبر چھی ہے کہ شری راجارام شاستری چیف منسر شری سمپورنائند سے ملنے نینی تال جا رہے شیس ، ھمیں بری خوشی هوگی اگر ھمارے اِس نوت کے چھینے سے پہلے کاتپور کا یہ گھریلو جھگڑا انصاف اور پریم کے ساتھ طے ھو چکا ھوگا ،

سندرلال

2, 7, 55

پھر۔۔۔اِس نوٹ کے چھپتے چھپتے آج یہ خبر ملی که هوتال سمایت هو گئی .

			,		4 1						
			Ù	هارے بہاں ملنے والی کچھ اور کتابیں							
Maria Maria Maria Maria	नोड़ा-यह हि			٠.		د هندی میں میں د	نوه اسیه کتابین مرد				
	नाम किलाब	लेस् क	_	ब्राम		ليڻيک	الم كعاب				
1.	शेर-को-शायरी	श्री खबोध्या प्रसाद गोयलीय	8	0	0	شری آیودجها پرساد گرکلیه					
2.	शेर-घो-मुखन	"		0	0	91	. گعر و سطون				
	गहरे पानी पैठ	27		8	_	91	3. گهریم پالی پهاله				
	इसरे चाराम्य	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	3	0	0	غری بنارسی داس جگررینی	4. هماري آرادهيه				
S .	संस्मरण	48441	3	0	0	99	5• سنسم رن				
6.	यो इचार वर्ष पुरानी कहानियां	श्री जगदीश्र चन्द्र जैन	3	0	0	غري جگذيش جلدر جهن	8، دو هزار ورهی پرانی کهانهای				
	ज्ञान गंगा	श्री नारायण साद जैन	6	0	0	شرى نارائن پرساد جهن	7. كهاي كلا				
	यम विम्ह	भी शान्ति प्रिय द्विवेदी	2	0	0		8; sre ple				
1.1	पंच प्रदीप	शान्ति एम. ए.	2	0	0	شانعی ایم الد	9. پلے پردیہ				
10.	बाकाश के तारे घरती के फूल	भी कन्हैयासास मिश्र प्रमाकर	2	0	0	هری کلهیالل مهر پریهائر	10. آگھن کے تاریے دعوتی کے پھول				
	मुक्ति दूत	भी बीरेन्द्र कुमार जैन एम. ए.		0	0	شری ویریندر کمار جین ایم ، اے	11. مکعی درت				
12.	मिलन यामिनी	श्री बच्चन	4	0	0	شری بچن	12. ملن ياملى				
13.	रजत ररिम	ष्टाक्टर रामकुमार वर्मा	2	8	0	ةائكر وام كمار ورسا	13. رجت رشی				
14.	मेरे बापू	श्री तन्मय बुखारिया	2	8	0	شری تلب بشاریا	14. مورے باہو				
	विश्व संघ की भोर	पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला	3	0	0	پنگت سندر لال' بهگران داس کهلا					
16.	भारतीय अर्थशास	भी भगवानदास केला		0	0	شری بهگوان داس کیلا	16. بهارتیه ارته شاستر				
17.	भारतीय शासन	53	3	-	0	"	17. بهارتیه شاسن				
18.	नागरिक शास्त्र	j y	2	4	0	39 -	18. تاگرک هاسعر				
	साम्राज्य भीर उनका पत्तन	"	2		0	11	19. سامراج اور أن كا يعن				
20.	भारतीय स्वाधीनता अन्दोलन	"	1	4	0	91 ,	20. يهارتهه سرادهينتا				
91	सर्वीद्य अर्थ व्यवस्था		1	8	6		أندولن				
	हमारी आदिम जातियां	" श्री भगवानदास केला और श्री कखिल विनय	3		0	ور هري بهگوان داس کڼلا	21. مزوودے ارتب ویومتیا 22. هماری آدم جاتهاں				
23.		भी दया शंकर दुवे,	2	0	0	اور هری اکهل رئے	11. 4 = 14 -1 0=				
	-1444	एम. ए. एल एल. बी.				شري ديا شلکر دوي	25. اربه شاستر شهداولی				
• 1		श्री गजाधर प्रसाद, अ	म्बुद	7.		ايم ، ايم ، ايل ايل ، بي ،					
		श्री भगवानदास केला	9	-,		كتجادهر يرساد امهشت					
24.	नागरिक शिज्ञा	श्री भगवानदास केसा श्री दवाशंकर दुवे	1	8	0	بهکوان داس کیلا شری پهکوان داس کیا دیا شنکر دویے	24, نائرت عمما				
25.	रारद्ध मंडल शासन	भी दयाशंकर दुवे	1	8	0	دیا هلکر دویے	IA IZI. PAL OF				
	जवानी	महात्मा मगवानदीन	3	0	0	مهانما بهکوان دین	25. راشتر مندل شاسی				
	मारने की हिम्मत !	33	1	0	0	الماري الماري الماري	26. جوانو 27. مارن همعدا				
	स्तोग स्र		0	8	0	71	27ء مارنے کی ھمت ا 28ء ملونا سے				
	मेरे साथी	>5	1	0	0	35	99 مدر سائد				
-	3	का पता-		Δ		"	28۔ صارتا سے 29۔ میرے سائیی ملئے کا یکد۔				
		मेनेबर '		_		/					
	145 علم نكم الداباد 8 و 145 علم المالية 145 علم المالية الداباد 8 المالية الداباد 145 علم المالية الداباد المالية الداباد 145 علم المالية الداباد المالية المالية الداباد المالية الما										

सांस्कृतिक साहित्य

سانسكوتك ساهتيه

हजरत मोहम्मदं श्रीर इसलाम

लेखक-पिडत सुन्दरलाल, 'मृल्य-तीन रुपया इसलाम के पैगम्बर के सम्बन्ध में भारतीय भाषाओं में इस से सुन्दर कोई दूसरी पुस्तक नहीं

हजरत ईसा ऋौर ईसाई धर्म लेखक-पन्डित सुन्दरलाल, मूल्य-डेढ़ रूपया

महात्मा जरथुस्त्र ऋौर ईरानी संस्कृति लेखक-विश्वनमरनाथ पांडे,

क्रीमत-दो रुपया यहूदी धर्म झौर सामी संस्कृति

लेखक-विश्वनभरनाथ पांडे, क़ीमत-दो रुपया

प्राचीन मिस्र की सभ्यता और संस्कृति

लेखक-विश्वम्भरनाथ पांडे, क्रीमत-दो रुपया

सुमेर बाबुल ऋौर ऋसुरिया की प्राचीन संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, क्रीमत—दो रूपया

प्राचीन यूनानी सभ्यता ऋार संस्कृति

लेखक-विश्वन्भरनाथ पांडे, क्रीमत-दो रूपया

गंगा से गोमती तक

(प्रगतिशील कहानी संप्रह)

क्रीमत—दो रूपया लेखक-श्री मुजीव रिजवी,

ऋाग ऋोर ऋाँसू

(भावपूर्न सामाजिक कहानियाँ)

लेखक—डाक्टर ऋख्तर हुसेन रायपुरी, कीमत—डेढ़ रूपया

.कुरान स्रोर धार्मिक मतभेद

लेखक-मौलाना अबुलकलाम श्राजाद, क्रीमत-डेढ़ रूपया

भंकार

(प्रगतिशील कविताओं का संप्रह) लेखक-रघुपति सहाय फिराक, क्रीमत तीन रुपया

मिलने का पता

المكهك وراتي سائم فراق ويدست قيد مت قيد من رويه

ملنے کا بته

14 मुट्टीगंज, इलाहाबाद اله أباد 145 متهى كنبج اله أباد

حضوت متحدل أور إسلام

ليه كى سيندت سندر لال مولیه--تین روپیه

اِسلام کے پہنمبر کے سمبندہ میں بھارتیہ بھاشاؤں میں اِس سے سندر کوئی دوسری پستک نہیں

حضرت عيسي اور عيسائى دهرم ليك بندت سندر ال

مهاتها زر تهستر اور ایرانی سنسکرتی ليكهك وشرم بهر فاته يافتك ويمت دو روييه

یهودی دهرم اور سامی سنسکرتی لیهک رشومهر ناته باندے تیست-در رویه

وراچین مصر کی سبهیتا اور سنسکرتی لیکهک—رشوسهر نانه پاندے نانی تیت—دورروپیه

سبير بابل اور اسوريا عي براچين سنسكرتي

لیکھکے۔۔وشومبھر ثاتھ یائدے' قیمت۔۔دو رویہ

پُراچین برنانی سبعیتا اور سنسکرتی لیکک رشومهر ناته پائذے تیت در روپیم

گنگا سے گومتی تک

(پرگتی شیل کہانی سنارہ)

ليکهک - شری مجيب رضوی

أك اور أنسو

(بھاؤپورن سماجک کھاٹیاں) لیکھک—ڈاکٹر اختر حسین رائے پوری' قیمت – ڈیڑھ روپیہ

قرأن اور ن هارمک مع بهید لیکهک مورانا ابرکلم آزاد نیست قیرت روپیه

جهنكار

(پرگتی شیل کبیتاؤں کا سنگرہ)

हिन्दी घर

कुकलचर पर हर तरह की कितावें मिलने का एक वड़ी केन्द्र—पाठक हिन्दीं, उदू, अंग्रेजीं की अपनी मन-पसन्द कितावों के लिये हमें लिग्वें।

हमारी नई कितावें

महातमा गान्धी की वसीयत

(हिन्दी और उद् में) लेखक—गान्धीवाद के मान जाने विद्वान : श्री मंजर अली मास्ता सके 225, क्रीमत दो रुपया

मान्धी वावा

्रें (वच्चां के लिये बहुत दिलचस्प किताब) लेखिका—कृदिसया जैदी भूमिका—पन्डित जबाहरलाल नेहरू मोटा काराज, मोटा टाइप. बहुत-सी रंगीन तसवीरें दाम दो रुपया

पंडित सुन्दरलाल जी की लिखी कितावें

गीता और क़ुरान

275 सफे, दाम ढाई रुपया

हिन्दू मुसलिम एकता

100 सफ़े, दाम बाग्ह आन

महास्मा गानधी के वलिदान से सबक

कीमत वाग्ह आन

पंजाब हमें क्या सिखाता है

क़ीमत चार आने

वंगाल और उससे सवक

्रक्रीमत दो आन

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी

145 मुद्रोगज ईलाहाबाद

معد الرا والما المعدى في

انچر پر ہر طرح کی کتابیں مانے ایک بڑا کیندر۔۔باتھک ہندی' و' انگریزی کی می ہسند کتابوں کے ہمبی لکھیں .

هماری نئی کتابیس

مهاتها گاندهی کی وصیت

كاندهي بابا

(ہنچوں کے لئے بہت دانچسپ فقاب) لیکھکاسفیسیہ زبدی بہومکاسرپذرت جوامر قال فہرو موٹا کائڈ مونا نائب " بہت سی رفکین صویریم ا

یندت سندرال جی کی لکھی کتابیس

كيتا اور قران

(7.7 صفحے دام تعانی روبیه

هندو مسلم ایکتا 100 صنعے دام بارد آنے

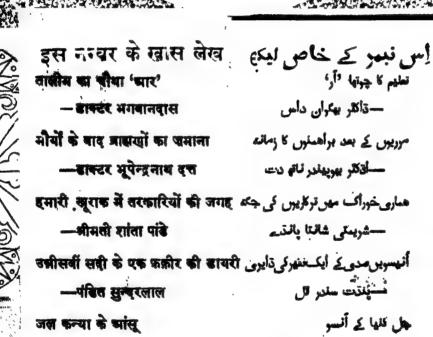
مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

پنجاب هیی کیا سکوأنا هے ست چار آنے

بنگال اور اُس سے سبق

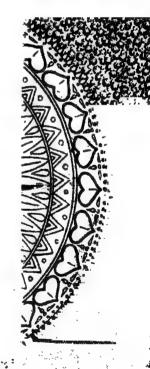
هندستاني كلجر سوسائتي

145 متمي گليم التآباد



देस विदेस के मसलों पर हमारी राख में जरूरी सम्पादकी नोट ہیس ہدیس کے مثلوں پر ھماری رائے میں ضروری سنھادکی نوٹ

--رشرمبهر قانع ياقتد





-विश्वम्भर नाथ पांडे

NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

Editorial Board

Dr. Tara Chand M.A., D. Phil. (Oxon)

Mahatma Bhagwan Din

Dr. Syed Mahmud, M.A., Ph.D., Bar-at-Law

Pandit Sundarlal

Bishambhar Nath Pande

Editor-in-Charge

Bishambhar Nath Pande

Asst. Editors

Suresh Rambhai Mujib Rizvi

Annual Subscription

Inland Rs. 6/-Foreign Rs. 10/-Single Copy As. /10/- only

Can be had from

Manager, NAYA HIND

145, MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3.

शिवा 20 अर्थ अन्य 2 अर्थ क्षेत्र शिवा के स्वर्थ के स्वर्ध के स्वर्थ के स्वर्ध के स्वर्थ के स्वर्थ के स्वर्ध के स्वर

अगस्त 1955 🛶

हि- त्यानी कलचर सोसायटी उपप्राप्त उपप्राप्त 145 क्षणिय स्वतावाद

वागस्त 1955 व्यक्ती

•					 	Lie	
441	किस से		सफ़ा 🛎	مفع	<u>س</u> سے		
1.	वासीम का चौथा 'झार' बाक्टर भगवानवास	•••	61	•••	. تعلیم کا چوتها 'آر' قاکلو بهکوان داس	,	
2	मीयों के बाद बाबाणों का जमाना		0		، موریوں کے بعد براھیٹوں کا زمانہ ۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔	,2	
	—डास्टर भूपेन्द्रनाथ दत्त	•••	67	***	المرابع بهربيندر لاته دت	0	
8.	माना का सवाल	•			بهلشا كا سوال	,O	
	—भाई ७० शंकर	•••	,77	•••	- مهائی آو . شاعر		
4,	शिवाजी की मज़हबी नीति				شوا جي کي مذهبي نيتي	4	
	स्व स्याद् ए० एफ० एम० चन्दुल चली	•••	84	***	سسركية سيد اء . ايف . ايم . عبدالعلى		
· 5.	श्राखमगीर का वसीयतनामा	,			عالمكير كا وصهصنامة	.5	
. ,	श्री ज्ञानशंकर कुपाशंकर पंड्या	•••	87	•••	-شری گیان شاعر کریا شاعر پندیا		
6.	इमारी .खुराक में तरकारियों की जगह				هماری خوراک میں ترکاریوں کی جکھ	.6	
1	श्रामती शांता पांडे	•••	90		مسشویمتی شانتا بالتب	_	
7.	इसीसवीं सदी के एक फ़क़ीर की डायरी				آئیسویں صدی کے ایک فقیر کی تایری	.7	
No.	—पंडित सुन्दरलाल	•••	9 5		بلذت سليو لأل		
B.	जल कन्या के आँस				جل کلیا کے آئسہ	.8	
) h	विश्वनभर नाथ पांडे	***	104		رشومهور ناته بالذي		
9.	म्राष्ट्रामियां के गीत				الله میاں کے گیت	.9	
	—श्रीमती हाजरह वेगम		111		شریمتی حاجره بیکم		
10.	इब कितार्षे	•••	114	***	` کچه کتابیں	.10	
	हमारी राय	•••	116	•••	^ ھماری رائے	.11	
	विनोबा जी भीर जमीन की मिलकियत,				ولوبا جی اور زمین کی ملکیت شری		
	भी बी. जी. खेर और सरकार, भारत				ہی، جی، کلیر اور سرکار' بھارت کے بھیے		
•	बच्चे और बी. सी. जी. का टीका,	एक			ار بی. سی جی کا تیکه ایک آدرش		
,	भादर्श गुवर्नर—सुन्दरलाल; अन्य विश	गस			گورنس سسندر الل؛ انده وشواس کا		
,,	का अनुर्थ-सत्यदेव विद्यालंकार; गोधा	की			أترتهـــستهه ديو ريالنكار؛ كواً كي أزادي		
	भाषादी का सवाल-दि. ना. पांडे.				کا سوال سوس ، نا ، پاندے ،		
	Name of the second seco	3000 6	යාසය යාසය සහ				

सूचना

سوجنا

कामकर जनवात वास

पहले हैं एक लेक में हम जाजकत की पच्छामी सम्मता की गिराबंद की चर्चा कर चुके हैं. हम दिवा चुके हैं कि धन, राजनीति, जानेशाब, बरेलू जीवन, तालीम, कला जोर मनोरंजन सब में जाज हम तेजी के साथ बरवादी के गढ़े की तरफ बड़े बले जा रहे हैं. जो बातें हमारे लिए सब से जावश्यक और हमारे मले की हैं उन्हें हम जन्या-वहारिक वाली हैं उन्हें हम ज्यावहारिक वाली कमली सममते हैं

इस हासव की सबसे नदी जिन्मेवादी हमारे साइसदानों और अध्यापकों पर है. इस अमाने के वे मान्हण अपने कर्तव्य को अलौकर ग्रनिया की हालव को ठीक करने की कोशिश करने के बजाय इसे और बिगाइने में अवद देते हैं. उन्होंने अपने आप को शैतान और शैतान के एजंटों के हाथ वेच रक्सा है. नतीजा यह है कि हमारा यह उसल वन गया है कि आज तो साओ पीओ और गुलक्षरें उड़ाओ, यानी जो थोड़े से लोग भी ऐसा कर सकें. श्रीर कल की कल देखी जायगी! आज की पीढी कल की पीढ़ी के लिये अपने सुख चैन में कमी क्यों करे ? अगली पीढ़ी के लिए धन संपत्ति की जगह हम भारी भारी कर्जे क्यों न छोड़ जाँब ! यही आजकल के जीवन का फलसका है. यही इसारे चारों तरफ की नैतिक हवा है. इसारी राजनीति, अर्थनीति और घरेलु जीवन सब इसी के रंग में रंगे हुए हैं. इस पाप और पागलपन का नाम ही हमने सभ्यता यानी तहजीव रख रखा है. इसी को इस उन्नति कहते हैं. कम से कम वे लोगों की उन्नति इसी में सममते हैं जिनके हाथों में बाज दुनिया की सत्ता है. यानी जिनके हाथों में घन की बैली और तलवार है.

इसमें भी राक नहीं कि जहाँ तहाँ और सब जगह इसकी
प्रतिक्रिया थानी नतीजे दिखाई देने लगे हैं और यह
प्रतिक्रिया भी तेजी से बदती जा रही है इस प्रतिक्रिया ने
सारी दुनिया को दिला दिया है. सारी हुनिया बेचैन है.
स्स में बहुब बहा इनक्रवाब हो चुका है. वह इनक्रवाब हर
एक मते के तिष्ट ही है या हर तरह चुरे के लिए या इक्ष्म के दिला और इस इस नामा
मी हर किया की दिला सामान नहीं है. अबि मानी
मादती हर की बाद ही इसेशा बनाया असर सारी है. लेकिन

A CONTRACTOR OF THE PARTY OF TH

، داکلر بهکران داس

پہلے کے ایک لیکو میں ہم آجال کی پیچھمی سبھٹا کی گراوٹ کی چرچا کرچے میں ، ہم دکیا چکے میں که دھی اور الی نہیں اور منورتجن اور سیاسیں آنے ہم تیزی کے ساتھ بربادی کے گڑھ کی طرف بڑھ خیارے نئے سب سے آرشیک اور جارہ میں آنہیں ہم آریوہارک یعنی غیر عملی سبجھ بیٹھے میں اور جو بھیں مثالے والی میں انہیں ہم ریرهارک یعنی عملی سمجھتے میں مثالے والی میں انہیں ہم ریرهارک یعنی عملی سمجھتے میں مثالے والی میں انہیں ہم ریرهارک یعنی عملی سمجھتے میں مثالے والی میں انہیں ہم ریرهارک یعنی عملی سمجھتے میں

اس حالت کی سب سے بڑی ذمہ واری عمارے سائنسدائوں أور أدهيايكوں پر هے ، أس زمانے كے يه براهس أينے كرتوية كو ن بہول کر دنیا کی حالت کو ٹیپک کرنے کی کرشش کرنے کے بعجائے أس أور بكارنے ميں مدد ديتے هيں . انهوں نے أينے آپ كو شیطان اور شیطان کے ایجنٹوں کے ماتھ بینے رکھا ہے . تتیجہ یہ ه كه همارا يه أصول بن كيا ه كه آج تو كهاؤ پيو أور كلمهمري اُڑاؤ یعلی جو تھوڑے سے لوگ بھی ایسا کرسکھی کریں' اور کل كى كل ديكهي جائيكي ! آج كي پيرهي كل كي پيرهي كي الله أبئے سکھ چین میں کسی کیوں کرے ؟ اگلی پیڑھی کے لئے دهن سبهای کی جاته هم بهاری بهاری قرضے کیوں انه چهور جائیں! یہی آجال کے جیوں کا فلسدہ ہے۔ یہی هما۔ ے چاروں طرف کی لیتک هوا هے ، هماری راج لیتی ارته لیتی اور گهریلو جهین سب اِسی کے رنگ میں رنگے ہوئے ہیں ، اِس پاپ اور یاگل میں کا نام هی هم نے سبهیتا یعنی تهذیب رکھ رکھا ہے . اسی کو هم اُنٹی کہتے هیں . کم سے کم وه لوگ اپنی اُنٹی اُسی میں سجهتے میں جن کے مانہیں میں آج دنیا کی ستا ہے علی جن کے ماتیں میں دھن کی تبیلی اور تلوار ہے.

اس میں بھی شک نہیں کہ جہل تہاں اور سب جاتہ اس کی ورٹی کریا بھی تھڑی ورٹی کریا بھی تھڑی عبد بوسٹی عبد بوسٹی جارھی ہے۔ اس پرتی کریا نے ساری دنیا کو ہالا دیا تھے سازی دنیا پرچین ہے۔ ورس میں بہت ہوا انقاب ہوگا تھے۔ وہ انتقاب ہو طرح ہوئے کے لئے بھی تھ یا ہو طرح ہوئے کے لئے یا کہتے ہے۔ وہ بھلے کے لئے بھی تھ یا ہو طرح ہوئے کے لئے الکہتے ہے۔ وہ سکتا ابھی جو کسی کے لئے لہتے ہے۔ نہیں ہے۔ اس کی انتہاں ہے۔ اس کی انتہاں ہے۔ اس کی انتہاں ہے۔ اس کی انتہاں ہے۔ اس کے انتہاں ہے۔ اس کی انتہاں ہے

ہے ہے گو بھی موسما ہے کہ اس پرتی کریا کے ساتھ ساتھ مالی سنام ایک مصیبت سے فعل کو دوسری مصیبت میں جا یر میں اور بادھامیں کی تانا عامی اور اُن کے طلبی سے نعل کو میر سرداروں ساملتوں اور نوجی ایتاوں کے شاس میں آنید وهال سه فال کر دلیا پرتجیواد پرتجی پائیس اور دهن لونعی سوارتی لوگیں کے هاتیں میں گئی . اِس کی قدرتی پرتی کریا هوگی سوشلوم یعلی سماجواد اور کمونوم یعنی سامیدواد. یه ستاج واد یدی سچا ساج واد نه موا تو در هے که هم بهر سے سب سے چاک اور سب سے چاتے ہوئے لوگوں یا نیٹاؤں کے چکو میں پر کو جس کی اٹھی اُس کی بیینس کے دلال میں یهنس جاویں اور اتیباس کا برانا شیطانی چکر پیر سے شروع هو چاوه .

کرئے نہیں چاھٹا کہ ایسا ھو۔ پر اس کے لئے عمیں ساودھان رهلے کی ضرورت ہے . هم اس خطرے سے آسانی سے بیج سکتے هیں اگر همارے سائلسدان اور همارے بحورن کو تعلیم دینے والے ایمانداری کے ساتھ اپنے فرض کو پورا کریں ، اُن میں سائنس ہمنی دمانی جانکاری اور دین دھرم یمنی نیکی اور سب کے بھلے كى إچها دونون ساته ساته هونى چاهئين .

ھواروں برس پہلے مانو جاتی ایک طرح کے قدرتی کمیونزم یعنی سامهموان کا جهون بتاتی تهی . آدمی گروهوں میں رهانہ تھے۔ سب سبہتی سب کی ہوتی تھی ۔ کسی کی کوئی اگ سبهتی نه تهی . یه حالت هماری سبهیتا سے پہلے کی حالت تنی ، اِس سے نکل کو هم درجے بدرجے آجال کے حد درجے کے ويكتي وأديعني تنسا ننسي مين پهونچے سب الك الك، سب میں ایک دوسرے کے ساتھ ہوڑا ایک دوسرے سے مقابله اور تعرین عر ایک میں خودی کا برل بالا یهر را خودی چاہے ويعلى گت روپ لے چاھے راشقريه . اس حالت سے نعل كر عديں سوچ سمجھکر پوری کوشش کے ساتھ ایک اُونچے تھنگ کی ملی جلی زادگی ایک اچم سهیوگ اور ساجراد کی طرف برهنا ھے . همازا یه نیا سماے واد ایک سائنسی یوجنا کے ساتھ بننا چاهلی، یه خاف قدرت زبردستی ا اور مشینی غیر تکاؤ سامیهواد نه هو جو هم پر ياهر مه الد ديا كيا هو . هارا يه ساج واد مانو پرکرٹی کے اقل بیموں اور مانو جیون کے ٹکاؤ آدرشوں کے انوسار مرقا چامل . هم چالے بھی اس کی چرچا کرچک میں . یہ المان ها که آدمی آدمی سب برابر هیں . یه یعی المعالم عد که سب کو برابر کے موقع ملنے چاہایں ، پر يد بيد الله عد أصور ع الك الك سياد

किया बन्दरा की यह प्रविक्रिया बढ़ती और फैलती जा 🗱 है का हर औ हो सकता है कि इस प्रतिक्रिया के काम साम मानव समाज एक मुसीका से निकलकर दूसरी मसीयह में जा परे. राजाओं और बादशाहों की तानाशाही और इसके पुरुषों से निकलकर इस सरवारों, सामंतों भीर कीवी नेताओं के शासन में बाप, बंहों से निकतकर दुनिया मुद्धीबाद, प्रेंनीपवियों और धनकोशी स्वाधी नोगों के द्वाची में गई, इसकी अव्यती प्रतिक्रिया हुई सोरालिएम बासी समाजबाद और कम्यूनिएम यानी साम्यवाद. यह समाजवाद यदि सञ्चा समाजवाद न हुआ तो दर है कि हम फिर से सबसे पालाक और सब से चलते हुए लोगों या नेवाओं के चक्कर में पड़कर जिसकी लाठी उसकी मैंस के वसक्त में फँस जावें और इतिहास का पुराना शैतानी अक्टर फिरसे ग्रह हो जावे.

कोइ नहीं चाहता कि पेसा हो. पर इसके लिए हमें साववान रहने की जरूरत है, इन इस खतरे से आसानी से वय सकते हैं अगर हमारे साइंसवां और हमारे बच्चों को वालीस देने वाले ईमानदारी के साथ अपने कर्ष की पूरा करें. उनमें साईस यानी दिमाशी जानकारी और दीन धर्म यानी नेकी और सबके भले की

इच्छा दोनों साथ साथ होनी चाहिए.

हकारों बरस पहले मानव जाति एक तरह के कदरती कन्य निष्म यानी सान्यवाद का जीवन विताती थी. आदमी मिरोहों में रहते थे. सब संपत्ति सब की होती थी. किसी की कोई अलग संपत्ति न थी. यह हालत हमारी सभ्यता से बहुले की हालत थी. इससे निकलकर हम इंसे बढ़ें आजकल के हुद इमें के व्यक्ति-बाब बानी नक्सा नक्सी में पहुँचे. सब जलग अलग, सबमें एक दूसरे के साथ होड़, एक दूसरे से अक्षाबला और टक्करें, हरेक में खदी का बोजवाला, फिर बह सादी चाहे व्यक्तिगत रुप ले चाहे राष्ट्रीय. इस हालत से निकलकर इमें सोच समम कर पूरी काशिश के साथ क्ष केंचे हंगकी मिली जुली जिंदगी, एक अच्छे सहयोग भीर समाजवाद की तरफ बढ़ना है. हमारा यह नया समाजवाद एक साइंसी योजना के साथ बनना चाहिए. किलाफ कुररत जाबरदस्ती का और मशीनी ग़ैर किसके साम्यवाद न हो जो इस पर बाहर से लाद दिया गर्या हो। हमारा यह समाजवाद मानव प्रकृति के अटल विवसी और मानव जीवन के टिकाऊ आदशों के अनुसार क्षेत्र बाहिय इम पहले भी इसकी चर्चा कर चुके हैं. क दीक है कि जादमी आदमी सब बराबर हैं. यह भी कि सब को बराबर के मौके मिलने बाहिएं, पर के और है कि आविमयों के अलग अलग स्वभाव,

वस्य वस्त्र वास्त्र और स्वान स्वन क्रावित्र होते. इस्त्री के बद्धार अवदे काला यहार काम होते हैं. इस काला काला कामायां, वाक्यां और क्रावांस्थां को समस्यद और साथका पूरा बीका देकर ही सक्या समाज बीट सक्या बोलावित्या यांची समाजवाद वन सकता है.

सराहर बोक्यांकर विद्यान के. ई. कारपेंटर ने अपनी विवास 'वि प्रोप्त आफ़ किरिनवानिटी अमंग वि विविजनस आफ़ वि वस्त्रें में विका है—

"क्यापार का मक्रसन यह है कि बरती की सब पैदाबार को इस तरह से संबद्धित किया जाने कि सारे मानव समाज की सब वाकरतें पूरी हो सकें. साईस का मक्रसन यह है कि सब बीजों की सक्वी सक्वी जानकारी सब में फैज जाने. राजनीति का मक्रसन यह है कि सब देश न्याय और शांति के साथ मिलकर प्रेम से रह सकें, और सबकी बरावर क्वति हो. इसी तरह वर्ष का मक्रसन यह है कि सबके जंदर एक सक्वा विश्वास हो."

कारपेंटर साहब की जपर लिखी बात में हम यह और जोड़ना चाहेंगे :-- "मजदूरी और मजदूरों का मकसद यह है कि कपर के सब मक्तसदों को पूरा करने के लिए जो सहयोग और मदद जरूरी हो वह दें." और यह कि-"यह सब मक्सद अलग अलग तभी पूरे हो सकते हैं जब मनुष्य समाज में चार तरह के आदमी यानी माहाण, श्रविय, वैरम और शह, यानी आलिम, आमिल, ताजिर और मजदूर मिलकर अपनी अपनी तंबियतों और अपनी अपनी क्राब-नियतों के चतुसार अपना अपना कर्ज पूरा करें और इस तरह सारे समाज को भागे ले जाएँ." इसका हिन्दुओं की बिलक्रल राजव जनम की जात पात से कोई सम्बन्ध नहीं. यह चार तरह के आदमी यानी एक वह जो साइंस की सोजों भीर पढ़ने पढ़ाने का शीक रखते हैं, दूसरे वह जो इंतजाम और हुकूमत की क्रावलियत रखते हैं, तीसरे वह जो धन पैदा करने और कमाने में क्यादा होशियार हैं श्रीर चौथे वह जो मजदूरी श्रीर सबकी मदद ही कर सकते हैं, यह चार तरह के आवमी क़ुदरती तौर से परदेश के अंदर होते हैं. इसके लिए हर बच्चे की तक्यित और उसकी योग्वता को समझता और इसके अनुसार इसे समाज सेवा का मौक्रा देना यही सच्चे समाज संगठन और सच्चे समाजवाद का तरीका है, कारपेंटर साहब की बात में हम यह भी जोड़ना चाहते हैं कि--- "विश्वाद्य और ज्ञान वानी ईमान भौर इस्म साथ साथ बतने बाहियें यह दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं. यह दोनों अनंत यानी लामहरूद शान के उभर क्रायम हैं और उसी से निकले हैं जो इस अंत वाली पानी सहतृत द्वानिया के सारे इस्मों को अपने अंदर लिए इए, जमाने इस और मिलाय इस है."

الک آنک ملیمتی اور آنک آنک فاطیتی خولی هیں۔ آلیوں کے آنوسار ان کے آنک آنک کام خور میں ، ان آنک آنک سپرواوں طبیعتوں اور قابلیتوں کو سنجیکر اور سب کو پورا موقع دیکر هی سنجا ساج اور سنجا سرهانوم یعلی سناجران بن سکتا هے .

مھھور یورپین ودوان جے ، لی ، کارپینٹر نے اپنی کافی اور دی اور کافی ایمانی دی ریلیجٹس آب دی اور لگا میں ایمانی ایمانی ایمانی دی ریلیجٹس آب دی اور لگا میں ایمانی ای

"رباپار کا مقصد یہ ہے که دھرتی کی سب پیدارار کو اُسَی علی سب پیدارار کو اُسَی علی سب علی سب میں پروری ھوسکیں ، سائنس کا مقصد یہ ہے کہ سب چیوروں کی سچی سچی جانگاری سب میں پیدل جارے ، رائے تیٹی کا مقصد یہ ہے که سب دیش نیائے اور شانتی کے ساتھ ملکر پریم سے رہ سکیں اور سب کی برابر اُنٹی ھو ، اسی طرح دھرم کا مقصد یہ ہے کہ سب کے اندر ایک سچا وشواس ھو ، "

کاریهنتر صاحب کی آویر لکھی بات میں هم یه آور جورنا چاهيں گے: -- امردور فراور مزدوروں کا مقصد یہ ہے کہ اُوپر کے سب مقصدوں کو پورا کرنے کے اللہ جو سمھوک اور مدد ضروری هو ولا دين ، اور يه كسواليه سب متصد الك الك تب هي پوره هرسکتے میں جب منشید سبلے میں چار طرح کے آدمی یمنی براهس؛ چهتریه ویص اور شودر یعنی عالم عامل تاجر اور مودور ملکر اپنی اپنی طبیعتوں اور اپنی اپنی قابلیتوں کے أنوسار اینا اینا فرض پورا کریں اور اِس طرح سارے ساہے کو آگے لیہ جائیں ." اُس کا هادؤں کی بالکل غلط چام کی جات یات سے کرئی سمبندہ نہیں ، یہ چار طرح کے آدمی یعنی آیک وہ جو سائنس کی کھرجوں اور پڑھنے پڑھانے کا شرق رکھتے ھیں' دوسرے وہ جو انتظام اور جکومت کی قابلیت رکھتے میں تيسره ولا جو دهن ييدا كرال أور كمالي مين زيادة هوشيار هين اور چوتھے وہ جو مؤدوری اور سب کی مدد ھی کرسکتے ہیں' یہ چار طرح کے آدمی قدرتی طور سے ہر دیش کے الدر ہوتے ھیں . اس کے لئے ہر بھے کی طبیعت اور اس کی یوگنا کو ستجهنا اور اس کے آنوسار اسے سمالے سیوا کا موقع دینا يهى سنج سناج سنگهن أور سنج سناجوان كا طريقه في ، کارپینٹر صاحب کی بات میں هم یه بھی جورنا چاهتے هين كه--"وشواس أور وكهان يعنى أيمان أور علم ساته ساته چلنے چاھائیں . یہ دونوں ایک ھی سکے کے دو پہلو ھیں . یه دولس انت یعنی المحدود شان کے آویر قائم میں ارر اسی سے تعلی هیں جو اِس انت والّی یعنی مصدون دنیا . کے سارے عاموں کو اپنے اندر لئے ہوئے سنبھالے ہوئے اور ملائے ھوڑنے ھے .

कारका है इसारी, बाबी दुनिया है पाविकतर सम्ब वार्क काल देशों की, सारी वालीम बनावटी, वे असर, विक्रमी निक साक गुकसान करने वाली, और हर दर्जे कारी और सेंडमी है. हमारे क्टमों के अंदर वह गलत वास्त्री, राजत विचार और जीवन के राजत मकसव भर देखी है. इस बीकों के बोम के नीचे जो जीवन के केवल कारम है यह जीवन के असली मकसद को ही द्वाकर कदम कर देती है. विस्तावटी और विलक्क तुरुक वार्तों के बीक से यह जीवन के असली इसलों को दम घोंटकर मार कालवी है. इसे वडी वडी लागत की इमारतें चाहिए, बड़ी बड़ी समस्याहें चाहिए, बेहद मेंहगा चौर सरह तरह का साम सामान और घीजार चाहिए. वह बीजें चाहिएँ जो कार से कम परिायाई देशों की बिसात से कोई सम्बन्ध ही 🤲 बही रसती. इन सब बातों के होते हुए बाजकल की यह वासीम प्रकृति यानी कृत्रत से हमें बिलकुल त्र फेंक देती है, वहाँ तक कि कृष्रत के अध्ययन यानी मुताले में भी इसने पक दर्बनाक बनावटीपन पैदा कर रखा है. इससे अधिकतर केवल वे लोग पैदा होते हैं जो 'लरनेड प्राफ़ीशन्स' यानी विधा सम्बन्धी पेशों के लोग कहलाते हैं. यह तालीम न क्यों की अलग अलग तवियसों और अलग अलग काव-कियतों का पता लगा सकती है, न उसे परख सकती है और म उसे बढ़ने का भीका वे सकती है. इस वालीम में सब नान बाईस पसेरी के निर्देशी उसूल पर बच्चों की आत्माएँ इन्ल बाजी जाती हैं. इस बात की सख्त जरूरत है कि आजकल की इस तालीम की जगह एक अधिक क़द्रती, अधिक काम की और अधिक सस्ती तालीम बच्चों को दी जाने जो हर लड़के और लड़की को उसके लिए सब से व्यच्छे और सब से दिल पसंद काम के क्राबिल बना दे. वह तालीम जो बच्चों को जीवन के ठीक ठीक बादरी बतावे सीर इमारी सारी मानव सभ्यता के इसलाकी और रूहानी वावावरण को बदल दे, इससे पहले कि हम बरवाद हों.

पिछाम के बढ़े बढ़े विद्यानों का ध्यान इन बातों की वरक जाने लगा है. एक बहुत बढ़े विद्यान एडवर्ड सेगुइन, जिनका सारा जीवन तालीम के कामों में ही बीता, लिसते हैं:—"बगर इम अपनी रोजमर्रा की जिंदगी की मामूली देखां का अपने हाथों से ठीक ठीक उपयोग कर सकें, तो इसारी वालीम पर उसका बहुत बढ़ा असर पड़ सकता है. इन अमलों में इम वालीम के करियों और साधनों को तो बहुत अमलों ने इम वालीम के करियों और साधनों को तो बहुत अमलों तरह याद रखते हैं लेकिन जिन उसलों पर उन असलों कर साधनों से काम खेना जाहिए उन उसलों को मूल आते हैं. असलियत यह है कि वे उसल ही सब से असला करती हैं. इन उसलों को मूल जाना या उनकी असल के वेपरवाही करना सारी वालीम को विगाद देता है.

المال في المالي والله والله والله والله والله والله والله والله کرا الی اور جد درج خرجیلی اور مہنکی ہے . همارے بنجس کے الحقیدی علم ادری الم اور جیرن کے ظما مقصد بھر سائل المراس ك بدم ك ليج مر جون ك كيل سانعین هفن به چیون کے املی متصد کو هی دیاکر ختم کر دیائی کے بہرم سے یہ جہرں ك أصلى أموان كو دمكونتكر مار دالتي هـ ام برى برى الكعا ركى عمارتين چليئه برى برى تنظراهين چاهيه يحد مهلك أور طرح طرح كا سامان أور أوزار چاهلك وه چيزين چافلیں جو کم سے کم ایشیائی دیشوں کی بساط سے کوئی سیدھ ھی نہیں رکتیں ، ان سب باتوں کے موتے مولے آجال کی یع تعلیم پوکرتی یعنی قدرت سے همیں بالکل دور پیبنک دیتی ھے' پہلی تک که قدرت کے اددھین یعنی مطالعہ میں بھی اس نے ایک دردفاک مناولی بن بیدا کر رایا ہے اس سے ادھک تر كيول وسم لوك يعدأ هول هيل جو الرائق پرونيشلوا يعلى وديا سبلاهی پیشوں کے لوگ کہاتے هیں ، یہ تعلیم نہ بیشوں کے الك ألك طبيعتون أور الك الك قابليتون كا يتد لكا سكتى هـ؛ نه أس يرك سكتي ها أور نه أس يوهل كا موقع در سكتي ها . اس تعلیم میں سب دھان بائیس پسیری کے نردئی امول پر بچس کی آتبائیں کچل ڈالیجاتی میں ، اس بات کی سخت ضرورت هے که آجال کی اس تعالم کی جگه ایک ادھک قدرتی، ادھک کھے کی اور ادھک سستی تعلیم بچرں کو دیجارے جو ہر اوکے ارر لوکی کو آئس کے لئے سب سے اچھے اور سب سے دل یسند کلم کے قابل بذائمہ ، وہ تعلیم جو بچوں کو جیوں کے ٹھیک تھیک آصرہی بتارے اور هماری ساری مانو سبھیتا کے اخلانی اور روحانی واقاورن کو بدل دیم' اس سے بہلے کہ دم بریاد ھوں ۔

پیچم کے بڑے بڑے ودوائوں کا دھیاں ان باتوں کی طوف جانے نگا ہے ۔ ایک بہت بڑے ودوان ایدورڈ سیکوئن ٔ جنکا سارا جیون تعلیم کے کاموں میں ھی بیتا لکھتے ھیں: ۔۔ ''اگر ھم اپنی روز مرہ کی زندگی کی معمولی چھزوں کا اپنے ھانھوں سے ٹیپک ٹیپک ٹیپک ایدوگ کرسکیں تو ھماری تعلیم پر اس کا بہت بڑا اگر پرسکتا ہے ، اس معاملوں میں هم تعلیم کے ذریعوں اور سادھنوں سے کام لینا چاہئے ان امولین پر اس فرووی ہیں ۔ اصابت یہ ہے کہ وے امول ھی امولین کو بھول جاتے ھیں ۔ اصابت یہ ہے کہ وے امول ھی امولین کو بھول جاتے ھیں ۔ اساوی تعلیم کو بھول جانا یا اس کی طرف ہی بھاری تعلیم کو بھول جانا یا اس کی طرف ہی بھول جانا یا اس کی طرف ہی بھاری تعلیم کو بھول جانا یا اس

STATE OF THE PARTY WHEN THE REAL PROPERTY AND ADDRESS OF THE PARTY OF को या दूस करामके की उच्छिला अपनी जिलाह से परिमात कर देते हैं कि या तो करने समझने की बनमें विभाशी काय-तियत नहीं होती और या क्रांबियत होते हुए भी खबसर्जी कर्न जांचा कर देती है. इसी लेखक ने जाने चलकर लिखा है :- 'अबसे करी सकि जो बच्चों को समाज के अन्त्रे बीर कार के जार जारा सकती है प्रेम है. जिस तरह हम बच्चों की देखने सनने आदि की राफियों को बदावे हैं वसी तरह हमें दमके अंदर प्रेम की शक्ति बदानी चाहिए. इसके लिए नए भीषारों वा नए अध्यापकों की जकरत नहीं है. जहरत केंगल इतनी है कि हम बच्चों के विलों पर ठीक असर डालना और उन्हें खिलने का ठीक मौका देना सीखें. बर्च के दिल में यह जात बैठ जानी चाहिए कि दूसरे ग्रमते प्यार करते हैं और इसके बदले में बच्चे में यह उमंग जागनी चाहिए कि वह दूसरों से प्यार करे. यही हमारे वालीम की शुरुवात थी और यही उसका जालिरी मक्रसर है. साइस, साहित्य, बाक्टरी, फिलोसोफी सब हमारे बच्चों को कुछ न कुछ कायदा पहुँचा सकती हैं, लेकिन उन्हें मानव समाज का उपयोगी जंग केवल प्रेस ही बना सकता है. इसलिए बच्चों के सच्चे रक्षक और सच्चे बचाने वाले वही हैं जो कच्चों से प्यार करते हैं." यह प्रेम और इसके साथ मनुष्य स्वभाव के कुछ उसूल ही सच्चे सोशालियम यानी समाजवाद की जुनियाद हो सकते हैं. इसलिए दुनिया के सब से बड़े अञ्चापक वही हैं जो मनुख्य जाति से सब से अधिक प्रेम करते हैं, यानी उन बढ़े बढ़े धर्मों के क्रायम करने वाले जो धर्म लोगों को एक दूसरे के साथ और सब को एक इंश्वर अस्लाह के साथ बाँधते हैं और जिन्होंने अपने अपने समय में नई नई सभ्यताओं को जन्म दिया.

इमर्सन ने कहा है :— "सब प्रेम के हवाले कर दो. उस उस पर पूरा मरोका करो . प्रेम ही ईश्वर है. प्रेम के लिए आसमान के सब दरवाजे खुले हुए हैं."

सभ्यता या तहजीन तन ही सभ्यता या तहजीन कहला सकती है जब उसके अन्दर सनके भले की इच्छा सन तरफ समाई हुई हो. इतना ही नहीं, हरेक के अंदर हर दूसरे के साथ प्रेम और हमद्दीं हो और उसी के अनुसार अमल हो. यह अमल ठीक तभी हो सकता है जब हम में अपने ऊपर कानू हो, सान पान और सन नीजों में एक बीच का रास्ता हो, हिम्मत हो, बरबारत हो. और अपना अपना कर्ज पूरा करने की जनरहस्त लगन हो. वहीं सच्ची सभ्यता कहलाने की हकदार है जिसमें भोग विलास, वर्मक, नकरत, लालच, हसद, स्वार्य और हर इन सबको ऊपर लिखे गुर्गों ने पूरी तरह अपने कार्य में कर रक्खा हो. जनरहस्ती के साम्यवाद और कार्यकामाना व्यक्तिवाद और निर्दय प्रावाद

Year and the second

النباء كو أس الله اللي الله عد أوجل قر ديات هين عديا تو أأبيين سمعين كي أي مين دماني تابليت نهين موتي أو القابليت عوت هول عن خود فرقى إلهن ألدها كو ديتي شکلی جو بھوں کو ساہے کے لچے اور کام کے انگ بنا سکتی الله وريم الله . جس طوح هم بعوس كي ديمين سلله أدى كي شعمیں کو برھاتے میں اسی طرح ھمیں آن کے اندر پریم کی شعفی برهانی جایئے . اس کے نئے ارزارس یا نئے اصفیایموں كي فورت تهين هي فرورت كيول اتني هي كه هم يعين کے داوں پر ٹھیک اثر ڈالنا اور انہیں کیلنے کا ٹھیک مرقع دینا سیکھیں ، بچے کے دل میں یہ بات بیٹھ جانی چاھئے که دوسرے مجھے سے بیار کرتے میں اور اس کے بذلے میں بجے میں یہ اُمنگ جاگنی چاہئے که وہ درسورں سے پیار کو ۔ . یہی هماری تعلیم کی شروعات تھی اور یہی اس کا آخری مقصد هے ، سائنس' ساھتيء' ڌائري ، فلوسفي سب ھمارے پنچين کو كمه نه كجه فايده پهنچا سكتى هين اليكن أنهين مانو سماي كا أَيْهِركِي أَنْكَ كِيول يريم هي بنا سِكنا هي أس لله بحريل کی سجے رکشک اور سجے بحوالے والے وهی هیں جو بحوں سے بھار کرتے میں " یہ پریم اور اُس کے ساتھ منش سبھاء کے کھے اصول هی سنچے سوشازم یعنی سماج واد کی بنیاد هو سکتے هیں۔ اس لئے دنیا کے سب سے بڑے ادھیاپک وھی ھیں جو منشیہ جاتی سے سب سے ادھک پریم کرتے ھیں کیعلی ان برے برے چھرمیں کے قائم کرنے والے جو دھرم لوگیں کو ایک درسرے کے ساتھ أور سب كو أيك أيشور الله كے ساتھ باندھتے ھيں اور جانيوں نے أينے اپنے سيے ميں لئی تئی سهبيتاؤں کو جام ديا .

آمرسن نے کہا ھے:۔۔۔ درسب پریم کے حوالے کردو ، اُس پر پورا بھرسه کرد ، پریم هی ایشور ھے ، پریم کے اللہ آسان کے سب دروازے کہا ھوٹ ھیں ۔''

سبهیتا یا تہذیب تب هی سبهیتا یا تہذیب کہلا سکتی ہے جب اس کے اندر سب کے بہلے کی اِچھا سب طرف سمائی هرئی هو ، اِننا هی نہیں' هر ایک کے اندر هر دوسرے کے سانه پریم اور همدردی هو اور اُسی کے انوسار عمل هو ، یہ عمل تهیک تب هی هوسکتا هے جب هم میں اپنے اوپر فابو هو' کھان پان اور سب چیروں میں ایک بیچ کا راسته هو' همت هو' بوداشت هو اور اپنا اپنا درض پورا ارنے کی زبردست لکن هو ، وهی سچی سبهیتا کہلائے کی حقدار هے جس میں بهوگ رائس' کھی سچی سبهیتا کہلائے کی حقدار هے جس میں بهوگ رائس' گھیند' نفرت' لائج' حسن' سوارته اور تر اِن سبکو اوپر لکھے گئوں نے پرری طرح اپنے قابو میں کو رکھا هو ، زبردستی کے سامیعواد اور ظالمانه ویکٹی واد اور نودئی پونجے واد

क्षित्र कर है। से कार सिके पूर्वों की ही मरद से कायम हो कारत हो के कार सिके पूर्वों की ही मरद से कायम हो कारत

अपन दुनिया इस प्रावाद और सैनिकवाद के नीय प्रावादित सहुप रही है क्योंकि इसारे समाज के अंदर करर क्योंकी हुनुंब इवर से क्यर तक कैसे हुए हैं. दुनिया की क्योंकी अगया इसीलिए आज प्रावाद, सैनिकवाद और विकास की शिकार है. तेज से तेज जलने वाली लोहे और कीलाद की मशीनें और जालाक से वालाक शासकों की कोजनाय, बढ़ी से बढ़ी राजनीति या विकने विकने शब्द अंदों बाजी कूटनीति, पेसे ऐसे शब्द जिनके कर्य रोज बदलते हहें, इस सब से दुनिया का दुल दूर नहीं हो सकता. हमारे किसों के अंदर सक्वी आर्मिक भावना यानी एक दूसरे के काम मेम, एक दूसरे के साथ हमदर्श और एक दूसरे के वाल की इच्छा होनी वाहिए सक्वे समाजवाद की बुनियाद इसी चीज पर पढ़ सकती है कि हम सबके अंदर एक ही जान, एक ही आरमा को अनुभव करें, सबके अंदर एक आस्ता को देवना ही परमारमा को देवना है.

जो अध्यापक यह जाहता है कि वह मानव समाज में इस तरह की सभ्यता के फैलाने में मदद दे सके उसके शिष बकरी है कि पहले वह इस एकता को अपने अंदर बातभव कर ते. इसी से इसके अंदर सब तरह के सच्चे विचार और सच्चे भाव पैदा होंगे. इसी के अनुसार वह क्लों को ताजीम देगा और क्लों के दिलों में आत्मा की इस एकता के भाव को जगावेगा. इस तरह की वालीम से ही इसारी सभ्यता सच्ची समाजवादी सभ्यता हो सकती 🐍 वार्मिक शिक्षा यानी मजहबी तालीम का यही मतलब है. वेडे पुरोहितों और मुस्ला पादरियों के स्वार्थ और उनकी छलतियों के कारण जाज बहुत से लोगों को धर्म या मजहब के नाम से चिद् हो गई है. इसलिए हम ऐसी तालीम को अध्यात्मक वा रहानी तालीम भी कह सकते हैं. अंग्रेजी बाबीस की युनियाद अक्सर लोग तीन आर बताते हैं [किसमा पहना और हिसाव]. अगर हम अंग्रेजी शब्द विकालन को ठीक ठीक सममें वो रिलिजन का आर [R] काकीम का चौथा बार होना चाहिए और वाकी तीनी 'आरों' से यह कहीं क्यादा जहम और ज़रुरी है.

اور بھیلی معاشوات کی جات سویا سنانہوان مالو عرب کے لیے العم کلوں کی عن مدد سے نائم عو مکتا ہے۔

جو المعالك يه جاهنا في كه وه مانو سماج مين أس طرح کی سیدتا کے بعیلانے میں مدد درے سکے اُس کے لئے ضروری هے که يہلے وہ اس ايكا كو اپنے اندر انوبور كرام ، إسى سے اِس کے الدر سب طرح کے سچے وچار اور سچے بہاؤ پیدا ھونکے . اسی کے انوسار وہ بھوں کو تعلیم دیکا اور بھوں کے دلیں میں آتما کی اس ایکٹا کے بھاؤ کو خکاریکا ، اس طرح کی تملیم سے عی هماری سبهیتا سچی ساے دادی سبهیتا هرسکتی هم. دهارمک شکشا یعلی مذهبی تعلیم کا یهی مطلب هم. پلتم پررھتوں اور ملا یادریوں کے سوارتھ اور ان کی غلطیوں کے کارن أج بہت سے لوگی کو دھوم یا منھب کے نام سے چڑھ ھوکئی ھے . آس لئے هم ایسی تعلیم کو آدهیاتیک یا روحانی تعلیم بھی کیت سکتے میں ، آنکریزی تغلیم کی بنیاد اکثر لوگ تین آر بتآتے میں (لعهنا وهنا أور حساب) . اگر هم أنكريزي شبد ريايتون كو ثهیک تبیک سمجهین تو ریلیجن کا آر (R) تعلیم کا چوتها اًر (R) مون چاھئے اور بائی تینوں 'اروں' سے یه کہیں زیادہ اھم اور ضروری 🛳 .

डाक्टर मूपेन्द्रनाथ दश

184 के यूर्व में मीयों के जाह्य सेनापति पुष्यमित्र सुंग ने राजा हराइय को सार कर सीय सिंहासन पर करवा कर लिया. पुष्यमित्र के सिंहासन पर बैठते ही जाह्य व्य-वं की पेसी जारदस्त लहर छठी जिसने सारे भारती समाज को व्हला बिया. पुष्यमित्र पहला जाह्य या जो कभी किसी राज सिंहासन पर बैठा और इसके बाद से जाह्यों की गिनती भी शासक बया में होने लगी. पेतिहासिक उल्लेख मिलता है कि इस घटना की यादगार में पुष्यमित्र ने अश्वमित्र का समारोह किया. इस यह के आयोजन से पुष्यमित्र का हरावा शायव बैदिक कमकाएड को फिर से यात् करना रहा होगा. 'मक्जुशी मृतकस्प' का बीद लेखक लिखता है कि सिंहासन पर बैठने के बाद पुष्यमित्र ने बीद मठों को गिरवा दिया, बीद-स्थित-चिन्हों को बरवाद करवा दिया और बड़े बढ़े सक्यरित्र बीद मिक्खुओं को करला करवा दिया.*

इस सम्बन्ध में ऐतिहासिक मतभेद है कि पुष्यभित्र की तरक्की कहाँ तक त्राक्षणों के द्वद्वे का नतीजा था. कि इसमें कोई सन्देह नहीं कि बौद्ध सत्ता के खिलाफ त्राक्षणों की प्रतिक्रिया उस समय अपनी चरम सीमा पर पहुँची जब बलक के यूनानी राजा मेनान्दर ने भारत पर चढ़ाई करके साकेत (अवच) तक के प्रदेशों पर क्रन्या कर लिया. उस मनावैक्षानिक मौके से फायदा उठाकर सारा खिमयाचा सन्नाद अशोक के उत्तराधिकारी के सर पर डाल दिया गया, जो, अपने महान पूर्वज के आदेश के अनुसार दुरामन को ताक़त से जीतने के मुकाबले में बेम से जीतने का कायल था.

सुंग सेनापति के नेतृत्व में माझगों की इस प्रतिक्रिया को स्वर्गीय भी जायसवात ने कदिवादी प्रतिक्रान्ति के नाम से पुकारा है. § इस प्रतिक्रान्ति (Counter Bevolution) की पूरी तसबीर इसे 'सानव धर्मशास्त्र' में मिलती है. इसी मानव धर्मशास्त्र को 'महुस्यृति' इहा जाता है. भी जायसवात के महुसार शह धर्मशास्त्र पुरुषित्र के ससब तिसा गया

داكلو بهريهليو ثاته دس

المحالات پررو میں موریوں کے برافس سینایتی پرهید متر سینایتی پرهید متر سینایتی پر داخت کرایا ، سینایت نے راجا برهدرتو کو مارکو مورید سنتهاسن پر دیدہ کی آیسی پر بیٹیتے هی براهس دیدہ کی آیسی پر بیٹیتے هی براهس دیدہ کی آیسی پرشیده کو دها دیا ، پرشیده کو دها دیا ، پرشیده کو به بیان کی بادگر میں آیس کے بعد سے براهسلس کی گلتی بھی شاسک اورن میں هوئے اگی ، آیتہاسک آلیکو ملکا هے که اِس گیتنا کی بادگر میں پرشید متر نے اشرمیده یکید کا سماروہ کیا ، اِس بناید کے آبوجی سے پرشید متر کا ارادہ شاید ویدک کرمائڈ کو پور سے چالو کرنا رہا ہوگا ، تملیکو شری مول کلپ؛ کا بودھ لیکھک لکھتا ہے که رہاد کروا دیا ، وردہ متیوں کو گروا دیا ، وردہ ایدہ سیتورتر دیا ، وردہ ایدہ سیتورتر دیا ، وردہ ایدہ سیتورتر دیا ، وردہ ایدہ سیدرتر دیا ، وردہ ایدہ سیتورتر دیا ، وردہ ایدہ سیتورتر دیا ، وردہ ایدہ سیتورتر کو قتل کروا دیا ، و

اِس سبنده میں اِیتہاسک مصبهید هے که وشهه متر کی ترقی کہاں تک براهمنوں کے دیدیه کا نتیجه تھا ، گارس میں کوئی سندیم نہیں که بوده ستنا کے خلف براهمنوں کی پرئیکریا اُس سے اپنی چرم سیما پر پہونچی جب بلنے کے یونائی راجه مینائدر نے بھارت پر چڑھائی کرکے ساکیت (اُوده) تک کے پردیشوں پر قبقه کرلیا ، اُس منوریکیائک موقع سے فایدہ اُٹھاکو سازا خیمازہ سراے اشوک کے آدرادھیکاری کے سر پر گائی دیا گیا، جو اپنے مہاں پررم کے آدرادھیکاری کے سر پر کر طاقت سے جیتنے کے مقابلے میں پریم سے جیتنے کا قابل تھا ،

سونگ سیناپتی کے ٹیترتو میں براهمنوں کی اِس پرتیکریا کو سورگیت شری جیسوال نے روزعی وادی پرتی کرائتی کے قام سے پکارا ہے، گاِس پرتیکرائتی (Counter Revolution) کی پوری تصویر همیں اسانو دهرم شاستر، میں ملتی ہے ۔ اُسی مائو دهرم شاستر کو آمنواسمرتی، کیا جاتا ہے ۔ شری جیسوال کے آنوسار یہ دهرم شاستر پرشیت متر کے سے لیا گیا ۔

^{*-}Jayaswal-"An Imperial History of India". p. 18.

^{*-}H. C. Rai Chaudhari-"Political History of Ancient India"

__Jayaawai__"Manu and Jagnyavalkya.', pp, 40-41.

कार का असेनाम की व्यवस्थाओं को देखते हुए पता बताता के कि बसका एक चरेरच पुन्यतित्र के विश्वसम्भात का विश्व असर्वंच भी था. के 'नारद स्मृति' के अनुसार इसका स्वाधिता सुमावि आगंब नामक व्यक्ति था. के या कम से कम बस्ते पुरानी 'मानुस्मृति' में दक्षियान्सी नई व्यवस्थाएं आमिक कर दी. यही एक कार्या हो सकता है जिससे हमें अस्तित कर दी. यही एक कार्या क्यास्थाओं में जबरदस्त सिरोक कर जामास होता है!

की आदमी भी ज्यान से इस 'मानव धर्मशाख' को बहुमा बसे साफ साफ दिलाई दे जायगा कि इस धर्मशास्त्र में की दिल्य के धर्मशाख जीर मीयों के शासन नियमों का विवादक सामा कर दिया, इसके सकों में नीचे के तीन वर्णों के प्रदिक्त महास्त्र भरी हुई है. शहों के प्रति और दूसरे वर्णों के प्रति इसकी नफरत मित्र हुई है. शहों के प्रति और दूसरे वर्णों के प्रति इसकी नफरत विलक्षण साफ है.† जायसवाल इस धर्मशाख के धन्दर धराजनितक, सामाजिक और धार्मिक द्रेषभाव भरा हुआ है." हो सकता है कि इसीलिए इस धर्मशाख को इतना मान और इतनी प्रतिष्ठा मिली. इतनी शीप्रता के साथ जो यह मान लिया गया उसका सबव यह हो सकता है कि राजा ने इसे अपनी स्वीकृति दी और यह सुंग राज्य का सामा हुआ व्यवस्था-शाख हो गया. अ

मानव धर्मशाका या मजस्यति की छानवीन करने पर क्खरों आपको इस प्रकार की व्यवस्था मिलेगी कि किन क्षाक्षतों में जाप किस प्रकार के राजा को नष्ट कर सकते हैं [7-27,28,111) शायद पुष्यभित्र के विश्वासघात को आवश करार देने के लिये ही यह व्यवस्था हो, फिर यह शास गरों के बिलक़ल खिलाफ है. इसमें नाहाणों की आदेश है कि वे शह राजाओं के राज्य में न रहें (4-61) कोई शह न्यायाधीश नहीं हो सकता (8-20), मौर्य जमाने में शहीं के ख़िलाफ ऐसी कोई ठकावट न थी. इस शाका के अनुसार जिस राज्य में बहुत बड़ी ताबाद में पढ़े लिखे शह सहते हैं और जहाँ हिज नहीं रहते वहाँ अकाल और तरह वरह की कीमारियाँ हो जाती हैं और वह राज्य बहत जल्दी अब हो आता है (8-22). यह व्यवस्था साफ साफ मीर्थ राज्य के विवस थी. इस शास के शरू के श्लोकों में बाह्यसों को शह कियों से विवाह की इजाज़त थी (3,12-13), लेकिन बाद के रलोकों में यह इजाजत बापस ले ली गई (3.14-19). इसमें लिका है-"इतिहास और कथाओं में कहीं इस बात का विक नहीं है कि माझगों और क्षत्रियों ने आपत् काल

مان دور موروس کے شاس نیموں کا باتک خاتمہ کوئلیہ کے ارتب عاصبہ دیالی دیم جائیا که اس دورم شاستر نے کوئلیہ کے ارتب عاصبی اور موروس کے شاس نیموں کا باتک خاتمہ کردیا، اس کے معتبر میں فیصلے کے تین ورثون کی طرف نفوت بوری ہوئی اور دوسرے ورثوں کے پرتی اِس کی لنہ شودور کے پرتی اِس کی اُنہ اِس مائو عقوم شاستر کے اُنہ اُنہ اُنہ اُنہ اسلمک اور کا اُنہ کہ اِس مائو عقوم شاستر کے اُنہ اُنہ اور اِنٹی پرتشنیا ملی اِتنا مان اور اِنٹی پرتشنیا ملی اِتنا میں اُنٹی میں اور اِنٹی پرتشنیا ملی اِتنا میں اُنٹی میں اور اِنٹی پرتشنیا ملی اِتنا میں اُنٹی میں اور اِنٹی برتشنیا ملی اِتنا میں اُنٹی میں اور اِنٹی برتشنیا مائی اُنٹی میں اُنٹی میں اُنٹی میں اور اُنٹی برتشنیا مائی اُنٹی میں اُنٹی میں اور اِنٹی برتشنیا مائی اُنٹی میں اُنٹی کی اُنٹی میں اُنٹی م

مائیو . دهرم شاستر یا منوسرتی کی جهان بنین کرنے پر اُس میں آب کو اِس پرکار کی ویوستھا ملیکی که کن حالتوں میں آپ کھی دیکھ کے راجہ کو نشت کرسکتے میں (7-27,28,111). شاین فیطیع می کی ہشواس گیات کو جایز قرار دیاء کے لئے می یه ویوستها مو ، پهر یه شاستر شودروں کے بالکل خالف هے ، اس میں بوامسنوں کو آدیش ھے که وے شودر راجازں کے رلجيه ميں نه رهين (4-61) كوئى شودر نيايادهيش نهيں هوسكتا (8-20). مهورية زماني مين شودرون كے خلاف أيسى كئى ركلوك له تهي ، إس شاستو كے أنوسار جس راجيه ميں بهت بین تعداد میں برھ کھے شودر رہام میں اور جہاں دوئم لہیں رہتے وہاں اکال اور طرح طرح کی بھاریاں ہو جاتی ہیں اور وا راجع بہت جلس نشف هر جانا فے (8-22). يه وبرستها صف صاف مردد رأجهد كے ورودہ تھى . اِس شاستر كے شروع کے شلوکوں میں براھمارں کو شودر اِستریوں سے وواہ کی اجازت کی شاوکوں میں اجازت اور ایک الموکوں میں یه ایجادی واپس له لی گئی (19-3,14). اِس میں میں ایس بات ایس بات اور کتیاؤں میں کہیں اِس بات كا فكر فيون هے كه بواهداري اور جهاريوں نے أيستكال

⁻Ibid.

⁻Ibid also Jolly-p. 91.

¹⁻Ibid-p. 199.

^{#-}Jayaswal, of. cit. pp. 40-41

में भी शह कियों से विवाह किया हो (8-14)." यह कितनी अनेतिहासिक बात है! प्रराने इतिहास में और अर्थशास में ब्रासवर्धा विवाह के काफी उस्तेख मिलते हैं (अर्थशास भाग 8, अध्याय 7-164). मानव धर्मशास में एक जगह लिखा है- "वासी के पुत्र उसके स्वामी की सम्पत्ति हैं" (9-55). अर्थात् यद् धर्मशास पशुओं, घोड़ों और गुलाम मृत्व्यों की जीलाय में कोई कर्क नहीं करता. इसके विपरीत द्यर्थशास में साफ लिखा है कि दासी पत्र भी 'सार्य' है. सम्राट अशोक ने इस बात का ऐलान किया था कि कानून की नजर में बाह्मण और शुद्र सब बराबर हैं, किन्तु मानव धर्मशास्त्र ने सम्राट सशोक की इस व्यवस्था को रह करके एक ही जुर्म में जाहायों और शुद्रों के लिये अलग अलग सजाओं की व्यवस्था कर दी. मानव धर्मशास्त्र के अनुसार यदि कोई द्विज किसी शुद्र के साथ जालिमाना बर्ताव करता है तो उसे कम सजा मिलेगी, किन्तु यदि कोई शुद किसी बिज के साथ ऐसा वर्ताव करता है तो उसे ज्यादा सजा मिलेगी (8-267,377;866-376). इसके अनुसार ब्राह्मणों का पुराना द्वद्वा फिर क्रायम हो गया. किन्त शहों के प्रति बैरभाव की चरम सीमा उस समय पहुंची जब यह व्यवस्था दी गई कि-"यदि कोई शुद्र किसी द्विज को गाली दे तो उसकी जीभ काट ली जाय, क्योंकि वह नीच है (8-270). † इसके विपरीत अर्थशास कहता है कि-"राजा ऐसे परोहित को बरखास्त कर दे जो आज्ञा देने पर भी किसी अयाज्य को वेद पढ़ाने से इनकार करता है, या जो किसी अयाज्य के यह में शामिल होने से इनकार करता है (अर्थशास भाग 1, अध्याय 10-16). अर्थशास्त्र की इस व्यवस्था के अनुसार शुद्रों को वेद पढ़ने और यज्ञ करने दोनों का इक था. मानव धर्मशाख ने इस अधिकार को जीन लिया. यही नहीं, आगे चलकर मानव धर्मशास कहता है—"यदि कोई शुद्र किसी द्विज के नाम और जाति की चरचा अपमानजनक राज्यों में करता है तो दस अंगुल लम्बी लोहे की कील उसके मुंह में घुसेड़ देनी चाहिये" (8-271). एक दूसरी जगह लिखा है-"यदि कोई अद्विज घमएड फे साथ किसी ब्राह्मण को उसके कर्तव्य का बोध कराथे तो राजा को ऐसे श्रद्धिज के मुंह श्रीर कान में जलता हुआ गरम तेल ढलवा देना चाहिये" (8-272). एक और जगह लिखा है- "शरीर के जिस अंग से कोई शुद्र अंची जाति वाले को चोट पहुँचाये उस शुद्ध के उस अंग को काट डालना चाहिये. यह मनु की शिक्षा है" (8-279). वर्ग व्यवस्था का इससे क्यादा स्त्रीफनाक रूप और क्या हो सकता है १

میں بھی شودر اِستریوں سے رواہ کیا ہو (3-14)،4 به التلي التهاسك بات في إيراني إنهاس مهل أور أرته شاستر میں أسورن وواء كے كافى أليكھ ملتے هيں (أرته شاستر بهائ 3 ادهیانه 164-7). مانو دهرم شاستر میں ایک جکه نعا ہے۔۔"داسی کے پتر اُس کے سوامی کی سبیتی میں" (9-56). أرتبات يه دهرم شاستر پشوؤن كورون اور علم منشيون کی آوالد میں کوئی فرق نہیں کرتا ۔ اِس کے وپریت ارته شاستر میں صاف لتھا ہے که داسی پتر بھی 'آریم' ھے . سمرات اشرک ل إس بات كا اعلان كيا تها كه قالون كي نظر ميس برأهمن أور شردر سب برابر هين کنتو مانو دهرم شاستر في سمرات أشوك کی اِس ویوستها کو رد کرکے ایک هی چرم مهی براهمانوں اور شودروں کے لئے الگ الگ سزاؤں کی ویوستھا کردی . مانو د درم شاستر کے انرسار یدی کوئی دوئیج کسی شودر کے ساتھ طاامات برتاؤ کرتا ہے تو آسے کم سزا ملیکی کنتو یدی کوئی شردر کسی دوئیم کے ساتھ ایسا برتاؤ کرتا ہے تو اُسے زیاعہ سزا مليكي (376-366; 267,277-8). اِس كِ أنوسار براهمنوں کا پراٹا دیدیہ پھر قایم ھوگیا ۔ کنتو شودروں کے پرتی بیر بھاؤ کی چرم سیما اُس سے پہونچی جب یه ویوستها دی گئی که حدد ایدی کوئی شودر کسی دوئع کو کالی دے تو اُس کی جیبھ کات لی جائے' کیونکہ وہ نیچ ھے ۔† اِس کے وہریت ارته شاستر کیتا مے که-"راجه ایسے پروهت کو برخاست کردے جو آگیاں دینے پر بھی کسے آیاجیہ کو وید پڑھانے سے اِنکار کرتا ہے ۔ یا جو کسی ایاجیه کے یکیه میں شامل هوئے سے اِنکار کرنا ہے (أرته شاستر بهاك ٢٠ ادهيائي 16-10). ارته شاستر كي اِس ویوستھا کے آنوسار شودروں کو وید پڑھنے اور یکیھ کرنے دونوں کا حق تها ، مانو دهرم شاء تر نے اِس اده یکار کو چهیں لیا . یہی نہیں' آگے چاکر مانو دھرم شاستر کہتا ہے۔۔ "یدی کوئی شودر کسی دوئیم کے نام اور جاتی کی چرچا ایمان جنک شیدوں میں کرتا ہے تو دس الکل لیبی لوھے کی کیل اُس کے منه میں گھسدتر دینی چاھئے" (271-8). ایک دوسری جات لکھا ھے۔۔"یدی کوئی ادوئیم گھمنڈ کے ساتھ کسی براھمن کو اُس کے کہ تویہ کا بودھ کرائے تو راجہ کو ایسے ادوئیم کے منہ آور کان میں جالمًا هوا كرم تيل دَلوا دينا چاهئے" (8-272). إيك اور جكه لكها ھے۔ "شریر کے جس انگ سے کوئی شودر اُونجی جاتی والے کو چوٹ پہونچائے اُس شودر کے اُس انگ کو کاف ڈالنا چاهئے. یہ منو کی شکشا ہے" (8-279). ورن ویستها کا اِس سے خوفناک روپ اور کیا هرسکتا هے ؟

t-'The Laws of Manu'-translated by Buhler.

इस तरह मानव धर्मशास ने मौर्यों की शासन व्यवस्था के करावरी के चसल को एक कलम मिटा दिया और शही की सम्पत्ति के अधिकार से रोक विया, धर्मशास के अनुसार -- "महाया को दास-पाद की सम्पत्ति कौरन जब्त कर लेनी बाहिये, क्योंकि शुद्र की अपनी कोई सम्पत्ति नहीं" (8.417). इसके जलावा 'वास को सम्पत्ति रखने का कोई अधिकार नहीं क्योंकि इसकी सम्पत्ति इसके स्थामी की सम्पत्ति है" (8-416). इसके विपरीत अर्थशास दास को सम्पत्ति के मालिक होने का अधिकार देता था (अर्थशास 3, अध्याय 13-182). अर्थशास के चतुसार—"वास की सम्पत्ति उसकी मौत के बाद इसके रिश्तेवारों को मिलेगी और रिश्तेवारों के अभाव में उसके स्वामी को" (उपरोक्त 183). एक ब्रोर धर्मशास ने शत्रों के लिए घार असविधाएं कर दी और दसरी आर नाइएगें के लिये विधान किया—''यदि धन के अभाव में राजा मृत्यु शय्या पर पड़ा हो तब भी उसे वेद पढे हए माध्यण से राज-कर नहीं लेना चाहिये" (7-133). यहां भी भरोक के विधान को तोड़ा गया. मानव धर्मशास आगे चलकर कहता है - ''दास, दस्य और चांडाल को गवाह के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता" (8-66). इसके विपरीत अर्थशास्त्र शुद्र को गवाह के रूप में स्वीकार करने में कोई ऐतराज नहीं करता (अर्थशास 3, अ० 11-174). धर्मशास के अनुसार शह गवाह के शपथ लेने के बाद भी उसे जिसमानी तकलीक देकर उसके मूठ-सच का पता चलाया जाता था जबकि कौटिल्य के अनुसार किसी भी गवाह की गवाही लिखकर उसकी साधारण रूप से जांच करानी चाहिये, किसी गवाह को शारीरिक यातना पहुंचान की जरूरत नहीं. आर्थिक दृष्टि से भी धर्मशास्त्र ने शही की हालत अत्यन्त असुविधाजनक रखी है. धर्मशास्त्र के अनुसार-"महाजन का ब्राह्मण कर्जदार से दो पाना मतिशत, क्षत्रियों से तीन पाना प्रतिशत, वैश्यों से चार पाना प्रतिशत श्रीर श्रुद्रों से पांच पाना प्रतिशत व्याज लेना चाहिये" (8-142) जबिक कीटिल्य के अनुसार "हर सैकड़ा हर महीने सवा पाना ब्याज लेना ही जायज है." (अर्थशास 3, अ० 11-173). व्याज के सम्बन्ध में अर्थशास ने विविध जातियों के बीच कोई तमीज नहीं की.

इस तरह मानव धर्मशास्त्र ने अशोक के समय की क्यबहार समता को बिलकुल नष्ट कर दिया. ब्राह्मणों को किसी भी अपराध में मृत्यु द्गड देना नाजायज करार दिया. "ब्राह्मणों ने चाहे जो अपराध किया हो उसकी हत्या कभी न करनी चाहिये. केवल उसे देश से बाहर निकाल देना चाहिये, उसकी सारी जायदाद उसे दे देनी चाहिये और उसकी जरा सी भी जिसमानी तकलीक नहीं पहुंचानी चाहिये." (8-380). "ब्रह्मण वध से ज्यादा बुरा दुनिया में कोई दूसरा पाप नहीं है. इसलिये राजा को दिमारा में

اس ماتو دهرم شاسار نے موریوں کی شاس ریوستیا کے بوابری کے اصل کو ایک قلم مٹا دیا اور شودروں کو سیتی کے ادھیکار سے روک دیا . دھرم شاستر کے آنوسارسس^{ور} براھس کو داین هودیر کی سبهتی نوراً ضبط کرلینی چاهنی کیونک شودر کی اُولی کوئی سمیٹی نہیں" (417-8). اِس کے علوہ ''داس کو سنھتی رکھنے کا کوئی ادھیکار نہیں کیونعہ اُس کی سبعی اُس کے سوامی کی سمہتی ہے'' (416-8)، اِس کے دیریت اِرت شاستو داس کو سمیتی کے مالک عولے کا اُدھیکار دیتا تیا (ارتو شاستو 3 أدههائم 182-13). أربه شاستر كے البسار--"داس كى سبھٹی اُس کی موت کے بعد اُس کے رشتعداروں کو طبیعی اور رشتعداروں کے ابھاؤ میں اس کے سوامی کو" (آیروکت-183). ایک اور دھرم شاستر نے شودروں کے لٹے گھرر آسویدھاتیں کردیں اور دوسری اور براهمنوں کے لئے ودھان کیا۔۔۔"یدی دھن کے ابهای میں راجہ مرتبوشیا پر بڑا ہو تب بھی آسے وید بڑھے ہوئے براهس سے رأے - كر نہيں لينا چاعيه" (133-7). يہاں بھى افوک کے مدهان کو توزا گیا ، مانو دهوم شاستر آگے چلکو کہتا ھے۔۔ووں اس ور جاندال کو گواہ کے روپ میں سوئیکار نہیں کیا جاسکتا'' (66-8)، اِس کے ویریت اُرتھ شاستر شودر کو گواہ کے روپ میں سوٹیکار کرنے میں کوئی اعتراض نہیں کرتا (ارته شاستر 3 الف 174-11). دهرم شاستر کے آنوسار شودر گراہ کے شہتے لینے کے بعد بھی أسے جسمانی تعلیف دیعر أس كے جهرت سے کا پتہ چلیا جاتا تھا جبکہ کوتیلہ کے انوسار کسی بھی گواہ کی گواھی لکھکر اُس کی سادھارن روپ سے جانبے کرانی چاھٹے کسی گواہ کو شاریرک یاتنا پہونچالے کی ضرورت نہیں . آرتهک درشتی سے بھی دھرم شاستر نے شودروں کی حالت البنت اسودهاجنک رکھی ہے . دھرم شاستر کے آنوسار۔ "سهاجي كو براهس قرضدار سے دو پائيا پرتيشت چهتريوں سے تين يانا پرتيشت ويشيوں سے چار پانا پرتيشت اور شودبوں سے پائے پانا پرتیشت بیاج لینی چاھئے" (8-142) جبکه كوتليم كي أنوسار وهم سيكوه هر مهين سوا يانا بهاج لينا هي جايز هـ " (ارته شاستر 3' 173-11-A). بياج كي سمبنده میں اُرتہ شاستر نے ووقع جانہوں کے بیچے کوئی تمیز نہیں کی، اِس طرح مانو دھرم شاستر نے آشوک کے سے کی ویوعار سدنا کو بالکل قشف کردیا . براستوں کو کسی بیی ایراده میں مرتبع دائد دينا الجايز قرار ديا. "براهس لے چاہے جو اپرادھ كيا هو أس كي هتيا كبهي تع كرني چاهئے. كيول أسے ديش سے باہر نکال دیا چاہئے اس کی ساری جایداد أسے دے دینی چاهائے اور اس کو ذراسی بھی جسانی تکلیف نہیں بهرنچانی چاهنے" (380-8). "براهس بده سے زیادہ برا دنیا میں دوسرا باب نهين هـ إس لله راجه كو دماغ مين

भी इस विकार की नहीं लाना चाहिये कि उसे किसी ब्राह्मण की इत्या करनी है" (8-381). दूसरी धोर शुद्र के सम्बन्ध में लिखा गया है—"बदि कोई स्वामी शुद्र को दासता से गुक्त भी कर दे, तब भी बह शुद्र स्वतन्त्र नहीं हो सकता. उसके लिये गुलामी स्वाभाविक है, इसलिये कीन उसे गुलामी से गुक्त कर सकता है ?" (8,412-414).* इस तरह शुद्रों को अर्थशास और सम्राट अशोक ने समाज में जो बराबरी का दरजा दिया था, उसे 'मानव धर्मशास्त्र' ने वापस ले लिया.

मानव धर्मशास्त्र ने जन्म श्रीर उत्तराधिकार को भी खास बहमियत दी है. न मानव धर्मशास के मुताबिक-"सब बर्गों में जो बच्चे शासालुसार विवाहित कियों से (ऐसी बियों से जो सजातीय हों और कुमारी के रूप में विवाह में हासिल की गई हों) पैदा हुए हों वे अपने पिता के वर्ण के ही माने जायंगे." इस व्यवस्था के अन्दर शास्त्रानुकूल विवाह और सबर्ग विवाह के ऊपर जोर दिया गया है, आगे एक जगह लिखा है-- "द्विज पुरुषों को अपने से एक दरजा नीचे की परनी से जो सन्तान प्राप्त हों वे भी पिता के ही वर्ण को प्राप्त करती हैं और उनका एकमात्र दोष उनकी मां के कारण है (10-6)." इस व्यवस्था के अनुसार असवर्ण विवाह जायज है, किन्तु नीची जाति की मां का दारा सन्तान पर रह जाता है. आगे चलकर इसे तफ़ सील से समकाया गया है—"त्राह्मण की सन्तान श्वत्रिय, वैश्य और शह स्त्री से, श्रित्रय की सन्तान वैश्य और शहू स्त्री से, वैश्य की सन्तान शुद्र से ये छहों सन्तानें 'अपासद' कहलाती हैं. यह व्यवस्था उस पहले की व्यवस्था को काट देती है जिसके मुताबिक अपने से एक दरजा नीची जाति की स्त्री से प्राप्त सन्तति पिता के वर्ण को प्राप्त होती है. जो सन्तान अपासद कहलाएंगी वे कैसे पिता के वर्ण को प्राप्त कर सकती हैं ? मानव धर्मशास्त्र की एक और व्यवस्था में कहा गया है-"द्विजों की जो सन्तानें एक दरजा नीचे के वर्ण की की से हों वे अपनी मां की हीनता के कारण 'अनन्तरस' कहलाती हैं. इस व्यवस्था से यह जाहिर है कि हीन जाति की मांत्रों की सन्सानें पिता के वर्षा को प्राप्त नहीं कर सकतीं. पहले की व्यवस्थाओं के मुकाबले में यह एक विरोधी श्रीर बाद की व्यवस्था मालूम होती है.

फिर मानव धर्मशास्त्र 'खिचड़ी वर्णों' का जिक्र करता है. उसके अनुसार—"वर्णों की मिलावट से जिन सियों के साथ विवाह नहीं होना चाहिये, उनके विवाह से और بھی اِس وچار کو نہیں النا چاہئے که اُسے کسی براھیں کی خانیا کونی ہے'' (381-8)۔ درسری اور شردر کے سیندھ میں لیا گیا ہے۔ ''یدی کوئی سواسی شودر کو داستا سے مخت بھی کردے' تب بھی وہ شودر سونندر نہیں ھوسختا ۔ اُس کے لئے ظامی سوابھاوک ہے' اس لئے کون اُسے غلامی سے مخت کرسکتا ہے' (114-8,412)۔ پس طرح شودروں کو ارتب شاستر اور سدرات اشوک نے سماج میں جو برابری کا درجه دیا تھا' اُسے ''مائو دھرم شاستر' نے واپس لے لیا ۔

مائو دھرم شاسائر نے جنم اور اُترادھیکار کو بھی خاص العميت دي هـ.+ مانو دهوم شاستر کے مطابق __واسب ورنوں میں جو بھے شاسترآنوسار وواهت اِستربوں سے (ایسی استربوں سے جو سجاتیہ هوں اور کماری کے روپ میں وواہ میں حاصل کی گئی هوں) پیدا هوئے هوں وے اپنے پنا کے ورن کے هی مانے جائینکے " اِس ریوستھا کے اندر شاسترانوکول رواۃ اور سورن وواہ کے اُویر زور دیا گیا ہے ۔ آگے ایک جکہ لکھا ہے۔"دوئبج پرشوں کو اپنے سے أیک درجه نیجے کی پتنی سے جو سنتان پراپت هوں وے بھی پتا کے هی ورن کو پراپت کرتی هیں اور انکا ایک ماتر دوش اُن کی مان کے کارن ہے (6-10)." اس وپوستھا کے آئوسار اسورن رواہ جایز ہے کنتو نینچی جاتی کی مان كا داغ سلتان در ره جاتا هي. أكم چلكر أس تفصيل س سمجهایا گها هـ "'براهس کی سنتان چهتریه' ویشهه أور شودر استری سے چهتریه کی سلتان ویشیه اور شودر استری سے ویشیه کے سنتان شودر سے یہ چھپوں سنتانیں اپاسد کھاتی ہیں ۔ 🕏 یہ ویوستھا اُس پہلے کی ویوستھا کو کات دیتی ہے جس کے آئیسار اپنے سے ایک درجہ نیچی جاتی کی اِستری سے پراپت سنتتی یتا کے ورن کو پرایت هوتی هے . جو سنتان آیاس کہائینگی وے کیسے پتا کے ورن کو پراپت کرسکتی میں ا مانو دهرم شاستر کی ایک اور ویوستها میں کها گیا هے۔ "دونجوں کی جو سنتانیں ایک درجه نیجے کے درن کی اِستری سے هوں وے اپنی ماں کی هینتا کے کارن 'اننترس' کہلاتی هیں ۔ اِس ویوستھا سے یہ ظاهر ہے که هیں جاتی کی ماؤں کی سنتانیں پتا کے ورن کو پرایت نہیں کرسکتیں ، پہلے کی ریوستھاؤں کے مقابلے یہ ایک ورودهی اور بعد کی ویوستها معلوم هوتی هے ،

پھر مانو دھرم شاستر 'کھچتری ورنوں' کا ذکر کوتا ہے۔ اُسکے انوسار۔۔''ورنوں کی مالوت سے جن اِستریوں کے ساتھ وواہ نہیں ہونا چاھیئے' اُنکے وواہ سے اور

^{*} Buhlers' translation.

[†] Ibid-pp. 319-321.

¹ Ibid pp. 403-404.

कर्में व्यव्युत होने से द्यापित्र जातियां वन गई हैं. §" (30-24). इस तरह वालग द्यालग जाति के माँ वाप की सन्दानें मनु के मुताबिक वर्णसंकर हैं. इसका साफ मतलब यह है कि इजाजत होते हुए भी मानव 'धर्मशास्त्र' द्यसवर्ण विवाहों को प्रात्साहन नहीं देता. अ इसका बाह्यणों की उस प्रतिकान्ति से मेल है जिसका मकसद पैदायशी वर्णाश्रम धर्म के मुताबिक साम। जिक व्यवस्था फिर से कायम करना था.

मानव धर्मशास्त्र में इस बात पर जोर दिया गया है कि अंबी जाति के लोगों का रक्त नीची जाति के लोगों से अधिक पवित्र होता है. "यदि कोई कुल ब्राह्मण पुरुष और शह सी के संयोग से फले और बढ़े तो इस तरह के कुल की लड़कियों की त्राह्मणों के साथ शादी होने से वह नीच कल सातवीं पीढी में उच्चवर्ण ब्राह्मण कुल हो जायगा." (10-64). इसके अनुसार ब्राह्मण पिता और अद्विज माता की पुत्री यदि किसी ब्राह्मण से ब्याही जाय और इस संयोग से उत्पन्न लड़की फिर किसी ब्राह्मण को ब्याही जाय श्रीर यह कम सातवीं पीढ़ी तक चलता रहे तो उसके बाद की संततियां त्राह्मण हो जायंगी, क्योंकि मानव धर्मशास कहता है "अञ्चा बीर्य सदा प्रशंसनीय है." (10-74). यही नियम सभी जातियों के लिये लागू है. इस संबंध में कहा है-"शह पत्र इस तरह से बाह्य के पद को प्राप्त होता है और इसी नियम से बाह्मण शह की स्थिति को पहुंचता है. यही नियम क्षत्रिय-पुत्र के लिये है और यही नियम वैश्य-पुत्र के लिये है." (10-65). इसका अर्थ यह है कि अंची जात के पुरुष के संयोग से श्रीलाद का रुतवा अंचा होता है और नीची जाति के पुरुष के संयोग से श्रीलाद भी नीची जाति की होती है।

अन्त में वंश परम्परा के प्रश्न का इस तरह जिक्र किया गया है—जाइए पिता और अनार्य माता के संयोग से खप्त संतान शेष्ठ है या अनार्य पिता और बाह्यए माता के संयोग से उत्पन्न संतान ? धर्मशास्त्र इसका उत्तर देता है कि यदि ब्राह्मए पिता की सन्तान में 'पाक' और 'यहा' की विशेषता है तो वह अनार्य पिता की सन्तान की अपेक्षा एच्चतर है. (10-66). इसका साफ मतलब यह है कि

کرتوبه جارت هرئے سے اپوتر جاتیاں بن گئی هیں ، ، ، کلی هیں ، ، ، کلی اللہ جاتی کے ماں پاپ کی سیتانیں منو کے مطابق ررنسنکر هیں اسکا صن مطابق یہ مانو دیھرم شاستر مطابق دیا ہے مانو دیھرم شاستر المہرین وواهوں کو پررتساهی نہیں دیتا ۔ 88 اِسکا براھمنوں کی اُس پرتی کرانتی سے میل ہے جسکا مقصد پیدایشی ررناشرم کے مطابق ساماجک ریوستها پھر سے تایم کرنا تھا .

مانو دهرم شاستر میں اِس بات پر زور دیا گیا ہے که اُوئچی جاتی کے لوگوں کا رکت نیچی جاتی کے لوگوں سے ادھک یوتر ھوتا ھے ، ''یدی کوئی کل براھین پرش اور شودر اِستری کے سنیوگ سے پہلے اور بڑھے تو اِس طرح کے کل کی لوکیوں کی براھمنوں کے ساتھ شادی ھرنے سے وہ نیچ کل ساتویں يهرهي مين أوج ورن براهمن كل دو جائيكا " (61-10). إسكي انہ سار ہراھس یتا اور ادونج مانا کی پتری یدی کسی براهمن سے بیاهی جائے آور اس سنیوک سے اُنہن لوکی پهر کسی براهمن کو بیاهی جائے اور یه کرم ساتویں پیرهی تک چاتا رهے تو اُسکے بعد کی سنتتیاں براعمن هو جائيةكي كيونكه مانو دهرم شاستر كبتا هے "اچها ويريه سدا يرشلسليد هي " (72-10) يهي نيم سبهي جاتيوں كے ليه الكر هے . إس سمبلده ميں كها هـ الشودر يتر إس طرح سے برامین کے ید کو پرایت هوتا ہے اور اِسی نیم سے براہس شودر کی استھتی کو پہرنچتا ہے ، یہی نیم چھتری پتر کے لیئے ہے ارر يهي نيم ويشيه يتر كي ليئے هے ." (10.65) إسكا اربه يه هے کہ اُونچی جات کے پرش کے سنیوگ سارالان کا رتبہ اُونچا مرتا ہے اور نیچی جاتی کے پرش کے سنیوگ سے ارالد بھی نیچی جاتی کی ہوتی ہے ا

انت میں ونش پرمهرا کے پرشی کا اِس طرح م ذکر کیا گیا ہے۔ براهمن پتا اور اناریه ماتا کے سنیوگ سے اُنہیں سنتان شریشتھ ہے یا اناریه پتا اور براهمن ماتا کے سنیوگ سے اُنہیں سنتان آ دهرم شاستر اِسکا اُتر دیتا ہے که یدی براهمن پتا کی سنتان میں 'پاک' اور 'یکیه' کی وشیشتا ہے تو وہ اُناریه پتا کی سنتان میں 'پاک' اور 'یکیه' کی وشیشتا ہے تو وہ اُناریه پتا کی سنتان کی اپیکشا اُوچتر ہے۔ (66-10) اِسکا صاف مطاب یہ ہے که

[§] Jones' translation of "The Ordinances of Manu" p. 343.

क्ष मानव धर्मशास्त्र के अन्दर यह विरोधी (मुतजाद) भाव इसलिये है कि इसमें दो तरह की व्यवस्थायें हैं. पुरानी व्यवस्था 'मनुस्मृति' है और नई सुमित भागव की लिखी हुई 'मानव धर्मशास्त्र' है. सुमित भागव के ऊपर ब्राह्मण्-प्रतिक्रिया (reaction) का साफ असर है—लेखक.

医神经性炎 化基础系统 法未经证 医神经神经 化异

وتص کوم میں چٹا کو مہانٹا ش^{اء} مانا کو ٹییں ہ مانو دھرم شاستر میں براسلوں کے برین کا تقفه ھمیں راجنيتك چهيتر ميں بھي ملتا في أيك جابه لها فس"راجه کو چاھے جاتنا خطرہ کیوں تہ ہو تب بھی آسے براعس کے كروده كو نه جكانا چاهيئه كيونكه برأهس خفا هو كر چهي باور میں حکومت کو برباد کر سکتا ہے...چاھے ودوان هو یا ایرها براهين مها ديوتا كے سيان هے " (317-9,813). اِس وائهة میں همیں براهمن گرفتین اور برهمجیته سوتروں کی گونیم ملتی ھے ، راجع کے لئے بھی آدیش ہے که راجه کو خانداتی پروهتوں کے بریوار سے سات یا آٹھ ملتری چننے چاعیش جو اُونجے کل ک یوکه هوایه ساهسی اور وید شاسترون میں نیپون هون (7-58) . اِس روستها کے انوسار تو براھیں بھوروکریسی ازمی هُ جاتي هے کیونکہ وید شاستروں میں براهمنوں کے علوہ اور کوں ٹھیرں هرکا ؟ اُرته شاستر نے منتریس کے چناؤ کے لئے اِس طرّے کی کرئی قید نہیں رکھی جسمیں فیرل ہراھمی ھی آسکھیں ، ارتھ شاستر کے انوسار اماتیہ سموت (مفتری) کے ید کے لئے یه کن ضروری هیں که وہ دیش کا ادهیواسی مو' أونجے خالدان كا هو اور كلان مين لهيون هو . (ارته شاستر 15-14 الف 14-8. الف 1). كوتليه بهودنتي كربتر سے سهدت ہے کہ منتری کے لیئے آوشیک کی یہ هونا چاهیے که وہ "اونجے خاندان کا هو اور ودوان هو ء' انت میں دهوم شاستر راجنیتک چهيتر ميں ايک بہت ہو مانگ پيش کونا في أس كے الوسار-بردهان سينا پتي کا پد' پردهان تيايادهيس کا پد' راج یوبنده کرنے والے راجہ کا ید-یہ سب ید سوئیکار کرنے یوگیہ رهي هے جو ويدوں کا پورن گياتا هو (100-19-12). إسكا أرته يه ه كه مانو دهرم شاستر صاف اِس بات كي هدايت دیتا ہے کہ ویدوں کے جانکار ھی اِن پدوں پر اُسھی ھو سکتے ھیں ، اِسسے پہلے کسی بھی اِسمرتی میں اِس طرح کی کوئی هدایت نهیں ملتی . شیاد' جیسا که شری جیسوال کہتے هیں' براهس یوشیه متر کے راب هزیدے کی یم نیتک دلال هو .

اسی دهرم شاستر میں همیں "راجه کے کے دیوی ادهیکار" کی دلیل ملتی هے ، اِسی مانو دهرم شاستر میں هی پہلی مرتبه انردیو" کے وچار کا پرتیپادی کیا جاتا هے ، اِس سے پته چلتا هے که بھارت میں اُس سمے تک سامنت شاهی بن چکی تهی اِس طرح براهمنوں کی ستتا تایم هوتے هی ورنوں کی بهی نئی حیثیت هوگئی ، جانیوں کی ساماجک جکه بدل گئی ،

वंश कम में पिता को सदानता है, माता को नहीं. *

जातव धर्मशास्त्र में शहायों के बरुपन का नक्सा हमें राजनैतिक क्षेत्र में भी मिलता है. एक जगह लिखा है-"गजा को चाहे जितना सतरा क्यों न हो तब भी उसे ब्राह्मण के क्रोध को न जगाना चाहिये, क्योंकि ब्राह्मण लका होकर श्रम भर में हुकूमत को बरबाद कर सकता हे.....चाडे विद्वान हो या अपद, ब्राह्मण महा देवता के समान है." (9,313-317). इस बाक्य में हमें त्राह्मण प्रत्यों और ब्रह्मजय सत्रों की गूंज मिलती है. राजा के तिये भी आदेश है कि राजा को खानदानी प्ररोहितों के परिवार से सात या भाठ मन्त्री चुनने चाहियें जो उन्ने कुल के परखेहए, साहसी और वेद शासों में निपुण हों (7-58). इस व्यवस्था के अनुसार तो त्राह्मण व्यूरोकेसी लाजमी हो जाती है क्योंकि वेद शासों में नाक्षणों के मलावा और कीन निप्रण होगा ? अर्थशास्त्र ने मंत्रियों के चुनाव के लिए इस तरह की कोई क़ैद नहीं रखी जिसमें केवल बाह्यण ही आ सकें. अर्थशास्त्र के अनुसार अमात्य सम्पत (मन्त्री) के पह के लिये ये गुण जरूरी हैं कि वह देश का अधिवासी हो. उंचे खानदान का हो और कलाओं में निप्रण हो. (अर्थशास 1, आ० 8-14 अ० 9-15). कौटिल्य बहुदन्ति के पुत्र से सहमत है कि मन्त्री के लिये आवश्यक गुरा यह होना चाहिये कि वह "ऊ'चे सानदान का हो और विद्वान हो." अन्त में धर्मशास्त्र राजनैतिक चेत्र में एक बहुत बड़ी मांग पेश करता है. डसके अनुसार---'प्रधान सेनापति का पद्. प्रधान न्यायाधीश का पद, राज-प्रबन्ध करने वाले राजा का पद-ये सब पद स्वीकार करने योग्य वही है जो वेदों का पूर्ण ज्ञाता हो " (12-19-100). इसका अर्थ यह है कि भानव धर्मशास्त्र साफ इस बात की हिदायत देता है कि वेदों के जानकार ही इन पदों पर आसीन हो सकते हैं. इससे पहले किसी भी स्युति में इस तरह की कोई हिदायत नहीं मिलती. शायद, जैसा कि श्री जायसवाल कहते हैं, बाह्मण पुष्यमित्र के राज्य हद्दपने की यह नैतिक दलील हो.

इसी धर्मशास्त्र में हमें "राजा के दैवी अधिकार" की देवी अभिकार की देवी अधिकार की देवी अधिकार की देवी अधिकार की देवी अधिकार की पहली मरतवा 'नर-देव' के विचार का प्रतिपादन किया जाता है. इससे पता चलता है कि भारत में उस समय तक सामन्त-शाही बन चुकी थी। इस तरह ब्राह्मणों की सत्ता क़ायम होते ही वर्णों की भी नई हैसियत हो गई. जातियों की सामाजिक जगह बदल गई।

इस सम्बन्ध में मध्यकालीन यूरोप में गुलामों के संसर्ग से पैदा भौलादें और मनुस्यति का तुलनात्मक अध्ययन दिलचस्य है.

اس سمبندہ میں مدھیہ کالین یورپ میں علموں کے سنسرگ سے پیدا اوالدیں اور منوسمرتی کی تولناتمک اددھین دلتھسپ ھے ۔

ایک دوسوا تھوم شاستو جو براهدارس کی پر بھوتا کے کال میں لکھا گیا وسشتھ اِسمرتی ہے ، کھن کے انوسار اِسکا رچنا کال عیسی کی پہلی صدی ہے " یہ حالات کی اسمیل کی پہلی صدی ہے " یہ حالات کی اسمیل اور اسمیل ایسی چو پرانے معلم ہوتے ہیں اور اسمیل ایسی و براهدارس کے بڑین کی وکالت کی گئی ہے اُس سے یہ معلم بڑتا ہے کہ یہ کرنتھ اُس سمے لکھا گیا جب براهدارس کی پربھونا تھی ، معلوم مرتا ہے وسشتھ اِسمرتی ایسی جکہہ لکھی گئی جہاں انہتی کے سواکت میں گوبدھ کا پرانا رواج تب بھی جاری تھا حالات کمی کبھی کائے کی جگه بحوا حال کوئے کا بھی رواج چل پڑا نہیں کبھی کبھی گئے کی جگه بحوا حال کوئے کا بھی رواج چل پڑا یہا (انجھائے۔3) ، اُسمیل ایک اِستہاں پر ایما ہے۔"براهدی یا چہتریہ اُتیتھی کے لیئے گرہستھ یا تو پربیکو اوستها کا بیل راندھ سکتا ہے یا بکوا ،" آب اِس سے صاف انومان لگایا جا سکتا ہے کہ 'وسشتھ اِسمرتی' اُتر بھارت میں ہی کہیں لکھی ہے کہ 'وسشتھ اِسمرتی' اُتر بھارت میں ہی کہیں لکھی

وسشته کا آدیش هے که تینوں اُوچ ورنوں کی سیوا کونا شردركا دهرم في . إس لحاظ سے وسشتم منو سے بهن نهدن في ا یهر وه کیتے هیں۔۔۔ "یدی کوئی دوئیے شودر کا اُن کها کر مر جائے تو وہ دوسرے جام میں یا تو کاؤں کا سور هوتا اللہ یا اَسَى شودر كے كهر بهدا هونا هے . أ (8 الف) ير وہ پندتين سے کہتے میں۔ الملیجہوں کی بھاشا نہ سیکھو † (کا الف) ایک دوسری جکه لکها هے۔۔"کنچه لوگ کہتے هیں که شودر شو کے سمان ھیں اِسلئے شودر کے نکٹ ویدوں کا پائھ نہیں شرنا چاھیے .'' † (15 الف) ایسے براھمن پرش کے ش جنكا براهمن استريوس سے سمبتدہ ہے وسشته نينچے لكھي سزا كا ردھان کرتے میں۔ ویدی کوئی شودر براھمن اِستری کے پریچے مين هے تو راجا كو أس شودر كو 'ويرن' گهاس ميں بندھوا كر زندہ آگ میں ڈلوا دینا چاھیئے ، یدی کوئی ویشیه براھمن اِستری کے پریتیے میں ہے تو راجه کو آس ویشهه کو 'نوهت' گهاس میں بندھواکر آگ میں ڈال دینا چاھیے اور یدی کوئی چهتریته براهمین استری کے پراجے میں ہے تو راجه کو اُسے 'سر' كياس مين بندهوا كر أك مين دال دينا چاهيم . "أ (19 الف) وسعتم إسمرتي كي نيائيك ايد نمونه هي. ورن كي حساب سے سزا کی ماترا بھی بروھتی جاتی ہے .+ ر 19 الف) .

کچہ انھوں میں رسمتہ اِسرتی اور دوسری اِسمرتیوں سے ادھک کوی ہے کیونکہ وسمتہ اِسمرتی میں چھتریوں کو سزا دینے کا جو ودھاں ہے وہ اُس سے پہلے کبھی کسی اِسمرتی نے نہیں دیا۔ اِسمیں براھمنوں کا درجہ بہت اُونچا کو دیا گیا۔ اِس چیز کو ادھک صفائی سے سمجھنے کے

में सिका गया 'वसिष्ठ स्मृति' है. केन के अनुसार इसका स्थान-काल देशा की पहली सदी है. * हालांकि इस स्मृति में ऐसे विचार जाहिर किये गये हैं जो पुराने मालूम होते में ऐसे विचार जाहिर किये गये हैं जो पुराने मालूम होते हैं जो माज्यों के बढ़प्पन की वकालत की गयी है उससे यह माजूम पढ़ता है कि यह प्रन्थ उस समय लिखा गया जब माज्यों की प्रभुता थी। माजूम होता है वसिष्ठ स्पृति ऐसी जगह लिखी गई जहाँ अतिथि के स्वागत में गांवध का पुराना रिवाज तब भी जारी था, हलांकि कभी कभी गांवध का पुराना रिवाज तब भी जारी था, हलांकि कभी कभी गांवध का पुराना दिवाज तब भी जारी था, हलांकि कभी कभी गांवध का पुराना दिवाज तब भी जारी था, हलांकि कभी कभी गांवध का पुराना दिवाज तब भी जारी था, हलांकि कभी कभी गांवध का पुराना दिवाज तब भी जारी था, हलांकि कभी कभी गांवध का पुराना दिवाज तब पढ़ा था (अध्याय-3) उसमें एक स्थान पर लिखा है—''ब्राह्म्ण या क्षत्रिय अतिथि के लिये गृहस्थ या तो परिपक्त अवस्था का बैल रांध सकता है या बकरा।'' † इससे साफ अनुमान लगाया जा सकता है के 'बसिष्ठ स्मृति' उत्तर भारत में ही कही लिखी गई है.

बसिष्ट का आदेश है कि तीनों उच्च वर्णों की संवा करना शह का धर्म है। इस लिहाज से वसिष्ठ मनु से भिन्न नहीं है। † फिर वह कहते हैं—"यदि कोई द्विज शह का बाब स्वाकर मर जाय तो वह दूसरे जन्म में या ता गाँव का सुधार होता है या उसी शुद्र के घर पैदा होता है. † (बा० ४) किर वह पहितों से कहते हैं — "म्लेच्छों की भाषा न सीखों † (अ > 3)। एक दूसरी जगह लिखा है-- 'कुछ लोग कहते हैं कि शुद्र शव के समान हैं इसलिये शह के निकट बेदों का पाठ नहीं होना चाहिये † (अ० 10) पेसे च-न्नाहरण पुरुष के लिए जिनका न्नाहरण कियों स सम्बन्ध है व(सप्ट नीचे लिखी सजा का विधान करते हैं -- "यदि कोई शह बाह्मण की के परिचय में है तो राजा की **एस शुद्र को 'विरण' घास में वंधवा कर जिन्दा आग में डलवा** देना चाहिये। यदि कीई वैश्य ब्रह्मण स्त्री के परिचय में है सो राजा को उस वैश्य को 'लाहित' घास में बंधवा कर आग में डाल देना चाहिए श्रीर यदि कोई क्षत्रिय बाह्यस श्वी के परिचय में है तो राजा को उसे 'सर' घास में बंधवा कर आग में डाल देना चाहिये. † (अ० 19) वसिष्ठ स्युति के न्याय का यह नमूना है. वर्ण के हिसाब से सजा की सात्रा भी बढ़ती जाती है. † (अ 219).

कुछ बंशों में विसिष्ठ स्मृति और दूसरी स्मृतियों से अभिक कड़ी है, क्योंकि विसिष्ठ स्मृति में क्षत्रियों को सजा होने का जो विधान है वह उससे पहले कभी किसी स्मृति ने नहीं दिया। इसमें ब्राह्मणों का दरजा बहुत ऊँचा कर विका गया। इस जीज का अधिक सकाई से सममने के

^{*} Kane. p. 58

^{† 22—}विसेंड संहिता—अनुः एसः दत्तः सका 764, 755, 771, 772, 802, 803, 810. 764, 765, 771, 772, 802, 803, 810 , विसेंस स्थान स्यान स्थान स

लिये बरिश स्पति के एक दूसरे विकास पर ज्यान दीजिये वसमें लिखा है- महाद्वारों का धन अपहरण करके अपराधी के रॉगरे बढ़े हो जाने चाहियें, इसे माग कर राजा के पास जाना चाहिने और उससे कहना चाहिने 'मैं चोर हैं! राजन ममें सजा दीजिये' राजा को तब उसे उदम्बर लक्ड़ी का इता हुआ इशियार देना चाहिये जिससे वह अपने आपको मार हाले. वेदों में लिखा है कि मौत के बाद वह अपराधी पवित्र हो जाता है, "(अ० 18) ई जब तक राजा भी ब्राह्मण न हो तब तक इस तरह की व्यवस्था प्रचलित करना सहज नहीं. मत और वसिष्ठ में नाहाणों के वद्प्पन का ग्रादि से अन्त तक बखान है और यह बद्ध्यन उस समय तक बेमतलब है जब तक इसकी पीठ पर राजा का हाथ त हो, इससे यह जाहिर होता है कि ये दोनों स्यूतियां ब्राह्मणों के शासन फाल में ही लिखी गई लेकिन श्री जायस्वाल के सुताबिक 'वसिष्ठ संहिता' को ज्यादा ब्रहमियत नहीं मिली और वह आखरी नजीर के रूप में कभी नहीं ऋष्ल की गई अ

अब हम याश्रवस्वय स्मृति पर गौर करेंगे.

पात अलि ने अपने महाभाष्य में इस पर बहस की है कि ऊँची बगा की जातियों के बर्तनों में यदि कोई खाये तो वे बर्तन अपनी श्रद्धता नहीं खोते. पात जलि को पुष्यमित्र का समकालीन माना जाता है इसलिये कि पातक्जलि ने अपने महाभाष्य में पुष्यमित्र के अरबमेध यज्ञ की चरचा की है. (महा-भाष्य 3, 2-123.) पाणिति ने अपने व्याकरण में एक जगह लिखा है-श्रद्वानाम अनिव सितानाम' (2-4-10) श्रर्थात 'ऐसे शह जो अलहदा नहीं किये गये.' पात जल इसकी न्याख्या करते हुए लिखता है कि ऐसे शुद्र जो अलग नहीं किये गये अनिर्वासित कहलाते हैं और वह श्रायीवर्त की सीमा का भी उल्लेख करता है। किन्त यह भी लिखता है कि इस सीमा में सक और यवन भी रहते हैं. तव अनिर्वासित से मतलब यह होगा कि आर्य निवास से जो निर्वासित नहीं, और आर्य-निवास क्या है ? आर्य गावों में रहते हैं, घोशों (गोचर भूमि) में रहते हैं, नगरों में रहते हैं श्रीर सम्बन्ध (वैश्यपुरी) में रहते हैं. श्रीर इन निवासों में चांडाल और डोम भी रहते हैं. * किन्त इनका शुमार त्र्यार्थावर्त में नहीं है. इससे तात्पर्य यह निकला कि श्रनिवोसित वे लोग हैं जो यहा में श्राहुति देने में शामिल हैं किन्तु पातञ्जलि रजक (धोबी) श्रीर तन्तुबाई (जुलाहा) को भी अनिवीसित मानता है. इसका अर्थ यह हुआ कि जिन लोगों के श्वाने के बाद बर्तन धोकर रख लिए जाते

للے وسئلے اسرتی کے ایک دوسوے ودھائی پر دھیان دیجیئے استیں ایما ہے۔" ہرائمس کا دھن اپہرن کو کے اپرادھی کے روئائے کورے ھو جانے چاھیئی آور اس سے کہنا چاھیئے' میں چور ھوں راجن ! مجھے سوا دیجھٹے' اور اس سے کہنا چاھیئے' میں چور ھوں راجن ! مجھے سوا دیجھٹے' وس سے کہنا چاھیئے' میں چور ھوں راجن ! مجھے سوا دیجھٹے جس سے وہ آینے آپ کو مار ڈالے . ویدوں میں انہا ہے کہ موت کے بعد وہ اپرادھی پوتو ھو جاتا ہے ۔" (18 الف ' چجپ نک راجہ بھی براھمن نہ ھو تب تک اِس طرح کی ویوسٹیا پرچلت کرنا سیم نہیں ، منو اور وسٹھ میں براھنوں کے بڑین پرچلت کرنا سیم نہیں ، منو اور وسٹھ میں براھنوں کے بڑین کے آس سے تک اس سے تک اسکی پیٹھ پر راجہ کا ھاتو نہ ھو ، اِس سے یہ طاھر ھوتا ھے کہ یہ دونوں اسرتیاں براھمنوں کے اِس سے یہ طاھر ھوتا ھے کہ یہ دونوں اسرتیاں براھمنوں کے شاس کال میں ھی لیمی گئیں ، لیکن شری جیسوال کے مطابق 'وسٹھ سنکھٹا' کو زیادہ اھیت نہیں ملی اور وہ آخری مطابق 'وسٹھ سنکھٹا' کو زیادہ اھیت نہیں ملی اور وہ آخری نظیر کے روپ میں کبھی نہیں قبول کی گئی ۔ 88

أب هم ياگيم ولكيم أسمرثي ير غور كرينكم .

باتنجلے نے اپنے مہابھاشیہ میں اِس پر بحث کی ہے کہ آونجے ورن کی جانوں کے برتان میں یدی کوئی کھانے تو وہ برتن ایلی شدهنا نهیں کهوتے . یاتنجلی کو یوشیممتر کا سمكالين ما نا جاتا هے إسليم كه ياتنجاي نے أينے مهابهاشيه میں پوشیدمتر کے اشومیدہ بالیہ کی چرچا کی ہے . (مهابهاشیه 3'2-123) . بانني نے اپنے ویاکروں میں ایک جکہ لکھا ہے۔ "شودرا نام انستا نام" (10-4-1) ارتهات وایسم شودر خو علیصده نہیں کئے گئے؛ پاتنجلی اِسکی ویاکھیا۔ کرتے ہوئے لکھتا ہے کہ ایسے شودر جو آریدورت سے الگ نہیں کئے گئے انرواست کہلاتے میں أور وة أريمورت كي سيما كا بهي ألليكه كرتا هي كنتو يم بهي لكهتا هے که اِس سیما میں سک اور یوں بھی رہتے ہیں ۔ تب انترواست سے مطلب یہ ہوٹا کہ آریہ نواس سے جو نرواست نيين . اور آرية نواس كيا هـ ﴿ آريه كاوْن مين رهت هين ا گهرشرں (گو چر بهومی) میں رہتے ہیں' نکروں میں رہتے ہیں اور سبنده (ویشهه یوری) میں رهتے هیں . اور اِن نواسوں میں چائدال اور درم بھی رہتے ھیں ۔* کنتو اِنکا شمار آریمورت میں نہیں ہے . اس سے تاتیریہ یہ نکا که انرواست و لوك هيں جو يكية ميں أهوتي دينے ميں شامل هيں . كنتو ياتنجلي رجك (دهوبي) أور تنتوبائي (جوالعا) كريهي انرواست مانتا هے. اسكا ارته يه هوا كه جور لوگیں کے کھالے کے بعد برتن دھو کر رکھ لئے جاتے

[‡] वसिष्ठ संहिता, सफा-808 क्ष्में प्रश्नेम क्ष्मेम

^{*} Jagnavalkya-oq cit 66.

के बातकासित हुए और जिनके साने के बाद वर्तन अकुद्ध होकर फेंड दिये जाते हैं वे निर्वासित समके जाते थे. इससे वह जाहिर होता है कि आर्यनिवास में रहने बाबे आर्थ कहलाते थे. इसलिये शुरू भी आर्थ थे क्योंकि इनके भोजन करने पर आर्य अपने वर्तन फेंक नहीं देते बे. केवल वे लोग जिनकी भीलावें भाज अन्त्यज कहलाती **हैं जार्य नहीं सम**के जाते थे. इसका अर्थ यह हुआ कि राष्ट्र दालांकि ब्रिज नहीं थे, फिर भी जार्य थे. कौटिल्य भी इसी विचार का था. मत ने भी कहीं यह नहीं लिखा कि शह जनार्थ हैं. फिर मन के जनुसार सक और यवन भी शुद्र हैं. पातव्जलि शुद्रों को होम से ऊँचा समझता है. इन्हें 'अनिवीसित' भानता है. पातक जिल ने शुद्रों को ये सुविधायें इस समय दी जब मन शुद्रा और यबनों के विकास गरज रहे थे. पातश्विल की इस विवेचना से यह पता चलता है कि धोवियों के समान कुछ जातियाँ पहले पिनन्न समसी जाती थीं. किन्तु बाद में उन्हें पतित समसा - जाने लगा. + चहिन्द यवन चनिर्वासित हो सकते हैं यह विचार जाज ध्यान में भी नहीं लाया जा सकता, इससे इस बात का समर्थन होता है कि जातियों भीर उपजातियो की भिन्न भिन्न काल में भिन्न भिन्न अवस्था रही है.

هين وسد الرواست هولم أور جائم كهالے كے يعد برتن لشده هو کو یعینک دفت جاتے هیں وہ نوراست سنجھے جاتر تھے،

أس سے يه ظاهر هوتا هے كه آريد نولس ميں رهنے والے آريد كيلات الله . أس الله شودر بهى أريه تم كيونكم أن كے بهرجن کرنے پر اُڑیٹ اُپنے برتن پھیلک نہیں دیتے تھے ، کیول رے لوگ جنعی ارالدیں آے انتیج کہانی میں آرید نہیں سجے جاتے تھے ، اِسکا اُرتِ یہ ہوا که شودر ؛ حالاته دوئیم نہیں تھے پور بھی آریہ تھے، کوٹلیہ بھی اِسی وچار کا تھا، منو نے بھی کہیں یہ نہیں اکھا که شودیر آثاریہ هیں . پهر منو کے انوسار سک اور یون بھی شودیر هير، ياتنجلي شودرون كو توم ساأونجا سنجهنا هي أنهين أله وأسك مانتا ہے یاتنجلی نے شودروں کو یہ سویدھائیں اُس سے دیں جب منو شودروں اور یونوں کے ورودھ کرے رہے تھے . پاننجلی کی اِس وویجینا سے یہ یکه چلتا ہے که دھوبیوں کے سیان کیے جاتیاں یہلے پوتر سمجھی جاتی تھیں' کنتو بعد میں انہیں يتت سمجها جانے لكا ، + اهندو يون أنرواست هو سكتم هيں، يم وجار أب دهيان مين نهين لايا جا سكتا . اِس سے أس بات كا سمرتهن هوتا هے كه جاتيوں اور أپ جانيوں كى بهن بهن كال میں بھی بھی اُوستھا رھی ہے ۔

‡يه سنهتا دهوبهرس كو پتت ورن كا سمجهتي ہے۔۔۔۔ المهما۔۔۔۔ \$ चिहता थोबियों को पतित वर्गा का समकती है—लेखक۔۔۔

700 PAGES. 82 ILLUSTRATIONS 2 COLOURED MAPS

TODAY" "CHINA

PRICE

BY PANDIT SUNDARLAL

Rs. 780

A vivid narration of the glorious and wonderful achievements of New China... A picture of China which is both convincing and authentic...the best book that has come out so far on New China in the English language ... the most objective in approach and comprehensive in treatment. -National Herald, Lucknow.

Highly informative ... throws vivid light on conditions obtaining in that country ... a book which deserves to be wide'y known -Leader, Allahabad.

Encolopsedic...characterized by acute observation of detail as well as by...instinctive grasp of the fundamental perspective... To read it is veritably like accompanying the Mission on its thrilling voyage of discovery in New China. -Blitz, Bombay

A mine of information which gives a picture of China as nothing else dose...the best guide to New. China... Those who would like to understand what is happeing in New China can do not better than to study it.

-Bharat Jyoti, Bombay

The wealth of information it gives on China new and old...makes fascinating reading...is comprehensive and informative and must therefore interest all students of public affairs. -Indian Express, Madras

China Today is an eloquent tribute to his (Pandit Sundarlal's) shrewd understanding of men aud matter... brings to light the mighty endeavour of the Chinese People to rebuild their great nation on firm new foundations for a tomorrow which is theirs. -Vigil, Delhi.

भाई ए० शंकर

हिन्दी और उर्दू की तरक्की का अपना एक इतिहास है. इसको सममाने के लिये हमें हिन्दी और उर्दू के जनम पर विचार करना होगा. आरम्भ में हिन्दी और उर्दू में अन्तर नहीं था. सं० 1902 तक हिन्दी को ही उर्दू के नाम से पुकारा जाता था. 'वली' हिन्दी को ही अपनी भाषा कहते थे. 'मीर' ने अपनी जवान को हिन्दी बताते हुए कहा था—

क्या जानूं लोग कहते हैं, किसको सरूरे – कल्ब। बाया नहीं है लफ्ज यह, हिन्दी जबां के बीच॥

पर उर्दू भाषा की उत्पत्ति के सम्बन्ध में सैयद इंशा अल्ला काँ ने कहा है—जमीं दानद कि मुवाए फसाहत न मादने बलारात कि जबाने शाँ मशहूर व उर्दूस्त, सिवाये बादशाह हिन्दुस्तान कि ताजे क्रसाहत बर्कए भी जेबद, चन्द अमीर व मसाहिबे शाँ, व चन्द जने क्राबिल, अज क्रिस्म बेगम व जानम व कस्वी हस्तदं—हर लम्नजे कि दरीहां इस्तेमाल यामत जबाने उर्दू शुद्र, न ई कि, हर कस कि दर शाहजेहानाबाद मी बाशद, इस्व गुफ्तगू कुनद मौतिबर बाशद, अगर चुनीं बाशद साकिनाने मुरालपुरा च तक्रसीर करदा अन्द कि जबाने एशां मायूब व खिलाफ उर्दू शुमुद्रां शवद, [दरिया-ए-लताफत, दुरे दाना शिक्मे, सफा 64]

अर्थात्—ऐसे सज्जनों को नहीं मालूम कि उस भाषा के जिसे उर्दू कहते हैं, सीन्दर्य लालित्य का उद्गम स्थान स्वयं हिन्दुस्तान के सम्राट हैं, जिनके सिर पर उर्दू भाषा की ओजस्विता का मुकुट शोभा देता है. उनके कतिपय व विशेष सेवक व उनके राज भवन की खियाँ, जिनमें बेगमें व अन्य घरों की खियाँ व कस्वियां शामिल हैं, जिन शब्दों का इस्तेमाल करती हैं, वही उर्दू भाषा है. शाहजहानाबाद का हर वाशिन्दा जो कुछ कहे वह जबान के लिहाज से मुस्तनद नहीं समका जा सकता. यदि ऐसा न होता तो मुरालपुरा के निवासियों की भाषा को दूषित व उर्दू के खिलाफ क्यों समका जाता ?

'द्रिया-ये-जताफत' एक प्रसिद्ध किताब है. मीलाना भवदुल इक साहब ने इस किताब के सम्बन्ध में कहा है, "वर्द् जवान के क्रवायद, मुद्दाबरात और रोजमर्रह के मुतास्त्रिक इससे पहले कोई किताब नहीं लिखी गई थी

بهائي. أو ، شاعر

ھندی اور اُردو کی ترقی کا اپنا ایک اِتہاس ہے ۔ اِس کو سنجھنے کے لئے ھیں ھندی اور اُردو کے جئم پر وچار کرنا ھوگا ۔ آرمیو میں ھندی اور اُردو میں اُنٹر نہیں تیا ۔ سن 1902 تک ھندی تک ھندی کو ھی اُردو کے نام سے پکارا جاتا تیا ۔ 'ولی' ھندی کو ھی اُپنی بھاشا کہتے تھے ، 'میر' نے اپنی زبان کو ھندی بتاتے ھوئے کیا تھا۔۔

کیا جانوں لوگ کہتے ھیں' کس کو سرور قلب ، آیا نہیں ہے لغظ یع' ھندیزباں کے بدیے ،

پر آردو بهاشا کی آتهتی کے سمبندھ میں سید اِنشاآلله خان کے کہا ہے۔ زمین دائد که مواثے نصاحت نه معدی بلاغت که زبان شان مشہور به آردوست سوائے بادشاہ هندستان که تاج نصاحت بروئے می زیبد چند آمیر و مصاحب شان و چند زبان قابل اُز قسم بهکم و خالم وکسی هستند جو لفظے که دریاجاں استعمال یافت زبان آردو شد . ثه ایس که هر کس که درشاه جاس آباد می باشد صسب گفتکو کند معتبر باشد . اگر چنیس باشد ساکنان مغلر بورہ چه تقسیم کردہ آند که زبان آیشاں معیوب و خاف آردو شدردہ شود . [دریائے لطافت در دائع شعمے صفحه 46]

ارتهات—ایسے سجنوں کو نہیں معلوم که اُس بهاشا کے جسے اُردو کہتے میں' سوندریت الالیت کا اُدگر استهاں سوئم هندستان کے سمرات میں' جن کے سر پر اُردو بهاشا کی اُرجسوتا کا منحت شوبها دیتا ہے ۔ اُن کے کتیتے و وشیش سیوک و اُن کے راہے بهرن کی اُستریاں' جندیں بیکمیں و اُنیت گهروں کی اِستریاں و کسینان شامل میں' جن شیدوں کا استعمال کرتی میں' رهی اُردو بهاشا ہے ۔ شاهنچهاں آباد کا هر باشندہ جو کنچے کہے وہ زبان کے لحاظ سے مستند نہیں سمنجها جاسکتا ، یدی ایسا نے موتا تو منی پورہ کے خلف کیں سمنجها جاتا ہے۔

'دریاٹے لطانت' ایک پرسدھ کتاب ہے۔ مولانا عبدالحق صاحب نے اس کتاب کے سیندھ میں کیا ہے' ''اُردو زبان کے قواید' محاورات اور ررزمرہ کے متعلق اس سے پہلے کرئی کتاب نہیں لکھی گئی تھی

اور عجهب بات یہ ہے کہ اِس کے بعد بھی کوئی کتاب اس پاید کی نہیں لکھی گئی ، جو لوگ اُردو زبان کا محققات مطالعہ کونا چاھتے ھیں' یا اس کی صوف نتحویا ایت پر گوئی محققات تالیف کونا چاھتے ھیں' اُن کے لئے اُن کا مطالعہ ضروری ھی نہیں بلکہ ناگزیر ہے ۔'' سید اِنشااللہ خال سے خلامہ سر سید احمد خال نے اپنی پستک 'اثارالصنادید' سی کہا ہے۔۔''جب کہ شاهعجہاں بادشاہ نے سن 1648 میں کہا ہے۔۔''جب کہ شاهعجہاں بادشاہ نے سن 1648 میں میں شہر شاهعجہاں آباد آباد کیا تو ھر ملکوں کے لوگوں کا محمد ھوا ، اُس زمانہ میں نارسی زبان اور عندی بھاشا' بہت مل گئی اور بعض نارسی لفظوں میں اور اکثر بھاشا کے لفظوں میں یہ سبب کثرت استعمال کے تنہر و تبدیلی ھوگئی ، غرض میں یہ سبب کثرت استعمال کے تنہر و تبدیلی ھوگئی ، غرض کہ لشکو بادشاھی اور اُردوئے معلا میں اِن دونوں زبانوں کی ترکیب سے نئی زبان پیدا ھوگئی اور اِسی سبب سے زبان کا اُردو نیام ھوا ، پھر کثرت استعمال سے لفظ زبان کا محتذرف ھوکو اُردو کہا ہے گئی۔''

اِن اُرترئوں سے پرکٹ ھو جانا ہے که اُردو کا جنم شاهجہاں کے سبے ھوا ہے' پر اُردو بھاشا کا شروع کا نام ھندی ھی تھا ۔ ھندی کو ھندو مسلمان دوئوں کی ملواں بھاشا کا دیوتک مانا جانا تھا ۔ اُسیر خسرو' آتھی' اِنشا' جرئت اِتھادی نے اپنی رچناؤں میں اُردو کے لئے ھندی شدد کا ھی پریوگ کیا ہے ۔ اِس بات کو سبھی اُردو اِتہاس لیکھکوں نے بھی سوئیکار کولیا ہے ۔ اُردوئے دیم' تاریخ نسب اُردو' اتھادی گرنتھوں کے ددوان لیکھکوں نے بعد یہ ثابت کردیا ہے کہ اُردو کا شروع کی کردوں کے دول کا شروع کا شروع کی گرو کی کردوں کردوں کی کردوں کردوں کی کردوں کی کردوں کردوں کی کردوں کی کردوں کردوں کی کردوں کردوں کردوں کردوں کی کردوں کردوں

اب دیکھئے' پننت پدم سنگھ شرما نے اپنی 'هندی اُردو اور هندستانی' نامک پستک میں لکھا ہے۔۔''اس هندی نام کی سرشتی هندؤں نے نہیں کی' اور نم اُنھوں نے پرچار عی کیا ہے' هندو لیکھکوں نے تو اس کے لئے سروتو بھاشا شبد کا هی پربوک کیا ہے ۔ بھا شا کے لئے هندی شبد کے سرو پرتھم نامکوں کا سارا شریئے مسلمان لیکھکوں اور کویٹوں کو هی دیا جاسکتا ہے ۔ هندؤں کا اُس میں ذرا بھی هاتھ نہیں ۔''

اتم یہ ماننا ہوگا کہ یدپی یہاں کے سادھاری لوگوں میں ایک ایسی بھاشا یا زبان موجود تھی جس میں وہ ایک دوسرے کو سبع سکتے تھے پر اُس کا 'ھندی' نامکرن ھندؤں نے نہیں کیا ۔ ھندی اور 'اردو دونوں پرایہ ایک سی بھاشا کا نام تھا ، دونوں میں وشیش انتر نہیں تھا ، اُردو کو ھندی کہتے ھی تھے ، آتھی صاحب اُردو کے لئے ھندی شہد کا پریوگ کیا کرتے تھے اور ان کا پرسدھ شعر ہے۔

مطلب کی مھرے پار' ٹے سیجھے توکیا عجب،

भौर अजीव बात यह है कि इसके बाद भी कोई किताव इस पाये की नहीं लिखी गयी. जो लोग उर्द जवान का ग्रहिकक्रानः मुताला करना चाहते हैं, या उसकी सर्क नही या खुरात पर कोई मुहक्षिककान: तालीफ करना चाहते हैं, वनके लिए इनका मुताला जरूरी ही नहीं बल्कि नागुजीर दै." सैयद इंशा अल्ला खाँ से खुलासा सर सैयद अहमद काँ ने अपनी पुस्तक 'झासाहस्सनादीद' में कहा है—''जब-कि शाहजहाँ बादशाह ने सन् 1648 में शहर शाहजहाना-बाद आबाद किया तो हर मुल्कों के लोगों का मञ्मा हुआ. इस जमाने में फारसी जबान और हिन्दी भाषा बहुत मिल गई और बाज कारसी लक्ष्यों में और अक्सर भाषा के लफ्जों में व सबब कसरत इस्तेमाल के तराय्युर व तब्दीली हो गई. रारच कि लश्कर बादशाही और वर्दूये मुझल्ला में इन दोनों जुबानों की तरकीब से नई जुबान पैदा हो गई और इसी सबब से जुबान का खर्दू नाम हुआ. फिर कसरत इस्तेमाल से लक्ज जबान का महजूक होकर इस जबान को डर्द कहने लगे,"

इन अवतरणों से प्रकट हो जाता है कि वर्ष का जनम साहजहाँ के समय हुआ है, पर वर्ष भाषा का ग्रुक का नाम हिन्दी ही था. हिन्दी को हिन्दू मुसलमान दोनों की मिलवां भाषा का चोतक माना जाता था. अमीर खुसरा, आतिश, इंसा, जुरअत इत्यादि ने अपनी रचनाओं में वर्ष के लिये हिन्दी राज्द का ही प्रयोग किया है. इस बात को सभी वर्ष इतिहास लेखकों ने भी स्वीकार कर लिया है. 'वर्षू-ए-क़दीम' 'तारीख नस्य वर्षू' इत्यादि प्रन्थों के विद्वान् लेखकों ने बहुत आन बीन के बाद यह साबित कर दिया है कि वर्षू का

श्चर का नाम हिन्दी है.

अब देखिए, हिएडत पद्मसिंह शर्मा ने अपनी 'हिन्दी, उर्दू, और हिन्दुस्तानी' नामक पुस्तक में लिखा है—"इस हिन्दी नाम की सृष्टि हिन्दुओं ने नहीं की, और न इन्होंने प्रचार ही किया है, हिन्दू लेखकों ने तो इसके लिए सर्वत्र भाषा शब्द का ही प्रयाग किया है. भाषा के लिये हिन्दी राब्द के सर्व प्रथम नामकरण का सारा श्रेय मुसलमान लेखकों और कवियों को ही दिया जा सकता है. हिन्दु श्रों का इसमें जरा भी हाथ नहीं."

श्रतः यह मानना होगा कि यद्यपि यहाँ के साधारण लोगों में एक ऐसी भाषा या जवान मौजूद थी जिसमें वे एक दूसरे को समक सकते थे पर उसका 'हिन्दी' नामकरण हिन्दुओं ने नहीं किया. हिन्दी और उर्दू दोनों प्रायः एक सी भाषा का नाम था. दोनों में विशेष अन्तर नहीं था. उर्दू को हिन्दी कहते ही थे. आतिश साहब उर्दू के लिए हिन्दी शब्द का प्रयोग किया करते थे और उनका प्रसिद्ध शैर है—

मतलब की मेरे यार, न सममे तो क्या अजब।

सन जानते हैं तुन्धी की, हिन्दी जुनां नहीं।।

वहाँ हिन्दी वर्ष पर्व्यायबाची शब्द हैं. इस शेर से वह भी साफ हो जाता है कि यह जन-साधारण हिन्दुस्तानी की जबान थी पर ज्यादातर तुर्की लोग इसे न समक पाते थे. इसलिये पहले हिन्दी और उर्दू में कोई भेद हम नहीं पाते. अमीर खुसरो को हिन्दी वाले खड़ी बोली का पहला कवि मानते हैं, और उर्दू कविता का आरम्भ तो उनसे होता ही है. होनों उन्हें अपना पहला कवि मानते हैं, उनकी एक ही कविता को अपनी अपनी कहते हैं. डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद ने सातवें विहार प्रावेशिक हिन्दीं साहित्य सम्मेलन के समापति के पद से भाषगा देते हुए कहा था-"हिन्दी और वर्, चाहे उनकी उत्पत्ति और विकास जिस क्रम और जिस रीति से हुआ हो, दो भिन्न भाषायें नहीं हैं. इसका अकाद्य प्रमाण जिसे मुसलमान लोग उर्दू भाषा कहते हैं उसका पुराना रूप है. उर्द के बड़े से बड़े हिमायती यही कह सकते हैं कि उर्दू की पैदाइश हिन्दुस्तान में मुसलमानी बादशाहत क्रायम होने पर हुई. अब उस समय के लेखक की भाषा पर ग़ीर करें. बहुत पीछे जाने की जरूरत नहीं. मुसलमानी राज्य स्थापित होने पर सैकड़ों वर्ष के बाद के मशहूर लेखक अभीर खुसरो की कविताओं को लीजिये और विचार कीजिये कि उनकी भाषा आज की खड़ी बोली से किस प्रकार अलहदा है. अमीर खुसरो ने अनपढ़ चम्मों के लिए यह किवता लिखी थी-

> औरों की चीपहरी बाजे, चन्मों की अठपहरी। बाहर के कोई आये नहीं, आये सारे शहरी॥

"इसे देखने से पता लगेगा कि आज की हिन्दी और उस समय की उर्दू में बहुत मतभेद नहीं है..... इसलिये यह कह देना कि कुछ अरबी कारसी शब्दों के मिलाबट से ही एक नई और स्वतंत्र भाषा पैदा हो गई मुनासिब नहीं है."

दूसरे देशों के मुसलमानों के साथ सम्पर्क होने के कारण उनकी संस्कृति, सभ्यता, भाषा और उनके साहित्य का प्रभाव हमारी संस्कृति, भाषा और साहित्य पर पड़ने लगा. अरबी, कारसी के अनेक शब्द, रचना-शैलियां और वाक्य-विन्यास भी हिन्दी भाषा में रायज हो गये. हिन्दी के आदि प्राप्त प्रन्थ 'पृथ्वीराज रासो' में अरबी कारसी के शब्द हैं. तुलसी और सूर की रचनाओं में भी अरबी और कारसी के शब्द आये हैं. इसी तरह उर्दू में भी संस्कृत तथा प्राकृत के बहुत से शब्दों का समावेश हो गया. उर्दू के प्रसिद्ध कोष 'करहंगे आसिक्या' में कुल 54 हजार शब्द हैं, जिनमें 32 हजार हिन्दी के ही शब्द हैं. फरहंग वाले ने अपनी

سب جالتے هیں ترکی کی' هندی زبان ثبین ۔

يهاں هندي أردر بريائمواچي شبد هيں ۔ اِس شعر سے يع بھی صاف ھو جاتا ہے که یہ جن سادھارن ھندستائی کی زبان تمي پر زياد الركي لوك إسے نه سجه ياتے تھے . اس ليّه يهله هندی اور اُردو میں کوئی بهید هم نهیں پاتے . امیر خسرو کو هندی واله کوری بولی کا پہلا کوی مائتے هیں' اور اُردو کویتا کا أرميه تو أن سے هوتا هي هے . دونين أنهين أينا پهلا كوى مانته هیں' آن کی ایک می کویٹا کو اُپنی اپنی کہتے هیں . ڈاکٹر راجیلدر پرساد نے سانویں وهار پرادیشک هندی ساهتیه سیاری کے سبھایتی کے ید سے بھاشن دیتے ہوئے کہا تھا۔۔"هندی اور أردو' چاھے أن كى أتيتى أور وكاس جس كرم اور جس ريعي سے هوا هو دو يهن بهاشائين نهين هين . اِس كا أكاثية يرمان جسم مسلمان لوگ أردو بهاشا كهتم هيل أس كا پرانا روپ هم. أردو کے بڑے سے بڑے حمایتی یہی کو سکتے میں کہ اُردو کی بیدایش هندستان میں مسلمانی بادشاهت قایم هولے پر هوئی . اب آس سیے کے لیکھک کی بہاشا پر غور کریں . بہت پیچھے جانے کی پغرورت نہیں ، مسلمانی راجیہ استھایت ھونے پر سیکروں ورش كي يعد مشهور ليكهك أمير خسرو كي كويتاؤل كو ليجئه أور وچار کیجئے کہ اُن کی بھاشا آج کی کھڑی ہولی سے کس پرکار علیصدہ هے ، امیر خسرو نے انہزہ چموں کے لئے یہ کویتا لکھی

> ''ارروں کی چوپہری باجے' چموں کی آئے پہری . باہر سے کوئی آئے نہیں' آئے سارے شہری .

"اسے دیکھنے سے پتھ لکیکا کہ آج کی هندی اور اس سبے کی اُردو میں بہت متبھید نہیں ہے۔....اِس لیئے یہ کہ دینا کہ کچھ عربی فارسی شبدوں کے مقرت سے عی ایک نئی اور سوتلتر بھاشا پیدا ہوگئی مناسب نہیں ہے۔"

دوسرے دیشوں کے مسلمانوں کے ساتھ سمپرک ہونے کے کارن آن کی سنسکرتی' سبھیتا' بھاشا اور آن کے سامتیہ کا پربھاؤ ہماری سنسکرتی' بھاشا اور ساھتیہ پر پڑنے لگا ، عربی' فارسی کے انیک شبد' رچنا شیلیاں اور وائیہ ونیاس بھی ہندی راہے واسو' میں عربی فارسی کے شدہ ھیں ، تلسی اور سور کی رچناؤں میں عربی فارسی کے شبد ھیں ، تلسی اور سور کی رچناؤں میں بھی عربی اور فارسی کے شبد آئے ھیں اِسی طرح اُردو میں بھی سنسکرت تتھا پرافرت کے بہت سے شبدوں کا سماویش ہوگیا ، اُردو کے پرسدھ کوش 'فرھنگ آمدی کے شبد ھیں' میں کل 54 ھزار شبد ھیں' جین میں کل 55 ھزار شبد ھیں' جین میں کو ھزار شبد ھیں' جین میں 32 ھزار شادی کے اپنی

स्विका में खुद मान लिया है कि वर्द में 82 हजार हिन्दी के ही शब्द हैं. 22 हजार के लगभग ऐसे शब्द हैं जो विदेशी भाषाओं 'से निकले हुए माने जाते हैं. पिछत सुन्दरलाल जी ने अपने 'हिन्दी, उद् या हिन्दुस्तानी' ररिषंक क्षेत्र में कहा है कि अंग्रेजों के जाने के पहले हिन्दुओं को यह डर नहीं या कि 'आवरयकता' की जगह 'जरूरत' क्रिका दिया गया तो हिन्द्-संस्कृति मिट जायगी, और मुसलमानों को यह डर नहीं था कि 'जरूरत' की जगह 'आवरयकता' था गया तो इस्लाम खतरे में पढ़ जायेगा. यह वह समय था जब कि खबसुच उदार हिन्दू मुसलमानों को राम और रहीम में फर्क नजर न आता था, जबकि रहीम ने अपना 'मदन-शतक' 'श्रीगशेशायनमः' से शुरू किया या, जबकि जहांगीर के जमाने में ब्रह्मद ने सामुद्रिक शास पर अपनी किताब 'भी गरोशायनमः' से शुरू की थी, जबकि बहमदुल्लाह दक्किनी ने नायिका भेद पर अपनी पुस्तक के सबके ऊपर लिखा था 'श्री राम जी सहाय', 'आत: सरस्वती जी की स्तुति', जबकि वाक्रूव कां ने. रस-मूचण' लिखने से पहले सबसे ऊपर 'श्री गर्धेश जी', 'श्री सरस्वती जी', 'श्री राधाकृष्ण जी', 'श्री गौरीशंकर जी' को नमस्कार किया था, जबकि गुलाम नबी इसलिन ने अपनी दोनों पुस्तकों के ग्रुक्त में ही 'श्रीगर्ऐशायनमः' लिखा था.इस तरह सैकड़ों हिन्दी विद्वान अपनी रचनाओं को 'बिस्मिल्ला हिरहमानिरहीम' से शुरू करते थे."

क्षेत्रेजों के बाने के बाद वातावरण में काफी तब्दीली हुई. मुराल काल में जो आबोहवा थी, बदली. हमारी भाषा भौर उनकी जबान अलग अलग होने लगीं. अंप्रेज राज-नीतिक यह सममते हैं कि हमारी फूट उनकी रोटी है और अपनी रोटी के लिए फूट डालनी ग्रुह्म की. अगर इस कहें कि हम में फट डालने के लिए फोर्ट विलियम कॉलेज बना तो मबालगा नहीं हो सकता. सर वार्ल्स उड के शिक्षा सम्बन्धी मसविदे से, जो सन् 1854 में पास हुआ था. देशी भाषा के माध्यम द्वारा शिक्षा का प्रवन्ध अवस्य हजा. पर इससे इम में फुट भी फैली. इम एक से दो हए, जॉन गिलकाइस्ट ने दो हिन्दी के विद्वानों और दो उद् के विद्वानों को बलाकर आदेश दिया कि अपनी अपनी भाषा में पुस्तकें लिसें. जॉन गिलकाइस्ट ने यह आदेश उस समय दिया था जब हिन्दी बाले यह नहीं मानते थे कि लिपि भेद अथवा कुछ बिदेशी शब्द आ जाने से उद् दूसरी भाषा हो सकती बार उद्धाले लिपि मेद अथवा देशज शब्द आ जाने से हिन्दी को दूसरी भाषा समझते थे, यहां तक कि रानी केरकी की कदानी को, उसके फारसी लिपि में लिखी जाने वर भी, हिन्दी साहित्य में स्थान मिला. 'रानी केतकी की कहानी' से ही इन दोनों भाषाओं की कहानी-कला का विकास होता है. 'रानी केतकी की कहानी' उसी समय

بهرمكا مين خود مان لها هه كد أردو مهن 32 هزار ملدی کے هی شبد هيں۔ 22 هزار کے لگ بي*گ* ايسے شید جس جو ردیشی بها شاؤں سے نکلے موٹے مانے جاتے ہیں۔ يندَّت سنرال جي ل اين اهني أردو يا هنستاني شير شك ں۔ بہم میںکہا ہے که انگریزوں کے آنے کے پہلے هندوں کو یہ در نہیں تها که 'آو شهعتا' کی جکه 'ضرورت' که دیا گیا تو هندو سنسکوتی مت جائیگی اور مسلمانوں کو یہ در نہیں تھا که افرورت کی جكه الوشيكتا؛ أكيا تو إسلم خطرت مين پر جائيكا . به وه سم تھا جب که سے مے آدار هادرو مسلماقوں کو رام اور رحیم میں نرق نظر نم آتا تها جب که رحیم نے اپنا امرن شتک، اشری گلیص آیه نمه سے شروع کیا تھا جب که جہانگیر کے زمانہ میں احمد نے سامودرک شاستر پر اپنی کتاب اشری گلیس آیه سه اسه شروع کی تھی جب که احد الله دکھنے نے نایعه یهد یر اینی پُستک کے سب کے اُوپر لکھا تھا اُشری رام جی سہائے' 'اته سرسوتی جی کی استوتی ،' جب که یعقوب خال نے 'رس بھوشن' لکھنے سے پہلے سب سے اوپر اشری گنیش جے ' الشرق سرسوتي جي' شري رادها كرشن جي' اشري گرري شاعر جي أ كو أنسكار كيا تها أجب كه ظلم نبي إسان ال اپنی دوتوں پستموں کے شروع میں ھی 'شری گلیھی آیہ نمه کها تها اِس طرح سیکورس هلدی ودوان اپنی رخاوں اپنی رخاوں کی ایک رخاوں کو دہسالاء الرحیان الرحیم سے شروع کرتے تھے ."

انگریزوں کے آئے کے بعد واتاورن میں کافی تبدیلی ہوئی . منل کال میں جو آب و هوا تھی کیدلی . هناری بهاشا آور أن كي زبان الك الك مرنے لكيس ، انكريز راج نيتكيه يه سجهتے میں که هماری پهرت أن کی روتی هے اور اپنی روٹی کے لئے یہوت ڈالنی شروع کی . اگر ہم کہیں کہ هم میں یہوت ڈالنے کے لئے فورٹ ولیم کالبے بنا تو مبالنہ نہیں ہوسکتا . سر چارلسات کے شکشا سبندھی مسودے سے جو سن 1854 میں یاس هوا تها[،] دیشی بها شا کے مادعیم دراراً شکشا کا پرہندھ آو شہہ ہوا' پر اُس سے هم میں پہرے بھی پیلی ، هم ایک سے دو هوئے ، جان گلترایست نے دو هندی کے ودوانوں اور دو اردو کے ودوانوں کو بلاکو آدیش دیا که اپنی اپنی بہاشا میں یستعین لعیں ۔ جان گلکرایسٹ نے یہ آدیش أس سم ديا تها جب هندى وأله يه نهيل مانية ته كه ليى بید انہوا کچھ ردیشی شبد آجائے سے آردو دو سری بهاشا هو سكتى هـ أور نه أردو وآله لهي بهيد أتهوا ديشج شبد أجاله س هندی کو دوسری بهاشا سنجهتے تھے ، یہاں تک که رائی کیتمی کی کہائی کو' اُس کے فارسی لیں میں لیمی جالے پر يي هندي ساهتيه مين استهان ملا. 'رأني كيتكي كي کہائی' سے ھی اِن دونوں بھاشاؤں کی کہائی کا کا وکلس ھوتا ھے۔ 'رائی کیتھی کی کہانی' اُس سمے

THE RESERVE THE PROPERTY OF TH

انعی گئی جس سب گئنوایست نے هادی اور آردو میں اگلی دائی ہوس سب کا کرنے کی آگیاں دی تھی اسی کے بعد هندی کے ودوانوں نے ودیشی شبدوں کا وهشکار کیا اور آردو الک الگ بھائیں هوگئیں گئنوارست کی جبتر چھایا میں هندی آردو سنتھوش کا شری گئیس هوآ الکویزوں نے هندو اور مسلمائیں میں پھوٹ ڈائنے کا پریاس بھاشا کے دوارا بھی کیا وہ جانتے تھے که واهیتہ آئیک روپتا کے هوتے هوئے دوارا بھی کیا وہ جانتے تھے که واهیتہ آئیک روپتا کے هوتے هوئے آدھار تھی ، یہی کارن تھا که آئیوں نے ایکتا کی هوئکھائیں تور آئیس ، سنسکوت کے بندت اور عربی کے عالم بھا شاکا تیترتو دیلی دوبی فارسی دان عالموں کی مہریائی سے آردو میں عربی فارسی کے مشکل شبدوں اور سنسکوٹٹیوں کی کریا سے هندی عربی فارسی کے مشکل شبدوں اور سنسکوٹٹیوں کی کریا سے هندی میں کلشت شبدوں کی بھرمار هوئے لگی ، تھوڑے هی دئوں میں کلشت شبدوں کی بھرمار هوئے لگی ، تھوڑے هی دئوں میں کلشت شبدوں کی بھرمار هوئے لگی ، تھوڑے هی دئوں میں کیشت شبدوں کی بھرمار هوئے لگی ، تھوڑے هی دئوں میں دوئوں بھاشائیں بہت الگ جا پڑیں ،

شروع میں انکریزرں نے اُردو کو پروتساھن دینا آرمبھ کیا ، اُردو کورت کی بھاشا آنکے شہدوں میں اُسب سے ادھک نیشن ایبل' مانی جاتی ہے ، آنکریزرں کا سب سے ادھک نیشن ایبل' مانی جاتی ہے ، آنکریزرں کا سنکٹمٹے او سٹھا کا ورنس کرتے ھوئے بابو بال مکند گیت نے دن کے ساتھ کیا ہے۔"جو لوگ ٹاگری اُکشر سیکھتے تھے' وہ فارسی اُکشر سیکھتے تھے' وہ فارسی اُکشر سیکھتے تھے' وہ فارسی اُکشر سیکھتے تھے' وہ کا اُردو کین گئی ۔ ھندی اُس بھاشا نام رھا جو ٹوٹی پھوٹی چال پر دین کئی ۔ ھندی اُس بھاشا نام رھا جو ٹوٹی پھوٹی چال پر دیناکری اکشورں میں لیمی جاتی تھی ۔"

'پرچاھتیشی' سدھا کر' گیاں پرداینی پتریکا' آدی نے ھندی کی رکھا کرنے کے لئے ایک آندولی چھیا پر اِن پتر پتریکاؤں کی بھا شا دھیاں سے دیکھنے سے صاف ھو جاتا ہے کہ آ لکا نظریہ سنسکرتمے تھا ، راجہ لکشین پرساد سنٹھ نے آگے برھکر یہ کیا کہ ھندی میں سلسکرت کے شبد بہت آتے ھیں' آردو میں عربی فارسی کے . کچھ آرشیک نہیں ہے کہ عربی فارسی کے شبدوں کے بتا ھندی نہ بہلی جائے' اور نہ ھم آس بھاشا کو ھندی کہتے ھیں جسمیں عربی فارسی کے شبد کے بھرے ھوں ، آدھو آردو کو آنگریزی سرکار نے پروتساھن دیا اور اِدھر یوروپین عیسائی آردو کو آنگریزی سرکار نے پروتساھن دیا اور اِدھر یوروپین عیسائی کاربیوں نے راجہ لکشین سنٹھ آور آنکے ساتھیوں کی عربی فارسی کے شبدوں کو ھٹا کر آنکی جکہہ سنسکرت شبد رکھنے کے پریاس کو سہایتا پہوتچائی ،

سوبھاگیت سے ھندی اور اُردو دونیں کے ودوائوں نے انکویووں کی چال سبجھ لی ۔ سرسید احمد' موانا منیو اُدی نے اردو کو ھندی کے نامت لانے کی کوشھ کی' اور بھارتیندو ھریشچندر اور اُنکے لیکھک منڈل نے ھندی کو اُردو کے نزدیک پہونچانے کی کوشھ کی ۔ سنع 1903

विसी गई थी किस समय गिलकाइस्ट ने हिन्दी और चट् में बातग अतग रचना करने की आज़ा दी थी. इसके बाद हिन्दी के विद्वानों ने विदेशी शब्दों का वहिष्कार किया, और उद के विद्वानों ने देशज शब्दों का. हिन्दी और उद आलग अलग भाषायें हो गई. गिलकाइस्ट की ही अत्रक्षाया में हिन्दी वर्द संवर्ष का भीगसेश हुआ. अंप्रेजों ने हिन्दू और और मुसलमानों में फूट डालने का प्रयास माना के द्वारा भी किया, वे जानते थे कि वाद्य अनेक रूपता के होते हए भी दोनों में कैसी समानता है. यही समानता भारतीय एकता का मौलिक आधार थी. यही कारण था कि उन्होंने एकता की शृक्कलायें तोड़ डालीं. संस्कृत के परिडत और अरबी के जालिम भाषा का नेतृत्व करने लगे. जरबी कारसीदाँ आलिमों की मेहरवानी से चर्द में अरबी कारसी के मुशकिल शब्दों और संस्कृतकों की कृपा से हिन्दी में क्रिप्ट शब्दों की भरमार होने लगी. थोड़े ही दिनों में दोनों भाषायें बहुत अलग जा पड़ी.

शुरू में अंग्रेजों ने उद्दे को प्रोत्साहत हैना आरम्भ किया. उद्दे की भाषा थी और कोर्ट की भाषा उनके शब्दों में 'सबसे अधिक कैशनेबिल' मानी जाती है. अंग्रेजों का यह काम हिन्दी पर कुठाराभात सा हुआ. उस समय की हिन्दी की संकटमय अवस्था का वर्णन करते हुए बाबू बाल- मुकुन्द गुप्त ने दुख के साथ कहा है—''जो लोग नागरी अश्वर सीखते थे, वह कारसी अश्वर सीखने पर विवश हुए और हिन्दी भाषा हिन्दी न रह कर उद्दे बन गई. हिन्दी उस भाषा का नाम रहा नो टूटी फूटी चाल पर देवनागरी

श्रक्षरों में लिखी जाती थी."

'प्रजाहितैषी', 'सुधाकर,' 'झानप्रदायिनी पत्रिका' आदि ने हिन्दी की रक्षा करने के लिए एक ज्ञान्दोलन चलाया पर इन पत्र-पत्रिकाओं की भाषा ज्यान से देखने से साफ हो जाता है कि जनका नजरिया संस्कृतमय था. राजा लक्ष्मण प्रसाद सिंह ने आगे बद्कर यह कहा कि हिन्दी में संस्कृत के शब्द बहुत आते हैं, उद् में अरबी-कारसी के. कुछ श्रावश्यक नहीं है कि अरबी फारसी के शब्दों के बिना हिन्दी न बोली जाय, ओर न हम उस भाषा को हिन्दी कहते हैं जिनमें अरबी फारसी के शब्द भरे हों.' उधर उद् को अंग्रेजी सरकार ने शोत्साहन दिया और इघर यूरोपियन ईसाई पाद्रियों ने राजा लक्ष्मख सिंह और उनके साथियों की अरबी फारसी के शब्दों को इटाकर उनकी जगह संस्कृत शब्द रखने के प्रयास को सहायता पहुँचाई.

सौमाग्य से हिन्दी और उद् दोनों के विद्वानों ने अमेशों की चाल समक ली. सर सैयद अहमद, मौलाना सगीर आदि ने उद् को हिन्दी के निकट लाने की कोशिश की, और भारतेन्द्र हरिश्चन्द्र और उनके लेखक मण्डल ने हिन्दी को उर्द के नजदीक पहुँचाने की कोशिश की. सन् 1903

Carried Balletine

میں ینتھ میاویر پرساد دویدی لے اعتدی بهاشا اور ساهلهه شهرشک لیکه میں اکها۔۔ "أردر کوئی ہیں بہاتیا نہیں ، وہ بھی هندی هی هے ، اسیں چاھے جِنْفُ خَارِسی اور عربی کے شبد بهردیں پر جب تک أسكى كريائيس هندى كي هي بني رهتي هين، أسكى رچنا هندی هی کے ویاکون کا انوسون کرتی هے . چاهے کرئی جو کچے کہے ولی اور سودا کے کاویوں میں جو بھاشا ہے وسی تلسیداس اور بہاری کے کاریوں میں ہے، میرا باپ، کے استہان پر اباپ میرا، انہوا 'آپکے حکم سے' کے استہاں میں 'بحکم آپکے' کرنے سے کہیں يهاشا دوسرى هوسكتي هه ؟ ... لكينه كي يرثالي كو بدلنه أنهرا أسميل كسى أثيه بهاشا كے شبدوں كا پريوك كرنے سے مكهية بهاشا کے استار میں کدایی انتر نہیں آسکتا؛ پر گلسکرائسٹ نے جس پہوٹ کا 'انجیکشن' دیا تھا اسکا زھر دھیرے دھیرے ہم میں سے بہوتوں کے نس نس میں پیلتا گیا اور اب بھی بهيل رها هے . هان أن ودائوں اور عالم فاضلوں كو سبهلتا نهين ملی . پندت بهیمسین شرما نے هندی لیکهکوں کو صلاح دی۔ "سنسعرت بهاشا کے اکشے بہندار میں شبدرس کی نیونتا نہیں ھے ، همکو چاهیے که اپنی بهاشا کی پورتی سنسکرت کے سہارے يتهوچت كريس. جن لوگس كو جن وشيش برچلت أنية بهاشاندرگت شدوں کے استہاں میں اُن سے سروتھا بھی سنسکرت شبدوں کا ويوهار كرنے كى رچى نهيں هے أنهيں أسى ملتے هوئے سنسكرت شبدوں کا وہاں یویوگ کرنا چاھٹے . ان ناسک صاحب نے اُردو والس كے اللَّه كرا تيم بنا كر كها-"أمول أسكا يه ركها كيا هـ كه فارسى أور عربى الفاظ جهال تك مقيد ملين هذى الفاظ نه بالدهو (تذكره جلول خزر عصة دريم صفحة 392) .

اسکا پرینام یہ هوا کہ هندی میں تتسم شدوں کا پربوگ برمینے لگا ، ودیشی شبدوں کا وهشکار کیا گیا ، شکایت کے استهاں پر 'شکشا یتی' دشمن کے استهاں پر 'دهشمن' چشمہ کو 'چکشمہ' گائیں کے استهاں پو 'هستکا چدیپکا' آدی آدی کے پریوگ هونے لگے ، اسی طرح' پنڈت پدم سنکه شرما کے شبدوں میں ''آردو والے نئے نئے معرب اور مصرف الغرظ تک سے گریز کرتے هیں اور الکم بجائے عربی اور نارسی کی مستند لیات سے اصتلحات نوبنو سے اپنے طرز تحریر میں ایسا توصف پیدا کرتے هیں که انکا ایک ایک نقرہ غالب کے بعض مشکل مصرعمکی پہچدگی ایک ایک نقرہ غالب کے بعض مشکل مصرعمکی پہچدگی پر بھی غالب آجاتا ہے ،'' گلسکرایسٹ نے هیں جس زهر کا گہرنٹ پایا اسکا پرینام دیکھکر رے ، ایڈوں گروس نے اپنے گہرنٹ پایا اسکا پرینام دیکھکر رے ، ایڈوں گروس نے اپنے 'هدنی اور ناگری پرچارنی سبھا' شیرشک لیکھ میں لکھا 'هدنی اور ناگری پرچارنی سبھا' شیرشک لیکھ میں لکھا نے ۔ ''بھاشا کی سبسیا کا وچار چھور کر اتنا ضرور ماننا پریکا کہ بازار بھاشا کی سبسیا کا وچار چھور کر اتنا ضرور ماننا پریکا کہ بازار بھاشا کی استھا جو هو لیکن شکشت

में पं महाबीर प्रसाद हिवेशी ने 'हिन्दी भाषा कौर पसका साहित्य' शीर्षक लेख में लिखा-"वर् कोई भिन्न माचा नहीं. वह भी हिन्दी ही है. उसमें चाहे जितने कारसी और अरबी के शब्द भर दें पर जब तक उसकी कियायें हिन्दी की ही बनी रहती हैं, उसकी रचना हिन्दी ही के न्याकरण का अनुसरण करती है. चाहे कोई जो कुछ कहे बसी और सीदा के काव्यों में जो भाषा है वही तुलसीदास भीर पिहारी के काव्यों में है. 'मेरा बाप' के स्थान पर 'बाप मेरा' अथवा 'आपके हुक्स से' के स्थान में 'बहुक्स आपके' करने से कहीं भाषा दूसरी हो सकती है ?.....लिखने की प्रशाली को बदलने अथवा उसमें किसी अन्य भाषा के शब्दों का प्रयोग करने से मुख्य भाषा के अस्तित्व में कदापि अन्तर नहीं आ सकता.' पर गिलकाइस्ट ने जिस फूट का 'इन्जेक्शन' दिया था उसका जहर , धीरे धीरे हम में से बहतों के नस नस में फैलता गया और अब भी फैल रहा है. हाँ, जन विद्वानों और जालिम फ्राफ्लिं को सफलता नहीं मिली. पंडित भीमसेन शर्मा ने हिन्दी लेखकों को सलाह वी-"संस्कृत भाषा के अक्षय भएडार में राज्दों की न्यूनता नहीं है, इसको चाहिये कि अपनी भाषा की पूर्ति संस्कृत के सहारे यथोचित करें. जिन लोगों को जिन विशेष प्रचलित क्रम्य भाषान्तर्गत शब्दों के स्थान में उनसे सर्वथा भिन्न संस्कृत शब्दों का व्यवहार करने की क्चि नहीं हैं उन्हें उसी से मिलते हुए संस्कृत शब्दों का वहाँ प्रयोग करना चाहिये." नासिक साहब ने उर्दू बालों के लिये कड़ा नियम बनाकर कहा- 'उसूल इसका यह रक्ता गया है कि कारसी और अरबी अल्काज जहाँ तक मुकीद मिलें, हिन्दी अलकाज न बाँधो (तज्रकिरा जलवये खिज, हिस्सा दोयम सका 392).

इसका परिणाम यह हुआ कि हिंदी में तत्सम शब्दों का प्रयोग बढ़ने लगा. विदेशी शब्दों का बहिष्कार किया गया. शिकायत के स्थान पर 'शिक्षा यत्न' दुश्मन के स्थान पर 'द्व:शमन', चरमा को चक्ष्मा', लालटेन के स्थान पर 'हस्तकाचदीपिका' आदि आदि के प्रयोग होने लगे. इसी सरह, परिस्त पदासिंह शर्मा के शब्दों में, "उर्दू वाले नये नये मुचर्रव और मुसर्रक अलकाज तक से गुरेज करते हैं और उनके बजाय अरबी और फारसी की मुस्तनद लुगात से इस्तलाहात नौ बनौ से अपने तर्जे तहरीर में ऐसा तसीना पैदा करते हैं कि उनका एक एक फिक़रा सालिब के बाज मिक्कल मिसरे की पेचीदगी पर भी ग़ालिब आ जाता है." गिलकाइस्ट ने इमें जिस जहर का घूँट पिलाया उसका परिखास देखकर रे० एडविन प्रविस ने अपने 'हिन्दी और नागरी प्रचारिणी सभा' शीर्षक लेख में लिखा है-"भाषा की समस्या का विचार छोड़कर इतना जरूर मानना पढेगा कि बाजार भाषा की अवस्था चाहे जो हो लेकिन शिक्षित

Carley Co

Sale of the sale o

लोगों के लिए हिंदी और चर्द दोनों अलग अलग भाषायें हैं. इसलिय नागरी लिपि में मुद्रित हुई शब्दों से भरी भाषा हिंदी की जगह न पढ़ाई जाकर इन दोनों भाषाओं की शिक्षा का पृथक् भवन्य करना चाहिये."

इस तरह हमें गुलाम बनाये रखने के लिए हिन्दी और उद् को पूरी वरह अलग करने की कौशिशें होती गई'. आजादी प्राप्त करने के बाद अब हिन्दी और उद् को फिर से एक जगह लाना जरूरी है. उनके बाहरी फरक को स्रतम कर के एकरूपता लानी है. हिन्दी महज हिन्दूओं की सम्पत्ति नहीं, वर्दू भी मुसलमानों की महत्त अपनी नहीं. पंद्रहवें विहार प्रारेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के स्वागता-ध्यक्ष की हैसियत से राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह ने कहा था- "अब तक हिन्दी सत्यनारायण की कथा की पंजीरी पाती रही, उसे अब मीलूद शरीफ की जलेबियां भी असनी होंगी." इसी तरह विहार सरकार के भूतपूर्व शिक्षा सचिव डाक्टर सैयद महमूद साहब ने पटना में 'अंजुमन तरक्रकी' की नयी इमारत का संगे बुनियाद रखते बक्त कहा-"यह मुसलमानों की सख्त ग़लती है कि वह उद् को अपनी जबान कहते हैं. ऐसा करने से उद् को जो सारे मुलक की जबान है नुकसान पहुँचा रहे हैं"

हिन्दी और उर्दू को हमें फिर गंगा और जमना का संगम बनाना है और नई त्रिवेणी की धारा बहाना है. यह काम हो कैसे ? इसके लिये हिन्दी उर्दू के लेखकों को एक मध्य पर जमा होना और एक दूसरे को समम्मना है—यानी एक भाषा का आदर्श पैदा करना है. टेक्स्ट बुक कमेटियों का सहयोग प्राप्त करके उस आदर्श को बच्चों तक पहुंचाना

है. हमें मनोवृत्ति में परिवर्तन करना है.

لوگوں کے لئے هندی اور أردو دولوں الک الگ بهاشائیں هیں . أسيلئے تاگری لیی میں مدرت هوئی شیدرن سے بھری بهاشا هندی کی جانبہ نه پڑھائی جاکر أن دونوں بهاشاؤں کی همشا کا پرتھک پربندھ کرنا چاھائے ۔"

اِس طرح همیں ظ م بنائے رکھنے کے ائے هادی اور اُردو کو پوری طرح الگ الگ کرنے کی کوشیاں هوتی گئیں ، آزادی پواپت کرنے کے بعد اب هادی اور اُدو کو پھر سے ایک جگہا لانا ضروری ہے ، آنکے باهری فرق کو ختم کرکے ایکروپٹا لانی ہے ، هادی محض هادی کی سمیتی نہیں اُردو بھی مسلماتوں کی محض اپنی نہیں ، پادرهویں بہار پرادیشک هادی ساهایہ سمیلن کے سواگنادهیکش کی حیثیت سے راجه رادهیکارمی پرساد ساتھ نے کہا تھا۔ ''آب تک هادی ستیمنارایی کی کھا کی پنجیری پاتی رهی' اُسے اب مولود شریف کی جلیبیال کی پنجیری پاتی رهی' اُسے اب مولود شریف کی جلیبیال سچو داکو سید محصود صاحب نے پائد میں 'انجمی تردی کی شخت فلطی ہے کہ وہ اُردو کو اپنی زبان کہتے هیں ، کی سخت فلطی ہے کہ وہ اُردو کو اپنی زبان کہتے هیں ، ایسا کرنے سے آردو کو' جو سارے ملک کی زبان کہتے هیں ، ایسا کرنے سے آردو کو' جو سارے ملک کی زبان کہتے هیں ،

ھندی اور اُردو کو ھمیں پہر گنگا جمنا کا سنکم بنانا ہے اُور نئی تروینی کی دھارا بہانا ہے ، یہ کام ھو کیسے ؟ اِسکے لئے ھندی اُردو کے لیکھکوں کو ایک منچ پو جمع ھونا اور ایک درسرے کو سمجھنا ہے۔۔۔۔یمنی ایک بہاشا کا آدرش پیدا کرنا ہے ، تیکست بک کمیٹی کا سہبوگ پراپت کر کے اُس آدرش کو بحوں تک پہرنچانا ہے ، عمین منوورتی میں پربررتی کونا ہے ،

प्रेम कुछ नहीं मांगता. बल्कि कुछ न कुछ देता रहता है. प्रेम दुख सहता है कभी नाराज नहीं होता और न कभी बदला लेता है. जहां प्रेम है, वहां भगवान भी है.

—महात्मा गांधी

پریم کچھ نہیں مانکتا بلکہ کچھ نہ کچھ دیتا رہتا ہے ، پریم دکھ سہتا ہے' کبھی ناراض نہیں ہوتا اور نہ کبھی بدلہ لیتا ہے ، جہاں پریم ہے' وہاں بہکوان بھی ہے ،

-مهاتما كأندهي

स्त् स्वयद् ए० एफ० एम० चन्द्रत चली

जीसत दरजे के पढ़े लिखे मुसलमान भाइयों का यह जाम जायल है कि शिवाजी इसलाम का दुरमन था और वह मुसलमानों का नामोनिशान मिटाकर भारत में शुद्ध हिन्दू वादशाहत कायम करना चाहता था. |शिवाजी के सम्बन्ध में जो कुछ मैंने जांच पढ़ताल की है, उसमें में इस मतीजे पर पहुंचा हूँ कि मुसलमान भाइयों की यह राय विलक्षक रालत है. 'शिवाजी में मजहवी तरफदारी विलक्षक नहीं थी और जगर उसे वादशाहत कायम करने में कामयाबी हासिल होती, तो उसकी वादशाहत खालिस हिन्दुस्तानी होती जिसमें हिन्दू और मुसलमान दोनों को वक्सों अधिकार होते. उसकी वादशाहत मराठा वादशाहत होती जिसके मंद्रे के नीचे सब धर्म वाले अमन और मुहज्बत से रहते और जिसमें हिन्दू मुसलमानों का कोई कर्क न किया जाता.

आम तौर पर इतिहास लेखकों ने शिवाजी के बारे में तरह तरह की गलतकहिमयां फैला रखी हैं. स्कूली इतिहास हमें सिखाता है कि शिवाजी हत्यारा और लुटेरा बा, उसने दोस्ती का ढोंग रच कर अकजल खां की धोंके से हत्या की और वह मुसलमानों का दुरमन था. शिवाजी ने अकजल खां की घोंखे से हत्या की या नहीं इस सवाल पर अब भी कई रायें हैं. कर्ज कीजिये थोड़ी देर के लिये बह बात मान भी ली जाय कि शिवाजी ने ऐसा किया, तो भी उससे यह कैसे साबित हो सकता है कि शिवाजी मुसलमानों का नामोनिशान मिटा देना चाहता बा बा शुद्ध हिन्दू बादशाहत कावम करना चाहता था ?

रिाबाजी की नीति तथा उसके चरित्र के सम्बन्ध में सब में प्रामाधिक (मुस्तनद) इतिहास लेखक काफी खां समका जाता है. काफी खां का पिता रिाबाजी का समकालीन था. काफी खां खुद रिाबाजी की मौत के 13 बरस बाद मुराल बादशाह के कर्मचारी की हैसियत से सूरत, खहसदनगर तथा महाराष्ट्र के कई स्थानों में रहा था. उसने सपनी मराहूर किताब 'शिवाजी की जीवनी' में अफज़ल खां की हत्या की घोर निन्दा की है, लेकिन शिवाजी के सम्बन्ध में उसने यह भी लिखा है कि—

"रिज़ाजी ने नये नये किले बनवाये. अगर एक तरफ़ उसने बीजापुर के राज्य में खूटपाट की तो दूसरी और

سورگیته سهد أحد أیف ایم عبدالعلی

أوسط درجے کے پڑھ انھے مسلمان بھاٹھوں کا یہ عام خیال ہے کہ شواجی اسلام کا دشمن تھا اور وہ مسلمانوں کا تام ونھان مٹاکر بھارت میں شدھ ھلدو بادشاھت قایم کرنا چاھٹا تھا ، شواجی کے سمبلدھ میں جو کچھ میں نے جانبے پرتال کی ہے، اُس سے میں اُس نتیجے پر پہونچا ھوں که مسلمان بھاٹھوں کی یہ رائے بالکل غلط فی شواجی میں اُمذھبی طرنداری بالکل نہیں تھی اور اگر اُسے بادشاھت تایم کرنے میں عامداری بالکل نہیں تھی اور اگر اُسے بادشاھت تایم کرنے میں عمیابی حاصل ھوتی، تو اُسکی بادشاھت خالص ھندستانی ھوتی جسمیں ھندو اور مسلمان دونہی کو یکساں اُدھیکار ھوتے ۔ اُسکی بادشاھت مرآتھا بادشاھت ھوتی جسمی جہندے کے نیچے سب دھرم والے امن اور محبت سے رہتے اور جسمیں ھندو مسلمانیں کا کوئی فرق نہ کیا جاتا ،

عام طور پر اِتہاس لهتهتموں نے شواجی کے بارے میں طرح کی غلط نہمیاں پھیلا رکھی ھیں اِستولی اِتہاس ھییں سکھا تا ھے کہ شواجی ھتیارا اور لایرا تھا اُسنے دوستی کا تھونگ رچ کو انفل خاں کی دھوکے سے ھتیا کی اور وہ مسلمائوں کا دشمن تھا ، شواجی نے انفیل خاں کی دھوکے سے ھتیا کی یا نہیں اِس سوال پر آپ بھی کئی رائیں ھیں ، فرض کیجیئے تھوڑی دیر کے لئے یہ بات مان بھی لی جائے کہ شواجی نے ایسا کھا نویی اُس سے یہ کیسے تابت ھو سکتا ھے کہ شواجی مسلمائوں کا نام و نشان متا دینا چاھتا تھا یا شدھ ھندو بادشاھت تایم کرنا چاھتا تھا ؟

شواجی کی نیتی تنها اُسکے چرنو کے سمبندھ میں سب میں پرامانک (مستند) اِتهاس لیکھک کانی خاں سمجها جاتا ہے۔ کئی خان کا پتا شواجی کا سکالین تها ، کانی خان خود شواجی کی موت کے 13 برس بعد مغل بادشاہ کے کومچاری کی حیثیت سے صورت، احمد نکو تنها مہاراشتر کے کئی استهائوں میں رہا تھا ، اُسلے اپنی مشہور کتاب 'شواجی کی جھوئی' میں انفل خان کی متلیا کی گھرر نندا کی ہے' لیکن شواجی کی سبندھ میں اُسلے یہ بھی لکھا ہے کہ۔۔

155 HENRIE

(74)

اكست 55%.

84

हसने अपने दाना की जाताना थी. यह सही है कि वह तिजारती कार्कितों को कुट जिला करता था, लेकिन साथ ही काल यह भी सही है कि इसने अपने सैनिकों के बिर्दे का निजय बना दिया था कि ने जहां कहीं भी कुट मार करें वहीं हुरान रारीफ की, ससजियों की और किसी की वह बेटियों की नेइक्करी न करें जब कभी कुरान रारीफ की कोई प्रति उसके हाथ में पढ़ जाती तो वह इसे बड़ी इक्करत से रखता था और अपने किसी मुसलमान अहुवाकी को मेंट ने देता था."

एक दूसरे मुसलमान इतिहास केलक वशीवदीन अहमद ने अपनी पुस्तक 'बीजापुर की वारीख' में काकी खां के बयान

की ताईद की है. उसने जिसा है-

"शिवाजी में बहुत से अच्छे गुण थे. मुसलमान इतिहास लेखकों का कहना है कि वह क़ुरान शरीफ की वड़ी इफ्जल करता था. मसजिवों को वह पाक सममा कर उनका सम्मान करता था. कियों और बच्चों की तरफ उसका वर्ताब बेहद तारीफ के क्राविल रहा. शिवाजी का नाम हिन्दुस्तान के इतिहास में सदा अमर रहेगा."

बशीहदीन अहमद ने अपनी इसी पुस्तक में आगे चल

"जिन लोगों ने शिवाजी के जीवन का अध्ययन (मुताला) किया है वह जानते हैं कि वह कैसा बुद्धिमान, बहादुर और मेहनती आदमी था. दूरन्देशी, काबलियत, दरियादिली, बहादुरी, हिन्मत, मेहनत और मर्दानगी उसके कृदरती गुरा थे. इस लोग उसे डाकू, लुटेरा और धोकेबाज कहते हैं; लेकिन उसकी जिन्दगी हमें कुछ और ही बताती है, उन दिनों लुटमार करना और आग लगा देना बड़ी मामूली सी बात थी. रही धोकेबाजी, सो जंग में कीन द्रमन को धोका देना नहीं चाहता ? शिष्ट भाषा में धोके-बाजी को ही कूटनीतिश्वता कहते हैं. शिवाजी की बहादरी की जितनी भी तारीफ की जाय, कम है. एक साधारण व्यक्ति होते हुए उसने मुराल सम्राट तथा भादिलशाही मुल्तान के नाक में दम कर दिया था. कभी वह आदिलशाही वालों से मिल कर मुरालों के राज्य में लूट मार करने लगता था और कभी मुग़लों की और मिलकर बीजापुर के राज्य में लूट पाट मचा देता था. सच तो यह है कि वह जिधर जाता था, किसी को उससे टक्कर लेने की हिन्मत न पडती थी. 25 बरस तक उसने दोनों से लोहा लिया और सन 1091 हिजरी यानी 1680 ईसबी में वह बीरीं के लोक को कृष कर गया."

यह बात बड़ी सराहूर है कि शिवाजी रत्नागिरी जिले में बंकोट के निकट रहने बाले बाबा बाकूत नामक एक मुसलमान ककीर का पक्का भक्त था. उसकी सेना ही में أسلے الله راجيد كو بسايا بهى . يه محيم قد كه وه تعبارتى قاتلين كو لرحة لها كرتا تها ليكن ساله هي ساته يه يهى محصوط قد كه أسله أي سيكرس كي أور كسي كي سيكوس كي أور كسي كي بهو بياليوس كي أور كسي كي بهو بياليوس كي إور كسي كي بهو بياليوس كي ي عوتى نه كويں . جب كيمي قرآن شويف كي كرئي پرتي أسكم هاته ميں پوجاتي تو وه أسه بري عوت سه ركبا تها أور أين كسي مسلمان ألويائي كو بيهامه ديم دينا تها ."
أسلم لكها هـ—

ایک درسرے مسلمان اِتہاس لیکیک بھیرالدین احمد نے اپنی پستک 'بیجاپور کی تاریخ' میں کانی خاں کے بھان کی تائید کی قائد کی اس نے لکھا ہے۔۔

"شواجی میں بہت سے اچھے گن تھے ، مسلمان اِتہاس لیکھکوں کا کہنا ہے کہ وہ قرآن شریف کی بڑی عزت کرتا تھا ، مسجدوں کو وہ پاک سمجھکو آلکا سمان کرتا تھا ، اسٹریوں اور بحوں کی طرف آس کا برتاؤ ہے حد تعریف کے قابل رہا ، شواجی کا نام ہندستان کے اِتہاس میں سذا اُس رہیگا ،"

بھیر الدین احد نے اپنی اِسی پستک میں آگہ جل_، کر اٹھا ہے۔۔۔

'جن لوگس نے شواجی کے جیرن کا اُددھیں (مطالعه) کیا ہے وہ جالتے میں که وہ کیسا بدھیدان اور محنتی أَدْمِي تَهَا. دورالدهشي قابليت دريا دلي بهادري همت مصلت اور سردانکی اسم قدرتی کن تھے ، کچھ لوگ آسے ڈاکو الیرا اور دهوکے باز کہتے میں؛ لیکن اُسکی زندگی میں کچھ اور هی بتاتي هے . أن دنول لوت مار كرنا أور آك لكا دينا برى معمولي سی بات تھی ، رھی دھوکے بازی سو جنگ میں کون دشمن کو دھوکا دینا نہیں جاھتا ؟ ششت بھاشا میں دھوکے بازی کو ھی کوٹ ٹیکیتا کہتے ھیں ۔ شواجی کی بہادری کی جٹنی بھی تعریف کی جائے کم ہے ، آیک سادھادیں ویکتی ھوتے ھوئے اس نے مغل سمرات تھا عادل شاھی ماطان کے ناک میں دم کردیا تھا ، کبھی وہ عادل شاھی والی سے ملکر مغلوں کے راجیہ میں اوٹ مار کرنے لکتا تھا اور کبھی مغاوں کے اُور ملکر بیجابور کے راجیہ میں لوق پاٹ محا دیا تھا ۔ سبج تربية هے كه وہ جدهر جاتا تها كسى كو أس سے تكر لينے كى همت نه يوتى تهى . 25 برس تك أسلے دونوں سے لوها ليا اور سن 1091 هجري يعني 1680 عيسوي ميں ولا ويروں کے لوک کو کہے کر گیا ۔"

یہ بات بڑی مشہور ہے کہ شواجی رتناگری ضلع میں بنکوت کے نکت رہنے والے بانا یاتوت نامک ایک میں مسامان نقیر کا یکا بھات تھا۔ اُس کی سینا ھی میں

कही, अर्थिक शासन विभाग में भी सकते अच्छे परों पर अनेक सुसलमान कर्मवारी थे. उसके मुन्शी का नाम काजी हैंपर था, शराबी सन्माजी के राजा होने पर उसने मराठों की नौकरी छोड़ कर मुरालों की नौकरी कर ली थी और इन समय बाद वह मुराल साम्राज्य का प्रवान काजी हो गया चा.

स्वर्गीय भी काशीनाथ तैलंग ने अपने एक लेख में लिखा था कि "ऐसा मालूम होता है कि जहाँ शिवाजी ने मन्दिरों, मठों आदि की रचा की थी, वहां उसने मसजिदों, पीरों, मादि को मिलने वाली सरकारी सह।यता भी वन्द नहीं की बी." अपने इस कथन के समर्थन में उन्होंने कई यूरोपियन लेखकों का इवाला दिया है, इस निष्पक्ष विदेशी लेखकों की बात को मान लेने में इतिहास के विद्यार्थियों को किसी तरह का संकोच न करना चाहिए.

.खुद औरंगजेब के शिवाजी के नाम लिखे हुए पांच पत्र अभी तक मौजूद हैं और सितारा के अजायबघर में पारसनीस के संप्रह में सुरक्षित हैं. इनमें से कई पत्र अकजल खां के बध के परचात लिखे गये थे और इन सब पत्रों में भौरंगजेब ने शिवाजी को 'मुतीवल इसलाम' अर्थात् इसलाम का आज्ञाकारी लिखा है. इन सब प्रमाणों के रहते " दुए क्या कोई भी समभदार आदमी इस नतीजे पर पहुंच सकता है कि शिवाजी मुसलमानों से नफरत करता था, उन का नामोनिशान मिटा देना चाहता था और भारत में शुद्ध हिन्द्र राज्य की स्थापना करना चाहता था ?

نيس الله شاسي ويهاك مين بهي أجم الجم يدون ير اليك مسلمان کرستهاری اس کے منشی کا للم قاضی حیدر تھا۔ شرالی سبیا جی کے راجا ہوئے پر اس نے سرائیوں کی ٹوکری چھور کر مناور آئی توکوی کولی تھی اور کچھ سیلے بعد وہ منل سامراً جہد کا پردھان قافی هو گیا تھا ۔

سورکه شری کاشی ثانی تیلنگ نے اپنے ایک لیم میں لعها تها که ''ایسا معلوم هوتا که جهاں شواجی نے مندروں' متهوں آدی کی رکھا کی تھی' وھیں اِس نے مستجدوں پھروں آدی كو ملق والى سوكارى سهائينا يهي بند نهيل كي تهي ." ايني اس کامن کے سمرتھی میں اُنہوںنے کئی یوردپین لیکھکوں كا حواله ديا هـ ، أن نشهكش وديشي ليكهكون كي بات كو مان لینے میں اِتہاس کے ودیارتھیوں کو کسی طرح کا سنعوج نے کرنا

خود اورناؤیب کے شواجی کے نام لکھے هوئے پانیج پتر ابھی تک موجود ھیں اور ستارا کے عصائب کھر میں یارس نیس کے سنکوہ میں سورکشت ھیں، انمیں سے کئی پتر انفل خال کے بدھ کے پشچات لکھے گئے تھے اور ان سب پترں میں اورنگزیب ني شواجي كو "مطيع السلم" أرتبات اسلم كا أكيان كاري لكها هي. ان سب پرمائس کے رہتے ہوئے کیا کوئی بھیسمجدار آدمی اِس نتيجے پر پہونے سكتا في كه شواجي مسلمانين سے نغرت كرنا تها أن كا نام و نشان منا دينا چاهنا تها اور بهارت مين شده هدر راجيم كي إستهاينا كرنا چامتا تها 8

······ मैं तो रामराज यानी दुनिया में ईरवर के राज का सपना देखता हूँ. वही आजादी है. स्वर्ग में यह राज कैसा होगा, सो मैं नहीं जानता. बहुत दूर की चीज जानने की मुक्ते इच्छा भी नहीं है. अगर वर्तमान (हाल) दिल को काफी बच्छा लगता हो, तो भविष्य (मुस्तक्रविल) उससे बहुत अलग नहीं हो सकता.

''इसलिये राजनैतिक, आर्थिक और नैतिक (अख़लाक्री) तीनों तरह की आजादी ही सच्ची आजादी है....."

---महात्मा गांधी

.....میں تو رام راج یعنی دنیلہ میں ایشور کے راہے کا سینا دیکھتا ھوں، رھی آزادی ہے، سورگ میں یہ راے کیسا هوگا سو میں نہیں جانتا ، بہت دور كي چيز جانئي كي سجم اچها بهي نهين هي . اگر ورتمان (حال) دل كو كاني أچها لكتا هو تو بهرشيه (مستقبل) أس سے بہت الگ نہیں موسكتا .

"إس لئے راج نیتک، آرتیک اور نیتک (اخلاقی) نینس طرح کی آزادی هی سچی آزادی هے....."

سمياتيا كالدهى

CONTROL OF THE CONTRO

भी ज्ञानशंकर कुपारांकर पंड्या

सम्राट बालमगीर भारत के जालिस बावशाहों में से एक गिना जाता है, लेकिन जहाँ एक छोर उसने अपने पिता शाहजहाँ को क़ैद में रखा और भाइयों को करल किया. वहाँ इसरी और वह क़रवानी, सदाचार और कठोर जीवन की प्रतिमृति सममा जाता है. यदि एक भोर वह जबरदस्त लेच्छाचारी था तो वृसरी भोर गरीबी और नम्रता से भरा हुआ, प्रजा की गादी कमाई का एक पैसा भी अपने स्वार्थ के निये खर्च करने को वह पाप सममता था. टोपी सीकर और क़ुरान लिखकर वह अपना पेट पालता था. दुनिया के बढे से बढ़े सम्राटों में उसकी गिनती थी. उसका खजाना हीरे जवाहरात से लवालव था. लेकिन नमक और वाजरे की रोटी ही पर वह अपना जीवन काटता था. वह अपनी सस्तनत को 'ख़ुदादाद' मानता था. मरने से पहले सम्राट बालमगीर ने जो वसीयत की है, उसे देखकर इम इस महान सम्राट के आखरी दिनों की मानसिक हालत को भली भांति समम सकते हैं. वसीयत की धारायें ये हैं-

- (1) बुराइयों में डूबा हुआ मैं गुनहगार, वली हजरत इसन की दरगाह पर एक चादर चढ़ाना चाहता हूँ, क्योंकि जो शख्स पाप की नदी में डूब गया है, इसे रहम और क्षमा के मंडार के पास जाकर क्षमा की भीक माँगने के सिवाय और क्या सहारा है. इस पाक काम के लिये मैंने अपनी कमाई का रुपया अपने बेटे मुहम्मद आजम के पास रख दिया है. इससे लेकर यह चादर चढ़ा दी जाय.
- (2) टोपियों की सिलाई करके मैंने चार रुपये दो आने जमा किये हैं. यह रक्तम महालदार लाइलाही बेग के पास जमा है. इस रक्तम से मुक्त गुनहगार पापी का कफन सरीदा जाय.
- (3) क़ुरान शरीफ की नक़ल करके मैंने तीन सी पांच रूपये इकट्ठे किये हैं. मेरे मरने के बाद यह रक़म फ़क़ीरों में बाँट दी जाय. यह पाक पैसा है, इसलिये इसे मेरे कफ़न या किसी भी दूसरी ज़क़री चीज पर न सर्च किया जाय.
- (4) नेक राह को छोड़कर गुमराह हो जाने वाले लोगों को आगाह करने के लिये मुक्ते खुली जगह पर दफ्नाना और मेरा सर खुला रहने देना, क्योंकि उस महान राहन्साह परवरिवृगारे आलम के दरवार में जब कोई पापी नंगे सिर जाता है तो उसे खहर दया आ जाती होगी.

شرى گيلن شنكر كريا شنكر. يلديا

سعرات عالمکیر بهارت کے طالم بادشاهوں میں سے آیک گانا جاتا ہے۔ ایکن جہاں ایک اور اُس نے اپنے پتا شاهجہاں کو قید میں رکھا اور بھائیوں کو قتل کیا' وہاں دوسری اُور وہ قربائی' سماچار اور کھور جھوں کی پرتی مورتی سمجھا جاتا ہے۔ یدی ایک اور وہ زبردست سویچھاچاری تھا تو دوسری اُور غریبی اور نموتا سے بھوا ہوا ۔ پرجا کی گاڑھی کمائی کا ایک پیستے بھی اپنے سوارتو کے ائے خرچ کرنے کو وہ چاپ سمجھتا تھا ۔ پیستے بھی اپنے سوارتو کے ائے خرچ کرنے کو وہ چاپ سمجھتا تھا ۔ تاہی سی کر اور قرآن لیمکر وہ اپنا بیت پالتا تھا ۔ دنیا کے برتے سے برتے سمرائوں میں اُس کی گنتی تھی ، اُس کا خزانہ ھی پر وہ اپنا جیوں کاتتا تھا ۔ وہ اپنی سلطات کو 'خداداد' می پر وہ اپنا جیوں کاتتا تھا ۔ وہ اپنی سلطات کو 'خداداد' مائتا تھا ، مرنے سے پہلے سمرات عالمکیر نے جو وصیت کی ہے' مائت کو بھی بھی ہے۔ جالت کو بھی بھاتی سمجھ سکتے ھیں ، وصیت کی دھارائیں حالت کو بھی بھائتی سمجھ سکتے ھیں ، وصیت کی دھارائیں حالت کو بھی بھائتی سمجھ سکتے ھیں ، وصیت کی دھارائیں

- (1) براٹیوں میں توبا ہوا میں گنہگار' ولی حضرت حسن کی درگاہ پر ایک چادر چرعانا چاعتا ہوں' کیونکہ جو شخص پاپ کی ندی میں توب گیا ہے' اُسے رحم اور چیما کے بینتدار کے پاس جائر چیما کی بیبک مانگنے کے سوائے اور کیا سہارا ہے اِس پاک کام کے لئے میں نے اپنی کمائی کا روپیہ اپنے بیتے محمد اعظم کے پاس رکھ دیا ہے ۔ اُس سے لیکر یہ چادر چرما دی جائے ۔
- (2) ترپیوں کی سلائی کرکے میں لے چار روپئے دو آلے جمع کئے عیں ، یہ رقم محالدار اللہي بیگ کے پاس جمع ہے ، اِس رقم سے مجھ گنہکار پاپی کا کنن خریدا جائے ،
- (3) قرآن شریف کی نقل کرکے میں نے تین سو پانچ روپئے اکٹھے کئے ھیں ، میرے مرنے کے بعد وہ رقم نقیروں میں بانٹ دی جائے ، یہ پاک پیست ھ' اِس لئے اِسے میرے کنن یا کسی بھی دوسری ضروری چیز پر نا خرچ کیا جائے ،
- (4) نیک راہ کو چھورکر گمراہ ہو جانے والے لوگوں کو آگاہ کرنے کے لئے مجھے کہلی جگہ پر دفقانا اور میرا سر کھا رہنے دیفا کیونکہ اُس مہاں شہنشاہ پروردگار عالم کے دربار میں جب کوئی پاپی ٹنکے سر جاتا ہے تو اُسے ضرور دیا آجاتی ہوگی .

अगस्य '55

A Company of the Comp

(平)

اكست 55 ا

(क) बेदी बारा को कपर से सकेद सहर के कपने से डक्क देना. चर्र या खतरी नहीं सगाना, न गाजे बाजे के साथ जुसस निकासना भीर न मीसूद करना.

(6) आपने कुटुन्बियों की मदद करना और उनकी इस्तात करना कुरान रारीफ़ की आयत है—प्राणिमात्र से में करों, मेरे बेटो ! यही तुन्हें मेरी हिदायत है. यही विश्वकर का हुक्स है. इसका इनाम अगर तुन्हें इस जिन्दगी में जहार मिलेगा.

(7) अपने कुटुन्बियों के साथ मुह्ब्बत का बर्ताव करने के साथ साथ तुम्हें यह बात भी व्यान में रखनी होगी कि वनकी ताकत इतनी क्यादा न बढ़ जाय कि उससे हुकूमत को सारा हो जाय.

(8) मेरे बेटे! हुकूमत की बागडोर मजबूती से अगर पकड़े रहोगे तो तमाम बदनामियों से बच जाओगे.

(9) बादशाह को अपनी हुकूमत में चारों ओर दौरा करते रहना चाहिये. बादशाह को कभी एक मुकाम पर नहीं रहना चाहिये. एक जगह रहने से आराम तो जरूर मिलता है, लेकिन कई तरह की मुसीबतों का सामना करना पहता है.

(10) अपने बेटों पर कभी भल कर भी एतबार न करना, न उनके साथ कभी नजदीकी ताल्लुक रखना.

(11) हुकूमत के अन्दर होने वाली तमाम बातों की तुन्हें इत्तला रखनी चाहिये—यही हुकूमत की कुंजी है.

(12) बादशाह को हुकूमत के काम में जरा भी सुस्ती नहीं करनी चाहिये. एक लम्हे की सुस्ती सारी जिन्दगी की सुसीवत की बाइस वन जाती है.

यह है मुख्तसिर में सम्राट आलमगीर का वसीयतनामा. इस बसीयतनामे की धाराओं को देखकर यह पता चलता है कि सम्राट को अपने अन्तिम दिनों में अपने पिता को क़ैद करने, अपने भाइयों को क़त्ल करने और अपनी स्वेच्छाचा-रिता पर दिली अफ़सोस और मलाल था.

इसी बसीयतनामे के गुताबिक औरंगाबाद के निकट सुस्दाबाद नामक छोटे से गाँव में, जो आलमगीर का मक्तबरा बनाया गया, उसमें उसे सीधे सादे तरीक़े से दफ्न किया गया. उसकी क्रम कच्ची मिट्टी की बनाई गई, जिस पर आसमान के सिवाय कोई दूसरी छत नहीं रखी गई. क्रम से गुजाबिर उसकी क्रम पर जब तब हरी दूब लगा देते हैं. इसी कच्चे मजार में पड़ा हुआ भारत का यह महान सम्राट रोजे महरू र के दिन तक अपने अल्लाह से रूबक्र होने के دیا ہوں کا موری اس کو آروز سے سنید کیدر کے کورے سے کمک دیا ہوں یا جھتری نہیں کانا کہ گئے باچے کے سام جارس نکانا آور نے سولود کرنا ۔

(7) اپنے کلمبھوں کے ساتھ محبت کا برتاؤ کرنے کے ساتھ ساتھ تمھیں یہ بات بھی دھیلی میں رکینی عوگی که اُن کی طاقت اِنائی زیادہ تم بڑھ جانے که اُس سے حکومت کو خطرہ ھوجائے .

(8) مهرم بهاله ! حكومت كي بالاستور مغبوطي سه أكر يكوم رهوك تو تمام بدنامهون سه بها جاؤگ .

(9) بادشاہ کو اپنی حکومت میں چاروں اُور دورہ کرتے رهنا چاهئے. واقع جائے مقام پر نہیں رهنا چاهئے. ایک جائه رهنے ہے آرام تو ضرور ملتا ہے لیکن کئی طرح کی مصیبتوں کا سامنا کرنا پرتا ہے ۔

(10) اپنے بیٹوں پر کبھی بھولکر بھی اعتبار نے کونا نے اُن کے ساتھ کبھی نودیکی تعلق رکھا ،

(11) حكومت كے أندر هونے والى تمام باتوں كى تمهيں اطلاع ركھنى چلھئے—يہى حكومت كى كنجى هے .

(12) بانشاہ کو حکومت کے کام میں ذرا بھی سستی نہیں کرنی چاھئے ، ایک لبجے کی سستی ساری زندگی کی مسیت کی باعث بن جاتی ہے .

اِسی ومیتنامه کے مطابق آورنگ آباد کے نکت خاد آباد ناک چھوٹے سے گاوں میں جو عالمکیر کا مقبرہ بنایا گیا اس میں آب سیدھ سادے طریقے سے دنوں کیا گیا ، اُس کی فبر کچی ملی کی بنائی گئی ، جس پر آسان کے سوانے کوئی دوسری چھت نہیں رکھی گئی ، قبر کے مجاور اُس ٹی قبر پر جب نہ بھوی دوب نگا دیتے ھیں ، اِسی کچے مزار میں پڑا ھرا بھارت کا یہ مہاں سمرات روز محصر کے دن تک اپنے آلک سے درورد ھرنے کے انتظار میں ہے .

10 m

वापने केंद्रे हुआ। पास को एकने करने के पाई जो सात लिखा, परामें किसी--

"बादराहों को कभी आराम वा पेरोहरारत की फिल्हगी नहीं क्रितानी बाहिये. यह पैर महोनगी की आदत ही मुल्कों और बादराहों की बरनादी की बजह साबित हुई है. बादशाहों को अपनी हुकूमत में नशीली बीजों और शराब बेचने या पैने की कभी इजाजत न देनी बाहिये. इससे रिम्राया का बरित्र नाश होता है. इस मद की आमदनी को उन्हें हराम सममना बाहिये."

अपने बनारस के सूबेदार के नाम एक खुत में आलमगीर लिखता है—

"अपनी हिन्दू रिकाया के साथ जुस्म न करना. उनके साथ भार्मिक उदारता बरतना और उनकी भार्मिक भावनाओं का लिहाज करना."

आलमगीर मनुष्य मनुष्य के बीच के फर्क को अस्लाह की नजरों में गुनाह सममता था. शाहजहाँ जब तक्त पर था तो एक बार उसने आलमगीर से शिकायत की कि उसे शहजाहें की हैसियत से छोटे बड़े सब में एक तरह नहीं मिलना चाहिये. इस पर आलमगीर ने अपने बाप की हर तरह इज्जत करते हुये जबाब दिया—

"लोगों के साथ मेरा बराबरी का बर्ताब इसलाम के उत्तालों के मुताबिक है. इसलाम के पैराम्बर ने कभी अपनी जिन्दगी में छोटे बड़े की तमीज नहीं की. खुदा की नजरों में सब इनसान बराबर हैं. इसलिये मैं आपकी आज्ञा मानने में अपने को लाचार पाता हूँ."

ऐसा था वह वादशाह जिस पर इतिहास ने एक काली चादर डाल रखी है और जिसके मुताल्लिक आम पढ़े लिखे आदमी के दिल में जुल्म की एक खीफ़नाक तसवीर खिंची हुई है. जैसे जैसे जांच पड़ताल की तेज आँखें बीते जमाने के परदे को इटाती जाती हैं, वैसे वैसे हमें सम्राट आलमगीर के जीवन के मुन्दर पहलू भी दिखाई दे रहे हैं.

"…… सत्याप्रद एक ऐसी तलवार है जिसके सब तरफ धार है. उके जैसे चाहो वैसे काम में लाया जा सकता है. काम में लाने वाला और जिस पर वह काम में लाई जाती है, दोनों उससे मुखी होते हैं. खून न बहाकर भी वह बड़ी कारगर होती है. उस पर न तो कभी खंग लगता है, और न कोई उसे चुरा ही सकता है……"

-- महात्मा गांधी

الله بعلى معظم عاة كو أس في مولد كا يبلد جو عُمَا كَانِهَا اللهَا اللهُ عَلَيْ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ ا أس ميں لكيا

"بانشاهوں کو کبھی آرام یا عیش و عشرت کی وقدگی
فہیں بتائی چاھئے ۔ یہ غیر مردانکی کی عادت ھی ملکوں آور
بانشاهوں کی بربادی کی وجہ ثابت ھوئی ھے ۔ باد شاهوں کو
اپنی حکومت میں نشیلی چیزوں اور شراب بیچنے یا پہنے
کی کبھی اِجازت نہ دینی چاھئے ۔ اِس سے رعایا کا چوتر ناش
ھوتا ھے ۔ اِس مد کی آمدنی کو تمہیں حرام سنجھنا چاھئے۔"

آپنے بنارس کے صوبیدار کے تام ایک خط میں عالمگیر انہا ہے۔

''اپنی هادر رعایا کے ساتھ طالم نع کرنا ۔ اُن کے ساتھ دھارمک آدارتا ہرتنا اور اُن کی دھارمک بھارتاؤں کا لتحاط کرنا ۔''

عالمگیر ماشیہ منشیہ کے بیچ کے نرق کو آباء کی نظروں میں گناہ سمجھتا تھا ۔ شاهجھاں جب تخت پر تھا تو ایک ہار اس نے عالمگور سے شکارت کی که آسے شہزادے کی حیثیت سے جھوٹے ہڑے سب سے ایک طرح نہیں مانا چاھئے ۔ اِس پر عالمگیر نے اپنے باپ کی هر طرح عزت کرتے ھوٹے جواب دیا۔

''لوگوں کے ساتھ میرا ہرآبری کا برناؤ اِسلام کے اُصولوں کے مطابق ہے ۔ اِسلام کے پیغمبر نے کبھی اپنی رندگی میں چھوٹے بڑے کی تمیز نہیں کی . خدا کی نظروں میں سب اِنسان برابر ھیں ، اِس للے میں آپ کی آگیاں ماننے میں اپنے کو برابر ھیں . اِس للے میں آپ کی آگیاں ماننے میں اپنے کو بلاچار ہاتا ھوں ''

ایسا تھا وہ باد شاہ جس پر اِتھاس نے ایک کالی چادر دال رکھی ہے اور جس کے متماق عام پڑھ لکھے آدمی کے دل میں ظلم کی ایک خونناک تصویر کھنچی ہوئی ہے ۔ جیسے جیسے جانبے پڑتال کی ' تیز آنکھن بیتے زمالے کے پردے کو ہاتی جاتی ہیں' ریسے ویسے ہمیں سمرات عالمگھر کے جون کے سندر یہلو بھی دکھائی دے رہے ہے ہیں ۔

سمهاتما كالنعى

شریدتی شائتا ہائتے

श्रीमती शान्ता पांडे

ह्य हिन्दुस्तानियों के रोज के खाने में तरकारियों की एक खास जगह है. हमारी गृहदेवियाँ तरह तरह के साग सिक्यों से भोजन को जयादा से ज्यादा लजीज और स्वादिष्ट बनाने की कोशिश करती हैं. पढ़े लिखे लोगों की भूक तो रोचक और लजीज सरकारियाँ देखकर ही जागती है. हम लोग तरकारियाँ स्वाद के लिहाज से ही खाते हैं और हम जानते भी नहीं कि ये तरकारियाँ हमारी पाचन शिक को हुउस्त रखने की कितनी कोशिश करती हैं. इधर इस दिनों से हमने मोजन के अन्दर तरकारियों की अहमियत को सममना शुरू किया है पर अभी तक हमारे रोज के भोजन में तरकारियों को, उनकी अहमियत के लिहाज से, ठीक जगह नहीं मिली है.

खब नई नई खोजों की रोरानी में तरकारियां हमारे भोजन का महत्वपूर्ण अङ्ग बनती जा रही हैं. लोग यह जान गए हैं कि तरकारियों के अन्दर खनिज द्रव्य और विटेमिन होते हैं. यह भी लोग जान रहे हैं कि तरकारियों में स्टार्च (मैदा), शक्कर और थोड़ी मिक्रदार में प्रोटीन और सेलु-लोख भी होते हैं. मोटे तीर पर तरकारियां दो श्रे िएयों में बांटी जा सकती हैं—

(१) वे तरकारियां जिनमें पानी का श्रंश प्यादा है श्रीर स्टार्च कम, जैसे—टमाटर, गोभी, करमकस्ला, सहजन, सलाद, स्रीरा बरोरह.

(२) वे तरकारियाँ जिनमें स्टार्च और शकर अधिक मिक्कदार में है, जैसे—आलू, शकरकन्द, गाजर, मटर, जुक्कन्दर, कद्दू, पेठा, लौकी, कच्चा केला, वरोरह. स्वाद के लिहाज से भी तरकारियों का वर्गीकरण किया जा सकता है, इक तरकारियों में फासफोरस (गन्धक) ज्यादा होता है, जिसके स्वाद को कुछ लोग पसन्द करते हैं और कुछ नहीं. सरकारियों का अधिक उपयोगी वर्गीकरण पौधों के जिस हिस्से से वे प्राप्त होती हैं, उसके लिहाज से किया जा सकता है जैसे—(१) फलियाँ—इनमें काकी मिक्कदार स्टार्च, शकर और विकनाई की होती है. बढ़े काम के खनिज द्रव्य और विटेमिन भी होते हैं और प्रोटीत भी थोड़ी मिक्कदार में रहता है. फलियों में मटर और कई तरह की सेम, सोया-वीन, कोविया जादि हैं.

هم هندستانیوں کے روز کے کہائے میں ترکاریوں کی ایک خاص جائے ہے ، هماری گرا دیویاں طرح طرح کے ساگ سبزیوں سے بھیجن کو زیادہ سے زیادہ لذیذ اور سوادشٹ بنائے کی کوشش کرتی هیں ، پڑھے لکھے لوگوں کی بھوک تو روچک اور لذیڈ توکاریاں دیکھکو هی جاگتی ہے ، هم لوگ توکاریاں سواد کے لحاظ سے هی کھاتے هیں اور هم جانتے بھی نہیں کہ یہ ترکاریاں مماری پاچن شکتی کو درست رکھنے کی کائی کوشش کرتی هیں ، ادهر تحج دئوں سے هم نے بھوجن کے اندر ترکاریوں کی اهمیت کو سمنجھنا ، شروع کیا ہے پر ابھی تک همارے روز کے بھوجن میں ترکاریوں کو اُنکی اعمیت کے لحاظ سے تھیک جائے نہیں ملی ہے ،

اب تئی ٹئی کورجوں کی روشنی میں ترکاریاں همارے
ہوجوں کا مہتو پورن انگ بنتی جا رهی هیں ۔ لوگ یہ جان
گئے هیں کہ ترکاریوں کے اندر کھنج درویہ اور وقیمن هوتے هیں ،
یہ یہی لوگ جان رہے هیں که ترکاریوں میں اسٹا رچ (میدا)
شکر اور تهروی مقدار میں پروٹین اور سیلولوز بھی هوتے هیں ،
سئے طور پر ترکاریاں دو شرینیوں میں بائتی جاسکتی هیں —

(1)وم ترکاریاں جنمیں یانی کا انش زیادہ ہے اور اِستارے کم' جیسے۔ تماثر' گوبھی' کرم للہ' سمجون' صلاد' کھیرا رغیرہ ،

(2) وے ترکاریاں جامیں اِسقاری اور شکر اوھک مقدار میں ھیں جیسے او شکرقت کلجر مقرار چقندر کدو پیتھا اور کی کچھا کیلا وغیرہ سوال کے لتحاظ سے بھی ترکاریوں کا ورگیکوں کیا جاسکتا ھے . کچھ ترکاریوں میں فلسفورس (گندھک) زبادہ ھوتا ھے کہتے سوال کو کچھ لوگ پسند کرتے ھیں اور کچھ نہیں ۔ ترکاریوں کا ادھک آدھوگی ورگیکوں پودھوں کے جس حصے سے وے پڑایت ھوتی ھیں اس کے لتحاظ سے کیا جاسکتا ھے جیسے (1) پیلیاں ۔ اِن میں کائی مقدار اسقارے شکر اور چکنائی کی ھوتی ھے . بڑے کام کے کہنے درویہ اور وقیمن اور پروٹھی بھی تھوتی مقدار میں وھتا ھے . بھی ھوتے ھیں اور پروٹھی بھی تھوتی مقدار میں وھتا ھے . بھی سوتے ھیں اور پروٹھی بھی تھوتی مقدار میں وھتا ھے . بھی سوتے میں مقر اور کئی طوح کی سیم سویابھی اور وابیا آدی

अगस्य १००

('Ea)

اكست 5ٍ٦٠

CALL MAN A WORKS IN STREET

(२) मूल यूलों में भी बोदा स्टार्थ, अविक मिक्रदार शकर, उपयोगी सनिज द्रव्य और बिटेमिन होते हैं. इनमें ाजर, मूली, शक्तजम, जुक्रन्दर मुख्य हैं.

(३) इद्देश केवल सनिज द्रव्य क्यादा होने के गर्या ही उपक्रम पीच्छिक होते हैं. उपक्रमों में सास अज-

ायन, सहजन, केला, न्याप आदि के उपठल हैं.

(४) परे और फूस-इनमें सनिज द्रव्य और बिटेमिन यादह होते हैं. इनमें हरा धनिया, करमकस्ला, सहजन के ल. सलाद, पीदीना, मेथी का साग, पालक का साग, गोभी फल, हायीचक चादि खास हैं.

(४) फन्न-अधिकतर तरकारियाँ इसी अंग्री की हैं. माटर, बैंगन, इम्हदा, लौकी, भिगढी, कच्चा केला, मिर्च, न्बी आदि इनमें से कुछ हैं. इनमें प्रोटीन के ालावा तरह तरह के खनिज द्रव्य और विटेमिन भी

ोते हैं.

(६) कन्द--जो जमीन के नीचे होते हैं, जैसे--आलू, करकृत्व, प्याज, ब्राखा, रतालू आदि. इनमें भी स्टार्चे, कर, कई महत्वपूर्ण खनिज द्रव्य और विटेमिन होते हैं. रकारियों में खनिज द्रव्य

तरकारियों में कई तरह के पेसे खनिज द्रव्य मिलेंगे जो ाजों में नहीं होते-जैसे कैल्सियम (चूना), फ़ासकोरस गन्धक), फ़ीलाद आदि. जिस्म को रोज ही एक खास नकदार में इन खनिज द्वव्यों की जरूरत होती है, क्योंकि नसे खून बनता है और मण्जा और हड़ियों को ठीक और जबूत रखने के लिये कैल्सिअम की सब से अधिक जरूरत ं शरीर के 'रसों के बनने में भी कैल्सिश्रम का बहुत बड़ा यान है. कैल्सिच्यम इरी मटर, सेम, भिएडी, करमकुल्ला, थी का साग, अरबी के पत्ते आदि में काफी होता है. दूध ं भी कैल्सियम होता है और बच्चों का शरीर तरकारियों केलिसअम को उतनी अच्छी तरह अपने अन्दर नहीं ले कता जितना द्ध के कैल्सियम को. लेकिन बढ़े आद्मियों ग शरीर तरकारियों के कैल्सिक्रम को बहुत अच्छी तरह बुल करता है. निरामिष भोजियों के लिये तरकारियों का ेल्सिश्रम बहुत जरूरी चीज है.

फासफोरस भी शरीर के जीवित ऋगुओं (सैल्स) ो बनाने और हड़ियों और दाँतों के लिये बहुत मुफीद े तन्द्ररुस्ती के लिये फासफोरस बेहद जरूरी चीज है. ग़सकोरस सेम, मटर, नये आलू, करमकल्ला, पालक, पंपादा, गोल लीकी, भिगडी और केले के फुल में बहुत

ोवा है.

भीलाद शरीर के हर जिल्हा अग्य के अन्दर मीजूद और जून बनने में इसकी बेहद जरूरत है. काफी मिक़दार विद फौलाद हो तो बह अनीमिया (जून की कमी) के

ر2) مول-مراب ميں بھی تھوڑا اسٹارے ادھک مقدار میں شکر اُپیوکی کہلے دروریہ اور وتیمن هوتے هیں ، اُلسیں کا جرا ، وائی شلعم چندر مکھیہ هیں ..

(3) دَنتهل کهرل کهلج درویه زیاده هول کے کارن هی دَنْتُهُلَ يَوْدُنْكَ هُرِيَّ هَيْنَ . دَنْتُهُونَ مَيْنَ خَاصَ لَجُوانُنْ سبحبی' کیلا' بیار آسی کے تنابل میں .

(1) يتم أور يهول--إنسيس كهنج درويه أور وثيمين زيادة هوتي هیں . انسیں هرا دهنیا کرملله سجون کے پھول طلا پودینه مهتمی کا ساک ' پالک کا ساک ' گوبھی کے پھول' هاتھی چک آدی

(٥) پهل-اده کتر ترکاريان اِسي شريني کي هين ، تاثر يهاي كموها لوكي بهذتي كعها كيلا مرج توقيي أدبي إنسهن سے کچھ میں ، آنمیں پروٹین کے علوہ طرح طرح کے کہنے درویم اور وٹیس بھی ھوتے ھیں ۔

(6) کند-جو زمین کے نیچے موتے هیں، جیسے آلو، شعرقند پيار بندا رتالو آدى . اِنسين بهي استارچ شعر کئي مهتوپورن کهنج درویه اور وقیمن هوتے هیں ،

ترکاریوں میں کھنیے درویہ

ترکاریوں میں کئی طرح کے أیسے کھنچ درویه ملینکے جو المجس ميں نہيں هوتے -جيسے كيلسوم (چونا) فاسفورس (گلدهک) و نولاد آدی . جسم کو روز هی ایک خاص مقدار میں ان کھنے درویوں کی ضرورت ھوتی ھے' کیونکه اِن سے خون بنتا ھے اور متجت اور ہدیوں کو تھیک اور مطابوط رکھنے کے اللہ کیلیسم کی سب سے ادھک ضرورت ہے . شریر کے رسوں کے بنانے میں بھی کیلسیم کا بہت بڑا استیان ہے، کیلسهم هری ، تر' سیم' بیلتی کرم کلم میتھی کا ساگ ارری کے پتے اُدی میں کانی هوتا هے . دردھ میں بھی کیلسیم هوتا هے اور بنچوں کا شریر ترکاریوں کے کیلسیم کو اُتنی اچھی طرح اپنے اندر نہیں لے سکتا جتنا دودھ کے کیلسیم کو . لیکن بڑے آدمیس کا شریر ترکاریس کے کیلسیم کو بہت اچھی طرح قبول کرتا ھے . نرامش بھوجیوں کے اللے ترکاریوں کا کیلسیم بہت ضروری چیز ھے .

فارسنورس بھی شریر کے جیوت آثؤں (سیاس) کو بنائے اور هديوں اور دانتوں كے لئے بہت منيد هے . تندرستى كے لئے فلسفورس يحد ضروري چيز ه . فلسفورس سيم صرر في آلوا كرم كلف بالك سنهارا كول لوكى بهندى أور كياء كے بعول ميں بہت ھوتا 🛳 .

نوالد شریر کے مو زندہ انو کے اندر موجود ف اور خرن بنایے میں اِسکی پرحد، ضرورت ہے. کائی مقدار میں بدی نولاد هو تو وہ انیمیا (خون کی کعی) کے

विकास क्षेत्र वह गारवही है. तरकारियों में बहुत बड़ी मात्रा में की साद होवा है. मेथी का साग, पीदीना, धनिया की पत्ती, सलाय, सहजन के इंबरठल, होटी 'गोल लीकी, हरे आम, प्राप्त के इरठल आदि में फौलाद बहुत काफी होता है. वृंतो हर हरे साग में फौलाद होता है लेकिन साग का पत्ता किता हरा, मुलायम और पत्तला होगा बसी अनुपात में बसमें फौलाद और विटेमिन भी क्यादा होंगे. यदि हम हाफी मिक्रवार में तरकारियों सावें तो हमारे शरीर में कैरिसजम, कासकोरस और किताद का अभाव न रहे और न, इनके अभाव में पैदा होने बाली बीमारियों के ही हम रिकार बनें.

बिटेमिन और तरकारियाँ

स्निज द्रव्यों की तरह तरकारियों में विटेमिन भी बहुत क्रीमती चीज है. तरकारियों में 'ए' और 'सी' विटेमिन काफी माजा में होते हैं और कुछ हद तक 'बी' मूप के विटेमिन भी होते हैं. बिटेमिन जिस्म के मुख्ततिक अर्ज़ों को ठीक और

सुचाद रूप से काम करने लायक रखते हैं.

बिटेमिन ए—रारीर को ज़ुकाम, फेफड़े की बीमारियों जीर श्रय रोग से बचाता है, रारीर की बढ़ती करता है और रारीर की मरीन को दुक्त रखता है. अच्छे दांतों के बनाने जीर अच्छे तन्तु जी के लिये भी वह जरूरी है. यही एक अकेला विटेमिन है जो रारीर की चर्बी में और जिगर में जमा करके रखा जा सकता है. इस विटेमिन की कमी न होने पाये उसलिये काफी मिक़वार में सहजन, हरा धनिया, मेथी का साग, पौदीने की पत्ती, पालक का साग, सलाद, करम कस्ला और पीले और नारकी रंग की तरकारियां जैसे गाजर, पका कद्दू और दूसरी तरकारियां जैसे चुक्तन्दर, हरी मटर, सेम, लौकी, रतालू आदि लाने चाहियें. हरी मिर्च में भी काफी मिक़वार में यह विटेमिन होता है.

बिटेमिन बी—कई तरह के होते हैं. शरीर की उन्नति, खुली हुई भूक, ठीक हाजमा और स्वस्थ नरवस सिस्टम के लिये बेहद फरूरी हैं. तरकारियों में यह विटेमिन अधिक माजा में नहीं होते. फिर भी यदि काकी मिक़दार में तरकारियां खाई जांय तो कई तरह के इन बी विटेमिनों की पूर्ति हो सकती है. जड़ बाली तरकारियों में बी विटेमिन काकी होते हैं जैसे गाजर, चुक़न्दर आदि. इनके आलावा टमाटर, इरमकहला, पालक, गोभी, सलाद, मेथी का साग, मटर मीर शालजम में भी थोड़ी बहुत मात्रा में बी विटेमिन

तेते हैं.

बिटेमिन सी—की बढ़ते हुए बच्चों की खूराक़ में बेहद्
प्रह्मियत है. यह मजबूत दांतों के बनाने और रारीर की
दिती के लिये जरूरी है. साल इससे मुलायम और स्वस्थ हती है और यह रक्त बाहिनी नसों को दुरुश्त रखता है. خاف المحل ا

وتيس أور توكاريان

کہلیے درویوں کی طرح ترکاریوں میں وٹیدن بھی بہت
تیدتی چیز ہے ، ترکاریوں میں 'آے' اور 'سی' وٹیدن کانی ماترا
میں ہوتے ہیں اور کچھ حد تک 'بی' گروپ کے وٹیدن بھی
ہوتے ہیں ، وٹیدن جسم کے مختلف آنکوں کو ٹھیک اور سچارو
ررپ سے کام کرنے لایق رکھتے ہیں ،

والیس اے سوانا ہے، شریر کو زکام' پھیھڑے کی بیماریوں اور چیئے روگ سے بچانا ہے، شریر کی بوھتی کونا ہے اور شریر کی مشین کو درست رکھتا ہے ۔ اچھ دائتوں کے بنانے اور اچھ تنتوں کے لئے بھی وہ ضروری ہے ۔ یہی ایک اکیلا والیس ہے جو شریر کی چرہی میں اور جگر میں جمع کرکے رفیا جاسکتا ہے ۔ اس والیمری کی کمی نہ ھوئے پائے اِس لئے کانی مقدار میں سہجن موا دھنھا میں شہتی کا ساک' پودینے کی پتی' پاک کا ساک' مقدار میں بیتی کرکھا اور پہلے اور ناانکی رنگ کی ترکاریاں جیسے کاجر' مقدار میں میں کہا کے جاھئیں ۔ ھری مربے میں بھی کانی مقدار میں یہ وتیمن ھوتا ہے ۔

وئیمن ہی۔۔۔کئی طرح کے هوتے هیں ، شریر کی النتی اللہ هرئی بهرک الهری هیں ، شریر کی النتی کہلی هرئی بهرک الهیک هاضته اور سوسته فروس سسلم کے لئے بہد ضروری هیں ، ترکلریوں میں یه وئیمن ادعک ماترا میں نہیں هوتے ، یهر بهی یدی کانی مقدار میں ترکلریاں کھائی جانی تو دائی ترکلریوں میں بی وئیمن کانی هوتے هیں جیسے گلجر والی ترکلریوں میں بی وئیمن کانی هوتے هیں جیسے گلجر جندر آدی ، اِن کے علاوة ثمالوا کرماله پالک گوبھی ملان میں یہی تهوتی بہت ماترا میں میتھی کا ساک مقر اور شاحیم میں یہی تهوتی بہت ماترا میں بی وئیمن هوتے هیں ،

ولیمن سی سکی بوهتے هوئے بچوں کی خوراک میں بے دن اهیہت ہے۔ یہ مضبوط دائتوں کے بنائے اور عویو کی بوهتی کے لئے فروری ہے۔ کہال اُس سے مالیم اور سوستے رہتے ہے۔ کہال اُس سے مالیم اور سوستے رہتے ہے۔

السعا ك

बगस्त '55

(4)

72

टमाटर, सहसान, बनिये की बसी, राकरानन्य की पसी, पासक, करमकस्ता और देरी बीठी सिर्फा, आदि बीजें, सी बिटेमिन की मात्रा में, साइट्रेस फर्कों बानी सन्तरा, मीसन्त्री मीठा नींनू आदि का मुंकाबला करती हैं. सेम, हरी मटर, लोबिया, तून्त्री लौकी, करमकस्ता और रालजम आदि में और कवी धारा में बी बिटेमिन काफी होता है.

कारबोहाइच्डें द और तस्कारियाँ

स्तित द्रम्यों खीर विदेशिन के जलावा कुछ तरकारियों में काकी स्टार्च और शक्कर भी होती है. इनसे मेहनत करने की ताक़त और वैतन्यता बढ़ती है. इस तरह की तरकारियों में हरी मटर, करेला, ककड़ी, टिन्डा, परवल, कच्चा पपीता, जिमीक़न्द, अरवी, बन्डा, रतालू, कच्चे केले, गाजर, युक्तन्दर, आखू, शक्ररक्रम्द, कुम्हड़ा आदि हैं. जिन लोगों को अपने मोजन की मात्रा कम करने की धुन है उन्हें वे तरकारियां अधिक मात्रा में नहीं सानी चाहिएं जिनमें कारवोहाइड्रेट अधिक है. कारवोहाइड्रेट से जिस्म के पट्टे वतते हैं.

प्रोटीन और तरकारियाँ

मटर, सेम और जितनी फिलियों वाली तरकारियां हैं उन सब में काफी मात्रा में प्रोटीन रहता है. कहा जाता है कि तरकारियों का प्रोटीन दूस और मांस आदि के प्रोटीन की तरह पौष्टिक नहीं है. उसमें वे सब एसिड नहीं होते जो तन्दुकरती को अच्छा रखते हैं. इसके लिए तरकारियों के साथ दूध या दूध से बनी चीजें खाने से यह कमी पूरी हो सकती है.

सेलुलोज और तरकारियाँ

तरकारियों में सेलुलोज यानी फुजला भी होता है जो घांतों को क्रन्य से बचाता है; किन्तु पकी हुई तरकारियों का फुजला कच्ची तरकारियों के फुजले से प्यादा मुकीद होता है. पत्ते बाले सागों में बहुत अधिक ,फुजला होता है. हुवला होने के लिए अधिक सेलुलोज वाली तरकारियां खानी चाहियें क्योंकि उनमें कारबोहाइड्रेट की भिक्तदार प्यादा होने से तसल्ली जल्दी हो जाती है.

इव खास तरकारियों की विशेषतायें

टमाटर हमेशा ताजगी लाता है. लजीज होने के साथ साथ वह आरोग्यवर्धक भी है. उसे कच्चा या पक्का चाहे जैसा लाया जा सकता है. उसका रस बच्चों के लिये बढ़ा हितकर है. विटेमिन सी की पूर्ति दूध के अभाव में टमाटर के रस से कर सकते हैं. बिटेमिन सी आग में पकाने से नष्ट हो जाता है. केवल टमाटर ही ऐसी चीज है जिसका विटेमिन सी एसिड के कारण प्रकाने से भी नष्ट नहीं होता.

ماری خوراک میں ترازیں کی جات

المالر سبعین دهند کی پنی شکرفند کی پنی بالک فرم که آور هری مینهی مرچ آدی چیزیں سی ولیسن کی مانوا میں سالیلوس پهلوں یعنی سنترہ مرسمبی میلیا نیبو آدی کا مقابلہ کرتی هیں . سیم هری مالر لوبیا ترمیی لوکی کرم کا فر هاسم آدی میں اور کچی پیاز میں سی ولیس کافی هوتا هے .

كاربهمائي تريح أور تركاريان

کھلج درویس اور وٹیس کے علوہ کچھ ترکاریوں میں کائی استارے اور شکر بھی ہوتی ہے ۔ ان سے متحلت کرنے کی طاقت اور چیتنهتا برحتی ہے ، اِس طرح کی ترکاریوں میں ہوی مٹر' کریلا' کتری' ٹنڈا' پرول' کچا پہتا' رمیں قند' اُروی' بنڈا' رتالو' کچے کیلے' ٹلجر' چتندر' آلو' شکرقند' کموہا اُنسی ہیں ۔ جن لوگس کو اپنے بھوجن کی ماترا کم کرنے کی دھن ہے آبھیں وے ترکاریاں ادھک سے بار میں نہیں کھائی چاہئیں جن میں کو بھے بنتے ہیں ، تربت سے جسم کے پاتے بنتے ہیں ،

پروئین اور ترکاریاں

مقر' سیم اور جتنی پہلیوں والی توکاریاں هیں أن سب میں کئی ماتوا میں پروٹین رهتا ہے ۔ کہا جاتا ہے کہ توکاریوں کا پروٹین دودھ اور مائس آدی کے پروٹین کی طرح پوشلاک نہیں ہے ۔ اُس میں وے سب ایست نہیں ہوتے جو تقدرستی کو اچها رکھتے هیں ، اِس کے لئے توکاریوں کے ساتھ دودھ یا دودھ سے بنی چیزیں کہائے سے یہ کمی پرری ہوسکتی ہے ۔

سيلولوز أور تركاريان

ترکاریوں میں سیلولوڑ یعنی نفلت بھی ہوتا ہے جو آنتوں کو قبض سے بچھتا ہے؛ کنتو یکی ہوئی ترکاریوں کا نفلت کچی ترکاریوں کے نفلے سے زیادہ منید ہوتا ہے ۔ پتے والے 'ساگوں میں بہت اُسمک نفلت ہوتا ہے ۔ دبلا ہونے کے آئے ادھک سیلولوڑ والی ترکاریاں کھائی چاھئیں کیونک آن میں کاربوہائی تریک کی مندار زیادہ ہنے سے تسلی جلدی ہوجاتی ہے ۔

کچے خاص ترکارس کی وشیشتائیں

المائر همیشه تازگی لاتا هے لذیذ هوئے کے ساتھ ساتھ وہ ارکیمرددهک بھی هے اسے کچا یا پکا چاھے جیسا کھایا جا سکتا هے اس کا رس بحبوں کے لئے بڑا هتکر هے وقیدی سی کی پورتی دوده کے ابھاؤ میں تماثر کے رس سے کوسکتے هیں وئیس سی آگ میں پکانے سے نششہ هوجاتا هے کیول بااثر هی ایسی چیز هے جس کا وتیس سی ایسڈ کے کارن پکانے سے بھی نشش نہیں ہوتا .

गाजर भी की पौष्टिक बीज है. उसमें विटेमिन ए बड़ी मिक्रवार में रहता है. करमकरला, हरी मटर और सेम की बड़ी स्वास्थ्यवर्षक और पौष्टिक तरकारियाँ हैं. पत्तियों के साग भी बड़े फायदे के होते हैं. मूली, शलजम, चुक्रन्दर और गांठ गोभी की पत्तियां भी अच्छी होती हैं. प्याच भी अस्थ्यत गुणकारक बीज है और हाजमे को दुकस्त रखने में बहुत मदद देशी है. आजू में स्टार्क, खनिज द्रव्य और बिटेमिन काकी होते हैं. भिंबी और लौकी दिमारी काम करने योग्य सास तरकारियां हैं.

तरकारियां अधिकतर ताजी ही इस्तेमाल करनी चाहियें.
तरकारियां का बिटेमिन सी बहुत जल्दी नष्ट हो जाता है.
तरकारियां हमेशा ठंडी जगह में रखी जानी चाहियें. कुछ
तरकारियां जैसे कह आदि में रखने से ही अच्छी होती हैं.
तरकारियां जैसे कह आदि में रखने से ही अच्छी होती हैं.
तरकारियां जिलके समेत ही उवालनी चाहियें. जिस पानी
में तरकारी उवाली जाय उसे रसे की तरह काम में ले आना
बाहिये. सागों को कम से कम पकाना चाहियें. सोडा
डालकर कमी तरकारी न पकानी चाहिये. बजाय पानी के दूध या
महे में तरकारी पकाने से उसके पौष्टिक तत्व बद जाते हैं.
जहां तक हो सके तरकारियां छीलनी न चाहियें. यदि छीलना
अखरी ही हो तो केवल खराश लेना काफ़ी होगा. तरकारियों
में मिर्च, मसाले और चिकनाई जहां तक हो सके कम से
कम डालना चाहिये. हमारी गृह देवियां यदि तरकारियों के
पौष्टिक और स्वास्थ्य वर्षक महत्व को ठीक ठीक समम लें
तो परिवार के स्वास्थ्य वर्षक महत्व को ठीक ठीक समम लें

المور بھی بڑی پوشاک چیز ہے۔ اُس میں واپس اے بڑی مقدار میں رہان اے سراستے وردھک اور پرشاک ترکزیاں میں ، پتیوں کے ساک بھی بڑے قائدت کے هوئے میں ، مولی' شلجم' چنادر اور کاٹم گوبھی کی پتیاں بھی اُچھی هوئی هیں ، پیاز بھی انبینت گیکارک چیز ہے اور هاضه کو درست رکھنے میں بہت مدد دیتی ہے ، آلو میں استارے' کہنچ درویہ اور والیمن کئی هوئے میں ، بینتی اُور لوکی دمانی کام کرنے والوں کے کھائے یوگیہ خاص بینتی اُور لوکی دمانی کام کرنے والوں کے کھائے یوگیہ خاص برکزیاں میں ،

ترکاریاں ادھکتو تازی ھی استعمال کرنی چاھئیں .
ترکاریوں کا وثیمن سی بہت جلدی نشت هوجاتا ہے . ترکاریاں همیشه تھنتی جکه میں رکھی جانی چاھئیں . کچھ ترکاریاں جیسے کدو آدس رکھنے سے ھی اُچھی ھوتی ھیں . ترکاریاں چہاکے سمیت ھی آبالنی چاھئیں ، جس پانی میں ترکاری آبالی جائے آسے رسے کی طرح کلم میں لے آنا چاھئے . ساگرں کو کم سے کم پکاتا چاھئے . سوتا تالکو کبھی ترکاری نه پکاتی چاھئے . سوتا تالکو کبھی ترکاری نه پکاتی چاھئے . سوتا تالکو کبھی ترکاری نه پکاتی چاھئے . بھیائے پانی کے دودھ یا متھے میں ترکاری پکائے سے اُس کے بھٹک تلو بڑھ جاتے ھیں ، جہاں تک ھوسکے ترکاریاں چھیلنی بھٹک تا کہی ھوگ ۔ ترکاریوں میں سرچ مسائے اور چکنائی جہاں نک موسکے کم سے کم قالفا چاھئے . ھماری گرہ دیویاں یدی نک ھوسکے کم سے کم قالفا چاھئے . ھماری گرہ دیویاں یدی نریوں کے پوشٹک اور سواستے وردھک مہتو کو تھیک تھیک نویوں سجے لیں تو پریوار کے سواستے میں 100 نیصدی سدھار

"वह धन को उसके सिंहासन से हटा कर इंश्वर के लिये थोड़ी जगह खाली करे. मेरा ख्याल है कि अमरीका का मविश्य उज्जवल है. लेकिन अगर वह धन की ही पूजा करता रहा तो उसका भविश्य अंधकारमय है. फिर लोग चाहे जो कहें, धन आखीर तक किसी का सगा नहीं रहा. वह हमेशा वेवफा दोस्त साबित हुआ है."

-महात्मा गांधी

''وہ دھن کو اُس کے سنتھاسی سے مقاکر ایشور کے لئے تھوڑی چکھ خالی کرے ، میرا خیال ہے کہ امریکہ کا بھوشید اُجول ہے ، لیکن اگر وہ دھن کی ھی پوجا کرنا رھا تو اُس کا بھوشید اُدھنکار مے ہے۔ پھر لوگ چاہے جو کہھں' دھن آخیر تک کسی کا سکا نہیں رھا ، وہ ھمیشہ بھونا دوست نابت ھوا ہے ''

سسمهانما كاندهى

परिंडत सुन्दरलाल

तौसमलीशाह इस देश के पिछली सदी के एक बहुत वह जीर मराहूर मुसलमान फक़ीर थे. सन् 1857 के कुछ पहले से लेकर उसके कुछ बाद तक का जमाना उनका खास जमाना था. हिन्दुस्तान भर में खूब घूमे. बाहर भी हज्ज बतैरह के सिलसिले में गए. बाद के दिनों में उन्होंने अपनी जिन्दगी के बहुत से हालात अपने चेलों का मुनाए जो लिख लिए गए. इनसे उस जमाने के हिन्दू मुसलमानों के आपसी मेल ओल पर खासी रोशनी पड़ती है. एक तरह से ये ग़ौस-अलीशाह की डायरी के कुछ पनने हैं, ऐसी डायरी जो दूसरों ने उनसे मुनकर लिख ली थी.

[1]

एक दिन वचपन में हमें एक सन्यासी ने जड़ ताड़ी कपाली चढ़ाना सिखाया. इस कपाली में जाहिरा होश जाता रहता है और रुद्ध दिमारा में आ जाती है. जिस खयाल में आदमी बैठता है उसी में रहता है. जब हमें इसका अभ्यास हो गया तो एक दिन ख्याल आया कि देखें दूसरे पर भी इसका असर होता है या नहीं. हमने अपने सीतेले भाई को कपाली चढ़वाई. वह विलक्कल बेहोश होकर मुर्दे की तरह जमीन पर गिर पड़े. खतारना हमें आता नहीं था. हम बड़े वबराए कि अब क्या इलाज करें. हमने अपनी सीतेली मां को खबर दी. वे घवराई हुई आई' और कहने लगीं,—"एक तो गया ही अब दूसरा भी चला. लोग यही शक करेंगे कि इसने सौतेले भाई को मार डाला." यह कह कर वे एक प्याला दही का लाई अर्थ बेटे के सामने गिरा दिया. जो आकर पृष्ठता उससे कहतीं—"कि न जाने क्या हजा दही ला कर के की है." मैं वबरा कर उस सन्यासी के पास गया और सारा हाल कह सुनाया, उन्होंने बहुत नाराज होकर मुमसे कहा,—"क्या तुमको इस वास्ते यह क्रिया सिसलाई थी कि लोगों का तमाशा देखो. हमने तो इसलिये सिसलाया था कि ईश्वर की याद में लगे रहोगे. स्वबरदार फिर ऐसा काम न करना." यह कहकर हमारे घर आए भौर भाई के सर पर पानी की मश्कें छुड़वाई. जब तीसरी मरक छोड़ी गई तो चठ बैठे. फिर इसने माई से बेहोशी की दालत का हाल पूछा, उसने कहा-"मैं तो किन्दा था और उम सब को प्रकार प्रकार कर कहता था कि मैं जिन्दा है.

يلتت سننر ال

فوت علی شاہ اس دیش کے پچھلی صدی کے ایک بہت ہو۔ اور مشہور مسلمان نقیر تھے ، سن 17 18 کے کچھ پہلے سے لیکر اسکے کچھ بعد تک کا زمانہ اُن کا خاص زمانہ تھا ، هندستان بعد میں خوب گھوہ ، باہر بھی حبح وفیرہ کے سلسلے میں گئے ، بعد کے دئوں میں اُنھوں نے اپنی زندگی کے بہت سے حاقت اپنے چھلوں کو سنائے جو ان ائے گئے ، اُن سے اُس زمانے کے هندو مسلمانوں کے آپسی میل جول پر خاصی روشنی پڑتی هندو مسلمانوں کے آپسی میل جول پر خاصی روشنی پڑتی ها ایک طرح سے یہ غوث علی شاہ کی ڈایری کے کچھ پننے هیں ایسی دایری جو دوسروں نے اُن سے سن کو ان اور ان ایک لیے لیے تھی ،

[1]

ایک دن بچین میں هنیں ایک سنهاسی نے جر تاری کہالی جرها تا سكها يا . إس كهالي مين ظاهرة هوهي جاتا رهتا 📤 اور روح دماغ میں آجاتی ہے . جس خیال میں آدمی بیٹیتا هے اُسی میں رهتا هے . جب همیں اِسکا ابهیاس هو گیا تو ایک دس خيال آيا كه ديكهيس درسرے پر بهى اس كا اثر هوتا هے يا نہیں، همنے اپنے سوتیلے بھائی کو کہالی چرهوائی، وہ بالکل بھہوہ هو کر مردے کی طرح زمین پر گر پڑے ، اُتارنا همیں آتا نهیں تها ، هم بوے گهبرائے که آب کیا علیے ، کویں ، هدنے اپنی سوتیلی ماں کو خبر دی ، وے گھبرائی هوئی آئهں اور کہنے اکس'— "الك تو كيا هي أب درسراً بهي چلا ، لوگ يهي شك كرياكم که اِس نے سوتیلے بھائی کو ماردالا ." یه کهه کر رے ایک پیاله دھی کا لائیں اور بیٹے کے سامنے گرادیا ، جو آکر پرچھٹا آس سے کہتیں۔"کہ له جانے کیا ہوا دھی کہا کر تے کی ہے ،" میں گھبرا کر اُس سنیاسی کے پاس گیا آور سارا حال کہہ سنایا ۔ الهين نے بہت فاراض هوکر مجھسے کہا'۔"کيا تمکو اِس وأسطى يه كريا سكهالأي تهي كه لوگوں كا تماشه ديكهو ، همائي تو إسائه سماليا تها كه أيشور كي ياد مين لك رهوك . خدردار يهو ایسا کام نے کرنا ." یہ کہہ کر همارے گھر آئے اور بھائی کے سر پر پانی کی مشکیں چهررائیں، جب نیسری مشک چهوری گئی تو آئے بیاتے، پھر ھننے بھائی سے بھہرشی کی حالت کا حال یوچا . أس نے کہا۔"میں تو زادی تھا اہر تم سب کو یکار یکار کر کہتا تھا که میں زندہ ھوں ا

कुष क्यराची मत. मैं कुए में पड़ा हूँ. गुमको निकास लो. केविन दुन सुनते न थे. चीर मुक्ते किसी तरह की तकलीफ़ न बी." इस दिन से हमने तोषा कर ली कि फिर ऐसा काम कभी न करेंगे.

[2]

एक दिन हम बाबरी से हरिद्वार को चले कि कुम्भ का स्नान और ब्रह्म गायत्री का पाठ करें, क्योंकि हमारें रखाई बाप । पिरुत रामसनेंही जी ने घर से चलते बब्नत हमें गायत्री सिखा कर कह दिया था कि हरिद्वार में गंगा के किनारे इसका जाप कर लेना. जब कनखल में पहुंचे तो वहां दो हिन्दू परमहंस देखे. किसी निर्देशी ने उनकी जाँघों पर यहकते हुए अंगारे रख दिये थे. एक की जाँघ तो जल गई बी और दूसरे पर कुछ असर न था. हमने भटपट अंगारे अलग किए और उनको डोली में सवार करा कर अवालापुर के थाने में लाए. थानेदार से हमारी जान पहचान थी. उसने

इक दिनों बाद एक दिन यह किस्सा अपने कुछ चेलों को सुना कर ग्रीसकलीशाह ने उनसे पूछा कि—"इन दोनों परमहंसों में से कीन बदकर था ?" एक चेले ने जवाब दिया कि—"जिसकी जाँघ नहीं जली थी." आपने कहा कि—"नहीं, निसकी जांघ नहीं जली थी वह अभी अपने बदन की हिफाज़ करने की ताकृत रखता था. लेकिन दूसरे का इनहमाक (ध्यान में ढूबा हुआ होना) ज्यादा उन्चे दरजे का था कि तन बदन का भी होश बाक़ी न रहा था. अगर उसके इस कामिल इनहमाक का इसजाम के बढ़े बढ़े लोगों से मुकाबला करें तो लोग बुरा मानें. 'अलहक्क़ो मुर्फन' बानी सच्चाई कड़वी होती है. लेकिन सच यह है कि ऐसा इनहमाक करोड़ों में से किसी एक को हासिल होता है. हर एक इसके क्राबिल नहीं.

"इसरारे मुहब्बत रा हर दिल न बुबद काबिल, -दुर नेस्त बहर दरिया, जर नेस्त बहर काने.

यानी—हर दिल प्रेम के रहस्यों को सममाने के काबिल नहीं होता. न हर दरिया में मोती होते हैं और न हर खान में सोना होता है.

लेकिन मुवारिक वह इनहमाक (तल्लीनता) कि न इस सेवा करने वालों से खुश और न अंगारा स्थाने वाले से नाराज, जिस हालत में थे उसी में रहे."

تم گھبولگ معند مر میں کوئیں میں پڑا ھیں مجھو ٹکال لو ، لھکی تو منجہ کو ٹکال او ، لھکی تو منجہ کی تکلیف کے تھی ہا اُس دی سے ھم نے نوبد کرلی که پھر ایسا کام کیمی نہ کھی ہے۔

[.2]

ایک میں هم باہری سے هری دوار کو چلے که کمیه کا اسنان اور برهم گلیتری کا پاتھ کریں' کیوٹکہ همارے رضائی باپ پنتس رام سنیہی جی لے گھر سے چلتے وقت همیں گلیتری سکھا کر کہہ دیا تھا که هری دوار میں گنگا کے ننارے اس کا جاپ کر لینا ، جب کنکیل میں پہونچے تو وہاں دو هندو پرم هنس دیکھے ، کسی نردئی لے آنکی جانگھرس پر دھکتے ہوئے انگارے رکھ دیئے تھے ، ایک کی جانگھ تو جل گئی تھی اور دوسرے پر کیچے اثر نا ایک کی جانگھ تو جل گئی تھی اور دوسرے پر کیچے اثر نا سیار کوا کو جوالا پور کے تھائے میں لائے ، تھانیدار سے هماری جان سوار کوا کو جوالا پور کے تھائے میں لائے ، تھانیدار سے هماری جان پہنچان تھی ، اُس نے جلے ہوئے کی مرهم پقی کرواکی ،

کچھ دئوں بعد ایک دن وہ تصہ آننے کچھ چیلوں کو سنا کو غوث علی شاہ نے آن سے پوچھا کہ۔''اِن دونوں پرم ھنسوں میں سے کون پرھکر تھا گ'' ایک چیلے نے جواب دیا کہ۔''نہیں' 'جس کی جانات نہیں جلی تھی '' آپ نے کہا کہ۔''نہیں' جس کی جانات نہیں جلی تھی وہ آبھی اپنے بدن کی حاظت رکھا تھا ، لیکن دوسرے کا انہماک (دھیان میں قوب ہوا ھونا) زیادہ آونچے درجہ کا تھا کہ تن بدن کا بھی ھوش ہاتی نہ رہا تھا ، اگر آس کے اس کامل اِنہمات کا اِسلام کے بڑے بڑے لوگوں سے مقابلہ کویں تو لوگ برا۔انیں ، 'التحق و مرعوں' یعنی سچائی کووی ھوتی ہے ، لیکن سے یہ ہے کہ و مرعوں' یعنی سچائی کووی ھوتی ہے ، لیکن سے یہ ہے کہ ایسا انہماک کووری میں سے کسی ایک کو حاصل ھوتا ہے .

اسوار محبت را هر دل نه بود قابل' در نیست بهر دریا' زر نیست بهر کانے '

یعلی هر دل پریم کے رهسیوں کو سنجھنے کے فاہل نہیں هوتا ، نه هر دویا میں موتی هوتے هیں اور نه هر کهاں میں سونا هوتا هے ،

لیکن مبارک وہ انہماک (تلینتا) کہ تہ ہم سیرا کرنے والوں سے خوص اور تہ انگارا رکھنے والے سے تاراض' جس حالت میں نبے اُسی میں رہے .

* मां के कालावा यदि कोई स्त्री वच्चे को दूध पिला कर पाले तो उसका पति बालक का 'रजाई बाप' कहलाता है.
ماں کے علوہ یدی کوئی اِستری بچے کو دودہ یا کر پالے تر اُسلا پٹی بالک کا 'رضائی باپ' کہتا ہے۔

एक दिन जब इस ज्वालापुर से चलकर इरिहार पहुंचे तो सरवननाय जी से मेंट हुई. चड़ा जावर सरकार किया. जपने मकान पर ठैइराया. दोनों बक्षत बढ़िया जाना सिलाया. जब परबी का बक्षत आया तो इस धोती बाँध तिलक लगा कमएडल हाथ में ले हर की पैड़ी पर जा मौजूद हुए. वाबरी के एक बाह्यया ने ठीक स्नान के बक्षत पहचान लिया और दांतों के तले जंगली देकर चुप रह गया. इस नहाकर बाहर निकले तो वह बाह्यया इसे कलग ले गया और कहने लगा—"मियाँ साहब! यहाँ और वहां कुछ करक है जो जाप स्नान करने जाए १ जगर काई पहचान लेता तो बड़ी खराबी होती. खुदा तो सब जगह एक है, यह भी एक तमाशा है कि हर एक किरके का मजहब जुदा है, हर एक दूसरे को मूटा कहता है और जपने जापको सच्चा बताता है. जगर सच्चाई की राह से देखों तो मकसद दोनों

पड़ा बुतसाने * में हो या तवाके -काबाक करता हो, यहाँ क्या और वहाँ क्या है कहीं हो तेरा जोया † हो.

यह मिसाल इस नाइत्या ने इमें सुनाई. चार मुसाफिर सक्र में साथ थे मगर बोलियां चारों की अलग अलग थीं. चारों मूके थे. चारों ने अपनी अपनी अवान में अंगूर खरीदने का इरादा आहिर किया. लेकिन 'अंगूर' का नाम चारों जबानों में अलग अलग था. इसिलिये एक की बात को दूसरा न समक पाया, आपस में लड़ने लगे. इत्तफ़ाक से एक आदमी जो उन चारों की जबानों को जानता था, आ निकला. उसने एक का मतलब दूसरे को समका दिया. तब शरमिन्दा हुए कि क्या फजूल का मगड़ा था. मतलब तो सब का एक ही था. यानी जब तक कोई असलियत का जानने वाला नहीं मिलता, यह दुई नहीं मिटती.

जब वे शाह्यया हमें समका चुके तो हमने कहा कि साहब यह स्नान हमने अपने रजाई बाप परिखत रामसनेही जी की तरफ से और उनकी आज्ञा से किया. फिर हमने शहागायत्री का पाठ शुरू किया. शहागायत्री यह है—

श्रोदम भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेगयम् मर्गो देवस्य धीमहि

थियो यो नः प्रचोदयात्; स्रो३म्.

का एक ही है.

लफजी माइने गायत्री के यह हैं—कोंश्म् यानी अल्लाह. यह अल्लाह के नामों में सबसे बढ़कर है, मूर यानी पहला आसमान यानी अपने भक्तों को सब दुखों से आजाद करके हमेशा आनन्द में रखने वाला, भुव:—दूसरा आसमान जो ایک دن جب هم جوالا پور سے چل کر هوی دوآر پیوٹھیے تو سرون ناتو جی سے بیبات هوئی ، بڑا آدر سکار کیا ، آینے مکان پر تهبرایا ، دونوں وقت بڑھیا کیانا کیلیا ، جب پروی کا وقت آیا تو هم دهوتی بانده تلک نکا کمندل هاتو میں لے هو کی پیٹری پر جا موجود هوئے ، بابری کے آیک براهس نے تیک سفان کے وقت پہنچان لیا اور دائتوں کے تلے آلکی دیکو جب رد گیا ، هم نہا کر باهر نکلے تو وہ براهس همیں آلگ لے گیا اور وهاں کیچہ فرق

ھ جو آپ اسلان کرنے آئے ؟ اگر اور کرئی چہنچان لیتا تو ہڑی خوابی ہوتی ۔ خدا تو سب جانہ ایک ہے؛ یہ بھی ایک تماشہ ہے کہ ہر ایک نوتے کا مذہب جدا ہے؛ ہر ایک دوسرے کو جهرال کہتا ہے اور اپنے آپ کو سبچا باتا تا ہے ۔ اگر سبچائی کی راہ سے دیکھو تو مقصد دونوں کا ایک ہی ہے ۔

يرا بتخانے* ميں هو يا طوان كميد الله كرتا هو،

یہاںکیا اور وہاںکیا ہے کہیں ہو تیرا جویا ہو ۔

یہ مثال اُس براہمن نے ہیں سنائی ۔ چار مسافر سفو
میں ساتھ تھے ' مگر بولیاں چاروں کی الگ انگ تھیں ، چاروں
یھوکے تھے ، چاروں نے اپنی اپنی زبان میں انگور خریدنے کا ارادہ
طاہر کیا ، لیک 'انگرز' کا نام چاروں زباتوں میں انگ الگ
تھا ایس لئے ایک کی بات کو دوسرا نے سنچھ یا یا' آپس میں
لوئے لیے ، انداق سے ایک آدمی جو اُن چاروں کی زباتوں کو
جائنا تیا' آنکلا ، اُس نے ایک کا مطلب دوسرے کو سنچھا دیا ،

تب شرمندہ هوئے که کیا نفول کا جهارا تها ، مطلب تو سب کا ایک هی تها ، یعنی جب تک کوئی اصلیت کا جانبے والا لیوں ماتا کی دوئی نبیل متنی ،

دہیں میں یہ دوای دہیں ملتی ۔

جب و براهمن همیں سمجھا چکے تو هملے کہا که صاحب یہ اسلان هملے اپنے رضائی باپ پندت رام سنیہی جی کی طرف سے اور آنکی آگیاں سے دیا ، پھر هم لے برهم کایتری کا پاٹھ شروع کیا ، برهم کایتری یه ہے۔۔۔

اوم یهور بهوا سوه تاس وتورو رینهم بهرگو دیوسیه دههمهی تههیه و تهدیون نام در چودیات اوم .

لفظی معنے گایتری کے یہ هیں۔۔۔ارم یعنی الله یہ الله کے تا رس میں سب سے بڑھکر ہے' بھور یعنی پہلا آسمان یعنی اپنے بھکتوں کو سب دکھوں سے آزاد کر کے همیشہ آنند میں رکھنے والا' بھوہ :۔۔۔دوسوا آسمان جو

+---देवालय क्ष---काने की परिक्रमा †---हुँदने वाला دیوالئے کمبہ کی پریکرما تعر*ن*تھ<u>نے</u> والا

क्साम जानवारों में रोशन होकर सब को अपनी अपनी राह पर रक्षवा है. स्य:-वीसरा जासमान बानी जिन्दगी. तत्-यांनी उस. सविदार-यांनी पैदा करने वाला यांनी जो आविक और इक्का का देने वाला है, बरेख्यम्-यानी जो बहुत सामने के क्रावित है, मर्गो यानी ज्योति यानी जो पाक है, इंबरय-रोरान-यानी जो सब जानों का रोरान करने बांबा और आराम का देने वाला है, धीमहि-यानी हम ज्यान करते हैं, यानी इस कोग इसेशा अपने पूरे यक्तीन से यतकाव (विश्वास) करके मान लें, धियो-यानी इन्द्रियां, वन और बुढि, यो-जो, न:-हमारी, प्रचोद्यात-यानी दिवायत करे यानी अपनी मेहरवानी से हमें सब बुरे कामों से जलग करके हमेशा अपनी तरफ लगाए रखे, ओश्म-थानी अस्ताइ. तरजुमा-अस्ताइ ताला जो सब जानदारों में मीजूद है भीर पूजने के काबिल है, उस पैदा करने वाले का नूर सब जानों में रोशन है, हम फ्रमांबरदार बन्दे सच्चे बक्रीन के साथ पतकाद करते हैं कि जो हमारी इन्द्रियां और मन बुद्धि हैं उनको वह अपनी तरफ लगाए रखे. अल्लाइ.

The second second second

जिस रोज हमारा पाठ पूरा हुआ तो आखरी रात को हमने यह सपना देखा कि ठीक गंगा के बीच में एक तरफ़ इसज़ाम के पैरान्बर मोहन्मद साहब अपने साथियों को लिए आए और एक मजलिस छजाई गई और दूसरी तरफ़ महाराज श्रीकृष्ण जी अपने प्रेमियों को लिए पधारे और एक सभा जम गई. कृष्ण जी ने मोहन्मद साहब से कहा कि—"आप इनको सममाइये कि ये क्या करते हैं." मोहन्मद साहब ने कहा कि—"महाराज आप ही सममाइये." किर महाराज ने मुक्को बुलाया और कहा कि—"धुनो बेटा, तुन्हारे यहाँ क्या कुछ नहीं जो दूसरी जगह बूँदते हो, क्या तुमने तुई सममी है ? यहाँ और वहां सब एक बात है, गोकि पन्ध जुदा जुदा हैं."

कुम्,ो इसलाम दर राहे तो पायाँ वहीदुल्ला शरीकुल गोयाँ.

यानी—कुम और इसलाम सब उसी की राह में दौड़ रहे हैं और सब यही कह रहे हैं कि उस एक के सिवा दूसरा कोई नहीं है.

[4]

पक दिन जब हम देहरादून को गए वहां एक हिन्दू हार्मीर की खबर सुनकर पहाड़ पर पहुंचे. उनकी मुलाक़ात से दिल बड़ा खुरा हुआ. जैसा सुना था वैसा ही पाया. हार पांच दिन ठहरे. एक दिन हम अकेले में उनके पास हप तो बाबा जी राम गीता लिख रहे थे. हमने कहा 'ममोनाराचया!'

لم چالی تازوں میں روشن ہو کر سب کو ایٹی اپنی ير راونا ه. سودستيسوا آسان يعنى زندكي عسيمتي أس؛ سويكورسيمني يبدأ كرنے والا يعني جو التي أور عوت كا ديلم وألاها ورينيم سيعني جو بهت ماذني ، قابل ہے؛ بھرگو یملی جھوتی یملی جو پاک ہے؛ دیوسیعس ھن سیعلی جو سب جانبن کا روشن کرنے والا اور آرام کا دینے وهـ، دهيهي سيمني هم دهيان كرتے هيں، يمنى هم لوك هميشه نے پورے یتین سے اعتقاد (رشواس) کر کے مان لیں دھیر۔ بلي اندريان من اور بدهي يوسجو ' نعسماري' يرچود التيسيعلى هدأيت كرم يعلى أيلى مهردائي سه همين سب الله کاموں سے الگ کرکے همیشت اپنی طرف لگائے رکھے اوم منى الله . ترجمه الله تعلى جو سب جاندارون مين موجود ہے آپر پوچنے کے قابل ہے، اُس بیدا کرنے والے کا نور سب جانوں میں روشی ہے مم فرمانہوں ار بندے سجے یقین کے ساتھ اعتقاد ارتے هيں که جو هماري اندريان اور من بدهي هيں أنكو وه أيني طرف لكاني ركهي الله .

جس رور همارا پائه پورا هوا تو آخری رات کو همنے یه سهنا دیکها که تهیک گنگا کے بیچے میں ایک طرف اِسلام کے پینمبور محمد صاحب اپنے ساتھیں کو لئے آئے اور ایک مجلس سجائی گئی اور دوسری طرف مهاراج شری کرشن جی اپنے پریمیوں کو لئے پدھارے اور ایک سبها جم گئی ، کرشن جی نے محمد صاحب سے کہا۔"آپ اِن کو سمجھانیے که یه کیا کرتے هیں ،" محمد صاحب نے کہا که۔"مہاراج آپ هی سمجھائیے ،" پھر مہاراج نے مجھکو بلایا اور کہا که۔"سنو بیٹا تبھارے یہاں مہاراج نے مجھکو بلایا اور کہا که۔"سنو بیٹا تبھارے یہاں سجھی ہے آپ یہاں اور وہان سب ایک بات ہے' کو که پنتو جدا جدا هیں ،"

کنر و اسلام در رأه تو پایان وحید آلله شریک آلکویان

یعلی کو اور اسلام سب آسی کی راہ میں دور رہے ھیں اور سب یہی کہ رہے ھیں کہ آس ایک کے سوا دوسوا کوئی نہیں ہے ۔

[4]

ایک دی جب هم دهرادری کو گئے وهاں ایک هندو نقیرکی حبرسی کر پہار پر پہونچے آل کی ملقات سے دل بڑا خوش هوا۔ جیسا سنا تھا ویسا هی پایا ، جار پانچ دی قبرے ، ایک دی هم اکیلے میں آل کے پاس گئے تو با با جی رام گیتا لاء رہے تھے ، هم نے کہا ''نمو ناراین ا''

The state of the s

बोल-"बजी । ब्यस्कामक्षेत्रमं कहो." यह किस्ता सुनकर हम बींके. क्योंने अपना हाल सुनाया और कहने लो-"मैं स्टब्ब हूँ, मेरा नाम मोहन्मद हुसेन है, पहले तो मैंने शाह बन्धुल बजीज साहब से गुरुमन्त्र लिया, किर देद और शाकों को पढ़ने का शीक हुआ, बनारस में जाकर यह भी पढ़ा. खानदान काव्यिम का बेला हूँ. जब योग के लिए यहां जा रहा हूँ. बेले काम करते हैं, में खुदा की याद में लगा हूँ."

हमने पूड़ा कि "हिन्तुओं और मुसलमानों की फ़क़ीरी में आपने क्या फ़रक़ देखा ?" जवाब दिया—"फ़क़ीरी की बात तो दोनों जगह एक सी है, सिर्फ कुछ लक्ष्य और इस्तलाहें (परिभाषापं) अलग अलग हैं.

हिन्दियां रा इस्तलाहे हिन्द मद्ह सिन्धियां रा इस्तलाहे सिन्ध मद्ह.

यानी—सब के लिए इन्द् (स्तुति) करने का अपना अपना तरीका है, हिन्दुस्तानियों के लिए हिन्दुस्तानियों का तरीका ठीक है और सिन्धियों के लिए सिन्धियों का तरीका.

न मन बर आं गुले आरिश गांजल सरायमी बस, के अन्वलीबे तो अज हर तरफ हजारों अन्द. यानी—तेरे उस फूल से चेहरे की हम्द (स्तुति) गाने बाला सिर्फा एक मैं ही नहीं हूँ, हर तरफ से हजारों बुलबुलें तेरी हम्द (स्तुति) गा रही हैं.

[5]

एक दिन इस देहरादून के पहाड़ की सैर करते हुए शीनगर में पहुंचे. एक पहाड़ पर एक बाबा जी रहते थे. उनसे भेंट हुई. बड़ी आवभगत से मिले. हमें एक अलग मकान दिया. चारपाई मंगाई, हमने बहुतेरा इनकार किया कि आप जमीन पर स्रोते हैं, हम भी इसी तरह आराम करेंगे. लेकिन एन्होंने न माना और जिद की कि नहीं तुम को चारपाई आरूर चाहिए. आहिस्ता अहिस्ता उनसे मेल जोल बढ़ गया. एक दिन एसके किसी बेले को पद्मनाग ने. जो हाथ भर का और बड़ा जहरीला सांप होता है, काट लिया. दूसरे चेले ने सांप को पत्थर के कु'डे से डांक दिया और बाकर गुरू जी को खबर दी. उन्होंने कहा कि जस्दी से भभूत यानी अकसीर ला. इतने में चेले का मुंह बन्द हो गया और गरदन का मनका दल गया. गुरू जी ने कहा कि जिस सरह हो सके इसके गले से ममूत बतार दो. बड़ी गुरिकल से खराखारा के एक दाने के बराबर वह राख सींक से उसको खिला दी, द्वा का कन्ठ से उतरना दी या कि चेला कुरकरी लेकर सीधा हो गया. दूसरे चेलों को हुकुम दिया कि अब इसे बैठाओ, थोड़ी देर में उसने मुक जाहिर

بولی— البحی ا اسلم علیکم کیو ." یه فقیرہ سی اور هم چونکے . البوں نے اپنا حال سالیا اور کیلے لکے— البمیں سید هیں؟ میرا نام محصد حسین ہے، پہلے تو میلے شاہ عبدالعزیز صاحب سے گورمئٹر لیا پور وید اور شاستروں کو پزهنے کا شوق هوا بنارس میں جا کر یہ یعی پڑھا ، خالدان فادریہ کا چیلا هیں ، اپ نوگ کے لئے یہاں آرها هیں، چیلے کام فرتے هیں میں خدا کی یاد میں لگا هیں ."

همنے پوچها که اللہ اور مساماتوں کی نقوری میں آپ نے کیا نرق دیکھا ؟ " جواب دیا۔"نقیری کی بات تو دونوں جکہہ ایک سی ہے' صرف کچھ لنظ اور امتلاحیں (پریبھاشاتیں) الگ الگ میں ۔

مندیاں را امتلاج مند مدے . سندھیاں را امتلاج سندھ مدے

یعنی سبب کے لئے حدد (استوتی) کرنے کا اپنا اپنا طریقه ها هندستانیوں کے لئے هندستانیوں کا طریقه تهیک ها اور سندهیوں کا طریقه ،

نه من بر أن كل عارض غزل سرايم و بس كه عندليب تو از هر طرف هوأران اند

یعنی سے تیرے اُس پہول سے چہرے کی حدد (استوتی) کانے والا صرف ایک میں ھی نہیں ھوں' ھر طرف سے ھزاروں بلیوں تیرہ حدد (استونی) کا رھی ھیں .

[5]

ایک دوں هم دهرادوں کے پہار کی سیر کرتے هوال شری نکر میں پہواچے . ایک پہار پر ایک بابا جی رہتے تھ . اُن سے بهینت هوئی ، بری آوبهکت سے ملے ، همیں ایک الگ مکان دیا . چارپائی سنگائی . هم نے بہتیرا اِلکار کیا که آپ زمین پر سوتے هيں عمر اسى طارح پر آرام كريں كي ليكن أنهوں لي نه مانا اور فد كي كه نهيل تم كو چاريائي ضرور چاهئه . أهسته أهسته أن سے ميل جول بڑھ گيا . ايک دن أن كے كسى چيلے كو يدمناك في جو هاته بهر كا أور برا زهريال سانب هوتا هـ، کاف لیا ، دوسرے چیلے لے سانپ کو پتھر کے کونڈیے سے ڈھانگ دیا اور آکر گروهی کو خبر دی . آنهوں نے کہا که جلدی سے بهبهوت يعلى أكسير لا . إنام مين چيل كا منه بلد هوكيا أور كردين کا منکا تعل گیا ، گردھی نے کہا که جس طرح هرسکے اِس کے کلے سے بیبوت اُتار دو : بڑی مشکل سے خشخاص کے ایک دائے برابر وہ راکم سینک سے اس کو کہلا دی۔ دوا کا کفتم سے آترنا ھے تھا که چیلا جورجوری لیکر سیدها هوگیا . دوسرے چیلوں کو حکم ديا كه أب إسم بيتهاي تهوري دير مين أس لم يهوك ظاهر

कियों की की की पलवा विया और फिर टहलाना कि किया. जब इसे फिर द्वाहिश हुई तो फिर घी पिलाया गया. इस देर पीछे इसे खून का दस्त हुआ. फिर घी पिलाया कर टहलाया तो कथलहू का दस्त जाया. इसके बाद मामूली पर्वाणा जाया और मला चंगा हो हुगया. अब गुरू जी ने अहा कि इस सांप को झाओ. चेले पकड़ लाप. एक सींक से उसके मूंद में भी बही भभूत डाल दी. इसी दम पेंट कर रह गया और बह मस्म पानी दर तैरने लगी. बाबा जी ने कहा कि—"देखिये इसका विष इसके लिए तो अकसीर है, लेकिन आदमी के लिए सुद्दलिक (घातक) है और आदमी की अकसीर इसके लिए हलाइल है.

भां बके रा मद्द दर इक्को तो जम, भां बके रा शहद दर इक्को तो सम.

यानी—जो एक के लिए स्तुति है वह दूसरे के लिए निन्दा और जो एक के लिए शहद है वह दूसरे के लिए यहर.

इसके बाद बादा जी ने कहा कि आओ तुम को एक भौर तमाशा दिखावें. एक कड़ाही द्ध की भरी हुई मंगाई. इसमें सिरका और नमक डाल कर दूध को फाड़ दिया. मुकसे बोले कि--"भला अब कोई चीज इसे दुरुस्त कर सकती है ?" मेंने कहा कि "नहीं." फिर वही भस्म एक चावल भर इसमें डाल कर लक्डी से हिलाना शुरू किया. फीरन द्ध असली हालत पर भा गया. फिर कितना ही सिरका और नमक डाला उस पर कुछ असर न हुआ, जैसा था वैसा ही रहा. बाबा जी ने बेलों को हक्म दिया कि गड़डा खोद कर इस वृथ को दवा दो. इमने कहा कि महाराज इन चेलों को क्यों नहीं पिला देते ? कहने लगे कि ये पिएंगे तो कामी हो जावेंगे. फिर हमसे प्यार के साथ कहा कि अगर तम साधो तो इम खिलावें. सात पीढ़ी तक इसका असर रहेगा. मैंने कहा बहुत अच्छा, लेकिन इसका उतार भी तो बता बीजिये नहीं तो पांच सेर घी रोज कहां से लावेंगे. कहने सरो मियां ख़ुदा मालिक है. हमने कहा अच्छे रहे. दवा सिलाने को तो आप भालिक हैं और साना खिलाने के लिये ख़ुदा मालिक है. मैं ऐसी दवा से बाज आया. यह सून कर बाबा जी चुप हो रहे. इन बाबा जी की उमर चार सी बरस बी थी. हर सत्तर बरस में कायाकल्प करते थे. उसकी विधि बह भी कि है महीने तक एक कोठरी में बैठ कर जहां हवा म पहुँच सके एक दवा खाते थे. पहला जिस्म फट जाता था और इसके अन्दर से एक दूसरा वारह बरस के लड़के का का अचा जिस्म निकल जाता था. जिन दिनों इस गए वे वह बना हैबार हो रही थी. यह बाबा जी अकसीर के खिलाने में बढ़े असाव थे. इन दिनों के बाद मीर आजम अली बाह्य हमें बुँदेवे दूँदेवे वहां जा पहुंचे. उन्हें देखकर बाबाजी

ی تو دیو سفر گی آف پلوا دیا اور پور قباتا شریع کیا، جب آب ر خرافانی هیئی تو پور گی پانیا گیا . کچھ دیر پیچیے آب کون کا دست آبا اور یک دست آبا اور بها چنکا هوگیا . آب گورجی س گے بعد معمولی پاخانه آبا اور بها چنکا هوگیا . آب گورجی لے کہا کہ آس سانب کو او . چیلے پکر لائے . آیک سهنک سے س کے سه میں بھی وهی بهبهوت قال دی . آسی دم ایناته کو تا گور تهوری سی دیر میں پائی پائی هوکر به گیا اور وه پسم پائی پر تیرنے لئی ، بادا جی نے کیا که ۔"دیکھئے اِس کا پسم پائی پر تیرنے لئی ، بادا جی نے کیا که ۔"دیکھئے اِس کا هی اِس کے لئے مہلک هی اِس کے لئے مہلک اور آدمی کی اکسیر اِس کے لئے مہلک گیاتک) هے اور آدمی کی اکسیر اِس کے لئے مہلک

آن یکیرا مدے درحق تو زم' ان یکی را شید درحق تو سم

یعلی - جو ایک کے لئے استوتی ہے وہ دوسرے کے اٹے ثاداً اور جو ایک کے لئے شہد ہے وہ دوسرے کے لئے زهر .

اِس کے بعد بابا جی نے کہا کہ آؤ تم کو ایک اور تباشا دنیاویں ، ایک کراهی دوده کی بهری هوئی منکائی اُس میں سرکه اور نمک دال کر دوده بهاز دیا . مجه سے بولے که-"بها اب کئی چیز اِسے درست کرسکتی ہے ؟ " میں نے کہا کہ۔ "نہیں." پھر وھی بھسم ایک چارل بھر أس میں ةالكر لكرى سے ملآما شروع کیا . فوراً دودھ اصلی حالت پر آگیا ، پھر کتنا هي سركه اور نمك دَالا أس ير كجه اثر نه هوا؛ جيسا تها ویسا ھی رھا۔ بابا جی نے چیلوں کو حکم دیا که گڈھا کھودکو اِس دودہ کو دیا دو . ہم نے کہا که مہارانے اِن چیلوں کو کیوں نہیں یا دیتے ؟ کیلے لکے که یه باہرگے تو کامی هوجارینکے۔ بهر هم سے بھار کے ساتھ کہا که اگر تم کھای تو هم کھاریں ، سات پیرمی تک اِس کا اثر رهیکا ، میں لے کہا بہت اچھا لیکن اس کا آثار بھے تو بتا دیجئے نہیں تو یائیے سیر گھی روز کہاں سے لابنکے کہنے لیے میاں خدا مالک ہے ، هم نے کہا اچے رهے ، درا کھانے کر تو آپ مالک ھیں اور کھانا کھانے کے لئے خدا مالک هے . میں ایسی دوا سے باز آیا . یہ سنکر بابا جی چپ ھو رھے ، اِن بابا جی کی عمر چار سو برس کی تھی ، ھر ستر برس میں کایا کلب کرتے تھے ، اس کی ودھی یہ تھی که چھ مهینے تک ایک کوتھری میں بیٹھکر جہاں ہوا نه پہرنی سک ایک دوا کھاتے تھے ، پہلا جسم بھٹ جاتا تھا اور اُس کے اندر سے ایک دوسوا بارہ برس کے لوکے کا سا نیا جسم نکل آتا تھا ، جن دفول هم گئے تھے وہ دوا تیار هو رهی تھی . یه بابا جي اکسور کے کیلالے میں برے استاد تھے، کچھ ونوں کے بعد میر اعظم علی صاحب همیں ڈھراتھا۔ تعولتعق رهان جا پېرنجي أنهين ديمهم بابا جي

ने पूछा कि वे कीन हैं ? मैंने कहा मेरे पिता हैं. बोले हम रंग से तो यह बात ठीक नहीं मालूम होती. तब मैंने कहा कि हमारे गुरू हैं. उन्होंने कहा कि हां यह हो सकता है. बलते बक बाबा जी ने मीर साहब को सत्तर रुपये और एक बेल अकसीर की दी. बहां से बाबरी को बले. रास्ते में भीर साहब ने कहा कि अकसीर की बेल को फेंक दो. मैंने कहा कि आप बाल बच्चों बाले हैं, चनके काम आवेगी. कहा कि नहीं इसको देख कर खराब हो जावेंगे. तब हमने वह बेल फेंक दी.

श्रकसीर पर मुद्दिवस इतना न नाज करना, बेहतर है कीमिया से दिल का गुदाज करना.

[6 1 एक दिन जब इस मेरठ में ठहरे हुए थे तब कपड़े बिलकुल फट गए. गिरह में कौड़ी न थी. मजबूर होकर लडके पढाने श्रुक्त किए. जब कपड़ों के लायक वाम जा गए तो पढ़ाना छोड़ दिया. उन दिनों मौलबी हबीबुल्ला शाह की सेवा में रहे. इक्रीक़त में उनकी निगाइ जिस पर पड जाती थी उसके दिल को पाक करने में उससे बहुत बड़ी मदद मिलती थी. हमारे दिल पर भी उनकी निगाह का बहुत बढ़ा असर पड़ा, योग की कई कियाएं जो नक्तशबन्दी फक्रीरों में रायज थीं हमने उनसे सीखीं, जब चक्रों, ज्योतियों और तरह तरह के अन्दरूनी तजरुवों की सैर हो चुकी तो मैंने अर्ज किया कि "आपकी कृपा से यह सब तमाशा तो खुब देखा पर गुस्ताखी माफ कीजिये खुदा का पता तो न किसी चक्र में लगा, न किसी लतीफ्रे में. यह सब भानमती का स्वांग मालूम होता है." उस बक्त तो यह बात उनको नापसन्द आई लेकिन आदमी बहुत सच्चे और सममदार थे. रात को सोचा तो बात समक में आ गई. सुबह को कहने लगे कि तुम सच कहते हो, सचमुच वह बेचून और बेचगून ईश्वर न किसी चक्र में क्रैंद है और न किसी ऋदि सिद्धि में. सैकड़ों मुतलाशी (जिज्ञासु) हमारे पास आए लेकिन किसी ने इस सूक बूक की बात नहीं की. आओ दिल्ली चलकर शाह अबू सईव् साहब से पूछें. वह मुक्ते दिल्ली ले गए. शाह साहब से बात चीत हुई. उन्होंने बहुत ही ठीक जवाब दिया और कहा कि-"मुनो बेटा, जो कुछ हमें अपने बुजुर्गों से मिला है वह तुम्हें पहुंचा दिया, अब अगर तुम्हारी हिम्मत बढ़ी और तलाश जोर की है तो और जगह दू दो." फिर इम दिल्ली से चल दिए.

[7]

एक दिन मंडाबर में हम वहां के सज्जादानशीन पीर साहब के पास बैठे थे, अकसर पीरों की आदत होती है कि अपने बेलों से हर तरह के काम लेते हैं. मियां साहब ने تے پوچها کہ یہ کون میں ₹ میں نے کیا منورے پتا میں، بولے روپ رنگ سے تو یہ بات ٹینک نہیں معلوم ھوتی، تب میں نے کیا کہ معارے گرو میں، آنیوں نے کیا کہ ماں یہ ھوسکتا ہے، چاتے وتت بایا جی نے میو صاحب کو ستر رویئے اور ایک بیل اِکسیر کی دیں، وہاں سے بابری کو چلے، راستے میں میر صاحب نے کیا کہ اکسیر کی بیل کو پیناک دو، میں نے کیا کہ آپ بال بچوں والے میں' اُن کے کام آویکی، کیا کہ نہیں اِس کو دیکھکر خراب ہوجاویاکے، تب مم نے وہ بیل پیناک دی۔

> اکسیر پر محصوس اتنا نہ ناز کرنا بہتر ہے کیمیا سے دل کا گداز کرنا

[6]

ایک دن جب هم میرته میں تهہرے هوئے تھے تب کیڑے ہالکل یہٹ گئے ، گرہ میں کوری تع تھی ، مجبور هوکر ترکے یرہالے شروع کئے ، جب کہروں کے الیق دام آگئے تو پرھانا چھرز ديا . أن دنون مولوى هيهب الله شاة كي سهوا مين رهي . حقیقت میں آن کی نگاہ جس پر پر جاتی تھی اس کے دل کو پاک کرنے میں اس سے بہت ہڑی مدد ملتی تھی . همارے دُلُ پر بھی اُن کی نگاہ کا بہت بڑا اثر پڑا ۔ یوگ کی کئی کریائیں جو نقشبندی نقیروں میں رائع تھیں ھم نے اُن سے سیکھیں، جب چکررں' جهرتیں اور طرح طرح کے اندروئی تجربوں کی سیر هوچکی تو میں نے عرض کیا که ''آپ کی کریا سے یہ سب تماشه تو خرب ديكها ير گستاخي معاف كيجاء خدا كا يته تو نه کسی چکر میں لگا نه کسی لطیفید میں۔ یع سب بهانمتی كا سوانك معلوم هوتا هي " أس وقت تو يه بات أن كو نايسند أثى ليكن أدمى بهت سجي اور سمجهدار تهے، رات كو سوچا تو بات سنجه ميں آئی، مبح کو کہنے لئے که تم سے کہتے ہوا سے مبے ولا یے چون آور ہے چکون ایشور نع کسی چکر میں تید فے اور نع کسی ردهی سدهی میں . سیکروں مثلاشی (جکباسو) همارے پاس آئے لیکن کسی نے اِس سوج بوج کی بات نہیں کی . آؤ دلی چلکر شاه ابرسمید صاحب سے پرچهیں . وہ مجھے دلی لے گئے . شاہ صاحب سے بات چیت ھوئی . اُنھوں نے بہت می تهیک جواب دیا اور کها که-"سنو بیتا جو کچه همیں اپنے بزرگوں سے ملا ہے وہ تبھیں پہونچا دیا' اب اگر تبھاری ہمت برهی اور نالش زور کی هے تو اور جکه تھونتھو ۔ " یہو هم دلی سے چل دئے .

[7]

ایک دن میں منڌاور میں هم وهاں کے سجادہ نشین پیر صاحب کے پاس بیٹیے تیے ۔ اکثر پیاروں کی عادت ہوتی ہے که آپنے چیلوں سے هر طرح کے کام لیتے هیں ۔ میاں صاحب نے

^{*} ऋदि सिद्धि ردهی سدهی

भी अपने चेलों को हलों में जीत रखा था. एक दिन जब चेले दल जोत कर आए तो आपने उनसे कहा कि-"अरे रात को इन अस्ताह, अस्ताह ! श्री कर तिया करो." इस पर एक नेला क्या कहता है कि-"अब आई हम बदनसीबों की कमवतती. दिन को तो इल जोतें और रात को अल्लाह, अस्लाह करें ! वस अब हम कैसे जिएंगे, किस मुसीवत में र्श्यंस गए ? इस केसी पीरी-सुरीदी से भर पाए." यह बास सुनकर इस तो इसने लगे और पीर जी चुप रह गए. कुछ जवाब न दिया. इक्रीकृत में चेलों से काम लेना बुरा है, खास कर धनसे जो ईश्वर के खोजी हों. यूं तो कोई कोई सन्त महात्मा भी चेलों से बहुत सख्त काम लिया करते थे, लेकिन उसमें कुछ मतलब था और आखीर में उनको अपने मक्रसद (लक्ष्य) तक भी पहुंचा देते थे. खराबी तो यह है कि क्यादहतर पीरजादे सिवाय अपने स्नानदान का घमन्ड करने के अपनी गिरह का कुछ नहीं रखते और चेलों की ख़ब स्तबर लेते हैं, अगर कोई प्रेमी चेला अपने प्रेम से गुरू की कोई काम करे तो दूसरी बात है. लेकिन कुछ बदला उसको भी मिलना चाहिए. .कुरान की आयत है - जो तुम पर बहसान करे उस पर तुम भी बहसान करो.

[8]

एक दिन जब हम करतपुर में गए तो देखा कि वहां के सब्जादा नशीन पीरजी ने सुबह आकर हजरत श्रहमद शाह के सजार का तबाक (पिरक्रमा) और सिज्दा किया. हमने पूछा कि "साहब! तबाक और सिज्दा तो यहां हो गया श्रब अगर हजरत गौसुल आजम के मजार पर आप जायं तो बहां क्या कीजियेगा और रसूल अल्लाह मोहम्मद साहब के लिए क्या बाकी रखा है ? और खुदा से तो कुछ मतलब ही नहीं जिसके लिए कुछ अदब तमीज की जरूरत हो ?" वे नाराज हो गए और बोले—"मियां, तालिबइल्म लोग हु जती होते हैं, इसीलिये उन्हें कुछ कायदा नहीं होता." हमने कहा—"साहब! ऐसे कायदे को हमारा सलाम है जिसके लिए खुदा को छोड़कर दूसरे के सामने सर मुकावें और तौहीद (एकेश्वरवाद) से निकल कर दुई में फंस जावें.

[9]

एक दिन जब हम बनारस में पहुंचे हो एक बुजुर्ग के पास ठहरे जो हमारे हमनाम थे. पूछने से मालूम हुआ कि खानदान नक्षशबन्दिया में मौलवी हबीचुल्ला शाह के चेले हैं. हमने कहा कि "आप न सिर्फ हमारे हमनाम ही हैं बिल्क हमारे गुरुभाई भी हैं." फिर तो बड़ा प्रेम हो गया. एक दिन कहने लगे कि "यहां एक मन्दिर है जिसमें रोज मुबह को गाना होता है कल वहां चलो." अगले दिन सुबह की नमाज के बाद हम दोनों वहां गए. देखा कि एक पन्डित जी, जवान उमर के, चौकी पर बैठे हुए बड़े जोर शोर से अदिवाद की ज्यास्या कर रहे हैं. जब वह उपदेश दे जुके

ي اين جعلوں كو هارس ميں جوت ركا تها. ايك دن جب چيليد مل جوت كو أله تو آپ له أن سے كها كه-"دارے رات كر كيم الله الله الله الله كرايا كرو . " إس ير أيك چيلا كيا كه ه كه _ دو اب الی هم بدلصیبوں کی کمبختی . دن کو تو عل جونیں الم رات كو الله الله كرين ! بس اب هم كيسه جائين كو كس مصیبت میں پہنس گئے ? ہم ایسی پیری مریدی سے بھریائے." ية بات ساكو هم تو هلسان لك أور پهر جي چپ ره تئي . كچه جراب له ديا . حقيقت مين چياون سے كلم لينا برا هـ؛ خامكو أن سے جو اِیشور کے کھرجی ھوں ، یوں تو کوئی کوئی سنت مانا بھی چیلوں سے بہت سفت کام لیا کرتے تھے کیکن اُس مين كنج مطلب تها أور أخير مين أيني مقصد (لكشيه) تك یے یہولجا دیتے تھے . خرابی تو یہ ہے که زیادہتر پیرزادے سرائے اپنے خاندان کا گھمند کرنے کے اپنی گرہ کا کچھ نمیں رهتے اور چھلوں کی خوب خبر لیتے ھیں ۔ اگر کوئی پرینی چیلا اپنے پریم سے گرو کا کوئی کام کرے تو درسری بات کے ، لیکن كچ بدله أس كو بهني ملنا چاها، قرآن كي آيت هـــجو تم بر احسان کرے اُس فر تم بھی احسان کرو ۔

[8]

ایک دن جب هم کرتپور میں گئے تو دیکھا که وهاں کے سجادہ نشیدی پیر جی نے صبح آکر حضرت احمد شاہ کے مزار کا طراف (پریکرما) اور سجدہ کیا ، هم نے پوچھا که ''صاحب! طراف اور سجدہ تو پہل هوگیا اب اگر حضرت غرث العظم کے مزار پر آپ جائیں تو وهاں کیا کیجئیگا اور رسول الله محمد ماحب کے لئے کیا باقی رکھا ہے ؟ اور خدا سے تو کچھ مطلب هی نہیں جس کے لئے کچے ادب تمیز کی ضرورت هو ؟ " وے ناراض هوگئے اور بوای—''میاں' طالب عام لوگ حجتی هوتے هیں' اس لئے آنہیں کچھ فایدہ نہیں هوتا،'' هم نے کہا—''صاحب! اسے فایدے کو ممارا سلم ہے جس کے لئے خدا کو چھوڑکر دوسوے کے سامنے سر جھکاویں اور ترحید (ایکیشورواد) سے فکل کر دوئی میں پہنس جاویں ،

[9]

ایک دن جب هم بنارس میں پہونچے تو ایک بزرگ کے پاس تبہرے جو همارے هم نام تھے ، پوچھنے سے معلوم هوا که خاندان فتشبندید میں مولوی حبیب الله شاہ کے چیلے هیں ، هم نے کہا که ''آپ نہ صرف همارے همانام هی هیں بلکہ همارے گرو بھائی بھی هیں '' پھر تو بڑا پریم هوگیا ، ایک دن کہنے لئے که ''یہاں ایک مقدر هے جس میں روز صبح کو گانا هوتا هے کل وهاں چلو" اگلےدن صبح کی نماز کے بعد هم دونوں وهاں گئے۔ کل وهاں چلو" اگلےدن صبح کی نماز کے بعد هم دونوں وهاں گئے۔ دیکھا کہ آپک پنت جی وہائیا کروهیں ، جب وہ آپدیش دے چکے زرشور سے آدویہواد کی وہائیا کروهیں، جب وہ آپدیش دے چکے

हो सबह की रागिनी में जारदी हुए की. हमारे गुरु भाई सेयद गीस अली रमह इसैनी वो सुनकर इतने मुख्य हो नप कि गिर ही पड़े. सेकिन इमने एक सन्भा पकड़ लिया और अपने आपको सन्हाले रखा. फिर भी हमारे सारे बदन में एक कंपकृषी सी दीव गई. आर्थी सत्म हुई तो हमारे पीर माई होश में आए और मकान को चले. आठ दिन तक हमारे दिल वा उसका गहरा असर रहा. एक दिन सैयद गौस अलीशाह ने हमसे कहा कि "आज गंगापुर चलो वहां एक चेले को सत्यास मिलेगा," इम दोनों पहुंचे. देखा कि एक पन्डित किसी चेले को दीक्षा देने वाला है. हमारे गुरुआई मट सर स्रोल कर पन्डित के सामने जा बैठे और कहा कि-"पंडित जी पहले इसको मूड दो." यह सुन कर पन्डित रोने लगा और बड़ी सच्चाई के साथ उसने यह कहा कि "मियां साहब, जो बात तुम चाहते हो उसकी हम को हवा भी नहीं लगी, सोची, अगर इस इस क्राबिल होते तो टके टके पर क्यों मारे मारे फिरते. यह कतबा तो हमारे बुजुर्गी को हासिल था कि इधर उस्तरा सर पर रखा और उधर अन्त:-करण ने पलटा खाया. इम लोग तो सिर्फ उनकी लकीर पीटते हैं."

सचयुच हरिद्वार में हमने यही बात देखी जो इस पन्डित ने कही थी. यानी एक सन्यासी अपने चेले को सन्यास देना चाहता था कि एक युसलमान फ़क़ीर सिर खोलकर आगे आ बैठा. सन्यासी ने जोश में आकर नाई को इशारा किया कि अच्छा पहले इसी को मूंड. नाई ने अपना काम शुरू किया. गुरू ने यूँ दीक्षा देनी शुरू की—"न पापी न पुत्री, न स्वर्गी न नरकी, न ब्रह्मी न विशनी इत्यादि."

इस दीक्षा के बाद उस मुसलमान फक़ीर की ऐसी अजीव हालत हुई कि फिर वह परमहंस हो गया. इसके बाद असली चेले की बारी आई. उस पर भी असर तो गहरा पड़ा मगर वह बात न हुई जो मुसलमान फक़ीर को हासिल हुई थी.

10]

एक रोज जब हम कोट पूतली से चले तो रास्ते में एक मिन्दर मिला. वहां एक साघू बढ़े ममोहर स्वर से भजन गा रहा था. हम उसके पास जा बैठे. भजन सुनते रहे. फिर उनसे वातें होने लगीं, यहां तक कि नमाज़ का वक्त आया. हमने कपड़ा बिद्धा कर नमाज़ पढ़ ली. नमाज़ के बाद वह साधू जी हमसे कहने लगे कि "मियां साहब, आपकी तबीयत में तो बड़ी आज़ादी मालूम होती है फिर यह नमाज़ की हस्लत क्यों लगा रखी है ?" हमने कहा कि "बाबा जी! हस्लत से तो न तुम खाली, न हम खाली. तुमको इस पत्थर के पूजने की इस्लत ज़गी हुई है, हमको नमाज़ की. तुम

تو میم کی راگئی میں آرتی شروع کی۔ هنایم گرو بهائی اسید عرث علی شاه حسینی توا سنکر اِتِنْ مکند هوگئے که کر هی پڑے ، لیکن هم نے ایک کسیا پکولها اور اپنے آپ کو سنبھالے رکھا ، پھر بھی ھمارے سارے بدین میں ایک کنھی سے دور گئی ۔ آرتی ختم هوئی تو همارے پهر بهائی هوش میں آئے اور مکان کو چلے . آٹھ دن تک ھنارے دل پر اُس کا گھرا أثو رها ، أيك دن سيد غوث على شاه له هم سے كها كه "اكب گنگاربر چلو وهال ایک چیلے کو سنیاس ملیکا ." هم دونوں پہونچے . دیکھا کہ ایک پندت کسی چیلے کو دیکشا دینے والا فے . ھمارے گرو بھائی جھٹ سر کھول پندس کے سامنے جا بیٹھے اور کها کهها الله علی دیلے هم کو مور دو ، ¹⁴ یه سلکر پاتست رونے لگا اور بڑی سچائی کے ساتھ اُس نے یہ کہا کہ وقیاں صاحب عدد بات تم چاهید هو أس كي هم كو هوا بهي تههن لكى . سوچو اكر هم إس قابل هوتے تو تك أنك پر كبوں مارے مارنے پھرتے ، یہ رتبہ تو هدارے بزرگوں کو حاصل تھا که اِدهر استرا سر پر رکھا اور اُدھر انتھکرن نے پلتا کھایا ، ھم لوگ تو صرف اُن کی لکیر پیتتے ھیں ،"

سچ میچ هری دوار میں هم نے یہی بات دیکھی جو اِس پنت نے کہی تھی ۔ یعنی ایک سنیاسی اپنے چیلے کو سنیاس دینا چاهتا تها که ایک مسلمان فقهر سر کھول کر آگے آ بھتھا ، سنیاسی نے جوش میں آکر فائی کو اِشارہ کیا که اُچها پہلے اِسی کو خَرِ ِ فائی نے اپنا کام شروع کیا ، گرو نے یوں دیکشا دیلی شروع کی ۔ "نه پاپی نه پنی نه سورگی نه فرکی' نه برهمی قه وشنی اِتهادی ،"

اِس دیکشا کے بعد اُس مسلمان فقیر کی ایسی عجیب. حالت هرئی که پهر ولا پرم هنس هوگیا ۔ اِس کے بعد اُملی چیلے کی باری آئی ۔ اُس پر بھی اثر تو گہرا پڑا مکر ولا بات نہ هوئی جو مسلمان فقیر کو حاصل هوئی تھی ۔

[10]

ایک روز جب هم کوت پوتلی سے چلے تو راستے میں ایک مندر ملا، وهاں ایک سادهو ہڑے منوهر سور سے بہجوں کا رها تھا، هم اُس کے پاس جا بیٹھے ، بہجوں سنتے رہے ، پہر اُن سے باتیں هونے اُلیں بہاں تک که نساز کا وقت آیا ، هم نے کپڑا بچھاکر نماز پڑھ لی ، نساز کے بعد وہ سادهو جی هم سے کہنے لگے که دمیاں صاحب آپ کی طبیعت میں تو ہڑی اُزادی معلوم هونی ہے پہر یہ نماز کی علت کیوںلگا رئھی ہے ؟ " هم نے کہا که دنبا ہی ! علت سے تو نہ تم خالی " نہ هم خالی ، تم کو اِس پہر کے پوجنے کی علت لگی هوئی ہے ؟ هم کو نساز کی ، تم کو اِس

كِئنًا بِصَاتِ هُو هُم مالًا هَاتِ هِيلِ "

رسائی فیست تا سو منزل أو كفو و ایمان را كه دير و كعبه سنگ ره بود كبر و مسلمان را

Ja W

یملی سے اُس پرمیشور کے مقام تک کفر اور ایمان دونیں میں سے کسی کی بھی پہونچ نہیں' کیونکہ مندر اور کمبه دونوں مدر اور مسلمانوں کے راستے کے پتھر ھیں ۔

داله مائل الله نه هو ديرو مورد كا كا الله مائل الله نه ديرو ميل كا الله يهال دونول جاته يهر يوس ها

क्टा बजाते हो हम माला हिलाते हैं." रसाई नेस्त ता सरे मंजिले क कुफ़ो ईमाँ रा, के देरो कावा संगे रह बुवद गवरो मुसलमाँ रा.

यानी—इस परमेरवर के मुकाम तक कुफ चौर ईमान बोनों में से किसी की भी पहुंच नहीं, क्योंकि मन्दिर और कावा दोनों हिन्दू चौर मुसलमानों के रास्ते के पत्थर हैं.

दिला # मायल क्षेत्र न हो दैरो † हरम ‡ का, यहाँ दोनों जगह पत्थर पड़े हैं.

जल कन्या के आंसू

جل کنیا کے آنسو

विश्वमभर नाथ पांडे

सुसलमानों की नमाज में मुक्ते एक खास खिंचाव मालूम होता है, और खास तौर पर इशा की नमाज. कितनी ही बार मैंने मौझाजियन को अजान देते हुए और इमाम को नमाज पढ़ाते देखा है. जाहिद सुरीले लहजे से क़ुरान की तेलावत करता है और नमाजियों की कतारें बेखुदी में हूब कर उस पाक परविद्गार अल्लाह ताला के साथ एक तार में बँध जाती हैं. मुक्ते नहीं मालूम कि औरों को भी नमाज इस तरह रुजू करती है या नहीं और न मैंने इस असर की ही झानबीन करने की कोशिश की कि मुक्ते यह क्यों इतनी दिलकश लगती है.

नमाज का जिक करते करते मेरे मन में मलाया की एस घटना की याद ताजा हो गई. सूरज डूब चुका था. नमाजी मस्जिद में आकर इशा की नमाज का इन्तजार कर रहे थे. इन्न कलाम मजीद का मुताला कर रहे थे और कुछ इदी सो की चरचा. एक बूढ़े से हाजी हजरत पैग्रम्बर के चफ़ादार साथियों की कुरबानी और जाँनिसारी की कहानियाँ मुना रहे थे. दिक्सन पूरब के इन मुल्कों में और जास तौर पर मलाया में मुसाफ़िर का मन खास तौर पर रम जाता है. उसे क्वाहिश ही नहीं होती कि सफ़र तमाम करके आगे की मंजिल की ओर बढ़े.

इस सिंचाव का राज क्या है, उसके पीछे रहस्य क्या है, यह बताना जरा मुश्किल है. कुछ तो देश की सुन्दरता, وشومبهر ناته پانتے

مسلمانوں کی نماز میں مجھے ایک خاص کہنچاؤ معلوم ہوتا ہے۔ اور خاصطور پرعشاء کی تماز، کتنی ہی بار میں نے موذین کو آذان دیتے ہوئے اور اضام کو نماز پڑھاتے دیکھا ہے، زاہد سریلے لہجے سے قرآن کی تقوت کرتا ہے اور نمازیوں کی قطاریں بیخودی میں قرب کو اس پاک پرردنگر الله تعالی کے ساتھ ایک تار میں بندھ جاتی ہیں، مجھے نہیں معلوم که اوروں کو بھی نماز اس طرح رجوع کر تی یا نہیں اور نم میں لے اس اثر کی مان اس طرح رجوع کر تی یا نہیں اور نم میں لے اس اثر کی میں جہاں بین کرنے کی کوشش کی که مجھے یه کیوں اتنی داکش لگتی ہے۔

نباز کا ذکر کرتے کرتے میرے میں میں ملیا کی اُس گیتنا کی یاد تازہ ہوگئی، سبوج توب چکا تھا ، نبازی مسجد میں اُز عشاء کی نباز کا انتظار کو رہے تھے ، کچھ کلم مجید کا مطالع، کر رہے تھے اور کچھ حدیثیں کی چر چا ، ایک بوڑھ سے حاجی خصرت پینمبر کے وفادار سانھوں کی قربائی اور جانثاری کی کانیاں سنا رہے تھے ، دکھی پورب کے آن ملکوں میں اور خاص طور پر ملیا میں مسافر کا می خاص طور پر رم جا تا ہے ، اُس خواہش ھی نہیں ہوتی که سفر تمام کو کے آگے کی مغزل کی اُر بڑھے ،

اِس کهچاو کا راز کیا ہے، اِس کے پیچھ رهسیه کیا ہے ، به بنانا ذرا مشمل ہے . کچھ تو دیھی کی سندرتا ،

الم دل दिल بالم

क्ष श्रासक्त ज्रामी

े मन्दिर مندر काबा عبد

کچے دیش واسیرس کی پردیسیس کے ساتھ محبت کچے قدرت کے المفارع کچے موسم اور آب و هوا کی من پسلنگی مسافر کی طبیت بر ایک عجیب و فریب اثر دالته هیں. اور اگر اے مجبوراً مليا چهررنا هي پڙے تو ره يهي پخته أرأدة ليكر چهررتا هے كه هوسري بار كجه زياده فرصت ساته ليكر ولا وهال لولي كا . كتابين ص اینے معلومات بوهانے والے اس بات کا اندازہ هی نہیں 10 سکتے که سفر میں جو باتیں دکھائی دیتی ھیں آنکا ذکر تک کتابوں میں ٹہیں مرتا ، پھر بھی کتنی تسلی کی بات ہے که یه چیزیں خود أيني أنهون سے ديمونے كو ملتى هيں . حالانكه ميں وهارے دوسری بار نع جا سکا پهر يعی را را کر مجھے ماليا کے اُس سنو كى ياد أتى ھ .

وہ دیش کیا ہے؛ دو طرفائی سندروں کے بیچے دھرتی کی ایک پتلی سی نمیر ہے لیمی سمندری طودنی أس كے كناروں سے الكو تبين ليتي وهال هو وتت موسم بهار جهايا رهتا هي ته لوگ جورالمکھی جانتے ہیں؛ نه بهرنجال اور نه طرفان . چين ساگر اور ھان ساگر کی بھوکی لھریں اُس سائدر جوزیرہ کے المحفوظ كلارون تك يهونجت يهونجت تهك كو لست هو **جاتی میں .**

میں عشاء کی نماز کا ذکر کو رہا تھا ۔ امام آئے اور نماز يهوها كر نمازيون كو دءا ديكر أرأم كرنے چلے گئے ، كچه بزرگ تمازي، جنكا گهر سے لاك لكاؤ كم هو چكا تها وهيں ديوار كا سهارا لیکر بیٹھے رہے ۔ کئی قسم کے چرچے شروع ہرٹے کون کے سلسلے ختم مرتے هي اس طرح جر جاتے تھے که وہ ايک لمهي داستان معلوم هوتے تھے . وہ سارے چر چے اتنے دلھےسپ تھے که من هوتا تھا کہ بس سنتا می رهوں۔ سائے والے کئی تھے اور ایک کے ختم كرت نه كرت دوسرا فوراً كوى يكو لينا نها .

سامنے بیتھے ہوئے ایک بزرگ نے میری طرف آشارہ کرتے ھوٹے کہا۔"آپ توملیا کے لئے اُجلبی میں نا ؟ بہت پہلے يهان ايك اجتبى آيا تها ، لوك أسه ناخدا مبيهن كه كو يكارت تهم ، وه باتو باره كا رهنم والا أيك سوداكر تها . أين وطن سماترا سے وہ وہاں کی بنی مشہور ریشم خاو پر لاد کر لایا تھا ۔ ندی کے راستے کاؤں کاؤں میں اسے بیج کر اور اپنا رویعہ وصول کر کے وہ ندی کے مہالے کی اور چل پڑا ۔ سانوا کے لئے لاعر اُٹھانے سے پہلے لوگ سفر کے لئے پیلے کا پانی اُکٹھا کر لیتے میں ۔ هماراً يه بندر و تيلك باتوا هي أيسي جكهه ه جهال عمدة ميلها بائي من چاهي متدار مين مل سكتا هي إسى لله داخدا میٹیا پانی اکٹیا کرنے کے لئے بہاں ٹھبر گیا . آسے جلدی نہ تھی أور أس كلم كے لئے وہ هنته يور سے مهينه يور تبهر سكتا تها . .

क्रम देशवासियों की परदेशियों के साथ मोहम्बत, क्रम क्रवरत के नक्कारे, इस मौसम और आवो दवा की मन-वसन्तरी। मुसाफिर की तनियत पर एक अजीवो रारीव असर बालते हैं, और अगर उसे मजबूरन मलाया छोड़ना ही पड़े तो वह यही पुस्ता इरावा लेकर छोड़ता है कि दूसरी बार कह ज्यावा फ़रीत साथ लेकर वह वहाँ लीटेगा. किताबों से अपनी माजूमात बढ़ाने बाले इस बात का अन्दाखा ही नहीं लगा सकते कि सफर में जो बातें दिखाई देती हैं उनका जिक्र तक किताबों में नहीं होता. फिर भी कितनी तसस्ती की बात है कि यह चीजें खुद अपनी आँखों से देखने को मिलती हैं. हालाँकि मैं वहाँ दूसरी बार न जा सका फिर भी रह रह कर सुके मलाया के उस सफ़र की याद षाती है.

बह देश क्या है, दो तुफानी समन्दरों के बीच घरती की एक पतली सी लकीर है. लेकिन समन्द्री तूफान इसके किनारों से टक्कर नहीं लेते. वहाँ हर वक्त मीसमे बहार हाया रहता है. न लोग ज्वालामुखी जानते हैं, न भ्वाल और न तुफान. चीन सागर और हिन्द महासागर की भूकी लहरें इस सुन्दर जजीरे के लामहफूज किनारों तक पहुंचते

पहंचते थक कर लस्त हो जाती हैं.

मैं इशा की नमांच का चिक्र कर रहा था. इमाम आये और नमाज पढ़ाकर नमाजियों को दुआ देकर आराम करने चले गये. कुछ बुजुर्ग निमाजी, जिनका बर से लाग लगाव कम हो चुका था, वहीं दीवार का सहारा लेकर बैठे रहे. कई क़िस्म के चरचे शुरू हुए, जिनके सिलसिले सत्स होते ही इस तरह जुड़ जाते थे कि वह एक जम्बी दास्तान मालुम होते थे. वह सारे चरचे इतने दिलचस्प ये कि मन होता था कि बस सनता ही रहें. सनाने बाले कई ये और एक के खत्म करते न करते दूसरा फ़ौरन कड़ी पकड़ लेता था.

सामने बैठे हुए एक बुद्धर्ग ने मेरी तरफ इशारा करते हुए कहा-"आप तो मलाया के लिये अजनवी हैं ना ? बहत पहले यहाँ एक अजनबी आया था. लोग उसे नालुदा माबीन कह कर प्रकारते थे. वह 'बातूबारा' का रहने वाला एक सीदागर था. अपने बतन समात्रा से वह वहाँ की बनी मशहूर रेशम नाब पर लाद कर लाया था. नदी के रास्ते गाँव गाँव में उसे बेच कर और अपना उपया बसल करके वह नदी के मुहाने की और चल पढ़ा. सुमात्रा के लिये लंगर उठाने से पहले लोग सफर के लिये पीने का पानी इकड़ा कर लेते हैं. हमारा यह बन्दर 'तेलुकबातू' ही ऐसी जगह है जहाँ चन्दा मीठा पानी मन चाही मिक्रदार में मिल सकता है. इसीलिये नाखुदा मीठा पानी इकहा करने के लिये यहाँ ठहर गया. उसे जल्दी न थी और इस काम के लिये वह इपते भर से महीने भर ठेहर सकता था.

बाजूदा 'बेहुकबातू' के मुक्तिया 'तोह परमितांग' की चित्रका में हाकिर हुआ और उनकी इजाजत से मीठा पानी भरवाने की स्कीम बनाने लगा. 'तोह परमितांग' की की बार बेटियाँ थीं जिनमें तीसरी 'राष्ट्रना' बेहद खूबसूरत बी. किसी कोटे से नगर में अगर कोई खुबस्रत लड़की हो सी सीग उसकी काकी चरचा करते हैं. नोखुदा के कानों में सी राचना की तारीफ की बात पड़ी और उसने इत्तफाफ़ से बाबना को देखा भी. लोग कहते हैं कि प्रेम मौका और महल नहीं देखता. राउना को देखते ही नाखदा ने अपना विंको जान इस पर निद्धावर कर दिया, वह दिन रात उसके त्रेम में तक्पने लगा, द्रयाक्त करने पर मालूम हुआ कि राष्ट्रना तो पहले से ही मोहब्बत की मंजिल की मुसाफिर है. उसकी शादी बन चुकी थी और वह एक दूसरे शख्स की मेंगेतर थी. मगर नाखुदा का प्रेम भी हार क़ुबूल करने से इन्कार कर रहा था. आस्तिर तो वह सीदायर था और प्रेम भी तो एक सौदा ही है, वह इसके लिये तैयार था कि इस सीदे में असे जो भी बाजी लगानी पड़े वह पीछे न हहेगा.

, बयान छुनते छुनते मेरा मन राउना की खूबसूरती की कंस्पना करने में भशागूल था. बूढ़े निमाखी ने मेरा ध्यान सींबते हुए कहा-"अजनवी! तुम जानते हो कि यह समात्रा बाले रेशम और खंजर के अलावा वशीकरन की द्वा बनाना भी जानते हैं." मैंने शरमिन्दा होकर अपनी लाइस्मी जाहिर की. मैंने पृछा कि-"यह वशीकरन की देवा है क्या ?" बुजुर्गवार ने जवाब दिया-"यह दवा 'जल कन्या' के ऑसू से बनती है. इस जल कन्या को हम लोग 'दो योंग' कहते हैं. जल कन्या समुद्र में रहती है. सर्गों के साथ इठलासी है और तुफानी मौजों के साथ खेलती है. उसकी खराक सिर्भ दूब है. समुद्र से निकल कर जब वह दूब खाने आती है तो लोग घेरा डालकर उसे पक्क लेते हैं. उसका कद आदमी से कुछ बड़ा होता है, कह लोग उसका गोरत भी खाते हैं. भैंस के गोरत की तरह उसका भी गोरत लाल होता है. गिरफ्तार होने पर यह जल कन्या रोने लगती है. उसकी आँखों से टप टप लाल आँस गिरने लगते हैं. वह समुद्र की लहरों में लौटने के लिये ब्रह्मदाने लगती है. जिस वक्त वह रोती है तो लोग कटोरों में उसके लाल लाल भाँसू जमा कर लेते हैं. अगर इन श्रांसचों को भात के साथ मिला दिया जाये तो भात का रंग भी लाल हो जाता है.

कहते हैं नासुदा के पास भी एक शीशी में इसी जल इन्या के आंसू थे. वोह परिमतांग के बावरची को रिश्वत की एक बड़ी रक्तम देकर राउना के मात में उसने जल कन्या के बांसू मिलाबा दिये. सुन्दरता की देवी इस लड़की ने

التعط العلك بالواكي معها الولايرمالك كي غرست میں حاظر ہوا اور اُن کی اجازت سے میٹھا پائی بھروائے کی اسکیم بنائے لگا ، اُترہ پرمتانگ کی چار بیتیاں تیس جن میں تيكري اراؤنا بيحد خوبصورت تهي . كسي چهرئه سے دار ميں اگر کوئی خوبصورت لزکی هو تو لوگ اس کی کانی چرچا کرتے میں ، ناخدا کے کانیں میں بھی راؤنا کی تعریف کی بات یوی اور اُس لے اتفاق سے راؤنا کو دیکھا بھی ۔ لوگ کہتے ھیں که پریم موقع اور محل نہیں دیکھتا ، راؤنا کو دیکھتے ھی ناخدا نے اپنا دل و جاں اِس پر نجهاور کر دیا ، وہ دور زات أس كے يريم ميں توني لكا . دريانت كرنے ير معلوم هوا كه راونا تو پہلے سے هي متحبت کي منزل کي مسافر هے ، اُسكى شادى ہن چکی تھی اور وہ ایک دوسرے شخص کی منکیتر تھی . مگر بُلخداً کا پریم بھی ھار قبول کرنے سے اِنکر کو وھا تھا ، آخر تو وه سوداگر تها اور پریم بهی تو ایک سودا هی هی وه اس کے لئے تھار تھا کہ اِس سودے میں آسے جو بھی ہازی لکانی پڑے وہ پیچے نہ ملے کا .

بیان سنتے سنتے میرا من راؤنا کی خوبصورتی کی کلینا کرنے میں مشنول تھا ، ہوڑھے انمازی نے مہرا دعیان کھینچتے هوئه كها-"اجلبي ! تم جانع هو كه يه سمانرا واله ريشم اور خلص کے علاوہ بشیکرں کی دوا بنا نا بھی جانتے میں ،" مینے شرمند؟ هو كر أيني لاعلمي ظاهر كي. ميني يوچها كه-"أيه بشيكرن كي دوا هے كيا ۾ " بورگوارنے جواب ديا۔"يه دوا 'جل كنيا' کے آنسو سے بنتی ہے . اِس جل کنیا کو هم لوگ 'دو یونگ' کہتے ھیں ، جل کنیا سمدر میں رھتی ھے ' ترنگوں کے ساتھ الهلاتي هے اور طوفائي موجوں کے سانھ کھیلتی ہے۔ اُس کی خوراک صرف دوب هے ، سمادر سے فعل کو جب وہ دوب کھالے آتی ہے تو لوک گھیرا قال کر أے يكو ليتے هيں . أس كا قد أدمى سے كنچ ہوا هوتا هے ، كنچ لوك أس كا كوشت بهى كهاتے هیں ، بہنیس کے گوشت کی طرح اُس کا بھی گوشت لال هوتا هے ، گرفتار هولے پر يه جل كنيا رولے لكتي هے ، اس كى أنكهن سے تاپ تاپ ال أنسو كرنے لكتے هيں ، وا سلدر كى الهرول مين لوئنه كے لئے چهنهنانے اكتى هے، جس وقت وا ررتی ہے تو لوگ کارروں میں اِس کے لال الل آنسو جمع کرلھاتے هيں . اگر إن أنسوں كو بهات كے ساتھ ملا ديا جائے تو بهات كا رنگ بھی لال ھو جانا ھے .

کہتے میں ناخدا کے پاس بھی ایک شیشی میں اسی جل کنیا کے آنسو تھے۔ توہ پر متانگ کے باورچی کو رشوت کی ایک ہتی رقم دیکر راؤنا کے بھات میں اس نے جل کنیا کے آنسو ملوا دیئے۔ سندتا کی دیوی اس لوکی نے

T. A.

अन्जान में वह सात का लिया. राउना उसे साकर नासुदा के जार में दीवानी ही गई.

नासुन्। यक महीने तक तेलुक बातू में ठैहरा रहा. राखना की दासी को क्रीमती रेशम मेंड देकर उसकी मदद से वह रोज राखना से मिलता रहा. इस तरह की बात कर्से तक बतती रहे और कोई संदेह न करें यह नामुमिकन है. उसके प्रेम पर अब कर हाबी होने लगा. राखना एक ताक्रतवर मुखिया की तक्की और वह एक अजनबी परदेसी. अगर तोह परमितांग को परा भी शुक्हा हुआ तो या उसकी बोटी बोटी काट ली जायेगी और या वह कुत्तों से जुवबा कर फेंक दिया जायेगा. रेशम का सौदागर प्रेम का सौदा न निभा सका. इसलिय पीने का पानी भरकर बिना किसी को इत्तला दिये एक दिन उसने अपनी किश्ती के लगर उठा लिये.

छोटी सी जगह में जरा जरा सी बात की चरवा होती है. राउना के कान में क्यों ही नाखुदा माबीन की रवानगी की भनक पड़ी वह बदहवास होकर बन्दरगाह की तरफ दौड़ी, उसकी बहनें उसके पीछे पीछे. नाव ने पाल उठा दिये थे मगर हवा की रफतार मन्धरथी, इसलिये नाखुदा की किरती किनारे से कुछ थोड़ा आगे लहरों के हलकोरों से खेल रही थी. राउना समुद्र की लहरों को चीरते हुए आगे बढ़ी. उसकी बहनों ने उसे पूरी ताक्षत से पकड़ कर रोका और मुश्कल से उसे दुवने से बचा पाई. चीख पुकार मुनकर उन्होंने नाखुदा को वापिस आने को कहा. मगर सुमात्रा का वह सौदागर उस वापसी का मतलब खूब समकता था. लोगी ने उसकी नाव का पीछा किया मगर तब तक अनुकूल वायु पाकर वह उनकी गिरियत में न आ सका.

राजना अपने बुजादिल और निर्दयी प्रेमी की जुदाई में जार जार रोती और आहें भरती रही. नाखुदा फिर कभी तेलुकबातू वापस नहीं लौटा. राजना की विपता पर असी हुआ मौत ने काली चादर ढक दी. मगर राजना की जुदाई का गीत अब तक मलाया में गाया जाता है. उसकी कुछ सतरें मैं आपको सुनाता हूँ और मुक्ते उम्मेद है आप अबेंगे नहीं.

मेरे नाखुदा ! मेरे प्रायों के सहारे ! तुम कहां हो ? उचे उचे ताढ़ के दरखत, मेरे क्रासिदों की हैसियत से तुम्हारी जामद का इन्जार कर रहे हैं, फल दरखतों से टट कर जपना सर धुन रहे हैं.

मेरे नाखुदा ! में दुम्हारी बहुत सुन्दर महबूबा, النجائ میں وہ بہات کہا لیا ۔ راوتا آسے کیا کر تاخیا کے بہار میں دیوائی ہو گئی ۔

ناخدا ایک مہینے تک تیلک یاتو میں تھورا رہا ، راونا کی دائسی کو قیمتی ریشم بھیات دیکو اِس کی مدد سے وہ روز راونا سے ملتا رہا ، اِس طرح کی بات عرصه تک چلتی رہے اور کوئی سندیہ نہ کوے یہ نامیکی ہے ، اُس کے پریم پر آب تو حاوی ہونے لگا ، راونا ایک طاقتور مکھیا کی لوگی اور وہ ایک اجتمی پردیسی ، اگر توہ پر متانگ کو قرا بھی شبه ہوا تو یا آسکی ہوتی ہوتی کات لیجائے گی اور یا وہ کتوں سے نیچوا کو آسکی ہوتی ہوتی کات لیجائے گی اور یا وہ کتوں سے نیچوا کو پھنک دیا جائیگا ، ریشم کا سوداگر پریم کا سودا نہ نبها سکا ، اُس لئے پینے کا پانی بھر کر بنا کسی کو اطلاع دیئے ایک دی آس نے اپنی کشتی کے لنگر آٹھا لئے ،

چہوتی سی جگم میں ذرا ذرا سی بات کی چرچا ہوتی ہے۔ راؤنا کے کلی میں جیوں ہی قاضدا صبین کی روائگی کی بینک پڑی وہ بدھواس ہوکر بندرگاہ کی طرف دوری' اُس کی بہنیں اُس کے پیچے پیچے ، فاؤ نے پال اُنیا دئے تھے مکو ہوا کی رفتار منتہر تھی' اُس لئے فاخدا کی کشتی کفارے سے کچھ تھورا آگے لہروں کے ہلکوروں سے کھیل رہی تھی ، راؤنا سمندر کی لہروں کو چھرتے ہوئے آگے بڑھی ، اُس کی بہنوں نے اُسے پری طاقت سے پکڑ کر روانا اور مشکل سے اُسے دوبئے سے بچا پائیں ، چھنے پکار سنکر کفارے کے کچھ لوگ اِکتھا ہوگئے ، مساری کہائی سنکر اُنہوں نے فاخدا کو واپس آنے کو کہا، مگر سماترا کا وہ سوداگر اُس واپسی کا مطلب خوب سمجھتا تھا ، لوگوں نے اُس کی ناؤ کا بھنچھا کیا مگر تب تک انوکول وایو پاکر وہا اُن اُس کی ناؤ کا بھنچھا کیا مگر تب تک انوکول وایو پاکر وہا اُن گرفت میں نے آسکا .

راؤنا اپنے بزدل اور نردئی پریسی کی جدائی میں زار زار روتی اور آهیں بهرتی رهی، ناخدا پهر کبهی تبلک با تو راپس نہیں لوٹا ، راؤنا کی بیتا پر عرصه هوا موت نے کالی چادر تھک دی ، مکر راؤنا کی جدائی کا گیت اب تک ملایا میں کیا جانا ہے ، اُس کی کچھ سطریں میں آپ کو سناتا هوں اور مجھے آمید ہے آپ اُوبیں کے نہیں ،

مہرے ناخدا ! مہرے پرانوں کے سہارے ! تم کہاں ہو !! آرنچے آرنچے تار کے درخت' مہرے قاصدوں کی حیثیت سے تمہاری آمد کا انتظار کر رہے میں . یہل درختیں سے توشکر آینا سر دھن رہے میں.

> میرے ناخداً ! میں تبهاری بہت سندر متعبوبة!

क्षुन्दारी चंगूडी की दीरक कती, परनियांग गुन्तांग की ज्योति, तुन्दारे किरह में तक्प रही हूँ.

मेरे नासुदा ! प्रन्हारे चानुवां की नपी पुत्ती कप कप, मेरे कानों में पढ़ रही है, प्रन्हारी नाब चपल तरंगों में तैरती हुई, दूर, बहुत दूर, हर मिनट दूर चली जा रही है !

मेरे नाजुदा ! मेरे प्राया ! मेरे जिन्दगी के जाधार ! मेरे माबीन ! मुन्हारी पुजारिन तुन्हारी पूजा में व्यस्त है.

प्रियतम ! सूरज की किरणों बेदम हो रही थीं, जब तुमने लंगर चठाया था, हवा का रख न्वाफिक न था, लेकिन अल्लाह के रहम की कोई हद नहीं, खुदा के फजल से हम जन्नत के बारा में मिलेंगे.

प्रियतम! रह रह कर दिन्छन से तूकानी तरेगें उठरही हैं, देखो होशियार रहना, बाई और का पाल न खोलना, तीन महीने और दस दिन में, मेरे प्रियतम तुम जरूर लीट आना.

मेरी जिन्दगी के आधार ! श्रीराम टापू पर पहुँच कर थोड़ा जाराम कर लेना, दुस मुक्ते छोड़ कर जा रहे हो, लेकिन मुक्ते लम्बी जुदाई न सहने देना, दो महीने बस— ज्यादा से ज्यादा सीन महीने में लीट जाना.

प्रियतम ! समन्दर की लहरें शान्त हैं, किनारे पर किश्ती क्यों नहीं लगाते, क्या मेरे बर से ढरते हो, क्या तुम ने अपने खंजर की धार, अभी हाल ही में नहीं तेज कराई थी ?

मेरे आयों के जाधार ! पुत्र तेलुक बात् जाये, जीर मेरे दिल की शान्ती चली गई, शैतान मेरी तद्यन को देखकर ख़ुश हो रहा है, मेरा दिल तो तुन्हारे पास है ! تبھاری آلکوٹھی کی ھیرک کئی' پرمٹانگ گفتانگ کی جھرتی' تبھارے برہ میں ترپ رہی ھوں ۔

مهوسه للخدا 1 تباریہ چاقواں کی ٹیی تاتی چھپ چھپ' میرسه کائوں میں پڑ رھی ہے، تباری ٹاؤ چپل ترلکوں میں تیرتی ھوئی' دور' بہت دور' ھر ملٹ دور چلی جارھی ہے 1

مؤرے للخدأ ! میرے پران ! میرے زندگی کے آدھار! میرے معینن ! تباری یجارن تباری پوچا میں ویست ہے .

پریتم ! سورج کی کرنیں ہے دم هو رهی تهیں' جب تم نے لفکر آٹھایا تھا' هوا کا رخ موانق نہ تھا' لیکن آللہ کے رحم کی کوئی حد نہیں' خدا کے نقل سے هم جنت کے باغ میں ملینکے .

پریتم! رہ کو دکھن سے طوفائی ترنگیں آٹھ رھی ھیں' دیکھو ھوشیار رھنا' ہائیں آور کا پال نے کھولنا' تین مہینے اور دس دن میں' میرے پریٹم تم ضرور لوٹ آنا

> میری زندگی کے آدھار ا شری رام تاپو پر پہرنی که نہرزا آرام کرلینا' تم مجھے چھرزکر جا رہے ہو' لیکن مجھے لمبی جدائی نبه سہنے دینا' دو مہھلے ہس— زیادہ سے زیادہ تین مہینے میں لوگ آنا ۔

پریتم! سمندر کی لہریں شانت هیں' کنارے پر کشتی کیرں نہیں لگاتے' کیا میرے ور سے ترتے ہو' کیا تم نے اپنے خلتجر کی دھار' ابھی حال هی میں نہیں تیز کرائی تھی آ

مهرے پرائرں کے آدھار! تم تیلک باتو آئے' ابرمیرے دال کی شانتی چلی گئی' شیطان مهری ترین کو دیکھکر خوش هو رہا ہے' مہرا دال تو تبھارے پلس ہے!

प्रियतम ! मेरी आर्थ पर सौर करो, धनमोल हीरें को अपने हाथ से न फेंको, बर्ना सब हुम्हारी हंसी खड़ाएंगे !

मेरे नाखुदा ! सुनहरे तारों से जुनी इस चटाई पर कीन लेटेगा ? इस रेशमी दुलाई को कीन बोहेगा ? इस चांदी की चौकी पर कीन बैठेगा ? चीर यह तकिया जब किसको सहारा देगा ?

मेरे नाखुदा ! शाली में सजे पकवान अब कौन खायेगा ? वर्फ सा ठंडा पानी अब कौन पियेगा ? तुम्हारी मायूस दिलंडवा को कौन ढारस देगा ? ओ मौत ! आ और मुमे तकलीकों से वरी कर.

नाखुदा की किरती आंखों से आंफल हो गई. राउना रोती और चिल्लाती रही. समुन्दर की लहरों में समा जाने को छटपटाती रही. अगर उसकी बहनें उसके पास न होतीं तो जुदाई का यह गीत समन्दर की सतह में खुमोरा पड़ा रहता. राउना और नाखुदा की यही कहानी है. मलाया का बच्चा बच्चा उसे जानता है. राउना पूरे के महीने तक नाखुदा की जुदाई में दीबानी रही. आखीर में उसके बाप ने जबरदस्ती उसके मंगेतर के साथ उसकी शादी कर दी. उस पर कैसी बीती यह जान सकना मुमकिन नहीं, क्योंकि उसका नाजुक बदन उसकी हह को ज्यादा दिनों तक अपने भीतर समेट कर न रख सका.

नाखुदा और राउना की कहानी में स्रोया स्रोया सा मैंने बुजुर्गवार से पूछा—''हजरत! यह जल कन्या के आँसू मिलेंगे कैसे १"

बुजुर्गवार ने हंसकर जवाब दिया—"बहुत आसान बात है. जल-कन्या जब किनारे की मीठी दूब खाने स्मुद्र से बाहर निकले तब उसे पकड़ लो और उसे किनारे से कस कर बांध दो. योड़ी देर में वह अपने साथी की जुदाई में तड़न तड़प कर रोने लगेगी. तुम उसके आसुओं को एक प्याले में इकड़ा कर लो. बस इसी से तुम लोंगों को अपने वस में कर सकते हो.

उसके बाद मस्जिद में सजाटा छा गया. फिर कोने में बैठा हुआ एक आदमी बोल पड़ा—"मैंने सुना है पेनांग शहर में जल-कन्या के आंसू विकते हैं.

कहानी सुनाने बाले ने कौरन जबाब दिया—"बह तो मैंने भी सुना है, मगर लोगों का ख्याल है कि वे नक्कली आंसू हैं. बग़ैर इन्तहान लिये हसे ख़रीदना बेकार है." پریٹم ! مفری، آرزو پر غور کرو' انسول هیرے کو آپنے هاتو سے نت پھینکو' ورثت سب تبھاری هاسی آوائینکے!

مهرے ناخدا ! سنہرے تاروں سے بنی اِس چٹائی پر کوں لیٹیگا ؟ اس ریشمی دلائی کو کوںارڑھ !! ؟ اس چائدی کی چوکی پر کوںبیٹھے گا ؟ اور یہ تکیہ اب کس کو سہارا دے گا ؟

> مهرے ناحداً ! تهالی مهں سجے پکواں اب کرن کھائیکا ؟ ہرف سا ٹھنڈا پانی اب کرن پٹے کا ؟ تمهاری مایوس دارہا کو کون ڈھارس دیکا ؟ او موت ! آ اور مجھے تکلیفوں سے بری کر ۔

ناحدا کی کشتی آنعوں سے اُوجول ھوگئی ، راؤنا روتی ر چاتی رھی ، سمندر کی نہروں میں سما جانے کو چھتیاتی ہی ، اگر اس کی بہنیں اس کے پاس نہ ھوتیں تو جدائی کا اگیت سمندر کی سطح میں خاموش پڑا رھتا ، راؤنا اور ناخدا ہے یہی کہانی ھے ، ملایا کا بچتہ بچتہ اسے جانتا ھے ، راؤنا پورے به مہینے تک ناخدا کی جدائی میں دیوائی رھی ، آخھر بی اس کے باپ نے زبردستی اس کے منکیتر کے ساتھ اس کی ادبی کردی ، اس پر کیسی بیتی یہ جان سکنا ممکن نہیں اُدی کردی ، اس پر کیسی بیتی یہ جان سکنا ممکن نہیں وئنہ اس کی روح کو زیادہ دنہی تک بیتر سمیت کر نہ رکھ سکا ،

ناخدا اور راؤنا کی کہانی میں کھویا کھویا سا میں نے بزرگوار ، پوچھا۔"حضرت! یہ جل کنیا کے آنسو ملیںگے کیسے ؟" برگوار نے هنسکر جواب دیا۔"بہت آسان بات ہے ، ل کنیا جب کدارے کی میٹھی دوب کھانے سمندر سے باعر لے تب اسے پکر لو اور اُسے کنارے سے کس کو باندھ دو ، تھوڑی و میں وہ اپنے ساتھی کی جدائی میں ترب ترب ترب کو روئے ہیں ہے ۔ تم اُس کے آنسوں کو ایک پیالے میں اکٹھا کولو ۔ بس سے سے تم لوگوں کو اپنے بس میں کرسکتے ھو ۔"

اس کے بعد مسجد میں ساتا چھا گیا ۔ پھر کوئے میں بھٹھا ایک آدمی ہول پڑا۔۔۔''میں نے سنا ہے پینانگ شہر میں ل کنیا کے آئسو بکتے ھیں ۔'' کہانی سنانے والے نے نوراً جواب دیا۔۔''وہ تو میں نے بھی

دہائی ساتے والے کے دورا جواب دیا ہے۔ وہ ہو میں کے بھی یا ہے؛ مکر لوگیں کا خیال ہے کہ وہے نتلی آنسو ھیں ۔ بنیور تحان لئے آسے خریدنا بیکار ہے ۔''

मैंने पूड़ा-"मगर इम्तहान कैसे लिया जाय ?"

कुर्गवार बोले—"वह भी बासान है. एक बराख की बोंच में उसे करा सा मल दीतिये. बगर जल-कन्या के बांसू सकते हैं तो बराख दीवानी होकर बाएके पीछे लग जायेगी. जहां जहां बाप जायेंगे, पीछे पीछे बराख होगी."

मैंने संजीवनी से पूजा-"क्या आपने इसकी आजमाइश भी की है ?"

"जी नहीं ! मुक्ते बशीकरण की जकरत नहीं. मैं ऐसी जाग नहीं सुलगाना चाहता जिसकी लपटें मेरे काबू में न हों. किसी को जल-कन्या के आंसू से अपनी मोहब्बत में दीवाना बना देना तो आसान है मगर उस प्यार के सौदे को निभा सकना बहुत मुश्किल है. बहर हाल अगर .खुद मैं यह आंसू ख़रीदूँ तो उन्हें पहले बत्तख़ पर जकर आजमाऊ."

रात घने अधेरे की चादर ओढ़ कर खामोश सो रही. दूर समन्दर की लहरों की अप अप सुनाई दे रही है और मैं बनीदी पस्कों से पायना के प्रेम और जल-कन्या के आंसुओं की बात सोच रहा हूँ.

× × ×

नया हिन्द के पाठकों के लिये मैंने राउना के बिरह गीत का तरजुमा ज्यों का त्यों दिया है. सिर्फ 'आधार' लफ्ज का मलाया में बुनियादी तरजुमा 'छाता' होता है. छाता मेंह भीर भूप से बचाता है. पुरुष चूं कि को की हिफाजत करता है इसलिये मलाया में खाबिन्द को 'छाता' कहकर पुकारा जाता है. इसी तरह 'तिकया' का मूल अर्थ 'पत्नी' है और चूं कि पत्नी पुरुष को सहारा देती है इसलिये मलाया जवान में 'तिकिया' कहकर पुकारा जाता है—लेखक.

"सच्चे सुधार का, सच्ची सभ्यता का लक्ष्म परिम्नह बढ़ाना नहीं है, बल्कि उसका विचार और इच्छा पूर्वक घटाना है, ज्यों ज्यों परिम्नह घटाइये त्वों त्यों सच्चा सुख और सच्चा संतोष बढ़ता है, सेवा शक्ति बढ़ती है."

میں نے پرچھا۔۔"مگر أمتحصان کیسے لیا جائے ؟"

ہزرگوئر ہولیسے"وہ بھی آسان ہے ، ایک ہطام کی چوئے میں آب فتراً سا مل درجیئے ، اگر جل کنیا کے آنسو سچے ھیں تر بھکے بدیوائی ہوکر آپ کے پیچے لگ جائیگی ، جہاں جہاں ، آپ جائیںگئ پیچے بطاح ہوگی ،"

میں نے سابھیدگی سے ہوچھا۔۔''نیا آپ نے اِس کی آزمایش بھی کی ھے 9''

"جی نہیں! محجے بھیمرن کی ضرورت نہیں. میں ایسی آگ نہیں سلکانا چاھنا جس کی لہتیں میرے تاہو میں نہ ھرس ، کسی کو جل کنیا کے آنسو سے اپنی محبت میں دیوانہ بنا دینا تو آسان ہے معر آس بدار کے سودے کو نبیا سمنا بہت مشکل ہے ، بہر حال آگر خود میں یہ آنسو خریدوں تو آنہیں پہلے بطعے پر ضرور آزماؤں ،"

رات گہنے اندھیرے کی چادر اُوڑھ کر خامرش سو رھی۔ دور سندر کی لہروں کی چھپ چھپ سنائی دے رھی ہے اور میں اُنیدی پلکوں سے راؤنا کے پریم اور جل کنیا کے آنسوؤں کی بات سوچ رھا ھوں ۔

نیا ہند کے پاٹھوں کے لئے میں نے راؤنا کے برہ گیت کا ترجمہ جھوں کا تیوں دیا ہے ، صرف 'آدھار' لفظ کا مالیا میں بنیادی ترجمہ 'چھاتا' ہوا ہے ، چھاتا مینه آور دھوپ سے بحچانا ہے ، پرش چونکہ آسٹری کی حفاظت کرتا ہے اس لئے مالیا میں خاوند کو 'چھاتا' کہمر پکارا جاتا ہے ، اسی طرح 'تمیه' کا مہل ارته ، 'پتنی' ہے آور چونکہ پتنی پرش کو سہارا دیتی ہے اس لئے مالیا زبان میں پتنی کو 'تمیه' کہمر پکارا جاتا ہے اس لئے مالیا زبان میں پتنی کو 'تمیه' کہمر پکارا جاتا ہے۔

''سچے سدھار کا' سچی سبھیتا کا اکشن پری کرہ بچھانا نہیں ہے' بلکہ اُس کا رچار اور اِچھا پوروک گھانا ہے۔ جھیں جھیں پری گرہ مقائمہ نھوں تھیں سچا سکھ اور سچھا سنترھی بچھتا ہے' سیوا شکتی بڑھتی ہے۔''

श्रीवृती हाजरह वेगम

इंग्रेज मिरानरियों ने जब अफ्रिक़ां के इबिरायों को इन्सानियत की वालीम देनी चाही तो उनकों ईसाई बनाया. लेकिन न तो उनको हबिरायों की जबान, न पुराने तमहन (सम्यता) न रस्म रिवाज से इतनी वाक्रियत थी कि वंह उनको मसीही मजहब का फलस्का सममा सकते और न ही उनको इसकी ज्यादा परवाह थी. मक्रसद तो यह था कि जल्द से जल्द ज्यादा से ज्यादा हबरी। अपने आप को ईसाई सममने लगें. जुनांचे जो अजब नतीजा नये और पुराने फलसके की उक्कर का निकला और जो रंग इस नई बारिनश ने पुरानी लकड़ी पर चढ़ाया, उसका अन्दाजा हम इन गीतों से कर सकते हैं, जो आज भी अमरीका के हबरी। अपनी सोज भरी आवाज में गाते हैं और जिनकों कि 'निप्रो स्मीज्यूएस्स' कहा जाता है.

कुछ ऐसा ही असर दिन्दुस्तान के पुराने बारिन्दों (आर्थेतर) के दिभारा पर जरूर हुआ होगा जब कि करांमरवा के मुसलमान होने की वजह से उन्होंने इस्लाम क्रवल किया. उनका मजहब उनके वह रस्मो रिवाज थे जो कि फितरत के क्रानुनों की मुनासबत से अख्तियार किये गये थे और इस मजहब का फलसफा सममने की उन्हें कभी जरूरत न पड़ी थी, क्योंकि वह तो नसलन बाद नसलन (पुरत दूर पुरत) से बनता और बदलता आया था और उनके रगों रेशों में पैवस्त था. लेकिन अब एक ग्रेर गुल्की क्रीम ने अपना फलसका बहदत और रसालत का उनके सामने रसा, जिसको उन्होंने इस इद तक क्रवूल तो जरूर किया कि मुसलमान कहलाने लगे. लेकिन हुआ वही कि पुराने पर नई क़लई चढ़ गई. यानी बजाय कृष्ण कन्हैया के बढ़े पीर साहब, राम लक्षमन की जगह इसन इसेन, सीता की जगह बीबी फातमा हो गई. इस दौर की एक मलक हमें चल्लामियां के गीतों से मिलती है.

पूर्वीय हिन्दुस्तान में जब कोई खुशी की तक्तरीब होती है तो रतजगा होता है यानी औरतें रात भर जागती हैं, ढोलक बजाती और गाती हैं और गुलगुले पकाती है. सुबह होते होते गुलगुले लेकर मस्जिद जाती हैं और ताक भरती हैं. मुसलमानों में दस्तूर है कि ऐसे मौक्रों पर पहले सात गीत झड़ा मियां के गाये जाते हैं, फिर सात सहरे लक्के या माई के और फिर तक्षरीब के मुनासिब जो गीत हो. मसलन सहाग के या स्वयंबर के गीत.

شريمتي حاجرة بيكم

انکریز مشنریوں نے جب انریقہ کے جبشیوں کو اِنسانیت ی تعلیم دینی چاھی تو اُن کو عیسائی بنایا . لیکن نه تو اُن و حیسائی بنایا . لیکن نه تو اُن و حیشیوں کی زبان' نه پرائے تمدن (سبهیتا) نه رسم رواج سے تغیی واقفیت تھی که وہ اُنکو مسیحی مذہب کا فلسفہ سبجها کی اُنکو اُس کی زیادہ پرواہ تھی . مقصد تو یه ها که جلد سے جلد زیادہ سے زیادہ حبشی اپنے آپ کو عیسائی سبجہنے لکیں . چائنچہ جو عجب نتیجہ نئے اور پرائے قلسنے کی تکر کا نکلا اور جو رنگ اِس نئی وارنص نے پرائی لکڑی و چڑھایا' اُس کا اندازہ ھم اِن گیتوں سے کرسکتے ھیں' جو آج و چڑھایا' اُس کا اندازہ ھم اِن گیتوں سے کرسکتے ھیں' جو آج می امریکہ کے حبشی اپنی سوز بھری آواز میں گاتے ھیں اور میں کو کہ 'نیکرو اسپریچوایلس' کہا جاتا ہے .

کچھ ایسا ھی اثر ھندستان کے پرائے باشندوں (آریکر) کے ہماغ پر ضرور ھوا ھوٹا جب که نومانووا کے مسلمان ھوئے کی بچھ سے آنھوں نے اِسلام قبول کیا ۔ اُن کا مذھب اُن کے وہ سم و رواج تھے جو که فطرت کے قانونوں کی مناسبت سے اختیار نئے گئے تھے اور اس مذھب کا فلسند سمجھنے کی آنھیں کیھی نمرورت نه پڑی تھی ' کھونکھ ولا تو فسلا بعد فسلا (پشت در پشت) سے بنتا اور بدلتا آیا تھا اور اُن کے رگوں ریشوں میں ہوست نھا ، لیکن اُب ایک غیر ملکی قوم نے اُپنا فلسند وحدت اور رسالت کا اُن کے سامنے رکھا' جس کو اُنھوں نے اِس که پرائے پر نئی قلعی چڑھ گئی' یعنی بجائے کرشن کلھیا کے کہ پرائے پر نئی قلعی چڑھ گئی' یعنی بجائے کرشن کلھیا کے بچے پیر صاحب' رام لچھوں کی جگھ حسن حسین' سیتا کی جگھ ہی بی فاتمت ھوگئیں ، اِس دور کی ایک جھلک ھمیں جگھ ہی بی فاتمت ھوگئیں ، اِس دور کی ایک جھلک ھمیں اللہ میاں کے گیتوں سے ملتی ھے ۔

پررویہ ھندستان میں جب کرئی خوشی کی تقریب ھوتی ھے تو رتبطا ھوتا ھے' یعنی عبرتیں رأت بھر جاگئی ھیں' تھولک بجاتی اور گائے ھیں اور گلکلے پکاتی ھیں، صبح ھوتے ھوتے گلکلے لیکر مسجد جاتی ھیں اور طاق بھرتی ھیں، مسلمانوں میں دستور ہے کہ ایسے موقعوں پر پہلے سات گیت اللہ میاں کے گئے جاتے ھیں' پھر سات سہرے اترکے یا بھائی کے اور پھر تقریب کے مناسب جوگیت ھو مثلاً سہاک کے یا سوئمبر کے گیت،

नी प्रकामियां के गीतों में से कुछ दिये जाते हैं—
जहा नियां खूब बनी तोरी शान.
सब महिनन में एको महीना अहा,
बह भी महीना रमजान.
सब किताबन में एको किताब बहा,
बह भी किताब कुरान.
सब हातन में एको हत बहा,
बह भी हते आसमान.
सब बीबिन में एको बीबी बहा,
बह भी बीबी फातमा.
सब पीरन में एको पीर बहे पीर.

अर्थात्—अष्ठा मियां तेरी शान खूब बनी है. सब महीनों में एक ही महीना अच्छा होता है, वह रमजान का महीना होता है और सब किताबों में बढ़कर किताब कुरान है, इसी तरह सारी छतों से ज्यादा उम्दा छत आसमान की है. बीबियों में एक ही बीबी काबिले तारीफ़ है, वह बीबी फ़ातमा है. और पीरों में खगर कोई है तो वह बड़े पीर हैं यानी ख्वाजा मुईन उदीन अजमेरी.

.खूब बनी रे खला तोरी महजद,
'खूब बनी रे नवी तोरा रोजा—नवी तोरा रोजा.
कादे बनी रे खला तोरी महजद,
कादे बना रे नवी तोरा रोजा—नवी तोरा रोजा.
साने बनी रे खला तोरी महजद,
साने बना रे नवी तोरा रोजा—नवी तोरा रोजा.
कादे बहारूँ खला तोरी महजद,
कादे बहारूँ नवी तोरा रोजा—नवी तोरा रोजा.
हाथों बहारूँ जला तोरी महजद,
पलकों बहारूँ नवी तोरा रोजा—नवी तोरा रोजा.
कादं बढ़ाऊँ चला तोरा रोजा—नवी तोरा रोजा.
कादं बढ़ाऊँ चला तोरा रोजा—नवी तोरा रोजा.
लहदू बढ़ाऊँ चला तोरा रोजा—नवी तोरा रोजा.
लहदू बढ़ाऊँ चला तोरा रोजा—नवी तोरा रोजा.

अर्थात्—अहा मियां तेरी मस्जिद .खूब बनी है और पे नबी तेरा रोजा भी खूब बना है. अहा तेरी मस्जिद किस बीज की बनी है और ऐ नबी तेरा रोजा किस चीज का बना है ? सोने की तो मस्जिद अहा तेरी है और सोने का ही होजा नबी का है. अहा मैं तेरी मस्जिद में काहे से सुधराई दूँ और नबी का रोजा में काहे से माइ १ हाथों से अहा मैं तेरी मस्जिद माइ और पलकों से नबी तेरा राजा माइ. और फिर बहाड क्यामें तेरी मस्जिद और रोजे में ? लहहू نیچے اللہ مغلی کے گھٹوں میں سے کچھ دنے جاتے ہیں۔۔
اللہ میاں خوب بنی توری شان .
حب مہنن میں ایکو مہینہ اللہ ،
حب کتابی میں ایکو کتاب اللہ ،
وق بھی کتاب قرآن .
حب چھٹوں میں ایکو چھت اللہ ،
وق بھی چہت آسان .
حب بیبن میں ایکو ہی ہی اللہ ،
وق بھی جہ آسان .
حب بیبن میں ایکو ہی ہی ناتمہ .
حب بیرن میں ایکو ہی ہی باللہ ،

ارثهات - الله میاں تیزی شان خوب بنی ہے. سب مہینوں میں ایک هی مہینه اچها هوتا هے وہ رمضان کا مہینه هوتا هے اور سب کتابوں میں بڑھکر کتاب قرآن ہے اسی طرح ساری چھتوں سے زیادہ عدد چھت آسان کی ہے . بیبیوں میں ایک هی بی بی قابل تعریف هے وہ بیبی فاتمه هے اور پہروں میں اگر کوئی هے تو وہ بڑے پیر هیں یعنی خواجه میں الدین اجمیری ،

خوب بلی رہے الله توری مهجین خوب بلی رہے الله توری مهجین خوب بلی رہے الله توری مهجین کافے بنی رہے الله توری مهجین کافے بنی رہے الله توری مهجین سوئے بنی رہے الله توری مهجین سوئے بنی رہے الله توری مهجین کافے بهاروں الله توری مهجین کافے بهاروں الله توری مهجین خوا روجا۔ هاتهوں بهاروں الله توری مهجین کافے بهاروں نبی تورا روجا۔ هاتهوں بهاروں نبی تورا روجا۔ کافے چڑھاؤں الله توری مهجین کورا روجا۔ کافے چڑھاؤں الله توری مهجین کورا روجا۔ کافے چڑھاؤں الله توری مهجین کورا روجا۔ کافی چڑھاؤں الله توری مهجین کورا روجا۔ کافی خروہاؤں الله توری مهجین کورا روجا۔ کافی خروہاؤں الله توری مهجین کورا روجا۔ کافی خروہاؤں الله توری مهجین کورا روجا۔ کافی کورا روجا۔ کافی کورا روجا۔ کافی کورہاؤں الله توری مهجین کورا روجا۔ کافی کورہاؤں الله توری مهجین کورا روجا۔ کافی کورہاؤں الله توری مهجین کافی کورہاؤں الله توری مهجین کافی کورہاؤں الله توری مهجین کافی کورہاؤں کینی کورا روجا۔ کافی کورہاؤں کینی کورہ

پیڑا چڑھاؤں ٹھی تورا روجا۔۔نبی تورا روجا ،
ارتیات۔۔۔اللہ میاں تیری مسجد خوب بنی ہے اور اے
نبی تیرا روضہ بھی خوب بنا ہے ، اللہ تیری مسجد کس چیز
کی بنی ہے اور اے نبی تیرا روضہ کس چیز کا بنا ہے ؟ سونے
کی تو مسجد اللہ تیری ہے اور سونے کا ھی روضہ نبی کا ہے ،
اللہ میں تیری مسجد میں کامے سے ستجرائی دوں
اور نبی کا روضہ میں کامے سے جہازوں ؟ ھاتیوں سے اللہ
میں تیری مسجد جہازوں اور پلکوں سے نبی تیرا روضہ جہازوں وربیہ وربیہ وربیہ مسجد جہازوں اور پلکوں سے نبی تیرا روضہ میں ؟ لدو

و میں الله تعربی مستجد میں چوهاؤں آور پیروا نبی تیزے روقه ر چوهاؤں .

> الله ميان کےکلسوں نے برست لور . کھہر سے آتری صندل کاوریا ' كيهر سے أترا يهول-هو..... كهر سه أترأ جاجم بحجوناك بيته کلے نبی رسول-عو.... الله میاں کے کلسوں یے برست نور " مکے سے أترى صندل كترريا ' سديني سے أتوا يهول-سعو..... . كعبي س أترأ جاجم بحجهونا يداله كائم نبى رسول-حور.... کن نے جوٹھاری صندل کٹورہا ' کن لے جوٹھاراً پھول-عور..... کن نے جوٹھارا جاجم بچھوٹا ا روته گئے نبی رسول۔۔۔۔۔۔ مكهى جوثهارى صندل كتوريا بهرترا جوثهارا يهول ---هو..... چيونتي جوټهاري جاجم بحهونا ' روته گئے نبی رسول-سدو.... الله مهال کے کلسون نے برست نور .

ارتھات—اللہمیاں کے کلسوں پر نور بوستا ہے ، کدھر سے اور صندل کا کتورہ اور کدھر سے اترے پھول آ اور کدھر سے جازم بچھونا آترا جس پر کہ نہی رسول ابیٹھے آ مکہ سے تو صندل کا کتورہ آترا اور مدینہ سے پھول آترے اور کمبہ سے جاجم بچھونا آترا جس پر نہی رسول ابیٹھے ، صندل کا کتورہ کس نے جوئیا لیا اور پھول اور جازم بچھونا کس نے جوئیا کیا کہ نہی رسول ہوئی گئے آ مکھوں نے صندل کے کتورے کو اور بھونرے نے پھول کو چوٹیا کیا اور چھ نتی جازم بچھونے پر چھڑھ گئی' اس لئے نہی سول روٹیا گیا اور چھ نتی جازم بچھونے پر چھڑھ گئی' اس لئے نہی سول روٹیا گئے ،

چلے آئیو ہڑے پیر مہجد میں ،
سرنے کی تھالی میں بھرجوں پررسا '
کھٹیو کھٹیو ہڑے پیر—مہجد میں ،
چاندی کا گڑوا گنگا جل پائی '
پیو پیو ہڑے پیر—مہجد میں ،
چلے آئیو ہڑے پیر—مہجد میں ،

ارتھات۔ بڑے پور (خواجه معین الدین اجمهری) تم مهجد میں چلے آنا میں نے سونے کی تھالی میں اچھا اچھا کھانا مجو یا ہے اور کہا لینا ۔ چاندی کے برتن میں میں نے گنٹا جل بھرا ہے، اے بڑے پھر تم آکر پی جانا ۔

तो में बाह्य वेरी महिजब में अव्हार्क और वेदा नवी वेरे रोचे पर बढ़ाक.

शका नियां के कताओं ये बरसत नर. केंद्रर से क्यरी सन्दल कट्रिया. केहर से इतरा फुल-हो..... केहर से खतरा जाजम विद्योगा, बैठ गये मबी रसूल-हो..... भहा मियां के कलसों पे बरसन नूर. मक्के से उत्तरी सन्दल कटुरिया, मदीने से उतरा फूल -हो..... कावे से उतरा जाजम विद्यीना, बैठ गये नबी रसूल—हो..... किन ने जुठारी सन्दल कट्टरिया किन ने जुठारा फूल-हो..... किन ने जठारा जाजम विछीना कठ गये नवी रसूल हो..... मक्खी जुठारी सन्दल कटुरिया, भौरा जुठारा फूल-हो..... च्यँटी जुठारा जाजम बिछीना. रूठ गये नवी रसूल-हो..... बड़ा मियां के कलसों पै बरसत नूर.

अर्थात्—अक्षा मियां के कलसों पर नूर बरसता है.
किथर से उतरा संदल का कटोरा और किथर से उतरे फूल ?
और किथर से जाजम बिछाना उतरा जिस पर कि नवी
रसूल बेठे ? मक्के से तो सन्दल का कटोरा उतरा और मदीने
से फूल उतरे और काबे से जाजम बिछीना उतरा जिस पर
नवी रसूल बेठे. सन्दल का कटोरा किसने जूठा किया और
फूल और जाजम बिछीना किसने जूठा किया की रसूल
कठ गये ? मिक्खयों ने सन्दल के कटोरे को और भौरे ने
फूल को जूठा किया और च्यूँडी जाजम बिछीने पर चढ़ गई,
इसलिये नवी रसूल कठ गये.

चले आइयो बढ़े पीर—महजद में. सोने की थाली में भोजन परोसा, साइयो साइयो बढ़े पीर—महजद में. चांदी का गडुआ गंगा जल पानी, पियो पियो बढ़े पीर—महजद में. चले आइये बढ़े पीर—महजद में.

धर्थात्—बढ़े पीर (क्वाजा मुईन्तुद्दीन धजमेरी) तुम मस्जिद में चले धाना. मैंने सोने की थाली में अच्छा अच्छा खाना सजाया है, तुम मस्जिद में खा लेना. चांदी के बर्तन में मैंने गंगा जल भरा है, ऐ बढ़े पीर तुम आकर पी जाना.



नवजीवन प्रकारान मन्दिर, बहमदाबाद की खपी हुई बै किरावें हमारे सामने हैं:—

- 1. सर्वोदय, लेखक गान्धी जी, सके 244, मूल्य का जिपया.
- 2. Truth Is God (महात्मा गान्धी के लेखों का संघह) सके. 168, मूल्य वो रुपया.
- 8. For Workers Against Untouchability, (महात्मा गान्धी के लेखों का संप्रह) सके 84. मूस्य भाठ भाना.
- 4. How To Serve The Cow (महात्मा गान्धी के जेकों का संमह), सके 109, मृत्य सवा रुपया.
- Nature Cure (महात्मा गान्धी के लेखों का संघह), सके 68, मूल्य बारह जाना.
- 6. A Discipline For Nonviolence, क्रेसक रिवर्ड थी. प्रेग, सके 32, मूल्य दस आना.

पहली किताब 'सर्वोदय' दो विभागों में बंटी हुई है. पहले विभाग के सात भाग हैं, और दूसरे के पांच. पहले विभाग में समय समय पर लिसी हुई सर्वोदय के बारे में गान्धी जी की रायें और दूसरे विभाग में भी राज गोपाला- बारी, आवार्य विनोबा, भी जे. सी. कुमारप्पा, भी मशरू- बाला और भी धीरेन्द मजूमदार के सर्वोदय के सम्बन्ध में विचार हैं.

स्वतंत्र भारत में कैसा समाज बनेगा, आज यह विचार सब के सामने हैं. तरह तरह के बाद का लोग जिक करते हैं. इस आज तरक्की के मंजिल के चौराहे पर खड़े हैं. ऐसे साजुक बक्त में यह बेहद जरूरी है कि हम महात्मा गान्धी के सताये हुए रास्ते पर संजीदगी से ग़ौर करें. इस लिहाज से हुए सममदार आदमी को यह किताब पदनी चाहिये.

वृत्तरी किताव 'Truth is God' समय समय पर गान्धी की के किसे हुए नेसों या विचारों का संग्रह है. राम जान पर गान्धी जी कि कितनी भद्धा थी यह सबको माजूम है. सेकिन च्या राम नाम के साथ कैसे अपने को एक करना, स्थाने पीड़ो गान्धी जी की 75 बरसों की साधना थी. इंश्वर نو جیرن پرکلشن مندر أحداباد کی چینی هوئی چه کتابین هارے سامنے هیں:--

- 1. سرورد، ليكوك الديمي جي صفح 244 مهل المائي رويد.
- المهاتما كاندهى كے ليكهوں كا Truth is God .2 (مهاتما كاندهى كے ليكهوں كا سكرة) صحصلے 168 مول دو رويه،
- For Workers Against .3 (مہاندا کاندھی کے لیکھیں کا سلکرہ) Untouchability منحے 34 مول آئھ آنتہ .
- 4. How To Serve The Cow (مهاتما كاندهى) في المحاون كا سنكرة) صفحه 109 مول سوا رويه .
- (مہاتما گاندھی کے لیکھوں کا Nature Cure .5 سنکرہ) صفحتے 68 مول بارہ آئے .
- A Discipline For Nonviolence .6 اليكهك رجرة بي . گريگ صفحه 32 مول دس أنه .

پہلی کتاب 'سرووںے' دو وبھاگیں میں بنتی ہوئی ہے ۔
پہلے وبھاگ کے سات بھاگ ،ھیں' اور دوسرے کے ہاتے ، پہلے
وبھاگ میں سمائے سمائے پر لکھی ہوئی سرودے کے بارے میں
کاندھی جی کی رائیں اور دوسرے وبھاگ میں شری راج گوبالا
چاری' اچاریہ وٹوپا' شری ہے، سی، کمار پھا' شری مشرووالا
اور شوی دھھریلدر مجومدار کے سرودے کے سمبندھ میں وچار
ھیں ،

سوتنتر بھارت میں کیسا سماج بنے کا آنج یہ وچار سب کے سامنے ہے۔ طرح کے واد کا اوک ذکر کرتے ھیں، ھم آج ترقی کے منزل کے چوراہے پر کھڑے ھیں، ایسے نازک وقت میں یہ یہ ضوروی ہے کہ هم مہاتما کاندھی کے بتائے ھوئے راستے پر سنجیدگی سے غور کریں، اِس لحاظ سے هر سمجھدار آدمی کو یہ کتاب یوهنی جائے۔

دوسری کتاب 'Truth Is God' سئے سئے پر گاندھی جی کے لکھے ھوئے لیکھوں یا وچاروں کا سنکرہ ہے ۔ رأم نام پر گاندھی کا لکھی جی کی کتنی شردھا تھی یہ سب کو معلوم ہے ۔ لیکن اس رأم نام کے ساتھ کیسے اپنے کو ایک کرنا اس کے پیچے گاندھی جی کی 75 برسوںکی سادھنا تھی ۔ ایشور

一点点,不是**要是数据**的点点

तक पहुँचने के जो अलग अलग धर्मों के पुत हैं, बस पर गान्धी जी की बड़ी चड़ार राज थी. वे विवेक को किसी भी भले या बुरे काम की तराजू मानते थे. गीता पर उनकी अगाध असा थी, लेकिन वे कहते हैं—

"I exercise my judgment about every scripture including the Geeta. I cannot lead a scriptural text supersede my reason."

गांधी जी के राम नाम में विवेक था, माधना थी चौर इन सब के जलावा वैद्यामिक विश्वास था. जाज की मोह में कंसी हुई दुनिया के लिये इस किताब की नसीहतें द्वा का काम देंगी.

तीसरी किताब 'For Workers Against untouchability' अपने नाम के मुताबिक हरिजन सेवकों के लिये रास्ता दिखाने वाली अनमोल पुस्तक है.

चौथी किताब 'How To Serve The Cow' इस विवाद प्रस्त प्रश्न पर गांधी जी के समय समय पर लिखे हुए लेखों के लिये इस प्रश्न पर ज्ञान का एक जखीरा है, हर एक गो-सेवक को इस किताब को जरूर पढ़ना चाहिये.

पांचर्या किताब 'Nature Cure' में भी गांधी जी के लेखों और विचारों का संग्रह है. क़ुद्रती इलाज को गांधी जी इस मुल्क के रहने वाले ग्ररीब लोगों के लिये इलाज का रामबाण तरीक़ा सममते थे. क़ुद्रत के अन्दर ऐसी सिफ़तें हैं जो इनसान को ,खुद बखुद अच्छा करती रहती हैं. अगर क़ुद्रत के उन गुणों की जानकारी हासिल कर ली जाये तो रास्ता साफ हो जाता है. इलाज के पण्डिमी तरीक़े बेहद खरचीले हैं और कहां तक फ़ाइदेमन्द हैं, इसमें भी बहुत लोगों को शुन्हा है. इस किताब से पाठकों को इस सवाल पर सही रोशनी मिलेगी.

छटवीं किताब आहेंसा के सम्बन्ध में श्री रिचर्ड बी. प्रेग की लिखी हुई पुरानी किताब का तीसरा नया संस्करण है. अहिंसा का पिछड़मी वैज्ञानिक उसूलों के आधार पर निराकरण किया गया है. पुस्तक श्रत्येक समम्बद्धार पाठक को जरूर पदनी चाहिये.

18-8-755

-बी. न. पांडे

تک پہونچنے کے جو اگ الک دھرمیں کے پل ھیں' اُس پر بھی کاندھی جی کی بڑی اُدار رائے تھی، وے ویونک کو کسی بھی بیلے یا برے کام کی ٹرازر مانتے تھے، گیٹا پر اُن کی اگادہ شردھا تھی' لیکن وے کہتے ھیں۔۔

"I exercise my judgment about every scripture including the Geeta. I cannot lead a scriptural text supersede my reason."

کالدھی جی کے رام نام میں ویویک تھا' سادھنا تھی اور اِن سب کے علوہ ویکیانک وشواس تھا ۔ آج کی موہ میں پھنسی ھوئی دنیا کے لئے اِس کتاب کی نصیحتیں دوا کا کام دینگی ۔

چہتھی کتاب 'How To Serve The Cow اِس چہتھی کتاب 'How To Serve The بوائد ہوتے ہوئے ہوئے ہوئی کے سے سمے پر لکھے ہوئے لیکھوں کے لئے اِس پرشن پر گیان کا ایک زخیرہ ہے ، ہر ایک لو سهوک کو اِس کتاب کو ضرور پڑھنا چاہئے ،

پالنچہیں کتاب 'Nature Cure' میں بھی گاندھی جی کے لیکھوں اور وچاروں کا سلکرہ ہے ۔ قدرتی عالج کو گاندھی جی اِس ملک کے رہنے والے غریب لوگوں کے لیے عالج کا رامیاں طریقت سمجھتے تھے ، قدرت کے آلدر آیسی صفتیں ہیں جو اِنسان کو خود بخود اُچھا کرتی رہتی ہیں ، اگر قدرت کے اُن گئوں کی جائے تو راستہ صاف ہوجاتا اُن گئوں کی جائے تو راستہ صاف ہوجاتا ہے ، عامل کرلی جائے تو راستہ صاف ہوجاتا ہے ، عالم کی میں بھی بہت لوگوں کو شبہ ہے ، اِس ایر کماں تک ایریامند ہیں اور کہاں تک ایریامند ہیں اس میں بھی بہت لوگوں کو شبہ ہے ، اِس ایریامند ہیں اور کہاں ہی بہت لوگوں کو شبہ ہے ، اِس

چہٹویں کتاب اهنسا کے سمبندھ میں شرق رچرۃ ہی ، گریگ کی لکھی ہوئی پرانی کتاب کا تیسرا نیا سنسکرں ہے ، هنسا کا پشچمی ریکھانک اُصولوں کے آدھار پر نراکرن کیا گیا ہے ، پستک پرتلیک سنجھدار پاٹیک کو ضرور پرتھنی چاھئے ،

-- ری ، نا ، پانتیم

18, 8, 756



विनोबा की और जमीन कि मिलकियत

श्री बिनोबा भावे गाँधी जी के बन इने गिने अनुयायियों में से हैं जो अपनी पूरी सूक्त और पूरी शक्ति के साथ गाँधी जी के सिद्धान्तों को अमल में जाने और बन्हें आगे बढ़ाने में अपना सब कुछ होमें हुए है. हमारे दिख में बनका बढ़ा आदर है. गाँधी जी के इस तरह के अकों का हम उन्हें सरताज मानते हैं.

विनोबा जी ने देश को कई नए शब्द दिये हैं, जैसे भूसिदान, कूपदान, जीवनदान सम्पतिदान, अमदान और सबसे हाल में प्रामदान. पिछली 14 जुलाई को उड़ीसा के सुन्धी धामिनी गाँव में प्रामदान का मतलब और उससे लाभ गाँव के लोगों को सममाते हुए विनोबा जी ने एक बड़ा सुन्दर भाषणा दिया. उनके इस भाषणा का सार लगभग उनहीं के शब्दों में हम नीचे देते हैं:—

"प्रामदान से चार बढ़े लाभ हैं. पहला लाभ आर्थिक लाभ है. जब कोई आदमी किसी जमीन को अपनी जमीन नहीं सममेगा, और गाँव की सारी जमीन एक इकाई सममी जायगी, जो सबकी एक बराबर मिलकीयत होगी, तो उससे जमीन की पैदाबार यानी गाँव की दौलत बढ़ेगी. सब गाँव बाले सिलकर तब कर सकेंगे कि कब क्या बाया जाय और इसमें से कितना बाहर बेचा जाय. तब सब मिलकर खेती के तसिकों में सुधार कर सकेंगे. जरूरत पढ़ने पर सरकार से या किसी बाहर बाले से मदद ले सकना बासान हो जायगा. गाँव का कोई बादमी किसी का कर्जदार न रहेगा. सबको सुख और सन्तोष मिलेगा. यह एक आर्थिक इन्क्रलाब दोवा.

"दूसरा बड़ा लाभ यह होगा कि जब सारे गाँव के लोग एक मिले जुले कुनवे की तरह रहने लगेंगे तो आपस में प्रेम बड़ेगा. सारा गाँव एक स्वर्ग की तरह दिखाई देने लगेगा. सब सब के दुख सुख में शरीक रहेंगे, इससे सब का सुख बड़ेगा, यह दूसरा लाभ प्रामदान का कलवरी लाभ है.

ونوبا جي اور زمين کي ملکيت

شرمی ونوبا بہاوے کاندھی جی کے اُن اِنے گئے انوبائیوں میں سے ھیں جو اُپنی پوری سوجہ اور پوری شکتی کے ساتھ کاندھی جی کے سدھائٹوں کو عمل میں لانے اور اُنھیں آگے بڑھانے میں اُپنا سب کچھ ھوچے ھوئے ھیں ، ھمارے دل میں اُن کا بڑا اُدر ہے ، کاندھی جی کے اِس طرح کے بھکتوں کا ھم اُنھیں سرتاے مائٹے ھیں ،

ونوہاجی فے دیش کو کئی نئے شدد دیئے ھیں' جیسے بھومی دان' کوپ دان' جھون دان' سیتی دان' شرم دان اور سب سے حال میں گرام دان ، پچہای 14 جولائی کو اربست کے سندھی دھامئی گاؤں میں گرام دان کا مطلب اور اُس سے لابھ گاؤں کے لوگوں کو سمجھاتے ھوٹے وٹوبا جی نے ایک ہوا سندر بیاشن دیا ، اُن کے اِس بھاشن کا سار لگ بھگ اُنھیں کے شدوں میں ھم نیجے دیتے ھیں۔۔۔

الاکوام دان سے چار بڑے لابھ ھیں ، پہلا لابھ آرتھک لابھ ھے ، جب کوئی آدمی کسی زمین کو اپنی زمین نہیں سنجھے کا اور گاؤں کی سارہی زمین ایک اکائی سنجھی جائیگی جو سب کی ایک برابر مانکیت ھوگی تو اس سے زمین کی پیداوار یعلی گؤں کی دوانت بڑھے گی ، سب کاؤں والے ملکو طے کر سکیس کے کہ کہ کب کیا بہیا جائے اور اس میں سے کتنا بلھر بینچا جائے نب سب ملکر کھیتی کے طریقوں میں سدھار کر سکیں گے ، فرررت پڑنے پر سرکار سے یا کسی باھر والے سے مدد لے سکنا آسان ھو جائیگا ، گؤں کا کوئی آدمی کس کا قرضدار نہ آسان ھو جائیگا ، گؤں کا کوئی آدمی کس کا قرضدار نہ آسان ھو جائیگا ، گؤں کا رستہوش ملے کا ، یہ ایک آرتھک انتظاب ھیگا ۔

"دوسرا ہوا ایھ یہ ہوگا کہ جب سارے گؤں کے لوگ ایک الے جلے کنیے کی طرح رہنے لکیں گے تو آپس میس پریم برھیگا ، سارا گؤں ایک سورگ کی طرح دکھائی دینے لکے گا ، سب سب کے دکھ سکھ میں شریک رہینگی ۔ اِس سے سب کا سکھ برھے گا ، یہ دوسرا لایھ گوام دان کا کلچوی لایھ ھے :

कारास्त 'कॅक

AND WILLIAM OF THE PARTY

116)

اكسع 55'

'शीवत साथ यह होगा कि सोगों का आचार केंचा जायगा, धापस के मागड़े, बोरियां और दुरामनियां मिट जायाँगी. इस अपने घरों के अन्दर बोरी नहीं करते. जब सारा गाँव एक घर वन जायगा तो गाँव में भी कोई चोरी तहीं करेगा. हमारा आचार इसलिये नीचे गिर गया है कि अपने अलग अलग घर और अलग अलग मिलकियतें बनाकर इस छोटे छोटे स्वाधीं में फ'स गए हैं. आज एक डाकटर भी, जिसका वर्म यह है कि किसी भी रोगी के रोग को सनकर उसके पास दौड़कर पहुंचे, इलाज करने से पहले रोगी से अपना बदुवा खोलने के लिये कहता है. इसी से हमारे सबके दिल तंग हो गए हैं क्योंकि हमने अपने छोटे होटे घर और छोटे छोटे कुनवे बना रखे हैं. दुनिया के सब कगड़ों की यही जड़ है. जब जमीन और धन दौलत पर से लोगों की अलग अलग मिलकियत जाती रहेगी तो हमारा ब्याचार जरूरी तौर पर ऊँचा हो जायगा. यही बामदान का सबसे बड़ा लाभ है. जिस दिन यह हो जायगा उस दिन दुनिया खुशी से नाचने लगेगी. आज हम दुखी इस-लिये हैं क्योंकि हमारे अलग अलग स्वार्थ टकराते रहते हैं. इसी से दुनियां में हिंसा बढ़ रही है. अगर गाँव की जमीन और गाँव की सब सम्पत्ति सारे गाँव की जमीन और सारे गाँव की सम्पत्ति हो जावे तो दुनिया का आचार सचसुच जपर उठ जावेगा, यह लाभ प्रामदान का नैतिक लाभ है.

"चौथा लाभ प्रामदान का ऋध्यात्मिक यानी रूहानी लाभ है. जब इम 'मेरा घर', 'मेरी जमीन' और 'मेरा पैसा' इस तरह की बातें करते हैं तो हम में इन चीजों से मोह पैदा होता है. पर जब आदमी इस 'मैं' और 'मेरे' से शाजाद हो जायगा और समम लेगा कि सब चीजें सबके फायदे और सबके इस्तेमाल के लिये हैं, कोई मेरी अलग चीज नहीं है तो आदमी निजात के नजदीक पहुँच जावेगा. माज इस 'मैं' भीर 'मेरे' ने ही हमें दुनिया में बाँध रखा है. यही हमारी मुक्ति में सबसे बड़ी रुकावट है. हमें यह मानना चाहिये कि सारा गाँव हमारा घर है और जिस घर में इम रह रहे हैं, वह भी सबका है. मुक्ति पाने का पुराना ढंग जिसमें आदमी सब चीज छोड़ कर जंगल में जा बैठता था वह भी रालत ढंग है. हमें यह नहीं सोचना चाहिये कि न कोई मेरा और न मैं किसी का, इसके खिलाफ हमें यह सोचना चाहिये कि सब मेरे और मैं सबका. मुक्ति का यही रास्ता है. कोई दूसरा रास्ता नहीं. इसलिये हुमें यही समभना चाहिये कि हमारे पास जो कुछ है यहां तक कि हमारा अपना आपा भी वह सारे गाँव की मिलकियत है और सारा गाँव इमारा है. प्रामदान का यह एक बहुत बड़ा लाभ है,"

"تيسرا لايه يه مولا كه لوكين كا أجار ارفيها جاليكا أيس جعرے چریاں اور دشمنیاں ست جائینگی، هم اینے گهروں کے در چروی ٹیس کرتے . جب سارا گؤں ایک گھر بی جائیگا گاوں میں بھی کوئی چوری تہیں کریکا ۔ هماراً آچار اِس لئے جے کر کیا ہے کہ اپنے الگ الگ گھر اور الگ الگ ملمیتیں ا کر هم چهوٹے چهوٹے سوارتهوں میں پہنس گئے هیں ۔ آج ک ڈاکٹر بھی، جس کا دھرم یہ ہے کا کسی بھی روگی کے روگ سن کر اُس کے پاس دور کر پہنچے ' علیہ کرئے سے پہلے روگی ، اپنا بقوا کھولنے کے لئے کہتا ھے، اِسی سے ممارے سب کے دل تنگ گئے ہوں کیوناء هم لے اپنے چهوتے چهوتے گھر اور چهوتے چهوتے کلنے بنا ہ ھیں ، دنیا کے سب جھکڑوں کی یہی جڑ فے ، جب زمین ر دهن دولت پر سے لوگوں کی الگ الگ ملکیت جاتی کی تو همار! آچار ضروری طور پر اونتجا هو جائے گا . یہی گرام ن كاسب سے برا لاہ هے. جس دن يه هو جائے كا أس دن دنيا رشی سے ناچاہ لکے گی ۔ آج هم دکبی اس نثہ هیں کیونکه ارے الگ الگ سوارتھ ٹکراتے رہتے میں . اسی سے دنیا میں سا بوھ رھی ہے . اگر کاؤں کی زمین اور کاؤں کی سب سمیتی رے گاؤں کی زمین اور سارے گاؤں کی سبیتی ہو جاوے تو يا كا اچار سبج ميج أرير أنه جارے كا . يه لايه كرام دان كا تک لاہ ہے ۔

. "چوتها الابه گرام دأن كا آدهيانمك يعنى روحاني البه هـ . ب هم الميوا گهرا الميري زمين اور الميرا پيسه اس طرح کي الله كرتے هيں تو هم ميں ان چيزوں سے موة پيدا هوتا هے. جب آدمی اِس میں، اور مهرے سے آزاد مو جائے کا اور سج لے کا که سب چیزیں سب کے فائیدے اور سب کے استعمال ، لئے هیں' کوئی میری الگ چیز نہیں ہے تو آدمی نجات ، نزدیک پہنچ جائے کا . آج اِس نمیں' اور نمورے' نے هی ہیں دنیا میں باندھ رکھا تھے . یہی هماری مکتی میں سب ، برى ركاوت هے . هميں يه مائنا چاهئے كه سارا كاؤں همارا ر هے اور جس کھر میں هم رة رهے هیں ود بھی سب کا هے ، نئی پانے کا پرانا تھنگ جس میں أدسی سب چيز چھرز جنكل نمين جا بيتهتا تها وه بهي غلط تعنك هے . همين يه ہیں سوچنا چاھئے که نه کوئی مہرا اور نه میں کسی کا ، اِس ، خلف همين يه سوچنا چاهاء كه سب ميرے أور مين سب . منتى كا يهى راسته هے . كوئى دوسرا راسته فهيں . اِس لئے میں یہی سمجھنا چاھئے کہ ھمارے پاس جو کچھ ہے یہاں ك كد همارا أينا آيا بهي وة سارے كاؤں كى ملكيت في اور ارا کاور همارا هے . گرام دان کا يه ايک بهت يوا لايه هے ."

बुके बाद है एक बार इस एक बिद्वान मुसलमान गाई से बीद वर्म के बारे में बात चीत कर रहे थे. बात करते करते जब ईरबर और ईश्वर पूजा पर महात्मा बुद्ध के उपदेशों का फिक आया तो हमारे मुसलमान मित्र चिल्ला पर "यह भी कोई मजहब हो सकता है !" चन्द घंटे और सानित से बात करने के बाद चन्होंने महसूस किया कि बीद धर्म और इस्लाम में बहुत बड़ी समानता है और बोनों एक ही सिक्के के दो उस हैं, बल्कि एक ही इक़ीक़त के वो रूप, इस नहीं कह सकते कोई सममतार कम्युनिस्ट विनावा जी के इन विचारों को पढ़कर क्या सोचता होगा. एक बड़े दरजे तक जो शकल विनोबा जी ने प्रामदान की कींची है वही शकल कम्युनिषम की है. करक भी है. किसी एक दरस्त के कोई दो पसे एक रंग के नहीं होते. फरफ़ देखने वाले के लिये सब जगह फरक काफी मिलते हैं. एकता देखने वाले के लिये एकता की कमी नहीं है. हमारा यह विश्वास दिन दिन मजबूत होता जा रहा है कि जिसे आज अच्छे से अच्छे मानी में अध्यात्मवाद या अहिंसावाद या गाँधीवाद कहा जाता है, उसके और जिसे कन्युनिषम कहा जाता है उसके, इन दोनों के सच्चे मेल में ही इस देश और द्रनिया का भला है.

16-7-55

—सुन्दरलाल

श्री बी. जी. खेर भौर सरकार

एक दूसरी लेख में इस ''वम्बई का एक दुख भरा नजारा" सरनाम से एक लेख दे चुके हैं. उसमें हमने बन्बई के अन्दर कुछ रारीकों की बस्तियों की हालत और भी बी. जी. खेर और उनके साथियों की नेक सेवाओं की चरचा की है. उस सम्बन्ध में एक खास सवाल सरकार के कर्तव्य और उसके सहयोग का पैदा होता है. हम उस लेख में लिख चुके हैं कि बाला साहब को सरकार से बहुत अधिक आशाएं नहीं हैं. वह जहां तक हो सके गैर सरकारी यानी जनता की मदद से अपने पैरों पर खड़ा होना चाहते हैं. इसके कई साफ कारन हैं. इम सरकार की कठिनाई को भी थोड़ा बहुत समम सकते हैं. अंग्रेजी राज की जगह हिन्दस्तानी राज इमने क़ायम कर लिया. पर नीचे से ऊपर तक हमारा सारा हकूमत का ढांचा लगभग वही है जो डांगरेजों के समय में था. अगर कुछ बातों में आजकल का हांचा पहले से अच्छा है तो कई में पहले से भी बदतर है. आर्थिक मामलों में वह लोग, जिनके हाथों में देश के शासन की बाग डोर है, देश से बेकारी, बेरोजगारी, मुकमरी और शिक्संगेपन को मिटाना अपना फुर्ज जरूर सममते हैं पर

هيون ياد ف أيك بار هم أيك ردوان مسلمان بهائي عه بردہ وہم کے بارے میں بات چیت کر رہے تھے ، بات کرتے کرتے جب ایمبر اور ایشر بوجا پر مہاتما بدھ کے ایدیشیں کا ذکر أيل تو العالية مسلمان مار يه يوه الايه يهي كرشي مذهب هو سمتا ش الله على كليت أور شانتي سه بات كرنے كے بعد أنهوں نے مصسوس کیا که بودھ دھرم اور اسلام میں بہت ہوی سبائنا ھے اور دونوں ایک ھی سکے کے دو رہے ھیں، بلکھ ایک عی حقیقت کے دو روپ ، هم نہیں کہت سکتے کوئی سنجهدار کیونسٹ ونوباجی کے اِن وچاروں کو پڑھکو کیا سوچتا ہوگا. ایک ہوے درجے تک جو شکل ونوباجی نے گوام دان کی كينتي هـ وهي شكل كميونزم كي هـ . فرق يهي هـ . كسي أيك درخت کے کوئی دو پالے ایک رنگ کے نہیں ہوتے، فرق دیکھانے وألم كے لئے سب جكه فرق كاني ملتم هيں ، أيكنا ديكها والے كے لئے ایکتا کی کمی ٹیپن کے ۔ همارا یہ وشواس دین دین مقبوط هرتا چا رها کے که جسے آج اچھے سے اچھے معنی میں ادھیاتہواد یا اهنساواد یا گاندهی واد کیا جاتا ہے؛ اس کے اور جسے کمیونوم کہا جاتا ہے اس کے ان دونوں کے سچے میل میں ھی اس دیش اور دائیا کا بھلا ہے۔

--ستدر لال

16 .7 .55

هری بی. جی. کهیر اور سرکار

ایک دوسرے لیکھ میں هم "ببیٹی کا ایک دکھ بھرا نظارة " سرنام سے ایک لیکھ دے چکے هیں . اُس میں هم نے ہمبئی کے اندر کچے غریبوں کی بستیوں کی حالت اور شری ہی. جی، کھیر اور اُن کے ساتھیوں کی نیک سیواؤں کی چرچا کی ھے ۔ اس سمبندھ میں ایک خاص سوال سرکار کے کرتویہ ارر اُس کے سپهوک کا دیدا هوتا ہے ۔ هم اُس لیکو میں لکو چکے میں که بالا صاحب کو سرکار سے بہت ادھک آشانیں نہیں ھیں . وہ جہاں تک ھوسکے غیر سرکاری یعنی جنتا کی مدد سے اپنے پھروں یو کھڑا ھوٹا چاھتے ھیں ، اِس کے کئی ماف کارن هیں، هم سرکار کی کتهنائی کو بھی تهورا بہت، سنجھ سکتے هیں، انکریزی راج کی جکه هندستانی راج هم نے قائم کولیا ، پر نیسی سے اوپر تک همارا سارا حکومت کا تھانچہ لگ بھگ رهی ہے جر انکریزوں کے سمے میں تھا ۔ اگر کچھ باتوں میں آجکل کا تمانست يبل سه اچها هه تو کئي مين پيل سه يعي بدار هي آرتیک معاملیں میں وہ لوگ جن کے ھاتھیں میں دیش کے شاس کی باک تور ه ، دیش سے یکاری پردرزگاری بیک مری ارر بیک منگیرین کو مثال آینا نرض ضرور سنجیت هیں پر

भगस्त 'ठै5

(118)

125 cms

e that is the

वतना बसरी कुर्ब वहीं समझते जियना कुछ देश की मजतर्थ

वेदाबार और मजसरे दौक्त को बढ़ाना, बाहे वह पैदाबार

किर क्यों जाकर भी विके भीर वह दीवत किसी के हाथों

में भी जमा हो जाने. इस बार्थिक संगठन में घरेल धंदों के

लिये कोई अगद नहीं है, खिवाय उस दरजे तक कि जिस

हरजे तक इसारे शासक अपनी राजकाजी जरूरतों के लिये या कला की निगाह से उन्हें जिन्दा रखना जरूरी समर्के.

हनकी राय में घरेखू धंदे जगर मिलों की पैदाबार से

मुकाबले की टक्कर नहीं ले सकते, और जाहिर है कि वह

नहीं से सकते, तो वह मिट जायें. लाखों और करोड़ों

झाइसियों की बेकारी और वेरोजगारी उन्हें इतना अधिक

नहीं सताती. इसीलिये सात बरस की आजादी के बाद भी सत्क के अन्दर बेकारों की तादाद और रारीबों की सरीबी

बढती जा रही है, यह आर्थिक ज्यवस्था न कम्युनिस्ट

व्यवस्था है और न गांची बादी व्यवस्था है. यह है पूँजीवादी

बीर साम्राजवादी व्यवस्था. जाहिर है कि हमारे माजकल

के शासकों के सामने इस मामले में आदर्श न रूस है न

धीन और न गांधी जी का आदर्श देश. उनके सामने आदर्श

हैं अमरीका और इंगलैंड. इसीलिये इस बरीर इस बात की फ़िक किये कि इसारे सब जुलाहों और बुनकरों को काम मिले,

इस फिक में रहते हैं कि अपनी मिलों से कम से कम मजदरों

की मदद से अधिक से अधिक कपड़ा बुनकर ईरान, इराक्ष,

मलाया और दूसरे पिछड़े हुए देशों में नेप कर उन देशों से

अधिक धन कमा सकें. इसीलिये हम अपनी योजनाओं में देश के

रहे सहे बुन्करों को भी आजाद कारीगर न रहने देकर धीरे

धीरे पहले छोटे कारखाने के मालिकों के और फिर बढ़े

कारखाने के मालिकों के रोजीना पाने वाले मजदूर बना देना चाहते हैं. खास कर कपड़े के धंदे के बारे में सरकारी

योजनाचों का यह पहलू बिलकुल साफ है.

تنا فرورى نرفى تهيى سنجهاء جتناكل ديش كي مجموعي يهبأوار ور "مجموعی دولت کو بوهانا چاه وه پیداولر پهر کهیں خاکر ہے بکے اور وہ دولت کسی کے هاتھوں میں بھی جمع هوجائے ۔ س آرتهک سنکٹیں میں گھریلو دھندوں کے لئے کوئی جکه ميں هے؛ سوائے اُس درجے تک که جس درجے تک همارے شاسک اپنی راج کلجی ضرورتوں کے لئے یا کا کی نگاہ سے اُنہیں ائدة ركهنا ضروري سنجيين . أن كي رائد مين گوريلو دهند اگر ملوں کی پیداوار سے مقابلہ کی ٹکر نہیں لے سکتے اور ظاهر هے که ولا تبین لے سکتے تو ولا سے جائیں . لاکبوں أور کروروں أدمهر كي يكرى اور يروز كرى أنهين اتنا ادهك نهين ستاتي. إسى لئے سات برس کی آزادی کے بعد بھی ملک کے الندر بےکاروں کی تعداد اور غریبوں کی غریبی بوهتی جارهی هے . یه آرتیک ويرستها نه كميونسك ويرستها هے اور نه كاندهى وادى ويوستها هـ یه هے پولجی وادبی اور سامراج وادبی ویوستها، ظاهر هے که همارے آجال کے شاستوں کے ساملے اس معاملے میں آدرهی نا روس ھ نہ چین اور نہ کالدھی جی کا آدرش دیھی . اُن کے سامنے آدرش هين أمريك أور إنكلينت ، إسى لله هم بغير إس بات كي نعر کئے که همارے سب جولھوں اور بنعروں کو کام ملے ' اِس فعو میں رہتے میں کہ اپنی ملوں سے کم سے کم مزدوروں کی مدد سے ادھک سے ادھک کھڑا بنکر ایران عراق طیا اور دوسرے پچہڑے موئے دیشوں میں بینے کر اُن دیشوں سے اُدھک سے أُدعك دهن كما سكين . أِسي لَيْه هم أَيْني يوجناون مين ديش کے رہے سہے بلکروں کو بھی آزاد کاریکر نہ رہنے دے کر دھیرے دھیرے پہلے چھوٹے کارخائوں کے سالکوں کے اور پھر بڑے کارخالوں کے مالیوں کے روزیاء یانے والے مودور بنا دیلا چاھتے ھیں . خاص کر کہرے کے دھندے کے بارے میں سرکاری یرجناؤں کا یہ پہلو بالکل صاف ھے۔

پندت جواهر الل نہرو بہت سچے' ماف اور ایماندار آدمی پندت جواهر الل نہرو بہت سچے' ماف اور ایماندار آدمی هیں . دنیا جانتی هے که انتر راشتریه معاملوں میں آنہوں نے دیش کو کتنا آونچا برعایا هے . پر اِن معاملوں میں آن کے وچار بالکل ماف هیں . اگر اخباروں کی رپررٹیں سچ هیں تو ایکبار مدراس کی کسی تقریر میں آنہوں نے کہا تیا که دیش کی پیداوار اور دولت کو برتعانے کے لئے گھریاو دستکاریوں اور دستکاروں کی توبائی ایک ضروری چهز هے کہا جاتا هے که المآباد میں کانکریسی کام کرنے والوں کے سامنے بولتے هوئے آنہوں نے اِس سے بھی ادھک ماف شہروں میں توب توب توب یہ کہا تھا که میں چاھوں تو یےکاری آنے مثا سکتا هوں۔ سب ملیں بند کردوں تو یےکاری آنے بند هوجائیگی' پر لوگوں کے جھون کا استر آبیک میں نبھی چاھا۔

पंडित जवाहरलाल नेहरू बहुत सच्चे, साफ और हैमानदार आदमी हैं. दुनिया जानती है कि अन्तरराष्ट्रीय मामलों में उन्होंने देश को कितना ऊंचा बढ़ाया है. पर इन मामलों में उनके विचार बिलकुल साफ हैं. अगर अख़बारों की रिपोर्ट सच हैं तो एक बार महास की किसी तक़रीर में उन्होंने कहा था कि देश की पैदावार और दौलत को बढ़ाने के लिये घरेलू दस्तकारियों और दस्तकारों की क़ुरवानी एक जरूरी चीज है. कहा जाता है कि इलाहाबाद में कांमेसी काम करने बालों के सामने बोलते हुए उन्होंने इस से भी मिक साफ शब्दों में क़रीब क़रीब यह कहा था कि मैं वाहूं तो बेकारी आज मिटा सकता हूँ. सब मिलें बन्द कर दूँ तो बेकारी अपने आप बन्द हो जायगी, पर लोगों के जीवन का स्तर एक दम नीचे बला जावेगा जो मैं नहीं चाहता.

اكست 55°

'इसीलिये इमारे आजकल के शासक जिस तरह भी हो सके आवादी को घटाने की भी फिक में रहते हैं. इसीलिये यथ्यों की पैदायश को रोकने का साइंसी सामान बाहर के देशों से फ़्री जनरल लाइसेंस में आने की इजाजत है और सरकारी अस्पतालों में पैदायश को रोकने के तरीकों की वालीम दी जाती है.

हम इन सारे बिचारों को रालत और जनता के लिये . ब्रावाकुन मानते हैं. चीन ने अपनी तरह से एक मिले जुते रास्ते पर चलकर अपने सारे घरेलू घंदों को जिन्दा रख लिया और दो साल के अन्दर अन्दर इस तरह का इन्तजाम कर लिया कि एक चीनी मर्द या औरत भी बेकार म रह सके. हमारे यहां सात साल के बाद भी बेकारी बढ़ती जा रही है. उन्होंने दो साल के अन्दर देश में एक भी भिक्रमंगा रहने नहीं दिया, हमारे यहां भीक मांगने वालों की तादाद हर शहर में बढ़ रही है. अगर हम इस मामले में गांधी जी के बताप हुए रास्ते पर चले होते तो हमें चीन या किसी दूसरे देश की तरफ देखने की भी जकरत नहीं थी, पर हमें न उस रास्ते पर विश्वास था और न है.

श्री बी. जी. खेर अपने सत्तर हजार परिश्रमालयों के जिरिये देश को जिस तरफ ले जाना चाहते हैं वह ठीक गांधी जी का बताया हुआ रास्ता है. हमें विश्वास है कि वही रास्ता इस देश के लिये बेकारी और भिकमंगेपन को मिटाने और जनता की खुशहाली का रास्ता है. अगर देश की जनता और जनता के सेवक उसे सचमुच हाथ में ले लें और उस पर लग जाएं तो हम अपनी सरकार की सारी कमी को पूरा कर सकेंगे. पर काम आसान नहीं है. लाखों के इस में खप जाने की जरूरत है. देश के लिये दूसरा रास्ता भी नहीं है. आज या कल हमें इस रास्ते पर चलना ही होगा.

अब अगर हम बम्बई सरकार की तरफ निगाह डालें तो इन सब कठिनाइयों के होते हुए भी हमें कुछ अधिक उम्मीव बन सकती है. बम्बई के चीक मिनिस्टर श्री मुरार जी भाई देसाई देश के अच्छे से अच्छे सच्चे और ईमानदार शासकों में से हैं. वह गांधी जी के भी काफी भक्त हैं. श्री बी. जी. खेर में और उनमें बहुत बढ़ा प्रेम है. पंडित जबाहरलाल नेहरू के दिल में भी श्री बी. जी. खेर का काफी आदर है. इसलिये हम आशा करते हैं कि भारत सरकार और बम्बई सरकार दोनों अपनी हदों के अन्दर श्री बी. जी. खेर को उनकी नेक काशिशों में जहां तक बन पढ़ेगा जी खोल कर मदद देंगी. اِسی للتے شارے آنجکل کے شاسک جس طرح بھی ھرسکے آبادی کو گھٹانے کی بھی۔ نکر میں رھتے ھیں ۔ اِسی للے بچوں کی پیدائش کو روکنے کا سائنسی سامان باعر کے دیشوں سے نری جنول السلس میں آنے کی اِجازت هے اُور سرکاری البتانوں میں پیدائش کو روکنے کے طریقوں کی تعلیم دی جاتی ہے ،

هم ابن سارے وچاروں کو غلط اور جنتا کے اٹے برباد کن مانتے هیں ۔ چین نے اپنی طرح سے ایک ملے جلے راستے پر چاکر اپنے سارے گھریلو دھندوں کو زندہ رکھ لیا اور دو سال کے اندر اندر اِس طرح کا انتظام کرلیا که ایک چینی مرد یا عورت بھی بیکار قہ رکا سکے . همارے یہاں سات سال کے بعد بھی بیکاری بڑھتی جارهی ہے ۔ اُنھوں نے در سال کے اندر دیش میں ایک بھی بھک مانکنے ایک بھی بھک مانکنے مانکنے مانکنے مانکنے میں کاندھی جی کے بتائے ہوئے راستے پر چلے ہوتے تو همیں مارو چین یا کسی دوسرے دیش کی طرف دیکھانے کی بھی خرررت نبھی تھی ۔ ور شواس تھا اور خین یا کسی دوسرے دیش کی طرف دیکھانے کی بھی ضرورت نبھی تھی ۔ پر همیس نہ اُس راستے پر چشواس تھا اور

شرق ہی . جی . کھیر اپنے ستر ھزار پریشرسالیوں کے ذریعہ دیش کو جس طرف لے جانا چاھتے ھیں وہ تھیک گاندھی جی کا بتایا ھوا راستہ ہے . ھمیں وشواس ہے که وھی راسته اس دیھی کے لئے بیکاری اور بھکسنگیری کو متانے اور جنتا کی خرشتعالی کا راستہ ہے . اگر دیش کی جنتا اور جنتا کے سیوک آسے سے میے ھاتھ میں لے لیں اور اُس پر لگ جائیں تو ھم اپنی سرکار کی ساری کمی کو پورا کرسکیںگے . پر کام آسان نہیں اپنی سرکار کی ساری کمی کو پورا کرسکیںگے . پر کام آسان نہیں لئے دوسرا راستہ بھی نہیں ہے ۔ آج یا کل ھممیں اِس راستے ہر چلنا ھی ھوگا .

آب اگر هم بمبئی سرکار کی طرف نگاه تألیں تو اِن سب کنیائیوں کے هوتے هوئے بھی همیں کچے اُدهک اُمید بن سکتی فی بمبئی کے چیف منستر شری مرار جیبائی دیسائی دیش کے اپنے سے اچھے سچے اور ایبائدار شاسکوں میں سے میں ، وقائده میں اللہ میں بہت بڑا پریم هے ، پندت جواهر الل فہرد کے دال اور اُن میں بہت بڑا پریم هے ، پندت جواهر الل فہرد کے دال میں بھی شری بی ، جی ، کھیر کا کافی آدر هے ، اِس لئے هم اُنا کرتے هیں که بھارت سرکار اور بمبئی سرکار دوتوں اپنی مدرس کے اندر شری بی ، جی ، کھیر کو اُن کی نیک مدرس کے اندر شری بی ، جی ، کھیر کو اُن کی نیک کششرس میں جہاں تک بین پڑے کا جی کھول کو اُن کی نیک

28-6-'55

-सन्दरलान

--ستدر لال

28.6.55

भारत के बच्चे और बी० सी० जी० का टीका

इस से पहले के एक सम्पादकी नोट में हम बी० सी० जी० के टीके के बारे में अपने विचार प्रकट कर चुके हैं.

इसके बाद भारत की स्वास्थ्य बजीर राजकुमारी अमृत कीर का एक बयान निकला कि उन्हें इस में कोई शक नहीं कि बी॰ सी॰ जी॰ देश और देश के बच्चों के लिये एक बहुत ही लाभदायक चीज है और सरकार अपने बी॰ सी॰ जी॰ के प्रचार को जारी रखेगी. श्री राजा गोपालाचारी के विरोध की चरचा करते हुए राजकुमारी अमृत कौर ने कहा कि राजा जी इस मामले को नहीं सममते और लामखाइ दखल देते हैं. राजकुमारी अमृत कौर ने उन बच्चों और उनके माता पिता पर दया प्रकट की जो श्री राजा गोपालाचारी के बहकाए में आकर बी॰ सी॰ जी॰ जैसी बरकत के खिलक आवाज उठा रहे हैं.

इसके बाद न्यूयार्क, अमरीका, से यह जबर अख़बारों में अपी है कि यू० एन० ओ० के दफ्तर से मालूम हुआ कि सन् 1955 के आखीर तक भारत में है करोड़ साठ लाख बच्चों के तपेदिक के आजमायशी टीके लगाए जायंगे और दो करोड़ पन्द्रह लाख बच्चों के बी० सी० जी० के टीके लगाए जायंगे.

यह आजमायशी टीका आज से चालीस साल पहले हमारे भी लग चुका है. टीका लगाने के दो तीन दिन बाद अगर वह जगह थोड़ी बहुत फफद आने तो सममा जाता है कि जिसके टीका लगा है, उसमें तपेदिक का असर नहीं है, और अगर न फफद आने तो सममा जाता है कि जिस्म के अन्दर कुछ न कुछ तपेदिक का असर है. जिस अमेज डाक्टर ने हमारे यह आजमायशी टीका लगाया था उसने हम से ,खुद कहा था कि इस टीके का कोई असर कोई बास मानी नहीं रखता और जो नतीजे निकाले जाते हैं वह दाने के साथ सही नतीजे नहीं कहे जा सकते.

यू० एन० खो० की कमेटी ने सिफारिश की है कि इन सब टीकों खौर उनके साथ के ज़रूरी सामान को खमराका से भारत पहुँचाने के लिये खौर इसके लिये कि भारत सरकार सन् 1956 और सन् 1957 में बी० सी० जी० के टीकों का प्रोप्राम जारी रख सके यू० एन० खो० की तरफ से खठासी हजार डालर की भारत सरकार को मदद दी जाने. इस मदद के मिलने पर भारत सरकार को खाशा है कि वह सन् 19:7 के खंत तक भारत के बारह करोड़ साठ लाख बच्चों के खाजमायशी टीके लगा चुकेगी और उनमें से जिन कच्चों के खनदर तपेदिक के खसर का शक होगा उन सब के बी० सी० जी० के टीके लगा चुकेगी.

بھارت کے بچے اور بی. سی. جی. کاٹیکھ

اس سے پہلے کے ایک سمیادی ٹوٹ میں هم ہی.سی.جی۔ کے ٹیکے کے بارے میں اپنے وجار پرکٹ کر چکے هیں .

آس کے بعد بھارت کی سواستھ وزیر راج کماری امرت کور ایک بیان نکلا که انهیں اِس میں کوئی شک نبیں که ایک بیان نکلا که انهیں اِس میں کوئی شک نبیں که ہے ، سی ، جی ، می قبل اور دیش کے بچوں کے لئے ایک مت ھی لابھ دانک چیز ہے اور سرکار اپنے ہی ، سی ، جی ، پرچار کو جاری رکھےگی ، شری راجا گربالا چاری کے ورودہ رجوا کرتے ہوئے راج کماری امرت کور نے کہا که راجا جی اِس املے کو نبیس سمجھتے اور خواہ مخواہ دخل دیتے ھیں، راج کماری رت کور نے آن بچوں اور اُن کے ماتا پتا پر دیا پرکٹ کی شری راجا گربالا چاری کے بہکائے میں آکر ہی ، سی ، جی ، سی ، جی ، سی ، جی ،

آس کے بعد نیویارک 'امریکہ' سے یہ خبر اخباروں میں چھپی ہے یو ۔ این ، اُو ، کے دفتر سے معلوم ہوا کہ سن 1955 کے یو تک بھارت میں چھ کروز سالہ لانم بنجوں کے تب دق کے اُنشی تیکے لگائے جائینگے اور دو کروز پندرہ لانم بنجوں کے . سی ، جی ، کے آبکے لگائے جائینگے .

یه آزمانشی آیکه آج سے چالیس سال پہلے همارے بھی بچکا ہے ۔ آیکه گائے کے دو تھی دی بعد اگر وہ جکه بہت پھپپد آرے تو سمجھا جاتا ہے که جس کے آیکه فے اُس میں تبدق کا اثر نہیں ہے اور اگر ته پھپپد آرے سمجھا جاتا ہے که جسم کے آئدر کتھ نه کتھ تبدق کا اثر جس انگریز داکار نے همارے یه آزمائشی آیکه لگایا تھا آس هم سے خود کیا تھا کہ اِس آیکے کا کوئی اثر کوئی خاص م نہیں رکھتا اور جو نتیجے نکالے جاتے هیں وہ دعویل کے صحیح نہیں رکھتا اور جو نتیجے نکالے جاتے هیں وہ دعویل کے صحیح نتیجے نہیں کہے جاسکتے۔

یو . آین . آو . کی کمیٹی نے سفارش کی ہے که اِن سب

اور آن کے ساتھ کے ضروری سامان کو امریکہ سے بھارت پہونچانے

ئے اور اسکے لئے که بھارت سرکار سن 19.66 اور سن 1957

بی . سی . جی . کے تیکوں کا پروکرام جاری رکھ سکے

ین . آو . کی طرف سے آتھاسی ہوار آوار کی بھارت سرکار

د دی جارے . اِس مدد کے ملنے پر بھارت سرکار کو آشا

د دی جارے . اِس مدد کے ملنے پر بھارت سرکار کو آشا

رہ سن 1957 کے انت تک بھارت کے بارہ کرور ساتھ لائھ

کے آزمائشی ٹیکے لگا چکے گی اور اُن میں سے جن بچوں

بر تبدی کے اثر کا شک ہوا اُن سب کے ہی، سی، جی،

یا گا چکے گی .

सन् 1956 के जाज़ीर तक हिन्द सरकार इस काम के जिये क्रम बीच लाक डालर कार्य करेगी, जीर दस लाख खाज़र कन् 1956 में जीर दस लाख सन् 1957 में ख़र्य करेगी.

कहा जाता है कि यू० एन० छो० की कमेटी अब तक इस काम के लिये साढ़े गियारह लाख डालर दे चुकी है.

भारत सरकार का इरावा है कि वह इस काम को खूब बड़े पैमाने पर बलावे और देश की तन्दुकरती को ठीक रखने कें लिये इसे एक मुस्तक़िल प्रोग्राम बना ले ताकि बी० सी० बी० के टीके भारत के बच्चों को हमेशा लगते रहें.

इस काम में लगे हुए डाक्टरों और दूसरे लोगों को तनसाहों के अलावा बड़े बड़े भत्ते दिये जावेंगे और यू० एन० आ० की तरफ से इनाम भी मिलेंगे.

इस बीच की राजा गोपालाचारी के समर्थन में अक्षारों के अन्दर बच्चों के माता पिता और सरपरस्तों के काफी ख़त भी निकल चुके हैं, जिन में लिखा है कि उनके अपने बच्चों को बीठ सी॰ जीठ के टीके से क्या क्या ख़ुक्कसान पहुँचे. कुछ ख़त ऐसे डाक्टरों के भी हैं जिन्होंने डाक्टरी और साइन्सी तरीक़े से बहस करके यह साबित करने की कोशिश की है कि बीठ सीठ जीठ का टीका सचमुच किसना बुरा और हानिकर है. ऐसे डाक्टरों के भी ख़न हैं जिन्होंने लिखा है कि बीठ सीठ जीठ के टीके के कारन वह . ख़ुद अपने प्यारे बच्चों की जान से हाथ घो बैठे. जाहिर है इस समय के भारत में इस तरह के मां बाप जो ऐसे मामलों में अपनी आवाज अख़्बारों तक पहुँचा सकें एक लाख में एक भी नहीं हो सकते. गांव गांव और गली गली चूम कर कोई इस तरह के ख़त जमा करना चाहे तो हो सकता है कि लाखों ही ऐसे ख़त जमा हो सकें.

पर सरकार के भी अपने डाक्टर हैं और अपने बढ़े बढ़े माहिर और विशेषक हैं! सरकार इस बात की तह की कात भी करती रहती है और आंकड़े जमा करती रहती है कि असलियत में किसी बच्चे को बीठ सीठ जीठ से कोई तुक्रसान पहुँचा या नहीं और कितनों को फायदा पहुँचा और पहुँच रहा है, सरकार के पता लगाने वाले सरकार को बताते हैं कि किसी बच्चे को बीठ सीठ जीठ से न तुक्रसान पहुँचा है और न पहुँच सकता है, अगर बीठ सीठ जीठ के टीके के बाद किसी की आँख फूट गई तो उसका कारन आँख की कोई और वीमारी थी जिसका बीठ सीठ जीठ से कोई सम्बन्ध नहीं और अगर कोई बच्चा मर गया जो असने के भी बहुत से कारन हो सकते हैं!

इस तरह की तहक्रीकातों और इस तरह के आंकड़ों के बादे में हमें समञ्जूष दुनिया की सरकारों पर दया आती है.

سن 1958 کے آخیر تک ھال سرکار اِس کام کے لئے کل پیس لائے ڈالو خربے کریکی' آور دس لائے ڈالو سن 1956 میں اور حس لائے سن 1957 میں خربے کریکی

کہا جاتا ہے کہ یو . اِین ، اُو ، کی کمیٹی اب تک اِس کار کے لئے سارہ گھار ، لائم ڈائر دے چکی ہے .

بہارت سرکار کا اِرادہ ہے کہ وہ اِس کام کو خوب بڑے پیدائے پر چلا ویم اور دیکس کی تلدرسٹی کو ٹھیک رکھنے کے لئے اِسے ایک مستقل پروگرام بنا لے تاکہ بی سی جی کے ٹیکے بیارت کے بچوں کو ہمیشہ لکتے رہیں ۔

اِس کام میں لکے هوئے ڈاکٹروں اور دوسرے لوگوں کو تنظواهوں کے علوہ ہونے ہوئے دئے جائےتکے اور یو ، اِین ، اُو ، کی طرف سے اِتمام بھی سلینکے ،

اس بیپے شرق راجا گوبالا چاری کے سرتین میں اخبارس کے اندر بچوں کے ماتا پنا اور سرپرستیں کے کاتی خط بھی نکل چکے ھیں' جن میں انہا گیا اور سرپرستیں کے کاتی خط بھی نکل جی میں کہا گیا ہے کہ اُن کے اپنے بچوں کو بی میں اُنگروں کے بھی ھیں جنہوں نے داکاری اور سائنسی طریقے سے بحث کرکے یہ گابت کرنے کی کوشش کی ہے کہ بی می می گاب اور ھائیکر ہے ، ایسے داکٹروں کے بھی خط ھیں جنہوں نے لکھا ہے کہ بی می جی ، کے ٹیکے کے کارن ھیں جنہوں نے لکھا ہے کہ بی می ہی ہی خط واسے میں اپنی آواز اخباروں تک پہونچا سکیں ایک والی میں ایک بھی نہیں ھوسکتے ، گائن گائن اور گئی گئی کھوم کر میں ایک بھی خط جمع ہوسکتی ہی ایسے خط جمع ھوسکیں ،

پر سرکار کے بھی اپنے ڈاکٹر ھیں اور اپنے بڑے بڑے ماھر اور وشیشکھ ھیں! سرکار اِس بات گی تحقیقات بھی کرتی رھٹی ہے اور آنکڑے جمع کرتی رھٹی ہے کہ اصلیت میں کسی بچے کو بی، سی، جی، سے کوئی نقصان پہنچا یا نہیں اور کنٹوں کو نائیدہ پہنچا اور پہنچ رھا ہے، سرکار کے پته لگانے والے سرکار کر بتا تے ھیں کہ کسی بچے کو بی، سی، جی، سے ثم تقصان پہنچا ہے اور ثم پہنچ سکتا ہے، اگر بی، سی، جی، سے ثم تقصان کے بعد کسی کی آنکہ پہوت گئی تو اُس کا کاران آنکہ کی کوئی اور بیماری ٹھی جس کا بی، سی، جی، سے کوئی سمبندھ نہیں اور اور کوئی بچے مر گیا تو سرنے کے بھی بہت سے کارن ھو سکتے ھیں آ

اِس طرح کی تحقیقاتوں اور اِس طرح کے آئیورں کے بارے میں ھیں سے میے دنیا کی سرکاروں پر دیا آتی ہے۔

वह बेबारी बेबस होती हैं. जाके नियुक्त किये हुए की जी जीर आंक हे जान करने वाले व्याम और पर अपनी कोज के वही नतीजे निकाल लेवे हैं और उसी तरह के आंक हे जमा कर देते हैं जो वह सममते हैं कि उनके नियुक्त करने बाले बाहते हैं और जान कर खुरा होंगे. अगर कमी कोई देशी कमेटी वा इस तरह का कोजी निकल भी आया कि जिसने सरकार की मन बाही बात न कही तो उसकी राय के खिलाक राय देने बाले वस बाहे हो जाते हैं और पहली राय "जनता के हित के लिये" आसानी से मुपनाप किसी अलमारी में बन्द कर दी जाती है.

इसका तजरबा भारतबासियों को बहुत पुराना और काकी है, हमने खद सन् 1908 के और दूसरे दुष्कालों में अवध के अन्दर लोगों को तड़ातड़ भूक से मरते देखा है, और सरकारी रिपोरटों में उनकी भीत का कारन आम तौर पर पेनिश या खुखार दर्ज होता था. और सबसे अजीब बात यह है कि अकसर यह भी और वह भी दोनों ही बातें ठीक होती थी. जिस किसी की मौत का कोई खास कारन न पता बले या न बताना मंजूर हो उसे आसानी से कहा जा सकता है कि 'हार्ट केल' होने से मर गया. बात भी सब, हार्ट केल हुए बिना कोई मर भी कैसे सकता है!

इम इस तरह के मामलों में सरकार को और खासकर सरकार के ऊपर के बादिमयों को जैसे राजकमारी बस्त-कौर को बेकसूर मानते हैं. हमें इसमें कोई शक नहीं कि उनकी नीयत अच्छी से अच्छी है. पर वह अपने आस पास की किया और खद अपने से लाचार हैं. इस आज भी बीठ सीठ जीठ के टीके को देश और देश के बच्चों के लिये एक शाप और एक ज्ञानत मानते हैं. परिचमीयता, अन्धी पश्चिमीयता के जिस रोग से गाँधी जी इस देश को बचाना पाहते थे वह पाहिर है इस समय पूरे जोर पर है और जासकर उन देश भक्तों में जिनके हाथों में बद्किस्मती से इस समय देश के शासन की बाग है. देश के करोड़ों बच्चों पर यह गन्दे और जहरीले तजरने तो होंगे ही, सबसे अधिक दुख इस बात का है कि इन करोड़ों बच्चों में बहुत बड़ी तादाद रारीबों और गाँव बालों के उन बच्चों की है जिन्हें पेट भर ढंग का खाना भी नहीं मिजता. पर दनिया शायद तजरबों से ही सीखती है. इनसानी जिस्मों से जहर को निकालने के तरीक़े भी हैं ही. हम निराश नहीं हैं. हमारी आशा का आधार देश की वह- करोड़ों जनता है जो अभी तक इस अंबी परिचमीयता के इतने अधिक असर में नहीं है और जिसे किसी तहकीकात के लिये खुद अपनी गलियों. भपने गाँव और अपने निजी अनुभवों से दूर जाना नहीं पड़ता. जनता की सीधी सादी सुम हम पढ़े लिखों की गदी गदाई सक्का से उन्हें कहीं सरका और ठीक रास्ता विसाती है.

الله المحتوال في الله على مهل ، أن كم تهمت كال علي كالها كا

اس کا تجربہ بھارت واسیوں کو بہت پرانا اور کائی ہے .
مئے خود سن 1908 کے اور دوسرے 'دھی کالوں میں آودہ نے اُندر لوگوں کو ترانزا بھوک سے مرتے دیکھا ہے اور سرکاری بورٹوں میں اُن کی موت کا کارن عام طور پر پینچھی یا بخار رہ ہوتا تھا ، اور سب سے عجیب بات یہ ہے کہ اکثر یہ بھی رو وہ بھی دونوں ہی باتیں ٹھیک ہوتی تھیں ، جس کسی موت کا کوئی خاص کارن نے پاتے چلے یا نے بتانا منظور ہو سے آسانی سے کہا جا سکتا ہے کہ 'ہوارے نیل' ہونے سے مر گیا ، است بھی سے' ھارے نیل ہوئے با کوئی سر بھی کیسے است بھی سے' ھارے نیل ہوئے بال کوئی سر بھی کیسے عتا ہے !

ھم اِس طرح کے معاملوں میں سرکار کو اور خاص کو سرکار نے اوپر کے آدمیوں کو جدسے رائے کماری امرت کور بے قصور مانتے ايس . همين اِس مين كوئي شك نهين كه أن كي نيت اِچهي ع آچھی ہے. پر وہ اپنے آس اس کی نشا اور خود اپنے سے الچار ایں ، هم آج بھی ہی، سی، جی، کے ٹھکے کو دیش اور دیش کے بچوں کے لئے آیک ثاب آور ایک امنت مانتے موں یشچمینا ندھ يشجدينا كيجس روك سے كاندھي جي اِس ديھ كو بچانا جامعے تھے وہ ظاہر ہے اِس سمئے بورے زور پر ھے اور خاس کو ن دیمی بهکٹرں میں جن کے ماتھوں میں بدنسبتی سے اس سے دیس کے شاسی کی باک ہے ، دیش کے کورزرں بھیوں ر یه گذرے اور زهریلے تجورے تو هونکے هی سب سے ادهک يكم إس بات كا هم كه أن كروروس بحوس ميس بهت برق تعداد ريبوں اور کاوں والوں کے آن بحوں کی ہے جنہيں پيات ہور نمنگ کا کهانا بھی نہیں ملتا ، پر دنیا شاید تجربوں سے می سیمیتی هے ، انسانی جسموں سے زهر کو نکالنے کے طریقے مي مين عي. هم نراش نهين هين . هماري أشا كا أدهار ديم لی وہ کروروں جنتا ہے جو آیمی تک اِس اندھی پھچمیتا کے للا ارمک اثر میں نہیں ہے اور جسے کسی تصلیقات کے لئے خید اینی کلیس اینے کاوں اور اپنے نجی آنویوں سے دور جا نا مهل پرتا ، جنتا کی سیدهی سادی سوجه هم پڑھ اکھوں کی ارمی گرمانی علل سے آنھیں کہیں اچھا اور ٹھیک راستہ رکاتی ہے۔ हम अपने राज को जनता का राज कहते हैं. अभी इस इस बादर्श से काकी दूर हैं. भारत के रहे सहे दुख इसी दिन दूर होंगे और भारत उसी दिन बाहर की टीपटाप से सहीं अपने अन्दर की चमक से चमकेगा जिस दिन हम सच्छुण इस आदश तक पहुँच जावेंगे.

28-7-55

- सुन्दरलाल

एक आदर्श गवर्नर

हाल में कलकत्ते के दौरे में हमें पच्छिमी बंगाल के गर्वनर डाक्टर एच. सी. मुकरजी से मिलने का सौभाग्य माप्त हुआ, उनसे मिलकर हमें बड़ी .खुशी हुई. डाक्टर एच, सी. मुकरजी की उमर इस समय लगभग उनासी बरस की है. उनका रहन सहन और लिबास हद दरजे का सादा है. उनके तर्ज और लिबास से यह मालूम नहीं होता कि बह भारत की गलियों और गाबों में फिरने वाले आम लोगों से किसी तरह कोई अलग इनसान हैं. वातें करते हुए हमारा ध्यान इस बात की तरफ गया कि गर्बनर एच. सी. मुकर-जी अपनी पाँच इजार की तनखाह में से केवल पाँच सौ वपये अपने और अपने परिवार के खर्ब के लिये रखकर बाकी साढ़े चार हजार रुपये महीने एक ट्रस्ट के हवाले कर देते हैं इसिलये कि उसे गरीब विद्यार्थियों की तालीम आदि पर खुर्च किया जावे. हम डाक्टर मुकरजी को यह याद दिलाए विना न रह सके कि राष्ट्रियता महात्मा गांधी ने स्वतंत्र भारत के मिनिस्टरों और गर्वनरों के सामने खलीका उमर का कादर्श पेश किया था. गांधी जी ने कहा था कि हमारे देश के मिनिस्टर और गर्धनर कम से कम तनखाहें लें बीर खलीका उमर का सा सादा जीवन बितावें ताकि उनमें भीर जनता में गहरा सम्बन्ध बना रहे. इस पर डाक्टर मुकरजी ने खलीका उगर के जीवन की कुछ घटनाएं हम से जानना चाहीं. हमने उन्हें कई घटनाएं सुनाई. यहां हम **उन्हें दुहराना नहीं** चाहते. डाक्टर मुकरजी सुनकर बहुत ख़ुश हुए. हमने उनसे यह भी कहा कि जहां तक हमें मालूम दे अगर भारत भर में आज कोई गर्वगर गांधी जी के बताए उस आदर्श के निकट पहुँचता है तो डाक्टर मुकर-जी. डारक्टर मुकरजी ने इस पर बड़ा संतोष प्रकट किया.

उनकी सादगी की बाबत एक छोटी सी घटना हमने और सुनी दिल्ली सरकार के एक बहुत बड़े सज्जन ने अपने कलकत्ते के दौरे के समय गवर्नर मुकरजी के रहन सहन को देखकर उनसे कहा कि अगर आप थोड़ा सा और अर्थ अपने अपर गवारा कर लें तो आप जरा अच्छी तरह रह सकेंगे. गवर्नर मुकरजी ने बड़ा सुन्दर जवाब दिया. इन्होंने कहा कि—"में देश का असली हाकिस नहीं हूँ, هم اپنے رکے و جاتا کا رکے گہتے ہیں ، ابھی هم اِس آدرهی مے کانی دور هوئے مے کانی دور هوئے اُسی دن دور هوئکے اور بیارت آسی دن باهو کی ٹیپ ٹاپ سے ٹیهن اپنے آندر کی چیک سے چیکے کا جس دن هم سے میے اِس آدرهی تک پہنچے جاڑیکے ،

---سالىر **ال**

28, 7.55

ایک آدرش گورنو

حال میں کلکتے کے دورے میں همیں پچھمی بنکال کے گورنو دَائدر ایچ . سی . سرجی سے ملنے کا سوبھاگیت پرایت ہوا . أن سے ملكر هميں برى خوشى هوئى . تائقر ايج . سى . مرجی کی عبر اِس سے لگ بیگ اُناسی برس کی ہے۔ ان کا رهن سہن اور لباس حد درجه کا سادہ ہے۔ اُن کے طرز ارر لباس سے یہ معلم نہیں ہوتا کھ وہ بھارت کی گلیوں اور گاؤں میں پھرنے والے عام لوگیں سے کسی طرح کوئی الگ اِنسان ھیں۔ باتیں کرتے ہوا عمارا دھیاں اِس بات کی طرف گیا کہ گرونر ایج . سی ، محرجی اپنی پائی هزار کی تنخواہ میں سے کھول بانیم سو رویدہ اپنے اور اپنے پریوار کے خرچ کے لئے رکھکر باقی سازھ چار ہزار رویدے هر مهینے ایک ترست کے حوالے کردیتے میں اِس لئے کہ اُسے غریب ودیارتھیوں کی تعلیم آدی پر خرج کیا جارے ، عم ذائقر محرجی کو یہ یان دائے بنا تہ رہ سکے کہ راشتر یتا مہاتما کاندھی نے سوتنتر بھارت کے منستروں اور گورنروں کے سامنے خلیفہ عمر کا آدرش پیش کیا تھا ۔ کاندھی جی نے کہا تھا کہ همارے دیھی کے منستر اور گورنر کم سے کم تنخواهیں لیں اور خلیفه عمر کا سا سادة جیون بتاویں تاکه أن میں اور جنتا میں گہرا سمبندہ بنا رہے ۔ اِس پر داکٹر معرجی نے خلیدہ عمر کے جنون کی کچھ گھٹنائیں اہم سے جاننا چاهیں، هم نے اُنہیں کئی گٹھنائیں سنائیں . یہاں مم اُنہیں دھرانا نہیں چاهته . ذاكلر مكرجى سلكر بهت خوش هوأء . هم له أن سے يه بهي ديا كه جهال تك هيين معلوم هے اگر بهارت بهر ميں آج کوئی گوردر کاندھی جی کے بتائے ھوٹے اُس آدرش کے نکٹ بہرنچنا ہے تو قاکلر معرجی ، ذائلر معرجی لے اِس پر ہڑا سنتوش يركث كيا .

اُن کی اِس سادگی کی بابت ایک چھوٹی سی گھٹنا ھم اور سنی ، دہلی سرکار کے ایک بہت بڑے سجن نے اپنے کلکتے کے دورے کے سمے گورٹر مکوچی کے رھن سھن کو دیکھ کر اُن سے کہا کہ اگر آپ تھوڑاسا اور خرچ اپنے اوپر گوارا کریں تو آپ ذرا اُچھی طرح رہ سکیں گے۔ گورٹر مکرچی نے بڑا سندر جواب دیا ۔ اُنھی طرح رہ سکیں گے۔ گورٹر مکرچی نے بڑا سندر جواب دیا ۔ اُنھی طرح کہا کہانی ھرن اُ

वास वाकिस जान हैं. जगर कह किसी कारन से मेरी कोई बात जापको पसन्द न जाई और जापने मुक्ते जलग कर दिया तो मेरे केवल जाठ जाने खर्च होंगे. जाठ जाने की रिक्शा अंगाकर मैं क्समें जपनी पत्नी सहित शहर के अपने पुराने मकान में चला लाकेंगा. मुक्ते कोई भी कट न होगा. पर विद मैंने जपने रहन सहन को बदल लिया और अपने उपर अधिक सर्च करना शुरू कर दिया तो मुक्ते गवर्नरी होइने पर तक्सलीफ होगी. इसलिये मेरे लिये यही सादा जीवन अच्छा है."

डाक्टर मुकरजी ईसाई हैं. हमें वह सचमुच सच्चे ईसाई माकूम हुए. हम थोड़े से दुल के साथ यह कहे बिना नहीं रह सकते कि अगर स्वतंत्र भारत के दूसरे गवर्नर और मिनिस्टर भी गाँधी जी की बात मान कर डाक्टर मुकरजी की मिसाल पर अमल कर सके होते तो देश की हशा आज कह और ही होती!

24. 6. 55

—सुन्दरसास

अंधविश्वास का अनर्थ

क्जीन के पास तराना जाने बाली सबक पर द्रकराक्ष गांव में. जलाई महीने के आखिरी दिनों में, जो घटना हुई बह चौंका देने बाली है. हमारे देश की रारीब जनता को धर्म के नाम पर किस बुरी तरह बहकाया जा सकता है, इसका एक ताजा नमूना इस घटना से इमारे सामने एक बार फिर आ गया. वैसे तो ऐसी होटी मोटी घटनाएं आम तौर पर होती रहती हैं, परन्तु इस घटना ने उन सब को मात कर दिया है. उस दिन नई दिली में भी एक भयानक घटना हो गई. मदनलाल नाम के एक क्लर्क को किसी ज्योतिषी ने यह कह दिया कि 28 जून को उसकी मौत हो जाएगी और उसकी मौत के बाद उसके परिवार को बहुत मुसीबत उठानी पढेगी, अपनी भीत और अपने परिवार वालों की मुसीबत का ख्याल उसके दिमारा में कुछ ऐसा घर कर गया कि उसने अपने मासूम 8 साल, 6 साल, और 9 महीने के तीन वरुचों को और अपनी की को अपने डाथों से सौत के घाट उतार कर स्वयं रेल की पटरी पर जाकर अपनी जान दे दी और ज्योतिषी की भविष्यवासी का बहुत सा हिस्सा .सुद पूरा कर डाला. बहुत साल नहीं हुए हैं, जब बमत्कारों पर विश्वास रखने बाले, हमारे देश के हुआरों लोग, जिनमें अच्छे पढ़े लिखों की संख्या भी कुछ कम न थी, अंगूल (उड़ीसा) की ओर भागे चले गये थे-केवल इसलिए कि वहां ग्वाला परिवार का एक छोटा सा लक्का ब्वाई के नाम पर किसी पेड़ की खाल का छहा द्वकड़ा देता था. जिससे सभी तरह की बीमारियां हर हो जाती थीं ! अंधविश्वास के उस املی حالم آپ هيں ، اگر کل کسی کارن سے مهوری گوگی بات آپ کو پسند نہ آئی اور آپ نے مجھے آلگ کو دیا تو مغرب کیوار آپ نے مجھے آلگ کو دیا تو مغرب کیوار آپ آئے کی رکھا منگا کو میں آس میں اپنی پتلی سہت شہر کے آپنے پرانے مکان میں چلا جاؤنگا ، مجھے کوئی بھی کشمی نہ ہوتا ، پر یدی میں نے آپنے رهن سبن کو بدل لیا اور آپنے آویر ادھک خرچ کوئا شرع کو دیا تو مجھے گورنری چھوڑئے پر تکلیف ہوگی ، اِس شرع کو دیا تو مجھے گورنری چھوڑئے پر تکلیف ہوگی ، اِس

ڈاکٹو مکرجی عیسائی ہیں ۔ ہدیں وہ سے مے ستھے عیسائی معلوم ہوئے ۔ ہم تھوڑے سے دکھ کے ساتھ یہ کہے بنا ٹیمن وہ سکتے که اگر سوتنتر بھارت کے دوسرے گورٹر اور منسو بھی اندھی جی کی بات ماں کو ڈاکٹو مکو جی کی مثال پر عمل کو مکے ہوئے تو دیش کی دشا آج کچھ اور ہی ہوتی ا

55. 6. 55. سندر لال

انده وهواس كا انوته

ا اُجین کے پاس ترانا جانے والی سوک پر تحرال کاوں میں ا عولائی مہینے کے آخری دنس میں' جو گیتنا ہوئی وہ ہولکا دینے والی ہے . همارے دیش کی غریب جنتا کو دھرم کے ام در کس بری طرح بهکایا جاسکتا هے اُس کا ایک تارہ نمونہ س گھٹنا سے همارے سامنے ایک بار بھراگیا، ویسے تو ایسی چھوٹی رقی گھٹنائیں عام طور پر ہوتی رہتی ہیں اورنتو اِس گھٹا لے ي سب كو مات كوديا هـ . أس دن فئي دلي مين بهي أيك يانك كهننا هوكئي ، مدن الل المام كي ايك كارك كو كسي بہرتشی نے یہ کہ دیا کہ 28 جہن کو اُس کی موت ہوجائیگی ر اُس کے موت کے بعد اُس کے یربوار کو بہت مصیبت ہائے یویکی ، اپنی موت اور اپنے پریوار والوں کی مصهبت کا بھال اُس کے دماغ میں کچھ ایسا گھر کر گیا که اُس فے اپنے نصوم 8 سال 6 سال اور 9 مهينه کے تين بحوں کو اور اپنی بعربی کو اپنے ھاتھوں سے موت کے گھات آتاو کر سویم ریل کی ری پر جاکر اپنی جان دے دی اور جیوتشی کی بھوشیہ وائی بهت سا حصه خود يورا كر دالا . بهت سال نهين هويم هين س چمتکاوں پر وشواس رکھنے والے ممارے دیش کے مزاروں ك جن ميں اچھ پڑھے لكبوں كى ساكييا بھى كچے كم ته ن انعول (أربسه) كي أور بهاكم چلے كلم تمـ كمول إس آ که رهان گوالا يريوار کا آيک جهرانا سا انوکا دوائي کے قام ير سی پیر کی چہال کا کچھ ٹیرا دیتا تیا' جس سے سبھی رے کی ہیماریاں دور ہوجاتی تہیں! الدھ وشواس کے اُس

چکر میس لوگ پاکل سے بن کر انکوا چل دیکے تھے ،

کسی کو یہ سوچاہ کی نرصت یہی نہدں تھی که اصلیت کیا ہے
چیزیا دھسان کی طرح دیھی کے چاروں اور سے مزاروں لاکھوں
استری پرھی وھاں پہونیج گئے ، سرکار کی سابی سوچناؤں اور
گئیون کو لوگوں نے جھوٹا تھبرا دیا اور ان پو کچھ بھی اثو
نہیں ھوا ، لاکھوں روپیہ برباد ھوا اور جو مصیبتیں آئیائی
گئیون اُن کا تو کہنا ھی کیا ، اُس چھوٹے سے استھاں میں
ھزاروں لوگوں کے کہانے پہنے اور تھبر نے کا کوئی اِنتظام نہ تھا اور
موسکتا تھا ،

ٹکرال کی جس گھٹا کا ہم یہاں چرچا کرنا چاہتے ہیں ا ولا تهوره میں یہ ہے که گیندکلورہائی نام کی ایک اِستری کو یہ سپنا آیا که 28 جولائی کو اُس کے پتی کی موت هوجائیکی اور وہ اُس کے ساتھ ستی هوجائیکی . حالاتک وہ اِستری ایسا کوئی سینا دیکھنے = بھی اِنکار کرتی ہے ، پر اُس سیلے کا جو تصه چاروں أور يهيد' أس كا نتيجه يه هوا كه تحرال ميں أس ستى كے درشنوں كے لئے لاكبوں اِسترى پرش جمع هوگئے . كهتم هين كه متهراً كوالهر جهانسي التسيير أور بمبئى تك سے لوگ وہاں گئے ، پولس کی اُور سے پٹی پٹلی دونوں کے زندہ ھولے کی خبروں کا اعلن کرنے پر بھی لوگوں کا آس پاس سے چاروں اور سے وهاں جانا جاری رها ، گیندکلور کا پتی سدھ ناته اِندور کے اسپتال میں اپنی بیماری کا علام کروا رہا تھا اور گیندکنور وهاں اُس کی سیوا کے لئے گئی هوئی تھی . گاؤں میں أن كي إس فيرحاضري كا مطلب يد لكايا كيا كد سده تاته كي مراح پر گیندر کلور ہائی سلی هرچای هے اور اِس"دهارمک" گیتنا کو لوگس سے چھھا دیا گیا ھے ، أن دونوں كو جنتا كے سامنے يدهى کرنے کی جو مانگ کی گئی اس کا پورا کرسکفا ممکن نه هونے سے ستی موقے کی لولوں کی کلینا کو اور یعی ادھک یل مل کیا ۔ بھر' وھاں موجود دو ناکا سادھوؤں کے' جن کی بات کو الده وشواسي جنتا أبي بهي همارے ديش ميں ويد واکيه کي طرح سبع مائتی هے لوگیں کی اُس کلینا کو آتنا ادھک بھڑکا دیا که وقد پولس کی بات کو سپم مانید کی بنجائے ' أسی پر حمله کر بیٹھے اور یولس والس کو اپنی جان بحیانا مشکل موگیا ۔ ٹیٹرگیس چھرنے اور لاٹھی چلانے کا بھی جب کرئی للبجه نه نکلا تب گولی چلانے کی نوبت آگئی . کہتے میں که 13 منٹ تک گولی چلی. حالانکه چھ آدمیوں کے مرنے کی بات سرئيكار كى كئى ھے پر أن كى سنكهيا كهدي انھك ھرنے كا عبك کیا جاتا ہے ۔

گہتنا کا موسرا پہلو اور بھی ادھک بھیاتک ہے۔ قانوں سے ستی پرتھا کو بند ہوئے قریب دھڑھ سو ساں بیت جانے پر بھی اُس کا اندھ وشواس لوگن کے دل اور دماغ پر ابھی تک جہایا ہوا ہے۔ یہ پرائی پرتھا ہے که

पक्कर में लोग पागल से बनकर अंगूल चल देते थे. जिसी को यह कोचने की फुर्सत भी नहीं थी कि असलियत च्या है. भेदिया धसान की तरह देश के चारों ओर से हजारों लाखों की पुरुष बहां पहुंच गये. सरकार की सारी सूचनाओं जीर विक्रिक्यों को लोगों ने मूठा ठहरा दिया और उन पर इस भी असर नहीं हुआ. लाखों उपया बरवाद हुआ और जो मुसीवतें उठाई गई, उनका तो कहना ही क्या. उस छोटे से स्थान में हजारों लोगों के खाने पीने और ठहरने का कोई इंतजाम न था और न हो सकता था,

दुकराक्ष की जिस घटना का हम यहां चर्चो करना भाइते हैं, वह थोड़े में यह है कि गेंद कु वरवाई नाम की एक स्त्री को यह सपना आया कि 28 जुलाई को इसके पति की मौत हो जाएगी और वह इसकी साथ सती हो जायेगी. हालांकि वह की ऐसा कोई सपना देखने से भी इनकार करती है. पर उस सपने का जो क्रिस्सा बारों ओर फैला, उसका नतीजा यह हुआ कि दकरान में उस सती के दर्शनों के लिए लाखों स्त्री पुरुष जमा हो गये. कहते हैं कि मथरा, गवालियर, मांसी, ललितपुर और बम्बई तक से लोग वहां गये. पुलिस की ब्यार से पति पत्नी दोनों के जिन्दा होने की खबरों का एलान करने पर भी लोगों का ब्रास पास से चारों छोर से वहां जाना जारी रहा, गेंद्कुंबर का पति सिद्धनाय इंदौर के अस्पताल में अपनी बीमारी का इलाज करवा रहा था भौर गेंदक वर वहां उसकी सेवा के लिए गई हुई थी. गांव में उनकी इस गैरहाजिरी का मतलब यह लगाया गया कि सिद्धनाथ के मरने पर गेंद्कंबर बाई सती हो चुकी है और इस "धार्मिक" घटना को लोगों से छिपा दिया गया है. उन होनों को जनता के सामने पेश करने की जो मांग की गई. उसका पूरा कर सकना समिकन न होने से सती होने की लोगों की कल्पना को और भी अधिक बल मिल गया. फिर बहां मीजूद दो नागा साधुच्यों ने, जिनकी बात को अंधविश्वासी जनता आज भी हमारे देश में वेद बाक्य की तरह सब मानती है, लोगों की उस कल्पना को इतना अधिक भड़का दिया कि वे पुलिस की बात को सब मानने की बजाय, उसी पर हमला कर बेठे और पुलिस वालों को अपनी जान बचाना मुश्किल हो गया. टीयर गैस छोड़ने और लाठी चलाने का भी जब काई नतीजा न निकला तब गोली चलाने की नौबत आ गई, कहते हैं कि 13 मिनट सक गोली चली. हालांकि 6 ब्यादमियों के मरने की बात स्त्रीकार की गई है पर उनकी संख्या कहीं अधिक होने का ाशक किया जाता है.

बहना का दूसरा पहलू और भी अधिक भयानक है. इस्तृत से सती-प्रथा को बंद हुए क़रीब डेढ़ सी साल बीत साबे पर भी इसका अन्ध विश्वास लोगों के दिल और दिसारा पर अभी सक झाया हुआ है. यह पुरानी प्रथा है कि

سلی کی پوجا کی جاتی ہے، گیند کلور باتی کے رائدہ کی ماری کی جاتی کے جبرترا بنا دیا گیا اور باتی کے چبرترا بنا دیا گیا اور چبرترا بنا دیا گیا اور دیکیا حال لکھنے والے نے لکھا ہے شروع ہو گیا . آنکھوں دیکیا حال لکھنے والے نے لکھا ہے کہ وہاں آتنا چرتھاوا چرتھا دیکیا حال لکھنے والے نے لکھا ہے کہ وہاں آتنا چرتھاوا چرتھا کہ 50-70 ہزار رویئے کے تو نوت جسم کو کے یار دوست کھیں چمپت ہوئے اور اُن نوٹوں کے علاوہ جو نقدی وہاں جسم کپروں کا بھی وہاں ایک بڑا تھیو لگ گیا . نوت لیکو چمپت کپروں کا بھی وہاں ایک بڑا تھیو لگ گیا . نوت لیکو چمپت ہو جانے والوں کی پولس کی حواست میں لے لئے گئے ہیں ہیے ہوئے وے ناکا سادھو پولس کی حواست میں لے لئے گئے جس سنگھا والوں نے جنتا کی دھارمک بھاوٹاؤں کو آبھاڑنے میں جس سنگھا والوں نے جنتا کی دھارمک بھاوٹاؤں کو آبھاڑنے میں کپچھ بھی آتھا نہیں رکھا ، جن سنگھ کے ادھیکاریوں نے اِس کا بیتوان کیا ہے۔

جن سنکھ اتھوا ایسی ھی کسی دوسری سنستھا کا اِس گھٹا کے پیچھے ھاتھ ھو یا نہ ھو' اِتنا تو صاف ہے کہ اُن دھارمک اندھ وشواسرں اور جبوئے دھرموں کی وجہ سے ھی یہ ساری گھٹنا ھوئی' جن پر سامپردایک سنستھائیں پھلتی پہولتی اور پلتی ھیں ، بھولی بھالی جنتا کے دھارمک اندھ وشواسوں کو بھڑکا کر کتنا انرتج کیا جا سکتا ہے' اِس کا ایک نموئہ یہ ساری گھٹنائیں ھیں ،

کچے هی ورش پہلے شاید 1950 میں اِسی سے ملتی جلتی ایک گهدا گوالیر میں هوئی تهی ، تب مدهه بهارت رابے کی ودیعان سبھا تک میں یہ منظور کیا گیا تھا کہ اُس مرقع یو یولس کے انسروں اور دوسرے ادھیکاریوں نے اپنے کرتویہ کا یالن یوری نتیرتا اور آیمانداری سے نہیں کیا تھا ، کارن یہ تھا کہ یولس والے اور دوسرے سرکاری ادھیکاری بھی جنتا کی طیم انده وشواس میں پہنسے هوئے تھے ، آخر وے بھی تو اُن لوگیں میں سے هی هیں کون کے دل اور دماغ پر یہ آور ایسے اندھ وشواس پوری طرح چھانے ھوٹے ھیں ۔ انسوس یہ دیکھ کر ھوتا ہے که ھمارے کانگریسی رزیر بھی اُن سے اپنا پلڈ نہیں چھڑا سکے ھیں ، ہمارے بہت سے رزیر اب بھی جیوتشیوں کے چکو میں بھنسے ہوئے ہیں اور وے بات بات میں أن سے مهررت نکنراتے رہتے هیں اُنکی بهرشیه وانیوں پر بھی اُنکا ويسا هي وشواس هے جيسا كه عام جنتا كا . همارے خيال ميں ایسی گھٹناؤں کے ہونے پر کوئی سخت قدم اس ائے نہیں اُسکتا کہ اُسکتا کے اُسکتا کہ اُس قدم کو اُٹھانے کی زمتواری جن لوگوں یر هوتی هے اُن کے دل اُور دماغ اُننے کرتویہ کے پرتی صاف نهین اور وے اپنے کرتویہ سے اپنے اندھوشواس کو ترجیم دے جاتے ھیں اِس لئے اُن گھناؤں کو روکنے کے نئے یہ ضروری ہے که پہلے وے لوگ اینا دل اور دماغ صاف کویں جن پر شاس کی زمتواری هے نہیں تو هماری

सती के तास पर एक विष्युंदर बनाकर मंदिर की तरह से उसकी पूजा की जाती है. गैंद कुंदर वाई के जिन्सा होने पर भी, इसका वयुंदरा बना दिया गया और वयुंदर पर चढ़ावा चढ़ना भी हुक हो गया. आंखों देखा हाल लिखने वाले ने लिखा है कि वहाँ इतना चढ़ावा चढ़ा कि 70-80 हजार रुपए के तो नोट जमा करके बार दोस्त कहीं चम्पत हो गये और इन नोटों के अलावा जो नक्षदी वहाँ जमा हुई उसका वजन कई मन तक पहुँच गया. रंग-विरंगे कपड़ों का भी वहाँ एक बड़ा डेर लग गया. नोट लेकर चम्पत हो जाने वालों की पुलिस खोज कर रही है और 'धर्मावतार' बने हुए वे नागा साधू पुलिस की हिरासत में ले लिए गये हैं. कुछ समाचार पत्रों में यह भी प्रकाशित किया गया है कि जनसंघ वालों ने जनता की धार्मिक भावनाओं को उभाइने में कुछ भी उठा नहीं रखा. जनसंघ के अधिकारियों ने इसका प्रतिवाद किया है.

जनसंघ अथवा ऐसी ही किसी दूसरी संस्था का इस घटना के पीछे हाब हो या न हो, इतना तो साफ है कि उन धार्मिक अंध विश्वासों और मूठे धर्मों की वजह से ही यह सारी घटना हुई, जिन पर साम्प्रदायिक संस्थाएं फलती फूलती और पलती हैं. भोली भाली जनता के धार्मिक अंध-विश्वासों को भड़का कर कितना अनर्थ किया जा सकता है, इसका एक नमना यह सारी घटनाएं हैं.

कब ही वर्ष पहले शायद 1950 में इसी से मिलती जुलती एक घटना म्वालियर में हुई थी. तब मध्यभारत राज की विघान सभा तक में यह मंजूर किया गया था कि उस मौक्रे पर प्रलिस के अफसरों और दूसरे अधिकारियों ने अपने कर्तव्य का पालन पूरी तत्परता और ईमानदारी से नहीं किया था. कारण यह था कि पुलिस वाले और दूसरे सरकारी अधिकारी भी जनता की तरह अधिवश्वास में फंसे हुए थे. आखिर वे भी तो उन लोगों में से ही हैं, जिनके दिल और दिमारा पर यह और ऐसे अंधविश्वास पूरी तरह छाए हुए हैं. अफसोस यह देखकर होता है कि हमारे कांगरेसी वजीर भी उनसे अपना पिंड नहीं छुड़ा सके हैं. हमारे बहुत से बजीर अब भी ज्योतिषयों के चक्कर में कंसे हुए हैं और वे बात बात में उनसे महुर्त निकलवाते रहते हैं. उनकी भविष्यवाणियों पर भी उनका वैसा ही विश्वास है जैसा कि आम जनता का. हमारे ख्याल में ऐसी घटनाओं के होने पर कोई सस्त क़दम इसीलिए नहीं उठाया जा सकता कि उस क़र्म को उठाने की जिम्मेवारी जिन लोगों पर होती है, उनके दिल और दिमारा अपने कर्तव्य के प्रति साफ नहीं और वे अपने कर्तव्य से अपने अंधविश्वास को वरजीह दे जाते हैं. इसिवाय इन घटनाओं को रोकने के निय यह जरूरी है कि पहले वे लोग अपना दिल और दिमारा साफ करें जिन पर शासन की जिम्मेवारी है. नहीं तो हमारी

हासस जिये नेताओं के जीवे अनुयायी की सी हुए बिना न रहेगी, दुकराल की इस घटना पर पुलिस की कार्यवाही की कीपापासी कर देना ही काफी नहीं है, उसकी जड़ में जाकर कोगों के दिलों और दिसारों को भी बदलने की कोशिश की जानी चाहिए. धर्म का मूठा आडंबर, माया-जाल और जाबिरवास दूर किए बिना इस और ऐसे अनथों को रोका नहीं जा सकता.

15. 8. 55

🗕 सत्यदेव विद्यालंकार

गोभा की आजादी का सवाल

15 अगस्त सन् 1955 को जबकि एक और हिन्दुस्तान में आजादी के दिन की ख़ुशियां मनाई जा रही थीं निहरथे सत्याप्रहियों के जत्थे यक बाद दीगरे गोश्रा, दमन और द्यु में तिरंगा निशान लिये हुए दाखिल हो रहे थे. 16 अगस्त की रात को रेडियों ने हमें इत्तला दी कि अहिंसक और निहत्थे सत्याप्रहियों पर पुर्तगाली सैनिकों ने गोलियाँ चलाई और यह भी इत्तला दी कि 28 सत्याप्रही ने गोलियाँ खाकर बलिदान हुए और 44 सत्याप्रही गोलियों से वायल होकर लवे दम अस्पताल में पड़े हुए हैं. घायलों में औरतें और वच्चे भी हैं.

इन दर्दनाक ख़बर को पढ़कर हर हिन्दुस्तानी के ख़ून में जारा आए बिना न रहेगा. निहत्थे सत्याप्रहियों पर गोलियां चलाना, इस से ज्यादा जालिमाना चीज और क्या हो सकती है. एक तरफ़ चीन की हकूमत है जिसने अश्रीकी उड़ाकों को, जिन्होंने चीन की सरहद के अन्दर क़दम रक्खा, गिरफ्तार कर लिया और दूसरी तरफ़ पुर्तगाल की साम्राजवादी सरकार सत्याप्रहियों पर गोली चलाने में अभिमान महसूस करती है. अपने हिन्सक दुशमनों के साथ भी कोई ऐसा सलूक नहीं करेगा जैसा पुर्तगाल की सरकार निहत्ये भारतवासियों के साथ कर रही है.

इतिहास ने उस मनहूस दिन के वाक्रये को दर्ज किया है जब 22 मई सन् 1498 ई० को मालाबार के किनारे पुर्तगाल के रहने वाले वास्कोदिगामा का जहाज कालीकट के पास खाकर ठैहरा. उस समय कालीकट का राजा जमोरिन था. वास्कोदिगामा ने दांजानू होकर जमोरिन की खिद्मत में अपने राजा की खर्जी पेश की और उस से यह प्रार्थना की कि वह उन्हें अपने राज में रहने और व्यापार करने की इजाजत दे दे.

सन् 1500 ई० में पुर्तगालियों ने अपने न्यापार के लिये कालीकट में एक कोठी बनाई. 3 साल बाद जमोरिन की इजाजत से उसकी किलेबन्दी कर ली और एक पुर्तगाली अफसर अस्तुकर्क को उसका किलेदार मुकरेर किया.

حالت أثبت نیتاوں کے أنده أنوبائی کی سی هوئے بنا نع رهیگی ، لکوأل کی اِس گیتنا پر پولس کی کاریمواهی کی لیبا پوتی کر دینا هی کانی نهیں ہے ' اُس کی جو میں جاکو لوگوں کے دانوں اور دماغوں کو یعی بدلئے کی کوشش کی جانی چاهئے ، دهرالم جهوتا آدمیو' مایا جال اور انده وشواس دور کئے بنا اِس اور سے انرتبوں کو روکا نہیں جاسکتا ۔

ستهة ديو وديالنكار

15 .8 .55

گوأ کی أزادی کا سوال

15 اگست سن 1955 کو جب که ایک اور هندستان میں آزادی کے دین کی خوشیاں منائی جا رهی تهیں نہتھ ستیاگرهیوں کے جتھے یکے بعد دیکرے گو آئدمن اور دیو میں ترنگا نشان لئے هوئے داخل هو رهے تھے . 15 اگست کی رات کو ریڈیو نے همیں اطلاع دی که اهنسک اور نہتھے ستیاگرهیوں پر پرتگالی سینکوں نے گولیاں کھائیں اور یہ بھی اطلاع دی که گولیاں کھائو بلیدان هوئے اور 44 ستیاگرهی گولیاں کھائو بلیدان هوئے اور 44 ستیاگرهی گولیوں سے گھائل هوکر نبدم اسپتال میں پرتے هوئے هیں .

اس دردناک خبر کو پڑھکر ھر ھندستانی کے خرن میں جوش آئے بنا نہ رھیکا ، نہتھ ستیاگرھیوں پر گولیاں چلانا اس سے زیادہ طالعانہ چیز اور کیا ھرسکتی ہے، ایک طرف چین کی حکومت ہے جس نے امریکی اُڑائوں کو جنہوں نے چین کی سرحد کے اندر قدم رکھا گرفتار درلیا اور دوسری طرف برنگال کی سامراجوادی سرکار ستیاگرھیوں پر گولی چلانے میں بیفمان محصوس کرتی ہے ۔ اپنے هنسک دشمنوں کے ساتھ بھی نوئی ایسا بسلوک نہیں کریگا جیسا پرنگال کی سرکار نہتھے بارت واسیوں کے ساتھ کر رھی ہے ۔

انہاس نے اُس منحوس دن کے واقعہ کو درج کیا ہے جب کا مئی سن 1498ع کو ملابار کے کنارے پرٹگال کے رہنے والے واسکودیگاما کا جہاز کالیت کے پاس آکر ٹھورا ۔ اس سمے کا الیت زمون تھا ۔ واسکو دیگاما نے دو زانو ہوکر زمون نی خدمت میں اپنے راجہ کی عرضی پیش کی اور اُس سے یہ برارتها کی که وہ آنھیں اپنے راج میں رہنے اور ویاپار کرنے کی جازت دیدے ۔

سن 1700ع میں پرتگالیوں نے اپنے ریاپار کے ائے کالیکت میں ایک کوتھی بنائی ۔ 3 سال بعد زمروں کی اِجازت سے اُس کی تلعمبندی کرلی اُور ایک پرتگالی انسر البوکرک کو اُس کا تلعمبار مقرر کیا ۔

ात्वृक्क ने किनारे किनारे उत्तर की तरफ बढ़कर अन् 506 ई० में गोधा पर क्रका कर लिया. होते होते सन् 1510 ई० में पुर्वगालियों का कालीकट के राजा के साथ क्रि मगड़ा हो गया जिसमें पुर्वगालियों ने कालीकट के राजा हिल को आग लगा दी और शहर को जूट लिया. सिर्क 12 साल पहले इन परदेशियों पर मेहरबानी करने का भोले बमोरिन को यह फल मिला. इसके बाद बराबर पुर्वगली प्रपत्ती हुक्मत बढ़ाते रहे और सी सवा सी साल के अन्दर मंगलीर, कोचिन, लड़ा, 'द्यु, गोआ, बम्बई के टापू और गापट्टम के मालिक बन बैठे.

पुर्तगालियों की इस समय की तिजारत की दो बातें इस तौर पर जानने काबिल हैं—एक यह कि उन लोगों के कुछ जहाज भारत के पिच्छमी और पूरबी किनारे पर रावार घूमते रहे और किसी भी भार्तीय जहाज को पास ने निकलते हुए देख कर उसे पकड़ कर जूट लेते थे. कभी कभी मौका पाकर यह किनारे की झाबादियों पर भी धावा तिल दंते थे, उन्हें जूट लेते थे और मौका पाकर वहाँ के खाना मर्द और औरतों को गुलाम बनाकर पकड़ ले जाते हैं और यूरप के बाजारों में बेचते थे. दूसरे यह लोग प्रक्रीका और दूसरे मुल्कों से अपने जहाजों में ग्रलाम रकर लाते थे और भारत के बाजारों में उन्हें बेचते थे.

भारत के जिन हिस्सों पर पुर्ततगालियों का क्रब्जा हो । या था वहाँ की जनता के साथ शुरू दिन से ही इन लोगों हा वर्ताव बेहद जलिमाना था. यह लोग कट्टर किस्म के साई थे और जनता का ज्वरदस्ती ईसाई बना लेना वे अपना गज़हबी फर्ज़ समकते थे. गांश्रा में उन्होंने अपनी ग्रैर । साई प्रजा का पकड़ कर और उन्हें लामजहब कह कर गर डालने और जिन्दा जला देने के लिये एक अदालत हायम कर रक्खी थी जिसे 'इनकी ज़ीशन' कहते थे. इसलिये शाज तक गोश्रा की ज्यादातर आवादी ईसाई है. अपनी हेन्दुस्तानी रिश्राया की बेहतरी के लिये पुर्तगालियों ने कभी होई क्रदम नहीं उठाया.

सत्तरहवीं सदी के शुरू में पुर्तगालियों की तिजारत बंगाल की श्रार फैलने लगी. हालां के वहाँ उनकी हुकूमत कायम नहीं हुई, लेकिन वहाँ भी वहीं लूट मार, वहीं व्यादित्यों, वहीं गुलाम श्रीर बाँदियों का न्यापार चल पड़ा. शाहजहाँ उस बक्त दिल्ली के तख्त पर था. उसके कानों का पुर्तगालियों की शिकायत पहुँची. उसने कौरन एक कौजी इस्ता भेजा. पुर्तगाली हरा दिये गये. उनकी हुगली की काठियाँ गिरा दी गई. उनके जहाज जला ढाले गये. दिन्दुस्तान में उनकी रियासत जन्त करली गई श्रीर पुर्तगालियों को कैद करके शागरे पहुँचा दिया गया. बहद शाज मिनत करने के बाद श्रीर इस बादे पर कि शाइन्दा वे दिन्दुस्तान की जनता के साथ कभी गुस्ताखी से पेश न

البوكوك نے كنارے كنارے أثر كى طرف بوهتر سن 1506ع ميں كوآ پر قباعة كرليا . هوتے هوتے سن 1510ع ميں كوآ پر قباعة كرليا . هوتے هوتے سن 1500ع ميں پرتكاليوں كا كاكيت كے راجہ كے ساتھ كچھ جهكوا هوگيا جس كو لوت ايا . صوف 12 سال پہلے إن پردنسيوں پر مهربائى كرنے كا يهوا الله زموران كو يه پهل الله الله الله عدد برابر پرتكالى اپنى حكومت برهاتے رهے اور سو سوا سو سال كے اندر وے منكلور كوچن كا لنكا ديو كوآ بمبئى كے تابو اور فيكاپتم كے مالك بن هيئي .

پرتگالیوں کی اِس سے کی تجارت کی دو باتیں خاصطور پر جائیے قابل ھیں۔۔۔ایک یہ کہ اُن لوگرں کے کچھ جہار بھارت کے پچھمی اور پورہی کنارے پر برابر گرومتے رہے اور کسی ھی بھارتیہ جہاز کو پاس سے نکلتے ھوئے دیکھکر اُسے پکڑ کر لوق لیتے تھے، کبھی کبھی موقعہ پاکر یہ کنارے کی آبادیوں پر بھی دھاوا بول دیتے تھے، اُنھیں لوق لیتے تھے اور موقعہ پاکر وھاں کے جوان مرد اور عورتوں کو غظم بناکر پکڑ لے جاتے تھے اور یورپ کے بازاروں میں غظم بناکر پکڑ لے جاتے تھے اور دوسرے ملکوں میں بیچتے تھے ، دوسرے ملکوں میں غظم بھرکر لاتے تھے اور بھارت کے بازاروں میں غلام بھرکر لاتے تھے اور بھارت کے بازاروں میں اُنھیں بیچتے تھے۔

بھارت کے جن حصوں پر پرتگالیوں کا تبضہ موگیا تھا وھاں کی جنتا کے ساتھ شروع دن سے ھی اِن لوگوں کا ہرتاؤ بےدن طالمانہ تھا ۔ یہ لوگ کثر قسم کے عیسائی تھے اور جنتا کو زہردستی عیسائی بنا لینا وے اپنا منہی فرض سمجھتے تھے ۔ گوآ میں اُنھوں نے اپنی غیر عیسائی پرجا کو پہر کر اور اُنھیں لانھب کہمر مار ڈالنے اور زندہ جلا دینے کے لئے ایک عدالت قایم کو رکھی تھی جسے 'انکوئیزیشن' کہتے تھے ، اس لئے آج تک گوآ کی زیادہ تر آیادی عیسائی ھے ۔ اپنی ھندستانی رعایا کی بہتری کے لئے پرنگالیوں نے کبھی کوئی قدم تہیں اُٹھایا ۔

سترهویں صدی کے شروع میں پرنگالیوں کی تجارت بنگال کی اور پہیلنے لگی مطالعت مائی حکومت قایم نہیں هوئی' لیکن وهان بھی وهی لوت ماز' وهی زیادتیاں' وهی غلم اور باندیوں کا ریاپار چل پڑا ، شاهجهاں اُسوتت دای کے تخت پر تھا ، اس کے کائوں تک پرنگالیوں کی شکایت پہونچی ، اس نے نورا ایک نوجی دسته بهیجا ، پرتگالی هرا دئے گئے ، اُن کی هکلی کی کوئهیاں گرا دی گئیں ، اُن کے جہاز جا دالے گئی ، هندستان میں اُن کی ریاست ضبط کرلی گئی اور پرتگالیوں کو قید کر کے آگرہ پہونچا دیا گیا ، بیت اور منت کرنے کے بعد اور اس وعدہ پر که آئندہ وے آلزو منت کرنے کے بعد اور اس وعدہ پر که آئندہ وے هندستان کی جنتا کے ساتھ کبھی گستانی سے پیش نه

मि शास्त्राहाँ ने बन्हें गोआ, वमन और द्यु में बने बहुने की इजाजत देवी. भारत के बस बदार बादशाह की . प्या भवसंसाहत का दिन्दुस्तान की जनता को आज यह बब्सा मिल रहा है

नारत से पुर्तेगालियों की सत्ता के मिट जाने का सबव

बवारे हुए एक प्रतंगाली लेखक लिखता है-

"पुर्तेनाल निवासियों ने एक हाथ में तलवार श्रीर दूसरे द्याथ में सलीब (कास) लेकर भारत में प्रवेश किया. लेकिन जय छाई यहाँ बहुत क्यादा सोना नकर आया तो उन्होंने सलीय को अलग रखकर उस हाथ से अपनी जेवों भरनी शुरू कर दीं और जब चनकी जेवें इतनी भारी हो गई कि बै चन्हें एक हाथ से न संभाज सके तो उन्होंने दूसरे हाथ

से भी तलबार फेंक दी."

क्षेकिन आज ऐसा महसूस् होता है कि उन्होंने अपनी बह जंग लगी तलबार फिर से अपने हाथ में ले ली है. लेकिन हम एस सालाजार की सरकार को यक्तीन दिलाना चाहते हैं कि शाहजहाँ के बन्नत से जमना का जाने कितना पानी समन्दर की तरफ जा चुका. आज 1955 में हिन्दुस्तान की आजाद क्रीम इस बात को कभी ग्वारा नहीं कर सकती कि प्रतंगाल की बहरी और हैवानी हुकूमत यहाँ एक दिन भी क्यादा ठहरे. सम्राट शाहजहाँ ने अपनी कीलादी हकूमत से प्रतेगालियों की ताकत को खत्म किया. हम बाज बहिंसा भीर सत्याप्रह से उन नतीजों को दोहराना चाहते हैं हैं भोले शाहजहाँ को क्या मालुम था कि उसके रहम की क्रीमत आज उसके देश वालों को अपना खून बहा कर चुकानी पढ़ेगी.

महात्मा गाँधी ने सन् 1946 में गोबा की बाजादी की हिमायत में कहा था कि गान्मा जल्द से जल्द आजाद हिन्दुस्तान का हिस्सा बनेगां, वह हिन्दुस्तान का एक जुज है और इसका अलग 'रहना, हमारी गैरियत को एक तकाजा है.

हमें अफ़सोस इस बात का है कि इंगलिस्तान की सरकार पुर्तगालियों की हिमायत में ब्यान शाया करने में शर्म महसूस नहीं करती. वे पूर्तगालियों के साथ अपने अहदनामे की हमें थाद दिलाते हैं और चाहते हैं कि उस सुलहनामे की शतों को मानते हुए इम अपने मुल्क के एक हिस्से पर पुर्तगालियों की दक्सत कायम रहने दें. बजीर आजम नेहरू ने हिकारत के साथ इससे इन्कार कर दिया. पुर्तगालियों के धर्म के बहाने का पोप ने पदी फाश कर दिया. सुलद्द की आज काई सूरत नहीं सिवाय इसके कि प्रतेगाली गोंका खाली करें.

16 अगस्त को पालिमेंट में अपना ज्यान देते हुए पंडित नेहरू ने फ्रमाया कि पुतुमाल में कुछ ऐसी ताक़तें काम कर रही हैं जो यह चाइती हैं कि गोबा खाली कर दिया जाये. कर्हें विश्वास है कि यह ताकर्ते जोर पकड़ेंगी और बहुत ज्ल्द पुर्तगाली गोष्मा खाली कर देंगे. अगर ऐसा होता है सो ठीफ है बनो हिन्द्रस्तान की जनता ने यह फैसला कर क्षिया है कि बह अहिंसा और सत्यागह के वारिये पुर्तगालियों

की गोचा से निकाल कर ही वस लेगी.

17-8-55 -वि. ना. पश्चि ين كي شاعيم في أو العن في العن اور ديو مين بلي رها عي وارس ميس " مارك كر أس أدار ياتقاء كي أس والساحي هندستان کی بهنتا کوسی یه بداء مل رها هـ.

مهارت م پرنگاليوں كى ستا كے مث جائے كا عبب بتاتے

رئے ایک پرتکائی ایکھک انہتا ہے۔

27رد ار دوسرے ماتھ میں تلوار اور دوسرے ماتھ ين سلهب (كرأس) لهكر بهارت مين پرويش كيا . ليكن جب نهیں یہاں بہت زیادہ سونا نظر آیا تو اُنھوں نے سایب کو الگ ایکر اس مان سے آپنی جیس بھرنی شروع کردیں اور جب ن کی جیبھی اتنی بھاری ہو کئیں که رے انہیں ایک ھاتھ سے ناء لنبهال سكنے تو أنهوں لے دوسرے هاته سے بعی تلوار پهينك دى." لهكن آب أيسا محسوس هوتا هے كه أنهوں نے اپنی وہ نگ لکی تلوار بھر سے اپنے ھاتھ میں لے لی ھے ، لیکن ھم آس الزار کی سرکار کو یقین دلانا چاهیے هیں که شاهجهاں کے رقت ے جینا کا جائے کتا پانی سندر کی طرف جا چکا۔ آج 1955 میں هندستان کی آزاد قوم اس بات کو کبھی گوارا فہیں کر سعتی که پرتکال کی وهشی اور حیوانی حکومت یهال ایک دن بھی زیادہ تھورے ، سمرات شاھجہاں نے اپنی نولادی عكومت سع ورتكاليوں كى طاقت كو ختم كيا . هم أَج اهلسا اور ستیاکرہ سے اُن تتیجوں کو دھرانا چاھتے ھیں . بھولے شاهتجهاں کو کیا معلوم تھا کہ اس کے رحم کی قیمت آبے اس کے دیعی والوں کو اینا خوں بہا کر چکانی یزیکی .

مناتما کائٹھی لے سن 1946 میں گوآ کی آزادی کی حمایت میں کیا تھا که گوا جاد سے جاد آزاد مندستان کا حصہ بنے كا وه هندستان كا أيك جز هم أور أس كا الك رهنا هماري

غيريت كر أيك تقاضه هـ.

همیں انسوس اِس بات کا هے که انگلستان کی سرکار پرتکالیوں کی حمایت میں بیان شائع کرنے میں شرم محسوس نہیں کرتی ۔ وے پرتکالیوں کے سانھ آپنے عہددامہ کی ہمیں یاد دالتے هیں اور چاهتے هیں که اس صلحنامه کی شرطیں کو مانتہ ہوئے ہم اپنے ملک کے ایک حصہ پر پرتکالھوں کی حکومت قایم رہنے دیں ، وزیر آعظم نہرو نے حقارت کے ساتھ اس سے اِنکار کیا . پرتگالیوں کے دھرم کے بہائے کا پوپ نے پردہ فاعی کردیا . مانے کی آج کوئی صورت نہیں سوائے اس کے که درتکالی کوا خالی ترین .

16 أكست دو بازليمات مين أينا بيان ديته هولم بندت نہرو نے یہ فرمایا که پونگال میں کچھ ایسی طانتیں کام کر رهی هیں جو یہ چاهتی هیں که گرآ خالی کر دیا جائے ، اُنہیں رشراس هے که یه طاحتیں زور پکرینگی اور بہت جلد پرتگالی كرا خالى كر دين كي. اكر أيسا هوتا هے تو تهيك هے ورث مندستان کی جنتا نے یہ نیصلہ کر لیا ہے که وہ اهاسا اور ستیاگرہ

کے ذریعہ پرتکالیوں کو گوا سے نکال کر ھی دم لیکی ،

सांस्कृतिक साहित्य

سادسكوقك ساهتيه

हजरत मोहम्मद श्रीर इसलाम

लेखक-परिडत सुन्दरलाल, मूल्य-तीन रूपया इसलाम के पैगम्बर के सम्बन्ध में भारतीय भाषाओं में इस से मुन्दर कोई दूसरी पुस्तक नहीं

हजरत ईसा और ईसाई धर्म

लेखक-पन्डित सुन्द्रलाल, मूल्य-डेढ़ रूपया महात्मा जरथुस्त्र ऋौर ईरानी संस्कृति

लेखक-विश्वमभरनाथ पांडे, कीनत-दो रुपया यहूदी धर्भ ऋौर साभी संस्कृति

लेखक-विश्वमभरनाथ पांडे, क्षीमत-दो करया

प्राचीन निस्न की सभ्यतः और संस्कृति

लेखक-विश्वमभरनाथ पांडे, क्रीमत-दो ह या

सुमेर बाबुल ऋौर ऋसुरिया की प्राचीन संस्कृति

लेखक-विश्वमभरनाथ पांडे, कीमत-दो रुग्या

प्राचीन यूनानी सभ्यता ऋर मंस्कृति

लेखक-विश्वमभरनाथ पांडे. क्रीमत-दे। रुपया

गंगा से गोमती तक

(प्रगतिशील कहानी संग्रह)

लेखर-श्री मुजीव रिजवी, क्रीमत-दो रुपया

त्राग और आँस्

(भावपूनं सामाजिक कहानियाँ)

लेखक-डाक्टर श्रस्तर हुसन रायपुरी, क्रीमत-डेढ़ रूपया

. कुरान श्रीर धार्मिक मतभेद

लेखक-भौलाना श्रवुलकलाम श्राजाद, क्रीमत-डेद रुपया

भंकार

(प्रगतिशील कविताओं का संप्रह) लेखक--रघुरति सहाय फिराक्र, क्रीमत - तीन रुपया حضرت متحمد أور إملام

موليه-تين روبيه ليه ک-يندت سندر ال

اِسلام کے پینمار کے سمبادی میں بنارتیہ بھاشاؤں میں اِس سے سدر کوئی دوسری یستک نهیی

حضرت عيسي اور عدسائي دهرم ليك بندت سندرال

مهاقها زر تیستر اور ایرانی سنسکرقی لیهک روپیه

یهون دهوم آور ساسی سنستوتی لیکنک شرمهر نمانه باندے میمت دریہ

وراچین مصر کی سبنیت اور سنسکرتی لیکیک سرشرسهر نابع پاندے نیست دو رویه

سببر نادل اور آسوریا ئی براچین سنسکرتی ليكهك -- رشومهه نانه پاندے تيمت-دو روپه

پراچین برنانی سبنرها اور سنسکرقی اینکوریه اینکوریه

گاگا سے گرمتی تک

(پرگتی شیل کهانی سنتوه) در محصب رضهی و قیمت - در روپیه ليکهک - شری منجيب رضوی "

أک اور انسو

(بهاؤپورن سمآجک کهانیال)

لهمك ستانتر أختر حسين رائه پورى فيست قيره رويه

قران اور ن مارمن مع بهید لیکهک مران ابرکلم آزاد تیمت قیمت تیزه زوپیه

جهنگار (پرگتیشیل کربنازی کا سنکره)

لیکھک سرکروپتی سائے فراق " قیدست ستین روپیم

मिलने का पता

ملنے کا یته

कानी कलचर सोसायटी उँगै कलचर सोसायटी

145 متهى كنج' الهآباد) अभी باله الهاباد) 14 मुट्टीगंज, इलाहाबाद

هندی گور

الهر پر هر طرح کی کتابیں ملنے ا ایک برا کیندر__یاتهک هندی اں و' انگریزی کی من پسند کتابوں کے ئے همبی لکھیں.

هماري نئي كتابيل

مهاتها کاندهی کی وصیت (عندی اور آردو میں)

لیکھکے۔۔ گاندھی وال کے مانے جانے تھے۔ ردوان: شری منظر علی سوخته صفحے 225 قیمت دو رویع

كاندهي بابا (بحور کے لئے بہت داھیسپ کتاب) ليكهكا—قىسية زيدى بهود كا—پندت جوانفر ال نهرو

موتًا كَانَدُ مُوتًا تَانُبُ بهت سي رنگين تصويريس دأم دو روييه

يندت سندرلال جي کي لکھي کتابيس

كيتا اور قران 275 صفحے كام تعالى رويه

هندو مسلم ایکتا 100 منصد دام باره آنے

مہاتما کاندھی کے بلیدان سے سبق قیمت بار آلے

پنجاب همیر کیا سکوانا هے

بنگال اور آس سے سبق تیت در آنے .

هندستاني تلجر سوسائتي

115 متهى كنب العآباد

कलचर पर हर तरह कीं कितावें मिलने का एक बड़ी केन्द्र—पाठक हिन्दीं, उर्दू, अंग्रेजीं की अपनी मन-पसन्द किताबीं के लिये हमें लिखें।

हमारी नई किताबें

महात्मा गाम्धी की वसीयत

(हिन्दी और उद् में) लेखक-गान्धीवाद के माने जाने विद्वान : श्री मंजर श्रली सोस्वा सके 225, क्रीमत दो रुप्रका

गान्धी बाबा

(बच्चों के लिये बहुत दिलचस्य किताब) लेखिका-कुदसिया जैदी भूमिका-पन्डित जवाहरलाल नेहरू मोटा काराज, मोटा टाइप, बहुत-सी रंगीन तसवीरें दाम दो रुपया

पंडित सुन्दरलाल जी की लिखी किताने

गीता और करान

275 सके, दाम ढाई रूपया

हिन्दू मुसलिम एकता

100 सफे, दाम बारह आने

महात्मा गान्धी के बलिदान से सबक्र

क्रीमत बारह आन

पंजाब हमें क्या सिखाता है

क़ीमत चार थाने

वंगाल ऋौर उससे सबक्र

क़ीमत दो आने

हिन्दुस्ताना कलचर सांसायटी

145 मुट्टोगंज इलाहाबाद

براحات الم Printed and Published by Suresh Randicki, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.



इस नम्बर के खास लेख ह्या कि ड भूम भू

रहिनया की तालीम और तालीम देने वाले اور تعلیم اور تعلیم دینے والے

—डाक्टर भगवानदास

سدانفر بهعوان داس

श्रक्तवरी राज के उसल

ائیری راج کے اُصول

---डाक्टर ताराचन्द

अत्रसत्रां सदी के एक ककीर की डायरी النيسويون مدي کے ایک فتيرکي ڈاپري

-पं डत सुन्दरलाल

-يندت سندر لأل

नर्रागस के फूल (कहानी)

مرکس کے پہول (دہانی)

-विश्वम्भरनाथ पांडे

---وشومهم قانه پائد

एक आदर्श चीनी मजद्र लड़की

ایک آدرش چینی مزدور لزکی

---श्रीमती प्रभा एम, ए.

-شريمتي پريها ايم . اے .

इसके श्रलावा देस बिदेस के मसलों पर हमारी शय में जरूरी सम्पादकी नोट دیس بدیس کے مثلوں پر هماری رائے میں ضروری سمیادکی نوے

बानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद 🕍 अंगि अं



NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

Editorial Board

Dr. Tara Chand M.A., D. Phil. (Oxon)
Mahatma Bhagwan Din
Dr. Syed Mahmud, M.A., Ph.D., Bar-at-Law
Pandit Sundarlal
Bishambhar Nath Pande

Editor-in-Charge

Bishambhar Nath Pande

Asst. Editors

Suresh Rambhai Mujib Rizvi

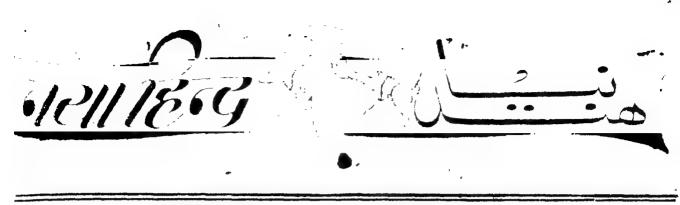
Annual Subscription

Inland Rs. 6/-Foreign Rs. 10/-Single Copy As. /10/- only

Can be had from

Manager, NAYA HIND

145, MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3.



जिल्द 20 بيد नम्बर 3

من الماري المالية ملى

29 SEP 1956

सितम्बर 1955 भन्न

हिन्दुस्तानां कलचर सोसायटी द्वाराणां अवित अवित १४६० १४५ १४५

सितम्बर 1955

विया किस से	सका कां		صا	س ہے	کیا ک
1. दुनिया की तालीम और तालीम देने वाले —डाक्टर मगवानवास	•••	131	•••	دلیا کی تعلیم اور تعلیم دیلی والی ــــــــــــــــــــــــــــــــــــ	.1
2. धक्रवरी राज के उद्भल		- 4 -		ائبری راج کے آصول ڈاکٹر تارا چند	.2
-डाक्टर ताराचन्द 8. मुहम्मद साहब की कुछ हदीसे	•••	144	***	مصد عامب کی کچ حدیثیں	.3
—चतुवादक भी मुजीव रिजवी 4. उसीसवीं सदी के एक फ्रकीर की डायरी	•••	158	***	سانورادک مجهب رضوی	
विश्वासवा सदा के एक प्रकार का डायरा वित सुन्दरलाल	•••	162	***	انیسویں مدی کے ایک فقیر کی ڈایری ینڈٹ سندر ال	.4
⁵ · नरगिस के फूल (कहानी)		46		ترکس کے پھول (کہائی)	.5
—विश्वनभरनाथ पांडे	***	171	***	رشوميهر قاته ياقنت	
6. एक आदर्श चीनी मज़दूर ताड्की	***	179	·	ایک آدرش چینی مزدرر لزکی	.6
7. इब कतावें		186	•••	سسشریدتی پربها أیم . أه . كچه كتابین	7
8. इमारी राय	•••	188	•••	هماری رائے	
सत्ता भौर शक्ति नहीं, सेवा भौर स्थाग- विश्वम्भरनाय पांडे.				ستا اور شکتی نهیں؛ سیوا اور تیاک وشومبهر ناته پانتسه .	

टा० सगवानवास

داکار بهکوان داس

पहले के लेखों में इमने सब धर्मों की बुनियादी एकता हे बारे में इन्ह मोटी मोटी पर जुनियादी बातों की चर्चा की है. अब इम यह देखना चाहते हैं कि आजकल के विद्वानों, साइंसदानों और तालीम और तालीम देने वालों के साथ इसका क्या सम्बन्ध है.

बच्चों की तालीम हमारे जीवन का बीज और उसकी ज़द होती है. जिसे हम सभ्यता कहते हैं वह इस जीवन का फल और फल है. बोने बाला यदि अच्छे बीज बोएगा तो कसल काटने बाला अच्छे और मीठे फल पाएगा. वह अगर कड़वे और जहरीले बीज बोएगा तो काटने वालों को फल भी कड़वे और जहरीले मिलेंगे, हमारे बच्चों को पढ़ाने वाले ब्रध्यापक बीज बोने वाले हैं. वही मानव सभ्यता को बनाते हैं. वह हमारे बच्चों के दिलों और दिमारों में अच्छे बीज बो सकें इसके लिए आवश्यक है कि वह ख़ुद सच्चे अथीं में उस्ताद यानी ब्राह्मण हों, सच्चे मौलवी हों, सच्चे रव्बी हों. सच्चा ब्राह्मण वह जो ब्रह्म यानी ईश्वर में रहता हो. सच्चा मौलवी वह जो अपने मौला अस्ताह का सच्चा बंदा हो. यहूदी अपने पुरोहितों को रब्बी कहते हैं. सच्चा रब्बी वही है जो रब्ब यानी खुदा के हुकुम को सममे और उसके अनुसार चले. दूसरे धर्मों में भी ब्रह्मणों और मौलवियों के लिए जो शब्द आए हैं उनके भी इसी तरह के अर्थ हैं. सच्चे त्राक्षण को ईश्वर अल्लाह का मिशनरी या प्रचारक होना चाहिए, शैतान का तनख्वाहदार नौकर नहीं होना चाहिए, क्योंकि शैतान अल्लाह का दुशमन है.

यदि सन् 1914-18 के पहले महायुद्ध से पहले योरप के अध्यापकों, साइंसदानों, पादरियों और विद्वानों ने अपना कर्तन्य पालन किया होता और अपने अपने देश के बच्चों को नेकी की तालीम दी होती तो उस महायुद्ध का अवसर ही न आता. यदि उस महायुद्ध के बाद भी योरप के इन महासों ने अपने अपने देशों के श्वत्रियों यानी जंगजू शासकों भीर वैश्यों यानी धन लोलुप उद्योगिपयों के हाथ अपनी आत्माओं को न बेचा होता और विद्या, धर्म और साईस का इस तरह दुहपयोग होने न दिया होता, यदि वे मिलकर लदे हो गए होते और अपने आत्मवल, धर्मबल और सत्यवल से उन्होंने अपने अपने यहाँ के बहके हुए क्षत्रियों भीर वैश्यों की शैवानियत का ग्रकावला किया होता तो इमारे अंदर का शैतान जरूर हार जाता. यदि सब देशों में پہلے کے لیکھوں میں هم نے سب دهرموں کی بنیادی ایکتا کے بارے میں کچے موٹی موٹی پر بنیادی باترں کی چرچا کی ھے، اب مم یہ دیمھنا چاھتے ھیں که آجال کے ودوانوں سائنسدائوں ' اور تملیم اور تعلیم دینے والس کے ساتھ اِس کا کیا سيباده في

بچوں کی تعلیم همارے جیون کا بیبے اور اُس کی جر هوتی ھے . جسے هم سبهیتا کہتے هیں وہ اِس جیرن کا پہول اور پال ه. بولم والأيدى أجم بيبم بوئيًا تو فصل كائلم والا أجم أور ميته يهل يائيكا . ولا أكر كروم أور زهريل بيبم بوئمكا تو كائل والس کو يهل بهي کورے اور زهريلے ملينکے . همارے بحصوں کو پڑھائے والے ادھیاپک بیم ہونے والے ھیں ، وھی مانو سبھیتا کو ہلاتے ھیں ، وہ ھمارے بچوں کے دلوں اور دماغوں میں اچھے بھم ہو سکیں اِس کے لئے آوشیک ہے کہ وہ خود سجے ارتہوں مهن أستاد يعني براهس هرن سجے مولوی هون سجے رہی هوں . سچا براهس ولا جو برهم يعنى أيشور ميں رهنا هو . سچا مولوى ولا جو أيني مولا الله كا سجا بندة هو . يهردي أيني يروهتون کو رہی کہتے ہیں ، سچا رہی وہی ہے جو رب یعنی خدا کے حکم کو سمجھے اور اُس کے انوسار چلے . دوسرے دهرموں میں بھی براھمنوں اور مولویوں کے لئے جو شبد آئے ھیں اُن کے بھی اِسی طرح کے ارته هیں . سجے براهمن کو ایشور الله کا مشنری يا يرچارك هونا چاهنه شيطان كا تنظواه دار نوكر نهيس هونا چاهني كيونه شيطان الله كا دشس هي .

یدی سن 18-1914 کے پہلے مہایدہ سے پہلے ہورپ کے ادههایکوں' سائنسدانوں' یادریوں اور ودوانوں نے اینا کرتویہ پالی کیا هوتا اور اپنے اپنے دیش کے بچوں کو نیکی کی تعلیم دی هرتی تو اُس مهایده کا آوسر هی نه آتا، یدی اُس مهایده کے بعد بھی یورپ کے اِن براھماں نے اپنے اپنے دیشوں کے چھتریوں يعلى جنكجو شاسكون أور ويشيون يعنى دهن لولب أديوك یتیوں کے عاتم اپنی آنماؤں کو نے بیجا ہوتا اور ودیا دھرم اور سائلس کا اِس طرح دورپیوگ هونے نے دیا۔ هوتا کی وے ملکر كهزيد هوگلد هرت اور اين آنهبل؛ دهرم بل اور ستيه بل سے اُنہوں نے اپنے اپنے یہاں کے بیکے هوئے چھتریوں أور ویشیرس کی شیطانیت کا مقابله کیا هوتا تو هماری أندر كا شيطان ضرور هار جانا . يدى سب ديهون مين

स्य तरह के सब लोग मिलकर युद्ध के खिलाफ खड़े हो गए होते और अपनी आक्षा की आवाज पर युद्ध में किसी वरह का भी सहयोग देने से साफ इंकार करते तो दुनिया सूचरे महायुद्ध के भयंकर कृत्ले आम से बच गई होती. पर इसके खिलाक थोड़े से मुवारिक और सराहनीय अपवादों को जोड़ कर लगभग सब देशों में विद्वानों, अध्यापकों, पादियों और साइंसदानों ने प्रेम के खिलाक नकरत का, शांति के खिलाक युद्ध का और ईश्वर के खिलाक शैतान का साथ दिया.

इन सराह्नीय अपवादों में एक लास नाम श्री वरट्रेंड-रखल का है. एक सक्चे साइंसदां और दार्शनिक की तरह उन्होंने जेल जाना स्वीकार किया पर युद्ध में सहयोग देना या उसका समर्थन करना स्वीकार नहीं किया. दुनिया के सबसे बड़े साइंसदां डा० आइंसटीन ने भी सन् 1932 में एक युद्ध विरोधी एसोसियेशन क्रायम की. अपनी सच्चाई के कारण उन्हें अपने देश से जिलावतन होना पड़ा. मो. एक. ई. आर्मस्ट्रोंग ने "नेचर" नाम की पत्रिका में, दुनिया के साईसदानों की सोई हुई आत्मा को जगाने के लिए लिखा था:—

"सौ बरस की साइंस की उन्नति का यह नतीजा हुन्या है कि जिन बातों का असली महत्व कुन्न नहीं है उनमें हमारी जानकारी राजव की बढ़ गई है. पर इन सौ बरस ने हमें उन जीजों की बाबत बहुत कम जानकारी दी है जिन से हमारा सबका सचमुच पेट भरे और हम मिलकर शांति के साथ रह सकें और एक दूसरे को सह सकें. एक दूसरे को सह सकें एक दूसरे को से कार खुश होना और एक सच्चे ईसाई की तरह सबके साथ प्रेम और मित्रता निवाहना तो और भी दूर की बात है.......भविष्य में साइंस के मैदान में काम करने बाला कोई भी आदमी तब ही साइंस का सच्चा सेवक कहता सकेगा जब बह सारे मानव समाज की संवा के खारेए सबका भला करके अपने बजूद को सार्थक करे."

सच्चे ब्राह्मण की यही तारीक है. ब्राह्मण, अध्यापक, हस्ताद, मौलवी या साइंसदां केवल अपने लोगों की दिमागी जानकारी को ही नहीं बढ़ाता, वह उनके सदाचार का, हनके आपसी सम्बन्धों को, उनके घरेलू और शहरी जीवन को और उनकी आत्मा को भी ऊँचा लेजता है, जीवन के हर काम और हर महकमें में वह लोगों की सच्ची रहनुमाई करता है.

पडिनवरा के प्रो. कू ने दिसम्बर सन् 1931 में 'साइंस और मानव समाज' पर बालते हुए कहा था:-

"आइमी के अंदर के लोभ और लालच के कारण साइंस का दुवपयोग करके उससे आदमी की गंदी और اِس طَرَح کے سب لوگ ملکر یدھ کے خلاف کھرے مرکثہ ہوئے اُور اُپئی اُتما کی آراز پر یدھ میں کسی طرح کا بھی سبھوگ دینے سے صاف اِنکار کرتے تو دنیا دوسرے آمہایدھ کے بھینکر قتل عام سے بچ گئی ہوتی ، پر اِس کے خلاف تھوڑے سے مبارک اور سراھنیہ اپرادوں کو چھوڑکر لگ بھگ سب دیھوں میں ودوانوں ادھیاپکوں اور سائلسدانوں نے پریم کے خلاف نغرت کا شائتی کے خلاف نغرت کا شائتی کے خلاف نغرت کا اور ایشور کے خلاف شیطان کا ساتھ دیا ،

A CONTRACT OF THE PROPERTY OF

اِن سراهنیم اپوادوں میں ایک خاص نام شری بر ترینت رسل کا ھے۔ ایک سجے سائنسداں اور دارشنک کی طرح انہوں نے جیل جانا سوئیکار کیا پر یدھ میں سپھوگ دینا یا اُس کا سرتین کونا سوئیکار نہیں کیا ۔ دنیا کے سب سے بڑے سائنسداں تازر آئنسٹائن نے بھی سن 1932 میں ایک یدھ ورودھی ایسوسیٹیھن قایم کی ۔ اپنی سجائی کے کارن آنہیں اپنے دیش سے جلوطن ھونا پڑا ۔ پرونیسر ایچ ۔ ای ، آرماسترانگ نے انہیں کی سرئی ہوئی آنا کو جگانے کے لئے انہا تھا :۔۔

''سو ہرس کی سائنس کی اُننتی کا یہ نتیجہ ہوا ہے کہ جن ہاتوں کا اصلی مہتو کچھ نہیں ہے اُن میں ہماری جانکاری غضب کی ہتھ گئی ہے ۔ پر اِن سو برس نے همیں اُن چیزوں کی باہت بہت کم جانکاری دی ہے جن سے همارا سب کا سیے میچ پیت بھرے اور هم ملکر شانتی کے ساتھ رہ سکیں اور ایک درسرے کو سیم سکیں ، ایک دوسرے کو دیکھر خوش تواا اور ایک ایک سچھے عیسائی کی طرح سب کے ساتھ پریم اور مترتا نباعنا تو اور بھی دور کی بات ہے۔۔۔۔۔ بھرشیہ میں سائنس کے میدان تو اور بھی دور کی بات ہے۔۔۔۔۔ بھرشیہ میں سائنس کے میدان سیرک کہلا سکیگا جب وہ سارے مائو سماے کی سیوا کے ضربعہ سیرک کہلا سکیگا جب وہ سارے مائو سماے کی سیوا کے ضربعہ سیرک کہلا سکیگا جب وہ سارے مائو سماے کی سیوا

سچے ہراهس کی یہی تعریف هے ، براهس ادهیاپک استان مولوی یا سائنسدان کیول اپنے لوگوں کی دماغی جانکاری کو هی نبیس برهانا وہ اُن کے سداچار کو اُن کے آپسی سبندهوں کو اُن کے گهریلو اور شہری جیون کو اور اُن کی اَنا کو یہی اُونچا لیجانا هے جیون کے هر کام اور هر محکمے میں وہ لوگوں کی سچی رهنمائی کرتا هے ۔

ایڈنبرا کے پرونیسر کرو نے دسببر سن 1931 میں اسائنس اور مانو سماے' پر بولقے ہوئے کیا تھا:۔۔

"آدمی کے اندر کے لوبھ اور لالج کے کارن سائنس دوریمیگ کوکے آس سے آدمی کی گندی اور

1. . . .

बुरी इच्छाओं को पूरा करने का काम सिया ना रहा है..... आजकल की सबसे बढ़ी समस्या यह नहीं है कि आदमी आव्मी में मादी चीजों का बैठ विठाव या बटबारा कैसे किया जाय, बल्कि सबसे बड़ी समस्या यह है कि लोगों की आत्माओं के बीच में बैठ विठाव कैसे किया जाय, दुनिया में इस समय इतना ज्ञान मीजूद है और इतनी शक्ति भी है कि जिससे सारे मातव समाज को फिर से ठीक ह्म दिया जा सकता है. पर यह ठीक रूप देने की इच्छा श्रभी हममें नहीं है. हमारे सामने कोई ऐसा आदर्श नहीं है जिसकी तरफ हम सब चलें. जिंदगी को कैसे क्रायम रखा जावे इसके तरीकों को तो हम थोड़ा बहुत जानते हैं, पर जिन्दगी कैसे बसर की जावे या किस बात के लिए जिया जावे यह इस नहीं जानते. साईस आजकल आद्मी की धन लोलुपता और शक्ति लोलुपता की गुलाम बन गई है. वह अब जालिमों के हाथ का एक हथियार है. हमें फिर से यह पता लगाना होगा कि मनुष्य जाति का असली भला किस बात में है और फिर यह देखना होगा कि साइस से हमें जो शक्ति मिलती है वह उसी मतलब को पूरा करने के लिए काम में लाई जावे. ज्ञान ने प्रेम से अलग होकर दुनिया में नफरत और दुख की आग भड़का दी है, अब हमें एक नई नैतिक यानी इखलाक्री निगाह की अरूरत है. यह निगाइ इमें कहाँ से मिले ?"

जो 'निगाह' प्रोफेसर क् चाह रहे हैं वह हमें केवल उस व्यापक यानी आलमगीर वैज्ञानिक धर्म से ही मिल सकती है जो दुनिया के सब धर्मी की जान है, उसी से हमें यह पता चल सकता है कि 'सारे मानव समाज का भला किस बात में हैं', 'हम किस चीज के लिए जिंदा रहें', 'किस आदर्श की तरफ बढ़ें', 'कैसे जीएँ', 'जीवन का असली मतल्ब और रारज क्या है' और साइंस के मैदान में काम करने वाला समाज की सेवा करके अपने जीवन को किस तरह सार्थक करे. इसके लिए एक ठीक योजना के साथ समाज का फिर से संगठन करना जरूरी है. हम में 'नेक इरादों या इच्छाओं की कमी' इसलिए है क्योंकि हर नई पीढ़ी के लोग धन लोलपता और शहबत परस्ती में ही पैदा होते हैं और उसी में पलते और तालीम पाते हैं. उन्हें आत्मवल और मानव प्रेम की तालीम दी ही नहीं जाती. हमारी सारी वालीम बिलकुल गलत और उलटी है. उसी से हमारे जीवन के सब सोते जहरीले हो जाते हैं. यदि इस बाहरी युद्ध को मिटाना चाहते हैं तो पहले हमें अपनी गिरी हुई प्रकृत्तियों, अपने अन्दर की शैतानियत से युद्ध शुरू करना होगा. उसके बाद इस बाहर की शक्तियों पर क़ाबू पा सकेंगे. यह रास्ता बहुत ही ठीक और अमली रास्ता है. यही सच्चा रास्ता है. कच्चों की ठीक ठीक तालीम ही सारी मानव

بري اِچاون کو پررا کرنے کا کام لها جارها هـ.... اُجفال کي جاب تع بری سبسیا یہ تہیں ہے که آدمی آدمی میں مادبی چیزوں کا بيتم بتهاي يا بتواره كيسم كيا جائم الكه سب سه بع بوي سمسها يه هـ که لوگی کی آنداوں کے بیچ میں بیٹم بٹیاؤ کیسے کیا جائے. دنھا میں اِس سم اتنا گیاں موجود ہے اور اِتلی شکتی بھی ہے که جس سے سارے مالو سماج کو پھر سے ٹھیک روپ دیا جاسکتا ہے. پر یه الهیک روپ دیلے کی اِچها ابھی هم میں نہیں ہے . همارے سامنے کوئی ایسا آدرش نہیں ہے جس کی طرف ہم سب چلیں ، زندگی کو کیسے قایم رکھا جارے اِس کے طریقیں کو تو هم تهوراً بہت جانتے هيں ير زندگي كيسے بسر كي جارے يا کس بات کے لئے جیا جاوے یہ هم ثبین جائتے . سائنس آجکل آدمی کی دهن لولپتا اور شکتی لولپتا کی ظم بن گئی ھے وہ أب ظالموں كے هاتھ كا أيك هتيار هے . هميں يهر سے ية يته لكانا هوكا كه منشيه جاتي كا أملي بها كس بات مين هـ أور يهر يه ديكهنا هوكا كه سائنس سے هدين جو شكتي ملتى هے وہ اُسی مطلب کو یورا کرنے کے لئے کام میں لائی جارہ ، گیاں نے پریم سے الگ ہوکر دنیا میں نفرت اور دکھ کی آگ بھڑکا دى ها أب هين أيك نئى نيتك يمنى إخلاني نكاه كي ضرورت هے ، ية نكاه هدين كہاں سے ملے ؟ "

جوانگاه عرونيسر كرو چاه رهه هيل ولا هييل كهول أس ویاپک یعنی عالمگیر ویگیانک دهرم سے هی مل سکتی هے جو دنیا کے سب دھرموں کی جان ھے ' اُسی سے ھیں یہ ہتہ چل سکتا ہے کہ 'سارے مانو سداج کا بھلا کس بات میں ہے' الم کس چیز کے لئے زندہ رهیں اکس آدرش کی طرف برهیں "كهييم جيئن" 'جيون كا أصلى مطلب أور غرض كها هـ؛ أور سائنس کے میدان میں کام کرنے والا سماج کی سیوا کو کے اپنے جیوں کو کس طرح سارتھک کرے ، اِس کے لئے ایک ٹھیک پہچذا کے ساتھ سماہ کا پھر سے سنکاٹھن کرنا ضروری ہے ، ھم میں انیک إرادون يا أَلْ جَهارُنُ كَي كَمَيْ أَسِ لِنُهُ هَ كَيُونَكُمْ هُو نَتَى بِيرَهِي کے لوگ دھن لولیتا اور شہوت پرستی میں ھی پیدا ھوتے ھیں أور أسى ميں بلتے أور تعليم باتے هيں . أنهيں أتم بل أور ماثو یریم کی تعلیم دی هی نهیں جاتی . هماری ساری تعلیم بالكل غلط أور ألقي هے . أسى سے همارے جيبون كے سب صوت بعریلے هو جاتے هیں ، یدی هم باهری بده کو مثانا جامتے ھیں تو پہلے ھمیں اپنی گری ھوٹی پرررتیوں' اپنے اندر کی الماليت سے يدھ شروع كرنا هوكا اس كے بعد هم باهر كى المتيس در قابو يا سكين كم أن يه راسته بهت هي تهيك أور عملي راسته ه يهي سچا رأسته هي بچور كي تهيك تهيك تعليم هي ساري ماڻو

'5**5**`. r

आति के दितों और दिमारों को मोद कर ठीक रास्ते पर केना सकती है.

पिछले पच्चीस तीस बरस में दुनिया के अन्दर शान्ति जीर अमन बनाप रखने के लिए कई तहरीके चल चुकी हैं. इनमें एक जास तहरीक "बर्ल्ड क्रेजोशिप आफ फेल्स" है जो सन् 1933 में शिकागा (अमरीका) में ग्रुरू हुई. वर्ल्ड फेलोशिप, ओफ केल्स के मानी हैं—दुनिया के सब धमों का मिलाप. शिकागा में इस तहरीक की जो पहली सभा हुई थी उसकी बाबत कहा गया कि:—"सब धमों, नसलों और देशों के लोग इस सभा में आप थे...... उन्होंने मिलकर इंसान की आजकल की सब समस्याओं के रूहानी हल खोंजने की कोशिश की—वे समस्याएँ यह हैं; जंग, मतभेद के कारण एक दूसरे को तकलीकें पहुँचाना, पश्चपात, एक तरफ अन के अबार और दूसरी तरफ गरीबी, बेरोजगारी, राष्ट्रों राष्ट्रों में टक्करें, जहालत, नफरतें और एक दूसरे से डर."

इससे बहुत पहले सन् 1875 में न्यूयार्क में थियोसोकीकल सोसाइटी कायम हुई थी. इस सोसाइटी के तीन
मिक्स से खे खीर हैं. यह तीनों, इसमें कोई शक नहीं, सराहतीय है. वे यह हैं—(1) नसल, धम, मर्व, औरत, जात
और रंग के भेदमावों से ऊपर उठकर सारे मानव समाज
के ज्यापक भाईचारे का एक केन्द्र बनाना. (2) अलग
अलग धमों, अलग अलग दर्शन शाखों, और साइंस इन
सब को मिलाकर पदना और पदाना. (3) क़ुद्रत के उन
कानूनों का जो अभी, तक समम में नहीं आए और आदमी
के अन्दर की खिपी हुई शिकयों का पता लगाना. इन तीनों
बातों की रारज वही है यानी दुनिया की शान्ति और सब
की खुशहाली. थियोसोकीकल सोसाइटी का सदर दफ्तर
मदरास के पास अहियार में है और उसकी शाखें दुनिया के
पनास से ऊपर देशों में कायम हैं.

बहुत से देशों के बड़े बड़े शहरों में 'पार्लिमेंट्स आफ़ रिलिजन्स' यानी धर्मों की पार्लिमेंटें हो चुकी हैं. इनमें से भी पहली 1893 में शिकागो ही में हुई थी. इन सबका सक्कसद भी शान्ति कायम करना था.

सन् 1920 में लीग आफ नेशन्स कायम हुई जिसका मक्तसद था—"राष्ट्रों राष्ट्रों के बीच सहयोग को बढ़ाना और सब के बीच अमन कायम करना."

बहुत से देशों में साइंसदानों की पसोसिएशनें भी बन चुकी हैं. यह पशोसियेशन अब साइंस के 'इंसानी' पहलू पर यानी समाजी या इखलाकी पहलू पर अधिक घ्यान देने सगी हैं यानी इस बात पर कि साइंस का मनुष्य के मिले जुक्के समाजी जीवन के साथ क्या संबंध है. इस तरह के नेक साइंसदानों के लेखों में यह विचार अब आम तौर पर प्रगट किया जाता है कि साइंस अब इतनी तेजी से आगे ائی کے دانوں اور دماقوں کو مور کو ٹیک راسٹے پر لیجوا۔ بنے قد ۔

یچھے پچیس تیس برس میں دنیا کے الدر شائئی ارر یہ بائے برکھے کے لئے کئی تحریکیں چل چکی ھیں ، اِنمیں نے خاص تحریک ''ورلڈ نیلوشپ آف نیٹیس'' ہے جو برلڈ میں شکاگو (امریکٹ) میں شروع ھوئی ، ورلڈ بشپ آف نیٹیس کے معلی ھیں۔دنیا کے سب دھرموں بیپ شکا گو میں اِس تحریک کی جو پہلی سبها ھوئی تھی کی بابت کہا گیا گئے۔''سب دھرموں' نسلوں اور دیشوں کی بابت کہا گیا گئے۔''سب دھرموں' نسلوں اور دیشوں کی بابت کہا گیا گئے تھے… انہوں نے ملکر اِنسان کی می کی سب سمسیاؤں کے روحانی حل کھوجنے کی کرشش کی۔ مسیائیں یہ ھیں؛ جنگ' مت بھید کے کارن ایک دوسرے کو بنیں پہولچانا' پکشیات' ایک طرف دھن کے انبار اور سی طرف فریبی' بے روز گاری' راشڈروں راشڈورں میں تکریں' الت' فرتیں اور ایک دوسرے سے تر .''

اِس سے بہت پہلے سن 1875 میں نیودارک میں تیدوسونیکل سائٹی قایم ہوئی تھی ، اِس سوسائٹی کے نین مقصد اور ھیں . یہ تینوں اِسیوں کوئی شک نہیں سراھیلہ ن وہ یہ ھیں—(1) نسل دھرم مرد عورت جات رنگ کے بھید بھاؤں سے اُوپر اُٹھکر سارے مانو سماج کے رنگ بھائی چارے کا ایک کیندر بنانا . (2) الگ انگ مرس الگ انگ درشن شاسترون اور سائنس اِن سب ملا کر پڑھنا اور پڑھا تا . (3) قدرت کے اُن قانونوں کا ابھی تک سمجھ میں نہیں آنے اور اُدمی کے اندر کی ابھی تک سمجھ میں نہیں آنے اور اُدمی کے اندر کی عرض یعنی دئیا کی شائتی اور سب کی خرشحالی ، سونیکل سوسائٹی کا صدر دنتر مدراس کے پاس اُدیار میں سونیکل سوسائٹی کا صدر دنتر مدراس کے پاس اُدیار میں اور اُس کی شاخیں دئیا کے پچھاس سے اُرپر دیشوں قایم ھیں .

بہت سے دیشوں کے بڑے بڑے شہروں میں 'پارلیمینٹس اُف بنس' یعنی دھوموں کی پارلیمنٹیں ھو چکی ھیں ۔ اِنمیں بھی پہلی 1893 میں شکاگو ھی میں ھوئی تھی ، اِن سب قصد بھی شائتی قایم کونا تھا ،

سی 1920 میں لیگ آف نیشنس قایم ہوئی جس کا در تھاتا اور در تھاتا اور در اشتروں کے بیچ سہیوگ کو بڑھاتا اور در کے بیچ اس قایم کرنا ۔''

بہت سے دیشوں میں سائنسدانوں کی ایسوسیئشنیں بھی چکی ھیں ۔ یہ ایسوسیئیشن آب سائنس کے 'اِنسانی' پہلو مئی سملجی یا اِخلاقی پہلو پر ادھک دھیان دینے لگی یعنی اِس بات پر که سائنس کا منشیه کے ملے جلےسماجی ن کے ساتھ کیا سمبندھ ہے ۔ اِس طرح کے نیک سرائوں کے لیکھوں میں یہ وچار آب عام طرر پر ایک جاتا ہے که سائنس آب اِتنی تیزی سے آگے

ہوت گئی که سیاچار کا اور سائلس کا ساتھ چھوٹ گیا ۔ ھائیفت کے شہر کیلئٹ میں ایک انٹرنیشنل کونسل آف سائنٹفک یونینس فی جس کی ایک خاص کمیٹی سائلس اور مائو ساج کے پرسپر شبادھ پر ھے ۔

یہ سب کوششیں اِس لیّے نفول جا رھی ھیں کیو**ت**عہ سائنسدان ابھی تک اِسِ بات کو نہیں سنجھ رہے ھیں که مادی سائنس کی بڑی سے بڑی اور عجیب سے عجیب ایجادیں بھی برائی کی بازہ کو نہیں روک سکتیں ۔ یہ ایجادیں ہرائی کی بازہ اور اُس کے انبایوں کو برھاتی ھی رھینگی . ہرائی کی یہ بازہ تبھی رک سکتی ہے جب هم کوئی ایسا تھنگ نگالیں جس سے دنیا کے سب لوگ اِس پرائے سلمرے اسل یر عمل کرنے لئیں که هر آدمی هر دوسرے آدمی کے ساتھ ریسا ھی برناؤ کرے جیسا وہ چاھکا کے که دوسرے اُس کے ساتھ کریں . اِس کے ایم مانو سابے کے سنگھوں کی ایک ایسی وہاپک یوجنا بنائی هوگی جس کے انوسار هر آدمی سائلس کی نئی سے نئی ایمادوں کو ساری منشید جانی کے بیلے کے لئے کلممیں لانے لیے. کوئی ان ایجادوں کو کسی ایک راشار کے نایدے کے لئے یا اُس راشتر کے اُندر بھی کسی ایک گروہ کے لابھ کے لئے کام مهن نه لسكي . همارا سماج سدكتين أيسا هونا چاهي جس میں عر آدمی کو اِس کے لئے اپنے اندر سے سوابھاوک یویونا ملے .

برسوں سے دئیا کی هر ''بڑی قوم'' پاگلوں کی طرح اپنی فوجیں اور اپنے هتیار برهاتی جا رهی هے اور سانع هی هائتی اور اس کی بات کہتی ہے ۔ سن 1939 میں دنیا کی اُن نوجوں کی تعداد جو هر سمے بدھ کے 'لم نیار رهتی تهیں مارھ پائچ کروڑ سے اُرپر تهی ، اِن پر خرچ سن 1989 میں کہا جا تا ہے پچاس ارب روپئے سے ارپر هوا ' آج اِن نوجوں کی تعداد اور اِن پر خرچ اِس سے بھی کئی گنا برتھ چکا ہے ، کی تعداد اور اِن پر خرچ اِس سے بھی کئی گنا برتھ چکا ہے ، کی تعداد اور اِن پر خرچ اِس سے بھی کئی گنا برتھ چکا ہے ، کی تعداد اور اِن پر خرچ اِس سے بھی کئی گنا برتھ چکا ہے ، کی گارن بھاری قرضوں کے نیچے دبتے جا رہے هیں ، دوسرے مہا بدھ نے اِس ساری وشم اِستھتی کو اور بھی بھینکو کر دیا ہے ۔ آب تیسرے مہایدھ کا در دنیا کے سامنے ہے ، دنیا بربادی کے گنھ نے ماہ یہ کو کری ہے ۔ آب

هر آنمی محسوس کرتا ہے اور کہنا ہے که یه سب پاگل ہی ہے ، پر معلوم هوتا ہے که قسمت یا کوئی دیوی شکتی سب کی گردن پکو آنهیں تھکیلے لئے جارهی ہے .

یدی یه کررزرں آدمی جو ایک درسرے کو قتل کرنے کے لئے بیار کئے جارہے هیں اور وہ اربیں اور کوربوں رویعہ جو کررزوں ہمھیں والدہ بھوں ڈالنے کے لئے نئے نئے متیار بنائے میں خرچ کیا جارہا ہے، یدی یہ ساری شکتی اور یہ سارا دھن سائنس کی صدد میں سب کے بیلے کے لئے خرچ کیا جاسکتا تو هماری یہ دھرتی یہ سب کے بیلے کے لئے خرچ کیا جاسکتا تو هماری یہ دھرتی یہ

बढ़ गई कि सदाचार का और साईस का साथ बढ़ गया. हालेंड के शहर डेलाट में एक इन्टरनेशनल कींसिल चाफ साईटिफिक बुनियन्स है जिसकी एक खास कमेटी साईस और मानव समाज के परस्पर संबंध पर है.

यह सब कोशिरों इसलिये फज्ल जा रही हैं क्योंकि साइंसदां बारी तक इस बात को नहीं समेक रहे हैं कि माददी साइस की बड़ी से बड़ी और अजीब से अजीब ईजादें भी बुराई की बाद और उसके अन्यायों को बढ़ाती ही रहेंगी. बुराई की यह बाद तभी एक सकती है जब हम कोई ऐसा ह्रंग निकालें जिससे दुनिया के सब लोग इस पुराने सुनहरे असल पर अमल करने लगें कि हर आदमी हर दूसरे आदमी के साथ वैसा ही बरताव करे जैसा वह चाहता है कि दसरे उसके साथ करें. इसके लिए मानव समाज के संगठन की एक ऐसी व्यापक योजना बनानी होगी जिसके अनुसार हर आदमी साइंस की नई से नई ईजादों को सारी मन्त्र जाति के भले के लिए काम में लाने लगे. कोई इन ज़ितादों को किसी एक राष्ट्र के फ़ायदे के लिए या उस राष्ट के अन्दर भी किसी एक गिरोह के लाभ के लिए काम में न ला सके. हमारा समाज संगठन ऐसा होना चाहिए जिसमें हर आदमी को इसके लिए अपने अंदर से स्वाभाविक प्रेरना मिले.

बरसों से दुनिया की हर "बड़ी क़ौम ' पागलों की तरह अपनी फ़ौनें और अपने हिथयार बढ़ाती जा रही है और साथ ही शान्ति और अमन की बात करती है. सन 1939 में दुनिया की उन फौनों की तादाद जो हर समय युद्ध के लिए तैयार रहती थीं साढ़े पांच करोड़ से ऊपर थी. इन पर खर्च सन् 1939 में कहा जाता है पचास अरब कपए से ऊपर हुआ. आज इन फौनों की तादाद और इन पर खर्च इस से भी कई गुना बढ़ चुका है. बहुत से देश हिथयारों की इस युद्धीड़ में हिस्सा जेने के कारण भारी क्रजों के नीचे दबते जा रहे हैं. दूसरे महायुद्ध ने इस सारी विषम स्थिति को और भी भर्यकर कर दिया है. अब तीसरे महायुद्ध का ढर दुनिया के सामने है. दुनिया बरबादी के गड़दे के मुंह पर खड़ी हई है.

हर आदमी महसूस करता है और कहता है कि यह सब पागलपन है. पर मालूम होता है कि क्रिस्मत या कोई देवी शिक्त सब की गरदन पकड़े उन्हें घकेले लिए जा रही है.

यि यह करोड़ों आदमी जो एक दूसरे को क़तल करने के लिए तैयार किए जा रहे हैं और वह अरवों और खरबों क्याया जो करोड़ों निहत्थों को जिंदा भून डालने के लिए नए नए हथियार बनाने में खर्च किया जा रहा है, यिद यह सारी शिक्त और यह सारा धन साईस की मदद से सब के मले के लिए सुर्च किया जा सकता तो हमारी यह बंरती, यह

कार प्रभीत, एक हरे भरे लेत या पात की तरह नाज, फल जीर पूज से लहलहा घटती. पर माया, जहालत, हिसे, सक्तुर, पशंब, जंधा लोभ, पेशपरस्ती और दूसरों से नफरत हन सबने मिलकर हमें इतना जंधा कर दिया है कि दुनिया है पढ़े नेता न केवल दूसरे देशों के लोगों को बल्कि अपने अपने देशों की करोड़ों जनता को भी जोश के साथ तोपों और गोलों का चारा बनने के लिये तैयार कर रहे हैं. इस से बढ़कर जंधापन, पागलपन और शैतान-परस्ती और क्या हो सकती है ?

दुनिया के बदे से बदे मानव प्रेमी, राह दिखाने वाले फजूल ही विल्लाते रहे—"एक दूसरे से प्रेम करो", "दूसरों के साथ वैसा ही सलूक करो जैसा तुम चाहते हो कि वह सुम्हारे साथ करें." अधकार की शक्तियाँ उजाले की शक्तियों पर हाबी हो रही हैं. सारी दुनिया इस आफत के नीचे तड़प रही है. आदमी पर बोक बढ़ते जा रहे हैं, नफरत का बोक हर का बोक, हथियारों का बोक और करोड़ों इंसानों के आर्थिक शोषण का बोक. हथियारों का यह बोक अब बहुत दिनों नहीं चल सकता. यह हथियार खतम तो होंगे ही, चाहे एक दूसरे को खतम करके खतम हों और चाहे सब को जिंदा रक्ष कर आपसी समकौते से खतम हों!

इस मुसीबत से बचने के लिए और मानव जाति की आइन्दा की शान्ति, सलामती और खुशहाली के लिए सबसे पहली जरूरत यह है कि दुनिया के क़ानून बनाने वालों, द्वाकिमों, हर घर, हर उद्योग, हर महकमे और हर संस्था के सरदार या नेता में और इन सबसे बदकर दनिया के बच्चों को तालीम देने वाले अध्यापकों में दिमारी जानकारी और होशियारी से कहीं बढ़कर ऊँचे नैतिक गुण हों, उनके दिलों में दूसरों के लिये वैसा ही प्रेम हो जैसा पिता के दिल में अपनी श्रीलाद के लिये. हमारा दिमारा श्रगर बहुत चतुर न भी हो तो भी सच्चा प्रेम भरा दिल हम सब को ठीक शक्ते पर और सब के भले के रास्ते पर लगा सकता है. बिसारा की चतुराई अगर उसके साथ दिल खराब है तो हमें सवाही के गढ़हें में गिराए बरौर नहीं रह सकती. दिमारा जितना चतुर होगा उतना ही जल्दी हम सब बरबाद होंगे. इसिक्षए यह जरूरी है कि हमारी शिक्षा संस्थाओं में, हमारी तालीमगाहों में बच्चों को बहुत अधिक जानकारी देने की अपेक्षा सनके चरित्र को अच्छा, ऊँचा और मजबूत बनाने की तरफ कहीं अधिक ज्यान दिया जावे. इसके लिए यह जरूरी है कि हमारे अध्यापक खुद नेक, निस्वार्थ, प्रेमी और केंचे चरित्र के हों. सच्चा अध्यापक, सच्चा ब्राह्मण होना बाहिए, सच्चा मीलवी होना चाहिए. इसमें विद्या होनी बाहिए, इल्म होना बाहिए और बोहद होना बाहिए. ज्ञान बीर परीपकार भावना दोनों से मिलकर बुद्धि यानी अक्ले क्रमीम पनती है.

رق رامیری آگٹ ہوت مہرت کا باغ کی طبح ، پال آبکی ، پر مایا کہالت کی اس کہالت کی بیال اور بھول سے لہلیا آبکی ، پر مایا جہالت کی بیار کی کا بیار کی اور کیا ہی جوش کے ساتھ توہوں اور گولی کی اور شیطان پرستی اور کیا ہوسمتی ہے ج

دنیا کے بڑے سے بڑے مانو پریمی راہ دکیائے والے نفول هی
تے رھے۔''ایک دوسرے سے پریم کرو'' ''دوسووں کے ساته
یا هی سلوک کرو جیسا تم چاهتے هو که وہ تبهارے ساته
کریں '' اندهکار کی شکتهاں آجائے کی شکتیوں پر حاوی هو
رهی هیں ، ساری دنیا اِس آنت کے نیچے تزی رهی هی
آدمی پر بوجه بڑھتے جا رہے هیں' نفرت کا بوجه' تر کا بوجه'
ادمی پر بوجه اور کروروں اِنسانوں کے آرتهک شوشن کا بوجه
هتهیاروں کا یہ بوجه آب بہت دنوں نهیں چل سکتا ، یه
هتیاروں کا یہ بوجه آب بہت دنوں نهیں چل سکتا ، یه
هتیار ختم تو هونکے هی' چاهے ایک دوسرے کو ختم کرکے ختم

اِس مصیبت سے بچنے کے لئے اور مانو جانی کی آئندہ کی شائتی' سلامتی اور خوشتالی کے لئے سب سے پہلی ضرورت یہ ہے که دنیا کے قانوں بنانے والیں حاکموں مر گھر م اُدیائے کے محصیے اور ہو ساستھا کے سردار یا نیتا میں اور ان سب سے بوشکر دلیا کے بنجوں کو تعلیم دینے والے ادھیایکوں میں دماغی جانکاری اور هرشیاری سے کہیں بڑھکر اُونجے نیتک کی موں گا اُن کے داہر میں دوسروں کے لئے ویسا ھی پریم ھو جیسا یتا کے دال میں اپنی آولاد کے لئے۔ همارا دماغ اگر بهت چتر نه بهی هو تو بهی سنچا پریم بهرا دل هم سب کو نہیں راستے یو اور سب کے بھلے کے راستے پر لکا سکتا ہے . دماغ کی چترائی اگر اُس کے ساتھ دل خراب ہے تو همیں تباهی کے كَنْ مِين كُراثي ينهر لهين ره سكتى . دماغ جتنا چتر هوكا أننا ھی جادی ھم سب برباد ھوٹکے' اِس لئے یہ ضروری ہے کا هاري شكشا سنستهاري مين هماري تعليم كاهور مين بحوري کو بہت ادھک جانکاری دینے کی اپیکشا اُن کے چرتر کو اچھا، أونجا أور مضبوط بنائے كى طرف كهيں أدهك دهيان ديا جارے، اِس کے لئے یہ ضروری کے که همارے ادعیابک خود تیک ، نسرارته پریمی اور آرنچے چرتر کے هوں . سچا ادعیابک سچا براهس هونا چاهئي سچا مولوي هونا چاهئي . أس مين وديا هرنى چاهيً تب هونا چاهيً علم هونا چاهيً أور زهد هونا چاھئے . گیاں اور پرویکار بھاؤنا دونس سے ملکو بدھی یعلی عقل سلهم بنتي 🏗 .

धर्म या मचहन जिसका काम सब के बिलों को तसकी देता. मबहे चरित्र को कंचा से जाना, सब को मिलाना और सबका अला करना था, जब सब जगह गिर कर स्वार्थी पढे प्ररोहितों बीर पावरी अस्ताओं के हाथों में निकम्मे रीति रिवाजों और क्षंत्र विश्वासों को बढ़ाने बाला. दुनिया को घोका देने बाला. और जावमी को भावमी से फाइने वाला एक मर्थकर जाल बतहर रह गया है. राज जिसका काम सब की रक्षा और सबकी तरककी करना था अब स्वाधी राजनैतिक नेताओं के हायों में पड़कर दुनिया को चूसने वाली और खुले अन्याय इरने बाली संस्था बन गया है. पंचायतें और अवालतें जिनका काम सबके मागडे तय कराकर उन्हें मिलाना था अब खदरारच और चालाफ वकीलों के अब्हे बन गई हैं. डाक्टर और वैद्य जिनका काम दुनिया के रोगों के दूर करके इन्हें फिर से तनद्रवस्त करना था धन के लोम में अब अपने शिकारों को जोंकों की तरह चूसने लगे हैं. व्यापार और तिजारत जिन से सब को खाना, कपड़ा और जिंदगी की जरूरतें मिलनी चाहिए थीं धव बदल कर सब को बरबाद करने वाला नया अर्थ-शास बन गया है, जिसमें स्टाक जमा किए जाते हैं, कंपनियों के हिस्सों का जूआ खेला जाता है, सट्टा किया जाता है, फाटका लड़ाया जाता है, दुनिया के सिक्कों के साथ जादगरों की तरह तमाशे किए जाते हैं, सरकारों की इच्छा पर कहीं सिक्कों के दाम घटाए जाते हैं कहीं बदाए जाते हैं. कहीं रुपयों की कौड़ियां कर दी जाती हैं श्रीर कहीं की दियों के रुपए कर दिए जाते हैं, बिस्कुल बनावटी ढंग से और जबरदस्ती, खास खास गुटों, कंपनियों श्रीर गिरोही के तुच्छ लाभ के लिए बीजों की कीमतों को मनमाना बढाया और घटाया जाता रहता है, जुआ चीरी एक बढ़े पैमाने पर और खुले बेशरमी के साथ जारी है, वड़े बड़े शास्त्री, विद्वान, नेता और माहिर उसे बढ़ावा देते हैं. अपने अंधेपन में हम अशार्फियां लुटा रहे हैं और कोयलों पर या काराजों के दुकड़ों पर मोहर लगा रहे हैं. गृहस्थ जीवन जिससे जिन्दगी में मिठास भर जानी चाहिए थी. नई जान आनी चाहिए थी और आदमी का बल बढ़ना चाहिए था, अब केवल कामटन्टा का साधन रह गया है, इसका खास कारण यह है कि हमारे बच्चों और नौजवानों की तालीम जिससे सब को ठीक रास्ता मिलना चाहिए था. खुद ग़लत रास्ते पर पड़ गई है. हमारे मास्टर, अध्यापक श्रीर प्रोफेसर अपने असली मिशन से बेपरवाह होकर ग्रलत तरफ भटक गए हैं. उनके अन्दर जो जबरदस्त नैतिक शक्ति. त्याग और तपस्या का बल और आत्मबल होना चाहिए था वह जाता रहा. वे कीजी लीडरों और स्वर्थी पंजीपतियों के हाथों में खेलने लगे. जबकि उनका काम या इन लीडरों और पूजीपितयों को ठीक रास्ते पर रखना. हमारे अध्यापकों ने

دھرم یا مذہب جس کا کلیسب کے دانوں کو تسلم دیاتا سب کے چرتر کو اُولیجا لیجانا سب کو ملانا اور سب کا بھلا کرنا تھا اب سب جائد کر سرارتھ بندے بروهتوں اور بادری ملوں کے هاتھوں مهن نعب ریسوراجون اور انده وشراسون کو بوهائے والا اور دنیا کو دھوکا دینے والا اور آدمی کو آدمی سے بھارنے والا ایک ببیلکر جال بن کر رہ گیا ہے ۔ راج جس کا کام سب کی رکھا اور سب کی ترقی کرنا تھا اب سوارتھی راجنیتک نیتاؤں کے ھاتھوں میں یوکر دنیا کو چوسنے والی اور کیلے انبائے کرنے والی سنستھا بن کیا ہے . پنچائنیں اور عدالتیں جن کا کام سب کے جھکڑے طے کواکر اُنھیں ملانا تھا اب خودغرض اور چالاک وکھلوں کے اقت بن گئی هیں ، دانٹر اور وید جن کا کام دنیا کے روگرں کو ھور کرکے اُنھیں پھر سے تندرست کرنا تھا دھن کے لوبھ میں اب البنے شکاروں کو جوٹکوں کی طرح چوستے لکے هیں ، ویاپار اور تجارت جن سے کو کہانا کہڑا اور زندگی کی ضرورتیں مانی چاهئے تھیں اب بدل کر سب کو برباد کرنے والا نیا ارتو شاستر ہن گیا ہے؛ جس میں اِسٹاک جمع کثے جاتے هیں؛ کمپنیوں کے حصوں کا جوا کھیلا جاتا ہے ستا کیا جاتا ہے یہائکا لوآیا جاتا ھ دنیا کے سکوں کے ساتھ جادرگروں کی طرح نماشے کئے جاتے ھیں' سرکاروں کی اِچھا پر کہیں سکوں کے دام گھٹائے جاتے ھیں کھیں ہوھائے جاتے ھیں' کھیں رویدوں کی کوریاں کردھی جاتی ھیں اور کہیں کوریوں کے رویٹے کردئے جاتے میں الکل بناوتی تھنگ سے اور زبردستی ' خاص گٹوں' کمپنیوں اور گروھوں کے تچھ لابھ کے لئے چیزوں کی قیمتوں کو من مانا برھایا اور گھٹایا جانا رھٹا ھے جوآ چوری ایک بڑے پیمالے پر اور کیلے ہشرمی کے ساتھ جاری ہے ' بڑے بڑے شاستری ودران نیتا اور ماھر أص برهاوا دينه هين النه اندهين مين هم اشرفيان الله رها ھیں اور کونلوں یا کاغذوں کے تحووں پر مہر لگا راہے اس گرسته جيرن جس سے زندگي ميں متياس بهر جاني چاهياء تهی انتی جان آنی چاهئے تهی اور آدمی کا بل برهنا چاهئے تها أب كيول كام تنتاكا سادهن ره كيا هـ إس كا خاص کارن یہ کے که همارے بحجوں اور نوجوانوں کی تعلیم جس سے سب کو تھیک راسته ملنا چاہئے تھا' خود غلط راستے پر پر کئی a . همارے ماستر' ادهیاپک اور پرونیسر اپنے اعلی مشن سے بے پرواه هوکر غلط طرف بهتک گئے هیں ان کے اندر جو زبردست فیتک شکتی عناک اور تیسیا کا بل اور آتم بل هونا چاهئے تھا ولا جاتا رہا ۔ وے نوجی لیذروں اور سوارتھی یونجی یتیوں کے هاتهون مين كهيابند لكه عب كه أن كا كلم تها إن ليدرون أور یونجی یتیس کو تهیک راستی یو رکهنا ، همارے ادهیایکس نے

اپنے اونچھ اور پوتر کم کو نیجھ گواکو آب مھین کی طرح اور ایک انسری قطائ سے بچھوں کو آس طرح چالنا شروع کردیا ہے جس طرح جائزہ سے بچھوں کو آس طرح چالنا شاہ ادھیاپکوں کے دل جو ماتا پٹا کے سے پریم سے بھرے ھوئے چاھئے تھے آب سوکے مرازیی اور نردئی ھوگئے ھیں ، ھم سب ایک شیطائی چکو میں پہنس گئے ھیں ، خواب بیج سے ھم نے خواب پھل پعدا کئے اُن سے اور ادھک خواب بیج نکلے اُن سے اور ادھک خواب پیل نکے دو اب بیج نکلے اُن سے اور ادھک خواب پیل نکے کہ تیسرا مہایدھ اور اِنسائی توم یا خواب پل کے سابئے دو ایک انسائیت کا خاتمہ آب ھاری آنتھوں کے سابئے رھا ھے ،

آج جو قوم جتنى زيادة سبهيه سنجهى جاتى هے اتنا هى أس كى سارى زندكى ميں خودى؛ اهنكار اور آيا دهاہى بوهى هرئي دكائي ديتي هي . هر أدمي بوت سي برأ بننا جاهنا هي . هر آیک دوسرے سے برهکر رهنا چاهتا ہے اور جتنی تهزی سے هُرسكم أوير أَنَّها چاها أهم . سب كسي نه كسي روب مين یوک ولاس اور عیش پرستی کی طرف دورے چلے جا رہے س کا نام هم لوگوں نے ورجیوں کے استر کو اُرنیها کرتا⁶⁴ ا کے لا, ف, (raising of the standard of life) عیص پرستی کے ساتھ تفرتوں کا چلنا الزمی ہے . هم بہلے أیک لیک میں کو چکے هیں که آدمی کے اندر اُس کے چے سب سے الاے دشمن هيں ، آجال يه چهوں يورے زور يو هيں ، يه هیں: -عیمی پرستی عنگ کی تیاریاں پوئجی واد دوسروں کو قرا کر رکھنا سامراجیمواد اور دوسروں کو چوس کر اپنے اپنے راُشتر کا دھن اور بل بوھانا ۔ آجعل کی سبھیتا جیس کے ھر مهدأن مين ويعلى كت عسماجي واشتريه كهريلو مالي آرتهك ارر راجلیتک مسب پہلوؤں سے آنم بند کئے بربادی کی طرف برهی چلی جارهی هے . الگ الگ دیش اپنے اپنے قومی قرضے کو بے تحاشا ہوماتے چلے جارہے میں . متبیاروں کے انبار لگ رق هیں اور آن میں هور جاری هے . خرچ کو روکلے یا کم کر اے لا کسی کو دھیآن تک نہیں ہے ۔ آگے کی کسی کو پرواہ نہیں ھے کوئی اُپنی چھوٹی سی زندگی سے آگے یا اُپنی ناک کے ارم سے آگے تک دیکھنے کی چنتا نہیں کرتا ، آجکل کی سرکاریں جس طرح چل رھی ھیں اُس طرح کوئی ویکتی چلنا تو پاگل اور أتم هتيارا كها جاتا . دنيا كي بيگناه جنتا كي المنتر شکتی جیری کی آوشیک وستوئیں بنانے کی جاء اور سب کو آرام پہولنچانے والی چیزیں تیار کرنے کی جکه تھوڑے سے لوگوں کو عیکس آرام کے سامیان تیار کرنے اور منورنجین کے گلاے اور نصص سامان تیار کرنے اور اُس سے ادھک ومینی سندری اور هوائی لوائی کے وسے سامان تیار کرنے میں لکی هوئی هين جن كا ايك ماتر أديهيه يه ه كه أدمى كي زندگي اس کی مصاحب اس کے مال اسباب اور بال بیچوں کو مالیا جائے ۔

स्थान केंचे और पित्र काम को नीचे गिराकर अब मशीन की सरह जीर एक अक्सरी ढंग से बच्चों को इस तरह जानवरों के गल्लों को का बाता शुरू कर दिया है जिस तरह जानवरों के गल्लों को चलाया जाता. है. अध्यापकों के दिल जो माता पिता के से अम से मरे होने चाहिए थे अब सुखे, स्वार्थी और निर्देश हो गए हैं. स्वराव का पैदा किए, चन कलों से और भी सराव बीज से इमने सराव फल पैदा किए, चन कलों से और भी सराव बीज निकले, उनसे और अधिक खराब फल लगे. यहाँ तक कि सीसरा महायुद्ध और इंसानी कीम या कम से कम इंसानियत का खाल्मा अब इमारी बाँखों के सामने नाच रहा है.

आज जो क्रीम जितनी ज्यादा सभ्य सममी जाती है कतना ही उसकी सारी जिंदगी में ख़ुदी, आहंकार और आपाधापी बढ़ी हुई दिखाई देती हैं. हर आदमी बड़े से बड़ा बनना चाहता है. हरेक दूसरे से बढ़कर रहना चाहता 🐍 और जितनी तेजी से हो सके ऊपर चठना चाहता है. सब किसी न किसी रूप में भोग विलास और ऐशपरस्ती की तरफ दीके चले जा रहे हैं. इसी का नाम इस लोगों ने "जीवन के स्तर को ऊँचा करना" (raising of the standard of life) रख रक्खा है ! ऐशपरस्ती के साथ नफरतों का चलना लाजमी है. इस पहले एक लेख में कह चुके हैं कि आदमी के अन्दर इसके है सब से बड़े हुरामन हैं. आजकल यह छहों पूरे जोर पर हैं. ये हैं :-पेरापरस्ती, जंग की तैयारियाँ, पूंजीवाद, दूसरों को डराकर रसना, साम्राज्यवाद, और दूसरों को चूसकर अपने अपने राष्ट्र का धन और बढ़ाना. आजकल की सभ्यता जीवन के हर मैदान में, व्यक्तिगत, समाजी, राष्ट्रीय, घरेलू, माली, आर्थिक और राजनैतिक, सब पहलुओं से आंख बंद किए बरबादी की तरफ बढ़ी चली जा रही है. अलग अलग देश अपने अपने क़ीमी क़रजे को बेतहाशा बढ़ाते चले जा रहे हैं. हथियारों के अंबार लग रहे हैं और उनमें होड़ जारी है. अपूर्व को रोकने या कम करने का किसी को ध्यान तक नहीं हैं, आगे की किसी को परवाह नहीं है, कोई अपनी छोटी सी फिन्स्गी से आगे या अपनी नाक के सिरे से आगे तक देखने की चिंता नहीं करता. आजकल की सरकारें जिस तरह चल रही हैं उस तरह कोई व्यक्ति चलता तो पागल और आस्म-इत्यारा कहा जाता. दुनिया की बेगुनाह जनता की अधिकतर शक्ति जीवन की आवश्यक वस्तुएँ बनाने की अगह और सब को आराम पहुंचने बाली जीजें तैयार करने की जगह थोड़े से लोगों को पेश आराम के सामान तैयार करने और मनोरंजन के गंदे और फोइश सामान तैयार करने, और उससे अधिक जमीनी, समन्दरी और इवाई क्षकाई के वे सामान तैयार करने में लगी हुई हैं जिनका एक मात्र सद्देश्य यह है कि आदमी की जिन्दगी, उसकी मेहनत. क्सके माल असवाव और वाल बच्चों की मिटाया जाय.

اِنهیں چیزرں کی رکشا کرنیا' برحانا اُور ترقی دینا سرکاروں کا کام تیا ، اُور سب سرکاریں اِنهیں کو مثالے کی ترکیبوں میں لکی ھرٹی ھیں۔ انگ انگ دیشوں کے وے شاسک' نیتا اور راے نیتک جو اپنے کو بہت ھوشیار اور 'ویاوھارک' سنجہتے ھیں آج اِسی پائل پن کی دور میں ایک دوسرے سے ھور لگا رہے ھیں ۔

آجال کی سبھیٹا نے جو کئی طرح کی دھوکے کی تقیاں جسارے سامنے کھڑی کردی ھیں' آبی میں سے آیک سب سے المک دھوکے کی اور شیطانی چیز یہی ''ویاوھارکتا'' ہے .

ھم میں سے بہت سے اکثر اِس بات پر بحث کرتے رہتے ھیں کہ کیا چیز وباوہارک یعنی پریکٹیکل ہے اور کیا اوباوھارک یعنی اِمهریکٹیکل کے بل ہے .

جب دنیا میں دھرم کا زرر تھا تو اکثر لوگ سمجھتے تھے اور کہتے تھے کہ مهرا دھرم لھیک اور دوسرے کا دھرم غلط ، آج جب راجنیتی کا زور ہے تو آسی طرح کے لوگ کھتے ھیں کہ مھربی رائے' مھوا سجھاؤ اور صهربی یوجنا ویاوھارک اور دوسرے کی اویاوھارک یا کورا آدرشواں ، مطلب یہ کہ جو سجھے ٹھیک جلسے وہ 'ویاوھارک' (عملی) اور جو دوسرے کو ٹھفک جنسے وہ 'اویاوھارک' (غملی) ،

بہت سی چیزیں جو پہلے کورا آدرشواد اور غیر عملی معلوم هوتی تهیں اب عمل میں آگئیں ، بھاپ' بجلی' ریڈیو' هوائی جہاز' پن ذبی' سوویت روس' چین' ستیاگرہ' ٹیلیوزن' ایٹمہم لور ھائڈروجن ہم اِس کی چند مثالیں ھیں ، پھر بھی ھمارا یہ 'ویاوھارکتا' کا بھوت تاہو میں نہیں آتا ، درخت اپنے پہلوں سے پہلچانا جاتا ہے ، آجکل کے اِن چتر راجئیتگیوں اور نیٹاؤں کی اِس ویاومارکتا کے نتیجوں پر ھم ایک نگاہ دال کو دیٹھیں .

پہلے دھرم ھی کو لیجئے ، سچے دھرم سے نیکی' سداچار اور ایک دوسرے کے ساتھ ایمانداری کا برتاؤ پھدا ھرنے چاھئیں تھے ۔ اب لگ بھگ سب ''ترقی یانتہ'' قوموں کی زندگی سے دھرم قریب تریب مٹ چکا ، سداچار میں گہرا 'انقلاب' پیدا ھوچکا ہے ۔ ایک طرف قانونی عیاشی اور سوتنتر پریم اور دوسری طرف آتم سنیم اور گرھستھ یعنی کوتسبک پریم' اِن دونوں کے بیچ وہ سنکرام جاری ہے کہ اِن میں سے کوئی نہ کوئی دوسرے کو مقاکر رھیگا ،

اب راجنیتی کو لیجھئے ، دنیا کی دارلیمینتیں اور قانوں سہائیں سوارتهی لوگوں اور گروھوں کی کھینچا تانی کے اکھاڑے بئی ھوئی ھیں ، آپسی جھکڑے ' سازشیں' ایک دوسرے کے خلف دھواں دھار تقریریں' سب اپنے آپنے گروھوں کے نام پر ھوتی ھیں ، سب کے بھلے کی سوچئے کا کہیں نام نہیں

हुन्हीं बीज़ों की रक्षा करना, बढ़ाना और तरककी देना सरकारों का काम था. और सब सरकारें इन्हीं को मिटाने की तरकी में लगी हुई हैं. अलग अलग देशों के वे शासक, नेता और राजनीतिक जो अपने को बहुत होशियार और 'व्यावहारिक' सममते हैं आज इसी पागलपन की दौड़ में एक दूसरे से होड़ लगा रहे हैं.

बाजकल की सभ्यता ने जो कई तरह की घोके की दृष्टिशें हमारे सामने खड़ी कर दी हैं, उनमें से एक सब से ब्रिजिक घोके की और रौतानी चीज यही "व्यवहारिकता"

₹.

हममें से बहुत से अकसरं इस बात पर बहस करते रहते हैं कि क्या चीज व्यावहारिक यानी प्रेक्टिकल है और क्या अव्यावहारिक यानी इममेक्टिकल के बल है.

जब दुनिया में धर्म का जोर था तो अक्सर लोग सममते थे और कहते थे कि मेरा धर्म ठीक और दूसरे का धर्म रालत. आज जब राजनीति का जोर है तो उसी तरह के लोग कहते हैं कि मेरी राय, मेरा सुमाब और मेरी योजना ज्याबहारिक और दूसरे की अञ्याबहारिक या कोरा आदर्शवाद. मतलब यह कि जो सुमे ठीक जँचे वह 'ज्यावहा-रिक' (अमली) और जो दूसरे को ठीक जँचे वह 'अज्याबहारिक' (रीर अमली).

बहुत सी चीचें जो पहले कोरा आदर्शवाद और ग़ैर अमली मालूम होती थीं अब अमल में आ गई. भाप, बिजली, रेडियो, हवाई जहाज, पनडुब्बी, सोवियत रूस, चीन, सत्यामह, टैलीविजन, पेटम बम और हाइडोजन बम इसकी चंद मिसालें हैं. फिर भी हमारा यह 'व्यवहारिकता' का भूत काबू में नहीं आता. दरस्त अपने फलों से पहचाना जाता है. आजकल के इन चतुर राजनीतिक्कों और नेताओं की इस व्यावहारिकता के नतीजों पर हम एक निगाह डालकर देखें

पहले धर्म ही को लीजिए. सच्चे धर्म से नेकी, सदाचार और एक दूसरे के साथ ईमानदारी का बर्ताव पैदा होने चाहियें थे. अब लगभग सब "तरक्षकीयाक्ता" कौमों की जिन्दगी से धर्म करीब करीब मिट चुका. सदाचार में गहरा 'इन्कलाब' पैदा हो चुका है. एक तरफ क्रानूनी ऐयाशी और स्वतंत्र प्रेम और दूसरी तरफ आत्म संयम और गृहस्थ यानी कीटुम्बिक प्रेम, इन दोनों के बीच वह संप्राम जारी है कि इनमें से कोई न कोई दूसरे को मिटाकर रहेगा.

अब राजनीति को लीजिए. दुनिया की पार्लिमेंटें और कान्न सभाएं स्वार्थी लोगों और गिरोहों की सींचा तानी के मसादे बनी दुई हैं. आपसी मगदे, साजिशें, एक दूसरे के जिलाफ पूर्वोंघार तक़रीरें, सब अपने अपने गिरोहों के नाम पर होती हैं. संबक्ते भले की सोचने का कहीं नाम नहीं दिकाई देता. क्रानून आए दिन इस तरह के बनते रहते हैं जिनसे आपसी मागदे और गिरोहों गिरोहों के बीच होड़ धीर बढ़े. पहले महायुद्ध में ही एक करोड़ से ऊपर श्रादमी मारे गए और लगभग सात सी अरब रुपए के माल का दुनिया का नुक्रसान हुआ, बड़ी बड़ी क्रीमों पर करजे के बोम लव गए. कमजोर और रारीय क्रीमें पीढ़ियों तक के लिए दूसरों के यहाँ रहन रख दी गईं. दूसरे महायुद्ध में इससे कई गुना अधिक बरवादी हुई और आज तीसरे महायुद्ध से पहले दुनिया की बड़ी बड़ी क़ौमों ने अपने पंजों, अपनी चोंचों और अपने दांतों को इतना पैना कर लिया है और लोभ लालच, एक दूसरे पर अविश्वास, घमंड और नफरतों का बाजार इतना गरम हो गया है कि सबको डर होने लगा है कि अगले महायुद्ध के बाद कोई भी बचेगा या नहीं, यह है हमारी "ज्यावहारिक" राजनीति !

अब अर्थशास्त्र को लीजिए, हम ईमानदारी से देखें तो द्वनिया की अधिकतर क्षीमें आज दिवालिया हो चुकी या तेजी से दिवालियापन की तरफ जा रही हैं. वेकारों की तादाद बीस करोड़ से ऊपर तक पहुँच चुकी है. बेकारों से पँचगुने वे हैं जो एक दूसरे की बरवादी के कामों में लगे हैं. पुराने **असल थे---''ईमानदारी** सबसे अच्छी पालिसी हैं" श्रीर "उधार व्यापार करो तो कर्जा अदा करने के लिए रूपया पहले पास रख लो." अब ऐसी बातें 'अन्यावहारिक' सममी जाती हैं. अब उसूल है- "अंद्र जमा हो या न हो, हवाई सास पर व्यापार बढ़ाए चलो." यह उसूल 'व्यावहारिक' माना जाता है. श्रगर कोई यह कहे कि इस श्ररबों खरबों हपए को जो गलत कार्यों पर खर्च किया जाता है समक्ष के साथ सबके भले के लिए खर्च किया जाने और द्विनया भर के बेकारों को धरती के उन बड़े बड़े हिस्सों पर जहाँ हरे भरे खेत और ख़ुशहाल आबादियाँ खड़ी की जा सकती हैं, जैसे कनाडा, आस्ट्रेलिया, द्विश अमरीका, अकरीका में लेजाकर बसाया जावे तो इस तरह की बात सुभाने बाला 'अञ्यावहारिक' और 'कोरा आदर्शवाद, सममा आता है.

अब घरेलू जीवन को लीजिए, पच्छिम के बहुत से बड़े बड़ शहरों में साल में जितनी शादियाँ होती हैं उससे आधे से अधिक त्लाक होते हैं. शादी और त्लाक के बीच का समय जगह जगह कुछ बरसों से घटते घटते कुछ महीने श्रीर श्रव कुछ इपते रह गया है. गर्भ गिराने और श्रीलाद पैदा न करने की दवाओं का खुले आम प्रचार होता है. यह है हमारे सदाचार में इंन्क्रलाब ! आबादी फिर भी बढती बली जा रही है और किसी योजना के साथ लोगों को अगृह व जगह लेजाकर बसाने के बजाय रोटी के लिए कांजातानी और जंगों की संभावना बढ़ती जा रही है. शैर

دکہائی معال ، قالوں آئے دن اِس طرح کے بلتے رہتے میں جن سے أيسي جهكوم أور كروهون كروهوس كم بيسم هور أور برهم يهلم مهايده میر هی لیک کرور سے أوپر آدمی مارے كئے اور لگ بهگ سات سو ارب روید کے مال کا دنیا کا نقصان ہوا ۔ بڑی بڑی قوموں پر ترضے کے بوجھ لد گئے۔ کمؤور أور غویب قومیں پیزهیوں تک کے لئے درسروں کے یہاں رہن رکھ دی گئیں ، دوسرے مہایدہ میں اِس سے کئی گلا ادھک بربادی ہوئی اور آبے تیسرے مہایدہ سے پہلے دنیا کی بڑی بڑی قوموں نے اپنے ینجوں اینی چولجوں اور اینے دانتوں کو اِتنا پینا کر لیا ہے اور لوبھ الیج آلی دوسرے ير اوشواس ، كيمنت اور تفرتوس كا بازار اِتنا كرم هوگيا ه كه سب کر در هوئے لگا هے که اگلے مہایدھ کے بعد کوئی بھی بچیکا یا نہیں ۔ یہ ہے هماری ¹⁹ویا وهارک⁶⁰ رأجنیتی ا

اب ارته شاستر کو لیجئے . هم ایمانداری سے دیکھیں تو دنیا کی ادھکار قومیں آج دیوالیہ ہو چکیں یا تیزی سے دیوالیمپن کی طرف جا رھی ھیں ۔ ہے کاروں کی تعداد بیس کروڑ سے ارپر تک پہرنے چمی ہے ، بے کاررن سے پنیے گئے رہے میں جو ایک دوسوے کی ہوبادی کے کاموں میں لگے هیں ، پرانے أصول سے دالیمانداری سب سے اچھی پالسھی ھے'' اور ''أدهار ویابار کو تو قرضه ادا کرنے کے اٹے روییہ پہلے یاس رکھ لو ." اب ایسی باتیں 'اویاوهارک' سمجھی جاتی ییں ، اب أصرل هـــانادر جمع هو يا نه هو هوائي ساكه پر ديايار برهائه چار، " يم أصول 'وياوهارك' ما نا جا تا هـ ، اگر كوئى يه کہے کہ اِس اربوں کھربوں روپیّے کو جو غلط کاریوں پر خرج کیا جاتا ہے سمجھ کے ساتھ سب کے بھلے کےاللے خرچ کیا جارے ارردنیا بھر کے بےکاروں کو دعرتی کے اُن بڑے بڑے حصوں پر جہاں مرے بھرے کھیت اور خوشتال آبادیاں کھڑی کی جا سكتى هيل جيسه كناةًا أسرّينيا دكهن آمريك، أدريقه مهل ليجا كر بسايا جارم تو إس طرح كي بات سجهاني وألا الوياوهارك أور أكورا أدرشوادي سمعها جانا ه.

أب گهريلو جيهن كو لرجئه . پچهم كے بہت سے بڑے بڑے شہروں میں سال میں جتلی شادیاں ھوتی ھیں اُس سے آدھ سے ادھک طلاق ھوتے ھیں، شادی اور طلاق کے بیچ کا سمئے جکہہ جاہم کچھ برسر*ں سے گہلٹنے گہلٹ*ے کچھ مہینے اور اب کچھ هفتے رہ گیا ہے۔ کریے گرانے اور اولاد پیدا نے کرنے کی دواؤں کا کیلے عام پرچار ہرتا ه. يه هد هماري سداچار مين انتلاب! أبادي پهر يعي ہرمتی چلی جا رھی ہے اور کسی یوجنا کے سان لوگوں کو جکہت بعر جکہت لیجا کر بسائے کے بجائے روثی کے لئے کینچاتائی اور جنگوں کی سبہاؤنا برھتی جارھی 📤 ، غیر

شادی شده لوگوں میں بچوں کی پیدایشی ہے خد ہوہ گئی ہے ،
پاکلوں اور گلدی بیماریس کے روگیوں کی گفتی دنیا بھر میں بوہ رھی

اللہ بہت جکہہ تو بچے ھی اِن ہوائیوں کو ساتو لیکر پیدا ہوتے ہیں ،
سجع، سوچ وچار اور بھلمنسیت کا کہیں پتہ نہیں ، گھروں کے
اقدر "چلار دیکھر پیر پسارہ" جیسی باتیں اب غیر عملی
مائی جاتی ھیں ، کوئی یہ کیے کہ الگ الگ راشائروں کا
اِنتظام اُسی طرح ھونا چاھئے جس طرح الگ الگ گھروں
کا یعلی یہ کہ ایک حد کے اندر اور جہاں تک ہوسکے ھر
راشائر اپنی ضرورت کی چہزیں خود تیار کرے اور اپنے پھروں پو
کھڑا ھو، تو اِس طرح کے سجھاؤ غیر عملی بتائے جاتے ھیں اِ

اب تعلیم کو لیجائه ، پرانا أصول تها "ساد» زندگی بسر کرو اور اپنے وچاروں کو آونجا رکھو "' اب کیا جاتا ہے ^{ور}اینے ضرورتیں کو برھائے جانا اور اِن ضرورتیں کو پیرا کرنے کے سادھنیں كو بَهِي لِكَاتَار برَهائِه جانا أِسي كا نَام سبهيئتا هـ . " سائنس أبر ٹیکی ارر پروپکار کے راستے سے ھٹ کر لوگیں کی بری اِچھاؤں اور آیسی نفرتوں کو پیرا کرنے کے لیئے ایک گندے ساتھن کا کام دے رهی هے . گیسیں تیار کی جارهی هیں جنهیں هوآئی جهاز سے برسا کو للدین ' ٹھویارک آور برلی جیسے شہروں کی کل آبادی کو چند گھنترں کے اندر دم گھوت کر ختم کیا جا سکتا ھ . چیر پہار کے تجربوں میں زندہ انسانی بچے اور بالغ مرد عررت تک کام میں لائے جانے لکے هیں ، اخباروں کا ادهکتر کام رة كها هے أيك برے يهمانے ير جهوتا يرويهكيندا جهوتے اشتهار اور جنتا کو سچی روشنی دینے کی جگه انہیں پورا پورا دھوکا دینا . پرانا اُصرل تها که دنیا مل کر چلنے کے لئے ہے آپر ایک دوسرے کے لئے قربانیاں کرتے ہوئے ہی ہم آگے ہڑھ سکتے میں ۔ ية "اوياوهارك" بات بتائي جاتي هي وياوهارك اصول أب یه بتا یا جاتا ہے کہ هر آدمی کا جیرن ایک لگانار ''سنگهرش'' هے، جو جننوں کو مثا سکے اُتنا ھی آس کا جمون سھل ھو گا ۔ یہ کے آج کل کی اویاوھارکتا ا

کلا اور منورنجن میں آجکل کے بڑے شہروں کے رات کے جیون پر جو کہا جا سکے وہ تھوڑا ہے ۔ شراب بدچلنی دولت کی چات ھی جیون میں سکھ پیدا کرنے کے ایک ماتر سان ن وہ گئے ھیں ۔ نیتک یا آدھیاتمک یعنی اِخلاتی اور روحانی سکم کوئی چیز ھی نہیں رھی ، قدرت کے ساتے میل یا سمہرک کی تو ھمارے جیون میں کوئی جکہہ ھی نہیں رھی ،

پچھم کی ہری سے بری قرمیں آج اِسی بات کو سب سے زیادہ 'ویاوہارک' مانتی ھیں که دوسری کورور اور نردھن قوموں کو خود اپنے ھی یہاں کے کورور اُرتیک اُرر نردھن لوگوں کو جتنا ھو سکے چوس کر' آرتیک

शादीश्रदा सोनों में बच्चों की वैदाहरा वेहद वह गई है.
पागलों और गंदी बीमारियों के रोगियों की गिनती दुनिया
भर में वढ़ रही है. बहुत जगह तो बच्चे ही इन बुराइयों को
साथ लेकर पैदा होते हैं. समक, सोच विचार और मलमंसियत का कहीं पता नहीं. घरों के अंदर "चादर देखकर
पैर पसारो" जैसी बातें अब रौर अमली मानी जाती हैं.
कोई यह कहे कि अलग अलग राष्ट्रों का इंतजाम बसी तरह
होना चाहिए जिस तरह अलग अलग घरों का, यानी यह कि
एक हद के अंदर और जहाँ तक हो सके हर राष्ट्र अपनी
जरूरत की बीचें खुद तैयार करे और अपने पैरों पर खड़ा
हो, तो इस तरह के सुकाब रौर अमली बताए जाते हैं!

अब तालीम को लीजिए. पुराना उसूल था "सादी जिल्ली बसर करो और अपने विचारों को ऊँचा रखो." बाब कहा जाता है "अपनी जरूरतों को बढाए जाना और इत जरूरतों के परा करने के साधनों को भी लगातार बदाए जाना इसी का नाम सभ्यता है." साइंस आज नेकी और परोपकार के रास्ते से इट कर लोगों की बरी इच्छाओं और आपसी नफरतों को पूरा करने के लिए एक गंदे साधन का काम दे रही है. गैसें तैयार की जा रही हैं जिन्हें हवाई जहाज से बरसा कर लंदन, न्यूंयार्क और बर्लिन जैसे शहरों की कल आबादी को चंद घंटों के अंदर दम घोटकर खतम किया जा सकता है. चीर फाइ के तजरबों में जिंदा इंसानी बच्चे और बालिश मर्द औरत तक काम में लाए जाने लगे हैं, अखबारों का अधिकतर काम रह गया है एक बड़े पैमाने पर मूठा प्रोपेगेंडा, मूठे इश्तहार और जनता को सच्ची रोशनी देने की जगह उन्हें पूरा पूरा धोका देना. पुराना उसल था कि दुनिया मिलकर चलने के लिए है और एक दूसरे के लिए क़ुर्वीनियाँ करते हुए ही हम आगे बढ़ सकते हैं. यह "अञ्चाबहारिक" बात बताई जाती है. व्या-वहारिक उसूल अब यह बताया जाता है कि हर आदमी का जीवन एक लगातार "संघर्ष" है, जा जितनों को मिटा सके उतना ही उसका जीवन सफल होगा. यह है आजकल की 'व्यावहारिकता।'

कला और मनोरंजन में आजकल के बढ़े शहरों के रात के जीवन पर जो कहा जा सके वह थोड़ा है. शराब, बदचलनी, दौलत की चाट ही जीवन में सुख पैदा करने के एकमात्र साधन रह गए हैं. नैतिक या आध्यात्मिक यानी इखलाक़ी और रुहानी सुख कोई चीज ही नहीं रही. क़ुद्रत के साथ मले या संपर्क की तो हमारे जीवन में कोई जगह ही नहीं रही.

पच्छिम की बड़ी से बड़ी क़ीमें आज इसी बात को सबसे जियादा 'ज्याबहारिक' मानती हैं कि दूसरी कमजोर और निर्धन क़ीमों को और खुद अपने ही यहाँ के कमजोर और निर्धन क्षोगों को जिसना हो सके चूस कर, आर्थिक

निगाई से भी पूस कर और राजनीतिक निगाह से भी पूस कर, अपनी "शान्दार सभ्यता" को क्रायम रक्खा जाय !

यह सब बुराइयाँ केवल एक ऐसे व्यापक और वैज्ञानिक धर्म की मदद से और एक ऐसे समाज संगठन के जरिये ही दूर हो सकती हैं जो इस धरती की सारी मानव जाति को अपने चंदर समा सके.

दुनिया के राजनीतिलों और नेताओं को चाहिये कि वे केवल 'राष्ट्रीय' या नेशनेलिस्ट न होकर 'मानवीय' यानी स्मेनिस्ट हों, और समाज संगठन की इस तरह की योजनाएँ तैयार करें श्रीर दुनिया के सामने रक्खें, जिनमें सबकी सब जरूरतें पूरी हो सकें और सबके दिलों को तसल्ली और संतोष मिल सके. लोग नारों और फिक़रों के चक्कर में न पदकर मेल और सबके भले की बातें सोचें. पूरव और पिछम, एशिया और योरप आज एक दूसरे के काफी निकट आ गए हैं और आ रहे हैं. दोनों में कमजोरियाँ हैं. दोनों में गुए हैं. दुनिया के नेताओं का काम है कि दोनों की कमजोरियों को दूर करते हुए दोनों के गुखों को चमकावें भीर सबको सबके गुणों से फायदा उठाने का मौका दें. पुराना पूरव और नया पच्छिम दोनों का आज गठवन्धन हो रहा है. क़द्रत दोनों का आज संगम चाहती है और पूरा पूरा संगम चाहती है. हमें अपनी योजनाओं और उनके अमल से यह साबित करना है कि क़दरत ने पूरव और पिछम को निकट लाकर रालती नहीं की, और इनको निकट लाना शैतान का काम नहीं है बल्कि भलाई के फ्रारिश्ते का काम है. यही इस समय दुनिया के सामने काम करने को है. यही व्यावहारिक बात है, अमली है बाक़ी सब रोर अमली.

रेल, जहाज, हवाई जहाज इन सबने मिलकर बनावटी राजनैतिक सीमाओं को तोड़ दिया है. सब क्रीमों के अच्छे से अच्छे लोग समक रहे हैं और कह रहे हैं कि हमें अब दुनिया भर के एक संगठन की आवश्यकता है जो हमें बरबादी से बचा सके. एच. जो. वैल्स ने अपनी किताब "प शार्ट हिस्ट्री आफ दी वर्ल्ड" में लिखा है कि—"पुराने ढंग के अलग अलग बिलकुल खुदमुख्तार राष्ट्र अब नहीं चल सकते." दुनिया के नेक और अच्छे दिमाग किस तरह सोच रहे हैं इसकी एक मिसाल सन् 1933 के शिकागों के बर्ल्ड फेलोशिप आफ केथ्स के जलसे में ईसाई पादरी डा. डी. करटिस. डच्जू. रीज की तक़रीर थी. उनके कुछ फिक़रे हम नीचे देते हैं. उन्होंने कहा कि:—

"राजशाही, लोकशाही और कम्यूनिस्ट तीनों तरह के देशों में एक बड़े पैमाने पर समाज का फिर से संगठन करने की योजना तैयार करने का विचार बढ़ता जा रहा है. लोग نگاه سے بھی چرس کر اور راجنیتک نگاه سے بھی چرس کر اپنی «شاندار سبهمتاً کو قایم رکھا جائے!

م به سب برائیاں کیول ایک ایسے ریا پک اور ریکیائک دھرم کی مدد سے اور ایک ایسے سماج سنگٹھیں کے ذریعہ ھی دور ھو سکٹی ھھی جو اِس دھرتی کی ساری مالو جاتی کو اپنے الدر سما سکے ۔

دنیا کے راج نیتکیوں اور نیتاؤں کو چاھئے که وے کیول التربع يا فيهنيلست ته هوكر المانوية يعنى هيومينست هو اور ساج سنکلیں کی اِس طرح. کی یوجنائیں تیار کریں اور رنیا کے سامنے رکھوں جن میں سب کی سب ضرورتیں یوری ھو سکیں اور سب کے دانوں کو تسلی اور سنتوس مل سکے ۔ رک تعروں اور فقروں کے چکر میں نع ہے کر میل اور سب کے بہلے کی باتیں سوچیں ، پورب اور پچھم' ایشیا اور یورپ آب ایک درسرے کے کانی فہت آکاتے میں اور آرھے میں، دونوں میں کمووریاں ھیں ، دونوں میں گن ھیں ، دنیا کے نیتاؤں کا کلم ھے کہ دولوں کی کمزوریوں کو دور کرتے ہوئے دونوں کے گنس کو چمکاویں اور سب کو سب کے گنوں سے دایدہ اُ آئھانے لا سُوتم دیں ، پرانا پورب اور نہا پنچھم دونوں کا آبے کٹھ بندھی هو رها هے قدرت دولوں کا آج سنگم چاهتی هے اور پورا پورا سنگم چاهتی هے ، همیں اپنی یوجناؤں اور اُن کے عمل سے یہ لابت كرالا في كه قدرت في يررب أور ينجيم كو نكث لا كو غلطي نہیں کی اور اِن کو تعت لانا شیطان کا کام نہیں ہے بلکہ بھلنی کے فوشلے کا کام ہے ۔ یہی اِس سملے دنیا کے سامنے کام کرنے کو ہے ، یہی ویاوهارک بات ہے؛ عملی ہے؛ باقی سب غير عملي .

"رأج شاهی، لوک شاهی اور کمیونست تینوں طرح کے دیشوں میں ایک برے پیمالے پر سماج کا پھر سے سائٹھوں کرنے کی بوجاد برها جا رها هے اوگ

बाद दूर तक जाने देखने लगे हैं." इसके बाद जापान, जरमनी, फ्रांस, इंगर्लेंड, इटली, स्पेन बीर अमरीका में इस तरह की कोशिशों को चयान करने के बाद डा. रीज ने कहा कि :- "इसमें राक नहीं कि राष्ट्रीय योजनाओं के तैयार करने में रूस की योजना और रूस की मिसाल सबसे अधिक चमकती हुई है. यह योजना इन विचारों की सामने रखकर बनाई गई है कि क्या क्या चीजें पैदा की जावें, कितनी पैदा की जावें, कब और कहाँ पैदा की जावें और किस क्रीमत पर पैदा की जावें......इसमें कोई अचरज की बात नहीं कि रूस बहुत आगे बढ़ रहा है. रूस का फलसका सामाजिक नियंत्रण का फलसका है यानी समाज पर काबू और समाज का अपने अपर काबू. इस की योजना एक व्यापक योजना है. उसमें हर तफसील की तरफ ध्यान दिया गया है. इसलिए रूस की कामयाबी में लगभग कोई शक नहीं हो सकता. यह कहना भी बढ़ाकर बात करना न होगा कि रूस में जिस तरह की योजनाएँ बनाई जा रही हें उनका रंग ढंग और उनका मक्सद धार्मिक (religious) है." आगे चलकर डा. रीज ने कहा है कि:-"समाज का मक्तसद एक ऐसा समाज कायम करना है जिनमें अलग अलग ऊँची नीची जमाअतें न हों (a classless society). यह मक्रसद जब सारी द्रनिया के लिए लगाया जाय तो अलग अलग जमाअतों के बीच के संघर्ष के कड़वेपन के सामने यह कहीं अधिक शक्तिशाली चीज होगा."

जहाँ तक अमीर और गरीब और जनम से जात पात का सवाल है वहाँ तक यह बिलकुल ठीक है कि हमें एक ऐसा समाज बनाना है जिसमें इस तरह की जमाअतों का करक बिलकुल बाक़ी न रहे. पर दुनिया में सब जगह बार तरह के आदमी, उनके बार तरह के क़ुद्रती शौक और उनकी बार तरह की क़ाबलियतें बराबर रहेंगी, कुछ विद्या भेमी, कुछ हुकूमत भेमी, कुछ धन भेमी और कुछ केवल सेवा भेमी. इस करक को अभी न समम पाना इस समय के रूसी तजरबे की एक मान्न कमी है. इसके कारण गलतियाँ भी हो रही हैं. इसलिए काट छाँट भी करनी पढ़ रही हैं. पर ख़ुशी की बात है कि उस बढ़े तजरबे की सारी पालिसी में सुधार और तब्दीलियाँ भी होती जा रही हैं.

दुनिया के अध्यापकों का फर्ज है कि इन सब बीजों को ठीक ठीक समर्भे और आइन्दा की नसलों को समकावें.

أب دور تک آگے دیکھلے الے هیں ۔ اِس کے بعد جانان جرملی فرانس الكليند اللي إسهان اور أمريعه مين إسطرح كي كوششين لو بیان کرنے کے بعد ڈاکٹر ریزئے کیا کہ:۔۔"اِس میں شک لہوں که راشتریه یوجنازں کے تیار کرنے میں روس کی یوجنا ور روس کی مثال سب سے ادھک چیکٹی ھوٹی ہے یہ ہوجنا اِن وچاروں کو سامنے رایکر بنائی گئی ہے کہ کیا کیا چیزیں بهدأ کی جاریں' کتنی پیدا کی جاوین' کپ اور کہاں ہدا کی جاریں اور کس قیست پر پیدا کی جاریں ۔۔ اِس میں لوئي أچرج كي بات نهين هے كه روس بهت آگه بوء رها هے . وس كا فلسخه ساماجك ثينترن كأفلسته مح يعنى سماج پر قابو أور ساب کا اینے اوپر قابو ، روس کی یوجنا ایک ویایک یوجنا ہے . أس مين هر تنصيل كي طرف دهيان ديا گيا هي إس لئي وس کی کامیابی میں اگ بھٹ کوئی شک نہیں ہو ساتا ۔ م کہنا بھی ہوھا کر بات کرنا تم ھوٹا که روس میں جس طرح ہے پوچنائیں بنائی جارھی ھیں اُن کا رنگ تعنگ اور اُن کا تعمد دهارسک (Religious) هے ." آگے چل در ڈاکر ریز ، كها هـ كه: -- السماج كا مقصد أيك أيسا سماج قايم كونا هـ می میں الک الک اُونچی لیچی جماعتیں نا هوں a classiess society). يه متصد جب ساري دنيا لے لڑے لگا یا جائے تو الگ الگ جماعتوں کے بیچے کے سنگورش کے روے بن کے سامنے یہ کہیں ادھک شکتی شالی چیز ھوگا .⁴⁴

جہاں تک امیر اور غریب اور جنم سے جات پات کا سوال

ہ وہاں تک یہ باکل ٹیبک ہے کہ ہمیں ایک ایسا سماج
الخا ہے جس میں اِس طارح کی جماعتیں کا فرق با کل
فی نہ رہے ۔ پر دنیا میں سب جکہ چار طارح کے آدسی

ع کے چار طارح کے تدرتی شرق اور اُن کی چار طارح کی
ابلیتیں ہواہر رہیکگی کچھ ودیا پریسی کچھ حکومت پریسی
چھ دھن پریسی اور کچھ کیول سیوا پریسی ، اِس فرق کو
ھی نہ سمجھ پانا اِس سمتہ کے روسی تجربے کی ایک ماتو
می ہے ۔ اِس کے کارن غلطیاں بھی ہو رہی ھیں ، اُس لئے
المت چھائٹ بھی کرنی پر رہی ہے ، پر خوشی کی بات ہے که
ساری پالیسی میں سدھار اور تبدیلیاں
می ہوتی جا رہی ھیں ،

دنیا کے ادھیاپکوں کا فرض ہے که اِن سب چیزوں کو ٹھیک یک سنجھیں اور آئادہ کی نسلوں کو سنجھاریں ۔

تأكلر تارا چند

डाक्टर ताराचन्द

युं तो दुनिया की तारीख में बहुत से बढ़े राजा हुए हैं
जिन्होंने क्रीमों के जीवन पर अपना सिक्का जमाया है.
किसी ने लढ़ाइयों में देशों को जीत कर बढ़े साम्राज कायम किए; किसी ने प्रजा की मलाई के काम किए और धन-दौलत को बढ़ाया; किसी ने कलाओं को तरक्षकी दी, सुन्दर इमारतें बनवाई, नहरें और तालाब खुदवाए, नगर बसाए; किसी ने सरकारी संगठन को सुधारा, राजा और प्रजा के सम्बन्धों को मजबूत किया, न्याय की नींव पर राज का मन्दिर खड़ा किया; और किसी ने लोगों में धर्म का प्रचार किया, इस लोक के साथ परलोक के हित को सँबारा, मेल जोल और प्रेम के रिश्तों को बढ़ाया और आदिमियों के चलन पर गहरा असर डाला. पर ऐसे राजा बिरले ही दिखाई देते हैं जिन्होंने इन सब अंगों में काम कर दिखाया हो. इन बिरले राजाओं में अकबर का नाम सबसे ऊँची पाँत में रखने के काबिल है.

अकबर के कामों का व्योरा लें तो मालूम होता है कि बह सब गुणों से पूरा था. जिस बक्त उसके बाप की मौत हुई उसकी उम्र तेरह बरस की थी और सिवाय पंजाब के कुछ जिलों और देहली के सारा हिन्दुस्तान ग़ैरों के हाथ में था. अकबर चारों तरफ दुश्मनों से घिरा दुश्चा था. उसने अपने अद्भुत बल और कौशल से सब बैरियों को हराया और हिमालय से सतपुड़ा तक सारे देश पर मुग़ल राज कायम किया. वह लड़ाई में जिस तेजी और वहादुरी से काम करता था उसे देखकर अवन्भा होता है, उसके धावों की ऐसी धाक थी कि दुश्मन उसके नाम से दहलते थे. इसकी जंगी काबलियत की सबसे बड़ी मिसालें 1581 की बरावत का दवाना और सरहद्दी सूबों का जीतना है, यह वह साल था जब अकवर की धर्मनीति से कट्टर मुसलमानों में बड़ी इलचल फैली थी. उन्होंने उसके भाई मुहम्मद हकीम को जो कायुल में हाकिम था उकसाया, उधर मुल्ला मुहम्मद क्यादी ने जो जौनपुर का काजी था बादशाह के खिलाफ फतवा दे दिया और बगाबत को धर्म के अनुकूल ठहराया. प्रमास भीर विदार के अफ़सरों ने अकबर के हुक्सों को मानने से इन्कार कर दिया. इस आड़े वक्त में जब बैर की जाग चारों तरक भड़क रही थी और बहुत से मुसलमानों हे विलों में राज के लिए दुविधा पैदा हो गई थी अकबर ने

یہ تو دلها کی تاریخ میں بہت سے بڑے راجہ ہوئے میں جنہوں نے قوموں کے جھوں پر اپنا سکہ جمایا ہے ۔ کسی نے لوائیس میں دیشوں کو جیست و پرتے سامرائے قایم کئے؛ کسی نے پرخا کی بھلٹی کے کام کئے اور دھن دولت کو برتھایا؛ کسی نے کلوں کو توقی دی سلدو عمارتیں بلوائیں ' تہریں اور تالاب کیدوائے ' نگر بسائے؛ کسی نے سرکاری سنکٹیں کو سدھارا' راجہ اور پرجا کے سمبندھوں کو مضبوط کیا' نمائے کی نمو پر راج کا اور پرجا کے ساتھ پرلوک کے هت کو سنوارا' میل جول اور پریم کے رشتیں کو برتھایا اور آدمیوں کے چلن پر گہرا اثر قالا ، پر ایسے راجہ برلے ھی دکھائی دیتے ھیں جنہوں نے اِن سب انکوں میں راجہ کام کر دکھایا ھو ۔ اِن برلے راجاؤں میں اثبر کا نام سب سے اُرنچی پانت میں رکھنے کے قابل ہے .

أكبر كے كاموں كا ويورا ليس تو معلوم هوتا هے كه وہ سب گنیں سے بیرا تھا ۔ جس وقت اُس کے باپ کی موت ہوئی اُس کی عمر تیرہ ہرس کی تھی اور سوائے پنجاب کے کچھ فلس اور دھلی کے سارا ھندستان غیروں کے ھاتھ میں تھا ۔ ائبر چاروں طرف دھمنوں سے کھرا ہوا تھا ۔ اُس لے اپنے آدبھت بل اور کوشل سے سب بیریوں کو ہوایا اور معالیہ سے سینھوا تک سارے دیش پر میل رائے قایم کیا، وہ اوائی میں جس تھڑی اور بہادری سے کلم کرتا تھا اسے دیکھکر اچنبھا ہوتا ہے، اس کے دعارس کی ایسے دھاک تھے که دشمن اُس کے نام سے دھلتے تھ . اُس کی جنگی قابلیت کی سب سے بڑی مثالیں 1681 کی بناوت کا دہانا اور سرحدی صوبوں کا چیکنا ہے ، یہ وہ سال تها جب البوكي دهرم نيتي سے كار مسامانين ميں برى هلچل پیلی تھی . اُنھوں نے اُس کے بھائی محسد حکیم کو جو کابل میں حاکم تھا اُکسایا اُدھر ملا محصد یودی نے جو جونہور کا قاضی تھا بادشاہ کے خطف فتوں درے دیا اور بغاوت کو دھرم کے انوکول تھھولیا ، بنگال اور بھار کے انسووں نے اکبر کے حکموں کو ماننے سے اِنگار کردیا ، اِس آرے رقت میں جب بھر کی آگ چاروں طرف بھڑک رھی تھی اور بہت سے مسلمانوں کے دلس میں رأب کے لئے دہدھا پیدا ھوگئی تھی اکبر نے

اِس فتلت کے آئے برس بعد اگیر نے هادستان کے سرحدی ملکوں سکاشیر ' افغانستان ' سندہ بلوچستان ۔۔ پر اِس خطال بھے قیفت کرنے کی ٹیائی که اِن کے پرے مدھیہ ایشیا میں اُوبیکوں کا زور بڑھ رہا تیا ، تار کے پاکھے کی طرح اُپلی فوجیوں کے پہلاکو اُس نے ایسے ویوھ کی رچاا کی که کنچھ ھی دنوں بھی سب ملکوں کو آپنے راج میں ملا لیا اور هندستان کو بھری جانا در هندستان کو بھری جانا دور ہادی کے منصوبوں سے بچایا ۔

مستعدی اور شور بیرتا کی مثالی سے اُس کا جیوں بھرا ھوا فے ، اِن میں بہت سی باغیب کے کھللے کے سبادہ میں مُلِئِي هَيْنِ . آيک کا يہاں ذکر کيا جاتا ہے . اکبر نے 1572 مين كجرات كا صوبه جيتا أور وهاى أينا صوبيدار مقرر كيا . جب وہ اوت کر آگرے آیا تو صوبیدار نے خبر دی که اکبر کے رتھ داروں نے بلوہ مجا رکھا ہے اور صوبت کے اس کو بگار دیا هم. اکبر نے خبر باتے می تیاری شروع کی اور 28 اگست 1173 کے دن آگرے سے کوچ کردیا، ایک ایک دن میں اُرثث آور گھوڑے کی سواری سے پھاس پھاس میل کا سفر طے کیا اور چه سو میل کا راسته نو دن میں پورا کر احداباد آدهمکا . اس کے ساتھ کل 3000 سواروں کی فوج تھی اور دشمنوں کی تعداد 20,000 سے زیادہ تھی . سابرمتی کے کذارے انبری ثقارے کی آواز گونجی تو دشمنی کو بزا اُچرج عوا . اُن کے مخبروں لے خبر دی تھی که دس روز پہلے آئیر نتمیور سیکری میں پے حبر دی جی کے دس رور پہتے ، در دے ہرا ہے۔ آرام کرتا تھا کی کیسے ہرسکتا تیا که اِتنی جلدی گجرات پہونیے جائه! نه شاهی هانهی نظر آتے تھ' نه خیسے اور تناعیں. ير کائوں کی ساکشی بھی جھوت نہيں ھوسکتی تھی ۔ اُبھی دشمن أچنیه سے سنبیلے نه تهے که اکبر لے الکارا. نه دشس کی تعداد کا وچار کیا' تم اپنے صوبیدار کی کمک کے آئے کا . ہوھکو گهرو کو دریا میں ذال دیا اور ایر نکا اُس یار جا یہونچا ۔ جشمنیں کی صنبی پر خونخوار شیر کی طبح دھاوا کیا . اُنہیں چیرتا پهارتا بوها اور اُن کے سردار کو پکر ایا . دوسری فیج جو گهات میں لکی تھی اب اُس پر تُوت پڑی ۔ پر اُس کے سہاھی تر سے ایسے بوکھائے که اکبر کے سواروں نے اُنھیں کے ترکھوں میں سے تیر نکالے اور اُن پر برسائے . اِس فوج کا سردار بھی بھاگ كيا أور يافيون كا خاتمة هوكيا.

پر اکبر بہادر سیاھی' جوشیلا وجیتا اور بدھیمان سیمسال ھی نہیں تیا جس نے ایک وشال سامواج کی نیو ڈالی' اُس نے پرجا کی بھائی کی بہت سی

हि और हिम्मत से काम लिया कि यों ही दिनों ठंडा हुआ, दुरमनीं को पनाह माँगनी पड़ी और तन कायम हो गया.

कृतने के भाठ बरस बाद अकबर ने हिन्दुस्तान मुल्कों—काश्मीर, अफ्ग्रानिस्तान, सिन्ध, बिलो--पर इस स्वयाल से क्रम्बा करने की ठानी कि इनके रिश्या में उपयोगों का जोर बढ़ रहा था. ताइ के ग्रह अपनी कीजों को फैला कर उसने ऐसे व्यूह की कि कुछ ही दिनों में सब मुल्कों को अपने राज लिया और हिन्दुस्तान को बाहरी हमला करने गनसर्वों से बचाया.

ो और शूरवीरता की मिसालों से बसका जीवन है. इनमें बहत-सी बारियों के कुचलने के सम्बन्ध हैं. एक का यहाँ जिक्र किया जाता है. अकबर ने गुजरात का सुवा जीता और वहां अपना सबेदार या. जब वह लीटकर आगरे आया तो स्वेदार ने के अकबर के रिश्तेदारों ने बलवा मचा रखा है के अमन को बिगाइ दिया है. अकबर ने खबर थारी शुरू की और 28 अगस्त 1573 के दिन कृत कर दिया. एक एक दिन में ऊँट और घोदे से पचास पचास मील का सफ्र ते किया और ज का रास्ता नौ दिन में पूरा कर अहमदाबाद आ सके साथ कल 3000 सवारों की फ़ौज थी और ो तादाद 20,000 से ज्यादा थी. साबरमती के कबरी नक़ारे की आवाज गूंजी तो दुश्मनों को रज हुआ. उनके मुखबिरों ने खबर दी थी कि दस अकबर फतहपुर सीकरी में आराम करता था. यह कता था कि इतनी जस्दी गुजरात पहुंच जाय ! ाथी नज़र आते थे, न ख़ैमे और न क़जातें. पर साक्षी भी मूट नहीं हो सकती थी. अभी चम्भे से सम्हलें न थे कि अकबर ने ललकारा. न ो तादाद का विचार किया, न अपने स्बेदार की आने का. बदकर घोड़े को दरिया में डाल दिया लगा उस पार जा पहुँचा. दुशमनों की सफों पर र की तरह धाबा किया, इन्हें चीरता फाइता बढ़ा सरदार को पकड़ लिया. दूसरी कीज जो बात ो अब उस पर टूट पड़ी, पर उसके सिपाड़ी डर से ताए कि चकवर के सवारों ने उन्हीं के तरकशों में काले और उन पर बरसाए. इस फीज का सरहार ाया और बारीयों का खाला हो गया.

क्षिपहसाजार ही तहीं था जिसने एक बिराल ने नींब डाली, उसने प्रज्ञा की सलाई की बहुत की

تجویزیں گئیں ، هندستان کهیتی پردهان دیھی ہے ، البر نے زمین کے بندوبست کے لئے ٹوتومل کی مدد البر سختی نہ ہو اور سرکاری مالکذاری بھی آسانی سے وصول ہوجائے ، اس آبادی بڑھائے اور کھیتی کی ترقی کی سدا لکن رهتی تهی ، اس کے زمانے میں دستکاری میں خوب آننتی ہوئی اس کے کمانے میں دستکاری میں خوب آننتی ہوئی اس کے کرفانوں میں اچھ سے اچھ کاریگر رهتہ تھے اور وہ کارنتوں کے کنیں کا بڑا گلفک تھا ، هندستان کے بنے مال کی ساری دنیا میں قدر ہوتی تھی ، ایشیا اور یورپ کے سبھی دیشوں سے ریاباری تعوارت کے لئم آتے تھے ، هندستانی سیتھ اور ساهرکار دنیا کے لکھیتیوں کا مقابلہ کرتے تھے ، دودہ گھی اور اناج کی اتنی بہوتات تھی که اُس زمانے میں جتنے یاتری یورپ سے بہاں انہے سبھی نے اِن کے سستےرہی کی گواھی دی ہے ، اِسی سے رعایا آئے سبھی نے اِن کے سستےرہی کی گواھی دی ہے ، اِسی سے رعایا آئے سبھی نے اِن کے سستےرہی کی گواھی دی ہے ، اِسی سے رعایا سبھی نے اِن کے سستےرہی کی گواھی دی ہے ، اِسی سے رعایا سبھی نے اِن کے سستےرہی کی گواھی دی ہے ، اِسی سے رعایا سبھی نے اِن کے سستےرہی کی گواھی دی ہے ، اِسی سے رعایا سبھی نے اِن کے سستےرہی کی گواھی دی ہے ، اِسی سے رعایا سبھی نے اِن کے سستےرہی کی گواھی دی ہے ، اِسی سے رعایا سبھی نے اِن کے سستےرہی کی گواھی دی ہے ، اِسی سے رعایا سبھی نے اِن کے سستےرہی کی گواھی دی ہے ، اِسی سے رعایا اُسی اور خوشحال تھی ،

اکبر کو سرکاری اِنتظام کے معاملوں میں جیسی سوجھ ہوجہ تھی آس کا اقدارہ اس کے فوجی اور دیوائی سنکھیں سے ھو سنتا ہے ، یہ سنتھوں اکبر کے وقت میں قایم ہوا پر آبے بھی تربب بونے چار سو برس بیتنے پر اُس کی روپ ریکھا بنی ہے . انگریزوں کو اِس بات کا گھمنڈ ہے کہ اُن کی قوم نے ریاستی اِنتظام میں دنیا کو راہ دکھائی ہے ۔ پر اُنہوں نے بھی هندستان میں اکبری بنیادوں پر هی اپنی حکومت کی عمارت کھڑی کی۔ جيسا تعاليه كل هذه صوبول أور سركارول كي حكومت كا أس رنت بنا تھا اُسی کی نقل تھوڑے بناء روپ میں آج یھی دنهائی دیتی ہے ۔ اکبر کے منصداری سنکٹھن کی جکه سول سررس نے لی ہے' فرق اِتفا ھی ہے که آج فوجی آرر دیوائی كلم بالعل الك، كودئي كلي هين أس زمانه مين ولا ملي ته أور ایک می انسر کے اختیار میں تھے ۔ جس طرح بادشاہ اور اش کے رزیر سارے دیک کی دیکھ بھال کرتے تھے آسی طرح وایسرائے ارر اُسُ کی انتظامی کونسل (ایکزیکیوٹو کونسل) ملک پر حکومت کو آجال حکومت کو آجال ئی حمومت پر ترجیح تھی . اکبر اور اُس کے وزیر هندستائی تھ ، البر نے کئی بار ہندوں کو سب سے اُرنیجے عہدوں پر نیت کیا، انکریزی راج کے تیرہ سو برس بیتنے پر بھی باگ قرر انکریزوں کے هی هاته میں رهی ، انگریز ناء خود هندستانی بنیه نم أنهرس نے هلاستاليوں كو اينايا أور قم أينے برأيو مانا .

اگر کلا' سنکیت' کویتا' سائنس اور فلسفے کی طرف دھیان دیں تو معلوم ہوتا ہے کہ اکبر نے اُن کی ایسی دل کبول کر سیوا کی اور اِن کا ایسی اُدارتا کے ساتھ پالن پوش کیا کہ ہر طرف الوکھی توقی' ہر فنی میں عجیب گماگھی دیاہے لکی ۔ چدر کا میں اُس نے گماگھی دیاہے لکی ۔ چدر کا میں اُس نے

यजवी की. हिन्दुस्तान खेती प्रधान देश है. अकबर ने जुमीन के बन्दोबस्त के लिए टोडरमल की मदद से ऐसी करकी की कि कारतकारों पर सकती न हो आर सरकारी मालगुआरी भी आसानी से बस्ल हो जाय. उसे आबादी बढ़ाने और खेती की तरककी की सदा लगन रहती थी. उसके जमाने में दस्तकारी में खूब उन्नति हुई, उसके कारजानों में अच्छे से अच्छे कारीगर रहते थे और वह कतावन्तों के गुणों का बढ़ा गाहक था. हिन्दुस्तान के बने माल की सारी दुनिया में कदर होती थी. उपिशया और सूरोप के सभी देशों से ज्यापारी तिजारत के लिए आते थे. हिन्दुस्तानी सेठ और साहकार, 'दुनिया के लखपतियों का मुकाबला करते थे. दूध, धी और अनाज की इतनी बहुतात थी कि उस जमाने में जितने यात्री यूरोप से यहां आये सभी ने इनके सस्तेपन की गवाही दी है. इसी से रिआया मुखी और खुराहाल थी.

अकबर को सरकारी इन्तजाम के मामलों में जैसी समन्म थी उसका अंदाजा उसके कीजी और दीवानी संगठन से हो सकता है, यह संगठन अकवर के वक्त में कायम हुआ पर आज भी क़रीब पौने चार सी बरस बीतने पर उसकी रूपरेखा बनी है. श्रंप्रेजों को इस बात का घमंड है कि उनकी क्रीम ने रियासती, इन्तजाम में दुनिया को राह दिसलाई है. पर उन्होंने भी हिन्दुस्तान में अकबरी बुनियादों पर ही अपनी हुकूमत की इमारत खड़ी की. जैसा ढांचा कुल हिन्द सूबों और सरकारों की हुकूमत का उस वक्त बना था इसी की नक़ल थोड़े बदले रूप में आज भी दिखाई देती **ै. अकवर के मनसबदारी संगठन की जगह सिविल सर्विस** ने ली है, फर्क़ इतना ही है कि आज फीजी और दीवानी काम बिल्कुल अलग कर दिए गए हैं, उस जमाने में वह मिले ये और एक ही अफसर के अखितयार में थे. जिस तरह बादशाह और उसके बजीर सारे देश की देखभाल करते थे उसी तरह वाइसराय और उसकी इन्तजामी कौंसिल (एक्जीक्यूटिव कौंसिल) मुल्क पर हुकूमत करते थे. एक बात में अकबर की हुकूमत का आजकल की हुकूमत पर तरजीह थी. अकबर और उसके वजीर हिन्दुस्तानी थे. अकबर ने कई बार हिन्दुओं को सब से ऊंचे ओहदों पर नियत किया. अंग्रेजी राज के डेढ़ सौ बरस बीतने पर भी बागडोर श्रंग्रेजों के ही हाथ में रही. अंग्रेज न ख़ुद हिन्दुस्तानी बने, न उन्होंने हिन्दुस्तानियों को अपनाया और न अपने बराबर माना.

अगर कला, संगीत, किवता, साइंस और कल्सके की तरफ ध्यान दें तो मालूम होता है कि अकबर ने इनकी ऐसी दिल खोलकर सेवा की और इनका ऐसी उदारता के साथ पालन पोषण किया कि हर तरफ अनोखी तरककी, हर कन से अजीव पमाषमी दिखाई देने लगी. चित्रकला में उसने

man To Sant

ایک نی تعنگ کی ایجاد کی جسین ایرائی اور هادو طرز کے ایسے سبریا کہ ایک ٹیا آور آئیائیا تھنگ پیدا هر گیا ، بهزاد اور اجنتا کو ایک سانجے میں تھال کر هندستانی قلم کا خوبصورت طرز پیدا کیا . اِس طرز کے استان خواجه عبدالصدن شهرین قلم دسونت اور بساون تھے . عمارت کی کلامیں یہی بات بیدا کی ، اِسلامی اُور هندو طریقوں كو إس خوبي سے ماليا كه ايك نيا شاندار طرز بن گها . فتم پور سیکری میں اِس طرح کی عمارتیں کے سوئے آج بھی البر کے خوبصورتی کے سپنے کے نشان دکیائے ھیں . ساکیت میں تان سین اور بابا ھریداس کے نام آکبری۔ دربار کی یاد سدا زندی رکھیں کے ادب کے میدان میں اِن میں جدھر نکاہ أَنَّهَا كُو دِيَهِيُّمُ أَكْبُر كِي فَيض كَي تصويرين سَامِنْ أَنَّى هَين -سورداس وريداس كنگ بيت ترهري يرمانند مادهر رحیم' برہے بہاشا کے کوی؛ رابل' کرشی داس' گنگا دھر' شرستگو' بهائم چند سده چند ناراین بهت نیل کنته کالیداس سنسکرت کے ردران اُس کے آشرئے میں رہتے تھے، فارسی کے شاعرا تاريخ دان تجرم ؛ اديب فلسفى برى تعداد مين إنعام اکرام اور تنظواهیں باتے تھے ، هندو 'مسلمانوں میں میل جول یدرا کرنے کے لئے ہادشاہ نے سنسکرت کی یستکوں کے فارسی میں ترجمے کروائے ، اِس سلسله میں انهرو ویدا مها بهارت هری وزهن بهکودگیتا راماین یوک وسشت بهاگوت وشنو یران وغیرہ کے ترجم ہوٹے ، ابولنفل نے مہابھارت کے ترجم كَ دَيبانْجُهُ ميں اِس ثهتى كا ذكر كيا هے . وہ كهتا هـ:-

"جون به دریانت کامل خود نزاع فرایق ملت محدی و یهری و هنود را بهشتر یانت و اِنکار یک دیگر از اندازه معلوم شد کاطر نمتددان بران قرار یانت که کترب معتبر عاارفین به زبان منطاف ترجمه كردة أيد تا هردو فريق به بركت إثناس قدساء حضرت أنمل الزمائي أو طعلت وأنعاد برآمادة جريائه حق شوند، و برمحاس و عيوب يك ديكر اطلاع يانته در اصلاح أحوال خود مساءي جميله نمايند ."

ارتھات۔۔"پرری طرح سے چھاں بین کرنے پر جب یہ معلوم ھوا کہ مسلمان یہودی اور هندو دعرم کے لوگوں میں بہت جھکڑے ھیں اور وہ ایک دوسرے کی باتوں کو بہت زیادہ أُلْنَاتِم عين تو بانشاه لي جو إن معلون كو خوب سمجهتم هين ا دل مهن يه نشجے كيا كه إن سمهردايوں كى وشواسى يستمون كا أيك دوسرے كى بهاشاميں ترجمه كرايا جائے تاكه سب داس کے لوگ بادشاہ کی مہربائی کی وجہ سے جھکڑے اور ازائی سے ھت کو سیم کی تلاش میں لکیں اور ایک دوسرے کے دھرم کی اچھائیوں آور برائیوں کو جان کر اپنی حالت کے سمارلے میں پېرى پېرى كېشش كرين ."

एक तए हंग की देशाय की जिसके देशनी चीर हिन्द तर्थ हो ऐसा समोका कि एक नया और अनुठा ढंग पैदा होगया. बेहजाद और अजवा को एक साँचे में शलकर हिन्द्रस्तानी कलम का खुबसूरत तर्ज पैदा किया. इस तर्ज के उस्ताद ल्बाजा झन्द्रस्तमद शीरीं कलम, दसवंत और बसावन थे. इमारत की कला में बही बात पैदा की. इसलामी और हिन्द तरीकों का इस खूबी से मिलाया कि एक नया शानदार तर्ज बन गया. फतेहपुर सीकरी में इस तरह की इमारतों के नमूने बाज भी बाकबर के खुबस्रती के सुपने के निशान दिखाते हैं. संगीत में तानसेन और बाबा हरिदास के नाम अकबरी हरबार की याद सदा जिन्दा रखेंगे, अदब के मैदान में जिथर निगाह षठाकर देखिये अकवर के फैज की तस्वीरें मामने श्राती हैं. सुरदास, हरिदास, गङ्ग भट्ट, नरहरि, परमानन्द, माथो, रहीम, अजमापा के कवि; बिट्टलं, कृष्ण-हास. गङ्गाधर, नृसिंह, भानुचन्द, सिद्धचन्द, नारायश भट्ट, नीलकंठ, कालिदास संस्कृत के विद्वान उसके आश्रय में रहते थे. कारसी के शायर, तारीखदाँ, नजुमी, अदीव, फलसकी बडी तादाद में इनाम इकाम और तनस्वाहें पाते थे. हिन्दू मसलमानों में मेलजोल पैदा करने के लिये बादशाह ने संस्कृत की पुस्तकों के फारसी में तर्जुमे करवाये. इस सिल-सिले में अथर्व वेद, महाभारत, हरिवंश, भगवद्गीता, रामायण, योग वसिष्ट, भागवत, विष्ण पुराण वरौरा के तर्जमे हए. अबुल फुरल ने महाभारत के तर्जमे के दीवाचे में इस नीति का जिक्र किया है. वह कहता है-

"च् व दरयाप्रते कामिल ख़ुद निजाए फिरायक्ने मिल्लते मुहम्मदी व यहृद् व हनृद् रा वेरतर याप्त व इन्कार यक-दीगर ज्यादह अज अन्दाजह मालूम शुद, खातिरे नुक्तादाँ बराँ करार याप्त कि कृत्वे मुख्यतबरए तारफीन व जवाने मुखालिफ तरजुमह करदह आयद ता हर दो फ्रीक व वर-कते अन्फासे कृद्सीए हजरते अकमल-उल-जमानी अज तश्रभत व इनाद् बरजामद्ह ज्याए हक शवन्द, व बर महासन व अयुवे यक दीगर इतिला याप्रतह दर इसलाह अहवाल खुद् मसाई जमीलह नुमायन्द."

"अर्थात्—पूरी तरह से छानबीन करने पर जब यह मालूम हुआ कि मुसलमान, यहूदी और हिन्दू धर्म के लोगों में बहुत मगड़े हैं और वह एक दूसरे की बातों को बहुत ज्यादा उलटते हैं तो बादशाह ने, जो इन मामलों को खब सममते हैं, दिल में यह निश्चय किया कि इन सम्प्रदायों की विश्वासी पुस्तकों का एक दूसरे की भाषा में तर्जुमा कराया जाय ताकि सब दलों के लोग बादशाह की मेहरबानी की वजह से मनादे और लड़ाई से इटकर सच की तलाश में लगें और एक दूसरे के धर्म की अच्छाइयों और बुराइयों को जानकर अपनी हालत के सुधारने में पूरी-पूरी कोशिश करें."

ं अक्षा ने अर्थ के बसेड़ों का अन्त करने के लिये ही चस नीति का सहारा लिया जिसे सुलह कुल (ऐक्य, शान्ति) का नाम देते हैं. उसके दिल में सब धर्मों के लिए आद्र था. बद रात रात भर जैनियों, हिन्दुओं, शीओं, ईसाइयों के पविदतों से धर्म की बात चीत करता था, सच की खोज में शागा रहताथा, पर उसका मन सिर्फ खोज करने वाले विद्यार्थी का सान था. वह एक अनुभवी आदमी था जिसकी जात्मा पर ज्योति के दर्शनों की भूकी थी. उसे इस वलाश में कामयाबी भी हुई और उसने देख लिया कि बाहरी आडम्बरों की अनेकताओं के भीतर एक तत्त्व है जो सब में एकसा भलकता है और सब धर्मों के मानने वाले अपनी अपनी रीत से इसकी ही खोज करते हैं. इस उसूल पर पहुंच कर अकबर ने एक सम्प्रदाय की बुनियाद डाली जिसका सक्तसद तौहीदे इलाही (ईश्वर की एकता) का फैलाना था. इसे दीने इलाही के नाम से पुकारते हैं. यह कोइ नया धर्म नहीं था. धर्मों की एकता ही इसका असली सिद्धान्त था.

रारज यह कि समाज के जीवन का कोई पहल न था जिस पर अकबर ने गहरा असर न डाला हो. इसी सबब से इसका पाया दुनिया के बड़े बादशाहों में ऊँचा है और इस बात की जरूरत है कि उसके राज के उसूलों को समकने की कोशिश की जाए. किसी राज के बुनियादी उसूलों को जानने के लिए चाहिए कि राज श्रीर समाज का मतलब भौर सम्बन्ध समक्ष लिया जाए, समाज से मामूली तौर पर **भादमियों के एक गिरोह से मतलब लिया जाता है. गिरोह** बनाकर रहना श्रादमी का स्वभाव है. इसकी वजह यह है कि आदमी की जरूरतें विना गिरोहबन्दी के पूरी नहीं हो सकतीं. श्रादमी का निजी जीवन, खाना पीना, सन्तान श्रीर इसकी रचा बिना आपस की मदद के मुमकिन नहीं. फिर आदमी भाव और प्रवृत्तियों का पुतला है. इनके पूरा करने में ही उसकी जिन्दगी की सफलता है. संसार की वस्तुएं उसे अपनी तरफ़ खींचती हैं, और उन्हें अपनाने के लिये बह उनके भी छे दौदता है. गर्भी, बरसात श्रीर ठंड से बचना, असन से रहना, खतरे से धवराना उसे घर बनाने पर मजबूर करते हैं. त्रादमी स्वभाव से लड़ाका, साहसी, आगे चलने वाला है. इसी से कीजें बनाता है. शिकार खेलता है, दुनिया के जंगल पहाड़ों को खूंदता है और लागों का नेता बनता है. एक तरफ उसमें घमंड, मान, दिखावा है तो दूसरी तरफ बन्दगी, बेचारगी, विनय. कभी कभी अपने धन को शान शौक्रत में धुंए की तरह उड़ाता है और कभी नगर और बस्ती से मुंह मोड़ निर्जन जंगलों में उन्न बिताता है. भूक, प्वास, बदन का रखाव, श्रीलाद यह ऐसी जहरतें हैं किनके पूरा किए बिना उसका जीना दूभर है.

اگر فی دھرم کے بمہروں کا ادت کوئے کے لئے ھی آس نیتی کا سہاوا لیا جسے صلح کل (ایمیء شائتی) کا قام دیتے ھیں، اُس کے دل میں سب دھرموں کے لئے آدو تھا، وہ رات راقت بھر جیلیوں شدوں شیعوں عیسائیوں کے پندتوں سے رهم کی بات چیت کرتا تھا سچ کی کھرچ میں لگا رها تھا، پر اُس کا میں موف کھرچ کرئے والے ودیارتھیکا سانے تھا، وہ ایک انبھیں آدمی تھا جس کی آتیا پرم جیوتی کے درشلوں کی بیوکی تھی، اُسے اُس تلفی میں کامیابی بھی ھوئی اور آس نے دیکھ لیا کہ باھری آدمبروں کی انبیکاؤں کے بھیار ایک تتو ہے جو سب میں ایکسا جہلکتا ہے اور سب دھرموں کے ماننے والے اپنی اپنی ریت سے اِس کی ھی کھرچ کرتے ھیں ایس ایک میں ایک سیودائے کی بنیاد دالی جس کا مقصد توجیدائی (ایشور کی ایکٹا) کا پھیلانا تھا ، اس دیورموں کی ایکٹا کا پھیلانا تھا ،

غرض یہ که سمام کے جیون کا کوئی پہلو ته تھا جس پر اکبر نے کہرا اثر قد قالا هو . اِسي سبب سے اُس کا یابد دنیا کے بڑے بانشاهیں میں اولچا ہے اور اِس بات کی ضرورت ہے کہ اُس کے راج کے اُمولوں کو سمجھنے کی کوشھ کی جائے ، کسی راج کے بنیادی اُصولیں کو جاناہ کے لئے چاھئے که راج اور سماج كا مطلب أور سمبنده سمجه ليا جائه . سماج سے معمولي طور پر آدمیوں کے ایک گروہ سے مطاب لیا جاتا ہے۔ گروہ بنا كر رهنا آدمي كا سبهاؤ هي إس كي رجهة يه ه كه أُدمي کی فرورتیں بنا گروہ بندی کے پوری ٹہیں ہو سکتیں ، آدمی کا نجی جهرن کیانا پینا سنتان آور اُس کی رکشا بنا آپس کی مدد کے صعبی نہیں۔ پھر آدمی بھاؤ اور پرورتیوں کا پتلا ہے ، اِن کے پورا کرنے میں ھی اُس کے زندگی كى سبهاتا هم سنسار كى وستوئين أعد أبنى طرف كيينجيتي هيں' اور أنهيں اينائے كے لئے وا أن كے يبتهم دورتا هـ . گرمی ارسات أور تهنت سے بحینا اس سے رهنا خطرے سے گھیرانا اُسے گھر بنانے پر مجبور کرتے تھیں ، اُدسی سوبھاؤ سے الله ساهسي أكم چلن والا في إسى سه نوجيس باتا في شكار کھیلتا ہے' دنیا کے جنکل بہاروں کو کھوندتا ہے اور لوگوں کا نیتا بنتا ه . ایک طرف أس میں گہمند علی دکیارا ه تو درسری طرف بندگی' ہے چارکی' رِنٹے ، کبھی کبھی دهن کو شان شوکت میں دھوئیں کی طرح آزانا ہے اور کبھی نکر آور یستی سے منہ مرز ترجن جاکلوں میں عبر بناتا ہے یہوک' پیاس' بدن کا رکیاؤ' اولاد یہ ایسی ضرورتیں میں جن کے پورا کٹے بنا اُس کا جيئا دريور هـ .

पर आवनी निरा-मान का नन्ता नहीं है, उसमें अवस,
बुद्धि, समस्त की रोशनी है जो उसे जानवरों से अलह्दा
करती है. उसके सन काम क़ुद्रत के क़ान्नों के साथ-साथ
अवस के क़ान्नों के मातहत हैं. उसे भूक लगती है तो वह
जानवरों की तरह अपना पेट भर कर खुश नहीं होता. उसे
गमी या ठंड सताती है तो वह पानी में बैठकर या खोहों
में छुपकर अपनी जकरतों को पूरा नहीं करता. खाहिशों
के पूरा करने में वह बक्तत का गुलाम नहीं, वह दूर की बात
सोचता है, आगा पीछा वेखकर नतीजों पर गीर करने के
बाद कार्रवाई करता है. खुद्धि उसकी प्रवृत्तियों को एक सूत
में बाँधने और उनमें जावता क़ायम करने की तरफ मुकाती
है. यही वजह है कि वह अपने और दूसरों के फायदों को
मिलाकर ऊँचे आदर्श बनाता है और उन्हें हासिल करने के
जतन करता रहता है.

जिस एक गिरोह के जरिये से आदमी अपनी जिन्द्गी ही इन जरूरतों को एकसां आदरों को सामने रखते हुए रूरा करते हैं उसी को समाज कहते हैं. समाज की असल्यत उसकी एकता में है. जब तक वह एकता कायम है समाज जिन्दा है. समाज दूट कर छोटे दुकड़ों में बँट गया वा दूसरे समाजों से मिल गया तो उससे नया समाज पैदा होगा और उसके असली निजी जीवन का अंत हो जायगा. अपने जीवन की यात्रा पूरी करने के लिए समाज को कायहे कानूनों की जरूरत होती है. रीति रिवाज और धर्म बनाने ख़ते हैं. कानूनों को ज्योहार में लाने के लिए राज बनते हैं. जब समाज के अपने बनाए कानूनों का राज पालन करता है तो उसे स्वराज कहते हैं, जेकिन जब राज ऐसे कानून बलाता है जो समाज ने नहीं बनाए हैं तो वह राज परराज और वह समाज पराधीन समाज कहलाते हैं.

हमारा हिन्दुस्तान एक महान देश है जिसका बड़ा भारी विस्तार है. यह बहुत पुराने जमाने से अनेक समाजों का घर रहा है. पर इसके इतिहास में जो खासियत साफ तौर रर मलकती है वह अनेकताओं को मिटा कर एकता की तरफ बढ़ने का मुकाब है. हमारे देश में समय समय पर बहुत सी नसलों के गिरोह आए जो फिक्रों और वंशों में बंटे हुए थे. पहले आयों की कई शाखें आई जो देश के अलग अलग हिस्सों में बसी. उसके अलग अलग राज कायम हुए. आयों के दो वंश मशहूर थे, सूर्य वंश और चन्द्र वंश, फिर मकी शाखों का नाम चला जैसे चन्द्र वंशियों के यह, तुर्वस, हत्यु, अनु पुरु, सूर्य वंशियों में कोशलों की चर्चा सबसे ख्यादा हुई. इस पुराने बक्त में इन नामों से अलग अलग गिरोह सममे जाते थे. इन गिरोहों को जन कहते थे. बाद में जिन देशों में यह जन बसे उनके नाम पर राज्य कायम हुए और यह जनपद कहलाए. जिस बक्त गीतम बुद्ध ने

پر آدمی نرا بهاؤ کا بندہ نہیں ہے، اُس میں عقل اُ بدھی اُ سبجه کی روشنی ہے جو اُسے جانوروں سے علیصدہ کرتی ہے ۔ اُس کے سب کام قدرت کے قانوٹوں کے ساتھ ساتھ عقل کے قانوٹوں کے ساتھ ساتھ عقل کے قانوٹوں کے ماتحت ھیں اُسے بھوک اکتی ہے تو وہ جانوروں کی طرح اپنا پیٹ بھر کر خوش نہیں ھوتا اُسے گومی یا نہلڈ ستاتی ہے تو وہ پانی میں بیٹھ کر یا کھھوں میں چھپ کو اپنی ضوروتوں کو پورا نہیں کرتا ۔ خواھشوں کے پورا کرنے میں وہ دور کی بات سوچتا ہے اُکا پیچھا دیکھ کو اُنس کی پرورتھوں پر غور کرنے کے بعد کار روائی کرتا ہے ۔ بدھی شب کی پرورتھوں کو ایک سوت میں بائدھنے اور اُن میں ضابطہ قایم کونے کی طرف جھکانی ہے ۔ یہی وجہہ ہے کہ وہ آئی اور دوسروں کے فائدوں کو مالا کر اُولچے آدرش بناتا ہے اور اُنی میں آئیس حاصل کرنے کے جتی کوتا رہا ہے ۔

جس آیک گروہ کے ذریعہ سے آدمی اپنی زندگی کی اِن فرورتوں کو ایکساں آدرشوں کو ساملے رکھتے ہوئے پورا کرتے ہیں اُسی کا شمیا کی آیکتا آسی کا شمیا کی آیکتا آسی کو چھوٹے تکروں میں بنت گیا یا درسرے ساجوں سے مل گیا تو اُس سے نیا سماج پیدا ہوگا اور اُس کے اصلی نجی جیوں کا آلت ہو جائیگا ، اپنے جیوں کی یاترا پوری کرنے کے لئے سماج کو قایدے قانونوں کی فرورت ہوتی ہے' ریتی رواج اور دھرم بنانے پرتے ہیں ، قانونوں کو بھوھار میں لانے کے لئے اور دھرم بنانے پرتے ہیں ، قانونوں کو بھوھار میں لانے کے لئے واج بنتے ہیں ، جب سماج کے اپنے بنائے قانونوں کا راج پالی کوتا راج بالی کوتا ہے جو سماج نے نہیں بنائے ہیں ، وہ راج ایسے فانوں چلانا ہی جو سماج کے اپنے بنائے ہیں ، ایکن جب راج ایسے فانوں چلانا ہی جو سماج کے نہیں بنائے ہیں ، وہ راج پرراج اور وہ سماج پرادھیں سماج کے نہیں بنائے ہیں ،

پرادھیں سالے کہلاتے ھیں .

ھمارا ھندستان ایک مہان دیش ہے جس کا بڑا بھاری وستار ہے . یہ بہت پرانے زمانے سے الیک سماجس کا گہر رھا ہے پر اس کے اِنہاس میں جو خاصیت صاف طور پر جہانکی ہے وہ الیکتاؤں کو متاکر ایکتا کی طرف بڑھنے کا جہکاؤ ہے . عمارے دیش میں سمے سبے پر بہت سی نسلس کے گروہ آئے جو فرقی اور بلشوں میں بنتے ہوئے تھے . پہلے آریوں کی کئی شاخیں آئیں جو دیش کے الگ الگ حصوں میں بسیں ، اُس کے الگ الگ دو ونش مشہور آس کے الگ الگ دو ونش مشہور آس کے الگ الگ راہ کی کئی جیسے چندر ونشیس کر دوش پھر اِن کی شاخیں کا نام چلا ونشیس میں کوشلوں کی چرچا سب سے زیادہ ہوئی ، اِس پرائے وقت میں اِن ناموں سے الگ الگ گروہ اِس جن دیشوں میں کوشلوں کی چرچا سب سے زیادہ ہوئی ، اِس پرائے وقت میں اِن ناموں سے الگ الگ گروہ اِس جن دیشوں میں یہ جن یہ اُن کے نام پر راجعہ میں جن دیشوں میں یہ جن یہ اُن کے نام پر راجعہ میں جن دیشوں میں یہ جن یہ اُن کے نام پر راجعہ علی میں دیشوں میں یہ جن یہ اُن کے نام پر راجعہ علی میں دیشوں میں یہ جن یہ اُن کے نام پر راجعہ علی علی اور یہ جن یہ کہائے . جس وقت گرتم بدھ لے علی علی اور یہ جن یہ کہائے . جس وقت گرتم بدھ لے علی علی دیشوں یہ جن یہ کو جن کہائے ۔ جس وقت گرتم بدھ لے علی قالم ہوئے اور یہ جن یہ کہائے . جس وقت گرتم بدھ لے علی علی اور یہ جن یہ کہائے . جس وقت گرتم بدھ لے

لها هان

अपने अमें का प्रचार किया, उत्तरी हिन्दुस्तान में सोलह महान जनपद थे. मीर्य चंरा के बादशाहों ने इन्हें एक छत्र की छाया के नीचे जमा किया और एक बड़ा साम्राज कायम किया. यह हिन्दुस्तान की तारीख में पहला मीका था कि करीब इस हिन्दु एक रिश्ते में बंधा.

मीयों की ताक़त घटी तो हिन्दुस्तान पर पिच्छम उत्तर से नए हमले होने लगे. शक और कुशन जातियों ने देश में हैरा जमाया. इन जातियों को हिन्दुस्तानी बना कर देश ने एक नए खान्नाज को जन्म दिया. इसके बनाने वाले समुद्र गुप्त और चन्द्रगुप्त थे. गुप्त वंश के सुनहरे युग की इमारत मेल की बुनियाद पर रखी गई. गुप्तों के बाद पांचवीं सदी हैसी में हुएगें, गूर्जरों, जाटों और और जातियों ने हमारे देश में पैर रखा. इनके आने से बड़ी उथल पुथम मची. पुराने और नए समाजों का ऐसा मंथन हुआ कि सभ्यता के सभी आंगों में नयापन आ गया. इन नए समाजों का वधनों और राजपूत वंशों ने राज्य के हप में संगठन किया.

जब राजपूतों में कमजोरी आई तो ग्यारहवीं सदी से तुर्कों के हमले गुरू हुए और तेरहवीं सदी में इसलामी राज का मंडा देश पर फहराने लगा. अब तक जो लोग हिन्दुम्तान में आए थे उन्होंने यहां के धर्म और सभ्यता को कुबूल किया था. पर तुर्क अपने साथ एक जबरदस्त धर्म और अनोखी सभ्यता लाए और इन्होंने देश के सामने एक नया सवाल खड़ा कर दिया. पर हिन्दुम्तान की आत्मा जो मेल और एकता के उसूलों में बसी है इस सवाल से घबराई नहीं और उसने अनेकता को मिटाने और इन्सानियत को पैदा करने का अमल शुरू कर दिया.

अकवर के जमाने तक इस अमल का बहुत कुछ असर हो चुका था. श्रकवर का पुरुखा तैमूर 1398 में हिन्दुस्तान में आया था श्रीर उसने बहाना ही यह निकाला था कि हिन्दुस्तान के मुसलमान श्रपने मजहच श्रीर तहजीब से दूर चले गए थे. श्रकवर के बाबा बाबर ने हिन्दुस्तान में जो ढंग देखा उसके बारे में लिखता है:—

"हिन्दुस्तान, यह एक अजनबी मुल्क है. हमारी विलायत से दूर दुनिया है. पहाड़, दरिया, जंगल, जानवर, नवातात, आदमी, जबान, हवा और मेंह सब और हैं. अगरचे काबुल के इलाकेजात में से गर्म सीर बाज बीजों में हिन्दुस्तान से मुशाबह है और बाज में नहीं है, मगर दिरपाए सिंध के इधर आते ही जमीन, दरस्त, पत्थर, कौमें, और इनके राहो रस्म सब हिन्दुस्तानी तरीक की." (तुजुके बाबरी)

इस हिन्दुस्तानी तरीक, हिन्दुस्तानी चाल ढाल, रीति रिवाज को धकवर ने बड़ी चतुराई श्रीर दूरश्रन्देशी से बढ़ाया. इसने अपने राज को इसी बुनियादी उसूल पर اپ دھوم کا چونجاز کیا ۔ آتری ھندستان میں سولت مہاں ہیں دورہ کا چونجاز کیا ۔ آتری ھندستان میں سولت مہاں ہیں جن پدر تھی ایک چہار کی چہارا کے نینچے جمع کیا اور ایک ہوا سامراج نایم کیا ، یہ هندستان کی تاریخ میں پہلا موقع تھا کہ تریب کل ھند ایک رشتے میں بندھا .

مرویوں کی طاقت گھتی تو هندستان پر پچھم آتر سے نئے
حلے هولے لگے ، شک اور کشن جانیوں نے دیش میں قیرا
جمایا ، اُن جاتیوں کو هندستانی بناؤر دیش نے ایک نئے
سامراہے کو جام دیا ایس کے بنائے والے سمدر کہت اور چندر کہت
تھے ، رکہت ونش کے سنہرے یگ کی عدارت میل کی بنیاد پر
رکبی گئی ، گھتوں کے بعد پانچوریں صدی عیسوی میں هنوں
گرجرون جائوں اور اور جانیوں نے عمارے دیش میں پیر رنھا ،
اُن کے آنے سے بڑی آنهل پتیل محتی ، پرانے اور نئے ساجوں کا
ایسا منتھی ہوا کہ سہنیتا کے سبھی انکوں میں نیا پی آکیا ،
اُن نئے ساجوں کا وردھنوں اور راجہدت ونشوں نے راجید کے
اُن نئے ساجوں کیا ،

جب راجورتوں میں کمزوری آئی تو گیارہویں صدی سے ترکوں کے حملے شورع ہوئے اور تیرہویں صدی میں اِسلامی راج کا جہندا دیش پر پہرائے گا ، اب تک جو لوگ عندستان میں آئے سے اُنہوں نے یہاں کے دعرم اور سبهیتا کو فیول کیا تھا ، پر برک اپنے ساتھ ایک زبردست دھرم اور انوکیی سبهیتا لائے اور اُنہوں نے دیھی کے سامنے ایک نیا سوال کهرا دردیا ، پر هندستان کی آتما جو میل اور ایکتا کے اُصولوں میں بسی سے اِس سوال سے گہرائی نہیں اور اُس نے انیکتا دو متانے اور ایسانیت کو پہدا کرنے کا عمل شروع کردیا .

ادر کے رمانے تک اِس عمل کا بہت کچھ اثر ہوچکا تھا ، انبر کا پرکھا تیمور 1348 میں ہندستان میں آیا نھا اور اُس نے بہائنہ ھی یہ نکالا تھا که ھندستان کے مسلمان اپنے مذھب اور تہذیب سے دور چلے گئے تھے ، ادبر کے باہا باہر نے ھندستان میں جو تھنگ دیتھا اُس کے بارے میں لیھنا ہے: —

"هندستان یه ایک اجنبی ملک هے . هماری والبت سے دور دنیا هے . پہار دریا جنکل جانور نبادت آدمی دور دنیا هے . پہار دریا جنکل جانور نبادت آدمی زبان هوا اور مینه سب اور هیں . اگرچه کابل کے عالفه جات میں سے گرم سیر بعض چیزوں میں هندستان سے مشابه هے اور بخض میں نہیں هے مگر دریائے سندھ کے اِدھر آتے هی رمین درخت پتھر قومیں اور اُن کے والا و رسم سب هندستانی طریق کی . " (تزک باہری)

اِس هندستانی طریق هندستانی چال تعال ٔ دال در اندیشی سے ریتی دراج کو اکبر نے بچی چترائی اور دوراندیشی سے برهایا ، اس نے اپنے راج کو اِسی بنیادی اُمول پر

हार्यम किया कि सातियों और वर्गों के व्याप्त के सहावें भट जाएँ और दिन्दुस्तानी में दिन्दुस्तानियत का बोल बाला हो. अकवर के विचारों और आवशों को उसके सममतार हजीर अनुलक्ष्यल ने इन लक्ष्यों में जाहिर किया है. यह लक्ष्य कश्मीर के एक मंदिर की दीवार पर खुदवाय गए थे.

इलाही व हर खाना कि मी निगरम जुराप तू अंद व व

हर जवाने कि भी शिनवम गोयाए तू.

डुको इसलाम दर रहत पोयाँ. बहदहु लाशरीक लागोयाँ.

ह्मगर मस्जिवेस्त व यावे तू नारए कुद्दूस मी जनन्द, व ह्मगर कलीसास्त व शीक तू नाकूस मी जुंबनन्द.

गह मुतकनो दैरम व गह साकिने मस्जिद, यानी कि तुरा भी तलबम खाना व खाना. अगर खासाँ तुरा व कुफ, व इसलाम कारे नेस्त, ई हर

दो रा दर परदए इसलाम तू बारे नह.

कुफ़ काशिर रा व दीं दींदार रा, गर्दए वरर्दी दिले अत्तार रा.

ई' ख़ाना व नीयते इसप्राक कृत्य मवहिदान हिन्दुस्तान व ख़सूसन मध्यवूद परस्तान घरसए करमीर तामीर याम्तह.

अर्थात्—"हे ईरवर जिस घर को देखता हूँ उसमें तेरे हुँ हो वाले हैं, और जिस भाषा को सुनता हूँ उसमें तेरा ही चर्चा है. कुफ़ (देवताओं का पूजन) और इसलाम तेरे ही रास्ते पर दी इते हैं और कहते हैं 'तू एक है, तेरा कोई सामी नहीं.' मस्जिद है तो उसमें तेरी याद में धर्म के नारे लगाते हैं और गिर्जा है तो तेरे ही प्रेम में धंटे बजाते हैं.

"कुभी में मृन्दिर में बैठकर ध्यान करता हूँ, कभी मस्जिद

में. यानी कि तुमें ही घर घर में दूँदता हूँ.

"जो तेरे चुने लोग हैं चन्हें न कुफ और न इस्लाम से काम है, क्योंकि इन दोनों के लिये तेरी कुबूलियत के पर्दे में जगह नहीं है.

"कुफ़ काफ़िर के लिये और दीन दीनदार के लिये है, पर गन्धी (इत्र बेचने वाले) के दिल के लिए तो गुलाब के फूल की रज ही चाहिये.

"यह मन्दिर हिन्दुस्तान के अद्वैतवादियों के दिलों को मिलाने के लिए और खास तौर पर कश्मीर देश के पुजारियों के लिये बनाया गया."

हिन्दुस्तान के इतिहास के मँमले काल में अहै तथाद का आदर्श दोनों हिन्दू और मुसलमानों को एकसाँ मरीके से पसन्द था, और दोनों भक्ति के रास्ते इस आदर्श तक पहुँचने की कोशिश में लगे रहते थे. इनकी सभ्यता में इसी आदर्श की शक्ति काम कर रही थी. इसी से इनकी कला, قامم کیا که جائیس اور دھرمس کے آپس کے جھکڑے سف جائیں اور ھندستائی میں ھندستائیت کا بول بالا ھو۔ اکبر کے وجارس اور آدرشوں کو اس کے سمجھدار وزیر ابوالفضل نے اِن لفظیں میں ظاھر کیا ہے۔ یہ لفظ کشمیر کے ایک مندر کی دیوار پر کھدوانے گئے تھے۔۔۔

اِلَى بہر خانه كه مى نكرم جو يائے تو أند و بهر زبائے كه مى شلوم گويائے تو .

کفو و آسلام در رهت پویان ⁴ وحده الاشریک لا گویان ۳۰

اگر مسجویست به یاد تو نعرهٔ قدوس می زناد، و اگر کلیساست به شرق تو ناقوس می جنبنند .

گهه معاکف دیرم و گهه ساکن مسجد ⁴ یعنی که ترا می طلبم خانه ⁴

اگر خاصاں ترا به کفر و اسلام کارے تیست ایں هر دو را درورد اسلام تو بارے نه .

کفرکا فررا و دیس دیندار را ' گردهٔ وردیی دل عطار را .

این خانه به نیت اِتفاق قلرب موحدان هندستان و خصوماً معدود پرستان عرصهٔ کشمیر تعدیر یافته .

ارتیات ایشور جس گیر کو دیکھتا ہوں آسیں تھر۔ تھوئڈھنے والے ھیں' اور جس بھاشا کو سنتا ہوں آس میں تیرا ھی چر چا ھے کنر (دیوتاؤں کا پوجن) اور اسلام تیرے ھی راستے پر دورتے ھیں اور کہتے ھیں 'تو ایک ھے' تیرا کوئی ساجھی نہیں ۔' مسجد ھے تو اُس میں تیری یاد میں دھرم کے نعوے لگاتے میں اور گرجا ھے تو تیرے ھی پریم میں گھنٹے بجاتے ھیں .

دور میں مندر میں بیٹھ کر دھیاں کرتا ھرں کبھی مستجد میں ، یعنی که تنجھے ھی ھر گھر میں تھوندھتا ھرں ۔

جو تعرے چنے لوگ هیں اُنهیں ناہ کفر اور ناہ اِسلام سے کام ہے کیو کاہ اِن دونوں کے لئے تیری قبولیت کے پردے میں جگہا نبیس ہے.

"نمر کا فر کے لئے اور دین دیندار کے لئے ہے کو گندھی (عطر بینچنے والے) کے دل کے لئے تو گلاب کے پعول کی رج ہے عاملے .

ورہ مندر هندستان کے ادویتوادیوں کے داوں کو ملالے کے لئے اور خاص طور پر کشمیر دیھی کے پجاریوں کے لئے بنایا گیا ۔ " گیا ۔ "

هندستان کے اِتہاس کے منجھلے کال میں ادویتواد کا آدرھی دونوں هندو اور مسلمانوں کو ایکسال طریقے سے پسند تھا' اور دونوں بیکتی کے راستے اِس آدرھی تک پہونچھنے کی کوشش میں لگے رہتے تھے ۔ اِن کی سبھتا میں اُسی آدرھی کی شکتی کام کر رہی تھی، اِسی سے اِن کی کا

मया दिन व्यक्तित, अवस में यकसानियत था गई थी. समाज और राज के संगठन में भी इसी कादशे की प्रेरणा दिखाई देती है.

यह सच है कि मँमले काल में कुल हिन्द एक समाज के रिश्तों में नहीं बँध सका, सारे हिन्दुस्तानी एक जत्ये के अन्दर नहीं समा सके. इसीलिये एक क्रीम या राष्ट्र का जन्म नहीं हुआ. लेकिन यह मानना पड़ेगा कि हिन्दुस्तान ने इस संचित्त की तरफ बढ़ने की पूरी कोशिश की. मुसलमानों के हिन्दुरतान में आने के बक्त हिन्दुस्तान अनेक वंशों, सम्प्रदायों, जातियों, क्रबीलों, रजवाड़ों, राजों में बँटा हुआ था. मुसलमानी साम्राज क्रायम होने की वजह से इस तकसीम में कुछ कमी हुई. हिन्दू समाज के संगठन का मुसलमानों पर असर पड़ा और उनका संगठन एक हद तक हिन्दू ढाँचे की नक़ल बना. अगर हिन्दुओं में देश, जाति, धन्धे, दौलस, मत, राजनीति के विचारों से अलग-अलग सन्प्रदाय, फिर्के और गिरोह थे तो ऐसा ही हाल मुसलमानों का भी था. राजपूत, मराठा, द्राविद, त्राद्मण, श्रन्ती, वैश्य, शुद्ध और इनकी अनेक शाखें; सुनार, लुहार, केवट, कायस्थ; रीव, बैच्याव, शक में हिन्दू बँटे थे तो ईरानी, खुरासानी, पठान; दकनी हिन्दुस्तानी, जुलाहे, क्रसाई, हजाम, सुन्नी, शिका मुसलमानों में थे. दौलत और रुतवे के लिहाज से हिन्दुओं में नाहाण, क्षत्री, सेठ, साहुकार और कायस्य ऊँचे इजें में सममे जाते थे और जातें जो दस्तकारी, धन्धे, मजदूरी में लगी थीं वह नीचे दर्जे में थीं. इसी तरह मुसल-मानों में शरीफ और रजील की तकसीम थी.

आईने अकबरी में समाज के संगठन पर बहस की है. समाज को एक पुरुष (शख्स) के समान माना है. जिस तरह दुनिया चार तत्त्वों से मिलकर बनती है यानी आग, पानी, हवा और मिट्टी से उसी तरह इस दुनिया को बसाने बाला आदमी (पुरुष, शख्स) चार तत्त्वों का पुतला है. आद्मियों का गिरोह जिसे समाज कहते हैं और जो आदमी के समान है वह भी चार तत्त्वों पर निर्भर करता है. इसीलिये इसमें चार तरह के आदमी होते हैं. मुबारिज (लड़ाके) जो समाज में आग के समान हैं, पेशेवर (काम धन्धे वाले) जो हवा के समान हैं. ऋहले कलम (पढ़ने लिखने वाले) जो पानी से समानता रखते हैं. बर्जागर या कशावर्ज (सेतिहर) जिनका मिट्टी से मिलान किया जा सकता है. इन्हीं चारों पर समाज के जीवन का सहारा है. इन्हीं से समाज को बल और सुख का लाभ होता है. इन्हीं चारों तस्वों के समान गिरोहों के तानेवाने से समाज का कपड़ा बुना जाता है और इनके मेल से अनेक एक में तब्दील होता दे यह चार गिरोह दो जमाश्रतों में रखे जा सकते हैं. कामाकु (क्रेंबे) जिनमें एह्ले सैफ (तलवार चलाने वाले) शासिल है और असलाफ़ (नीचे) जिनमें पेशेवर और بينا أدب من أيكساليت أكلى بني . سباج أور ال کے سلکھی میں بھی اسی آدرهی کی بریرتا دکھائی

TO A STATE OF THE SECOND S

یہ سے فے که منجیلے کال میں کل هند ایک سالے کے عتبل میں نہیں بندھ سکا' سارے هندستانی ایک جتھے کے ازر نهیں سما سکے ، اِسی لله ایک قرم یا راشتر کا جنم نهیں مراً ليكن يه مالنا پريكا كه هندستان له اس منزل كي طرف المن کی پوری کوشش کی، مسلمانوں کے هندستان میں آنے کے بنت مندستان انيك ونشور" سيوردايور" جاتهون" قبيلور" رجواوور" الهول ميں بنا هوا تها ، مسلمائي سامراج قايم هوئے كى وجهة سے اِس تقسیم میں کتھ کمی ہوئی ، ہندو سمانے کے سنکتھن کا سلمانوں پر اثر پرا اور آن کا سنکتھیں ایک حد تک هندو يَهانج كي قلل بنا . أكر هلاؤن مين ديش جاتي دهنده يولت، مت راج نيتي کے وچاروں سے الک الک سيودانے، نرتے اور گروہ تھے تو ایسا ھی حال مسلمانوں کا بھی تھا . راجهرت مراتها دراور براهس چهتری ویعیه شودر اور آن کے انیک شاخیں ؛ سوڈار' لوہار' کیوت کایستھ' شہو' ویشنو' شک میں هندو بنتے تھے تو ایرائی خراساتی پتھان دینی هدستاني جالف قصائي حجام سنني شيعه مسامانون مين نه . دولت اور رتبه کے لحاظ سے هندؤں میں براهس چھتوی سينه ساهوكار أور كايسته أونجے درجے ميں سمجھے جاتے تھے ارر ذانیں جو مستکاری دهنده مردوری میں لکی تهیں وا ليبيد درجے ميں تهيں . إسى طارح مسلمانوں ميں شريف اور ردیل کی تقسیم تھی ۔

ائیں اکبری میں سماج کے سنکتھن پر بحث کی ہے ۔ سام کو ایک پرهی (شخص) کے سمان مانا ہے ۔ جس طرح دنیا چار نتروں سے ملعر بنتی ھے یعنی آگ پانی موا اور مئی سے اُسی طرح اِس دنیا کو بسانے رالا آدمی (پرھنَ؛ شض) چار تترون کا بتلا ہے ۔ اُدمیوں کا گروہ جسے سماے کہتے عیں آور جو آدمی کے سمان ہے وہ بھی چار تتوؤں پر نربھر کرتا اسی لئے اس میں چار طرح کے آدمی ھوتے میں . مبارز (الراکے) جو سماہے میں آگ کے سمان میں پیشمور (کام لمندهے والے) جو هوا کے سمان هيں . اهل قلم (پڑهنے لكهنے رالے) جو پانی سے سمانتا رکتے ھیں۔ ھرزہگر یا کشاورز (كينتهر) جن يا مالي سے مال كيا جاسكتا هے . اِنهيں چاروں ار ساج کے جیوں کا سہارا ہے . اِنہیں سے ساج کو بل اور سکھ کا لابھ تقرتا ہے اِنھیں چاروں تتوؤں کے سمان گروھوں کے تالے بالے عساج کا کپڑا بنا جاتا ہے اور اِن کے میل سے انیک ایک الل تبديل هوتا هے ، يه چار گروة درو جماعتوں ميں رکھ جاسكتے اس ، اشراف (أولج) جن مين اهل ميف (تلوار جلال واله عامل هيں اور اساقت (نوچے) جن ميں پيشتور اور

हतूर खेतिहर राजिक हैं. राज का यही काम है कि इस यों का पतादा बराबर रखे और हरएक को अपने कर्तन्य, वह और मर्यादा से हटने न दे.

समाज की जिस एकता का आदर्श सकवर की आँसों सामने था इसका ढाँचा आईने सकवरी के पढ़ने से इस होता है. पर समाजी ढाँचे का ठहराब राज के संगठन सासरे पर है. इसकिए सकवरी राज के सिदांतों पर ज्यान स जरूरी है.

यह सिद्धांत न तो इसलामी राजनीति से स्थार लिए ए थे, न हिन्दू राजनीति से नक्तल किए गए थे. बल्कि दोनों

जनीतियों से चुने गए थे.

 $V_{i_1}^{M_i}$

हिन्दू राजनीति के उसूल हिन्दू जीवन के उसूलों पर

ायम थे. और हिन्दू आदमी के जीवन को अलहदा

लहदा हिस्सों में बँटा हुआ नहीं मानते थे. इनके नजदीक

विन एक ऐसा पूरा और अट्टट न्यापार है जिसके दुक़्बे

हीं हो सकते. इसकी मिसाल यह है कि जिस तरह आदमी

सी वक्त तक आदमी है जब तक उसके सब अंग एक

ाथ जुड़े हुए हैं, और अगर अंग भंग हो जायं तो आदमी

ग अंत हो जाता है. जीवन के दो मक्तसद हैं—एक दुन्यावी

क दीनी. दुन्याबी की तीन किस्में हैं—काम, अर्थ, धर्म. दीनी

श एक—मोन्न. पहले तीन वर्गों को हासिल करने से इस

निया का भला होता है, अभ्युद्य मिलता है. दूसरे से

गदमी सदा के लिए दुन्हों से क्रूट जाता है, परम आनन्द्र

गाम करता है.

दुन्यावी कायदों या अथों की तीन क्रिस्में इमारी तिरंगी क्रिन्ता के साथ बँधी हैं. इमारी पहली जरूरत वंश का ज्ञयम रखना, दूसरी जरूरत शरीर का पालन और तीसरी माज की रक्षा है. काम, अर्थ और धर्म का त्रिवर्ग इन्हीं करतों को पूरा करने का नाम है. यह जरूरतें बिना शाँति गैर संगठन के पूरी नहीं हो सकतीं. शाँति और संगठन के ज्ञये राज की ताकृत चाहिए. इसी ताकृत को हिन्दू राजनीति वंद कहा गया है. दंहशास्त्र नीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र और

माज शास्त्र का मेल जोल है.

राजा दंढ को धारण करता है इसी लिए उसकी उसा सब से भारी है. महामारत और दूसरी राजनीति की स्तकों में राजा को नरदेव कहा गया है. राजा की देह विष्णु का स्थान है इसलिए राजा पूजने काबिल है. मनु अहिता में लिखा है कि ब्रह्मा ने राजा को आठ देवताओं के मंशों से मिलाकर बनाया. इसलिए उसमें इन्द्र, महत, यम, पूर्व, अग्नि, वहण, चन्द्र और कुबेर की शक्ति है.

राजा का ओहदा देवताओं के बराबर है क्योंकि वह रेषी शक्ति का स्वामी है. राज के कामों को दो हिस्सों में बंटा गया है—दिग्पाल और दिग्विजय, लोकपालन में त्रिक्ष की प्राप्त के साथनों को सहैया करना, न्याय या موهور کیتیر شامل هیں . رأج کا یہی کام شاکه ان جاری کا پنوا برابر رکے اور هر ایک کو اپنے کرتوبیا جاند اور مریادا سا هاننے نام دیم .

سباج کی جس ایکتا کا آدرهی اکبر کی آنیهوں کے سامنے تھا اِبین کا تجانبچہ آئیں اکبری کے پوھنے تھ مبلیم ھوتا ہے۔ پر بیپلیمی تجانبچے کا تیپراؤ راج کے سنگلین کے آسرے پر ہے۔ اِس اللہ آئیری راج کے سدھائٹیں پر دھیاں دینا ضروری ہے۔

یه سدهانت نه تو آساسی راج نیتی سه ادهار لله کام ته ا به هندو راج نیتی سه نتل کام کام ته . بلکه دونس راج نیتیس سه چنه کام ته .

چندو راج نیتی کے آمول هندو چیون کے آمولوں پر قایم نیج ، اور هندو آدمی کے جیون کو علیت اللہ علیت حصوں میں بنتا ہوا نہیں مانتے تھ ، اِن کے تردیک جیون ایک ایب پررا اور اتوت ریار ہے جس کے ترج نہیں ہوسکتے ، ایس کی مثال یہ ہے کہ جس طرح آدمی اُسی وقت تک آدمی ہے جب تک اُس کے سب انگ ایک ساتہ جرے ہوئے اُدمی اور اگر انگ ببنگ ہوجائیں تو آدمی کا انت ہوجاتا ہے ، جیوں کے دو مقصد ہیں ۔ ایک دنیاوی ایک دینی ، یہلے دیو مقصد ہیں ۔ ایک دنیاوی ایک دینی کی ایک دینی ، بہلے تین ورگرں کو حاصل کرنے سے اِس دنیا کا سببوکھ ، پہلے تین ورگرں کو حاصل کرنے سے اِس دنیا کا بہا ہوتا ہے اُرہی ملتا ہے ، دوسرے سے آدمی سدا کے لئے دیوں سے چہوت جاتا ہے ، دوسرے سے آدمی سدا کے لئے دیوں سے چہوت جاتا ہے ، ورم آنند لاہم کرتا ہے .

داریاری فایدرس یا ارتهوس کی تین قسیس هاری ترانکی زادگی ساتھ بندهی هیں ، هماری پہلی ضرورت و نش کو قایم رکھنا اور ساتھ فرورت شرورت شریر کا پالن آور تیسری ساج کی رکشا ہے ، کا اُر تیسری ساج کی رکشا ہے ، کا اُر تی اُرد اور دھرم کا تربورگ اِنهیں ضرورتیں کو پورا کرنے کا نام ہائتی اور سنکتیں کے پوری نہیں هوسکتیں ، هائتی اور سنکتیں کی طاقت چاها ہے ، اِسی طاقت کو هندو راج نیتی میں دنت کہا گیا ہے ، دنت شاستر نیتی شاستر اور ساج شاستر کا میل جول ہے ،

راجه دند کو دهاری کرتا کے اسی لئے اُس کی ستا سب سے بھاری ہے ، مہابھارت اور دوسری راج نہتی کی پستموں میں راجه کی دیہ وشنو کا استهاں کے اِس لئے راجه پوجنے تاہل کے ، منو سنگیتا میں لکھا کے کو فردی راجه کو آتھ دیرتاوں کے انشوں سے ملاکر بنایا ، اس لئے اُس میں اندر' مورت' یم' سوریه' اگنی' ورون' چندر اور کیوو کی شکتی ہے ،

راجم کا عہدہ دیرتاؤں کے برابر ہے کیونکہ وہ دیوی پہنچے کا مہدہ دیرتاؤں کے کاموں کو دو حصوں میں پہنچے کیا ہیں۔ دگوجئے ، لوک پالی میں تربورگی کی برایتی کے ساتھیں کو مہما کوئوا؛ نہائے یا تربورگی کی برایتی کے ساتھیں کو مہما کوئوا؛ نہائے یا

इन्साफ, शामिल हैं. दिग्यजय से मतलब है राज की सरहरों को फैलाना. हर हिन्दू राजा का फूर्ज था कि बरसाव के बंद होते ही दशहरा मनाकर देशों को जीतने के लिए कीज लेकर निक्ले. चक्रवर्सी राज कायम करना, सारी दुनिया को एक छत्र की छाया के नीचे जमा करना ही राजा के ससली गुणों के जित सममा जाता था. और वही राजा सचमुष राज के काथिल सममा जाता था जो लोकपालन और दिग्वजय का भार संभाल सके.

दंद शास में लिखा है कि राजा को अच्छे गुणों से सम्पन्न होना चाहिए. गुणों में अच्छा कुल, गूर बीरता, सेना के कमान की योग्यता, धर्म शास्त्र का ज्ञान, राजधर्म के सिद्धांतों की जानकारी, और सदाचार शामिल हैं. जिस राजा में यह खबियाँ नहीं, जिसके बदन के किसी धंग में सराबी है या जो रागी है वह राजसिंहासन पर बैठने के सायक नहीं सममा जाता था. राजा की जिम्मेदारी इतनी भारी थी कि इस ओहदे को मौक्सी नहीं बनाया गया. इसीलिए कोई बिरासत का कानून नहीं था.

राजाओं को उने पद, जिम्मेदारी के कामों और भारी कर्तक्यों के विचार से उनी उपाधियाँ दी जाती थीं. गुप्त वंश के राजाओं के खिताब यह थे—महाराज, राजाधिराज, परमेश्वर, परमभट्टारक, परमेष्ठिन, सार्वभीम, चक्रवर्तिन, धर्मप्रवर्त्तक.

हिन्दू राजनीति में जो राज की प्रकृति, राज के धर्म, राज के मक्सद बतलाये गए हैं उन का मुकाबला इसलामी राजनीति से करें तो दोनों के भेद और समानताओं का पता चलता है. इसलाम आदमी के जीवन के सब अंगों को एक रिस्ते में बंधा मानता है. वह धर्म और व्यवहार, परलोक और इसलोक के अथों को खलग अलग नहीं सममता. खादमी किसी भी काम में लगे—कुन्ने के धन्धों में, धन दौलत के पैदा करने में, राज की सेवा में, विद्या के हासिल करने में, ईश्वर पूजा में—सब कामों में उसके लिए नियम चने हुए हैं जो उसकी धर्म पुस्तक क़ुरान में दिये हुए हैं.

इसलाम का दावा है कि वह सारी दुनिया का धर्म है. बह न जातियों में भेद करता है न आदिमयों के रंगों में. जुल दुनिया और सब जातियों को एक समाज, एक राज की एक मजबूत रस्सी में बाँधना उसका आदश है. ऐसी सूरत में सब दुनिया के लिए एक क़ानून का होना जरूरी है और बह क़ानून किसी आदमी का बनाया नहीं हो सकता. इसीलिए बह कहता है कि शरीयत का क़ानून तो अल्लाह का भेजा हुआ है, सब के कपर एकसां लागू है. इस क़ानून को पाने बाला अल्लाह का रसूल या पैगम्बर है और इस झानून की रक्षा करने बाला खलीका, बादशाह या सुलतान.

्र अतीय अकादि अतीय अर्रस्ति उठ अन्न मिन्कुम

اتصاف المحلق المحلق المحلق عد مطلب هد راج کی سرحدوں کو جھانا کہ برسات کے باد، ہوتے ہی دھورہ مناکر دیشوں کو جھاند کے لئے نبے لمیکو انکے ، چکرورتی واج قایم کرنا ساری دانیا کو ایک چھار کی جھایا کے انبیجے جمع کرنا ھی واجه کے املی گلبس کے اجب سمجھا جاتا تھا۔ اور وھی واجه سے میے واج کے تاہل سمجھا جاتا تھا۔ اور وھی واجه کا بھار سنبھال کے تاہل سمجھا جاتا تھا جو لوک یائی اور دگرجائہ کا بھار سنبھال

دنت شاستو میں لکھا ہے کہ راجہ کو اچھے گئوں سے سبھن مرنا چاہئے۔ گئوں میں اچھا کل شوربھرتا سینا کے کان کی پرگتا دھرم شاستو کا گھان راج دھرم کے سدھانتوں کی جانگاری اور سداچار شامل ھیں ۔ جس راجہ میں یہ خوبھاں نہیں ہس کے بدیں کے کسی انگ میں خرابی ہے یا جو روگی ہے وراج سنتھاسی پر بیٹیلے کے لایق نہیں سمجھا جاتا تھا ، راجہ کی ذمنداری اِتنی بھاری تھی کہ اِس عہدے کو موروثی نہیں بنایا گیا ، اِسی لِشے کرئی ورائت کا قالوں نہیں تھا ،

راجاؤں کو آونچے ید' ذمعداری کے کاموں اور بھاری کرتبیوں کے وچار سے آونچی (پادھیاں دی جاتی تھیں ، گھت وٹھی کے راجاؤں کے خطاب یہ تھے۔۔۔مہازاج' راجا دھیراج' پرمیشور' پرمیشور' پرمیشتھی' ساروبھوم 'چکرورتی' دھرم پرورتک ،

هندو راجایتی میں جو راج کی پرکرتی' راج کے دھرم' اے کے دھرم' اے کے مقصد بتلائے گئے ھیں اُن کا مقابلہ اِسلامی راجنیتی سے کربی تو دونوں کے بھید اور سمائناؤں کا یتہ چلتا ہے ۔ اِسلام آدمی کے جیوں کے سب انگوں کو ایک رشتہ میں یندھا مائنا ہے ۔ وہ داہر اور ریوھار' یولوک اور اِس لوک کے ارتبوں کو الگ الگ نیس سمجھتا ۔ آدمی کسی بھی کام میں لگے—کئیے کے دھندھوں میں' دھن دولت کے پیدا کرنے میں' راج کی سیوا میں' ددیا کے حاصل کرنے میں' ایشور پوجا میں—سب کامیں میں اُس کے لئے نیم بنے موئے ھیں جو اُس کی دھرم پستک تران میں دئے ھوئے ھیں ۔

اسلام کا دعوی هے که وہ ساری دنیا کا دھرم هے، وہ نه جاتیوں میں بهید کرتا هے نه آدمیوں کے رنگوں میں ، کل دنیا اور سب جاتیوں کو ایک سماج' ایک راج کی ایک مضبوط رسی میں باندھنا اُس کا آدرهی هے ، ایسی صورت میں سب دنیا کے لئے ایک تاتوں کا ھونا ضروری ہے اور یه قاتون کسی آدمی کا بلایا نہیں ھوسکتا ، اِسی لئے وہ کہتا ہے که شریعت کا قاتون تو الله کا بهیچا ہوا ہے' سب کے اُوپر ایکساں لاگو ہے ، اِس قاتون کو پانے والا الله کا رسول یا چیندبر ہے اور اِس قاتون میں کی رکھا کرنے والا خلینہ' پادشاہ یا مسلمان ، قرآن میں اُنا ہے۔

عطيه، الله هي عطيه الرسول الاس ملكم

"दे लोगो, व्यक्राइ की इतायत करो, रसूल की इतायत करो और उनकी इंताअत करो जो तुम में हाकिस हों."

अपनी जिन्दगी में इजरत मुहम्मद रसूल थे और हाकिम भी थे. पर उनके मरने के बाद उनके खलीफा इसलामी मिछत के हाकिम हुए, साथ साथ वह इमाम और अमीरुल मोमनीन भी कहलाप. खलीफा की हैसियत से वह इकरत मुहन्मद के बारिस थे लेकिन इस फर्क के साथ कि उनको पैरान्वरी का हुजी हासिल नहीं था. अमीर की हैसियत से वह मुसलमानी कीजों के सेनापति ये और इसाम की हैसियत से मजहबी कामों में पेशवा थे.

खलीफा के फूर्ज यह थे कि वह धर्म का पालन करें, मुकदमों का फैसला करें, फ़ौजदारी क्रानून के मुताबिक सचा हें. देश की रक्षा करें, दुशमनों से जंग करें, महसूल जमा करें, गरीबों की मदद करें, बजीर और ओहदेदार मुक़र्रर करें बीर राजकाज का इन्तजाम करें. इन फर्जी को पूरा करने के लिए मुसलमानों को इंखितबार था कि अपना खलीका चुन लें. चनाव की शर्ते यह थीं कि जिसे चुना जाय वह सदाचारी हो, धर्म शास्त्र (फिक्कह) जानने वाला हो, आंख नाक हाथ पांव से ठीक हो, काना कुतरा, लंगड़ा चूला न हो, बहादुर हो. कुरैश वंश का हो.

इसलामी सिद्धांतों के मुताबिक खलीफा के इक्तियार ईश्वर की तरफ से हैं और सब मुसलमानों का कर्तव्य है कि उसकी आज्ञा को मानें. खलीफा को इसी विचार से जिल्ले अल्लाह (ईश्वर का साया) की ऊँची पदवी दी गई. लेकिन इससे यह नहीं सममना चाहिए कि खलीफा के इस्तियारों की कोई हदबंदी नहीं थी. उसका फर्ज था कि शरीयत (धर्म के क्नानूनों) की पाबंदी करे, क्योंकि शरीयत **इ**श्वर के दिए हुए क्रानूनों पर आश्रित है. शरीयत आदमी के सभी कामों और जीवन के हर अंग पर हावी है. इसलिए खलीफा या हाकिम को क़ानूनी मुत्रामलात में बहुत कम दखल है, खलीफा को शरीयत की व्याख्या का हक है पर इसमें घटाने बढ़ाने का नहीं.

इसलामी इतिहास में एक समाज और एक राज का श्रादर्श बहुत दिनों तक क़ायम न रहा. ज्यों ज्यों इसलामी साम्राज्य फैलता गया दुनिया के अलग हिस्सों में हाकिम खुद्मुख्तारी हुकूमतें बनाने लगे. श्रीर यह सवाल पैदा हुआ कि खलीफा और इन हाकिमों के बीच में क्या रिश्ता होना चाहिए. कुछ राजनीति शास्त्रियों की राय में इन हाकिमों को खलीका का नाइब सममना चाहिए. इस खयाल से हिन्दुस्तान के मुसलमान बादशाहों ने अपने खिताबों में ऐसे नाम रखे जैसे यमीने खलीफतुलल्लाह (अल्लाह के जलीका का दायाँ हाथ), नासिरे अमीरल मोमनीन (अमीरल मोमनीन का मददगार), अलतान (हुकूमत करने वाला).

والے دوگو، اللہ کی اطاعت کرو، رسول کی اطاعت کوو ارد ن کی اطاعت کرو جو تم میں حاکم هوں ."

اپنی زندگی میں حضرت محمد رسول تھے اور حاکم بھی a. پر أن كے مرف كے بعد أن كے خليد إسلامي ملت كے عاكم هوئم عاتم ساته وا إمام أور أميرالموملين بهي كهالله . فلیٹھ کی حیثیت سے وہ حضرت محمد کے وارث تعم لیکن اِس رق کے ساتھ که اُن کو پینسبری کا درجه حاصل نہیں تھا . میر کی حیثیت سے وہ مسلمائی فوجوں کے سیناپتی تھے اور مام کی حیثیت سے مذھبی کاموں میں پیشوا تھے ۔

خلیفہ کے فرض یہ تھے کہ وی دھرم کا پالن کریں' مقدموں کا یصله کریں' نوجداری قانوں کے مطابق سزا دیں' دیش کی کھا کریں' دشمتوں سے جنگ کریں' محصول جمع کریں' ریبوں کی مدد کریں؛ وزیر اور عهدہدار مقرر کریں اور راج کاج ا اِلتظام کریں . اِن فرضوں کو پورا کرائے کے لئے مسلمانوں کو ختیار تیا که اینا خلیفه چن لیس . چناؤ کی شرطیس به تهیس a جسے چنا جائے وہ سداچاری هو، دهرم شاستر (نقع) عائنے والا هو' آنکه ناک هاته ياؤں سے تهيک هو' کانا کترا' نكرا لبلا له هوا بهادر هوا قريش ولعن كا هو .

اسلامی سدھائتوں کے مطابق خلیفه کے اختیار ایشورکی لرف سے هیں اور سب مسلمانوں کا کرتویہ ہے کہ اُس کی آگیاں و مانیس . خلیفه کو اِسی وچار سے ظل الله (ایشور کا سا یم) ی اُونچی پدوی دی گئی . لیکن اِس سے یه نہیں سمجها چاھئے کہ خلیفہ کے اختیاروں کی کوئی حد بندی نہیں تھی ، س کا فرض تھا کہ شریعت (تھرم کے قائوٹوں) کی پابندی رے کیونکہ شریعت ایشور کے دیئے ہوئے قانونوں پو شرت ہے، شریعت آدمی کے سبھی کاموں اور جیون کے هر انگ ر حارى هے ، إس لئے خليف يا حاكم كو قانوتى معاملات ميں بهت كم دخل هـ. خليفة كو شريعت كي وياكهيا كا حق هـ ر آس میں گھٹانے بڑھانے کا تہیں ،

السلامي اتهاس ميں ايک سماج اور ايک راج کا آدرہ بهت دنوں تک قايم نه رها . جيوں جيوں اِسلامي سامراج بهلتا گیا دنیا کے الگ حصوں میں حاکم خود مضاری حکومتیں بنائے ایک اور یہ سوال پیدا هوا که خلیفه اور اِن حاکموں کے ایچ میں نیا رشته هرنا چاهئے . کچھ راج نیتی شاستریوں کی إنى ميس إن حاكمون كو خليفه كا نايب سمجهنا چاهله . إس خیال سے هندستان کے مسلمان بادشاهی لے اپنے خطابوں میں ایسے نام رکھےجیسے یمین خلیفت الالله (الله کے خلیفه کا دایال هاته) المر اميراً المومليين (الميراً لمومنين كا مددكار) سلطان (حکومت کرنے والا) .

शुद में ख़िलाफ़त एक मजहबी ब्रोहदा था, पर पहले नार खतीफाओं के बाद इसकी खासियत में तब्दीली आ गर भीर मजहब के साथ दुनिया की बादशाहत के तत्त्व शामिल हो गए. जब खिलाफ्त की ताकृत बिलकुल ख्त्म हो गई तो सिर्फ नाम रह गया और उसके साथ ओहदे का मान, इसलामी देशों के हाकिम अपने अपने राज्य के सालिक बन गए जो खलीका की दिखाने की इज्जत करते थे. वे महिजद में ख़तवें (जुम्मे की नमाज में मिम्बर से **अ्याख्यान) में ख़्लीफा का नाम लेते थे और अपने सिक्कों** पर उसके नाम का ठप्पा लगाते थे. यह सब इसलिए भी होता था कि सुसलमान रियाया के दिलों पर यह असर डालें कि उनकी हकूमत खलीकाओं की आज्ञाओं पर निर्भर है. हिन्दुस्तान की तारीख में इसकी कई मिसालें मिलती हैं. इस्तुमिश ने 1229 में खलीका से कर्मान मंगाया और इसे दरबार में बढ़े आदर के साथ पढ़कर सुनाया. मुहम्मद बिन तुरालक जो 1325 में सिंहासन पर बैठा बड़ी कठिनाइयों में फॅसा. उसने अपने राज के अठारवें साल में खलीफा से सनद् हासिल की.

जब मुरालों ने दिल्ली पर क्रव्जा किया उस बक्तृ ख़िलाफ़त तुकों के हाथ में थी, पर मुराल इन्हें ख़लीज़ा मानने को तैयार न थे. उनके सामने सवाल यह था कि मुराल बादशाहत को किन उसूलों पर क्रायम करें. बाबर ने जिस बादशाहत की दाराबेल डाली उस पर उसके बाद के बादशाहों ने एक शानदार महल खड़ा किया. इसका पूरा नक्तशा अबुलफ़ज्ल ने आईने अकबरी में खींचा और इससे अकबरी राज के उसूलों की तस्वीर हमारी निगाहों के सामने आती है. अबुलफ़ज्ल लिखता है—

"उस न्याय करने वाले (ईश्वर) क सामने जिसके समान कोई दूसरा नहीं, बादशाही से बढ़कर कोई रुतवा नहीं भीर जितने बुद्धिमान लोग हैं वह उसी के इक्बाल के स्रोते से प्यास बुमाते हैं. जो इस बात की दलील चाहते हैं **उनके** लिये यह कहना काकी है कि बादशाही श्रादिमयों के गिरोहों के विद्रोह का इलाज और रिआया के हुक्म मानने की वजह है. इस बात को पादशाह का लक्ष्य भी जाहिर करता है. क्योंकि "पाद के माने हैं प्रतिष्ठा श्रीर अधिकार (मजबूती श्रीर कब्जा) श्रीर "शाह" के माने हैं जड (असले) और मालिक (ख़ुदावन्द). पादशाह प्रतिष्ठा और अधिकार का साता और ईश्वर है. आज हुकूमत का दबदबा न रहे तो मागड़े की श्राँधी कैसे दब सकती है श्रीर स्वार्थ की बुराई कैसे दूर हां सकती है ? आदमी काम और क्रोध के बस में आकर नाश के गड़े में गिर पड़ें, दुनिया में चारों झोर से रौनक उठ जाए और थोड़े दिनों में पृथ्वी सुनी हो जाए.....शाह का मतलब उस चीज से भी होता है जो सबसे अच्छी हो जैसे शाहसवार और शाहराह.

شروع میں خانت آیک مذہبی عہدی تھا پر پہلے چار خلیناؤں کے بعد اِس کی خاصیت میں تبدیلی آگئی اور مذہب کے ساتھ دنیا کی بادشاعت کے تتو شامل ہوگئے . جب خانت کی طاقت بالکل۔ ختم ہو گئی تو صرف نام وہ گیا اور اُس کے ساتھ عہدے کا مان . اسلمی دیشوں کے حاکم اپنے اپنے راجعہ کے مالک بین گئے جو خلیات کی دکاوے کی عزت کرتے تھے . وہ سحد میں خطبہ (جمعہ کی نماز میں ممبر سے ویائیمائی) میں خلیات کا نام لیتے تھے اور اپنے سکوں پر اُن کے نام کا تبیہ لگاتے ہے اور اپنے سکوں پر اُن کے نام کا تبیہ لگاتے ہے اُر اپنے سکوں پر اُن کے نام کا تبیہ لگاتے ہے اُر اپنے سکوں پر اُن کے نام کا تبیہ لگاتے ہے اُر اپنے سکوں پر اُن کے نام کا تبیہ لگاتے ہے اُر اپنے سکوں پر اُن کے نام کا تبیہ لگاتے ہے اُر اپنے سکوں پر اُن کی داوں پر میں بیا اور اِسے دربار مندس نے 1229 میں خلیفہ سے درمان منکا یا اور اِسے دربار میں بڑے آدر کے ساتھ بڑھکر سنایا . محمد بین تباق جو 1325 میں میں سنکہاسی پر بیٹھا بڑی کٹھنائیوں میں پہنسا . اُس نے میں سنکہاسی پر بیٹھا بڑی کٹھنائیوں میں پہنسا . اُس نے اپنے راج کے اُٹھارہویں سال میں خلیفہ سے سند حاصل کی .

جب مغلوں لے دای پر قبضہ کیا اُس رقت خلافت ترکوں کے ساتھ میں تھی پر مغل اِنھیں خلیفہ مائنے کو تیار نہ تھے ، اُن کے سامنے سوال یہ تھا کہ مغل بادشاہت کی دائے بیل ڈالی اُس پر فایم کریں ، باہر نے جس بادشاہت کی دائے بیل ڈالی اُس پر اُس کے بعد کے بادشاہر نے ایک شائدار محل کھڑا کیا ، اِس کا پورا نقشہ ابوالفضل نے آئیںائبری میں کھینچا اور اِس سے اُنبری راج کے اُصولوں کی تصویر ہماری نگاھوں کے سامنے آئی

''أس نیائے کرنے والے (ایشون) کے سامنے جس کے سدان کوئی دوسرا نہیں' بادشاہی سے بڑھکر کوئی رتبہ نہیں اور جتنے بدعیمان لوگ ہیں وہ اُسی کے اِقبال کے سوتے سے پیاس بجھاتے ہیں ۔ جو اِس بات کی دلیل چاہتے ہیں اُن کے لئے یہ کہنا کانی شے که بادشاہی آدمیوں کے گردھوں کے درددھ کا علاج اور رعایا کے حکم ماننے کی رجبہ ہے ۔ اِس بات کو پادشاہ کا لاظ بھی ظاہر کرتا ہے ۔ کیرنی ''کے معنے ہیں پرتشتها اور اسفیکار (مضبوطی اور قبضہ) اور ''شاہ'' کے معنے ہیں چرتشتها اور اصل) اور مالک (خداوند) ۔ بادشاہ پرتشتها اور ادھیکل کا سوتا اور ایشور ہے ۔ آج حکومت کا دیدیہ نہ رہے تو جہکڑے کی کا سوتا اور ایشور ہے ۔ آج حکومت کا دیدیہ نہ رہے تو جہکڑے کی آندھی کیسے دور ہوسکتی گا ادمی کا اور کردھ کے بس میں آکر ناش کے گڑھے میں آئر سے روئی آتے جانے اور تھوڑے کر پڑیں' دنیا میں چلاوں اُور سے دوئی آتے جانے اور تھوڑے کر پڑیں' دنیا میں چلاوں اُور سے دوئی آتے جانے اور تھوڑے کر پڑیں' دنیا میں چروی سوئی ہوجائے ۔ شاہ کا مطلب اُس چیز سے دنوں میں پرتھوی سوئی ہوجائے ۔ شاہ کا مطلب اُس چیز سے دنوں میں بھی ہو جیسے شاہ سوئر اور شاہ راہ ۔

मीर इसके याने दानाद के भी हैं. दुनिया की दुस्तन नादशाह को बरती है जीर वह मुन्दर बहू उसकी पूजा करती है...... बादशाही वह ज्योति है जो ईश्वर से निकली है, वह किरन है जो संसार को रौशन करने वाले सूरज से उगती है. सब सिद्धियों की पुस्तकों की तालिका और सारे पुगों का खुजाना है. चलती भाषा में इसे करें एजदी (दैवी ज्योति) और पुरानी भाषा में कियान स्वारह (पारमार्थिक तेज) कहते हैं.

"बादशाह में चार खासियतें होनी जरूरी हैं. पहली
यह कि राजा को प्रजा के माँ-बाप की जगह होना चाहिए
स्योंकि रिश्राया उसकी मेहरबानी से सुख पाती है और
प्रत मतांतरों के फगड़ों से बचती है. दूसरे राजा का दिल
और हौसला बड़ा होना चाहिये. तीसरे उसे ईश्वर पर दिनों
दिन बढ़ता भरोसा करना चाहिये. और चौथे उसका मन
प्रार्थना और भक्ति में लगा रहना चाहिये. अपने कामों में
सफलता देखते हुए ईश्वर को मूलना नहीं चाहिये और
श्राफतों में पड़कर मत आंत न होना चाहिये. बादशाह का
काम है कि प्रजा की भलाई और उसके दुखों के इलाज में
लगा रहे."

अञ्चल फ़फ्ल के मुताबिक बादशाही व्यापार के तीन अंग हैं—एक राजनिवास की उन्नति, दूसरे भीज की सफलता, और तीसरे प्रजा की बढ़ोतरी. पहले अंग में शाही खजाना, हाथी, घोड़े, साज सामान, कारखाने, दरबार, महल, रिनवास और परिवार शामिल हैं; दूसरे में पैदल, सवार, तापखाना, सिपाही और अकसर; और तीसरे में खेती और गाँव की आवादी. इन तीनों का मिलाकर जहाँ-बानी (लोकपालन) और जहाँदारी (दिग्वजय) के अन्दर रखा जा सकता है.

अबुलफ़रल के बयान से साफ मालूम होता है कि अकबर राज की शक्ति को ईश्वर की दंन सममता था और अपनी चेष्टाओं का बहुत ऊँचा आदर्श रखता था. जहाँ वह यह चाहता था कि राज की शक्ति को समाज के जीवन के हर एक अंग में इस्तेमाल करे, धर्म और चाल चलन के सुधार में भी और वनिज ब्योपार और खेती दस्त-कारी की उन्नति में भी, वहाँ वह यह भी सममता था कि इस विशाल शक्ति को ईश्वरी न्याय और क़ानून की हदों से वाहर न जाने दे. अपनी राज शक्ति को वह दुनिया की किसी बाहरी ताक़त से नीचा मानने को तैयार न था. इसी-लिये उसने अपने खितायों के जिर्थे अपनी पूरी आजादी का ऐलान किया. उसके खिताय यह थे:—

सुल्तानुलाजम (सुलतानों में सबसे बड़ा सुलतान), खाकाने सुभाजजम (बादशाहों में सबसें बड़ा बादशाह), ور اس کے معلم دامان کے بھی ھیں، دلیا کی دائین بادشاہ کو برتی ہے اور وہ سندر بہو آس کی پہچا کرتی ہے... بادشاھی وہ جھوتی ہے جو ایشور سے نکلی ہے، وہ کون ہے جو سنسار کو روشن کونے والے سورج سے آگتی ہے، سب سدھیوں کی پستکس کی تالیکا اور سارے گنوں کا خزانہ ہے، چلتی بہاشا میں اِسے فر ایزدی (دیوی جیوتی) اور پرانی بہاشا میں کیاں خوارہ (پارمارتیک تیج) کہتے ھیں،

"بادشاہ میں چار خاصیتیں ہوئی ضروری ہیں، پہلی یہ کہ راجہ کو پرجا کے ماں باپ کی جگہہ ہونا چاھئے کیونکہ رعایا اُس کی مہربائی سے سکھ باتی ہے اور محت متانتروں کے جھکڑوں سے بچتی ہے ۔ دوسرے راجہ کا دل اُور حوصلہ بڑا ہونا چاھئے ۔ اُور چوتھے اُس کا میں پرارتہنا اور بیکٹی میں لگا رہنا چاھئے ۔ اُپنے کاموں میں بیلتا دیکھتے ہوئے ایشور کو بھولنا نہیں چاھئے اور کاموں میں پہلتا دیکھتے ہوئے ایشور کو بھولنا نہیں چاھئے اور گم ہے کہ پرجا کی بھائی اُور اُس کے دکھوں کے عالج میں کا رہے ۔"

ابوالفضل کے مطابق بادشاھی ویاپار کے تین انگ ھیں۔
ایک اور راج نواس کی آننتی' دوسرے فوج کی سپھلتا اور تیسرے
پرجا کی بچھوتری پہلے انگ میں شاھی خزانت' ھاتھی' گھوڑے'
ساؤ سامان' کار خائے' دربار' محل' رنواس اور پریوار شامل ھیں'
موسرے میں پیدل' سوار' تو پخانت' سپاھی اور انسر' اور تیسرے
میں کھیتی اور گاؤں کی آبادی ، اِن تیڈوں کو ملاکر جہانبانی
(لوک پالین) اور جہانداری (دگوجئے) کے اندر رکھا جا

ابوالفضل کے بیان سے صاف معلوم هوتا هے که اکبر راج کی شکتی کو ایشور کی دین سنجهتا تها اور اپنی چیشتاؤں کا بہت آنچا آدرش رکھتا تها ، جہاں وہ یہ چاعتا تها که راج کی شکتی کو سماج کے جیون کے هر ایک انگ میں استعمال کرے' دهرم اور چال چلین کے سدهار میں بھی اور بنج بھوپار اور کھیتی دستکاری کی آئنتی میں بھی' وہاں وہ یہ بھی سمجهت بها که ایس وشال شکتی کو ایشوری نیائے اور فانوں کی حدوں سے باهری شہ جائے دے ، اپنی راج شکتی کو وہ دئیا کی کسی باهری طاقت سے نیچا ماننے کو نیار نہ تها ، اسی لئے اُس نے اُپنی خطابیں کے ذریعہ اپنی پوری آزادی کا اعالی کیا ، اس کے خطابی کہ تھے:۔۔

سلطان الانظم (سلطانوں میں سب سے برا سلطان) ، خاقان معظم (بادشاهوں میں سب سے برا بادشاه) ،

सलीफा-य-मुतकाली (ऊँची पदवी वाला खलीफा) इमामे कादिल (मजहबी पेशवा).

बादशाह इंश्वर का अंश है. इसलिए उसने कोर्निश, तसलीम, जमींबोस, ना और नियाज के रिवाज जारी किये. ईश्वर की आँखों में सारे जगत के प्राणी एक समान हैं, इसीलिये अकबर ने हिन्दू, सुसलमान, जैन, ईसाई सबके साथ एकसा बरताब मुनासिब समका. यही सुलह कुल (सब के साथ प्रेम) की नीति थी जिसने हिन्दुस्तान की तारीख़ में उस जगमगाते सुनहले पन्ने का इजाफा किया जिसको पदकर आज भी हम अपने क़ौमी जीवन के लिए अच्छा सबक हासिल कर सकते हैं.

خلیط مشلی (آرانچی پدری رالا خلیط) ا اسار عادل (مذهبی پیشوا) .

بادشاہ ایشور کا انتقی ہے ۔ اسی لئے آس نے کورنھی' تسلیم زمیں سموس ' نقر اور نیاز کے رواج جاری کئے ۔ ایشور کی آنکھوں میں سارے جکت کے پرائی ایک سمان ھیں' اسی لئے اکبر نے ھندو' مسلمان جین عیسائی سب کے ساتھ ایکسا ہرتاؤ مناسب سمجھا ۔ یہی صلح کل (سب کے ساتھ پریم) کی نیتی تبی جس نے ھندستان کی تاریخ میں اُس جکمگاتے سنہلے پننے کی افاقہ کیا جس کو پڑھکر آج بھی ھم اپنے قومی جیوں کے لئے اجہا سبق حاصل کر سکتے ھیں ۔

मुहम्मद साहब की कुछ हदीसें

مصد صاحب کی کچھ حدیثیں

अनुवादक--श्री मुजीब रिजवी

मुहम्मद साहब ने कहा:—"श्रन्लाह का जो कोई बन्दा दुनिया के मुखों को उपेक्षा (बेपरवाही) की निगाह से देखता है ईश्वर उसके दिल में विवेक पैदा करता है और उसकी जबान को ऐसा बना देता है कि वह उसी विवेक की रोशनी में बोलती है. ईश्वर उसे दुनिया की बुराइयां और बीमारियां और इन सब का हलाज बता देता है, और उसे इन सब के बीच से बचाता हुआ अनन्त शान्ति के लोक में पहुँचा देता है."

—अबुजरः बेहकी.

मुहम्मद साहब ने कहा :—''केवल मोटा और खुरद्रा कपड़ा पहनना और रूखा सूखा खाना इस दुनिया को त्यागना नहीं है, इस दुनिया को त्यागने का मतलब यह है कि आदमी अपनी खाहिशों यानी इच्छाओं को कम करे."

—सुकियान.

मैंने कहा—''ऐ श्रस्लाह के रसूल ! मुम्ने कुछ उपदेश दीजिये." मुहम्मद साहब ने कहा—''कभी किसी का गाली न दो." इसके बाद से मैंने कभी भी किसी श्राजाद श्राद्भी, गुलाम, ऊँट या भेड़ तक को गाली नहीं दी. मुहम्मद साहब ने यह भी कहा कि—''किसी श्रच्छी चीज से नकरत न करो, और प्रसन्न चित्त होकर श्रपने भाई से बात करों; सच यह है कि ऐसा करना नेकी श्रीर द्या के कामों में से हैं; الووادك-شرى مجيب رضوى

محمد صاحب نے کہا :—''آلکہ کا جو کوئی بندہ دنیا کے سکھوں کو اُپیکشا (بےپرواهی) کی نگاہ سے دیکھتا ہے ایشور اُس کے دل میں وویک پیدا کرتا ہے اور اُس کی زبان کو ایسا بنا دہتا ہے کہ وہ اُسی وویک کی روشنی میں بولتی ہے ، اِیشور اُسے دنیا کی برائیاں اور بیماریاں اور اِن سب کا علاج بتا دیتا ہے' اور اُسے اِن سب کے بیچ سے بچانا ہوا آننت شانتی کے لوک میں یہونچا دیتا ہے ۔''

ـــآبو زر: بیهقی.

محمد صاحب نے کہا :۔۔''کیول موتا اور کھردرا کہوا ہولنا کو اور روکیا سوکھا کھا اس دنیا کو تداگلا نہیں ھے' اِس دنیا کو تناگلا نہیں ھے' اِس دنیا کو تناگلے کا مطلب یہ ھے کہ آدمی اُپنی خواہشوں یعنی اِچھاؤں کو کم کرے ۔''

--- صفيان.

میں نے کہا۔ ''آ۔ اللہ کے ۔ول! مجھے کچھ اُپدیش دیجئے۔'' محمد صاحب نے کہا۔ ''کبھی کسی کو گالی نه دو . اس کے بعد سے میں نے کبھی بھی کسی آزاد ادمی' ظام اُرنت یا بھیز تک کو گالی نہیں دی . محمد صاحب نے یہ بھی کہا کہ۔''کسی اُچھی چیز سے نفرت نام کرر' اور پرسن چت ہوکر اپنے بھائی سے بات کرر' سچ یہ گھ کہ اُس میں سے ہے؛ یہ گھ کہ ایسا کرنا نیکی اور دیا کے کامیں میں سے ہے؛

मीर भगर तुन्हारी किसी कमकोरी को जानने के कारण होई तुन्हें बुरा भला कहता है भीर तुम से नफ़रत करता है तो तुम उसकी उन कमकोरियों के आधार पर जिन्हें तुम जानते हो उससे नफ़रत न करो ताकि तुन्हें इस नेकी का इनाम मिल सके और उसका पाप उसके सर रहे.

-- जाबिर बिन सुलेमान : अबुदाऊद.

मुह्म्मद साहब ने कहा :—"जो मर चुके हैं उन्हें बुरा भला न कहो क्योंकि ऐसा करके तुम उन लोगों का दिल हुसाते हो जो जिन्दा हैं.

—मुरौरा : तिरमिषी.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"आँखों का व्यभिचार (बद्चलनी) किसी को बुरी निगाह से देखना है, कानों का व्यभिचार बुरी बातों को सुनकर कनमें रस लेना है, जबान का व्यभिचार बुरी बातों का बोलना है, हाथों का व्यभिचार बिना हक के किसी को हाथ लगाना है, पैरों का व्यभिचार बुरे इरादे से कहीं जाना है. दिल बुरे काम की इच्छा करता है, अपने में लालसा पैदा करता है, और श्रादमी की इन्द्रियाँ (हवास) या तो उस बुराई को अमल में लाती हैं और या बुराई के इरादे को ही ख़तम कर देती हैं."

—बुखारी; मुसलिम; अबुदाऊद.

पैराम्बर ने अपने साथियों से पूछा:—"आप लोग किसे बलवान समफते हैं ?" उनके साथियों ने कहा—"उसे जो दूसरे की कुशती में पछाड़ दे." पैराम्बर ने कहा—"नहीं! वह आदमी सब से ज्यादा बलवान है जो गुस्से में अपने अपर काबू रखता है."

—इन्न मसङदः मुसलिमः अबुदाङदः

मुहम्मद साहब ने कहा कि:—"बह आदमी बलवान या वहादुर नहीं है जो लोगों को पछाड़ देता है, हम में से वह आदमी बलवान और बहादुर है जो अपने गुस्से को काबू में कर लेता है."

—बुखारी; मुसलिम.

मुह्म्मद साहब ने कहा कि:—"सच बात यह है कि आदम के बेटों के दिलों में गुस्सा एक शोले की तरह है. क्या गुस्से वाले आदमी के आँखों की लाली और उसके गले की फूलती हुई नसें तुम्हें दिखाई नहीं देतीं ? यदि इन अलामतों में से कोई भी किसी को अपने अन्दर अनुभव हो तो उसे गुम्त जमीन पर बैठ जाना चाहिये."

-अबुसईद् अलखुद्री : तिरमिजी.

اور اگر تبہاری کسی کنزوری کو جاتئے کے کارن کوئی تبہیں ہرا بھلا کہتا ہے اور تم سے نفرت کرتا ہے تو تم اُس کی اُن کنورویس کے آدھار پر جابیس تم جاتتے ھو اُس سے نفرت ناہ کروں تاکہ تبہیں اِس نیکی کا اِنعام مل سکے اور اُس کا پاپ اُس کے سر رھے ۔"

-جاير بن سليماني: أبرداؤد.

محمد صاحب نے کہا:۔۔۔"جو سر چکے میں آنہیں ہوا بھلا نے کہو کیونکہ ایسا کرکے تم اُن لوگوں کا دل دکھاتے موجو زندہ میں ۔''

ــمنيرة: ترمزى .

محمد ماحب نے کہا :—آنکہرں کا ربھنچار (بدچلنی)
کسی کو بری نگاہ سے دیکھنا ہے، کانوں کا ربھنچار بری باتوں کو
سلکر اُن میں رس لینا ہے، زبان کا ربھیچار بری باتوں کا بولنا
ہے، ہاتھرں کا ربھیچار بنا حق کے کسی کو ہاتھ لگانا ہے، پھروں کا
وبھیچار برے اِرادے سے کہیں جانا ہے دل برے کام کی اِچھا
کرتا ہے، اپنے میں لانسا پیدا کرتا ہے، اور آدمی کی اِندریاں
(حواس) یا تو اُس برائی کو عمل میں لاتی ہیں اور یا
ہرائی کے اِرادے کو ہی ختم کردیتی ہیں ۔''

---بخارى؛ مسلم؛ ابودارد .

پیغمبر نے اپنے ساتھیوں سے پوچھا :۔۔''آپ لوگ کسے بلوان سمجھتے ھیں ''' اُن کے ساتھیوں نے کہا۔۔''آسے جو دوسرے کو کشتی میں پچھاڑ دے ''' پہنمبر نے کہا۔۔''نہیں اِ وہ آدمی سب سے زیادہ بلوان ہے جو ضے میں اپنے اُوپر قابو رکھتا ہے ۔'' ۔۔۔اِبن مسعود : مسلم ' ابوداؤ ۔

محمد صاحب نے کہا کہ:۔۔۔''رہ آدمی بلوان یا بہادر نہیں ہے جو آدمی ہے وہ آدمی بلوان اور بہادر ہے جو آپنے غصے کو فابو میں کرلیتا ہے ۔'' بلوان اور بہادر ہے جو آپنے غصے کو فابو میں کرلیتا ہے ۔'' ۔۔۔بخاری ؛ مسلم ۔

محمد صاحب نے کہا کہ :۔۔۔''سپے بات یہ ہے کہ آدم کے بیٹوں کے دلوں میں غصہ ایک شعلے کی طرح ہے ۔ کیا غصہ والے آدمی کے آئکیوں کی لائی اور اُس کے گلے کی پھولتی ہوئی سیس تمہیں دیتیں آ یدی اِن علامتوں میں سے کوئی بھی کسی کو اپنے اندر آنوبھو ہو تو آسے ترنست زمین پر بیٹھ جانا چاہئے۔''

أبو سعيد ألتخدري: ترمزي .

शुह्रमान साहन ने कहा :— "सने होने की हालत में भागर तुम में से किसी को गुस्सा आजाय तो उसे बैठ जाना भाहिये; फिर अगर उसका गुस्सा उतर जाया तो अच्छा, नहीं तो उसे लेट जाना चाहिये."

—श्रबुदाऊद्.

पैराम्बर के पास एक आदमी आया और कहने लगा— "पे रसूल! मुक्ते कोई ऐसी बात बताइये जिसका मैं पालन किया करूँ, लेकिन वह बात मेरे लिये इतनी कठिन न हो कि मैं और सब भूल जाऊं." पैराम्बर ने जबाब दिया— "ग्रस्सा न किया करां."

- बुखारी; मुसलिम; तिरमिजी.

पैराम्बर ने कहा :— "किसी की चुराली करना अपने भाई का मांस खाने के बराबर है. जो कोई किसी को इससे रोकता है ,खुदा के सामने उसका यह हक क़ायम हा जाता है कि ,खुदा उसे दोजल की आग से बचाले."

—बेहक़ी.

अन्सार में से एक आदमी मुहम्मद् साहब के पास आया और उसने उनसे भीक भांगी, पैराम्बर ने उससे पृष्ठा-- "क्या तुम्हारे घर में कुछ भी नहीं है ?" उसने कहा-"हां, मेरे पास एक ऊनी दरी है जिसका एक हिस्सा हम बोढ़ते हैं और दूसरा हम विछाते हैं, और हमारे पास एक प्याला है जिससे हम पानी पीते हैं." पैराम्बर ने कहा कि-"यह दोनों चीजें लेकर तुम मेरे पास आस्रो." वह आदमी दोनों चीजें मुहम्मद साहब के पास लेकर आया. उन्होंने उन चीजों को हाथ में लेकर कहा—''इन दोनों चीजों को कौन ख्रीदेगा ?" एक आदमी ने कहा-"मैं एक दिरम में दोनों चीजें खरीद लुँगा." पैराम्बर ने फिर कहा- "कोई है जो एक दिरम से अधिक दे ?" यह बात उन्होंने दोबारा तिबारा कही. एक दूसरे आदमी ने कहा-"मैं दोनों चीजों के लिये दो दिरम दे दूँगा." पैराम्बर ने दोनों चीजें उस आदमी के हवाले कर दीं और दो दिरम लेकर चीजों के मालिक को देकर कहा-"इनमें से एक दिरम का खाना खरीदो और अपने घर वालों को पहुंचा दो और दूसरे दिरस से एक कुल्हाड़ी ख़रीद लो. उसे लेकर मेरे पास आश्रो." कुस्हादी लेकर वह आदमी अहम्मद साहब के पास आया. पैरान्बर ने अपने हाथों से उसमें बेंट लगाया और कहा-"जाझो जंगल से लकड़ी काट कर बेचो और पन्द्रह दिन तक मुक्ते शकल न दिखाना." उस आदसी ने वैसा ही किया जैसा उसे हुक्म मिला था. जब उसके पास दूस दिरम हो गए तब वह आदमी मुहम्मद साहत के पास

محدد ماهب نے کہا: - گھڑے ھوئے کی حالت میں اگر میں سے کسی کوغصہ آجائے تو آسے بیٹھ جانا چاھئے؛ پھر اگر آس لاغصہ آتر جائے تو آچھا' نہیں تو آسے ایت جانا چاھئے۔'' سے بیٹ میں سے ابوداؤد .

پینمبر نے کہا: ۔۔۔ ''کسی کی چنای کرتا اپنے بھائی کا مانس کیائے کے برابر ہے ، جو کوئی کسی کو اِس سے روکتا ہے خدا کے سامنے اُس کا یہ حتی قائم ہو جا تا ہے کہ خدا اُسے دوزخ کی آگ سے بجالے ۔''

—ىيېقى .

انصار میں سے ایک آدمی محمد صاحب کے پاس آیا اور اُس نے اُن سے بھیک مانکی ، پیغمبر نے اُس سے پوچھا۔"کیا نہارے گھر میں کچھ بھی نہیں ھے 9 " اُس نے کہا۔۔"مال مورے پاس ایک اونی دری ہے جس کا ایک حصہ ہم اورمتے هيں اور دوسرا هم بچهاتے هيں' اور همارے پاس ايک پياله هے جس سے هم بائی بيتے هيں "' يهنمبر نے کہا کا ۔۔۔"يه دونوں چيزيں ليكر تمميرے ياس أؤ " وہ أدمى دونوں چيزيں محمد مادب کے یاس لیکو آیا . اُنہوں نے اُن چیزوں کو ھاتھ میں لهر عها-"أن دونوں چيزوں كو كون خريديكا ؟" أيك أدمى في كها-"مين ايك درم مين دونون چيزين خويد لونگا ." بعد مبر نے پھر کہا۔ ''کوئی کے جو ایک درم سے ادھک دے ؟'' یہ بات انھوں نے دو بارہ تبارہ 'کھی ، ایک دوسرے آد ی نے کا۔"میں دونوں چیزوں کے لئے دو درم دے دونکا ،"پیغمبر نے دونوں چیزیں آس آدمی کے حوالے کر دیں اور دو درم لیکر جزوں کے مالک کو دیمر کہا۔"اِن میں سے ایک دوم کا کھانا خریدر اور اپنے گھروالیں کو پہنچا دو اور دوسرے درم سے ایک اللهاري خريد لو. أسے ليكر ميرے ياس أؤ . " نله ري ليكر وه إدمى محمد صاحب كے پاس آيا . پينسبر نے اپنے هاتهوں سے أس ميں بينڪ لگايا أور كها-"جاؤ جنكل سے لكرى كات كر اللجو أور بندرة من تك مجهد شكل نه دكهانا ." أس أدمى لے ویسا ہی کیا جیسا آسے حکم ملا تھا . جب اُس کے یاس سے درم ہو گئے تب وہ آدمی محصد صاحب کے پاس

बुह्म्मद बाह्य की कब हरीसे

बाया. इस रक्रम में से कुछ का उसने कपड़ा ख़रीदा और बाकी का खाना. पैराम्बर ने तब कहा-"क्रयामत के दिन कालिक पोते सामने आने से यह तुन्हारे लिये बेहतर है."

मुहम्मद साहब ने कहा-"सच यह है कि पास रखते

भीक मांगना जायज नहीं है, और न उन लोगों के लिये भीक मांगना जायज है जिनका शरीर मजबूत है या जो

लासी अच्छी तरह रहते हैं. माँगना उसके लिये जायज है

जो नादार है और दुख से जीवन व्यतीत करता है, या

जिसका दिवाला निकल गया है और जो कर्ज में दवा हुआ

है; और जो कोई अपना धन बढ़ाने के लिये दूसरों से भीक

माँगता है क्रयामत के दिन उसके बदन पर दारा होंगे और वसका शरीर अख्मों से भरा होगा और वसपर वसे बुरी

तरह दोजली पत्थर खाने होंगे. अब फैसला तुम्हारे हाथों

में है कि या तो अपनी थोड़ी सी पूंजी से सन्तुष्ट रहो और

या अपनी पूंजी को भीक माँग कर बढ़ाने की कोशिश

करो."

धनसः धबुदाऊदः

محمد ماحب کی کچھ حدیثیں

آیا اِس رقم میں سے کچے کا اُس نے کہرا خریدا اور باقی گا ا کھاتا ۔ پھنمیر ز تب کہا۔ "تھاست کے دیں کالک ہوتے سلمنے آلے سے یہ تمہارے لئے بہار ھے ."

ـــآنس: ايرداؤد .

معدد صاحب نے کہا: ۔۔ سے یہ کے که پاس رکھتے ہوئے بھیک مانکنا جائز نہیں ہے، اور نہ اُن لوگس کے لئے بھیک مانكلا جائز هے جن كاشرير مضبوط في اجو خاصى أچهى طرح رهاته هيں. مانكنا أس كے لئے جائز ہے جو تادار ہے اور دكھ سے جمون ويتيت كرتاها يا جس كا ديواله نكل گيا ها أور جو قرض میں دیا ہوا ہے؛ اور جو کوئی اپنا دھن بڑھانے کے لئے دوسروں سے بیرک مانکاتا ہے قیامت کے دن اُس کے بدن پر داغ ھونکے اور اس کا شریر زخموں سے بھرا ہوگا اور اُس پر آسے بری طرح دوزخی پتھر کیائے ہونگے، اب نیصلہ تمہارے ہاتھوں میں ہے که یا تو اپنی تهوری سی پرنجی سے سنتشک رہو اور یا اپنی پونجی کو بھیک مانگ کر بڑھائے کی کوشش کرر ۔''

--- ترمزی .

मुहम्मद साहब ने कहा .-- तुम में जो कोई अपनी रस्सी लेकर पहाड़ पर जाता है और लकड़ी का बोम्स पीठ पर लादकर लाता है और उसे बेचता है ता खुदा उसकी रक्षा करता है. दूसरों से भीख माँगने के गुकाबले में, चाहे वह दें या न दें, यह काम उसके लिये बेहतर है."

-जुबैरः बुखारी.

—तिरमिजी.

मन्त्र पढ़ना, भजन गाना श्रीर माला फेरना छोड़, मन्दिर के सारे द्रवाजे बन्द कर. इस अंधेरे एकान्त काने में तू किस की पूजा करता है ? अपनी आंखें खोल कर देख तेरा देवता तेरे सामने नहीं है.

हल चलाने बाला जहां कठोर भूमि में हल चला रहा है श्रीर सड़क बनाने वाला जहां पत्थर तांड़ रहा है, भगवान वहां ही उनके साथ धूप में है और बारिश में है, उसका कपड़ा भूल में लतपत है.

--रविन्द्र नाथ ठाकुर

مصد ماحب نے کہا:۔۔۔ "تم میں جو کوئی اپنی رسی لیکو پہاڑ پر جاتا ہے اور لکڑی کا بوجھ پیٹھ پر لاد کر لا تا ہے اور أس بينها أه تو خدا أس كي ركشا كرتا هي دوسورس سے بهيك مانکنے کے مقابلے میں' چھے وہ دیں یا نع دیں' یع کام اُس کے لئے بہتر ہے ۔''

ـــزبير؛ بخاري

منتو پڑھنا' بهجین کانا اور مالا پهیرنا چهور' مندر کے . سارے دروازے بند کر . اِس اندھیرے اکانت کونے میں تو کس کی پوچا کرتا ہے ؟ اپنی آنکھیں کھولکر دیکھ تیرا دیوتا تهرب ساملے نہیں ہے ،

عل چلانے والا جہاں کتھور بھومی میں عل چلا رھا ھے ارر سوک بنائے والا جہاں پتھر تور رہا ھے' بھکواں وھاں می أن كے ساتھ دھوپ ميں هے اور بارش ميں هے اُس كا كيراً دهول ميں لت بت هے .

-رويندر ناته تهاكر

(161)

ستبر 55'

[2]

पिछत सुन्दरलाल (पिछले नम्बर से आगे)

(11)

एक दिन जब हम हज्ज के इरादे से चले तो अलवर के रास्ते में एक हिन्दू फक़ीर चार चेलों समेत हमारे साथ हो लिय, फहने लगे कि रात को हमारे साथ उहरना. रात हुई तो इस सब के सब एक धरमशाला में जा उतरे. उन्होंने नेलों से पूछा क्या खाद्योगे ? सबने व्यपनी व्यपनी तबियत की चीज कह दी. वही खाना मौजूद होगया. फिर हमसे पूछा. हमने कहा साहब ! जो आप खाएंगे वही हम खावेंगे. कहा मैं तो मूंग की दाल और चपाती खाया करता हूँ. जब उनका साना तय्यार हुआ तो इमने भी वही साया. वात चीत शरू हुई तो आपस में प्रेम होगया. मैंने उनसे कहा कुछ पपदेश वीजिये. कहने लगे तीन दिन हमारे पास रहो तो चौथे दिन उपदेश देंगे. हम ठहर गए. उन्होंने तीन दिन तक इमसे व्रत रखवाया. फिर कुपाटिष्ट डाली श्रीर उपदेश दिया. सममुच बढ़े पहुँचे हुए आदमी थे. हम बहत लोगों से मिले भौर उपदेश लिया, पर यह बात और यह असर किसी में नहीं देखा. उनकी दृष्टि पढ़ते ही हमारा दिल गुलाब के फल की तरह खिल गया और कायम होगया. एक दिन रूह (आतमा) के एक जिस्म (शरीर) से दूसरे जिस्म में जाने की बात आई. कहा कि हाँ हो सकता है. क्या तुम तमाशा देखोगे ? मैंने कहा—जरूर. कहा तो एक मरा हुआ जानवर लाची. चगले दिन इम एक मरा हुआ तोता लाए. रात के वक्त वह दीवार से तिकया लगाकर बैठ गए और तोते को सामने रख लिया. दिया बुक्ता दिया. सिसकी लेकर दम सींचा. सट से एक आवाज हुई, बिजली सी चमकी और सोते में जान आगई. हमने उसे पकड़ लिया और बातें करनी श्रूरू कीं. वह बोल तो न सकता था लेकिन इशारे से बातें करता था. फिर हमने कहा कि अच्छा श्रव श्रपने जिस्स में आजाइये. तमाशा देख लिया. वह उसी चमक दमक से अपने जिस्म में आगए. इमने कहा कि यह बात हमको भी सिसाला दीजिये. कहा कि अच्छा 15 दिन में सिखला देंगे. मगर रोटी खाने को मना कर दिया. सिर्फ दूध और चावल बाने को कहा और कपाली चढ़ाना बताया. कपाली दो तरह

[2]

پلڈٹ سلمر ال (پچھلے نسبر سے آگے)

(11)

ایک میں جب مم حبے کے ارانے سے چلے تو الور کے راستے میں ایک هندو فقهر چار چیلوں سمیت همارے ساتھ هولیئے۔ کینے لکے که رأت کو همارے ساتھ تھیرٹا ، رأت هوٹی تو هم سب کے سب ایک دھرم شالع میں جا اُنرے . اُنھوں نے چیلوں سے بیجا کیا کیاؤ کے آ سب نے اپنی اپنی طبیعت کی چیز کہدی۔ رهی کیانا موجود هوگیا ، یهر هم سے یوچها ، هم نے کہا صاحب ! جو آپ کھاٹینکے وہی ہم کھاوینکے ، کہا میں تو موثک کی دال ارر چیاتی کہایا کرتا۔ ھو*ں ۔* جب اُن کا کہانا تیار ھوا تو ھم نے بھی رھی کھایا ۔ بات چیت شروع ھوئی تو آپس میں پریم هوگیا ، میں نے آن سے کہا کچھ آید بھی دیجئے ، کہنے لاے تیں دن همارے پاس رهو تو چوتھے دیں آپدیش دینکے ، هم آبهر گئے ۔ أنبس نے تین دی تک هم سے ورت رئهوایا . پهر کریا درشتی ذالی اور آیدیش دیا . سپے مپے بڑے پہونچے هوئے آدمی تھ . هم بهت لوگوں سے ملے اور اُپدیش لیا' پر یہ بات اور یہ اثر کسی میں نہیں دیکھا ۔ اُن کی درشتی برتے ھی ھمارا دل گلاب کے پہرل کی طرح کہل گیا اور فایم ہوگیا ، ایک دین روح (أتما) كے ايك جسم (شرير) سے دوسرے جسم ميں جانے كي بات أئي ، كها كم هال هوسكتا هي كيا تم تعاشه ديكهوكم ؟ میں نے کہا۔ ضرور . کہا تو ایک مرا عوا جانور لاؤ . اگلے دون هم ایک مرا هوا طوطا لائے وات کے وقت وہ دیوار سے تکیه لگاکر بيئي گئے اور طبطے کو سامنے رکھ لیا ۔ دیا بنجھا دیا ۔ سسکی لیکر دم کهینچا . کهت سے ایک آراز هوئی بجلی سی چمکی ارر طوطے میں جان آگئی . هم نے اُسے پکڑ لها اور باتیں کوئی شروع کیں . وہ بیل تو نے سکتا تھا لیکن اِشارے سے باتیں کرتا أبا ، پار هم لے کہا ته اچها اب اپنے جسم میں آجائیے . تماشه ديكه ليا . وه أسى جمك دمك سه اينے جسم ميں أكثه . هم ك كا كه يه بات هم كو بهي سكهلا ديجيُّه . كيا كه أجها 15 دن میں سکھا دینکے . مگر روٹی کیائے کو منع کردیا . صرف دودھ ألا چارل كها في كوركها أور كهاني جوهاته بتايا ، كهالي دو طرح

होती है कि वैद्यालाई, जिसमें बॉड को रोकते हैं नगर होश क़ायम रहता है, दूसरी जनताकी जिसमें सांस रोकने के बाद होश भी नहीं रहता. इससे पहले नेती, जोती और कुंजर किया कराई और 15 दिन में अपना बादा पूरा कर दिया. इसने कई दिन करके यह काम छोड़ दिया, क्योंकि एक बसोदा था. कपाली चढ़ाना हमें लड़कपन से बाद था, इसीलिये 15 दिन में सब काम पूरा होगया.

. (12)

भोपाल में एक हिन्दू फक्रीर ये बाबा सीतलदास. हमने सुना कि उनकी दृष्टि में बड़ा असर है. हम भी उनके पास गए और दरक्वास्त (प्रार्थना) की. उन्होंने कहा तीन दिन तक निर्जल उपवास करो. हमने ऐसा ही किया. तीसरे दिन बाबा जी ने छपा दृष्टि डाली तो सारा जिस्म शीशे की तरह होगया. भीतर और बाहर रगो-रेशा सब दिखाई देते वे और एक जोत (ज्योति) अभीन से आसमान तक अमकती मालूम होती थी. हमने अर्थ की कि बाबा जी हमको—"मन् अरक नमसहु फक्रद् अरक रज्बहु" [अर्थात्—जिसने अपनी आत्मा को पहचान लिया उसने अपने रब को पहचान लिया । के अर्थ सममा दीजिये. इस दृष्टि से तो यह बात हासिल नहीं होती. हम तो अपनी आत्मा को देखना चाहते हैं, जिस्म को और संसार को नहीं. गैर को देखा तो क्या देखा. असली देखना तो अपना ही देखना है.

उन्होंने जवाब दिया कि यह तो मुरिकल है. हमने कहा कि अगर यह मुश्किल है तो हमारा भी सलाम है.

(13)

एक दिन जब हम काबे में पहुँचे तो हसनवाली जमजमी के हुजरे (क्वटिया) में ठहरे. कुछ दिनों के बाद मौलवी मोहम्मद याक्षव और भीलाना शाह इसहाक्र से मुलाकात हुई. धीरे धीरे उनसे जाना जाना बढ़ गया. एक दिन हमने मौलवी मोहम्मद याकृष से पूछा कि 'अल्लाह का जलवा (प्रकाश) क्या अरव और हिन्दुस्तान में कुछ अलग अलग है ?' कहा-- 'नहीं.' फिर हमने पूछा- 'हरिद्वार और काने में क्या फरक है ?' कहा—'कुछ नहीं.' इसके बाद हमने कहा कि-'फिर आप हिन्द्रस्तान से क्यों भागे ?' कहा कि-'भाई ! इस मोहम्मदी भी तो हैं.' हमारी यह बात चीत मीलाना शाह इसहाक भी परदे की आद में बैठे सुन रहे ये और इसको कुछ सबर न थी. इसके बाद इसने मौलवी मोहम्मद याक्र्य से दुरख्वास्त (प्रार्थना) की कि इमें 'हिस्त इसीन' (ऐक तरह का मन्त्र) की इजाबत दीजिये. उन्होंने कहा कि बढ़े भाई साहब से ली. दूसरे दिन शाह साहब से ब्रह्मबारत की. बढ़े लका हुए कि 'तुन्हें کی مہلی هسسلیک جہتن تاری کی جس میں سائنس کو روکتے میں میں مائنس کو روکتے میں میں محر مرف تایم رمانا کے دوسری جوتاری جس میں سائنس روکئے کے بعد عرض بھی نہیں رمانا ۔ اِس سے پیلے نیتی وقتی اور 15 دن میں اپنا وعدہ پورا کردیا ۔ مم نے کئی دن کرکے یہ کام چھرو دیا کیونکہ ایک بہورا کیا ۔ کئی دن کرکے یہ کام چھرو دیا کیونکہ ایک بہورا کیا ۔ کہالی چومانا عمیں لوکیں سے یاد تیا اُسی لئے 15 دن میں سب کام پورا عوالیا ۔

(12)

بهوبال میں ایک هندو نقیر تھے بایا سیکل داس ، هم نے سا که اُن کی درشتی میں ہڑا اثر ہے . هم یهی اُن کے پاس گئے اور درخواست (پرارتینا) کی ، اُنھوں نے کیا تین دن تک فرجل اُپواس کرو ، هم نے ایسا هی کیا ، تیسرے دُن بایا ہی نے کریا درشتی تالی تو سارا جسم شیشے کی طرح هوگیا ، بهیتر اور باهر رگ و ریشته سب دکھائی دیتے تھے اور ایک جوت بهیتر اور باهر رگ و ریشته سب دکھائی دیتے تھے اور ایک جوت فرض کی که بابا جی هم کو۔"من عرف نفست عرف ریتی اُل فرض کی که بابا جی هم کو۔"من عرف نفست عرف ریتی اُل اُرتیات سبجس نے اپنے آنیا کو پہنچان لیا اُس نے اپنے رب کو پہنچان لیا اُس نے اپنے دب کو پہنچان فیا کو دیکھا چاہتے هیں' پخسم کو اور سفسار کو نہیں ، غیر کو دیکھا تو کیا دیکھا ، اصلی کریکھا تو اُپنا ہے دیکھا ہو ۔

ا الهول في جواب ديا كه يه تو مشكل هي هم في كها كه أكر عند مشكل هي تو همارا بهي سلام هي .

(13)

ایک دن جب هم کمبت میں پہونتیے تو حسن علی زمزمی کے حجود (کتیا) میں تھورے ، کچھ دنوں کے بعد مولوی محمد یعقوب اور مولانا شاہ استحاق سے مقانات ہوئی ، دهیرے دهیرے اُن سے آنا جانا ہوہ گیا ، ایک دن هم نے مولوی محمد یعقوب سے پرچھا که 'الله کا جلوہ (پرکاهی) کیا عوب اور یعقوب سے پرچھا که 'الله کا جلوہ (پرکاهی) کیا عوب اور پوچھا۔ 'هروی دوار اُور کعبه میں کیا فرق ہے ' کہا۔ 'نچھ نہیں ، اِس کے بعد هم نے کہا کہ۔ 'پھر آپ هندستان سے کیوں بیائے ؟ ' کہا کہ۔ 'بھر آپ هندستان سے کیوں بیائے ؟ ' کہا کہ۔ 'بھر آپ هندستان سے کیوں بیائے ہو میں؛ هماری یه بیائے ؟ ' کہا کہ۔ 'بھر نہیں پردے کی اُر میں بیائے سن بیائے ! هم محمدی بھی تو هیں؛ هماری یه بات چیت مولان شاہ استحاق بھی پردے کی اُر میں بیائے سن متعمد یعتوب سے درخواست (پرارتها) کی که همیں 'حسن متعمد یعتوب سے درخواست (پرارتها) کی که همیں 'حسن حسین' (ایک طرح کا مئٹر) کی اِجازت دیجئے ، اُنھوں شاہ کی بڑے خوا ہوئے که 'قبون شاہ بڑے بیائی صاحب سے درخواست کی ، بڑے خوا ہوئے که 'قبون

इसायतं नहीं देंगे. कल तुम दोनों क्या वक रहे थे ?' हमने वाकी वाही. फिर शाह साहब ने हमें 'हिस्नहसीन' पढ़ाई कीर इजाजत दी. जब इजाजत मिल गई तो हमने कहा कि इजरत सब सब कहिए कि हम दोनों जो बाव बीत कर रहे ये क्या वह हक़ीक़त (सच्चाई) के जिलाफ थी ? इब्र उहरे, कहने लगे कि 'हाँ ' सब तो वही है जो तुम कहते थे भगर भाई हम मोह्म्मिद्यों को ऐसी बात मुँह से निकाखना अच्छा नहीं लगता, क्योंकि इन बातों से इजरत रस्ल (मोहम्मद साहब) नाराज होते हैं.' हमने कहा—'और खुदा ?' जवाब दिया—'बस रहने दो. आगे बात बीत न करो. आदमी खराब हो जाता है.' उस वक्त हमने कहा—'जुदा का शुक्र है कि आप भी हमारे साथी निकले. बस, हमको इतना ही जानना बाक़ी था.' सुनकर हंस दिये.

(14)

एक दिन काने में हमारे नाप का एक मुरीद (चेला) शानरात के दिन थोड़ा सा हलना पकाकर लाया और कहा कि मुजुर्गों (पितरों) की कातिहा पढ़ दीजिये. हमने कहा कि मले मानस देख तो कैसी मुसीनत उठाकर हम तुम यहाँ पहुंचे हैं. भला इस जरा से हलने के लिए क्यों बुजुर्गों (पितरों) को तकलीक देता है. इतनी दूर का सकर, बीच में समुद्र और फिर अगर ने आ भी गए तो इतने से हलने में मला क्या होगा? क्या तू उन्हें आपस में लड़ाना चाहता है ? हँसकर कहने लगा 'मियां साहन! आपको तो हमेशा मजाक ही सूमता है. अपने बुजुर्गों से भी नहीं चूकते!' छीर; हमने कातिहा पढ़कर हलना बांट दिया.

(15)

एक दिन हम चोली-महेशर में पहुंचे तो शाम हो गई. एक आदमी रास्ते में हमारे साथ हो लिया. उसने कहा कि यहां नर्बदा नदी के किनारे एक बाबा जी का मकान है. चलो उसी में रात बसर करेंगे. बाबा जी से इजाजत चाही. उन्होंने कहा कि हम तो किसी को ठहरने नहीं देते. हम बाहर आए और पीपल के पेड़ के नीचे बिस्तर लगा दिया.

द्रवेश हरकुजा कि शब आमद सराए श्रांस्त. (अर्थात्-फकीर को जहाँ रात होजाय वहीं उसकी सराय है.)

अपने साथी से हमने कहा कि पहली आधी रात का पहरा तुम दो. पिछली आधी रात हम जागते रहेंगे, क्योंकि यह नदी का किनारा है, मुमकिन है कोई जंगली जानवर बोट कर बैठे. हम नमाज पढ़ कर सो गए. वह जगता रहा. इसने में बाबा जी ने अपने मकान का फाटक खाला और हमें देखकर आवाज दी—'कीन है ?' मेरी आंख खुल गई. اجارت، فهیل دیائے کل تم دوتوں کیا بک رہے تھے ؟ ممانی چاھی۔ پوشاہ شاحب نے ممانی حسین حسین پوھائی اور اجازت دی ہر جب اجازت مل گئی تو ھم نے کہا کہ حضرت سے مے کہئے کہ هم دوتوں جو بات چیت کر رہے تھے کیا وہ حقیقت (سچائی) کے خطف تھی ؟ کچھ قمیرے کیا ہہ حقیقت (سچائی) کے خطف تھی ؟ کچھ قمیرے کہنے لگے که 'ھاں' سے تو وھی ہے جو تم کہتے تھے مگر بھائی ھم محمدیوں کو ایسی بات منه سے نکالنا اچھا فہیں لگنا' کیونکہ اِن باتوں سے حضرت رسول سے نکالنا اچھا فہیں لگنا' کیونکہ اِن باتوں سے حضرت رسول (محمد صاحب) فاراض ہوتے ھیں ، ھم نے کہا۔ اور خدا ؟ ، جواب دیا۔ اس رہانے دو . آئمی خراب ھوجاتا ھے ،' اس وقت ھم نے کہا۔ خدا کا شکر ھے خراب ھوجاتا ھے ،' اس وقت ھم نے کہا۔ خدا کا شکر ھے خراب ھوجاتا ھے ،' اس وقت ھم نے کہا۔ خدا کا شکر ھے بانی تھا ،' سنکو ھنس دیئے . بس' ھم کو اِتنا ھی جانیا بینے تھا ،' سنکو ھنس دیئے . بس' ھم کو اِتنا ھی جانیا بینے تھا ،' سنکو ھنس دیئے .

(14)

ایک دین کمیے میں همارے باپ کا ایک مرید (چیلا) شہرات کے دین تھررا سا حلوہ دکا کر قیا اور کہا که بورگوں (بتروں) کی فاتحت برتھ دینجیئے ، هم نے کہا که بھلے مانس دیکھ تو کیسی مصیبت اُتھاکو هم تم یہاں پہوئنچے هیں ، بھلا اِس ذرا سے حلوے کے لئے کیوں بزرگوں (پتروں) کو تعلیف دیتا ھے ، اِتنی دور کا سفر ' بینچ میں سمدر اور پھر اگر وے آ بی گئے تو اِتنے سے حلوے میں بھلا کیا ھوگا ؟ کیا تو اُنھیں آپس میں لرانا چاھتا ھے ؟ هنسکو کہنے لگا 'میاں صاحب اُنس کی تو همیشه مذاتی هی سوجھتا ھے ، اپنے بزرگوں سے بھی آپ کہ تو همیشه مذاتی هی سوجھتا ھے ، اپنے بزرگوں سے بھی نہیں چونتے ا' خیر' هم نے فاتحت پڑھکو حلوۃ بانگ دیا ،

(15)

ایک دن هم چولی - مهیشر میں پہونچے تو شام هوگئی . ایک آدمی راستے میں همارے ساته هولیا . اُس نے کہا نوبدا ندی کے کنارے ایک باہا جی کا مکان ہے ۔ چلو اُسی میں رات بسر درینکے ، باہا جی سے اِجازت چاهی ، اُنہوں نے کہا که هم تو کسی کو تَههرنے نهیں دیتے ، هم باهر آئے اور پیول کے پین کے نیچے بستر لگادیا .

درویش هر کجا که شب آبد سرائه آرست . (ارتهات سفتیر کو جهال رات هوجایه وهیل اُس کی

A Comment of the Comm

मेंने जबाब दिया नहीं मुसाफिर जिन्हें आपने ठहरने नहीं हिया. बोले कि बले आओ. हम अन्दर गए. देखा कि एक बहुत बहा घर है, चारों तरफ पक्की कोठरियां बनी हैं. नमाज के लिए चब्तरा है. नहाने धोने के लिए अलग जगह है, बरौरह बरारह, एक कोठरी में उन्होंने मुक्ते बैठा दिया और खाना लाए, मैंने कहा कि हम दोनों आदमी मुसलमान हैं, साथ हाता ला लेंगे. बाबा जी ने इसे मंजूर न किया और कहा कि नहीं तुम अलग खाओ, उन्हें दूसरी कोठरी में अलग खिलाएंगे. तरह तरह के भोजन मेरे सामने चुन दिए गए, कई तरह के चावल, कई तरह की दालें, तरह तरह की तरकारियां, रोटी वरौरह, हमारी। अकल दंग होगई कि इतने धोडे से बक्त में इस खकेले आदमी ने ये चीजें कैसे तय्यार की होंगी. खाना खिलाने के बाद कहने लगे-हमारे इनकार से तमने बुरा माना होगा; लेकिन बात यह थी कि अगर इस बक्षत तुम्हें बुला लेना तो तुम्हारा आदर सत्कार करता या भोजन पकाता ? मैं जानता था कि आज तुम हमारे मेहमान होगे. इसीलिए जब मैंने सब चीजें तय्यार करलीं तब तुम्हें अन्दर बलाया. इसके बाद यह कहकर कि फक़ीर का अकेले रहना ही बेहतर है हम दोनों को अलग अलग कोटरियां सोने को दीं. एक जगह न सोने दिया. सुबह को हमने चलने का इरादा किया तो बाबा जी ने जिद् करके हमें ठहराया. बीस दिन तक जबरदस्ती ठहराए रखा. दोनों बक्त उसी तरह का खाना खिलाते रहे. हमें इस बात की षड़ी हैरानी थी कि न तो वहां किसी को पानी भरते देखा, न किसी को रोटी पकाते, न धुँचा उठता देखा, न कभी किसी को माडू देते देखा, लेकिन सब मकान बिलकुल उजले और साफ रहते थे. बाबा जी की सूरत भी ऐसी सुन्दर और मनाहर थी कि हमने अपनी उमर भर में ऐसा सुन्दर आदमी नहीं देखा. काली डाढ़ी का अक्स चमकते हुए गालों पर ऐसा पड़ता था जैसे शीशे में हो. दिमारी ताकतें (मानसिक शक्तियां) भी बड़े अंचे द्रजे की थीं. हर वक्तत काम में लगे रहते थे. एक पहर रात गए से बैठते तो सुबह कर देते थे. जैसं भीतर से पहुंचे हुए और कामिल थे वैसे ही बाहर से भी. वैद्यक वरीरह में होशियार थे. एक दिन दो कोढ़ी आए. एक हिन्दू था दूसरा मुसलमान. सूरत देखते ही हिन्दू से कहा कि तुम्हारे गुरू ने कुछ जाप बतलाया था, तुमने उस जाप में स्त्री भोग किया, इसीलिए खून चक्कर खा गया. इसने अपने क़ुसूर को मान लिया. कहने लगे अब अपने गुरू के पास चले जाश्रो, बही इसका काट कर देंगे. गुसल-मान से कहा ठहरी तुन्हें दवा देंगे. दूसरे दिन नर्बदा के अन्दर उसे गले भर पानी में खड़ा करके एक चाबल भर द्वा सिला दी. थोड़ी देर बाद वह प्यास के मारे चिस्लाने लगा. बाबा जी ने कहा खबरदार ! पानी पियेगा तो फौरन

یں لے جراب دیا وہی مسافر جانہیں آپ لے قہرتے۔ ہیں دیا . بولے که چلے آؤ . هم اندر گئے . دیکھا که ایک بہت راً گھر ھے . چاروں طرف یکی کوٹھریاں بنی ھیں . نماز کے لئے جبوتوہ هـ. نمالے دهولے کے لئے اگ جکه هـ وغيرہ وغيره وغيره . یک کرتوری میں اُنہوں نے مجھے بیٹھا دیا اور کھانا لائے . میں له کها که هم دونوں آدمی مسلمان هیں اساته کهانا کها لیں گه . ایا جی نے اِسے منظور نہ کیا اور کہا که نہیں تم الگ کھاؤ' نہیں درسری کوئھری میں آنگ کھائیں گے ، طرح طرح کے ہوجن میرے سامنے چن دئے گئے ، کئی طرح کے چاول کئی ارح کی دالیں' طرح طرح کی ترکاریاں' روٹی وغیرہ ، هماری عل دلك هوكئي كم إننه تهرزے سے وقت ميں اِس أكيلے دمی نے یہ چیزیں کیسے تیار کی ہوٹکی ۔ کہانا کیلانے کے بعد نہنے لیے۔ همارے اِنکار سے تم لے برأ مانا هوگا؛ ليكن بات يه تهى م اگر أس وقت تبهين بلا ليتا تو تبهارا آدر ستكار كرتا يا بهوجن کاتا ؟ میں جائنا تھا کہ آج تم همارے مهمان هوگے ، أسى الله جب مھی نے سب چیڑیں تیار کرلیں تب تمهیں اندر بالیا ۔ س کے بعد یہ کہ کو کہ نقیر کا اکیلے رہنا ھی بہتر ہے ھم دونوں و آنگ انگ کوئوریاں سولے کو دیں . ایک جکه نه سولے دیا . بہم کو هم نے چلنے کا اِرادہ کیا تو بابا جی نے ضد کرکے همیں ههرآیا . بیس دی تک زبردستی تههرائه رکها ، دونس وقت سی طرح کا کھانا کھلتے رہے ، همیں اِس بات کی بڑی حیرانی ھی که نکہ تو رهاں کسی کو پانی بھرتے دیکھا' نکہ کسی کو روقی كاز' نه دهوان أنهتم ديمها' نه كبهي كسي كو جهارو ديتم ديكها' یمن سب مکان بالکل أجلے أور صاف رهتے تھے ، بابا جي کي مورت بھی ایسی سندر اور منوهر تھی که هم نے اپنی عمر بھر بين ايسا سندر آدمي نهين ديمها . لالي دارهي كا عكس معتم هولم كالس ير أيسا يزتا تها جيسم شيشم مين هو . سافی طاقتیں (مانسک شکتیاں) بھی بڑے اُونیے درجے کی بيس . هر وقت كام ميس لك رهتم ته . أيك بهر رأت كله عم يقيته تو صبح كرديته ته جيسه بهيتر سے پهوند هوئه أور امل تھے ریسے هی باهر سے بھی ، ویدیک رغیرہ میں هوشیار هے ایک دن دو کورهی آئے ایک هندو تها درسرا مسلمان . مررت دیکھتے ھی ھندر سے کہا که تمھارے گرو نے کچھ جاپ علایا تھا' تم نے اُس جاپ میں اِستری بھوگ کیا' اُس لئے خوں چکر کہا گیا ۔ اُس نے اپنے قصور کو مان لیا ، کہنے لکے ب آینے گرو کے پاس چلے جاؤ وھی اِس کا کات کردیلکے . سلمان سے کہا تھہرو تمهیں دوا دینکے . دوسرے دی توبدا کے اندر اُسے گلے بھر پانی میں کھڑا کرکے ایک چاول ہر دوا کھا دی . تهروی دیر بعد وہ پیاس کے مارے عِلْنِ لَكَا . بابا جي في کيا خبردار ! پاني پيل کا تو نوراً मर जायगा. एक एक पहर के बाद उसे नदी के अन्दर दी जी पिताते रहे. जब बाहर निकला तो बदन कुन्दन की तरह दमकते लगा था. फिर उसे बिदा कर दिया. हम बीस दिन रहे, कुछ मेद न खुला कि वह बाबा जी फ्रिश्ते थे या इनसान, स्रत से ये भी पता न चलता था कि हिन्दू हैं या मुसलमान. एक दिन हमसे कहने लगे—सियां साहब ! तुम कहां जाओंगे, हमारे पास ही रह जाओं. लेकिन शर्त यह है कि अगर हम मर जावें तो तुम हमारी टांग में रस्सी बांघ कर नर्वदा में ले जाकर डाल देना और अगर तुम मर गए तो हम पास के गांव से आदमी बुलाकर मुसलमानी ढंग से तुन्हारा आख़री संस्कार करा देंगे. लेकिन हम वहां, ज्यादह न ठहरे.

(16)

पक दिन हम लखनऊ की एक मसजिद में ठहरे हुए, थे. (सन् 57 के बाद की बात है) इत्तफाक से एक अमीर सैर को जाता था. देखा तो सामने से स्लीमैन साहब अंग्रेज आता था. इस ख्याल से कि अंग्रेज को सलाम करना पड़ेगा, वह अमीर मट मसजिद में चला आया. स्लीमैन साहब भी पीछे पीछे मसजिद में आ पहुंचा. मेरी तरफ देखकर पृक्षने लगा कि आप कौन हैं ? मैंने कहा कि साहब ! ये तो मुमे भी पता नहीं कि मैं कौन हूँ.

कुछ नहीं खुलता सुके में कौन हूँ सूरते हैरत हूँ या शक्ले जुनूँ?

फिर पूछा कि आपकी क्रीम क्या है १ मैंने कहा कि जो इजरते आदम की क्रीम है. कहा आदम की क्या क्रीम है १ मैंने कहा कि मुम्ने नहीं मालूम, यह आदम से पूछिये. फिर कहा कि आप कहाँ से आए १ मैंने कहा कि जहां से सब आए. वह बड़ा हैरान हुआ और बोला—साहब! जो बात हम पूछते हैं उसका उल्टा ही जवाब देते हो. फिर तो उनसे प्रेम हो गया. कभी कभी हमारे पास आने लगे. एक दिन बड़े प्रेम से दावत की. मतलब यह कि कक्कीर को चाहिए कि हर रंग का तमाशा देखे और किसी को बुरा न जाने, क्योंकि अल्लाह का जहूर हर जगह एकसा है—

. खुदा हर शै के अन्दर यूँ। निहां है, कि क्यूँ यू गुल की गुल के दरिभयां है. अर्थात्—ईश्वर हर पदार्थ में इस तरह छिपा हुआ है कि जिस तरह फूल की गन्ध फूल के अन्दर छिपी है.

17

शहर दिस्ती में एक रन्डी (वेश्या) बहुत स्नूबसूरत किसी समीर के यहां रहती थी. एक दिन गरमी के दिनों में साथी रात के बाद उसके मकान के नीचे किसी आदमी ने مرجائیا ایک ایک پہر کے بعد آس قدی کے اندر می گیر بات ایک کی میں ایک بھر ایک ہور آس بدن کلان کی طرح سمیل کا تھا ۔ پھر آس بدا کردیا ۔ ھم بیس دن میرت سے بعد بعد که وہ بابا جی فرشتہ تھے یا اِنسان ۔ میرت سے بعد بھی بتا کہ جلتا تھا کہ هندو هیں یا مدامان ۔ ایک دن هم سے کہلے لگے سمان صاحب اِ تم کہاں جاؤگی ایک دن هم سے کہلے لگے سمان صاحب اِ تم کہاں جاؤگی تو می باندھ کو تربدا میں لے جائر تو نم مرجاوی تال دینا اور اگر تم مر گئے تو ہم پاس کے گؤں سے آدمی بلائر مسانی تھنگ سے تمہارا آخری سنسکار کرادینئے ۔ لیکن ہم مسانی تھنگ سے تمہارا آخری سنسکار کرادینئے ۔ لیکن ہم میان زیادہ نه تھہرے ۔

(16)

ایک دن هم لکهاؤ کی ایک مسجد میں تهہرے هوئد تھ. (سن 75 کے بعد کی بات ہے) اِتفاق سے ایک امیر سیر کو جا تا تھا ، دیکھا تو ساملے سے سایمین صاحب انگریز آتا تھا ، اِس خیال سے که انگریز کو سالم کرنا پڑیگا، وہ امیر جھٹ مسجد میں چلا آیا ، سلیمین صاحب بھی پینچھے پینچھے مسجد میں آپہرنجیا ، مهری طرف دیکھ کر پوچھنے گا که آپ کون هیں آ مینے کہا که صاحب اُل یه دو منجھے بھی پند نہیں که میں مینے کہا که صاحب اُل یه دو منجھے بھی پند نہیں که میں کہرن هوں ،

کچھ نہیں کیلنا مجھے میں کون هوں صورت حیرت هوں یا شکل جنوں ؟

پور پوچها که آپ کی قوم کیا ہے ؟ سینے کہا که جو حضرت آدم کی دوم ہے، کہا آدم کی کیا قوم ہے ؟ سینے کہا که مجھے نہیں سلم، یه آدم سے پوچھیئے ۔ پھر کہا که آپ کہاں سے آنے ؟ سینے کہا ته جہاں سے سب آئے ۔ ولا بوا حیران ہوا اور بولا—صاحب ! جو بات ہم پہچھتے ہیں اُس کا آلٹا ہی جواب دیتے ہو ۔ پھر تو اُن سے پریم ہو گیا ۔ کبھی کبھی ہمارے پاس آئے لئے ۔ ایک تو اُن سے پریم ہو گیا ۔ کبھی کبھی ہمارے پاس آئے لئے ۔ ایک مورنگ کا تماشته دیکھ اور کسی کو برا نے جائے کیونکھ الله کا ظہرر ہو جگہ ایکسا ہے۔

خدا ہر شے کے اندریوں نہاں ہے '
کہ جیوں ہو گل کی گل کے درمیاں ہے ،
ارنیات—ایشور ہو پدارتھ میں اِس طرح چھیا ہوا ہے کہ جس طرح پھول کی گلدہ پہول کے اندر چھیی ہے ،

(17)

شہر دلی میں ایک رقدی (ریشیا) بہت خوبصورت کسی الیر کے یہاں رہتی تھی : ایک دن گرمی کے دنوں میں آدھی رات کے بعد اس کے مکان کے انہجے کسی آدمی نے

سلمبر 55'

हारा कि कि रेखा खुरा का करा जो इमें हमका तो पिला है! आयाज छुनकर यह रसकी जाग यही चीर क सुराही जून ठयंडे पानी की जोर एक साफ गिलास हाथ लिए नीचे उत्तरी. उसने प्यासे कक़ीर को पानी पिलाया. व वह पी. जुका तो गिलास का बचा हुआ पानी उसने एही से पीने के लिए कहा. रयंडी ने उसे पी लिया. फकीर लि दिया. इस जिन भर की मुलाक़ात का रएडी के दिल र इतना जबरवस्त असर पढ़ा कि वह उसी जगह बैठ गई. मीर की जब आँख खुली तो इधर उधर देखा, वह नजर पढ़ी. चबराकर दूँदने लगा. देखा कि वह धीने के नीचे मेट्टी पर पढ़ी है. उठाकर लाया, सब हाल पूछा. रएडी वे हि। जब इमसे तुमसे इस तआ स्वाहक नहीं, न मैं सुम्हारे जम की. न तम मेरे मतलब के.

श्रम्त गोयद कि दुनियको एकवा बजी, इश्क्र भी गोयद बजुज मौला मजी. श्रम्त भी गोयद के खुद रा पेश कुन, इश्क्र भी गोयद के तर्के खेश कुन.

(अर्थात्—अन्नल कहती है कि इस लोक और परलोक होनों को दुंद, प्रेम कहता है कि सिवाय मौला (ईश्वर) के प्रीर किसी को न दंद.

रएडी ने उससे कहा कि मुक्त पर इतनी कुपा करो कि एक प्रत्य मकान दे दो. न मैं किसी के पास जाऊं न कोई मेरे गस आवे. कुछ दिनों के बाद वह शहर से बाहर एक क्षवरे पर रहती थी. कोई सुतलाशी (जिज्ञास) किसी साधू के पास गए. उस साधू ने उसे पता दिया कि फलां तगह पर एक औरत रहती है, तुम उसके पास जाओ. वह उतलाशी वहीं पहुँचा और अपना मतलब कह सनाया. शौरत बोली मैं तो रखडी हूँ, अगर कुछ तुम्हारे पास हो तो तात्रो. इसके सिवाय मैं कुछ नहीं जानती. इसने जवाब दिया आप कुछ ही कहें, मैं एक भेदी का भेजा हुआ हूँ, टाले से टलूंगा नहीं. तब उसने कहा-अच्छा तुम इस काबिल तो नहीं हो कि एकदम तुम्हें दीक्षा दे दी जावे. हां रोज धुबह शाम मेरे पाकर बैठा करो. लेकिन अगर कोई पूछे तो कह देना कि इससे इससे प्रेम है. श्री महीने तक वह जादमी राज इसी तरह आता रहा. है महीने के बाद उसकी शिक्षा को पूरा करके इस रखडी ने इसे बिदा किया.

द्वारका मक्का इवादतगाह हैं, चापके मिलने की लाखों राह हैं.

(इसके बाद गुरू जी ने कहा कि) जिस जमाने में हम मीलाना शाह अब्दुल अजीज से पढ़ते थे तो हम भी कई बार उस औरत से मिलने गए थे.

(18)

पिछले जनाने में जेबाद के बक्त किसी मुसलमान की

چوا کیست کری ایسا کو کا باید جو هنین ایاد ایسی با اور ایک سراحی خوب ایسا کی اور ایک سراحی خوب ایسانی کی اور ایک سانی کلس هانه میں اثر ایدچی آتری لیس نے پیام فی پیام کی اور ایک سانی کلس کا بردی کی ایس نے رائی پالیا ، جب وہ پی چکا تو گلس کا بچا ہوا پائی اس نے رائی سے پیلم کے اللہ کیا ، رائی لی آسے پی لیا ، فقیر چل دیا ، اِس چس بهر کی ماقات کا رائی نے دال پر اتفا زوردست اثر بوا که وہ اُسی جکہت بیٹی گئی ، امیر کی جب آنے کہلی تو اِدھر آدھر دیکھا' وہ نظر نه پری ، گیبرا کر دھوئتھا ہے لگا ، دیکھا که وہ زینہ کے نیسچے متی پر پری ہے ، آنیا کو لایا' سب حال پوچھا ، رئتی نے کہا اب هم سے نم اُلیا کو لایا' سب حال پوچھا ، رئتی نے کہا اب هم سے نم میرے مطالب کی ،

عقل گوید که دنیا و عقبی بحجو ، عشی می گوید بحجو مولا محجو . عقل می گوید که خود را پیش کن ، . عشی می گوید که ترک خویش کن .

(ارتهاس عقل که تی هے که اِس لوک آور پرلوک دونوں کو تھوندھ، پریم کها هے که سوائے شہلا (ایشور) کے اور کسی کو نموندھ .

عُقل کہتی ہے کہ اپنے کو آگے ہڑھا پریم کہتا ہے کہ اپنے پی

دوارکا منه عبادت کاد هیں ' آپ کے ملنے کی لاکوں راہ هیں ،

(اِس کے بعد گروجی نے کہا کہ) جس زمانے میں هم ہوانا شاہ عبدالعزیز سے پڑھتے تھے تو هم بھی کئی بار اُس عورت مانے گئے تھے ۔

(~ 18 ·)

پیچلے زمالے میں جہاد ، کے رقت کسی مسامان کی

क हुवपरस्त (मृर्धि पूजक) से लड़ाई हुई. बड़ी देर तक दोनों लड़ते रहे. कोई किसी को हरा न सका. इतने में नमाज का बच्छ बाया. मुसलमान ने कहा कि अब मुमे थोड़ी देर के वास्ते हुई। दे साकि नमाज झदा कर लूं. बुतपरस्त ने इजाजत दे दी. नमाज के बाद फिर लड़ाई शुरू हो गई. इतने में बुतपरस्त की पूजा का बच्छ हो गया. बसने भी छुटी चाही और पूजा में लग गया. मुसलमान को ख्याल खाया कि अब अच्छा मौक़ा है. इसका काम तमाम कर दो. तुरन्त गैव (अट्ट) से जाबाज खाई—ऐ, बेवफा! क्या—'श्रीफु बिल श्रोक़दे' (अर्थात्—पूरा करो अपने बादों को)— कुरान की एक आयत का यही मतलब है ? इस बात में तुमसे तो बुतपरस्त बढ़कर निकला. यह खाबाज सुनते ही वह मुसलमान रारमिन्दा होकर रोने लगा खीर फिर लड़ाई से बाज रहा.

पेसे ही आजकल के मुसलमान भी बेवफ़ाई में यकता (बेमिसाल) हैं. लेकिन ग्रीब की आवाज उन्हें मुनाई नहीं देती, और क़ुरान शरीफ़ को देखते नहीं. अगर देखते हैं तो अमल करते नहीं.

> बर जबां तसबीह व दर दिल गात्रो खर, ई' चुनी तसबीह के दारद असर.

(अर्थात्—जवान से बल्लाह, बल्लाह जपते हैं और दिल में बैल और ग्धे का ख्याल भरा हुआ है. इस तरह के जप से क्या असर हो सकता है!)

(19)

जिस चेले ने अपने पीर के मुंह से मुन मुन कर इन सब घटनाओं को लिखा है, उसकी यह आदत थी कि जब कभी वह अपने पीर (गुरू जी) से कुछ मुनना चाहता था हो उनके सामने जाकर यह शेर पढ़ दिया करता था.

बाज गो अज नज्द वज याराने नज्द ता दरो दीवार रा आरी व वज्द

एक दिन उसने सामने आकर यही शेर पदा. गुरू जी हहने लगे कि—

जाकी जैसी लगन है वाको वैसो राम, रोम रोम में रम रही नहीं श्रीर से काम. पास कहूँ तो पास है दूर कहूँ तो दूर, जान श्रजान जहान में सब में है भरपूर. दूर कहूँ तो दूर है पास कहूँ तो पास, रोम रोम में रम रही ज्यों फूलन में बास. नहनो श्रकरवो इलैहे मिन हन्लिल वरीद.

(अर्थात्—ईश्वर मतुष्य की गरवन की रंग की निस्वत । इसके क्यादा नक्षदीक है.)

ایسے هی آجال کے مسلمان بھی بیونائی میں یکتا (پے مثال) هیں ، لکین غیب کی آواز آنهیں سنائی نہیں دیتی اور قران شریف کو دیکھتے نہیں ، آگر دیکھتے هیں تو عمل کرتے نہیں ،

برزباں تسبیع و در دل کاؤ وخر ' این چنیں تسبیع کے دارد اثر ،

(ارتهات - زبان سے الاء الله جہتے هیں اور دل میں بیل اور گرھے کا خیال بھوا ہوا ہے ایس طرح کے جاپ سے کیا اثر موسمتا ہے!)

(19)

چس چیلے نے اپنے پیر کے منہ سے سن سن کر اِن سب گیٹناوں کو اہما ھے، اُس کی یہ عادت نہی کہ جب کبھی وہ اپنے پیر (گرو جی) سے کچھ سننا چاھٹا تھا تو اُن کے سامنے جا کر یہ شعر بڑھ دیا کرتا تھا۔۔۔

ا باز گو از نجد وز یاران نجد تا در و دیوار را آری به وجد

ایک دین اُس نے سامنے آکر یہی شعر پڑھا ، گروجی کہنے

جائی جیسی لکن هے واکو ویسو رام '
روم روم میں رم زهی نهیں اور سے کام ،
پاس کہوں تو پاس هے دور کہوں تو دور '
جان اجان جہاں میں سب میں هے بور پر ،
دور کہوں تو دور هے پاس کہوں تو پاس '
روم روم میں رم رهی جیوں پھولن میں باس ،
نہلو عقرب و الہے من حیل الرون

(قرآن) (ارتهات-ایشور ملشیع کی گردن کی رگ کی نسبت فی اِس کے زیادہ نودیک ہے .)

क्रिकम्बर 'ठ5

(168)

ستيبر 20ٍ2′

बार नपदीकतर अप मन बमनत्ते. बीं भाजवतर के मन भाज वे दूरम्. चे क्रनम ताके तवां गुफ्त के ऊ, दर किनारे मन बमन महजूरम.

(बर्बात-नेरा बार मेरी निस्वत भी मेरे अधिक निकट है और आश्वर्य यह है कि मैं उससे दूर हूँ ! क्या कहाँ, मैं यह किससे कह सकता हैं कि वह मेरी बराल में है और मैं बससे दर हैं.)

एक राजा था. उसे यह ख्याल हुआ कि आसिर एक दिन मरना है, युक्ति हासिल करने के लिए अपनी आत्मा को पहचान लेना चाहिए. इसकी कोई तरकीब करनी चाहिए. इसने बहुत से जाहाणों को जमा किया और कहा-कोई ऐसी बात बतलाओ जिससे मैं अपनी आत्मा को पहचानने लग धीर जीवनमुक्त हो जाऊं, त्राह्मणों ने विचार कर जवाब विया कि महाराज ! एक सोने की गाय बनवाइये. उसे ब्राह्मणों को दान दीजिये और इस तरह से और धन वरीरा वान दीजिये, 68 तीर्थ कर आइये तो भगवान की द्या से जीवनमुक्त हो जाइएगा. राजा ने यह सब कर्म किए. पर इनसे न वह अपने को पहचान सका न दिल को शान्ति मिली और न मुक्ति का कोई लच्छन दिखाई दिया. फिर इसने जोगियों की तरक ध्यान दिया और यही प्रार्थना उनसे की. जोगियों ने पहले तो राजा के कान फटवाए और फिर ब्रह्मचर्य, बानप्रस्थ, द्रांड कमएडल श्रीर विजया होम वरौरा चार तरह की शिक्षा दी. राजा ने यह सब कुछ भी किया. लेकिन इसका भी कुछ फल न हुआ. इसके बाद उसने मुसलमानों के मौलवियों को जमा किया और यही सवाल उनके सामने रखा, उन्होंने कहा कि साहब ! अगर आप इसलाम धर्म मंजुर कर लें तो आपकी ख्वाहिश पूरी हो सकती है. राजा ने मजर कर लिया. मौलवियों ने उसे मुसलमान बनाया, उसका खतना करवाया. उसे नमाज, राजा, 'इज्ज, जकात वरौरा की तालीम दी. जब सब सीख लिया तो कहा कि अब आप हज्ज के लिये मक्के मदीन हो श्राइये. राजा ने यह सब भी किया. जब बापस अपने देश आया तो फिर मौलवियों को जमा किया और कहा कि मुक्ते तो कुछ भी हासिल नहीं हुआ. अब आप क्या कहते हैं ?

मक्के गए, मदीने गए, करबला गए, जैसे गए थे वैसे ही हिर फिर के आगए.

मीलवियों ने जबाब दिया कि जो कुछ हमारे धर्म में था हमने त्राप को सब बता दिया. इससे ज्यादा हम कुछ नहीं जानते. सब तरफ़ से मायूस (निराश) होकर राजा को एक तरह का पागलपन हो गया. एक हाथ से उसने भवना कान पकड़ा और दूसरे हाथ से खतने की जगह और یار تودیک تو آز می به ماست خ وين عجب در كه من أزوم دورم . چة كلم ناك توال گانت كه أو كنار من يمن مهجورم

(ارتهات سميرا يار ميرى نسبت يهي مير ادهك نعت ه أور آشچريه يه هه كه مين أس سه دور هون . كيا كورن مين یہ کس سے کہتے سکتا ہوں که وہ میری بنل میں فے آور میں اس سے دور ھوں ۔)

ایک راجه تها. أسه يه خهال هوا كه آخر ايك دور مونا ها معتى حاصل کرنے کے لئے اپنی آنما کو پہنچان اینا چاهدئے۔ اِسکی کوئی ترکیب گرنی چاه گیے، أس نے بہت سے براھمنوں کو جمع کیا اور کہا کوئی ايسى بات بتلا جسس مي أيني أتما كو بهجالند لكو أور جهون مكت هو جازں . برهمنوں نے وچار کر جواب دیا که مہاراج ! ایک سرنے کی کائے بنوائیے اُسے براہمنوں کو دان دیجئے اور آس اِس طرح سے اور دھی وفیرہ دان دیجئے ۔ 64 نیرتھ کر آئیے تو بھکواں کی دیا سے جیوں ممت هو جائزگا . راجه نے یه سب کرم کئے . پر اِن سے نے وہ اپنے کو پہچاں سکا نے دل کو شائعی ملی اور نے مکتی کا کوئی لیچھن دکھائی دیا ، پھر اُس نے جوگیوں کی طرف دھھان دیا اور یہی برارتنها أن سے كى ، جوگيوں نے پہلے تو راجه كے كان يهاوائد اور يهر برهمچريه، بانيرساه، داند كماذل أور وجها هوم رغهرة چار طرح كى شكشا دى . راجه نے يه سب كچه بھى كيا . لیعن اِس کا بھی کچھ پیل تھ ہوا ، اِس کے بعد اُس نے مسلماتیں کے مواودوں کو جمع کیا اور یہی سوال اُن کے سامنے رکھا ، اُنھرس نے کہا که صاحب! اگر آپ اسلم دھرم منظور کرلیں تو آپکی خواهش پوری هو سکتی هے ، راجه نے منظور کولیا . مولویوں نے اُسے مسلمان بنایا، اُس کا ختنه کروایا، اُس ثماز روزه حبر ذكاة رغيره كي تعليم دي جب سب سيكه لها تو كيا كد اب أب حبر كے لئے منے مدينے هو أثير ، راجه نے یه سب بهی کیا . جب واپس اینے دیش آیا تو پور مولویوں کو جمع کیا آور کہا که مجھے تو کچھ بھی حامل نہیں ہوا ، اب آپ کیا کہتے میں 8

> مع گئے مدینے گئے کربلا گئے ا جیسے گئے تھے ریسے ھی ھر پھر کے آگئے .

مرلویوں نے جواب دیا که جو کچے همارے دهرم میں تھا هم نے آپ کو سب بتا دیا ۔ اِس سے زیادہ هم کچھ نہیں جانتی سب طرف سے مایرس (دراهی) هو کر راجه کو ایک طرح کا پاکلبن هو گیا۔ ایک هاته سے اُس لے اپنا کلی پکڑا اور درسرے هاته سے ختنه کی جاہم اور अपाह अपाह पून कर यह कहना छुरू किया कि 'यह हिन्दू है, और यह क्षसत्तमान ! मैं कीन हूँ ?'

श्वाहिर में गरचे बैठा लोगों के दरमियां हूँ, पर जानता नहीं हूँ मैं कीन हूँ कहाँ हूँ.

आकिर में पागलों की तरह पूमते घूमते 'जोइन्दा या-विन्ता' (अर्थात्—'जिन दूं दा तिन पाइयां') के मुताबिक्ष राजा के पास एक सक्वा फक़ीर अपने कुछ चेलों समेत आ पहुंचा. राजा को देखा और पूछने लगा—क्या कहता है ? राजा ने फिर बही कहा—'यह हिन्दू, यह मुसलमान, मैं कौन ?' फ़क़ीर ने उसे अच्छी तरह परखकर तसल्ली देकर उपदेश दिया कि यह हिन्दू मुसलमान का मेद ही आत्मा के असली रूप को सममने में सबसे बड़ी रुकावट है. आत्मा के दीदार (दर्शन) के लिए सबसे पहले इस दुई के परदे को बीच से इटा देना ज़रूरी है. अब राजा की आखें खुलीं. बह कर्मकाएड, हिन्दू मुसलमान और दुई के भेद से ऊपर उठकर हर जानदार में एक आत्मा के दर्शन करने लगा.

सत गुरू पूरा मिल गया जो खोल दिखाए नैन.

(बाक़ी फिर)

> ظاهر میں گرچہ بیٹھا لوگیں کے درمیاں ہیں ' پر جائٹا نہیں ہیں میں کرن ہیں کہاں ہیں ۔

آخر میں ہاگلوں کی طرح گومتے گومتے 'جو ثارہ یابادہ'
(ارتباسہ جی قحرفتھا تی پائیاں) کے مطابع داجہ کے پاس
ایک سچا فقور اپنے کچے چہاری سیمت آپہونچا ، راجہ کو
دیکیا اور پوچھنے لگا ۔ کیا کہا ہے ؟ راجہ نے پھر رھی کہا ۔ 'یہ
مندو' یہ مسلمان' میں کون ؟ '' نقیر نے آب اچھی طرح پرکھ
کو نسلی دیکر آپدیش دیا کہ یہ هندو مسلمان کا بھید ھی آتما
کے اصلی روپ کو سمجھنے میں سب سے بڑی راوٹ ہے ، آتما
کے دیدار (درشن) کے لئے سب سے پہلے اِس درئی کے پردے
کو بیج سے مقا دینا ضروری ہے ، آب راجۂ کی آنکھیں کہیں ،
وہ کرم کانڈ' هندو مسلمان اور دوئی کے بھید سے آریو آتھکر ھڑ

ست گرو پورا مل گیا جو کهرل دکهائد نین .

(ہاتی پھر)

"نویبوں پر خدا کا یہ ہزا احسان باتی ہے
کہ دنیا میں ابھی تک اُن کا قبوستان باتی ہے
چبائے جاتے ہیں لے کو خدا کا نام انسان کو
دھرم کے تھیمیداروں کا مکر ایمان باتی ہے
بہالے جائے جو ظام و ستم کو ساری دنیا سے
زمانے میں ابھی آئے کو وہ طونان باتی ہے
جہاں بکتی ہے اُن داتاؤں کی وہ دوکان باتی ہے
ناریوں سے ملیکا بھوگ کیا بھکوان کو فازک
جہال روتی کے بدلے صرف ان کی جان بانی ہے"

"पारी बों पर ख़ुदा का यह बड़ा एहसान बाक़ी है

कि दुनिया में अभी तक उनका क़ित्रस्तान बाक़ी है

बहाए जाते हैं लेकर ख़ुदा का नाम इनसों को

बरम के ठेकेदारों का मगर ईमान बाक़ी है

बहा ने जाए जो खुल्मां सितम की सारी दुनिया से

अमाने में अभी आने की वह तूकान बाक़ी है

जहां बिकती है रोटी के एवज इन्सानियत नाजुक
सितम है अमदाताओं की वह दूकान बाक़ी है

शारी बां से मिलेगा भोग क्या भगवान को नाजुक

बहां रोटी के बदले सिर्फ उनकी जान बाक़ी है"

नाज**क इलाहाबा**दी

विश्वम्भरनाथ पांडे

मैंने अक्सर जापानियों को यह कहते सुना है कि अगर तुमने निक्कों के मन्दिर नहीं देखे तो तुमने कुछ भी नहीं देखा. इसकाक से मैंने निक्कों के मन्दिर देखे हैं और मैं यह मानता हूँ कि वे बेहद शानदार और आलीशान हैं, मगर यह कहना कि वे दुनिया की तामीरी कला में लासानी हैं, इससे जापानियों को बेशक तसल्ली हो सकती है मगर कला के प्रेमियों को नहीं.

में इसका दावा नहीं करता कि मैंने कला के लिहाज से दनिया की सभी शानदार इमारतों को देखा है. अलबत्ता योरप, एशिया और अफीक़ा की अपनी सैरों में मैंने कई बेहद सुन्दर इमारतें देखी हैं. मिस्र के पिरैमिड, बाबुल के सात सतून, यूनान की रंगशालाएँ, रोम के थियेटर, ईरान में बेहस्तून के शिला लेख, चीन की बड़ी दीवार, जावा के बारोबुदुर का मन्दिर, रंगून का पगोदा और अजन्ता और एलारा की गुफाएं - सब आज भी मेरे नयनों में समाई हुई हैं और अक्स व बक्स मेरी कल्पनाओं में छाई दुई हैं. बरबस मेरा माथा उन जाने और अनजाने कलावन्तों और शिल्पियों के क़दमों पर मुका है जिन्होंने पुराने जमाने को अपनी कला के जरिये, अपनी छेनी और अपने हथौड़े से, वर्तमान जमाने के साथ जोड़ा है. अनमोल कला के यह अमर नमूने इमें यह तसल्ली देते रहते हैं कि इन्सान की जिन्दगी चन्द रोजा हो सकती है मगर कला अमर है और उसकी छाप हमेशा हमेशा के लिये दुनिया पर रहती है.

मैं न शिल्पी हूँ और न कलाकार, और न मुक्ते कला की नुकाचीनी करने का ही अधिकार हासिल है. लेकिन एक मामूली सैलानी की हैसियत से यह कह सकता हूँ कि आगरे के ताज को देखकर मुक्त पर जो असर पड़ा उसे बयान कर सकना मेरे इमकान से बाहर है. कलाकार की कल्पना और शिल्पियों की चतुराई की इतनी मुकम्मिल तस्वीर मेरी नजरों से आज तक नहीं गुजरी.

इस बात को जाने कितने बरस बीत चुके. इलायची, दालचीनी और संदल के पेड़ों को थपिकयाँ देती हुई चैती हवा के भीने भीने दिक्सानी मकोरे क़ुद्रत को गुद्गुदा रहे थे. मैं आगरे की तंग गलियों को पार कर जसुना के किनारे किनारे जाड़ और सुनसान सड़क से चक्कर काटता हुआ, भलसाया सा एक इक्के पर बैठा हुआ। जा रहा था. द्वापर

وشومبهر ثاته پائدے

میں نے اکثر جاپائیوں کو یہ کہتے سنا ہے کہ اگر تم نے نکو کے مندر نہیں دیکھے تو تم نے کچے بھی نہیں دیکھا، اِتفاق سے میں نے نکو کے مندر دیکھے ھیں اور میں یہ مانتا ھوں که وے بہدد شاندار اور عالیشان ھیں' مگر یہ کہنا کہ وے دئیا کی تعمیری کا میں اثاثی ھیں' اُس سے جاپائیوں کو بے شک تسلی عوسکٹی ہے مگر کا کے پریموں کو نہیں ،

میں اِس کا دعوی نہیں کرتا کہ میں نے کلا کے لحاظ سے
دنیا کی سبھی شاندار عمارتوں کو دیکھا ہے ۔ البتہ یورپ ایشیا
اور آنریقع کی اُپنی سوروں میں میں نے کئی پے حد سندر
عمارتیں دیکھی ھیں ، مصر کے پریمت ابال کے سات ستوں ا
یونان کی رنگ شالائیں ' روم کے تھئیٹر ' ایران میں بےھستوں
کے شلالیکھ ' چین کی برتی دیوار ' جاوا کا بورو بدر کا مندر '
رنگوں کا چکودا اور اجنتا اور ایلورہ کی گیھائیں سب آ ہے بھی
میری کلیناؤں میں میں سمائی ھوئی ھیں ، بربس میوا ماتھا اُن
میری کلیناؤں میں چھائی ھوئی ھیں ، بربس میوا ماتھا اُن
جالے اور انتجانے کالونتوں اور شلییوں کے قدموں پر جھکا ہے
جالے اور انتجانے کالونتوں اور شلییوں کے قدموں پر جھکا ہے
جانے اور انتجانے کالونتوں اور شلییوں کے قدموں پر جھکا ہے
جانے اور انتجانے کالونتوں اور شلییوں کے قدموں پر جھکا ہے
جند روزۃ ھوسکتی ہے سکی دیتے رہتے ھیں کہ اِنسان کی زندگی
خید روزۃ ھوسکتی ہے سکر کلا امر ہے اور اس کی چھاپ ھیشتہ
ھینٹ کے لئے دنیا پر رھتی ہے .

میں نہ شلبی ہوں اور نہ کلاکارا اور نہ مجھے کا کی نکتہ چینی کرنے کا ہی ادھیکار حاصل ہے ۔ لیکن ایک معمولی سیلانی کی حیثیت سے یہ کہ سکتا ہوں کہ آگرے کے تاج کو دیکھکر مجھ پر جر اثر پڑا آسے بیان کرسکنا میرے اِمکان سے باہر ہے ۔ کلاکار، کی کلینا اور شلپیوں کی چترائی کی اِتنی مکمل تصویر میری نظروں سے آج تک نہیں گذری ۔

اِس بات کو جانے کتنے برس بیت چکے، الائچی' دال چینی اور صندل کے پیروں کو تبیال دیتی ہوئی چیتی ہوا کے بھینے اور صندل کے پیروں کو تبیال دکھنے دکھنی جھکورے قدرت کو گدگدا رہے تیے ، میں آگرے کی تنگ کلیوں کو پارکر جملا کے کفارے کلارے اُنجاز اور سنسان سرک سے چکر کاتنا ہوا' افسایا سا ایک یکھ پر بیتھا ہوا جا رہا تھا ، دواپر چکر کاتنا ہوا' افسایا سا ایک یکھ پر بیتھا ہوا جا رہا تھا ، دواپر

不是我们的是那么

हुन में बहु न के जिस रम को हुचा भगवान ने सारधी बनकर हाँका था, रिस्ते में यह इक्का उसका पड़पोता लगता है. अब न इस पर राजा बैठते हैं न अमले, न नेता बैठते हैं और न एम. एल. ए. न इसमें रेशमी मालरें हैं और म सुनहरे गांव तकिये. अब यह सौ फीसदी रारीबों की सवारी है.

इनके का मरियल सा घोड़ा एक मटके के साथ वका. मैंने ज्ञानक देशा कि मैं एक आलीशान लाल फाटक के सामने सदा हुआ हूँ. अचानक मेरी निगाह फाटक के भीतर गई और सुने ऐसा लगा कि एक शानदार लाल मेहराब के फ्रेम में जड़ी हुई खुबसूरती की एक सफ़ेद चमचमाती हुई तस्त्रीर मेरी आँखों के सामने है. चमकते हुए सूरज की किरने संगमपर के सौन्वर्य भवन के साथ अठखेलियाँ कर रही थीं और चसकी ऊँची मीनारें मेघदीन नीले आसमान के दिल में मानो खुम जाना चाहती थीं.

वाज—महलों का मुक्ट —काटक से बहुत दूर एक भीमकाय कुर्सी पर लामोश खड़ा हुआ है. सामने खुशनुमा बात धा जहाँ विल्लीरी कुन्बारे निर्मल जल की घराएँ फेंक रहे थे धीर जहाँ हरी हरी मल्मली दूब का कालीन विछा हुआ धा. ताज के दोनों चोर दो पहरेदारों की तरह खड़े हुए थे बाल महत चौर लाल महिजद, मुमताज के कदमों को चूरी हुई जमुना मानो उलहना देती हुई कह रही थी— "राषा की जुदाई को भूत कर बिन्दाबन से मैं यहाँ आई बी मुमताज ! तुम्हें इसका भी छ्याल न रहा !"

दितहास के पन्ने मेरे दिल की तारीकी को चीर चीर कर करना की सतह पर आ रहे थे और मैं अपने आप में भूता हुआ बदलते हुए युगों के मूले में पेंगें भर रहा था कि अचानक ताज के गाइड की बात मेरे कानों में पड़ी— "हुजूर, इस इमारत के बनाने में सत्रह बरस लगे, क़रीब वीस हजार मजदूरों ने काम किया और शाहजहाँ के ख़जाने से है करोड़ 80 लाख हपया खुर्च हुआ."

दिसाबी आंकड़ों में यह था प्रेम का तख़मीना! गाइड की बात सुनकर तबियत में मतली सी होने लगी, मगर गाइड का भी क्या कुसूर १ बजट के दो तटों के बीच से जिनका जीवन-इरिया बहता है ऐसे योरप और अमरीका के सहब गाइड से बहता सवाल यही करते हैं.

संगमस्मर की बादर ताने हुए शाहजहाँ अपनी महबूबा सल्का के दिग, जमाने की सरहदों को तोड़कर, मानो खुद मैंब की साकार मुरत बन गया था.

श्रेक की साकार मूरत बन गया था. ताज की पूरी इमारत इतनी लासानी है, उसके मुख़-तिकिफ़ हिस्सों का संजोग इतना सुन्दर और लाजवाब है और सब मिला कर पूरा असर इतना दिलकश है कि जब तक आप सुर ताज के चनुतरे पर जाकर न खड़े हो जाएँ, आप इस सार का क्रयास तक नहीं कर सकते कि ताज की इमारत कितनी अधीन कररान है. कितना चनु कलाकार रहा होगा वह یک میں ارجن کے جس رنو کو گرشن بھگوان نے سارتی بلکر ھائکا تھا' رشتے میں یہ یکھ اُس کا پربوتا لکتا ہے۔ اب نے اِس پر راجا بیٹھتے ھیں نے عملے' نہ نیٹا بیٹھتے ھیں اور نہ ایم ایم اس ویصی جھالریں ھیں اور نہ سنہرے گاؤ تکئے ، اب یہ سو نیصدی غریبوں کی سواری ہے ۔ یہ سنہرے کا مریل سا گھوڑا ایک جھٹکے کے ساتھ رکا، میں نے اچائک دیکھا کہ میں ایک عالیشان قل پھاٹک کے سلینے کھڑا ھوا ھوں ایک عالیشان قل پھاٹک کے بھیٹر گئی اور مجھے ایسا لگا کہ ایک شاندار قل محدواب کے نویم میں جڑی ھوئی خوبصورتی ایک شاندار قل محدواب کے نویم میں جڑی ھوئی خوبصورتی کی ایک سلید چمچساتی ھوئی تصویر میری آنکھوں کے سامنے نے ، چمکتے ھوئے سورج کی کرنیں سنگ مرمر کے سوندریا بھوں کے ساتھ انکھلیاں کو رھی تھیں اور اُس کی اُرنچی میناریں میکھ ھیں نہلے آسمان کے دل میں مائو چبھ جانا میناریں میکھ ھیں نہلے آسمان کے دل میں مائو چبھ جانا

تاج --سحاس کا مخت-بهالک سے بہت دور أیک بهتم كاله كرسى يو خاموه كهوا هوا هـ ، سامنه خوشنما باغ تها جہاں بلوری نوارے نومل جل کی دھارائیں پھینک رھے تھے اور جہاں شری هری مضلی دوب کا قالین بیچا هوا تھا . تاج کے دونس اور دو پهره داروں کی طرح کهرے هوئے تھے قال محل اور ال مسجد ، مناز کے قدموں کو چھوتی ہوئی جمنا مالو آلهنا دیتی هوئی کو رهی تھی۔۔۔ ورادها کی جدائی کو بھولکر بندراہی سے میں یہاں آئی تھی مستار ا تمہیں آس کا بھی خیال نُدُ رہا !'' اِتہاس کے پنے میرے دل کی تاریکی کو چیر چیر کر کلھنا كى سطح ور أره ته اور مين اين آپ ميں بهولا هوا بدلته شرائے یکن کے جھولے میں پینکیں بھر رہا تھا کہ اچانک تاج کے گاند کی بات میرے کانوں میں پڑی ۔"حضور' اس عمارت کے بنانے میں سترہ برس ایے وریب بیس هزار مزدوروں نے کام کیا ارر شادجهال کے خزانے سے 3 کروز 80 لاکھ روپید خرچ هوا و" حسابی آنکورں میں به تها پریم کا تخمینه ا کانڈ کی بات سنكر طبيعت ميں متلى سى نفولے لكى مكر كانت كا يھى كيا تصرر لا بجث کے دو تقوں کے بیچ سے جن کا جیوں دریا بہتا ہے ایسے یورپ اور امریکه کے صاحب کانٹ سے پہلا سوال یہی کرتے

ھیں . سنگ مرمر کی چادر تائے ھوٹے شاھجہاں اپنی محبوبه ملک کے تھگ، زمانے کی سرحدوں کو ترز کر مانو خود پریم کی ساکار مررت بی گیا تھا ۔

تاج کی پوری عمارت اِتنی الثانی هے' اُس کے مختلف عصوں کا سنجوک اِتنا سلام اور لا جواب هے اور سب ملاکو پورا اُر اِتنا دائمی هے که جب تک آپ خود تاج کے چبرترے پر جاکو نم کورت موجائیں' آپ اس بات کا قیاس تک نہیں کرسکتے که تاج کی عمارت کتنی عظیم الشان هے کتنا بڑا کا کار رہا ہوگا وہ

A CONTRACTOR OF THE CONTRACTOR

لطس که جس نے تاج کی کلینا کی لیں ۔ آس کے بازوں میں کتلی ایکٹا اور کتلی مومکتا ہے ۔ یے زبان سنگ مومود ایسا محسوس مونے لکتا ہے که هزار هزار زبانوں سے پریم کی الت راگنی کی تان جیونا جامتا ہے ۔

جس فریم میں پریم اور سندرنا کا یہ اثاثی نکیلہ جرّا ہوا ہے اس تاج کا سارا اردگرد کتنا مہروں اور کتنی ایکوستا پیدا کیتے والا ہے۔ جتنی سندر تصویر ہے آتنا هی شاندار فریم هے .
ایسا لکتا ہے مائو ہشت کے چتیروں نے کلینا کے کینواس پر دیوی سندرتا کی ایک دانمی تصویر کیلینے دی ہے . درشک انہرج سے بہرا ہوا ایک تک دیکھتا رهتا ہے اور حسن کے اِس نیادت خوالے کو دیکھ سکنے کے لئے آپنے کو تستور سنجہتا ہے اور اپنے می میں تاج کے اُس نظارے کی امت جھانکی لیکر وہ وہاں سے رخصت ہوتا ہے .

روضے کے بلند محراب پر سنگ موسی کے نکوں سے عربی الفاظ السطوح جورے ہوئے ہیں مالو روضہ کالے سپاریجات پہولوں کا گجرا پہنے کہوا ہے۔ سنگ موسی گورائی پر یہ کالی رنگ کا گجرا پہنے کہوا ہے۔ سنگ موسر کی جافریوں سے سورے کی رو پہلی کرٹیں چھن چھن کو دھوپ چھاں کیلتی ہیں ۔ ہلکے ہلکے پرکاش کی پہنکی روشنی سدن کے بہتری حصہ کو آلوکت گوتی رهتی ہے ۔ سدن کے بہتے میں سنگ موسر کی جالیدار گفتی رہتی ہے ، سدن کے بہتے میں سنگ موسر کی جالیدار پودسے میں سنگار کو رهی ہیں : سنگ موسر کی آس جانری میں السول نکیلے جورے ہوئے ہیں ۔ سنگ موسر کی آس جانری طابق سورے کے پہولوں اور بھل بولوں کی شکل میں ، اس جانری طابع کے بہتر شاہدہیاں اور ممتاز کبھی نے توثنے والی نید میں صدے بھوٹے ہوئے ہیں ، اس جانری صدے بھوٹر شاہدہیاں اور ممتاز کبھی نے توثنے والی نید میں صدے بھوٹر شاہدہیاں اور ممتاز کبھی نے توثنے والی نید میں ۔

پوٹم کا چائد جب اپنے سفر کی آدھی ماؤل طے کرکے ذرا آرام کرنے کے لئے ٹھپر گیا تھا گییک ایسے رقت میں پھر دوبارہ تاج معل پہونچا ۔ چائدئی نے قدرت کے آنچل کو جوھی اور چمیلی کے پھولوں سے بھر دیا تھا۔ دکھنی ھوا تاج معل کے آوپر چنور ملا رھی تھی ، آم کی ذالی پر بیٹھی ھوئی کویل اسراج کے تار سنبھال رھی تھی ، تاج معل کی داھنی طرف اس بال معل کے آنگن میں کھڑا ھوکر میں ایک تک تاج کی شوبھا دیکھ رھا تھا ، باغ کے پیر آپنی شاکھائیں پھیلائے ھوئے اُس معل سے خاموشی کے سروں میں اپنے سکھ دکھ کی کھائی کہا میں مصرف تھے ، زمائے بیت گیا اُن گیٹناؤں کو دیکھے ھوئے میں میں وہے کٹنی صفائی سے آن کے دارس میں جڑی ھوئی میں ، برگ کا رہ درخت تب کٹنا ننھا سا تھا ، شہزادی تھیں ، برگ کا رہ درخت تب کٹنا ننھا سا تھا ، شہزادی زیبالنسا نے لات میں جب اُس کی کوئیلیں توزی تھیں تو میں درخت تب کٹنا ننھا سا تھا ، شہزادی میں درخت تب کٹنا ننھا سا تھا ، شہزادی

शस्त्र कि जिसमें वाज की करपना की थी. उसके वाजुओं में कितनी पक्या और कितनी मोहकता है. वेजवान संगमरमर, ऐसा महसूस होने लगता है कि, हजार हजार जवानों से प्रेम की वेजन्त रागिनी की तान छेड़ना चाहता है.

जिस फ्रेंस में प्रेम और सुन्दरता का यह लासानी जाना जड़ा हुआ है, ताज का सारा इदि गिर्द कितना मौजूँ और कितनी एक-रसता पैदा करने वाला है. जितनी सुन्दर तस्वीर है, उत्ता ही शानदार फ्रेम है. ऐसा लगता है मानो बहिश्त के जितेरों ने कल्पना के कैनवास पर देवी सुन्दरता की एक दिलकश तस्वीर सींच दी है. दर्शक अचरज से भरा हुआ एक टक देखता रहता है और हुस्न के इस बेअन्त खजाने को देख सकने के लिये अपने को किस्मतवर सममता है और अपने मन में ताज के उस नज्जारे की अमिट माँकी लेकर वह वहाँ से इखसत होता है.

रीजे के बुलन्द मेहराब पर संगमूसा के नगों से अबीं अस्ताज इस तरह जड़े हुए हैं मानो रीजा काले पारिजात क्ष फूलों कागजरा पहने खड़ा है. संगमरमरी गाराई पर यह काले रंग का गजरा बेहद सुन्दर लगता है. संगमरमर को जाकरियों से सूरज की रूपहली किरने छन छनकर धूप छाँव खेलती हैं. हल्के हल्के प्रकाश की फीकी रोशनी सदन के भीतरी हिस्से को आलांकित करती रहती है. सदन के बीच में संगमरमर की जालीदार कनात खड़ी है, मानो किसी अनन्त सफर के पड़ाव पर मलका सुमताज परदे में सिंगार कर रही हैं. संगमरमर की उस जाकरी में अनमोल नगीने जड़े हुए हैं— लाजवर्द, संगसुलेमान, अक्षीक, सूर्यकान्त, नीलम, चन्द्रकान्त और पुण राग—तरह तरह के फूलों और बेल बूटों की शकल में. उस जाकरी के भीतर शाहजहाँ और मुमताज कमी न दूटने वाली नींद में सुध बुध खोये हुए एड़े हैं.

पूनम का चाँद जब अपने सकर की आधी मंजिल तथ करके जरा आराम करने के लिये ठहर गया था, टोक ऐसे वक्त में फिर दोबारा ताजमहल पहुँचा. चाँदनी ने कुदरत के आँचल को जूही और चमेली के फूलों से मर दिया था. दिक्तनी हवा ताजमहल के उत्तर चँवर हिला रही थी. आम की डाली पर बैठी हुई कोयल इसराज के तार सँभाल रही थी. ताजमहल की दाहिनी तरफ उस लाल महल के आँगन में खड़ा होकर में एक टक ताज की शोभा देख रहा था. बारा के पेड़ अपनी शाखाएँ फैलाए हुए उस महल से खामाशी के सुरों में अपनी सुख दुख की कहानी कहने में मसहक थे. जमाना बीत गया उन घटनाओं को देखे हुए मगर अब भी वे कितनी सफाई से इनके दिलों में जड़ी हुई हैं. बरगद का बह दरखत तब कितना नन्हा सा था. राहजादी जेबुनिसा ने लाड़ में उसकी कोंपलें तोड़ी थीं तो माबदीलत शाहजाहाँ ने शहजादी को डाँटकर इसरत मरी

^{*} एक फ़िस्म का बेहिश्ती फूल ایک قسم کا بہشتی پھرل.

नगा हिन्द

नियाहों से इस हरगढ़ के पीधे के नन्हे से बदन पर अपने शाही हाथ फेरे थे. महज उसी एक बाद को ताजा किये हुए वह आज चार सदियों से अपने मालिक की क्रजगाह को निहारता रहता है. बदन उसका खोखला हो गया है तो क्या हुआ वह अपने लड़खड़ाते पैरों पर खड़ा है, मानो क्रयामत के दिन अंगड़ाई लेकर उठते हुए शहन्शाह से कहेगा- "जहाँ पनाह ! में तुम्हारा हक़ीर खादिम हूँ." कुछ दरस्त अपनी अलसाई शाखें जमुना की आर बढ़ा कर मानों मिननतें कर रहे हैं- बहन, ठहरो ! तुम ता दिल्ली से आ रही हो. ब्रहादुरशाह के बाद तुमने दीवाने सास की कोई सवर नहीं बताई. क्यों ? क्या लाल किले की दीवारें दुम्हें देखकर अब अपना मुँह फेर लेती हैं ? बहन ! तारवर्की सी दोहरा दोहरा कर यह ऐलान कर रहे हैं कि फिरंगी अब लाल किले से रुखसत हो गये हैं और वहाँ मुल्की निशान फहरा रहा है." मगर जमुना के कानों में मानो कोई बात ही नहीं पड़ती और अनमनी हो कर आगे बढ़ जाती है, सिफ्रें कलकल, छपछप की आवाज कानों में पड़ती है, मानो जमुना की धाराएं उसके अनमनेपन पर कानाफुसी कर रही हों.

ताज के बाई तरफ लाल महिजद खड़ी हुई थी. रुपहले संगमरमर से टकराकर चाँदनी महिजद के गुलाबी बदन को सफेद ढाकाई मलमल की चादर से ढकने की बेकार कोशिश कर रही थी. ताज के पीछे से जमुना शहर की आर इस तरह बह रही थी मानो मुमताज के दामन का रुपहला गोटा सिलन तांड़कर बिखर गया हो. ताज से तीन मील दूर काले धव्वे की तरह किला और जहांगीरी महल खड़े हुए थे. किले के बाहर के लाल पत्थर की चहारदीबारी धुँधल्के में साफ नहीं दिखाई दे रही थी, लेकिन भीतर की संगमरमर की मोती महिजद रह रह कर चमक उठती थी.

\$48 \$48 \$48

रात की खामोशी में तवारीख की दूटी कड़ियों को सिलसिलेवार जोड़ने की कोशिश करते हुए कितनी रात बीत गई, इसका मुक्ते जरा भी अन्दाजा न था. चाँद की शीतल किरने', मन्द मन्द हवा के मकारे, रुपहला और चमकता हुआ ताजमहल—सारा समाँ और नज्जारा इतना मन मोहने वाला था कि दिमाग्र एक जगह अटक कर रह गया. बहसा उस मुनसान महल का रस में नहलाती हुई इसराज की एक मधुर तान मेरे कानों में गूँज गई. मेरे अचरज का ठेकाना न रहा जब मैंने यह महसूस किया कि उसी पुनसान महल के भीतर से मधुर मधुर गीत की यह धुन उ रही थी, मेरे तन बदन में कंपकपी सी दौड़ गई.

यकायक बाजे की गत के साथ मुक्ते एक ईरानी नाच है पहचाप सुनाई दिये. इसराज के तार हवा को मथकर نهاموں سے اُس برگدیے بودھ کے نامے سے بدن پر اپنے شاھی ماتھ بهدرے تھے۔ معدض أسى ايك ياد كو تازة كلم هواء وہ آب چار مدير سے أينے مالک كى قبرگاہ كو نہارتا رهتا هے . بدن أس كا نه كالمعوليا ها تو كيا هوا ولا أينا لركه والتي يفرون ير كهرا ها مان قياءتُ كي دس انتزائي لينر أُنهت هوئ شهنشاه سے كهيكا-الجهال بناه 1 ميل تمهارا حقير خادم هول ." كيه درخت اپنی السائی شاخیں جمنا کی اور بڑھا کر مانو منتیں کو رہے هيں۔ "بہن الهبرو! تم تو دلی سے آ رهی هو . بهادرشاہ کے بعد تم لے دیوان خاص کی کوئی خبر نہیں بتائی ۔ کیس 🗣 کیا ول قلعے کی دیواریں تمهیں دیکھکر آب اپنا منھ پھیر لیتی ھیں ؟ بہن الرورقى او دھرا دھرا كر يه اعلان كر رهے هيں كه نرنكى اب الل تلعه سے رخصت هوگئے عوں اور وهاں ملکی نشان پهبرا رہا ہے ، " مگر جمنا کے کانوں میں کوئی بات ھی نہیں پرتی اور وہ ان منی هوکر آگے ہوء جاتی هے ، صرف کل کل چہپ چہپ کی آواز کانوں میں پڑتی کے مانو جمنا کی دھارائیں اس کے انہنے بن پر کانا پھرسی کر رھی ھرس .

「東」なる日本の日本の日本の

ناج کے ہائیں طرف لال مسجد کھڑی ھوئی تھی۔ روپہلے سنگ مرمو سے تعوا کو چاندنی مسجد کے گلبی بدن کو سفید تساکائی ململ کی چادر سے تھکنے کی بیکار کوشش کو رھی تھی، تاج کے پیچھے سے جمغا شہر کی اور اس طرح بھ رھی تھی مانو ممتاز کے دامین کا روپہلا گوتا سیلن توزکر بکھر گیا ھو ۔ تاج سے نین میل دور کالے دھبے کی طرح دلعہ اور جہانگیری منحل کھڑے ھوئے تھے ۔ فلعہ کے بلفر کے لائل چھر نی چہاردیواری دفندھلکے میں صاف نہیں داھائی دے رھی تھی لیکن بھیتر کی سنگ مرمو کی موتی مسجد رہ رہ کو چمک آتھتی تھی۔

رات کی خاموشی میں تواریخ کی آوئی کڑیوں کو سلسلہ وار جوزنے کی کوشش کرتے ہوئے کتنی رات بیت گئی اِس کا مجھے ذرا بھی اندازہ ٹے تھا ، چاند کی شیتل کرنیں' مند مند ہوا کے جھکورے' روپہلا اور چمکتا ہوا تاج محل—سارا سمال اور نظارہ اِتنا می موھنے والا تھا کہ دماغ ایک جکہ اقک کر رہ گیا۔ سپسا اُس سنسان محل کو رس میں نہلاتی ہوئی اسراج کی ایک مدھرتان میرے کانوں میں گونج گئی ۔ میرے اچرج کا تھانہ نہ رھا ۔ جب میں نے یہ محسوس کیا کہ اُس سنسان محل کے بھیتر سے مدھر مدھر گیت کی یہ دھی آبھ رھی تھی محل کے بھیتر سے مدھر مدھر گیت کی یہ دھی آبھ رھی تھی

یکایک ہاچے کی گت کے ساتھ مجھے ایک ایرانی ناج کے پدچاپ سنائی دیئے۔ اسراج کے تار ہوا کو متھ کر

मदहोरा बना रहे थे. पुंचवजों की मंकार भी तेजी पकद रही भी में भी सर ताल में थपकी भर कर कुमने लगा. गेरे पैर बाबस नाच का ताल और सर भरने लगे. मैं हैरान होकर मोचने लगा कि इसराज के तारों पर इतना मदमस्त कम्पन ब्राखिर किन अंगलियों ने पैदा किया ? यह नाच और गान ब्रासिर हो कहाँ रहा है ? मैं यह सोच ही रहा था कि मेरे कातों में दिमरक के एक बरबी प्रेम-गीत के सर पड़े. क्या अपने पिछले सफर में मैंने यही प्रेम-गीत नहीं सना था ? मगर यहाँ उस गीत पर कलाकार के कोमल सरों ने मिठास का मुलम्मा फेर दिया था. सा...र...ग...म के मध्र सर पर अलाप दौद रहा था. इसराज के सिर्फ तीन वारों पर जंगलियाँ फिर रही थीं, मगर मेरा दिल इसराज की कम्पन के साथ तद्वपता और चीत्कार करता. रात की बामोशी को चीरता, चाँदनी और अँधेरे में मँडराता. पेड़ों की शाखों पर नाचता, जमुना की तरंगों पर मूमता, सारे समाँ को कम्पित करता अनन्त में 'समा जाना चाहता था. ऐसा लगता था कि मानो किसी बसन्त के सुवेरे सारी दुनिया की इसरत बटोर कर पपीहा अपने पी के साथ एक हो जाना चाहता था. गायक के सुरों में इतना जाद् था कि मैं अपनी सुध बुध खो बैठा. नीले आसमान में वमवमाता हुआ पूनम का चाँद दोनों हाथों से अपनी चाँदनी बसेर रहा था. गीत की तान के साथ संसार का सारा रस मानो एक जगह इकट्ठा हो रहा था. जो कुछ मैंने देखा और सना उसकी सही सही तसवीर लक्ष्मों में उतार सकना मेरे लिये कतई नामुमकिन है.

जब तक वे काँपते हुए और बिलखते हुए संगीत के स्वर चाँद्नी पर रीमे हुए चारों दिशाओं में भटकते रहे तब तक मैं सुध-बुध बिसार कर छसे सुनता रहा. थोड़ी देर के लिए गीत यकायक थम गया. जब मेरे होश हवास लौटे तब मुमे अहसास हुआ कि गीत की धुन तो उसी महल के ऊपर की मंजिल से आ रही थी. यकायक मन में भावना उठी कि क्यों न ऊपर चल कर देखा जाय. कई चक्करदार सीढ़ियों पर चढ़ता हुआ, रोशनी और अधेरे से गुजरता, मैं रास्ता खोजता हुआ ऊपर बढ़ा. इसाज के तार फिर यकायक मनमना उठे और उसकी आवाज के सहारे ही मैं ऊपर का रास्ता पाने लगा. गोल चक्कर काटती हुई सीढ़ियाँ छत पर एक छोटे से बराम्दे में खत्म होती थीं. बराम्दा कटी हुई जाफरी से बन्द था. बराम्दे के बाद ही एक बड़ी सी छत थी.

चाँदनी की मासूम किरनें उपहली पोशाक पहने हुए इत पर रह रह कर गुलाबजल क्षिड़क रही थीं. चालीस कुट लम्बे चौड़े संगमरमर के कर्रा पर क़रीब चार इन्च माटा दमिरक्री क़ालीन बिछा हुआ था. पूरब की जानिब एक चाँदी का तस्त पड़ा हुआ था जिसपर बेशक्रीमत

مدهوش بنا رہ تھے گنہاروں کی جہلکار بھی تیزی پاو رهی تھی۔ مهریهی سرنال میں تھکی بهرکر جهرمنہ لگا ، میرے پهر بربس ناہے کا تال اور سر بھرانے لگے ، میں حیران هو کر سوچلے لگا کہ اسراج کے تاروں پراتنا مدمست کمین آخر کن اُنکلیوں نے پعدا کیا 🕈 یہ ٹاچ اور کلی آخر ہو کہاں رہا 🕾 🖁 میں یہ سوچ ہی رھا تھا که میرے کاتوں میں دمشق کے ایک عربی پریم گھت کے سر پڑے . کیا اُپنے پہچلے سفر میں مینے یہی پریم گیت لمهن سنا تھا ؟ مكر يہاں أس كيت ير كاكار كے كومل سووں نے مقياس کا ملمع بھیر دیا تھا۔ سا۔۔۔رے۔۔۔کا۔۔ما کے مدھر سر برالاپ دور رہا تھا ۔ اسرائے کے صرف تین تاروں پر اُنکلیاں پھر رھی تھیں مگر میرا دال آسراج کی کمین کے ساتھ ترینا اور چینکار کرنا وات کی خاموشی کر چ ۱۰ چاندنی اور اندهیرے میں ملتراتا، هدوں کی شاخوں پر چاا جملا کی ترتکوں پر جھومتا سارے سمال كر كمهت كرنا انت ميل سما جا نا چاهكا نها . أيسا (کا نہا مانو کسی بسات کے سویرے ساری دنیا کی حسرت بالور. کر پههها لینے بی کے ساتھ أیک هو جا نا چاهانا تھا ۔ کا یک کے سروں میں اتنا جادو تھا که میں اپنی سدھ بدھ كه بيتها . ديل آسمان مين جمجماتا هوأ يونم كا چاند دونون ھاتھوں سے اپنی چاندنی بکھیر رہا تھا ۔ گیت کی تان کے ساتھ سلسار کا سارا رس مانو ایک جگهه اکتبا هو رها تها . جو کچه مینے دیکھا اور سنا اُس کی صحیح ضحیح تصویر لخطوں میں أنار سكنا مهرے لئے قطعی ناممكن في .

جب تک و ے کا نہتے ہوئے اور بلکھتے ہوئے سنگیت کے سور چائدئی پر ربجعے ہوئے چاروں دشاؤں میں بھٹکتے رقے تب تک میں سدھ بدھ بسار کر آسے سنٹا رہا ۔ تھوڑی دایر کے لئے گیت یکا یک تیم گیا ، تھوڑی دایر میں میرے ہوش حواس لوئے ، تب محجے احساس ہوا کے گیت کی دھن تو اُسی محل کے اُرپر کی منزل سے آرھی تھی ۔ یکا یک می میں بھاؤنا اُٹھی که کھوں نے اُرپر چل کر دیکھا جائے ، کئی چکر دار سیڑھیوں پر چڑھتا کہ اُرپر چل کر دیکھا جائے ، کئی چکر دار سیڑھیوں پر چڑھتا کا راستہ پانے لگا ، گول چکر کاتتی ہوئی سیٹرھیاں چھت پر ایک چھوٹے سے برآمدہ میں ختم ہوتی تھیں ، برآمدہ کئی ہوئی سیٹرھیاں جھت پر ہوئی جانری سے بند تھا ، برآمدہ کے بعد ھی ایک بڑی سی

چاندنی کی معصوم کرنیں ررپہلی پرشاک پہنے ھرئے چہت پر رہ رہ کر گلاب جل چہڑک رھی تھیں ۔ چالیس نب لمبنے ہرتے سنگ مر مر کے فرش پر قریب چار انبے موٹا دمشقی تالین بچھا ھوا تھا ۔ پررب کے جالب ایک چاندی کا تخت پڑا ھوا تھا جس پر بیش قیمیت

कुलारा किमक्याम बिछा था. कामदार गाय विकेथे लगे हुए के वचन पर पक पूढ़ा सा आदमी गाव तकिये के सहारे बैठा हुचा था-चौड़ी छाती, वठी हुई पेशानी, लम्बी मुकी , हुई माक, उभरी हुई गाल की हड़ियाँ, दाढ़ी खौर भवें दोनों सकेद. बूदे के सामने एक जर्द मसनद के सहारे एक नीजवान सुन्दरी बैठी हुई थी जिसकी उम्र का तलमीना 25 और 80 बरस के बीच किया जा सकता है. उसके चेहरे पर हुस्न बरस रहा था. रंग उसका दमकते हुए सोने का सा था. उसके सर के बाल चार लटों में पिरोये हुए थे जो काली नागिनों की तरह कमर तक लटक रहे थे, आँखें उसकी गोल बादाम जैसी, पेशानी पर कुछ घुँघराली लटें डर रही भी, नाक पतली लेकिन सीधी, धनुष जैसे गुलाबी होंद, मोतियों के से वाँत, गोल दुरी और लम्बा चेहरा, इाथ, पैर और कान छोटे लेकिन बेहद सुडील और भरे हुए. बह गहरे लाल रेशम की कुर्ती, सुनहले साटन की जैकेट पहने हुए थी और उस पर हल्के गुलाबी रंग का सनहता गोटा टॅका था: रतन जटित सल्मा सितारों से भरा और चुन्नट किया हुआ डुपट्टा ओढ़े हुए थी. उसके दाहिने हाथ में नरगिस के फूलों का गुच्छा था. ऐसा मालूम होता था कि वह संगीत में डूबी हुई थी. उन दोनों के अलावा दो खुबसूरत नीजवान नर्तकी और एक अधेड़ शख्स और था जो इबा इका इसराज के तारों पर अपनी उंगलियाँ फेर रहा था, दोनों नर्तकी भी जरी और रेशमी कपड़े पहने हए थीं. मैं तह भीव और शायस्तगी भूलकर चाँद की किरनों से पुले हुए सुन्द्री के चेहरे को एक टक देख रहा था. पाँचों में से किसी को मेरी मौजूदगी का अहसाख न हो पाया.

9k 9k 9k

मैं वहाँ चुपचाप खड़ा था, मानो किसी मंत्र से बँघा हुआ . उस्ताद की उँगलियों के हिते ही इस्तराज पागल हो उठता था. मद भरा मेम गीत, मनमोहक माच चौर इसराज की तरंगें जादू का सा समा बाँघ रही थी.

यकायक मजलिस रकी और सब के सब मुँडेर के पास आकर, नीचे बहती हुई अमुना के उस पार काहरे का डुपट्टा जोदे जागरे की सोई हुई नगरी की ओर ध्यान से देखने लगे, मैं भी कीत्हल से भरा हुआ दीवार के पास पहुंचा. जो डुआ देखा, मेरे अचरज का ठिकाना न रहा. फटते हुए कोहरे की चादर से साफ होता हुआ संगमरमर का एक पुल दिखाई दिया जिसकी एक मेहराब ताज के इस किनारे पर भी तो दूसरी मेहराब जमुना के उस किनारे पर. सिर्फ एक नेहराब बाला उपहले संगमरमर का बुर्जदार खूबसूरत पुल देखकर मेरी हैरत का ठिकाना न रहा. कोहरा जरा और धान हुआ और तक मैंने देखा कि ठीक जमुना के उस

سدرا كمطواب بعجها تها. كا مدار كاو تكلي لكي هوال الله تعليب ر ایک بروها سا آدمی کاو تکتّے کے سہارے بیٹھا هوا تھا۔سچوری پر چهاتی؛ آلهی هوئی پیشانی؛ لىبی جهکی هوئی ناک، أيوري هوئی و حديان دارهي اور بهوئيس دونون سفيد بوره كساته ايك زرد مسند کے سیارے ایک نوجوان سندری بیٹھی ہوئی تھی جس _{كى عمر} كا تخميلته 25 أور 30 برس كے بيپے كيا جا سكتا هے . أس کے چہرے پر حسن ہرس رہا تھا ۔ رنگ اُس کا دمکتے بیائے سونے کا سا تھا ۔ اُس کے سر کے بال چار لٹیں میں پررٹے ھوئے تھے جو کالی ٹاگلوں کی طرح کمر تک لٹک رھے تھے' آنهیں اُس گول بادام جیسی' پیشانی پر کچھ گھنکھرالی لتیں أرْ رهى تهى' ناك يتلى ليكن سيدهى' دهنش جيسے گلبي ھانٹ موتھوں کے سے دانت، گول تھوری اور لمبا چہرہ ھاتھ يير اور کان چهوٿے ليکن يے حد ستبول اور بھرے هوئے ، وہ گهرے ول ریشم کی کرتی سنہلے ساتی کی جیکٹ پہنے ہوئے تھی اُور أس پر هلك كلابي رنگ كا سلها كوئا تنكا تها؛ رتن جنّت سلمة ستاروں سے بھوا اور چنت کیا ہوا توبته اورهے ہوئے تھی . اس کے داننے ہاتھ میں فرگس کے پوراوں کا گنچھا تھا ۔ ایسا معارم ہوتا تھا وہ سلکیت میں توہی ہوئی تھی ، أن دونوں كے عالوہ در مصورت توجوان نرتای تهین اور ایک ادهیو شعض اور تھا ۔ توبا ہوا اسراج کے تاروں پر اپنی اُنکلیاں پھیر رہا تھا ۔ درنوں نرتکی بھی زری اور ریشمی کھڑے پہلے ھوئے تھیں ، میں نہذیب اور شاہستگی بھول کر چاند کی کرٹوں سے دھلے ھولے سندری کے چہرے کو ایک تک دیکھ رہا تھا ۔ پائنچوں میں سے کسی کو میری موجودگی کا احساس نه هو پایا .

میں وہاں چپ چاپ کیڑا تیا مانو کسی منتر سے بندھا ہوا ۔ اُستان کی اُنگلیوں کے چھرتے ہی منتر سے بندھا ہوا ۔ اُستان کی اُنگلیوں کے چھرتے ہی اسراج پاگل ہو اٹیتا تھا ۔ مد بھرا پریم گیت' میں موہک ناچ یکا یک مجلس رکی اور سب کے سب منتیر کے پاس آکر' نیچے بہتی ہوئی جمنا کے اُس پار' کھرے کا دَریته اورہ اگرے کی سوئی نکری کی اور دھیاں سے دیکھنے لئے ۔ میں بھی کوتوطل سے بھرا ہوا دیوار کے پاس پھونچا' جو کچھ دیکھا' میرے آچرج کا تکاند نہ رہا بھتتے ہوئے کھرے کی چلار سے صاف ہوتا ہوا سنگ مرمز کا ایک پل دکھائی دیا جس کی ایک محراب تاج مرمز کا ایک محراب تاج کے اِس کنارے پر تھی تو دوسری محراب جمنا کے اُس کنارے پر میں دیکھ کر مہری حجرت کا ٹیکانا نہ رہا کے اُس کنارے پر مون ایک محراب والا روپہلے سنگ مرمز کا برج کیرے میرت کا ٹیکانا نہ رہا کے اُس کنارے پر میری حیرت کا ٹیکانا نہ رہا ۔ کہرا

ذرا اور ماف ہوآ اور تب میلے دیکھا که ٹھیک جمنا کے اُس

कितारे पर संगमरमर के पुल के उस पाप के पास ताजमहरू की हू बहू एक दूसरी इमारत खड़ी थी—उतनी ही साफ, उतनी ही सुन्दर, उतनी ही कला से भरी हुई, उतनी ही बिल्लीरी—दोनों में किसी किस्म का फर्क कर सकना मुश्किल था. पुल का रास्ता, जत, मेहराब, खिड़कियें सब सकेद चमकदार संगमरमर की बनी हुई थीं. मैं अचरज बीर हैरत में सरोपा द्व कर अपनी सब बुध को बैठा. पुल क्या था मानो संगमरमर का धनुष एक ताज को इसरे ताज से जोड़ रहा था.

में बेचैन होकर उस नज्जारे के पुट के पुट अपने दिल में भर रहा था कि अचानक जमुना के जल से बना कोहरा उठकर आसमान में झाने लगा. आगरे का शहर, संगमरमर का पुल, उस पार का ताजमहल और नदी सब के सब धुँघत्के के पर्दे में छिप गये. मैंने आसमान की ओर नजर डाली तो देखा कि पूनम का चाँद उफक के होंटों का चुम्बन ले रहा था. चाँदनी नीली पढ़ रही थी और आने वाली जवाई के सदमे से सिमटती जा रही थी.

मैंने मुद्द कर मजलिस की तरफ नजर डाली मगर वहाँ पाँचों में से कोई भी नथा. बिना किसी आवाज के, लामोशी के साथ ने मानो सबके सब हवा में सायब हो गये. वह मोटा मजनली जालीन, जढ़ाऊ चाँदी का तस्त, रेशमी और किमस्वाव की चादरें, जरीं गाव तिकये और मसनदें, उस्ताद और इसराज, नर्तकियाँ और उनके घुँघरू, वह हुस्न की परी और वह इन्सानियत का देवता, सब के सब रहिस्य के पर्दे में समा गये. किसी चीज की वहाँ परछाई तक बाज़ी न रही. उस अजीबो रारीब मजलिस की यादगार को ताजा रखने वाला सिर्फ रह गया था सदाबहार नरिंगस के फूलों का वह गुच्छा! मैंने एक सर्द आह भर कर धीरे से उसे जाकर उठा लिया.

\$ **\$ \$**

एक ठंडी हवा के मोंके ने मेरी खोई हुई चेतना वापस ला दी. मैंने आगरे की तरफ नजर दौड़ाई. रेल के इंजनों और कारखानों की चिमनियों का धुँआ कुन्डली बनाता हुआ हवा के रख उत्तर दिशा में इकहा हो रहा था. दूर, बहुत दूर, पहाड़ियों की एक क़तार थकी माँदी पड़ी थी. मैं गुम सुम सोच रहा था कि वह संगमरकर का पुल और वह दूसरा ताज क्या महज मेरी कल्पना और घोका थे ? वह हस्त की परी और वह शायस्तगी का देवता, क्या वह दोनों भी घोका थे ? वह नौजवान नर्तिकयाँ मूम मूक कर नाचती हुई और कला का घनी वह उस्ताद, क्या वे तीनों भी सपना थे ? नहीं, यह क़र्तई नासुमिकन है. मैं उन सब के चेहरों की राई राई बनावट दोहरा सकता हूँ. कितना सुरीला गला था उस्ताद का, कितना स्वर और ताल से भरा हुआ ! क्या वह स्ताद का, कितना स्वर और ताल से भरा हुआ ! क्या वह

کال میں ساک مرمر کے پل آس پایت کے پاس تاہے منحل کی ھو بہو ایک دوسری عبارت کوری تھی۔ آتنی ھی سائد' آتنی ھی سائد' آتنی ھی سائد' آتنی ھی الاس بھری ھوئی آتنی ھی سائد نرق کر سائل مشال تھا، پل کا راستہ' چھٹ' محدراب' کھڑکیاں سب ساید چاکدار سلک مرمو کی بانی ھوئی تھیں، میں آچرج اور حمرت میں سرویا توب کر اپنی ساتھ بدھ کھو بھٹھا، پل کھا۔ تھا مالو سلک مرمو کا دھلش تاج کو دوسرے لیا سے چور رھا تھا۔

میں ہے چین ہو کر آس نظارے کے بت کے بت اپنے دل میں بھر رہا تھا که اچانک جمنا کے جل سے گھنا کہرا آٹھکر آسانی میں چھانے لگا ۔ آگرے کا شہر' سنگ مرمو کا پل' اُس پار کا تاج محل اور ندی سب کے سب دھندھاکے کے پردے میں چھپ گئے ۔ میں نے آسانی کی اور نظر قالی تو دیکھا که پونم کا چاند اُنی کے هونگھرں کا چمبن نے رہا تھا ۔ چاندنی نعلی پر رهی تھی اور آنے والی جدائی کے صدی سے سمانی جا

مینے موکر مجلس کی طرف نظر دالی مکر وهاں پانچوں میں سے کوئی بھی نہ تھا ۔ بنا کسی آواز کے' خاموشی کے ساتھ وے مائو سب کے سب ہوا میں غایب ہوگئے ۔ وہ موٹا مضلی تالین' جراؤ چاندی کا تخت' ریشی اور کمنخواب کی چادریں' زرین گاؤ تیکئے اور مسندیں' استاد اور اسراج' نرتکیاں اور ان کے گھرنگھرو' وہ حسن کی پری اور وہ انسانیت کا دیوتا' سب کے سب رہسیہ کے پردیے میں سا گئے ۔ کسی چیز کی وہاں پرچھائیں تک باتی نہ زھی ۔ اُس عجیب و غویب معجلس کی یادگار کو تازہ رکھنے والا صرف رہ گھا تھا سدا غویب قویب معجلس کے بھولوں کا وہ گھچھا ا مینے ایک سرد آہ بھر کو دھیں۔ سے آسے جاکر آٹھا لیا ۔

\$ \$ **\$**

ایک ٹھندی ہوا کے جہونکے نے میری کھوئی ہوئی چیتنا واپس لا دی ، مینے آگرے کی طرف نظر دورائی ، ریل کے انجنس اور کارخائوں کی چینییوں کا دھوآں کلڈلی بنا ھوا ہوا کے رہے آتر دشا میں انٹھا ھو رھا تھا ، دور' بہت دور' پہاڑیوں کی ایک قطار تھکی ماندی پڑی تھی ، میں گم سم سوچ رھا تھا کہ وہ سنگ مرمر کا پل اور وہ دوسرا تاج کیا محض میری کلینا اور دھوکا تھے لا وہ حسن کی پری اور وہ شایستگی کا دیوتا کیا وہ دوتوں بھی دھوگا تھا لا وہ نوجوان نوتکیاں جھوم جھوم کو ناچتی ھوئی اور کلا کا دھنی وہ استاد کیا وہ تیلوں بھی جھوم کے دیوتا سے آ نہیں یہ قطعی نامیکن ہے ، میں ان سب کے چھورں کی رائی رائی تیارت دھوا سینا ھوں ، کتنا سور اور قال سے بھوا ھوا اکیا وہ سیالاگا تھا استاد کا کننا سور اور قال سے بھوا ھوا اکیا وہ

محض مهرے دماغ کی أید تھی الکبھی فہدن ا کبھی قہدن ا اگر یہ سب سھا اور دھوکا تھا تو یہ نوگس کے بھول آ این کی سندھ ان کی بنائجویاں اور این کی مادکتا یہ سب کتنی جیتی جاگئے باتھی باتھی ھیں ا میں اِن کی خوشبو کو سوئٹ رھا ھوں اِن اِن کی خوشبو کو سوئٹ رھا ھوں ۔ اِنھیں ھاتھوں سے دیکھ رھا ھوں ۔ اگر یہ سینا اور دھوکا نہیں ھیں تو وہ حسن کی پری جس نے اِنھیں اینی کومل اُنگلھوں سے پہر رکیا تھا کیسے سینا اور دھوکا ھو سکتی ھے آ

\$\$ \$\$ \$\$

انق نے دھیرے سے سندور کا تھال بہیر دیا ۔ آسمان نے منس کر اس کی پیشائی کو چوم لیا ، سورج نے کنہیں سے اُن کی یہ پریم لیلا دیکھی ، مواسوی کے پیر پر بھتھا ہوا پھیہا اور اِکا دوکا سیلائی کی آمد رفت شروع ہو گئی ، میں تھکا ہوا بھاری پیروں سے سیرھیاں طے کرتا ہوا نیسچے آبا ، محل سے نکلتے ہی ایک بورھے خواستیر پر میری قظر پری ، مہنے پاس جا کر آبی سے رات کے گیت اور ناچ کی بات پوچھی ، لاپرواهی سے بررھے نے مجھے تال دیا ، پر جب مینے اُس حسن کی پری کی برتے نے مجھے تال دیا ، پر جب مینے اُس حسن کی پری کی برتے کی بات کہی تو اُس کے پیر لڑا کھڑا گئے ، اُس کے ہاتے سے لائھی جہوت کر گر پری ، وہ وہیں کلیجت تھام کر بیٹھ گیا ، جب جب جب مینے آبا دیا ، وہ ہوس کلیجت تھام کر بیٹھ گیا ، جب بنی اُس سے زیادہ کچھ نے کہتا ہوا ایک اُور چلا گیا ، میں اُس سے زیادہ کچھ نے پوچھ سکا ،

اُس پوتو کی رات کی بات میں کس سے پوچھوں آ لوگ مجھے اُس کی ذرا مجھے خابطی اور دیوانہ سمجھیںگے' حالانکہ مجھے اِس کی ذرا بھی پرراہ نہیں ، لیکن میں یہ نہیں چاھتا کہ کوئی ملکۂ جہاں ممتاز کا مذاق اُڑائے ،

وہ سدا سکلدھ دینے والے ترگس کے پھول آب بھی جتن کے ساتھ مدرے قرائنگ روم میں چائنا کے پھولدان میں مرکھے ھوئے ھیں ۔

सहाय मेरे दिमारा की खपज थी १ कमी नहीं ! कमी नहीं ! अगर यह सब सपना और धोका था तो यह नरिगस के कृत १ इनकी सुगन्ध, इनकी पंखिड़ियाँ और इनकी मादकता, यह सब कितनी जीती जागती बातें हैं ! मैं इनकी सुराबू को सूँच रहा हूँ, इन्हें हाथों से खूरहा हूँ और आँखों से देख रहा हूँ, अगर यह सपना और धोका नहीं हैं तो वह हुत्न की परी जिसने इन्हें अपनी कोमल उंगलियों से पकड़ रक्ता था कैसे सपना और धोका हो सकती है १

कफक ने धीरे से सिंदूर का थाल बिखेर दिया. जासमान ने हँसकर उसकी पेशानी को चूम लिया. सूरज ने
कनिख्यों से उनकी यह प्रेम लीला देखी. मौलिसरी के पेड़
पर बैठा हुआ पपीहा पी कहाँ! पी कहाँ! की टेर लगाने लगा.
नीचे बारा की सफाई और इक्का दुक्का सैलानी की आमद
समत हुक हो गयी. मैं थका हुआ भारी पैरों से सीदियाँ तय
करता हुआ नीचे आया. महल से निकलते ही एक बूदे
क्वास्तगीर पर मेरी नजर पड़ी. मैंने पास जाकर उससे रात
के गीत और नाच की बात पूछी. लापरवाही से बूदे ने मुफे
टाल दिया. पर जब मैंने उस हुस्न की परी की बात कही
तो उसके पैर लड़खड़ा गये. उसके हाथ से लाठी छूट कर
गिर पड़ी. वह वहीं कलेजा थाम कर बैठ गया. जब संभल
कर उठा तो अस्फुट आवाज में 'मल्कए जहान! मल्कए
जहान!' कहता हुआ एक ओर चला गया. मैं उससे ज्यादा

इस पूनों की रात की बात मैं किस से पूछ्रू ? लोग मुके बब्दी और दीवाना सममेंगे. हालाँकि मुके इसकी जरा भी परवाह नहीं. लेकिन मैं यह नहीं चाहता कि कोई मस्क्रप जहान मुमसाज का मजाक उड़ाए.

बह सदा सुगंध देने वाले नरिगस के फूल श्रव भी जस के साथ मेरे डाईग रूम में चाइना के फूलदान में रक हुए हैं.

ESTE CONTROL C

श्रीमती प्रभा एम. ए. हिन्दी अध्यापिका पीकिंग यूनिवर्सिटी पीकिंग, चीन

(1)

हो चेन शु को मैं पहले नहीं जानती थी पर नाम बहुत उना था. चीन में जहां कहीं भी हम कपड़े की मिल देखने ए मालूम हुआ कि वहां के कारखाने वाले हो चेन शु का तिका काम में ला रहे हैं. एक दिन मेरे एक विद्यार्थी स्थाओं शि युई ने मुक्त से पूछा—"आप हो चेन शु को जानती हैं ?" नि कहा—"पत्रिकाओं में कुछ उनके बारे में पढ़ा है." सने कहा—"आप उनसे मिलिये, पीकिंग ही में तो हैं और अरे देश में मशहूर हैं." उसी दिन से मुक्ते इच्छा छुई कि मैं हो चेन शु से मुलाकात करुं. मैंने अपनी इच्छा अपने चीनी प्रध्यापक साथी श्री यिन हुंग युयेन के सामने रक्खी. उन्होंने इड़ी दिलचस्पी के साथ विश्वविद्यालय के पूर्वी-भाषा विभाग की एक से मेरे हो चेन शु के पास जाने का प्रबंध कर दिया. उने 12 फ़र्वरी को 4 बजे उनसे मिलने का समय दिया। या. मन में अजीब तरह की खुशी महसूस करती हुई मैं

उस दिन यिन साहब के साथ हो चेन शु से मिलने चली. हो चेन शू जनता विश्वविद्यालय (Peoples University) के मिहिल स्कूल में पहले द्रजे की विद्यार्थी ैं. जनता विश्वविद्यालय पेकिंग विश्वविद्यालय से तीन चार मील दूर है. जब हम उस विश्वविद्यालय के फाटक पर गहुंचे तो वहां के प्रधान (Vice-Chancellor) व उपप्रधान (नायब वाइस चाँसलर) ने हमारा स्वागत किया. सादी पोशाक में मंमोले कद की लगभग उन्नीस बरस की एक तन्दुरुस्त व हंसमुख चेहरे वाली लड़की को प्रधान ने आगे कर दिया-"यह हैं हो चेन शू." वह हमसे बड़ी **पुहब्बत से मिलीं और उस कमरे में ले गईं जहां मेहमानों** है बैठने के लिये खास तौर से इन्तजाम है. प्रधान ने मुक से कहा कि हो चेन शू उनके विश्वविद्यालय में पढ़ती है यह उनके लिये खशी की बात है. मैं भी बेहद ख़ुश थी. मैंने मधान को धन्यवाद दिया कि उन्होंने सुमे हा चेन शु से मिलने का मौका दिया. इस के बाद वे बाहर चले गये और में हो चेन शू से बातचीत करने लगी.

हो चेन शू ने मुक्ते अपने बचपन का हाल बताते हुए इहा:—"मैं शांगतुँग प्रांत के खिंग ताब शहर के पास ताओ شریمتی پربھا ایم . آے . هندی ادهیاپکا پیکنگ یونیورستی ویکنگ چھن

(1)

هوچین شو کو میں پہلے نہیں جانتی تھی پر نام بہت سنا تھا ۔ چین میں جہاں کہیں بھی هم کوڑے کی مل دیکھنے گئے معلوم ہوا کہ وہاں کے کارخانے والے هو چین شو کا طریقہ کام میں لا رہے ہیں . ایک دن میرے ایک ودیارتھی لهاؤ چھی یوئی نے مجھ سے پوچھائے۔"آپ هوچین شوکو جانتی هیں ؟" میں نے کہا۔۔"آپٹریکاؤں میں کچھ اُن کے ہارے میں پڑھا ہے۔" اُس نے کہا۔۔"آپ اُن سے ملئے' پیکنک هی میں تو هیں اور سارے دیش میں مشہور هیں ." اُسی دن سے مجھے اِچھا هوئی سارے دیش میں شو سے ملاقات کروں . میں نے اپنی اِچھا اپنے کئے میں هوچین شو سے ملاقات کروں . میں نے اپنی اِچھا اپنے اُنھوں نے بڑی داچسیی کے ساتھ وشودیالھ کے پوروی بھاشا ویعلی کی طرف سے میرے هوچین شو کے پاس جانے کا پربندھ اُنھوں نے بڑی داچی سے میرے هوچین شو کے پاس جانے کا پربندھ کودیا . مجھے آن سے ملنے کا سے دیا کودیا . مجھے اس عجی ب طرح کی خوشی محسوس کرتی ہوئی میں اُس دن یں صاحب کے ساتھ هوچین شو سے ملنے چلی .

هوچین فو جنتا وشودیالیه (Peoples University) کے مدّل اِسکول میں پہلے درجه کی ودیارتهی هیں . جنتا وشودیالیه پیکنگ وشودیالیه سے تین چار میل دور هے . جب هم اُس وشودیالیه کے پهاٹک پر پہوئچے تو وهاں کے پردهان (کائب وائس چانسلر) فی همارا سواگت کیا . سادی پوشاک میں منجهولے قد کی لگ بهگ اُنیس برس کی ایک تندرست و هنس مکه چهرے والی لڑکی کو پردهان نے آگے کردیا—"یہ هیں هوچین شو ." والی لڑکی کو پردهان نے آگے کردیا—"یہ هیں هوچین شو ." جہاں مہمائوں کے بیتھنے کے لئے خاص طور سے اِنتظام شے . پردهان نے مجم سے کہا که هوچین شو اُن کے وشودیالیه میں پردهان نے مجم سے کہا که هوچین شو اُن کے وشودیالیه میں پردهان کو دهنیهوان دیا که اُنھوں نے خوش تھی . میں بھی پہھن جو خوش تھی . میں هوچین شو سے مائے کا موقع دیا . اِس کے بعد وے باهر مجم شوچین شو سے مائے کا موقع دیا . اِس کے بعد وے باهر مجم گائے اور میں هوچین شو سے بات چهت کرنے لگی .

ھرچیں شو نے مجھے اپنے بچپی کا حال بتاتے ہوئے کہا :۔۔ ''میں شانکتنگ پرانت کے چہنگ تار شہر کے پلس تاؤ

मायक गांव में पैदा हुई थी. लाखों और गरीव बच्चों की तरह मेरा बचपन भी गरीवी में बीता. घर में माता पिता के जलावा चार छोटे भाई और दो बहनें थीं, मैं सबसे बड़ी थी. पिता जी के पास एक गथा गाड़ी थी. उससे वह छिंग ताब से दूसरी जगहों पर अभीरों का सामान होया करते थे. उन पिनों चोरों लुटेरों के कारण रास्ता खतरनाक था मगर गुजारे का दूसरा साधन न होने के कारण मेरे पिताजी कई साल से यही काम करते थे. रास्ते में पुलिस तो रहती थी पर वह बहुत कम ज्यान देती थी और मेरे पिताजी अक्सर गाड़ी छुट जाने के कारण दुखी व उदास होकर घर लौटते थे. उनके दिन चिन्ता में बीतते थे और कभी कभी सामान लुट जाने के कारण उन्हें अमीर मालिकों को उनके माल की कीमत भी भरनी पड़ती थी. जब कमाई नहीं तो पैसा कहां से देते ? इसलिये उनकी हालत बहुत ही खराब रहती थी."

हो चेन शूकहा कि :-- "जब मैं 8 साल की थी तब जापानियों ने वहां क्रब्जा कर लिया. सारा गाँव साली कराया गया. दूसरे घरों के साथ साथ हमारा घर भी जला दिया गया. क्योंकि जापानियों को वहां हवाई चड्डा बनाना था. माता पिता के साथ मैं गांव के बाहर चली गई पर कहीं रहने के लिये जगह न मिली. हम सब एक पहाड़ी गुफा में रहने लगे." इस पर लम्बी सांस लेते हुए हो चेन शू ने कहा :- "उन दिनों हमारी हालत बहुत खराब थी. मैं घर की हालत सममती तो थी लेकिन मुमे क्या करना चाहिये यह समम न थी. कुछ दिन के बाद मैं माता जी के कहने पर जंगल से सूखी घास जमा करने गई और बाद में रोज जंगल से घास, खेतों से सन्जियाँ और समन्दर से कुछ खाने की चीज इकट्टा करने लगी. उन दिनों में कचरा-घरों के आगे और कारलानों के पिछवाड़े चक्कर लगाया करती थी और जले हुए कोयलों में से अच्छे अच्छे छांटकर घर हो आती थी. कोयला बटोरने के कारण मेरे हाथ, पांव, मुंह सब काले हो गये थे, इसलिये आस पास के सब लोग मुके "छोटी काली भूतनी" कहने लगे थे."

यह कहते कहते उसके मुँह पर मुस्कराहट आ गई. पर इस मुस्कराहट में भी उस समय की हालत का दर्दनाक चित्र और उसके प्रति उसका असंतोश साफ जाहिर हो रहा था.

परिस्थितियों ने उसे अपनी उमर से कुछ अधिक सममदार बना दिया था. गुड़ियां खेलने की उमर में उसने मजदूरी करने की इच्छा प्रगट की. माता पिता भी इससे खुरा हुए पर उसने मुक्त से कहा कि बहुत कोशिश करने पर औ उसे कोई काम न मिला.

खून 1949 में लिंग ताव गांव जापानियों के क़ब्जे से आखाद हो गया. अब हो चेन शू के जीवन की दशा ही المک گؤن میں پیدا ہوئی تھی۔ لاکھوں اور غریب بچوں کی طرح میرا بچھوں بھی غریبی میں بیتا۔ گھر میں ماتا پتا کے عالوہ چار چھوتہ بھائی اور دو بہنیں تھیں میں سب سے بڑی تھی ۔ پتا جی کے پاس ایک گدھا گڑی تھی ۔ اُس سے وا چھنگ تاؤ سے دوسری جگھوں پر امیروں کا سامان تھویا کرتے تھے ۔ اُن دنہی چھروں النیروں کے کارن راستہ خطوفاک تھا مکر گذارہ کا کم کرتے تھے ، راستہ میں پولس تو رهتی تھی پر وہ بہت کم دھیان دیتی تھی اور مھرے پتا جی اکثر گڑی سال سے بھی دھیان دیتی تھی اور مھرے پتا جی اکثر گڑی سے جائے کے کارن دکھی و اُداس ھوکر گھر لوقتے تھے ، اُن کے دن چنتا میں بیتتے تھے ، اور کبھی کبھی سامان اس جائے کے کارن آنہیں امیر بیتے تھے ، اور کبھی کبھی سامان اس جائے کے کارن آنہیں امیر مائیں کو اُن کے مال کی قیمت بھی بھرنی پڑنی تھی ، جب بیتے تھے ، اور کبھی کبھی سامان اس جائے کے کارن آنہیں امیر کائی نہیں آو پیستہ کہاں سے دیتے ؟ اِس لئے اُن کی حالت کائی نہیں آو پیستہ کہاں سے دیتے ؟ اِس لئے اُن کی حالت بہت ھی خراب رہتی تھی ۔ "

ھوچین شو نے کہا کہ :۔۔'جب میں آٹھ سال کی تھی نب جاپائیوں نے وهاں قبضه کرلیا ، ساراً کاؤں خالی کرایا گیا ، دوسرے گھروں کے ساتھ ساتھ ھمارا گھر بھی جلا دیا گیا کیونک جاپانیوں کو وہاں ہوائی ادا بنانا تھا ۔ ساتھ میں الن کے باہر چلی گئی پر کہیں رہنے کے لئے جات تہ سلی ، ہم سب ایک پهاری گهها میں رهنے لکے ، " اِس پر لمبی سانس لهتے هوئے هوچيين شو نے کہا :-"أن دنوں هماري حالت بهت خراب تهي . مين گهر كي حالت سمجهتي تو تهي ليكن مجھے کیا کرنا چاھئے یہ سمجھ نہ تھی ، کچھ درں کے بعد میں مانا جی کے کہتے یر جنکل سے سوکھی گھاس جدم کرنے گئی اور بعد میں روز جنکل سے گھاس، کھیتوں سے سبزیاں اور سمندر سے لجِهِ لَهَائِهِ فِي چِيزِينِ أَكْمًا كُرِنْ لَكِي . أَن دُنُون مَين كَجِرا کروں کے آگے اور کارخائوں کے بحجہوارے چکر لگایا کرتی تھے ارر جلے هوئے کونلوں میں سے اچھے اچھے چھانٹ کر گھر لے آتی نھی . کوئلہ بقورنے کے کارن مہرے ھاتھ یاؤں منھ سب کائے ھوکٹے بھے' اس ایئے آس پاس کے سب لوگ مجھے ^رچھوٹی کالی ببرننی کہنے لگے تھے ۔''

ید کہتے کہتے اُس کے منه پر مسکراهٹ آگئی . پر اُس مسکراهٹ میں بھی اُس سے کی حالت کا دردناک چتر ارر اُس کے برتی اُس کا استرهی صاف ظاهر هر رها تها .

پرستیتیں نے آسے اپنی عمر سے کچھ ادھک سمجھدار بنا دیا تھا۔ گریاں کھیلنے کی عمر میں اُس نے مزدوری کرنے کی اُچھا پرگت کی ، ماتا پتا بھی اِس سے خوش ہوئے پر اُس نے مقد ، مجھ سے کہا کہ بہت کوشش کرنے پر بھی اُسے کوئی کام نہ مقا ، حون 1949 میں چھنگ تاو گاؤں جاپائیوں کے قبضے ہے اُزاد ہوگیا ، اب ہوچین شو کے جھوں کی دشا ھی

बद्त गई. बीनी कारकानों में मजदूरों की मांग हुई. नवस्वर में इसे सरकारी कपड़ा मिल नं० 6 में काम मिल गया. वह इस समय 15 साल की भी नहीं थी.

घर की रारीबी का चित्र उसके सामने था. भाई बहनों का भक से तक्पना उसे याद था. उससे पहले बीसों बार काम के लिये कोशिश कर चुकी थी, इसलिये जब उसे काम किला तो वह बहुत खश हुई और जी लगाकर काम करने लगी. शह से ही उसने बड़ी तरक्की की और अपनी लगन व मेहनत से उसने एक नया तरीका निकाला जिसके अनुसार काम करने में पैदाबार बढती थी और सब को बहुत फायदा शा. कारखाने के अन्दर रुई की कताई और पूनी बनाई में जो रुई जाया जाती थी उसमें हो चेन शु के नए तरीक़े से वचासी कीसदी रुई की बचत होने लगी. पहले तो किसी को विश्वास नहीं हुआ. साथियों ने मजाक भी उड़ाया पर लगातार अध्ययन करने और देखते रहने के बाद अधिका-रियों को उसकी बात मंजूर करनी पड़ी. हो चेन शू का तरीक़ा एक नया और सफल तरीका था इसलिये दिसम्बर 1950 में वह अपने कारखाने की "आदर्श मजदूर" कहलाने लगी और मई 1951 में उसे दूसरे दूरजे का यानी छिंग ताब का "आदर्श मजदर" घोषित कर दिया गया. अगस्त 1951 में वह सारे देश की "आदर्श मजदूर" कही जाने लगी. उस समय उसका वेतन लगभग 175 हुपए माहबार था और वह मश्किल से 16 साल की थी.

सितम्बर 1953 में हो चेन शू को कारखाने की तरफ से जनता विश्वविद्यालय के मिडिल स्कूल में पदने के लिये भेजा गया, यहां वह तीन साल पढेगी और फिर अपने काम पर बापस चली जाएगी. हो चेन श्र विश्वविद्यालय में बहुत स्तरा है, वेतन अब भी उसे बराबर मिलता रहता है, उसके पिता ने गाड़ी चलाने का काम नहीं छोड़ा. गांव आजाद होने के बाद अब भी बड़ी ज़ुशी से अपना काम कर रहे हैं. घर लौटते हैं तो मुंह पर प्रसन्नता रहती है क्योंकि एक दिन में करीब करीब 8-10 रुपये की आमदनी उन्हें हो जाती है. माता घर का काम देखती हैं; मगर उनकी आंखों में अब दुख के श्रांसू नहीं, खशी की चमक रहती है, सब भाई-बहिन तन्दुरुस्त और खुश हैं और सब पढ़ते हैं- "आजादी ने हमारे परिवार में जीवन ला दिया." हो चेन शू ने कहा-"इस ज़ुशी और ज्ञानन्द की पहले हम कल्पना भी नहीं कर सकते थे; हमारा परिवार श्रव किसी भी परिवार से कम सुखी नहीं. इन शब्दों को कहते समय उसके चेहरे पर बच्चों की सी सरलता थी. बातचीत के साथ साथ उसके चेहरे के भाव भी बद्तते जा रहे थे. परिवार के और अपने सुखी जीवन का जिक करते ही वह खशी से गद्गद् हो गई. अब क्सने अपने आप पातकीत का विषय बदल विया :-- "यह

بدلگئی، چینی کارخانس میں مزدوروں کی مانگ ہوئی، تومیر میں آسے سرکاری کپڑا مل نمبر 6 میں کام مل گیا ، ولا آس سیے 14 سال کی بھی نہیں تھی ۔

گھر کی فریبی کا چٹر اُس کے سامنے تھا ۔ بھاٹی بہنوں کا بھوک سے ترینا اُسے یاد تھا ۔ اِس سے پہلے بیسوں بار کام کے لئے كوشص كرچكى تهي اس لله جب أسم كلم ملا تو ولا بهت خوش هولى أور جبى لگائر كام كرنے لكى . شروع سے هي أس نے بڑى ترقى کی اور اینی لکن و مصنت سے اُس نے ایک نیا طریقه نکالا جس کے آئوسار کام کرنے میں پیداوار پرھتی تھی اور سب کو بہت فایدہ تھا ، کاخالے کے اندر روئی کی کتائی اور یوئے بنائی میں جو روٹی ضائع جاتی تھی اُس میں ہوچین شو کے نئے طریقے سے بیچاسی فیصدی روئی کی بیچت ہونے لگی ، پہلے تو کسی کو وشواس نہیں ہوا ۔ ساتھیوں نے مذاق بھی اُرایا پر للانار اندهین کرنے اور دیکھتے رہنے کے بعد ادهیکاریس کو اُس کی هات منظور کرنی پری . هوچین شو کا طریقه ایک نیا اور سپهل طریقہ تیا اِس لئے دسمبر 1950 میں وہ اپنے کارخانے کی الأأدره مزدور" كهالي اللي أور ملى 1931 مين أسر دوسر فرهم كا يعلى جهنگ تاركا "أرش مزدور" كهشت كرديا گيا. اگست 1951 میں وہ سارے دیک کی "آدرش مؤدور" کہی جائے لکی ۔ اُس سے اُس کا ویٹن لگ بیگ 175 روپئے ملعوار تھا اُور وہ مشعل سے 16 سال کی تھی۔

ستىبر 1958 میں هوچین شو کو کارخانے کی طرف سے چنکا وشودیالیہ کے مدل اِسکول میں پڑھنے کے لئے بھیجا گیا . یهل وه تهن سال پرهیکی اور پهر اینے کام پر واپس چلی جائعگى . هوچين شو وشوديالية مين بهت خرش هے . ويتن اب بھی اُسے ہراہر ملتا رہتا ہے . اُس کے پتا نے گاری چلانے کا کام قبین چهورا . کازں آزاد هونے کے بعد اب بھی بڑی خوشی سے اینا کام کر رہے هیں . گهر لوئٹے هیں تو منه پر پرسنتا رهتی ہے كيونكه أيك دي ميں تربب تربب 10-8 روپئے كى آمدنى أنهيں هرجاتی هے، ماتا گهر کا کام دیکھتی هیں ' مکر آن کی آنکھوں میں اب دکھ کے اُنسو نہیں خوشی کی چمک رھتی ھے . سب بهائي بهن تدرست اور خوش هين اور سب يرهن هين . "اُزادی نے همارے بریوار میں جیوں لا دیا " هوچین شو تے کہا۔ واس خوشی اور آنند کی پہلے هم کلینا بھی نہیں کرسکتے تھے؛ هماراً پریوار آب کسی بھی پریوار سے کم سکھی تھیں ۔" اِن شبدس کو کہتے سے اُس کے چیرے ہر بچرں کی سی سرلتا تھی ، بات چیت کے ساتھ ساتھ اُس کے چہرے کے بھاؤ بھی بدلتے جارهے تھے۔ پربوار اور اپنے سکھی جیوں کا ذکر کرتے ہی وہ خوشی سے گدگد هركشي. أب أس له أيذ أب بات جيتكا وشد بدل ديا :-- "يه

بہا موقع کے جس میں کسی هندستائی مہیا سے بات چیت کر رھی ھوں ۔ منجے اس سے پھ خوشی ہے کیونکہ اِنہاس کی کلس میں ھم نے پرھا ہے کہ چین اور میھارت میں کئی ھزار برس سے گینشت مترتا رھی ہے ، پچھلے سال پردھان منتری پندت نہرو یہاں آئے اور پردھان منتری چاؤ این لائی بھارت گئے ، اب سب لوگ یہ جان گئے ھیں وہ میں کہ دونوں نے جو پنچ شیل کے پانچ سدھانت طے کئے ھیں وہ دینیا کی شائتی کے لئے کتنے ضورری ھیں ۔" اِس کے بعد ھوچین شونے کیا اور بھارت کا اور بھارت کا اور بھارت کا گار مندل ہاں آیا، اِس سے ظاھر ہے کہ دونوں دہشوں کی مترتا پر ہے اور اب ھمارا سمبندھ اور زیادہ گینشت ھوتا ہوا رہا ہے ، منجھے وشواس شے کہ فعت بھوشیہ میں ھمارا سمبندھ مترتا سے بڑھکر بھائی چارے کا عوجائیگا ۔"

أس نے کہا:—"اخبار میں یہ پڑھکر ھمیں ہڑی خوشی ھوئی که بھارت میں چین کے لئے ایک خاص آندولن ھوا اور 'تائیوان چھوڑو' دن منا یا گیا' اس سے بھی یہ ظاهر ہے کہ بھارت کی جنتا چھنی جنتا کو پیار کرتی ہے ۔"

"مهری بری اِچها هے" هو چین شونے چائے کے خالی پیالے میں چائے تألتے هوئے کہا که —"بهارت کی مہیلئوں سے ملوں اور آن سے بهارت کی استریوں کے بارے میں جانکاری حاصل کروں . بهوشته میں شاید بهارت جانے اور بهارت کی مہیلئوں سے ملنے کا مرتم ملے ." جس طرح پیار سے وہ باتیں کورهی تهی جس سنبہہ سے کبھی هاته میں هاته لیکر کبھی گلے میں بائہہ تألکر وہ مجھے سب کچھ بال رهی تھی اُس سے اُس تهوڑے سے سمئے میں وہ مجھے لگنے اگا که میں کسی اجنبی سے نہیں اپنی کسی پرینچت سہیلی سے بات کو رهی هوں . مجھے وشواس هو گیا که وہ گمبھیر هوتے هوئے بھی خوشدل هے وچار شیل هوتے هوئے بھی مالنسار هے .

آجکل ہو چین شرکا کاریہ چھیٹر کانی ہڑا ہے، وہ کئی سنستھاؤں کی میمبر ہے، اِس سمئے وہ 'کل چین مزدور نیتربشن' کی کیندریہ کمیٹی کی میمبر ہے' چین کے 'لوک سنٹے' کی کیندریہ کمیٹی کی بھی میمر ہے' اور کل چین مہیلا نیتربشن' کی کیندریہ کمیٹی کی میمبر ہے، ہو چین شو کو جنتا اور سرکار کی طرف سے بہت سمان ملا ۔ 13 11 اکتوبر دیوس کے بعد سے کی طرف سے بہت سمان ملا ۔ 13 11 اکتوبر دیوس کے بعد سے لا چینی جنتا کی 'صلاح مشورہ کمیٹی' کی میمبر بنا دی گئی ۔ لاؤلا میں آسے چینی 'ٹریڈ یونین' کے پرتنیدھی کے روپ میں سوریت روس بھیجا گیا ۔

هر مئی دیوس اور اکتوبر دیوس پر وہ منچ پر جاکز جنتا کے سامنے بولنے لکی ۔ 1954 میں وہ چین کی لوک پرتیادھی سبا (چینی پارلیمینٹ) کی میمبر چنی گئی .

पहला मौका है जब मैं किसी हिन्दुस्तानी महिला से बातचीत कर रही हूँ. युमे इस समय बेहद सुशी है क्योंकि इतिहास की क्लास में हमने पढ़ा है कि चीन और भारत में कई हजार बरस से घनिष्ट मित्रता रही है. पिछले साल प्रधान मंत्री पंडित नेहरू यहां आए और प्रधान मंत्री चाऊ एन लाई भारत गए. अब सब लोग यह जान गए हैं कि दोनों ने जो पंचरील के पांच सिद्धान्त तय किये हैं वे दुनियां की शांति के लिये कितने जरूरी हैं." इसके बाद हा चेन शू ने कहा:—"चीन से एक सांस्कृतिक मंडल भारत गया और भारत का कलाकार मंडल यहां आया. इससे जाहिर है कि दोनों देशों की मित्रता परस्पर उन्नति पर है और अब हमारा संबंध की सत्रता परस्पर संवंध की सत्रता से बढ़कर माईचार का हो जायगा."

उसने कहा—"अखबार में यह पढ़कर हमें बड़ी खुशो हुई कि भारत में चीन के लिये एक खास आन्दोलन हुआ और 'ताह्वान छोड़ो' दिन मनाया गया. इससे भी यह जाहिर है कि भारत की जनता चीनी जनता को प्यार करती है और उसकी मदद करती है."

"मेरी बड़ी इच्छा है" हो चेन शू ने चाय के खाली प्याले में चाय डालते हुए कहा कि—"भारत की महिलाओं से मिलूँ और उनसे भारत की जियों के बारे में जानकारी हासिल कहाँ. भविष्य में शायद भारत जाने और भारत की महिलाओं के मिलने का मौका भिले" जिस तरह प्यार से बह बातें कर रही थी, जिस स्नेह से कभी हाथ में हाथ लेकर, कभी गले में बांह डालकर वह मुमे सब कुछ बता रही थी उससे उस थोड़े से समय में ही मुफे जगने लगा कि में किसी अजनवी से नहीं अपनी किसी परिचित सहेली से बात कर रही हूँ. मुफे विश्वास हो गया कि वह गंभीर होते हुए भी खुश दिल है, विचार शील होते हुए भी मिलन-सार है.

आजकल हो चेन श्र का कार्य चेत्र काफी बड़ा है. वह कई संस्थाओं की मेम्बर है. इस समय वह कुल चीन मजदूर फेडरेशन की केन्द्रीय कमेटी की मेम्बर है, चीन के 'युवक संघ' की केन्द्रीय कमेटी की भी मेम्बर है, और 'कुल चीन महिला फेडरेशन' की केन्द्रीय कमेटी की भी मेम्बर है. हो चेन श्र को जनता और सरकार की तरफ से बहुत सम्मान मिला. 1951 अक्तूबर दिवस के बाद से वह चीनी जनता की 'सलाह मशाविरा कमेटी' की मेम्बर बना दी गई. 1952 में उसे चीनी 'ट्रेड यूनियन' के प्रतिनिधि के रूप में सोवियत कसे भेजा गया.

हर मई दिवस और अक्टूबर दिवस पर वह मंचपर आकर जनता के सामने बोलने लगीं. 1954 में वह चीन की लोक प्रतिनिधि सभा (चीनी पार्लिमेन्ट) की मेम्बर चुनी गई. जब मैंने हा चेल शु से कहा कि अपने जीवन की कोई
सबसे बड़ी घटना बताइये तो उसकी आखें चमकने लगीं
और वह बांली—"यूँ तो हर दिन एक घटना रहा है, पर
वेयरमैन माओ से मुलाक़ात होना मेरे जीवन की सबसे बड़ी
घटना है. सितम्बर का महीना था. मेरे कारलाने में नए
तरीक़ से काम छुरू कर दिया गया था. एक दिन हमारे
कारलाने के अधिकारी ने आकर एक पत्र देते हुए मुक्ससे
कहा कि:— यह चेयरमैन माओ की चिट्ठी है, तुम्हें पीकिंग
बुलाया है' मैं खुशी और आश्चर्य से अवाक् रह गई. कुछ
कह न सकी. आसपास के मेरे साथी बड़े खुश हुए, मुक्ते घेर
लिया और कहने लगे कि "हम सबकी तरफ से चेयरमैन
माओं से कहिये कि हम लोग जरूर देश की पैदाबार
बदावेंगे."

इसने कहा:—"फिर मैं घर वापस आई. माता पिता को बताया. मां खुरी के मारे रोने लगी. 'पिता ने पूछा चेयरमैन माओ के लिये.क्या भेंट ले जाओगी ?' मैंने कहा— "मन में जो बातें हैं वही उनसे कहूँगी, वही मेरी उनके लिये भेंट होगी' दूसरे ही दिन में पीकिंग के लिये रवाना हो गई. रास्ते में सोचती जाती थी कि चेरमैन माओ से किस तरह बातचीत करना चाहिये."

"वह दिन में भुला नहीं सकती" हो चेन श्र कहती रही—"उस दिन का इश्य हमेशा आंखों के आगे नाचा करता है. मैं खुशी से कांप रही थी और विश्वास नहीं हो रहा था कि चीन की दुखी और पीढ़ित जनता को खुशहाली का जीवन देने वाले माओ तो तुंग मुक्ससे बात कर रहे हैं. उन्होंने मुक्ससे जो कहा उसका एक एक शब्द मुक्ते याद है और वह मेरे लिये एक क्रीमती सबक्त है."

"चेयरमैन माश्रों ने मुक्त से कहा कि 'काम करने में घमंड नहीं करना चाहिये. मेहनत श्रीर लगन से काम करके श्रीर नए नए तरीक्रें निकालने चाहियें. जो इम जानते हैं वह दूसरों को सिखाना चाहिये श्रीर जो नहीं जानते उसे नम्रता के साथ दूसरों से सीखना चाहिये श्रीर सबके साथ मिलकर काम करना चाहिये."

हो चेन श्र अपने कारखाने में धीरज के साथ दूसरों को सिखाती थी और दूसरों से सीखती थी. पर अब जनता विश्वविद्यालय में पढ़ने में भी मुश्किल चीजों में अपने साथियों के मदद लेती है और अपने साथियों को मदद हेती है. नौजवानों के लिये चेयरमैन माओ का आदेश 'जूब तन्दुहस्त रहो, जूब सीखो और खूब काम करो' उसके सामने है—और इसमें शक नहीं कि वह हर मानी में— वन्दुहस्ती, तालीम और काम में दूसरों के लिये एक आदर्श है.

جب میں نے ہو چین شوسے کیا کہ اپنے جھون کی کوئی
سب سے بڑی گیٹنا بٹائیے تو اس کی انکیس چمکنے انکیں اور وہ
ولی انکیس تو ہو دن ایک گیٹنا رہا ہے، پر چیئرمیں ماؤ
م ملقات ہونا میرے جیون کی سب سے بڑی گیٹنا ہے ۔ ستمبر
ا مہیئہ تھا . میرے کار خانے میں نئے طریقے سے کام شروع کر دیا
لیا تھا ، ایک دن ہمارے کارخانے کے ادھیکاری نے آگر ایک پتر
لیا تھا ، ایک دن ہمارے کارخانے کے ادھیکاری نے آگر ایک پتر
میس پیکنگ بٹیا ہے؛ میں خوشی اور آشچویہ سے اواک رہ
بٹی ، کچھ کیہ نہ سکی ، آس پاس کے میرے ساتھی بڑے
خوش ہوئے، مجھے گیبر لیا اور کہنے لئے کہ ''ہم سب کی طرف
خوش ہوئے، میں ماؤ سے کہیئے کہ ہم لوگ ضرور دیش کی پیداوار

الس نے کہا:۔۔''پھر میں گھر واپس آئی' ماتا پتا کو اللہ ماں خوشی کے مارے روئے لگی ، پتا نے پوچھا چیئر میں او کے لئے کیا بھینت لیجاؤ گی 8' میں نے کہا۔۔'من میں جو ہاتیں ھیں وھی آن سے کھونکی' وھی میری آن کے لئے بھینت او گئی ۔ او گئ دوسرے ھی دن میں پیکنگ کے لئے روانہ ھو گئی ۔ استے میں سوچتی جاتی تھی کہ چیئر میں ماؤ سے کسی طرح اس چیت کرنا چاھئے ۔''

"وقا دن میں بھلا نہیں سکتی" مو چین شوکہتی رھی۔۔
اس دن کا درشیہ ھمیشہ آنکھوں کے آگے ناچا کرتا ہے ۔ میں
غوشی سے کاتپ رھی نہی اور وشواس نہیں ھو رھا تھا کہ چین
می دوکھی اور پیڑت جنتا کو خوشحالی کا جیوں دینے والے ماؤ ۔
سے - تنگ مجع سے بات کر رہے ھیں ۔ آنھوں نے مجع سے جو کہا
س کا آبک آبک شید مجھے یاد ہے اور وہ میرے لئے ایک
ہمتی سبتے ہے ۔"

"چیئر میں ماؤ نے مجھ سے کہا کہ 'کام کرنے میں گھنڈ : ہیں رئا چاھئے . محمنت اور لکن سے کام کر کے اور نئے نئے طریقے کالنے چاھئیں . جو ھم جانتے ھیں وہ دوسروں کو سکھا نا چاھئے ور جو نہیں جانتے آسے نسرتا کے ساتھ دوسروں سے سیکھنا چاھئے ."

هو چین شو اپنے کارخانے میں دهیرے کے ساتھ دوسروں کو کھاتی تھی اور دوسروں سے سیکھتی تھی ، پر آپ جھتا وشودیالیہ بیں پڑھانے میں بھی مشکل چیزوں میں آپنے ساتھیوں سے دن لیتی ہے اور آپنے ساتھیوں کو صدد دیتی ہے ، ٹوجوائوں نے لیے چیئومین ماؤ کا آدبھی 'خوب تندوست رھو' خوب یکھو اور خوب کام کرو' آس کے سامنے ہے۔۔اور اِس میں شک بیکھو اور خوب کام کرو' آس کے سامنے ہے۔۔اور اِس میں شک بیکھو کہ وہ ہر معنی میں تندوستی' تعلیم اُور کام میں دوسروں پر لئے ایک آدرہی ہے ۔

ही जैन श्रूपहले ने पढ़ी थी, पर कारखाने के छुट्टी के स्कूल में हमेशा जाती थी और वहां पढ़ती थी. अपने कास के नारे में और अपने अनुभवों के बारे में उसने कई लेख जिले हैं. अब तक उसकी ये चार पुस्तकें भी निकल पुकी हैं:—

- 1. "पीकिंग की डायरी."
- 2. "सोवियत रूस की डायरी."
- B. "खुशहाली का रास्ता."
- 4. "हो चेन शू का नया तरीका."

जब हो चेन शू ने ये किताबें लिखीं तब उसे लिखने में बड़ी कठिनाई होती थी. क्यों कि वह बहुत कम चीनी अक्षर जानती थी. 'पीकिंग की डायरी' तो वह सिर्फ बोलती थी खीर दूसरे लिखते थे. 'सोवियत रूस की डायरी' उसने खुद लिखी. यह किताब लिखने के लिये उसने अपनी सुविधा के लिये डायरी में इंछ निशान बना लिये थे. उन निशानों और इंड क्छरों की मदद से वह लिखती रही. कई बार ऐसा भी हुआ कि निशान बनाकर भूल गई और खुद अपना लिखा रालत पढ़ जाती थी. मगर बाद में उसने बड़ी जस्दी तरहाल की और अब वह अच्छी तरह लिख पढ़ सकती है.

अपनी पुस्तकें उसने मुसे भेंट कीं. इन पुस्तकों को देखते ही हो चेन शू की याद ताजा हो जाती है. अपने अनुभवों का लिखना हो चेन शू का एक खास शीक़ है. इसके अलावा उसे खेल कूद में भी बड़ी दिलचस्पी है. वास्केट बाल, वालीवाल आदि खूब खेलती है. स्वास्थ्य के लिये रोज कसरत करती है. इसके अलावा पढ़ना, सिनेमा नाटक आदि देखना, भी उसे बहुत पसंद है. लेकिन स्वयं हो चेन शू के शब्दों में—"सबसे ज्यादा तो मुसे अपना सूत का काम और उसका अध्ययन पसंद है" चीन के सिनेमा और नाटकों में किसी तरह भी अशलीलता नहीं होती.

बात करते करते चीनी विवाह कानून की बात होने लगी. बह बोली :—"नए चीन का विवाह कानून थोड़े से राब्दों में चीनी महिलाओं के अधिकारों का कानून है. यह कानून हमारी राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक आजादी की गारंटी करता है" यह कहते कहते वह जोर से खिल-बिलाकर हंस पड़ी। हो चेन शु अभी अविवाहित है.

एकाएक घड़ी पर नजर पड़ी 6 बज रहा था, इसलिये जै उससे फिर कभी मिलने का वादा करके उठ खड़ी हुई जीर घर लौट आई.

बह 12 करवरी की शाम थी जब मैं हो चेन शू से मिली थी. उसके भोले मुस्कराते चेहरे और मिलनसार सबीयत ने हमेशा के लिये अपनी छाप मेरे दिल पर अंकित कर दी है.

مو چھوں ہو پیلے ہے پڑھی تھی پر کارخانے کے چھتی کے اسکول میں ہمیشہ جاتی تھی اور وہاں پڑھتی تھی ۔ اپنے کام کے بارے میں اُس نے کئی انوبھوؤں کے بارے میں اُس نے کئی ایکے لکے ایکے میں ۔ اب تک اِس کی یہ چار پستمیں بھی ٹکل چکی ہیں:--

- 1. پیمنگ کی تایری ."
- 2. سوویت روس کی تایری ."
 - 3. خوشحالي كا رأسته "
- 4. هو چين شو کا نيا طريقه ."

جب هو چهن شوئے یه کتابیس لیمیس تب أسے تعینے میس بتی کلمنائی هوتی تهی کیونکه وہ بہت کم چینی انشر جائتی نهی ، ٹپیکنگ کی قایری 'تو وہ صرف بولٹی تهی اور دوسرے لیمیتے تھے ، سوویت روس کی قایری اُس فے خود لیمی ، کتاب لیمنے کے لئے اُس فے اپنی سویدها کے لیئے قایری میں کچھ نشان بنا لیئے تھے ، اُن فشائوں اور کچھ اکشروں کی صدد سے وہ لیمیتی رهی ، کئی بار ایسا بھی هوا که نشان بنا کر بھول گئی اور اپنا لیما علما پڑھ جاتی تھی ، مگر بعد میں اُس فے بڑی جلدی ترتی کی اور اب وہ اچھی طرح لیم پڑھ سکتی ھے ،

اپنی پستمیں اِس نے مجھے بھینٹ کیں ، اِن پستموں کے دیکھتے ھی ھو چین شو کی یاد تازہ ھو جاتی ھے ، اپنے انوبھوں کا ایک خاص شوق ھے ، اِس کے علوہ اُسے کیل کود میں بھی بڑی دلچسپی ھے ، بلطکیٹ بال والی بال اُدی خوب کھیلتی ھے ، سواستھ کے لئے روز کسرت کرتی ھے ، اِس کے علوہ پتونا سفیما ناتک آدی دیکھنا بھی اُسے بہت اِس کے علوہ پتونا سفیما ناتک آدی دیکھنا بھی اُسے بہت پسند ھے ، لیکن سویم ھو چین شو کے شہدوں میں سند ھے ۔ "چین کے زیادہ تو مجھے اپنا سوت کا کلم اور ادر هین پسند ھے ۔ "چین کے سنیما اور تاتکوں میں کسی طرح کی بھی اشلیلتا نہیں ھوتی ،

بات کرتے کرتے چینی وراہ قانوں کی بات ہونے اگی ، وہ برا۔ انٹے چینی کا وراہ قانوں تھرتے سے شبدوں میں چینی مہیلاں کے ادھیکاروں کا قانوں ہے . یہ قانوں ہماری راج ٹیٹک' ساماجک اور آرتھک آزادی کی گرنٹی کرتا ہے ۔'' یہ کہتے کہتے وہ زور سے کھلکھا کو ہنس پڑی ، ہو چین شو آبھی اربواست ہے ۔

یکایک گھڑی پر نظر گئی ، 6 بچ رہا تھا اُ اِس لیٹے میں اُس سے پھر کبھی ملنے کا وعدہ کر کے اُٹھ کھڑی ہوئی ، اُدر گھر لُوٹ آئی ،

وہ 12 نروری کی شام تھی جب میں ہو چین شوسے ملی تھی۔ اُس بھولے مسکراتے چہرے اور مراء سار طبیعت نے ہمیشہ کے لئے اپنی چیاپ معرے دل پر انکت کر دی ہے ۔

Rose S

व्य आदरी कीनी सक्तर सकती

ایک آدره چیلی مزدور اوکی

हाल ही में पीर्किंग में इसने एक सिनेसा देखा. फिरस नाम था 'साठ करोड़ जनता का प्रश्न.' इसमें जीनी क प्रतिनिधि सभा (पारिलमेन्ट) में नए विधान पर बहस ती हुई विकाई गई थी. दूसरे बड़े बड़े नेताओं के साथ ने एक नीजवान लड़की को भी मंच पर से भाषस देते सुना. "हो चेन शू" मेरे पास बैठे एक मित्र ने कहा, र सुने बस बिन की घटना बाद जा गई जब जनता विद्यालय में मैंने इससे सुलाकात की थी. एक आदर्श हिंदूर होने के नाते वह मजदूर प्रतिनिधि के रूप में पारिल-ट की मेन्बर चुन ली गई. इस समय उसकी उमर केवल रीस साल की है.

हो चेन शू के छोटे से जीवन से पता चलता है कि नए न में एक ग़रीब से ग़रीब घर में पैदा हुई गांव की लड़की जो देश के आजाद होने से पहले कचरे खानों में से हे हुए कोयले बीनती फिरा करती थी, मौक़ा मिलने पर; स तरह अपनी सूक से कारख़ाने के अन्दर पैदाबार को मि सकती है; लिख पढ़ सकती है और थोड़े ही दिनों में । छोटी सी उमर में चीन की पारिलमेन्ट की मेन्बर बन कती है. मैं ऊपर लिख चुकी हूँ उसका जीवन अब भी वैसा सीधा, सरल और मेहनती है और लाखों चीनी लड़कों इकियों की तरह भारत से उसे विशेष प्रेम है.

حال هی میں پیکنگ میں هم نے ایک سلیما دیکھا ، فلم کا نام تھاسسائھ کرور جنکا کا پرشن اِس میں چیلی لوک پرتیادهی سبها (پارلیمنٹ) میں نئے ودهان پر بحصت هوتی هوئی دکھائی گئی تھی ، درسرے بڑے بڑے نیکاؤں کے ساته هم نے ایک نوجوان لوکی کو بھی ملج پر سے بھاشی دیتے هوئے سلا ، "هو چیبی شو" مهرے پاس بیٹھے ایک متر نے کہا اور مجھے اُس می کی گیڈنا یاد آگئی جب جکٹا وشودیالیہ میں میں نے اُس سے ملقات کی تھی ، ایک آدرهی مزدور هوئے کے ناتے وہ مورور پرتندهی کے روپ میں پارلیمنٹ کی میمبر چی لی مردور پرتندهی کے روپ میں پارلیمنٹ کی میمبر چی لی گئی ، اُس سال کی ہے ،

هوچین شو کے چهرقم کے جیرن سے پت چلتا ہے کہ نقے چین میں ایک غریب سے غریب گیر میں پیدا ہوئی گاؤں کی لوگی بھی جو دیش کے آزاد ہو نے سے پہلے کچرے خاتوں میں سے جلے ہوئے کویلے بلیتی پیرا کرتی تھی موقع ملنے پر کس طرح اپنی سہجھ سے کارخانے کے اندر پیداوار کو بڑھا سکتی ہے کام پڑھ سکتی ہے اور تھرے ھی دنوں میں اِس چھوٹی سی عمر میں چین کی پارلیمنٹ کی ممہر بن سکتی ہے میں اُوپر لکھ چکی ہوں کہ اُس کا جیرن اُب بھی ویسا ھی سیدھا سرل اُور مصلحتی ہے اور لاکھرں چینی لوکیوں کی طرح بھارت سے اُسے مصلحتی ہے اور لاکھرں چینی لوکیوں کی طرح بھارت سے اُسے مصلحتی ہے اور لاکھرں چینی لوکیوں کی طرح بھارت سے اُسے مصلحتی ہوں ہوں

700 PAGES, 32 ILLUSTRATIONS 2 COLOURED MAPS

"CHINA TODAY"

والعراصاله أصالح أصاله

PRICE

BY PANDIT SUNDARLAL

Rs. 780

A vivid narration of the glorious and wonderful achievements of New China...A picture of China which is both convincing and authentic...the best book that has come out so far on New China in the English language ...the most objective in approach and comprehensive in treatment.

—National Herald, Lucknow.

Highly informative...throws vivid light on conditions obtaining in that country...a book which deserves to be widely known —Leader, Allahabad.

Encolopsedic...characterized by soute observation of detail as well as by...instinctive grasp of the fundamental perspective...To read it is veritably like accompanying the Mission on its thrilling voyage of discovery in New Chins.

—Blitz, Bombay

A mine of information which gives a picture of China as nothing else dose...the best guide to New. China...Those who would like to understand what is happeing in New China can do not better than to study it.

—Bharat Jyoti, Bombay

The wealth of information it gives on China new and old...makes fascinating reading...is comprehensive and informative and must therefore interest all students of public affairs.

—Indian Express, Madras

China Today is an eloquent tribute to his (Pandit Sundarlal's) shrewd understanding of men aud matter...

brings to light the mighty endeavour of the Chinese People to rebuild their great nation on firm new foundations
for a tomorrow which is theirs.

—Vigil, Delhi



1. मीर राजुलों के बादशाह.

2, अकबर इलाहाबादी'

बोनों कितावें इलाहाबाद ला जनरल प्रेस की छपी हुई हैं. दोनों के सम्पादक हैं डाक्टर सैयद ऐजाज हुसेन. दोनों की कीमत ढाई-ढाई रुपया है. पहली में 287 सके हैं और बसरी में हैं 160,

मीर तकी भीर, जैसा कि किताब के नाम से जाहिर होता है. राजलों के बादशाह थे. उनका जमाना वह जमाना था जब इसर भारत के लोगों ने न अलग अलग कलचर की खाइयाँ सोदी थीं और न हिन्दी खद् की दीवारें खड़ी की थीं. मीर की जवान पदी सहल, श्रासानी से समक्त में श्राने वाली मगर साथ ही साथ रुयालों की गहराई लिये हुए है. संबह के हारू में 45 सफ़ों में मीर की जिन्दगी और शायरी का परिचय दिया गया है. संप्रह में भीर की दीवानों में से चुनी हुई राजलें संकलित की गई हैं. कुछ मसनवियाँ भी दी गई हैं चीर कछ रुवाइयाँ भी.

मीर तकी सन् 1724 ई० में पैदा हुए थे और कहा जाता है कि सन् 1810 ई॰ में मरे. यह वह जमाना था जब मुराल बादराहत जतम हो रही थी औह अंग्रेजी राज का सितारा इभर रहा था. उस बदलते हुए जमाने और बदलती हुई द्वनिया का मीर पर असर पहुना लाजमी था. सारा देश क्रइत की सी हालतों से गुजर रहा था. एक गाँव का जिक करते हुए मीर लिखते हैं-

बार इप्पर कहीं चमारों के सो भी दूटे गिरे विचारों के दूटी फूटी कोई इवेली है सो भी मैदान में अकेली है एक-दो धुदें से पड़े हैं वाँ जब हो-हो गए हैं लबे-जाँ स्रोग ऐसे मकान सब ऐसे ऐसी जगह न उचटे दिल कैसे भौर जो चार घर नज़र आए उनकी खूबी खुले वहीं जाए हा भी कोली चमार थे कोई फाक़ों से जोरबार थे कोई प्रसों काली काली रूखे से सारे कंगाल और मूके से

भीर दिल्ली, मथुरा, भरतपुर, इलाहाबाद और लखनऊ र जगह गये मगर लखनऊ में ही उन्होंने दम तोड़ा. जब तक केंचे आत्म सम्मान लेकर जिये. कभी किसी के आगे न ार कुकाया और न सम्मान कम किया. उनके शिष्यों में ान्य मुसलमान सभी थे. अपने मजहबी उसलों के बारे में साय विसावे हैं--

1. میر غزلوں کے باںشاہ

2. اكير الفأبادي

مودوں کتابیں العآباد لا جنول پریس کی چھیی ھوئی ھیں . دونوں کے سیادک ھیں قائلر سید اعجاز حسون . درنس کی قیست تھائی تھائی روپیہ ہے ۔ پہلی میں 287 منجے میں اور دوسری میں میں اور

میر تقی میر؛ جیسا که کتاب کے نام سے ظاهر هوتا هے؛ غولوں کے بادشاہ تھے . اُن کا زمائت وہ زمائت تھا جب اُتر بھارت كُمْ لُوكِينِ نِهِ لَمُ اللَّ اللَّهُ كَلَيْجِرِينَ كَي كَهَاتُهَانِ كَوْدِي تَهِينِ ارر نه هندی اُردو کی دیواریں کھڑی کی تھیں ، میر کی زبان برى سهل أسائى سے سمج ميں آلے والى مكر ساتھ هي ساتھ خیالی کی گهرائی لیئے هوئے هے ، سلکرہ کے شروع میں 45 منتص میں میر کی زندگی اور شاءری کا پریتے دیا گیا ہے . سنارہ میں میر کے دیوانوں سے چنی هوئی غزلیں سنکلت کی گئی هیں . کچے مثنویاں بھی دی گئیں هیں اور کچے رہاعیاں

مير تقى سن 1724ع ميں پيدا هوئه تھ أور كہا جاتا ہے سن 1810ع ميل مرد . يه و× زمانه تها جب مغل بادشاهت ختم هو رهی تهی آور انگریزی راج کا ستاره آبهر رها تها . أس بدلتے هوئے زمانے آور بدلتی هوئی دنیا کا مهر پر آثر پرنا الزمی نها ، سارا دیش قحط کی سی حالتوں سے گذر رہا تھا ، ایک گؤں کا ذکر کرتے ہوئے میر لکھتے ہیں ۔

چار چهپر کہیں چماروں کے سو بھی توٹے گرے بحچاروں کے تَّرْنَى پهرتَى كوئى حريلي هے سو بھى ميدان ميں أكيلى هے ایک دو مردرے پرے میں وال جب هو هوگئے هیں وے اب جاں لوگ ایسے مکلی سب ایسے ایسی جکه نه اُچھے دل کیسے اور جو چار گھر نظر آئے ان کی خوبی کھلے وهیں جائے وہ بھی کوای چمار تھے کوئی قاقوں سے زیربار تھے کوئی صورتیں کالی کالی روکھے سے سارے کنگال اور بھوکے سے

مير دلى؛ متهرا؛ بهرتيور؛ الدآباد أور لتهنو هر جكه كئه ، مكو لمهنو میں هی انہوں نے دم توزا . جب تک جیئے آتمسان لِنَا جَيْدُ . كَيْهِي كَسَى كِي أَكُم نَهُ سَر جِهَايا أور نَهُ سَمَانَ كُمْ كَيَا . ان کے ششیوں میں ہندو مسلمان سبھی تعد اپنے مذھبی اصولیں کے بارے میں وے خود لکھتے میں۔۔ मीर के दीनी मजदब को क्या पूछते हो उन ने तो— करा जा खींचा, देर में बैठा कब का तर्क इस्ताम किया मुद्द अपने शेरों के मुतास्तिक मीर साहब फरमाते हैं— पढ़ते फिरेंगे गलियों में इन रेखतों को लोग मुद्दत रहेगी याद यह बातें हमारियाँ और बाकई जब तक हिन्दुस्तान के लोगों में कविता की तरक चाह रहेगी मीर की हमेशा क्रवर की जावेकी.

अनमोल राजलों, मसनवियों और दवाइयों से यह के संग्रह भरा पड़ा है. सुरिकल राज्यों के जगह जगह आसान माने भी दिये हुए हैं.

दूसरा संप्रह मशहूर शायर अकबर इलाहाबादी की किवताओं का है. अकबर हास्य-रस के शायर थे. उनका हास्य-रस इस क़द्र ऊँचा होता था कि आज तक उससे बिद्ध्या और पुरलुत्क व्यंग कोई दूसरा शायर अदा नहीं कर पाया. संप्रह के शुरू में शायर की एक छोटी सी जीवनी दी गई है और 45 सके की एक मूमिका है जिसमें अकबर और उनकी शायरी और उर्दू शायरी में व्यंग और हास्य के अपर रोशनी डाली गई हैं. मौजूदा संप्रह में अकबर की चुनी हुई शायरी दी हुई है. उनमें छोटे चौपदे और बड़ी नजमें शेनों शामिल हैं. एक मिली जुली हिन्दुस्तानी कलचर अकर के मन को भाई थी और आखीर वक्षत तक वह उसकी सहा चुलन्द करते रहे. वे लिखते हैं—

यह बोले रो के पीरू और गयादीन धर्म दुनिया से उठा और गया दीन हिन्दू मुस्लिम एक हैं दोनों यानी यह दोनों एशियाई हैं हम-वतन हम-अबाँ व हम-क्रिस्मत क्यों न कह दूँ कि भाई-भाई हैं

एक दूसरी जगह —

इनायत मुक्त पै फरमाते हैं शेखो बरहमन दोनों मुत्राफ़िक़ अपने-अपने पाते हैं मेरा चलन दोनों तराने मेरे हम-आहंग दैरो काबा हैं यकसाँ जबाँ पर मेरी मीजूँ होती हैं हम्दो भजन दोनों

हिन्दी दुनिया की यह एक उन्दा कोशिश है कि उर्दू शायरों की चीजें देवनागरी हरूकों में छपें ताकि हिन्दी पढ़ने बाले उर्दू शायरी की लज्जत व मिठास का स्वाद ले सकें. यह दोनों कितानें इसी कोशिश का नतीजा हैं. डाक्टर ऐजाज स्मेन खुद उर्दू के एक अच्छे शायर हैं और प्रयाग विश्व-वेदालय में उर्दू के प्रोफ़ैसर हैं. ऐसे योग्य सम्पादक की नेगरानी में यह संप्रह प्रकाशित किये गये हैं. हम इस प्रयत्न म स्वागत करते हैं. میر کے دیں و مذھب کو کیا پرچھتے ہو آئی لے تو۔۔
کھی آ کیینچا دیر میں بیٹھا کب کا ترک آسام کیا ۔
خود آپنے شعروں کے متعلق میر صاحب فرماتے ہیں۔۔
پڑھتے پھرینکے گلیوں میں اِن ریختوں کو لوگ
مدت رھیکی یاد یہ ہاتیں ہماری یاں
اور واتعی جب تک ہندستان کے لوگوں میں کویتا کی ۔
ف چاہ رھیکی میر کی ہمیشہ قدر کی جائیکی ،

اقدول غزلیں' مثنویوں اور رباعیوں سے یہ سائرہ یورا ہوا ۔ مشکل شیدوں کے جانبہ جانبہ آسان معنے یعی دائم ہوئے

دوسرا سنکرہ مشہور شاعر البر اِلقابادی کی کویتاؤں کا ہے ،

ر هاسیمرس کے شاعر تھے ، اِن کا هاسیم رس اِس قدر اُولیچا

تا تھا کہ آج تک اِس سے بڑھیا اور پرلماف وینگ کوئی دوسرا

عر ادا نہیں کر پا یا سنکرہ کے شروع میںشاعر کی ایک چھوٹی ،
جیوٹی دی کئی ہے اور 45 صنحے کی ایک بھومھکا ہے جس اگر اور اُن کی شاعری اور اُردو شاعری میں وینگ اور سیم کے اُوپر روشنی تالی گئی ہے ، موجودہ سنکرہ میں اکبر سیم کے اُوپر روشنی تالی گئی ہے ، موجودہ سنکرہ میں اکبر ی شاعری دی ہوئی ہے ، اِن میں چھوٹے چوپدے اور ی نظمیں دونوں شامل ھیں ، ایک ملی جلی ھندستانی ی نظمیں دونوں شامل ھیں ، ایک ملی جلی ھندستانی جو اکبر کے می کو بھائی تھی اور آخری وقت تک وہ اُس ے صدا بلند کرتے رہے ، وے لکھتے ھیں۔۔

یہ بولے رو کے پھرو اُور گھادین دھرم دنیا سے اُتھا اُور گیا دین ھندو مسلم ایک ھیں دونوں یعنی یه دونوں ایشیائی ھیں ھمرطی ھمرہاں و ھمتسمت کھوں نہ کہدوں کہ بھائی بھائی ھیں

ایک دوسری جگهئے۔

عنایت مجھ پھ نوماتے ھیں شہتے و یرھمن دونوں موافق آپنے آپنے باتے ھیں میرا چلن دونوں ترانے میرے ھم آھنگ دیر و کعبه ھیں یکساں زباں پر میری موزوں ھوتی ہے حمد و بیعین دونوں ھندی دنیا کی یہ ایک عمدہ کوشش ہے که آردو شاءروں میچیزیںدیوناگری درونوں میں چھیں تاکه ھندی پڑھنے والے آردو ماءری کی لنت و متھاس کا سواد لے سکیں، یہ دونوں کتابیں اِسی رشم کا نتیجہ ھیں . ڈاکٹر اعجاز حسین خود آردو کے ایک چھے شاءر ھیں اور پریاک وشودیالہ میں آردو کے پروفیسر ھیں . سے یوگیہ سمیادک کی نگرانی میں یہ ستگرہ پرکاشت کئے ھیں ، ھم اِس پریتن کا سواکت کرتے ھیں ،



सत्ता और शक्ति नहीं, सेवा और त्याग

राष्ट्रियता महात्मा गान्धी ने आजादी हासिल होने के बाद, अपने एक प्रार्थना प्रवचन में कहा था—"राजनैतिक आजादी किसी भी मुल्क की आजादी का एक अंग है. हिन्दुस्तान ने बह हासिल कर ली. अंगरेज यहाँ से चले गये. मगर अभी तो हमारी मंजिल शुरू हुई है. हमें तो अभी सामाजिक आजादी और आर्थिक आजादी और हासिल करनी हैं. ये तीनों आजादी मिलने पर ही देश पूरी तरक्की कर सकेगा. जब तक ये दोनों आजादी हमें और न मिलें हमें आराम से नहीं बैठना है, हमें दूने जोश और महनत से काम करना है."

गान्धी जी चाहते थे कि कांप्रेस ही इन दोनों श्राजादियों को हासिल करने का जरिया बने. वह काम कैसे हो जब तक उसका विधान न बदले. गान्धी जी ने ही सन् 1920 1925 और 1934 में जरूरत के मुताबिक कांग्रेस के विधान में तन्दीलियाँ की थीं ताकि कांग्रेस एक संघर्ष करने वाली. कान्तिकारी जमात की हैसियत से देश को आजादी दिलाने का जरिया बन सके और वह काम उसने बखूबी अन्जाम दिया. सन् 1920 से पहले कांमेस देश में चोटी के पढ़े लिखे लोगों, बड़े बड़े बकीलों, बैरिस्टरों और रईसों की जमात थी. सन् 1920 के बाद वह निचले मध्यम वर्ग के लोगों के हाथ में आई जिनमें बहुत बड़ी तादाद शहरियों की थी. 1925 में रचनात्मक कामों को, प्रामसेवा को, प्रामोद्योगों को कांग्रेस के काम का जुज बनाया गया और इस तरह गान्धी जी ने कांग्रेस को ठेंठ मुल्क की जड़ों तक, यानी गाँवों तक पहुँचाने की कोशिश की. 1934 के विधान के जरिये क्टोंने उस कोशिश को और गहराई तक पहुँचाने की त्रजवीच की. स्वराज्य द्दासिल होने के बाद वे चाहते थे कांग्रेस का ढाँचा बदल कर ऐसा कर दिया जाय कि वह नारा लगाने वालों, जुलूस निकालने वालों, तक्ररीरें करने बालों के बजाय निस्पृह, त्यागी, सामाजिक और बार्थिक आजादी की मिसाल खुद अपने निजी जीवन में उदारने वाले

ستا اور شکتی نهیں' سیوا اور تیاک

راشر پنا مہاتما کاندھی نے آزادی حاصل ھونے کے بعد' اپنے پرارتہنا پروچن میں کہا تھا۔۔"راج نینک آزادی کسی ملک کی آزادی کا ایک انگ ہے، ھندستان نے وہ حاصل لی ، انکویز یہاں سے چلے گئے ، مکر آبھی تو ھماری منزل رع ھوئی ہے ، ھمیں تو آبھی ساماجک آزادی اور آرتہک دیس اور حاصل کرنی ھیں، به تینوں آزادی ملنے پر ھی دیش ری توقی کر سکیگا ، جب تک یہ دونوں آزادی ھمیں اور نه یہ میں میں آرام سے نہیں بیٹھنا ہے' ھمیں دوئے جوش اور صنت سے کام کونا ہے ،"

كاندهي جي چاهتے تھے كه كاتكريس هي اِن دونوں آزاديوں حاصل کرنے کا ذریعہ بنے ، وہ کام کیسے هو جب تک اُس کا هان نه بداي . گاندهي جي نے هي سن 1920' 1925 اور 193 میں ضرورت کے مطابق کاتکریس کے ودھان میں تبدیلیاں تهیں تاکه کانگریس ایک سنگهری کرنے والی کوانتیکاری ماعت کی حیثیت سے دیش کو آزائی دائنے کا ذریعہ بن سکے رة كام أس نے بخوبی انجام دیا . س 1920 سے پہلے عربس دیش میں چوٹی کے پڑھے لکھے اوگوں' بڑے بڑے وکیلوں' رسروں اور رئیسوں کی جماعت تھی۔ سن 1920 کے بعد وہ چلے مدھیم ورگ کے لوگوں کے ھاتھ میں آئی جن میں بہت ى تعداد شهريس كى تهي . 1925 مين رچناتمك كاسس ' گرام سیوا نو' گرامهدیوگوں کو کانکریس کے کام کا جز بنایا گیا اِس طرح کاندھی جی نے کانگریس کو ٹھیٹھ ملک کی جورس ے' یعنی کاوں تک پہرنچانے کی کوشص کی . 1934 کے ھان کے ذریعے اُنہوں نے اُس کوشش کو اور گہرائی تک ونچانے کی تجویز کی . سوراجیہ حاصل هوئے کے بعد وے لعتم تعم کانکریس کا تھائچہ بدل کر ایسا کر دیا جائے ولا تعرلا لكالي والبن جلوس لكالله والبن تقريرين لے والی کے بعجائے نرسهرہ تیاگی ساماجک اور آرتھک دی کی مثال خود اپنے نجی جهون میں آتارنے والے

सितम्बर '55

(188)

ستمبر <u>20</u>0

क्षमा माससेवियों, सर्वोदय वादियों और सच्चे सेवकों की जमात बन जाब, बह पालिमेंटरी हुकूमत के पश्चिमी उसूलों की हबहू नक्कल करने वाली, एक नक्कलची संस्था न रहे बल्क अपनी जरूरतों, अपनी परम्पराओं, अपनी तहजीव और कल्चर, अपनी विशेष सामाजिक और आर्थिक परिश्यितियों को देखते हुये खद अपना नया रास्ता निकालने बाली और देश को ठोस तरककी के रास्ते पर ले जाने वाली जगात बने. वह कांग्रेस का चोला ही बदल देना चाहते थे. वह इसे शक्ति और सत्ता का नहीं, त्याग और सेवा का पुजारी बताना चाहते थे. इस उद्देश्य से उन्होंने कांग्रेस का विधान बताना शरू किया. उसका कुछ हिस्सा लिखा, मगर देश की बदक्रिस्मती कि जिस दिन उन्होंने यह काम शुरू किया उसी हिन एक देश-घातक नर-पिशाच की गोली से वह अपने देशवासियों के कल्याण मार्ग में बल चढ़ गये. उनकी मौत के कारण कांग्रेस का कायाकल्प न हो सका. वह नया बोला न बदल सकी. वह सेवा का रास्ता न अपना सकी. सरपट प्रभुता के रास्ते पर दौड़ने लगी. काम की अधिकता, जीवन-रस का अभाव, बुढ़ापे का शरीर-नतीजा यह हुआ कि आठ बरस की हुकूमत के बोम से ही वह थक कर चूर चूर हो गई. उसके अवयव ढीले पड़ने लगे और अंग प्रत्यंग बेकार होने लगे. 27 बरस से वह जनता के दिलों की प्यारी. इसकी आँखों का नूर और उसकी उमीदों का सहार। थी. मुल्क की आजादी आजिर कांग्रेस के ही कोख से जन्मी और पालने पर उसी की लोरियाँ उसने सुनीं. उसी जनता की उम्मीदें कांग्रेस से टूटने लगीं. आज गुल्क का दिल भले ही कांग्रेस के साथ हो मगर दिमारा उसका भटक रहा है. जहाँ पहले एक ही तिरंगा निशान लहराता था वहाँ आज दोरंगे, एक रंगे, लाल, पीले, किस्म किस्म के निशान पार्टी माफिसों में फहरा रहे हैं.

यह नहीं कि कांग्रेस इस सारी कैंफियत को सममती नहीं. वह ख़ूब सममती है. उसने रोग का सबब भी ढूँ ढ़ने की कोशिश की. मगर जब तक गान्धी जी जिन्दा थे वह हर बुराई का दोषी सबसे पहले अपने को बताते थे. ख़ुद अपनी जात से इलाज शुरू करते थे. मगर उनके बाद क्या हुआ ? कांग्रेस की बढ़ती हुई अनुशासनहीनता और अप्रियता के लिये नेताओं ने छोटे नेताओं को दोष दिया, छोटे नेताओं ने एम. एल. ए. लोगों को जिम्मेबार ठहराया और फिर सबने एक राय से मिलकर पदहीन, सत्ताहीन, मूखे और लाचार छोटे छोटे हजारों कांग्रेस के काम करने बालों के सर पर कांग्रेस की सारी सुसीबतों की जिम्मेबारी मद दी.

रोग का वह सही निवान नहीं था इसलिये हर इलाज कांमेस को सेहत देने में नाकाफी साबित हुआ. जनता के

سمکر گرام سیویوں' سرونٹے وادیوں آبور سچے سیوکوں کی جماعت بن جائے وہ پارلیمینٹری حکومت کے پچھمی اُصولوں کی ہوبہو نقل کرنے والی ایک فقلمهي سلستها نه رهم بلكه ابي ضرورتين ايلي يرمهراؤن ايني تهذیب اور کلچور' اینی وشیش ساماجک اور آرتهک پرستهتیوس کو دیکھتے هوئے خود اپنا ٹیا راسته تکالنے والی اور دیھی کو تهوس ترقی کے راستے پر لیجانے والی جماعت بنے ، وہ کانکریس کا چولا هی بدل دینا چاهتے تھے ، وہ اُسے شکتی اور ستا کا نہیں' تیاگ اور سیوا کا پجاری بنا نا چاهتے تھے . اِس آدیشیه سے أنهور نه كانكريس كا ودهان بنا نا شروع كيا، اس كا كچه حصة لکھا . مگر دیش کی بدقستی که جس دن اُنہرس لے یه کلم شورع کھا اُسی دن اُیک دیش گھانک ٹریشانے کی گولی سے وہ اپنے دیھی واسیوں کے کلیان مارک میں بلی چڑھ گئے . اُن کی موت کے کارن کانگریس کا کایا کلپ کے هو سکا ، وہ نھا چوا نه بدل سکی ، وه سیوا کا راسته نه اینا سکی ، سریت پربهوتا کے رأستے پر دورنے اگی ، کام کی ایھمکا جیوں رس کا ابھاؤا ہرھایے کا شریر ۔ نتیجہ یہ ھوا کہ آئھ برس کی حکرست کے ہوج سے ھی وہ تھک کر چور چور ھوگئی . اِس کے اویو تعلیا یونے لکے اور انگ برتینگ بیکار ہونے لکے . 27 برس سے وہ جنتا کے دلوں کی پیاری اس آنعہوں کا نور اور اس کی آمیدوں کا سہاراً تھی ۔ ملک کی آزادی آخر کاتعریس کے ھی کوکھ سے جنسی اور پالنے پر اس کی لوریاں اُس نے سنیں ۔ اُستی جنتا کی آمیدیں کاتعریس سے ٹوئنے لئیں ، آج ملک کا دل بھلے ھی کائگریس کے ساتھ مو مگر دماغ اُس کا بھٹک رہا ہے ۔ جہاں پہلے ایک می ترنگا نشان لہراتا تھا رہاں آج دو رنگے' ایک رنگے' لیک نشان پارٹی أنسر میں پھہرا

یه نہیں که کانگریس اِس ساری دیفیت کو سمجھتی نہیں۔
وہ خوب سمجھتی ہے، اُسے نے روگ کا سبب بھی نقونتھانے کی
کوشش کی ، مکر جب تک گاندھی جی زندہ تھے وہ ھر برائی کا
دوشی سب سے پہلے اپنے کو بتاتے تھے ، خود اپنی ذات سے علاج
شروع کرتے تھے ، مکر اُن کے بعد کھا ھوا ؟ کانکریس کی
پڑھی ھوئی انوشاس مینتا اور اپرئیکا کے لئے ٹیتاؤں نے ، چھوٹ
ٹیکاؤں کو دوش دیا' چھوٹ نیتاؤں نے ایم، ایل اے لوگوں کو
زمعوار تھہرایا اور پھر سب نے ایک رائے سے ملکر پدھیں' ستاھیں'
بھوکھ اور الجار چھوٹ چھوٹ ھزاروں کانکریس کے کام کرنے والوں
کے سر پر کانکریس کی ساری مصهبتوں کی زمع واری موج دی ،

ررگ کا وہ صحیح ندان نہیں تھا اِس لئے ھر علے کانکریس کو صحت دینے میں ناکانی نابت ھوا جنتا کے

ال میں کے وات بیٹیتی سی جارهی هے که کانکویس راسته بیٹک ئئی هم آلی. سی ایس. انسرس آنعوا شاستریس سیمریتریت کی النبي اليويت سيكريتريون اور يرسنل الستنتون كي قطارون سنهلی وردی یهتی سے لیس چپراسیس اب تو تیک تی اکس ہٹروں ائیر کنڈیشنڈ حربلیوں نے ملکر اُس کے نیتاؤں کے رشتی یتم پر ایک دمنده سا ایک کهرا سا بهیلا رکها هے. الکاریس کی ٹیتاشاهی تیاگ کے یگ کے بعد بھرگ کے یگ ے گذر رهی هے . جب درواسا هي مينكا ير ربيع كئے تب بھوگے تھاگیوں کی بھلا کیا بساط ! مکر درواسا اور مینکا کے منیوک سے بیداً هوئی تهی شکنتلا کنتو منتریوں اور آنسو شاهی کے سنھوگ سے انھکانیک جارج سلتائیں۔۔۔کنترول' بلیک' اركيت أكريشن رشوت خوري سفارش أدي ييدا هونين سپریٹریٹ کے یالنوں میں یہ جھولیں اور دیش کی یونجی شاهی فے اِنہیں استوریاں کرایا، جنتا نے سویم اسے ساھس کے بل یں پوتناؤں اور تارکاؤں کا بدھ کرنے کی کوشش کی مکر وہ یہی لچ تیکی هوئی سی بے بس نظر آتی هے .

ھر پھر کر اُس کی نظریں جواھر لال کی طرف جاتی عين . مكر أكيل جواهر لال كيا كرين ﴿ أَخُرُ وَهُ انسان هين اور انہوں نے سب کنچھ سیکھا مگر اپنے گرو سے وہ کلا نہیں سیکھی کہ مٹی کے پتلیں میں کیسے جان ڈالی جاتی ہے ؟ پتت سے بنت آنسان کو نیتمتا کی سیرهی سے کیسے اُرنیچا اُنَّها یا جا سکتا ہے ؟

جواهر لال بهي حيران أور يريشان هيس . جنتا أيني لابه كي بوجناؤں میں خود کوئی دلچسپی نبیں لیتی ایسی أنهیں شکایت ہے . کبھی کبھی تو یہ شکایت اُن کی نقریروں سے بربس پوت پرتی ہے . مگر جس بوجنا کے بنائے میں جنتا کی رائے اور مشورہ نے لیا گیا هو اُس یوجنا کے لئے جنتا میں اُنساہ کی لهر کیسے دور سکتی ہے ؟ جنتا کا اُنساہ اور سہیوگ حاصل کرنے کا رام بان نسخه کاندهی جی نے بتایا تھا ۔ انھوں نے کہا تھا۔ "جنتا کی ساوا کے لئے سب سے پہلے ہمیں سفید پوشی کی ائز چهرزتا هوگا . همین سماج کی سب سے نینچی سهرهی یو جاكر بيتهنا هوكا جهال غريب بهنكي بيتها هي حب هم أين كو أننا نمر بنا لينك تب هم جنتا كي كريا ياتر بن سكينگ ، تب جنتا أينا دل كهولكر همارے آگے ركهيكى جب وہ ديكهيكى كه هم أسى كے وچاروں كو اپنى بائى ميں بولتے ھيں تب ھم آس كے سچے پرتیندھی بنینکے ." ایک دوسرے آوسر پر انھوں نے کہا تها-"ستا اور سنکتهن کو وش میں کرنے کی چنتا ته کرو جنتا کو رش میں کرو۔ اگر جنتا وش میں هوجائیکی تو ستا اور سنکتهن ریجهے هو نے تمهارے بینچهے بهرینکے . ''

أج ديش كي مصيبتون كا مول إس مين هے كه شاسك

विश में यह बात बैठती सी जा रही है कि कांग्रेस रास्ता मटक गई है. आई. सी. एस. अफसरों, आंकड़ा-शास्त्रियों, सेकेटेरियट की फाइलों, प्राइवेट सेकेटरियों और पर्सनल असिसटेंटों की कतारों, सुनहली बदीं पेटी से लैस चपरा-सियों, अपदुडेट ही लक्स मांटरों. एअर कंडीशन्ड हवेलियों ने मिलकर उसके नेताओं के दृष्टिपथ पर एक धुन्ध सा, एक फोहरा सा फैज़ा रखा है. कांग्रेस की नेताशाही त्याग के युग के बाद भोग के युग से गुजर रही है. जब दुर्वासा ही मेनका पर रीभ गये तक कलियुगी त्यागियों की भला क्या विसात ! मगर दुर्वासा और मैनका के संयोग से पैदा हुई थी शहुन्तला, किन्तु मंत्रियों और अकसरशाही के संयोग से अनेकानेक जारज सन्तानं-कट्टोल, ब्लैक-मार्केट, करप्रान, रिश्वतखोरी, सिकारिश आदि पैदा हुई', सेक्रेटे-रियट के पालनों में ये भूलों और देश की पूँजीशाही ने इन्हें स्तनपान कराया. जनता ने स्वयं अपने साहस के बल इन पूतनाओं और ताङ्काओं का वध करने की कोशिश की, मगर वह भी कुछ थकी हुई सी बेबस नजर आती है.

हिर फिर कर उसकी नजरें जवाहरलाल की तरफ जाती हैं. मगर अनेले जवाहरलाल क्या करें ? आखिर वह इनसान हैं और उन्होंने सब कुछ सीखा मगर अपने गुरू से वह कला नहीं सीखी कि मिट्टी के पुतलों में कैसे जान डाली जानो है ? पतित से पतित इनसान को नैतिकता की सीढ़ी से कैसे ऊँचा उठाया जा सकता है ?

जवाहरलाल भी हैरान और परेशान हैं. जनता अपने लाभ की योजनाश्रों में ख़ुद कोई दिलचस्पी नहीं लेती-पेसी उन्हें शिकायत है. कभी कभी तो यह शिकायत उनकी तक्करीरों से वरवस फूट पड़ती है. मगर जिस योजना के बनाने में जनता की राय और मशबिरा न लिया गया हो इस योजना के लिये जनता में उत्साह की लहर कैसे दौड़ सकती है ? जनता का उत्साह और सहयोग हासिल करने का रामबाण जुस्ला गान्धी जी ने बताया था, उन्होंने कहा था- "जनता की सेवा के लिये सबसे पहले हमें सकेदपोशी की अकड़ छोड़ना होगा. हमें समाज की सबसे नीची सीढी पर जाकर बैठना हागा जहाँ गरीब भंगी बैठा है. जब हम अपने की उतना नम्र बना लेंगे तब हम जनता के क्रपापात्र कन सकेंगे. तब जनता अपना दिल खोल कर हमारे आगे ्रस्तेगी. जब यह देखेगी कि हम उसी के विचारों को अपनी बानी में बोलते हैं तब हम उसके सच्चे प्रतिनिधि बर्नेगे." एक दूसरे अवसर पर उन्होंने कहा था-"सत्ता श्रीर संगठन को बरा में करने की चिन्ता न करो, जनता को वश में करा. क्यार जनता वश में हो जायगी तो सत्ता और संगठन रीमे इपे तुम्हारे पीछे फिरेंगे ."

आत्र देश की मुसीबतों का मूल इसमें है कि शासक

سکا اور شکتی پر ریجے موٹے میں ۔ تفاق اور سهوا کی بهاؤتا اُن کے مردے سے نکل گئی کے اگریس کا سنگلین آج کانکویس کے پارلیامینٹری جو کا ورخرید ظلم ہے ۔ اُس مهں نیا خون بنکا بند موگیا ہے ۔ پرائے نیٹا اپنے نجی سوارتیوں کے لئے ایم ۔ ایل ، آ۔ کی نظاروں سے لیکو منتریوں تک مورچہ بندی کئے موثے میں ، دھنی لوگ جنہوں نے چور بازاری میں بیسہ پیدا کیا ہے اپنی تهالیوں کے زر پر کانگریس میں پرویش یا رہے میں ، پرائے نسپرہ سیوک سنستھا سے گروہ بازیوں کے یہے نکانے جا رہے میں ، دھن میں ، دھن میں ، دھن میں کانگریس کومیوں کے لئے آجے سیوا کے سب دروازے بلد میں ،

اس کشکش میں جنتا کی سیوا گونے کا سے اور فرصت کسے اور فرصت کسے اور جناؤہ پارٹی اسے اور فرصت کیوس میدوں چناؤہ پارٹی اسے میں اسے انہیں کے اردگرد کانگریس سنگلیں کا بچمر تیزی سے گہرم رہا ہے، مکر نے سنگلیں آگے پرھتا ہے، نے میشا آگے بوھتی ہے اور نے دیفی آگے پوھتا ہے ۔

هیں بنگال کے پرسدھ گرپال بھائٹ کا قصد یاد آتا ہے، کھی آنساھی لوگوں نے نوکا چلانے کی هور کی ٹھائی، دئی دل میں میں شامل هوئے، ساری رات کی هور تھی، سب نے چپو سنبھالے اور چپپ ! چپپ چپھا ! جبپ کی زوردار آرازوں سے کلی گرنجانے لئے، سب ایک دوسرے سے آگے بڑھنے کے خھال سے چپو چلا رہے تھے، رات بھر بنا تھکے' بنا جبھکی لئے لوگ چپو چلا رہے تھے، رات بھر بنا تھکے' بنا جبھکی لئے لوگ چپو چلا رہے تھے، جب سویرا هوا' اندهیرا مثا تو لوگوں کو بڑی حیرائی هوئی که ساری رات چپو چلانے کے باوجود ناریں جہال کی تہاں کپڑی هیں ، ایک اِنچ بھی آگے نہیں بڑھیں، بات یہ تھی که لوگ کپونٹوں سے ناؤں کی رسی کپولنا هی بھول گئے تھے ، نتیجہ یہ هوا که ساری متحانوں کے باوجود ساری پارٹیاں جہال کی تھاں کپڑی رهیں حالانکہ اندهیرے میں سب یہ سمجھتے تھے که هم انتظابی پرگئی کے ساتھ منول مقصود تک سمجھتے تھے که هم انتظابی پرگئی کے ساتھ منول مقصود تک سمجھتے تھے که هم انتظابی پرگئی کے ساتھ منول مقصود تک

सत्ता और राकि पर रीके हुने हैं. स्थान और बेंबा की मावना उनके हृद्य से निकल गई है. कांग्रेस का संगठन आज कांग्रेस के पालियामेन्टरी जुज का जर-जरीद गुलाम है. उसमें नया जून बनना बन्द हो गया है. पुराने नेता अपने निजी स्वार्थों के लिये एम. एल. ए. की क़तारों से लेकर मंत्रियों तक मोर्चाबन्दी किये हुने हैं. बनी लोग जिन्होंने चार बाजारी में पैसा पैदा किया है अपनी बैलियों के जोर पर कांग्रेस में प्रवेश पा रहे हैं. पुराने निस्पृह सेवक संस्था से गिरोह-बाजियों के जरिये निकाले जा रहे हैं. घनहीन कांग्रेस कर्मियों के लिये आज सेवा के सब दरवाजे बन्द हैं.

इस करामकरा में जनता की सेवा करने का समय और कुरसत किसे ? मंडे, नारे, जुलूस, दिवस, मेम्बरी, जुनाव, पार्टी, एट-होम, मानपत्र, थेली—इन्हीं के इदें गिर्द कांग्रेस संगठन का चक्र तेजी से घूम रहा है, मगर न संगठन आगे बढ़ता है, न जनता आगे बढ़ती है और न देश आगे बढ़ता है.

हमें बंगाल के प्रसिद्ध गोपाल मांड का क्रिस्सा याद आता है. कुछ उत्साही लोगों ने नौका चलाने की होड़ की ठानी. कई दल मैच में शामिल हुये. सारी रात की होड़ थी. सब ने चप्पू सन्हाले और छप ! छप छपा ! छप ! की जोरदार आवाओं से कान गूँजने लगे. सब एक दूसरे से आगे बढ़ने के ख्याल से चप्पू चला रहे थे. रात भर बिना थके, बिना मपकी लिये लोग चप्पू चला रहे थे. जब सबेरा हुआ, अंधेरा मिटा तो लोगों को बड़ी हैरानी हुई कि सारी रात चप्पू चलाने के बावजूद नानें जहाँ की तहाँ खड़ी हैं. एक इंच भी आगे नहीं बढ़ीं. बात यह थी कि लोग खूँटों से नावों की रस्सी खोलना ही भूल गये थे. नतीजा यह हुआ कि सारी मेहनतों के बावजूद सारी पार्टियाँ जहां की तहां खड़ी रहीं, हालांकि अंधेरे में सब यह सममते थे कि हम इनक्रलाबी प्रगति के साथ मंजिले मक्रसूद तक पहुंचने के लिये औरों से बाजी मार रहे हैं.

गोपाल भांड का यह किस्सा आज की हमारी राजनैतिक पार्टियों के ऊपर हर्फ बहर्फ सच जितता है. सब पार्टियों सत्ता और शिक्त की भूखी हैं, भोग के लिये सब के जी मचल रहे हैं. सेवा और त्याग की भावना से कोई काम नहीं कर रहा, चाहे वह पी. एस. पी. हो, कम्जूनिस्ट पार्टी हो, जनसंघ हो, अकाली दल हो, द्रविक सजगाम हो वा रोड्ल्ड कास्ट फेडरेशन हो. सब के सब सत्ता हिययाने के लिये ज्याकुल हैं. वही नारे, वही मंडे, वही जुलूस, वही हाय हाय! जैसे नाग-नाथ वैसे साँपनाथ. जनता की सेवा की भावना से सैकड़ों भील दूर. मन में यही खाहिश कि कब कांमेस का दम निकले और कब हम मंत्रियों की कुरसियों पर जा बिराजें. सब जोरद सुद्रारजी की खूँटी में अपनी प्रगति की रस्सी बाँध रसी हैं! फिर नाव बड़े से सेने कड़े १ हाँ दिल

بیلالے کو ملک ھی بعد سمجھتے رفقین که پرکٹی پٹو پر سب سے آگے بعدر بازی مار رقے میں .

م يهر قيا هاد ساورے تو كيسے ساورے ؟ هاد أينے كو قائد روپ میں گُڑھ تو کیسے گڑھ ؟ دیش آگہ بڑھ تو کیسے بڑھ ؟

شمتی سے نہیں، تیاک اور سیوا سے .

برٹھ سامراہواد کی جو سب سے بھیتکر مصیبت ھیں رزی میں ملی وہ تھسٹوکر شاھی۔۔۔نوکر ہوکر امالک کا دمیہ بُرِنے کی نیتی ! یوں کہنے کو هماراً دیش لوک تنتر ہے ، لوک تنتر کا اُرتھ کے جنتا کے هاتھوں میں راج کی باگ دور ھونا . لیکی یہ بات صرف ایک دن کے ائے۔ چااؤ کے دن کے لئے۔ هم محمد ع ، بالى بائى بائى برس تو سيوك هى سوامى بنا رهتا ھے، اربوں کھربوں کی اِسکیمیں بنا جنتا روپی مالک سے بوجھے یا ملام مشورہ کئے پاس کرلی جاتی میں . نئے نئے کررں کا بہج اس کے سر پر موہ دیا جاتا ہے . منتریوں اور جاتا کے بیچ میں آنسر شاهی کا دور دورہ چل رها عے . جہاں جنتا نے چوں ۔ چپر کی ' مالک نے سیوک سے کچھ جواب طلب کرنے کی کستانمی کی تو بات بات پر لائیی گولی ئیئرگیس سے أس كا سواكت هونے لكتا هے . جنتا بهوكھى هے مكر سهوك جمعماتا معمعاتا باتا شو يهن كر گهرمته هين ، مالك كے بچوں کو پڑھنے کا ٹھکائے نہیں سیوک کے بھے اِنگلینڈ - اُمریکہ میں مالک کے دھن سے پڑھنے جاتے ھیں ، مالک ننکا ھے پر سیوک ریشنی بیششرت پهن کو گهرمته هیں . سوامی جلتی بالو میں یورل چلتا ہے مگر سیوک تی لکس موتروں میں کہرمتا ہے ، مالک جہرنیزی میں رہنا ھے مگر سیوک ابئرکلڈیشنڈ حویلیوں میں رہتے ھیں۔ مالک کے بچے دوا کے بنیر ترپ ترپ کو مر جاتے هیں ' سکر سیوک کے زکام کو دور کرنے کے لئے سول سرجن اور بڑے بڑے ڈاکٹر ھاتھ بائدھ کھڑے رھتے هيں أور كهنتے كهنتے بعد هيلته بوليتن نكالتے هيں! أخر يه کس یرکار کا سیوک سوامی کا رشته ہے ؟ ارر اگر أب جنتا سیوک كي يوجناؤن مين كوئي داحصهي تهين ليتي تو جواهر اللجيء جو که جنتا کے سجے سیوک اور همدرد هیں' اُنہیں جنتا کی دلی کینیت کا وشلیشن چهان بین کرنا چاهئے؛ جنتا کے سیرکیں کے طرز عمل کو اُنہیں بدلنا چا۔ اُنے کا حکومت کے تھالجے میں سدھار کرٹا چاھئے؛ جنتا کے سرامتو کو جنتا کے ھاتھوں میں ديدًا چاهئے؛ توکر شاهی کو سمایت کرنا چاهئے؛ جذاتا اور شاسکوں کے بیچے رهن سين کے استر کی کھائی کر پاٹنا چاھئے؛ کانکریس کو جن سیوکوں کی سچی جماعت بنانا چاهای ملی جلی حکومت بناکر دیص کی سیوا کرنی چاهئے؛ اور شاسکیں کو سیع دینی چاھٹے که دیھی کے کلیان کا راسته ستا اور بھوگ میں نہیں' سہوا اور تیاک میں ہے ۔

وشومنهر ثاته بالتبن

वदकाने की मन ही यह सममते रहें कि अगति-पथ पर सब से बागे बढकर बाजी मार रहे हैं.

फिर नया हिन्द सँबरे तो कैसे सँबरे १ हिन्द अपने को मेरी रूप लें गढ़े तो कैसे गढ़े ? देश आगे बढ़े तो कैसे बढ़े ? गान्धी जी का बताया एक ही मूल मंत्र है-सत्ता श्रीर

शकि से नहीं, त्याग और सेवा से.

ब्रिटिश साम्राज्यवाद की जो सबसे भर्यकर मुसीबत हमें बिरसे में मिली वह है-नौकर शाही-नौकर होकर मालिक का दम्भ भरने की नीति ! यूँ कहने को हमारा देश लोक-तंत्र है. लोकतंत्र का अर्थ है जनता के हाथों में राज की बागडोर होना, लेकिन यह बात सिफ एक दिन के लिये-जुनाव के दिन के लिये—ही सही है. बाक़ी पाँच बरस तो सेवक ही स्वामी बना रहता है. घरबों-खरबों की स्कीमें विना जनता रूपी मालिक से पूछे या सलाह मराविरा किये पास कर ली जाती हैं. नये नये करों का बोम उसके सर पर मद दिया जाता है. मंत्रियों और जनता के बीच में अक्रसर-शाही का दौर-दौरा चल रहा है. जहाँ जनता ने चूँ-चपड़ की, मालिक ने सेवक से कुछ जवाब तलब करने की गुस्ताखी की वो बात बात पर लाठी, गोली, टीयर गैस से उसका स्वागत होने लगता है. जनता भूखी है मगर सेवक चम-बमाता, मचमचाता बाटा शूपहन कर घूमते हैं. मालिक के बच्चों को पढ़ने का ठिकाना नहीं, सेवक के बच्चे इंगलैंड-अमरीका में मालिक के धन से पढ़ने जाते हैं. मालिक नंगा है पर सेवक रेशमी बुशशर्ट पहन कर घूमते हैं. स्वामी जलती बाबु में पैदल बलता है मगर सेवक ही लक्स माटरों में घुमता है. मालिक भोंपड़ी में रहता है मगर सेवक एम्रर कडीरान्ड हवेलियों में रहते हैं. मालिक के बच्चे दवा के . **बरीर तक्प-तक्प कर मर जाते हैं** मगर सेवक के जकाम को इर करने के लिये सिविलसर्जन और बहे बहे डाफ्टर हाथ बाँधे खड़े रहते हैं और घंटे घंटे बाद हेल्थ-बुलेटिन निकालते हैं ! आखिर यह किस प्रकार का सेवक स्वामी का रिश्ता है ? और अगर आज जनता सेवक की बीजनाओं में कोई दिलचस्पी नहीं लेती तो जवाहरलाल जी. को कि जनता के सच्चे सेवक और इमदर्द हैं, उन्हें जनता 🖏 विली कैफियत का विश्लेषरा, छान बीन करना चाहिये; सेयकों के तर्जे अमल को उन्हें बदलना चाहिये; हुकूमत के में संधार करना चाहिये; जनता के स्वामित्व का जनता ह्यां में देना चाहिये; नौकरशाही को समाप्त करना कार्डिये: जनता और शासकों के बीच रहन सहन के स्तर की कि को पाटना चाहिये; कांग्रेस को जन सेवकों की सच्ची असाद बनाना चाहिये; मिली जुली हुकूमत बना कर देश की केवा करती चाहिये; और शासकों को सीख देनी चाहिये कि देश के कल्याया का रास्ता सत्ता और भोग में नहीं, सेवा जीर साम में है. —विश्वनभरनाथ पांडे

सांस्कृतिक साहित्य

سانسكوتك ساهتيه

हजरत मोहम्मद श्रीर इसलाम

लेचक-परिडत सुन्दरलाल, मृत्य-तीन रूपा इसनाम के पैगम्बर के सम्बन्ध में भारतीय भाषाओं में इस से मुन्दर कोई दूसरी पुस्तक नहीं

हजरत ईसा ऋोर ईसाई धर्म

लेखक-पन्डित सुन्दरलाल, मूल्य-डेढ़ रूपया

महात्मा जरथुस्त्र ऋौर ईरानी संस्कृति

लंखक-विश्वम्भरनाथ पांडे, क्रीमत-दो रूपया

यहूदी धर्भ और सामी संस्कृति

लेख र-विश्वनभरनाथ पांडे, क्रीमत-दो रूपया

प्राचीन मिस्र की सभ्यता और संस्कृति

लेख र-विश्वमभरनाथ पांड, कीमत-दो ह या

पुमेर बाबुल ऋौर ऋसुरिया की प्राचीन संस्कृति

लेख र-विश्वनभरनाथ पांडे, कीमत-दो क्राया

प्राचीन यूनानी सभ्यता ऋ र हंस्कृति

लेखक-विश्वस्भरनाथ पांडे, क्रीमत-दे। रुपया

गंगा से गोमती तक

(प्रगतिशील कहानी संप्रह्)

लंखक-श्री मुजीब रिजवी, क्रीमत--- दो रूपया

आग और आँस्

(भावपूर्न सामाजिक कहानियाँ) लेखक डाक्टर ऋस्तर हुसेन रायपुरी, क्रीमत डेढ़ रुपया

. कुरान ऋौर धार्मिक मतभेद

लेखक—मौलाना श्रबुलकलाम श्राजाद, क्रीमत—डेढ़ रुपया

भंकार

(प्रगतिशील किवतात्रों का संप्रह) लेखक—रघुपति सहाय फिराक, क्रीमत – तीन रूपया

मिलने का पता

حضرت محمد أور إسلام ليه ك--بندت سندر الل موليه--تين روپيه

اِسلام کے پیغمر کے سمبندھ میں بھارتیہ بھاشاؤں میں اِس سے سندر کوئی دوسری یستک نهین

حضرت عيسي اور عبسائي دهرم ليكسبندت سندر ال موليه موليه

مهادما زر تهستر اور ایرانی سنسکرتی اینهک رویه اینهک رویه

يهوى م هرم أور سامى سنسكوتى ليكهك رشومهر ناته باندے ' تيست دو روپيه

پراچین مصر کی سبهیتا اور سنسکرتی ایکهک—رشومهر نانه باندے تینت—در روپیه

سهبر' بابل اور اسوریا کی پر اچین سنسکرتی

ليكهك -رشومبهر ناته پائدے تيمت دو روينه

پراچین بونانی سبعیتا اور سنسکرتی لیکهک—رشوسهر ناته پاندے ناتم در رویه

گنگا سے گومتی تک

(پرگتی شیل کہانی سنوہ)

لیکھک - شری منجیب رضوی'

أگ اور انسو

(بهاؤدورن سمآجک کهانیان) لهکهک ستاکتر اختر حسین رائے پوری تیست - تیزه روپیه

قرآن اور دهارمک معیهید

ليكهك ــمولانا أبركالم أزاد ويمت تيمت تيره وويه

جهنگار (پرگتیشیل کویتاؤں کا سنگوہ)

ليكهك ركبوريتي سهائم فراق تيمت تين روپيه

ملنے کا یته

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी उँगान अक्रार उपान्यांक

145 मुट्टीगंज, इलाहाबाद منهی کنج العآباد 145 निकार

हिन्दी घर

कलचर पर हर तरह की किनावें मिलने का एक वड़ी केन्द्र—पाठक हिन्दीं, उदू, अंग्रेजीं की अपनी मन-पसन्द किनावीं के लिये हमें लिखें।

> हमार्ग नई कितावें महात्मा गान्धी की वसीयत

(हिस्दी धीर उद् में के लेखक - साम्भीवाद के सामे जार विधास की भीतर दर्ज कारण सफे 225, जीसम चर्माका

गान्धी वावा

(यहची के किने कहत दिनक्षा विताब केम्बका क्षांभ्यका दिन मुम्मिक—पोन्डन काइनका (१८०० भोटा कागल, मेच्या टाइप करता की केमन तस्वीजें दाम की करवा

पंडिम स्विकाल की के लिको किस्स्य

गीता और ऋगन भारतम्बर्गन्त

हिन्दू मुर्मालम एकता

अवस्मात, साम बाक अवस

महात्मा गानधी के चलिदान से सचक

कीमन बारह त्यान

पंजाब हमें क्या सिखाता है

कीमत चार आसे

बंगाल और उससे सवक

क्रामन दो कान

हिन्दुस्तानी कलचर सांसायटी

145 मुद्दोगंज इलाहाबाद

هندی گهر

تابیر پر هر طرح کی کتابیں ملنے ایک برا کیندر۔۔پاٹھک هندی والکی برا کیندر۔۔پاٹھک هندی کی رو انگریزی کی می پسند کتابوں کے لئے همیں لکھیں .

هماری نئی کتابیسی ا

مهاتها کاندهی کی وصبت

(هغدی اور آرده میں) لیکھکے۔۔۔۔ ٹائدیتی واد یے مانے ساتے وفدواں: تابوی منظ علی سوحانہ صفحے 1225ء فیمات کو آرویانہ

كندهي بابا

الأم الله المعالم

يعدف سيرافي جي آن آسي آه هي

کیڈیا اور قرابی 275 مسمنے دار سامی ہوا۔

هندو مسلم ایکتا 160 صحیر دام در آی

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

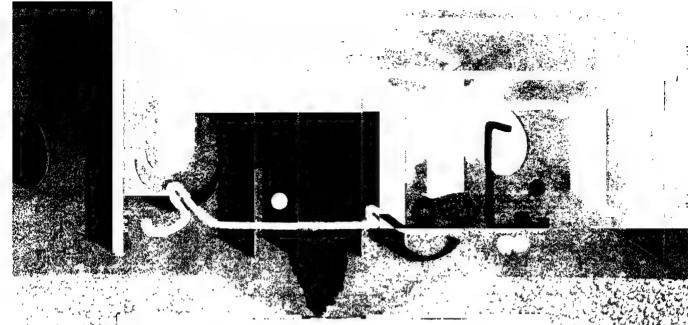
بنجاب همیں کیا سکھانا نقے

بنگال اور أس سے سبق

هند ستانی کلیجر سوسائشی

145 متهى كنج الدآباد

Printed and Published by Saresh Ramabhai, at the Naya Huel Press, 145, Mathiganj, Allahabad.



इस नम्बर के ग्हास लेख हुआ को टं रू हिन्दुस्तान श्रीर ईरान का सम्बन्ध عندسة اور ايران كا سمونده سة كثر تارا چند -डाक्टर ताराचन्द् "नया चीन" के नाम النيا چين کے نام —पंडित सुन्दरलाल -ينڌت سندر ال विज्ञी सदी के एक कक्कीर की डायरी ائیسویں صدی کے ایک نتیر کی قابر ہی --पंडित सुन्दरलाल --ينذت سندر لال डा० भगवानदास स्त्रीर वर्ण व्यवस्था اور ورن ويرستها इंग्लंड —माई रघुपति सहाय 'फ़्राक्त' 'راق' مهائے 'وراق' — तपेदिक का टीका نبدق كا تيكه —श्री चक्रवर्ती राजागोपालाचारी چاری چکرررتی اجاگربالاچاری

14 A 66

इसके ऋलावा

भाः देस विदेस के मसलों पर हमारी शय में जरूरी सम्पादकी नोट دیس بدیس کے مثلوں پر هماری رائے میں ضروری سیادکی نوت

कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद भिंगीयां के प्राचित्र के कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद

NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

Editorial Board

Dr. Tara Chand M.A., D. Phil., Oxon)

Mahatma Bhagwan Din

Dr. Syed Mahmud, M.A., Ph.D., Bar-at-Law

Pandit Sundarlal

Bishambhar Nath Pande

Editor-in-Charge

Bishambhar Nath Pande

Asst. Editors

Suresh Rambhai Mujib Rizvi

Annual Subscription

Inland Rs. 6/-Foreign Rs. 10/-Single Copy As. /10/- only

Can be had from -

Manager, NAYA HIND

145. MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3.



जिल्द 20 नम्बर 4 भू



अक्तूबर 1955 भूगी

विन्दुंस्तानी कलचर होदादाते हां प्राचीन कलचर होदादादा अविक अविक १४० १४४

श्वनत्वर 1955 ।

				·
f	या किस से	सक्।	منصد	يها كس سے
1	• हिन्दुस्तान श्रीर ईरान का सम्बन्ध			1. منستان اور ایران ۲ سمنده
•	—डाक्टर ताराचन्द	19	3	ـــقائلر تارا جاد
2	· ''नये चीन'' के नाम			2. ''لها چهن'' کے نام
_	—पंडित मुन्दरलाल	206	3	مسينتك سندرال
8	उन्नीसवीं सदी के एक फ्रक़ीर की दायरी			8. الیسریں مدی کے ایک نقیر کی تأبری
	—पंडित सुन्दरलाल	211	•••	سينتب سنبر ال
4,	हो चेन घू 'आदश मज़द्र' कैसे बनी !			4. هوچهن شو 'آدرهن مزدور' کیسد بلی 9
_	— श्रीमती प्रभा एम० ए० ,,,	216	***	ـــفريبتي پريها ايم ، لــه .
5,	मोहम्मद साहब के इस उपदेश			في محمد ماهب كے كتھ أيديش
	— अनुवादक भी मुजीब रिजवी	221	•••	الورادك شرى مجهب رفوى
6,	डा. भगवानदास और वर्ण व्यवस्था			6. دانگر بهکران داس اور ورن ویوستها
	—भाई रघुपति सहाय 'फ़िराक्'	224	•••	يهائي رگهويتي سهائم انولق ⁴
7,	तपेदिक का टीका		•	7. نهدق کا ٹیکه
	-श्री चक्रवर्ती राजागोपालाचारी	231	•	سشری چارورتی راجاگویالاچاری
8,	इब कितार्वे—	241	•••	8. كىچە كتابىر—
9.	इमारी राय	244	***	9، هماري رائه—
	नये चीन को मुबारकवाद !; यह क्यों १; दुनिया की माताचों की कांग्रेस—पंडित सुन्दरताल .			ئیے۔ چین کو مبارکباد ! ؛ یه کیس ؟؛ دلیا کی ماتاؤں کی
	•			كانكريس-سينته سادرال ،

A STATE OF THE STA

पुराने जमाने से अब तक हिन्दुस्तान स्रोर ईरान का सम्बन्ध

پرانے زمانے سے اب تک هندستان اور ایران کا سبندھ

CONCONCONCONCONCONCONCONCON CON CON

[ईरान में 16 अगस्त सन् '55 को एक इन्हो-ईरानी कलचरल ऐसोसिएशन की बुनियाद रखी गई. उस मौक्ने पर ईरान में भारत के राजदूत और "नया हिन्द" के ऐडीटर डाक्टर ताराचन्द ने जो तक्तरीर की वह नीचे दी जाती है.]

\$\$ \$\$ \$\$

हिन्दुस्तान और ईरान एशिया के ऐसे दो देश हैं जिन्हें कुद्रत ने एक दूसरे के पास पास बसाया है. दोनों के बीच के पहाड़ों के सिलसिले और फैला हुआ समन्दर कभी भी दोनों तरफ से लोगों के मेल जोल को नहीं रोक सके. इन बीच की क्कावटों की वजह से दोनों तरफ के साहसी और प्रेमी लोग और भी ज्यादा एक दूसरे की तरफ खिंचते रहे हैं. जब से इनसान की तारीख शुरू होती है उसके पहले से आज तक लगातार काफिले के काफिले जमीन के और पानी के रास्ते पहाड़ों, जगलों, रेगिस्तानों और समन्दर को पार करते हुए इधर से उधर और उधर से इधर आते जाते रहे हैं.

हिन्दुस्तान और ईरान के बीच आने जाने की यह कहानी हजारों बरस की पुरानी कहानी है. इन दोनों देशों का यह सम्बन्ध केवल पुराना ही नहीं है, यह इतना गहरा है और इनसानी कलचर के हर पहलू पर इस तरह छाया हुआ है कि उसे पूरी तरह बयान करने के लिये बहुत सी जिल्हें भी नाकाफी होंगी.

आज इन दोनों मुल्कों की इस कलचर के केवल एक पहलू का मुखतिसर सा हाल मैं आपके सामने पेश करूँगा. मैंने अपने आज के मतलब के लिये मजहब का पहलू चुना है क्योंकि मजहब हर आदमी के लिये भी और पूरी समाजी जिन्दगी के लिये भी, दोनों के लिये, बड़ी गहरी से गहरी अहमियत रखता है, किसी भी क्रीम की आत्मा की गहरी हमंगें और लालसायें उनके मजहब ही से अगट होती हैं.

आज में यह दिखाना चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान और हैरान एक दूसरे के केवल पड़ोसी ही नहीं हैं, इन दोनों सुल्कों की आत्माएँ भी एक दूसरे के बहुत निकट रही हैं और है. यह दोनों क्रीमें एक ही नसल से हैं. इनकी भाषाओं, इनके धार्मिक अनुभवों और धर्म मजहब की तरक इन दोनों के रख में भी हमेशा बहुत बड़ी समानता रही है.

मालूम पड़ता है कि इन दो मुल्कों के लोगों ने लगमग एक साथ एक ही करा क्रमसानी तहकीय की क्रमति की ایران میں 16 اگست سن 55° کو ایک اِندو ایرانی کلچول ایسسئیشن کی بنیاد رکھی گئی . اُس موقعه پر ایران میں بھارت کے راج دوت اور ''نیا هند'' کے ایدیالو داکلو تارا چند نے جو تقریر کی وہ نیچے دی جانی ہے .]

\$\$ \$\ \$\

ھندستان اور ایران ایشیا کے ایسے دو دیش ھیں جاھیں قدرت نے ایک دوسرے کے پاس پاس بسایا ہے۔ دونوں کے بیچ کے پہاروں کے سلسلے اور پھیلا ہوا سمندر کبھی بھی دونوں طرف سے لوگوں کے میل جول کو نہیں روک سکے ، اِن بیچ کی رکاوٹوں کی وجہ سے دونوں طرف کے ساھسی اور پریسی لوگ اور بھی زیادہ ایک دوسرے کی طرف کینچتے رہے ھیں ، جب سے انسان کی تاریخ شروع ہوتی ہے اُس کے پہلے سے آج نک لگاتار قاتلے کے قائلے زمین کے اور پائی کے راستے پہاروں 'جنگلوں' ویکستانوں اور سمندر کو پار کرتے ہوئے اِدھر سے اُدھر اور اُدھر سے اُدھر اُدر آتے جاتے رہے میں ،

ھنیستان اور اِیران کے بیچے آنے جانے کی یہ کہانی ہزادرں برس کی پرانی کہانی ہے ، اِن دونس دیشوں کا یہ سبندھ کیول پرانا ہی نہیں ہے کہ اِینا گہرا ہے اور انسانی تلچر کے ہر پہلو پر اِس طرح چھایا ہوا ہے کہ اُسے پوری طرح بدان کرنے کے لئے بہت سی جادیں بھی ناکانی ہونگی ،

آج اُن دونوں ملکوں کی اِس کلحجور کے کیول ایک پہلو کا مختصر سا جان میں آپ کے سامنے پیش کرونگا ، میں لے اپنے آج کے مطلب کے لئے مذھب کا پہلو چنا ہے کیونک مذھب ھو اور پوری سماجی زندگی کے لئے بھی' دونوں کے لئے' بری گہری سے گہری اھمیت رکھتا ہے' کسی بھی قوم کی آنما کی نہری اُمنکیں اُور السائیں اُن کے مذھب پرگٹ ھوتی ھیں ۔

آج میں یہ دکھانا چاھتا ھوں که ھندستان اور ایران ایک دوسرے کے کیول پڑرسی ھی نہیں ھیں' اِن دونوں ملکوں کی آمائیں بھی ایک دوسرے کے بہت نکت رھی ھیں اور ھیں ، یہ دونوں نومیں ایک ھی نسل سے ھیں ۔ اِن کی بھاشاؤں' اِن کے دھارہ ک آنوبھوں اور دھرم مذھب کی طرف اِن دونوں ھی سے کے رخ میں بھی ھمیشہ بہت بڑی سمانتا رھی ھے ،

معلیم عوتا ہے کہ اِن دو ملکوں کے لوگوں نے لگ بھگ ایک ساتہ ایک ایک معلیم کی اُللتی کی

मंत्रितें तथ करनी शुरू कीं. यह दोनों मुस्क अरब सागर के हो सिरों पर हैं. पिछान के सिरे पर कारूँ नदी दिन्खनी जागरूस में से बहती हुई और उन मैदानों में से होती हुई जहाँ हैं एन की सब से पहली सभ्यताओं ने जन्म लिया था, ईरान की सादी में जाकर गिरती है. पूरब में सिंध नदी, जिसका निकास हिमालय की बरफानी चोटियों से है, पंजाब और बिंघ के मैदानों को सैलाब करती हुई किसी जमाने में कच्छ की सादी में जाकर गिरती थी. कारूँ और सिंघ दोनों आहों के पत्थरों और तरह तरह की उपजाक मिट्टी को अपने साथ डकेलती हुई हमेशा अपना रास्ता बदलती और इन दोनों मुस्कों के अलग अलग हिस्सों को उपजाऊ बनाती रही हैं.

अरब सागर के इन दोनों सिरों पर इनसानी तहजीब साथ साथ शुरू दुई, दोनों जगह साथ साथ शहर आवाद इप. खेती बाड़ी, पशु पालन और बातु की चीओं के बनने के साथ साथ दोनों जगह इनसान एक बहुत बढ़े दरजे तक हुररत की गुलामी से एक साथ आजाद हुआ, दौलत और विजारत, सामाजिक संस्थाएँ, राज सरकार, इस्म श्रीर हुनर दोनों जगह फले फुले और दोनों जगह की सभ्यताओं को तरक्की देने लगे. परिखम में तस्ते जमशीद, (परसी पोलिस), श्रूरा, काशान और निहाबन्द, उत्तर में अस्तराबाद और अनाव जैसे बहुत से प्राचीन ईरानी शहरों की खुदाई से वाबा, पीतल, काँसा, सोना, जवाहिरात और मिट्टी के वह वर्तन मिले हैं जिन से उस जमाने की ईरानी तहजीब और उसकी तरक्की की मंजिलों का पता चलता है. ठीक उसी षमाने की इसी तरह की चीजें मोहन जोदाड़ो, हड़प्पा और सिंघ नदी के आस पास के और मुकामों की खुदाई में मिलीं हैं. दोनों तरफ की इन चीजों से साफ पता चलता है कि यह दोनों सभ्यताएं कितनी मिलती जुलती थीं और इन दोनों ने एक दूसरे से किस क़दर लिया था. एलाम में शूश और अनजान के राजकाजी सम्बन्ध और वहाँ की राजकाजी संस्थाप हरूपा और मोहनजोदाड़ों के राजकाजी सम्बन्धों और संस्थाओं से बेहद मिलती जुलती हैं.

धलाम और हक्ष्पा दोनों की उस जमाने की हुकूमतेंराज पुरोहितों या पुरोहित राजाओं के हाथों में थीं. दानों जगह बही पुरोहित और वही राजा हाते थे. दोनों जगह इन बहुत से देवी देवताओं के उपर एक सब से बढ़ा देवता माना जाता था जो इन सबका राजा समम्मा जाता था और जो किसी पहाड़ के शिखर पर रहता था. दोनों जगह सूरज और चाँद की पूजा होती थी, जल और थल के देवताओं की पूजा होती थी, में बानी देवी माता की पूजा होती थी. देवी की पूजा होती थी. माँ यानी देवी माता की पूजा होती थी. منزلیں طب کوئی شروع کیں، یہ دونوں ملک عرب ساگر کے دو سُروں پر ھیں ، پچھم کے سرے پر کاروں ندی ' دکھئی زاگروس میں سے بہتی ھوئی جہاں ایران کی سب شے پہلی سبھیٹاؤں نے جئم لیا تیا' ایران کی کھاڑی میں جائر گرتی ہ ، پورب میں سندھ ندی جس کا نکاس ھمالیہ کی برفائی: چوٹیوں سے ہے' پنجاب اور سندھ کے میدائوں کو سیاب کوئی ھوئی کسی زمانے میں کچھ کی کھاڑی میں جائر گرتی تھی ، کاروں اور سندھ دونوں پہاڑوں کے پھروں اور طرح طرح کی آپجاؤ متی کو اپنے ساتھ تھکیلتی ھوئی ھمیشہ اپنا طرح کی آپجاؤ متی کو اپنے ساتھ تھکیلتی ھوئی ھمیشہ اپنا آپجاؤ بناتی رھی ھیں ،

عرب ساگر کے اُن دونوں سروں پر اِنسانی تہذیب ساتھ ساته شررع هوئي . دونوں جکه ساته ساته شهر آباد هوئے . کہتے ہاری کی پھریالی اور دھات کی چیزوں کے بننے کے ساتھ سانہ دولوں جکه اِنسان ایک بہت بڑے درجے تک قدرت کی غلمی سے ایک ساتھ آزاد ہوا ، دولت اور تجارت ساماجک سنستهائيں، والے سرکار، علم أور هنر دونوں جکه پھلے بهولے أور ارر دونوں جگہ کی سبهیتاؤں کو ترقی دینے لکے ، پیچھم میں تنت جمهید' (پرسی پولس)' شوهل کا هان اور نهارتد . أنر ميں أسترآباد أور أناو جيسے بہت سے پراچين ايراني شہروں کی کھدائی سے تانبعہ پیتل کانسا سونا جواهرات اوو مئی کے وہ ہرتن ملے ھیںجن سے اُس زمانے کی ایرائی تہذیب ارر اُس کی ترقی کی منزلوں کا پته چلتا هے . تُنهک اُسی زمانے کی اِسی طرح کی چیزیں موھن جودارو' ھڑیا اور سندھ ندی کے آس پاس کے اور مقاموں کی کھدائی میں ملی ھیں . دونس طرف کی اِن چیزس سے ماف پتہ چلتا ہے که یه دونس سببیتائیں کتلی ملتی جاتی تھیں اور اِن دونوں نے ایک دوسرے سے کسی قدو لیا تھا ۔ اِیالم سیس شوش اور انزان^ کے راج کاجی سینده اور وهال کی راج کاجی سستهائیل هر آیا اور موھن جودارو کے راج کاجی سیندھوں اور سنستھاؤں سے بےحد ملتی جلتی هیں ۔

ایام اور هرپا دونوں کی اُس زمانے کی حکومتیں راج پروهتوں یا پروهت راجاؤں کے هاتھوں میں تھیں ، دونوں جگه وهی پروهت اور وهی راجا هوتے تھے ، دونوں جگه لوگ بہت سے دیبی دیوناؤں کی پوجا کوتے تھے ، دونوں جگه اول بہت سے دیبی دیوناؤں کے آوپر ایک سب سے بڑا دیوتا مانا جاتا تھا جو اُن سب کا راجا سمجھا جاتا تھا اور جو کسی پہاڑ کے شکمر پر وہنا تھا ، دونوں جگه سورے اور چاند کی پوجا عوتی تھی' جل اُر تبلک دیوناؤں کی پوجا هوتی تھی' پریم کی دیوی اور سلتان اُنہتی کی دیوی کی پوجا هوتی تھی پوجا هوتی تھی بوجا ہوتی تھی بوجا کی دیوی ماتا کی پوجا هوتی تھی۔ ماں یعنی دیوی ماتا کی پوجا هوتی تھی۔ مان یعنی دیوی ماتا کی پوجا هوتی تھی۔ مان یعنی دیوی ماتا کی پوجا هوتی تھی۔

जाता था जैसे संब, जांप, रोर बरोरा, हर राहर, हर गाँव भीर हर घर का अपना एक अलग छोटा सा मंदिर होता था जिसमें इन देवी देवताओं की मिट्टी या पत्थर की छोटी होटी मुसियां होती थीं.

बहें बहें मंदिर जो जगूरात या जुदा का घर कहलाते थे चारों तरफ ऊँची ऊँची दिवारों से घिरे होते थे. उनके अन्दर बहें बहें चबूतरें होते थे. कई कई मंजिले एवान होते थे जिन तक पहुंचने के लिये ऊँची ऊँची सीढ़ियां होती थीं. इनके चारों तरफ ऊँचे मीनार होते थे. यह बिलकुल किले की तरह होते थे और इन मंदिरों में बेशुमार दौलत और लाखों मन गल्ला जमा रहता था.

एलाम और सिंध दोनों के इलाक़े पुरोहित राजाओं के हाथों में एक जबरदस्त शिकंजे में कसे रहते थे. सारा समाज पुराने रीत-रिवाजों के तंग सांचों में जकड़ा हुआ था. किसी को उससे बाहर निकलने या कोई नई बात करने की इजाजत नहीं थी.

नतीजा दोनों जगह एक सा हुआ. दोनों जगह के बाशिन्दों पर एक सी आफत दूटी. एलाम और सिंध दोनों पर उत्तर से उठाऊ चूल्हा आर्य हमलावरों ने, जो घोड़ों पर सवार और लोहे के हथियार लिये हुए थे, धावा बोल दिया. उन्होंने इन दोनों मुल्कों को रोंद डाला और उन्हें जीत कर अपने अधीन कर लिया. धीरे धीरे पुराने बाशिन्दे और नये हमलावर दोनों की नसलें एक दूसरे में रल मिलकर एक हो गई. यही आजकल के ईरानियों और हिन्दुस्तानियों दोनों के पुरस्ते थे. उनकी नसल एक थी, बोली एक थी, धर्म एक था और कलचर एक थी.

इन आर्य लोगों के ईरान में बस जाने के बाद उन पर वहाँ के चारों तरफ के हालात का पूरा असर पढ़ा. ईरान में तरह तरह के भू भाग हैं—कहीं पहाड़ और कहीं रेगिस्तान, कहीं दिरयाओं की घाटियां और बीच के मैदान जो आदिमियों, जानवरों और हिरयाली से भरे हुए हैं, और कहीं रेतीले सफाचट मैदान, जिनमें दूर दूर तक न कोई जानदार दिखाई पढ़ता है और न कोई घास का तिनका, जहां सिवाय हवा की सांय सांय के कोई आवाज छुनाई नहीं देती. उजाले और अधेरे, नेकी और बदी की शक्तियां वहां साफ अलग अलग काम करती दिखाई देती थीं.

हिन्दुस्तान में इसके खिलाफ प्रकृति ज्यादा नरम, मीठी, मुलायम चौर रहमदिल मालूम होती थी. एक दूसरे के बाद खुलते हुए बढ़े मैदान जिन्हें बहुत से बढ़े बढ़े दिया सींचते थे और हर साल मौसमी बारिश जिन्हें फिर से शादाब कर देती थी. इन मैदानों में तरह तरह के दरस्त, जड़ी बूटियां चौर सज्जाजार और तरह तरह के जानवर रहते थे. हर साल की नई बहार बहां जादमी के दिमारा में बह स्याज

پڑے ہوے ملدر جو 'زگرات' یا خدا کا گهر کہاتے تھے جارس طرف آونچی آونچی دیوارس سے گهرے ہوتے تھے ، اُن کے اندر بڑے بڑے جبوترے ہوتے تھے ، کئی کئی منزلے ایوان ہوتے تھے جی تک پہونچلے کے لئے آونچی آونچی سیرھیاں ہوتے تھے ، یہ ہالکل تلمه کی طرح ہوتے تھے اور اِن مندروں میں بیشمار دولت اور لاکھوں میں فلم جمع رہتا تھا ،

ایلم اور سلدھ دولوں کے علاقے پروہمت راجاؤں کے ھاتھوں میں ایک زبردست شکلتے میں کسے رہتے تھے ، سارا سماج پرائے ریترواجوں کے تنگ سانچوں میں جکڑا عوا تھا ، کسی کو اُس سے باہر نکلنے یا کوئی نئی بات کرنے کی اِجازت نہیں آھی ،

نہیجہ دونوں جکہ ایک سا ھوا ، دونوں جکہ کے باشدوں پر آئر سے آئیاؤ چونیا آریہ حملہ آور سے آئیاؤ چونیا آریہ حملہ آوروں نے جو گھوڑوں پر سوار اور لوھ کے ھتھیار لائے ہوئے تھے نھاوا بول دیا ، آئیوں نے اِن دونوں ملکوں کو روئد تالا اور آئییں جیستو اپنے آدھین کولیا ، دھیوے دھیوے پرانے باشندے اور نئے حملہ آور دونوں کی فسلیں ایک دوسرے میں ول ملکو ایک ہوگئیں ، یہی آجکل کے ایرائیوں اور ملکستائیوں دونوں کے پرکھے تھے ، اُن کی نسل ایک تھی بولی ایک تھی ایک تھی ایک بولی ایک تھی دولوں کے ایرائیوں اور کلنچر ایک تھی ،

الی آریت لوگوں کے ایران میں بس جانے کے بعد اُن پر وہاں کے چاروں طرف کے حالات کا پورا اثر پڑا ، ایران میں طرح طرح کے بھوبھاک ھیں۔۔۔کہیں پہار اور کہیں ریکستان گہمی دریاؤں کی گیائیاں اور بیچ کے میدان جو آدمیوں' جانوروں اور ھریائی سے بھرے تعرفے ھیں' اور کہیں ریکیلے صفاچت میدان' جن میں دور دور تک نه کوئی جاندار دکھائی پڑتا ہے اور نه کوئی گیاس کا تنکا' جہاں سوائے ھوا کی سائیں سائیں کے کوئی آواز سنائی نہیں دیتی ، اُجالے اور اندھیرے' نیکی اور بدی کی شکتیاں رھاں صاف الگ الگ کام کرتی دکھائی دبتی تعین ،

هندستانی میں اِس کے خلاف پرکرتی زیادہ نرم' میٹھی' ملٹم اور رحم دل معلوم ہوتی تھی ایک دوسرے کے بعد کھاتے ہوئے ہتے ہتے ہیں میں اور ہر سال موسمی بارش جاھیں پھر سے شاداب کردیتی تھی اور ہر طرح کے درخت' جوبی ہوٹیاں اور طرح طرح کے درخت' جوبی ہوٹیاں اور طرح طرح کے جانور رہتے تھے ، ہر حیال کی نئی بہار رہاں آدمی کے دماغ میں یہ خھال

ही पैदा होने स देती थी कि प्रकृति की फय्याजी की कहीं इसें भी हैं या आवादी के मुकाबिले में कहीं बीरानी भी है.

पर दुनिया में कहीं भी कोई भी परिवर्तन क्यों न हो शुरू के सांचे की ह्याप उस पर बराबर रहती ही है.

ईरान के पैग्नम्बर जरतुश्त के सुधारों से पहले ईरानियों का जो मजहब था, जो कुछ तबदीलियों के साथ बाद के हसामनशी छोर सासानी जमाने में भी क्रायम रहा, वह हिन्दुस्तानी आयों के वैदिक मजहब से बेहद मिलता हुआ था. इससे भी अधिक ध्यान देने की बात यह है कि जरतुश्त ने धर्म को जो नया रूप दिया वह अपने हर पहलू में साफ साफ यह बता रहा है कि वह और वैदिक धर्म दानों एक ही खान्दान से हैं. जरतुश्त ने पुरानी निकम्मी पेचीदिगियों, ज़टिल रीत रिवाजों और अन्ध विश्वासों का हटाकर जीवन की सादगी और चलन की पाकीजगी पर जोर दिया. उन्होंने आदमी के नेकी के जीवन के लिये साफ साफ और सीधे सीधे कायदे बना दिये और हदें कायम कर दीं.

आयों की किताब वेद श्रीर जरतुश्त की किताब अवस्ता दोनों यही एलान करती हैं कि खुदा, ईश्वर एक है. रिगवेद में लिखा है कि:—"वह एक है, विद्वान लोग उसे तरह तरह से बयान करते हैं." अवस्ता के मुताबिक "अहुरमज्द (ईश्वर) ही इस सारे विश्व का बनाने वाला और सारी जिन्दगी का मालिक है."

दिन्दुस्तान की आर्य धार्मिक किताबों का असुर वक्ष्य बही है जो ईरानियों का अहुरमद्द. यह एक अजीव बात है कि वेदों में वक्ष्य को 'असुर' कहा गया है हालांकि बाद के साहित्य में 'असुर' का मतलब दानव यानी देवताओं का दूरमन होता है.

बेहों के मुताबिक वहण "इस सारी दुनिया का बनाने बाला, कायम रखने बाला और रक्षा करने वाला है और सर्वक्र (अलीम) है. वही जमीन और आसमान का बनाने वाला है, उसी ने आसमान के अन्दर तारों और उनकी चालों को कायम किया है और जल और थल को फैला कर उनमें जानदारों को बसाया है. वही सब कुछ जानने वाला और सब का हाकिम है. वह भूत, भविष्य और वर्तमान (माजी, मुस्तक्रविल और हाल) सब को जानता है. वह हवा के रास्तों और उसमें उड़नेवाले परिन्दों और समन्दर में चलने वाले जहाजों सब के रास्तों का जानता है. वह आदमी के मलक की छपिकयों को भी गिन लेता है. वह दुनियाओं का रक्षक और मालिक है. वह सव चीकों को देखता है."

"आगर मैं उड़कर दूर से दूर के आसमान पर भी प्रहुंच जाऊँ तब भी मैं असुर वहण के राज से बाहर नहीं विकल सकता. आसमान में बैठे हुए उसके दूत (करिश्ते) می پیدا مولے گئے دیگی تھی که پرکرتی کی فیاشی کی کیس حدیں بھی ھیں یا آبادی کےمقابلہ میں کہیں ویراتی بھی ھے۔

پر دنیا میں کہیں بھی کوئی بھی پریورتن کیوں تع ہو شروع کے سانچے کی چھاپ اُس پر برابر رہتی ہی ہے ۔

ایران کے پھنمبر زرتشت کے سدھاررں سے پہلے ایرانیوں کا جو مذھب تھا جو کچھ تبدیلیوں کے ساتھ بعد کے ھخامنشی اور ساسانی زمانوں میں بھی قائم رھا' وہ ھندستانی آریوں کے ویدک مذھب سے بےحد ملتا ہوا تھا ۔ اِس سے بھی ادھک دھیان دینے کی بات یہ ہے کہ زرتشت نے دھرم کو جو نیا ررپ دیا وہ اپنے ہر پہلو میں صاف صاف یہ بتا رھا ہے کہ وہ اور ویدک دھرم دونوں ایک ھی خاندان سے ھیں ، زرتشت نے پرائی نکمی پینچیدگیوں' جٹل ریترواجوں اور آندھ وشواسوں کو مقاکر جھون کی سادگی اور چلن کی پاکیزگی پر زور دیا ، انہوں نے آدمی کے نیکی کے جیون کے لئے صاف صاف اور سیدھ انہوں نے آدمی کے نیکی کے جیون کے لئے صاف صاف اور سیدھ سیدھ قاعدے بنا دئے اور حدیں تائم کردیں .

آریوں کی کتاب وید اور زرتشت کی کتاب آرستا دونوں یہی اعلان کرتی ھیں که خدا ایشور ایک ہے ، رگ وید میں لکیا ہے کہ: -- ''وہ ایک ہے' ودوان لوگ اُسے طرح طرح سے بیان کرتے ھیں .'' آرستا کے مطابق ''آھورمزد (ایشور) ھی اِس سارے وشو کا بنانے والا اور ساری زندگی کا مالک ہے .''

هندستان کی آریه دهارمک نتابوں کا آسر ورن وهی هے جو اپرانیوں کا آهورمزد . یه بهی ایک عجیب بات هے که ویدوں میں ورن کو 'آسو' کہا گیا هے حالانکہ بعد کے ساعتیہ میں 'آسو' کا مطلب دانو یعنی دیوتاؤں کا دشمن هوتا هے .

ویدوں کے مطابق ورن ''اِس ساری دنیا کا بنانے والا' قائم راہنے والا اور رکشا کرنے والا ہے اور سروگیہ (علیم) ہے۔ وہی زمین اور آسمانوں کا بنانے والا ہے' اُسی نےآسمان کے اندر تاروں اور اُن کی چالوں کو قائم کیا ہے اور جل اور تهل کو پھیلا کر اُن میں جانداروں کو بسایا ہے۔ وہی سب کتھ جاننے والا اورسب کا حائم ہے۔ وہ بھوشیہ اور ورتدان (ماضی' مستقبل اور حال) سب کو جانتا ہے۔ وہ شوا کے راستوں اور اُس میں اُڑنے والے پرندوں اور سمندر میں چانے والے جہازوں سب کے راستوں کو جانتا ہے۔ وہ آدمی کے پلک کی چھیکیوں کو بھی گی لیتا کو جانتا ہے۔ وہ آدمی کے پلک کی چھیکیوں کو بھی گی لیتا کے وہ دنیاؤں کا رکشک اور مالک ہے۔ وہ سب چیؤوں کو بھی گی لیتا دیکھیا ہے ''

"اگر میں اُر کر دور سے دور کے آسمان پر بھی پہنے جاؤں تپ بھی میں اسر ورن کے راج سے باھر نہیں نکل سکتا ۔ آسمان سے بیٹھے ھوٹے اس کے دوت (فرشتے)

बारों तरफ अपनी इकारों आंखों से दुनिया को इर वक

बहुण केवल आव्या के गुनाहों को ही नहीं देखता भीर लोगों के दिलों के गहरे से गहरे भेदों को ही नहीं जानता, "वह द्या और प्रम का भी ईश्वर है." इस दुनिया में और अगली दुनिया में दोनों जगह वह अपने भगतों की लबर रखता है. वह उन सब पर द्या करता है और उनके गुनाह माफ कर देता है जो इन शब्दों में उससे प्रार्थना करते हैं:—"ऐ असुर बहुण! अगर मैंने अपने किसी प्यारे साथी या नातेदार के साथ कोई बुराई की है, या अपने किसी माई या पड़ोसी के साथ, या अपने किसी हमवतन के साथ, या

माफ कर दे?!"

"द इस दुनिया में लोगों का मित्र है, सब से मिलता
है और इसके बाद की उस दुनिया में, जो उन लोगों के रहने
की जगह है, जिन पर उसकी नेमतें हैं और जहां नेक रहों
के लिये एक जिन्दगी के बाद दूसरी जिन्दगी आती रहती
है, और हर आगे की जिन्दगी पहले की जिन्दगी से ज्यादा
भरपर और सुन्दर होती है, उस दुनिया का भी वही

किसी अजनबी के साथ, तो उसके लिये तू मेरा वह गुनाह

मालिक है."

जरतुरत के अनुसार ईश्वर, खुदा यानी अहुर मद्द के हो साफ रूप हैं जो अहुर मद्द नाम से जाहिर हैं. अहुर की हैसियत से वह सारी जान का यानी सब रहों का मालिक है और मद्द की हैसियत से वह सारी मादी दुनिया का बनाने बाला है. "अहुर मद्द सब शक्तिमान यानी कादिर मुतलक है, वही सब का इनसाफ करने वाला है, वह अकले कुल है, वह सब से ऊँचा और सब से बड़ा है, और सब बरबादी है. उसके मन के अन्दर सब वीजों की याद मौजूद है. हर मुनने बाले के दिल में वह गवाह की तरह मौजूद है. उसकी द्या और मेहर सब ढूँदते हैं. जो उससे रोशनी चाहते हैं उन्हें उससे रोशनी मिलती है. उसी ने दुनिया को बनाया है, वही उसमें फिर फिर जान डालता है. वह सच्चाई की दुनिया में बास करता है, उसका प्रेम सब जानदारों, आदिमयों और जानवरों को अपने दायर के अन्दर घेरे हुए है."

वेदों के अन्दर वहण की जितनी तारीकें गिनाई गई हैं वह लगभग सब अवस्ता के अन्दर अहुर मदद की तारीकें

बताई गई हैं.

अवस्ता में 'अमेश स्पन्दों' का भी जिक्र आता है जिस का मतलब पाक कहें है. कहीं पर इन्हें अहुर मदद की केवल सिफतें यानी उसके गुन बताया गया है और कहीं उसके सेवक या उसकी शक्तियां या उसके अलग अलग रूप कहा गया है. वेदों में भी ठीक इसी तरह से अहुर बहगा के सेवकों और शक्तियों का बयान है. چاروں طرف آپنی هوآروں آتھوں سے دنیا کو هوولات دیاہتے۔ رهانے هیں ۔''

ورن کیول آدمیوں کے گناھوں کو ھی نہیں دیاعتا اور لوگوں کے دلوں کے گہرے سے گہرے بھیدوں کو ھی نہیں جانتا' 'وہ دیا اور پریم کا بھی ایشور ھے'' اِس دنیا میں اور اگلی دنھا میں دوئوں جائے وہ اُن سب پر دیا کرتا ھے اور اُن کے گناہ معاف کر دیتا ھے جو اِن شبدوں میں اُس سے پرائیتا کرتے ھیں:۔۔'آئے اسور ورن ا اگر میں نے اپنے کسی پیارے ساتھی یا ناتےدار کے ساتھ کوئی برائی کی ھے' یا اپنے کسی بھاڑے ساتھی یا ناتےدار کے ساتھ کوئی برائی کی ھے' یا اپنے کسی اجلبی کے ساتھ' یا اُپنے کسی اجلبی کے ساتھ' نو اُس کے اپنے تو میرا وہ گناہ معاف کو اجلبی کے ساتھ' نو اُس کے اپنے تو میرا وہ گناہ معاف کو

"وہ أس دنيا ميں لوگس كا متر هے . سب سے ملتا هے اور اس كے بعد أس دنيا ميں جو أن لوگس كے رهنے كى جكهت هے اور جي پر أس ئى تعمليں هيں اور جہاں نيك روحوں كے لئے ايك زندگى كے بعد دوسرى زندگى آتى رهتى هے اور هر آگے ئى زندگى سے زيادہ بهر پور اور سندر هوتى هے أس دنيا كا بهى وهى مالك هے ."

زتشت کے انرسار ایشور' خدا یعنی آغور مزد کے دو صاف
روپ هیں جو آغورمزد نام سے طاغر هیں . آغور کی حیثیت
سے وہ ساری جان کا یعنی سب روحوں کا مالک ہے اور مزد کی
حیثیت سے وہ ساری مادی ذائیا کا بنانے والا ہے . ¹⁷آهور مزد سرو
شکتی مان یعنی قادر مطلق ہے' وهی سب کا انصاف کرنے والا
ہے' وہ عقل کل ہے' وہ سب سے اُرتیجا اور سب سے یتا ہے' وہ سب
پر حاوی ہے . اُس کے سن کے اندر سب چیزوں کی یاد موجود
ہے . اُس کے مان کے اندر سب چیزوں کی یاد موجود
ہے . اُس کے دل میں وہ گواہ کی طرح موجود ہے، اُس
کی یاد اور مہر سب تھوٹوہتے هیں . جو اُسسے روشنی چاھتے هیں
اُنهیں اُس سروشنی ملتی ہے . اُسی نے دنیا کو بنایا ہے' وہی اِس
اُنهیں اُس سروشنی ملتی ہے . اُسی نے دنیا کو بنایا ہے' وہی اِس
کینا ہے' اُس کا پریم سب جانداروں' ادمیوں اور جانوروں کو
اُنے دائرے کے اندر گھرے ہوئے ہے ۔''

ویدوں کے اندر ورن کی جتنی تعریفیں گنائی گئی ھیں وہ لگ بہک سب ارستا کے اندر اھورمزد کی تعریفیں بتائی گئی ھیں .

ارستا میں 'آمیش سپندوں' کا بھی ذکر آتا ہے جس کا مطلب پاک روحیں ہے۔ کہیں پر اِنھیں آھورمزد کی کیول صفتیں مطلب پاک روحیں ہے۔ کہیں اُس کے سیوک یا اُس کے شعرک یا اُس کی شکتیاں یا آس کے انگ انک روپ کیا گیا ہے۔ ویدوں میں بھی تھیک اِس طرح سے آھوروری کے سیوکوں اور شکتیوں کا بیان ہے۔

"समेरा स्पन्द" दो तरह के हैं—एक वह जिनका सम्बन्ध किया यानी केल से है और दूसरे वह जिनका सम्बन्ध भाव यानी जजबे से है. इनमें पहले का सम्बन्ध सहुर से है और दूसरे का मजद से. इनमें सब से ऊपर 'सशा' है, वेद में 'सशा' का नाम "ऋत" रसा गया है, दोनों बिलकुल एक हैं.

अवस्ता में अशा का मतलब है दुनिया की तरतीब, कुद्रत का वह क़ानून जो दुनिया को चलाता है और हमेशा एक सा रहता है और अहुर मज्द की वह इच्छा जा लोगों के सारे सदाचार के क़ानून की नीब है. अशा ही सच्चाई

चौर धर्म का क़ानून है.

बेदों में "ऋत" का मतलब है तीन तरह का क़ानून— एक जड़ यानी मादे का क़ानून जिससे दुनिया का मादी रूप क़ायम रहता है, दूसरा क़ुरवानी का क़ानून, और तीसरा नेकी यानी सदाचार का क़ानून. "ऋत ही के जरिये सूरज सुबह को निकलता है और बारह महीने के अन्दर आसमान में अपना चक्कर पूरा करता है. ऋत ही के जरिये अग्नि यानी आग लोगों की हवन में चढ़ाई हुई चीजों को देवताओं तक पहुंचा देती है. ऋत बुराई से रोकता है और नेकी का हुक्म देता है. ऋत ही सच्चाई है, ऋत ही धर्म है."

अवस्ता के दूसरे अमेश स्पन्दों के भी रूप वेदों के अन्दर मिलते हैं.

बहुत से हिन्दुस्तानी देवी देवताओं का अवस्ता में जिक्र आता है. वेदों के आदित्य अवस्ता के स्पन्द मैन्यु हैं. वेदों का 'मित्र' और ईरानी 'मित्र' दोनों बिलकुल एक हैं. पर न जाने कैसे वेदों का 'इन्द्र देवता' अवस्ता का 'इन्द्र दानव' बानी इन्द्र रौतान हो गया. वेदों का खत्राहन ईरान का बिरित्राधन है.

ईरानी किताब गाथा में तीन 'एजद' का जिक है. उनमें से एक आजर है, जो पहलवी जवान में आतर हो गया और आजकल की ईरानी में आतरा हो गया. आजर वही देवता है जिसे वेदों में अग्नि यानी आग कहा गया है. वेदों के अनुसार अग्नि कई तरह की होती है, आसमानी भी और जमीनी भी. "अग्नि बिजली की तरह आसमान में पैदा होती है और दो लकड़ियों की रगड़ से उसी तरह निकल पड़ती है जिस तरह दो प्रेमियों के मेल से. यह अग्नि बावलों से उतर कर पानी में जाती है, पानी से निकल कर पौघों में जाती है और पौथों से आग की लो और धुंए की शकल में उठकर फिर बादलों में पहुंच जाती है. यही आदमी के अन्दर इरारत उसकी यानी जान है. यही जानवरों और परिन्दों के अन्दर गरमी है. सब दोपायों और चीपायों में यही जान है. यही अमर जीवन यानी हयाते अवदी का मरकज है."

ईरानी आजर के पांच रूप हैं:—(1) बरजीस वह (बहराम), (2) वहु करयाना (जानवारों के अन्दर की गरमी) "المهمي سهند" دوطرح كے هيں سابك وہ جن كا سمبنده كريا منى نمل سے في اور دوسرے وہ جن كا سمبنده بهاؤ يعلى جذبي يے هے إن ميں پہلے كا سبنده آهر سے في اور دوسرے كا مزد سے إن ميں سب سے آوپر الله في ويد ميں الله كا نام ارساء كريا كيا هے دونرں بالكل ايك هيں .

或在1870 的复数人类数位数 经支撑**的**现在分词 网络软骨管

آوستا میں اشا کا مطلب ہے دنیا کی ترتیب کو قدرت کا وہ فائری جو دنیا کو چلاتا ہے اور همیشته ایک سا رهتا ہے اور آهورمود کی وہ اِچھا جو لوگوں کے سارے سداچار کے تاثری کی نیو ہے۔ آشاهی سچائی اور دھرم کا قائری ہے۔

ویدوں میں "رت" کا مطلب ہے تین طرح کا قائرں۔۔ایک چو پعنی مادے کا قائری جس سے دنیا کا مادی روپ قائم رهتا ہے کی درسال قربائی کا قائوں جس سے دنیا کا مادی روپ قائم رهتا ہے اور بارہ مہینے کے اندر "رت هی کے ذریعہ سورج صبح کو نکلتا ہے اور بارہ مہینے کے اندر آسان میں اپنا چکو پورا کرتا ہے اور سام می کے ذریعہ ندیاں بہتی هیں اور آگ روشن هوتی ہے اوس می کے ذریعہ اگنی بہتی هیں اور آگ روشن هوتی ہے اوس می کے ذریعہ اگنی بہنی اگ لوگوں کی هون میں چوهائی هوئی چیزوں کو دیوتاؤں تک پہنچا دیتی ہے اور نیکی کا حکم دیتا ہے اور دیکی کا حکم دیتا ہے اور دیکی گا حکم دیتا ہے ۔ رت هی سچائی ہے وہ دیتا ہے ۔ رت هی سچائی ہے ۔

اوستا کے دوسرنے امیعی سیادوں کے بھی روپ ویدوں کے الدر ملتے میں ۔

بہت سے ھندستائی دیوی دیوتاؤں کا اوستا میں ذکر آتا ھے ، ویدوں کے آدتیہ آوستا کے سپند سینیؤ ھیں ، ویدوں کا 'ستر' اور ایرانی 'متر' دونوں بالکل ایک ھیں ، پر نہ جانے کیسے ویدوں کا 'اِندر دانو' یعنی اِندر شیطان ہوگیا ، ویدس کا ورتراھی ایران کا ویریتراگھی ھے ،

ایرائی کتاب کاتھا میں تین ایزد' کا ذکر ہے۔ اُن میں سے ایک آذر ہے پہلوی زبان میں اتر ہو گیا اور آج کل کی ایرائی میں آتھ ہو گیا اور آج کل کی ایرائی میں آتھی ہو گیا ۔ اُذر وہی دیوتا ہے جہ میدوں میں اگئی بعنی آگ کئی طرح کی ہوتی ہے اُسان کیا گیا ہے ، ویدوں کے انوسار اگئی بعبلی کی طرح مرتی ہے آسان میں پیدا ہوتی ہے اور دو لکڑیوں کی رگڑ سے اُسی طرح نکل آسان میں پیدا ہوتی ہے اور دو لکڑیوں کی میل سے ، یہ آگئی ہاداوں پڑئی ہے جس طرح دو پریمیوں کے میل سے ، یہ آگئی ہاداوں میں ہے آتر کر پانی میں جاتی ہے 'پانی سے نکل کو پودھوں میں میں جاتی ہے 'پانی سے نکل کو پودھوں میں میں جاتی ہے یاتی سے نکل کو پودھوں میں

جاتی ہے اور پودھوں سے آگ کی لو اور دھویں کی شکل میں آئیکر پور بادلوں میں پہنچ جاتی ہے ۔ یہی آدمی کے اندر آس کی حرارت یعنی جان ہے ۔ یہی جانورں اور پرندوں کے اندر گرمی ہے ۔ سب دوپایوں اور چوپایوں میں یہی جان ہے ۔ یہی امر جیوں یعنی حیات آبدی کا مرکز ہے ۔"

ایرانی آذر کے پانچ روپ ھیں: — (1) برزیس وہ (بہرام)' (2) وھو فریانہ (جانداروں کے اندر کی گومی) (3) उरवसीस्ता (वह गरमी जो दो लकदियों के रनइने से पैदा होती है), (4) बजीश्ता (बिजली) और (5) सपनीस्ता (बह आग जो हमेशा से हमेशा तक कायम रहती है)

बेवों के पूजा पाठ में भीर अवस्ता के पूजा पाठ में दोनों में से किसी में मंदिरों के या मूर्तियों के लिये कोई जगह नहीं है, हर गृहस्थ का यानी हर खानेदार का, चाहे वह राजा हो या मामूली आदमी, यह कर्ज है कि वह हर वक्तर अपने घर में आग को कायम रक्से और उसमें यक करता रहे. बेदों में जिसे यह कहा गया है उसी को अवस्ता में यस्न कहा गया है. जो लोग इन यहाँ या यस्नों में पुरोहित का काम करते हैं उनके दोनों में एक ही से नाम हैं—जैसे होतार, जोतार, अथरवन, आतरवन, किया अकान, कैकाऊस.

भीर भी बहुत सी मिलती जुलती चीजें हैं. वेदों का मजहब और अवस्ता का मजहब दोनों ऐसे लोगों के मजहब हैं जो जीवन को खुशी और उमंग के साथ देखते थे, दोनों ऊँची जिन्हगी और नेकी के उस्तों के सच्चे खोजी थे. दोनों ने इस उस्ता को पा लिया था कि सबका खुदा यानी ईश्वर एक है. दोनों यह मानते थे कि ईश्वर की रोशनी सबको मदद देती है और जो इससे कायदा उठाता है उसे अनन्त सुख के मुकाम तक पहुँचा देती है. दोनों को इस बात पर पक्का विश्वास था कि यह सारी दुनिया एक ऐसे अच्छे कानून के सहारे चल रही है जो हमेशा से है और हमेशा तक रहेगा.

जमाने के साथ साथ दोनों जगह तब्दीलयाँ हुई, ईरान और हिन्दुस्तान दोनों फिर से तंग निगाह पुरोहितों के जाल में फंस गये. दोनों जगह मजहब फिर केवल ऊपरी रीति रिवाज की चीज रह गया. मजहब की रूह दोनों जगह फिर गुम हो गई. सच्चाई की जगह अध विश्वासों ने फिर लेली और लोगों की नई नई रचना करने और तरक्की करने की शिंदित मिटकर सब केवल रसूम-परस्ती में फँसकर रह गये.

इस गंदले पानी को फिर से साफ करके मजहब की शुरू की पाकीजगी को फिर से बापस लाने के लिये ईरान में कोई नया महापुरुष पैदा नहीं हुआ. हिन्दुस्तान में खुशकिस्मती से गौतम बुद्ध ने जन्म लिया. गौतम बुद्ध ने रीति रिवाजों और अन्ध विश्वासों के बोक्स से लोगों को आजाद करके उन्हें फिर से यह उपदेश दिया कि वह इस तरह की नेकी और सच्चाई की जिन्दगी बसर करें जिसमें उनका इस दिनिया में भी भक्षा हो और आतमा के हमेशा के जीवन में भी कल्याया हो.

इसके बाद बाहर से फिर एक ऐसी आफत आई जिसने दिन्दुस्तान और ईरान दोनों को फिर मिलाकर एक कर (8) ارسیسته (وه گرمی جو دو اکتریس کے رگزلے سے پیدا هوتی
 (4) رزیشته (بتجلی) اور (0) سینیسته (وه آک جو همیشه سے همیشه تک تاثم رهتی ہے).

ویدوں کے پوجاپاتھ میں اور اُوستا کے پوجاپاتھ میں دونوں میں سے کسی میں صندروں کے یا مورتھوں کے لئے کوئی جگیہ نہیں ہے ۔ هر گرهستھ کا یعنی هر خانہ دار کا چاہے وہ رفعہ اُنے کو اُنہ میں اُنے کو ہم وقت اپنے گھر میں اُک کو قائم رکھ اور اُس میں یکھہ کوتا رہے ۔ ویدس میں جسے یکھے کہا گیا ہے اُسی کو آوستا میں یسن کہا گیا ہے ۔ جو لوگ اِن یکھوں یا یسنوں میں پروهت کا کام کرتے هیں اُن کے دونوں میں ایک هی سے نام هیں۔۔۔جیسے 'هوتار' 'زونار' 'آتورون' آتورون' گیا گیا گیا گیا ہے۔ کوئوں میں ایک هی سے نام هیں۔۔۔جیسے 'هوتار' 'زونار' 'آتورون' آتورون' گیا گان کے کاؤس ۔

اور بھی بہت سی ملتی جلتی چنزیں تھیں ، ریدوں کا منھب اور اوستا کا منھب دونیں ایسے لوگرں کے منھب ھیں جو جھوں کو خوشی اور آمنگ کے ساتھ دیکھتے تھا دونوں اور قیکی کے اصولوں کے سچے کھوجی ہے ، دونوں نے اس اصول کو پالیا تھا کہ سب کا خدا یعنی ایشور ایک ہے ، دونوں یہ مائتے تھے که ایشور کی روشنی سب کو مدد دیتی ہے اور جو اس سے فائیدہ آئیاتا ہے آسے آنفت سکھ کے مقام تک پہنچا دیتی ہے ، دونوں کو اِس بات پر پکا وشواس مقام تک بہنچا دیتی ہے ، دونوں کو اِس بات پر پکا وشواس تھا کہ یہ ساری دقیا ایک آیسے اچھے قانوں کے سہارے چل رھی ہے جو ھمیشت سے ہے اور ھمیشت تک رھے گا .

زمانے کے ساتھ ساتھ دونوں جگه تبدیلیاں ھوئیں' ایران اور علیستان دونوں پھر سے تنگ نگاہ پروھتوں کے جال میں پھنس گئے ۔ دونوں جگه مذھب پھر کیول اُوپری ریت رواج کی چھز رہ گیا ۔ مذھب کی روح دونوں جگه پھر گم ھو گئی ۔ سچائی کی چکه اندھ وشواسوں نے پھر لے لی اور لوگوں کی نئی نئی رچنا کرنے اور ترقی کرنے کی شکتی مح کو سب کیول رسم رچنا کرنے اور ترقی کرنے کی شکتی مح کو سب کیول رسم پرستی میں پھنس کو رہ گئے ۔

اُس گدایے پائی کو پھر سے صاف کر کے مذھب کی شروع کی پائیزگی کو پھر سے راپس لانے کے لئے ایران میں کوئی نیا مہاپرھی پددا نہیں ھوا ، ھندستان میں حوش قسمتی سے گرتم پدھ نے جنم لیا ، گرتم بدھ نے ریت رواجوں اور اندھ وشوا رس کے بوجھ سے لوگوں کو آزاد کر کے آنھیں پھر سے یہ آپدیھی دیا کہ وہ اِس طرح کی نیکی اور سجائی کی زندگی مسر کریں جس میں اُن کا اِس دنیا میں بھی بیلا ھو اور آتما کے ھمیھہ کے جیون میں بھی کلیان ھو ،

اِس کے بعد باہر سے پہر آیک ایسی آضا آئی جس نے مندستان اور ایران دوتین کو پھر کا کر ایک کو

विया. सिकन्यर ने ह्लामनशी, साम्राज को मिटा कर सम्राट असोक के बीद मिशनरियों के लिये रास्ता खोल दिया कि यह अपने नये मजहब का "पैशाम हिन्दुस्तान से ले जाकर पिछामी दुनिया के देशों तक पहुचा सकें. सेहून (सिर) और जेहून (आम्) निद्यों के किनारों से लेकर हीरमन्द कक पूर्वी ईरान बीध मिशनरियों और बीद मिक्खुओं से मर गया. सुराद से लेकर सीस्तान तक बीद मंदिर और बीद मठ खड़े हो गये. अशोक के बाद उसके जानशीन राजाओं ने भी इस, मजहब को कुबूल कर लिया और उसे अपने यहाँ के तमाम लोगों में फैलाया.

ईरान में जो गरमा गरमी खौर जोश इन तहरीकों से पैदा हुआ उससे इंग्ल अजीव तरह', का नया संगम, एक नई तरह की तरकीव पैदा हुई जिसमें खरतुरती धर्म, ईसाई धर्म और बौद्ध धर्म तीनों आकर मिल गये. इस नये मजहब का नाम 'मानी' मजहब था.

महात्मा मानी ईरान के अन्दर ठीक उस मजहबी उथल पुथल के जमाने में 14 अप्रैल सन् 216 ई० को पैदा हुए. कहा जाता है कि वह उत्तर पच्छिम हिन्दुस्तान गये और बहाँ दो साल रहकर वहाँ के घमों को समभते और सीखते रहे. इसके बाद ईरान जाकर उन्होंने अपने धर्म को रूप दियां और उसका प्रचार शुरू किया. 9 अप्रैल सन् 243 ई० को वह पीरोज की मार्फत ईरान के बादशाह शाहपुर से मिले और उन्होंने शाहपुर को क्ररीब क्ररीब अपने मजहब का पैरो बना लिया, लेकिन आखिरकार पुराने मजहब के मरा पुरोदितों का बोलबाला रहा और सन् 277 ई० में सानी को बड़ी बेददीं के साथ सूली पर चढ़ा दिया गया.

महात्मा मानी के विचार मजुष्य जीवन और उसके मक्तसद के बारे में बुनियादन बौद विचार थे. उनका कहना था कि यह दुनिया दुख की घाटी है, आदमी का जीवन कुद्राती तौर पर दर्द और रंज का जीवन है. इससे छुटकारा पाने की इच्छा आदमी में एक कुद्राती इच्छा है. छुटकारा, मुक्ति या निजात का एक ही वरीक़ा है और वह है त्याग यानी अपने नमस को पूरी तरह काबू में करना, जिसका आखिरी नतीजा कना यानी अपने अलग वजूद को मिटा अलग है. यही निजात है.

चूँ कि हर आदमी इतना जबरदस्त त्याग नहीं कर सकता इसिलये मानी ने इनसानों को दो जमातों में तक्तसीम किया—एक खास चुने हुए आदमी यानी भिक्खु और दूसरे मामूली इनसान जिन्हें वह मुस्तमईन यानी मुनने बाले कहते थे. खास चुने हुए लोगों को तीन तरह की प्रतिहा करनी पड़ती थीं जिन्हें तीन मुहरें कहा जाता था. इनमें पहली मुँह पर मुहर लगाना था जिसका मतलब था गोशत. دیا . سکندر فے عطا منشی سامرائے کو مثا کر سیرات اشوک کے بردہ مشاریوں کے لئے راستہ کھول دیا کہ رہ آپنے نئے مذہب کا پینم ہندستان سے لے جا کر بحجمی دنیا کے دیشوں تک پہنچا سایں . سیّتحرن (سر) اور جیتحون (آمو) ندیوں کے کلاوں سے لے کر هیرمند نک پورٹی ایران بودہ مشاریوں اور بودہ بخوری سے بھر گیا . سیدسے لے کر سیستان تک بودہ صادر اور میہ بخوری سے بھر گیا . سیدسے لے کر سیستان تک بودہ صادر اور میہ بخوری اس مذہب کو قبول کر لیا اور آسے اپنے یہاں کے تمام لوگوں میں پہلایا .

ایرانی میں جو گرماگرمی اور جوهی اِن تحویکوں سے پیدا مرا اُس سے ایک عجیب طرح کا نیا سنکم' ایک نئی طرح کی ترکیب پیدا هوئی چس میں زرتشتی دهرم' عیسائی دهرم اور بوده دهرم تینوں آکر مل گئے ، اِس نئے مذهب کا نام اُسانی' مذهب نیا ،

مہاتما مائی ایران کے اندر تھیک اُس مذھبی اُنهل پتھل کے زمائے میں 14 اوریل سن 216ع کو پیدا ھوٹے ۔ کہا جاتا ہے کہ وہ اتب پیچھم ھندستان گئے اور وھاں دو سال رہ کو وھاں کے دھرموں کو سمجھتے اور سیکھتے رہے اِس کے بعد ایران جاکر اُنھوں نے اپنے دھرم کو روپ دیا اور اُس کا پرچار شروع کیا ، واپریا ، سن 248 کو وہ پھروز کی معرفت ایران کے بادشاہ شاہور سے مئے اور اُنھوں نے شاہ پور کو قریب قریب اپنے مذھب کا پھرہ بنا لیا ، لیکن آخرکار پرائے مذھب کے مغے پروھتوں کابرل بالا بنا اور اس 277ع میں مائی کو بڑی بیدردی کے ساتھ سولی پر حتھا دیا گیا ،

مہانیا مائی کے وچار منشیہ جیری اور آس کے مقصد کے بارے موں بنیاداً ہودھ وچار تھے ۔ اُن کا کہنا تھا کہ یہ دنھا دکھ کی کہائی ہے، اُن میں کہ جیری قدرتی طور پر درد اور راہج کا جیری ہے ۔ اِس سے چھٹکارا پائے کی اِچھا آدمی میں ایک قدرتی اِچھا ہے ۔ چھٹکارا ممتنی یا نجات کا ایک ھی طربقہ ہے اور وہ ہے تیاک یعنی اپنے نفس کو پوری طرح قابو میں کرفا جس کا آخری نتیجہ ننا یعنی اُپنے الگ وجود کو مثا دالنا ہے ۔ یہی نجات ہے ۔

آی چونکه هو آدمی اِتنا زبردست تیاک نهوی کو سکتا اِس لئے مائی نے انسانوں کو دو جماعتوں میں تقسیم کیا۔۔ایک خاص چنے هوئے آدمی یعلی بهکھو اور دوسوے معمولی انسان جنہیں وہ مستمعیں یعلی سننے والے کہتے تھے۔ خاص چنے هوئے لوگوں کو نیں طرح کی پرتکیا کرئی پرتی تھی جنہیں نین مہریں کہا جاتا تیا۔ اِن میں پہلی ملک پر مہر لگاتا تھا تیس کا مطلب تیا گوشت लून और राराय से पूरा परहेज. इसदी भारने हाथ पर मुहर लगाना था यानी कोई ऐसा काम न करना जिससे किसी दूसरे को हुस पहुँचे. सीसरी अपने दिल पर मुहर लगाना था यानी हर किस्म के शहवाती कामों यानी इन्द्री मुख से परहेज.

महास्मा मानी का मजहब बहुत दिनों ईरान में रहा और दूर दूर के अल्कों में भी पहुँचा, लेकिन ईरानी क्रीम ने क्रीम की हैसियत से कभी उसे न अपनाया. पर इसके बाद जरतुरती अमें भी बहुत दिनों तक ईरान में न चल सका. थोड़े ही दिनों में इसलाम उस सारे इलाक़े में फैल गया.

आठबीं सदी में अरबों ने एक मर्तबा ईरान को फतह कर लिया. उसी बक्षत से ईरान की पुरानी रूह फिर से जागनी शुरू होगई. कृदरती तौर पर इस नई तहरीक का गहवारा भी पूर्वी ईरान खासकर खुरासान ही था. यह इलाका बौद्ध और हिन्दू विचारों में दूबा हुआ था. इसलिये यह लाजिमी था कि ईरानी कलवर के फिर से चमकने के साथ साथ उस पर हिन्दुस्तानी विचारों की छाप दिखाई दे.

फारसी जवान के सबसे पहले रूप देने वाले हंजल-बाद-कीसी से लेकर रोदकी तक सब पूरव के रहने वाले थे, रोदकी को सुस्तान-उस-शौरा कहा जाता है. वह समरक्षन्द के पास एक गाँव में पैदा हुआ था. मोहन्मद राजनी के दरबार के शायर जैसे दक्षीकी, अनसरी, जो सुमकिन है दामराान का रहने वाला रहा हो, असजदी, मनुचेहरी, असदी वरौरा खुरासान या सीस्तान के रहने वाले थे. उस जमाने का सबसे बड़ा फारसी, शायर फिरदीसी जिसने प्राचीन इरान की शान को फिर से चमका कर अमर कर दिया, तुस का रहने वाला था.

प्राचीन ईरानी कलचर की यह बेदारी केवल शेरो शायरी तक ही महदूद नहीं रही. काराबी, इब्न सीना, श्रवुरेहान, अलबेक्ती जैसे बढ़े बढ़े विचारक और किलास्कर इसी इलाक़े के रहने वाले थे.

तसन्बुक यानी इसलामी कलसकए वेदान्त के फूल सब से पहले इसी इलाके में खिले. शुरू के स्कियों में से क्यादातर खुरासान के थे. इन्नाहीम अजम, अहमद खजविया, अबु अली शकीक, हातम आसम, यहिया विन मजाज सब बलख के रहने वाले थे. कुजैल बिन अयाज मर्व के रहने वाले थे. मारूक करखी, अब्दुल हुसैन न्री, बरार हाकी, बायजीद विस्तामी, अबुबक शिवली सब खुरासान के युज्तलिक हिस्सों के रहने वाले थे. خوں اور شراب سے پورا پرهیز ، دوسّری آئیے ہاتھ ہو مہر کانا تھا بعثی کو دائم کانا تھا بعثی کو دائم کے دائم کے دائم کے دائم کے ایسا کام نے کو دائم کے ایساری آئیے دل پر مہر لگانا تھا بعلی ہو قسم کے شہراتی کانوں بعلی اندری ساتا سے پرهیز ،

مہاتما مائی کا مذھب بہت دئوں ایران میں رہا اور دور دور کے ملکوں میں بھی پہنچا ۔ لیکن ایرائی قوم نے قوم کی حیثیت سے کبھی اِسے نہ اپنا یا ۔ پر اِس کے بعد زرتشتی دھرم بھی بہت دئوں تک ایران میں نہ چل مکا ، تھوڑے ھی دئوں میں اسلام اُس سارے علاقے میں پھیل گیا ،

اگرچته ایرانیوں نے اسلام قبول کو لیا پھر بھی ایران کی پرائی کلچر باھر کے اثرات کے سامنے تبھی جبکی ، اِس کے کافلوں کی خلاف ایران کی پرائی کلچر نے اسلامی دنیا کے اداروں اُس کے وچاروں اُس کے رخ اُس کے ساھتیت اور اُس کے فلسفے پر اپنی پوری چھاپ لگائی ،

آٹھویں صدی میں عربوں نے آیک مرتبہ ایران کو نتھ کر لیا ، اُسی وقت سے ایران کی پراٹنی ررح پھر سے جاگئی شروع ہوگئی ، قدرتی طور پر اِس نائی تحریک کا گہوارہ بھی پوربی ایران خاصکر خراسان ھیتھا، یہ علائه بودھ اور ھندو وچاروں میں توبا ہوا تھا ، اِس لئے یہ لازمی تھا کہ ایرانی کلچر کے پھر سے چمکنے کے ساتھ ساتھ اُس پر ھندستانی وچاروں کی چھاپ جمکنے کے ساتھ ساتھ اُس پر ھندستانی وچاروں کی چھاپ دے ،

فارسی زبان کے سب سے پہلے روپ دیئے والے حنفل بادقیسی سے لیکر رودکی تک سب پورب کے رہنے والے تھے ، رودکی کو سلطان اشعرہ کہا جا تا ہے ، وہ سمر قند کے پاس ایک گؤں میں پیدا ہوا تھا ، محمود غزنی کے دربار کے شاعو جیسے دقیقی علصری ، جو ممکن ہے دامنان کا رہنے والا رہا ہو عسجدی ، منو چہری اسدی وغیرہ خراسان یا سیستان کے رہنے والے تھے ، اُس زمانے کا سب سے بڑا فارسی شاعر فردوسی ، جس نے پراچین ایران کی شان کو پھر سے چمکا کر امر کر دیا ، طوس کا رہنے والا تھا ،

پراچین ایرانی کامچر کی یہ بیداری کیول شعرو شاعری تک هی محدود نہیں رهی ، فارابی اور ایس سینا ابو ریحان آلبهروئی جیسے بڑے بڑے وچارک اور فلاسفر اِسی علاقے کے رهانے والے تھے ،

تصوف یعنی اسلامی ناسخهٔ ویدآنت کے پہول سب سیپلے اِسی علقے میں کہلے ، شروع کے صونیوں میں سے زیادہ تر خواسلی کے تھے ، ابراهیم ازم' احمد خدویہ' آبو علی شقیق' حاتم عاصم' یحی بن معاد سب بلام کے رهنے والے تھے ، فضیل بن آیاز مور کے رهنے والے تھے ، معروف کرخی' عبدالحیسن فوری' بشر حاتی' بایدید بسطامی' آبو بحر شبلی سب خواسان کے متعالف حصوں کے رهنے والے تھے ،

स्वान्तुक के उस्तों को सब से पहले खुरासानियों ने क्य दिया. त्स के रहने बाले अबुनल सर्राज ने किताबुल समा किस ससञ्चुफ लिखी. अबुलहसन अलहजबीरी ने, जो स्थाना का रहने बाला था, कराकुल महजूब लिखी. त्स के रहने बाले अलिशाजाली ने, जो इसलामी जिन्दगी का सबसे बड़ा इसीम और आलिम माना जाता है, तसञ्चुफ के ऊपर विद्यमार आलिमाना कितावें लिखीं. आखीर में अब्दुल रहमान न्रवहीन जामी ने लबायह नाम की वह बेनजीर किताब लिखी जो इसलामी तसञ्चुफ की सबसे ज्यादा इसदिल अजीज किताब मानी जाती है.

लेकिन तसन्बुफ़ की सबसे बेश कीमत खिदमत खुरा-सान के इन स्फी, सन्तों और शायरों ने की—फ्रीद्वरीन भत्तार जिसने मन्तकुत्तैर लिखा. अबुलमज्द सनाई जिसने इरीकह-उल-इक़ीक़त लिखी. और इन सबमें बुजुर्ग सन्त, जो तसन्बुफ़ के फ़लसके के सरताज माने जाते हैं, मीलाना जलालवर्शन रूमी बलसी ने अपनी मशहूर मसनबी लिखी.

मह भी कुदरती था कि पूरधी ईरान का नही हिस्सा जो हिन्दुस्तान के धार्मक विचारों से जोत प्रोत हो चुका था इसलाम के धाने के बाद ईरानी कलचर की बेदारी जौर इसलामी तसन्तुंफ का सबसे बड़ा गहवारा साबित हुआ. बलक ही का रहने वाला जालिद, जो बौद्ध नव विहार के सबसे बड़े पुरोहित (प्रमुख) के खानदान से था, जन्वासी कलीफाओं का 'बरमकी वजीर' हुआ. उसने इसलामी सस्तनत को हक्षीकी ईरानी रूप देने में बहुत जबरदस्त हिस्सा जिया. खालिद ही ने अन्वासी कलीफाओं के दरबार में बहुत सी संस्कृत और पहलवी किताबों का अरबी में तरजुमा कराया.

इन सब चीजों की तरफ ध्यान दिलाने के लिये ज्यादा बक्कत की जरूरत है. अब मैं सिर्फ थोड़े से में मौलाना रूम की मशहूर मसनवी का जिक्र करूँगा और यह दिखाना बाहूँगा कि मौलाना रूम के विचारों और हिन्दुस्तानी फल-सक्कर वेदान्त के विचारों में कितनी गहरी समानता है.

ससनवी में बहुत सी कहानियाँ और किस्से हैं. इनमें से कई हिन्दुस्तान की कहानियाँ हैं जो तरजुमों के जरिये मौजाना रूम तक पहुंचीं. मिसाल के तौर पर:—

- (1) शेर और खरगोश की कहानी;
- (2) अंधे आदमियों और हाथी की कहानी;
- (3) लोमड़ी भीर ढोल की कहानी;
- (4) खुरगोशों की कहानी जिन्होंने हाथी के पास अपना संदेश भेजा था:
- (5) द्रवेश की कहानी जिसने खुद अपनी जान दी थी. मौलाना रूम के विचारों में बहुत से बुनियादी विचार हिन्द्रस्तान के विचारों से मिलते हैं. मसलन:—
 - (1) खुदा का विचार;

تصوف کے آمواوں کو سب سے بہلے خواسائیوں فے روپ دیا۔
مارس کے رہلے والے آبو قصو سواج نے کتاب اللہ فی العموف
ابھی ، ابولتعسی الهجویوی نے جو غونہ کا رہلے والا تھا کشف المحتجوب تھی ، طوس کے رہنے والے الفزالی نے جو اسائی زرگی کا سب سے بڑا حکیم اور عالم مانا جا تا ہے تصوف کے اور بیشمار عالمانے کتابیاں تھیں ، آخیر میں عبدالوحمان نہرالدین جامی نے لوائم للم کی وہ بے تطور کتاب تھی جو نہائی تصوف کی سب سے زیادہ ہو دل عزیز کتاب مالی جو اسائی جو اسائی جو ہی۔

ایکن تصوف کی سب سے بیش قیمت خدمت خراسان کے اِن صوئی سنتوں اور شاعروں نے کی — فریدالدین عطار جس نے منطق الطیر لکھا ، آبوالسجد سائی جس نے حدیقة الحقیقت لکھی ، اور اِن سب میں بزرگ سائٹ جو تصوف کے فلسنے کے سرتاج مانے جاتے هیں' مولانا جلال الدین رومی بلخی نے اُپنی مشہور مثلوی لکھی ،

یه بهی قدرتی تها که پوربی ایران کا وهی حصه جو هدستان کے دهارمک وچاروں سے اوت پورت هو چکا تها اسلام کے آلے کے بعد ایرانی کلچور کی بیداری اور اسلامی تصوف کا سب سے برتا گہوارہ ناہت عوا ، بلغم هی کا رهنے والا خالد' جو بوده نووهار کے سب سے برتے پروهت (پرمہم) کے خاندان سے تها' عباسی خلهفاؤں کا 'برمہی وزیر' هوا ، اُس نے اسلامی ساطنت کو حقیقی ایرانی رب دینے میں بہت زبردست حصه لها ، خالد هی نے عباسی خلیفاؤں کے دربار میں بہت سی سنسکرت اور پہلوی کتابوں کا عربی میں توجمه کرایا ،

ان سب چیزوں کی طرف دھیان دلانے کے لئے زیادہ وقت کی ضرورت ھے . آب میں صرف تھوڑے سے میں مولانا روم کی مشہور مثنوی کا ذکر کروئٹا اور یہ دکھانا چاھوئٹا که مولانا روم کے وچاروں اور ھندستانی فلسنڈ ویدانت کے وچاروں میں کتلی گہری سمانتا ھے .

مثنوی میں بہت سی کہانیاں اور قصے میں ، اِن میں سے کئی شندستان کی کہانیاں میں جو ترجموں کے ذریعہ مولانا روم تک پہنچیں ، مثال کے طور پر:—

- (1) شیر اور خرگوش کی کهانی؛
- (2) انده آدمیش اور هاتهی کی کهانی؛
 - (3) لومزی اور دعول کی کہائی ؛
- (4) خرگوشوں کی کہانی جنہوں نے ماتھی کے پلس اپنا سندیش بھیجا تھا؛
- (ال درویش کی کہانی جس نے خود اُونی جان دی

مولانا روم کے وچاروں میں بہت سے بنیادی وچار ھندستان کے وچاروں سے ملتے ھیں ۔ مثلاً:---

(1) خداً كا رجار؛

برائے زمائے سے أب الله هائيستان...

मीकाना "वहबद्धसवजूद" के मानने वाले थे जिसका मतलब है कि सिवाय सुदा के और कोई चीज है ही नहीं, बाक़ी जो दिखाई देता है फ्रेंच यानी घोला है.

मसनवी में लिखा है:---

"हक यानी असलियत एक ही वजूद है और जलक यानी दुनिया में जो बीजें दिखाई देती हैं वह ऐसी ही हैं जैसे रस्सी एक हो और उसमें जगह जगह सैकड़ों गिरह लगा दी जायें. एक इक्षीकर का हजारों जगह दिखाई देना उस हक्षीकर को हजारों नहीं कर देता. यह सब केवल गिन्ती का फेर है. खुदा की वहदानियत एक समन्दर है, जिसमें एक और दो का सवाल ही नहीं होता. उस समन्दर के अन्दर मोती, मछली और लहरें सब समन्दर ही के रूप और समन्दर ही समन्दर हैं."

हिन्दू फ्लसफे में खुदा की बाबत "एकमेवाद्वितीयम" कहा गया है. जिसका मतलब है—वह एक ही है और दूसरा कोई है ही नहीं.

भगवद् गीता में लिखा है :--

"वह आत्मा सब दैवी शक्तियों में सब से अञ्चल और सबसे प्राचीन है, इस विश्व में जो कुछ है सब उसी के अन्दर है."

मीलाना रूम लिखते हैं :--

"न उसका कोई इशारा मिल सकता है, न वह जाहिर हो सकता है, न किसी को उसका इस्म हो सकता है, न किसी को उसका निशान मिल सकता है. अजल उसको सोच सकने या बयान में ला सकने की काबलियत नहीं रखती. वह न आगे है न पीछे, न नीचे है न ऊपर, वह नजदीक से नजदीक है, फिर भी न उसकी कोई कैफियत बयान की जा सकती है और न वह क्रयास यानी गुमान में आ उकता है."

"हिन्दुस्तान के फलसफे की कितावें कहती हैं :--

"वह श्रनिर्वचनीय है यानी उसे किसी भी शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता. न श्रांख उसे देख सकती है, न जबान बयान कर सकती है, न ख्याल उस तक पहुंच सकता है."

"परम धारमा" का मतलब ठीक वही है जो "जाते सतलक" का.

मीलाना रूम लिखते हैं—"ख़ुदा दुनिया में ऐसा ही है जैसे "झाझ के अन्दर मक्खन (रीरान अन्दर दोरा)." उपनिषदों में लिखा है कि—"परम आत्मा दुनिया में इस तरह रमा हुआ है जैसे पानी में नमक."

(2) दुनिया का विचार;

موالانا "رحدت الهجود" كے مالئے والے تھے جس لا مطالب هے كه سوائے خدا كے اور كوئى چهز هے هى لهيں الله عالى جو يكائى ديتا هے سب دريب يعلى دعوكها هے .

مثنوى ميں لکھا ھے:--

"حتی یعلی اصلیت ایک هی وجود هے اور خلق یعلی دنیا میں جو چیزیں دکھائی دیتی هیں ولا ایسی هی هیں جھسے رسی ایک هو اور اُس میں جکه جکه سیکڑرں گرا اگادی جھائیں۔ ایک حقیقت کا هزاروں جگه دکھائی دینا اُسحقیقت کو هزاروں تبھی کردیتا ۔ یه سب کیول گلتی کا پھیر ہے ۔ خدا کی وحداتیت ایک سندر هے ، جس میں ایک اور دو کا سوال هی تبھی عوتا ۔ اُس سمندر کے اندر موتی سچھلی اور لوریں سب سمندر هی کے روپ اور سمندر هی سمندر هیں ."

هندو فلسفے میں خدا کی بابت ''اِیکمایوآدوتھیم'' کہا گھا ھی جس کا مطلب ہے۔۔۔وہ ایک ھی ھے اور دوسرا کوئی ھے ھی قہیں ،

بهكوت گيتا ميں تعها هے :-

''وہ آتما سب دیوی شکتیوں میں سب سے آول اور سب سے پراچین ہے' اِس وشو میں جو کچے ہے سب اُسی کے اندر ھے '''

مولانا روم لکھتے ھیں :--

قانع أَسُ كَا كُونَى أَشَارِة مَلَ سَكِنَا هَا نَهُ وَهُ ظَاهُو هُوسَكِنَا هَا نَهُ كُلُّ أَسُ كَا عَلَم هُوسَكِنَا هَا نَه كَسَى كُو أُس كَا عَلَم هُوسِكِنَا هَا نَه كَسَى كُو أُس كَا عَلَم هُوسِكِنَا هَا يَه كَسَى كُو أُس كَا نَشَانِ مَلِى اللّه عَلَيْ عَلَى مَلِى اللّه عَلَيْ عَلَى مَلِى اللّه عَلَيْ عَلَى مَلِى اللّه عَلَيْ عَلَى مَلِى اللّه عَلَيْ كَلَ كُونَى أُولِهُ وَلَا لَهُ اللّه عَلَى كُونَى اللّه عَلَى اللّهُ عَلَى اللّه عَلَى اللّه عَلَى اللّه عَلَى اللّه عَلَيْ اللّهُ عَلَى اللّه عَلَيْ اللّهُ عَلَى اللّهُ اللّهُ اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَيْ اللّه عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّه عَلَى اللّهُ عَلَى اللّه عَلَى اللّه عَلَى اللّهُ عَلَى اللّه عَلَى اللّه عَلَى اللّه عَلَى اللّهُ عَلَى اللّه عَلَى اللّه عَلَى اللّه عَلَى اللّه عَلَى اللّه عَلَى اللّه عَلَى اللّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللّه عَلَى اللّه عَلَى اللّهُ عَلَى اللّه عَلَى اللّه عَلَى اللّه عَلَى اللّهُ عَل

ھنستان کے نلسنے کی کتابیں کہتی ھیں :--

"رق أنررچلينه هے يعنى أسے كسى بھى شبدرں ميں بيان ليہ كلي كيا جاسكتا . نه أنكه أس ديك سكتى هـ نه زبان بيان كرسكتى هـ نه خيال أس تك پهرنچ سكتا هـ ."

"پرم أنما" كا مطلب تهيك وهى هـ جو "ذات مطلق" كا.
مواتا روم لكهتم هيں--"خدا دنيا ميں ايسا هى هـ جيسـ
"چياچه كے اندر مكهن (روغن اندز دوغ)." أينشدوں ميں
تها هـ كه--"پرم أنما دنيا ميں اِس طرح رما هوا هـ جيسـ
پاتى ميں، نمك ،"

ر 2) دنیا کا رچار

مرانا روم لَكُفِكُ فَانِي السَّا

मीलाना रूम लिखते हैं :-

"शह जहान नकी (नहीं) है, तू आगर असिलयत को हूँ हना चाहता है तो उसके अन्दर हूँ ढ जो है. जितनी स्रतें दिखाई देती हैं वह सब सिफर (श्रून्य) हैं. हक़ीक़त (असिलयत) शब्दों में नहीं, मानी में है. हम सब अदम (नहीं) हैं, हमारा वजूद एक घोखा है. खुदा वजूदे मुतलक़ है. अकेले उसी का वजूद है. शकल केवल जिस्मों के लिये है और मानी के सामने जिस्म केवल नाम ही नाम हैं. हम सब एक हैं. सारा वजूद एक मोती की तरह है, न कोई सिर है और न कोई पैर, या यों कहा जाये कि सब एक ही माती था जैसे एक आफताब. वह पानी की तरह साफ था, उसमें कोई गिरह न थी, वह नूर ही नूर था. जब इससे सूरतें निकलीं तो वह इस तरह जाहिर हुई जिस तरह अलग अलग साए आँस को दिखाई देते हैं."

हिन्दुस्तान के कलसके की किताबों में लिखा है :—
"यह सारा विश्व माया से पैदा हुआ है. यह सब एक
बोखा है, इसका कोई बजूद नहीं, यह दुनिया केवल एक
दिखाबा ही दिखावा है. यह केवल नाम और रूप की
दुनिया है. परम आत्मा यानी 'ब्रह्म ही असलियत है. बाक़ी
सब साये की तरह घोखा है. शुरू में केवल वही वह था—एक
जिसके कोई अंग या हिस्से न थे, जिसमें कोई फर्क न था,
जो आत्मा ही आत्मा था, जो अपनी ही रोशनी से रोशन
था, जो रोशनी ही रोशनी था. उसी ने प्रकृति यानी ग्रीर
आत्मा को रोशन किया जिससे साये बने और हजारों

(3) आदमी का विचार;

मौलाना रूम के मुताबिक आदमी की जान यानी आत्मा उस प्रीतम खुदा की आत्मा का केवल एक परतव यानी अक्स है. लेकिन आत्मा नूर ही नूर् है. मौलाना लिखते हैं:—

लाखों रूप बने. इस तरह, यह विश्व वजूद में श्राया."

"जिस तरह जान का परतव यानी अक्स जिस्म पर पढ़ता है इसी तरह मेरी जान भी केवल उस प्रीतम का केवल एक अक्स है. यह जान नूर ही नूर है और यह जिस्म रंग और बू है. तू इस रंग व बू से हट जा, इसे छोड़ दे और मत कह कि कोई भी दूसराया ग़ैर है."

मीलाना के मुताबिक आदमी की रूह ग्रुरू में एक सोई हुई हालत में थी. लेकिन ज्यों ज्यों उसे मार्कत यानी झान हासिल होता गया वह अपनी असलियत को सममती गई. मीलाना रूम लिखते हैं:—

"आदमी जब सोया हुआ होता है तो उसकी हृह आफताब की तरह आसमान पर चमकती है और वह खुद सपनों में लिपटा रहता है. ऐ मेरे दिल ! जब कि मार्फत सानी झान ही जान की पहचान है तो जिस को जितना "یه جهان تغی (تهیش) ها کو آگر اصلیت کو تعونتها چاهتا هے تو آس کے اقدر تعونته جو هے . جتنی صورتیں دکیائی دیتی هیں وا سب صار (شوئیه) هیں . حقیقت (اصلیت) شدوں میں قبین معلی میں هے . هم سب عدم (نبیں) هیں المحارا وجود ایک دهوکیا هے . خدا وجود مطلق هے . آئیلے اسی کا وجود هے . شکل کیول جسموں کے لئے هے اور معنی کے سامنے جسم کیول نام هی نام هیں . هم سب ایک هیں . سامنے جسم کیول نام هی نام هیں . هم سب ایک هیں . یورا یا یوں کہا جائے که سب ایک هی موتی تها جیسے ایک پیرا یا یوں کہا جائے که سب ایک هی موتی تها جیسے ایک ارتاب وا پائی کی طرح صاف تها اس میں کوئی گوہ نه تهی وہ نور هی فور تها جب آس سے صورتیں نکلیں تو وہ اِس طرح والی سام قائم کو دکھائی دیتے هیں ."

هندستان کے فلسفے کی کتابوں میں لکھا ھے:-

"یه سارا وشو مایا سے پیدا هوا هے یه سب ایک دهوکها هے اس کا کوئی وجود نہیں یه دنیا کیول ایک دکھاوا هی دکھاوا هی دکھاوا هی یه بید یہ بیول ایک دکھاوا هی دکھاوا هی یہ بیول نام اور روپ کی دنیا هے ، پرمآنما یعنی برهمه هی املیت هے ، باقی سب سائے کی طرح دعوکها هے ، شروع میں کیول وهی ولا تھا—ایک جس کے کوئی آنگ یا حصہ نه تهے ، بیول میں کوئی فرق نه تھا ، جو آنما هی آنما تھا ، جو اپنی هی روشنی سے روشن تھا ، جو روشنی هی روشنی تھا ، اسی نے پرکوئی عنی غیر آنما کو روشن کیا جس سے سائے بنے اور ہواری لاکھوں روپ بنے ، اِس طرح یه وشو وجود میں آیا ۔"

(3) أدمى كا رچار؛__

مولانا روم کے مطابق آدمی کی جان یعنی آنیا اُس پریتم خدا کی آتیا کا کیول ایک پرتو یعنی عکس ہے ، لیکن آنیا نرز ھی نور ہے ، مولانا کھتے ھیں :—

"جس طرح جان کا پرتو یعنی عکس جسم پر پرتا هے اِسی طرح میری جان بھی کھول اُس پریتم کا کیبل ایک عکس هے . یہ جان نبر هی نبور هے اُور جسم رنگ اور ہو هے . تو اِس رنگ و ہو سے هٹ جا اِسے چھوڑ دے اور مست کو کہ کوئی بھی درسرا یا غیر هے .''

مولانا کے مطابق آدمی کی روح شروع میں ایک سوئی عولی حالت میں تھی ، لیکن جیوں جیوں اُسے معرنت یعنی گیاں حاصل هوتا گیا وہ اپنی اصلیت کو سمجھبتی گئی ، مولانا لیتے هیں :---

"آدمی جب سریا هوا هوتا هے تو اُس کی روح آفتاب
کی طرح آسیان پر چمکتی هے اور وہ خود سینوں
میں لیٹا رهتا هے آ اُسے میرے دل اُ جب که معرفت
یعنی گیان هی جان کی پہنچان هے تو جس کو جتاا

त्यादा ज्ञान की कार्यनी एकड़ी जान बतनी ही मचजूत हो जायेगी. एड की वासीर आगाही यानी ज्ञान है. जिस किसी को पूरा ज्ञान हासिल होगा नहीं अस्लाह है."

बीर बार्मी का बाखीर यानी बंजाम क्या है ?

मीलाना रूम के मुताबिक आदमी का अंजाम इस मुकाम यानी जगह का हासिल करना है जहां पर मंसूर पहुंचा था और जहाँ पहुँचकर उसने कहा था—"अनल-हक" यानी में ही हक यानी अल्लाह हूँ. इसी मुकाम पर पहुचकर बायजीव बिस्तामी ने कहा था—"सुबहानी मा आजम शानी."

मीलाना रूम लिखते --

"चूं कि आदमी खदा ही के नूर से पैदा हुआ है और उसी के नूर का एक हिस्सा है इसीलिय वह करिस्तों के लिये भी सिज्दा करने की चीज समका गया. प्रीतम बही है जो अपने प्यार करने वाले के साथ एक हो. वही प्यार करने वाले का शुरू हो और बही उसका खखीर हो.

हिन्दुस्तान की बेदान्त किलासकी इसी उसूल से शुरू होती है कि आदमी की आत्मा ही परम आत्मा है. "आत्मा वै ब्रह्म" यानी आत्मा ही ब्रह्म है. "वही वह है, वही तू है, वही में हूँ, वही रोशनियों की रोशनी है." हिन्दू फलसके के मुताबिक आदमी की आत्मा हक़ीक़त में ज्योति यानी नूर है, प्रकृति यानी माया के साथ मिलकर वह अपने को भूल जाती है और फिर ज़ागती है और अपने को पहचानती है. भगवद् गीता में लिखा है:—

"सब लोगों के लिये जो रात है सममदार योगी उसमें जागता है और जिसमें सब जागते हैं सममदार योगी के लिये वह रात होती है."

भगवद् गीता में ईश्वर कहता है कि :-

"मममें अपने मन को लगा, मुक्ते प्यार कर, मेरे लिये क़ुरवानी कर और तू वेशक मेरे पास ही आयेगा. यह मैं तुम से बादा करता हूँ चूंकि तू मुक्ते प्यारा है."

मौलाना रूम ने लिखा है :--

"हजरत ह ने अपने दुशमनों से कहा कि पे सर उठाने वाला ! मैं में नहीं हूँ, मैं अपनी जान से मर चुका, अब मैं सिर्फ अपने माशुक्त यानी खुदा से जिन्दा हूँ. चूंक मैं अपनी जान से मर चुका और अपने माशुक्त से जिन्दा हूँ इसिलये मेरे लिये अब कोई मौत नहीं हो सकती. अब मैं हमेशा हमेशा के लिये जिन्दा और कायम रहुँगा."

यह कुछ थोड़ से खयालात हैं जो मैंने इधर उधर से चुन लिये हैं. इन से माजूम हाता है कि ईरान और हिन्दुस्तान के धार्मिक विचार एक दूखरें से कितने मिलते हैं. انه کیان حیجانے آس کی جان اتنی هی مقبوط هرجائیگی ۔ ح کی تاثیر آگلمی یعنی کیان ہے . جس کسی کو پورا گیان اصل هرکیا رهی الله هے ."

اور آدمی کا آخیر یعنی النجام کیا ہے ؟

مولانا روم کے مطابق آدمی کا انجام اُس مقام یعلی جگه و حاصل کرنا هے جہاں پر منصور پہونچا تھا اور جہاں پہونچکو سی کے کہا تھا۔۔۔ اُن اللہ اُس مقام پر پہونچکو بایزید بسطامی نے کہا تھا۔۔۔ میبجالی ما اُعظم شائی ۔''

مولانا روم لكهتم هيس :-

"چونکه آدمی خدا می کے نور سے پیدا موا ہے اور آسی کے پر کا ایک حصه ہے اِسی لئے وہ فرشتوں کے لئے بھی سجدہ لئے کی چیز سمجھا گیا ، پریتم وهی ہے جو اپنے پھار کرنے والے ساتھ ایک هو ، وهی پیار کرنے والے کا شروع هو اور وهی اُس اُخھر هو ،''

هندستان کی ویدائت نلا سنی اِسی اَمول سے شروع هوتی ، که آدمی کی اُتنا هی پرم اُتنا هی . ''اَتناوئی برهنه'' یعنی ما هی برهنه هے ، ''وهی وه هے' وهی تو هے' وهی میں هوں' بی روشنیوں کی روشنی هے ،'' هندو فلسنے کے مطابق آدمی آتنا حقیقت میں جیوتی یعنی نور هے' پرکوتی یعنی مایا ، ساته ملکو وہ اُپنے کو بهول جاتی هے اور پهر جاگتی هے اور اپنے ، بهکوت گیتا میں لکیا هے :—

"سب لوگوں کے لئے جو رات ہے سنجھدار یوگی اُس میں باکتا ہے اور جس میں سب جاگتے ھیں سنجھدار یوگی کے لئے ارات ھوتی ہے ،"

بهارت گیتا میں ایشور کہتا شے که :-

مولانا روم نے لکھا ھے:-

"حضرت نہے نے اپنے دشمنوں سے کہا کہ آے سر اُٹھائے
الو ا میں میں نہیں ہوں' میں اپنی جان سے مرچکا' اب
بی صرف اپنے معشوق یعنی خدا سے زندہ ہوں ، چونکہ میں
نی جان سے مرچکا اور اپنے معشوق سے زندہ ہوں اِس لئے میرے
یہ آب کوئی موت نہیں ہوسکتی ، 'ب میں ہمیشہ ہمیشہ کے
یہ زندہ اور نائم رعونگا ۔''

یہ کچھ تھوڑے سے خیالات ھیں جو میں نے اِدھر اُدھر سے
بی لئے ھیں ۔ اِن سے معلم ھُوتا ہے که ایران اور ھندستان کے
مارمک وچار ایک دوسرے سے کتلے ملتے ھیں ۔

कता वानी क्षत या हुनर में, साहित्य में, कलसके में, वरेंस् और समाजी जिन्दगी में, फूने तामीर में, गर्जेकि क्षतपर के हर पहलू में हिन्दुस्तान और ईरान के मेल जोल की हजारों मिसालें दी जा सकती हैं.

यह फ़िस्सा बहुत लम्बा है. लेकिन मुक्ते आपको अब बहुत ज्यादा नहीं रोकना चाहिये.

ज्ञान हकों से खाली हो गई और राज (रहस्य) अभी बाक़ी है, सज़ुन की पूंजी खत्म हो गई और सज़ुन अभी बाक़ी है. کا یعلی فی فان فان فان فی سلطند میں فلسفے میں گوریلو اور ساجی زفدگی میں فی تعمیر میں غرضیکہ کلتیور کے هر بہتر میں مندستان اور ایران کے میل جول کی مواروں مثالیں دی جاسکتی هیں ،

یہ قصہ بہت لبا ہے . لیکن مجھے آپ کو اب بہت زبادہ نہیں روکنا چاعیئے .

زبان حرنوں سے خالی ہوگئی اور رار (رہسیہ) اپنی باقی ہے؛ سخوں کی پولجی ختم ہوگئی اور سخوں ایھی باقی ہے ۔

सम्पादिका "नया चीन" के नाम

سبپا دیکا "نیا چین" کے نام

बेढी मनोरमा,

तुन्हारा 12-8-55 का पत्र मिला. तुम जानती हो मैं तो इँरबर का और धर्म का मानने वाला हूँ. पुराग्लों में कुछ कहानियाँ बड़ी सुन्दर मिलती हैं. एक यह है:—

एक राजा था, उसका एक बारा था, बारा में दो माली थे. बह दोनों माली दो तबियतों के थे. एक माली का काम बह था कि रोज सबह जब राजा साहब के उठकर महल से निकलने और बारा की सैर को जाने का समय आता तो बह माली महल के द्वार पर पहुंच जाता. राजा साहब के निकलते ही वह धरती झूकर उन्हें प्रणाम करता, उनकी और उनके पूर्वजों की स्तुति गान करता. स्तुति गान करते करते वह उनके पीछे पीछे हो लेता. और जब तक राजा साहें बारा की सैर करते रहते वह साथ साथ रहकर यही हरता रहता. लीटकर जब राजा साहब महल में प्रवेश करते तीं वह फिर धरती खूकर उन्हें प्रणाम करता और दिन भर शाराम करता. शाम को फिर जब राजा साहब के सैर का समय आता वह फिर महल के द्वार पर पहुंच जाता और पही सब फरता. राजा साहब के महल में चले जाने पर केर आकर रात भरं आराम से सोवा. दूसरा माली बहुत अबेरे एडएर एसी समय से बारा के पेटों और पीओं की

بيلى مقوما

تمهاراً 55-8-12 کا پتر ملال تم جانتی هو میں تو آیشور کا اور دهرم کا مائٹے والا هوں لیوانوں میں کچھ کہانیاں بری سندر ملتی هیں لیک یہ هے:۔۔۔

ایک راجہ تھا ۔ اُس کا ایک باغ تھا ۔ باغ میں دو مالی تھے ، وہ دونوں مالی دو طبیعتوں کے تھے ، ایک مالی کا کام یہ تھا کہ روز صبح جب راجہ صاحب کے آٹھ کر محل سے مکلنے اور باغ کی سیر کو جائے کا سیٹے آتا تو وہ مالی محل کے دوار پر پہونچ جاتا ، راجہ صاحب کے نکلتے ھی وہ دھرتی چھو کر اُنھیں پرنام کرتا ، اُن کی اور اُن کے پروجوں کی استوتی کان کرتا ، اُس کرتے کرتے وہ اُن کے پیچھے پیچھے ھو لیتا ، اور جب تک راجہ صاحب باغ کی سیر کرتے رہتے وہ ساتھ ساتھ رہمو اور جب کرتا رہتا ، لوٹمر جب راجہ صاحب محل میں پرویش کرتے تو وہ پھر دھرتی چھو کر اُنھیں پرنام کرتا اور دین بھر آرام کرتا . شام کو پھر جب راجہ صاحب کے سیر کا سمانے آتا وہ پھر کرتا . شام کو پھر جب راجہ صاحب کے سیر کا سمانے آتا وہ پھر محل کے دوار پر پہونچ جاتا اور یہی سب کرتا، راجہ صاحب کے محل کے دوار پر پہونچ جاتا اور یہی سب کرتا، راجہ صاحب کے محل میں چلے جائے پر پھر آکر رات بھر آرام سے سوتا، درسوا مالی محل میں چلے جائے پر پھر آکر رات بھر آرام سے سوتا، درسوا مالی محل میں چلے جائے پر پھر آکر رات بھر آرام سے سوتا، درسوا مالی محل میں چلے جائے پر پھر آکر رات بھر آرام سے سوتا، درسوا مالی محت سویرے آٹھ کو آپور کور سے باغ کے پہروں اور پودھوں کی

دیکه ریکه میں نکب جاتا۔ کسی کو ٹمالٹا' کسی کو سهنجتاً کسی پر ملی جوهاتا ، وه اِس کام میں اتنا ویسمعه رمکا که کبھی کبھی جب باغ کے الدر راجه صاحب سیر کرتے هوئے یاس سے نکلتے تو آسے آلیا کو نسسال کو اے كى بهى قد سرجهتى . أسه درمت هى كيال ! دن يهر إسى طرب اللا رهال شام كو جب راجه صاحب باغ كي سهر كو أتي تب بھی اُس کی بہردھا یہی حالت رھٹی رات کو راجہ سلمب کے محل میں چلے جالے کے بعد وہ دوں بھر کے اچھے سے اوسے پہل پیول ٹوکریوں میں بھر کو سر پر رکھ کو منصل کے دوار پر پہرنچتا اور راجہ ماحب کے کسی ٹوکر کو آواز دیکو وہ پھل پھول راجه صاحب کے بھوں کے لئے دیکر اور پہلے دی کی خالی ٹوکریاں واپس لیکر لوٹ آنا ، وات کو اُرام کرتا اور صبع سے پھر وہی درخان اور پودھوں کی سیوا ۔ اُسے کبھی کبھی رانجه صاحب کے درشن اللہ بھی مہینوں بیت جاتے ،

> أب بتاء دولوں میں كون سا مالى سجا مالى تها ؟ دوستي أيك كيائي يه هـ:--

نارد منی نے ایک بار رشاو بیکوان سے پوچھا۔ " بیکوان ا بیکوان سے مرتبو لوک میں آیکا سب سے بڑا بھت کون ہے ؟ " بھکوان لے کہا۔ " قارد ! تم تو بل بھر میں کہیں بھی پہوتیج سکتے ھو' تم ھی جاکر دیکھو اور اکر مجھے بدؤ که میرا سب سے بڑا يهكم كون هـ "

نارد دهرتی پر اُترے سب جگہۃ کئے اور لوے کر اُنھوں لے بهاوان سے انها - " براکون إ میں دیا آیا، امک فاکر میں امک براهمن آیکا سب سے برا بھاست ھے . تینوں سیٹے کی سندھیا کرتا ھے . دن بهر سوادههائه اور ندهی دههاسی میں لکا رهنا هے اور دیو سے جو کمچھ مل جاتا ہے اسے کہا کر اپنا گذارا کرتا ہے ۔"

- بیکوان نے کیا۔ "نارد! دھوکیا کیا گئے . جاؤ پور جاؤ' اور ديكهو هماراً سب سے بوا بهكت كون ف 9 "

شاری بهر آئی بهر گهرچه اور بهر لوت کر بهکوان سے کها۔ والمار إلى بار ميني أيكا سب سه برأ بهكت تكال ليا . أمك استهان پر امک براهمن سندهیا ون آدی سب نتیه کرمون کا بالي كرتا هما إتيادي ."

بيكوان نے پهر وهى أتر ديا۔ "نازد ا پهر دهوكها كها گئي..." نارد تیسری بار مرتبو لوک میں آنے ارز بہت کھونے کے بعد لبت کر بهکوان سے کہا۔ "بهکوان ا اِس بار مینے ایکا سب سے ہوا بهت یا لیا . امک استهان پر امک منوشیه نتیه کرم کرنے کے اترکت سرل سچا سنترشی ادی ادی ایکا سب سے برا ہے۔''۔ کے تعملی

رهنو بهتوان نياتر ديا--الانارد إلى يعر دهوكها كها كلي...

देख रेख में सम काता. किसी की महताता, किसी की धींचता किसी पर सिट्टी जड़ाला. बह इस जान में इतना व्यस्त रहता कि कभी कभी जब बारा के अन्दर राजा साहब सैर करते हुए वास से निकलते तो उसे उठकर नमस्कार करने की भी न सुमती. उसे फुरसत ही कहां ! दिन भर इसी तरह लगा रहता. शाम की जब राजा साहब बारा की सैर को आते मह भी उसकी बहुधा यही हालत रहती. रात को राजा साहब के महल में चले जाने के बाद वह दिन भर के अच्छे मं अच्छे फल फल टोकरियों में भर कर सिर पर स्लकर महल के द्वार पर पहुंचता और राजा साहब के किसी नौकर को आवाज देकर वह फल फल राजा साहब के बच्चों के लिए देकर और पहले दिन की खाली टोकरियाँ वापस लेकर लीट आता. रात को , आराम करता और सुबह से फिर वही दरखतों और पौधों की सेवा. उसे कभी कभी राजा साहब के दर्शन किये भी महीनों बीत जाते.

अब बताओ दोनों में कौन सा माली सच्चा माली था ? वसरी एक कहानी यह है:--

नारद मृति ने एक बार विष्णु भगवान से पूछा-"अगवान ! सृत्यु लोक में आपका सबसे बढ़ा भक्त, कीन है ?" भगवान ने कहा-"नारद ! तुम तो पल भर में कहीं भी पहुँच सकते हो. तम ही जाकर देखो और आकर मुके वताओं कि मेरा सबसे बढ़ा भक्त कौन है.

नारद धरती पर इतरे, सब जगह गए और लौटकर उन्होंने भगवान से कहा- "भगवन् ! मैं देख आया. अमुक नगर में अमुक ब्राह्मण आपका सबसे बड़ा भक्त है. तीनों समय की संध्या करता है. दिन भर स्वाध्याय और निधिष्यासन में लगा रहता है और दैव से जो कुछ मिल जाता है उसे खाकर अपना गुजारा करता है।'

भगवान ने कहा-"नारद ! धोखा खा गए, जाको फिर जाश्रो, श्रीर देखो हमारा सबसे बड़ा भक्त कीन है.

नारद फिर आए, फिर घूमे और फिर लौट कर भगवान से करा-'भगवन् ! इस बार मैंने आपका सबसे बढ़ा भक्त निकाल लिया. अमुक स्थान पर अमुक बाह्मण संज्या हवन आदि सब निस्य कमी का पालन करता है, इत्यादि."

भगवान ने फिर वही उत्तर दिया—"नारद ! फिर घोसा खा गए....."

नारद तीसरी बार मृत्यु लोक में आए और बहुत स्रोज के बाद लीटकर भगवान से कहा-- "भगवन् ! इस बार मैंने आपका सबसे बड़ा भक्त पा लिया. अमुक स्थान पर भमुक मनुष्य नित्य कर्म करने के अतिरिक्त सरत. सच्चा. सन्तोषी आदि आदि आपका सबसे बड़ा भक्त है."

विष्णा भगवान ने बत्तर विया-"नारव ! फिर बोसा श्रा गुरु.....?

इसपर नारद मुनि ने कहा—"भगवन् ! मैं हारा, अब आप ही बताइये आपका सबसे बड़ा भक्त कीन है ?"

विष्णु भगवान ने उत्तर दिया—"नारद ! अयुक माम में जाकर देखो, अयुक नाम का चूढ़ा किसान इमारा सबसे बढ़ा भक्त है."

नारद स्तरे, स्म प्राम में पहुंचे. श्रद्ध रहकर एक दिन और एक रात स्म किसान के साथ रहे. वह तारों की झां स्टा, किसी सरह मुंह हाथ धोकर, अपने वैलों को लेकर खेत में पहुंचा, दोपहर तक वेलों के पीछे "ढीह-ढीह" करता रहा. कभी कभी वैलों को गाली भी देता रहा, दोपहर बाद थक कर, वैलों को बांच कर, दरस्त के नीचे बेठ कर, स्मने टुकड़ा खाया, पानी पिया और फिरशाम तक बही धरती की सेवा. अधेरा हो जाने पर बह घर लौटा. पर नारद ग्रुनि ने एक बार भी स्मके मुंह से भगवान का नाम निकलते न सुना. फिर भी बह था भगवान की निगाह में भगवान का सबसे बड़ा भका!

ऊपर की दोनों कहानियाँ बड़ी मार्मिक हैं.

श्रव जो भारतवासी चीन हो आए हैं वह अपने दिलों को टरोल कर देखें कि इस सुन्टि रूपी वारा के सच्चे माली श्रीर भगवान के सच्चे भक्त उन्हें कहां अधिक मिलते हैं— नए बीन में या इस समय के भारत में ?

आजाद भारत के शहरों में कहीं भी बिना मिलाबट की साने की चीजें भिलना बहुत मुश्किल है. नए चीन के शहरों में कहीं भी मिलावट वाली कोई चीज मिल सकना लगभग इस्सम्भव है. यहां चोरी और रिशवतस्त्रोरी का बाजार सब जगह गरम है, और मुम्ने कहते लज्जा आती है कि अंबेजी राज के जमाने से कहीं अधिक गरम है, चीन से अभी प्रसिद्ध विद्वान डाक्टर रघुवीर लौटकर आए हैं जिन पर कोई कम्युनिस्ट होने का आरोप नहीं लगा सकता. उन्होंने विस्ली में कहा है कि बेईमानी श्रीर रिश्वतखोरी (corruption and bribery) चीन से नाबूद हो चुकी हैं. इन्होंने यह भी कहा है कि उन्होंने दूर-दूर तक सैकड़ों भील धूस कर देखा. सुष्टि रूपी बारा के उस भाग में कोई पेड कोई पीचा सुरमाया हुआ दिखाई नहीं देता. हर चेहरा खिला और खराहाल है. विष्णु के उस सब से बड़े भक्त को ध्यान में रखते हुए हमें याद रखना चाहिए कि डाक्टर रचुवीर ने बाह भी कहा है कि वहां हर आदमी देश के धन और देश की पैदाबार को अधिक से अधिक बढ़ाने में लगा हुआ है. बाठ करोड़ की आबादी में कोई बेकार नहीं. वेरवावृत्ति और विकारों की संख्या में नया चीन शून्य है तो नया भारत धनाइव ! भारत के कोई कोई शासक कहते नहीं थकते कि अन्हें बी प्र, एमें की करूरत नहीं है, उन्हें जरूरत है कारीनरों भीर इंजीनिवरों की. मेरी अपनी जानकारी में न

اِس بِرِ اَلِي مِنْ مِنْ مِنْ لِمِ كِالسِ الْمِينِ المِينِ عَالَ أَبِ أَبِ هِيَ بِنَائِدِ أَيْنَا سَبُّ شَدِ بِوا بِهُمَت كَبِنِ هِمْ ؟ "

وشفو بھکواں نے آتو عیام۔ وقارد ! امک گرام میں جا کو دیمو امک نام کا بورھا کسان ھمارا سب سے بڑا بھکت ھے ۔"

نارن آئوے' اُس گرام میں پہونچے ۔ ادرشت رھکر ایک دن اور ایک رات اُس کسان کے ساتھ رھے ۔ وہ تاروں کی چہاں اُٹھا' کسی طرح منھ ھاتھ دھو کر' اپنے بیلوں کو لیکر کھیت میں پہونچا' دروپر تک بیلوں کے پیچھے ''تھیپہ' تعیبہ'' کرنا رھا ، کبی کبھی بیلوں کو گالی بھی دیتا رھا' دروپر بعد تھک کر بیلوں کو باندھٹر' درخت کے نیچے بیٹھ کر' اِس نے ٹکڑا کیا یا' یائی پیا اور پھر شام تک وھی دھرتی کی سیوا ۔ اندھیرا ھو جانے پر وہ گھو لوگا ۔ پر نارد منی نے ایک بار بھی اُس کے منه سے بیکواں کی نگاہ میں بیکواں کی نگاہ میں بیکواں کی نگاہ میں بیکواں کی سے ہوا بیکت اُ

أوپر كى دوئس كهاليال مرى مارمك هيل .

اب جو بھارت واسی چین ھو آئے ھیں وہ اپنے دلوں کو ٹھولکو دیکھیں کہ اِس سرشقی روپی باغ کے سچے مالی اور بھکوان کے سچے مالی اور بھکوان کے سچے بھارت الھی کہاں ادھک ملتے ھیں۔ لیّے چین میں یا اِس سیٹے کے بھارت میں ہ

آزاد بھارت کے شہروں میں کہیں بھی بنا ماوت کی کیائے کی چیزیں ملنا بہت مشکل ہے ، نئے چین کے شہروں میں كهون بهي معوت والي كوئي چيز مل سكنا لك بهك أسمبهو هي يهال چورف اور رشوت خوری كا بازار سب جكه گرم ه. اور مجم کہتے لجا آئی ہے کہ انکریزی راج کے زمالے سے کہیں ادھک كرم هي چين سے ايمي پرسدھ ودران داكتو ركوربير لوت كر أثي هيں جن پر كوئى كىيونست هونے كا آروپ نهيں اكا سكتا ، أنبس نے دائی میں کیا ہے که بےابدائی اور رشوت خوری (corruption and bribery) چین = نابره هرچکی ھے انہوں نے یہ بھے کہا ھے کہ اُنہوں نے دور دور تک سیکروں معل کور کر دیکھا، سرشتی روپی باغ کے اُس بھاک میں کوئی پیر کوئی وردمًا مرجهايا هوا دكهائي لهيل دينًا. هر چهره كها هوا اور خوشحال ھے. رشنو کے اُس سب سے بڑے بھکت کو دھیاں میں رکھتے مرار میں یاد رکھنا چاھئے که ڈائٹر رگھربیر نے یہ بھی کہا ہے که رماں مر آدمی دیمی کے دھن اور دیمی کی پعداوار کو ادھک سے ادعک بچھالے میں لکا ہوا ہے ، سالم کرور کی آبادی میں كونى بيكار نهين . ويشيا ورتى أور بهكمنكون كى سلكهها مين نیا چین شرایه هے در ایها بهارت دهنادیه ! بهارت کے کوئی كبئى شاسك كبتے نہيں تبكلے كه أنهيں بى المرا ام اله . كي ضرورت نهين ها أنهين ضرورت ه كاريكوون ار انجينيون كي ، ميرف اپني جانكاري مين نع

जाने कितने इंजीनियरी पास सबके काम की तलाश में इफ्तर इफ़्तर की ठोकरें खाते फिर रहे हैं.

गोस्वामी तुलसीवास जी का 'रामराज' का आदर्श— जिसके लिये गान्धी जी बेचैन थे—बहां अत्यंत निकट दिखाई दे रहा है. यहाँ हम से दूर भागता हुआ मालून होता है. और 'रामराज' वहीं होता है जहां धर्म का राज हो. यतोधर्म-सतोऽम्युद्य' हम सदियों से पढ़ते सुनते आए हैं.

इस सब के अतिरिक्त भारतीय दरीन शास्त्र के अनुसार इस प्रथ्वी पर मलुष्य का सब से बड़ा धर्म सब के अन्तर अपने को और अपने अन्दर सब को देखना है. हमारे इपनिषद और गीता बारबार इसी बात को दोहराते हैं. इस्ती के सब मनुष्यों से भेदभाव उठाकर संसार की सारी जनता को एक सूत्र में बांधने का काम आज आध्यात्मक हिंद से सबसे पवित्र काम है. कमजोर और बलवान, प्रच्छे और बुरे, दुनिया के सब धर्मी और सब बान्दोलनों • होते हैं, पर आज मानव समाज को एक करने का काम. ितया की नीचे दबी हुई अरबों जनता को मिलाकर एक हरने का काम, कोई आन्दोलन इतनी अच्छी तरह और तने जोरों के साथ नहीं कर रहा है जितना दुनिया का म्युनिस्ट आन्दोलन. इसी एक आन्दोलन के साथ राष्ट्रों । हुं और लाल, पीले, गोरे, काले के भेद मिटते जा रहे हैं. किंग के सब से बढ़े हाल में-"आसमान के नीचे सब क हैं" मोटे सुन्दर अक्षरों में लिखा हुना देखकर और र उस पर साथ के चीनी दोस्तों की टीका-टिप्पणी सनकर मे और मेरे साथियों को एक बार आशा बंधी कि सच्टि इस बारा में भी-

. ऐहें बहुरि बसन्त ऋतु, इन डारन वे फल.

उस ऐस्किमो जाति के बच्चों को जो दो हजार बरस हरूसी ईसाई धर्म के स्वर्ण युग में भी सदा जंगली और सभ्य कहलाती रही और थी और मध्य एशिया की नीम ाली क़ौमों के लड़कों को मास्को के विश्वविद्यालय में रे यारपीनों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर पढ़ते, प्रोकेसरी ते और एक कुदुम्ब की तरह प्रेम के साथ रहते देखकर म का हृदय गदगद न हो उठेगा. अपने देश को पनास स तक ध्यान से देखने और इस उमर में बाहर की आधी त्या को देखने के बाद मुमे इस में कोई भी सन्देह नहीं किसी देश विशेष की कम्युनिस्ट पार्टी के लोग, चाड़े मिदार हों या नासमक, अच्छे हों या बुरे, पर दुनिया कम्युनिस्ट झान्दोलन, अनेक दोषों के होते हुए भी, इस का सबसे बड़ा आध्यात्मक आन्दोलन है, और भारतीय ग्यात्मिक निगाह से मुक्ते हस से भी चीन अधिक प्यादा है. एक और धर्म के नाम पर अपने यहां के ढोंगों में, सबे अन्धविरवासों, पासंबों और रूढि पूजा को देसकर और

تھائے کتاے انجینیوی پاس ارکام کی تلف میں دفار دفار کی۔ انہوئیں کاتے پار رقم میں ،

گرسواسی تلسی داس جی کا 'رأم راج کا آدرش'۔۔۔جس کے لئے کاندھی جی پےچین تھے۔۔ وہاں انبات نصف دکھائی دے رہا تھے ۔ بہل ہم سے دور بھاگٹا ہوا معلوم ہوتا تھے ۔ اور 'رام راج' وہیں ہوتا ہے جہلی دھرم کا راج ہو ۔ یکو دھرم استکو معردشہ' ہم صدیرے سے پڑھتے سنتے آئے ہیں ۔

اِس سب کے اتیرکت بھارتیہ درشن شاستو کے اقوسار اِس پرتھوی پر منوشیہ کا سب سے بڑا دھرم سب کے اقدر اپنے کو اور اپنے اندر سب کو دیکھنا ہے ۔ ھمارے آپنشد اور گیتا بار بار اِسی بات کو دروهراتے ھیں' دھرتی کے سب مشیوں سے بھندھاؤ آٹھاکر سلسار کی ساری جلتا کو ایک سوتر میں باتدھنے کا کام آتے ادھیاتیک درشتی سے سب سے پرتر کام ہے ۔ کمؤور اور بلوان اچھے اور برے' دنیا کے سب دھرموں اور سب آفدولئوں میں ہوتے ھیں ۔ پر آج مانو سماج کو ایک کرنے کا کام' دنیا کی ھوتے ھیں ، پر آج مانو سماج کو ایک کرنے کا کام' دنیا کی اندولی اِنٹی اچھی طرح اور اِنٹے زوروں کے ساتو نہیں کو رہا ہے جتنا دنیا کا کمہونست آندولی ۔ اِسی ایک آندولی کے ساتو دیات فروں اور قل' پیلے' گورے' کائے کے بھید ماتے جا رہے میں ۔ پیکنگ کے سب سے بہے ھال میں۔''آسماں کے نہیچے میں بی ایک ہوا دیکھکر اور پھر سب ایک ہے'' سرتے کے چینی دوستوں کی تیکا تبینی سنکر مجھے اور میں یہ ساتھیوں کو ایک بار آشا بندھی که سرشتی کے اِس باغ

ائیہے بہوری بسلت رت اِن قارن وے پھول ،

اُس ایسکیمو جاتی کے بچوں کو جو دو ہزار برس تک روسی عیسائی دھرم کے سورن یگ میں بھی سدا جنگلی اور اسبھیم کہلاتی رسی اور تھی اور مدھیم ایشیا کی ٹیم جنگلی قوموں کے لڑکوں کو موسکو کے وشودیائیم میں گورے برپیئرں کے ساتم کندھا ملاکر پڑھتے 'پرونیسری کرتے اور ایک کلمب کی طرح پریم کے ساتم رھتے دیکھکر کس کا ھردئے گدگد نہ ھو آئےگا ۔ اپنے دیھی کو پنچاس برس تک دھیان سے دیکھنے اور اِس عمر اپنے دیھی ہا کہ آدھی دنیا کو دیکھنے کے بعد مجھے اِس مھی کوئی بھی سندبہم نہیں که کسی دیھی وشیش کی کمھونست ۔ کوئی بھی سندبہم نہیں که کسی دیھی وشیش کی کمھونست ۔ پارٹی کے لوگ چھے ھوں یا بارٹی کے لوگ چھے ھوں یا بہرے 'پر دنیا کا کمپونست آندولی اُنیک دوشوں کے ھوتے ھوئے ہیں بھی اِس یک کا سب سے بڑا آدھیاتمک آندولی ہے' اور بھی بھی چھی ادھک بھی اُدولی ہے' اور بھی تھی جھی ادھک بھی اُدولی ہے۔ اور بھا آدھیاتیک آندولی ہے۔ اور بھی دیا آدھیاتیک آندولی ہے۔ اور بھی بھی جھی ادھک دیا آھے۔

ایک اور دھرم کے نام پر اپنے یہاں کے تھونگوں میں سرے گئے الدیم رشواسوں کا پاکھونڈوں اور روزھی پوجا کو دیکھکر اور

दूबरी और बाहर की कन्युनिस्ट कहताने वाली दुनिया को किकर मुक्ते बार बार गांधी जी के वह दर्द भरे शब्द याद जाते हैं जो वन्होंने सन् 1924 में दिस्ती में जगह जगह के बिन्दू मुस्लिम दंगों की खबरों को मुनकर कहे थे—"मुमसे क्या, पूछते हो ? मैं तो यह कहने को तैयार हूँ कि ये सब के सब नास्तिक हो जार्य तो अच्छा—इनके न मानने से कोई खब नास्तिक हो जार्य तो अच्छा—इनके न मानने से कोई खब नास्तिक हो मिट जायेगा—पर ये आदमी तो बनें."

इसमें कोई सन्देह नहीं कि नए चीन और नए भारत को एक दूसरे के निकट लाने की कोशिश इस समय इन दोनों देशों की और इंसानी क्रीम की सब से बड़ी सेवा है. हमें बहुत जल्दी अपने देश को जिथर ले जाना है उसमें भी हमें इस दोस्ती और एक दूसरे की जानकारी से बहुत इन्ह मदद मिल सकती है.

इसलिये, बेटी मनोरमा ! मैं तुन्हारी छोटी सी पत्रिका "नया चीन" का दिल से स्वागत करता हूँ, उसकी उन्नति बाहता हूँ और तुन्हें इस नेक काम के लिए बर्घाई देता हूँ.

तुमने लेख बाहा है, मुमे और लेख लिखने का समय तो नहीं मिलेगा.

ख़ुश रहो.

सस्नेह तुन्हारा, सन्दरताल. رسری آور باقر کی کمیزلست کیائے والی دنیا کو دیکھکر مجھے بار ار کاندھی جی کے وہ درد بھرے ہد یاد آتے میں جو آئھوں نے نے 1924 میں دلی میں جگہ جگہ کے ہدو مسلم دنگوں کی نیروں کو سلکو کہے تھے۔۔۔۔(امجھ سے کیا پوچانے ہو ؟ میں تو یا کہنے کو تیار ہوں کہ یہ سب کے سب الستک ہجائیں تو چا۔۔۔ان کے لیہ مالنے سے کوئی خدا تھورے ھی سے جائیا۔۔۔ یہ آدمی تو یائیں ۔"

اِس میں کوئی سادیہہ نہیں کہ نیکہ چین اور نگر بھارت کو بک دوسرے کے نکف لانے کی کوشش اِس سیکے اِن دونوں بیش کی اور اِنسانی قوم کی سب سے بچی سیوا ہے ، همیں بت جلدی اپنے دیش کو جدھر لے جانا ہے اُس میں بھی همیں سے دوستی اور ایک دوسرے کی جانکاری سے بہت کچے مدد اُل سکتر ہے ۔

اِسَ لَيُهُ بِيتَى ملورما إِ مِين تبهارى چهرتى سے پتريكا ، انيا چين'' كا دل سے سواگت كرتا هوں' أس كى اللتى چاهتا بن ارر تمين اِس نيك كام كے لئے بدهائى ديتا هوں ،

تم نے لیکھ چاھا ہے؛ مجھے اور لیکھ لکھنے کا سملے تو تہیں ملیکا۔ خوض رهو .

--سنيم تمهاراً؛ --سندر لال.

700 PAGES, 32 ILLUSTRATIONS 2 COLOURED MAPS "CHINA TODAY"

PRICE

BY PANDIT SUNDARLAL

Rs. 780

A vivid narration of the glorious and wonderful achievements of New China... A picture of China which is both convincing and authentic... the best book that has come out so far on New China in the English language ... the most objective in approach and comprehensive in treatment.

—National Herald, Lucknow.

Highly informative...throws vivid light on conditions obtaining in that country...a book which deserves to be widely known—Leader, Allahabad.

Encolopsedic...characterized by scute observation of detail as well as by...instinctive grasp of the fundamental perspective...To read it is veritably like accompanying the Mission on its thrilling voyage of discovery in New Chins.

—Blitz, Bombay

A mine of information which gives a picture of China as nothing telse dose...the best guide to New. China...Those who would like to understand what is happeing in New China can do not better than to study it.

—Bharat Lyoti. Bombay

The wealth of information it gives on China new and old, makes fascinating reading...is comprehensive and informative and must therefore interest all students of public affairs.

—Indian Express, Madras

China Today is an eloquent tribute to his (Pandit Sundarlal's) shrewd understanding of men and matter... brings to light the mighty endeavour of the Chinese People to rebuild their great nation on firm new foundations for a tomorrow which is theirs.

— Wigil, Delhi.

उन्नीसवीं सदी के एक फ्राकीर की डायरी

أنيسوين صدى كے ايك فقير كى تايرى

CONFORMATION OF THE PROPERTY O

परिस्त सुन्द्रलाल

(पिछले नम्बर से मार्ग)

(20)

एक दिन तीहीद अर्थान् एकेश्वरवाद के विषय में बात वीत शुरू हुई. कहने लगे मिथां सच पूछो तो तीहीद (अर्थान् ईश्वर को एक कहना) भी शिर्क (ईश्वर के साथ किसी को शरीक करना) है. ईश्वर को एक कहना ही छसे सीमा के अन्दर बाँधना है जबकि वह अनन्त है और उसकी कोई सीमा या संख्या नहीं. वह सीमा और संख्या दोनों से परे है. इसलिए उसे एक कहना भी ठीक नहीं और अगर यह कहा कि कुरान के अन्दर 'कुल हो अल्ला हू अहद' अर्थान् ईश्वर एक है, यह क्यों कहा गया है तो इसका जवाब यह है कि बात कहने के लिये इससे बेहतर कोई शब्द नहीं. यदि मनुष्य सब को छोड़ छाड़कर एक के सर हो रहे तो क्या ही अच्छी बात है और यदि इससे ऊपर डठकर एक से भी पाक साफ हो जावे तो फिर क्या ही कहने हैं.

हमें इस सम्बन्ध में एक कहानी याद आई. महात्मा दत्तात्रय ने 24 गुरू किए थे जिनमें से एक भड़भूँजन थी. यह भड़भूँजन जब अपनी सुसराल गई तो उसे कूटने का काम दिया गया. हाथों में चूड़ियां पहने थी. उसे लज्जा आई कि मेरी चूड़ियों की मनकार सुसराल के मरदों के कान में पढ़ेगी. यह सोचकर उसने दोनों हाथों से एक एक चूड़ी तोड़ दी. फिर भी आवाज बनी रही. उसने दोनों हाथों की एक एक चूड़ी और तोड़ दी. होते होते दोनों हाथों में केवल एक एक चूड़ी रह गई. उस समय मनकार बिलकुल बन्द हो गई. दत्तात्रय ने इस घटना से एकेश्वरबाद की शिक्षा पाई और इस की कोजपना गुरू माना. किन्तु हमारे नजदीक तो यदि यह एक भी तोड़ दी जाय तो बिलकुल बलेड़ा साफ हो जाय. असली अद्धेत यही है कि अद्धेत के माब को सममने के लिए अद्धेत के बिचार को भी मिटा दिया जाय.

> नेस्तम सन हरचे इस्ती बस तुई, चृं यकी न बुबद कुजा बाराद दुई.

मर्थात्—में हूँ ही नहीं, जो इस है बस त्ही है. जब इकाई भी न रही तो दुई कहाँ रह सकती है ? يلتت سندر ال

(يجهل نسبر سه آک)

(20)

ایک دن توحید ارتهات اینهشرواد کے وشئے میںبات چھت شروع ہوئی . کہلے لگے میاں سے پوچھو تو توحید (ارتهات ایشھور کو ایک کہنا) بھی شرک (ایشور کے ساتھ کسی کو شریک کرنا) ہے . ایشور کو ایک کہنا ہی آسے سیبا کے اندر باتی ہیں ، وہ سیبا اور ساتھیا دونوں سے پرے ہے . ایس لئے آسے ایک کہنا بھی ٹھیک نہیں اور اگر یہ کہو کہ قرآن کے اندر آس کی حواب یہ ہیک نہیں اور اگر یہ کہو کہ قرآن کے اندر تو ایس کا جواب یہ ہے کہ بات کہلے کے لئے اِس سے بہتر کوئی شہدا ہے نہیں ، یدی منشیہ سب کو چھور چھارکر ایک کے سر ہو رہے تو کیا ہی اُچھی بات ہے اور یدی اِس سے آور آلیک کے سر ہو رہے تو کیا ہی اُچھی بات ہے اور یدی اِس سے آور آلیک کے سر ہو رہے تو کیا ہی اُچھی بات ہے اور یدی اِس سے آور آلیکر ایک سے رہے ہیں ہیں۔

همیں اِس سبندہ میں ایک کہائی یاد آئی ، مہاتا دائرئے نے 24 گرو کئے تھے جن میں سے ایک بهربهرنجوں تھی، یہ بهربهونجوں جب اپنی سسرال گئی تو آسے کوڈنے کا کام دیا گیا ، ھاتھوں میں چوریاں پہنے تھی ، آسے اجها آئی که میری چوریوں کی جهنکار سسرال کے مودوں کے کان میں پڑیکی ، یہ سوچکر اُس نے دونوں ھاتھوں سے ایک ایک چوری تور دی ، پور بھی آواز بای رھی ، اس نے دونوں ھاتھوں کی ایک ایک چوری اور تور دی ، ھوتے دونوں ھاتھوں میں کیول ایک ایک چوری رہ گئی ، اس سیئے جهنکار بالکل بند ھوگئی ، انس سیئے جهنکار بالکل بند ھوگئی ، اوس گیٹنا سے ایمیشورواد کی شکشا پائی اور اِس ایستوں کو اپنا گرو مانا ، کنتو ھمارے نودیک تو یدی یہ ایک ایستوں کو اپنا گرو مانا ، کنتو ھمارے نودیک تو یدی یہ ایک کی بھی قد کہ ادویت کے بھاؤ کو سمجھلے کے لئے ادویت کے وچار بھی مٹا دیا جائے ،

ئىستم من ھرچە ھستى بىس توئى؛ چوں يكى نه بود كتجا باشد دوئى.

ارتبات سمیں میں می نہیں' جو کچو ہے بس'تو می ہے۔ جب اکثی بھی نه رمی تو دوئی۔ کہاں رہ سکتی ہے ؟ पक दिन जब मैं सेवा में उपस्थित हुआ वो गुरू जी ने एक पद सनाया—

आप लगाना आप में और आप ही ढूँदनहार, और होने को पाइये यह तो आपही आप. यह पद सुनाकर गुरू जी कहने लगे कि अद्वैत के इस मुक्ताम पर अज्ञाब या सवाब, पाप या पुराय कुछ बाकी नहीं रहता.

हान ध्यान सब उठ गयो, सभा भई सब सुझ, ऊँच नीच धन्तर नहीं, नहीं पाप नहीं पुझ. एक आदमी ने उस समय प्रश्न किया कि महाराज जब पाप पुग्य नहीं तब बहिश्त और दोजल क्यों है ? उत्तर दिया कि है भी और नहीं भी है. अगर दुई है तो सब कुछ है और नहीं तो कुछ भी नहीं.

(22)

एक दित कहने लगे कि कबीर बड़े सच्चे चद्वैतवादी थे. जब उनके खद्वैत की खबर रैदास तक पहुँची तो रैदास ने कबीर के पास यह पद लिखाकर भेजा, क्योंकि रैदास सगुण के उपासक थे, जिन्हें सूकी परिभाषा में 'चहले सिकात' कहते हैं और कबीर निर्मुण के उपासक थे, जिन्हें 'झहले जात' कहते हैं—

मा त्रिगुनी बाप जुलाहा, पूत भये त्रसङ्गानी, आदि अन्त की जाने नाहीं, अपने मन की ठानी; जुलहे नहीं नैनहित मोरे रे.

इसका उत्तर कबीर ने इस प्रकार भेजा— जबाजान बिन जबातःब बिन, काया शुद्ध न होई, पूरन जबा सकल घट ज्यापक, दूजे और न कोई; चमरे नहीं नैनहित मोरे रे.

होते होते एक दिन दोनों की भेंट हुई. दोनों में झान चर्चा की ठहरी. कबीर ने अपनी भक्ति को उत्तम बताया, रैदास ने अपने मार्ग के उच्चतर होने का दावा किया. अब निर्णय हो तो कैसे ? रैदास सगुण के सच्चे उपासक ता थे ही, उन्होंने रामचन्द्र जी को याद किया. तुरन्त घाड़े पर सबार होकर धनुष बाण हाथ में लिए रामचन्द्र आ उपस्थित हुए और कहा कि—"ए कबीर ! रैदास की बात क्यों नहीं मानता ?" कबीर ने उत्तर दिया—"महाराज ! आप सीता जी की चौकसी करें. इस मामले में दखल न दीजिए. बात जी की चौकसी करें. इस मामले में दखल न दीजिए. बात जीत मेरी और इनकी है, हम दोनों भुगत लेंगे." रामचन्द्र जी खुप होकर दूर खड़े हो गए. तब रैदास ने छुटण जी को याद किया. वह भी गठड़ पर सवार, सिर पर मुकट लगाए, मुख पर सुरती धरे सामने आ गए और कबीर को समकाने

(21)

ایک دین جب میں سیوا میں ایستیت ہوا تو گروجی نے ایک میں سایا ---

آپ لگاتا آپ میں اور آپ هی دهونتهنهار؛ اور هورے تو بایئے یه تو آپ هی آپ.

پہ پد سفاکو گروجی کہتے لگے که آدویت کے اِس مقام پر _{غا}ب یا ٹواب' پاپ یا پنیہ کچے ہاقی ٹہیں رھٹا ۔

گیان دهیان سب أنه گیو، سبها بهنی سب سن، أرنيج نهيج انتر نهين، نهين پاپ نهين پن.

ایک آدمی نے اُس سئے پرشن کیا که مهاراج جب پاپ پنید نہیں تب بہشت اور دوزج کیوں ہے ؟ آثر دیا کہ ہے بھی اور نہیں بھی ہے ۔ اگر دوئی ہے تو سب کچھ ہے اور نہیں تو کچھ بھی نہیں ۔

(22)

ایک دی کہنے لگے کہ کبھر ہوے سچے آدویشوادی تھے ، جب آن کے آدویت کی خبر ریداس تک چہوتچی تو ریداس نے کیے کہ کبیر کے پاس یہ پد لکھاکر بھیجا کیوٹکہ ریداس سکن کے آپاسک تھے جاہیں صوفی پریبھاشا میں 'اھل صفات' کہتے ھیں ۔۔۔ اور کبیر درگن کے آپاسک تھے' جابھی 'اھلذات' کہتے ھیں۔۔۔ اور کبیر درگن کے آپاسک تھے' جابھی دھر دھر بھر گانے '

ماں درگئی باپ جوالھا' پوت بھٹے برھم گیانی' اُدی انت کیجائے نہیں' اُپنے میں کی ٹھانی' جواہے نہیں نین ھت مورے رے ۔

اِس کا اُتر کبیر نے اِس برکار بھیجا۔

برهم گیاں بن برهم تتو بن کایا شده نه هوئی ، پررن برهم سال گهت ریایک ، دوجے اُرر نه کوئی ؛ چرے نهیں نهن هت مورے رے ،

هوتے هوتے ایک دن دونوں کی بھینت هوئی ، دونوں میں کیان چرچا کی ٹھہدی ، قبیر نے اپنی بھکتی کو آتم بتایا' ریداس نے اپنی بھکتی کو آتم بتایا' ریداس نے اپنے مارک کے آچیدتر هوئے کا دعوی کیا ، آب نرئے هو تو کیسے ؟ ریداس سکی کے سچے آپاسک تو تھے هی' آنھوں نے رامچندر جی کو یان کیا ، ترنت گھوڑے پر سوار هوکر دهنه بان هاته میں لئے رامچندر آ آپستہت هوئے اور کیا که—"اے کبھرا ریداس کی بات کھوں نہیں مانتا ؟" کبھر نے آتر دیا—"مہاراج! آپ سیتا جی کی چوکسی کریں ، اِس معامله میں دخل نه دیجھئے ، بات چیت مہری اور اِنکی ہے' هم دونوں دخل نه دیجھئے ، بات چیت مہری اور اِنکی ہے' هم دونوں بیکت لیںگے ،" رامچندر جی چپ هوکر دور کھڑے هوگئے ، بیات چی کو یان کیا ، وہ بھی گروڑ پر سوار' سر برداس نے کوشن جی کو یان کیا ، وہ بھی گروڑ پر سوار' سر بر مکٹ لگائے' مکھ پر سولی دھرے سامنے آگئے اور کبھر کو سمجھائے

A CONTRACTOR OF THE PARTY OF THE

ली, क्वीर ने क्हा-"हे महाराज ! जाप गोपियों से क्लोल क्षीजिए, मेरा इनका मताका है, चुक जायगा." वह भी अलग हो गए. फिर रैवास ने महादेव जी का ध्यान किया. तरन्त हेल पर सवार त्रिशल हाथ में लिए आए और दर्शन दिया. कहीर ते उनका कहना भी न माना और उत्तर दिया कि-"महाराज ! आप पार्वती के पास जायें और उनकी सैर मतायें, इस बात से आपको क्या मतलब ?" महादेव जी को क्रोध आया और एन्होंने कबीर के मारने को त्रिशल हठाया. कबीर तुरन्त 'रम' अर्थात् 'ला' कहकर अन्तर्भन हो गए. उस समय रैदास के तीनों इष्टदेव बोले-"इस बादैत और एक मेब के दरिया में जहाँ कबीर ने खबकी लगाई है हम और वह सब बराबर हैं. यहां हमारा भी कुछ बस नहीं बलता." रैदास ने कहा कि-"महाराज ! मैंने इतने हिनों आपकी खेबा की और इस समय कुछ न हो सका तब भविष्य में आप लोगों से क्या आशा रखूं ? बस मेरा नमस्कार है !" इसके परचात् रैदास ने सबको धता बताई, क्वीर से दीक्षा ली और अहैत का मार्ग अंगीकार किया-

माला लक्कड़, ठाड़्कर पत्थर, तीरथ खगरे पानी, रामा कृष्णा मरते देखे, चारों वेद कहानी। रामा मर गये कृष्णा मर गए, मर गई लक्खोबाई, उसको साधो क्यों ना पूजो, जिसको मीत न आई.

दिल गुभ्रत मरा इस्म लडुको इविस अस्त, तालीम कुन अगर तुरा दस्तरस अस्त. गुभ्रतम के अलिफ गुभ्रत दिगर गुभ्रतम हेच, दर जाना अगर कसस्त यक हफ्र वसस्त.

अर्थात—मेरे दिल ने कहा कि मुक्ते ब्रह्मविद्या सीखने की आकांक्षा है. अगर तू जानता है तो मुक्ते शिक्षा दे. मैंने उत्तर दिया—'अलिफ'. दिल ने कहा—इसके आगे १ मैंने कहा—कुछ नहीं. सावधान! मनुष्य के लिए एक अक्षर काफी है.

(23)

एक दिन कहने लगे कि हमने एक मौलवी से यह बात पूछी कि कलमे 'ला इलाह इल्अल्लाह' में ला शब्द निषेधात्मक है और इस बात का चोतक है कि और भी खुदा हैं, जिनमें से एक को हमने ले लिया और औरों का छोड़ दिया. अर्थात् एक को मानते हैं, औरों को नहीं मानते. इसमें तो बढ़ा ही 'शिर्क' (बहुत ईश्वरवाद) भरा हुआ है. यह बाहत नहीं है. मौलवी साहब ने उत्तर दिया कि बहुत से लोगों ने और और खुदा भी मान रखे हैं. इमने कहा कि हुबदत! पहले वो यह बताइये कि कुरान الله . کیو نے کہا۔ ''ہ مہاراے آ آپ گویوں سے کلول کوجئے . میرا انکا جوکا ہے چک جائیگا ۔'' وہ بھی الگ ہوگئے ہور ریداس نے مہادیو جی کا دھیاں کیا . ترنت بھل پر سوار ترشول ھاتو میں لئے آئے اور درشن دیا . کبھر نے آنکا کہنا بھی ات ماتیا اور آتر دیا کہ۔''مہاراے آ آپ پاروتی کے پاس جائیں اور آن کی خور منائوں . اس بات سے آپ کو کیا مطلب ؟ ' مہادیو جی کو کرودھ آیا اور آنہوں نے کبھر کے مارنے کو ترشول آتھایا . کبھر ترفت 'رم' آرتیات 'لا' کبکر انتر دھاں ھوگئے . اس منئے ریداس کے تین ارشت دیو ہوئے۔''اِسادویت اور ایک میو برابر ہیں ۔ یہاں ھیارا بھی کچھ بس فہیں چلتا ۔'' ریداس نے کہا کہ حدید ہوائے اس نے نہاں ھیارا بھی کچھ بس فہیں چلتا ۔'' ریداس نے کہا کہ کچھ نہ ہوں آپ کی سیوا کی اور اِس سائے کچھ نہ ہوسائے کہا آت بہ بھوشیہ میں آپ لوگوں سے کیا آشا رکھی ہو اور ادریت کا مارک سے کو دھتا بتائی' کبھر سے دیکھا لی اور ادریت کا مارک سے آئے اُنے دیکھی کیا ۔'' اِس کے پشچات ریداس نے انکہا کیا۔۔۔

مالا لکو ٹیاکر پٹھر' تیرتھ سکرے پانی' رأما کوشنا مرتے دیکھے' چاروں وید کہانی ۔ رأما مرکثے کوشنا سرگئے' مرکثی لکھو ہائی' اُسکو سادھو کیوںنہ پوجو' جسکو موت نہ آئی ۔

دال گفت مرأ علم لدرن و حرس أست؛ تعلیم كن اگر ترأ دسترس أست. گفتم كد الف گفت دگر گفتم هیچ؛ درخانه اگر كسأست یك حرف بس أست.

ارتهات سمهرے دل نے کہا که مجھے برهم ردیا سیکھنے کی آگاتھا ہے۔ اگر تو جانگا ہے تو مجھے شکشا دیے۔ میں لے آتو دیا اللہ اللہ میں نے کہا کچھ میں نے کہا کچھ نہیں ۔ ساردھاں ا منشیہ کے لئے ایک اکشر کانی ہے۔

(23)

ایک دی کہنے لئے کہ هم نے ایک مولوی سے یہ بات پوچھی که کلمة اور اوس بات کا دیوتک اور اوس بات کا دیوتک ہے کہ اور یعی خدا هیں، جن میں سے ایک کو همنے لیا اور اوروں کو چھر دیا ۔ ارتبات ایک کو مانتے هیں، ارروں کو نہیں مانتے . اِس میں تو بڑا هی 'شرک' (یہو ایشور واد) بھرا هوا هے . یه ادویت نہیں هے . مولوی صاحب یے اُتر دیا که بہت سے لوگوں نے اور اور خدا یعی مان رکھے هیں ، هم نے کہا که حضرت! پہلے تو یہ بتائیے که قوان

श्रीह सहसूत्र' पर कव विका गया था १ जिस समय वह कतमा और करान लीह पर लिखा गया दस समय था कीन को दूसरा खुदा मानता १ मीलवी साहव ने यह सुनकर कहा कि हुम बहाबी मालूम होते हो १ हमने कहा कि ठीक है, जब हमने एक सच्ची बात कही और आप जवाब न दे सके तो हम बहाबी हो गए!

> ला व इस्ला हरदो लक्ष्वे सासतन्त्र सास्क रा दर दामे वहम अन्दासतन्त्र

द्यर्थात्—'ला' चौर 'इल्ला' इन दो शब्दों को गढ़कर संसार को बहम के जाल में फंसा रखा है.

(24)

एक दिन कहने लगे कि 'सुनपत' में अखून्द अब्दुल राकूर हमारे पास बैठे थे. इतने में सनाउल्ला दहरिया । आया और एक दृश्च का पत्ता तोड़कर अखून्द साहब के सामने पेरा किया और कहने लगा कि भला कोई ऐसा है जो इसे किर जोड़ दे. अखून्द साहब बोले कि खुदा ताला को यह सामर्थ्य है. उसने उत्तर दिया कि यह तो खुदा के बाप से भी नहीं लग सकता. अखून्द साहब उसे गालियां देने लगे. मैंने कहा कि साहब ! आप क्यों खफ़ा होते हैं. खुदा ताला तो लमयिवाद बलम यूलद है. न खुदा का बाप होगा न पत्ता लगायेगा. उसे बकने दीजिए.

(25)

पक बार सुखदेव जी ने अपने पिता बेद्ञ्यास से कहा कि मैं ज्ञान हासिल करना चाहता हूँ. पिता ने राय दी कि तुम राजा जनक के पास जाओ. सुखदेव जी सच्चे खोजी थे. बल कर राजा के दरवाजे पर पहुंचे. दरवानों से कहा कि राजा जनक को मेरे आने की खबर कर दी. राजा को खबर दी गई कि ज्यास के बेटे सुखदेव जी आए हैं. राजा ने कहा अच्छा खड़ा रहने दो. सात दिन के बाद राजा को फिर साय दी गई तो कहा दूसरे दरवाजे पर लाओ. वहाँ भी सात दिन कवा रहना पड़ा. तीसरी बार कहा कि आने दो. सुखदेव जी अन्दर गए तो देखा कि सारा ठाठ बाट दुनियादारी का मौजूद है. दिल में सोचने लगे कि यह तो खुद जगत-व्यवहारी है, सुक्ते क्या उपदेश देगा. राजा को सनकी इस शंका का पता लग गया. उन्हें ठहराया. दूसरे दिन शहर के सब गली कूचों में नाव रंग करा दिया. फिर

* मुसलसानों के मत के अनुसार क़ुरान शरीफ सृष्टि के सादि में इंस्कर के यहां एक तस्ती पर लिख लिया गया आ, जिसे 'सीद अद्दक्ष्ण' कहते हैं और वर्तमान क़ुरान उसी समय से ठीक इसी वरह चला आ रहा है.

🕇 स्विभूतीं की एक सन्प्रदाय विशेष का नाम.

> 9 و الا هر دولفظم ساختاد خاق را در دام رهم انداختاد

ارتهات سولا اور الله ان دو شدوس کو گرهکر سنسار کو رهم کے جال میں پہلسا رکھا ہے ،

(24)

ایک دن کہنے لگے که اسابت میں آخوند عبدالعفور همارے پاس بیٹھے تھے ، آننے میں ثنا الله دهریه † آیا آور آیک ہرکش کا پته تور کو آخوند صاحب کے سامنے پیش کیا آور کہنے لگا که بیلا کوئی آیسا ہے جو اِسے پهر جوردے ، آخوند صاحب براے که خدا تعلق کو یه سامرته هے ، اُس نے آثر دیا که یه تو خدا کے باپ سے بھی نہیں لگ سکتا ، آخوند صاحب آسے کالیاں دینے لگے ، میں نے کہا که صاحب آ آپ کیس خفا هوتے میں ، خداتعلی تو لمایے لد ولم یولد هے ، نه خدا کا باپ هوگا نه میں ، خداتعلی تو لمایے لد ولم یولد هے ، نه خدا کا باپ هوگا نه میں ، نه خدا کا باپ هوگا نه

(25)

ایک بار ستهدیوجی نے آپنے پتا ویدویاس سے کہا کہ میں گیاں حاصل کرنا چاھتا ھوں ، پتا نے رائے دہے کہ تم راجہ جنک کو پاس جاؤ ، ستهدیو جی سچے کھوجی تھے ، چل کر راجہ کے دروازہ پر پہونچے ، دربانوں سے کہا کہ راجہ جنک کو جمیرے آئے کی خبر کو دیو ، راجہ کو خبر دہی گئی که ویاس کے بیٹے سجدیو جی آئے ھیں ، راجہ نے کہا اچھا کھڑا رھنے دو ، سات دن کے بعد راجہ کو پھر خبر دہی گئی نو کہا دوسوے دروازے پر نن کے بعد راجہ کو پھر خبر دہی گئی نو کہا دوسوے دروازے پر لئے ، وہاں بھی سات دن کھڑا رھنا پڑا، تیسری بار کہا کہ آئے دو ، سکدیو جی آئدر گئےتو دیکھا کہ سازا تھاتھ بات دنیاداری کا موجود فید دل میںسوچنے لئے کہ یہ تو خود جات ویو ھاری ہے مجھے کیا ایدیش دیگا، راجہ کو آن کی اس شنکا کا پتہ لگ گیا، آنھیں آپرایا ، دوسرے دن شہر کے سب گلی کوچرں میں تاج رنگ کوا دیا، پھر

* مسلمائیں کے محت کے انہسار قرآن شریف سرشتی کے اُدی میں ایھور کے یہاں ایک تنعتی پر لکھ ایا گیا تیا' جسے 'لی محتوظ' کہتے ھیں لور ورتبان قرآن اُسی سماے ساتھک اُس طرح چا۔ آرہا ہے ۔

† مونيس كي ايك سيورال وهيش كا تام ،

जीकरी पूर्व के यह समित की कमारी

मसरेव जी को दुसाया और एक कटोरा दूप से संवासय मरा हुआ उनके हाथ पर रक्षकर कहा जाओ सारी जनक-पूरी की परिक्रमा करों, लेकिन खबरदार दूध न गिरने पाने. हो सिपाही संगी तलवार लिए उनके साथ कर दिए कि कार एक वृंद भी इसमें से गिरे तो सुखदेव के दुक्त दुक्त ह्या हो. राजा जनक के हुकुम से वे दोनों सिपाही सुसादेव जी को शहर के चारों तरफ प्रमा लाए. राजा ने पूछा कि द्य तो नहीं गिरा. सिपाहियों ने जवाब दिया कि महाराज ! भगर ऐसा होता तो ये आपके पास जीते कैसे पहुंचते. फिर राजा ने सखदेब जी से पूछा कि बाज तुमने शहर में नारों हरफ नाच रंग का तमाशा तो खुब देखा उन्होंने जवाब विया कि महाराज ! मेरे बिए तो इस कटोरे की हिकासत जान की एक आफ्त थी. डर था कि कहीं एक बूँद खलकी और मारा गया, भला ऐसी हालत में तमाशा क्या खाक देखता ! सभे तो इस कटोरे के सिवाय और कोई चीज विखाई ही नहीं दी. इस पर राजा जनक ने कहा कि जिस तरह तुम्हारी यह एक घड़ी बीती है उसी तरह हमारा एक एक पल बीतता है. यह धन दीलत और शान शीकत हमारी नजरों में सब हेच है. हमारा ध्यान भी उसकी तरफ नहीं जात। माल असवाब, सोना, वाँदी, बीबी बच्चे, ये सब दुनिया नहीं है, दुनिया ईश्वर की तरफ से बेखबर हो जाने का नाम है. दूसने बाहर की सस्तनत और माल और दौलत को देखकर हमारी हालत का रालत अन्दाज लगा लिया है. ऐ सुखदेव ! इसी बात से जो तुम पर बीती है सममलो कि वे सिपाही यम के दूत हैं, कटोरा तन है, दूध मन है और राग रंग जो रास्ते में हो रहे थे इस असार संसार के ऐश बाराम हैं. इसी तरह हम भी दुनिया के धन्धों में इस डर से मरागुल नहीं होते कि कहीं दूध न छलक जाय यानी दिल ईरवर की याद से चूक कर मारा न जाय.

जब कोई ऐसे मन को लगावे. मन के जगावन से हर पावे.

जैसे कावन भरत कूप जल, कर छोड़त मसकावे. अपना प्रेम सखी से भाखे, सुरति गगरि में लावे. जैसे नटनी चढ़त बाँस पर, नटचा ढोल बजावे. भार आपना तोल देह का, सुरत बाँस में लावे.

इसके बाद राजा जनक ने सुखदेव जी को उनकी समम के मुताबिक महा-सान का उपदेश देकर बिदा किया.

(26)

एक फुकीर बढाले में रहते थे, उनका नाम था, सबरात-डल्लाइ. इन दिनों के बाद उन्होंने अपने माथे पर तिलक लगाया, गर्म में जनेक डाला, पन्डितों का सा रहन सहन

الكاندو جي كو يا يا أور أيك كاورة دوده سه لبالب بهوا هوا أن كے ماته پر ركم كر كہا جاؤ سارى جنك پورى كى يريكرما كروا لهكن خبردار دوده ته گرنے ياوے ، دو سهاهي مناجی تلوار لئے اُن کے ساتھ کر دیئے کہ اگر ایک بوند بھی اِسمیں الله گرے تو سمدیو کے اتوے اوا دو . واجد جنک کے حم الله وسے دونوں سیاھی سکھدیو جی کو شہر کے چاروں طرف عما لائم، راجه نے پرچها که دودہ تو نہیں گرا، سیاهیوں نے جواب دیا که مہاراے ! اگر ایسا هونا تو ید آپ کے پاس جیتے کہسے پہولنچاتے ، پھر راجہ نے سکھدیو جی سے پوچھا کہ آج تم نے شهر میں چاروں طرف ناچ رنگ کا تماشہ تو خوب دیکھا۔ انہوں نے جواب دیا که مہاراً۔ ا میرے لئے تو اِس کاورے کی حفاظت جان کی ایک آنت تھی . قرتها که کہیں ایک بوند جهاعی اور مارا گیا به ایسی حالت میں تباشا کیا خاک دیمیتا ! مجه تو اِس کتورے کے سوائے اور کوئی چیز دکھائی ھی فہیں دی ، اس پر راجع جلک نے کہا کہ جس طرح تماری يه ايک گهري بيتي هے اُسي طرح همارا ايک آيک پل بينتا هے یہ دھن دولت اور شان شوکت هماری نظروں میں سب هيچ هـ . هنارا دهيان يوي اُس كي طرف نهين جاتا . مال اُسبَّاب، سونا چاندي، بيوي بجي، يه سب دنيا نهين هي، دنيا أيشور كى طرف سے يے خبر هو جائے كا ثام في ، تم لے باهر كى سلطنت اور مال اور دولت کو دیکه کو هماری حالت کا غلط انداز لگا لیا ہے . آے سکھدیو ا اِسی بات سے جو تم پر بیٹی ہے سنجه لو که وقع سهاهی یم کے دوت هیں' کلورہ تن هے دوده من هے اور راک رنگ جو راستے میں هو رهے تھے اِس اُسار سنسار کے عیص آرام هیں۔ اِسی طرح هم بھی دنیا کے دهندهوں میں اِس ور سے مشنول نہیں هوتے که کہیں دوده نه چھلک جائے یعنی دل ایشور کی یاد سے چرک کر مارا تھ جائے۔

جب کوئی ایسے من کو الارے من کے لگاوں سے ہو پارے .

جيسے کارن بهرت کوپ جل کر چهروت سکارے . اینا پریم سکھی سے بھا کھے' صورتی گار میں الرہ ، جيس نتني چرهت بانس پر' نتوا تقرل بجاره . بهار آينا تول ديهه كا مورت بانس مين لاره . اِس کے بعد راجع جنگ نے سکیدیو جی کو اُن کی سنجھ کے مطابق برهم گیان کا اُپدیش دیکر بدا کیا .

(26)

أيك فقير بثال مين رهت تها أن كا ثام تها سننت الله كيه دنوں كے بعد أنهوں نے أينے ماتے پو تلک لگایا کے میں جنیثو ڈالا پنڈٹون کا سا رہی سہی व्यक्तियार किया और रंगीराम अपना नाम रखा. एक दिन एक दूसरे मुसलमान फक़ीर जो शेख करीमुरीन दहरिया पुरहानवी के चेलों में से थे, उनसे मिलने बटाले आए और पूजा कि आप का नाम क्या है और यह क्या ढंग है ? उन्होंने जवाब दिया कि सबरात का मतलब है रंग और अल्लाह की जगह पर हमने राम बदल दिया. यानी सबरातुल्लाह की जगह अब हमारा नाम रंगीराम है. यह सब मुनकर उसने नफ़रत से साथ रंगीराम से कहा कि तुमने इसलाम और हिन्दू धर्म में क्या फरक़ देखा जो एक क़ैद से निकल कर दूसरी कैद में जा फरेंसे. अगर निकलना था तो दोनों ही से निकले होते. हम तो सममते थे कि तुम मुवहिहद (अद्धेत बादी) हो. तुम तो अभी हिन्दू और मुसलमान ही के फेर में पढ़े हो. यह कहकर चल दिये और उनके पास न ठहरे.

(बाक्री फिर)

اختیار کیا آور رقعی رام آینا نام رکیا آیک بین آیک دوری ایک دوری بوهاتهی دوری میل سے تھی آن سے ملنے بقالے آئے آور پوچا کی آپ کیا تمنگ ہے ؟ آئیس نے آپ کیا تمنگ ہے ؟ آئیس نے آپ کیا تمنگ ہے ؟ آئیس نے جہاب دیا کہ سبنت کا مطاب ہے رنگ آور اللہ کی جہہ آپ جہاہ پر جم نے رام بدل دیا ۔ یعنی سبنت اللہ کی جہہ آپ جمارا نام رنکی رام ہی یہ سب سی کر آس نے تفرت کے ساتھ رنگی جو ایک تید سے نکل اور هندو دهرم میں کیا فرق دیکیا جو ایک تید سے نکل کو دوسری قید میں جا یہنسے ؟ آگو رایک تید سے نکل کو دوسری قید میں جا یہنسے ؟ آگو مرحد (ادریت وادی) هو ، تم تو ایعی هندو آور مسلمان هی مرحد (ادریت وادی) هو ، تم تو ایعی هندو آور مسلمان هی نیمیر میں پڑے ہو ، یہ کہکو چل دیٹھ آور آن کے پاس نے تارہ آن کے پاس

(باقى پهر)

बो चेन शू 'आदर्श मज़दूर' कैसे बनी ? المرش مزدور' كيسے بنی? اللہ عبین شو 'آدرش مزدور' كيسے بنی

श्रीमती प्रभा एम. ए. हिन्दी अध्यापिका पेकिंग बूनिवर्सिटी पेकिंग, 'चीन

हो चेन श्र आदर्श मजदूर कैसे बनी यह एक दिलचस्य कहानी है. 12 फ्रवरी '55 को जब मुमे उससे मुलाकात करने का मौका मिला तो उसने मुमे तफ्सील से बताया. इसे उसी की जबानी मुनिये:—

"जब मैं पहली बार छिंगताव की नं० 6 कपड़ा मिल में गई और मशीन देखी तो ढर गई. मगर मैंने हिम्मत से काम लिया. पञ्चीसाथियों के साथ में कारखाने की वर्कशाप में काम सीखने लगी. छुरू में बड़ी कठिनाई हुई, पर मैं निराश नहीं हुई खीर दिन पर दिन अधिक मन लगाकर काम सीखती रही. रास्ते में, हर समय मेरा ज्यान अपने काम पर ही रहता था. स्त दूढने पर कौरन उसे मिला लेना एक खास कला (टैकनिक) है, मगर उस समय इसके लिये कोई खास करीका न था. मैं कारखाने से घर वापस आती पर ज्यान कारखाने में ही रहता था. घर में माता जी के चरखे के कञ्चे स्त से स्त जोड़ने का अभ्यास करती. इस तरह का अभ्यास करते करते मेरी उगलियां फूल जाती थीं. अक्सर आधी रात से ही मींद सुल बाती और मैं दिन होने का इन्तजार करती जिससे कारखाने आकर अपना अभ्यास कर सक्.

شریمتی پربھا ایم. أے، علامی ادھیاپکا پیکنگ یونیورستی پیکلگ چین

هر چین شو آدرش مؤدرر کیسے بئی یہ ایک دلچسپ کہائی ہے ۔ 12 نورری 55 کو جب مجھے اُس سے مالقات کرنے کا موقع مال تو اُس نے مجھے تفصیل سے بتا یا ۔ اِسے اُس کی زبائی سنیائے:۔۔۔

''جب میں پہلی بار چھنگ تار کی تمبر 6 کھڑا مل میں گئی اور مشین دیکھی تو قر گئی ، معر مینے هست سے کام لیا ، پچیس ساتھیں کے ساتھ میں کارخانے کی ورکشاپ میں کام سیکھنے لگی ، شورع میں بچی کھٹائی ہوئی' پر میں الرائی تہیں موئی اور دن پر دن ادھک من لگا کو کام سیکھتی رہی ، راستے موں اور دن پر دن ادھک من لگا کو کام سیکھتی رہی ، راستے موں اور دن پر دورا ایک خاص کا (ٹیکنک) ہے' مگر اُس سملے پر دورا اُسے ملا لیکا ایک خاص طریقہ نہ تیا ، میں کارخانے سے گھر واپس آتی پر دھیان کارخانے میں ھی رہتا تھا ، گھر میں ما تا واپس آتی پر دھیان کارخانے میں سی سوت جورنے کا ابھیاس کرتی ، واپس طرح کا ابھیاس کرتے کرتے میری آلکلیاں پھول جاتی تھیں ، اگثر آدھی راس سے ھی نہیں کہتے اور میں دن ہوئے کا اُنتظار کوتی جس سے طری نہیں اُنتظار کوتی جس سے کارخانے ہو کو اپنا اُنھیاس کو سکوں ، اُنتظار کوتی جس سے کارخانے ہو کو اپنا اُنھیاس کو سکوں ،

"एक दिन व्यवानक मैंने सूस मिला लिया, जान तीर से कई महीने के बाद इस जाम का जाम्यास हो पाता है. पर मैं कुछ ही दिनों में अच्छी तरह सूत मिलाने लगी. इसलिये जब काम बांटा गया तो दूसरे साथियों को 200 स्पिडिल बीर मुक्ते 800 स्पिडिल ही गई. 300 स्पिडिल पर अच्छी तरह काम करते देख शीम ही 400 स्पिडिल सुमें दे दी गई.

"तीम माह बाद सीखने का काम सतम हुआ और ट्रेनिंग का समय आवा. 1950 में नप साल के तीसरे दिन पहली वार में काम पर गई. मैं रात की पाली में काम करने के लिये बुनी गई. अगर रात में काम करना है तो दिन में आराम करना वाहिये था, पर काम मिलने से मैं इतनी सुरा थी कि मुक्ते नींद न आई. मैं घर में ठहर भी न सकी. उसी दिन नप साल के उपलक्ष में कारखाने में एक चीनी नाटक हुआ. मैं उसे देखने गई. 'नाटक था 'स्यू हू लन'—एक 15 साल की वहादुर लड़की की कहानी थीं जो कोमिनतांग फीज से लड़ते लड़ते राहीद हो गई थी. उसके लिये चेयरमैन माओ ने कहा है "उसका जीवन महान था और उसकी मौत शानदार." इस कहानी का मेरे दिल पर बहुत प्रभाव पड़ा और मैंने मन में कहा—'स्यू हू लन'—मैं तुम से सबक लूँगी.

"रात को काम पर गई मगर दिन में न सोने और आदत न होने के कारण 12 बजे रात तक जागती रही. उसके बाद मणकी लग गई. उस समय मशीन से एक सूत दूट गया और बहुत सी कई फैल गई. मशीन की आवाज से मैं जग तो गई पर इंस्पेक्टर ने मुसे चेतावनी दी. मुसे अपनी असावधानी पर बहा दुख हुआ. काम खतम होते ही मैं घर वापस आई और वरावर रोती रही. मां ने बहुत पूछा पर मैंने कारण न बताया. मुसे डर था कि बड़ी मुश्किल से ता कारखाने में काम मिला और अब अपनी ही लापरवाही के कारण शायद निकाल दी जाऊंगी. उसी समय मुसे त्यू हू लन की याद आ गई. मैंने सोचा कि रोने से क्या फायदा ? हिम्मत करके सुधार करना चाहिये. इस विचार से मुसे बड़ी शान्ति मिली और नींद आ गई.

"दूसरे दिन समय से बहुत पहले कारखाने गई. मशीन को साफ किया और काम में लग गई. पूरे समय मैं बड़ी सतर्क रही. इस दिन कोई ख़ास घटना नहीं हुई.

"अपने अनुभवों के साथ साथ में कारखाने के पुराने मजन्तों से उनके अनुभव भी पूछती और उससे नतीजा निकालकर उसके अनुसार काम करती. धीरे धीरे मेरे सूत मिलाने के काम में तरझकी हुई. इस काम में तरझकी होते देख एके तीन चार लड़कियों के साथ दूसरे बकराएँ में मेज दिया गया. हम सब को मन में बड़ा डर लगा. सोचा—शायद दूमने कुछ गलती की है इससे हमें यहाँ से हटाया जा रहा है. मगर बाद में हमें असली कारण माजूम हो गया. नई बकराप सं० 8 में हमें असली कारण माजूम हो गया. नई ''ایک دن اچانک مینے سوے ما لیا عام طور سے کائی۔ بیلیے کے بعد اِس کام کا اُبھیا سے ہو یا تا ہے ۔ پر میں کچھ تھے یئریں میں اچھی طرح سوے ملانے ٹکی ۔ اِس لئے جب کام افغا تو دوسرے ساتھیوں کو 200 اِسپنڈل اور مجھے 800 سپنڈل دی گئیں ۔ 300 اِسپنڈل پر اُچھی طرح کام کرتے دیا۔ نہارہ ھی 400 اِسپنڈل مجھے دے دی گئیں ۔

والنبي ماہ بعد سميمه كاكام ختم هوا أور ترينك كا سية أيا.

1960 ميں نئي سال كے تهسرے من مين پہلى بار كام پر گئى.

ميں وات كى پالى ميں كام كرتے كے لئے چنى كئى . اگر وات اسى كام كونا هاتو دن ميں آرام كونا چاهئے تها، پركام مللے سميں أينى خوش تهى كه منجے نبيد نه أئى . ميں گهر ميں تبير اسى دن نئي سال كے أيلكش ميں كارخالے ميں أيك چينى ناتك هوا . ميں أسد دينهني گئى . ناتك أيا آليو هولئ —ايك 15 سال كى بهادر لوكى كى كهائى تهى به وكومانانگ دوج سے لاتے لاتے شهيد هو گئى تهى . أس كے جو كومانانگ دوج سے لاتے لاتے شهيد هو گئى تهى . أس كے لئے چيئرمين ماؤ نے كها هے "أس كا جيون مهان تها أور أس كى موت شاندار ." إس كهائى كا ميوے دل پر بہت پربهاؤ أور مينے من ميں ميں كهائى كا ميوے دل پر بہت پربهاؤ أور مينے من ميں ميں كهائى كا ميوے دل پر بہت پربهاؤ أور مينے من ميں كهائى كا ميوے دل پر بہت پربهاؤ أور مينے من ميں كها۔ آليو هولى ا —ميں آپ سے سبق

ورات کو کام پر گئی مئر دن مین نه سونے اور عادت نه مونے کے کارن 12 بھی رات تک جاگئی رهی اس کے به بهتی بھی گئی گئی اس سمئے مشین سے ایک سوت ٹوٹ گیا اور بہت سے روئی پہیل گئی اسمین کی آواز سے میں جگ نو گئی پر انسیکٹر نے مجھے چھتارتی دی مجھے اپنی اساودھائی پر بڑا دیم ہوا کا مختم ہوتے هی میں گور واپس آئی اور بوابر روتی رهی ماں نے بهت پوچھا پر میں نے کارن نه اور اب اپنی هی الارواهی کے کارن شاید نکال دی جارتگی اور اب اپنی هی الارواهی کے کارن شاید نکال دی جارتگی اسی سیئے مجھے لیوهولی کی یاد آگئی امیں نے سوچا که سوچا که سوچا که ایک فارن شاید کرنا چاہئے ایس وچار اس وجار کی باد آگئی اس بھی اس وجار کی باد آگئی اس بھی اس بھی اس بھی اور نید آگئی اس بھی اس بھی اس بھی اور نید آگئی اس بھی اس بھی اس بھی اور نید آگئی اس بھی اس بھی مجھے بھی شانتی ملی اور نید آگئی اس بھی اس بھی اس بھی اس بھی اور نید آگئی اس بھی اس بھی مجھے بھی شانتی ملی اور نید آگئی اس بھی اس بھی شانتی ملی اور نید آگئی اس بھی اس بھی شانتی ملی اور نید آگئی اس بھی اس بھی شانتی ملی اور نید آگئی اس بھی اس بھی شانتی ملی اور نید آگئی اس بھی اس بھی شانتی ملی اور نید آگئی اس بھی سے بھی شانتی ملی اور نید آگئی اس بھی سے بھی شانتی ملی اور نید آگئی اس بھی اس بھی شانتی ملی اور نید آگئی اس بھی سے بھی شانتی ملی اور نید آگئی اس بھی اس بھی سے بھی شانتی ملی اور نید آگئی اس بھی سے بھی شانتی ملی اور نید آگئی اس بھی سے بھی شانتی ملی اور نید آگئی اس بھی سے بھی شانتی ملی اور نید آگئی اس بھی سے بھی شانتی ملی اور نید آگئی اس بھی سے بھی شانتی ملی اور نید آگئی اس بھی سے بھی شانتی ملی اور نید آگئی اس بھی سے بھی شانتی ملی اور نید آگئی اس بھی سے بھی سے

''دوسرے دی سیئےسے بہت پہلے کارخانے گئی مشین کو ماف کیا اور کام میں لگ گئی ۔ پورے سیئے میں بڑی سٹرک رھی ۔ اُس دن کوئی خاص گیٹنا نہیں ہوئی ۔

"اپنے انوبھوں کے ساتھ ساتھ میں گرخانے کے پرائے مزدوروں سے آن کے انوبھو بھی پوچھتی اور اُس سے تیجید تکالکو اُس کے الوسار کام کرتی ، دھیرے دھیرے مہرے سوت ملائے کے کام میں لوقی ھوٹی ، اِس کام میں ترقی ھوتے دیکھ مجھے تھی چار لوکیوں کے ساتھ دوسرے ورکشاپ میں بھیج دیا گیا ، ھم سبکو سی میں بڑا تر آگا ، سوچا—شاید ھم نے کچھ فلطی کی ہے اُسی سے ھمیں بہار سے مقابیا جا رہا ہے ، مگر بعد میں ھمیں املی کاری معلوم ھو گیا ، نئی ورکشاپ نمیو کے مہیے میں بھرے اسے کارئے لگی ،

"1950 का मई दिवस बाया. कारखाने में बहस शुरू हुई. विषय था "पैदावार का बढ़ाना और मशीन की सफाई." सुके मालूम हुआ कि रोज शाम का अधिकारी मुआइना करेंगे और देखेंगे कि किसकी मशीन से कितनी कई बाहर निकल कर खराब हुई. इसलिये 'कमसे कम वई खराब होना बाहिये' वह कारखाने का नारा हो गया. मैंने भी इस सुकाबले में बड़े उत्साह से भाग लिया. मेरा मुकाबला लिंग जाबरान नाम की एक लड़की से हुआ. रोज एक आदमी कितनी कम कई खराब करता है इसका मुकाबला था. पहले तो हर बादमी की मशीन से कई पींड कई खराब हो जाती थी। पर इस मुकाबले में विशेष सावधानी के कारण एक बादमी की मशीन से सिर्क दो पींड कई खराब होती थी.

"इस समय मैं सोचा करती थी कि कैसे कोई अच्छा तरीका निकाला जाय जिससे र्र्स कम से कम खराब हो. मैंने देखा कि मजदूर बार बार यहां से वहां और वहां से यहां दौद दौद कर सूत मिलाया करते हैं, इसलिये हमेशा बहुत व्यस्त दिखाई देते हैं भौर जब मशीन बहुत गंदी हो जाती है तभी सफ़ाई करते हैं. इससे समय बहुत लगता है. मैंने सोचा क्या दोनों काम एक साथ नहीं हो सकते यानी क्या ऐसा तरीका नहीं हो सकता जिससे सूत मिलाने का काम और मशीन की सफाई का काम एक साथ चलता रहे. तजरबे के तौर पर यहां वहां दीदने के बजाय मैं जल्दी जल्दी घूम घूम कर सूत मिलाने लगी और साथ ही मशीन की सफाई का काम करने की कोशिश करने लगी. पूरी मशीन को मैं जल्दी जल्दी घूम पूज कर ज्यान पूर्वक देखती रहती और अगर सूत नहीं इटता तो सफाई का काम करती रहती. इससे आरंभ में बड़ी कठिनाई हुई यहां तक कि कभी कभी जल्दी से सूत मिलाने में मेरी उंगलियां मशीन से ह्यू जातीं और कट जातीं. कभी कभी कलाई में बोट आ जाती. मगर इससे मैंने अपना तजरवा नहीं छोड़ा. थोड़े दिनों के बाद एक फरक़ साफ दिखाई देने लगा. मुक्ते खद ऐसा लगा कि मैं दूसरे मजदूरों की तरह परेशान नहीं रहती. एक दम काम खतम होने के बाद रूई खराब होने की तुलना की गई तो मेरी मशीन से केवल 5 भौंस रूई खराब हुई थी. जब कि दूसरे मजदूर एक बार में 27 औंस रुई खराब करते तो मुकसे सिर्क 5 औंस रूई खराब होती थी. यह तादाद मेरी मशीन पर रोज रोज एक सी रही.

"व्सरे मजव्र साथियों ने मेरे ऊपर आवाजें कसनी शुरू की. इससे मुने बहुत दुख हुआ. कभी कभी में सोचती क्यों न पहले के ही तरीक़े से काम करूं, कारखाने के युवक संघ के मेन्यरों ने भी मेरे ऊपर आवाजें कसी. पर युवक संध की प्रधान शीमती बान श्रूलन ने एक सभा की और मजद्रों के इस व्यवहार की निन्दा की. साथ ही उन्होंने सुके भी कस्थाहित किया. मेरा उत्साह फिर दूना हो गया. الرا 1950 کا مئی دیوس آیا کارخالے میں بحث شروع هوئی و وشئے تها الهداوار کا بوهانا اور مشین کی صفائی کا مجھے معلم هوا که روز شام کو انھیکاری معائنہ کرینگے اور دیمینگر کی کس کی مشین سے کتلی روئی باهو نکل کو خواب عرثی واسی لئے اکم سے کم روئی خواب هوئا چاهئے کا کارخالے کا نموہ ہو گیا و میں لے یعی اس مقابلے میں بڑے آتساہ شاکی لیا و میرا مقابلہ للگ آئے شن الم کی آیک لوکی سے هوا وروز ایک آئمی کتلی کم روئی خواب کوتا ہے اِس کا مقابلہ تها و بہلے تو هر آئمی کئی مشین سے کئی پوئٹ روئی خواب هو ایمی کی مشین سے میں وشیعی ساودھائی کے کارن ایک جاتی تھی پر اِس مقابلے میں وشیعی ساودھائی کے کارن ایک اُسی کی مشین سے صوف دو پوئٹ روئی خواب هونی ٹھی واسی کی مشین سے صوف دو پوئٹ روئی خواب هونی ٹھی واسی کی مشین سے صوف دو پوئٹ روئی خواب هونی ٹھی واسی کی مشین سے صوف دو پوئٹ روئی خواب هونی ٹھی واسی کی مشین سے صوف دو پوئٹ ورئی خواب هونی ٹھی واسی کی مشین سے صوف دو پوئٹ ورئی خواب هونی ٹھی واسی کی مشین سے صوف دو پوئٹ ورئی خواب هونی ٹھی واسی کی مشین سے صوف دو پوئٹ ورئی خواب هونی ٹھی واسی کی مشین سے صوف دو پوئٹ ورئی خواب هونی ٹھی واسی کی مشین سے صوف دو پوئٹ ورئی خواب هونی ٹھی واسی کی مشین سے صوف دو پوئٹ ورئی خواب هونی ٹھی واسی کی مشین سے صوف دو پوئٹ ورئی خواب هونی ٹھی واسی کی مشین سے صوف دو پوئٹ ورئی خواب هونی ٹھی واسی کی مشین سے صوف دو پوئٹ ورئی خواب هونی ٹھی واسی کی مشین سے صوف دو پوئٹ ورئی خواب هونی ٹھی واسی کی دولیا کی دولیا کی کی دولیا کی دولیا

''اُس سبئے میں سوچا کرتی تھی که کیسے کوئی اُچھا طریقت نکالا جائے جس سے روئی کم سے کم خواب هو . میں لے دیکیا که مودور بار یار یهای سے وهاں اور وهاں سے یہاں دور دورکو سوت ملایا کرتے دیں اس لئے همیشه بهت ریست دکیائی دبنے میں اور جب معین بہت گندی هوجاتی هے تبھی صفائی کرتے عیں اِس سے سمئے بہت لکتا ہے ، میں نے سوچا کیا دونوں کا كار آيك ساته نهين هوسكت يعنى كيا آيسا طريقه نهين هوسكتا جس سے سوت ملالے کا کام اور مشھیں کی صفائی کا کام ایک سانہ چلتا رہے . تجربے کے طہر پر یہاں وہاں دورنے کے بجائے میں جلدی جلدی گہوم گہوم کو سوت ملانے لگی اور ساتھ ھی مشین کی صفائی کا کام کرنے کی کوشش کرنے لگی ۔ پوری مشین کو میں جلدی جلدی گهرم گهرم کر دھیان پرروک دیکھتی رهتی اور اگر سوت قهیس توتنا تو صفائی کا کام کرتی رهتی . اِس سے آرمیم میں ہوی کلمنائی ہوئی یہاں تک که کبھی کبھی جلدی سے سوت ملائے میں میری اُنکیاں مشین سے چھو جاتیں ارر کٹ جاتیں. کبھی کبھی کلائی میںچوت أجاتی. معر اِس سے میں نے اپنا تجربہ نہیں چھرڑا ، تھررے دنرں کے بعد ایک فرق صاف دکھائی دینے لگا ، مجھے خود ایسا لگا که میں دوشوے مزدررن کی طرح پریشان نہیں رهتی . ایک دم کام ختم هوال کے بعد روئی خراب مرنے کی تلفا کی گئی تو میری مشین سے لهل 5 أزنس روئي خرآب هوئي تهي . جب كه دوسر مزدور ایک بار میں 27 آؤنس روئی خواب کرتے تو مجم سے مرف 5 آؤنس روئی خراب هرتی تبی ، یه تعداد میری مشن در روز روز ایک سی رهی ،

"درسرے مزدور ساتھیں نے مہرے اُردر آوازیں کسفا شروع کی اس سے مجھے بہت دکھ ہوا ۔ کبھی کبھی میں سوچٹی نیں اس سے مجھے بہت دکھ ہوا ۔ کبھی کبھی میں سوچٹی نیں نہ پہلے کے ہی طریقے سے کام کروں ، کارخانے کے یوک سلکھ کی کے میں اور میردوں نے میں شوانی نے اُرد مردوروں کے پردھان شریعار کی تبدیا کی ، ساتھ ہی آنہوں نے مجھے بھی اُساعت کیا ، میرا آنسان بھی کوئا ہوگیا ۔

'55

(218)

15. 13.

भीर बराल में ही एक दूसरी सी काम करती थी. बर भी अक्सर शुक्र पर ताने कस देती थी. उसका एक छोटा बच्चा था और उस कच्चे की देसने वह कई बार बाहर जाती थी. उस समय में अपनी मशीन के साथ साब उसकी मशीन की भी देस भाल करती थी. इस तरह एक बार में आठ सी स्पिडिल की देसभाल में कर जेती थीं. इसलिये बाद में नियमित कप से 600 स्पिडिल सुमे सौंप दी गई. इस तरह जब में दूसरों की मदद करती तो लोगों के ताने भी कम हो गए.

"हर साल की तरह इस साल भी अधिकारियों ने मजदूरों के नये अनुभवों और तरीक़ों पर सभा की और इस बार मेरे तरीक़े पर भी विचार किया. बाद विवाद होने के बाद मेरे अनुभवों का नतीजा निकाला गया—तीन तरह की मेहनत यानी हाथ की मेहनत, पांव की मेहनत और आंखों की मेहनत यह नतीजा, अखबारों में आपा गया. बाद में कारखाने के सब लाग मेरे तरीक़े से काम करने लगे. मगर असर ठीक नहीं हुआ क्योंकि मजदूर दिन-भर व्यस्त व परेशान रहते और बहुत थक जाते थे और रूई की बरबादी भी होती रहती थी. इससे जाहर हुआ कि यह तरीक़ा कुछ ठीक नहीं है. लेकिन में खुद तो बड़े आराम से काम करती थी और रूई भी कम खराब होती थी इसलिय कारखाने में किर से मेरे तरीक़े पर विचार हुआ और पहले की तरह नतीजा निकाला गया, बही तीन मेहनत. लेकिन इससे मजदूर प्रभावित नहीं हए.

"इसके बाद कुल चीन टेक्सटाइल ट्रेड यूनियन के पैदाबार विभाग के उपमंत्री चू. स. फू. नए अनुभवों और तरीकों को समभने के लिये स्वयं ख्रिंगताब आए. हमारे कारखाने में एक खास कमेटी बनाई गई- 'हो चेन शू के तरीक़े की अध्ययन कमेटी.' 4 जून 1951 को इस कमेटी के सब मेम्बर मेरा काम देखने आए. उस समय मैं दिल में बहुत घबराती थी, लेकिन सब लोगों को बहुत ताब्ज़ुब हुआ कि मैं कम के साथ और बड़ी आसानी के साथ काम करती हूँ. चार दिन तक मेरा काम देखने के बाद 8 जून 1951 का मेरे तरीक़े के संबंध में एक सभा की गई. सभा में खास खास सवालों पर बहस हुई और यह नतीजा निकाला गया कि मैं एक खास ढंग और क्रम के अनुसार मशीन पर अपना समय बांटती हूँ इससे मुमे कोई कठिनाई नहीं होती. अधिकारियों की राय में यह तरीका ठीक था. सबसे पहले छिंगताव के सरकारी टेक्सटाइल कारखाने नं० 1 में एक प्रगतिशील मजदरों के दल ने इसे लागू किया जिसकी प्रधान ली. स. इन थी. इसरों को सिखाने के लिये मैं ली स् इन के साथ काम करने लगी. कारलाने के और मखदूर देखने आते थे पर एन्हें विश्वास नहीं होता था. लेकिन जब ली सू इन के दल ने इस तरीके

وہ بھی اکثر مجم پر طعنے کس دیتی تھی ۔ آس کے آپائی ہیں۔ رہوں استری کم آپائی ہیں۔ رہوں استری کم آپائی ہیں۔ آس کے آپائی بھی۔ آس منج اور آس بجے کو دیکھنے وہ کئی بار باہر جاتی کی بھی دیکھ بھال کرتی تھی ، اس طرح ایک بار میں آتے سو آسپانڈل کی دیکھ بھال میں کو لیٹی تھی ، اس لئے بعد میں آسپانڈل کی دیکھ بھال میں کو لیٹی تھی ، اس لئے بعد میں تیامت روپ سے 600 اسپانڈل مجھے سوئپ دی گئیں، اس طرح جب میں درسورں کی مدد کرتی تو لوگوں کے طعلے بھی کم ھوگئے ،

''اِس کے بعد کل چین ٹیکسڈ ٹل تریڈ یونین کے پیداوار بھاگ کے آپ منتری چو ۔ سو ، فو ، نیٹے انوبھوں اور طریقوں و سمجها کے لئے سویم چھنکتار آئے . همارے کارخانے میں ایک خاص کمیتی بنائی گئی۔۔'ہو چین شو کے طریقے کی اُدھین المیلتے؛ 4 جون 1951 کو اِس کیٹی کے سب میمبر میرا کام المعلم أله . اس سند مين دل مين بهت گهبراتي تهي الهي سب لوگس کو بہت تعجب ہوا که میں کرم کے ساتھ اور ہڑی أسائي کے ساتھ کام کرتی ہوں . چار دین تک میرا کام دیکھانے کے بعد 8 جرن 1951 کو میرے طریقہ کے سمبندہ میں ایک سبھا لی گئی . سبها میں خاص خاص سوالیں یو بحث هوئی اور ی تعیجہ نکالا گیا کہ میں آیک حاص دھنگ اور کرم کے .نوسار مشین پر اینا سئے بانٹتی میں اس سے مجھے کرئی کلینائی میں ہوتی ، ادھیکاریوں کی رائے میں یه طریقه ٹھیک تھا ، سب سے پہلے ھنکتاؤ کے سرکاری ٹیکسٹائل کارخانے نسبر 1 میں یک پرگتم شیل مزدوروں کے دل نے اسے لاگو کیا . جس نی پردهان ای . سو . این . تهین . درسرون کو ساماند ك لله ميں لى سو إن كے ساتھ كام كرنے لكى ، كارخانے کے اور مزدور دیکھلے آتے تھے پر اُنھیں وشواس تبھی ہوتا ہا لیکن جب لی سو ان کے دل نے اِس طریقہ

ے انہمار بیوللائیرواسہ کام کودگیا تو جوسوسہ مؤدوروں کو بھی پیولس موکیا ، آمی کے بعد جہاناتی کے دوسوسہ کارخانی میں سال میں سال میں متوسد کو اور اسی سال بنی متی دوسوسہ درجے کا یعنی پورے بنتی کا دارجے کا یعنی پورے بنتی کا کیا ،

المهرم فاریقے پر آب ادهیکاریس کو پکا وشواس هوگیا:
چپکتاو کے ٹیکسٹائل کارخائیس کے بعد آب وہ اِس طریقے کو
دیس کے دوسرے ٹیکسٹائل کارخائیس میں بھی لاگو کرنا چاہتے
نے اِس اللہ اگست 1961 میں چپنگ تاؤ میں ٹیکسٹائل
ایزمنسٹریشن بھورو نے هنکٹاؤ کے ٹیکسٹائل ملوں کے کرمچاریس
کی ایک سبها کی اور میرے طریقے پر ایک دوسرے نے اپنے
الوبھو سنانے اور اپنی اپنی رائے بتائی ۔ اُس میٹنگ میں تل
چین ٹیکسٹائل ٹریڈ یونین کے پردھان چین ساؤ مین نے حساب
بھی اگر تھوچین شو طریقے سے کام لیا جائے تو سارے دیش
میں ایک سال میں 60 طریقے سے کام لیا جائے تو سارے دیش
میں ایک سال میں 44460 یونیٹ سوت کی پیداوار بڑھ سکتی
جادیئی ھے ۔

"ستمبر 1961 میں میں اپنے پرائے کارخانے واپس آگئی اور اپنے نئے طریقے سے کام شروع کردیا .

''آآپ سب لوگ بڑی خوشی آور وشواس کے ساتھ مجھے سہوک دیتے اور میرے طریقے کے انوسار کام کرتے تھے ، اِس سئے سارے دیش کے لئے میرا طریقه منظور کیا جاچکا تھا ، اِسی سمئے مجھے پہلے درجے کا یعلی پورے دیش کا ''آدرش مردر'' گھرشت کردیا گیا ۔''

ہ اندھا وہ نہیں جس کی آنکو پھوٹ گئی ہے ۔

اندها وة هے جو اپنے دوش تعانکتا هے .

ــــالدهي جي

के अनुसार सकलता पूर्वक काम कर दिखाबा तो दूसरें अपतूरों को भी विश्वास हो गया. इसके बाद खिंगताव के दूसरें कारखानों में भी मज़दूरों ने इस तरीक़े के अनुसार काम किया और इसी साल यानी मई 1951 में मुक्ते दूसरें दूरले का यानी पूरे खिंगताव का 'आदर्श मज़दूर' ऐलान कर दिया गया.

"मेरे तरीके पर अब अधिकारियों को पक्का विश्वास हो गया. ब्रिंगताब के टेक्सटाइल कारखानों के बाद अब वह इस तरीके को देश के दूसरे टेक्सटाइल कारखानों में भी लागू करना चाहते थे. इसलिये अगस्त 1951 में ब्रिंगताब में टेक्सटाइल एडमिनिस्ट्रेशन ब्यूरो ने ब्रिंगताब के टेक्सटाइल मिलों के कर्मचारियों की एक सभा की और फिर मेरे तरीके पर एक दूसरे ने अपने अनुभव सुनाये और अपनी अपनी राय बताई. उस मीटिंग में कुल चीन टेक्सटाइल ट्रेड यूनियन के प्रधान इन साब मिन ने हिसाब लगाया कि अगर 'हो चेन शु तरीके' से काम लिया जाय तो सारे देश में एक साल में 44160 यूनिट सूत की पैदाबार बद सकती है और रूई की बरवादी में से 86 कीसदी रूई बचाई जा सकती है.

"सितम्बर 1951 में मैं अपने पुराने कारखाने वापस आ गई और अपने नए तरीक़े से काम ग्ररू कर दिया.

"अब सब लोग बड़ी , खुशी और विश्वास के साथ मुके सहयोग देते और मेरे तरीक़े के अनुसार काम करते थे. इस समय सारे देश के लिये मेरा तरीक़ा मंजूर किया जा चुका था. इसी समय मुके पहले दरजे का यानी पूरे देश का "आदर्श मज़दूर" घोषित कर दिया गया."

जन्धा वह नहीं जिसकी आंख फूट गई है. अथा वह है जो अपने दोष ढांकता है.

—गांधी जी

मोहन्मद साहब के कुछ उपदेश

محدد صاحب کے کچھ أبديمي

ब्रुबार्क-भी मुजीव रिज्ञवी

मोहम्मद साहब ने कहा :— "तुममें से किसी को जब किसी मुर्वे का जनाजा जाता दिखाई दे और तुम उसके साथ न बलो तो तुम्हें उस समय तक अपनी जगह पर खड़ा रहना चाहिये जब तक कि वह जनाजा निकल न जाय या उसे नीचे उतार कर न रख दिया जाय."

—मामिर विन रवीदः बुखारी, मुसलिमः अबुदाऊदः विरमिजीः नसाई

मोहन्मद साह्य के पास से एक जनाजा गुजरा और वह खड़े हो गए. उनसे किसी ने कहा—''यह तो एक यहूदी का जनाजा था.'' पैरान्यर ने जवाब दिया,-—''क्या यहूदी के जान नहीं होती १'

- अन्दुर्रहमान विन अबुलैलाः बुखारीः मुसलिम

मोहम्मद साहव ने कहा:—"पे आदम की जीलाद! तुम्हारे लिये यह ज्यादा अच्छा है कि जितनी भी दौतत का सामान तुम्हारे पास अपने गुजारे से ज्यादा हो वह तुम अपने हाथ से वूसरों को दे दो, और वह तुम्हारे लिये हुग है कि उस दौलत या सामान को तुम अपने पास जोड़े रखों— केवल अपने गुजारे भर के लिये रखना बुराई नहीं है— और दूसरों को देना तुम उस आदमी से शुरू करो जो भी तुम्हारे नजदीक हो या जो तुम्हारा सगा हो."

- अबु उमामहः मुसलिमः तिरमिची.

मोहम्मद साहब ने कहा :—"रोजा रखने, जकात (दान) देने और नमाज पढ़ने से भी बढ़कर जो चीज है क्या वह मैं तुम्हें क्ताऊँ ? वह चीज है लोगों में मेल बढ़ाना, क्योंकि सच यह है कि फूट उस चिकनाहट को ख़तम कर देती है जिसके सहारे इनसानी समाज जिन्दा है."

-अबुद्दीः अबुद्गाऊदः तिरमिजी

मोहम्बद साह्य ने यह भी कहा कि :—मेरे कहने का यह मतलय नहीं है कि कूट की खुशकी से सिर के बाल उड़ जाते हैं, मेरा मतलय यह है कि कूट से दीन की जड़ साफ कट जाती है,"

—विरमिषी

انوادک-شری مجیب رفوی

محمد ماحب نے کہا:۔۔۔ ''تم میں شے کسی کو جب کسی مردے کا جنارہ جاتا دکھائی۔ دے اور تم اُس کے ساتھ نے چلو تو تمیس اُس میڈ تک اُرنی جکہہ پر کھڑا رمنا چاہئے جب تک کہ وہ جنازہ نکل نے جائے یا اُسے نیچے اُتار کر نے رکع دیا جائے۔''

مسعامر بن ربيع؛ يخارى؛ مسلم؛ أبيداؤد؛ ترموى؛ تساعى "

محمد ملحب کے پاس سے ایک جنازہ گذرا اور وہ کھڑے ہو گئے ۔ آن سے کسی نے کہا۔۔''یہ تو ایک یہودی کا جنازہ تھا ۔'' پفتمبر نے جواب دیا۔۔۔''کیا یہودی کے جان نہیں ہوتی ؟'' سعبدالرهمان بن ابولهائ؛ بخاری؛ مسلم ،

محمد صاحب نے کہا: ۔۔۔ آئم کی اولاد ! تمهارے اگر یہ زیادہ لچھا ہے کہ جتلی بھی دولت یا سامان تمهارے یاس گفارے سے زیادہ ہو وہ تم اپنے ہاتھ سے دوسروں کو دے دو اور یہ تمہارے یہ تمہارے لئے برا ہے کہ اُس دولت یا سامان کو تم اپنے پاس جوڑے رکھو۔۔۔کھول اپنے گذارے بھر کے لئے رکھنا برانی نہیں ہے۔۔۔اور دوسروں کو دینا تم اُس آدمی سے شروع کرو جو بھی تمہارے شودیک ہو یا جو تمہارا سکا ہو ۔''

-- أبوعمامه؛ مسلم؛ ترمزي .

محمد صاحب نے کہا:۔۔۔"ررزہ رکھنے' ذکات (دان) دینے اور اللہ پڑھنے سے بھی بڑھنر جو چیز ہے کیا وہ میں تعییں بتاؤں ا وہ چیز ہے لرگیں میں میل بڑھانا' کیونکہ سے یہ ہے کہ پھوتا اُس چکناھٹ کو ختم کر دیتی ہے جس کے سہارے انسانی سبانے زندہ ہے۔"

-ابودرده؛ ابر داود[،] ترمزی

محمد صاحب ہے یہ بھی کہا کا سبالمہورے کہا۔ کا یہ مطاب نہیں ہے کہ پیوٹ کی خطائی اللہ سو کے بال اُز جاتے ھیں' مفوا معالب یہ ہے کہ پیوٹ لاے نہیں کی جو صاف کاف جاتی ہے ۔4

سترمزي

וצקון 55"

भोद्रश्यक्ष साहब ने कहा कि :—"मुसीबत में पढ़े किसी आदमी को जो कोई तसस्ती देता है उसको अस्ताह से अबित कहा मिलवा है."

-- इब्न मसूदः तिरमिषी

मोहम्मद साहब ने कहा कि :— "सच यह है कि कोई भी भादमी इसलाम का यानी सच्चे सनातन दीन का पालन करनेवाला नहीं कहा जा सकता जब तक कि उसके सब पड़ोसी उसके अत्याचारों से पूरी तरह सुरक्षित न हों." — इन्न मसूद: अहमद; बेहकी

मोहम्मद साहब ने कहा:—"इस जमीन पर ख़ुदा की मख़्बूक (सृष्टि) के साथ जो कोई नफरत से पेश भाता है वह ख़ुदा के साथ नफ़रत का व्यवहार करता है."

-अबुबकरः तिरमिजी

पैराम्बर से कहा गया कि—"आप गुशरिकों यानी मूर्ति-पूजकों के विश्व ,खुदा से प्रार्थना कीजिये और उन्हें बद्दुआ दीजिये." पैराम्बर ने जवाब दिया:—"मैं सबके लिये रहमत बना कर भेजा गया हूँ, किसी को बद्दुआ देने के लिये दुनिया में नहीं आया."

—अबुहुरैराः गुसलिम

अबुबकर अपने किसी गुलाम को गाली दे रहे थे. उसी समय पैराम्बर उपर से आ निकले. पैराम्बर ने अबुबकर से कहा:—"क्या कोई सच्चा और नेक आदमी कभी किसी को गाली देता है ? काबे के खुदा की कसम ! हरगिज नहीं." अबुबकर ने उसी दिन अपने सब गुलामों को आजाद कर दिया और आकर पैराम्बर से कहा:—"मैं आइन्दा पैसा कभी नहीं कहाँगा."

--आयशाः बेहक्री

मोहरूमद साहब ने कहा कि :— "जो कोई भी चाहता है कि क्रयामत के दिन की यातनाओं (अजीयतों) से खुदा इसे बचाए उसे चाहिये कि अगर उसका कोई क़र्जदार कठिनाई में है तो वह उसे मोहलत दे या उसका क़र्जा माफ कर दे." — मुसलिम

मैंने पैरान्यर से पूछा:—"नेकी क्या है और गुनाह क्या है ?" चन्होंने जवाब दिया:—"सब के साथ अच्छा सबूक करना नेकी है, और जो चीज तुम्हारे दिल में खटके और क्रुस करने दूसरों पर जाहिर करना न चाहो वही गुनाह — गुसालिम; तिरमिजी مصد ملھینے کیا کوب المسیدی میں پرے کسی آدمی کر جو کوئی نسلی دیاتا ہے اُس کو اُللہ سے اُچت بال ملتا ھے !!

سابن مسعودة ترموي

محدد ملحب نے کہا کہ:۔۔''سے یہ ہے کہ کوئی ہی آدمی اسلم کا یعنی سچے سلانی دین کا پالن کرنے والا نہیں کہا جا سکا جب تک کہ اس کے سب پڑوسی اس کے اتیاچاروں سے بری طرح سرکشت نے ہوں ۔''

--أبن مسمود؛ أحمد؛ بهتى .

محدا ملحب نے کہا: ۔۔ ''اِس زمین پر خدا کی مخلق (سرشتی) کے ساتھ جو کوئی لفرت سے پیش آتا ہے وہ خدا کے ساتھ نفرت کا ویوهار کرتا ہے ۔''

ـــأبو بكر الرمزي .

پینمبو سے کیا گیا کہ: س''آپ مشرکوں یعنی مورتی پوجکوں کے ررودھ خدا سے پرارتھنا کیجئے اور آنہیں بدعا دیجئے ۔'' پینمبو لے جراب دیا: س'' میں سب کے لئے رحمت بنا کو بهرجا گیا ہیں' کسی کو بد دعا دیئے کے لئے دنیا میں نہیں آیا ۔'' سارو ہریرہ مسلم ۔

ابوبكر اپنے كسى ظم كو كالى در رهے تھے . أسى سدي پيغدير أدهر سے أنكلے . پيغدير في ابوبكر سے كها :—"كيا كوئى سچا اور نيك آدمى كيهى كسى كو كالى دينا هـ ؟ كميے كے خدا كى تسم ! هركو تهيں ." ابوبكرنے أسى دن أپنے سب غلموں كو آزاد كرديا اور آكر پهندير سے كها :—ميں آنلدة أيسا كيهى تهيں كرديا ."

ـــعائشه؛ بهقي .

متعدد صلحب نے کہا کہ :—''جو کوئی بھی چاھتا ہے کہ تیاست کے دن کی یاتناؤں (اذیتوں) سے خدا اُس بچائے اُس چاھئے کہ چاھئے کہ چاھئے کہ اُس کا کوئی قرضدار کٹھنائی میں ہے تو وہ اُسے مہات دے یا اُس کا قرضہ صاف کردے ۔''

--مسلم .

میںنے پینمبر سے پوچھا :۔۔''نیکی کیا ہے اور گناہ کیا ہے ؟'' آنہوں نے جواب دیا :۔۔'اسب کے ساتھ لچھا سلوک کرنا نیکی ہے' اور جو چیز تمہارے دل میں کہتے اور تم آسے دوسروں پر ظامر کرنا تے چاہو وہی گناہ ہے ۔''

سسمسلم ؛ ترموى .

रोहरण कार्य हे हम स्पर्श

मोहन्मद साह्य ने कहा :—"निस्सन्देह दूसरों के साथ अच्छा बरताद करने वाला आदमी केवल अपने उस बरताव के कारम ही नमाज रोजे के पावन्द आदमियों का मरतवा हासिल कर शेला है.

- अबुदर्गः; तिरमित्री

मोहन्मद साह्य ने कहा :— ''क़ानून में जिन चीजों की इजाजत है उनमें से जगर किसी चीज से जल्लाह को सबसे खारा नकरत है तो यह तलाक है."

—घडुदा उद

मोहम्मद साहब ने कहा:—"ऐ मौज ! जमीन की सतह पर अल्लाह ने कोई ऐसी चीज पैदा नहीं की जो गुलामों को आजाद करने के मुकाबले में अल्लाह को ज्यादा प्यारी हो. और अल्लाह ने रूप जमीन पर ऐसी कोई चीज पैदा नहीं की जिससे वह तलाक से ज्यादा नकरत करता हो."

—मौज बिन जबल

मोहस्मद साहब ने कहा :-- "नशा सारे गुनाहों की जद है."

—हुदैफह: राजिन

माहन्मद साहब ने कहा :—"दूसरों से इसद करने से अपने को बचाओ, क्योंकि सचमुच इसद नेकी को ऐसे ही सा जाता है जैसे आग लकड़ी को इजम कर जाती है."

—अबु इरैरा: अबुवाऊव

पैरान्वर ने कहा:—जिस किसी के पास वारवरदारी के जानवर उसकी जरूरत से ज्यादा हैं उसे चाहिये कि उनमें से कुछ उस बादमी को दे दे जिसके पास कोई जानवर नहीं. और जिसके पास जरूरत से ज्यादा सामान है उसे चाहिये कि कुछ उसे दे दे जिसके पास कुछ नहीं." पैरान्वर ने और बहुत सी चीजों का एक एक कर इसी तरह जिक किया. इससे पता चला कि जरूरत से ज्यादा किसी चीजा को रखने का इसको कोई इक नहीं.

मञ्जादि : मुसलिमः मञ्जूदाकद

معدد ملعب کے کتھ ایدیش

-ابردرده درموى المانات

محمد صاحب نے کہا :۔۔۔''قانون میں جن جھڑوں کی اِجازت کے اُن میں سے اگر کسی چیز سے اُللہ کو سب سے زیادہ منرت کے تو وہ طاق کے ۔

_ابرداؤد .

محد صاحب نے نیا دسلم موز اِ زمین کی سطح پر اللہ نے کوئی ایسی چیز پیدا نہیں کی جو ظامری کو آزاد کرنے کے متابلہ میں اللہ کو زیادہ پیاری ہو ۔ اور اللہ نے روئے زمین پر ایسی کرئی چیز پیدا نہیں کی جس سے وہ طاق سے زیادہ نیوس کرتا ہو ۔''

ـــموزين جبل.

محمد ماحب نے کہا: ۔۔۔ وائشہ سارے گلاھیں کی جو ہے۔ ا

محمد صاحب نے کہا :۔۔۔ (درسروں سے حسن کرنے سے اپنے کو پچاو' کھرتکہ سچ مچ حسد ٹیکی کو ایسے ھی کھا، جاتا ہے جیسے آگ لکڑی کو ہفم کر جاتی ہے ،''

_ ابرهریره؛ ابرداؤد .

پینمبر نے کہا : سہ جس کسی کے پاس باربرداری کے جانور اس کی ضرورت سے زیادہ دین اُسے چادئے کہ اُن میں سے کچھ اُس آدمی کو دیدسے جس کے پاس کوئی جانور ٹھیں ، 'ارر جسن کے پاس ضرورت سے زیادہ سامان ہے اُسے چادئے کہ کچھ اُسے دیدسے جس کے پاس کچھ نہیں ،'' پینمبر نے اُور بہت سی چیزوں کا ایک ایک ایک راسی طرح ذکر کیا ، اِس سے پت چیزوں کا ایک ایک کر اُسی طرح ذکر کیا ، اِس سے پت چیز کو رکھنے کا ہم کو کوئی کی نہیں ہے۔

-ايسىدا مسلما ايداؤد

بهائى رگهويتى سهائد انراق

भाई रखुपति सहाय 'फिराक्न'

[पूज्य डा॰ भगवानदास के लेख "नया हिन्द" में अपते रहे हैं. वह सब बड़े बड़े धर्मों की बुनियादी एकता के मानने वाले हैं, वह अलग अलग धर्मों के ऊपरी रीति रिवाजों को कम और उन सबके उन बुनियादी उसलों को अधिक महत्त्व देते हैं जो सब धर्मों में लगभग एक से हैं. यही उनके विद्वत्ता भरे लेखों का स्नास मजमून रहा है. एन्हीं से सीख कर और प्रेरणा पाकर "हिन्दु-स्तानी कलपर सोसाइटी" और "नया हिन्द" सब धर्मी की एकता में विश्वासी रहे हैं और हैं. हिन्दुओं की आज-कल की जन्म से जाति को और हर तरह की छुआ खत को डा० भगवानदास विलक्कल रालत मानते हैं और उसके खिलाफ हैं, जन्म की इन सैकड़ों जातों की जगह बार बर्णों का उसल उनके लेखों और विचारों का केवल एक पहलू है. उनके इन चार वर्णों का जन्म से कोई सम्बन्ध नहीं, न इनमें हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि का कोई फ्रक रह "जाता है. सारी दुनिया और सारा मानव समाज उसमें समा जाता है. उनके इस उसल के अनुसार आइन्सटाइन और बरनर्ड शा वैसे ही पक्के जासन ये जैसे बनारस के पं० शिवकुमार शास्त्री, उनके इन वर्णों का जैसे जन्म से या धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं बैसे ही ज्याह शादी से भी कोई सम्बन्ध नहीं, उनके अनुसार उनकी वर्ण व्यवस्था नई दीवारें खड़ी करने बाली चीज नहीं, दीवारें तोड़ने बाली चीज है. उनकी बर्फ व्यवस्था कोई जब या ठोस चीज नहीं है, वह रबर की तरह लचीली है. उनके चार बगों में ऊंच नीच का भी कोई सवाल नहीं. उनके अनुसार आदमी जब चाहे अपने स्वभाव और पेशे के अनुसार अपना 'वर्या' भी बद्ध सकता है, ठीक जिस तरह कम्युनिस्ट सममे जाने बाबी देशों में कोई मजदूर, 'लेबरर', या 'वर्कर' जब चाहे बोग्यता हासिल करके 'श्रोकेसर' या पार्लिमेंट का मेन्डर वन सकता है, और अपने को मजदूर 'लेबरर' या 'वर्कर' कहने में बसे कभी अपनान महसूस नहीं होता. हमारे किन की रचुपति सहाय 'किराक्र' भी बहुत आजाद क्याल, साफ दिल, साफगो और तरक्की पसन्द विद्यान हैं, उनकी इतनी बात इमें बिस्कुल ठीक मालूम होती है कि अब वह समय जा रहा है जीर जाना शाहने जब दुनिया का सगमग

[يوجهه تأكر بهكوأن داس كے ايكه "انها هند" ميں جہتے رقے میں ، وہ سب ہوے بڑے دھرموں کی بنیادی ابتنا کے مانا والے هیں . وہ الگ الگ دھرموں کے أورو ریسرواجس کو کم اور آن سب کے آن بنیادی آصوایس کو ادمک مهتو دیال هال جو سب دهرمول میں لگ بهگ ایک سے میں ، یہی اُن کے ردرتا بورے لیکوں کا خاص مضون رها هم ، أقهين سه سيكهكر أور يريرقا ياكر العلدستالي للجر سرسائعی" أور "الها هلد" سب دهرس كي أيكتا میں وشواسی رقے میں اور میں ، هلدؤں کی آجال کی جنم سے جاتی کو اور ہر طرح کی چھواچھوت کو داکٹر بهاران داس بالكل غلط مائته هين أور أس كے خلف هيں. جنم کی ان سیکورں جاتوں کی جکه چار ورنوں کا اصول أن كے ليكهوں اور وچاروں كا كيول ايك يهار هے . أن كے ال چار ورثين كا جام سے كوئى سبتدھ نہيں؛ ته إن ميں عدوا مسلمان عيسائى أد ى كا كوئى فرق ره جاتا هـ. سارى دنيا أور سارا مانو سماج أس مين سما جاتا هـ. ان کے اس اصول کے انوسار آئنسٹائن اور برنرتشا ویسے هی یے براھس تھے جیسے بنارس کے بندت شوکمار شاستری . أن كے إن روانوں كا جيسے جنم سے يا دھوم سے كوئى سبندھ نہیں ریسے می بھاہ شادی سے بھی کوئی سبادھ قبوں ، ان کے انہمار اُن کی ورن ویہستھا نئی دیواریں کھڑی کرا والي چيز نہيں ديواريں تورنے والي چيز هے، أن كي ران ريستها كوئي جو يا تهرس چيز نهين هے ، وہ ربر كى طرح المهيلي لله اأن كي جار ورقول ميل أوني تدبي كا ہی کوئی سوال نہیں . اُن کے انوسار اُدمی جب چاھے الینے سوبھاؤ اور بعصے کے آئسمار اولا 'وروں' جھی بدل سکتا ف تبیک بعس طرم کیپرنست سنجے جالے والے دیفوں مين كرني مويور الهبيرا يا الوراورا جي جاهه يوكنا حاصل ا كرك "پرونيسو" يا مارلهميندى كا. ميمبر بن سكا ها أور اینے کو مودورہ الهمورہ یا اورکوہ کیاتے میں اُسے کبھی اینان مصوس نهی هیا . هدارد متر شری رگهردی سبائه ازراق مي بيت أولى خيال صف عل عاف کو اور ترقی پسلد ودوان هیں . ان کی اِتلی بات هدین بالکل تبیک معلوم هوتی هے که اب وہ سند الما في أبر أنا جامل جب دنيا كا لك يبك

हर इन्सान बोंचे बोंचे बन्टों के लिये वूसरों की मानसिक, आर्थिक, सामाजिक और शारीरिक सब तरह की सेवाओं में हिस्सा लेगा और सब तरह की सेवाओं का जानन्द लेगा. तब ही मानबता सचमुच लिल सकेगी. किसी लेख के किसी पत्रिका में प्रकाशित होने का यह मतलब नहीं होता कि पत्रिका या उसका सम्पादक लेखक के सब विचारों से सहमत है. इसलिये हम सहब भाई रघुपति सहाय 'किराक्न' का यह लेख नीचे वेते हैं—सम्पादक.]

में इन बहुत से लेखों को ध्यान से पढ़ता रहा हूँ जो कृष्य डाक्टर भगवानदास के कलम से 'नया हिन्द' में नेक्लते रहे हैं, और जिनमें इन्होंने वर्ण व्यवस्था को न्याय, केंब्रान, मनोविज्ञान और नीति के अनुसार बताया है. मैं जस नतीजे पर पहुंचा हूँ इसे थुंदि शब्दों में नीचे देता हूँ.

अब वह जमाना आ चुका है जब सी कीसदी आबादी ो अच्छी तरह से पढ़ा लिखा बना दिया जाय. ऐसा होने हे बाद सौ फीसदी लोगों में क्या क्या सलाहियत आ गयगी ? मादरी जबान में साधारन से साधारन आदमी ामर की ईलियड और ओडेसी, महाभारत, रामायन, ानुस्मृति, फिरदौसी का शाहनामा, सादी की गुलिस्ताँ, हिल्मा टालस्टाय की किताबें, शेक्सपीयर के नाटक, ालिदास के नाटक, यूनान, फांस श्रीर दूसरे देशों के नाठक, निया भर के सफ्रनामे, मशहूर जीवन-चरित्र, दुनिया भर ने मराहर उपन्यास, सार्वजनिक या आम कहम विज्ञान, निया भर की कहानियां, श्रीर ख़ुद मादरी जवान में जो पच्छी शायरी हुई है, उसका बहुत बड़ा हिस्सा, पढ़ और रमम सकेगा. वह जमाना भी शुरू हो चुका है जब छाती-बड़. कमर-तोड़ या शरीर को थका देने वाली मेहनत का गर मशीनें डठा लेंगी. स्टालिन से पूछा गया कि जब वग-ोन समाज, या ऐसा समाज जिसमें तबके न हों, कायम हो गवेगा तो क्या सब लोग कलम के सुरमा बन जायंगे ? टालिन ने जवाब दिया कि सब लोग एंजिनियर बन जायेंगे किन अपनी पसंद के मुताबिक कलम के सूरमाओं की चनात्रों का आनन्द उठा सकेंगे. जिस तरह की किताबों में ऊपर गिनवा चुका हूँ उन्हें जब पढ़कर सब लोग उमक सकेंगे और शरीर या हाथ पांव को कड़ी मेहनत से इटकारा मिल जावेगा, तो शुद्ध कीन रह जावेगा ? इसके अथ ही साथ ऐटम या परमानु शक्ति के जुग में मामूली से गमूली आदमी को वह तमाम सुख और सुविधाएँ हासिल हे जावेंगी जो थोड़े से सम्पन्न लोगों तक आज महजूद हैं. सी दशा में शुद्ध कीन रह जावेगा ? इस बात को भी बीन्द्रनाथ टैगोर, एष० जी० बेल्स, साम्यवाद के छौर सरे विवारक अच्छी तरह समम गए थे, श्री रवीन्द्र नाथ गोर जाति पांति के ही नहीं गुन-कर्म-स्वभाव के अनुसार

ہر انسان تھوڑے تھوڑے گھنٹوں کے لئے دو دول کی مانسک' آر ھک' سام اجک اور شاریرک سب طرح کی سیواؤں کا آناد لیکا ، تب ھی مائوتا سے میے کبل سککی ، کسی آناد لیکا ، تب ھی مائوتا سے میے کبل سککی ، کسی لیکھ کے کسی پتریکا میں پرکاشت ھونے کا یہ مطلب نہیں ھوتا که پتریکا یا آس کا سیادک لیکھک کے سب وچاروں سے سیست ھے ، اس لئے ھم سیرھی بھائی رگھوپٹی سہائے 'فراق' کا یہ لیکھ نیجے درتے ھیں۔سیوادک،]

\$ \$ \$ \$

میں آن بہت سے لیکھوں کو دھیان سے پڑھتا رھا ھوں جو۔ پوجیہ ڈائٹر بھکوان داس کے قلم سے 'نیا ھند' میں نکلتے رہے ھیں' اور جاہوں آنھوں نے ورن ویوستھا کو نیائے' وگھان' منو وگیان اور نیٹی کے آنوسار بتایا ہے ۔ میں جس نتیجے پر پہرنچا ھوں آسے تھوڑے شبدوں میں نیجے دیتا ھوں ۔

اب وہ زمانہ اُچکا ہے جب سو نیصدی آبادی کو اچھی طرے سے پڑھا لکھا بنا دیا جائے ، ایسا ھولے کے بعد سو فیصدی لوگی میں کیا کیا صلحیت آجائیکی ا مادری زبان میں سادهارن سے سادهارن آدمی هرمر کی اِلید اور اُردیسی مهابهارت وأماين منوسمرتي فردوسي كا شاهنامه سعدي كي گلستان مہاتما گالسدائے کی کتابیں، شیکسپیر کے ناتک، کالی داس کے ناٹک یونان فرانس آور دوسرے دیشوں کے ناتک دنیا بھر کے سفرنامے مشہور جہوں چرتر کا بھر کے مشہور أَيْنِهِاسُ سَارُوجِاكِ يَا عَامَ فَهُمْ وَكَيَانَ ۖ دَنْهَا بَهُرَ كَي كَهَانَيَانَ اور خود مادری زبان میں جو اچھی شاعری هوائی هے اُس کا بهت برا حصه وه أور ساحجه سكيكا . ولا زمانه بهي شروع هو چکا ہے جب چھاتی پھاڑ' کمر توڑ یا شریر کو تھکا دینے والی مصنت کا بهار مشینیں اُنّهالینگی . اِستّاان سے پوچها کیا که جب ورك هين سماج يا ايسا سماج جس مين طبق نه هون قایم هوجاویگا تو کیا سب لوگ قلم کے سرزما بن جائینگے ؟ اِسْمَالِي فِي جوابُ ديا كه سب لوگ اِنجينير بن جائينگ ليكن اُپلی پسند کے مطابق قام کے سورماؤں کی رُچنوُں کا آنند اُٹھا سکینگے، جس طرح کی کتابوں کو میں آرپر گنوا چکا ھوں أنهين جب يرمكر سب لوك سمجه سكينك أور غريو يا هاته ہاؤں کو کڑی محنت سے چھٹکارا مل جاویکا' تو شودر کون رہ جاویگا ؟ اِس کے ساتھ ھی ساتھ ایٹم یا پرمانو شکٹی کے جگ میں معمولی سے معمولی آدمی تو وہ تمام سکھ اور سویدھائیں حاصل هوجارينكي جو تهرزے سے سمهن لوگوں تک آج محدود هیں . ایسی دشا میں شودر کون رہ جاریگا ؟ اِسَ بات کو شری رویندوناتھ ٹیکور' ایچ ، جی ، ویلس' سامیتوان کے اور درسرے وچارک اچھی طرح سجع گئے تھے ، شری رویندرناتھ قیکور جاتی پائتی کے هی نہیں کن - کرم - سبھاؤ کے انوسار

वर्षा व्यवस्था के भी खिलाफ थे. पूज्य डाक्टर भगवानदास ने इस विषय पर अपने लेखों में समाजवाद और साम्यवाद की चरचा भी की है. निवेदन है कि समाजवाद श्रीर साम्यवाद के साथ साथ वर्ण व्यवस्था की क्रायम नहीं रक्खा जा सकता. जब पूरा समाज पदा लिखा होगा, सम्पन्न या खुराहाल होगा और छाती-फाड़ मेहनत से बच जावेगा तो कोई शुद्ध कैसे रहेगा ? जब पीठ या सर पर बोक लादकर बलने के बदले बैलगाड़ी पर बोम लादना शुरू किया गया भीर बाद को माल गाड़ियों और मोटर ट्रकों पर बोम लदने सगा या केनों द्वारा टनों बोक उठने लगा, यानी जब बोक लाद कर चलने वाला गाड़ीवान बन गया, क्रेन का ऑपरेटर बन गया, दक खाइवर या इंजिन खाइवर बन गया तो वह शुद्र नहीं रहा हालांकि समाज की सेवा वह अब भी कर रहा है. फिर जब हर आदमी संसार साहित्य पढ़ने लगेगा और कई गुना पयादा मजदूरी भी पाने लगेगा और वह सब आराम और आसाइरा, मुख और मुविधायें भी जन्म-सिद्ध अधिकार या पैदाइशी इक की तरह हासिल कर लेगा जो आज केवल मुद्धी-भर आदमियों को नसीव हैं, तो वह शुद्र नहीं रह जावेगा. अमेजी शब्द लेबरर या फारसी शब्द मजदूर भी इस पर लागू नहीं होंगे.

पूज्य डाक्टर, भगवानदास कुछ लोगों को स्वभाव से ही दीलत कमाने बाला या वैश्य समभते हैं. नई सभ्यता में दूसरों से मजदूरी या मेहनत कराके किसी को पूंजीपति बनने नहीं दिया जायगा. धन पैदा करना सब का पैदायशी काम होगा, बड़ी बड़ी तिजारतें पंचायत यानी हुकूमत के हाथ में होंगी. दलालों, आदृतियों, सहे बाजों और मिल मालिकों के दिन अब लदने वाले हैं. जैसे जैसे हुकूमत, जरूरी तालीम देकर लोगों को इस काबिल बनाती जायगी कि यह षिम्मेदारी पूंजीपातयों के हाथ से ले ली जाय, वैसे वैसे यह तब्दीली सामाज के जीवन में आती जायगी. यह भी साचन की बात है कि खीन्चा लगाने वालें, पर्टारयां पर दूकान लगाने वाले, पान श्रीर मुँगफली बेचने वालं, ऋपना रिक्शा या इक्का रखकर चलाने वाले, बुनकर, माची, वरौरा जा किसी की टहल या सेवा नहीं करते श्रीर थोड़। बहुत धन भी कमा लेते हैं, क्या ये सब लोग उन्हीं अर्थों में वैश्य हैं जिन अर्थों में टाटा, विदला, डालिमया, जैपूरिया वरौरा ? बन्दर नचाने वाले, सँपेरे, भालू नचाने वाले, भानमती का पिटारा लेकर पूमने वाले, यह सब भी तो किसी की मजदूरी नहीं करते. रंगरेज, सुनार, धुनियां, बढ़ई, लोहार, हज्जाम (जो केवल पैसे लेकर बाल काटते हैं) मल्लाह, मछुए, चिड़ीमार, फेरी लगाने बाले, बहुरूपिये क्या ये सब उन्हीं मानों में बैश्य हैं जिन मानों में राजा मोतीचन्द वैश्य थे ? क्या शाजा मोतीचन्द्र या विक्षा ने जो सेवार्य समाज की की वह

رن وروسم كي على خاف ته : پرجيد داكلر بيكول داس 1 إس رشئه ير الله ليعون مين سماجواد اور ساميعواد كي چرچا بهی منی هم . فریدین هم که سماج واله اور سامهموان کے ساتھ ساتھ ران ريوستها كو قايم تهين ركها جاسكتا . جب پورا سماي يوها لها هركا سمين يا خوشحال هولا أور چهاتي بهار محلت سے بي جاويكا تو كوأى شودر كيس رهيكا 1 جب پيته يا سر پر بوجه لا کر چللے کے بدلے بیل گاری پر بوجھ الدنا شروع کیا گیا اور ہد کو مال ازیوں اور موقر قرکوں در بوج لدنے لگا یا کریٹوں دوارائنس ورجه أثهاء الكا يعلى جب بزجه الدكر چلنے والا قرابور بن گیا تو وہ فودر فہیں رہا حالاتک سانے کی سیرا وہ أب يهي كر رها هـ ، پهر جب هر أدمى سنسار ساهتيم پرهايم لکیکا اور کئی گنا زیادہ مزدوری بھی پانے لکیکا اور وہ سب آرام ارر آسایش سکه اور سویدهانین بهی سده ادهیکار یا پیدایشی حق کی طرح حامل کرلیگا ، جو آج کیول مٹھی بھر آدمیوں کو نصيب هين تو وه شودر نهين ره جاويكا . انكريزي شبد ليبرر يا عارسی شدد مزدور بھی اُس پر لاکو نہیں ھونگے .

یوجیه ذانقر بهکوان داس کنچه لوگرن کو سوبهاؤ سے هی دولت كمانے والا يا ويشيم سمجهتے هيں . قلمي سبهيتا ميں فرسرون سے مزدرری یا محلت کراکے کسی کو پرنجی پتی بننے نبيا ديا جاديكا . دعن يبدأ كرنا سب كا يبدأيشي كام هركا . ہی ہوی تجارتیں ینبچایت یعنی حکوست کے هانه میں ھونتی ، دلااوں اُ آزھتیوں ستے ہازوں اور مل مالئوں کے دیں اب لدے والے هيں . جيسے جيسے حكرمت ضروري تعليم ديكر لوکوں کو اِس فابل بنانی جائی ہی که یه زمهواری پونجی پتیوں کے ھانہ سے لے لی جانے ویسے ویسے یہ تبدیلی سماج کے جمون میں آئی جائیگی . یہ بھی سوچنے کی بات شے کہ خونتھہ كانے والم الم المربوں پر دركان الكانے والم پان اور مونك يهاى ينچى والى اينا ركشا يا يكه ركهكو چلانے والے بلكو سوچى وغيرة جو کسی کی قبل یا سیوا فہیں کرتے اور تھوڑا بہت دھی بھی کما ليت مين كيا يه سب لوك أنهين أرتهون مين ويهيه هين جن أرتهول مين ثانًا بولا دَالميا عيوريا وغيرة لا بندر فحالي وأله سنييرے بهالو نتجانے والے بهانمتی کا يقارا لهکو گهرمنے والے یه سب بھی تو کسی کی مزدوری فہیں کرتے ، رفکریز' سفارہ دهنیا برهنی لرهار حجام (جر کیرل بیسے لیکر بال کانتیهین) ملح صجهوني جويمار يهدري نكاني واليه بهرويات كها يه سب أنبس بهاورمين ويشيه هيرجن معنون ميررأجه موتى جند ويشيه الله الله الله موتی چاپ یا بولا له جو میوانین سمایوکیکین وه

कोई पंचायत (जिसमें कई सरह के साम करने बासे रारीक हों) या कोई सरकारी महकमा या सरकारी कर्मचारी सनसाह पाकर नहीं कर सकते ? तो फिर वैश्य शब्द का क्या अर्थ है ? श्रीर उन लोगों को आप क्या कहेंगे जो बकील हैं, जर्मादार हैं, प्रेकिसर हैं, डिप्टी कलेक्टर हैं, थानेदार हैं, कीजी अफसर हैं, पेक्टर हैं, पेक्टर हैं, साहित्यकार हैं लेकिन कस्पनियों में हिस्सा लेकर दिवीडेन्ड और सुनाफा भी कमाते हैं, ये लोग सब वैश्य हैं या कुछ और ?

कर्ज कर लीजिये कि किसी देश में कल रेलवे कम्पनियां महाजन चला रहे हैं. खान का काम भी महाजनों के हाथ में हैं. सरकारी फ़ौज और पुलिस को जिस सामान और जिन बीजों की जरूरत पड़ती है वह सब महाजनों से मोल लियं जाते हैं. लोहे के कारखाने, हर धात की खानें, मोटरों के कारलाने और दूसरे सब बड़े बड़े कारलाने महाजनों के हाथ में हैं, बैंक भी महाजनों के हाथ में हैं, तो ये महाजन धीर इनके लाखों कर्म चारी तो 'वैश्य' या 'ताजिर' ठहरे. लेकिन समाजवादी या साम्यवादी देश में या मिली जुली श्रार्थिक प्रलाखी या इन्तजाम बाले देशों में सब कारबार सरकारी गिल्कीयत हों श्रीर बंधी हुई तनख्वाह पाने वाले सरकारी कर्मवारी या मुलाजिम ये सब कारबार चला रहे हों तब यह सरकारो मुलाजिम या कर्म वारी श्रीर इन विभागों के मिनिस्टर 'त्रामिल' या 'क्षत्री' हो जायँगे क्योंकि यह सारा कारबार अब हुकूमत कर रही है. इसका मतलब यह निकला कि एक ही काम करने वाले, एक ही तरह की लियाक्रत रखनेवाले कहीं क्षत्री कहलाए और कहीं वैश्य. जब बी० एन० डब्स्यू रेलवे कम्पनी का या इम्पीरियल वैंक को भारत सरकार ने ले लिया था या जब कानपूर के पाबर हाउस को कम्पनी से भारत सरकार ने ले लिया तो इनके सब कर्मचारी चुटकी बजाते वैश्य से खत्री हो गए! इस युग की हुकूमत, हुकूमत कम करती है, इन्तजाम ज्यादा करती है.

दिल्ली की हुकूमत श्रीर सूबों की हुकूमत की विजारतों
पर एक नजर डालिये. मीलाना अबुल कलाम श्राजाद
विद्वान श्रीर धर्माचार्य होने के नाते आक्षण हैं श्रीर शासक
होने के नाते क्षत्री. पंडित कैलाश नाथ काटजू स्वभाव श्रीर
वकालत के पेशे के नाते आद्याण थे और डिफेन्स मिनिस्टर
होने के नाते वे स्त्री बन गए. पंडित जवाहरलाल भी
वैरिस्टर (बाह्मण) से पल मारते क्षत्री बन गए. एकाध और
मिसालें लीजिये. स्वर्गीय श्री रमेश चन्द्र दत्त बने भारी
सासक (हाकिम) थे, और अनेक उपन्यास, रामायन और
महाभारत का संत्रेजी कविता में अनुवाद, अर्थ शास पर
पुस्तकें भी हाकिम होते हुए लिखते रहे बानी एक ही समय
वे आहाण भी थे, श्रीर क्षत्री भी थे. स्वर्गीय श्री सी. वाई.

وئی پلمچایت (جس میں کئی طرح کے گام کرتے ہائے۔

اریک میں) یا کرئی سرکاری محکمہ یا سرکاری گرمخچاری المخواہ پاکر نہیں کرسکتے ? تو پھر ویشیہ شبد کا کیا آرام ہے ؟

ور آن لرگرں کو آپ کیا کہینکے جو وکیل میں اومیدار میں ایرونیسر میں تریائی کلکٹر میں تھانت دار میں فوجی انسر میں ایکٹر میں پینٹر میں سامتیدکار میں لیکن کمپلیوں میں حصہ لیکڑ دویدیند اور منافع بھی کماتے میں یہ لوگ سب بھی میں یا کچھ اور ؟

فرض کر لیجئےکه کسے دیک میں کل ریلوسے کمپنیاں مہاجن چلا رہے ھیں ، کھان کا کام بھی مہاجنوں کے ھاتھ میں ہے . سرکاری فہے اور پولس کو جس سامان اور جن چیزوں کی فرورت پڑتی ہے وہ سب مہاجنیں سے مول لیئے جاتے ہیں۔ ارهے کے کارخالے عد دھات کی کھائیں ، موٹروں کے کارخالے اور درسرے سب بڑے بڑے کارخانے مہاجنوں کے عالم میں عیں . بینک بھی مہاجنوں کے ہاتھ میں ہیں' تو یہ مہاجن اور اِن کے الهبور كومنجاري تو "وزشية" يا "تاجر" تهورت ليكن سماج وأدى یا سامیم وادی دیش میں یا ملی جلی آرتیک درآای یا مالی انتظام والے دیشوں میں یہ سب کار بار سرکاری ملکیت هور اور بندهی هوئی تنخواه پائے والے سرکاری کرمنچاری یا • الزم یه سب کاروبار چلا رهے هوں ، تب یه سرکاری مالزم یا کرمنچاری اور اِن وبھاگوں کے منستر عامل یا تچھتری مو جائیں کے کیونکہ یہ سارا کاربار اب حکومت کو رهی هے . اِس كَا مطلب يه نكا كه ايك هي كلم كرني والي ايك هي طرح کی لیاقت رکھنے والے کہیں چھتری کھائے اور کہیں ويشية . جب بي. اين. دبليو. ريلوے كمهنى كو يا أمييريل بينك کو بھارت سرکار نے اے لیا تھا یا جب کانھور کے پاورھاؤس کو کمیٹی سے بھارت سرکارنے لے لیا تو اِن کے سب کرمچاری چادی بجاتے ولیشید سے چہدری هو گئے! اس یک کی حکومت کمرمت کم کرتی ہے انتظام زیادہ کرئی ہے .

ایک نظر تالیئی مولانا ابولکلم آزاد ودوان اور دهرماچاریه ایک نظر تالیئی مولانا ابولکلم آزاد ودوان اور دهرماچاریه هوئے کے ناتے براهس هیں اور شاسک هوئے کے ناتے چهتری ، پندت کیلاش ناته کاتجو سوبهاؤ اور وکالت کے پیشے کے ناتے براهس می بیرستر هوئے کے ناتے وے چهتری بی گئے . پندت جواهر قل بهی بیرستر (براهس) سے پل مارتے چهتری بی گئے . ایک آدھ اور مثالین لیجیئے . سورگیه شوی رمیش چندر دت برے بهاری شاسک (حاکم) تھے اور انهک آپنیاس اور مهابهارت کا انگریزی کویتا میں انواد ارته شاستر پر پستمیں بهی حاکم هوتے هوئے اکهتے رائے یعلی ایک هیستے شاستر پر پستمیں بهی حاکم هوتے هوئے اکهتے رائے یعلی ایک هیستے وے براهس بھی تھے اور چهتری بھی تھے سورگیم شوی سی۔ وائی

چنتامنی سُنیانک تھے راج تیتی کے پلات تھے اور منسار بھی بن گئے ، بعد کو پھر سبھادک بن بیٹھے . كالرَّسْلَيْ كُويك ساهيته كا يندت تها توريلي أوچيه كوتي كا أينياسكار تها أور يه دولوس إنكلستان كي معهيم منترى بهي بن کئے . لینن دھورادعر ودوان ھوتا ھوا اپنے یک کا سب سے ہوا چېتري نکا يعني اعالم بهي تها اور عامل بهي . مها کړي گيتے کے بارہے میں کہا جا تا ہے کہ جہاں وہ رھتا تھا وعاں سے میلوں نک اُس کے سریکھا کوئی کارباری آدمی نہیں تھا ، ملتن سیمریتری تها کرامویل کا . ارسطو مندری تها سکندر کا .. سیزر نے مہان دھرم شاستر لکھا ، تیپولین نے منو اِسمرتی سے ڈور لینے والا تالين بنا يا . أب أعالم أأور عامل كي تقسيم كهان كلي إ نئے روس میں بیسوں ہوار آدمی مزدور سے ملوں کے مذہبیہ سينا پتی اور مهان شاسک بن بيته . يهی چين مين بهی هوا هے . اِنْهِاس لے أور سماج كى ترقى لے عالم عال تاجر اور مزدور کے بھید بھاؤ کو توز یھوز کر رکھ دیا ۔

چهتری کس کو کها جائے ؟ اگر کسی سماج میں دو تین کروز آدمی 'سوبهای' سے چہاری هیں تو گویا اُس دیش میں نہے' پولس' جہازی سینک' ہوائی سینک' چھرٹے اور ہوے شاسک اِن میں کسی کی تعداد گھڈائی یا بوھائی نہیں جاسكتى ، روس ميس حال ميس شايد, پانچ لاكه سينك نوب سے مقا کر کارخانوں میں لگا دیئے گئے میں کہا جہتری سے شردر بنا دیئے گئے میں مقلر کو روس کے جن فوجیوں اور گراس نے پیچھے تعکیل دیا' چیانگ کائی شیک کو' میکارنہر کو اہر جا پانی حمله آوروں کو جن چینیوں نے چین سے نکا کار ديش كي ركشا كي أن مين دس يندرة نيصدي هي بانايدة نہجی تھے ، بانی سب کسان اور مزدور تھے اور دیھی رکھا کا کام ختم کر کے پھر کسان مردور اور کاریکر بین گئے . لوائی هو يا شاسن اينتي كرپشي الدرلن هو يا كهيتي اور كارخانون كا بڑے پیمانیں پر انتظام ہو ، حکومت کے ایسے می سیکروں کلمیں کے لئے پورے سمایے کے آزاں سہدرگ اور سوجھ ہوجھ اور تجربے کی ضرورت یوتی ہے . منوشهه سادهاری طور یو فاگرک هوتے هين' عالم' عامل' تاجر أور مؤدور فهيل هوتے . فقي شكشا لوگيل كو ايك ننا نهيل بنائيكي . كسى كو لكير كانتير نهيل بنائيكي الله کسی طرح کی مقصیس دینے رالی (Multipurpose Education) هو گی . آبادی کا ذیادہ حصہ کئی طرح کے کم کر سکیکا یا یوں کہیں که ایک کام چهور کر دوسرا کم بھی کر سکیکا ۔ آور نٹے سمانے میں سب لوگ ہو روز أرنعي نسم كي منورتجنون يا مشناون مين بهي سني بالفائد. ملهی بهر حکومت کونے والے لوگیں کے انتظام اور رائے

विशासनी सन्पादक थे, राजनीति के पंडित थे और मिनिस्टर भी बन गये, बाद को फिर सम्पादक बन बैठे. ग्लैडस्टन श्रीक साहित्य का पंडित था, डिजरेली उच्चकाटि का उपन्यासकार था और ये दोनों इंगलिस्तान के मुख्य मंत्री भी बन गए. लेनिन धुरंघर विद्वान होता हुआ अपने युग का सबसे बड़ा क्षत्री निकला यानी 'आलिम' भी था और 'आमिल' भी. महाकवि गेटे के बारे में कहा जाता है कि जहां वह रहता था वहां से मीलों तक उसके सरीखा कोई कारबारी आदमी नहीं था. मिल्टन सेक्रेटरी था क्रामवेल का. अरस्तू मंत्री था सिकन्दर का. सीजर ने महान धर्म शास्त्र लिखा. नेपोलियन ने मनस्मृति से टक्कर लेने वाला कानून बनाया. अब 'आलिम' और 'आमिल' की तक़सीम कहां गई ? नये रूस में बीसों हजार आदमी मजदर से मिलों के मैनेजर, सेनापित भीर महान शासक बन बैठे. यही चीन में भी हुआ है. इतिहास ने और समाज की तरक्षकी ने आलिम, आमिल, ताजिर और मजदर के भेद भाव को तोड़ फोड़ कर रख दिया.

क्षत्री किस को कहा जाय ? अगर किसी समाज में दो तीन करोड़ आद्मी 'स्वभाव से' क्षत्री हैं तो गोया उस देश में फीज, पुलिस, जहाजी सैनिक, हवाई सैनिक, छोटे और बड़े शासक इनमें किसी की तादाद घटाई या बढाई नहीं जा सकती. रूस में हाल में शायद पाँच लाख सैनिक क्रीज से इटाकर कारलानों में लगा दिये गए हैं, गोया क्षत्री से शुद्ध बना दिये गए हैं. हिटलर को रूस के जिन कौजियों भौर गोरिल्लों ने पीछे ढकेल दिया, च्याँग काई शेक का. मैकारथर को श्रीर जापानी हमला आवरों को जिन चीनियों ने चीन से निकाल कर देश की रक्षा की उनमें दस पनदरह फीसदी ही बाकायदा फीजी थे. बाक्ती सब किसान और मजदूर थे, और देश रक्षा का काम खतम करके फिर किसान, मजदूर श्रीर कारीगर बन गए, लड़ाई हो या शासन. पेन्टी करपशन आन्दोलन हो या खेती और कारस्नानों का बड़े पैमानों पर इन्तजाम हो, हकूमत के ऐसे ही सैकड़ों कामों के लिये पूरे समाज के आजाद सहयोग और सूक बूक और तजरबे की जरूरत पड़ती है. मनुष्य साधारेगा तौर पर नागरिक होते हैं, श्रालिम, श्रामिल, ताजिर श्रीर मजदूर नहीं होते. नई शिक्षा लोगों को एकफन्ना नहीं बनाएगी. किसी को लकीर का फक़ीर नहीं बनाएगी, बल्कि कई तरह की सलाहियतें देने वाली (Multipurpose Education) होगी. आबादी का क्यादा हिस्सा कई तरह के काम कर सकेगा या यूँ कहें कि एक काम छोड़कर दूसरा काम भी कर सकेगा. और नए समाज में सब लोग हर रोज उँचे क्रिस्म के मनोरंजनों या मरागलों में भी समय विताएंगे. मुद्दी भर इक्टमत करने वाले लोगों के इन्तजाम और राज

).

पाट के दिन गए. आगे का पंचायती राासन और पुरानी वर्ण व्यवस्था साथ साथ नहीं चल सकते.

ही ब्राह्मशों की बात, इस लेख के छहर में मैंने बताया है हो कीसदी लोग संसार साहित्य को पढ़ और समक सकते हैं तो क्या साहित्य, धर्म, विज्ञान की कितावें लिखने वाले ब्राह्मण हैं और इन्हें सममकर आनन्द लेने वाले शद हैं ? महात्मा टालस्टाय ने तो ऐसी चीज को कला या साहित्य माना ही नहीं जिसे किसान मजदूर न समक सकें. महात्मा टालस्टाय के ज्यान में थोड़ा सा सुबालगा हो सकता है लेकिन बुनियादी तौर पर उनके बयान को ठीक मानना पहेगा, लेखक माझरा और पाठक शुद्र ! यह कैसे हो सकता है ? सब में रचनात्मक शक्ति नहीं होती. लेकिन यह भी कहा गया है कि लन्दन के जन साधारन शेक्सपीयर के नाटकों को एक एक आने का टिकट लेकर देखते थे. यह भी कहा गया है कि जब जब वे नाटक देखते समय अच्छी तरह इसका ज्ञानन्द लेते थे उस समय उनकी आत्माएँ शेक्शपीयर की आत्मा को इ लेती थीं. लन्दन के "शह " Groundlings कहलाते थे. इसी तरह जो बहुत कुशल टेकनालजिस्ट है या मृति-निर्माता है, या चित्रकार है या सर्जन अथवा डाक्टर है, उनको आप क्या कहेंगे ? कबीर जुलाहे थे, रविदास मोची थे, सदना क्रसाई थे, पलदूदास कंबट थे, स्पाइनोजा ऐनक बनाता था और संसार का महान दार्शनिक था. मुक्तरात आत्मकानी और सिपाही था, द्रोणाचार्य धतुर्विद्या में निपुण थे, इच्या, समाज में उनका कोई भी काम रहा हो. लेकिन गीता के झानेश्वर थे, राषट बर्न स किसान था, इन सब को किस वर्श में रक्खा जाय ?

धन्त में मैं यही कहुँगा कि वर्ण व्यवस्था एक ऐसी तहजीब और एक ऐसे समाजी इन्तजाम की पैदावार है जिसमें दस, पन्द्रह, भीसदी आदमियों को सुख और श्राराम से रखने के लिये अस्सी नव्बे कीसदी आदमी जांगर तोड़ मेहनत करते थे धीर द्रिद्र भी थे. यह ऐटम, मशीन श्रीर साम्यवाद का युग है. इस युग में जब इसकी सम्भावनायें या इमकानात पूरे होंगे तो रोजी कमाने के लिये किसी को चौबीस घंटे में घंटे दो घंटे से अधिक काम न करना पहुंगा श्रीर वह काम भी बहुत हलका होगा. बाकी समय में सभी लोग कला, काव्य, साहित्य या अद्व के दूसरे रूप विज्ञान श्रीर अनेक विद्याओं से दिलचस्पी लेंगे. केवल ब्राह्मण, क्षत्री भीर वैश्य कहे जाने वाले बहुत कम लोग होंगे. शुद्र कोई होगा ही नहीं. ऐसी मिली जुली लियाकत वाले सब होंगे जिसमें त्राक्षाण, क्षत्री और वैश्य के गुल-कर्म-स्वभाव मिले हुए हों. ऐसा होकर ही सभ्यता या तहजीब का मकसद पूरा होगा. आदमी पेशे से नहीं पहचाना जायगा बल्कि कुरसत के लगहों में वह क्या करता है इससे पहचाना

ہات کے دن گئے ، اُگے کا پنتھایتی شاسن اور پرانی ورن ویوستھا ساتھ ساتھ نہیں چل سکتے ۔

رهی براهمنوں کی بات . اِس لیکھ کے شرع میں مینے بتا یا هے سو فیصدی لوگ سنسار سائته، کو روه اور سمنجه سکتے هیں . تو كيّا ساهتيه عمرم وكيان على كتابين لكهنم والم برأمين هين أور إنهين سمحكر أنند لينے والے شودر هيں ؟ مياتما والسوائے نے تو ایسی چیز کو کلایا ستیه مانا هی نهیں جسے کسان مودرو الله سمجه سکیں . مہانما ٹالسائے کے بیان میں تهورا سا مبالغة ھو سکتا ہے لیکن بنیادی طور یو اُن کے بیان کو تھیک مانفا يريكا . ليكيك براهمن أوريائيك شودر ايم كيسم عو سكنا هم ؟ سب میں رچناتیک شکتی نہیں ہوتی ، لیکن یہ بھی کیا گیا ہے که للدین کے جن سادھارن شیکسپیر کے ناٹیوں کو ایک ایک أَنْ كَا تُمَت ليكو ديكهتم تهي يه بهي كها كيا ه كه جب جب و الله ديمهت سئ اچهى طرح أس كا آند ليت ته تو أس سمئے أن كى أتمائيں شيكسپير كى أتما كو چو ليتى تهيں. لندبی کے یہ "شودر" Groundlings کہاتے تھے . اِسی طرح جو بہت کشل ٹیکنالجسٹ هے یا مورتی نرمانا هے یا چتر كو هم يا سرجن اتهوا دائدر هم أنهين آب كيا كيينكم ﴿ كبهر جوالف تھے' روزداس موچی تھے' سدنا قصائی تھے' یلٹو داس كيوت تهـ سائى نوزا عينك بناتا تها أور سنسار كامهان دارشنك تھا ۔ سقراط آتم کُیانی اور سیاھی تھا دورناچاریہ دھنر ودیا میں نہن تھے کرشن سماج میں اُن کا کوئی بھی کام رہا ہوا لهمی گیتا کے گیائیشور تھے آرابرے برنس کسان تھا اِن سپ کو کس ورن میں رکھا جائے ؟

انت میں میں یہی کہونگا کہ ورن ویوستھا ایک ایسی تہذیب اور ایک ایسے سماجی انتظام کی پیداوار ہے جس میں دس' پندرہ نیصدی آدمیوں کو سکھ اور آرام سے رکھنے کے لئے اسی نوے نیصدی آدمی جانگر تور محتنت کرتے تھے اور دردر بھی تھے۔
یہ ایٹم' مشین اور سامیہ واد کا یک ہے ۔ اِس یک میں جب اِس کی سمبھارنائیں یا اِسکانات پورے ہونگے نو روزی کالے کم نے کرنا پڑیگا اور وہ کام بھی بہت ہلکا ہوگا ۔ باقی سمئے میں کام نے کرنا پڑیگا اور وہ کام بھی بہت ہلکا ہوگا ۔ باقی سمئے میں انبھی لوگ کاویہ' ساھیتہ یا آدب کے دوسرے روپ وگان اور ویشیہ انبھی ہدائے والے بہت کم لوگ ہوئے۔ کیول براہمن' چھتری اور ویشیہ ملی جلی لیاقت والے سب ہونکے جسمیں براہمن' چھتری اور ویشیہ ملی جلی لیاقت والے سب ہونکے جسمیں براہمن' چھتری اور ویشیہ کی متصد پورا ہوگا ، آدمی پیشے سے نہیں پہچانا جائیگا بلکھ فوصت کے لعتوں میں وہ کیا کرنا ہے آس سے پہچانا جائیگا بلکھ

कार्यगा. जीवन एक कला वन जायगा जिसका कलाकार हर भावमी होगा. धीर जीवन के कलाकारों में ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य भीर शुद्ध का भेद नहीं होगा वर्गहीन समाज इसी तरह बनेगा.

जब हिटलर की कीज ने रूस पर हमला किया तो कई जगहों से रूसी कौज का भागना पड़ा, मामूली सिपाही भागने की जल्दी में हजारों की तादाद में अपने बैग और सामान छोड़ गया जिनमें किताबें भी थीं, इन बैगों से रूसी भाषा में अरस्तू की किताचें, साइंस की अनेक कितावें, दर्शन की अनेक किताबें, शेक्सपीयर और दूसरे शायरों की कई कितावें बरामद हुईं. यह देखकर जर्मन कीजी अफसरों ने कहा कि इस क्रीम को हम फतह नहीं कर सकते, वर्ण व्यवस्था को मिटा कर यह क़ौम श्रीर यह क़ौमी जिन्दगी बनाई गई है न कि बर्ग व्यवस्था के निजास को मानकर, मिजाजों और तबीयतों में ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य श्रीर शुद्र का कर्क नहीं होता बल्क फर्फ़ यह होता है कि किसी को शायरी पसंद है, किसी को फलसका पसंद है, किसी को उपन्यास पसन्द है, किसी को साइन्स और इनमें भी खास खास किस्म की रचनाएँ, वर्श व्यवस्था भिटने पर भी यह फर्क क्रायम रहेंगे. जहां सब पढ़े लिखे होंगे, काफी समऋदार होंगे, समाज में सब के बराबर हैसियत रखने वाले आदमी होंगे, खुशहाल होंगे, हाथ पांव की कड़ी मेहनत से आजाद होंगे, जिन्दगी की जरूरतों के लिये जिस समाज में इर एक को बहुत कम काम करना पदेगा, ऐसे समाज में वर्णं व्यवस्था की कहां ज़रूरत ?

सामाजिक जीवन में मैं एक काम करने की योग्यता रखता हूँ, तुम कोई दूसरा काम करने की योग्यता रखते हो. तुम देश का शासन कर सकते हो, मैं पुराने जूतों की मरम्मत कर सकता हूँ. लेकिन इससे यह साबित नहीं होता कि तुम मुक्तसे बड़े हो. मैं देश का शासन नहीं कर सकता तो तुम भी जूतों की मरम्मत नहीं कर सकते. मैं जूतों की मरम्मत करने में कुशल हूँ और तुम बेद पढ़ने में. लेकिन यह कोई वजह नहीं कि तुम मेरे सर पर पांव

रक्को.

--स्वामी विवेकानन्व

جاربکا، جنیون آنیک کلامی جاربیکا جس کا کلکار هو آدمی هوال آور جنین کے کلکاروں میں براهمی چھتری ویشید اور شودر کا بھید نہیے هوا ورکب هیں ساج اِسی طرح بنیکا .

جب مثار کی نوبے نے روس پر حمله کیا تو کئی جاہوں سے روسی نہیے کو بھاگلا پُوا ، معمولی سیاھی بھاگاہ کی جادی میں هزاروں ی تعداد میں اپنے بیگ اور سامان چهرو گیا جن میں كتابين بهي تهين ، أن بيكون سه روسي بهاشا مهن أرسطو كي كتابين اسائنس كي اليك كتابين درشن كي اليك كتابين شیکسهبر اور دوسرے شاءروں کی کئی کتابیں برامد حوثیں . یہ دیکھ کر جرمی فوجی افسروں نے کہاکہ اِس قوم کو هم فاتعے نہیں ر سكتاء ، ورن ويوستها كو مثنا كر يه قوم أور يه قومى زندگى بذئى کثر ہے نے کہ ورن ویوستھا کے نظام کو مان کر، مزاجوں اور طبيعتين ميں اور العمن " چهتری ويشيه اور شودر کا فرق انهين شورا بالكم فرق يم هوتا هے كه كسى كو شاعرى يسلن هے، كسى كو زاسدة يسند هم كسي كو أينياس يسند هم كسي كو سائنس اور إن میں بھی خاص خاص قسم کی رچنامیں ، ورن ویوستھا مقلے پر بهي يه فرق إفايم رهينك ، جهال سب يوهم لكه هونك كافي سمجهدار هوناء سمام میں سب کے برابر حیثیت رکھنے والے آدمی هونکے' خوشحال هونگے' هانه پاؤں کی کری محدت سے آزاد سونے ' زلدگی کی ضرورتوں کے لئے جس سماے میں ھو ایک کو بہت کم کلم کرنا پریکا' ایسے سماج میں ورن ویوستھا کی کہاں ضرورت ؟

ساملجک جهون میں میں ایک کام کرنے کی یوگتا موں تم کوئی موسرا کام کرنے کی یوگتا موں تم کوئی دوسرا کام کرنے کی یوگتا رکھتے ہو، تم دیش کا شاسن کوسکتے ہوا میں پرائے جوتوں کی مرمت کرسکتا ہوں ، لیکن ایس سے بہ ثابت نہیں کوسکتا تو تم بھی جونوں کی مرمت خونوں کی مرمت کرنے میں جوتوں کی مرمت کرنے میں کشل ہوں اور تم وید پوھنے میں ، لیکن یہ کوئی رجہ نہیں کہ تم میرے سر پر پاؤں رکھو ،

سسوامي وويكافنه

AND THE PROPERTY OF THE PROPER

मी वकवर्ती राजागोपालाचारी

شرَّى چكرورتي راجا گويالا چارى

स टीके की कोई साईसी जुनियाद नहीं

में इस विषय की जितनी जितनी जांच करता हैं और जतना जितना इस पर सौर करता हूँ इतना इतना हो मेरा ह विश्वास और अभिक पक्का होता जाता है कि इस बड़े माने पर बी० सी० जी० के टीके लगाने का काम 'नीम कीम खतरए जान' बाली चीज है और इस टीके के लिये होई सच्ची साइंसी खुनियाद है ही नहीं. अधिकतर तो इससे केसी तरह का कोई फायदा नहीं होता और काफी सरतों में ससं नकसान होता है. जिन सुरतों में इससे नकसान हो गावा है उनमें कह दिया जाता है कि जिस आदमी को टीके हे तुक्रसान हुआ है उसमें 'बीमारी का मुकाबला करने की ाक्ति पहले ही से कम थी.' भारत में इस टीके का काम जिस ारह बढ़े पैमाने पर चलाया जा रहा है उसमें सारी बातें वतरनाक और अनाड़ीपन की हैं. दूसरे सभ्य देशों में जहां हीं यह टीका आजमाया गया है बड़ी बड़ी अहतियातें ारती जाती थीं. भारत के बच्चों पर आज उसी तरह के ।जरवे किये जा रहे हैं जिस तरह के जंग के बाद नीम गंगली और पराधीन क्रीमों के अन्दर इन इलाक़ों में किये ाये थे जो जंग से वीरान और बरबाद हो गये थे. सरकार ही तरफ से बार बार कहा जा रहा है और अखबारों में नेकल रहा है कि इस साल इतने लाख बच्चे तपेदिक के इतरं से सदा के लिये बचा दिये गये और अगले दो साल हे अन्दर इतने करोड़ और बच्चे बचा दिये जायेंगे, वरीरा. सि बार में जनता में जो प्रोपेगैंडा किया जाता है वह बहत गंखं का है. क्योंकि तपेदिक के हामी बढ़े से बड़े डाक्टरों हा दावा केवल इतना ही है कि टीका लगने के दो साल तक कि को तपेदिक नहीं होगा और दो साल के अन्दर भी मगर कहीं जोर का तपेदिक फैल गया और वच्चे को कहीं षे लग गया तो उस हालत में भी टीका उसे नहीं बचा सकेगा और इस दो साल की भीकाद को बढ़ाने के लिये शेवारा टीका लगाने का भी कोई सवाल नहीं होता. स**व श**क्टरों की यह साफ राय है कि दोबारा बी० सी० जी० का टीका लगाना खतरनाक होगा. डाक्टरॉ-डाक्टरॉ की राय में कर्क इस बात पर है कि शुरू के यानी पहले एक टीके से भी सचमुच कुछ कायदा होता है या नहीं, या कायदे की जगह भीर वल्टा तुक्रसान होता है. इस्रतिने अन इसे सुद् अपना वका तुक्रसान सोचना है.

اِس قیائے کی کوئی سائنسی بنیاد تہیں 🕟

میں اِس رشے کی جتنی جتنی جانبے کرتا ھیں اور جتنا جتنا أس ير غور كرتا هور أتنا أتنا هي ميرا يه وشولس أور ادهک یکا موتا جاتا ہے که اِس بڑے پیمائے پر ہی۔ سی جی کے ٹیکہ لگانے کا کام المیم حکیم خطرة جان والی چیز ہے اور اِس تيكي كي الله كوئي سچى سائنسي بنياد هے هي نهيں ، أدهك تو تو اِس سے کسی طرح کا کوئی فائیدہ ٹیہیں ہوتا اور کانی صورتین میں اِس سے نقصان ہوتا ہے ، جن صورتین میں اِس سے نقصان ہوجاتا کے اُن میں کہت دیا جاتا ہے که جس آدمی کو ٹھکے سے نقصان ہوا ہے اُس میں اہیماری کا مقابلہ کرنے کی شکتی بہلے هی سے کم تهی ؛ بهارت مهں اِس تهدے کا کام جس طرح بڑے پیمائے پر چلایا جا رہا ہے اُس میں ساری ہاتیں خطرناک اور اناوی بن کی هیں . درسرے سبھید دیشوں میں جہاں کہیں یہ تیکہ آزمایا گیا ہے بڑی بڑی احتیاطیں برتیجاتی تھیں . بھارت کے بچوں پر آج اُسی طرح کے تجربے کئے جا رہے میں جس طرح کے جنگ کے بعد نیم جنکلی اور پرادھیں قرموں کے اندر أن علا قوں میں كئے گئے تھے جو جنگ سے ویران اور برباد ہو گئے تھے ۔ سرکار کی طرف سے بار بار کہا جا رہا ہے أور اخباروں میں نکل رها هے نه اِس سال أتنے لاكھ بجے تپ دق کے خطرے سے سدا کے اللہ بھا دیٹے گئے اور اگلے دو سال کے اندر اپنے کررز اور بھے بچا دیئے جائینکے وغیرہ اِس بارے میں جنتا میں جو پروپیئنڈا کیا جاتا ہے وہ بہت دھو کے کا ھے . کیونک تپ دق کے حامی بڑے سے بڑے ڈاکٹروں کا دعوال کیرل اننا هی هے که تیکه لکنے کے دو سال تک بحجے کو تب دق نہیں ہوکا اور دو سال کے اندر بھی اگر کھیں زور کا تہدی بھیل گیا اور بھے کو کہیں سے لگ گیا تو اُس حالت میں بھی ٹیکہ اسے نہیں بحیا سکے کا اور اِس دو سال کی میماد کو ہرھانے کےلئے دو بارہ ٹیکھ لگانے کا بھی کوئی سوال نہیں ھوتا، سپ تَأْكَثُرُونَ كَي يَهُ مَافَ رَأْتُم هَ كُهُ دَوْبَارَةٌ بِي. سَي. جَي كَا تَبِيَّهُ للانا خطرناک هوا . دانقروں - دانقروں کی رائے میں فرق اِس بات ہر ہے که شروع کے یعنی پہلے ایک ٹیکے سے بھی سے میے كجهنائدة هوتا هم يا نهدي يا نائدة كي جكه أور ألل القصال هوتا هر إس الله اب هيين خود أينا تنع فتعبان سوجنا ه. यह चीच सारे राष्ट्र के जीवन के साथ सम्बन्ध रखती है, जब बड़े बड़े बिद्धान डाक्टरों की राय इसमें एक दूसरे से नहीं मिलती! तो यह तो एक ऐसी बात नहीं है जिसमें बहुमत या श्रस्पमत यानी डाक्टरों की गिन्ती पर इसका फैकला छोड़ दिया जाये. साइंस जब नये नये मैदानों में बढ़ेगी ता साइंसदानों की रायें श्रलग श्रलग होंगी ही. ऐसे मामलों में, जहां श्राम जनता पर उसका श्रसर न पड़ता हो इनहां हम साइंसदानों पर यह बात छोड़ सकते हैं कि बह ख़ुद श्रपने मतभेद को तय कर लें. लेकिन जहाँ आम जनता की भलाई या बुराई, उनकी जिन्दगी और मौत पर उसका श्रसर पड़ता, हो तो हम इस तरह का फैसला केवल साइंसदानों पर नहीं छोड़ सकते.

मुक्ते पूरा विश्वास है कि वह दिन आने वाला है कि जब द्वितया के सब साइंसदां बी० सी० जी० की बाबत इस नतीजे पर पहुँच्यु जायंगे कि इससे कोई फायदा नहीं है, वह अपने इस फैसले का ऐलान कर देंगे, बीठ सीठ जीठ का टीके लगाना छोड़ देंगे और इसे भूल जायेंगे. लेकिन भारत में वृ'कि सरकार का तन्द्रहस्ती का महकमा इस खिलाफ साइंस काम की तरफ श्रपना सारा बजन डाल रहा है इसिलिये यहां के साइंसदानों के इस टीके को छोड़ देने में देर लगेगी. इस बीच सारे मुल्क के अन्दर हमारे बच्चों और हमारे अच्छे से अच्छे हीनहार वच्चों के अन्दर जान मुक्त कर इतने बड़े पैमाने पर एक ऐसी बीमारी के जिन्दा की दे दाखिल किये जा रहे हैं जो मोहलिक से मोहलिक **शी**मारियों में से है. कई बड़े से बड़े और मशहूर साइंसदां यह कह चुके हैं कि उन्हें इसका बहुत बड़ा डर है कि आदमी के जिस्म के अन्दर पहुँच कर यह कीड़े थोड़े ही दिनों के बाद क्या कुछ नहीं बन सकेंगे और क्या कुछ नहीं कर मुकेंगे. फिर जब लाखों और करोड़ों श्रादिमयों पर उसका श्रसर पड़ता है और इतनी तेजी के साथ इतने बड़े पैमाने पर टीके लगने की वजह से एक से दूसरे को बीमारी लगने का मौका रहता है तो यह खतरा श्रीर भी बढ जाता है.

इस टीके के लगाने की रारज यह बताई जाती है कि
हच्चों को तपेदिक की बीमारी न हाने पाने. अञ्चल तो
पारत में तपेदिक से मरने के जो आंकड़े हमें आम तौर पर
हताप जाते हैं वह ठीक आंकड़े नहीं हैं. वह केवल अंदाजे से
यार कर लिये गये हैं. दूसरी यह बात कि यह बीमारी प्लेग
रा बबा की तरह इस तरह न आज तक कभी फैली और
र फैलेगी कि उससे किसी के लिये यह जायज हो जाए कि
ह सब बच्चों के जिस्मों के अन्दर एक इस तरह का जहर
रिखल कर दे जिसकी बाबत अभी तक यह साबित नहीं
मा है कि वह नुक्रसान नहीं करता. इस टीके के लिये जो
वा किया जाता है वह भी यह नहीं है कि उससे बच्चा

یہ چھڑ سازے راشار کے جھوں کے ساتھ سمبادہ رکبتی ہے۔

ب بڑے بڑے ودولی داکتروں کی رائے اِس میں ایک دوسرے

نہیں ملتی تو ایک ایسی بات نہیں ہے جس میں بہرمت

آبست یعنی دافروں کی گنتی پر اِس کا فیصلہ چھور دیا

بنی سائنس جسائے لئے میدانوں میں بردیکی تو سائنسدانوں

رائیں الک الگ ہوتکی ہی ایسے معاملوں میں جہاں عام

رائیں الک الگ ہوتکی ہی ایسے معاملوں میں جہاں عام

بنتا پر آس کا اثر نہ پرتا ہو وہاں ہم سائنس دانوں پر یہ بات

ہور سکتے میں که وہ خود اپنے مت بھید کو طے کر لیں ، لیکن

بہل عام جنتا کی بھائی یا برائی اُن کی زندگی اور موت پر

میں کا اثر پرتا ہو تو ہم اِس طرح کا فیصلہ کیول سائنس دانوں

ر نہیں چھر سکتے ،

مجمع پررا وشواس هے که وہ دن آنے والا هے جب دنیا کے بب ساننس دال ہی، سی، جی، کی بابت اِس نتیجے پر بہنم جانفیکے که اِس سے کوئی آفائیدہ نہیں ہے، وہ اپنے اِس نیملے کا اعلان کر دنیکے' بی. سی. جی کے تیکے لکانا چھور دینکہ ارر أس بهول جانيكي ليكن بهارت ميس چونكه سركار كا تندرستي كأ محكمة أيس خلف سائلس كلم كي طرف أبنا سارا ون دال رہا ہے اِس لٹے یہاں کے سائنس دائوں کے اِس ٹیکے کو چھرو دینے این دیر لکے گی . اِس بیچ سارے ملک کے اندو عمارے بحوں ارر همارے اچھے سے اچھے هونہار بنچوں کے اندر جان بوجھ کر اننے بڑے پیمانے پر ایک ایسی بیناری کے زندہ کیڑے داخل لئے جا رہے میں جو مہلک سے مہاک بیماریوں میں سے ھے ، نئی ہے سہرے اور مشہور سائنسداں یہ کہدچکے هیں که انہیں اِس کا بہت ہوا تر ہے کہ آدمی کے جسم کے اندر پہنچ کر یہ کورے تھوڑے می داوں کے بعد کیا کچھ نہیں ہی سمیں گے اور کھا کنچھ تبھیں کر سکیں گے ، پھر جب لاکھوں آور کورورں آدمیوں پر اس کا اثر پڑتا ہے اور اِتنی توزی کے ساتھ اتنے ہڑے پیمانے پر الله لكنه كي وجه سے أيك سے دوسرے كو بيدارى لكنه كا موقعة رمنا هے تر يه خطرة أور بھي بردھ جانا هے .

اِس ٹیکے کے لگانے کی غرض یہ بتائی جاتی ہے کہ بچوں کو تبدی کی بیماری نہ مونے چارے ، اول تو بھارت میں بچوں کے تبدیل سے مرنے کے جو آنکڑے ہیں عام طور پر بتائی جاتے عیں وہ ٹیمک آنکڑے نہیں ہیں ، وہ کیول آندازے سے تیار کو لئے گئے ہیں ، دوسری بات کہ یہ بیماری پلیگ یا وہا کی طرح اِس طرح نہ آج تک کبھی پھیلی اور نہ پھالے گی طرح اِس طرح کا کا زهر داخل نہ اُس سے کسی کے لئے یہ جائز ہو جائے کہ وہ سب بچوں کے اندر ایک اِس طرح کا کا زهر داخل کردے جس کی بابت اُبھی تک یہ ٹایت ٹیمن ہوا کردے جس کی بابت اُبھی تک یہ ٹایت ٹیمن ہوا کہ وہ دعوی کی ایک اِس تابیل کے لئے جو دعوی کا کا رہ تھی یہ نہیں کوتا ایس تیکے کے لئے جو دعوی کا جاتا ہے وہ بھی یہ نہیں گو گ

जरूर तपेदिक से बचा हो रहेगा. वचे रहने की जो थोड़ी बहुत उम्मीद दिलाई जाती है वह भी अविक से अविक दो साल के लिये दिलाई जाती है. इन सब जातों पर विचार करते हुए आकृती इस नतीजे पर पहुँचे क्योर नहीं रह सकता कि यह टीकें लगाने का काम जो चलाया जा रहा है यह बिलकुल सलत है.

THE PROPERTY OF THE PARTY OF TH

जब इस तरह का काम इतने बढ़े पैमाने पर किया जाता है तो उसमें एक बहुत बुरी बात यह हो जाती है कि वह लोग, जिन की बात का लोगों पर असर पड़ता है, इस कोशिश में लगे रहते हैं कि अधिकतर जनता के अन्दर इस बीमारी का डर पैदा हो जावे. हर आदमी के अन्दर हर बीमारी का मुकाबला करने की एक दर्जे तक कुदरती शक्ति होती है, पर जब यह डर फैल जाता है तो लोगों के अन्दर से वह डर इस शक्ति को कम कर देता है, नजीता यह होता है कि जो लोग अभी तक अपने अन्दर की शक्ति से अपने को बीमारी से बचाये रखते थे अब बह बीमारी के शिकार हो जाते हैं. एक दूसरा जुरा नतीजा इस तरह की तहरीक का यह भी होता है कि तपदिक को सच मुच काबू में रखने के जा दूसरे अधिक कारामद तरीके हैं उनकी तरफ से लोग बेपरवाह हो जाते हैं.

बी० सी० जी० का तरीक़ा असली साइंसी इलाज के तरीक़े के भी खिलाफ है. एक दर्जे तक यह कुछ कुछ होन्यो- पैथी से मिलता है. इसका उसूल यह है कि बीमारी का इलाज करने के लिये उन चीजों को ही, जिनसे बीमारी पैदा हाती है, इसकी मात्रा में जिस्म के अन्दर दाखिल कर दिया जावे. बी० सी० जी० के इस उसूल में और होन्योपैथी के असली उसूल में फर्क यह है कि होन्योपैथ आद्मी के जिस्म के अन्दर कभी कोई ऐसी चीज दाखिल नहीं करता जो जिस्म के अन्दर पहुंच कर बच्चे दे और बदे. बी० सी० जी० वाला इस तरह के जिन्दे कीड़े काफी बड़ी मात्रा में आदमी के जिस्म के अन्दर दाखिल कर देता है फिर जो कभी भी इस जिस्म से बाहर नहीं निकलते बल्क अन्दर रह कर बच्चे दे दे कर खूब बदते रहते हैं और हमेशा के लिये इस जिस्म को अपना घर बना लेते हैं.

हमें यह भी याद रखना चाहिये कि बी० सी० जी० के टीके की हिमायत करने बाले यह दावा नहीं करते कि उससे किसी बीमारी का इलाज हो सकता है. उन का दाज सिर्फ यह है कि इस टीके के लग जाने से जिनके टीका लगाया जायेगा उनमें से कुछ लोग एक बहुत बोड़े से अरसे तक के लिये मुमकिन है बीमारी से बचे रहें. यानी—अगर इन्हें बीमारी अभी तक नहीं हुई है तो उन्धीद की जाती है कि कुछ बरसे तक और नहीं, मुक्ते यह इसलिये दोहराना पढ़ रहा है क्योंकि कुछ अच्छे पढ़े लिखे लोगों ने मुक्त पर वह ऐतराज فرو تبدق سے بچا فی رقع کا بچے رہانے کی جو نہری بہت آمید دلائی جاتی ہے وہ بھی ادھک سے ادھک سے ادھک دو سال کے لئے دلائی جاتی ہے ان سب باتوں پر وچار کرتے ہوئے آرسی اِس نتیجے پر پہانچے بنور نہیں رہ سکتا کہ یہ ٹیکے نگانے کا کام جو چانیا جا رہا ہے یہ بالکل غلط ہے ۔

جب اِسی طرح کا کام اُتنے بڑے پیمائے پر کھا جاتا ہے تو اُس میں ایک بہت بری بات یہ ھو جاتی ہے کہ وہ لوگ' جس کی بات کا لوگرں پر اثر پڑتا ہے' اِس کوشش میں لگے رھتے ھیں کہ اُدھک تر جنتا کے اُندر اُس برماری کا قر پھدا ھو جارہ ، ھر آدمی کے اندر ھر بیماری کا مقابلہ کوئے کی ایک درچے تک قدرتی شکتی ھوتی ہے ۔ پر جبیء قر پھیل جاتا ہے تو لوگوں کے اندر سے وہ قر اِس شکتی کو کم کر دیتا ہے ، نتیجہ یہ ھوتا ہے کہ جو لوگ ابھی تک اپنے اندر کی شکتی سے اپنے کو بیماری سے بدچائے رکھتے تھے اب وہ بیماری کے شکار ھوجاتے ھیں ، ایک دوسوا برا نتیجہ اِس طرح کی تحریک کا یہ بھی ھوتا ہے کہ تہدی کو سے میے قابو میں رکھنے کے جو دوسرے ادھک کارآمد طریقے

بی سی، چی کا طریقہ اُصلی سائنسی علاج کے طریقے کے ملک درجے تک یہ کچھ کچھ ہومیوپیتھی سے ملکا ہے ایس کا اصول یہ ہے کہ بیماری کا علاج ، کرنے کے لئے اُن چیزوں کو ھی' جس سے بیماری پیدا ہوتی ہے' ہلکی ماترا میں جسم کے اندر داخل کر دیا جارے ، بی سی، جی کے اِس امول میں اور ہومیوپیتھی کے اصلی اُصول میں فرق یہ ہے کہ ہوسی کے اصلی اُصول میں فرق یہ ہے کہ شہریں کرتا جو جسم کے اندر بہتے کو بجھے دے اور بڑھے ، بی سی، جی والا اِس طرح کے زندہ کیڑے کانی بڑی ماترا میں آسی جسم کے اندر داخل کردیتا ہے جو پور دبھی بھی اُس جسم سے باہر قبیں شمائے بلکہ اندر رہ کر بجھے دے دے دے کو خوب بومتے ہیں اور ہیشہ کے لئے اُس جسم کو اپنا گھر بومتے رہتے ہیں اور ہیشہ کے لئے اُس جسم کو اپنا گھر

میں یہ بہی یاد رکہنا چاہئے کہ ہی، سی، چی کے ٹیکے
کی حمایہ کرنے والے یہ دعوی نہیں کرتے کہ اُس سے کسی
بیداری کا علیے ہو سکتا ہے۔ اُن کا دعویل صرف یہ ہے کہ اِس
ٹیکے کے اگ جانے سے جن کے ٹیک لگایا جائیگا، اُن میں سے کچھ
لوگ ایک بہت تہرتے سے عرسے تک کے لئے ممکن ہے بھماری
سے بچے رهیں ، یعنی ۔۔۔ اگر اِنہیں بھماری اُبھی تک
نہیں ہوئی ہے تو اُمید کی جاتی ہے کہ کچھ عرصہ
تک اور نہ ہو ، مجھے یہ اِس لئے دھرانا پر رہا ہے
کیہنے کچھ اچھے پڑھے لکھے لوگوں نے معھ پر یہ اعترانی

किया है कि मैं ऐसी चीज का निरोध क्यों करता हूँ कि जिससे कुछ बीमार अपनी बीमारी से अच्छे हो सकें. बी० सी० जी० किसी बीमार की बीमारी को दूर नहीं करता. उसकी यह ग्रारण ही नहीं है.

नीम हकीम यानी श्रनाड़ी हकीम हमेशा जान के लिये ससरनाक होता है, चाहे वह आजकल का साइंसी नीम हकीम हो भीर चाहे पुरानी चाल का दक्तयानूसी नीम हकीम-पुरानी चाल के नीम हकीम से बचना आसान होता है लेकिन नई चाल के नीम हकीमों से बचना गुराकिल पढ़ जाता है. क्योंकि यह नया नीम हकीम अपनी रालत चात के समर्थन में बड़े बड़े मोटे शब्द और साइंसी फिक़रे इस्तेमाल करता है. कोई मूठ अगर पूरा मूठ हो तो उसका गुकाबला करना आसान होता है लेकिन जिसमें कुछ मूठ और कुछ सच मिला हुआ हो उससे लड़ना गुराकिल हो जाता है.

इस तरह के नीम हाक्टर या अनाड़ी साइंसदां पहले कोई उसूल निकाल बैठते हैं जो कहीं लगता है और कहीं नहीं लगता और फिर जहां वह नहीं लगता वहां भी उसे अवर-इस्ती थोपने की कोशिश करते हैं. और फिर अगर कहीं राल्ती निकल आती है तो अपनी बात की पच में पड़कर जिद्द करते हैं. बी० सी० जी० का उसूल सीधा सादा यह है कि जिस तरह के जहर या जिस तरह के कीड़ों से कोई बीमारी पैदा होती है उसी तरह के जहर या उसी तरह के की बों को अगर हम खुद बाहर से लेकर जिस्म के अन्दर दाखिल कर दें तो जिस्म फिर उस बीमारी के इमले से बच जाता है. कहा यह जाता है कि उस जहर या उन कीड़ों के जिस्म में दाखिल होते ही जिस्म उनके मुकाबले की तैयारी करता है. ठीक उसी तरह जिस तरह हर मामूली बीमारी में भी जिस्म ख़ुद बख़ुद बीमारी के मुक़ाबले की काशिश करता है. लेकिन तपेदिक की सूरत में इस उसूल को लगाना बिलकुल रालत है क्योंकि तपेदिक हो जाने पर जिस्म के अन्दर , कोई ऐसी नई चीज या नई तरह के कीड़े ख़द बख़द पैदा नहीं होते जो बीमारी का मुकाबला करें. इसके जवाब में बीo सीo जीo के हामी हमें बताते हैं कि बीo सीo जीo का टीका लगाने से टीके की जगह जो फफद आती है या बुखार आ जाता है उस से यह पता चलता है कि जिस्म अन्दर सं बीमारी का मुकाबला करने की तैयारी कर रहा है. यह रालत दलील देकर वह चाहता है कि हम उन सब खतरों को अपने सिर पर ले लें जो इस टीके से हमेशा के लिये पैदा हो जाते हैं, श्रीर वह भी सिर्फ दो बरस तक बचे रहने की थोथी उम्मीद में.

ध्य एक दलील आंकरों की रह जाती है कि कितनों के टीके लगे और कितनों को तुक्कसान हुआ और कितनों को नहीं हुआ. यह आंकरे सब भोके के हैं. इनसे अधिक से یا ہے کہ میں آپسی چیز کا ربودہ کیس کرتا ہوں کہ جس سے کچے بیمار آپائی بیماری سے آچھے ہو سکیں ، بی سی جی کسے بیمار کی بیماری کو دور تہدی کرتا ، اُس کی یہ فرض ہی نہدی ہے ،

نیم حکیم یعنی آنازی حکیم هدیشته جان کے لئے خطرناک بونا هے' چاہے وہ آج کل کا سائنسی نیم حکیم ہو اور چاہے پرانی چال کا دقیانوسی نیم حکیم ، پرانی چال کے نیم حکیم سے بچنا مشکل آسان ہوتا ہے لیکن نشی چال کے نیم حکیم سے بچنا مشکل پر چاتا ہے . کیونکه یه نیا نیم حکیم اپنی غلط بات کے سمرتین میں بڑے برے موقے شید اور سائنسی نقرے استعمال کرتا ہے . کین جہرت اگر پورا جہرت ہو تو اُس کا مقابله کرنا آسان ہوتا ہے لیکن جس میں کچے جہوت اور کچے سے مقابله کرنا آسان ہوتا سے ارنا مشکل ہو جاتا ہے .

اِس طرح کے ٹیم ڈاکٹر یا آناری سائنس داں پہلے كوئي أصول فكال بيتهتم هين جو كهين لكتا هـ أور كهين نهين لكتا أور يهر جهال ولا فهيل لكتا وهال بهي أسه وبردستي تهريني کی کوشفی کرتے میں ۔ اور پھر اگر کہیں غلطی ایکل آتی ہے تو ابنی بات کی پیم میں پرکر ضد کرتے هیں . بی . سی . جی . كا أصول سيدها سادا يه هے كه جس طرح كے زهر يا جس طرح کے کیزوں سے کوئی بیماری پیدا ہوتی ہے۔ اُسی طرح کے زعر یا أسى طرح کے کیورں کو اگر هم خون باعر سے لیکر جسم کے اندر داحل کردیں تو جسم پھر آس بیماری کے حملے سے بچ جاتا ہے ، کہا یہ جاتا ہے که اُس زهر یا اُن کیروں کے جسم میں داخل ہوتے ہی جسم آن کے مقابلے کی تیاری كرتا هي تهيك أسي طرح جس طرح هر معمولي بیماری میں یعی جسم خود بخود بیماری کے مقابلے کی کوشھی كرنا هے ليكن تبين كي صورت ميں اِس أصول كو لكانا بالكل غلط هے كيونكه تبديق هوجائے ير جسم كے اندر كوئى أيسى نئی چیز یا نئی طرح کے کیڑے خود بخود بیدا نہیں ہوتے جو بیماری کا مقایله کویں . اِس کے جواب میں بی . سی . جی . کے حاسی همیں باتے هیں که بی . سی . جی . کا ٹیکه لکانے سے لُبُه كي جنه جو بيد أتى في يا بخار أجانا في أس سے يه يتا چلنا ہے که جسم أندر سے بيماري كا مقابله كرنے كي تياري كررها ه . يه غلط دليل ديه كر وه جاهدًا هي كه هم أن سب خطرون کو اُپنے سر پر لے لیں جو اِس ٹیکے سے همیشہ کے لئے پیدا هو جاتے میں اور وہ بھی صرف دو برس تک بجے رہام کی تہوتھی

اب ایک مایل آنکری کی رد جاتی کے که کاتیں کے تابی کو تابیں کے تابی کو تابیں کو تابیں دولے کے میں اس کے انکورے سے ادماک سے

म विक वही सामून होता है कि बीठ बीठ कीठ के शामयों

में किर कहता हूँ कि बीठ सीठ जीठ खनरनाक नीम कि। मी है. में डांक्टर नहीं हूँ. लेकिन में केवल वर और शक ही बात नहीं कर रहा हूँ. में जो कुछ कह रहा हूँ वह सभ्य निया के बहुत से बढ़े बढ़े थीर मशहूर डांक्टरों की साफ ग़िफ राय के आधार पर कह रहा हूँ. जो हिन्दुस्तानी डांक्टर परकार की हैस्थ मिनिस्ट्री ने, बीठ सीठ जीठ के टीके लगाने और उसकी तारीफें करने के लिये, रख रक्खे हैं उनमें बढ़े से हि डांक्टर भी उतने बढ़े और मशहूर डांक्टर नहीं हैं जितने हुनिया के वह डांक्टर जिनके तजरबों और जिनकी राय के प्राधार पर में इस नतीजे पर पहुंचा हूँ कि तपेदिक के जन्दा की हों का टीका इस तरह सब बच्चों के लगाना जित है और इसे बन्द कर देना वाहिये.

हा कितना असर है और उनके कितने वसीते हैं.

वदिक्तरमती से सरकार की चलाई हुई किसी भी बात हा जो लोग विरोध करते हैं उन्हें हमारे आजकल के प्रखबार भी प्यादा जगह देने या उनकी बात जनता तक हुंचाने के लिये बहुत अधिक तैयार नहीं होते चाहे उनकी ति कितनी भी सच्ची क्यों न हो और जनता के लिये केतनी भी जरूरी और मुकीद क्यों न हो. मेरी रारण कोई ति जाजी रारण नहीं है. अखबार जब कभी कृपा करके मेरी स विषय की तकरीरें या मेरे लिखे हुए बयान छाप देते ति भी जितने डाक्टरों के हवाले मैं देता हूँ उन सब को वह प्रवने अखबार में जगह नहीं दे पाते. इसीलिये मुके यह शिटा सा लेख निकालना पड़ा. इसमें मैं कुछ बड़े बड़े तकरों की राय दे रहा हूँ. अपनी बात मैंने कम से कम हि है.

[स टीके से तपेदिक होकर फेफड़े गल सकते हैं

प्रोफ्तेसर हैफ बीठ सीठ जीठ के टीके के एक बहुत बड़े तिन हैं है हैं के "लेन्सैट" (Lancet) अखबार में तिन सीठ जीठ के पक्ष में प्रोफ्तेसर हैफ का एक लेख निकला. मार्च सन् 1955 ईठ के "लेन्सैट" में प्रोफ्तेसर हैफ के वाब में डाक्टर आरठ सीठ वैद्यार का एक खत शाया आ. इस खत में डाक्टर बैद्यार ने दो बातों पर खोर दिया पहली यह कि मार्च सन् 1955 तक पण्जीस साल से ऊपर विज्ञा के बाद भी "कोई आंकड़े इस बात के सबूत में ही मिलते कि बीठ सीठ जीठ के टीके के लगने से आदमी के अन्दर तपेदिक की बीमारी का मुकाबला करने की शिक इस कि जाती है." उन्होंने इस खत में यह भी लिखा है कि इस कि से कोई फायदा होता है इस पर अभी बहुत से बड़े बड़े हाक्टरों को शक है. दूसरी बात उन्होंने इस खत में यह दसाई है कि बीठ सीठ जीठ के टीके लगने से इस खत में यह दसाई है कि बीठ सीठ जीठ के टीके लगने से इस जगह

آدیک یہی معلوم هوتا ف که بی . سی . هی، کر هامیوں کا کتنا اثر ف اور اُن کے کتاب رصلے هیں .

میں پور کہا ھوں کہ ہی۔ ہی۔ خطرفاک ٹیم حکیسی ہے۔ میں قائد نہیں ھوں۔ لیکن میں کیول تو اور شک کی بات نہیں کو رہا ھوں ، میں جو کچھ کے رہا ھوں وہ سبھتہ دنیا کے بہت سے برحہ برحہ اور مشہور تاکٹررں کی صاف صاف رائے کے آدھار پر کے رہا ھوں ، جو ھندستانی قاکٹر سرکار کی ھیلتھ منسٹری نے کہ رہا ھوں ، جی ، کے ٹیکے اگانے اور اُس کی تعریفیں کرنے کے لیک رکھے ھیں اُن میں برحہ سے برحہ قائد بھی اُنغ برحہ اُور میں اِن میں برحہ سے برحہ قائد جی کے تجربوں اور جی کی رائے کے آدھار پر میں اِس تینچے پر پہونچا ھوں کہ جی دی رائے کے آدھار پر میں اِس تینچے پر پہونچا ھوں کہ تہادی کی رائے کے آدھار پر میں اِس طرح سب بحوں کے لگانا فیادہ اور اِسے بند کردینا چاھئے ،

بدقسمتی سے سرکار کی چائی ہوئی کسی بھی بات کا جو لوگ ورودھ کرتے ھیں اُنھیں ھمارے آجکل کے اخبار بھی زیادہ جگه دینے یا اُن کی بات جنتا تک پہرنچانے کے لئے بہت اُدھک تھار نہیں ہوتے چاھے اُن کی بات کتنی بھی سچی سچی کھیں نہ ہو اور جنتا کے لئے کتنی بھی ضروری اور مفید کیوں نہ ھو ، مہری غرض کرئی راج کلجی غرض نہیں ھے ، اخبار جب کبھی کرپا کرکے میری اِس وشے کی نقریریں یا مھرے لکھے ہوئے بیاں چہاپ دیتے ھیں تب بھی جتنے ڈاکٹروں کے حوالے میں دیتا ھوں اُن سب کو وہ اپنے اخبار میں جگه نہیں دے باتے ، اِس لئے مجھے یہ چھرٹا سا لیکھ نکالنا پڑا ، اِس میں باتے ، اِس کی ہے ، میں کچھ بڑے ہڑے ڈاکٹروں کی رائے دے رہا ھوں ، اپنی بات میں نے کہ سے کم کہی ھے ،

اِس ٹیکے سے تپدق ہوکر پھیھڑے گلسکتے میں

پرونیسر هیف ہی . سی . جی . کے ٹیکے کے ایک بہت ہتے حامی تھے . انگلیت کے "لینسٹ" (Lancet) اخبار میں ہیں ہی . می . کے پکش میں پرونیسر هیف کا ایک لیک نکل . 5 مارچ سن 1955 کے "لینسٹ" میں پرونیسر هیف کے جواب میں تاکٹر آر . سی وبسٹر کا ایک خط شائع ہوا . اس خط میں تاکٹر آر . سی وبسٹر کا ایک خط شائع ہوا . کہ مارچ سن تاکٹر وبسٹر نے در باتوں پر زور دیا ہے . پہلی یہ که مارچ سن 1955 تک پنچیس سال سے آرپر کے تجربیں کے مارچ کی تبد بھی "کوئی آنکڑے اس بات کے ٹبوت میں نہیں مائے کہ بی . سی . جی . کے ٹیکے کے لگنے سے آدمی کے اندر آنہوں نے اس خط میں یہ بہت سے کوئی فائدہ ہوتا ہے اس پر آبھی بہت سے بڑے ہزے تأنٹروں کو شک فائدہ ہوتا ہے اس پر آبھی بہت سے بڑے ہزے تأنٹروں کو شک فائدہ ہوتا ہے اس پر آبھی بہت سے بڑے بڑے کا لگنے سے کوئی فائدہ میں یہ دیائی ہے . دوسری بات آنہوں نے اِس خط میں یہ دیائی ہے . دوسری بات آنہوں نے اِس خط میں یہ دیائی ہے . دوسری بات آنہوں نے اِس خط میں یہ دیائی

BAR WILLIAM

ner .

की साल जो फफद आती है उसकी वाबत बहुत से बड़े बड़े डाक्टरों की यह साफ़ राय है कि वह फफदना हरगिज यह साबित नहीं करता कि जिस के टीका लगा है वह तपेदिक से अब बचा ही रहेगा.

डाक्टर वैब्सटर ने इस खत में लिखा है कि कि प्रोकैसर हैफ ने भी अपने बयान में इस बात को माना है कि आंकड़ों से इस बात का सबूत नहीं मिलता कि बी० सी० जी० के टीके से आदमी में बीमारी का मुकाबला करने की शक्ति बद जाती है. टीका लगने से खाल का फफद आना हरगिज यह साबित नहीं करता कि आदमी में बीमारी का मुकाबला करने की शक्ति बढ़ गई है. डाक्टर वैब्सटर ने कई बीमारियों का विक किया है जिन में इसी तरह के टीके लगाने और खाल के फफद आने से आदमी के अन्दर बीमारी का मुकाबला करने की शक्ति बढ़ने का कोई सम्बन्ध नहीं होता और कोई भी यह नहीं मानता कि उन बीमारियों के टीके से नीमारी का मुक्ताबला करने की शक्ति किसी में बदती है. डाक्टर वैब्सटर ने लिखा है कि :- "क्या सचमुच हमारे लिये यह इन्साफ की बात है कि हम बच्चों के मां बाप से यह कहें कि वह अपने बच्चों के इस तरह के टीके लगने दें जिनमें कुछ सूरतों में टीके की जगह फफद आवे और थाड़ी बहुत तकलीफ हो जावे और साथ ही थोड़ा या बहुत इस बात का खतरा भी हो कि जिसके टीका लगाया गया है उसे सचमुच वही बीमारी हो जावे, और यह उस सूरत में जब कि टीके के अच्छे नतीजों का हमें कोई पक्का इस्म नहीं है ?"

उन्होंने यह भी लिखा है कि :— 'हमें याद है कि स्कार्लेट फीवर (एक तरह का बुखार) के इसी तरह के टीके लगाने का बीस साल हुए काफी ख़ब्त चला था. अब मैं समभता हूँ बह टीका बिलकुल ग़लत साबित हो चुका और छोड़ दिया गया. हमें यह भी याद है कि कूकर खांसी के लिये भी इसी तरह के टीके लगाने में लोगों ने किसी समय बहुत जोश दिखाया था. पर अब सब मान गये कि वह चीज भी बिलकुल बेकार थी."

बह लिखते 'हैं कि:—"यह बात सब मानते हैं कि बहुत से बड़े बड़े होशियार डाक्टर बीठ सीठ जीठ के बारे में अब शक करने लगे हैं और हाल में इन शक करने वालों की आवाज बढ़ती जा रही है. इसका किसी के पास कोई जबाब नहीं है. डंडी शहर के फेफड़ों की बीमारी के सब से बड़े डाक्टर मेंकिंटाश ने लिखा है कि सन् 1947 से लेकर सन् 1951 सक उनके शहर में तपेदिक से मौतें बहुत घट गई. पर वहां इस असें में बीठ सीठ जीठ का टीका नहीं लगाया गया था. दूसरे ही अहतियात के तरीके काम में लावे गये थे."

19 मार्च सन् 195' के "लेन्सेट" में एक और मराहर

ی کیال جو پیود آئی ہے آس کی بایت بہت ہے ہوے ہوے تاکروں کی یہ مانہ رائے ہے کہ وہ پیپودنا ہرگز یہ تابت نہیں کرناے که جس کے ٹیکہ لگا ہے وہ تہدی سے آب بچا ہی رہا۔

- No. 14

دَائِر وبسائر لے اِس خما میں لنها کے درونیسر هیف لے يبي اپنے بيان ميں اِس بات كو مانا هے كه أنعوس سے اِس ہات کا ثبوت نہیں ملتا که بی . سی . جی . کے ٹیکے سے آدمی میں بیماری کا مقابلہ کرنے کی شکتی بود جاتی ہے . ٹیکہ لکنے سے کیال کا پہید آنا هرگز یه کابت نہیں کرتا که آدمی میں ہیمای کا مقابله کرنے کی شکتی بڑھ گئی ہے . ڈاکٹر ریسٹر نے ون بیماریوں کا ذکر کیا ہے جن میں اِسی طرح کے ٹیکے لگانے اور کال کے پہلید آئے سے آدمی کے اندر بیماری کا مقابلہ کرنے کی شكتى بومنى كا كوكى سمينده نهيس هوتا أور كوثى بهى يه نهيس مانتا کہ اُن بیماریس کے ٹیکے سے بیماری کا مقابلہ کرنے کی شکتی کسی میں بوھتی ہے . ڈائٹر ویسٹر نے لکھا ہے کہ:۔۔۔"کیا سے میے مدارے لئے یہ انصاف کی بات ہے که هم بچوں کے ماں باب سے یہ کہیں کہ وہ اپنے بحوں کے اِس طرح کے تیکے اکلے دیں جن میں کچھ صورتوں میں تیکے کی جگه پھیھد آوے اور نہروں بہت تکلیف هوجاوے اور ساتھ هی تهورا یا بہت اِس بات اُ لا نہری ہوں کا خطرہ بھی هو که جس کے تیکہ لگایا گیا هے اُسے سے سے وهی بيماري عوجاوي اور يه أس صورت ميں جب كه تيكم كم أجه نتيجين كا همين كوثى يكا علم نهين هے 🖁 😘

أنهوں نے یہ بھی لکھا ہے کہ :۔۔۔"همیں یاد ہے کہ اِسکارایت نهر (ایک طرح کا بخار) کے اِسی طرح کے تیکے لگانے کا بیس سال عولے کا محبط چلا تھا ۔ آب میں سمجھتا عوں وہ تیک بالکل غلط ثابت هوچکا اور چهرت دیا گیا ، همیں یہ بھی یاد ہے کہ دوکر کھانسی کے لئے بھی اِسی طرح کے تیک الگانے میں لوگوں نے کسی سمے بہت جوش دنھایا تھا، پر آب سب سان گئے یہ وہ جاز بھی بالکل بیکار تھی ۔''

وہ لئہتے ھیں کہ :۔۔۔ الت سب مانتے ھیں کہ بہت سے بڑے بہت ھوشیار ڈائٹر ہی ، سی ، جی ، کے بارے میں اب بڑے بہت ہوشیار ڈائٹر ہی ، سی ، جی ، کے بارے میں آب شک کرنے والوں کی آباز بڑھتی جارھی ھے ، اِس کا کسی کے پاس کوئی جواب فیس ہے . ڈائٹر میننٹاھی نے لئیا ھے کہ سی 1947 سے لیکر سی 1951 سے لیکر سی 1951 سے لیکر سی 1951 ہے کہ سی مہت گیت گئیں ، پر وہاں اِس عرصے میں میں می ۔ سی ، جی ، کا قیمہ نہیں لگیا ہا ، دوسرے ھی آمتیاط کے طریقے گئی میں لاے گئی تھے ، "

19 مارچ سن 1955 کے ''لہاست '' میں آیک اور مشہور

डाक्टर डाक्टर औ. ई. आक्रकटन ने लिखा है कि "वाकर वैज्यटर की वह राय निताइस सुवस्त है कि साल के फरुद जाने से वह सावित नहीं होता कि आदुन्धि आइन्दा वपेदिक से बना रहेगा." बह सिसते हैं कि "बी० बी० जी० के टीके के खिलाफ डाक्टर बैक्सटर की यह दलील बड़ी पक्की और ऐसी दलील है जिसे ओई काट नहीं सकता." बन्होंने लिखा है कि-"एक सीसरे डाक्टर, डाक्टर नाइन्की (Brownke) ने यह दिखलाया है कि बहुत लोगों के एक तरफ टीके की जगह की साल खूब फफ़द भी जाती है और साथ ही दूसरी सरफ इसके बाद केफ़द गलकर तपेदिक से सतम भी हो जाते हैं. साल के फफ़द बाने से जब बीमारी से बबत नहीं होती तो वह बहुत सुरी चीज है."

A STATE OF STATE OF

डाक्टर लाक्सटन ने यह भी लिखा है कि खुद बोकैसर हैफ ने यह साफ लिखा है कि-- "बी० सी॰ जी॰ के टीके से सपेदिक के विसक्तत नय सिरे से पैदा होने या न होने पर कुछ असर पड़ सकता है, लेकिन अगर बीमारी कुछ भी छिपी दवी अन्दर मौजूद है तो उस पर कोई असर नहीं पड़ सकता." अब यह कह सकना बहुत मुशकित है कि बी० सी० जी० से नके की खम्मीद ख्यादा है या जुक्तसान की और आदमी के वर्षे रहने की उम्मीद ज्यादा है या बीमार होकर मरने की, वह लिखते हैं कि प्रोफ़ैसर हैफ़ ने खुद इस बात को माना है कि-"बीo सीo जीo के टीके से शायब सब से नहा तुक्रसान यह होता है कि बहुत से देशों में मामूली जनता को यह राज़त बिश्वास हो जाता है कि वह अब तपेदिक से वने रहेंगे. हमें अपने को इस धोके में नहीं रखना चाहिये कि टीके से खाल के फफद आने यानी टीके का जिल्द पर एक खास असर होने से और तपेदिक से वर्षे रहने से कुछ भी सम्बन्ध है."

16 मई सन् 1952 के "नेन्सेट" में डाक्टर कैरोल ई. पामर ऐम. डी. (Dr. Caroll E. Palmer M. D.) ने, जो कापेनहैगन टी. बी. रिसर्च टीम के हैं हैं हैं, लिखा है कि :—"लेकिन बाजकल तपेदिक के बड़े से बड़े माहिरों में भी इस बात पर बहुत मतमेद है कि तपेदिक के टीके के खाल पर एक खास असर होने या न होने का असली मतलब क्या होता है. हमारा झान इस बारे में इतना अधूरा है कि हमारे इक्तर ने खास तौर पर इस बात का पता लगाने की कोशिश की है कि बी० सी० जी० के टीके का खाल पर जो अखर होता है इसका क्या बातलब है. इसमें कोई शक नहीं कि यह बात अब जाहिर हो चुकी है कि बी० सी० जी० के टीके की बाबत जाम बीर पर इस जो इक जानते थे और जो इन्ह इसने मान रक्का था वह सब बेजुनियाद आ. जो बातें इस ठीक कमभते वे जब वही ध्रवत निक्सी तो इस टीके के बन वहे बात अब वहे वहे निजा की बावत का सी

الکار جی ۔ اِس ، السان نے ایما ہے کا اسان نیموں اُنے سے یہ کابت نیموں اُنے سے یہ کابت نیموں اُنے سے یہ کابت نیموں مینا کہ آدمی آئندہ نہادی سے بحیا رہے ۔ " وہ ایمی میں کہ الیمی . سی ، جی ، کے ٹیکے کے خطف قاکر وبسٹر کی یہ داول اوری یکی ارر ایسی دلیل ہے جسے کپئی کاف قبیس سکتا ۔ " انہوں نے ایما ہے کہ ۔"ایک نیسرے قادر ' قاکلو براآئکی انہوں نے ایما ہے کہ بہت سے اوگوں کے ایک طرف ٹیکے کی جاتم کی کہال خوب پہیدد بھی جاتی ہے اور ساتھ می دوسوی طرف اُس کے بعد پھربورے گل کر نہادی سے ختم می دوسوی طرف اُس کے بعد پھربورے گل کر نہادی سے ختم بھی ہودی ہے ہوت سے جب بیماری سے بھی ہودی نے سے جب بیماری سے بھی ہودی نے سے جب بیماری سے بھی ہودی نے سے جب بیماری سے بھی ہودی آئے سے جب بیماری سے بھی ہودی تو یہ بہت ہور چیز ہے ۔"

قائلار الاسلان نے یہ بھی اکھا ہے کہ خود پرونیسر ھیف نے بہ صاف اکھا ہے کہ ۔ "ہی . جی . کے ٹیکے سے تہدی نے مائل نئے سرے سے پیدا ہونے یا نہ ہوئے پر کچھ اثر پرسکتا ہے، لیکن اگر بیماری کچھ بھی چھپی دسی اندر موجود ہے تو اُس پر لوئی اثر نہیں پرسکتا ۔" اب یہ کہ سکنا بہت مشکل ہے کہ اور نہیں برسکتا ۔" اب یہ کہ سکنا بہت مشکل ہے کہ اُمی وارد کی ۔ وہ اُمی کے بچے رہنے کی اُمید زیادہ ہے یا بیمار ہوکر موئے کی ۔ وہ اُمی کے بچے رہنے کی اُمید زیادہ ہے یا بیمار ہوکر موئے کی ۔ وہ کھتے ہیں کہ پرونیسر ھیف نے خود اِس بات کو اُقافی ہے۔ "ہی ، سی ، جی ، کے ٹیکے سے شاید سب سے بڑا نقصان ہے ہوتا ہے کہ بہت سے دیشوں میں معمولی چنتا کو یہ غلط ہمواسی ہوجاتا ہے کہ وہ اُب تہدی سے بچے رہینگے . ہمیں ہوجاتا ہے کہ وہ اُب تہدی سے بچے رہینگے . ہمیں بھول کے اُس دھوکے میں نہیں رئینا چاہئے کہ ٹیکے سے کھال کے بھود آنے یعنی ٹیکے کا جاد پر ایک خاص اثر ہوئے سے اور بہدی سے بچھ بھی سمبندھ ہے ۔"

इस क्या कइ सकते हैं जिनके ठीक ठीक मालूम करने का और साबित करने का अभी हमें समय भी नहीं मिला."

इसका सतलब यह है कि तपेदिक और उसके टीके की साइंसी कोज में लगी हुई दुनिया की एक बहुत बड़ी बाक्टरी संस्था भी अभी तक इस टीके की बाबत कोई अन्छी बात नहीं कह सकती और उसके बुरे नतीजों से डरती है.

आदमी के जिस्म में ज़हरीले कीड़ों को दाख़िल कर

देना बहुत बुरा है

लन्दन यूनिवर्सिटी के डाक्टरी के प्रोफ़ैसर प्रोफेसर जेम्स मैकिन्टाश ने रायल सोसाइटी आफ मैडिसिन के सामने बयान देते हुए कहा :- "साइन्सी निगाह से इस बात में किसी तरह का शक नहीं किया जा सकता कि चाहे हम किसी भी पहलू से देखें किसी आदमी के जिस्म में इस तरह के जहरीले की डों को दाखिल कर देना, जो बदन के अन्दर जाकर बच्चे दे सकते हैं, और बद सकते हैं, बहुत ही बुरी बात है. जब यह कीड़े बढ़ जाते हैं तो हम किसी तरह यह अन्दाजा महीं लगा सकते कि रोगी के अन्दर जो की दे दाखिल किये गये थे वह किस मात्रा में थे. नतीजे पर हमारा कोई काबू नहीं रहता और नर्ताजे इतने बुरे पैदा हो सकते हैं कि जिनका हमें कोई अन्दाचा नहीं हो सकता."

प्रोफ़ैसर बान पिरके (Prof. Von Pirquet) ने, जो अपने समय के बहुत बढ़े माहिर डाक्टर माने जाते थे, सन् 1930 में कहा था :- "इस तरह के टीके से तपेदिक के कीडे बदन के अन्दर अपनी बश्तियां बना सकते हैं जिसके नतीजों का हमें पहले से कोई अन्दाजा नहीं हो सकता. इस तरह की खतरनाक कार्रवाई को न पसन्द किया जा सकता है और न बरदाश्त किया जा सकता है."

अमरीका के डाक्टर जे. डव्लू. रेने (J. W. Rainey) ने लिखा है:- "इम पहले यह समभते थे कि बी० सी० जी० का टीका बीमारी का जवाब हो सकता है, लेकिन 'टाइम्स' असवार के मैडिकल सेक्शन में बड़े से बड़े अमरीकी डाक्टरों ने यह राय जाहिर की है कि बी० सी० जी० से जो सतरे पैदा हो सकते हैं उनका न अभी तक हम पूरा अन्दाजा लगा सकते हैं और न उन्हें रोक सकते हैं."

कपर की थोड़ी सी रायें उन लोगों के जवाब के लिये काकी हैं जो भारत की हैल्य मिनिस्ट्री की तरफ से माहिर होने का दावा करते हैं और हैल्थ मिनिस्ट्री को सलाह देते

अमरीका के बड़े से बड़े डाक्टरों की राय बी० सी० बी॰ के बिवाफ

श्रमरीका में बी० सी० औ० के बड़े से बड़े हामियों में डाक्टर सावर्स (Dr. Myers) का नाम आता था. लम्बे ہم کیا کو سکتے ہوئی جاتھ کے قبیک ٹینک معلوم کرنے کا لوہ نابت کرنے کا آبھی تعلیق سمید بھی ٹینل مق گا

اِس کا صاف مطاب یہ ہے کہ اپندی اور اُس کے لیکے ی سائنسی کھرنے منفق اکی ہوئی دنیا کی آیک بہت ہوی قالمری سنستھا بھی ابھی تک اِس ٹیکے کی بابت کرئی اچھی بات نہیں کو سکتی اور اُس کے برے نتیجوں سے درتی ہے .

آدمی کے جسم میں وجریلے کیورں کو داخل کردینا بہت برا ہے

للدن یونیورسٹی کے ڈاکٹری کے پرونیسر جیس میکنٹائی نے رائل سوسائٹی آف میڈیسن کے ساملے بیان دیتے ہوئے کہا :_''سائلسي نگاه سے اِس بات میں کسی طرح کا شک نہیں نیا جاسکتا کہ چاہے هم کسی بھی پہلو سے دیکھیں کسی آدمی کے جسم میں اِس طارح کے زھریلے کھڑوں کو داخل کردینا جو بدی کے اندر جاکر بحصے دے سکتے میں اور بڑھ سکتے میں' بہت می بری بات ھے . حب یہ کیڑے بڑھ جاتے میں تو هم کسی طرح یہ انداز، نہیں لگا سکتے که روگی کے اندر جو کوڑے داخل کئے گئے تھے وہ کس ماترا میں تھے ۔ تعیدے پر پھر همارا کوئی قابو نہیں رہتا اور نتیجے ارنے ہرے پیدا مسکتے میں کہ جن کا همين كوئى الدازة لهين هوسمناً "

پرونیسر وان پر کے (Prof. Von Pirquet) نے' جو اپنے سے کے بہت ہڑے ماہر واکار مانے جاتے تھ سن 1930 میں کہا تھا :۔۔ اس طرح کے ٹیکے سے تہدی کے کیڑے ہدن کے اندر اپنی بستیاں بناسکتے هیں جس کے نتیجوں کا همیں بہلے سے کوئی اندازہ نہیں موسکتا ، اِس طرح کی خطرناک كررائيكو ثم يسند كيا جاسكتا هي أور ثم يرداشت كيا جاسكتا هي." (J. W. Rainey) آمريك كي ذاكتر جي تبلو . ريان (ال نے انتہا ہے :۔ "اہم پہلے یہ سنجہتے تھے کہ ہی . سی ، جی ، کا ئينه بيماري كا جواب هوسكتا هي ليكن قايمس أخبار كاميديكل سیکشن میں بڑے سے بڑے امریکی ڈاکٹروں نے یہ رائے طاهر کی اے کہ بی ، سی ، جی ، سے جو خطرے پیدا هرسکتے هیں اُن کا نه ابهی تک هم پورا اندازه للا سکته هیس لور نه آنهیس روک الله مين وا

آرور کی تھوروں سی رافیں گان لوگیں کے جواب کے لئے کافی ھیں جو بھارت کی هیلتم منسلوی کی طرف سے ماهر هوئے کا دعول کرتے میں اور هیلته منستری کو صلاح دیتے هیں .

امریک کے بوے سے بوے دائلوں کی اُلے ہی، سی، جی، کے خاف

امریک میں ہی . سی . جی . کے بڑے سے بڑے عامیوں مين دائلر مالرسي (Dr. Myers) كا قلم أنا تها . لمه रजरवे के बाद कार्यकर मायर्थ सुव इस बारे में इन नवीजों पर पहुंचे हैं:---

"(1) बीठ सीठ जीठ के टीके से बादमी तपेदिक से

- "(2) जिन जानवरों के बीठ सीठ जीठ लगाया गया हन्हें यह टीका तपेदिक से नहीं बचा सका. अमरीका के जानवरों के डाक्टरों ने काफी तजरने करने के बॉद यह मालूस किया है कि मनेरियों में तपेदिक को रोकने के काम में बीठ सीठ जीठ का टीका विजक्कत नेअसर रहा.
- "(3) पच्चीस साल से ऊपर हमें लोगों के बी० सी० जी० का टीका लगाते हो गये. इस असें में दुनिया भर के अन्दर सत्तर लाख से ऊपर लोगों के टीका लग चुका है. अगर बी० सी० जी० का टीका सचमुच बड़ा कारगर होता तो इसके काफी सबूत अब तक हमारे सामने आ गये होते. लेकिन जिन क्रोमों में यह टीका बहुत ज्यादा इस्तेमाल किया गया है उनमें न तपेदिक की बीमारी पर इसके अच्छे असर का सबूत मिलता है और न तपेदिक से मौतों पर इसका काई अच्छा असर हमें देखने का मिलता है. इसके जिलाफ दुनिया के जिन हिस्सों में बी० सी० जी० अभी तक नहीं चला उनमें तपेदिक से बीमार भी कम पड़े हैं और मरे भी कम हैं.
- "(4) यह बात साबित नहीं हुई है कि बी० सी० जी० से तुक्तसान नहीं होता. कोई यह साबित नहीं कर सका कि जो कीड़े आदमी के जिस्म में दाखिल कर दिये जाते हैं वह बरसों बल्कि द्सियों बरस जिन्दा नहीं रहते और धीरे धीरे खतरनाक नहीं हो जाते.
- "(5) इस टीके के कारामद होने की बाबत जो नतीजे पहले निकाले गये थे वह रालत और बेमेल बातों से निकाले गये थे.
- "(6) जिन्हें एक मर्तब। तपेदिक हो चुका होता है उनकी बाबत भी यह भरोसे से नहीं कहा जा सकता कि उन्हें दोबारा यह बीमारी नहीं होगी.
- "(7) अगर यह टीके बड़े पैमाने पर लगाये जाते रहे तो आजकत जो हम लोग तपेदिक का आजमायशी टीका लगाते हैं वह भी फिर बिलकुल बेकार हो जायेगा और तपेदिक के रोक थाम के जो तरीक़े थोड़ बहुत कारगर भी हो सकते हैं उन्हें भी हम खा बैठेंगे. मिनसूटा नाम के खाके में दूर दूर तक तपेदिक की बीमारी खासकर बच्चों में रोक दी गई है और यह बिना बीठ सीठ जीठ के टाके के हुआ है. यह कामयाबी उन क्यादा अच्छे और कारगर तरीक़ों से हुई है जिन्हें हम इससे पहले काम में बाते रहे हैं.
- "(8) अगर इस बी० सी० जी० के टीके पर खोर देवे रहे तो इस बात का डर है कि लोगों को यह अलब सरोसा हो जायगा कि बेचक के टीके की तरह बी० सी० जी० का

1

نجریے کے بعد داکار مائرس خود اِس بارے تبقی اِن اُلتیمیں بر پہرنچے میں: ---

- "(1) می . سی . جی . کے لیکے سے آدمی تبادق سے مجا رہا ہے اِس بات پر بھروسہ نہیں کیا جاسکتا .
- 2,33 جن جانبررں کے بی . سی ، جی ، تکایا گیا آئیمن کے ٹیکہ تپدن سے نہیں بچا سکا ، آمریکہ کے جانبروں کے اگروں نے کائروں نے کائی تعوریہ کرنے کے بعد یہ معلوم کیا ہے کہ موبیعیوں بیں تپدن کو روکنے کے کام میں بی ، سی ، جی ، کا ٹیکہ الکل ہے آثر رہا ،
- (3) پچھسسال سے اُوپر ھدیں لوگیں کے ہی۔ سی، جی۔
 ا ٹیکہ اگاتے ھوئے ھوگئے ۔ اِس عرصہ میں دنیا بھر کے اُندر سٹر
 کو سے اُوپر لوگوں کے ٹیکہ لگ چکا ہے ۔ اگر ہی ۔ سی ۔ جی ۔
 ا ٹیکہ سے می بڑا کارگر ھوتا تو اِس کے کانی ثبوت اُب تک
 امارے سامنے آگئے ھوتے ۔ لیکن جن قومیں میں یہ ٹیکہ بہت
 امارے سامنے آگئے ھوتے ۔ لیکن جن قومیں میں یہ ٹیکہ بہت
 یادہ استعمال کیا گیا ہے اُن میں ٹھ تہدی کی بیماری پر
 س کے آچھے اثر کا ثبوت ملنا ہے اور تھ تہدی سے موتوں پر
 س کے آچھے اثر کا ثبوت ملنا ہے اور تھ تہدی سے موتوں پر
 س کا کوئی اُچھا اثر ھمیں دیکھنے کو ملنا ہے ۔ اِس کے خلاف
 س کا کوئی اُچھا اثر ھمیں دیکھنے کو ملنا ہے ۔ اِس کے خلاف
 ہ بیمار میں تہدی میں اور مرے بھی
 ہ اُن میں تہدی سے بیمار بھی کم پڑے ھیں اور مرے بھی
- (4) یہ بات نابت نہیں ھرئی ہے کہ ہی، سی، جی، سے قصان نہیں ھوتا ، کوئی یہ ثابت نہیں کرسکا کہ جو کیڑے دمی کے جسم میں داخل کردیئے جاتے ہیں وہ ہرسوں بلکہ سیوں ہرس زندہ نہیں رہتے اور دھیرے دھیرے خطرناک بیں ہوجاتے ،
- (أ) اِس لَيْكَ كَى كَارَأُسُ هُونَى كَى بَابِتَ جَو نَتَيْتَتِي بِهِلَا كُلُو تَهِ . كَالِهُ كُلُو تَهِ . كَالِهُ كُلُو تَهِ .
- "(6) جنهیں ایک مرتبه تهدی هوچکا هوتا هے أن کی ابت بھی یه بهروسے سے نہیں کہا جاسکتا که اُنہیں دوبارہ یه یماری نہیں هوگی .
- (7) اگر یہ تیکے بڑے پیمانے پر الائے جاتے رہے تو آجکل ہو مم لوگ تہدی کا آزمائشی تیکہ لگاتے میں وہ یعی پعر المکل پرکار مو جائے گا آور تہدی کے روک تھام کے جو طریقے بورے بہت کارگر بھی موسکتے میں انہیں بھی مم کھو بیقیس گے۔

 میسوتا نام کے علامے میں دور دور تک تہدی کی بیماری طاحر بنچوں میں روک دی گئی ہے آور یہ بنا ہی، سی، جی، خاصر بنچوں میں روک دی گئی ہے آور یہ بنا ہی، سی، جی، نے تیکے کے موا ہے ۔ یہ کامیابی آن زیادہ آچھے آور کارگر طریقوں کے موا ہے ۔ یہ کامیابی آن زیادہ آچھے آور کارگر طریقوں کے موا ہے ۔ یہ کامیابی گم میں لاتے رہے میں ۔
- (8) اگر ہم ہی ، سی ، جی ، کے ٹیکے پر زور دیتے رہے اور اس بات کا تر ہے کہ لوگیں کو یہ غلط بھروست ہیجائیگا ، جی ، نامی ، جی ، کا جیچک کے ٹیکے کی طرح ہی ، سی ، جی ، کا

Ma -d

दीका भी उन्हें बीभारी से बचा सकता है. अभी तक बी० सी० जीव के टीके पर इसके लिये बरा भी भरोसा नहीं किया जा सकता."

इक् डाक्टरों का यह भी ख्याल है कि बी० सी० जी० का टीका सिर्फ उन डाक्टरों, नर्सों और उन नौकरों को सगना चाहिये जो अस्पतालों में काम करते हैं, और तपेदिक के बीमारों की देख रेख और सेवा करते हैं.

डाक्टर जे. ए. मायर्स ने 18 अगस्त सन् 1951 के जरनल आफ दी अमरीकन मैं डिकल एसोसियेशन में बीठ सीठ जीठ के टीके पर बहुत जनरदस्त हमला किया है. उनकी हो दलीलें खास हैं. पहली यह कि इस टीके से जो एक छोटा सा शुरू का तपेदिक का हमला आदमी पर हो जाता है उससे हर्गाज यह नतीजा नहीं निकाला जा सकता कि उस आदमी को फिर यह बीमारी नहीं हो सकती या बहुत ज्यादा जोर के साथ नहीं हो सकती. दूसरे उनका कहना है कि इस टीके का एक यह नतीजा भी हांता है कि आदमी तपेदिक से बचने के दूसरे ज्यादा कारामद तरीकों की तरफ से बेगरवाह हो जाता है. उनका यह भी साफ साफ स्थाल है कि जिन बच्चों को काकी अच्छा खाना और शक्ति देने बाला खाना नहीं मिलता उन्हें बीठ सीठ जीठ के टीके'से ज्यादा नुक्रसान है। सकता है.

बी॰ सी॰ जी॰ के कीड़े आदमी की जान ले सकते हैं

हमारे देश में एक तरफ़ से सब बच्चों के बी० सी० जी० का टीका लगाने का जो काम जारी है उससे बीमारी के और फैलने का खतरा नीचे की बातों से मालुम होता है.

सन् 1955 की छपी इंगलेंड की ग्लैक्सो लैंबोरेट्रीज की एक किताब में लिखा है:—"जाहिर है कि टीका लगाने के लिये कीड़ों का जो वैकसीन तैयार किया जाता है उसमें इस बात का बहुत डर रहता है कि कीड़े छौर बढ़ जावें. खास कर बीठ सीठ जीठ के वैकसीन में खतरनाक किस्म के कीड़े बढ़ सकते हैं. इसे रोकने के लिये वैकसीन की तैयारी में बहुत बड़ी झहतियात की जरूरत है. यहां एक और मुश्कल झा पड़ती है और वह यह कि तपेदिक के कीड़े जिस तरह बीदे धीरे बढ़ते हैं, बाहे शीशों की नली के अन्दर और चाहे खाइमी वा जानवर के बदन के अन्दर, उससे वैकसीन को बचा हुआ मान सकने में झै इपसे से लेकर बारह इपसे तक लम जाते हैं, और वैकसीन का कायदा यह है कि वैकसीन के बन जाते हैं, और वैकसीन का कायदा यह है कि वैकसीन बैमार होते ही वो या तीन इपते के अन्दर काम में आ जाना बाहिये. बानी इस खहरे से बच सकने का पूरा यक्कीन हों ही नहीं बचता."

ایت ہی گنھاں ہمیلی تھ بچھ ساتھ ہے۔ لیبی تک ہی۔ سی ، بی کے ٹیٹر پر اِس کے شے ڈرا ہی بھررست نہیں کیا جاسکتا۔''

کیچہ قائلاروں کا یہ میں خیال ہے کہ ہی . سی . جی . کا تیک مرف أن قائلاروں موسوں اور أن توكروں كو لكنا چاهئے جو استالوں میں کلم كرتے، هيں اور تعيدی كے بهداروں كی ربح اور سهوا كرتے هيں .

قائلر ہے اللہ مائوس نے 18 اکست سن 1951 کے جنرل آف دی امریکن میڈیکل ایسوسٹیشن میں ہی سی جی جنرل آف دی امریکن میڈیکل ایسوسٹیشن میں ہی دو دلیلوں کے ٹیکے پر بہت زبردست حملہ کیا ہے ۔ ان کی دو دلیلوں شام دور کا تہدی کہ اِس ٹیکے سے جو ایک چھوٹا سا شروع کا تہدی کا حملہ آدمی پر ہو جاتا ہے اُس سے ہوگز یہ نہیں نکالا جاسکتا کہ اُس آدمی کو پھو یہ بھماری اُبھن ہرسکتی یا بہت زیادہ ورر کے ساتھ لبھی ہوسکتی . دوسرے اُن کا کہنا ہے کہ اِس ٹیکے کا ایک یہ لیتیجہ بھی ہونا ہے کہ آدمی تہدی سے بچیلے کے دوسرے زیادہ کارآمد طریقوں کی طرف سے نہیرراہ ہو جاتا ہے ۔ اُن کا یہ بھی صاف ماف خیال ہے کہ جن بچوں کو کانی اُچھا کھانا اور شکتی دینے والا کھانا نہیں مانا اُنہیں ہی ۔ سے سے سے زیادہ نقصان ہرسکتا ہے .

ہی . سی . جی . کے کیڑے آدمی کی جان لے سکتے ہیں

ھارے دید میں ایک طرف سے سب بھیں کے بي . سي ، جي . لا تيك الله كا جو كام جاري هـ أس سه بیماری کے اور پھیللے کا خطرہ نوجے کی باتوں سے معلوم هوتا ہے۔ سی 1955 کی چینی اِنتائیات کی گلیمسو لهبوریاریؤ کی البک کتاب میں انتها ہے: ۔۔ "طاهر هے که تیمه الله کے اللہ کورں کا جو ریکسین تیار کیا بجانا کے اُس میں اِس بات کا ببت در رهنا فی که کبرے اور بره جاریں ، خاصکر می سی جی کے ریکسین میں خطرناک قسم کے کیڑے بڑھ سکتے ھیں۔ اِسے روکنے کے للے ویکسین کی تیاری میں بہت بڑی احتیاط کی فرورت هے . یہاں ایک اور مشکل آپرتی مے وہ یہ که دبوق ك ليزد جس طرح دهيرد دهيرد برهيد هين چاھ شيش ئی للی کے الدر اور چاہے آلمی یا بجانور کے بدن کے الدر أس سے ويكسين كو بھيا هوا مان سكلے ميں چو هلاتے سے ليكو الرة منتے تک لک جاتے میں اور ویکسین کا قاعدہ یہ فے که (اکسین تیار موتے عی در یا تین هنتے کے الدر کام میں آلمانا جلعتي يعلى إس خطرت ته بي سكل كا يوراً يقيني هو هي لهور سكلاً ١٤٠

[नाकी फिर]

[14.14]



Story Of My Life'-by M. K. Gandhi. 'The

ह्यापने बाले नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद: मके 208: क्रीमत एक रुपया आठ आना; जवान अंगरेजी.

महात्मा गान्धी की अंगरेजी आत्मकथा को भी भारतन कमारणा ने 170 सके में इस खूबी के साथ मुख्तसिर किया है कि दिलचरपी और जबान दोनों की खुबस्रती जरा भी नहीं घटी है, किताब के आखीर में डाक्टर सी० एन० जुल्ही ने 38 सके में किताब से ताल्लुक रखने वाले प्रामर के सबक हिये हैं. गांधीजी की आत्मकथा का यह छोटा एडीशन स्रास तौर पर विद्यार्थियों के लिये तैयार किया गया है, हाई कूल और इएटरमीजिएट दरजों के तालिबइल्मों के लिये यह किताब बड़े काम की, शिक्षाप्रद (सबक आमेज) और उनके ज्ञान की बढ़ाने वाली साबित होगी.

ब्रापने बाले उत्पर केः सके ·151; क्रीमत एक रूपया. गुजराती से श्रंगरेजी तर्जुमा करने वाले वालजी, गोविंदजी देसाई.

दक्खिन अकरीका से ही गान्धी जी ने समाजी जीवन की बुनियाद डालने के लिये आश्रम क्रायम करने श्रीर उसमें बहुत से खानदानों के एक साथ मिलकर रहने की परम्परा कायम की. अलग-अलग धर्म मानने वाले, अलग अलग जाति वाले, ऋलग अलग रंग वाले कैसे प्रेम, सदाचार और मजहबी जिन्दगी बिताते हुये सब एक साथ मिलकर रह सकते हैं यह आश्रम इसी भक्तसद से गान्धी जी ने क्रायम किये थे. दक्खिन अफरीक़ा में फिनिक्स आश्रम, श्रहमदा-बाद में पहले को चरब और बाद में साबरमती आश्रम. भौर उसके बाद वर्धा के पास सेवाप्राम आश्रम गान्धी जी के केन्द्र बने.

इन आश्रमों में रहने वाले आश्रमवासियों के लिये उन्हों ने जिन्द्गी के कुछ बुनियादी उसूल बनाये थे. वे थे सत्य पर भामह, प्रार्थना यानी इवादत, श्रहिंसा या प्रेम, ब्रह्मचर्य यानी नक्सकुशी, अस्तेय यानी अपने इक यानी जरूरत से ज्यादा किसी चीज को लेने को चोरी सममना बाहे वह पानी हो क्यों न हो, अमदान यानी जो मेहनत करे पसी को چهاپنے والے نوجیوں پبلشنگ هاؤس ٔ احمد آباد ؛ صفحے 208؛ قيمت ايك روييم أنَّه أنه؛ زبان انكريزي .

مهاتما کادرهی کی انگریزی آتم کتها کو شری بهارتن کماریها نے (170 مفحے میں اِس خوبی کے سانھ مختصر کیا ہے که دانچسپی اور زبان دونوں کی خوبصورتی ذرا بھی نہیں گیتی ہے . کتاب کے آخیر میں ڈاکٹر سی این زتشی لے 38 صنعے میں کتاب سے تعلق رکھنے والے گرامر کے سبق دئیے ہیں، کائدھی جی کی آتم کتھا کا یہ چھوٹا ایدیشن خاص طور پر ودیارتھوں کے لئے تیار کیا گیا ہے . بھائی اسکول اور انترمیجئیت درجوں کے طالب علموں کے لئے یہ کتاب ہوے کام کی' شکشاپرد (سبق آموز) ارر آن کے گھاں کو بچھالے والی نابت ھوگی .

Ashram Observances in Action-by M. K. Gandhi.

چهاینے والے اُوپر کے؛ صفحے 1:1؛ تهمت ایک روبیتہ. گجراتی سے انکریزی ترجمه کرنے والے وال جی گورند جی ديسائي .

دکہن انریقہ سے ھی گائدھی جی نے سماجی جیوں کی بنیاد ڈالنے کے اللہ آشرم فایم کرنے اور اُس میں بہت سے خاندائیں کے ایک ساتھ ملکر رہنے کی پرمھرا فایم کی . الگ الك دهوم ماثنه واله الك الك جاتي واله الك الك رنك والم کیسے پریم' سداچار اور مذھبی زندگی بتاتے ھوٹے سب ایک ساته ملکر را سکتے هيں يہ آشرم أسى مقصد سے كاندهي جي لے قاہم کئے تھے . دکھن انریقہ میں فنکس آشرم کا احمد آباد مھی پہلے کوچرب اور بعد میں ساہرمتی آشرم اور اُس کے بعد وردھا کے یاس سہواگرام آشرم کاندھی جی کے کہندر بنے .

اِن آشرم میں رہنے والے آشرم واسیوں کے لئے آنہوں لے زندگی کے کچھ بنیادی اُمول بنائے تھے، وے تھے سلیہ ير آگرة ورارتهنا يعني عبادت اهلسا يا پريم برهمچريه يعلى نفس كشي استييم يعنى أيني حق يعلى هرورت سے زیادہ کسی چیز کو لینے کو چوری سمجھنا چاھے وہ یائی ھی کیرں نہ ہو' شرمدان یعلی جو محنت کرے اُسی کو

पेंदी पाने का इक है, स्वदेशी, इरिजनों का उत्थान, खेती, गोपालन, मुनियादी तालीम जिसमें दस्तकारी के जरिये शिक्षा देने का तरीका ईजाद किया गया है और सत्यापह यानी सचाई के रास्ते की जान देकर भी न झोड़ना. इन उस्लों को अपनी जिन्दगी में गान्धी जी ने खुद उतारा था और दूसरों को भी वे इसी की तालीम देते थे. यह गान्धी जी की विम्बगी का फलसका है.

किताब के बाखीर में सत्यायह बाशम, गान्धी जी की इन इसुलों के बारे में तफसीर, और सेवामाम आश्रम के क्रायदों का भी वर्णन है.

गान्थी जी के उसूल और उनकी शख्सीयत को समफने के जिये किताब बढ़े काम की है.

'Gandhiji's First Struggl ein India'-by P. C. Ray-chaudhary.

जापने बाले ऊपर के; सके 167; मोल दो रुपया.

चम्पारन के सत्याग्रह के इतिहास पर लेखक की इस किवाब से बेहद रोशनी पढ़ती है. बैसे तो खुद महात्मा गांधी और डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद ने चम्पारन के सत्यामह पर विस्तार से लिखा है मगर इस किताब की खुबी यह है कि विद्वार सरकार के सहयोग से लेखक ने अस्त रिकार्डी की खान बीन करके गान्धी जी के हाथ के लिखे हुए अस्ली सतों के फोटो भी इसमें छापे हैं जो उन्होंने चन्पारन सत्याप्रह के सम्बन्ध में सरकारी अकसरों और दूसरे लोगों को लिखे. इस नुक्ते नजर से यह किताब प्रमाणित और बड़े काम की है.

छापने वाले वही नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, ब्रह्मदा-बाद; सके 67; मोल एक रुपया.

चन्द महीने पहले इस किताब के हिन्दी एडीशन की रिक्यू हमने 'नया हिन्द' के कालमों में की थी. यह उसी का अंग्रेजी एडीशन है. अंग्रेजी जानने वालों के लिये यह किताव न सिर्फ गोखले को जानने सममने बल्क खुद गान्धी जी कं व्यक्तित्व को सममाने के लिये भी बढ़ी उपयोगी साबित होगी. 'श्राहेंसक समाजवाद की श्रोर'-लेखक गांधी जी

छापने बाले नवजीवन प्रकाशन मन्दिरः सके 20 : क्रीमत वो रुपये.

अब जबकि हिन्दुस्तान ने समाजवादी ढाँचे को अपना मक्रसद बना लिया है देशवासियों को यह सममाना जाकरी हो गया है कि वे समाजवाद को तकसील से जाने और यह सममें कि समाजवाद की कौनसी रूप रेखा उनके लिये कायदे-मन्द होगी.

भारत पूरे 30 बरसों तक गांधी जी के बताये हुए रास्ते पर चला. उन्हीं के विचारों की छाया में उसने आजारी हासिल की. वे विचार उसकी रग-रग में पैवस्त हैं. इसलिये यह जरूरी है कि देशवासी समाजवाद के बारे में गान्धीजी के विचार जानें और सममें.

روثى بالله كا حق ها سرديهي؛ هريجلس كا أتهان؛ گیالی' بنهادی تعلقم جسمهن دستکاری کے زييم هكفا ديني كاطريقه أيجاد كيا كيا هم أور ستياكره يمنى کمچانی کے راستے کو جابی دے کر بھی نه چهرونا . اُن اُمرلیں کو اپنی زندگی میں کاندھی جی نے خود آثارا تھا اور دوسروں کو یہی وے اِسی کی تعلیم دیتے تھے . یه کاندھی جی کی زندگی

کتاب کے آخیر میں سٹیاگرہ آشرم' کاندھی جی کی ان امولوں کے بارے میں تفسیر' اور سیواگرام آشرم کے قاعدوں کا

اللہ می جی کے اُصول اور اُن کی شخصیت کو سمجھنے کے لئے کتاب ہوے کام کی ہے ،

جهاننے والے آویر کے؛ صفحے 167؛ مول دو رویعه . جمیارں کے ستیا گرہ کے اِتہاس پر لیکھک کی اس کتاب سے رحد روشنی ہوتی ہے ۔ ویسے تو خود مہاتما کاندھی اور قائقر راجیندر پرساد نے چمہاران کے ستیاگرہ پر وستار سے لکھا کے مر اِس کتاب کی خوبی یہ ہے که بہار سرکار کے سہیوگ سے لیمیک نے اصل ریکارڈوں کی چھان بین کر کے گلدھی جی کے ماتھ کے لکھے ہوئے اصلی خطوں کے فوٹو بھی اِسمیں چھاہے میں جو اُنھوں نے چمپارن ستیا گرہ کے سمبندھ میں سرکاری انسروں ارر درسرے لوگیں کو لکھے ، اِس نقطه نظار سے یه کتاب پرسانت اور ہڑے کام کی ہے .

'Gokhle: My Political Guru-by M. K. Gandhi.

جهاني وأله وهي نوجهرن ببلشنگ هاؤس الحمدآباد؛ منحم 67! مول ایک رویه،

جلد مہیاء بہلے اِس کتاب کے هندی ایڈیشن کی ریویو هم نے انباهند کے کالموں میں کی تھی ، یه اُسی کا انگریزی ایدیشن هے . افکریزی جانئے والوں کے لئے یہ کتاب نہ صوف گرئیلے کو جائنے سنجھنے بلکہ خود کاندھی جی کے ویکنٹو کو سنجینے کے لئے بھی بڑی آپیرگی ثابت ہو گی .

المنسك سباج وأن كي أورا-ليكهك كاندهي جي

چهاینه واله فوجهون پرکاهن ملد؛ منجه 204؛ تیمت

اب جب که هندستان نے سماج وادی دعانچے کو اپنا مقصد بنا لیا ہے دیمی واسپوں کو یہ سنجھنا فروری فو گیا ہے که وے سام واد کو تفسیل سے جانیں اور یہ سمجھیں که سمام واد کی کونسی روپ دیکھا اُن کے لئے فایدہ ملد ہوگی .

بھارت بورے 30 برسوں تک کاندھی جی کے بتائے ہوئے راستہ پر چلا ۔ اُنھیں کے وچاروں کی چھایا میں اُس نے آزادی حامل کی اور وجار آس کی رگ رگ میں پیوست هیں ا اس اله یه ضروری هے که دیش واسی سمایے وادد کے بایت میں النعى جي كر وچار جانيين اور سنجيين .

'55 mg

गाम्बी जी के न्यारह अस-सार्व, त्रेम या आहेंसा, त्रक्षावर्य, अपरिमद (दौलत पर निजी मालिकाना छोड़ना), श्रातेय (पकरत से प्यादा किसी चीच को तेने को चोरी सममना), शरीर-अम, अस्वाद, अमब, (निडरता), सर्वधर्म सममाव, अस्प्ररयता निवारण और स्वरेशी—गान्धी जी के समाजवादी डॉच के बुनियादी उस्ल थे. गान्धी जी अमली उस्लवादी थे. जो दूसरों को कहते थे उसे पहले खुद अपनी जिन्दगी में उतारते थे. इस तुक्रते नजर से यह किताब बड़े काम की है. हमारी सिकारिश है कि हर पढ़े लिखे हिन्दुस्तानी को यह किताब, समाजवाद का असली मोल ऑकने के लिये, जकर पढ़नी चाहिये.

—विश्वमभरनाथ पांडे

گلدهی جی کے گهارہ ورحب ستها پریم یا اهلسا اورسوریا اوریکرہ (دولت پر نجی مالکاتہ چھورتا) استها (فرورت سے زیادہ کسی چیز کو لینے کو چوری سنجھنا) شریر شرم اسوان امیئے (نترتا) سرو دھرم سبھاؤ اسپرشتائواری اور سودیشی سکاندھی جی کے سماجوادی تھانچے کے بنیادی اصول تھے ۔ کاندھی جی عملی اصول وادی تھے ۔ جو دوسروں کو کہتے تھا اُسے پہلے خود اپنی زندگی میں آثارتے تھے ۔ اِس نتطہ نظر سے یہ کتاب ہوے کام کی ہے ، ہماری سفارهی ہے کہ ہر پرھے لیے مفرور پرھنی چاہیا ہے واد کا اصلی مول آنکنے کے لئے فرور پرھنی چاہیئے ۔

--رشرمبهرناته بالذء

700 PAGES, 22 ILLUSTRATIONS 2 COLOURED MAPS

"CHINA TODAY"

PRICE

BY PANDIT SUNDARLAL

Rs. 780

A vivid narration of the glorious and wonderful achievements of New China...A picture of China which is both convincing and authentic...the best book that has come out so far on New China in the English language ...the most objective in approach and comprehensive in treatment.

—National Herald, Lucknow.

Highly informative...throws vivid light on conditions obtaining in that country...a book which deserves to be widely known —Leader, Allahabad.

Encolopsedic...characterized by soute observation of detail as well as by...instinctive grasp of the fundamental perspective...To read it is veritably like accompanying the Mission on its thrilling voyage of discovery in New China.

—Blitz, Bombay

A mine of information which gives a picture of China as nothing else dose...the best guide to New. China...Those who would like to understand what is happeing in New China can do not better than to study it.

—Bharat Jyoti, Bombay

The wealth of information It gives on China new and old...makes fascinating reading...is comprehensive and informative and must therefore interest all students of public affairs.

—Indian Express, Madras

China Today is an eloquent tribute to his (Pandit Sundarlal's) shrewd understanding of men and matter... brings to light the mighty endeavour of the Chinese People to rebuild their great nation on firm new foundations for a tomorrow which is theirs.

—Vigil, Delhi.



नएचीन को मुबारकबाद !

نئے چین کو مبارک باں !

श्विम्तूबर सन् 1955 को चीन में नए चीनी लोक राज (पीपुस्स रिपब्लिक आफ चाइना) की छठी साल-गिरह बड़ी धूम धाम से मनाई गई. दुनिया के सब स्वतंत्रता प्रेमी देशों ने चीन के शासकों और नेताओं को वधाई दी. भारत के राष्ट्रपति और प्रधान-मंत्री ने भी चीन के राष्ट्रपति और प्रधान-मंत्री ने भी चीन के राष्ट्रपति और प्रधान-मंत्री को इस छुम अवमर पर वधाई के संदेश भेजे. भारत-चीन मैत्री-संघ के प्रेसीडेन्ट ने दिस्ली से चीन-भारत मैत्री संघ के प्रेसीडेन्ट को पीकिंग में वधाई का तार भेजा और उन्हें विश्वास दिलाया कि भारत की जनता दुनिया में शान्ति कायम रखने और दुनिया के दूसरे देशों की जनता को आजाद और खुशहाल करने की कोशिशों में चीनी जनता का हमेशा पूरा पूरा साथ देगी.

इन है बरस के अन्दर नए चीन ने जीवन के हर मैदान में जो खबरदस्त तरक्की की है वह दुनिया भर पर उजागर हो चुकी है. यहां उसे दुहराने की जरूरत नहीं है. नए चीन ने दुनिया के लोगों को और उन लोगों को भी जिन्हें नए चीन के इरादों पर किसी तरह के शक थे यह साचित कर दिया कि नया चीन किसी से लड़ना नहीं चाहता. वह सव देशों श्रीर सब लोगों के साथ शान्ति श्रीर दोस्ती से रहना चाहता है, चीन श्रौर भारत के नेताश्रों ने मिलकर वह पांच ऊँचे सिद्धान्त दुनिया के सामने रक्खे जो आज पंचशील के नाम से मशहूर हैं, जिन्हें एक दूसरे के बाद दुनिया के सब देश अपनी अन्तर्राष्ट्री नीति के बुनियादी असूल मानते जा रहे हैं, और जिन्होंने बता दिया कि कम्युनिस्ट बीन उन सब देशों के साथ मित्रता से रहना चाहता है जो उसके साथ मित्रता से रहना चाहें. इसमें चीन की नजरों में कम्युनिस्ट और रौर कम्युनिस्ट मार्क्सिस्ट और ग़ैर मार्किसस्ट का कोई फर्क नहीं.

कारिया में उन पिन्छमी मुल्कों की कौजों ने जिनकी दूसरों पर हकूमत करने और उनके धन और शक्ति से बेजा फायदा उठाने की नापाक लालसा अभी खतम नहीं हुई है

ان چہ برس کے اندر نئے چین نے جیبن کے هر میدان میں جو زبردست توقی کی هے وہ دنیا بھر پر اُجاگر هوچکی هے . بہاں اُسے دهرائے کی ضرورت نہیں هے . نئے چین نے دنیا کے لوگیں کو اور اُن لوگیں کو بھی جنھیں نئے چین کے اِرادوں پر کسی طرح کے شک تھے یہ ٹابت کردیا کہ نیا چین کسی سے لانا نہیں چاهتا . وہ سب دیشوں اور سب لوگوں کے ساتھ شانتی اور دوستی سے رهنا چاهتا هے . چین اور بھارت کے نیتاؤں نے ملکر وہ پانچ اُونچے سدھانت دنیا کے سامنے رکھے نیتاؤں نے ملکر وہ پانچ اُونچے سدھانت دنیا کے سامنے رکھے کے بعد دنیا کے سب دیشی لینی انتر راشڈرنیتی کے بنیادی اصول کے بعد دنیا کے سب دیشی لینی انتر راشڈرنیتی کے بنیادی اصول اُن سب دیشوں کے ساتھ مترتا سے رهنا چاهتا هے جو اُس کے ماتھ مترتا سے رهنا چاهیں ، اُس میں چین کی نظروں میں ماتھ مترتا سے رهنا چاهیں ، اُس میں چین کی نظروں میں کیونست اور غیر مارکست کاکوئی نہیں .

کریا میں اُن پچھی ملکوں کی فوجوں نے جن کی لوسروں پر حکومت کرنے اُن کے دھن اور شکتی سے بیجا نائدہ اُنہانے کی ٹایاک لانما اُنہی ختم تبیں ہوتی ہے का के बरेक् कार्न में अवरदस्ती दकत देकर कोरिया वालों के लड़ा कर फायदा बठाना वाहा. कोरिया के बहादुर सपूर्तों ने उनका बट कर मुकाबला किया. नय वीन ने उस समय तक दखल नहीं दिया जब तक कि लड़ाई चीन की सरहद तक नहीं पहुंच गई और नए चीन की मूमि पर बरसने वाले गोलों ने यह साबित नहीं कर दिया कि दूसरों की आजादी के दुरामनों की निगाहें केवल कोरिया पर ही नहीं चीन पर भी लगी हुई हैं. देखते देखते लड़ाई का पलड़ा पलटा. ठीक उस जीत के समय जब दुनिया के दूसरे शान्ति-प्रिय देशों ने, जिन में भारत खास था, चाहा कि कोरिया का मामला शान्ति के साथ तय हो जावे और चीन को इसकी खाशा दिलाई सो चीन ने अपने हाथ लड़ाई से खेंच लिये. कोरिया की लड़ाई को बन्द करने में चीन का हिस्सा सबसे जबरदस्त, चीन के यश को बढ़ाने वाला और नए चीन की अमन प्यन्दी का बहुत बड़ा सबूत है.

हिन्द जीन (इन्डो चाइना) की लड़ाई को बन्द कराने में जीन और भारत दोनों ने मिल कर जो हिस्सा लिया है वह इन दोनों देशों के लिये बड़े गौरव की जीज है.

ताईवान (कारमूसा) चीन के शरीर का एक दुकड़ा है. किसी भी बाहर की क़ौम का वहां व्याल देना और उसे अपना कौजी अड़ा बनाए रखना अन्तर्राष्ट्री अन्याय है. ताईवान के उपद्रवियों को, जो ताईवान के रहने वाले नहीं हैं, चीनी महाद्वीप से हार कर और भाग कर रौरों की किरचों के साए में वहां पर पनाह लिये हुए हैं, क़ाबू में कर लेना नए चीन के लिये बाएं हाथ का खेल था और ताईवान और वहां की जनता को आजाद करना नए चीन का कर्ज भी है. किर भी नए चीन ने ताईवान की लड़ाई से किलहाल अपना हाथ खेंच लिया इसलिये ताकि दुनिया की जनता जंग की बरवादी से बची रहे, ताईवान का यह मामला भी सुलह सफाई ही से तय हो सके और सब मुल्कों के बीच शान्ति और दोस्ती क़ायम रह सके.

दुनिया की अन्तर्राष्ट्री कानफ सों में खास कर जनीवा में और बान्खुंग में नए चीन के नेताओं ने दुनिया भर पर यह उजागर कर दिया कि वह नया चीन जिसने केवल कुछ साल पहले दुनिया की सब से बड़ी साम्राजी ताक़तों से लोहा लेकर अपनी साठ करोड़ जनता को सच्ची आजादी दिलवाई है वही नया चीन शान्ति का सब से बड़ा हामी और मददगार और जंग का सब से बड़ा हामी और मददगार और जंग का सब से बड़ा दुशमन भी है. एशिया का सब से शिक्तशाली देशों में से एक होते हुए भी वह दुनिया के सब देशों के साथ अमन और दोस्ती से रहना चाहता है. यही कारख है कि नए चीन और وهاں کے گوربلو جھاڑے میں زبردستی دھل دید کو کرریا رائس کو کوریا رائس سے لوا کو فائدہ آٹیاتا چاہا۔ کوریا کے بہادر سپرتس نے اُن کا ذت کر مقابلہ کیا۔ نٹے چین نے اُس سے نک دخل نہیں دیا جب تک نہ لوائی چین کی سرحد تک نہیں پہونچ گئی اور نئے چین کی بھومی پر بوسنے والے گولوں نے یہ ثابت نہیں کردیا کہ دوسروں کی آزادی کے دشمنوں کی نگاھیں کیول کوریا پر ھی نہیں چین پر بھی لکی ھونی ھیں۔ دیکھتے دیکھتے لوائی کا پلوا پلقا، ٹیک اُس جیت کے سے جب دنیا کے دوسرے شائتی پریہ شائتی کے ساتھ طے ھو جارے اُور چین کو اُس کی آشا دلائی تو شائتی کے ساتھ طے ھو جارے اُور چین کو اُس کی آشا دلائی تو جان نے اُنے ھاتھ لوائی سے کھینچ لئے، کوریا کی لوائی کو بند کرنے میں چین کا حصہ سب سے زبردست چین کے یہی کو بند کرنے میں چین کا حصہ سب سے زبردست چین کے یہی کو بند کرنے میں چین کا حصہ سب سے زبردست چین کے یہی کو بند کرنے میں چین کا حصہ سب سے زبردست کی یہی کو بند کرنے میں چین کا حصہ سب سے زبردست کی بہت ہوا ثبوت ہے۔

هند چین (اِندَو چائنا) کی اوآنی کو بند کرانے میں چین اور بھارت دونوں نے ملکر جو حصہ لیا ہے وہ اِن دونوں دیشوں کے لئے بڑے گورو کی چیز ہے .

تائیوان (نارموسا) چین کے شریر کا ایک ٹکڑا ہے ۔ کسی بھی ہاتھ رکھنا اور اُسے اپنا نوجی اتا بنائے رکھنا افترراشڈری انہایہ ہے ۔ تائیوان کے اُپدرویوں کو' جو تائیوان کے اُپدرویوں کو' جو تائیوان کے فیروں کو جو تائیوان کے فیروں کی کرچوں کے سایہ میں وہاں پر پناہ لئے ہوئے ہیں' ناہو میں کر لینا نئے چین کے لئے یائیں ہاتھ کا کیپل تھا اور تائیوان اور رہاں کی جبتا کو آزاد کرنا نئے چین کا فرض بھی ہے ۔ اور رہاں کی جبتا کو آزاد کرنا نئے چین کا فرض بھی ہے ۔ پہر بھی نئے چین کا فرض بھی ہے ۔ پہر بھی نئے چین کا فرض بھی ہے ۔ پہر بھی نئے چین کا فرض بھی ہے ۔ پہر بھی نئے چین کا فرض بھی ہے ۔ پہر بھی نئے چین کا فرض بھی ہے ۔ پہر بھی نئے چین کا فرض بھی ہے ۔ پہر بھی نئے چین کا فرض بھی ہے ۔ پہر بھی اُنہ وہ تائیوان کا یہ معاملہ بھی صلع صفائی ہی ہوبادی سے بھی رہے ' تائیوان کا یہ معاملہ بھی صلع صفائی ہی سے طے ہو سکے اور سب ملکوں کے بیچ شائتی اور دوستی قائم رہ سکے ۔

دنیا کی انترراشقری کا نفرینسوں میں خاص کو جھنوا میں اور بانڈنگ میں نئے چین کے نیتاؤں نے دنیا بھر پر یہ اُجاگر کر دیا کہ وہ نیا چین جس نے کیول کچھ سال پہلے دنیا کی سب سے بڑی سامراجی طادتوں سے لوھا لے کو اپنی ساتھ کوور جننا کو سچی آزادی دلوائی ہے وہی نیا چین شانتی کا سب سے بڑا دشمن سے براحامی اور مددگار اور جنگ کا سب سے بڑا دشمن بھی ہے ۔ ایشیا کا سب سے شکتی شالی دیشوں میں سے ایک عرب سے دیشوں میں سے ایک موتے ہوئے بھی وہ دنیا کے سب دیشوں کے ساتھ اس اور دیسا درستی سے رہنا چھی اور

प्रसके नेवाओं का मान कीर दनके साथ प्रेम काज दुनिया मह में बदला बला जा रहा है.

इस सबके साथ साथ नए चीन के नेताओं ने अपने देश के अन्दर के जीवन को इस यो दे से समय में जिस तरह कपर कठाया है, जिस तरह देश की आर्थिक अवस्था को सुधारा है, करोड़ों जनता के सदाचार को ऊँचा किया है, सारे देश से बेकारी, भिखमंगी, चोरी, रिशवत जोरी और वीरानी को मिटाकर उसे एक हरा भरा बाग बना दिया है उसकी दूसरी निसाल दुनिया के अभी तक के इतिहास में आसानी से नहीं मिल सकती.

एशिया और अफीका के उन देशों के लिये जो अभी तक रौरों से कुछ न कुछ दबे हुए और इनसानी तरक्की की बीड़ में पिछड़े हुए हैं नया चीन सब से बढ़ा आदर्श और सब से बढ़ा सहारा है. दुनिया की जनता को एक करने के लिये तथा चीन आज सब से बड़ी शक्ति दिखाई देता है. कारण यह है कि नया चीन "जनता का चीन" है. दुनिया की जनता एक है. काली या गोरी, लाल या पीली जनता कहीं भी एक इसरे से लड़ना नहीं चाहती, जनता में प्रेम है. जनता में ही जनार्दन हैं. जनता में अनन्त शक्ति छिपी दुई है, वह शक्ति अब तेजी के साथ जागती जा रही है और द्विनया को एक करती जा रही है. इन सब बातों में जो भाव, जो विचार और जो उमंगें चीनी जनता के अन्दर जाग चुकी हैं बही भारत की जनता के दिलों में हिलोरें मार रही हैं. यह होनों प्राने देश सच्चे से सच्चे मानी में अध्यास प्रधान देश हैं. दोनों की पिछली अंथेरी सदियों की बहुत कुछ कालिख धुल चुकी है, बाक़ी धुलती जा रही है. दोनों पर इम्सानी समाज को उसके लक्ष तक पहुंचाने के लिये जबर-बुस्त जिन्मेवारी है. इसलिये हम "नया हिन्द" परिवार की तरफ से नए चीन की जनता को उनकी इस इठी सालगिरह के अवसर पर दिल से वधाई देते हैं. हमारी दिली इच्छा है कि चीन के लिये यह दिन इजारों साल तक बढ़ती हुई शान्ति और चमक दमक के साथ बार बार आता रहे. हमारी यह भी इच्छा है कि मानव सामाज की सच्ची सेवा के लिये हिन्दुस्तान चौर चीन की दोस्ती इमेशा इमेशा के लिये क्रायम रहे !

1, 10, '55

- गुन्द्रलाल

यह क्यों ?

देश में सरकार की तरफ़ से तपेदिक के 'टीके का काम' जिसे थी. सी. जी. का टीका कहा जाता है बराबर जारी है. सास कर स्कूलों के बास्तर जगह जगह एक तरफ़ से सब अवनी के बह टीके सगाये जा रहे हैं. देश के इस हितैशियों

اس کے تفاول کا ملی اور آن کے ساتھ پریم آنے دائیا بھر میں بہتا چا رہا گے .

A CONTRACT OF THE PROPERTY OF A CONTRACT OF THE PARTY OF

م اِس سب کے ساتھ ساتھ قبلے چھن کے قیداؤں نے اپنے دیھی کے اندر کے جھین کو اُس تورت سے سنٹے میں جس طرح اُوپر اُنہا ہے، جس طرح دیھی کی آرتیک اُرستیا کو سدھارا ہے، کررزس جنتا کے سداچار کو اُونچا کیا ہے، سارے دیھی سے بیکاری بہتناکی، چوری اور ویوانی کو متا کر اُسے آیک ھرا بھرا باغ بنا دیا ہے اُس کی دوسری مثال دنیا کے ابھی تک کے اِنہاس میں آسانی سے نہوں مل سکتی ،

ایشیا اور انریته کے آن دیشوں کے لئے جو ابھی تک غیروں سے کنچھ نے کنچھ دیے ہوئے اور انسانی ترقی کی دور میں پنچھڑے ھوئے ھیں لیا چین سب سے ہوا آدرهی اور سب سے ہوا سہارا ه . دنیا کی جنتا کو ایک کرنے کے اللہ نیا چھن آج سب سے بنى شكتى دكهائي ديتا هي كارن ية هه كه نها چين "جنتا كا چَبِيَّ " هَ . دنيا كي جنتا ايك ه . كالي يا گرري لل يا پيلي جلتا كيين بهي أيك دوسر عله لونا نهين چاهتي . جلتا مين يربم هي . جلتاً مين هي جلارس هين . جنتا مين أننت شكتي چھی ہوئی ہے , وہ شکتی اب تیزی کے ساتھ جاگتی جا رھی ھے آور دنیا کو ایک کرتی جا رھی ھے ، اِن سب باتوں میں جر باؤا جو وچار اور جر أملكين چيني جنتا كے اندر جاك چکی میں وهی بھارت کی جنتا کے دلوں میں هلورے مار رهی هیں . یه دونوں برائے دیش سجے سے سجے معنی میں ادهیاتم پردھان دیک ھیں ، دونوں کی بحورای اندھاری صدیس کی بہت کچھ کالکھ دھل چکی ھے کہ باقی دھلتی جا رھی ھے . دونوں ہر اِنسانی سابے کو اُس کے لکھ تک پہنچائے کے لائے زبردست ذممواری هے اِس لله هم الليا هند" پريوار كي طرف سے نئے چین کی جنتا کو آن کی اِس چہتی سالگرہ کے اوسر پر دل سے بدھائی دیتے میں ، مماری دلی اچھا شے که چین کے لله یه دن هزارس سال تک بوهتی هوئی شان اور چیک دمک کے ساتھ بار بار آتا رہے ، هماری یہ بھی اِچھا ہے که سائو سمام کی سجی سیوا کے لئے ہدرستان اور چین کی دوستی هيشه هميشه كي ليك قائم ره !

--سادر ال

1 .10 '55

يه کيوں ۽

دیش میں سرکار کی طرف سے تبادق کے 'ڈیکھ کا کام' جسے ہی، سی، جی کا ڈیکھ نہا جاتا ہے' برابر جاری ہے، خاص کر اسکولوں کے الدر جاتم جاتمہ ایک طرف سے سب بجوں کے یہ ٹیکے لگائے جا رہے عیں، دیش کے کچھ علیمیں

मासूबर '55

(246

के इस दीके का विरोध किया. बतमें दी जास नाम बी सी. राजागोपालाचारी और श्री विनोबा आवे के हैं. राजा जी के कई बयान और आपण इस विषय पर समाचार पत्रों में अप चुके हैं. सरकारी अफूसरों ने इस विरोध की कोई परवाह तहीं की, यहां तक कि कब सरकारी अफसरों और राजा जी हे बीच थोड़ी बहुत बहुसा बहुसी भी हुई. देश के कई बढ़े बढ़े बाक्टरों ने राजा जी का समर्थन किया. राजा जी ने अपने एक बयान में कहा है कि सरकार ने किसी सरकलर के खरिबे देश के डाक्टरों, खास कर सरकारी नौकरों को, बह हिवायत की है कि बह देश के मामूली अखबारों के अन्दर इस विषय पर अपनी राय जाहिर न करें और अगर उन्हें कुछ कहना ही हो तो साइंसी ढंग से साइंसी पत्रिकाओं के अन्दर कहें, राजा जी का कहना है कि इस पर बहुत से डाक्टरों को बर हो गया कि बगर वह सरकार की पालिसी के खिलाफ बी० सी० जी० के टोके पर कोई राय जाहिर करेंगे तो उनका रजिस्ट्रेशन खिन सकता है. भारत सरकार की हैल्थ मिनिस्टर राजकुमारी अमृत कौर ने पार्लिमेंट के अन्दर कहा कि राजाजी का यह कहना कि डाक्टरों पर इस तरह का दबाब डाला गया है राजत है. इस इस बारे में केवल इतना ही कह सकते हैं कि सब कई तरह के होते हैं. अदालती या क्रान्ती सन एक अलग चीज है, सरकारी या राजकाजी सब दूसरी चीज है और मामूली जनता का सब तीसरी चीज है, राजा जी के चरित्र और उनकी निस्वार्थता से भी देश अञ्जी तरह परिनित है. जो हो, इतने दिनों की बहसा बरसी के बाद भी सरकार का टीके लगाने का काम वेधद्क जोरों के साथ जारी है, श्रीर राजा जी ज्यों के त्यों अपनी बात पर इटे हैं.

हाल में राजा जी ने अंग्रेजी में एक छोटी सी पुस्तिका प्रकाशित की है जिसमें उन्होंने दिखाया है कि वह बी० सी० जी० का विरोध क्यों करते हैं. इसमें उन्होंने यह भी लिखा है कि इस पुस्तिका के निकालने की उन्हें जरूरत क्यों पड़ी. इम इस बी० सी० जी० के मामले में राजा जी राय से पूरी तरह सहमत हैं. इसलिये हम अपना फर्ज सममकर राजा जी की पुस्तिका का हिन्दुस्तानी अनुवाद पाठकों की भेंट कर रहे हैं. इम चाहते हैं कि हमारे अधिक से अधिक देशवासी इसे पढ़-कर या सुनकर लाभ उठावें.

14. 10. '55

—सुन्दरकाल

"दुनिया की माताओं की कांग्रेस"

दुनिया को जंग के खतरे से बचाने और दुनिया में असन क्षायम रखने के लिये जो कोरिशों आज अगह अगह हो रही हैं उनमें एक बहुत बड़ी कोरिश दुनिया भर की बहु माओं की कांग्रेस है जो 7 जुलाई 1955 से 10 जुलाई 1952 ن اِس تَبِيع كا وروده كيا. إن مين دو خاص قام غزي بعن وأجا گوہ لا چاری اور شری وتوہا بھارے کے میں ، واجا جی کے کئی ایان آور بهاشی اِس وشاً پر سماچار پاروس موس جهمها چا عهی ، سرکاری انسروں نے اِس ورودھ کی کوئی چرواۃ تہم کی ، بہاں تک که کیچے سرکاری انسروں اور راجا جی کے بیچے تهوری بہت بحثا بحثی ہی دوئی . دیش کے کلم بڑے تاکلوں لے راجا جی کا سبرتین کیا ۔ راجا جی نے اپنے ایک میان میں کہا ہے کہ سزکار لے کسی سرکلر کے ذریعہ دیکس کے قائلاروں' خاص کر سرکاری فوکروں کو یہ هدایت کی قد که ولا دیک کے معمولی اخباروں کے اندر اِس رشائے پر اُدِنی اِنْہ طاهر الله کریں أور اگر اُنهيں كچھ كينا هي هو تو سائنسي تھنگ سے سائنسي وتریکوں کے اندر کہیں ، راجا جی کا کہنا ہے که اس پر بہت سے داکٹروں کو در من گیا کہ اگر وہ سرکار کی یالیسی کے خاف ہی، سی، چی کے ٹیکھ پر کوئی رائے طاہر کویں کے تو اُن کا رجستريشن چهن سكنا هي بهارت سركار كي هيلته منستر رأج کماری امرت کور نے ہارلیست کے اندر کیا که راجا جی کا یہ کہناکہ دَائلروں پر اِس طرح کا دباؤ دالا گیا ہے غلط ہے . هم اِس بارے میں کیول اِتنا می کہے سکتے هیں که سیج کئی طرح کے عوق هيں ۽ عدالتي يا قانولي سے ايک الگ چيز هے' سرکار يا راج کاچی سے درسری چیز ہے۔ اور معبرای جلتا کا سے تیسری چیز ھے ، راجاجی کے چرتر اور اُن کی نیسوارتبتا سے بھی دیص اچھی طرے پریجت ہے, جو ہو' اتنے دنوں کی بحثابحثی کے ہمد بھی سرکارکا ٹیکے کا کا کام بے دھوک زوروں کے ساتھ جاری ہے اور راجا جی جیوں کے تیوں اپنی بات پر تئے هیں ،

جی جبوں نے دوں اپنی بات پارت کی کہ جوٹی سی مال میں راجا جی نے انگریزی میں ایک چھوٹی سی پسٹکا پرکاشت کی ہے جسمیں آنہوں نے دکھا یا ہے که وہ ہی، سی، جی کا ورودہ کیوں کرتے ہیں ، اِس میں آنہوں نے یہ بھی انها ہے که اِس پستکا کے نکالنے کی آنہیں ضرورت کیوں پڑی، هم اِس ہی، سی، جی کے معاملے میں راجا جی کی رائے سے پروی طرح سیمت ہیں ، اِس لِنْے هم اُپنا فرض سبجے کر راجا جی کی پستکا کا هندستانی آنوواد پائیکوں کی بھینت کر رہے ہیں ، هم چاہتے ہیں کہ همارے ادھک سے ادھک درہی واسی اِسے پڑھ کو یا سی کر لایم آنها ویں ،

سببتر لل

14. 10. 55

"ننیا کی ماتاؤں کی کانگریس"

دنیا کو جنگ کے خطرے سے بچانے اور دنیا میں آمی قائم رکینے کے لئے جو کوششیں آج جکہ جکہ ہو رہی ہیں آن میں ایک بہت بڑی کوشش دنیا بھر کی ماؤں کی وہ کائکریس ہے جو 7 جولئی سی 1955 سے 10 جولئی سی 1955 तक योरप के सराहूर शहर लासेन में हुई. इस कांमेस में हुनिया के खयासठ देशों से, जिनमें अमरीका, इंगलैंड, क्रांस, कस, चीन और दिन्दुस्तान सब शामिल थे, एक इजार से ऊपर माएं जमा हुई थीं. उनमें छयों महाद्वीपों, सब अमें खीर सब बोलियों वाली माएं मौजूद थीं. दुनिया की सारीख में अपनी किस्म की यह पहली कांमेस थी.

चार दिन की बहस के बाद जो कैसला उन एक हजार से ऋपर माधों ने एक राय से दुनिया के सामने रक्सा उसके कुछ बाक्य हम नीचे देते हैं :—

"झयासठ मुल्कों और सब महाद्वीपों से आने वाली, अलग अलग बालियों वाली, अलग अलग धार्मिक विश्वास, अलग अलग विचार और तरह तरह के सामाजिक हालात में रहने वाली हम औरतें और मार्थ इतिहास में पहली बार इस कांग्रेस में जमा हुई हैं.

"हम सब एक ही पक्के इरादे के साथ जमा हुई हैं और बह यह है कि अपने बच्चों को जंग के हर तरह के खतरे से बचावें और उन्हें मुख और चैन के साथ जिन्दा रहने का मीका हैं.

"यह कांग्रेस जंग से पैदा होने वाली मुसीबतों से गूँज रही है. दूसरी बड़ी जंग ने जिन करोड़ों माओं को हलाया, जिन बच्चों को मिटा डाला और जिस तरह दुनिया के इनसानों को रंज और राम में डुवादिया उसे हम भूल नहीं सकतीं. चार कराड़ से ऊपर आदमी उस जंग में मरे, तीन करोड़ से ऊपर जलमी या हमेशा के लिये बेकार हो गए, करोड़ों यतीम हो गए, करोड़ों उसके बाद दरिद्रता और अकाल का शिकार हुए. न जाने कितनी उम्मीदें दूटीं, कितनों की काबलीयतें मिट्टी में मिल गईं. कितने बरबाद हो गए!

"उन तमाम मुसीबतों को याद रखते हुए हम इस पक्के इरादे के साथ जमा हुई हैं कि अब हम नई जक्न न होने देंगी. हमने यहां एक दूसरे को जान श्रीर पहचान लिया है. हमें एक दूसरे से प्यार है. हमने इस बात को भी देख लिया है कि हम माश्रों में कितनी बड़ी शिक्त छिपी हुई है. जो बीजें हम में एक दूसरे से फर्क करती हैं वह तुच्छ श्रीर छोटी हैं, जो हमें एक दूसरे से मिलाती हैं वह शहम श्रीर खड़ी हैं, हम इस बात को अच्छी तरह समस गई हैं कि कोई कारण नहीं है कि दुनिया की शलग शलग हों में एक दूसरे की तुशमन बन कर रहें. यह दुनिया काशी बड़ी है, इस इस के लिये गुंजाइश है. सब मिलकर श्रमन से रह सकते हैं.

'लेकिन दुनिया में जब तक अलग अलग मुल्क इथियारों की दौड़ में एक दूसरे से बढ़ने की कोशिश करते स्वेत, जब तक अलग अलग कीजी दल और असाड़े बने نک یورپ کے مشہور شہر قامین میں ہوئی ۔ اِس کائکریس میں دنیا کے چھاسات دیشوں سے جن میں آمریکت انگلینڈ، نواٹس ، روس چین آور ہندستان سب شامل تھے ایک ہزار سے آریر دائیں جمع ہوئی تھیں ۔ اُن میں چھیں مہادییوں سب دھرموں اور سب برادوں والی مائیں موجود تھیں ، دنیا کی تاریخ میں آبلی قسم کی یہ پہلی کائگریس تھی ،

چار دیں کی بحث کے بعد اپنا جو نیصلہ آن ایک هزار سے ارپرماؤں لے ایک رائے سے دنیا کے سامنے رکھا آس کے کچے رائیہ هم نیجے دیتے هیں:--

چھاسلا ملکس اور سب سیادییوں سے آلے والی' انگ انگ ہوائی والی' انگ انگ انگ دھارمک وشواس' انگ انگ وچار اور طرح طرح کے ساماجک حالات میں رہنے والی هم عورتیں اور مائیں انہاس میں پہلی بار اِس کانگریس میں جمع ہوئی ھیں

''هم سب ایک هی پک ارادے کے ساتھ جمع هوئی هیں اور وہ یہ هے که اپنے بچوں کو جنگ کے هر طرح کے خطرے سے بچاریں اور اُٹھیں سکھ اور چین کے ساتھ زائدہ رہنے کا موقع دیں '

"یه کانگویس جنگ سے پیدا هونے والی مصیبتوں سے گونیم رهی هے . دوسری بڑی جنگ نے جن کررورں ماؤں کو رالیا اور جن بچوں کو مثاقالا اور جس طرح دنیا کے انسانوں کو رنیم اور غم میں دبو دیا اُسے هم بهول نہیں سکتیں . چار کرور سے اُرپر آدمی اُس جنگ میں مرے تین کرور سے اُرپر زخمی یا هیشته کے لئے بےکار هوگئے 'کروروں یتیم هوگئے' کروروں اُس کے بعد دردرتا اور آکال کا شکار هوئے ۔ ثع جائے کتنی آمیدیں توثیں 'کتنوں هی قابلتیں متی میں مل گئیں ۔ کتنے برباد هوگئے اُ

ارائی تبام مصیبتری کو یاد رکھتے ہوئے ہم اِس پکے ارادے کے ساتھ جمع ہوئی ہیں کہ اُب ہم نئی جنگ نہ ہونے دینگی ، هم نے یہاں ایک دوسرے کو جان اور پہنچان لیا ہے ، همیں ایک دوسرے سے پیار ہے ، ہم نے اِس بات کو بھی دیکھ لیا ہے ، ہم ماؤں میں کتنی ہتی شکتی چبھی ہوئی ہے ، جو چیزیں ہم میں ایک دوسرے سے فرق کرتی ہیں وہ تیچہ اور چیزیں ہم میں ایک دوسرے سے فرق کرتی ہیں وہ ایچہ اور بتری هیں ، ہم اِس بات کو اچھی طرح سمتی گئی هیں که کئی شمیں کہ کئی شمیں کہ کئی شمیں ایک دوسرے کئی هیں کہ کئی شمیں کہ کئی شمیں ہی کو ایک الگ الگ قومیں ایک دوسرے کئی شمین سے کہ دشمن بن کو رهیں ، یہ دنیا کانی بتری ہے اِس میں سے کی دشمین بن کو رهیں ، یہ دنیا کانی بتری ہے اِس میں سے کی دشمین بن کو رهیں ، یہ دنیا کانی بتری ہے اُس میں سے کی دشمین بن کو رهیں ، یہ دنیا کانی بتری ہے اُس میں سے میں سے دو سکتے ہیں ،

''لیکن دنیا میں جب تک الگ الگ ملک هتهازوں کی دور میں ایک دوسرے سے بوھنے کی کوشش کرتے وہنے' جب دک أبو الهارے بنے رهینے' جب دک الگ الگ فرجی دل أبو الهارے بنے

होंगे, जब तक एक वृत्तरें की दिसा की जाती रहेगी और जब का मोपेसंडा किया जाता रहेगा, जब तक ऐटमी इधियार जमा होते रहेंगे और उनके अभ्वार बढ़ते रहेंगे, जब तक अलग अलग सरकारें एक दूसरे को सममने और एक दूसरे पर विश्वास करने की कोशिश नहीं करेंगी, तब तक दनिया के अमन को खतरा बना रहेगा.

"हर आदमी को यह इक है कि वह आजाद जिन्हिंगी इसर करें और हर दूसरें की कौमी आजादी की भी इज्जत करें अमन केवल इसी तरह कायम रह सकता है.

"आज इसने यह जान लिया है कि जङ्ग जरूरी नहीं है, जङ्ग को रोका जा सकता है और अमन क्रायम रक्ता जा सकता है.

"दुनिया के कुछ लोगों ने इरावा किया और कोरिया और वीतनाम में दोनों जगह जक्क रक गई.

"बान्डुंग कान्फरेन्स में जो इस उसूल कायम किये गए उन से मालूम होता है कि अलग अलग व्यवस्था या निजाम रखने वाले देश भी मिलकर अमन से रह सकते हैं.

"श्रास्ट्रिया के सुलहनामें से साबित है कि दुनिया के सब सवालों को बिना मार काट किये सुलह के साथ हल किया जा सकता है.

"हथियारवन्दी के सवाल प सममौता साफ सुमकिन दिखाई दे रहा है.

"हम औरतें आधी इनसानी क़ीम हैं. अपने बच्चों की तरक और दुनिया के सब लोगों की तरक हमारी भी जबर-क्त जिम्मेवारियां हैं.

'सब देशों की माओं से हमारा कहना है कि माओं! यह दुनिया भर की माओं की कांग्रेस तुम्हें प्रेम और एकता का सदेश मेजती है. हमें मालूम है कि बच्चों के पैदा करने, उन्हें पालने और उन्हें आदभी बनाने में कितना बक्त लगता है और कितनी मेहनत करनी पड़ती है. हम अपने बच्चों को जीवन देती हैं, हम उस जीवन को बरबाद होते नहीं देखना चाहतीं.

"हम जंग नहीं होने देंगी.

"हमारी यह माँग है कि ऐटमी हिययारों का बनना बन्द किया जाय और जो हैं उनको नष्ट कर दिया जाय.

"हम यह बरदाश्त नहीं कर सकतीं कि जबकि बेशुमार इनसान पेट भर साना भी नहीं पा सकते अरबों और खरबों रपया जंग की तैयारियों में फूका जावे.

"हिथयार और हिथियारों की दौड़ खतम होनी चाहिये. "हमारी यह माँग है कि जो उपया हिथयारों के बनाने में कर्ष किया जाता है वह मकानों, अस्पतालों, स्कूलों, गृज्या खानों के बनाने में और हमारे बच्चों को जीवन का इस पहुँचाने में खर्च किया जावे. ینکے' جب تک ایک دوسرے کی هنسا کی جاتی رقب گی ر جنگ کا پروپیکنڈا کیا جاتا رقب کا جب تک آیاتی هنیار سم هرتے رهینکے آور آن کے انبار پرھتے رهینگے' جب تک گ الگ سرکاریں ایک دوسرے کو سنجھنے آور آیاک ذوسرے ر وشواس کرنے کی کوشش نہیں کرینگی' تب تک دنیا کے بن کو خطرہ بنا رقب کا ۔

در مرسرے کی قومی آزادی کی بھی عزت کرے اور دیگی بسر کرے اور درسرے کی قومی آزادی کی بھی عزت کرے امن کیول اِسی ارح قائم رہ سکتا ہے ۔

دوآج هم نے یہ جاں لیا ہے کہ جنگ ضروری نہیں ہے ۔ عنگ کو روکا جا سکتا ہے اور امن قائم رکھا جا سکتا ہے ۔

''دنیا کے کچھ لوگوں نے آرادہ کیا اور کوریا اور ویت نام یوں دونوں جکہ جنگ رک گئی .

"بالدَنگ كانفرنس ميں جو دس أمول قائم كثم كُيُّم أَن عملوم هوتا هم كم ألك ألك ويوستها يا نظام ركهنم وألم ديش مكر أمن سم رة سكتم هين .

''آسریا کے صلح نامے سے ثابت ہے کہ دنیا کے سب سوالوں و بنا مار کاف کئے صلح کے ساتھ حل کیا جا سکتا ہے .

والمتهاربندی کے سوال پر سنجهرتا صاف منکن دکھائی سے رہا تھے۔

اھم عورتیں آدھی انسانی قوم ھیں ۔ اپنے بچوں کی طرف اور دنیا کے سب لوگوں کی طرف ھماری بھی وہردست المعواریاں ھیں ۔

''سب دیشوں کی ماؤں سے هدارا کہنا ہے کہ ماؤں ! یہ نئیا بہر کی ماؤں کی کانگریس تمہیں پریم اور ایکتا کا سندیشی پیجتھی ہے ۔ همیں معلوم ہے کہ بچوں کے پیدا کرنے' اُنہیں اِللے اور اُنہیں آدمی بنائے میں کتنا وقت لکتا ہے اور کتنی سحنت کرنی پرتی ہے ۔ هم آپنے بچوں کو جیوں دیتی هیں' سماحت کرنی پرتی ہے ۔ هم آپنے بچوں کو جیوں دیتی هیں' اُس جیوں کو برباد هوتے نہیں دیکھنا چاھتیں ۔

"هم جنگ نہیں هونے دینکی ،

"هماری یه مانگ هے که ایٹمی هتهباروں کا بننا بلد کیا جائے اور جو هیں آن کو نشت کردیا جائے .

الهم یه برداشت نهیں کرسکتیں که جب که پرشمار انسان پیٹ بهر کهانا بھی نهیں پاسکتے اربیں اور کهربس روپیه جنگ کی تهاریوں میں پوکا جارے ۔

المتهیار أور هاههاروس کی دور خام هوانی چاهایی،

''هماری یہ مانک ہے کہ جو رویدہ همیاروں کے بنائے میں خرچ کیا جاتا ہے وہ مکانوں' استالوں' اسکولوں' زچہ خانوں کے بنائے میں بنائے میں اور همارے بحورں کو جیوری کا سکھ پہونجائے میں خرچ کیا جارے ،

"जब तक हमारा यह उद्देश्य पूरा नहीं होगा हम चैन नहीं लेंगी.

'सब देशों की औरतों से हमारा कहना है बहनो ! हम यह नहीं चाहतीं कि हमारे सबके बेटे एक दूसरे को कृतल करें. हमें अपने बच्चों को सिखाना चाहिये कि वह सब देशों और सब क़ौमों के लोगों से प्यार करें. हम इस बात की इजाज़त नहीं दे सकतीं कि हमारे बच्चों को एक दूसरे से नकृरत और एक दूसरे के साथ बद्तमीज़ी का बरताब सिखा कर उनके दिलों और दिमाशों को गंदा किया जावे.

"सब बच्चे चाहे वह गोरे हों, या पीले, या काले, बराबर हैं. सबके बराबर के हक हैं. सबको जान प्यारी है. सबकी रक्षा होनी ज़रूरी है.

"इमारी कांग्रेस ने यह दिखा दिया है कि तमाम दुनिया की औरतें एक दूसरे की मित्र हैं.

''इस यह प्रतिक्षा करती हैं कि इस मिलकर रहेंगी. और अपने बच्चों को जंग से बचाने के लिये, हथियार बन्दी कराने के लिये और दुनिया की तमाम कौमों में दोस्ती कराने के लिये बार बार मिलती रहेंगी.

"हमारे करोड़ों हाथ सारी जमीन पर फैल कर इनसानी दोस्ती और इनसानी मुहब्बत को मजबूत करते रहेंगे."

यह ऐलान 10 जुलाई सन् 1955 को लासेन में दुनिया की माओं की कांग्रेस में एक राय से पास हुआ. इस ऐलान की नक़लें दुनिया के बड़े बड़े देशों की सरकारों को और यू. पन. ओ. के दफ़्तर को भेजी गई. माओं की एक स्थाई कमेटी भी बना दी गई जिसका काम होगा दुनिया भर की माओं में दोस्ती को बढ़ाना और मजबूत करना और दुनिया भर के बच्चों का जग के खतरे से बचाए रखना.

हम इस कांगरेस की तजबीज करने वाली और इसमें शरीक होने वाली दुनिया भर की सब माओं और बहनों को दिल से वधाई दंते हैं. आज तक अमन के लिये जितनी कोशिशों की गई हैं और की जा रही हैं उनमें सबसे मुवारक, सबसे जबरदस्त और सबसे शुभ निस्सन्देह यही कोशिश है. मनुस्यृति में लिखा है:—"जहां नारियों की पूजा होती है वहां देवता आकर बास करते हैं." मुहम्मद साहब की एक मशहूर हदीस हैं:—"इसमें शक नहीं कि जन्नत माओं के कदमों के नीचे रहती है." इस शुभ लक्षन के बाद हमें पूरा यक्तीन है कि दुनिया अब नई जंग के खतरे में नहीं पढ़ सकती. یب کک منازا یه آدیمی پررا نہیں موا م تھیں نہیں نکی .

السب جیھوں کی عورتیں سے عداراً کہنا ہے بہنوں ! هم یہ نہیں چاھتیں کہ عدارے سب کے بیٹے ایک دوسرے کو قتل کریں ، هندن اپنے بیچوں کو سکھانا چائے کہ وہ سب دیشیں اور سب قوموں کے لوگوں سے پیار کریں ، هم اِس بات کی اِجازت نہیں دیے سکتیں کہ هنارے بیچوں کو ایک دوسرے سے تغرت اور ایک دوسرے کے ساتھ بدتنیوی کا برتاؤ سکھاکر اُن کے دلیں اور دماؤیں کو گفتہ کیا جارہے ،

''سب بعین نچھ کوہ گورنے ہوں' یا پیلے' یا کائے' ہواہر ہیں ، سب کے برابر کے حق ہیں ، سب کو جان پیاری ہے ، سب کی رکشا ہوئی 'فرزری ہے ،

"هماری کانگریش نے یہ دکھا دیا کہ که تنام دنیها کی عورتیں ایک دوسوے کی متر ہیں ۔

"م یہ پرتکھا کرتی ہیں کہ ہم ملکو رہینکی آور آپنے بھیوں کر جنگ سے بچھانے کے لئے آور دائیا کی نمام قوموں میں دوستی کرائے کے لئے بار بار ملتی رہینگی .

^{دا}همارے کروزون هاته ساری زمین پر پهیل کر انسانی دوستی رر انسانی محبت کو مضبوط کرتے رهیلکے .''

یہ اعلق 10 جولائی سن 1968 کو لاسین میں دنیا کی باؤں کی کانکریس میں ایک رائے سے پاس ہوا ، اِس اعلان کی مثل دنیا کے بتے بجے دیشوں کی سرکاروں کو اُور یو. اِین، اُو. کے دنتر کو بیہجی گئیں ، ماؤں کی ایک استبائی کمیٹی بھی نادی گئی جس کا کام ہوتا دنیا بھر کی ماؤں میں دوستی کو جنگ کے تحوں کو جنگ کے نصارے سے بچائے رکیا اور دنیا بھر کے بحوں کو جنگ کے نصارے سے بچائے رکیا ،

هم اِس کانگویس کی تعجیز کرنے والی اُور اُسَ میں اربک هونے والی دانیا بور کی سب ماؤں اور بہنوں کو دل سے دھائی دیتے هیں . آج تک آس کے لئے جانی دوشهں کی لئی هیں اور کی جازهی هیں آن میں سب سے مبارک' سب سے زبردست اور سب سے شبه نسندیت یہی کوشش ہے . شہردتی میں لکیا ہے:—''جہاں تاریوں کی پوجا هوتی ہاں دیوتا آکر باس کرتے هیں .'' محصد صاحب کی ایک شہرر حدیث ہے ہے۔'' اِس منیں تھک نہیں کہ جانت ماؤں نے تدمین ہے کہ بعد همیں را یقین ہے کہ تعدد همیں ورا یقین ہے کہ تعدد همیں ورا یقین ہے کہ تکھرے میں نہیں جانگ کے خطرے میں نہیں ورا یقین ہے کہ تکھرے میں نہیں دیا ایک کانی جانگ کے خطرے میں نہیں دیا رسانی ۔

सांस्कृतिक साहित्य

سانست تك ساهدين

हजरत मोहम्मद और इसलाम

श्वक-परिहत सुन्दरलाल, मृल्य-तीन रुपया इस सम्बन्ध में भारतीय भाषाओं में इस से सुन्दर कोई दूसरी पुस्तक नही

हजरत ईसा और ईसाई धर्म

लंखक-पन्डित सुन्दरलाल, मूल्य-डेढ कपया

महात्मा जरथुस्त्र ऋोर ईरानी संस्कृति

लं चक-विश्वनभरनाथ पांडे, क्रीमत-दो रुपया

यहदी धर्भ और सामी संस्कृति

लेखक-विश्वम्भरनाथ पांडे, क्रीमत-दो क्रया

प्राचीन मिस्र की सभ्यता और संस्कृति

लेख रु—विश्वमभरनाथ पांडे, क्रीयत—दो रुखा

गुमेर वाबुलं **ऋौर ऋसुरिया की प्राचीन संस्कृ**ति

लेखक-विश्वनभरनाथ धंडे, कीमत-दा राया

प्राचीन यूनानी सभ्यता ऋ र संस्कृति

लेखक-विश्वस्भरनाथ पांडे, कीमत-दे। रुपया

गंगा से गोमती तक

(प्रगतिशील कहानी संप्रह) लेखक-श्री मुजीब रिजवी, क़ीमत—दो रूपया

त्राग और श्रांस्

(भावपूनें सामाजिक कहानियाँ)

लेखक डाक्टर ऋख्तर हुसेन रायपुरी, क्रीमत छेढ़ रुपया

्कुरान ऋोर धार्मिक मतभेद

तेलक मौलाना अबुलकलाम आजाद, क्रीमत —डेढ़ रूपया

भंकार

(प्रगतिशील कविताओं का संप्रह) लेखः -रघुपति सहाय फिराक्त, क्रीमत - तीन रुपया

حضوت محمد اور إملام

ليه ك - پندت سندر لأل موليه - تين روپيه

اسلام کے پیغمدر کے سمبندہ میں بعارتیہ بھائاؤں میں اِس سے سندر کوئی دوسری پستک نہیں

حضرت عيسور اور عبسائي دهرم

ليعهك - ينذت سندر لال مواهم - قيزه روبيم

مهاقها زر تهستر اور ایرانی سنسکرقی ليهك - وشوماهر فاله يافداع في قيمت در روييه

یهودی دهوم اور سامی سدسکوتی لیکنک رشرمهر ناتو باندے نیست در روپیه

پراچین ، صر کی سبهیتا اور سنسکرتی اینهک و روپیه

سهبر ' بابل اور اسوریا کی پر اچین سنسکرتی

لیکھک -- رشومبھر ناتھ یانڈے " قیمت -- دو رویع

دراچین بونانی سبهیتا اور سنسکرتی ایکیک رویه باندے ناتم باندے

گنگا سے گومتی ڈک (پرگتی شیل کہانی سفتوہ)

ليكهك - شرى منجيب رضوى تيمت - ن رويية

أگ اور انسو

(بهاؤپورن سمآجک کهانیال)

ليكهك - قائم اختر حسين رائه پورى فيمت - قيره رويه

قرآن اور دهارمک معابهید

ليكهك مولانا أبركلم آزاد ويمت تيمت تيزه زويه

(پرگتی شیل کویتاؤں کا سنکرہ)

المكهك -رگووپتى سائم فراق ، قيمت - تيس روپه

मिलने का पता ملنے کا یتھ

हिंदुस्तानी कलचर सोसायटी उर्मे अध्या अध्या

145 متم كنص العآباد

راه اعراه راه

कलचर पर हर तरह की कितावें मिलीने का एक बड़ी केन्द्र--पाठक हिन्दीं, उहू, ' अधे कि देंगी। प्राथित में श्रंग्रेजीं की अपनी मन-पसन्द कितायों के लिये हमें लिखें।

ं हमारी नई किताबें

महात्मा गान्धी की वसीयत

(हिन्दी और उद्में) लेखक-गान्धीबाद के माने जाने विद्वान : श्री मंजर अली संस्ता सके 225, क्रीमत दो रूपया

गान्धी वावा

(बच्चों के लिये बहुत दिलचस्य किताब) लेखिका-मुदसिया जैदी भूमिका-पिन्डत जवाहरलाल नेहरू माटा काराज, मोटा टाइप, बहुत-सी रंगीन तसवीरें दाम दो रूपया -:0:-

पंडित सुन्दरलाल जी की लिखी किताबें

गीता और करान

275 सके, दाम ढाई रुपया

हिन्दू मुसलिम एकता

100 सफ़े, दाम बारह आने

महात्मा गान्धी के बलिदान से सबक्र

क्रीमत बारह श्रान

पंजाब हमें क्या सिखाता है

क्रीमत चार आने

बंगाल ऋोर उससे सबक्र

क़ीमत दो आने

هندی گهر

الجر پر هر طرح کی کتابیں ملنے رںو' انگریزی کی من پسند کتابوں کے ئے دمیں لکھیں.

هاری نئی کتابیس مهاتها گاندهی کی وصیت

(هندی اور آردو میس) لیکھذے۔۔ گاندھی وال کے ماقے جانے ودوان: شوى منظر على سوخته صفحے 22% فیمت در روید

كندهي بابا

(بنچرں کے اللہ بہت دانیسپ کتاب) ليكهكا-قىسية زيدى بهوه كاسيندت جواهر ال تهرو موتًا كَانَدُ مُوتًا تَانُبُ ، بهت سي رفكين تصويريس دأم دو روپيه

پندت سندرال جي کي لکھي نتاہيں

گیمًا اور قران 975 صنعهٔ دام تفانی روپیه

هندو مسام ایکتا 100 منحہ دام بارہ آنے

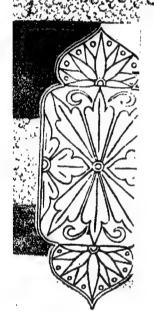
مہاتما کاندھی کے بلیدان سے سبق

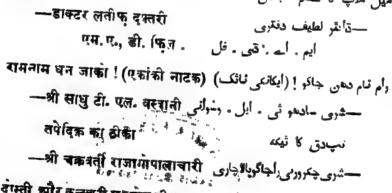
پنجاب همیں کیا سکھاتا <u>هـ</u>

بنگال اور أس سے سبق

المناستاني كليجر سوسائتي

145 متمى كنبم التآباد

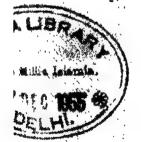




—डाक्टर भूपेन्द्रनाथ दस

मेल मिनाप का संगम-वंगाल

धर्म और राजनीति



—श्री व्लेडिमित श्राकोवलेखः । وليتيمير باكورليو इसके अलावा देस विदेस के मसलों पर हमारी राय में जरूरी सम्पादकी नोट دیس بدیس کے مثلوں پر ہماری رأئے میں ضروری سمیادگی نوف



बनी कलचर सोसाइटी, इसाहाबाद कि अंग उ



NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

Editorial Board

Dr. Tara Chand M.A., D. Phil. (Oxon)

Mahatma Bhagwan Din

Dr. Syed Mahmud, M.A., Ph.D., Bar-at-Law

Pandit Sundarlal

Bishambhar Nath Pande

Editor-in-Charge

Bishambhar Nath Pande

Asst. Editors

Suresh Rambhai Mujib Rizvi

Annual Subscription

Inland Rs. 6/Foreign Rs. 10/Single Copy As. /10/- only

Can be had from -

Manager, NAYA HIND

145, MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3.



जिल्द 20 باد नम्बर 5



नवम्बर 1955 भूभू

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी उर्गाण अध्य अध्य अध्य १४५ १४५ भट्टीगंज, इन्नाहाबाद

नवस्वर 1955 प्रम्भू

क्या किस से	सका 🖘 🗸		فيوهد	یا کس سے	
), करयान जात्री (कविता)				کلهان جاتری (کریتا)	.1
श्री गुन्बन्त मेहता	•••	251	***	سسشرم گنونت مهتا	
2. धर्म भीर राजनीति				دهرم اور راج نهتى	.2
- डाक्टर भूपेन्द्रनाथ दत्त	•••	253	•••	ــــدا کٹر بهرپهندرناته دت	
 मेल मिलाप का संगम—चंगाल 				میل ملاپ کا سنگمبنگال	.8
—बाक्टर लतीक दक्तरी एम० ए०, बी०	फ़िल०	266	•••	ــــــــــــــــــــــــــــــــــــــ	
4. रामनाम धन जाको ! (एकांकी नाटक))			رام نام دهن جاکو! (ایکانکی ناٹک)	.4
—श्री साधु टी० एतः वस्त्रानी	81#	270	••	ــشری سادهو تی . ایل . وسوانی	
 रक्तंत्रता की यात्रा की तीसरी पीढ़ी 				سوتنترا کی باترا کی تیسری پیزهی	.5
—लेखक—भी मगन भाई देसाई •				ليكهت—شرى مكن بهائى ديسائى	
—श्रनुवादक—कनुभाई-नानालाल पढेल	# 91	274	•••	انروادک-کنو بهانی ناتالال پتیل	
6. तपेदिक का टीका				تپائق کا ٹیکه	.6
भी चक्रवर्ती राजागोपालाचारी	•••	277	***	ـــشرى چ ېرورتى راجاگوپالچارى	
7. शहस्मद साहब की कुछ हदीसें				محمد ماهب كي كنه حديثين	.7
— अनुवादक श्री मुजीव रिज्बी	***	2 93	***	ــــاقېوادک شری منجهب رضوی	
 दोस्ती और कलचरी सहयोग की राह पर 	•			درستی اور کلنچری سهیوگ کی راه پر	.8
भी मोडिमिर माकोबलेव	***	299	•••	شرى وليتمهميريا كروليو	
'9. हमारी राय				هماري رائم	.9
श्री बुलगानिन भौर श्री खुशचेव भारत				شری بلگانی أور شری کهرشچیو بهارت	
में—ंगुन्द्रलाल-				مينسندرال ،	

شری گلونت مهتا

भी शुन्यन्त बेहता

दर दर धूमे दीन हुलारा घर घर गूँजे नारा, "दे दो इसको भूमी ध्यपनी करता हूँ बँटवारा।" भाई, करवा हूँ बँटवारा!

कीन दे दुक्ला पत्तला बूदा ज्ञम्बी डाड़ी बाला ? जाठी भामें डगमग चलता छोटी भोती बाला ? बापू की परछाई' का सा किसने रूप सँवारा ? डाँ. किसने रूप सँवारा !

क्या कहता है सबके आणे चढ़ती जुल्कों वाला ? "मैं भी एक तुम्हारा बेटा, मैं भी हिस्से वाला !" "दे दो मुक्को मेरा हिस्सा"—कहकर हाथ पसारा ! भई, कहकर हाथ पसारा !

एकड़ ख़त्तिस कोटी भूमी हरी भरी अलबेली; "सप्तम हिस्सा करो हवाले भरदो मेरी मोली !" आजादी भँगड़ाई लेती होता स्वर्ण सबेरा ! हाँ, होता स्वर्ण सबेरा !

क्यों चाहे है भूमि हमारी भूमी का मतवाला; धाव, हवा धीर धरती का है हर कोई हक्तवाला। एक नज़र से सबको देखे सबका सिरज़न हारा। भई, सबका सिरजन हारा!

कृषकों, मज़दूरों, दुक्षियों और दीन दलित का प्यारा; वेवस, मोदताजों, मास्मों की आँखों का तारा ! मानवता की भूति किर रहा दर-दर माँगन हारा ! हाँ, दर-दर माँगन हारा !

कीन यगाना, कीन विगाना १ सबकी गले लगाना ! इनसानी असलस का देखी कैसा वाना बाना ! रौरान करती है भारत को नव प्रकारा की घारा ! भई, नव प्रकारा की घारा ! در در گهرمے دینی دائرا گهر گهر گونتچے نمرا؛ ''دے دو هم کو بهرمی اپنی کرتا هوں بناتوارا ،'' بهائی' کرتا هوں بناتوارا !

کیا کہا ہے سب کے آگے اُرتی ذائیں والا ؟ میں بھی حصے والا!" میں بھی حصے والا!" "دیدو مجھکو میرا حصہ" ۔۔ کہکو ہاتھ پسارا! ۔ بھٹی' کہکو ہاتھ پسارا!

ایکو چهتیس کوئی بهومی هری بهری البیلی؛
دسپتم حصة کرو حواله بهردو سوری جهولی!
آزادی انکوائی لیتی هوتا سورن سویرا!
هان؛ هوتا سورن سویرا!

کیوں چاہے ہے بہوم هماری بهومی کا متوالا؛ آپ' هوا اور دهرتی کا هے هر کوئی حتی والا . ایک نظر سے سبکو دیکھے سب کا سرجی هارا . بهٹی' سب کا سرجی هارا !

کرشعرں' مزدوروں' دکھیوں اور دین دلت کا پیارا؛ بےبس' محتاجوں' معصوموں کی آنکھوں کا تارا ! مانوتا کی مورتی پھر رہا در در مانکن ھارا ! ھاں' در در مانکن ھارا !

کہی یکانا کوں بگاتا ؟ سپ کو گلے لگاتا ! انسانی اطلس کا دیکھو کیسا تاتا باتا ! روشن کرتی ہے بھارت کو تو پرکاش کی دھارا ! بھٹی ٔ تو پرکاہی کی دھارا ! वत का कसको ज्यान नहीं है धुन है मानवता की देख रहा है सह जग उसमें ऐसी काँकी बाँकी ! माली और समाजी काया चला पलटने हारा ! हाँ. चला पलटने हारा !

चर बैठे गंगाजी आई' फिर काहे की देरी ? मुँह ना मोड़ो, दिज ना तोड़ो, आशा लगी घनेरी ! डोल रहा है डगर-डगर बाबन रूपी बनजारा ! बाबन रूपी बनजारा !

गाँव-गाँव गोकुल वन जाये प्रामोद्योग बढ़ाओ; सर्वोदय कस्याग् मार्ग में आयो क्रदम मिलाओ ! जीवन-लक्ष्मी पार लगेगी रामहि खेवन हारा! भई, रामहि खेवन हारा!

भूमि, माम, सम्यक्ति दान से नया समाज बनेगा; बर्गदीन, शोषण बिद्दीन बद्द चिन्ता सभी हरेगा! भारत की क्रिस्मत का तारा सन्त विनोबा प्यारा! भई, सन्त विनोबा प्यारा! دهن گا آئی کو بھیلی نہیں ہے دھی ہے مانوں کی ' دیکھ رہا ہے سب بھگ اس میں ایسی جبانکی بانکی ا مانی اور سیاجی کایا چلا پلانے عارا ا هاں چلا پلانے عارا ا

گهر بینتیم گنگا جی آئیں پهر کاف کی دیری ؟ منه لا مرور' دل نا ترور' آشا لکی گینیری ! دُول رفا گھ ذگر ذگر بارن روپی بلجارا ! بارن روپی بلجارا!

گوں گوں گوکل بن جاتے گرامہدیوگ بوھاؤ ؛ سرودیئے کلیان سارگ میں آؤ قدم ساؤ ! جیون لکھمی پار لگیگی رام ھی کہیون ھارا ! بھٹی' رام ھی کہیون ھارا !

یهرمی، گرام، سبهتی دان سے نیا ساج بنیکا ؛ ورگ هین اور شوش وهین ولا چنتا سبهی هریکا ! بهارت کی قسمت کا تارا سنت وتوبا پیارا ! بهتی، سنت وتوبا پیارا !

700 PAGES, 32 ILLUSTRATIONS 2 COLOURED MAPS

"CHINA TODAY"

PRICE

BY PANDIT SUNDARLAL

Rs. 780

A vivid narration of the glorious and wenderful achievements of New China...A picture of China which is both convincing and authentic...the best book that has come out so far on New China in the English language ...the most objective in approach and comprehensive in treatment.

—National Herald, Lucknow.

Highly informative...throws vivid light on conditions obtaining in that country...a book which deserves to be widely known

—Leader, Allahabad.

Encolopsedic...characterized by some observation of detail as well as by...instinctive grasp of the fundamental perspective...To read it is veritably like accompanying the Mission on its thrilling voyage of discovery in New China.

—Bitz, Bombay

A mine of information which gives a picture of China as nothing else dose...the best guide to New China...Those who would like to understand what is happeing in New China can do not better than to study it.

—Bharat Jyoti, Bombay

The wealth of information it gives on China new and old...makes fascinating reading...is comprehensive and informative and must therefore interest all students of public affairs.

—Indian Express, Madras

China Today is an eloquent tribute to his (Pandit Sundarial's) shrewd understanding of men and matter... brings to light the mighty endeavour of the Chinese People to rebuild their great nation on firm new foundations for a tomorrow which is theirs.

—Vigil, Delhi.

डाक्टर भूपेन्द्रनाथ द्त्र

आज इस क्षेत्र में जो बारों में कहने जा रहा है इससे

पाठकों के दिल में बेसजी पैदा होगी. लेखक इसलिय बदनाम है कि वह 'नई बातें कहता है' और खास तौर पर हिन्दुश्रों के बारे में इतिहास के ख़िलाफ बात कहता है. यह बात में सन् 1925 से सुनता चा रहा है कि लेखक बहत बरस तक विदेशों में रहकर अशासीय विद्या सीखकर इस देश में उसका प्रचार कर रहा है. पहले लेखक इस इलजाम का राज नहीं समक पाया. उन्नीसवीं सदी में जो किताबें इंगलिस्तान में छपीं वह इस समय तक कलकत्ता विश्वविद्यालय के गले का फन्दा बनी हुई हैं, जबकि लेखक ने यूरोप और अमरीका में बीसबी शताब्दी में तालीम पाई है. इसीलिये शायद लेखक और कुछ पाठकों के बीच में लाई पैदा हो गई है.

इस अनुष्ठान (Phenomenon) के मुताल्लिक लेखक के पास एक नजीर है. श्री प्रमथनाथ चौधरी (बीरवल) ने जमींदारी प्रथा का जिक्र करते हुये कहा था- "आजकल की अर्थतीतिक (इस्तसादी) व्यवस्था देखकर लोग सोचेंगे कि यह बंगाल की हमेशा की व्यवस्था है. वे यह समक न पायेंगे कि मीजूदा अथनीतिक व्यवस्था अंगरेजों की रची हुई है. कोई भी समाज अपनी अर्थनीति के ऊपर खड़ा रहता है. मीजूदा भारत की अर्थनीति अंगरेजी दुकुमत ने रची थी और उसे मजबूत किया था. हमारे सामने तो अंग-रेजों की बनाई हुई तसवीर ही है. आम जनता के सामने यह तसवीर रहती है. इसीलिये अंगरेजों तथा यूरोपीय यालिमों ने भारत के समाज, धर्म, अर्थनीति, इतिहास श्रादि विषयों के ऊपर जो विचार जाहिर किये हैं छन्हीं को हम भारत वासियों ने बिना किसी विरोध के 'वैदिक और सनातन' मानकर गले से उतार लिया है और उन्हें अपने पुरलों के कारनामे मानने लगे हैं." हाँ दो-चार खोजियों और छान बीन करने बालों के ऊपर यह इलजाम नहीं लगाया जा सकता. बल्कि उन्हीं की खोजों की बिना पर भारत के इतिहास का नया रूप निखर रहा है. अस्ल बात यह है कि लम्बी गुलामी ने भारतवासियों के दिल और दिमारा पर परदा डाल दिया था. ने गुअरे जमाने के अपने वहापन और अपनी करूचर की मूल गये थे. पुराने जमाने के विजेताओं का क्रायदा था कि किसी मुस्क का जीवने के

تأكر بهريينس ناته دس

آج اِس ایکھ میں جو باتیں میں کہنے جا رہا ہوں اس سے بہت سے پائیمن کے دل میں بے صبری پیدا ہوگی . ليعك إس لله بدنام ه كه وه النكى باتين كهنا هـ، أور خاص طور پر ھندوں کے بارے میں اِتہاس کے خلاف بات کہنا ہے . یہ بات میں سی 1925 سے سنتا آ رہا ہوں که لیکیک بہت برس تک ودينفون مين رة كر الشاسترية وديا سيكهكر إس ديف مين أس كا يرچار كر رها هـ . بهل ليعهك إس الزام كا رأز نهيل سنجه بايا. أنيسويس صدى ميس جو كتابيس إنكلستان ميس چهپيس وه أِس سیٹے تک کلکتہ وشردباللے کے گلے کا پہندا بنی موٹی میں' جب که لیکیک نے پورپ اور امریکه میں بیسویں شکابدی میں تعلهم پائی ہے ، اسی لئے شابد لیکھک اور کچے بائیکوں کے بیجے میں کھائی بیدا ھوگئی ہے۔

اِس انوشتهان (Phenomenon) کے متعلق لیکھک کے يلس أيك تظهر هـ . شرى پرمته ثاته چردهرى (بهرال) ا زمینداری پرتها کا ذکر کرتے هوئے کہا تھا۔۔۔"آجکل کی اُرتھ ٹیٹک (اختصادی) روستها دیکهکر لوگ سوچینکه که یه بنگال کی هدیهه کی ویوستها هے۔ وے یه سمجه له یائینگے که موجود» ارتھ قبیتک ویوستھا انکریزوں کی رچی ہوئی 🛳 . کوئی بھی سماج اپنی ارته نیتی کے اُوپر کھڑا رهنا هے ، موجودہ بھارت کی ارته لیتی انکریزی حکومت نے رچی تھی اور أسے مضبوط کیا تھا۔ همارے سامنے تو انگریزوں کی بنائی هوئی تصویر هی هے ، عام جنتا کے سامنے یہ تصویر رهتی هے ، اِسی لئے انگریزوں تنها پررویه عالموں نے بھارت کے سماے دھرم اُ اُربَهِ نیتی اُ اِتهاس آدی وشہوں کے آوپر جو وچار ظاهر کئے هیں اُنہیں کو هم بھارت راسیوں لے بنا کسی ورودھ کے 'ویدک اور سناتن' مانکو گلے سے آتار لیا ھے اور اُنھیں اُپنے پرکھوں کے کارفامے مانٹے لکے ھیں ،" ھال دو چار کھرجیوں اور چھاں بین کرنے والوں کے اُورد یه اِلوام فیمن الایا جاسکتا ، بلکہ اُنہیں کی کہرجوں کی بنا پر بھارت کے إتهاس كا نيا رب نعهر رها في ، أمل بات يه هي كه لمبي غلمي نے بھارت واسیوں کے دل اور دماغ پر پردہ دال دیا تھا ، وے گزرے زمالے کے اپنے بڑپن اور آپنی کلنچر کو بھول گئے تھے ، یرالے زمانے کے رجیتاؤں کا قاعدہ تھا کہ کسی ملک کو جیتانے کے

بعد رسے لیکی کے پستانوں کو بھا ڈالٹے تھے اِس کا مقصد ن مينا تها كه أس معيض وأله أيله يجين أور كليم وسالمكي أيلي سانتا کو بھول جائیں . لیکن انگریؤ حاکس نے یہاں درسری نيتر الكالي . أنهيل في معدستان كي أوير قيامي حدمت كرني ع خیال سے اِس کی کلچر کو سنجھلے کی کوششیں شروع کیں۔ رے پنڈتوں اور مولویوں کی شرن میں گئے ، پرانی دھول بھری يرتهين كى كرد جهاركر ينقلس لے أنكريو حاكبوں كے سامنے يهم كها . انكويو ودوان أن كو پرهكر إس تتيجے پر پهولچے كه مندستانی صرف مذهبی پاکل هین . أنهین دیش أور رأے نیتی کی کوئی جانکاری ته تھی۔ کیا هسملا کی دور مسجد تک وهی حالت همارے بلدتوں کی ودیا کی تھی، منجھلے زمالے کے ھندستلی میں پرتھکریاوادی (تنزلی پسند) پروھٹوں لے جو نبندہ اکمے اُنہیں پندت لوگ دھرم اور سالے کے سبندھ میں براماتک (مستند) مان کو آنکی عزت کولے لکه . دیشی بیاشاؤں میں اکھی راماین آور مہابہارت کے قصے کہانیاں اِنہاس ارر رائے تیتی کی پرامانک بستک مانی جانے اکھن اور آس دن نک آئی جاتی رهیں ،

جو بھی عوا کال کا پہھا گھوستا گیا ، دور دکیوں بھارت سے ایک ایک کر پراچین پرتهان قعونزه قعونزهکو روشنی میں ائی جانے لگیں ، آن پرتیبوں کے دیکھنے کے بعد اِنہاس کے متعلق هماري رائے ميں بھي تبديلي هونے لکي ، هم أينے بجهن سے می جانکیہ نام کے ایک شخص کا نام سنتے اُرف تھے ۔ لیکن بیسویں صدی میں ایک دن سوبرے اچانک آکوٹلیت کی ارتو نيتي المك أيك مولى راجنيتك بستك روشني مين أثى ، اس بستك لے ديھى أور ولايتى بندتوں كے مصل كو دما ديا . وليتى يندتوس في سنبهل كو كها --- "يه مقابله تن بعد كى كتاب هم." بہلی بات تو یہ ہے که جو بھارتیہ پیز کے نہیجے بیٹھکر ناکسا داب كر أمل المل كور ته وم كها كوت رأجنيتك يستك لكهيس الم اس کے بعد بھارتیہ اِتہاس کی جہاں بھن کرنے والے بھارتیہ ودوانوں نے کہا که ادعوم شاسترا بھارتیوں کی ایک ماتر پستک نہیں هـ ارته شاستر انام كي ايك أور أونيج درجه كي يستك هي. رة دهرم شاستر سے بھی أرنجے درجے كى هـ ، ارته شاستر كى نین پستیں کے نام همیں ملتے هیں۔۔ایک کوئلیہ کی دوسری کامندک کی لور تیسوی شکر نیکیسار . اس پر بحث آئیی ک کولید کس زمانے میں ہوا ؟ کامندک کے مطابق موریوں کا شاس چالنے کے لئے می کوٹلیت و وشغو گیت نے یہ یستک اکمی . اُس کے بعد ڈاکٹر کاشی پرساد جانسوال لے اور انهک پرتیوں کے قلم کھیے نکالے بچو آج ملتی نہوں ۔ اِس کے بعد وانسواین کی ^وکام شاستر' نامک پستک کھیے کر نکالی

बाद वे वहीं के प्रस्तकालयों की जला डालते वे. इसका मक्रसद यह होता था कि उस देश वाले अपने बङ्ग्पन और गुजरे जमाने की अपनी महानता को मूल जायें. लेकिन अगरेज हाकिमों ने यहाँ दूसरी नीति अपनाई. उन्होंने हिन्दस्तान के ऊपर क्रयामी हुकुमत करने के खयाल से इसकी करूवर को सममने की कोशिशें शुरू कीं. वे पंडितों भीर मीलवीयों की शरण में गये. प्रानी धूल भरी पोधियों की गर्व माडकर पंडितों ने अंगरेज हाकिमों के सामने पेश किया. अंगरेज विद्वान उनको पढ़कर इस नतीजे पर पहुँचे कि हिन्दुस्तानी सिर्फ मजहबी पागल हैं. उन्हें देश और राजनीति की कोई जानकारी न थी. कहा है-'मुल्ला की दौद मस्जिद तक', वही हालत हमारे पहिलों की विद्या की थी. मंसले जमाने के हिन्दुस्तान में प्रतिक्रियावादी (तनज्जुली पसन्द) पुरोहितों ने जो निबन्ध लिखे उन्हें पंडित लोग धर्म और समाज के सम्बन्ध में प्रामाणिक (मुस्तनद) मानकर इनकी इप्जात करने लगे. देशी भाषात्रों में लिखी रामायण और महाभारत के किस्से कहानियाँ इतिहास और राजनीति की प्रामाणिक पुस्तक मानी जाने लगी और उस दिन तक मानी जाती रहा.

जो भी हो, काल का पहिचा घूमता गया. दूर दक्खिन भारत से एक एक कर प्राचीन पोथियाँ दू दू दू कर रोशनी में लाई जाने लगीं. उन पोथियों के देखने के बाद इतिहास के सुताल्जिक हमारी राय में भी तब्दीली होने लगी. हम अपने बचपन से ही चाणुक्य नाम के एक शस्स का नाम सुनते था रहे थे. लेकिन बीसवीं सदी में एक दिन सबेरे अवानक 'कौटिल्य की अर्थनीति' नामक एक मोटी राजनैतिक पुस्तक रोशमी में आई. इस पुस्तक ने देशी और विलायती पॅडिसों के महल को ढा दिया. विलायती पंडिसों ने सम्हल कर कहा-"यह मुकाबलेतन बाद की किताब है." पहली बात तो यह है कि जो भारतीय पेड़ के नीचे बैठकर नाक दाव कर 'माँ' 'माँ' करते थे वे क्या कूट राजनीतिक पुस्तक जिसोंगे!" इसके बाद भारतीय इतिहास की छान बीन करने बाले भारतीय विद्वानों ने कहा कि 'धर्म शास्त्र' भारतीयों की एक मात्र पुस्तक है, 'अर्थ शाख' नाम की एक भौर ऊँचे दरजे की पुरसक है. वह धर्मशास्त्र से भी ऊँचे दरजे की है. अर्थशास्त्र की तीन पुस्तकों के नाम हमें मिलते हैं-एक कौटिल्य की, दूसरी कामन्दक की छोर तीसरी शकनीतिसार, इसपर बहस उठी कि कौटिल्य किस जमाने में हुआ ? कामन्द्रक के मुताबिक मीयों का शासन चलाने के लिये ही कौटिल्य व विष्ण गुप्त ने यह पुस्तक लिखी. उसके बाद डाक्टर काशी प्रसाद जायसवाल ने और अनेक पोथियों के नाम खोज निकाले जो आज मिलती नहीं. इसके बाद बारस्यायन की 'काम शास्त्र' नामक पुस्तक खोजकर निकाली गई. इस प्रतक में 'खतने' (Cicumcision) का

बस्तेक है, वह दियान जान वह गाना और पहिली ने गी इसकी अवाक्षर रसा, इसके बाद महाकवि मास के 13 नाटकों को दक्षिया भारत के विद्वानों ने खोज निकासा. इन नाटकों से चस समय के भारतीय समाज, रामधन्त्र के बुद्ध ग्रीर महाभारत में वर्णित व्यापार के सुताल्लिक एक नई तस्वीर भाठकों के सामने रखी. इसके बाद दक्षिण मास्त भौर विज्यत में 'आर्थ मन्जुश्रीमूलकल्प' नामक एक इतिहास की पोथी प्रकाश में आई. इसके पहले विव्यक्ती लामा तारा-नाथ राय की जिस्की 'भारत में बीद धर्म का इतिहास' नामक पुस्तक स्रोज निकाली गई और उसका अंगरेजी में तर्जुमा भी हुआ, इन सब छान बीन और खोजों से पढ़े लिखे हिन्द्रस्तानियों की भारणा अपने देश के इतिहास और करवर के मुचारिलक करती. भारतीय इतिहास और संस्कृति पर लिखी एक इसरी पुस्तक 'बोस्तान' जिसे एक बौद्ध विद्वान ने लिखा है जिसका जर्मन में तो असवाद होगया लेकिन जो इस देश में अज्ञात रही. इसके बाद बंगाली विद्वान मधुरिक्षत द्वारा लिखी एक अर्थनीति सम्बन्धी पुस्तक का तिरवती अनुवाद हाथ लगा. इस देश के लागों को इस पुस्तक का भी ज्ञान नहीं है. बहुत सी पुस्तकें अभी तक सोजकर ढूँदी जा रही हैं. बहुत सी खास सास पोथियाँ एक दम से, मालूम होता है, नष्ट होगई - जैसे बृहस्पति श्रीर शकाचार्य की 'रखनीति' सम्बन्धी पुस्तक. जिन्होंने संस्कृत भाषा में रामायण और महाभारत पढ़ा है वे जानते हैं कि किस प्रकार योधा लोग बार बार बृहत्पति और शुक्राचार्य की दोहाई देकर युद्ध का संचालन करते थे. अगर 'रयानीति' पर ये पुस्तकें खोजकर दूँदी जा सकें को भारतीयों के युद कौशल को सेकर जो उपहास किया जाता है उससे हमें निजात मिल जाती.

नारद और काल्यायन की लिखी पुस्तकें भी आज तक लाइल्मी के अँधेरे में पड़ी हुई हैं. एक जर्मन परिष्ठत ने कहीं से 'नारद स्मृति' की एक कापी लोजकर उसका जमन भाषा में तरजुमा किया है, किन्तु काल्यायन स्मृति अब तक प्रकाश में नहीं आई. एक बार कलकत्ता विस्वविद्यालय के स्मृति के अध्यापक ने लेखक से दुख के साथ कहा था—"देखा, कात्यायन और नारद की स्मृतियां जनीन में दबी पड़ी हैं." लेखक ने जवाब दिया—"नारद स्मृति इतनी ज्यादा चरम पन्थी (radical) है कि आज का भारत भी उसकी शिक्षा को बरदाशत न कर सकेगा."

इसका कारख क्या है ? जब राजराक्ति और पुरोहितों की शक्ति एक साम जिलकर हिन्दुओं के हृदय पर चड़ी बैठी थी तब इन सब पुस्तकों से जनता की आंखें खोलने की क्या करूरत थी ? (चाखक्य, नारप, कास्यायन विचवा-विवाह, तलाक्त (Diverce) कोर किर से विवाह करने की व्यवस्था

أَنْهُمْ هَ ، وه رواج أَج أَنَّه كَيَا أَوْ يَلْتَدُونَ لِهِ فِي إِسْ فِي جھیا کو رکھا، اِس کے بعد مہاکوں بھاس کے 13 فالكون كو دكش يهارت كے ودوائين نے كھوچ لكا . أيو قائکیں سے اُس سید کے بھارتیہ سمایے والم چند کے یدھ اور مہابھارت میں ورنت ویایار کے متعلق ایک نثی تصریر پالھکوں کے ساملے رکھی۔ اِس کے بعد دکشن بھارت اور تبت میں اربع منجوشری مول کئپ انامک ایک آِتهاس کی پوتھی پرگاش میں آئی . اِس کے پہلے تبتی لاما تارا ثانه رانہ کی اکھی بھارت میں ہودہ دھرم کا اِتہاس' نامک ہستک کھوچ لکائی گئی اور اُس کا انگریزی میں ترجمہ بھی ہوا۔ اِن سب چهان سن اور کهرجوں سے پڑھے لکھے هندستانهوں کی دهارتا اپنے دیش کے اِتہاس اور کلنچر کے متماق بدلی . بھارتیہ اِتہاس اور ساسارتی در انهی ایک دوسری بستک 'پیستان جسے ایک ہودھ ودوان لے لئیا شے جس کا جرمن میں تو انوواد ھوگیا لیکن جُو اِسَ دَيْشِ مِينِ اكِياتَ رهي ، آسَ كَم بعد بنكالي ودوان مدهوردشت دواوا لعبى ايك اربه نيتى سبيدهى يستك كا تبتی انوواد هانه نکا . اِس دیش کے لوگوں کو اِس یستک کا بھی گیاں نہیں ہے ، بہت سی پستیں ابھی نک کھرے کر قەولۇھى جارىمى ھىلى ، بېت سى خاص يوتهيال ایک دم عا معاوم هوتا ها نشت هوگئیں سبجیسے برهسیتی اور شکراچاریه کی ارسیقی سمبلدهی بستک ، جنهوں لے سنسکرت بهاشا میں راماین اور مہابهارت یتھا هے وسے جانتے هیں که کس پرکار یودها لوگ بار بار برهسیتی اور شکراچاریه کی دوهائی دیکر یده کا سنتجالی درتے تھے ۔ اکر 'رن نیتی' پر یه پستدیں کهرے کر قعونوھی جاسکیں نو بھارنیوں کے یدھ دوسل کو لیکر جو آبہاس ليا جانا في أس سے هميں نجات مل جاني .

نارد اور کابھاین کی لکھی پستکھیں بھی آج تک العلمی کے اسمھرے میں پڑی ہوئی ہیں۔ ایک جرمن پندت نے کہھی سے اناردسرتی دی ایک کاپی دہوج در اس کا جرمن بیاشا میں ترجمہ کیا ہے دنتو کابھاین سمرنی اب بک پرکاش میں فہیں آئی ۔ ایکیا دیکتہ وہودیا ہے نے اِسمرتی کے ادبھیاپک بے لیمیک سے دای کے سانو دیا تھا۔ "دیکواٹ کابھاین اور تارد کی اِسمرتیاں زمین میں دبی پڑی ہیں ۔" لیکھک نے جواب دیا اِسمرتی اِندی زیادہ چرم پنتھی (radical) ہے ته آج

اِس کا کارن کیا ہے ؟ جب راج شکتی اور پروہتوں کی شکتی ایک ساتھ ملکر ہندوں کے هردئے پر چڑھی بیٹھی تھی تب اِن سب پستکوں سے جنتا کی انکھیں کھوائے کی کیا ضرورت تھی ؟ (چانکیف ٹارد ' کانیاین ودعوا رواہ متی (Divorce) اور پور سے رواہ کرنے کی ویوستہا

क्त है, नारह से जीजवानों के विवाह पर बहुत से बन्धन लगावे थे). इन स्टुतियों को इस निवन्धकारों ने प्रामाणिक सानना शुरू किया. बीद्ध तांत्रिकों के अलीकिक गल्प समृह की इसने भर्म भीर विज्ञान के आसन पर बैठाया. पुरोहित शुट के मुकाबले में हमने इन सब पुस्तकों को समाज की सनातन व्यवस्था कहकर मान्यता दिलाई और उन्हें विदेशी शासकों के हाथ में यह कहकर रखा कि यह हमारी संस्कृति की सुस्तनद पोथियां हैं. विदेशियों ने इन्हीं की बिना पर इमारी संस्कृति का इतिहास लिख कर इमारे सामने रखा. इसका नतीजा यह हुन्ना कि दुनिया की यह धारणा बन गई कि प्राचीन काल में हिन्दुस्तानी सिर्फ धर्म पागल (Religious Paranoiac) थे. धर्म को झोड़कर उनका दुनिया से और कोई नाता रिशता नहीं था. इसी धारणा के बश में होकर रूस के मनीषी टाल्सटाय ने डाक्टर तारकनाथ दास "An open letter to a young Hindu." (एक नीजवान हिन्दू के नाम खुला पत्र) लिखा-" तुम्हारे बुद्ध भौर कृष्ण के देश, तुन्हारे श्रादसा के देश में, दुन्हारे विवे-कानन्द और बाबा भारतीय बरीरह हिंसा के रास्ते पर लेजाकर भ्रॉत कर रहे हैं."

इसीलिये हमारा यह मक्ससद है कि धर्म और राजनीति का लोगों में ज्ञान बढ़े. आजाद भारतीय राष्ट्र को इसकी बड़ी जरूरत है. एक दल अभी तक पुरोहितों के हाथ में है. इसी बर्ग के हाथ में आज शासन का भार पड़ा है. आज यह अपने बुनियादी स्वार्थ कायम रखने की पात करते हैं. भारत की लोक परमपरा अहिन्साबाद की बार्ता को बहन करती हुई आ रही है. भविष्य में भी भारत को ऋहिंसा-वाद के क्रपर प्रतिष्ठित करना होगा. इसी के प्रतिउत्तर में Indian History Congress के पिछले अधिवेशन में महामहोपा-ध्याय पांडुरंग ने कहा था,—"अगर यही है तो हमें बारहवीं शताब्दी (तुर्की इमलों का जमाना) से लेकर 1921 (अहिंसा आन्दोलन आरम्भ काल) तक भारत के इतिहास को बिलकुल निकाल देना होगा. यहां पर यह सवाल उठता है कि जिस जाति ने सुदूर अतीत में रणनीति विषय पर पुस्तक लिखी हो, इजरत ईसा से तीसरी शताब्दी पहले राजनीति पर पुस्तक लिखी हां, उससे भी पहले कामसूत्र पर पुस्तक लिखी हो, किसी अजाने जमाने में गीता का इसरा अध्याय लिखा हो, फिर अरब देश से लेकर फिली-पाइन द्वीप समृह तक नी-आवादियाँ बसाई हों, जिसने भारत से लेकर फिलीपाइन द्वीप तक विशाल शैलेन्द्र साम्राज्य की स्थापना की हो, वह जाति क्या सिर्फ पेड़ के नीचे बैठकर, नाक दवाकर इजारों वर्षों तक केवल प्राया-थाम ही करती रही.

इसीलिये यह ज़रूरी है कि हम इस बात को जानें कि धर्म

ريد مون فره له فرواني له وراه يو برس م بندهن الله الله) . إن أسرتهين كو هم ليندهكارون ا براماتک مالنا شروع کیا ، بودھ تالترکس کے الوکک کلب اسمولا کو هم لے دهرم اور وگیان کے آسن یو بیٹھایا . بروهت گات کے مقابلہ میں هم لے اِن سب پستمیں کو سمانے کے سناتی ویوسیا کو کو مائیتا دائی آور آنھیں ودیشی شاسموں کے ماتھ میں یہ کہ کر رکھا کہ یہ هماری سنسکرتی کی مستند بتهیاں هیں ، ودیشیوں نے اِنہیں کی بنا پر هماری سنسکرتی كا إنهاس لكهكر هماري سابلي ركها . إس كا تتيجه يه هوا كه رنیا کی یه دهارنا بن گئی که پراچین کال میں هندستانی مرف دهرم باکل (Religious Paranoiac) ہے . دارم كو چهرزكر أن كا دانيا سے أور كوئى ثاتا رشته نهيں تها . إسى دھارٹا کے وص میں ھوکر روس کے منیشی ٹالستائے نے ڈاکٹر تاركناته داس كر An open letter to a young "Hindu (ایک نوجوان هادو کے نام کالا یتر) لکھا۔"تمھارے بدھ اور کرشن کے دیش تمہارے اھنسا کے دیش میں تمہارے ربدیکائل اور بابا بهارتی وغیر» هنسا کے رأستے پر لیجا کر بهرائت کر رہے میں ۔''

إس لله همارا يد مقصد ه كه دهرم أور راجنيتي كا لوكين میں گیاں بڑھے ، آزاد بھارتیہ - راشٹر کو اِس کی بڑی ضرورت ھے ایک دل ابھی تک پروہتوں کے ماتھ میں ہے ۔ اِسی ورگ کے ماتھ میں آبے شاسی کا بہار پڑا، ہے . آبے یہ اپنے بنیادی سرارته قایم رکھنے کی بات کرتے میں . بھارت کی لوک پرمیرا المنساراد کی وارتا کو وهن کرنی هوئی آ رهی هے . بهوشیه میس بھی بھارت کو اھنساواد کے اُوپر پرتشاہت کرنا ھوا ۔ اِسی کے برتی از میں Indian History Congress یک پیچالے ادهپریشی میں مہامہوپادهیائے پائڈورنگ نے کہا نھا'۔۔"اگر یہی الله تو همیں بارهویں شتابدی (ترکی حملوں کا زمانه) سے لیکو 1921 (اُلفنسا أندولن أرميه كال) نك بهارت كے إنهاس كو بالكل نكال دينا هركا . يهال در يه سوال أثبتا هـ كه جس جاتي نے سرور اتیت میں روانیتی وشائے پر پستک لیمی هو حضرت عیسی سے تیسری شتاہدی پہلے راجنیٹی پر پستک لکھی ہو' اُس ے بھی پہلے کام سوتر پر پستک کھی ہوا کسی آجائے زمائے میں کیتا کا دوسرا ادعیائے لتھا ہو' پھر عرب دیش سے لیکر نليهائي دويب سموة تک تو - آباديال بسائي هول جس لے بهارت سے لیکر فلیپائن دویپ تک وشال شیلیندر سامراجیه کی استہاپنا کی موا وہ جاتی کیا صرف پیر کے نہیجے بیٹیکرا تاک دباکر موارس ورشوں تک کیول پرانایام هی کرنی رهی -

اِسی لٹے یہ ضروری ہے کہ ہم اِس بات کو جاتیں که دھوم

के साम राजनीय का जमा जोगाजांग है. जिस शरह मंगले पंगाने में बार-बार निवन्धकारों ने हमारे इतिहास को माझूल दल से रता, वसी तरह कांज भी राजनीविक पुरोहित ने भी के हाथ से वचाकर हमें भारत के इतिहास के यथार्थ स्वरूप को सामने रताना है.

जंगरेची में एक कहाबत है कि, "Beligion follows the Llag" यानी पर्म राजशांक के पीछे-पीछे चलता है. पुराने जमाने से लेकर हाल तक जमाने का वहीं इस्तूर रहा है, जनवा जिस शासन के मावहत रहती है बसी शासन के बीच में अपनी जिंदगी में स्कृति पाने के लिये राजा का ही वर्म महत्त्व करती है.

हम बंगाल को ही लें. कितनी ही बार बंगाल के लोगों ने अपने मजहब को बदला है. मिस्र और ईरान में भी यही अनुष्ठान (Phenomenon) रहा है. तारीख को अगर आप पठाकर देखें तो पता चलेगा कि किसी देश को जीत कर विजेता हारे हुये लोगों का धर्म नष्ट कर देते हैं. उसके परचात् उनकी भाषा में तब्दीली करने की कोशिश करते हैं. प्राने जमाने में ईरानी विजेता कह (Cyrus the (dreat) बेबीलोन को जीत करके वहां के मन्दिर की देव-मृतिं लेकर अपनी राजधानी परसपोलि ले आया था. उसके लड़के कैम्बीसस ने मिस्र को जीतकर वहां के मन्दिर के पवित्र नन्दी का वध किया था. सिकन्दर ने ईरान को जीत कर पारसियों की धर्म पुस्तकों को नष्ट करवा दिया था. अरबों ने उत्तर-परिवम भारत के अन्दर क्रंधार नगर को जीतकर मिया-मियाक्यों से जड़ी हुई बुद्ध मूर्ति को नष्ट कर दिया था. उसके बाद ईरानी और तुर्क मुसलमानों ने भारत के हिस्सों को विजय करके बुद्ध और दूसरी बौद्ध समृह की मृर्तियों को विष्वंस किया था. वामिया (अफगानिस्तान) की गुफा में रहने वाले बौद्ध भिक्ष कों ने भागकर खोतन में शरण ली. उन्हीं की कोशिशों से पूर्वी तुर्किस्तान (मौजूदा सिंकियांग) और परिचम चीन की (हजार बुद्धों की गुफा) में अद्भुत मूर्ति कला ने जन्म लिया. यह मूर्ति कला भारत के इतिहास की शुष्त काल की कला का बहुत सुन्दर तमृता है. इसके बाद के तुर्क आक्रमणों के फलस्वरूप अक्रगानिस्तान के हिरात से लेकर पूर्वी बंगाल के चटगाम तक बहुत से पूजाघर घूल में विखर गये. कहते हैं कान्य-इन्ज नगर में 10 हजार मन्दिर थे. कान्यकुन्ज नगर की ज्वस्रती को देखकर महमूद गजनवी हैरान रह गया. उसने कान्यकुरज के नमूने पर गजनी का शहर आबाद करने की योजना बनाई, इसीलिये वह यहाँ से बहुत से कारीगरों को ले गया. राजनबी के हमले के परचात् उत्तर भारत की सैकड़ों बरस बसी हुई मराहुर राजधानी कान्यकुरज (क्रमीज) भाज सुनसान नगरी बन गई है. दो-एक जगह मिट्टी के देर

سال رأم لیتی کا کیا جوگا جوگ هن جس طرح منجول وسالی می بار بار نبندهکارس نے همارے اِتهاس کو معقول قطاک سے اُن بار بار بار بیتی اِنجاب کے ماتھ سے اُن میں بیارت کے اِتهاس کے یتھارتے سروپ کو ساملے رکھا

انکریزی میں ایک کہارت کے که 'Religion" انکریزی میں ایک کہارت کے کہ 'Religion" بنجے پہنچے پہنچے پہنچے بنجے نام ۔ پرالے زمالے سے ایکر حال تک زمالے کا یہی دستور رہا ۔ جنتا جس شاس کے ماتحت رہتی کے آسی شاس کے میں اسلام ایکی زندگی میں اِسپورتی پانے کے لئے راجہ کا می برم گرھن کرتی ہے ۔

ھم بنگال کو ھی لیں ۔ کتنی ھی بار بنگال کے لوگیں نے م مذهب كو بدلا هے . مصر اور آيران ميں يهي يہي انوشتهان Phenomenor رها ه . تاريم كو اگر آپ آنهاكر ديكهين یته چلیکا که کسی دیش کو جیت کر وجیتا هارے هوئے لوگوں دھرم نشت کردیتے ھیں . اُس کے یشجات اُن کی بھاشا ہی تبدیلی کرنے کی کرشش کرتے میں ، پرالے زمانے میں رانی رجیتا کرر (Cyrus the Great) بیباری نو جیت کے وهاں کے مندر کی دیورورتی لیکر اپنی راجدهاتی سهولی لے آیا تھا۔ اُس کے لوکے کیمبیس فے مصر کو جیت کر الی کے مندر کے ہوتر نندی کا ہدھ کیا تھا ، سکندر نے ایران کو بیت کر پارسیس کی دهرم پستکس کو شش کروا دیا تھا۔ بیں نے آتر یشچم بھارت کے اندر قلاھارفکر کو جیت کر ملی انکیوں سے جوی هوئی بدھ مورتی کو نشت کردیا تھا ۔ اُس کے ید ایرانی اور توک مسلمانین نے بھارت کے حصوں کو وجئے رکے بدھ اور دوسری بودھ سموہ کی مورتیوں کو ودھوٹس کیا ا ، ياميا (انهانستان) كي كيها مين رهاء واله برده بهكشون ، بهاک کر ختن میں شرن لی ، اُنہیں کی کوششوں سے پورری رکستان (موجوده سنکیانگ) اور پشتچم چدن کی (هزار رهوں کی گھھا) میں ادبیت مورتی کا لے جنم لھا ، یہ مورتی لا بہارت کے اِتباس کی گیت کال کی کلا کا بہت سادر نمونہ ہے اِس کے بعد کے ترک آکرمنوں کے پہل سروپ انخانستان کے هرات سے لیکر پوروی بنگال کے چٹگام تک بہت سے پوجا گھر یمول میں بہر گئے ، کہتے هیں کانیمکبیج فکر میں 10 هوار مندر هـ . كاتيعكبيم نكر كى خوبصورتى كو ديكهكر محصود غوترى حهران را گیا۔ اُس نے کانیدکریج کے نمونے پر غزنی کا شہر آباد ارتے کی یوجنا بنائی ، اِسی اٹھ وہ یہاں سے بہت سے کاریکروں کو ے گیا . غزنری کے حملے کے پشتھات اُتر بھارت کی سیکورں رس بسی هوئی مشهور راجدهانی کانیهکیم (تنبی) لے سنسان تکری بن کئی ہے . در ایک جکه ملی کے قعیر स्त्रको पुरानी सान-मान को जाहिर करते दिखाई देते हैं. गाँधार जान अकसानिस्तान का हिस्सा बन गया है और स्त्राके पुराने शानदार इतिहास का लोग भूत गये हैं.

🗡 इसीक्षिये आज उत्तर भारत के रहने वाले एक आत्म-विस्मृति जावि हैं. चौदह शताब्दी पहले हमारे देश पर विवेशियों के समुद्री हमले हाने लगे, लेकिन भारतवासियों के क्रिये समुद्र यात्रा तक निषिद्ध करार दी गई. सीर प्रराख नामक प्रत्य में तिला है कि कलयुग में समुद्र यात्रा की मनाही रहेगी. गुप्त युग के बाद राजशक्त और प्रोहितों की राक्ति ने इकट्टा होकर भारत के जन-जीवन को लंगड़ा बना दिया था. उसके बाद इस देश के ऊपर विदेशियों के भाकम्या श्रस होगये और उन भाकमणों के फलस्वरूप भारतीय समाज बेबस और बेदम होगया. बिदेशी इतिहास लिखने वालों ने लिखा कि भारतवासियों की यही दीनहीन दशा स्वामाविक दशा है और हमेशा की दशा है, उन्होंने लिखा कि भारतीय एक नीम-जंगली क्रीम है. इन लोगों को न ठीक से काना जाता है, न ठीक से कपड़े पहिनना जाता है, न इन्हें विद्योने का इस्तेमाल बाता है और न अच्छे मकानों में रहना चाता है. बिदेशियों ने ही इन्हें चोराा चप-कन पहिनना सिलाया. पार्वो में बूट जुता पहिनना सिखाया. पोलाब, पराठा, सीख कबाब, इलुका खाना सिखाया और बीमारी दूर करने के लिये हकीसी ब्रीवधि का व्यवहार करना सिंखाया.

और इस लोग हाहाकार करते हुये कहने लगे यही इमारी वैदिक आर्य सभ्यता है. चतुर पुरोहित वर्ग, अपनी पाती खुदगर्जियों के लिये, भारतीय सभ्यता के बारे में, जिसका उस समय 'हिन्दू संस्कृति' नाम पढ़ गया था, तरह वरह की रालत इत्तलायें जनता को देने लगा. इसीलिये कुल्लुक सट्ट ने वैदिक राज्द 'शिगु' की व्याख्या की. वह बाह्रीक (बलक) देश में पैदा होने बाली एक सब्जी है. बसे ब्राह्मण नहीं खायेंगे लेकिन शुद्ध बसे खा सकते थे. शकों ने 'सहमरण' का रिवाज जारी किया, लेकिन रघुनन्दन ने यह दावा किया कि यह बैदिक विधान है. यह भी कहा कि लम्बा कोट (वैदिक-आतका), चोता, चपकन, इजार, बूट, जुता वरीरा यवनों ने ईजाद किये हैं और अब भी भृद लोग पेसा विश्वास करते हैं. रामायण में जहाँ जहाँ 'परिच्छेद' शब्द जाता है उसकी ज्याख्या लोचन गोस्वामी ने की कि इसका मतलब 'अलङ्कार' है. और अन्य पंडितों ने येलान किया कि प्रलाब, कवाब और पराठा आदि साने की वस्तुयें धवनों और विदेशियों की देन हैं. अंगरेजी विद्या के पंडित की लिखी हुई मराहूर किताव 'अव्व-ए-वर्ट्' (Histery of Urdu literature) में लिखा कि 'रोटी' लक्ष्य इसने पुत्रगालियों के पास से पाया. इन देशमान्य विशिष्ट पंडियों की मुर्खता से भरी हुई बातों की नाप तोल कौन करेगा ? यह पंडित हैं कि मूद हैं इसका फैसला कीन करेगा ?

ں کی پولئی علی بان کو خام کر دکائی مید میں. سعار آنے اندانستان کا معمد بن گیا ہے اور اُس کے برائے شاندار باس کو فاقت جول گئے میں .

" ایسی للے آنے آلتر بھارت کے رہتے والے ایک آٹم وسوت جاتی ہر ۔ چیدہ شاہدی پہلے ممارے دیش یو ردیشوں کے سدری الله هول الي الوقي بهارت واسور كي الله سدر ياتوا عك عدم قوار میں کلی . اسور پران فاسک گرنته میں تعیا ها که یک میں سنور باترا کی مثلعی رهیکی ، گیت یک کے بعد ہے شکٹی اُور پروھٹوں کی شکٹی نے اکٹیا ہوکر بھارت کے جن يهن كو للكوا بنا ديا تها . أس كے بعد اِس ديش كے أوبر دیشوں کے آکرمی شروع ہوگئے اور آئی آکرمنوں کے پعل سروب ارتبه سالے بے بھی اور بردم هوگيا . وديشي إنهاس لكها، الیں لے اللها کے بھارت واسیوں کی یہی دین عین مثا وابهارک دھا ہے آور مدیشہ کی دشا ہے ۔ اُنہوں نے لکھا که بارتیه ایک نیم جنگلی قوم فی . این لوگوں کو نه تبیک سے تهانا ناها ته تهيك سه كهرت يبننا أنا ها نه إنهين بجهون كا ستمال أنا هـ أور له أجه مكانس مهن رهنا أنا هـ . وديشهون ۽ هي إنهون چوفه - چوکي پېلنا سکهايا . پاڙي مين بوڪ جوتا بننا سمهایا ، بالو، پراتها، سیم کبان، حلوه کهانا سمهایا أور یماری دور کولے کے للے حکیمی اوشدھی کا ویوهار کرتا سکھایا ۔

أور هم لوگ هاهاکار کرتے هوئے کہنے لکے یہی هماری ویدک ريد سبهئيتا هـ ، چتر يروهت ورك أيني ذاتي خود غرضين کے لئے بھارتیت سبھٹیتا کے بارے میں جس کا اُس سمر ^دھندو منسكرتي اللم يوكيا تها طرح طرح كي غلط أطاعين جلتا كو ابنے لگا ، اِسی لئے کلک بہت نے ویدک شبد اشکو کی ویاکھا ي . ولا والعليك (بلنم) ديش مين يبدأ هون والي ايك سَرَى هِ . أَعِم براهين تَهَين كهالينكي ليكن شودر أَم كهاسكتي ه ، شكول في السهمري كا رواج جاري كيا اليكن رگهرفندي في ة دعوى كيا كم يه ويدك ودهان هه . يه يهي كها كه لبها كوت (ريدك - أتكا) چوفعا چهكري [زار ، يوت ، چوتا وغيرة يولوس لے اِبجاد کئے میں اور اب سے مورم لوگ ایسا وشواس کرتے اين ، رأماين مين جهان جهان "يريجهيد" شبد أنا هے أسى لی ریافیدا لہجن گرسوامی لے کی که اُس کا مطلب النکار، ہے ، ر انید پنڌنوں نے اعلیٰ کیا که پلو ' کباب اور پراٹھا آدی کھانے لی وستوئیں یونی اور ودیشیوں کی دین هیں . انکریزی ودیا کے بندس کی لعبی هوای مشہور کتاب 'ایب اُردو' History) of Urdu Literature) مين لها كه 'بولي' لفظ هم نے پرتکالیں کے پاس سے پایا ، اُن دیک مانیہ وششت بندتس كي موركها سے بعرف هوئي باتوں كي ناپ تول كون كريكا ؟ 4 بنتات هين كه موره هين إس كا نيصله كون كريكا ؟.

पंक्रित सोग कहते हैं कि 'क्रान्सेंध्य वपनिषद' हैंसा से मातवीं सदी पहले जिल्ला गया. छान्दोग्य चपनिषद में लिला है कि यदि कोई बुद्धिमान पुत्र सन्तान हासिल करना चाहता है तो उसे "उश्चपंतीवन" कार्यात सांद्र के सांस के साथ चावल रॉब कर उसे खाना चाहिये ! प्रलाब का मौजूदा संस्कृत नाम 'पलान्न' है लेकिन पुरानी संस्कृत कितावों में पुलाव के लिये 'पलीवन' और 'बोवन माँस' नाम इस्तेमाल किये गये हैं. अरब देश में बाबल पैदा नहीं होता. ईरान में सिकन्दर के बक्त से बाबल का आयात (import) शुरू हवा. संस्कृत 'ब्रीहि' शब्द से पारसी 'ब्रीहिस' (Vries), 'बिर-यानी' वरीरह नाम फारसी, अरबी, सीरियन और अरमनी जवानों में लिया गया. वाद में ब्रीहि शब्द से ही यूरोवीय Rice, Reis, Riz नरीरह शब्द बनाये गये. उसी तरह 'शूल्य मांस' यानी सीख कवाब, 'कल्लुप्त मांस' यानी शामी कवाब (क्रीमा मांस का बड़ा), और फलों के साथ पोलाब स्राने का जिक्र चरक के शास्त्र में है. उसी तरह प्रोडास, पराठा, रोटी आजकल की रोटी के लिये इस्तेमाल होते थे. सन्ध्याकर नन्दी के ऐतिहासिक संस्कृत मन्थ 'रामचरित' में 'रोटिका' शब्द का उल्लेख आया है. ऊपर लिखे हवालों से उर्द इतिहासकार और पंदितों की अक्रल की नापजोख की जा सकती है.

बंगला में एक कहाबत है-'हाथी पांच और उसके ऊपर विष-फोड़ा.' उसी तरह हमारे कई विश्वविद्यालय के पंडितों का कहना है कि भारतीय आर्य उत्तरी यूरोप से आये, किन्त मैं जानता हैं कि वर्लिन विश्वविद्यालय के पंडितों ने नार्डिक (Nordic) की परिभाषा देते हुये कहा है कि नाहि क यानी लाल मेंह श्रीर भरे बाल बाजे लोग ही आर्य हैं. कुछ विश्वविद्यालयों के अध्यापकों का कहना है कि बाह्मण लोग ही नाहिकों के वंशधर हैं. इन्हीं विद्वानों के मुताबिक महली भात खाने वाले बंगाली कम्बोडिया (असल में कम्ब्रजिया) के रहने वाली 'मन-खेमर' जाति की सन्तान हैं. पराधीनता के अभि-शाप के रूप में हमारे विद्वानों के ये विचार भारतीय इतिहास और संस्कृति के लिये बेहद जहरीले साबित हो सकते हैं. जर्मनी के स्रोयारवर्क विश्वविद्यालय के संस्कृत के सम्यापक बा॰ फान ग्लासेनाफ (जो तीन बार भारत आ चुके हैं) ने लेखक की एक पुस्तक की समालोचना करते हुये लिखा 4-You give importance to Natzi propaganda (तुम नाजियों के प्रचार को अहमीयत देते हो). इसका जवाब देते हुये लेखक ने लिखा था-"पहले युद्ध के वाद हमारे कुछ भारतीय विद्यार्थी पढने के लिये वर्लिन गये थे. ये ही लोग भारत लौटने पर ऊपर के अद्भुत मत को विज्ञानिक सत् कहकर प्रचार करने लगे." पता नहीं इन

بندس لوك كباي هيل كد "بهاندوكيد أيشك عيسيل س ساترين مدى يبل لكها كيا . جهاندوگهه أينشن مهن لكها ه كه بدى كرئى بدهيمان يتر سلتان حامل كرنا چاهتا في تو أحد اکش یاودر ' ارتهات سائٹر کے ماٹس کے ساتھ چاہل راندھکر كها نا چاهيئه إ يالو كا موجود، سنسكرت نام "بالن الله ليكن برائي سنسترت کتابون ميں ياؤ کے الله فيلودن أور أودن مانس الله الستعمال كيئه كثه هين عرب الديش مهن جارل بیدا نہیں ہوتا ۔ ایران میں سعندر کے وقت سے چاول کا آیات (import) شروع هوا . سنسكرت الريهي شيد سے يارسي وريزس ' (Vries) أوريائي أ وغهرة ثام قارسي عوي أ سهرين أور أرسلي زبائين مين ليا گيا . * بعد مين وريبي شبد سے هي برربيته Rice, Reis, برربية Rize, Reis وغيرة شبد بنائي كئي أسى طرح اشوایه مانس یعلی سیم کباب الهت مانس یعلی شامی کباب (فیمت مانس کا بوا)، اور یهلوں کے ساتھ یالؤ کھائے کا ذکر چرک کے شاستر میں ہے ۔ آسی طرح پیرو واس پروٹھا روثی آج کل کی روٹی کے لئے اِستعمال ھوتے نھے ، سندھیا در نندی کے ایتہاسک سنسکرت گرنتہ 'رام چرت' میں روئیکا' شبد کا الليم، أيا ه ، أوير لمه حوالي س أردر إتهاسكار اور يندتون کی عقل کی ثاب جوکھ کی جا سکتے ہے ۔

بنکلا موں ایک کہاوت ہے۔۔ ہاتھ یاوں اور آس کے اوپو وش يهرزا ؛ أسى طرح همامه كمي وشوديالية كے بندتوں كا كهنا ه دَه بهارتيه أربه أنرى يورپ سے أنهى كنتو ميں جانتا بن كه بران وشودیالیہ کے ینڈنوں نے نارڈک (Nordic) کے یریبھاشا دیتے هوائد کها هد که فاردک یعنی الل منه أور بهوری بال والد لوگ ہی آریہ میں ، کچھ وشردیانیوں کے ادھیایکوں کا کہنا ہے کہ ہراھیوں لرگ ہے ، فاردکوں کے ونشدھو ھیں ، اِنھیں ودوانوں کے مطابق معجہلی بوات کونے والے بنگالی کمبردیا (امل میں کمدو جدا) کے رہنے والی امن کھیمر' جاتی کی سنتان ہیں . پرادھینتا کے ابھیشاپ کے روپ میس همارے ودانیں کے یہ مجار بھارتیہ اِنہاس اور سنسکرتی کے للے بے حد زهریلے ثابت هو سکتے ھیں ، جرمنی کے أوبار وورک وشودیالیت کے سنسکوت کے ادهمایک دائتر فان گلسیناف (جو تین بار بهارت آچکے هیں) الله ليكرك كي أيك يستك كي سمالوجنا كرتے هوئے لكها تهات. You give importance to Natzi propaganda (نم فازنوں کے پرچار کو اھمرت دیتے ہو)۔ اُس کا چواب دیتے ہوئے لیرک کے اکہا نیا۔۔''دریلے یدھ کے بعد همارےکچھ بھارتیہ ودیارتھی یزهنه کےلئے ہواں گئے تھے. یہ ہی لوگ بھارت اوٹنے یو اویو کے ادبیت مت كو اويكوانك مت كه كو پرچار كول لكم" يته نهيل إن

Hen kultur phlanfen des ostens.

ادہبت آور آویکیائک مترس کا پرچار کرکے دقیا کی قانوں میں بھارت واسیوں کے سمان کے ساتھ کیلواز کرتے میں ن بیارت کو رسون کو کیا حاصل ہوتا ہے آ لیکیک نے ایک بارم شوریائی کے ایک آنہاس کے ادھیاپک سے پرچھا۔"آن پے سر پیر کے ادبیت مترس کے برچار میں اِن کا کیا متصد ہے " آنہوں نے جواب دیا۔"جس ارتو تیتی یا اختصادیات کی جس ہوا میں یہ پہلے پہولے آس سے یہ باہر تہیں نکل پا رہے " اِس یا مان مطلب یہ ہے کہ یہ لوگ اپنے اِن مترس کو ظاہر کر کے باکری کے لئے انگریزوں کی خوشامد کو رہے تھ آور اِس تر سے چاکری کے لئے انگریزوں کی خوشامد کو رہے تھ آور اِس تر سے یہ کہیں انگریز پھر واپس نہ آجائے یہ اپنا سور نہیں بدل رہے ۔ اُنہیں کی خامرش رہ گئے .

بات ماف في التريز أب رابس آنے سے رفي اِس لله درسرا راسته یعو کو اینی تقدیر کی آزامایش کوو ، مسلماتوں کی حرمت جب ختم هوئي تو أن كے سلم كے يوجلت آجار' وجار' بیرمار اور بهاوا درمارا کو دیک نے چھور دیا ، مدھیمیگ کی ماما جک و وہستھا تم تو ویدک تھی اور نم سناتی تھی ۔ اُسی الرس آجال کی ساماجک ارستها اور کرم وکلس انکریزی شاسن برستها کی دس ساله بندوبست تهی ، پورد بهارت میں أنكريز السن نے بہلے زمینداروں اور تعلقہ داروں کی سرشتی کی ، پھر یشچمی شکشا دیکر اُنہیں نوکریاں دیں ۔ پھر اُن کے لئے ڈاکٹرا ولیل اور مختار کے پیشے کھواکر سمانے میں ایک مدھیم ورگ بیار کیا ، اُس کے بعد کل کارخانے اور ریل یتھ بنا کر ایک مزدوروں کا گروہ تیار کیا ، انکریزی شاسن کی یہی سماہ ریوستھا تھی جو بھارت کو ان کے سمھرک میں پرایت ھوئی . نئی اراب نیکی کی ویوستها سے سماج کا نئے روپ میں کتین ہوا . نئے آچار اور ویوهار جاری هوئے ، قبّه واتاورن میں یعدا هو کو نئے سمانے میں نئی شکشا یا کر لوگ آیے پرکھوں اور آن کی سنسدرتی کے مول سروت کو کھرچنے لکے ، اِسی کے پعل سروب نيا سنسكار الدولن (Reformation) اور پار جاگري (Renaissance) کا آندوای چلا اسی کے ذریعہ نئے بھارت کی **بنیادیں بریں** ،

دنیا کا یہ چرنتی ٹیم ہے کہ حکومت کرنے والا گروہ اپنی درنفرضیوں کو پورا کرنے کے لیئے شاست ورگ کو اپنی وچار دھارا' اپنی چنتا دھارا' اپنے آچار ویوھار اور اپنے دماغی رجحان کے موانق بناتا ہے ۔ یہ کسی تمطلب باز' کی ہو ٹیمیں ہے بلکہ سماے شاستریوں دوارا مانا ہوا اُصول ہے ۔ اِسھائے ہم نے ۔۔۔ دیکیا ہے کہ دھیوے دھیوے ہم میں سے بہت سے سوشکشت دیکیا ہے کہ دھیوے دھیوے ہم میں سے بہت سے سوشکشت مندستانی آپنے میں پران میں 'کانے انگریؤ' بن گئے ہیں ۔ میکالے کی بیشین گوئی سے ٹابت ہو رہی ہے ۔ ہم نے باہوی

अद्भुत और अवैद्वानिक मतों का प्रचार करके दुनिया की निगाहों में भारतवासियों के सम्मान के साथ खिलवाड़ करने में इन भारतीय विद्वानों को क्या हासिल होता है ? लेखक ने एक बार विश्वविद्यालय के एक इतिहास के अध्यापक से पृष्ठा—"इन बेसिर पैर के अद्भुत मतों के प्रचार में इनका क्या मक्कबर है ?" उन्होंने जवाब दिया—"जिस अर्थनीति या इस्तसादियात की जिस हवा में ये फले फूले उससे ये बाहर नहीं निकल पा रहे." इसका साफ मतलब यह है कि ये लीग अपने इन मतों को जाहिर करके वाकरी के लिये अंगरेजों की खशामद कर रहे ये और इस हर से कि कहीं अंगरेज फिर बोपस न आ जाय ये अपना सुर नहीं बदल रहे. लेखक की यह बात सुनकर इतिहास के अध्यापक खामोश रह गये.

बात साफ है, बांगरेज अब बापस बाने से रहे. इसलिये इसरा रास्ता पकड कर अपनी तक्कदीर की आजमाइरा करो. मुसलमानों की हुकूमत जब सत्म हुई तो बनके समय के प्रचलित आचार, विचार, व्यवहार और भाव धारा को देश ने झोड़ दिया. मध्य युग की सामाजिक व्यवस्था न तो वैदिक भी और न सनातन थी. इसी तरह आजकल की सामाजिक अवस्था और क्रम विकास अंगरेजी शासन न्यबस्था की इस-साला बन्दोबस्त थी. पूर्व भारत में श्रांगरेज शासन ने पहले जमींदारों श्रीर ताल्लुक्रेदारों की सृष्टि की. फिर पश्चिमी शिक्षा देकर उन्हें नौकरियाँ दीं. फिर उनके लिये डाक्टर, वकील और अख्तार के पेशे खोलकर समाज में एक मध्यम वर्र तैयार किया. उसके बाद कल कारखाने श्रीर रेत-पथ बनाकर एक मजदूरों का गिरोह तैयार किया. अंगरेजी शासन की यही समाज व्यवस्था थी जो भारत को उनके सम्पर्क में प्राप्त हुई. नई अर्थनीति की व्यवस्था से समाज का नये रूप में गठन हुआ. नये आचार श्रीर व्यव-हार जारी हुये. नये बाताबरण में पैदा होकर नये समाज में नई शिक्षा पाकर लोग अपने पुरखों और उनकी संस्कृति के मूल कोत को खोजने लगे. इसीके फलस्वरूप नया संस्कार भान्दोलन (Reformation) और प्रनर्जागरण (Rinaissance) का आन्दोलन चला. इसी के जरिये नये भारत की युवियावें पर्डी.

दुनिया का यह चिरन्तन नियम है कि हुकूमत करने बाला गिरोह अपनी खुदगर्जियों को पूरा करने के लिये शासित बर्ग को अपनी विचार धारा, अपनी चिन्ता धारा, अपने धाचार व्यवहार और अपने दिमाग्री हमान के मुआफिक बनाता है. यह किसी 'मतलब-बाज' की बढ़ नहीं है बल्कि समाज शास्त्रियों द्वारा माना हुआ उसूल है. इसी-लिये हमने देखा है कि धीरे धीरे हममें से बहुत से मुशिक्षित हिन्दुस्तानी अपने मन प्राया में 'काले अंगरेज' बन गये हैं. कैसले की पेशीनगोई सच साबित हो रही है. हमने बाहरी

،نیا کو انگریزوں کے لقطہ تطر سے دیکنا شروع کیا۔ ڈاکٹر راجیندر ال متر اور ایشور چادر ودیا ساگر کے زمانے میں معلیم هوتا الله إس نگریزیت کی اِننی چهاپ نهیس تهی مگر بعد میں یه چهاپ صاف عطر آلے لکی . اِس کے دو سبب هیں . ایک تو یہ که اونجی علیم کا ذریعه صرف الکریزی زبان تهی . اس لیم انجی تعلیم حاصل کرنے کے بعد هم باهری دنیا کی ویاکھیا انکریزوں کے طابق هي كرنے لئے . دنيا كے جتنے انوشتهان -Pheno) menon) هیں . أن ميں انكريوس كے سوائے اور بھى دوسرى جاتیوں کے مت اور رائیں ہیں یہ ہمارے بڑھ لکھ لوگ ماللے لو تیار هی نه ته . کچه دن بہلے تک یه حالت تهی . دماغی حاقم میں داس منوورتی کا سب سے زیادہ اثر یونا ہے . آب کے اواد بھارت میں بھی ھمیں اُسی داس منوورتی کی پرچھائیں جب تب گونی هوتی هوئی دکهائی دیتی هے سات آتو برس نی سوادهینا آب تک اِن آوگوں کے دیھے اور چمڑے کو بھید کو ال کے الدر داخل نہیں ہو سکی ، آج بھی اِن کے دل اور دماغ نے داس منوورتی کو دونوں ھاتھوں سے کس کر پکڑ رکھا اليني من يوان مين هم أب تك غالم وهي غالم هين .

دوسرا سبب یه هے که همارے دل میں یه یات ییتو گئی نہی کہ جب تک غلم جاتی حاکبوں کی اہاں میں ہاں انہ مالئے تب تک اُس کی دنیاری ترقی نہیں ہو سکتی ، نوکر ييشه لوگ أيلي نوكري مين أزاد خيالي دكها كر كيسے ترقي کر سکتے میں ؟ جس نے اپنے من اور اپنے دیش کو آزاد کرتے كا بهاؤ دكهايا أسه يا تو اندمان مين نرواس مد أور يا يهانسي كا تخته ملا ، يه أنكهر ك أنجاني بن كا ويابار تها . إسى لئے جب بھارت کے چنتا چھیتر سیں وگیان کی ترقی جب حکومت کے ماتحت عوثی تب اینی سویدھا کے مطابق 'هاں جی' هاں جی' کہنے هی میں بهارتیه ودوانوں نے شريئے اور يريئے سمجها. اِس لئے همارے جننے بھی ودوان تھے ويدك یراگیتہاسک اور بھارتیہ سبھٹیتا اور سلسکرتی کے پرکانڈ پنڈس وے سب تھاں میں ھاں' ملانے کی قیتی سے اُوپر نہ اُٹھ سکے ، 'فرتا کی اچھا کے مطابق کرم' اِس اُمول کو کسی لے بوری طرح سنجها نهیں ، جب تک نوکر هیں تب تک شاسک ورگ سے پرتی کول اپنی کوئی رائے ظاهر کرنے میں نوکری کے اُویر سنکمٹ آسکتا تھا ، جنھوں نے فرگھیسن کے مت کے خاف راجیندر لال مترا کی یستک برهی هے رهی اِس سدرسا كو الهيك الهيك سنجه سلاله هين . * خوص قسيلي سے راجیدر لال سرکاری تھاکر نہیں تھے مکر تب بھی وے "بطالی بايو" تهي

ایک موجودہ مثال بیکر اس پرسنگ کو ہند کرونگا ، پچیلے مہایدہ سے پہلے ایک نوجوان کھرجی کے ساتھ 'سندھو کی

इतिया को जगरेचों के अपने नजर से देखना शुरू किया. शक्टर शर्जेन्द्र साल मित्र और ईरवरचन्द्र विद्यासागर के जमाने में मालम होता है इस भगरेकियत की इतनी छाप तहीं थी समर बाद में यह द्वाप साफ नवर जाने लगी. इसके दो सबब हैं. एक तो यह कि ऊँची तालीम का चरिया सिर्फ ग्रारेची जवान थी, इसलिये कॅवी तालीम हासिल करने के बाद हम बाहरी दुनिया की व्याख्या अंगरेजों के मुताबिक ही करने लगे. दुनिया के जितने अनुष्ठान (Phenomenon) हैं इनमें अंगरेओं के सिवाय और भी दूसरी जातियों के मत और रायें हैं ये हमारे पढ़े लिखे लोग मानने को तैयार ही न थे. कुछ दिन पहले तक यह हालत थी. विमागी इल्क्रे में दास मनोवृत्ति का सबसे ज्यादा असर पड़ता है. बाज के बाजाद भारत में भी हमें उसी दास मनोवित की परखाई' जब-तब घनी होती हुई दिखाई देती है. सात-बाठ बरस की स्वाधीनता अब तक इन लोगों के देह और चमदे को भेद कर दिल के अन्दर दाखिल नहीं हो सकी. बाज भी इनके दिल और दिमारा ने दास मनांबृत्ति का दोनों हाथों से कसकर पकड़ रखा है. अपने मन प्राण में हम अब तक ग्रलाम, बही ग्रलाम हैं.

THE THE PARTY OF T

दूसरा सबब यह है कि हमारे दिल में यह बात बैठ गई थी कि जब तक गुलाम जाति हाकिमों की 'हाँ में हाँ' न मिलाये तब तक उसकी दुनयाबी तरक्की नहीं हो सकती. नौकर पेशा लोग अपनी नौकरों में आजाद खयाली दिखाकर कैसे तरक्क़ी कर सकते हैं ? जिसने अपने मन और अपने देश को आजाद करने का भाव दिखाया उसे या तो अन्द्रमान निवासन मिला और या फाँसी का तस्ता मिला. यह आँखों के भनजानेपन का व्यापार था. इसीलिये जब भारत के चिन्ता-चेत्र में विश्वान की तरक्की जब हुकूमत के मातहत हुई तब अपनी सुविधा के मुताबिक 'हाँ-जी, हाँ-जी' कहने ही में भारतीय विद्वानों ने श्रेय और प्रेय समका, इसीलिये हमारे जितने भी बिद्वान थे वैदिक, प्रागै-तिहासिक श्रीर भारतीय सभ्यता श्रीर संस्कृति के प्रकाराइ पंडित वे सब 'हाँ में हाँ' मिलाने की नीति से ऊपर न उठ सके. 'कर्ता की इच्छा के मुताबिक कर्म' इस उसल को किसी ने पूरी तरह सममा नहीं, जब तक नौकर हैं तब तक शासक वर्ग से प्रतिकृत अपनी कोई राय जाहिर करने में नौकरी के उपर संकट आ सकता था. जिन्होंने फर्ग्यसन के मत के जिलाफ राजेन्द्रलाल मित्र की पुस्तक पढ़ी है वही इस समस्या को ठीक ठीक समम सकते हैं.* खशकिस्मती से राजेन्द्रलाल सरकारी ठाकर नहीं थे भगर तब भी वे "बंगाली बाब्" थे.

एक मीजूर्या सिसाल देकर इस असङ्ग को बन्द करूँगा. पिछले महायुद्ध से पहले एक नीजबान खोजी के साथ 'सिंघु की

^{*} देखें कर्म्युसन की बुद्ध गया विषय की पुस्तक.

प्राग्नितिहासिक सभ्यता को लेकर लेखक की बालोचना अकसर होती थी. वे कहते थे-"देखा महाराय! इमारे ही देश के होग, हमारा ही टका पैसा पाकर मोहन-जो-रहो के सम्बन्ध में मिध्या बातें बोलते हैं. किन्तु अमुक ने एक बात कही थी. उन्होंने कहा था कि 'क्या करें भाई, चाकरी में जो हूँ.' बाद में मैंने उनसे कहा कि अमुक महा-शय ने (वह श्रव स्वर्ग में हैं) जो श्रापसे इस सम्बन्ध में कहा था क्या मैं उसे समाचार-पत्रों में प्रकाशित कर सकता हूँ ? उन्होंने जवाब दिया—"वह आज जीवित नहीं 🗜 आप अगर कुछ छपवायेंगे भी तो वे उसका प्रतिवाद न कर सकेंगे. उन्होंने मुक्तसे यह बात निजी तौर पर कही थी, छपाने के लिये नहीं." फिर कहा यह तो बहुत पहले कहा था श्रीर यह बात झंगरेज विद्वानों के कानों में नहीं पड़ी. मैंने बाद में सममा कि यह नौजवान खोजी महाशय भी सर-कारी चाकरी के फेर में हैं और अपने नाम के साथ कोई ऐसी बात रोशनी में नहीं लाना चाहते जिससे इनके रास्ते में सरकारी नौकरी मिलने में बाधा पड़े. इन्हीं खोजी महा-शय ने एक और दूसरे सज्जन से भी, जो सिन्धु सभ्यता के बारे में अनुसन्धान का काम करते हैं, सन् 1948 में कहा कि, "मैंने भूपेन्द्रदत्त से मृठी बात कही थी कि फलाँ शहस ने मुक्तसे यह बात कही." इन सज्जन ने जवाब दिया-"अब तो अकरेज नहीं हैं. डरका कोई सबब भी नहीं है. श्रद आप सच्ची बात कह सकते हैं. श्रागे इसके बारे में सच्ची बात कहेंगे तो ?"

विश्वविद्यालय के अध्यापकों की जब यह हालत है तो फिर भारत के साधारण इतिहास के सम्बन्ध में सच्ची बातों की जानकारी और कहाँ मिलेगी ? हमारे दिमारा के हर एक सेल (Cell) के बीच में अब तक विराजमान है ! इसलिये इर नई ऐतिहासिक सचाई की बात सुनकर हमारे देश के लोग चौंक उठते हैं और कहते हैं यह—"नई बात !"

इसीलिये कहा है "धर्म राजनीति का एक जुज है." जैसा राष्ट्र होता है वैसा ही उसका धर्म होता है. राजनीति राष्ट्र के हर अझ में अनुरूप असर डालती है. राजनीति का छोड़ कर धर्म नहीं खड़ा हो सकता. आकाशवाणी यानी ग्रैंब की आवाज और निभ्रन्ति इलहाम से धर्म का सिरजन हुआ और उसे सच कर लोगों ने फ्रीरन कुबूल कर लिया. यह अनैतिहासिक और गपांड़ियों की कहानी है. इसीलिये पुराने जमाने में राजाओं को धर्म का यानी 'वर्णाश्रम का नियामक और चालक' (धर्मपाल, विमहपाल—देखो प्रभाकर वर्धन का ताम्रलेख) कहकर पुकारा जाता था.

धमें चूँकि सियासत का एक जुज है इसलिये अनुया-इयों की राजनीति शासक के धर्म का रूप ले लेती है. दर-अस्त धर्म राष्ट्र को चलाने वाला एक यंत्र होता है. हिन्दु-स्तान में बार बार इसकी मिसाल देखने को मिलती है.

راكياباليك سيهلها كو لهار لهايك كي ألوجا اكثر دولي في . رے کوئے المسالادیا ماشلہ ا مارے می دیش کے لوگ مارا هي لكا ييسه ياكر موهن-جو-دور كے سباده ميں متهيا باتین پولٹے هیں . کنتو امک نے ایک بات کہی تھی . اُنہوں نے کہا تھا که اکیا کریں بھاتی چاکری میں جو ھوں ا بعد میں مینے آن سے کہا که امک مہاشئے نے (وہ اب سورگ میں هيں) جو آپ سے اِس سبندھ ميں کہا تھا کيا ميں آسے سباچار یعروں میں پرکاشت کر سکتا ہوں ؟ اُنہوں نے جواب دیا ۔۔ "رہ آج جهوت نہیں هیں . آپ اگر کچه چههوائینگ بهے تو رہے اُس کا پرتبواں نے کو سکینگے ۔ اُنہوں نے مجھ سے یہ بات نجی طور پر کہی تھی' جبھائے کے لئے نہیں ،" پھر کہا یہ تو ہیت پہلے کیا تھا اور یہ بات انگریز ودرانوں کے کانوں میں نہیں یڑی ، میٹے بعد میں سمجھا که یہ توجوان کهرجی مہاشتے ہے سرکاری چاکری کے پھیر میں میں اور اپنے قام کے ساتھ کوئی ایسی بات روشنی میں لہیں لالا چاہتے جسے اُن کے راستہ میں سركاري نوكوي ملنه ميں بادها يره . إنهيں كهوجي مهاشته لے ایک اور دوسرے سجن سے بھی جو سندھوسبھٹیتا کے ہارے میں انہسندھاں کا کام کرتے ھیں' سن 1948 میں کہا که' ''سیں لے بہربیندر دت سے جہوتی بات کہی تھی که نلاں شخص تے مجھ سے یہ یہ بات کہی ،'' اِن سجن آنے جراب دیا۔''اب تو انکریز فہیں ۔ هیں ، قر کا کوئی سبب بھی فہیں ہے ، اب آپ سطی بات کہا سکتے ہیں ، آگے اِس کے بارے میں سچی بات کینے کے تو 9 "

وشودیالیہ کے ادھیاپکوں کی جب یہ حالت ہے تو پھر بھارت کے سادھاری اِتھاس کے سمبادھ میں سچی باتوں کی جانکاری اور کہاں ملیکی مارے دماغ کے ھر ایک سیل (Cell) کے بیچ میں آپ تک وراجمان ہے 1 اِس لیڈے ھر نئی ایتھاسک سچائی کی بات سن کر ھمارے دیش کے لوگ چرنک اُٹھتے ھیں اور کہتے ھیں یہست ''نئی بات 1''

اسی نئے کہا ہے "نھرم راج نیتی کا ایک جز ہے ،" جیسا راشتر ھوتا ہے ویسا ھی اس کا دھرم ھوتا ہے ، راج نیتی راشتر کے مر انگ میں انوروپ اثر قالتی ہے ، راج نیتی کو چھوت کر دھرم نہیں کھوا ہو سکتا ، آکاشوانی یعنی غیب کی آواز اور نوبرانت انہام سے دھوم کا سرجن ھوا اور اسے سے کر لوگوں نے نورا دبول کو لیا یہ انیتہاسک اور گھوتیوں کی کہانی ہے ، اِسی اِن درانے زمانے میں واجاؤن کو دھرم کا یعنی ورناشرم کا نیاسک اور جالک (دھرم پال وگرہ پال دیکھو پربھا کر وردھن کا نامر لیکھ کی یکارا جاتا تھا ،

دھرم چوٹکھ سیاست کا ایک جنز ہے اِس لئے انویائیوں کی راج نیٹی شاسک کے دھرم کا روپ لے لیٹی ہے۔ دراص دھرم واشتر کو چلانے والا آیگ ینٹر ھوتا ہے۔ مندستان میں بار بار اِس کی مثال دیکھنے کو ملتی ہے۔

राजनीति को ठीक से पक्षाने के लिये बर्स को बसी तरह गदा जाता है. जगर इस मसले की इम यथार्थवादी तुप्ति नजर से देखें तो इमें दिखाई देगा कि झान्दोग्य उपनिषद के पांचाल राज प्रवाहन जैवाली के समय से लेकर बागरेजी राज के बक तक इसकी नजीरें मिलेंगी. राजा और राष्ट्र की सविधा के सताबिक्र ही धर्म अपना रूप गढता है. ब्रशोक ने अपने मत के ब्रतुसार राष्ट्र के गठन का प्रयत्न किया. बंगाल के सूर, बर्मन और सेन राजाओं ने प्राचीन बीद संस्कृति को जदमूल से उसाइकर उसकी जगह ब्राह्मणवाद को अपनाया. इस जमाने में भवदेव भट्ट ने नई स्मृति चलाई भीर जीभूतबाहन 'दाय भाग' नामक नये ब्राईन के प्रशोता थे. ये सब मिसालें इस सामाजिक सचाई की गवाह हैं. इसके बाद हम देखते हैं कि बंगाल में हसेन-शाह सत्यपीर (हिन्दुओं के सत्यनारायण) की पूजा जारी करते हैं व उसके पूछ पायक बनते हैं. उसके बाद अकबर द्वारा अपने नये धर्म दीने इलाही का प्रचार होता है. फिर औरंगजेब जबरदस्ती जनता के ऊपर अपना धर्म लादने की कोशिश करता है. फिर इम देखते हैं कि दिल्ली दरबार में रानी विक्टोरिया को 'भारत की साम्राक्षी' कहकर पुकारा जाता है और अंगरेज सरकार केवश चन्द्र सेन, स्वामी द्या-नन्द और सप्यद अहमद को मिलाकर एक सार्वजनीन धर्म संगठित करने की काशिश करती है.* इन सब मिसालों से इसी समाजी उसल पर रोशनी पड़ती है कि एक राष्ट्र, एक राजा, एक नेशन, एक धम-यही हमेशा से साम्राज्य-वादियों की कामना रही है. यह कोई नई बात नहीं है. इति-हास उसे बार बार दोहरा रहा है.

इन तथ्यों से साफ है कि राजनीति के चेत्र से धर्म को अलग नहीं किया जा सकता. जैसी राजनीति होगी उसी तरह धर्म का क्रम विकास और रूप होगा. बुनियादी तौर पर सब धर्म Anthropological religion हाते हैं यानी जातियों की अभिन्यक्ति के साथ धर्म का भी विवर्तन होता है. जो लोग धर्म को ईरवर कृत या इलहामी मानते हैं उनसे पूछा जा सकता है कि काल की दूरवीन लेकर बहुत दूर गुजरे हुये जमाने से अब तक यदि नजर दौड़ाई जाय तो दिखाई देगा कि आज जिसे ईश्वर प्रेरित, इलहामी या अपीरुषेय, और ऋषियों द्वारा बताया निर्भान्त सत्य कहा जाता है वह दूर जमाने के एक बीज का ही तरक्की किया हुआ रूप है. इस पर उसी बीज की छाप होती है. रिगवेद के यज्ञ के 'ब्रह्मा' (सायरा ने इस शब्द के सात अर्थ किये हैं) बाद में स्ट्रान्ट के बनाने वाले बहा के रूप में पूजे जाने लगे. बाद में बद्या ने 'शत बद्या' व 'सहस्र ब्रह्मा' के रूप बुद्धदेव से खपदेश सुना. फिर खपनिवदों में راب ليتي كو ليبك سے والے كے آلے دھوم أو ألمي طوح كوها جاتا هـ ، اكر إس مسلم كو هم يتهارتبوادي تقطه قطر سے دیکھیں تو همیں دکیائی درگا که چھاندرگیه آینشد کے پالنجال راج پرواهن جیرالی کے سیئے سے لیکر انگریزی راب کے وقت تک اِس کی تطیریں ملینکی راجم اور راشتر کی سویدها کے مطابق هی دهرم اینا روپ گرهتا ھے . اشوک نے اپنے مت کے انوسار راشتر کے گھوں کا بریتن کیا . بنگال کے سور ، برمن اور سین راجاؤں نے پراچین بودھ سنسکرتی کو جر مول سے أنهار كر أس كى جكه براهس واد كو أينايا . اِس زمانے میں بهردیوبیت نے نئی اسمرتی چالئی اور جیبهوت والمن الله بهاک نامک ننے آئیں کے یونیتا تھے ، یہ سب مثالیں اس ساماجک سجائی کی گراہ میں . اِس کے بعد هم دیکیے هیں که بنگال میں حسین شاہ ستیه پیر (هندوں کے ستید ناراین) کی بوجا جاری کرتے هیں و اُس کے پرشتم پیشک بنتے میں ، اس کے بعد اکبر دوارا اپنے نئے دھرم دین اللي كا پرچار هوتا هـ ، يهر اورنگ زيب وبردستي جنتا كے أوير أينا دهرم لادنے كى كرشش كرتا هے ، يهر هم ديكهتے هيں كه دای دربار میں رائی و ترریا کو ابھارت کی سامراگی که در یکارا جاتا هے اور انگریز سرکار کیشو چندرسین ' سوامی دیا نند اور سیں احمد کو ملا کر ایک سارو جذیبی دھرم سنکٹھت کرنے کی كوشف كرتي هد. إن سب مثالون سے إسى سماجي أصول يو روشنی ہوتی ہے که ایک راشتر' آیک راجا' ایک نیشن' آیک دهرم-دیهی هدیشه سے سامراجیه وادیوں کی کامنا رهی هے . یه كوئى دئى بات تهين هـ . إنهاس أسه بار بار دوهرا رها هـ .

اِن تنهیوں سے صاف ہے کہ راج نیتی کے چھکر سے دھرم کو الگ نہیں کیا جا سکتا ، جیسی راج نیتی ہوگی اُسی طرح دھرم کا کرم وکلس اور روپ ہوگا ، بنیادی طور پر سب دھرم کا کرم وکلس اور روپ ہوگا ، بنیادی طور پر سب دھرم کی ابھیوبکٹی کے ساتھ دھرم کا بھی ویورتن ہوتا ہے، جو لوگ دھرم کو اُبھیور کرت یا اِلہامی مانتے ھیں اُن سے پوچھ جا سکتا ہے که کال کی دورہین لیکر بہت درر گذرے ہوئے زمانے سے اب تک یدی نظر دورآئی جائے تو دکھائی دیگا کہ آج جسے ایشور پریرت' اور رشیموں دورا اِ بتایا نربھرانت سیت کیا جاتا ہے وہ دور زمانے کے ایک بھیج کا ھی ترقی کیا ہوا روزپ ہے اس شبد کے سات اوتھ کئے کیا ہوا روزپ ہے اس شبد کے سات اوتھ کئے دیوب میں) بعد میں سرشتی کے بنانے والے برھما کے روپ میں پرچے جانے لگے ، بعد میں سرشتی کے بنانے والے برھما کے روپ میں پرچے جانے لگے ، بعد میں سرشتی کے بنانے والے برھما کے روپ میں پرچے جانے لگے ، بعد میں برھما نے اشبت برھما' وسپستر برھما' کے روپ میں کے روپ بھی ایدیو سے آپدیش سنا ، پھر آپنشدوں میں

^{*} Iife and Teachings of Keshub Charda Sen by Pratap Chandra Mazumdar.

जाता 'परजात' के वह पर पहुंचते हैं और अन्त में साबिजी के कामिशाप से जहाा अपने पद से पदच्युत होकर जहाा का भारत से लोप हो जाता है.•

इसी तरह प्रागैतिहासिक जमाने का Yave यहूदी क्रीम का सर्वशक्तिमान 'जेहोवा' (Jehovah) हो जाता है. इसी तरह सेमेटिक जातियों के रेगिस्तान में 'एलि,' 'एल,' 'शिल्यन' और उसके बाद वही करान में 'शल्लाह' वन आते हैं. भगवान की धारणा का यही जातितात्त्विक (enthrological) रूप है. वैदिक 'भग' देवता ही बाद में सुष्टि कर्त्ता भगवान बन गये. रूस में इनकी Bugus नाम से पूजा होती है. जैसे जैसे कौम की राजनीति का चक घूमता है बैसे बैसे किया कांड, घ्यान धारणा श्रीर भगवान के रूप की अभिन्यक्ति होती है. इसी नुक्ते नजर से हम षार्थों की राजनीतिक और समाजनीतिक प्रगति पर जरा शौर करें. बार्यों की जातिगत संस्कृति को जरा देखें. बार्ये सोमरस पीने वाले, हल्दी रंग की ढाढी वाले. और हल्दी रंग के कपड़े पहनने वाले और उनके नेता 'हरित' (हल्दी रंग के) घोड़े पर सवार इन्द्र हैं जिन्होंने सम्बर असूर को ध्वंस किया. वही पुराणों के इन्द्र बनकर दैश्य और असुरों के हाथों पराजित होते हैं. इसका सबब क्या है ? इसका सबब यह है कि आयों के नेता इन्द्र की हैसियत अब बेहद घट गई थी, उसके सर पर ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर बैठा दिये गये थे. इन्द्र खाली स्वर्ग का इन्तजाम करने वाला रह गया. इन्द्रको बार बार पराजित होने वाला दिखाकर श्रिमृतिं की प्रतिष्ठा जो क्रायम करनी थी. स्वर्ग के ऊपर भी भीर दूसरे लोकों की फल्पना करके इन्द्र का द्रजा बेहद घटा दिया गया. 'मेहेश्वर,' महाभारत के मुताबिक, सबसे बड़ा देवता बन जाता है. (वाकाटक और भारशिवों के वक्त महेश्वर की पूजा सबसे प्रधान पूजा ऐलान की गई). लेकिन गुप्तों के षमाने में विष्ण की पूजा सबसे मुख्य पूजा करार दी गई.

यह भी देखा जाता है कि हर जमाने में हुकूमत करने वाले समाज को अपनी राय का बनाने के लिये धर्म पुस्तकें तैयार कराते हैं और नये नये किया कांड और आचार व्यवहार जारी करते हैं. चएडाशोक ने 'धर्माशोक' बनकर स्त्रियों से सम्बन्धित कई आचार व्यवहार बदले. बुद्ध की जिन्द्गी को लेकर तरह तरह की जात्राएँ, और कीड़ा प्रदर्शन जारी किये गये. (जिस तरह ईसा की जिन्द्गी को लेकर Passion play शुरू किये गये). बाकाटक और भारशिबों के समय भारत मे शिव के मन्दिर बनाये जाने लगे; आह्माणों को प्रामदान मिलने लगा; यह बरीरह फिर से जारी किये गये और शिव को प्रामदान किलने लगा; यह बरीरह फिर से जारी किये गये और शिव को लेकर अनेक प्रराण लिखे गये.

बहुत गुजरे हुये जमाने के इतिहास में न जाकर अगर हम बंगाल के इतिहास पर ही नजर डालें तो देखेंगे कि बौद

برهما ایرم برهم کے ید پر پیرلمهاتے هیں اور الت میں سارتریں۔ کے ابیرشانیا سے برهما آپنے ید سے پدچیرت هو کر برهما کا بیارت سے لیے هو جاتا ہے ۔ ب

أسى طرح يرأكيتهاسك زمال Yave ك يهودى قيم كا سربه کلهمان الجهبروا (Jehovah) هو جاتا هـ اسي طرح سیمیٹک جاتیوں کے ریکستان میں 'ایلی' 'ایل' ایلین' اور آس کے بعد وهی قرآن میں اللہ بن جاتے هیں۔ بهکوان کی دعارنا کا یہی المانتيرك (enthrological) رب هي ريدك 'بهك' دیونا هی بعد میں سرشائی کرتا بهاوأن بن گئے . روس میں إن كي Bugus ثام سے پوجا هوتي هے . جيسے جيسے توم كي رأب ثیتی کا چکر گھومتا ہے ویسے ویسے کریا کائڈ کھیان دھارٹا اُور بھکوان کے روپ کی ابھویکٹی ہوتی ہے ، اِسی نقطه نظر سے هم آریس کی راج نینک اور ساماچک پرگنی پر ضراغور کریں. آریس كي جاتيكت سنسكرتي كو دُوا ديكهن . أربه سوم رس بينه واليه؛ هلدی رنگ کی دارهی والے اور هلدی رنگ کے کوڑے پہلنے والے اور آن کے نیتا 'ہرت' (ہلدی رنگ کے) کھوڑے پر سوار اندر ھیں جنہوں تے سمبر اسور کو دھونس کیا ، وھی برانوں کے اندر بن کر دیتھ اور اسوروں کے هاتھوں پراجت هوتے هیں ، اِس کا سبب کیا ہے ؟ اِس کا سبب یہ ہے که آریس کے ثیتا اِندر کی حیثیت اب بے حد گھٹ گئی تھی' اُس کے سر پر برهما' رشنو أور مهیشور بیتها دیئے گئے تھے . إندر خالی سورگ کا انتظام کرنے والارة گیا، اِلدر کو بار بار پار اجت عولے والا دکھا کو تریمورتی کی پرتشتها جو قائم کرتی تھی ، سورگ کے اوپر بھی اور دوسرے لوکوں کی کلینا کر کے الدر کا درجہ ہے حد گیگا دیا گیا . امہیشررا مہابھارت کے مطابق ' سب سے ہوا دیوتا ہی جاتا ہے (راکاتک اور بھارشوں کے وقت مهیشور کی پوجا سب سے پردھان پوجا اعلان کی گئی) . لیکن گہتوں کے زمانے میں وشنو کی پوچا سب سے مکھیہ پوچا

یه بهی دیکها جاتا هے که هر زمانے میں حکومت کرنے رائے سماج کو اپنی رائے کا بنانے کے لئے دهرم پستیس تیار کراتے هیں اور نیئے نیئے کریا کانڈ اور آچار ویوهار جاری کرتے هیں ۔ چنڈاشوک تے 'دهرماشوک' بین کو استریبرس سے سبندهت کئی آچار ویوهار بدلے ۔ بده کی زندگی کو لیکر طرح طرح کی جائرائیں' اور کریڑا پرردشن جاری کئے گئے ، (جس طرح عیسوں کی زندگی کو لیکر Passion Play شروع نئے گئے) ۔ واکائک اور بیارشوں کے سمئے بیارت میں شو کے مندر بنائے جائے لیے؛ براهمئوں کو کرام دان ملئے لگا یکھ وغیرہ پھر سے جاری کئے گئے اور شو کو لیکر گرام دان ملئے گئے ،

بہت گذرہ ہوئے زمانے کے اِتہاس میں نام جاکر اگر ہم بنکال کے اِتہاس پر ھی نظر ڈالیں تو دیکھنٹے که بودھ

اسكان پران ناگ كهند .

السن کو ختم کر کے راتھ کے شوروں برمنوں اور گور کے سون باسکس نے پرافینیتواں کو جاری کرنے کی ہے حد کوشھیں کیں ، س کےلئے قنرے سے ساکنک براھنرں کو باتیا گیا ، بھو دیو بھے نے عَى إسرتي "بنائي ، فئي كريا كرم أور فئه باله منتر بنائه كله . میبهرتواهی کی 'دایمرتی' بلال سین کی 'دان ساگر' هلیده کی رهدن السروسوا أدبي أيكسو يستنيل لكهوائي كثيل .

يھويتى نے استشوات ؛ اور أن كے بھائى نے آھنك بدھتى؛ ستک تعیی اس طرح برده سنسکرتی کو هر پرکار سه مقالد ن كوشعى كي كئي. يه سب باهر عد أك هوك براهمن وأدى خفر نگالیوں دوآرا درایا گیا، اِسی لله بنکم چندر له آکشیپ کها تها . ، بنگال کا راجاد قنرے تک ہے دیوبال دوا ملا بدھ شرق رھی آدی کی اِسبرتیآل ھی بتکال کے دل اور دماغ پر جا لیر .. سررکیم هر پرساد شاستری نے لتھا تھا ۔۔ ' اہنکالی لیک عاتی ہے جو اپنے کو بھول چکی ہے ، یہ بنکالی اِس بات کو ہول گئے میں که دھرم یال لے کس پرکار بنکال کو سارو بھوم عرمت بنایا تیا اور کس طرح دهنادهن کے جنگی هاتھوں نے چئے کی توپ سے کامروپ راجیہ کو هرایا تھا ، بنگالی یه بھی بھول ئے میں که کس طرح 'هی'! 'هی'! (war cry) کے باته أبي كي نو سيدائين جنكي نعره لكا كر حمله كرتي تهين . نگالی یہ بھی بھول کئے ہیں کہ کس طرح جاوا اور سنگیل میں المالي وياياري تجارت كے ليئے جايا كرتے تھے، (ديكهو چاقد، جهایتی اور شریمنت آدی آیاکهدان) زمین کهرد کر تامراهتی کا جو پراچین ویبھو سنھن شہر نتلا ہے اُس کا ذکر صرف کہانیوں

شرینی سنکرام اِسی بهیانک روپ سے کام کرتا ہے۔ آپسی همله اور جوابی حمله اور بداء کی بهارنا میں لکے هوئے لوگوں کے بارے میں شانتی پرو میں بھیشم نے کہا ہے۔"پورو دیھی کے لوگ سب شاستروں کے وشارد یعنی جانکار هیں ۔'' آنهیں نگالیوں کو آج سب لوگ 'بھات کھاؤ' بنگالی کھے کر پکارتے میں ۔ آب بالگالی جنگ کا نام سن کر کانپنے لکتے هیں " بنگالی یم لکھکر درخولست دینے میں بھی شرم محسوس نیہی کرتے *We are a cowardly people ! -" &

اِس للله هم کہتے هيں که واج نيتي کے ساتھ دهوم کا گهرا تعلق هے محکومت کرنے والے جس طرح والے ٹھتی کو چائے مطابق اس دیھ میں وہاں کی سنسکرتی اُسی کے مطابق وپ ليتي ہے.

[ہاتی پھر]

शासन को खरन करके राड के शार्त, वर्गनों, और गौड़ के सेन शासकों ने माझसाबाद को जारी करने की बेहद कोशियों कीं इसके लिये क्षत्रीज से साम्निक नाहाणों को बुलाया गया. भववेब अट्ट ने नई स्मृति बनाई. नये क्रिया कर्म, और तये पाठ मंत्र बनाये गये. जीभूतवाह्न की 'दायरत्न' बल्लाल सेन की 'बान सागर,' इलायुध की 'बाह्य सर्वस्व' बादि एक सी पुस्तकें लिखवाई गईं.

पश्चपति ने 'मल्यूक' और वनके भाई ने 'अहिक पद्धति' पुस्तक लिखी. इस तरह बीद संस्कृति को हर प्रकार से मिटाने की कोशिश की गई. यह सब बाहर से आये हुये माझण्यादी रीर बङ्गालियों द्वारा कराया गया. इसीलिये बक्रिमचन्द्र ने चाचेप किया था कि बंगाल का राजत्व कन्नीज तफ है. देवपाल देव, हलायुध, भी हर्ष आदि की स्मृतियाँ ही बंगाल के विल और विभाग पर का गई : स्वर्गीय हर प्रसाद शाकी ने लिखा था—"बंगाली एक ऐसी जाति है जो अपने को मृत चुकी है." वंगाली इस बात को मृत गये हैं कि धर्मपाल ने किस प्रकार बंगाल को सार्वभीम हुकुमत बनाया था और किस तरह धनाधन के जंगी हाथियों ने विजली की तद्वप से कामरूप राज्य को हराया था. वंगाली यह भी भल गये हैं कि किस तरह 'हि ! हि ! (war cry) के साथ उनकी नौ सेनायें जंगी नारे लगाकर हमला करती थीं. बंगाली यह भी भल गये हैं कि किस तरह जाबा और सिंहल में बंगाली व्यापारी तिजारत के लिये जाया करते थे (देखो चाँद, धनपति और श्रीमन्त आदि उपाख्यान). जमीन स्रोदकर ताम्रलिप्ति का जो प्राचीन वैभव सम्पन्न शहर निकला है उसका जिक्र सिर्फ कहानियों में मिलता है.

श्रेणी संप्राप इसी भयानक रूप से काम करता है. श्रापसी हमला और जवाबी हमला और बदले की भावना में लगे हुये लोगों के बारे में शान्ति पर्व में भीष्म ने कहा है—''पूर्व देश के लोग सब शास्त्रों के विशारद यानी जान-कार हैं." उन्हीं बंगालियों को आज सब लोग 'भातखाऊ' बंगाली कहकर पुकारते हैं. आज बंगाली जंग का नाम सुनकर काँपने लगते हैं. बंगाली यह लिखकर दरखास्त देने में भी शम महस्रस नहीं करते कि-"We are a cowardly people !" &

इसीलिये इम कहते हैं कि राजनीति के साथ धर्म का गहरा ताल्लुक़ है. हुकूमत करने वाले जिस तरह राजनीति को चलाते हैं उस देश में बहाँ की संस्कृति उसी के मुताबिक रूप जेती है.

वाकी फिर ो

[•] वर्धमान साहित्य सन्मेलन—समापति का व्यक्तिमावग्रः *Charles Ball—History of Sepoy War.

بديردهمان ساهتهه سميان سبهايتي لا أيهيبهاشي ه

قاظر لطيف دنتري أيم . أم ، أ تي . فل .

हाक्टर लतीफ दक्तरी एम. ए., ही, फिल.

करीय भाठ सदियों तक बङ्गाल मुसलमानी हुकूमतों के मातहत रहा, इस सारे समय में बङ्गाल के हिन्दू-मुसल-मान एक दूसरे से मिल जुलकर आपसी भाई चारे के साथ रहते रहे. कभी कभी कोई तानाशाह बङ्गाल की गरी पर बैठा पर वह अपनी तानाशाही से बङ्गाल के प्रेम पूर्ण बातावरण को ज्यादा ठेस पहुँचाने में कामयाब न हो सका. क्यादातर शासकों और आम जनता ने बङ्गाल में हिन्दू मुसलमानों के सांस्कृतिक मेल जोल में ही योग दिया. हिन्दू मुसलमानों में मजहबी कठमुल्लापन का उस जमाने में पता तक न था. समाज में और जाती व्यवहार में प्रेम. मित्रता और माई चारे की भावना ही दिखाई देती थी.

हिन्दू मुसलमानों के सांस्कृतिक मेल जोल को बङ्गाल के जिन मुलतानों ने बढ़ाबा दिया उनमें मुलतान रायासुरीन, नसीरशाह, हुसेनशाह और इनके अलावा सुबेदार परागल कां, ख़ाटे कां आदि के नाम खास हैं. मैथिल कवि विद्यापति ने नसीरशाह की बेहद तारीक की है.

नसीर शाह ने बङ्गाल पर चालीस बरस तक यानी सन् 1825 ईसवी तक राज किया. कहा जाता है कि नसीर शाह ने ही पहले पहल महाभारत का संस्कृत से बंगला में तरजुमा कराया. हुसेनशाह का जमाना (15वीं सदी) तो बंगला साहित्य का सुनहला युग था. जिस तरह इक्क्लैंड की रानी पलिजनेथ (16नीं सदी) ने साहित्य को अपना संरक्षण दिया और स्पेन्सर, मेरली, शेक्सपीयर, और दूसरे अनेक साहित्यकों को बढ़ावा और राज्याश्रय दिया उसी तरह मझाल के चक्रवर्ती राजा हुसेनशाह ने बङ्गाल साहित्य को मोत्साहन देकर प्रसिद्ध बंगाली कवि मलधर बसु, बिजय पुषा, जसोराज सां और अन्य अनेक साहित्यकों को रंरक्षण, उपहार और बाश्रय दिया.

हुसेन शाह के जोर देने पर ही सन् 1480 में मलघर ासु ने भागवत् का संस्कृत से बंगला में अनुवाद किया. इस मनुवाद के पूरा हो जाने पर हुसेन शाह ने मलघर बसु हो 'गुगाराज खां' का खिताब दिया. प्रसिद्ध बङ्गला कवि बजय गुप्त ने लिखा है कि हुसेनशाह ने बङ्गला साहित्य ने जितना प्रोत्साहन दिया उतना किसी दूसरे राजा ने नहीं या. कवि असाराज खां कहता है—'चक्रवर्ती सम्नाट सेन शाह, जो कि प्रवी के आभूषण हैं, कविता की । वनाओं से खुब बाक्रिक हैं और वे उनकी बड़ी सुन्दर ानबीन करते हैं."

قریب آٹو صدیوں تک بنگال مسلّمانے حصومتیں کے ماتصت رها . اِسْ سارے سمے میں بنگال کے هادو مسلمان ایک دوسرے سے مثل جاکو آپسی بھائی. چارہ کے ساتھ رہتے رہے ، قبھی کبھی كرني تاتاشاه بنكال كي كدي ير بيتها يروه أيني ناناشاهي سے بنگال کے دریم دورن واتاروں کو زیادہ ٹھیس بہولنجائے میں کلیاب نے هوسکا ، زیاد اور شاسکوں اور عام جلتا لے بنگال میں هندو مسلمانیوں کے سائسموتک میل جول میں می ہوگ دیا . هندو مسلمالوں میں مذهبی کله طلین کا اُس زمانے میں یات تك لع تها ، سباج مين أور ذاتي ويوهار مين پويم مترتا أور بهائي جازے كى بهاؤنا هي دكهائي ديتي تهي .

ھندو مسامانوں کے سائسکرتک میل جول کو بنکال کے جن سلطانوں لے بوتھارا دیا أن میں سلطان غیاث الدین ' تصیر شاہ کسین شاہ اور اِن کے علوہ صوبیدار پراکل خال چھوٹے خان ا آدی کے نام خاص هیں . میتهل کوی ودیاپتی نے نصیر شاہ کی بے حد تعزیف کی ھے .

نصیر شاہ نے بنکال پر چالیس برس تک یعنی سن 1325 عیسری تک راج کیا ، کہا جاتا ہے که نصور شاہ لے هی بہلے بہل مہابھارت کا سنسارت سے بنکا میں ترجمه کرایا ۔ حسین شاه کا زمانه (15 ویں صدی) تو بنکلا ساهتیه کا سنہلا یک تھا ۔ جس طرح الرالیند کی رانی ایلیوبیتھ (16 ویں صدی) في ساهتيه كو اينا سنركشن ديا اور أسهينسر ميرلي شیکسهیز اور دوسرے انهک ساهتیکوں کو برتھاوا اور راجا شرئے دیا أسى طرح بنكال كے چكرورتى راجا حسين شاه نے بنكلا ساھتيه كو پروتساهی دیکر پرسده بنگای کوی ملدهر یسو، بنجے گہت، جسو راج خال اور الها انهك ساهتيكون كو سنركشن أيهار اور

حسینی شاہ کے زور دینے پر ھی سن 1480 میں ملاعر بسو نے بھاگوت کا سنسموت سے بنکا میں انواد کیا . اِس انواد کے پررا هو جالے پر حسین شاہ نے ملاهر بسو کو 'گذراج خال' کا خطاب دیا. پرسدھ باکا کہی بھے گہت نے لکھا کے کہ حسین شاه نے بلکا ساهتیہ کو جتنا پروتساهی دیا اتنا کسی دوسرے راجا لے لہیں دیا . کوی جسو راج خال کہنا ھے۔"چکرورتی سرات حسین شاہ کو که پرتبری کے ابھوشن میں کویتا کی ا بارداوں سے خوب واقف میں اور رہے اُن کی بوی سندر چال بين كرتے هيں ."

1. 3.4.

سمرات حسین شاہ کی اِس مثال سے سمرات کے دوسو اُنھے کومعیاری اور درباری بھی بےحد پربھارت ہوئے ۔ سمرات کے کومعیار اور سینایکی پراگل خاں نے کہندر پرمیشور کو پروتساهی دیمر مہابیارت کا سلسکرت سے باتھ میں اُشری پروا تک توجمہ کروایا ۔ اِس طرح بنگا بھاشا میں پہلی بار جانا کو سہابیارت حاصل ہوا ، پراگل چاگاؤں کا صوبیدار تھا جہاں وہ لگ جگ ایک سوادھیں شاسک کی حیثیت سے حکومت کرتا تھا، پراگل کا یک سوادھیں شاسک کی حیثیت سے حکومت کرتا تھا، پراگل کا یک سوادھیں شاسک کی حیثیت سے حکومت کرتا تھا، پراگل کا یہی اُدار اور سرو دھرم سمبھاوی تھا ، جھوٹے خان نے کوبلار پرمیشور کے ادھورے کام کو پورا درنے کے لئے شری کرشن قادی کو نیمت کیا ، شری کرشن قادی نے مہابھارت کے اتواد کے پہلے ادھیائے میں کہلے دل سے اُن مسلمان شاسکوں کی بھرپور تعریف کی ھے ۔

At the same of the

سورگیت دائیش چلدر سین نے جن کی پستک بنا بیاشا اور بنا ساهتیت کے اِتہاس پر بہت مستند مانی جاتی ہے ۔ اور بنا ہے۔۔۔

"بنکا بهاشا کو ساهتیه کے درچے تک پُہرتچانے میں کئی اثروں نے کام کیا ہے، جن میں تسندیہ ایک سب سے ادھک مہتوپورن پربھاؤ مسلمائوں کا بنکال وجئے کرنا تیا ۔ یدی هندو راجاؤں کا ادھیکار بنا رہنا تو بنکا بھاشا کو راج دربار تک پہوئچنے کا مشکل سے ھی موقع مل سکتا تیا '' ﷺ

راجا کنس کے اُترادھیکلوی نے اِسلام مت سویکار کیا اور کرتھواس دوارا سلسکوت سے بنکا میں رامایی کا انواد کرانے کا اِنتظام کیا ۔ ایک دوسرے مسلمان اُمرا علاول نے ملک محمد جانسی کی ھندی پستک پدماوت کا بنکا میں انواد کیا ۔ علال نے اور بھی انیک فارسی کتابوں کا بنکا میں انوواد کیا ہے ۔ دنیش چندر سین لکھتے ھیں ۔

اِس طرح کی پہد مثالیں ملتی هیں جن میں که مسلمان سعرائی اور سرداروں لے منسکرت اور نارسی کے گرنتیوں کا اپنی اُور سے بنکا میں ترجمه کروایا اور دوسروں کو اِس طرح کے کلمیں میں مدد دی ، جب که بنکال کے بلوان مسلمان بادشاہوں نے دیش کی بہاشا کو اپنے درباروں میں یہ اُوج استمان دیا ہے تو قدرتی طور پر هندو راجاؤں نے اُن کا انوسون کیا ، اِس طرح هندو راجاؤں کے درباروں میں بنگالی کریں کی نیمی شروع ہوا ۔"ہو نیمی شروع ہوا ۔"ہو نیمی دیمی شروع ہوا ۔"ہو

لة صرف بهاشا أور ساماجک دايوله مين هي سانستونک ميل جول کي يه دهاراً به رهي تهي بلکه دهارمک چهيتر مين

सकार कुषेत साद की इस विसास से सकार के नूसरे जन्य कर्मकारी कीर ब्रक्तरी भी बेह्द अकावित हुए. समाह के स्वेदार और सेनापित पराग्रल का मंक्त से बंगला में 'भी पर्व' तक सरकुमा करवायाः इस तरह बगला भाषा में पहली बार जनता को महाभारत हासिल हुकाः पराग्रल वटगाँव का स्वेदार था, नहाँ वह लगभग एक स्वाभीम शासक की दैशियत से हुकूमत करता था. बरागल का योग्य पुत्र कीर कराराविकारी कोटे खां भी कपने बाप की तरह ही जहार कीर सर्व कर्म समभावी था. कोटे खां ने क्वीन्द्र परमेश्वर के अध्र काम को पूरा करने के लिये भी कर्ण नन्दी को नियुक्त किया. भी कर्ण नन्दी ने महाभारत के अनुवाद के पहले अध्याय में खुले दिल से इन मुसलमान शासकों की भरपूर तारीक की है.

A CONTRACT OF THE PROPERTY OF

स्वर्गीय विनेराचन्द्र सेन ने, जिनकी पुस्तक बंगला भाषा और बंगला साहित्य के इतिहास पर बहुत मुस्तनव्

मानी जाती है, लिखा है-

"बंगला भाषा को साहित्य के दरजे तक पहुँचाने में कई असरों ने काम किया है, जिनमें निस्सन्देह एक सब से अधिक महत्वपूर्ण प्रभाव मुसलमानों का बंगाल विजय करना था. यदि हिन्दू राजाओं का अधिकार बना रहता तो बंगला भाषा को राज-दरवार तक पहुँचने का मुश्किल से ही मौका मिल सकता था".88

राजा कंस के उत्तराधिकारी ने इसलाम मत स्वीकार किया और इित्वास द्वारा संस्कृत से बंगला में रामायण का अनुवाद कराने का इन्तजाम किया. एक दूसरे युसलमान उमरा अलाउल ने मिलक मोहन्मद जायसा की हिन्दी पुस्तक पद्मावत का बंगला में अनुवाद किया. अलाउल ने और भी अनेक कारसी किताबों का बंगला में अनुवाद किया है हिनेशचन्द्र सेन लिकते हैं --

"इस तरह की बेहद मिसालें मिलती हैं जिनमें कि

ग्रुसलमान सम्राटों और सरदारों ने संस्कृत और कारसी के

पन्थों का अपनी आर से बंगला में तर्जुमा करवाया और

दूसरों को इस तरह के कामों में मदद दो. जबकि बगाल के

बलवान कुसलमान बादशाहों ने देश की भाषा को अपने

ररवारों में यह उक्त स्थान दिया है ता कुद्रती तौर पर

दिन्दू राजाओं ने उनका अनुसर्ग किया. इस तरह हिन्दू

राजाओं के दरवारों में बगाली कवियों की नियुक्ति का

रिवाज मुसलमान बादशाहों की देखा देखी गुरू हुआ."*

न सिर्फ भाषा चौर सामाजिक दायरे में ही सांस्कृतिक मेल जाल की यह भारा वह रही थी बल्कि भार्मिक क्षेत्र में

[&]amp; History of Bengali Language and Literature p. 10.

^{*} Ibid pp. 13, 14.

بلدرهویں صدی کے آخور میں بنگال میں مہا پریوو چیتنیہ کا جنم هوا ، چیتنیہ کے جام سے پہلے کی حالت بیان کرتے هوئے دنیھی چندر سین لکھتے هیں۔۔۔

The Control of the Co

''براهماس کا پربھوتو بہت تکلیف دہ ہو گیا تھا ۔ جاتی بھید نے شکنچے کی طرح سماج کی گردن کو جکتر رکھا تھا ۔ . نیچی جاتیوں کے لوگوں کے ظلموں کے نیچی جاتیوں کے لوگوں کے ظلموں کے نیچی آھیں بھر رہے تھے ۔ اِن اُونچی جاتی والوں کے لئے ودیا کے دروازے باد کو رکھے تھے ۔ اِن لوگوں کے لئے ادھک اُونچے جیون میں پرویش کرنے کی مناهی تبی اور نئے پورانک دھوم پر اِس طرح براھداوں کا ٹھیکھ ھو گیا تبی مائو وہ کوئی بازارہ چھڑ ھو ۔'' †

مہا پربھو چیتنیہ نے اُس حالت پرگببھیرتا سے وچار کیا ۔
گبر بار چھرو کر وے دیشائن کے لئے نکلے ، آئیک سادھوں اور
نقیروں کے ساتھ آن کی گیان چوچا ھوئی ، چیتنیہ کے جیون چرتو
کا رچئیتا کرشن داس لکھتا ہے کہ بغدراون میں چیتنیہ نے کئی
مہینے ایک مسلمان نقیر کے ساتھ دھرم چرچا کی ، جدو
بیٹاچاریہ لکاتا ہے۔۔۔

''چیتنیه کے جیوں کی اُٹیک گیٹنائیں ایسی هیں جن سے یہ بات پوری طرح صاف هو جاتی هے که چیتنبه، کو مسلمانوں سے یہ دری تھا ۔''۔

چیتانیه نے گرو کی سیوا اور بهتنی کا اُپدیش دیا ، جاتی بهید کی زبردست متعالفت کی ، براهمنوں کے کرم کاندوں کو تعایه بتایا ، چیتنیه کے ششیوں میں هندو اور مسلمان نے ، اولئ سبھی شامل نے ، چیتنیه اپنے سبھی ششیوں میں هریداس کو سب سے ادھک پیار کرتے تئے ، هریداس ، پہلے ایک مسلمان نقیر تھے ، بعد میں ویشنو سادھو هوگئے ، 'چیتنیه چوبتا مرت' میں بجولی خان اور دوسرے پتیانوں کے ویشنو دھوم قبول کرنے کا نگر بھی ہے ، مسلمان شاسک چیتنیه کو ایشور کا اوتار سمجھتے نکر بھی ہے ، مسلمان شاسک چیتنیه کو ایشور کا اوتار سمجھتے

हिन्दू और मुसलमान दानों एक, दूसरे के बेहद नजदीक आ रहे थे. वैष्णाब धर्म के इतिहास में मुसलमान वैष्णाब सन्तों की मिसालें बेहद मरी पड़ी हैं. बारहवीं सदी, के बंगाल में हिन्दुओं का मुसलमानों की ब्रगाहों में मिठाई चढ़ाना, क़ुरान पढ़ना, और मुसलमानों के ब्रगाहों में मिठाई चढ़ाना, क़ुरान पढ़ना, और मुसलमानों के धार्मिक रिवाजों की आर अमली आदर दिखलाना' एक आम बात थी. इसी मेल जाल में से बंगाल के अन्दर एक नये देवता की पूजा गुरू हुई जिसे 'सत्य पीर' कहते थे. हिन्दू और मुसलमान दानों सत्यपीर की पूजा करते थे. कहा जाता है कि सम्राट हुसैन शाह इस नए पन्य का संस्थापक था.

पन्द्रहवीं सदी के आखीर में बङ्गाल में महाप्रभु चैतन्य का जन्म हुआ। चेतन्य के जन्म से पहले की हालत बयान करते हुये दिनेशचन्द्र सन लिखते हैं—

"ब्राह्मणों का प्रभुत्व बहुत तकलीकदेह' हो गया था. जाति मेद ने शिकंजे की तरह समाज की गर्दन को जकड़ रखा था. " नीची जातियों के लोग ऊँची जातियों के लोगों के जुल्मों के नीचे चाहें भर रहे थे. इन ऊँची जाति के लोगों ने नीची जाति बालों के लिये विद्या के द्रवाजे बन्द कर रखे थे. इन लागों के लिये चिधक ऊँचे जीवन में प्रवेश करने की मनाही थी चौर, नये पौराणिक धर्म पर इस तरह बाह्मणों का ठेका हो गया था मानो वह कोई बाजारू चीज हो." न

महाप्रमु चैतन्य ने इस हालत पर गम्भीरता से विचार किया. घर बार छोड़कर वे देशाटन के लिये निकले. अनेक साधु ओं और कक्षीरों के साथ उनकी ज्ञान चर्चा हुई. चैतन्य के जीवन चरित्र का रचियता कुष्णादास, लिखता है कि हुन्दाबन में चैतन्यने कई महीने ''एक मुसलमान कक्षीर के साथ धर्म चर्चा की. जदु भट्टाचार्य लिखता है—

"चैतन्य के जीवन की अनेक घटनायें ऐसी हैं जिनसे यह बात पूरी तरह साफ हो जाती है कि चैतन्य को मुसलमानों से बेहद प्रेम था."

चैतन्य ने गुष्ठ की सेवा और 'भित्त का उपदेश दिया। जातिभेद की जबदेस्त मुखालफत की. ब्राह्मणों, के कर्म काएडों को त्याज्य बताया. चैतन्य के शिष्यों में हिन्दू और मुसल-मान, ऊँची जाति और नीची 'जाति के लाग, सभी शामिल थे. चैतन्य अपने सभी शिष्यों में हरिदास को सबसे अधिक प्यार करते थे. हरिदास पहले एक मुसलमान फक्कीर थे, बाद में वैष्ण्य साधु हो गये. चैतन्य 'चरितामृत' में बिजुली जाँ और दूसरे पठानों के वैष्ण्य धर्म कुबूल करने का भी जिक्क है. मुसलमान शासक चैतन्य 'को ईश्वर का अवतार सममते

⁺ Ibid.

[&]amp;Hindu Castes and Sects, by Jadu Bhattacharya, p. 464.

थे. सभ्य खराड में एक क्राजी का दाल दिया दुव्या है जो नैतन्य को 'ईरवर' कहकर पुकारता था.

वैतन्य के सम्प्रदाय की एक शासा का नाम 'क्र्जाभज' हा. उसके संस्थापक कर्ना वावा को एक मुसलमान कक्तीर ने ही पाला था. इस सम्प्रदाय के आचार्यों में कई हिन्दू और कई मुसलमान हुये हैं. ये लोग केवल एक ईरवर की उपासना करते थे, दिन में पाँच बार गुरुमन्त्र जपते थे, मांस मिद्रा से परहेज करते थे, धुक्रवार का पवित्र दिन मानते थे और जात-पाँत, हिन्दू-मुसलमान-ईसाई और ऊष-नीच में कोई भेद न करते थे.

बंगाल के समकालीन बौद्ध प्रन्थों—'शून्य पुराण,' 'धर्म पूजा पद्धति,' धर्म गजन' और 'बाद जननी' बरीरह में और बौद्ध गीतों में बाह्यणों की तरफ गुस्सा और बदले की भावना और मुसलमानों के प्रति मोह्ब्बत के भाव भरे हुये हैं. इन बौद्ध 'प्रन्थों से पता चलता है कि उस समय के बगाली मुसलमान माँस से परहेज करते थे. एक जगह लिखा है—

"खोंकइ मरारिब की तरफ मुँह किये खुदा से दुआ माँगता है.

"कोई अल्लाह की पूजा करता है, कोई अली की और कोई ममूँद साई की.

"मियाँ किसी जीव की इत्या नहीं करता और न मुरदार खाता है. धीमी धाँच के ऊपर वह अपना भाजन पकाता है.

"जात पाँत के भेद श्रव धीरे धीरे दूट जाँयगे क्योंकि देखों हिन्दू कुटुम्ब के श्रन्दर एक मुसलमान है."

मुसलमान जो पहले कट्टरता के साथ एक खुदा की इवादत करते थे धीरे धीरे हिन्दुओं के धार्मिक असर में आकर काली, शीतला, सरस्वती, शिव, विष्णु आदि अनेक देवी-देवताओं की उपासना करने लगे.

मराहूर विजेता शमसेर गाजी के बारे में कहा जाता है कि एक मर्जबा उसे सपने में भगवती काली ने दर्शन दिया और कहा—''देखां! टिपरा राज बाले मेरी पूजा इबादत करते हैं. बिंद तुम भी मेरी उपासना करोगे और मुक पर बिंत चढ़ाश्रोगे तो उसके एवज में मैं तुम्हें वर दूँगी कि तुम आसानी के साथ जंग में फतह्याबी हासिल करो." दूसरी बार फिर देवी ने शमसेर का दर्शन देकर अपनी वही माँग दुहराई. इस पर गाजी ने डरते डरते देवी से कहा—''आप दिन्तुओं की देवी हैं और मैं भुसलमान हूँ, तब आप कैसे मेरी पूजा कुबूल करेंगी?" देवी ने उसे आहमण द्वारा पूजा करने के लिये राजी किया और परिणाम स्वरून वह अपने सभी युद्धों में बिजयी हुआ.

تھے ، مدھیم کینڈ میں آیک تافی کا حال دیا ہوا ہے جو چیتنیم کو ایشور' کہم کر یکارنا تیا ۔

چھتنیہ کے سنپردائے کی ایک شاکیا کا نام 'کرتابھے' تھا۔
اُس کے سنستھاپک کرتا یا یا کو ایک مسلمان نقیر نے جی پالا
تھا۔ اِس سبپردائے کے اُچاریوں میں کئی ہندو اور مسلمان ہوئے ہیں۔
ہوئے ہیں۔ یہ لوگ کیول ایک ایشور دی اُپلسنا کرتے تھے' دین میں پائیے بار گرمنتر جہتے تھے' مائس مدیرا سے پرھیز کرتے میں پائیے بار گرمنتر جہتے تھے' مائس مدیرا سے پرھیز کرتے تھے' شکروار کو پوتر دین مائیے تھے اور جات۔پائٹ ہندوسسلمان عیسائی اور اُرنے نیچ میں کوئی بھید نہ کرتے تھے۔

بنگال کے سمالین بردھ گرئتھوں۔'شوینہ پران' 'دھوم پوجا پدھتی' 'دھوم گجس' اور 'باد جننی' وغیرہ میں اور بردھ گیتوں میں براہناس کی طرف غصہ اور بدلے کی بھاؤنا اور مسلمانوں کے پرتی صحبت کے بھاؤ بھرے ھوئے ھیں این بودھ گرنتھوں سے پتہ چلتا ہے کہ اُس سیٹے کے بنگالی مسلمان مانس سے پرھیز کرتے تھے ۔ ایک جکہء لکھا ہے۔۔

''کھوٹکڑ میرب کی طرف منھ کئے خدا سے دعا مائکٹا ہے۔ ''کوٹی اللہ کی پہچا کوتا' ہے' کوئی علی کی اور کوٹی میوٹد سانیں ٹی ۔

''میاں کسی جیو کی ہتیا نہیں کرتا اور نہ مردار کیاتا ہے۔ دہیمی آنیم کے اوپر وہ اپنا بھوجن پکاتا ہے۔

جات بانت کے بھید آب دھیرے دھیرے توت جائینگے کیونکہ دیکھو ھندو کتیب کے اندر ایک مسلمان ہے .''

مسلمان جو پہلے کارتا کے ساتھ ایک خدا کی عبادت کرتے تھے دھیرے دھیرے دھیرے ھندؤں کے دھارمک اثر میں آکر کائی' شیکا' سرسوتی' شو' وشنو آدی انیک دیوتاؤں کی آپاسنا کرنے لیے ۔

مشہور وجها شسهرغازی کے بارے میں کہا جاتا ہے که ایک مرتبہ أسے سبنے میں بهکرتی کالی نے دوشن دیا اور کہا۔ ''دیکھو! ٹیرا راج والے میری پوجا عبادت کرتے تھیں، یدی تم بھی میری اپاسنا کرو گے اور مجھیر بلی چڑھاؤ گے تو اُس کے عبوض میں میں تمهیں ور دوئکی که تم آسانی کے ساتھ جنگ میں نکتحیابی حاصل کرو،'' دوسری بار پھر دیوی نے شمسیر کو درشن دیکر اپنی وہی مانگ دوھرائی، اِس پر غازی نے ترتے درشن دیکر اپنی وہی مانگ دوھرائی، اِس پر غازی نے ترتے درتی سے کہا۔۔"آپ ھندوں کی دیوی ھیں اور میں ترتے دیری سے کہا۔۔"آپ ھندوں کی دیوی ھیں اور میں مسلمان ھوں' تب آپ کیسے میری پوجا دبول کربنگی ہے'' دیوی نے اُسے براھمن دوارا پوجا کرنے کے لئے راضی کیا اور پرینام سروپ وہ اپنے سبھی یدھوں میں وجشی ھوا.

'इसाम यातार पन्थी' नामक एक समकालीन बंगला प्रम्य के मुसलमान लेखक ने अपनी पुस्तक सरस्वती देवी की प्रार्थना से ग्रुह्म की है. एक दूसरा लेखक करीमुल्ला अपने प्रन्थ 'यावनी बशाल' में देवादि देव दि की स्तुति करता है. 'जमील दिलाराम' नामक पुस्तक का कवि आफ्ता- कुरीन अपने नायक से सप्तर्वियों की पूजा कराता है. एक दूसरे लेखक हमीदुल्ला की पुस्तक 'भेलुआ सुन्दरी' में ब्राह्मण स्त्राग कुरान की मदद से ग्रुभ मुहूर्त निकालते हैं. 'पदों' का रचिता प्रसिद्ध किव करण आली अपनी अनेक कविताओं को राधा और कृष्ण को भेंट करता है. मुसलमानों का एक किक्का लक्ष्मी की उपासना के गीत गा गाकर ही अपना पेट पालता था. ये लोग अब तक यही करते हैं.

ये कुछ मिसालें हैं जिनसे उस जमाने के बंगाल के हिन्दू मुसलमानों के सांस्कृतिक मेल जाल के जीवन पर थोड़ी सी रोशनी पढ़ती है.

الم یاتار پنتی اللہ ایک سمایان بنکا گرفته کے مسلمان ایکیک نے اپنی پستک سرسوتی دیبی کی پراتها سے شروع کی ہے۔ ایک دوسرا لیکیک کریم الله اپنے گرفته ایا وقی وشال میں میرادی دیوشو کی استو تی کرتا ہے۔ جمیل دلا وأم نامک پستک کا کری افتاب الدین اپنے نایک سے سبت رشیس کی پوچا کراتا ہے۔ ایک دوسرے لیکیک حمید الله کی پستک اجهیلو اسلامی میں براهین لوگ قران کی مدد سے شبع مہردت نکالتے هیں ، اپدوں کا رچلیتا پرسدھ کوی کرم علی اپنے انیک کویتاؤں کو وادھا اور کرشن کو بیہیت کرتا ہے ، مسلمانوں کا ایک فرقه لکشمی کی اُپلسنا کے کیت کا کر ھی اُپنا پیت یالتا تھا ۔ یہ لوگ آب تک یہی کرتے ھیں ،

یہ کچھ مثالیں ھیں جن سے آس زمانے کے بنگال کے ھندو مسلمانین کے سانسکرت میل جول کے جیون پر تھوڑھ سی روشنی پوتی ہے ،

रामनाम धन जाको !

رام نام دهن جا كو!

साधु टी. एल. बस्वानी

[एकांकी नाटक]

पात्रः

गुरु नानक (गुरू बनने से पहले) कालू—गुरु नानक के पिता ग्ररीब—कालू का नौकर खरीदार—गरीब, अपाहिज, कक़ीर आदि

दस्य पहला

स्थान-कालू के घर का एक कमरा

[कालू और गरीष दोनों आपस में बातें कर रहे हैं। बातें करते करते कालू गुरू नानक को आवाज देता है। नानक धीमे पाँव रखते हुचे कमरे में दाखिल होते हैं। उनकी आँखें जगमग हा रही हैं, मानो वे दिल की गहराई में कोई रौशन नजारा देख रहे हैं. कालू चिन्तित और कुछ गुस्से में भरा हुआ दिखाई देता है.]

कालू-नानक ! तेरे तरीक्षों से मैं बेहद परेशान होगया हूँ ! मेरी समम में नहीं खाता कि मैं तेरा क्या करूँ ! سادهو ٿي . ايل . وسواتي

[ایکانکی ناتک]

.

گرونانک (گرو بلنے سے پہلے کالوسگرونانک کے یتا

غریب--کالو کا فوکر

خريدار-خريب اباهج فقهر آدى درشيه بها

استھاں۔۔۔ کالو کے گھر کا ایک کمرہ

[کالو اور غریب دونوں آپس میں باتیں کو رہے ھیں ، باتیں کو رہے ھیں ، باتیں کرتے کالو گرونانک کو آواز دیتا ھے ، نانک دھیے پاؤں رکھتے ھوئے کمرے میں داخل ھوتے ھیں ، اُن کی آنکھیں جکمگ ھو رھی ھیں ' مانو وے دل کی گہرائی میں کوئی روشن نظارہ دیکھ رہے ھیں ، کالو چنتت اور کچھ غصے میں بھرا ھوا دکھائی دیتا ھے]

کاہ۔۔۔نانک ! تیرے طریقیں سے میں بےحد پریشان ہوگیا میں امیری سمجھ میں نہیں آتا کہ میں تھرا کیا کروں!

رام دام نفن جاكو إ

तानक-(गाने जगते हैं)-

साधो यह तन मिध्या जानो !

या भीतर जो राम बसत है, साँचो ताहि पिछानो ।।
यह जग है सम्पति सुपने की, देख कहा ऐड़ानो ।
संग तिहारे कहू न चाले, ताहि कहा लपटानो ।।
अस्तुति निंदा दोऊ परिहरि, हरि-कीरति वर खानो ।
जन 'नानक' सब ही में पूरन, एक पुरुष भगवानो ।।

कालू—(रारीष से)—नानक को तलबएडी ले जाओ ! वहाँ इसके लिये एक आटे की दूकान खोल देना; यह पैसा लां (रुपये की थैली देता है) और इसे खुश रखना, और यह देखते रहना कि इसका रोजगार ठीक से चल रहा है.

रारीय-हाँ सरकार !

[रारीब नानक को ले जाता है. नानक उसके साथ अजन गाते हुये जाते हैं.]

दृश्य दूसरा

स्थान-शाटे की द्कान

[नानक दूकान में बैठे हुये हैं. एक रारीय और अपाहिज आदमी वहाँ से गुजरता है. नानक तराजू में आटा तोलते हुये उसे बुलाते हैं.]

नानक—क्यों भाई ! तुम तो बहुत बुढ़े, रारीब और भूखे मालूम होते हो ? ला यह आटा ला (तराजू उसकी तरक बढ़ाते हैं), इसकी तुम्हें कोई क्रांमत न देनी पड़ेगी! लो इसे लो और अल्लाह के गुन गाओ!

(फिर एक दूमरे ककीर को बुलाकर)-

लो भाई यह आटा तुम्हार लिये हैं! यह मेरी मोहब्बत की सौगात कुबूल करा फक़ीर! और लोगों को अल्लाह की नियामतों की बात बताओं!

(फिर एक बूढ़ी भिखमंगन को गांद में बच्चा लिये हुए देखकर)—

लो मेरी माँ! यह आटा तुम्हारे श्रीर तुम्हारे इस देवता जैसे सुकुमार झौने के लिये हैं! जाओ उसी ईश्वर की महिमा का बखान करों!

(फिर एक ग़रीब मुसलमान को देखकर)-

भाई ! तेरे अन्दर भी उसी अल्लाह का जहूर है ! उस अल्लाह का जो सब के अन्दर है और सब जिसके अन्दर हैं !

हिन्दू जपते राम नाम, मुसलमान खुदाय, इक्को राम रहीम है, मन में देखो लाय।

ऐ मेरे भाई, इस आटे से अपनी कोली भरलो, अपना मुँह उस परवरिद्गार की तरफ उठाओ; और उसी के पाक नाम का सुमिरन करों! نانک ۔ (کانے اللہ میں)۔

سادهو يه تن متهيا جانو أ

یا بهیتر جو رأم بست هے' سائنچوتاهی پنچهائو.

یه جگ هے سبهتی سپنے کی' دیکھ کہا ایزائو.

سنگ تهارے کنچهو نه چالے' تاهی کها لپتائو.
استوتی نندا دوؤ برهری' هری کیوتی أر آنو.
جن 'نانک' سب هیمیں پورن' ایک پرش بهکوائو.

کالو۔۔۔(غریب سے)۔۔۔۔نانک کو تلوئدی لیے جاؤ 1 وہاں اِس نے لئے ایک آئے کی دوکان کورل دینا؛ یہ پیسہ لو (روپٹے کی نهیلی دیتا ہے) اور اسے خوش کونیا اور یہ دیکھتے رہنا کہ اِس کا روزگار ٹھیک سے چل رہا ہے۔

غريب-هال سركار!

آ غریب نانک کو لے جانا ہے ۔ نانک اُس کے ساتھ بہمجن گاتے ہوئے جاتے میں ۔]

درشيه دوسرا

استهان- –آئے کی دوکان ۔

[نانک دوکان مهی بیٹھے هوئے هیں ۔ ایک غریب اور اپنعیج آدمی وهاں سے گذرنا ہے ۔ نانک ترازو میں آئاے ولتے هوئے آب بلاتے هیں ۔]

نانک—کیوں بھائی ا تم تو بہت بورھے عریب او ابھوکھے معلوم ہوتے ہوگھے معلوم ہوتے ہو اور آل اور آس کی طرف بڑھاتے ہیں اُن اُن اُن کی تمهیں کوئی قیمت نه دینی پڑیگی اِ لو اسے او اور الله کے کی گؤ ا

(پھر آیک درسرے نقیر کو بلاکر)

لُو بَهَائی یه آتا نمهارے لئے ہے! یه سیری صحبت کی سوغات قبول کرو نقیر! اور لوگوں کو الله کی نعمتوں کی بات بتاؤ!

(پھر ایک بروهی بهکمنکی کو گود میں بحجہ لئے هوئے دیکھکر)—

لو میری ماں! یہ آتا تمھارے اور تمہارے اِس دیوتا جیسے سوکار چھرئے کے لئے ہے اجاؤ اُسی ایشور کی مہما کا بکھاں کور!
(پھر ایک غریب مسلمان کو دیکھکر)

بھانی ! تیرے اندر بھی اُسی اللہ کا ظہور ہے اِ اُس اللہ کا جو سب کے اندر بھی !

هندو جهتے رام نام مسلمان خدائے، اِکو رام رحیم هے، من میں دیکھو لائے ،

اے میرے بھائی' اِس آئے سے اپنی جیولی بھر لو' اپنا ماھ اُس پروردگار کی طرف اُٹھاؤ' اور اُسی کے پاک قام کا سموں کرو!

(रारीब लौटकर जब दूकान पर आता है तो वहाँ मीड़ को खड़ा पाता है ओर नानक से कहता है)—

ग़रीब—तुम्हारी दूकान पर तो खरीदारों की भीड़ है. भाज तो तुमने काकी कमाया होगा. तुम्हारे बाप यह जान कर बहुत खुश होंगे.

नानक—मैं जानता हूँ मेरा वह पिता बहुत खुश होगा;

पिता ! जिसने मुक्ते यहाँ भेजा है !

रारीब—अब तक तुमने कितना कमाया ? नानक—इतना कि जिसे मैं बयान नहीं कर सकता ! रारीब—कितना ? लाखो देखूँ तुम्हारा सन्दूक ? (सन्दूक खालकर देखता दे ता उसे खूछा पाता है) हैं! क्पये कहां हैं ? नानक—मेरा खजाना इन घाँखों से नहीं दिखाई देता ! रारीब—नानक, अइया ! बता दो कपये कहाँ हैं, नहीं

तो मैं तुन्हारे बाप से जाकर शिकायत करूँगा.

नानक—त्यांग के बने मेरे रुपये हैं ! अपरिमह मेरी दौलत है ! तर्के दुनिया ही जिन्दगी की सब से बड़ी कमाई है ! और राम नाम ही सबा लेन देन है !

(बह फिर आटा तोल तोल कर गरीबों को मुक्त देते

हुये गाते हैं)-

जो नर दुख में दुख नहिं माने.

सुख सनेह ऋरु भय नहिं जाके, कंचन माटी जाने. नहिं निन्दा नहिं अस्तुति जाके, लोभ मोह अभिमाना, हर्ष सोक तें रहें नियारों, नाहिं मान अभिमाना. आसा मनसा सकल त्यागि के, जग तें रहे निरासा, काम कोध जेहि परसें नाहिंन, तेहि घट ब्रह्म निवासा. गुरु-किरपा जेहि नर पै कीन्हीं, तिन यह जुगति पिछानी, नानक लीन भयो गोबिन्द सों, ज्यों पानी संग पानी.

गरीब-- (बहुत दुखी होकर), नानक, तुम तो बिलकुल पागल हो गये हो !

नानक—धन्य हैं ऐसे पागल ! और नियामत है यह पागल पन ! क्योंकि ये पागल असहायों और दुखियों में, धस सारी दुनिया के शहनशाह को देखते हैं जो नाना रूप और नाना भेदों में पृथ्वी में व्याप्त है ! धन्य हैं, धन्य हैं ऐसे पागल ! वे दौलत रारीबों में बाँट देते हैं और उसके नाम की महिमा का बखान करते हैं !

दृश्य तीसरा

[नानक गाते हैं श्रीर श्राटा बाँटते हैं श्रीर गाते हैं. दूसरे दिन दूकान बन्द हो जाती है, श्राटा बचा ही नहीं जिसे ग्ररीबों में बाँटा जाता. ग्ररीब कालू के पास जाकर "पागल" नानक की शिकायत करता है श्रीर कालू बेहद लाल पीला हुआ श्राता है.] (فریب لوٹ کر جیب دوکلی پر آتا ہے تو رہاں بیبر کو کیراً پانا ہے اور تاتک سے کہنا ہے)—

فریب ستمهاری درکان پر تو خریدارری کی بهیر هے . آج تو نہدے کانی کمایا هوگا ، تمهارے باپ یہ جان کر بہت خرص مرتا ہے .

نائک سے میں جانتا ہوں میرا وہ پتا بہت خوش ہوگا۔ بتا ا جس نے مجھے یہاں بھیجا ہے ا

غریب اب تک تمنے کتا کمایا ؟

نانک انک جسم میں بیان نہیں کر سکتا ! غریب سکتنا ؟ تو دیکھوں تبھاراً صندوق ؟ (صندوق کھولکر دیکھتا ہے تو آسے چھوچھا یاتا ہے)

هیں ! رویٹے کہاں گٹے ؟

ناتک سمیرا خزانه اِن آنهوں سے نہیں دکھائی دیتا ا غریب سنانک بهیا ا بتا دو روپئے کہاں هیں نہیں تو میں تمهارے باپ سے جا کو شکایت کرونکا ،

فانک ستهاگ کے بلے مهرت روپائے هیں ا اُپریکوہ مهری دولت ہے ا ترک دنیا هی زندگی کی سب سے بڑی کیائی ہے اور رأم نام هی سچا لهن دین ہے !

ر وہ پہر آتا تول تول کو غویبوں کو مفت دیتے ہوئے ۔ تے هیں)—

جو در دکھ میں دکھ تھیں مانے ،

سکه سنهه ارو بهثر تهیں جاکے کنچی ماتی جائے۔ نہیں ندا نہیں اسلوتی جاکے اوبه موہ ابهیا نا نہیں سرک تیں رقے نیارو ناهیں ملی ابهیانا۔ اُسا منسا سکل تیاگ کے جگتیں رفے نراسا نام کرودہ جیہی پر سیں ناهی تی یہ جوگت پچھانی نار کے کینهی تی یہ جوگت پچھانی نائک ابنی بھیو گورند سوئ جیوں پانی سنگ پائی۔

غریب (بہت دکھی هو کر)' قائک' تم تو بالکل پاگل هر گئے هو!

نانک سی میں ایسے پاکل! اور نمست ہے یہ پاکل بن اکیونکھ یہ پاکل اسپایوں اور دکھوں میں' اس ساری دنیا کے شہنشاہ کو دیکھتے ہیں جو نا نا روپ اور نا نا بھیدوں میں پرتھوی میں ریابت ہے! دھنیہ ہیں' دھنیہ ہیں ایسے باکل اور دولت غریبوں میں بانست دیتے ہیں اور اس کے نام کی مہما کا بکھاری کرتے ہیں!

درشيم تيسرا

نانک کاتے ہیں اور آتا بائٹتے ہیں اور کاتے ہیں۔ دوسوے دی دوکان بند ہوجاتی ہے، آتا بھا ہی نہیں جسے غریبوں میں یائٹا جاتا ۔ غریب کالو کے پاس جاکو ''پاگل'' نانک کی شکایت کرنا ہے اور کانو ہے حد قال پیلا ہوا آتا ہے ۔]

कालू—तुमने मेरी जिन्दगी तत्स्व कर दी नानक ! तुमने अपने सान्दान का नाम खुवा दिया नानक ! तुमने नवाब की नौकरी से इनकार किया, मैंने तुम्हें यह दूकान कर दी. लेकिन तुमने दे देकर दूकान का भी सफाया कर दिया !

नानक-पिता जी ! अपने इस अज्ञान बेटे पर खका न होइये ! यह देना ही सब से बड़ा पाना है पिता जी ! क्योंकि चीथड़ों में लिपटे हुये इन दुखियों के वेश में ही वह सारे जगत का राजा आता है !

कालू — लेकिन दुमने तो मेरी सारी दौलत लुटा दी ! नानक — मैंने यह सब उसी परम पिता के नाम पर किया जिसने मुक्ते यहाँ मेजा है.

काल्-मैंने तुन्हें कमाने के लिये भेजा था, लुटाने के लिये नहीं!

नानक—मुहब्बत की शह में कोई चीज नहीं लुटती पिता जी ! वह दिन दूनी रात चीगुनी बढ़ती है. सच्चाई के महल में इसका लेखा जोखा होकर भएडार लगता जाता है.

कालू—पागल चन्द ! तुम मुक्ते अमीर से रारीब कर दागे!

नानक—धन्य हैं वे गरीब, क्योंकि उनके पास रामनाम की अथाह दौतत है!

कालू—नयों बकवास करते हो. तुम्हें कोई नहीं सममा वुमा सकता बलो वापस व्यापार रोजगार तुम्हारे बस का नहीं है!

नानक—पिता जी ! राम नाम ही मेरा व्यापार है ! दुखियों से ही मेरा लेन देन है ! उन्हीं के हृद्य के भीतर जो सतमंजला महल है वहीं ईश्वर वास करता है और जब उसकी मेहर होती है तो वह हमारे दिलों की गाँठ खोलकर हमें त्याग में जो रहस्यमय सत्य छिपा हुआ है उसके द्र्शन कराता है !

کالوسہ تم نے میری زندگی تلام کردی ثانک! تم نے آپنے خاندان کا نام آبو دیا نانک! تم نے آبکار کی نوکوی سے آبکار کیا مینے تمییں یہ دوکان کردی کیان تم نے دیے دیکر دوکان کا بھی صفایا کر دیا!

نائک سیتاجی ! اپنے اِس اگیاں بیتے پرخفا نہ ہوئھ ! یہ دینا ہی سب سے بڑا پانا ہے پتاجی ! کیونکہ چیتھروں میں اپتے ہوئے ! اپنے موئے اِن دکھیوں کے ویش میں ہی وہ سارے جکت کا راجا آتا ہے !

کانو۔۔۔(یکن ٹم نے میری بیاری دولت اٹائی ! نانک۔۔۔مینے یہ سب اُسی پرم پتا کے نام پر کیا جس نے مجھے یہاں بھیجا ہے .

كالرسميني تمين كماني كي لأم بهنجا تها أ الآني كي للم تبين !

ٹانک-محبت کی راہ میں کوئی چیز ٹہیں لٹتی پتاجی ! وہ دین دوئی رأت چوگئی بڑھتی ہے ۔ سچائی کے محل میں ۔ اِس کا لیکھا جوکھا ہو کو بھنڈار انکتا جانا ہے ۔

کارسیاکل چاد ! تم مجھے أمير سے غریب كر دو كے !

ٹانک سدھنیہ ھیں وے غریب کیونکہ اُن کے پاس رام نام کی اتباہ دولت ہے!

کالو۔۔۔کیوں بکواس کرتے ہو ۔ تمهیں کوئی نہیں سمجھا بجھا سکتا ۔ چاو راپس ۔ ویاپار روزگار تمھارے بس کا نہیں ہے ا

نائک۔۔۔پتاجی! رأم نام ھی میرا ریاپار ہا! دکھوں سے ھی میرا لیں دبن ہے ۔ اُنھیں کے ھردے کے بھیتر جو ست منزلہ محل ہے وعیں ایشور واس کونا ہے اور جب اِس کی مہر ھوتی ہے تو وہ ھمارے داوں کی کانٹھ کھولکر ھمیں تیاگ میں جو رھسیہ مئے ستیہ چھھا ھوا ہے اُس کے درشن کرانا ہے!

(1885 से 1920)

श्री मगन साई देखाई

सन् 1885, इविडयन नैरानल कांगग्रेस की स्थापना का वर्ष था. यहाँ तक पहुँचते पहुँचते आरत की स्वतंत्रता की यात्रा की दो पीढ़ियाँ पूरी हुई खीर सीखरी नवी पीढ़ी शुरू हुई जैसा कह सकते हैं.

दूसरी पीढ़ी के बुजुर्गों ने मिलकर इस संस्था की स्थापना की. उस समय उन लोगों को इस बात का उपाल तक न होगा कि यह संस्था जागे चलकर भारत को स्वतन्त्र करने में कामयाब साबित होगी. क्रीम, जाति, वर्म, भाषा हत्यादि किसी भी प्रकार के भेदभाव के बिना सब हिन्दुस्तानी जीर हिंद-हित-चिंतक जन्य देशवासी—खास तौर पर अंग्रेज भी—उसमें शामिल हो सकते थे. इस प्रकार की स्थापना करने बाले उस समय के नेता बर्ग ने इसके जरिये नया हिन्द कैसा होगा इसकी एक मोटी रूप-रेखा पेश की, इस नई संस्था का यह बिचार उसका एक मुस्तक्रिल अंश रहा है.

शुरू के 20 सालों में—1886 से 1905 तक इस संस्था का जो कार्य हुचा, उसके मुद्दों पर और उसके फैसलों पर सौर करें तो उसमें से बहुत दिल जरूप सामग्री हासिल हो सकती है. इस बारे में एक खास ध्यान में लेने जैसी बात यह है कि काम काज की नीति रीति और उदेश्यों के बारे में उन बीस साल के अन्दर कोई खास अलग हिन्द या पश्च साक नहीं हुचे थे. जिस सामान्य नीति और उदेश्य को लेकर दूसरी पीढ़ी चली थी, आमतीर पर उसी को मंजूर करके काम चलाया गया. देश के भावी मक्रसद और उसके हासिल करने के बारे में भी, 1905 के बाद ही ऐसा साफ मेद नजर आने लगा. स्वराज्य-यात्रा की तीसरी पीढ़ी इसी मेद पर सदी हई दिखाई देती है.

इस भेद से मन्ता नरम चौर गरम, या जहाल चौर मनाल पक्षों चौर तुक्रते नजर की पैदाइश से है. हिन्द चौर इंगलेंड के इकट्ठे होने में दोनों की मलाई का इंश्वरीय संकेत है—यही भावना मनाल पक्ष की नीव है. हिन्द एक प्राचीन झलग राष्ट्र है चौर उसके झनुरूप उसे अपनी प्रतिष्ठा हासिल करनी चाहिये, इस प्रकार की भावना चौर प्रतिक्का, जहाल पक्ष की नीव है. पार्लियामेन्टरी तरीक्रे से हमें काम करके आगे चलना चाहिये, यह मनाल पन्न की रीत है. (1920 = 1885)

شری مکن بهائی دیسائی

سی 1885؛ آلتین فیمنل کافتریس کی آستهاپنا کا روش نها . یهاں نک چپوئسچنے چپوئسچنے بھارت کی سرتئٹرنا کی یاترا کی دو پھومیاں چوری ہوٹھی آور نیسری نئی پھوھی شروع ہوئی جیسا کہم سکتے میں .

دوسری پهرهی کے بورگوں کے ملکو اِس سنستها کی اسهاپنا کی ، اُس سمنے ان لوگوں کو اِس بات کا خیال تک ند هوا که یه سنستها آگے چل کو بهارت کو سوتناتر کرئے میں کامیاب نابت هوگی ، قوم ' جاتی ' دهوم ' بهاشا اتیادی کسی بھی پرکار کے بھا سب هندستانی اور هندو هت چنتک انبه دیش واسی سخاص طور پر انگریز بھی ۔ اُس میں شامل هو سکتے تھے ، اِس پرکار کی استهاپنا کرنے وائے اُس سمنے کے تیتا ورگ نے اِس کے ذریعہ نیا هن کیسا هوگا اِس کی ایک موثی رونیا ریکیا پیش کی ' جس نئی سنستها کا یہ وجار اِس کا ایک ستنل انھی رها ہے .

شروع کے بیس سالوں میں سالھ 1860 سے 1805 نک اس سنستیا کا جو کاریہ ہوا اُس کے مدوں پر اور اُس کے نیصلوں پر غور دویں تو اُس میں سے بہت دلچسپ سامگری ماصل ہو سکتی ہے ۔ اِس بارے میں ایک خاص دھیاں میں لینے جیسی بات یہ ہے کہ کام کاج دی تیتی ریتی اور اُدیشوں کے بارے میں بیس سال کے اُس دوئی خاص الگ دوشتی یا بکش صاف نہیں ہوئے تیے ، جس سامائیہ نیتی اور اُدیشه کو لیکر دوسوی پہتھی چلی تھی عام طور پر اُس دو منظور در کے کام چایا گیا ، دیش کے بھاری مقصد اور اُس کے حاصل درلہ کے بارے میں بھی ایما صاف بید نظر آنے بارے میں بھی پر اُوری ہوئی دیتی ہے ، قیسری پہتھی اِسی بھید پر اُوری ہوئی دیتی ہے ،

اِس بهید سے منھا نرم اور گرم' یا جہال اور موال پکشوں اور نتطۂ نظر کی پیدائش سے ہے ۔ هند اور انگلینڈ کے اِکٹھ اور میں دونوں کی بھائی کا ایشوریہ سنکیت ہے۔ یہی بھاونا موال پکش کی نیو ہے ۔ هند ایک پراچھوں الگ راشڈر ہے اور اُس کے انوروپ آسے اپنی پرتشٹھا حاصل کرنی چاھٹے' اِس پرکار نریباونا اور پرتکیا جہال پکش کی نیو ہے ۔ پارلیا مینائری طریقے سے هیں کام کوکے آگے چانا چاھٹے' یہ موال پکش کی ریمی ہے۔

इस दक्त से काम नहीं चल सकता, स्ववेशी इत्यादि स्वतन्त्र रीतों से जनता में काम करके राष्ट्र को जगाना चाहिये यह जहाल पक्ष की रीति है. श्रंमेजी के माध्यम से काम चलाने की पद्धति सवालों की श्रीर लोकभाषा के माध्यम से कार्य चलाने की पद्धति जहालों की है. इस प्रकार के साफ रास्ते तीसरी पीढ़ी में देखने को मिलते हैं. भारत-सेवक नाम गोखले श्रीर लोकमान्य तिलक की इस पीढ़ी के दूसरे कई नाम लिखे जा सकते हैं.

इस पीढ़ी का ध्यान देने लायक एक आम लक्ष्मण यह है कि राष्ट्र की सेवा के लिये जिन्दगी वक्फ करनी चाहिये, यह भाव इस युग में साफ तौर से प्रकट हुआ। राजनीति एक सेवा धर्म है, उसमें राष्ट्र सेवा है, इस मन्त्र पर यह पीढ़ी खड़ी हुई. राजनीति में भी मजहबी निगाह से काम लेना चाहिये, इस प्रकार की उदार भावना सियासी कामों को मिली। त्याग, बलिदान, अपने आप को खपा देना इत्यादि गुण राष्ट्र सेवक के लिये जरूरी सममे जाने लगे. 1905 में भारत सेवक समाज की स्थापना हुई. साथ ही साथ कौमि-यत का भी महत्व बढ़ा. अंग्रेजी पर-राज्य के बदले स्वराज्य आना चाहिये, ऐसा भाव लोगों में पैदा होने लगा.

ऐसी सियासत के अलावा मजह वी और रूहानी रंग भी इसके साथ लोगों पर चढ़ने लगा, बल्कि यह रंग प्रेरणा देने बाला बुनियादी रंग था. सामुदायिक पुरवार्थ की नींब धर्म और आध्यात्म में से प्राप्त की गई. गीता इत्यादि के जरिये ऊपर बताते हये जहाल समाज श्रीर राष्ट्र धर्म का समर्थन किया जाने लगा. अंग्रेजी शिक्षा की नई विद्याओं से एक प्रकार के शंकाबाद, शून्यवाद तथा नास्तिकवाद का जो जोर पढ़े लिखे बर्ग में पैदा होता जाता था. उसपर इस बात ने बहुत ही अञ्ला असर डाला. इसमें स्वामी विवेका-नन्द की देन सब से ऊँची है. स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, श्ररविन्द् घाष, लाला हरदयाल, ऐनी बिसेंट इत्यादि कई महान विचारकों के नाम भी नाट किये जाने चाहिरों. राष्ट्र के इस नये धर्म के लिये श्रीर नये पराक्रम के लिये नयी शिक्षा होनी चाहिये, इस स्याल में से राष्ट्रीय शिक्षा का भी मंत्र पैदा हुआ और उसके मुख्तलिक प्रयोग शुरू हुये.

किन साधनों को काम में लेना चाहिये उसके बारे में हमने यांडा-सा देखा. जहाल पक्ष के साथ-साथ त्रासवाद और क्रान्तिकारी विचार भी इस काल में प्रकट हुये. इनकी मिसालें भी एक खास विषय के तौर पर देखने जैसी हैं.

190 से 1915-20 तक इस पीढ़ी की सरगर्मी यहाँ तक पहुँची कि कांग्रेस से अलग एक राजकीय संस्था भी कायम हुई, और इस तरह आखिर में दोनों दल व्यवस्थित तीर पर अलग हवे.

اِس تھنگ سے کام نہیں چل سکتا سہدیشی اِتیادی سوتنتر ریتوں سے جنتا میں کام کر کے راشٹو کو جگانا چاہئے یہ جہال پکھی کی ریت ہے انگریزی کے مادھیم سے کام چلانے کی پدھتی جہالس کی ہے ۔ لوک بھاشا کے مادھیم سے کام چلانے کی پدھتی جہالس کی ہے ۔ اِس پرکار کے صاف راستے تیسری پیڑھی میں دیکھنے کو ملتے ہیں ۔ بھارت سیبک کوکھلے اور لوکھانیہ تلک نی اِس پھیڑھی کے دوسرے کئی تام لکھے جا سکتے ھیں ۔

اِس پیرته ی کانهیان دینے لائی ایک عام لکشن یہ ہے کہ راشقر کی سهوا کے لئے زندگی وقف کرنی چاهئے یہ بھاؤ اِس یگ میں صاف طور سے پرگٹ ہوا ، راج نیتی ایک سهوا دهرم ہے اُس میں راشٹو سهوا ہے اِس معتب پر یہ پہرتھی کمری ہوئی ، راج نیتی میں بھی مذہبی نگاہ سے کام لینا چاعئے اُس پرکار نی اُرار بھاؤنا سهاسی کاموں کو ملی ، تیاگ بلیدان اُنے آپ کو کہا دینا اِبهادی گن راشڈر سهوک کے لئے ضروری سمجھے جانے کہا دینا اِبهادی گن راشڈر سهوک سماج کی استهاپنا هوئی ، سانھ می ساتھ دیا ہے ہوئے ہوئے ہوئے ہوئے دیا ہے ساتھ یہانے چاہئے اُنگیزی پرراجیہ کے بداے سرراجیہ آنا چاههے اُن ایسا بھاؤ لوگوں میں پیدا ہوئے لگا ،

ایسی سیاست کے علاوہ مذھبی اور روحانی رنگ بھی اِس کے ساتھ اوگوں پر چڑھنے لگا، بلکھ یہ رنگ پریونا دینے والا پنیادی رنگ نها ، سامهایایک پروشارتھ کی نبھ دھرم اور ادھیاتم میں سے پرابت کی گئی . گیتا اِبیادی کے ذریعے اُوپر بتائے تھوئے جہال سماج اور راشتر دھرم کا سمرتھیں کیا جائے لگا ، انگریزی شکشا کی نئی ودیاؤں سے ایک پرکار کے شنگاوات شونیہواں تتبا ناستکواں کا جو زور پڑھ لیے ورگ میں پیدا تھوتا جانا تھا اُس پر اِس بات نے بہت سی اچھا اثر ڈالا . اِس میں سومی ویویکاند نی دین سب سے اُونیچی ھے سوامیشردیفا نند کا لاجھ تھردیال ابنی بسینت نند کئی مہان وچارکوں کے نئم بھی نوٹ دئے جائے جائے نئی رائٹر کے اِس نئے دھرم کے لئے اور نئیے یوائرم کے لئے نئی میشت ھوئی جائے ہائے اور نئیے یوائر کے ایس نئے دھرم کے لئے اور نئیے یوائرم کے لئے نئی مہنا ہوئی چاہئے اس خیال میں سے واشتریہ شکشا کا بھی منتر پیدا ھوا اور ایس کے سختلف پریوگ شروع ھوئے .

ئی سادھنوں کو کام میں لینا چلھئے اُس کے بارے میں ھم نے تھوڑا سا دیکھا ، جہال پکش کے ساتھ سابھ تراسواد اور کرانتکاری وچار بھی اُس کال میں پر مف ھوئے ، اِن کی مثالیں بھی ایک حاص وشے کے طور پر دیکھنے جیسی ھیں ۔

1905 سے 20-1916 نک اِس پیرھی کی سرگرمی بہاں تک پہرئتچی که کانگریس سے انگ ایک راجکیه سنستها بھی تایم موئی، اور اس طرح آخر میں دوتوں دل ویوستهت طور پر الگ ھرٹے۔

क्रीमी भेद का जम्म भी इसी युग में साफ साफ देखने को मिला. किरकाषाराना मताधिकार इस समय की खोज थी. आराा खां जैसे नेताओं ने अपनी अलग मुस्लिम संस्था की स्थापना की. इससे दिन्द की जन जागृति और उसकी स्थापना की. इससे दिन्द की जन जागृति और उसकी स्थराज्य-यात्रा में एक नया सिलसिला शुक्त हुआ. हिन्दी-उर्दू भाषा इत्यादि की कड़वी बहस तथा हिन्दुवाद का जन्म भी इस युग में हो खुका था, यह साफ तौर से बताया जा सकता है.

क्रीमी-एकता एक महान राष्ट्रीय कार्य है, यह बात साक होती गर्र. कांग्रेस के लिये तो वह एक रचनात्मक कार्य माना गया.

यह ठीक है कि इस युग में जिस क़ीमीयत के फलसफे की चर्चा छीर फैलाव हुआ, उसकी भावना खास तौर पर हिन्दू धर्म की भाषा छौर भावों में थी. लेकिन जान बूक कर ऐसा हुआ था ऐसा नहीं कहा जा सकता, वह तो स्वाभाविक ही था. फिर भी वह एक ध्यान देने योग्य बात जरूर है. कांग्रेस के मंच पर तो सब क़ौमों के लोग सर्वधर्म की यानी सच्चे स्वराज्य धर्म की गरज से इकट्ठे होते थे, और एकता के लिये कोशिश करते थे.

ऐसे महान् पराक्रमी युग का असर अंग्रेज हाकिमों पर पढ़ना लाजमी था. राजकीय सुधार होने लगे. गोरों का 'गुरुभार' जिसे कहा जाता है ऐसा सूत्र अनुभव में आने लगा. राष्ट्रीय अभिमान को ठेस पहुंचे ऐसा भी कुछ इस पीढ़ी के अंग्रेज हाकिमों के बर्ताव में देखने का मिलता है. अंग्रेज राज्य और हिन्द की प्रजा अब एक दूसरे के आमने सामने है, ऐसा भाव आहिस्ता आहिस्ता सरकार में आने लगा. दा कौमों का इकट्ठा होना ईश्वरीय संकेत है, पढ़े लिखे लागों का ऐसा फलसका अब कमजार होने लगा. उसमें जाने अनजान अंगरंज हाकिम भी वजह होने लगे. हिन्द अब आजादी चाहता है, यह नारा जार पकड़ने लगा. देशाभिमान, देशभक्ति और उसके लिये तकलीकों बरदाश्त करना, इत्यादि गुण उस बातावरण में दाखिल हो गये.

इस युग में एक ऐशियाई दंश—जापान—का जो उत्थान देखने को मिला, उसने एक भारी प्रेरणा का काम किया. गोरे राष्ट्र के साथ हरीकायी की जा सकती है, यह ज्ञान खदरारी को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हन्ना.

सन् 1914 के जंग का असर इस पीढ़ी की सबसे बड़ी आ किरी घटना कही जा सकती है. उसके खत्म होने के साथ ही नई पीढ़ी का और नये युग का भी उदय होता है. यह चौथी पीढ़ीं, गांधी जी की पीढ़ी या 'गांधी युग' है। इस पीढ़ी ने स्वराज्य-यात्रा की आख़री मंजिल तै की. इसका विचार हम आगे करेंगे.

अनुवादक:-कनुभाई नानलाल पटेल

قومی بهید کا جام بهی اِسی یک میں صاف صاف دیکھنے کو ملا ، فرقعوارانه متادهیکار اِس سبے کی کھوچ نبی ، آغاخال جیسے نیتاؤں نے اپنی الگ مسلم سنستھا کی استهاپنا کی ، اِس سے هند کی جن جاگرتی اور اُس کی سوراجیته یاترا میں ایک نیا سلسله شروع هوا ، هندی اُردو بهاشا اِتهادی کی کروی بحث تنها هندو واد کا جنم بھی اِس یک میں هوچکا تها که صاف طور سے بتایا جاسکتا ہے ،

قومی ایکتا ایک مہاں راشقریہ کاریہ ہے' یہ بات صاف ہوتی گئی۔ کانکریس کے لئے تو وہ ایک رچنانمک کاریہ مانا گیا۔
یہ ٹھیک ہے کہ اِس یگ میں جس قومیت کے فلسفے کی چرچا اور پہیلاؤ ہوا' اُس کی بہارتا خاص طور پر هندو دھرم کی بہاشا اور بہاؤں میں تھی ۔ لیکن جان بوجھکر ایسا ہوا تھا ایسا نہیں کہا جاسکتا' وہ تو سوابہاوک ہی تھا ۔ پھر بھی وہ ایک دھیاں دینے یوگیہ بات ضرور ہے ۔ کانگریس کے منچ پر تو سب قوموں کے لوگ سرو دھرم کی یعنی سچے سوراجیہ دھرم کی غرض سے اکتے ہوتے تھے' اور ایکتا کے لئے کہشش کرتے تھے۔

ایسے مہان پراکرمی یگ کا ازر اِنکریز حاکموں پر پرنا گرمی تھا، راجکیہ سدھار ھونے لئے . گوروں کا 'گروبھار' جسے کہا جانا ہے ایسا سوتر انوبھو میں آنے لگا ، راشتریہ ابھیمان کو بہتاؤ میں دیکھنے کو ملتا ہے ، انگریز راجیہ اور ھند کی پرجا اب ایک دوسرے کے آمنے سامنے ہے' ایسا بھاؤ آمستہ آھستہ سرکار میں آنے لگا . دو قوموں کا اِکتھا ھونا ایشوری سنکیت ہے' یرجا پرھے 'کھے لوگوں کا ایسا فلسفہ اب کمؤور ھونے لگا . اُس میں برخانے انگریز حاکم بھی وجہ ھونے لگا . اُس میں جانے انجانے انگریز حاکم بھی وجہ ھونے لگے . ھند اب آزادی چاھتا ہے' یہ نعرہ زور پکڑنے لگا . دیشابھیمان' دیش بھکتی اور جاس کے لئے تعلیفیں برداشت کرنا' اِتھادی گن اُس واناورں میں داخل ھوگئے .

اِس یک میں ایک ایشیائی دیھی۔ جاپاں۔ کا جو اُنہاں دیکھنے کو ملا' اُس نے ایک بھاری پریرڈا کا کام کیا ۔ گورے راشڈر کے ساتھ ھوری جھاٹی کی جاسکتی ہے یہ گیاں خوداری کو بڑھائے میں سہایک سدہ ھوا ۔

سن 1914 کے جنگ کا اثر اِس پیرَھی کی سب سے بری اُخری گھتنا کہی جاسکتی ہے ۔ اُس کے ختم ھونے کے ساب ھی نئی پیرَھی کا اور نئے یگ کا بھی اُدئے ہوتا ہے ۔ یہ چونھی پیرَھی' کاندھی جی کی پھرَھی یا 'کاندھی یگ' ہے ۔ اِس پھرَھی نے سوراجیم یانرا کی آخری منزل طے کی ۔ اِس کوچار ھم آگے کرینگے ۔

أنوادك-شرى كنو بهائي نانا لال پتيل

श्री चक्रवर्ती राजागोपालाचारी (पिछले नम्बर से आगे)

श्रमरीका के डाक्टरों ने सैकड़ों तजरने करके इस खतरे हो सममा है. उन सन तजरबों को हम यहां नहीं दे सकते. हानसे पता चलता है कि यह टीका कितना खतरनाक हो हिकता है और है. श्रमरीका के जरनल श्राफ़ दी श्रमरीकन हिकत एसोसियेशन में इस तरह के तजरने अपते रहते हैं.

अब हम सन् 1954 और सन् 1956 के बड़े बड़े िहकल पत्र पत्रिकाओं से कुछ घटनाएँ बयान करते हैं. इन यानों में से तकनीकी डाक्टरी बातें और बड़ें बड़े डाक्टरी इन्द्र छोड़ दिये गये हैं.

27 नवम्बर 1954 के जरनल आफ दी अमरीकन में डिकल सोसियेशन में लिखा है कि बैनमार्क के एक लड़के को पांच रस की उन्न में बी० सी० जी० का टीका लगाया गया. का लगने के दा इक्ते के अन्दर उसे बहुत खतरनाक कस्म का तपेदिक शुरू हो गया और दो साल के अन्दर वह स बोमारी से मर गया. बीमारी किस तरह पैदा हुई और दी इसकी तफ सील वहां दी हुई है. यह सफ देखा, गया कि पेदिक के जो की ड़े लड़के के अन्दर फैले और जिन्होंने आखीर डिसकी जान ले ली वह बी० सी० जी० के ही की ड़े थे.

इस घटना के बारे में जरनल आफ दी अमरीकन मैंडिकल सांसियेशन में लिखा है कि:—''इस घटना से इम यह कह किते हैं कि बीठ सीठ जीठ के टीके से जो कीड़े जिस्म के उन्दर दाख़िल किये जाते हैं उनसे आदमी को इस तरह का पेदिक हो सकता है जो उसकी जान ले ले.''

एक दूसरी घटना 13 नवम्बर सन् 1954 के जरनल गफ दी अमरीकन मैडिकल एसोसियेशन में यह छपी है:— लैंड में साढ़े चौबीस बरस की उम्र के एक आदमी के छिने बाजू पर बी० सी० जी० का टीका लगाया गया. टीके हो जगह फफद आई जिसका मतलब यह लिया जाता है क यह टीके के कारगर और सफल हाने की खास पहचान . साल मर के बाद उस आदमी के दाहिनी तरफ एक फोड़ा फला. फोड़े को चीर दिया गया. अगले साढ़े चार बरस अन्दर उस आदमी का तरह तरह की बीमारियाँ हुई . । याँ हाथ सूजा, जांध पर, कमर में और जगह जगह फोड़ कि और फिर फेफड़े खराब हुए. अब बड़े बड़े डाक्टरों ने स का अच्छी तरह से इन्तहान किया. आखिर पहला

شری چکوررتی راجاگوپالچاری [بچھلے نمبر سے آگے]

امریکہ کے ذاکتروں نے سیکتوں تجربے کرکے اِس خطرے کو سمجھا ھے اُن سب تجربوں کو هم یہاں نہیں دیے سکتے . اُن سے بتہ چلتا ھے کہ یہ ٹیکہ کتنا خطرناک هوسکتا ہے اور هے . امریکن میدیکل اسوسلیشن میں اس طرح کے تجربے چھہتے رہے هیں .

اب هم سن 1954 میں اور سن 1955 کے بڑے بڑے میڈیکل پتر پترکاؤں سے کچھ کھٹائیں بیان کرتے ہیں ۔ اِن بیانس میں سے تکنیکی ڈائٹری شبد چھرو دئے گئے هیں ۔ گئے هیں ۔

27 نومبر سی 1951 کےجرنل آف دی امریکن میدیکل اسسٹیشن میں لکھا ہے کہ دنمارک کے ایک ارتے کو پانچ ہرس کی عمر میں بی سی جی کا ٹیکه لگایا گیا . ٹیکه لگئے کے دو هیتے کے اندر آسے بہت خطرناک قسم کا تب بق شروع ہو گیا اور دو سال کے اندر وہ آس بیماری سے مر گیا. بیما ی کس طرح پیدا ہوئی اور ہرتھی اِس کی تعصیل وہاں دی ہوئی ہے ۔ یہ صاف دیکھا تیا کہ تب بق کے جو کیڑے اور پھیلے اور جنہوں نے آخیر میں اُس کی جان لے لی وہ بی، سی، جی کے حلیوں نے آخیر میں اُس کی جان لے لی وہ بی، سی، جی کے هے . کیڑے تھے .

اِس گہتنا کے بارے میں جرنل آف دی آمریکن صیدیکل اسوسٹیشن میں لکھا ہے کہ:۔۔''اِس گہتنا سے ہم یہ کہہ سکتے ہیں دہ ہی، سی، جی کے ٹیکے سے جو کیڑےجسم کے اندر داخل کئے جاتے۔ میں آن سے آدمی کو اِس طرح کا تبدیق ہو سکتا ہے جو اُس کی جان لے ہے''

ایک دوسری گیٹنا 13 نومبر سن 1934 کے جونل آف دی امریکن میڈیکل اسومئیشن میں یہ چھپی ہے:—عالینڈ میں سارھے چوبیس برس کی عمر کے ایک آدمی کے داهنے بازر پر بی، سی، جی کا ٹیکھ لگایا گیا، ٹیکے کی جگہ پھپھد آئی جس کا مطلب یہ لیا جان ہے کہ یہ ٹیکے کے کارگر اور سپھل ھوئے نی ماس پہچان ہے ، سال بھر کے عد اُس آدمی کے داهنی طرف ایک ھوڑا نکلا، پھوڑے کو چیر دیا گیا، اگلے ساڑھے چار ایک ھوئی، اگلے ساڑھے چار برس کے اندر اُس آدمی کو طرح طرح کی بیماریاں بورس کے اندر اُس آدمی کو طرح طرح کی بیماریاں بھوئے اُدر پھر پھھڑے خراب ھوئے ، اب بڑے بڑے بور بھوڑے نکلے اور پھر پھھڑے خراب ھوئے ، اب بڑے بڑے برے اُدتروں نے اُس کا اُچھی طرح سے اُمتحان کیا ، آخر پھلا داؤر پھ

پہرا ٹکالے کے سارھے چار برس کے اندر اور ہی، سی، جی کا ٹیکہ اکلے کے سارھے پانچ ہرس کے اندر وہ آدمی طرح طرح کی بیماریوں میں مبتلا ہو کو مر گیا، اس بیچ سم سے پر اس کی پیٹ و خون وفیرہ کا جو اماتحان ایا گیا تو ہی، سی، جی کے ٹیکے کے کیڑے آس میں صاف ماف ملے اس گیٹنا پر امریکن میڈیکل اسوسٹیشن کے جرنل میں ڈائٹروں لے یہ صاف رائے دی ہے کہ:—"طاهر ہے کہ ہی، سی، جی کے ٹیکے سے آدمی کے جسم میں اور خون میں اِس طرح کی بیماری کے کیڑوں کی بستیاں بن سکتی ہیں اِس طرح کی بیماری کے کیڑوں کی بستیاں بن سکتی ہیں اِس طرح کی بیماری کے کیڑوں کی بستیاں بن سکتی ہیں جس جن سے اُس آدمی کی موت ہو جائے ۔"

سن 1974 کے امریکی میدیکل اسب ایشن کے جرائل میں الگ الگ تاریخور میں ایدیٹر کے نام تین خط چھیے ھیں ، اِن نینس خطوں کو ملاکر پڑھنے کی ضرورت ہے۔ ہم اُن تینوں کا خلامہ نیجے دیتے ھیں ،

پہلا خط کا جرائی سن 1964 کے جرنل میں چھیا ہے، اِس خط میں کسی آدمی نے اِبتیتر سے یوچھا ہے کہ ایک نوجوان لوکے کو تبدق کا آزمائشی تیکہ لگایا گیا ، تیکے کی جگہ نہیں پہھدی تو اب اُس آدمی کو تبدق سے بھائے رکھنے کے لئے ہی ۔ سی . جی ، کا ٹیکہ لگانا مناسب ہے یا نہیں آ

اِیڈیٹر نے اِس خط کا جو جواب دیا وہ بھی جزئل کے اُسی نمبر میں چبھا ہے ۔ اِیڈیٹر کا جواب یہ ہے کہ:-

"يہ بات كه أس آدمى كے بى . سى . جى . كا تيكه لكانا تبيك هوكا يا نهس بالكل حالات پر نربهر هے . اگر وا آدمى ايك معمولى شهرى هه ؛ چلتا پهرتا هے اور خاص طور پر تبودق سے يا تبدق كے مريفوں سے اُس كا سبندھ نهيں آتا تو بى . سى . جى . كا تيكه لكانے كى ضرورت نهيں هے ، اگرچه تيكه لكانے سے كوئى خاص نقصان بهى نهيں هوگا ليكن اگر آزمائشى تيك ميں اُس كے تيكے كى جكه نهيں پهيدى اور تبدق كے بيماروں سے اُس كے تيكے كى جكه نهيں پهيدى اُس كے گور كے اندر بيماروں سے اُس كو ملنا جلنا پرتا هے بعنى اُس كے گور كے اندر ميادق كے مريفوں سے ملنا پرتا هے تو اُسے بى .سى .جى ميں أس تبدق كے مريفوں سے ملنا پرتا هے تو اُسے بى .سى .جى .

اِس پر اِیڈیڈر کے پاس بڑے بڑے ڈاکٹروں کے زوردار خط اور آئے، اِن میں پہلا خط 4 ستمبر سن 1954 کے جرنل میں چہیا ہے آور امریکہ کے مشہور ڈاکٹر،

की का टीका लगने के सादे चार वरस के अन्दर और बी० सी० जी० का टीका लगने के सादे पांच वरस के अन्दर वह आदमी तरह तरह की बीमारियों में मुबतिला होकर मर गया. इस बीच समय समय पर उसकी पीप व खून वरीरा का जो इन्तहान लिया गया ता बी० सी० जी० के टीके के की दे उसमें साफ साफ मिले. इस घटना पर अमरीकन मैडिकल एसो-सियेशन के जरनल में डाक्टरों ने बह साफ राय दी है कि:— "आहिर है कि बी० सी० जी० के टीके से आदमी के जिस्म में और खून में इस तरह का मवाद फैल सकता है और उसके शारीर में बहुत सी इस तरह की बीमारी के की दों की बस्तियां बन सकती हैं जिन से उस आदमी की मौत हो जाये."

सन् 1954 के अमरीकन मैडिकल एसोसियेशन के जरनल में अलग तारीखों अलग एडीटर के नाम तीन खत छपे हैं. इन तीनों खतों को मिलाकर पढ़ने की जरूरत है. हम उन तीनों का खुलासा नीचे देते हैं.

पहला ख़त 3 जुलाई सन् 1954 के जरनल में छ्वा है. इस ख़त में किसी आदमी ने एडीटर से पूछा है कि एक नौजवान लक्के को तपेदिक का आजमाइशी टीक। लगाया गया. टीके की जगह नहीं फफदी तो अब उस आदमी को तपेदिक से बचाये रखने के लिये बीठ सीठ जीठ का टीका लगाना मुनासिब है या नहीं ?

यह याद रखने की बात है कि आम तौर पर आदमी के पहले तपेदिक का आजमाइशी टीका लगाया जाता है यह . देखने के लिये कि उसे तपेदिक है या नहीं और फिर अगर मालूम हा कि तपेदिक नहीं है तो बीठ सीठ जीठ का टीका लगाया जाता है.

एडीटर ने इस ख़त का जो जवाब दिया वह भी जरनल के उसी नम्बर में छपा है. एडीटर का जवाब यह है कि :—

'यह बात कि उस आदमी के बीठ सीठ जीठ का टीका लगाना ठीक होगा या नहीं बिलकुल हालात पर निर्भर है. अगर वह आदमी एक मामूली शहरी है, चलता फिरता है और खास तौर पर तपे दिक से या तपे दिक के मरी जों से उसका संबन्ध नहीं आता ता बीठ सीठ जीठ का टीका लगाने की जरूरत नहीं है. अगरचे टीका लगाने से कोई खास नुक्कसान भी नहीं होगा, लेकिन अगर आजमाइशी टीके में उसके टीके की जगह नहीं फफदी और तपे दिक के बीमारों से उसका मिलना जुलना पड़ता है यानी उसके घर के अन्दर तपे दिक्क के मरीज हैं, या वह कोई ऐसा काम करता है जिसमें उसे तपे दिक के मरी जों से मिलना पड़ता है तो उसे बीठ सीठ जीठ का टीका लगवा लेना चाहिये."

इस पर एडीटर के पास बड़े-बड़े डाक्टरों के दो जोरदार ख़त और आए. इनमें पहला ख़त 4 सितम्बर सन् 1954 के जरनल में अपा है और अमरीका के मराहूर डाक्टर, हाक्टर मार्क्स (Dr. J. A. Myers M. D.) का लिखा हुआ है. डाक्टर मायर्स दुनिया भर में तपेदिक के बढ़े से बढ़े माहिर डाक्टरों में गिने जाते हैं. उनके ख़त का खुलासा यह है:—

जनाब पढीटर साहब,

आपके 3 जुलाई सन् 1954 के खंक में सका 949 पर बीठ सीठ जीठ के टीकें के बारे में किसी का एक सवाल और आपका जवाब छपा है. आपने अपने जवाब में यह कहा है कि इस टीके से काई खास नुक्तसान नहीं होगा. इस बात को कि बीठ सीठ जीठ के टीके से काई खास नुक्तसान नहीं होता बहुत से डाक्टर बहुत दिनों से ग़लत बता रहे हैं. मैं सममता हूँ कि उनके इस ग़लत बताने के जो कारन हैं उनमें से कुछ आपके पाठकों को भी मालुम होने चाहिये.

बी॰ सी॰ जी॰ का बाजकल का टीका सन् 1921 में दां डाक्टरों ने शरू किया था जिनके नाम कालमैट (Calmette) और गोरिन (Goerin) थे. उन्हीं दोनों के नाम पर वह कीड़ा जिस का टीका लगाया जाता है बी० सी० जी॰ कहलाता है. इन दोनों डाक्टरों ने इस टीके के कीड़े का तपे (दक्त की बीमारी के कीड़े से खास तौर पर तैयार किया और सन 1924 में यह ऐलान किया कि टीके की स्नास रारज के लिये जा की दे उन्होंने तैयार किये हैं उनमें जार और जहर दोनों इतने कम हो गये हैं कि आदर्भा के या जानवर के जिस्म में उनसे तपेदिक पैदा नहीं हो सकता. लेकिन उस बक्त से लेकर अब तक जगह जगह दव खानों में जो की है इस टीके के लिये तैयार किये गये है और तैयार किये जा रहे हैं उनमें और सन् 1924 के उन कीड़ों में बहुत गहरा फ़क्ने पड़ गया है, ख़ुद उन दोनों डाक्टरों के दवाखानों मं जो कीड़े इस काम के लिये श्रव तैयार किये जा रहे हैं वह भी अब पहले वाले की दे नहीं रहे. इसके अलावा दो दवाखानों में तैयार किये हुए कीड़े भी एक दूसरे से नहीं मिलते. हमने इस तरह के तैयार किये हुए जितने कीड़ों को देखा है हर एक में बजाय उस एक तरह के की ड़े के जो डाक्टर कालमैट ने तैयार किया था हमें कई तरह के बीमा-रियों के कीड़े मिलते हैं. इससे यह बात साक हो जाती है कि बीठ सीठ जीठ के टीके के लिये जो की है तैयार किये जा रहे हैं वह डाक्टर कालमैट के वक़्त से लेकर अब तक बेटद बदल गये हैं और साथ ही एक दवाखाने के तैयार हुए की है दूसरं दवाखानों के तैयार हुए कीड़ों से बिलकुल अलग हैं. कोई दो आपस में नहीं मिलते. शायद इन तब्दीलियों के कारण ही पिछले पच्चीस बरस के अन्दर जिन आदिमयों या जिन जानवरों के बीठ सीठ जीठ के टीके लगाये गये हैं उनमें सतरनाक सुरतें पैदा होती दिखाई दी हैं. बहुत से लोगों के जिनके बीo सीo जीo का टीका लगाया गया उस

قائلر مائرس (.Dr. J. A. Myers M. D.) کالکها هوا هـ . قائلر مائرس دنیا بهر میں تبدق کے بوے سے بوے ماهر قائلروں میں گنے جاتے هیں . أن کے خط كا خلامہ يه هـ :--

جناب إيذيار ماحب

آپ کے 3 جولائی سن 1954 کے انک میں صفحہ 949 پر ہی . سی ، جی ، کے ٹیکے کے ہارے میں کسی کا ایک سوال اور آپ کا جواب جھیا ہے ، آپ نے اپنے جواب میں یہ کہا ہے کہ اِس ٹیکے سے کوئی خاص نقصان نہیں ہوگا ، اِس بات کو کہ بی . سی ، جی ، کے ٹیکے سے کرئی خاص نقصان نہیں ہوتا بہت سے ڈائٹر بہت دنوں سے غلط بتا رہے ہیں ، میں سمجیتا ہوں کہ اُن کے اِس غلط بتائے کے جو کارن ہیں اُن میں سے کچھ آپ کے باتھکوں کو بھی معلوم ہوئے چاہئیں ،

ہی . سی جی . کا آجال کا ٹیکہ سن 1921 میں دو داکٹروں نے شروع کیا تھا جن کے نام کالیت (Calmette) اور گورن (Goerin) تھے . اُنھیں دونوں کے نام پر وہ کیوا جس كا دبكه لكايا جاتا هے ہي . سي . جي . كهاانا هے . إن درنہن ذائدوں نے اِس تیکے کے گیڑے کو تپوق کی بیماری کے کیتے ہے خاص طور پر تیار کیا اور سن 1924 میں یہ اعلان كيا ك تيكيم كي خاص غرض كے لئيم جو كيرے أنهوں نے تهار كئي هیں أن میں زور اور رهر دونوں اتنے كم عوكثے میں كه أدمى کے یا جانور کے جسم میں اُن سے تبدیق پیدا نہیں موسکتا ۔ لایمن أس ونت سے الم اب ایک حکم جمع دواخانوں میں جو کیوے اِس ٹیکے کے لئے تیار کئے گئے میں اور تیار کئے جارہے ھیں اُن میں اور سی 1924 کے ان کیزوں میں بہت گہرا فرق ہو گیا ہے ۔ خود أن دونوں دائتروں كے دواخانوں ميں جو کیرے اِس کام کے لئے أب تهار نئے جارهے هيں ود بھی اب یہتے والے کیڑے نہیں رہے ، اس کے علاوہ دو دواخانوں میں ذار لله هونے کورے بھی ایک دوسرے سے نہیں ملتے . هم نے اس طرح کے تیار کٹے ہوئے جتنے کیورں کو دیکھا کے ہر آیک میں بجائے اُس طرح کے کیجے کے جو ڈاکٹر کالمیٹ نے تیار کیا تھا ہمیں کئی طرح کے بھماریوں کے کیڑے ماتے ھیں . اِس سے به بات ماف هو جانی هے که بی . سی . جی ، کے تیکے کے لئے جو کیزے تیار کئے جا رقے عیں وہ ڈانٹر کالمیت کے وقت سے ایکر اب تک بے در بدال گئے میں اور ساتھ می ایک دواخانے کے نیار ہوئے کیرے دوسرے دواخانیں کے تیار ہوئے . كيور سے بالكل أنگ هيں . كوئى دو أيس ميں نہيں ملتے . شاید اِن تبدیلیوں کے کارن هی پچھلے پچیس برس کے اندر جن آدمیوں یا جن جانوروں کے ہی، سی، جی، کے ٹیکے لگانے كثير هين أن مين خطرتاك صورتين پيدا هوتي دكهائي دى هير. بہت سے لوگوں کے جن کے دی. سی۔ جی. کا تیکہ لگایا أيا أس

जगह पर घाष और फोड़े निकल आये जिनसे महीनों पीप और मवाद षहता रहा यहां तक कि टीका लगाने के तरीके को कुछ षदलना पड़ा. इससे तकलीफ तो घटी लेकिन फिर मी हर साल इस तरह की षहुत सी घटनाएं हमारे सामने आती रहती हैं. इस तरह के रोगियों को जो घाव और फोड़े होते हैं वह बिलकुल उसी तरह के होते हैं जिस तरह के तपेदिक की बीमारी में होते हैं. बहुत से ऐसे बीमारों का चीड़ फाड़ के खरिये इलाज करना पड़ता है. बहुत सों कां ऐसी दवाएं देनी पड़ती हैं जिन से बीमारी के कीड़े मर जायें.

बहत से ऐसे लोगों को जिन्हें बी० सी० जी० का टीका लगया गया बाद में बाजाब्सा तपेदिक हो गया और उनमें से बहुत से तपेदिक से मर भी गये. पहली मई सन् 1954 के आपके रिसाले में सफा 61 पर सात ऐसी घटनाएं दर्ज हैं जिनमें बी० सी० जी० के टीके से लोगों का खाल की वह गन्दी बीमारी हो गई जिसे ल्युपस बलगैरिस कहते हैं. 19 जून सन् 1954 के अंक में सफा 773 पर एक बहुत पक्की घटना दी हुई है जिसमें बी॰ सी॰ जी॰ के टीके से आदमी को तपेदिक हुआ और उसी से उसकी मौत हुई, उस आदमी के बीस बरस की उम्र में बी० सी० जी० का टीका लगाया गया था. है हफ्ते के अन्दर वह जगह फफद उठी. लगभग एक साल के बाद बीमारी की पहली अलामतें दिखाई दीं. उसके बाद बराबर बदन के बहुत से हिस्सों में, यहां तक कि कि फेफड़ों और गुरदों में भी, बीमारी के लक्षन बढ़ते चले गये. दिसम्बर सन् 1953 में वह आदमी तपेदिक से मर गया. उसके घावों का जब इम्तहान लिया गया तो एक नहीं बहुत से घावों से बी० सी० जी० के ही कीड़े मिले. ऐसी घटनाएं बहुत हो चुकी है. इनसे हमें यह भी गहरा शक होने लगता है कि इससे पहले बहुत से ऐसे लोगों को जिनके बी० सी० जी० का टीका लग जुका था और जिन्हें इसके बाद तपेदिक हुआ और वह तपेदिक से मरे, उन्हें दबी ब्रिपी बीमारी पहले से मौजूद नहीं थी जिससे बी० सी० जी० उन्हें न बचा सकी हो बल्कि बात यह थी कि उन्हें बीमारी हुई ही बीo सीo जीo के टीके से. बहर सूरत बीo सीo जीo के कीड़ों की बाबत जो पक्की स्त्रीर प्रामाशिक बातें हमें मालूम हो चुकी हैं और इस टीके से आदिमयों और जानवरों में जिस तरह की बीमारियां पैदा हा जाती हैं वह हमें चीकन्ना श्रीर सावधान कर देने के लिये काफी हैं. इनकी बिना पर हम पक्की तौर पर यह कह सकते हैं कि श्रापने अपने जवाब में जा यह कहा है कि बी० सी० जी० से कोई खास नुक्रसान नहीं होता यह बिलकुल गलत है, कहीं कोई भी यह बात कहे तो यह बिलकल रालत है.

(दस्तख़त) जे. ए. मायर्स एम. डी. वरीरा, वरीरा.

حکه پر گهاؤ اور پهورے نکل آئے جن سے مهینیں پهپ اور مواد بہتا رها یہاں تک که ڈیکه لگائے کے طریقے کو کمچھ بدلنا پڑا ، اِس سے تکلیف تو گھٹی لیکن پهر بهی هر سال اِس طرح کی بہت سی گھٹنائیں همارے سامنے آنی رهٹی هیں اِس طرح کی بہت سی گھٹنائیں جس طرح کے تبدی کی وہ بالکل اُسی طرح کے هوتے هیں جس طرح کے تبدی کی بیماری میں هوتے هیں بہت سے ایسے بیماری کا چیر پهار کے ذریعہ علاج کرنا پرنا ہے ، بہت سوں کو ایسی دوائیں دینی پرتی هیں جن جن سے بیماری کا چیر پهار کے دریعہ علاج کرنا پرنا ہے ، بہت سوں کو ایسی دوائیں دینی پرتی

بہت سے ایسے لوگوں کو جنہیں ہی . سی . جی . کا تھات لایا گیا بعد میں باغابطہ تہدی هوگیا اور آن میں سے بہت سے تبدق سے مو بھی گئے ، پہلی مئی سن 1954 کے آپ کے رسالے میں منحم 61 پر سات آیسی گھتنائیں درے میں جن میں ہی ، سی ، جی ، کے ٹیکے سے لوگوں کو کھال کی وہ گلدی بيمارى هوكئى جسم ليوپس ولكيرس كهتم هين . 19 جون سن 19.34 کے انک میں صفحہ 778 پر ایک بہت یکی گھٹنا دی هولي هے جس ميں بي ، سي ، جي ، کے ثبکے سے هي أدمى كو تبدق هوا اور أسى سے أس كى موت هوئى ، أس أدمى کے بیس برس کی عمر میں ہی ، سی ، جی ، کا ٹیکه اگایا گیا تیا ، چھ ہفتے کے اندر وہ جگہ پھھد اُتھی ، لگ بھگ ایک سال کے بعد بیماری کی پہلی علامتیں دکھائی دیں ، اُس کے بعد برابر بدن کے بہت سے حصوں میں' یہاں تک که بهبهوں اور گردون میں بھی' بیداری کے لکشن بڑھتے چلے گئے ، دسببر سن 1953 میں وہ آدمی تبدق سے مو گیا ، اُس کے گہاؤں کا جب امتحان ليا گيا تو آيک نهين بهت سے گهاؤں سے بي . سی ، جی ، کے هی کیرے ملے ، ایسی گھٹنائیں بہت هرچکی هيں ، إن سے هميں يه بھي گهرا شک هونے لکتا هے كه اِس سے بہلے بہت سے ایسے لوگوں کو جن کے بی . سی ، جی . کا تیکه لک چکا تھا اور جنہیں اس کے بعد تبدق ہوا اور وہ تبدق سے مرے اُنھیں دہی چھیے بیداری پہلے سے مہجرد نہیں تھی جس سے ہی ، سی ، جی ، اُنہیں نه بچا سکی هو بلکه بات یه تهی که اُنهیں بیماری هوئی هی بی ، سی ، جی ، کے قیکے سے ، بہر صورت ہی ، سی ، جی ، کے کیروں کی آبابت جو یکی اور برامانک باتیں همیں معلوم هوچکی هیں اور اس ٹیکے سے آدمیوں اور جانوروں میں جس طرح کی ہیماریاں بھدا ہو جاتی میں وہ میں چوکنا اور ساوتھاں کردینے کے لئے کانی هیں ۔ اِن کی بنا پر هم یکی طور پر یه کو سکتے هیں که آپ نے اینے جواب میں جو یہ کہا ہے کہ ہی . سی . جی . سے کوئی حاص نقصان نهين هونا به بالكل غلط ها كهين كوئى بهي يه بات کرے تو یہ بالکل غلط ہے .

(دستخط جے اے مائرس أيم . تى ، وغيرة وغيرة ،

नवम्बर '55 (280) '55

दूसरा ख़त अमरीका ही के एक और मशहूर डाक्टर, हाक्टर सेमूर एन, फ़ार्बर (Dr. Seymour M. Farber M. D.) का है जो सैनफ़्गांसरका के अस्पताल में तपेदिक हे मरीजों के ख़ास चार्ज में हैं. उनका ख़त यह है :—

जनाव एडीटर साहब !

3 जुलाई सन् 1954 के जरनल में सफा 949 पर जो श्रापने बी० सी० जी० की बाबत एक सवाल का जवाब दया है वह मुम्ने खटका. मुम्ने मालूम हाता है कि उससं पढ़ने वाले पर यह असर पड़ेगा कि इस चीज से जिसे बी० सी० जीव का टीका कहा जाता है कोई नुक्रसान नहीं हो सकता. पिछले बरसों में बी० सी० जी० के टीकों की तैयारी का श्रच्छी तरह देखकर और जानवरों और इनसानों पर उसके असर को मालूम करके जो जानकारी हमें मिली है वह इतनी आधिक और इतनी पक्की है कि हमें मजबूर होकर यह कहना पड़ता है कि बी० सी० जी० से तुक्सान नहीं हाता, रालत है. लगभग चालीस बरस हमें इसके तजरबे करते श्रीर इसे इस्तेमाल करते हो गये. श्रीर दुनिया के सारे हिस्सों में तजरबे किये जा चुके हैं. इस सब का सामने रखकर इम यह नहीं कह सकते कि बी० सी० जी० से नुकसान नहीं हां सकता. बहुत-सों की राय इस टीके के खिलाफ है. इसमें कोई शक नहीं कि हम इस मामले में बड़ी श्रहतियात से काम लेना चाहिये.

(दस्तख्त) एम. फार्बर एम. डी. वरीरा, वरीरा.

धासे के आंकड़े

बी० सी० जी० के टीके के समर्थन में जो आंकड़े दिये जाते हैं, खास कर योहप के मुस्कों में, उन पर भी आँख बन्द करके ऐतबार कर लेना सलत है.

ऐडिनबरा के फेफड़ों की बीमारी के मशहूर डाक्टर एफ. कैलर मैन (Dr. F. Kellermann M. D.) न 15 सितम्बर सन् 1954 के इगलैंड के अख़बार "मैडिकल प्रेस" में लिखा है:—

"बी० सी० जी० के टीक के नफा नुक्सान का ठीक-ठीक अन्दाजा लगान में एक बड़ी मुश्किल यह आ जाती है कि आम तौर पर पिछले पचास बरस के अन्दर दुनिया के बहुत से हिस्सों में तपेदिक की बीमारी और उस से मौतें बराबर घटनी जा रही हैं. इस मामल में यह बात खास ध्यान देने का है कि अमरीका में कुछ रियासतों ने अपने यहाँ बी० सी० जी० का टीका चलाया, लेकिन तपेदिक की बीमारी और उसस भौता में बहुत बड़ी और साफ साफ कमी उन्हीं रियासतों में हुई है जिन्होंने अपने यहाँ बी० सी० जी० का टीका नहीं चलाया."

دوسرا خط امریک هی کے ایک اور مشهور داکتو، داکتر سیمور ایم ، داربو(Dr. Seymour M. Farber M.D.) کا ہے جو سین نرانسسکو کے اسپتال میں تبدق کے مریفوں کے خاص چارج میں هیں ، اُن کا خط یہ ہے:—

جناب أيدية و صاحب إ

(دستخط) سیمور ایم ، فاربر ایم ، ذی ، وغیرہ وعیرہ ، دعوکے کے آنکڑے

بی . سی . جی ، کے تیکے کے سمرتھی میں جو آئکرے دائے ہیں' اُن پر بھی آئکھ ہذکہ کے اعتبار کولینا غلط ہے ،

ایدن ہرا کے پھیپورں کی میماری کے مشہور ڈانڈر ایف کیلر میں ان کا 15 ستمبر میں ان 15 ستمبر ان 15 ستمبر سن 15 کے انگلینڈ کے اخبار "میڈیکل پریس" میں لکھا سے: ۔۔۔

"بی . سی . جی . کے ٹھکے کے نعم نقصان کا ٹھیک ٹھیک اندازہ اٹائے میں ایک بڑی مشکل یہ آجانی کے کہ عام طور پر پچھلے پنچاس برس کے اندر دنیا کے بہت سے حصوں میں نب دق دی بیماری اور اُس سے مونیں برابر گھٹنی جارہی ھیں. اِس معاملے میں یہ بات خاص دھیان دینے دی کے کہ امریکہ میں کچھ ریاستوں نے اپنے یہاں بی . سی . جی . کا تمکم چالیا اور کنچھ نے نہیں چلایا کیکن تب دق کی اُنھیں ریاستوں میں موترں میں بہت بڑی اور صاف صاف نمی اُنھیں ریاستوں میں ہوئی چاہوں نے اپنے یہاں بی . سی . جی . کا تمکم چلایا موترں میں بہت بڑی اور صاف صاف نمی اُنھیں ریاستوں میں ہوئی کے اپنے یہاں بی . سی جی کا ٹیکم نہیں چلایا "

ة اكثر جه . أم . مائرس نے لكها ه كه :--

डाक्टर जे. ए. मायर्स ने लिखा है कि :-

"यह बात भी याद रखनी चाहिये कि सन् 1924 और सन् 1944 के दरिमयान न्युयार्क शहर में तपेदिक से मौतें कृरीब कृरीब 95 फ़ीसदी कम हो गई, यानी सौ मौतों की जगह सिर्फ पांच रह गई, और वहाँ इस अर्से में बी० सी० जी० का टीका नहीं लगाया गया."

हाक्टर टाप्ले (Dr. Topley) और हाक्टर विल्सन (Dr. Wilson) ने अपनी किताब 'Principles of Bacteriology & Immunity' में लिखा है कि-"फांस में भीर फांसीसी बालने बाले देशों में बी० सी० जी० के टीके के काफी तजरबे हो चुके हैं. लेकिन इस मामले में जो आंकड़े दिये जाते हैं उन पर बिलकुल ऐतबार नहीं किया जा सकता. वह बिलकुल निकम्मे हैं. हम इस नतीजे पर भी नहीं पहुंच सकते कि बी० सी० जी० के टीके से तपेदिक का मुकाबला करने की शक्ति आदमी में जरा सी भी बढ़ती है. झगर दो तीन बरस के बाद दोबारा टीका न लगाया जावे तो पहले टीके से जा कुछ बीमारी के मुकाबिले की शक्ति किसी खास आदमी में आई भी हां वह भी सात दो साल के अन्दर बिलकुल खतम हो जाती है. और अगर दोबारा टीका लगाया जावे ता उसके नतीजे और भी ज्यादा गहरे श्रीर ख़तरनाक होते हैं. हम तो यह भी मानने को तैयार नहीं कि शुरू में भी इस टीके से किसी को कोई फायदा होता है."

इन्गलैंड की मिनिस्ट्री ऑफ़ हैल्थ की राय

इन्गलैंड की मिनिस्ट्री श्रॉफ हैस्थ ने नवम्बर सन् 1953 में श्रपने तमाम मैडिकल श्रा सरों के नाम एक मेमोरैन्डम नं० 324 जारी किया था. उस मेमोरैन्डम में बी० सी० जी० के टीके की बाबत यह लिखा है:—

बावजूद इस बात के कि पिछले बीस बरस के अन्दर लोगों की एक बहुत बड़ी तादाद के बीठ सीठ जीठ का टीका लगाया जा चुका है, और टीकों में दोनों तरह का बैंकसीन इस्तेमाल किया गया है, यानी कुछ में ताजा और कुछ में जमाकर सुखाया हुआ, फिर भी इस टीकं से असली फायदे हाने की काई साइंसी शहादत नहीं मिलती."

एक डाक्टर बैनजिमन ने यह बयान दिया था कि इन्गलैंड, फ्रांस श्रीर स्वीडन तीनों मुल्कों में बी० सी० जी० का टीका लाजिमी तौर पर सब के लगाया जाता है. इस पर इगलैंड की हैल्थ मिनिस्ट्री को एक ख़त लिखा गया यह मालूम करने के लिये कि डाक्टर बैनजिमन का बयान कहाँ तक ठीक है. इन्गलैंड की हैल्थ मिनिस्ट्री के डाक्टर डी. टामसन ने 24 मई सन् 1955 के अपने ख़त में जवाब दिया. उस जवाब में उन्होंने तफ़सील से लिखा है कि इंगलैंड में यह टीका किन किन के किन किन हालतों में और किस किस

ایم بات بھی یاد رکھائی چاھئے که سن 1924 اور سن 1944 کے درمیان نیوبارک شہر میں تپدی سے مرتبی قریب تربیہ 95 نیصدی کم ہوئٹیں' یعنی سو موتیں کی جگه صرف پانچ رہ گئیں' اور وہاں اِس عرصہ میں ہی ، سی ، جی کا ٹیکه نہیں لگایا گیا ،''

THE REPORT OF THE PARTY OF THE

قاتمر قابلے (Dr. Topley) اور قاتمر ولس (Wilson 'Principles of Bacte- میں ایما ہے کہ ایمانی کاب تامین ایما ہے کہ ایمانی کاب میں ایما ہے کہ انداز انسسسی بولنے والے دیشوں میں ہی ہے کہ کئی تجویے ہو چکے ہیں ، لیکن اِس معاملے میں ہو آئکرے دیئے جاتے ہیں اُن پر بالکل اعتبار نہیں کیا جا سکتا۔ وہ بالکل نکے ہیں ، ہم اِس نتیجے پر بھی نمیں پہنچ سکتے کہ ہی سی بھی کے لیکے سے تہدی کا مقابالہ کرنے کی شکلی ہی سی میں ذرا سی بھی برهتی ہے ، اگر دو تین برس کے بعد دوبارہ ٹیکٹ نہ لگایا جارے تو پہلے تیکے سے جو کچھ بیماری کے مقابلے کی شکتی کسی خاص آدمی میں آئی بھی ہو وہ بھی سال دو سال کے اندر بالکل ختم ہو جاتی ہے ، اور اگر در ارہ شکی نیک ہوتے ہی وہ اس کے نتیجے اور بھی زیادہ گردے اور شروع میں بھی اِس تیکے سے ہی ماننے کو تیار نہیں کہ خطرناک ہوتے ہیں ، ہم تو یہ بھی ماننے کو تیار نہیں کہ شروع میں بھی اِس تیکے سے کسی کو کوئی فائمدہ ہوتا ہے ."

انگلینڈ کی منساری آف ہلتھ کی رائے

انگلینڈ کی منسٹری آف ہلتھ نے نومبر سن 1953 میں اپنے تمام میڈیکل انسروں کے نام ایک میمورندم نمبر 3:4 جاری کیا تھا ۔ اُس میمورندم میں ہی، سی، جی کے تیکے کی بابت به لکھا ہے:۔۔۔

''ہاوجوں اِس بات کے که پمچھلے بیس برس کے اُندر لوگوں ایک بہت ہوی تعداد کے ہی۔ سی جی کا ٹیکھ لگایا جُا چکا ہے' اور اِن ٹیکس میں دونوں طرح کا ویکسیں استعمال کیا گیا ہے' یعنی کچھ میں فازة اور کچھ میں جما کو سکھایا ہوا' پہر بھی اِس ٹیکے سے اصلی فائیدے ہوئے کی کوئی سائنسی شہادت نہیں ملتی ''

ایک ڈاکٹر بینجس نے یہ بھاں دیا تھا کہ انکلینڈ' فرانس اور سریدن تینوں ملکوں میں ہی، سی، جی کا قیعت الزمی طور پر سب کے لگایا جاتا ہے، اِس پر انکلینڈ کی ہیلتھ مستری کو ایک خط لکھا گیا یہ معلوم کرنے کے لئے که ڈاکٹر بھنجس کا بیاں کہاں تک تھیک ہے، انکلیڈ کی ہیلتھ منستری کے ڈائٹر تی ڈامس نے 24 مئی سی 1956 کے کے اپنے خط میں جواب دیا انکلینڈ دیا اُس جواب میں اُنہوں نے تفصیل سے لکھا ہے کہ انکلینڈ میں یہ تیکھ کی کی کی کی حالتیں میں اور کس کس میں اور کس کس

तरह की खहतियात के साथ लगाया जाता है. उन सब चीजों के यहाँ दोहराने की जरूरत नहीं है. डाक्टर डी. टामसन ने अपने खत में साफ शब्दों में लिखा है कि :—

"इस मुल्क के किसी. हिस्से में भी और किसी तरह के लोगों के लिये भी यह टीका लाजिमी नहीं है और न इस बक्त हमारा यह कोई इरादा है कि हम अपने इस टीके के प्रोग्राम को बढ़ावें."

डाक्टर टामसन ने यह भी लिखा है कि :-

", फांस और स्वीडन में भी बी० सी० जी० का टीका लाजिमी नहीं है और खेनमार्क, नार्वे, स्वीडन और फ़िनलैंड चारों मुल्कों में मौजूदा राय बाम तौर से टीके लगाये जाने के खिलाफ है."

अमरीका, ही से 'पोलियो' के लिये जो बच्चों की एक बीमारी है और जिसमें बच्चों को लक्षवा मार जाता है एक और नया टीका निकला था जिसे सालक वैकसीन कहते हैं. इस नये टीके की तारीफ में बार बार बढ़े बढ़े आंकड़े दिये गये. यहाँ तक कि कुछ दिनों तक यह इंगलैंड में भी चल पड़ा. पर अब इंगलैंड की ब्रिटिश मैडिकल रिसर्च कौंसिल ने इस नये टीके का लगाना बिलकुल बन्द कर देने का फैसला कर लिया है क्योंकि बच्चों के इस टीके का लगाना उन्हें खतरनाक साबित हुआ.

अब इम फिर अपने देश की तरक आते हैं. इम सब लोगों के यह टीका क्यों लगा रहे हैं ? और ऐतराजों का छोड़कर टीके के हामी हमें इससे क्या उम्मीद दिला रहे हैं. वह हमें ज्यादा से ज्यादा यही उम्मीद दिला रहे हैं कि एक बहुत थोड़े से अर्से के लिये यानी अधिक से अधिक दो बरस के लिये हमारा बच्चा तपेदिक से बचा रहेगा और इस दो बरस के लिये भी वह पूरा भरोसा नहीं दिला सकते. इन दो बरस के बाद फिर हमें अपने का बचाने के लिये वही दूसरी तरकी कें, दूसरी तरह की तालीम, खाना पीना और दूसरी तरह की अहतियातों का सहारा लेना पड़ेगा. बी० सी० जी० का असर उनके मुताबिक इससे आगे चल ही नहीं सकता.

इस टीके से नई नई बीमारियां

एक और बीमारी है जिसे इनिसफेज़ाइटिस (Encephalitis) कहते हैं जिसमें रागी के दिमारा के अन्दर
सूजन आजाती है. बी० सी० जी० का टीका जहाँ जहाँ
लगाया गया है वहाँ वहाँ यह बीमारी भी अनेक बार दिखाई
दी है. दूसरे मुल्कों में यह कम लागों का हुई है, हमारे
मुल्क में ज्यादा लागों का हुई है, जिसका कारण यह है कि
हमारे देश में रारीबी अधिक है और लोगों को काकी और
दक्ष का खाने को नहीं मिलता. यह भी मालून हुआ है कि
बी० सी० जी॰ के टीके से इस बीमारी के पैदा होने की

طرح کی احتیاط کے ساتھ لگاہا جاتا ہے ۔ اُن سب چھزوں کے بہاں دھرائے کی ضرورت لمبیں ہے ۔ ڈاکٹری ڈی ، ٹامسن لے اپنے خط میں صاف شدور میں لکھا ہے کھ:--

''اِس ملک کے کسی حصے میں بھی اور کسی طرح کے لوگوں کے لئے بھی یہ تیکہ الزمی نہیں ہے اور نہ اِس وقت ممارا یہ کوئی ارادہ ہے کہ ہم اپنے اِس تیکے کے پروگرام کو ہرهاویں ،''

تَاكِتُر تَامس نے يه بهى لكها هے كه:--

النوائس اور سویتی میں بھی ہی۔ سی، جی کا ٹیکہ الزمی نہیں ہے اور تنمازک ناروے سویتی اور فنلینڈ چاروں ملکوں میں موجودہ رائے عام طور سے ٹیکے لگائے جائے کے خلاف ہے "
امریکہ ھی سے 'پولیو' کے لئے جو بچوں کی ایک بیماری ہے اور جس میں بچوں کو لقوہ مار جاتا ہے ایک اور نیا ٹیکہ فکلا نہا جسے سالک ویکسین کہتے ھیں ۔ اِس نئے ٹیکے کی تعریف میں اِس نئے ٹیکے کی تعریف نیا انگلینڈ میں بھی چل پوا ، پو اب انگلینڈ کی بوٹھ میڈیکل یوا اس نئے ٹیکے کا لگانا بالکل بند کو دینے کا نیسرچ دونسل نے اِس نئے ٹیکے کا لگانا بالکل بند کو دینے کا نیصلہ کو لیا ہے کیونکہ بچوں کے اس ٹیکے کا لگانا اُنھیں خطرفاک ثابت ھوا ۔

اب هم پهر اپنے دیش کی طرف آتے هیں۔ هم سب لوگراں کے یہ آیکہ بھوں لگا رہے هیں گ اور اعتراضوں کو چھوڑ کو ٹیکے کے حامی همیں اِس سے کیا امید دلا رہے هیں گ وہ همیں زیادہ سے زیادہ یہی امید دلا رہے هیں که ایک بہت تھوڑے سے عرصے کے لئے یعنی ادیفک سے ادیفک دو برس کے لئے همارا بدچہ تبدی سے بحچا رہے گا اور اِس دو برس کے لئے بھی وہ پورا بھروسہ نہیں دلا سکتے اِن دو برس کے بعد پھر همیں اپنے دو بحچائے کے لئے اور دوسری طرح کی تعلیم کوانا پینا اور دوسری طرح کی تعلیم کوانا پینا اور دوسری طرح کی احتیاطوں کا سہارا لینا پڑے گا ۔ ہی۔ سی، جی کا اثر اُن کے مطابق اِس سے آگے چل هی نہیں سکتا ۔

س ڈیکے سے نئی نئی میماریاں

ایک اور بیماری هے جسے اِنسینیائیائس -Encepha)

(litis کہتے هیں جس میں روگی کے دماغ کے اقدر سوجن اُجانی هے بی سی جی کا ڈیکھ جہاں جہاں لگایا گیا هے وهاں رهاں یه بیماری بھی انبیک بار دکھائی دی هے . درسرے ملکوں میں یہ کم لوگرں کو هوئی هے عمارے ملک میں زیادہ لوگوں کو هوئی هے که همارے ملک میں زیادہ لوگوں کو هوئی هے که همارے دیھی میں غریبی ادھک هے اور اوگوں کو کافی اور تھنگ کا کھائے کو نہیں ملتا، یہ بھی معلوم هوا هے ته بی سی جی کے ٹیجے سے اِس بیماری کے پیدا هوئے کی

and the second of the second and the

कितनी घटनाएँ होती हैं उनमें बहुत कम हमारे सामने आ पाती हैं. डाक्टर टापले और डाक्टर विलसन ने अपनी किताब में जिसकी चरचा हम ऊपर कर चुके हैं लिखा है कि हाल में बीठ सीठ जीठ का टीका लगने से यह बीमारी भी अक्सर होती दिखाई दी है और इस तरह की "कई सी घटनाएं" उनके सामने आ चुकी हैं.

ढाक्टर फ़ैंडरिक डच्लू. प्राइस ने अपनी किताव "ए टैक्स्ट बुक आफ दी प्रैकटिस आफ मैडिसन" में लिखा है कि एक और बीमारी अक्सर इस टीके के बाद देखी गई है जो टीकं लगने के सात दिन से लेकर बारह दिन के अन्दर नमूदार होती हैं जिसमें सर में दर्व होता है, के आती है, एक तरह से हल्का सा लक्षवा हो जाता है, रोगी बक बक करने लगता है, बेहोशी आ जाती है और कमी कभी मौत भी हो जाती है. इस बीमारी से अक्सर प्चास कीसदी आदमी मर जाते हैं. उन्होंने लिखा है कि इस टीके से कभी कभी कई तरह की द्वी हुई बीमारियां चमक भी उठती हैं.

जिस बीमारी का डाक्टर फ़ैडिरिक डब्लू. प्राइस ने जिक्र किया है उसमें वह लिखते हैं कि अक्सर रोगी के आँख की रोशनी भी जाती रहती है. कोइमबद्द की जिस अभागी लड़की का हाल अखबारों में निकल चुका है उसे यही बीमारी हुई थी.

मद्रास सरकार की तहकीकाती कमेटी

डस जड़की का नाम वसंत था. जब उसका हाल कुछ डाक्टरों की राय के साथ अखबारों में छपा तो मद्रास की सरकार ने तहक़ीक़ात के लिये कुछ सरकारी डाक्टरों की एक कमेटी मुक़र्रर की. उस कमेटी ने वसंत और कुछ और रोगियों का भी देखकर अपनी रिपार्ट सरकार को दे दी. उन और रोगियों का भी कम या अधिक इसी तरह की शिकायतें थीं. उस कमेटी की रिपार्ट शाया नहीं की गई. उसकी जगह सरकार ने एक अपना ही प्रेस नाट अखबारों में निकाल दिया कि कमेटी की रिपार्ट से उन्हें मालूम हुआ है कि वसंत की आँखें बी॰ सी० जी० के टीके के कारण नहीं गई बल्कि एक और बीमारी उस इलाक़े में शायद पहले से फैली हुई थां जो वसंत को लग गई और जिसके कारण उसकी आँखें गई. इस बीमारी का नाम भी सरकार ने अपने प्रेस नोट में दिया है.

मद्रास सरकार ने जब यह कमेटी मुक्तरर की थी तब 2 जून सन् 1955 को पहले ही से ऐलान कर दिया था कि "अखबारों में जिस बच्चे की आँखें चले जाने का हाल छपा है उसकी बाबत सरकार की शुरू की तहक़ीक़ात से पता चला है कि आँखें जाने का बी० सी० जी० के टीके से कोई सम्बन्ध नहीं था, फिर भी सरकार और तहक़ीक़ात के लिये डाक्टरों की एक कमेटी मुक्तर्रर कर रही है."

جتنی گیتنائیں ہوتی ہیں اُن میں بہت کم ہمارے سامنے آباتی میں . تاظر تاپلے اور تاکثر ولسن نے اِپنی کتاب میں جس کی چرچا ہم اُوپر کر چکے ہیں لکھا ہے کہ حال میں ہی ہیں جی کا ٹیکٹ لگنے سے یہ بیماری بھی اکثر ہوتی دکھائی دی ہے اور اِس طرح کی ''کئی سوگیتائیں'' اُن کے سابنے آب کے سابنے آبی ہیں ،

قائد فریدرک ذبلو پرائس نے اپنی کتاب ''اے ٹاسٹ بک اور آئی دی پریکٹس آف میڈیسی'' میں لکھا ہے کہ ایک اور بیداری اکثر اِس ٹیکے کے بعد دیکھی گئی ہے جو ٹیکھ لگنے کے سات دین سے لیکر بارہ دین کے اندر نمودار ہوتی ہے جس میں سر میں درد ہوتا ہے' تے آئی ہے' ایک طرح سے ہلکا سالقوہ ہو جاتا ہے' روگی بک یک کرنے لکتا ہے' پر ہوشی سالقوہ ہو جاتا ہے' روگی بک یک کرنے لکتا ہے' پر ہوشی آجاتی ہے اور کبھی کبھی موت بھی ہو جاتی ہے اس یوماری سے اکثر پنچاس نیصدی آدمی مر جاتے ہیں ۔ اُنھو نے لکھا ہے کہ اِس ٹیکے سے کبھی کبھی کئی طرح کی دبی ہوئی بھماریاں جبک بھی اُنھتی ہیں ،

جس بیماری کا تائقر فربترک تیاو، پرائس نے ذکر کیا ہے اُس میں وہ لکھتے ھیں کہ اکثر روگی کے آنکو کی روشنی بھی جاتی رھتی ہے کواِمبھتور کی جس اُبھاگی لوکی کا حال اخباروں میں نکل چکا ہے آسے یہی بیماری ھوئی تھی ،

مدراس سرکار کی تحقیقاتی کمیٹی

أس لتركی كا فام رسنت بها ، جب أس كا حال كتچه قانترون كی رائه كے ساته اخبارون میں چهها تو مدارس كی سركار نے تحقیقات كے لئے كتچ سركاری تاكترون كی ایک كمیٹی مقرر كی اس كمیٹی نے رسنت اور كتچه اور روگیون كو بهی كم یا كر اپنی رپورت سركار كر دے دی ، أن اور روگیون كو بهی كم یا ادهك إسی طرح كی شكانتیں تهیں ۔ أس كمیٹی كی رپورت شائع نہیں كی گئی ، اس كی جگه سركار نے ایک اپنا هی پریس نوت اخباروں میں نكال دیا كه كمیٹیكی رپورت سانهیں مملوم هوا هے كه وسنت كی آنمیس بی ، سی ، جی كے شام كی كارن نہیں گئیں بلكه ایک اور بیماری أس عالنے میں شاید بہلے سے پهیلی هوئی تهی جو وسنت كو لگ گئی اور جس كے كان أس كی آنمیس كی انمیس كئیں ، اس بیماری كا نام بهی سركار نے كان أس كی آنمیس كئیں ، اس بیماری كا نام بهی سركار نے لیے پریس نوت میں دیا ہے .

مدراس سرکار نے جب یہ کمٹیی مقرر کی تھی تب 2 جون سن 1955 کو پہلے ھی سے اعلان کر دیا تھا کہ ''اخباروں میں جس بچے کی آنکھیں چلے جانے کا حال چھھا ہے آس کی بابت سرکار کی شروع کی تحقیقات سے پتہ چلا ہے کہ آنکھیں جانے کا ہی سیندھ نہیں تھا ، پھر جانے کا ہی سیندھ نہیں تھا ، پھر بھی سرکار اور ادھک تحقیقات کے لئے تائقروں کی ایک کمیٹی مقرر کو رھی ہے ''

यही वह कमेटी थी जिसकी रिपोर्ट नहीं आपी गई पर जिससे नवीजा वही निकला जो सरकार पहले से निकाल चुकी थी.

सरकार के प्रेस मोट के बाद डाक्टर ऐल. एन. अनन्त रामन एम. बी. का एक खत मद्रास के "हिन्दू" अखबार में शाया हुआ जिसमें उन्होंने लिखा है कि अव्वल तो सरकार को चाहिये था कि इस मामले के लिये जो तहक़ीक़ाती कमेटी सरकार ने मुक़र्रर की थी उसमें कम से कम एक ग़ैर सरकारी डाक्टर भी रक्खा जाता. दूसरे जिस बीमारी का नाम सरकार ने अपने प्रेस नोट में लिया है और जिखा है कि वसंत को वह बीमारी हुई होगी और उसी से उसकी आखें गई, उस बीमारी का डाक्टरी की किताबों में आँखों के जाने के साथ कहीं कोई सम्बन्ध नहीं मिलता. डाक्टर अनन्त रामन ने बहुत सी किताबों के नाम अपने खत में दिये हैं और लिखा है कि मैं बहुत आभारी हूँगा अगर सरकार मुके यह बताबे कि इस बीमारी का और अंघे होने से सम्बन्ध किस किताब में मिलता है और यह कैसे होता है.

डाक्टर श्रमन्त रामन के ख़त का कोई जवाब सरकार की तरफ से नहीं मिल सका.

एक कान्नी सवाल

श्रव रहा यह सवाल कि सब बच्चों के इस तरह का टीका लगाना कहाँ तक कानून के अनुसार है और उसमें क्या-क्या श्रहतियातें जरूरी हैं. सरकार ने कोई क़ानून पास करा कर यह अधिकार नहीं लिया. कम से कम इतना उसे करना चाहिये था. कहा श्रभी तक यही जाता है कि यह टीका लाजिमी नहीं है यानी जबरद्स्ती किसी के नहीं लगाया जाता, जो चाहते हैं उन्हीं के लगता है. इस मामले में गुफे यह मालूम दुव्या कि स्कूल के बच्चों के माँ बाप श्रगर लिखकर अपना ऐतराज स्कूल मास्टर के पास नहीं भेज देते तो यह कर्ष कर जिया जाता है कि उन्हें कोई ऐतराज नहीं है और वह चाहते हैं कि उनके बच्चों के टीका लगाया जाय. मैंने देखा कि यह तरीक़ा बिलकुल क़ानून के खिलाक है. खासकर एक ऐसे देश में जिसमें अधिकतर माँ बाप अनपढ हैं जिनके छाटे छोटे बच्चे स्कूलों में पढ़ते हैं. मैंने सरकार को लिखा. उसके जवाब में मद्रास सरकार के हैल्थ मिनिस्टर श्री ए. बी. रोटी का पहली जुलाई सन् 1955 का जो खत मेरे पास माया उसमें लिखा है कि :-

"मद्रास रियासत में स्कूलों के बच्चों के बी० सी० जी० का टीका लगा ने की बाबत जो तरीक़ा बरता जाता है वह यह है. हर स्कूल में सब बच्चों के पहले नपेदिक का आजमाइशी टीका और फिर बी० सी० जी० का टीका लगाने के लिये तारी सें मुकर्रर कर दी जाती हैं. फिर स्कूल یہی وہ کمیٹی تھی جس کی رپورٹ ٹہوں چھاپی گئی پر جس سے نتیجہ وہی ٹٹلا جو سرکار پہلے سے ٹکال چکی تھی ۔

سرکار کے پریس نوت کے بعد ڈانٹر ایل' این' آنات رامن ایم. بی کا ایک خط مدراس کے ''هندو'' اخبار میں شائع ہوا جس میں آنہوں نے لکھا ہے که اول تو سرکار کو چاہئے تھا که اس معاملے کے لئے جو تحقیقاتی کمیٹی سرکار نے مقرر کی تھی اس میں کم سے کم ایک غیر سرکاری ڈانڈر بھی رکھا جاتا ، درسوے جس بیماری کا نام سرکار نے اپنے پریس فوت میں لیا ہے اور لکھا ہے که وسنت کو وہ بھماری ہوئی ہوگی اور آسی سے آنکھیں گئیں' اس بیماری کا ڈانڈری کی کہ ہوں میں آنکھیں کئیں' اس بیماری کا ڈانڈری کی کہ ہوں میں آنکھیں کے جانے کے ساتھ کہیں کوئی سمبندھ نہیں ملتا ، ذائلو آست رامن نے بہت سی نتابوں کے نام اپنے خط میں دھائے میں اور لکھا ہے نه میں بہت ابھاری ہونگا اگر سرکار محجے یہ بتارے کہ اِس بیماری کا اور استے ہو نے سے سمبندھ نس بتارے کہ اِس بیماری کا اور استے ہو نے سے سمبندھ نس

قانگر اثنت رامن کے خط کا کوئی جواب سرکار کی طرف سے نہیں مل سکا ۔

ایک قانونی سوال

اب رھا یہ سوال که سب بحوں کے اِس طرح کا ٹیکم لگانا دہاں تک فانون کے انوسار ہے اور اُس سیں نیا کیا احتیاطیں ضروری هیں . سرکار نے کوئی فائین پاس کوا کر یه ادھیکار تہیں لیا . کم سے کم اِتنا آسے کرنا چاھئے تھا . کہا ابھی تک یہی جانا ھے کہ یہ ٹیکہ لازمی نہیں ہے یعنی زبردستی کسی کے نہیں لگا ا جا نا جو چاھتے ھیں اُنھیں کے لکنا ھے اِس معاملة میں مجھے یہ معلوم عوا که آسکول کے بحصوں کے مال باپ اگر لكھ كو اينا اعتراض اسكول ماسقر كے پاس نہيں بهديج ديتے تو يد فرض كر ليا جاتا هے كم أنهيں كوئے اعتراض نہيں هے اور وہ چاعتے هيں که أن كے بحوں كے ثيكه لكايا جاتے، ميں نے دیمیا که یه طریقه بالنل دانوں کے خلاف فے ، خاص کو ایک ایسے دیم میں جس میں انعک تر ماں باپ ان پڑھ ھیں جن کے چھرٹے چھوٹے بھے اسکولوں میں بڑھٹے عیں ، میں نے سرکار دو لکھا . اِس کے جواب میں مدراس سرکار کے هیلتھ منسلر شری اے۔ ہی۔ شاتی کا پہلی جوائی سن 1955 کا جو خط ميرے پاس آيا أس ميں لكها هے كه:-

''مدارس ریاست میں استواوں کے بھوں کے بی سی جی کا تیکہ نکالے کی باست جو طبیقہ برتا جاتا ہے وہ یہ ہے، ہر استول میں بھوں کے پہلے تپدق کا آزمانشی تیکھ اور پھر ہی۔ سی، جی کا تیکہ لگانے کے نئے ناریخیں مقرر کردیجاتی ہیں، پھر استول

کے ادھیکاریوں کی معونت بھیوں کے ماں باپ کو آن تاریخوں کی پہلے سے سوچنا دی جاتی ہے اور یہ انہ دیا جا تا ہے کہ ٹیکہ ازمی نہیں ہے۔ اسکولوں کے ادھیکاریوں سے کہا جا تا ہے کہ وہ بھیوں کے ماں باپ کی وفامندی حاصل کو لیس ، جن سرکاری انسروں کو ٹیکے کا کام سپرد ہوتا ہے وہ پھر ھیت ماسٹر اور اسکول کے دوسرے ٹیجوروں سے الگ الگ ملتے ھیں یا سب ٹیجوروں کی مٹینگ کو لیتے ھیں اور انھیں یہ بتا دیتے ھیں کہ ٹکہ لکوانا ماں باپ کی موفی پر ہے اور ماں باپ کی دیتے ھیں کہ ٹکہ لکوانا ماں باپ کی موفی پر ہے اور ماں باپ اِس بات کو پہلے سے سوچنا دے دینا فروری ہے ، جو ماں باپ اِس بات پر اعتواض کرتے ھیں کہ اُن کے بھی کے دن اپنے بھیوں کو اُسکول کے ادھیکاریوں کو اُپنا اعتراض نکھ کی بھیج دیتے ھیں ۔

اِس پر میں نے (شری سی . راجاگوپالاچاری نے) 12 جولائی سن 1955 کے مدراس کے اخبار 'انڈین ایکسپریس' میں اپنا ایک خطشائع کرایا جس میں لکھا ہے: —

"میوے پاس مدراس کے هیلتھ منستر کا پہلی جولائی کا الکھا ایک خط آیا ہے جس سے میرا یہ خیال پکا ہوگیا کہ جب بچرں کے ماں باپ کی طرف سے کوئی لکھا ہوا اعتراض نہیں آنا تر یہ فرض کرلیا جانا ہے کہ وہ آپنے بچے کے ٹیک لکرائے کے لئے مصابد هیں ، اصلیت یہ ہے کہ اسکول ماسٹر کو بھی بچرں کے جسم اور اُن کی آتما کا پورا محافظ ملی لیا جاتا ہے ، یہ بات حد درجے قانون کے خلاف ہے ، سرکار کے قانونی افسورں کا فرض ہے کہ وہ اِس بات کو سوچیں که آنھیں سرکار کو یہ صالح درض ہے کہ وہ اِس بات کو سوچیں که آنھیں سرکار کو یہ صالح دربنی چاھئے یا نہیں کہ وہ اِس بیجا کاروائی سے باز رہے ."

كوامبيتوركى كهتنائيس

جب لوگوں کو معلوم ہوا کہ میں اِس معاملے میں دلچسپی لے رہا ہوں تو لوگوں نے کچھ گھنائیں مجھے لکھکر بھیجیں ۔ اِن میں سے بہت سی میں دینک اخباروں میں شائع کوا چکا ہوں تاکہ سب اُنہیں جان جائیں ۔ میں کچھ گھنائیں نیچے دیتا ہوں ۔ ان میں پہلی دس گھنائیں سب کوامبیڈور کی ہیں ۔

(1) شری جی، ایم، کرشن راجا چیتیور نے مجھے لکھا کہ:
''موری چھ سال کی ایک لڑکی وسنت لندن مشن اسکول
گوامبیتور میں پہلی کلاس میں پڑھتی تھی ۔ 18 نومبر سن
1954 کو اُس کے بی ، سی ، جی ، کا تیکم لگایا گیا ، اُس
وتت تک وہ بالکل تندرست تھی اور خوب بڑھتی تھی ،
8 دسبر سن 1954 کو اُس کے دوسرا تیکہ چیچک کا نگایا
گیا ، اِس دوسرے ٹیکے کے انگنے کے بعد میری لڑکی
اندھی ھوگئی ، ادھیکاریس نے بغیر میری وضاملدی

के अभिकारियों की मार्कत बच्चों के माँ बाप को उन सारोखों की पहले से सूबना दी जाती है और यह लिख दिया जाता है कि टीका लाजिमी नहीं है. स्क् जों के अधिका-रियों से कहा जाता है कि वह बच्चों के माँ बाप की रजामन्दी हासिल कर लें. जिन सरकारी अफ़सरों की टीके का काम सुपुर्व होता है वह फिर हेडमास्टर और स्कूल के रूसरे टीचरों से अलग अलग मिलते हैं या सब टीचरों की मीटिंग कर लेते हैं और उन्हें यह बता देते हैं कि टीका जगवाना माँ बाप की मरजी पर है और माँ बाप का पहले से सूचना दे देना ज़करी है. जो माँबाप इस बात पर ऐतराज करते हैं कि उनके बच्चों के बीठ सीठ जीठ का टीका न लगाया जाये वे या ता आजमाइशी टीके के दिन अपने बच्चों को स्कूल ही नहीं भे जते या स्कूल के अधिकारियों को अपना ऐतराज लिखकर मंज देते हैं.

इस पर मैंने (श्री सी. राजगोपालाचारी) 12 जुलाई सन् 1955 के मद्रास के अखबार 'इन्डियन ऐक्सप्रेस' में अपना एक खत शाया कराया जिसमें लिखा है :—

"मेरे पास मद्रास के हैं स्थ मिनिस्टर का पहली जुलाई का लिखा एक खत आया है जिससे मेरा यह ख्याल पक्का हो गया कि जब बच्चों के मां बाप की तरफ से कोई लिखा हुआ ऐतराज नहीं आता तो यह कर्ज कर लिया जाता है कि बह अपने बच्चे के टीका लगवाने के लिये रजामन्द हैं. असलियत यह है कि स्कूल मास्टर का ही बच्चों के जिस्म और उनकी आत्मा का पूरा मुहाफिज मान लिया जाता है. यह बात हद दर्जे कानून के खिलाक है. सरकार के कानूनी अफ़सरों का कर्ज है कि इस बात का सोचें कि उन्हें सरकार को यह सलाह देनी चाहिये या नहीं कि वह इस बेजा कार्रवाई से बाज रहे."

कोइमबट्टर की घटनाएं

जब लांगों का मालूम हुआ कि मैं इस मानले में दिल-चस्पी ले रहा हूँ तो लांगों ने कुछ घटनाएँ मुक्ते लिखकर भेजीं. उनमें से बहुत-सी मैं दैनिक अखबारों में शाया करा चुका हूँ ताकि सब उन्हें जान जायें. मैं कुछ घटनाएं नीचे देता हूँ. इनमें पहली दस घटनाएं सब कोइमबद्दर की ही हैं. (1) श्री जी. एम. कुष्ण राजा चेटियर ने मुक्ते लिखा कि:—

'मेरी छै साल की एक लड़की वसंत लन्दन मिशन स्कूल कोइमबदूर में पहली छास में पढ़ती थी. 18 नवम्बर सन् 1954 का उसके बी० सी० जी० का टीका लगाया गया. उस बक्त तक वह बिलकुल तन्द्रस्र थी और खूब बढ़ती थी. 3 दिसम्बर सन् 1954 को उसके दूसरा टीका चेचक का लगाया गया. इस दूसरे टीके के लगने के बाद मेरी लड़की अंधी हो गई. अधिकारियों ने बग्नैर मेरी रजामन्दी

کے اسکول میں میرہ بچے کے ٹیکے اگائے آور آسی کی جہ سے میرے بچے کی آنکھیں جاتی رهیں، میں لے قامی میونسپل ادھیکاریوں کا دھیان اِس بات کی ارف دلایا لیکن کچے نہ ہوا۔ میں اِس خط کے ساتھ اِ بیتور کے سینیقری اِنسپکٹر کی ربورت اور میڈیکل انسر کی پورٹ درنوں آپ کو بھیج رہا ہوں، مجھے نہیں معلوم کہ میں معاملے میں اور کیا کروں ، بہاں کے قائلو بھی کہتے ھیں که ب میرے بیچے کی آنکھوں کا ٹییک ہوسکنا ناممکن ہے ۔''

(2) شرق سی ، کے ، سندر راجن لے مجھے ایک خط ا یں انھا که :--

امیری ایک لزکی سات سال کی اور ایک لزکا دو سال کا بونوں کے ہی . سی . جی . کا ٹیکہ لگایا گیا . تین دی کے بعد بونوں کے سارے جسم کے آورو پھرتے نکل آنے . هو طوح کا علاج یا گیا لیکن تین مہینے نک اُن دونوں کو بہت سخت نکلیف هی . اُن کے کئی اِنجیشن لگائے گئے . تیسرے مہدنے میں جاکو هی . اُن کے کئی اِنجیشن لگائے گئے . تیسرے مہدنے میں جاکو هیں ." علی اچھے مہئے . دونوں ابھی تک بہت کمزور چلے جاتے هیں ."

(3) شری ایس ، وردراج نے اپنے خط میں لکیا ہے کہ است در ہے ہے ہیں۔ جی، کا ٹیکہ لگایا گیا ہے میرے ہی سیء جی، کا ٹیکہ لگایا گیا ہے میرے کا علاج الیں بازو میں بہت سخت درد ہوتا ہے ، کئی طرح کا علاج کی بہت ہوں ہوا ، میں بیس برس کی عمر کا جوان دمی ہور ، میرے ایک ماں ہے دو بہائی ہیں اور دو بہائی ہیں میرے خود کام کرکے سب کو یالنا پڑوا ہے ،"

(١) ش ي بيلا سوأمي چيلي لکهتم هين :--

' میدی چھ برس کی لوکی رکمنی کے بی ، سی ، جی ، ا ٹیکم لگایا گیا ، اِس پر اُس کی آنکھیں جاتی رهیں ، سقامی مرکاری استال میں علج درایا گیا تو اُس کی نظر کچھ کچھ ایس آئٹی ، لیکن وہ آبھی تک بہت کمزور ہے اور اُس کا ماغ بھی ابھی تک بالکل ٹھیک نہیں ہے ۔''

(5) شريمتي رنكم مال لتهتي هيس: --

المهرى أنهارة سال كى لوكى سرسو كے بى . سى . جى . التيكم الكایا گیا . أسى دن سے أس كے سو درد اور گلے دى خرابى شروع هوگئى . كچه دنوں تك ايك مقامى تائقر سے يورايا گيا . پهر أسى تائلر كے نهنے پر هم أس لوئى كو رايا گيا . پهر أسى تائلر كے نهنے پر هم أس لوئى كو مرجن نے كہا كه إس كى آنكه كے سرحن كے پاس لے گئے . أنكه كے موجن نے كہا كه إس كى آنكهن هم بهر پرائے ذائلر كے پاس آئئے . أس كے علاج سے كنچه نه ترأسا الله مال مورائي مونا يهر بهى جارى رها . الم بهر ايك آنكه كے اسپتال ميں گئے . وهاں أس كے عينك الكا ميں كئى . عينك، لكانے سے سو ديرد اور قے دونوں اور بولا گئے . سى كے بعد عم أسے بهر بہلے هى والے سركارى اسپتال ميں لے گئے . سى كے بعد عم أسے بهر بہلے هى والے سركارى اسپتال ميں لے گئے . سى كے بعد عم أسے بهر بہلے هى والے سركارى اسپتال ميں لے گئے . سال وہ لوئى مر گئى . "

(۱) شری کے ، ایس ، گورردیا سیٹی نے لکھا ہے:— ''میرے چه سال کے لڑکے سوم سندرم کے بی ، سی ، جی ،

के स्कूल में मेरे बच्चे के टीके लगाये और क्सी की बजह से मेरे बच्चे की बाँखें जाती रहीं. मैंने मुक़ामी म्युनिस्पल अधिका-रियों का ज्यान इस बात की तरफ दिलाया लेकिन कुछ न हुआ. मैं इस खत के साथ को इमबदूर के सेनेट्री इन्सपेक्टर की रिपोर्ट और मैडिकल अफ़सर की रिपोर्ट दोनों आपको भेज रहा हूँ. मुक्ते नहीं मालूम कि मैं इस मामले में और क्या करूँ. यहाँ के डाक्टर यही कहते हैं कि अब मेरें बच्चे की बाँखों का ठीक ही सकना नामुमिकन है."

(2) श्री सी. के. सुन्दर राजन ने मुमे एक ख्त में लिखा

कि:-

"मरी एक लड़की सात साल की और एक लड़का दो साल का दोनों के बीठ सीठ जीठ का टीका लगाया गया. तीन दिन के बाद दोनों के सारे जिस्म के ऊपर फाड़े निकल आये. हर तरह का इलाज किया गया लेकिन तीन महीने तक इन दोनों को बहुत सख्त तकलीफ रही. उनके कई इन्जैक्शन लगाये गये. तीसरे महीने में जाकर वह अच्छे हुए. दोनों अभी तक बहुत कमजार वले जाते हैं."

(3) श्री एस वर्दराज ने अपने ख़त में लिखा है कि:—
"जब से मेरे बी० सी० जी० का टीका लगाया गया है,
मेरे बायें बाजू में बहुत सख्त दर्द हाता है. कई तरह का
इलाज किया पर अभी फायदा नहीं हुआ। मैं बीस बरस की
उन्न का जवान आदमी हूँ. मेरे एक माँ है, दो भाई हैं और
दा बहनें हैं. मुमे ख़ुद काम करके सबको पालना पड़ता है."

(4) श्री बेलास्वामी चेटी लिखत हैं :--

"मेरी है बरस की लड़की रुक्तिनी के बी० सी० जी० का टीका लगाया गया. इस पर उसकी आँखें जाती रहीं. मुकामी सरकारी अस्पताल में इलाज कराया गया तो उसकी नजर कुछ कुछ बापस आ गई. लेकिन वह अभी तक बहुत कमजार है और उसका दिसारा भी अभी तक बिलकुल ठीक नहीं है."

(5) श्रीमती रंगम्माल लिखती हैं :--

"मेरी घठारह साल की लड़की सरसां के बीठ सीठ जीठ का टीका लगाया गया. उसी दिन से उसके सर दर्द और गले की खराबी शुरू हो गई. कुछ दिनों तक एक मुक्तामी डाक्टर से इलाज कराया गया. फर उसी डाक्टर के कहने पर हम उस लड़की को सरकारी अस्पताल के आँख के सरजन के पास ले गये. आँख के सरजन ने कहा कि इसकी आखों में कोई खराबी नहीं है. इम फिर पुराने डाक्टर के पास आ गये. उसके इलाज से कुछ थाड़ा-सा कायदा मालूम हुआ. सर का दर्द और के होना फिर भी जारी रहा. इम फिर एक आँख के अस्पताल में गये. वहां उसके ऐनक लगा दी गई. ऐनक लगाने से सर दर्द और के दोनों और बढ़ गये. इसके बाद हम उसे फिर पहले ही वाले सरकारी अस्पताल में ले गये. वहां वह लड़की मर गई."

(6) श्री के. एसः गारादैया सेटी ने लिखा है :— "मेरे है साल के लड़के सीम सुन्दरम के बीo सीo जीo का दीका लगावा गया. इसके हाथ से पीप जाने लगी. तीन महीने तक इसे तकलीफ रही. उसके बाद उसने एक महीने तक एक ठाक्टर से दवा ली तथ वह खक्छा हो गया. लेकिन सभी तक कमसोर चला जाता है."

(7) श्री वाई. आर. नारायण स्वाभी ने लिखा है :--

"मेरे लड़के जैरथ के पिछली नवस्वर में बीठ सीठ जीठ का टीका लगाया गया था. उसी वक्त से पीप पड़ गई जो अभी तक अच्छी नहीं हुई. मैंने हर तरह की दवाएं की लेकिन अभी तक वह अच्छा नहीं हुआ।"

(8) श्री टी. एन. रामाचारी ने लिखा है कि :-

"मेरी तीन साल की लड़की भानुमती के जब से बीठ सीठ जीठ का टीका लगाया गया था तब से ही उस जगह पर एक फोड़ा बन गया है जिससे पीप धाती रहती है. वह फोड़ा धभी तक धच्छा नहीं हुआ. लड़की हर वक्त दर्द से चिल्लाती रहती है. हम उसे कई डाक्टरों के पास ले गये, हेडकार्टर्स धस्पताल में भी ले गये और मदुराई अस्पताल में भी ल गये लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ."

(४) श्री सबन्ना गांडन ने लिखा है :-

"मेरी देव साल की बच्ची पुनम्माल के बीठ सीट जीठ का टीका लगाया गया. उससे उसे बुखार आ गया. एक डाक्टर से उसका इलाज कराया. वह एक इपते के अन्दर मर गई.'

(10) श्री वी. कुप्पू स्वामी ने लिखा है कि :--

"मेरे भाई वी. राम कृष्णन के, जिसकी उन्न साढ़े चार साल की है, बी० सी० जी० का टीका लगाया गया. उस जगह पर उसके फोड़ा बन गया. हैडकार्टर्स अस्पताल में एक हफ्ते इलाज कराया पाया. कोई कायदा नहीं हुआ. एक दूसरे डाक्टर से इलाज कराया. उससे भी कोई फायदा नहीं हुआ. आज तक वह फोड़ा वैसा ही है और उससे पीप बहती रहती है."

मैं लिख चुका हूँ कि ऊपर की दस की दस घटनाएँ सब एक ही जगह की यानी कोइमबट्र के शहर की हैं.

कुछ भीर ख़त

9 जुलाई सन् 1955 के हिन्दुस्तान टाइम्स में त्रुचि के डाक्टर आर-सम्बशिवन एम. बी. बी. एस. का एक खत छाप है जिसमें तिखा है कि :—

"मेरे इलाज में श्राजकल एक चौद्ह बरस का लड़का है जो मेरा श्रपना पाता है श्रीर जिसकी तन्द्रस्ती बिलकुल बरबाद हो गई है. सन् 1954 में उसके बां० सी० जी० का टीका लगाया गया था. टीका लगाने के दक्षत एसकी तन्द्रस्ती अन्वल दर्जे की थी—बहुत अच्छा मजबूत जिस्म, खूब शक्ति और बीमारियों का नजदीक्क न फटकने देने वाला। उसे बहुत کا ٹھکھ لگایا گیا ۔ اُس کے ھاتو سے پیپ آئے لکی ۔ تین مہینے تک تک اُسے تکلیف رھی ۔ اُس کے بعد اُس ئے ایک مہینے تک ایک 5 کارسے دوا لی تب رہ اُچھا ھوگیا ، لیکن ابھی تک کرور چلا جاتا ہے ۔''

The State of the S

' (7) شرق وائى . أر . نارائن سوامى نے لكها هے:-

"میرے لڑکے چے رتو کے پنچھلی ترمیر میں ہی۔ سی بھی۔ کا ٹیکد لگایا گیا تھا ۔ اُسی وقت سے پہپ پڑ گئی جو اُبھی تک اُچھی نہیں فہیں میں نے ہر طرح کی دوائیں کیں لیکن اُبھی تک وہ اُچھی تک وہ اُچھی نہیں ہوا ۔"

(8) شرى ئى . اين . راما چارى نے لكھا ہے كه : --

المهری تین سال کی لرکی بهانومتی کے جب سے بی ، سی ، جی ، کا تیکہ لگایا گیا تھا تب سے هی اُس جگه پر ایک بهرزا بن گیا هے جس سے پیپ آتی رهتی هے ، وہ بهرزا ابهی تک اچها نہیں هوا ، لوکی هر وقت درد سے چلانی رهتی هے ، هم آسے کئی قاکتروں کے پاس اے گئے هیق کوارٹوس اسپتال میں بھی لے گئے لیکن میں بھی لے گئے لیکن کوئی نائدہ نہیں هوا ،"

(9) شرق سبنا گرنتی نے لکھا ہے :--

''مهری دَیوَه سال کی بحیی پوئمال کے بی . سی . جی . کا تیک نگایا گیا ، اُس سے اُسے بخار آگیا . ایک دَانتر سے اُس کا علاج کرایا ، وہ ایک ہفتے کے اندر سر گئی .''

(10) شرمی ومی ، کہو سوامی نے اکھا ہے کہ :---

المیرے بھائی وی ، رام ، کرشنن کے جس کی عدر ساڑھے چار سال کی ہے ہی ، سی ، جی کا تیکہ لگایا گیا ، اُس جکہ پر اُس کے پھرزا بن گیا ، ھیت درارڈرس اسپتال میں ایک معتبے علیے کرایا گیا ، کوئی بائدہ نہیں ہوا ، ایک درسرے دادار سے علیے کرایا ، اُس سے بھی کوئی فائدہ نہیں ہوا ، اُنے تک وہ پھرزا ریسا ھی ھے اور اُس سے پیپ بہتی رھتی ہے ، " ،

میں لتے چکا ہوں کہ اُرپر کی دس کی دس گھتنائیں سب ایک ھی جکہ کی یعنی کوامبیٹور کے شہر کی ھیں ۔

کچھ اور خط

9 جولائی سن 1956 کے هندستان ٹائمس میں تروچی کے دائٹر آر . سب شوں ام ، ہی ، ہی ، ایس ، کا ایک خط چیپا ہے جس میں لکھا ہے کہ :۔۔۔

المیرے علیے میں آجکل ایک چودہ برس کا لرکا ہے جو میرا اپنا پہتا ہے اور جس کی تندرستی بالکل برباد ہوگئی ہے۔ میں 1954 میں اس کے ہی . سی ، جی . کا ٹیکھ لگایا گیا تھا . ٹیکھ لگانے کے وقت تک اُس کی تندرستی بالکل آول میرجہ کی تھی۔ بہت اچھا مضبوط جسم خوب شکتی اور بیماریوں کو فزدیک نم پھٹکنے دینے والا . آھ بہت بیماریوں کو فزدیک نم پھٹکنے دینے والا . آھ بہت

अच्छा साना दिया जाता था. स्कूल के खेल वह खूब खेलता था. टीका लगने के समय से ही उसका बदन फफदना शुरू हो गया. लाल लाल चकत्तियाँ पड़ गई. तब से अब तक उसके शरीर के अलग अलग भागों पर छोटे बड़े फोड़े बराबर निकलते रहते हैं. यह फोड़े सामूली ढंग से और मामूली समय के अन्दर अच्छे नहीं होते हालांकि इलाज ठीक-ठीक होता रहता है. अब कुछ फोड़ों पर से खुरंट उतर गये हैं. लेकिन खुरंटों के नीचे भी प्याले की शकल के फोड़े बने हुए हैं जिनमें चारों तरफ दाने से बनते रहते हैं. दूसरी खास बात इन फोड़ों की यह है कि जबकि मामूली फोड़ों में सूजन फोड़े तक ही रहती है इन फोड़ों में फोड़ों के चारों तरफ कई इंच तक सूजन और बरम बना रहता है. जो भी हो, मैं अपनी-सी पूरी कोशिश कर रहा हूँ कि उस बच्चे को फिर से तन्दुरुस्त कर दूँ."

देहरादून से श्री विज्ञान प्रकाश लिखते हैं :--

"मैने 'हिन्दुस्तान टाइन्स' में आपके लेख और खत इस विषय के पढ़े हैं कि बी० सी० जी० से कितना नुक़सान होता है. उन्हें पढ़कर मुक्ते साहस हुआ कि आप जैसे बड़े श्रादमी को खुद अपने बेटे जैदेव का हाल लिखूँ. जैदेव की उम्र तेरह साल की है. साधोराम हायर सेकेन्ड्री स्कूल देहरादून में वह बाठवीं क्लास में पदता था. लगभग एक साल हका स्कूल में उसके बी० सी० जी० का टीका लगाया गया. तब ही से उसकी तन्दरुस्ती गिरनी शुरू हो गई, यहां तक कि उसके फेफड़े खराब हो गये और खुन में जहर पैदा हो गया. उसे खांसी श्रीर दमा हुत्रा. मुफे डेर है कि उसे तपंदिक हो गया है. उसका बजन घटता जा रहा है. श्रव तक उसका बारह पौंड वजन घट चुका है. मैं उसे चंडीगढ़ इलाज के लिये ले गया. वहां वह एक महीने से ऊपर कर्नल डी. भाटिया श्रो. बी. ई. एक. श्रार. सी. एस. चीफ मैडिकल श्रफ्सर चंडीगढ़ के इलाज में रहा. कर्नल भाटिया की भी यही राय है कि उसे तपेदिक है. मैं बहुत दिनों वहां के इलाज का स्तर्च बरदाश्त नहीं कर सकता था. इसलिये मैं उसे दंश्रादून ले गया. वहां उसे कोई फायदा भी नहीं हुआ. यहां स्कूल के हेडमास्टर की सलाह से श्रीर हेडमास्टर की चिद्वी लेकर मैं उसे देहरादून के सिविल सर्जन के पास ले गया, िविल सर्जन ने कोई परवाह नहीं की और न मेरे लड़के का हाक्टरी इम्तहान किया. मैं फिर एक दूसरे आदमी की मारफत सिविल सर्जन के पास गया इस बार अस्पताल में मैंने सोलह हपया उनकी फीस भी दे दी. उन्होंने मेरे लड़के को थोड़ा-सा देखकर एक नुसखा लिख दिया. अब मैं सिविल सर्जन ही की दवा दे रहा हूँ. सिविल सर्जन ने भी *सुम से यही कहा कि मुमकिन हैं मेरे लड़के* को यह तकलीफ़ भी० सी० जी० के कारण ही हुई हा."

اچھا کھاتا دیا جاتا تھا۔ المکول کے کھیل رہ خوب کھیلٹا تھا۔ ٹیکھ کے سمے سے بھی اُس کا بدن پھھدنا سروع ہوگیا۔ الل الل چکتیاں روگئیں۔ تب سے اب تک اُس کے شریر کے الگ الگ بھاگوں بر چھوٹے برتے بدوڑے برابر نکلتے رہتے ہیں ۔ یہ پھوڑے معمولی تھنگ سے اور معمولی سمے کے اندر اچھے نہیں ہوتے حالانکھ علی تھیک ہوتا رہتا ہے ۔ آب کچھ پھوڑوں پر سے کھرنت اُبر گئے ہیں ۔ لیکن کھرنٹوں کے نبیجے بھی پیالے کی شکل کے پورٹے بنے ہوئے ہیں جن میں چاروں طرف دائے سے بنتے رہتے ہیں ، دوسری خاص بات اُن پھوڑوں نی یہ شے کہ جب که ہمروں پھوڑوں میں سودی پھوڑے تک ہی رہتی ہے اِن بھوڑوں میں پھوڑوں کی یہ شے کہ جب کے پھوڑوں میں پھوڑوں کی یہ شے کہ جب کے بھوڑوں میں پھوڑوں کی یہ شے کہ جب کے بھوڑوں میں پھوڑوں کی بھرتی ہے اِن بھوڑوں میں بھوڑوں کی بھوٹی ہو اِن بھوڑوں میں بھوڑوں کے چاروں طرف کئی انبے تک سوجن اور برم بدا رہتا ہے ، جو بھی بھو میں اُپنی سی پوری کوشش کورما میں بھے کو بھر سے تندرست کردوں کہ اُس بھے کو بھر سے تندرست کردوں ۔''

دھرادرن سے شری وگیان پرکاش لکھتے ھیں:

"میں نے الفندستان قائسس میں آپ کے لیکھ اور خط اس رشم کے برھے هیں که بی، سی جی سے کتنا نقصان عرفاً في أنهين يرمكر مجهد ساهس هوا كه أب جيس بري آئے دو حود اپنے بیٹے جے دیو تا حال لکھوں ، جےدیو کی عمو تهره سال کی هے . سادھو رأم ھادرسکنڈری اسکول دھرادون مين و« أَتَهوبِن كُلُس مِينِ يَرَمَعًا تَهَا . لك بهك أيك سال هوأ اسكرل ميں آس كے ہى. سى. جى كا تبكه اللها گيا ، تب هى سے اُس کی تندرستی گرتی شروع ہو گئی' یہاں تک که اُس کے بهدا وراب موگئے اور خون میں زعر پیدا موگیا . أسے كهانسى اور دمه عوا ، مجهد در ه كه أسد نهدق هو كيا ه . أس كا رن گهتا جا رها في . أب تك أس كا باره پوئد وزن گهت چكا فے میں اُسے چندی گڑھ علاہ کے لئے لے گیا ، وہاں وہ ایک مهدنم سي أوير دونل تي بهاتيا أو بي. إي. الف. أر سي أيس. چرف میدیال اسر چندی گرمه کے علاج سیں رها ، کرفل بهائیا نی بھی ابہی وائے ہے کہ اُسے تبدی ہے . میں بہت دنون الفان کے علاج کا خرچ برداشت نہیں کر سکتا تھا ، اِس لئے میں اسے دھرادوں لے گیا . وهاں اُسے کوئی فائیدہ بھی نہیں ہوا . ہاں اسکول کے هید ماسئر کی صلاح سے اور هید ماستر کر چھٹی نے کر میں اُسے دھرادوں کے سول سرجن کے پاس لے گیا ، سول سرجن نے اوئی پروالا : ہیں کی اور نت میوے لڑکے کا فائٹری استندان کیا . میں پھر ایک درسرے آدمی کی معرفت سول سرجن کے داس گیا . اِس بار اسپتال میں میں نے سوله روییه أن كى فيس بھى دے دى . أنهوں نے ميرے لڑكے كو تهوراً سا ريان در اريك تسخه لاي ديا . اب ميس سول سرجي هي كي دوا دے رہا ہوں۔ سول مرجن نے بھی مجھ سے بہی کہا کدسمی ہے میرے لرکے کو یہ دیملیف ہی۔ سی، جی کے کارن عی عودی هو .

एक बदक्रिस्मत ज़िला अफ़सर का खुत

अब मैं नीचे एक ऐसे आदमी का सत दे रहा हूँ जिसने सत में अपना नाम और पता लिख दिया है और जो सर-कार के अधीन जिला-अकसर के पद पर है. उसने मुमे लिखा है कि:—

"आपने यह बहुत अच्छा किया कि गम्भीरता और बहादरी के साथ तपेदिक के बीठ सीठ जीठ के टीके के इस तरह अंधाधन्धी सब के लगाये जाने का विरोध किया श्रीर उसे आप बरा कह रहे हैं. मैं एक बाप हूँ जो इसी बी० सी० जी० की बदौलत अपना ग्यारह बरस का सुन्दर बेटा खो बैठा हूँ. मेरा बेटा सन् 1951 में यहाँ एक प्राइमरी स्कूल में पढ़ता था. बी० सी० जी० के हामियों और प्रचारकों ने इस स्कल में टीका लगाये जाने का प्रबंध किया. मेरा बेटा यह कहकर स्कूल के कम्पाउन्ड से भाग आया कि भी बिना अपने बाप की इजाजत के यह टीका नहीं लगवा सकता, नहीं तो मेरे बाप मुक्ते मारेंगे'. उसे जबरदस्ती पकड़कर खींचकर अन्दर ले जाया गया और टीका लगा दिया गया. उसके शायह खसरा निकलने वाली थी. चौथे या पाँचवें दिन उसके खसरा निकल आई. उसे जोर का बुखार आ गया. उसका टैम्परेचर एक-सो-नौ तक पहुँच गया. उसे मेननजायटीज और निमानिया भी साथ साथ हो गये. दूसरे ही दिन यानी 4 श्रप्रेल सन 1951 को वह मर गया, उसकी मीत मेरी पत्नी की मौत के ठीक एक साल बाद हुई. मेरी पत्नी की मौत दसरी बोमारी के कारण हुई थी. इस तरह मुक्त पर दोहरी मुसीबत आई, बी० सी० जी० का टीका लगने से पहले मेरा लड़का खूब तन्दरुस्त था और खेलता था. लेकिन और बातों को छोड़ दीजिये, जैसे यह कि टीका लागने से पहले माता पिता से इजाजत ले लेना जरूरी है. इस टीके के लगाने में यह भी नहीं देखा जाता कि बच्चों कों कोई लगनी बीमारी तो होने वाली नहीं है. मैं वाहता हूँ श्रीर भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि आप को बड़ी उम्र दे भौर तन्दरुस्त रक्खे ताकि श्राप बेगुनाह बच्चों के ऊपर इन रौर जरूरी और श्रधाधुन्ध टीकों के खिलाफ लड़ सकें."

मैं उस आदमी का नाम इसलिये नहीं दे रहा हूँ कि वह सरकारी नौकर है भीर ऐसा न हो कि नाम देने से इस भ्रभागे बाप पर एक तीसरी मुसीबत श्रा पड़े.

कुछ और घटनाएँ

नीचे की घटनाएँ 12 जुलाई सन् 1955 के मद्रास के अखबार "इन्डियन ऐक्सप्रेस" में अप चुकी हैं :--

1—चिंगलपट के श्री एन. कृष्ण स्वामी पिल्ले के 18 साल के बेटे बाल सुबरमनियन के स्कूल में बी० सी० जी०

بك بنةسمت ضلع أنسر كا خما

اب میں نیچے ایک ایسے آدمی کا خط دے رہا ہوں جس نے خط میں اپنا قام اور پکه لکھ دیا ہے اور جو سرکار کے آدھیں نام افسر کے پد پر ہے اُس نے مجھے لکھا ہے کہ:۔۔۔

the state of the state of the state of

"آپ نے یہ بہت ایجا کیا کہ گنھیرتا اور بہادری کے ساتھ نہدی کے بی سی جی کے ٹیکے کے اِس طرح اندھا دھندی سب کے لگائے جانے کا ورودھ کیا اور اُسے آپ ہوا کہ وہے میں . میں ایک باپ هوں جو اِسی ہی، سی، جی کی بدوکت اینا كياره برس كا سندر بيلها كهو چكا هون . ميرا بيتا سن 1951 يين يهان ايک پرائمري اسکول مين پرهتا تها . بي، سي، چي کے حامیوں اور پرچارکوں نے اُس اسکول میں ٹیکہ لگانے جالے ا پربندہ کیا ، میرا بیٹا یہ کہر استول کے کمپاؤنڈ سے بھاگ آیا که امیں بنا اپنے باپ کی اجازت کے یه تیکه نیہں لکوا سکتا نہیں تو مھرے باپ مجھے مارینگے ۔ اُسے زبردستی پکڑ کر کھنیج كر اندر له جا يا كيا أور تيكم اكا ديا كيا ، أس كے شايد خصره نلانم والى نهى، چوته يا وانچويس دن أس ك خصرة نكل آئي ، أسے زور كا بنار آگيا ، أس كا ثموريجر ايك سو نو تك پهنيج كيا . اسم ميننجائيٽيز اور نيمونيه بهي ساته ساته هو گئے ، دوسرے دن یعنی 4 ایریل سن 1951 کو وہ مر گیا۔ اُس کی موت مهری دتنی کی موت کے تھیک ایک سال بعد عوثی ، میری پتنی کی موت دوسری بیماری کے کارن عوثی تھی ، اِس طرح مجھ پر دوهوی مصیبت ائی . بی، سی جی کا تیکه لکنه سے پہلے ميراً لوكا خوب تندرست نها أور كهيانا نها ، ليكن أور يادون كو چهرر ديجيئے ؛ جيسے يه كه ثهكه لكا في سے پہلے ساتا پتا سے أجازت لے لینا فروری ہے اِس ٹیکے کے لگانے میں یہ بھی نہیں دیکھا جا تا که بچوں کو کوئی لگلی بیماری تو هولے والی نہیں ہے مرمیں چاهتا هرس اور بهعوان سے پرارتهنا کرتا هوس که آپ کو بڑی عمر دے اور تادرست رکھے تاکہ آپ سے گناہ بھوں کے اوپر اِن غیر ضروری اور اندھا دھاد ٹیموں کے خالف لڑ سمیں ۔''

میں اُس آدمی کا نام اِس لئے نہیں دے رہا ہوں که وہ سرکاری ٹوکر ہے اور ایسا نه ہو که نام دینے سے اِس اُبھاکے باپ پر ایک نیسری مصیبت آپڑے .

كح أور گهتنائيس

نیچے کی گہتنائیں 12 جرلائی سن 1955 کے مدارس کے کے اخبار ''انڈین ایکسپریس'' میں چھپ چکی ھیں:۔۔۔

چنکلیت کے شری این کرشن سوامی پلے کے 18 سال کے بیٹے بال سیرمنین کے اسکول میں ہی، سی، جی का टीका लगाया गया. यह पिछले मार्च-क्रमैल की बात है. बाल सुबरमनियन चौथी क्लास में पदना था तब ही से उसकी तन्दुरुस्ती गिरती जा रही है. खब वह अवसर कें करता रहता है. सर में सस्त वर्द रहता है. आँख की रोशनी बहुत खराब हो गई है. चक्कर आते रहते हैं. कभी-कभी बेहोश हो जाता है. दिमारा इंड-कुछ खराब हो बला है. कभी-कभी बोलना बन्द हो जाता है. बजन कम होता जा रहा है. बह अपने मां बाप का इकलीता लक्का है. मां बाप बहुत परेशान हैं. 3 जुलाई से उसे इलाज के लिये सरकारी अस्पताल में दाखिल कर दिया गया है.

2—माइकल एन्थनी खब औंध कैम्प पूना के फ़ौजी अस्पताल में है. उसे बीठ सीठ जीठ का टीका लगाया गया. तपेदिक हो गया. नौकरी से जाता रहा और खब अस्पताल में बहुत बीमार है. जब उसके टीका लगाया गया तब वह बंगलीर के एक फौजी दफ्तर में काम कर रहा था. इससे पहले बह बिलकुल तन्दुरुस्त था. उसके घर में कभी किसी को तपेदिक नहीं हुआ था. उसने मुफ्ते (श्री राजागोपालाचारी को) एक बहुत दुख और गुस्से से भरा हुआ खत लिखा है कि यह विदेशी "दुनिया भर के तन्दुरुस्ती के माहिर" बन कर आते हैं. उनके सामने ही उसके टीका लगाया गया था.

3—श्री एम. एस. फक़ीर को इमबदूर के एक बीड़ी के कारखाने में मजदूरी करता है. उसके एक ढाई बरस के बच्चे के 18 दिसम्बर सन् 1954 को बीठ सीठ जीठ का टीका लगाया गया. आँख की रोशनी ख़राब हो गई और तन्दुक्स्ती गिरती गई

लोदी कालोनी दिल्ती से श्री श्रीतसिंह ने 20 जुलाई सन् 1955 को मुक्ते यह ख़त लिखा:—

'में नीचे आपको इस बात का पूरा हाल लिख रहा हूँ कि मेरे बेटे पर बीठ सीठ जीठ के टीक का किस तरह बुरा असर पड़ा. मेरे लड़के का नाम उदयवीर सिंह है, उसकी उस्र साढ़े नी साल की थी वह उस बक्त बहुत तन्दुक्स्त था. श्रगस्त सन् 19'3 में स्कूज में उसके बीठ सीठ जीठ का टीका लगाया गया. हमारी बद्किस्मती से श्रगले दिन ही उसके एक तरह कि गिल्टियाँ निकल आई' और गदन पर सूजन आ गई. मैंने एक होस्योपैथिक डाक्टर को दिखाया. उसके इलाज से बच्चे को बहुत आराम मिला. पर ठीक एक साल के बाद बही चीज फिर और प्यादा जार के साथ निकल आई. अब मेरे बच्चे की हालत ख्लरनाक हो गई. 8 सितम्बर सन् 1974 को मैंने नई दिल्ली के सफद्र जंग अस्पताल में उसका ऐक्सरे कराया. एक्सरे से मालूम हुआ कि बायें फेकड़े में सपेदिक हो गया है और फेकड़ों के बीच की गिल्टियाँ बह गई हैं, लड़के को नई दिल्ली के इरविन

لا تیکه لاایا گیا. یه پنچهلے مارچ أپریل کی بات هے بال سبر منین چوتبی کلس میں پرهنا تها تب هی سے اسکی تلدرستی گرتی جا رهی هے . اب وه اکثرتے کرتا رهنا هے . سر میں سخت درد رهنا هے . ان وه کی روشنی بهت خراب هو گئی هے چکر آتے رهنا هیں . کبھی کبھی پرهوش هو جاتا هے . دماغ کچے کچے خراب هو چلا هے . کبھی کبھی بوانا بند هو جا تا هے وزن کم هوتا جا رها هے . وه أبني مال باپ کا إکلوتا لوکا هے . مال باپ بهت پریشال هیں . 3 جولائی سے أسے علاج کے لئے سرکاری اسپتال میں داخل کر دیا گیا هے ،

2-مائکل اِنتهنی آب اوندھ کیمپ دونا کے نوجی اسپتال میں ہے ۔ اُسے ہی سی جی کا تیکہ لگایا گیا ۔ تبدی ہو گیا ۔ ثرکری سے جانا رہا اور آب اسپتال میں بہت بیمار ہے ، جب اُس کے تیکہ لگایا گیا تب وہ بنکلور کے ایک نوجی دنتر میں کام کر رہا تھا ، اِس سے پہلے وہ بالکل تندرست تھا ، اُس نے گھر میں کبھی کسی کو تبدی نہیں ہوا تھا ، اُس نے مجھے (شری میں کبھی کسی کو تبدی نہیں ہوا تھا ، اُس نے مجھے (شری راجا گوپالاچاری کو) ایک بہت دکھ اور غصے سے بھرا ہوا خط لکھا ہے ودیشی "دنیا بھر کے تندرستی کے ماہر" بن کو آتے ہیں ، اُن کے سامنے ہی اُس کے تیکہ لگایا تھا ،

8-شری ایم، ایس، نقیر کوامبیةور کے ایک بیتی کے کارخانے میں مزدوری کرتا ہے ، اُس کے ایک تفائی برس کے بچے کے 18 دسمبر سن 1954 کو بی، سی، جی کا تیکہ لگایا گیا ، آنکہ کی روشنی خراب ہو گئی اور تندیستی گرتی گئی ، لودی کالوئی دلی سے شری پریت سنکم نے 20 جوائی سن 1955 کو منجھے یہ خط لکھا:—

 अस्पताल में भेजा गया. वहाँ पूरी तरह इम्तहान हुआ.
18 सितम्बर सन् 1954 को उन्होंने कहा कि गर्दन में तपेदिक्त की गिल्टियाँ हैं. उन्होंने ताकृत की द्वाएँ और विटामिन खिलाने की सलाह दी और अल्ट्राबायालेट किर नों का
इलाज बताया. यह सब इलाज हो चुकने के बाद भी अभी
तक वह पूरी तरह ठीक नहीं हुआ. हमारे घर में आज तक
कभी किसी को तपेदिक नहीं हुआ था. इस मामले में हमें
काफी परेशानी हुई और जेरबार होना पड़ा—यह सब बीठ
सीठ जीठ के टीक की बदौलत. कई बरस से यह टीका इतना
अंधा-धुंधी से लगाया जा रहा है कि अक्सर उससे जा कायदा
साचा जाता है उसकी निस्वत जुक्रसान ज्यादा होता है.
सरकार की सममाने की जरूरत है. इस सब की रांक थाम
होनी चाहिए."

हमारे बच्चों पर खुतरनाक तजरबा

यह छोटी सी किताब अभी अंप्रेजी में छप ही रही थी कि मदन्यस्ली के यूनियन मिशन द्यूवरक्युलोसिस अस्प-ताल के सुपरिन्टैन्डैन्ट डाक्टर फ्रैडमूट मूलर ने अपने सेनि-टोरियम के काम की चरचा करते हुए यह बयान दिया कि :-- "बी० सी० जी० का टीका कहाँ तक बच्चों को बाद में तपेदिक की बीमारी से बचा सकता है, इस पर जब तक अभी काफी बक्त न निकल जाये और नतीजों का न देख लें तब तक अभी हम कुछ नहीं कह सकते." यह एक बहुत ही तजरबेकार श्रीर जिम्मेवार डाक्टर का वयान है, जिसमें शब्दों को ताल तालकर रक्खा गया है. हमारे लिये यह काफी अर्थ रखता है. यह बात बिलकुल पक्की है कि हिन्दु-स्तान में बी० सी॰ जी० के टीके लगाने की जो यह तहरीक चल रही है यह किसी बीमारी के रोकने का कोई आजमाया हुआ तरीका नहीं है, यह एक बड़े पैमाने पर हमारे बच्चों पर एक खतरनाक तजरबा किया जा रहा है, जिसे किसी तरह जायज नहीं कहा जा सकता.

اسپتال میں بیدجا گیا، وہاں پوری طرح امتحان ہوا. 18 ستمبر
سن 1974 کو اُنبوں نے کہا کہ گردن میں تبدق کی گلتیاں
میں ، اُنہوں لے طادت کی دوائیں اور ویٹیمن کیلانے کی ملاح
دی اور اُلٹرا واپولیٹ کرنوں کا علج بتا یا ، یہ سب علج ہو
چکنے کے بعد بھی ابھی نک وہ پوری طرح ٹییک نہیں ہوا ،
ممارے گھر میں آج تک کبھی کسی کو تبدق نہیں ہوا تھا ،
اِس معاملے میں ہمیں کئی پریشانی ہوئی اور زیربار ہونا
پراسیء سب بی ، سی ، جی کے ٹیکے کی بدولت ، کئی بوس
پراسیء سب بی ، سی ، جی کے ٹیکے کی بدولت ، کئی بوس
پراسیء آننے آندھا دھندی سے لگایا جا رہا ہے نه انشر اُس سے
جو نایدہ سوچا جا تا ہے اُس کی نسبت نقصان زیادہ ہوتا ہے ،
سرکار کو سمجھانے کی ضرورت ہے ، اِس سب کی روک تھام
ہوئی چاہئے ،"

ممارے بحوں پر خطرناک تجربه

یہ چھوٹی سی کتاب آبھی انگریؤی میں چھپ ھی رھی نبی که مدن پلی کے یونین مشن ثیوبرکیولوسس آسپتال کے سورنٹلڈنٹ قانٹر فرین موت موار نے آپنے سینی ٹوریم کے کام نبی چرچا کرتے ہوئے یہ بیان دیا کہ:—"بی، سی، جی کا ثیکہ دہاں تک بنچوں کو بعد میں تبدق کی برماری سے بچا سکتا کو نب دیکھ لیس تب نک ابھی کانی وقت نه نکل جائے اور نتیجوں کو نه دیکھ لیس تب تک ابھی م کنچھ نہیں کہہ سکتے،" یہ ایک بہت ھی تجربے کاو اور ذمموار قائم کا بیان ھے' جس میں شدوں کو تول تول کو رکیا گیا ھے ، ھمارے لئے یہ کانی ارته رکھتا ہے ، یہ بات بانکل پکی ھے که عندستان میں ہی، سی جی کے بیما کی جو یہ تحریک چلوھی ھے یہ کسی بیماری کو روئنے بیمانی اور اور نیمان میں بی بیماری کو روئنے بیمانی اور اور نیمانی کی جو یہ تحریک چلوھی ھے یہ کسی بیماری کو روئنے عمارے بیجوں پر ایک خطرفاک مجربه کیا جا رہا ھے' چے کسی عمارے بیچوں پر ایک خطرفاک مجربه کیا جا رہا ھے' چے کسی عمارے بیچوں پر ایک خطرفاک مجربه کیا جا رہا ھے' چے کسی

किसी ने गुरम्मद साहब से पूछा:—"ऐ अल्लाह के रस्त ! ईमान क्या है ?" पैराम्बर ने जबाब दिया—"जब किसी नेक काम के करने से तुम्हें खुशी हो, और बुरा काम करने से तुम्हें दुख हो तब समम्मों कि तुम 'मोमिन' यानी ईमान वाले हो." उस आदमी ने फिर पूछा—"और गुनाह क्या है ?" उन्होंने जबाब दिया—"जब कोई चीज अन्दर ही अन्दर तुम्हें कोंचती हो तो उसे मत करो."

-- जबु उमामा, जहमद.

मुहस्मद साहब ने कहा >— "सचमुच उस आदमी का कोई ईमान नहीं जो किसी के साथ विश्वासघात करता है, और उसका कोई दीन नहीं जो अपने वादों को पूरा नहीं करता."

——अनस, बेहक़ी.

मैंने पूछा—' इसलाम क्या है ?" पैराम्बर ने जवाब दिया—"जबान को प्रक रखना और मेहमान की खातिर करना."

मैंने पूछा—"ईमान क्या है ?" पैराम्बर ने जबाब दिया—"सत्र करना और दूसरों के साथ भलाई करना."

—श्रमरु, बहसद.

मृह्म्मद साहब ने कहा:—"दूसरों को दुख पहुँचाने से श्रपने का रोकना ईमान है; मोमिन को चाहिये कि किसी को दुख न पहुँचाए.

—अबु हुरैरा, अबुदाऊद.

मुहम्मद साहब ने कहा:—''जो आदमी मूठ बोलना नहीं बादता और जो इसी तरह के दूसरे बुरे कामों से बाज नहीं आता उसके खाना और पानी छोड़ कर रोजा रखने की अल्लाह को कोई अरूरत नहीं है."

— अबु हुरैरा, बुखारी

मुहम्मद साहब ने कहा:—"तुमसे पहले जो क्रीमें हुई हैं वह इसलिये बरबाद हुई कि जब उनमें से किसी बड़े घराने का आदमी चोरी करता था ता वह उसे सजा नहीं देते थे, और जब उनमें से कोई कमजोर या रारीब आदमी घोरी करता था तो उसे वह सजा देते थे. अल्लाह की کسی نے محمد صاحب سے پوچھا۔۔۔"اے الله کے رسول ا ایمان کیا ہے آ' پیغمبر نے جواب دیا۔۔'جب کسی نیک کام کے کرنے سے تمہیں خوشی ہو' اور برا کام کرنے سے تمہیں دع ہو تب سمجھو که تم 'مومن' یعنی ایمان والے ہو ،'' اُس آدمی نے پھر پوچھا۔۔۔"اور گناہ کیا ہے آ'' اُنھوں نے جواب دیا۔۔"جب کوئی چیز اندر ہی اندر تمہیں کوچتی ہو تو اُسے مت کرو ،''

- أبوأمامة أحد .

محمد صلحب نے کہا :۔۔۔''سپے مبے اُس آدمی کا کوئی ا ایمان نہیں جو کسی کے ساتھ رشواس گھات کرنا ھے' اور اُس کا کوئی دین نہیں جو اپنے وعدوں کو پورا نہیں کرتا ،''

-- آنس[،] بيهقى .

میں نے پوچھا۔۔''آسلام کیا ہے؟'' پیغمبر نے جواب دیا۔۔'' ''زبان کو پاک رکھنا اور مہدان کی خاطر کرنا ،''

میں نے پوچھا۔۔۔"ایمان کیا ہے ؟ " پیغمبر نے جواب دیا۔۔۔ "مبر کرنا اور دوسروں کے ساتھ بھلائی کرنا ۔"

-أمرو احمد .

محمد صاحب نے کہا: ۔۔۔''دوسروں کو دکھ پہونچانے سے اپنے کو روکنا ایمان ہے؛ مومن کو چاہئے کہ کسی کو دکھ نہ پہرنچائے ۔''

-- أبوهريرة أبرداؤد .

محمد صاحب نے کہا :۔۔ ''جو آدمی جھوٹ بولنا نہاں چھوٹا اُور جو اِسی طرح کے دوسرے برے کاموں سے باز نہیں آتا اُس کے کہانا اُور پانی چھوڑ کر روزہ رکھنے کی اُللہ کو کوئی ضرورت نہیں ہے ۔''

-أبوهريري بخاري .

محمد ماحب نے کہا: ۔۔۔''تم سے پہلے جو قومیں ہوئی
ہیں وہ اِس لئے برباد ہوئیں کہ جب اُن میں سے کسی
ہڑے گہرانے کا اُدمی چربی کرتا تھا تو وہ اُسے سزا نہیں
دیتے تھے' اور جب اُن میں سے کوئی کنزور یا غریب
اُدمی چربی کرتا تھا تو اُسے وہ سزا دیتے تھے۔ اللہ کی

क्रसम ! चोरी करने चाली चाहे मुहम्मद की बेटी फातमा ही क्यों न हो मैं उसके हाथ काट लुँगा."

—भायशा, बुखारी: मुसलिमे: अबुदाऊद: तिरमिची:

मुहम्मद साहब ने कहा:—"तुममें से किसी को इतना बेबक्रूफ़ नहीं होना चाहिये कि वह कहे कि—'मैं लोगों के साथ रहूँगा, अगर लोग मेरे साथ भलाई करेगे तो मैं उनके साथ भलाई करूँगा, और वह अगर मेरे साथ बुराई करेंगे तो मैं उनके साथ बुराई करूँगा.' इसके ख़िलाफ तुम्हें इस तरह समम से काम लेना चाहिये कि अगर लोग तुम्हारे साथ नेकी करें तो तुम भी उनके साथ नेकी करों और वह अगर तुम्हारे साथ बुराई करें तो तुम उनके साथ बुराई करने सं बचा."

—हुजैफा, तिरमिजी.

मुहम्मद साहब ने कहा:—सचमुच किसी भी पेशवा या लीडर के लिये यह ज्यादा अच्छा है कि वह रालती से किसी को माफ कर दे बजाय इसके कि वह रालती से किसी को सजा दे."

—श्रायशा, तिरमिजी.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"मूसा ने अल्लाह से पूछा—'ऐ मेरे अल्लाह ! तेरी नजरों में तेरे बन्दों में सब से प्यादा इष्जत के काबिल कौन हैं ?' अल्लाह ने जवाब दिया—'वह जिसमें बदला लेने की शक्ति है और फिर भी बह माफ कर देता है."

—अबु हुरैरा, बेहक़ी.

मैंने पैराम्बर की तलवार के कबजे पर यह शब्द खुदे हुये देखे:—"जो तुम्हें नुक्तसान पहुंचाए उसे तुम माफ कर दा; जो अपने से तुम्हें काटकर अलग करे उससे तुम मेल करो; जो तुम्हारे साथ बुराई करे उसके साथ तुम नेकी करो, और हमेशा सच बाला चाहे वह 'बात तुम्हारे ही (खुलाफ क्यों न हो."

—श्रली, रजीन.

एक आद्मी ने रसूल से आकर कहा—"ऐ अल्लाह के रसूल! मैं अपने नौकर को कितनी बार माफ करूँ ?" मुहम्मद साहब चुप रहे. उस आदमी ने अपने सवाल को तीन बार दुहराया. इस पर मुहम्मद साहब ने कहा—"अपने नौकर को दिन में सत्तर बार माफ करां."

-- इन्न उमर, अबुदाऊदः तिरमिजी.

قسم ! چورمی کرلے والی چاھے محصد کی بیٹی فاطمہ ھی کیوں تھ عو میں اُس کے عاتم کات لونگا ،''

- عائشه ا بخاری : مسلم : أبرداؤد : ترمذی : نسائی .

محمد صاحب نے کہا :—"تم میں سے کسی کو اتنا بیقوف نہیں ہونا چاہئے که وہ کہے که — میں لوگرں کے ساتھ روسکا' اگر لوگ میرے ساتھ بھلائی کرونگا اور وہ اگر میرے ساتھ بوائی کرینگے تو میں اُن کے ساتھ بوائی کرونگا ،' اِس کے خلاف تمہیں اِس طرح سنجھ سے کام لینا چھٹے که اگر لوگ تمہارے ساتھ نیکی کریں تو تم بھی اُن کے ساتھ نیکی کرد اور وہ اگر تمہارے ساتھ برائی کریں تو تم بھی اُن کے ساتھ برائی کرنے سے بچو ۔"

—حذيفه ^و ترمذي .

محمد صاحب نے کہا: ۔۔۔ ''سچ میچ کسی بھی پیشوا یا لیڈر کے لئے یہ زیادہ اچھا ہے کہ وہ غلطی سے کسی کو معات کر دے ،''

--عائشه ترمني.

میں نے پینمبر کی تلوار کے دہفتہ پر یہ شبد کھدے ہوئے دیکھے: —
"جو تمہیں فقصان پہونچائے آسے تم معاف کردوا جو آپنے سے
تمہیں کاشادر انگ درے اس سے تم میل دروا جو تمہارے ساتھ
برائی درے اس کے ساتھ تم میکی کروا اور عمیشہ سے بولو چاھے
وہ بات تمہارے ہی حلاف دیوں نہ ہو ۔ "

مسعلی ازین .

ایک آدمی نے رسول سے آکو کہا۔ ''انے الله کے رسول ! میں اپنے سوکو کو دننی بار معاف کروں ؟'' محمد صاحب چپ رفی اُس آدمی نے اپنے سوال کو تین بار دھرایا ، اِس پر محمد صاحب نے کہ۔ ''اپنے نوکر دو دن میں ستر بار معاف کرو ،''

-- این عمرا ابوداؤید ترمذی

ग्रहरूपय साहब की इस हवीसें

. मुहम्मद साहव ने कहा:—"सब मख्लूक (प्राणी) अस्ताह का कुनवा हैं और इस कुनवे में अस्ताह को सबसे क्यादा प्यारा वह है जो अस्ताह के इस कुनवे के साथ भलाई करता है."

—अनस और अब्दुल्ला, बेहकी

मुहम्मद साहब ने कहा-"ऐ श्रबुश्वर ! किसी भी नेक काम को हिकारत की निगाह से न देखा चाहे वह अपने किसी भाई से केबल इंसकर बोलना ही क्यों न हो."

—अबुजर, बुखारी; मुसलिम, तिरमिजी.

मुहम्भद साहब ने कहा:—"भूखों को खाना खिलाची, बीमारों को देखने जाचा और गुलामों और कैदियों को माजाद करो."

अवृमुसा, बुखारी, अबुदाऊद.

महन्मद साहब ने कहा:- "क्रयामत के दिन अल्लाह कहेगा- 'ऐ आदमी के बेटे! मैं बीमार था और तू मुके देखने नहीं आया, आदमी जवाब देगा—'ऐ मेरे अल्लाह ! तू तो सारी दुनिया का मालिक है. मैं तुमे देखने कैसे आ सकता था ?' अल्लाह कहेगा- 'क्या तुमें यह मालूम नहीं था कि मेरं बन्दों में से फुलां बन्दा बीमार था श्रीर तू उसे देखने नहीं गया ? क्या तू यह नहीं जानता था कि अगर तू उसे ,देखने जाता ता बिला शक मुक्ते उसके पास पाता १ अल्लाह फिर कहेगा-'ऐ आदमी के बटे ! मैंने तुकसे खाना मांगा था श्रीर तुने सुमे खाना नहीं दिया था.' आदमी जवाब देगा---'ये मेरं अस्लाइ! तू ता सारी दुनिया का मालिक है मैं तुमे साना कैसे दे सकता था ?' अल्लाह कहेगा-'क्या तू यह नहीं जानता था कि मेरे फुलां बन्दे ने तुमसे खाना मांगा या और तुने उसे खाना नहीं दिया था ? क्या तू यह नहीं जानता था कि अगर तू उसे खाना देता ता विला शक वह खाना मुमे पहुंचता ?' अल्लाह फिर कहे।।-- 'ऐ आद्मी के बटे ! मैंने तुमसे पानी मांगा था श्रीर तूने मुमे पानी पीन का नहीं दिया.' श्रादमी जवाब देगा -'ऐ मेर श्रल्लाह ! तू तो सारा दुनिया का मालिक है मैं तुमे पानी कैसे दे सकता था ?' अल्लाह कहेगा—'मेरे फ्लां बन्दे ने तुक से पानी मांगा था और तून उसे पानी नहीं दिया. बिलाशक अगर तू उसे पानी पीन का देता ता वह पानी मुक्ते पहुँचता'."

-अबुदुरैरा, मुसलिम.

गुह्न्मद साहब ने कहा:—"नेक विचार ही अच्छी इवादत हैं." —अबुदुरैरा, अबुदाऊद: अहमद محدد ماحب کی کچھ حدیثیں

متعمد صاحب نے کہا :۔۔۔ در سب صفاری (پرائی) الله کا عامی اور اِس کنیے میں اللہ کو سب سے زیادہ پیارا وہ ہے اللہ کے اِس کنیے کے ساتھ بھائی کرتا ہے ۔ ''

- أنس أور عبدالله عيهتي .

معمد صاحب نے کہا۔۔''اُے ابرذر اِ کسی بھی ٹیک کام حقارت کی نگاہ سے نے دیکھر چاھے وہ اپنے کسی بھائی سے کبول سے کر برانا ھی کیوں نے ھو ۔''

-أبوذر بخارق مسام ترمذي

مصد صاحب نے کہا: سبھوکوں کو کھانا کھائو' بیماروں کو کھنے جاؤ اور غلاموں اور قیدیوں کو آزاد کرو ۔''

-ابر مرسئ بخارى: ابرداؤد.

محمد صاحب نے کہا: - "دیامت کے دیں اللہ کہ کا- اے آدمی بيات اسين بيمارنها اور تو مجه ديكهنا نهين آيا ، أدمي جواب ے کا۔'اے میرے اللہ اِ تو تو ساری دنیا کا مالک ہے. میں تجھے عهنے دیسے آسکتا تھا ؟ * الله دیے گا- دیا تجھے یہ مملوم نہیں دہ مہرے بدوں میں سے نقل بندہ بیمار تھا اور تو اُسے دیکھنے هي گيا ﴾ كيا نو يه نهيل جانتا تها نه اگر تو اسه ديكنے جاتا بلاتک مجهے اُس کے پاس یانا ﴿ " الله بهر کہے گا۔ اُے می کے بیٹے ! میں نے نجھ سے کھانا مائگا تھا اور تونے مجھے نا نہیں دیا تھا ، اُ اُدمی جواب دے کا . اُے میرے اللہ ! نوساري دنيا كا مالك هـ -ين نجه فانا ديسه ديه سكتا و الله كيم كا- أنيا نويه نهيل جانتا نها كم مهرم فالي المع نے تنجھ سے کھانا مانگا نہا اور بوئے اُسے دھانا نہھی دیا تھا ؟ ا تو يم نهيل جانبًا نها كه أكر تو أس كيانا دينًا تو بالشك ولا نا مجهے يهنچنا ﴿ الله يهر كهاكا - الم كے بيتے! ہی نے نبچھ سے پائی مانگا تھا اور ترقے صحبے چائی چھنے کو یں دیا ، آدسی جواب دے کا۔ اے مهرے الله تو تو ساری يا كا مالك هم مين نجه يائي كيسم در سكتا تها 9 الله م ٹا۔ میرے دال بدے نے نجھ سے یائی مانکا تھا اور تونے ے پانی نہیں دیا ، بالتک ائر تو اُسے پانی پیلے کو دیتا تو رائى مجهے پہنچتا ،''

--- أبو هريرة مسلم .

سحد ماحب ہے دہا نیک رچار ھی اچھی عبادت ں ،''

--- ابو هريره ابو داؤد: احمد .

محمد صلحب نے کہا:۔۔"اگر موسی کو یہ معلوم عو جائے که الله اس کے گلامیں کی کیا سزا دے کا تو کوئی مومن جنت كى أشا نع ركيكا؛ اور اكر كافر كو يه معلوم هوجائه كه الله كتنا رحهم ہے تو کوئی کافر جنت سے نا امید نہیں ہوگا . '

-- أبو هريرة بخاري: مسلم .

سانرادک مجیب رضوی

सुर्म्मद् साहव ने कहा:-- "अगर मोमिन को यह मासूम हो जाय कि अल्लाह उसके गुनाहों की क्या सजा देगा ता कोई मामिन जलन की आशान रखेगा; और अगर काफिर को यह माल्म हो जाय कि चल्लाह कितना रहीम है तो कोई काफिर जन्नत से नाउम्मीद नहीं होगा."

—अबुहुरैगा, बुग्नारी: मुसलिम.

—श्रनुवादक मुजीव रिजवी

आवारा शायर !

أواره شاعر!

هرى على أكبر آمبررى

बाबू साहियान, प्रणाम ! श्ररे ! श्राप लोग खामाश क्यों है ? प्रणाम का अर्थ नहीं जानते ? जिस जबान की हमारी हुकूमत न सरकारी जबान बनाया है, उसे जानना तो हर भारती का फर्ज़ है. खेर न जाना न सही, लाखों में आप

श्री अली अकबर आम्यूरी

दोनों के नम्बर शामिल हो गये तो क्या हो गया ?

मुमे देखा, अंग्रेजी, बंगला, मराठी, गुजराती, सिन्धी, उर्दू, कारसी, हि दी यह सभी जवानें जानता हूँ. मगर किसी भी जवान का "दिप्लामा हाल्डा" (Diploma-holder) नहीं हूँ. वैसे ही एक एक करके सीख़ ली थी. इन्तहा यह कि उद् का शायर भी हूँ. 'जारा' मलीहाबादी नहीं, 'मखदूम' मुद्दी उद्दान भी नती और 'अल्ताक' मशहदी ता हूँ ही नहीं ब स्क एक मामूली शायर हूं. स । अती कारागरी भी जानता हूँ. हुन तमाम फन्रून के जानन के वावजूद भी आज सुबह सं भूखा हूँ, अरं । आप लाग चौं क क्या गरं ? इमालयं कि मैं आप सं कुछ मांगूँगा ? इतमीनान राख्ये साहवान, मैं आप से कुछ भी नहीं मांग्गा.

श्राज इतवार है. शहर की लगभग सभी दूकानें बन्द हैं. छुट्टी जा है ना ? और मैंन भी अपने पेट को छुट्टी दे रक्ता है. आप लाग पाक में शायद तकरीह के लिये आये हैं. में भी इसी गरज से आया हूँ. आप लागों को इस जगह बैठे देखकर ख्याल हुन्ना चला कुछ देर बाता से दल बहला लें. जान पहचान नहीं ता क्या हुआ ? अपना तआह के आप स्तद् करा लेंगे. यानी कि अदीनों की जवान में अपनी डफली आप खुद बजा लेंगे. अरे! आप लाग इसते हैं. हँसिये साहब, खब हँसिये, मुक्ते उसकी परवाह नहीं. शायद

بابو صاحبان ورنام أ أرد أ آپ لوگ خاموش كيون هير ؟ " یرنام کا اُرتھ نہیں جانتے ؟ جس زبان کو هماری حکومت لے سُرُكُرُى زبان بناياً هـ أح جالنا تو هر بهارتى كا فرض هـ . خير نہ جانو سہی الاکھوں میں آپ دونوں کے نمبر شامل ہوگئے تو

مجه دیکهو' انگریزی' بنکلا' مراتهی' گجراتی' سندهی' أردوا فارسى عندى يه سبهى زبانين جانتا هون . مكر كسى بھی زبان کا ''تیلوس هولتر'' (Diploma-holder) نہیں هوں . ویسے هی ایک ایک کرکے سیکھ لی تھی ، انتہا یه که أردو كا شاءر بهي هون ، "جوش" مليس أبادي فهين" "مخدوم" مصر الدين بهي نبين اور الطاف مشهدي تو هن هي نبين بلكه آيك معمولي شاعر هول ، صنعتى كاربكرى بهي جانتا هول ، اِن تمام فنہن کے جاننے کے ہارجود بھی آج صدح سے بھوکھا ھوں. ارے ا آپ لوگ چونک کیوں گئے لا اِس لام که میں آپ سے كچه مانكونكا ؟ اطمينان ركهنّه صاحبان مين أب سے كچه بهى نهیں ماکونگا ،

آب اِترار هے ، شہر کی لگ بھگ سبھی درکانیں بند ھیں ، چہتی جو فے نا ؟ اور میں نے بھی اپنے پیٹ و چہتی دے رکھ ھے ۔ آپ لوگ اِس بارک میں شاید تعریم کے لیے آئے ھیں . میں بھی اِسی غرض سے آیا ھوں . آپ لوگوں کو اِس جكه بيته ديكهكر خيال هوا. چلو كچه دير باترن سے دل بهالهن. جان پہنچان نہیں تو نیا ہوا ؟ اپنا تعارف آپ خود کرالیں کے یعنی کہ ادیبوں کی زبان میں اپنی ڈیلی آپ حود بجا لینکے، ارے آ آپ لُرگ منسلے میں منسلے ماحبُ ، خرب منسلے، مجھے اُس کی پرواہ نہیں، شاید आप लोग मुके नीम पागल समकते हैं. पूरा पागत ही समिने में आजिर शायर जो ठहरा.

हूँ! मैं अपना तआर्डफ कराना तो भूत ही गया. यों ही एंडी बेंडी बकता जा रहा हूँ. मैं एक शरीफ खान्दान का चरमो-चिरारा हूँ. देहलो मेरा जन्म-भू मे है, यानी कि जाये पैदाइशः जब से होश संभाला, अपने आपको आजादी का रसिया पाया. सन् 1917 ई० से पहले मेरे बलवले इतन जवान ये कि कुछ पूछो नहीं. मैंने इस्ले आजादी में जाँ-तांड कोशिश की. इस सिलसिले में मुक्ते जेल भी मेजा गया. जेल में कहती पीसते-पीसते साहल हाथों में छाले पह गये और

में चक्की पीसते-पीसते साहब, हाथों में झाले पड़ गये श्रीर जो "सुहष्यब लांग" मेरे साथ जेल भेजे गये, उन्हें जेल में भी रेलवे कम्पार्टमेंट की तरह ''क्सरें छास" मिली श्रीर भारत आजाद होने के बाद उन्हें जागीरें भी दी गईं. लेकिन मैं ? एक मामुली इनसान जो ठहरा. मेरी बिसात ही क्या ?

फिर भी मुमे इतनी ख़शी तो जरूर है कि कुछ न सही, हिन्दुस्तान आजाद तो हो गया. मैं अपनी फ़िक करूँ ही क्यों ? मैं दिन में एक-दा वक्षत के लिये भूखा भी रहूं तो क्या बिगड़ गया जब कि अनिगनत इन्सान कुट-गथ की "पाक फिज़ा" में दिन भर भूखे पड़े रहते हैं. कभी कहीं से कुछ मिल गया तो खा लेते हैं. उनका ऐसा करना साइंस की रू से ठीक ही ता है. पेट के लिये प्यादा खाना मेदे की ख्राबी का बाइस बनता है और……

क्या कहा १ मेरा पेशा १ साहब ! यां ही दर बदर की ठोकरें खाता फिरता हूँ, जैसे आजकल के मैजुएट और डबल एम. ए. नौकरी की तलाश में मारे-मारे फिरते हैं. उन्हें नौकरी देगा भी कौन साहब १ वह ता नौकरी में नवाबगीरी करना चाहते हैं. "खुद करदा रा इलाजे नेस्त." मैं ठहरा एक आवारा शायर. यों तो आजकल के अदीब और शायर में बहुतेरे अदब-फ्रोश हाते हैं मगर मेरी खुददारी मुक्ते यह बनने नहीं देती. अगर मैं अदब-फ्रोश बनना भी चाहूँ तो कोई मेरी रचनायें अपने परचे में शाया नहीं करेगा. क्यांकि मेरी शायरी खुशक है जिसमें रंगीनी नहीं, उर्यानियत नहीं और ऐसी चीज नहीं जिसे हमारे पाठक चाहते हैं. आखिर एक मामुली शायर जो ठहरा. और इसके आलवा

आँ प्यह रेडियो पर कौनसा रेकार्ड बज रहा है ? 'श्राजा मेरे बाल्मा तेरा इन्तजार है." न जाने हमारे फिल्मी शायर ऐसे गाने क्यों लिखते हैं ? फिर भी इसमें उन बेचारों का क्या क़सूर है. फिल्मी ना-खुदाओं की मर्जी है. वह जैसा चाहते हैं फिल्मी शायर बसी तरह लिखते हैं. यही क्या कम है कि उर्यों और फोश फिल्में बनाने में हमारी मीजूदा फिल्म इन्डस्ट्री दूसरे मुमालिक से बाजी लेगई है. हमारी हुकूमत को खुद भी इस बात का फक् है कि ऐन्टर-देनमेन्ट टेक्स (entertainment tax) लाखों के

آپ اوک مجھے نیم پاگل سنجھتے ھیں، پورا پاگل ھی سمجھتے اخر شاء جو اُھی۔ا ،

هوں ا میں اپنا تعارف کرانا تو بھرل هی گھا ۔ یوں عی اینتی بیدتی بکتا حارها هوں ۔ میں ایک شریف خاندان کا چشم و چراغ هوں ۔ دعلی میدی جند بھومی هے عنی که جائے پیدائش . جب سے عوش سبھالا اپنے آپ کو آزادی کا رسیا پایا اس 1947ع سے پہلے مهرے ولولے آرانے جوان قصے که کھے ورچوو نہیں ، میں نے حصول آزادی بین جان توز کوشش کی ، اِس سلسلے میں مجھے جیل بھی بھیجا گیا . جیل میں چکی پیستے سلسلے میں مجھے جیل بھی بھیجا گیا . جیل میں چکی پیستے میں ماتھوں میں چھالے پرگئے اور جو ''مہذب لوگ' مھرے سا ھ جیل بھیجے گئے' آنھیں جیل میں بھی ریلوے کھارٹیمنٹ کی طرح ''فسٹ کالس' ملی اور بھات آزاد ہوئے کھارٹیمنٹ کی طرح ''فسٹ کالس' ملی اور بھات آزاد ہوئے کے بعد آنھیں جائے میں بھی ریلوے کے بعد آنھیں جائے میں بھی ریلوے کے بعد آنھیں جائے میں بھی دیا گھیں جو اُنھیں جائے ہیں میں اور بھات آزاد ہوئے اُنسان جو ثبہرا ، میری بساط ھی کھا اُن

پھر بھی مجھے اِننی خوشی تو ضرور ہے کہ کچھ نہ سھی اُ مندستان آواد تو ھوگیا ، میں اپنی فکر کروں ھی کیوں آ میں دن میں ایک دو ویت کے انے بھوکھا بھی رسوں تو کیا یکو گیا جب کہ انگذت اِنسان نیٹ پانھ کی ''پاک فضا'' میں دن بھر بھوکھے پڑے رسانے میں ، کبھی کھیں سے کنچھ مل گیا تو کھالیتے ھیں ، اُن کا ایسا کرنا سائنس کی روسے تھیک ھی تو ہے ، پیٹ کے اللے زیادہ کھانا معدے کی خوابی کا باعث بنتا ہے اور...

کیا کہا ہ میرا پیشہ ہ صاحب ا یوں هی در بدر کی ٹھرکریں دھان پھرتا ہوں جینے آجکل کے گریجوئیٹ اور قابل ایم، اے ، نوکری کی تلاش میں مارے مارے پھرتے هیں ، انہیں نوکری دیگا دیں نون صاحب ہ وہ تو نوکری میں ٹواب گیری درنا چاہتے میں ، حود کردہ را علاجے نیست، میں ٹھھرا ایک آوارہ شاعر یوں تو آجکل کے ادیب اور شاعر میں بہتیرے ادب فاوش ہوتے هیں محر میری حوداری مجھے یہ بہتیرے ادب فاوش ہوتے هیں محر میری حوداری مجھے یہ کوئی میری رچنانیں اپنے پرچے میں شائع نہیں کریگا ، کیونکہ میری شاعری خشک ہے جس میں رناینی نہیں عریانیت میں مارے پاٹھک چاہتے هیں ، نہیں اور ایسی چنز نہیں جسے عمارے پاٹھک چاہتے هیں ، نہیں اور ایسی چنز نہیں جسے عمارے پاٹھک چاہتے هیں ،

آنی، ریدیو پر کونسا ریکاری بیج رها هے ؟ "آجا میرے بالما نیرا انتظار هے " نت جانے همارے فلمی شاعر أیسے گائے کیوں لکھتے هیں بھی پا تصور لکھتے هیں اور خیسا چاهتے هیں فلمی شاعر أسی طرح لکھتے هیں بھی کیا کم هے که عرباں اور فتحش فلمیں بنائے میں هماری موجودة فلم انتسازی دوسرے ممالک سے بازی لے گئی هے هماری حکومت کو خود بھی ایس بات کا فتخر هے که هماری حکومت کو خود بھی ایس بات کا فتخر هے که هماری حکومت کو خود بھی ایس بات کا فتخر هے که ایکاری دامیں تیکس (entertainment tax) لاہوں کے

हिसाब में जमा हो जाता है. मैं पूछता हूँ क्या रूप और चीन में फ़िल्मी सनचत से इतनी आमदनी हाती है ? खूब अकड़ते हैं अपनी सयामी पालिसी पर

क्या कहा ? मैं बड़ा दिलचस्प आदभी हूँ ? शुक्रिया साहब, बेबकुफ कहने के बजाय दिलचस्प आद्मी का खिताब दिया कोई बात नहीं अगर आप मुक्ते बेबकुफ भी कह देते तो मेरा विगड़ता ही क्या ? विगड़ने की तो खूब रही, अञ्बल तो मुक्ते युस्सा ही नहीं आता. आखिर किसी पर गुस्सा कर के भी क्या कायदा ? गस्सा तो वह लोग करते हैं।जनके पास धन-दौलत की इफ्रात है, जिनके मातहत कई नौकर-चाकर काम करते हैं और जिनकी तोंदें बनस्ति षी से बने लजीज खानों से मोटी रहती हैं. न मेरे पास दौलत है, न नौकर श्रीर न ही मैं बनस्पति घी से बनी काई चीज खाता हूँ. बनस्पति घी-सुना है इससे बनी चीज बहुत ही अच्छी और बहुत हा मजेदार हाती है. आखिर हमारी सरकार से सर्टा फ्रिकेट हासिल की हुई चीज जा ठहरी ! बक्रील कसे यह और बात है कि 'बनस्पति घी के इस्तेनाल सं तासरी पुरत में श्रीलाद अंशी पैदा होने लगती है. तीसरी पुश्त-जहन्तुम में जाये, हमें क्या श्रीर हमारी सरकार का क्या।

श्रारे, श्राप लोग उठने लगे ? शायद चाय पीने का बक्त श्रा गया. मैं चाय पीने का श्रादी नहीं हूँ साहब. हूँ ! चाय में रक्ता ही क्या है ? श्रार एक प्याली चाय के पैस रहे तो एक रूखी सूखी राटी खा लेता हूँ. चवन्नी रही तो एक वक्त का खाना मिल जाता है. चाहे श्राध-पेट ही क्यों न हो. इस बक्त तो जेब बिलकुल "एम्पटी" (empty) है. न श्राज रूखी सूखी रोटी ही मिलेगी श्रीर न ही श्राधापेट खाना!

एं, यह क्या १ अठन्ती ! मुक्ते माफ की जिये माहब. में रारीब फरूर हूँ मगर भिखारी नहीं. आवारा शायर हूँ, बेकस हूँ, मेरा दुनिया में कोई नहीं, दर बदर की ठोकरें खाता फिरता हूँ, फिर भी खुदार हूँ. अठन्ती देकर आप शायद मेरी खुदारी को ठेस पहुँचाना चाहते हैं. आप इस अठन्ती के बत्तीस पाब आने बत्तीस भिखारियों में बाँट दी जिये साहब.

श्रच्छा साहब, तसलीम ! श्रापकी निवाजिश का शुक्रिया. حساب میں جسم هو جاتا ہے . میں پوچھتا هوں کیا روس اور چین میں نلس صنعت سے اِتنی آمدنی هونی ہے ؟ خوب اکرتے هیں اپنی سیاسی پالیسی بر.....

کھا کہا ؟ میں ہڑا دلچسپ آدمی ہوں ؟ شکریہ صاحب'
بیوتوف کہنے کے بجائے دلچسپ آدمی کا خطاب دیا ۔ کوئی
بات ڈیفی ۔ اگر آپ مجھے بیوقرف بھی کو دیتے تو میرا بکرتا
ھی کیا ؟ بکڑئے کی تو خوب رھی' آرل تو مجھے غصہ ھی
نہیں آتا ۔ آخر کسی پر غصہ کرکے بھی کیا فائدہ ؟ غصہ تو وہ
ماتحت کئی ٹوکر چاکر کام کرتے ھیں اور جن کی توندیں
ماتحت کئی ٹوکر چاکر کام کرتے ھیں اور جن کی توندیں
بیسیتی گھی سے بنے لذین کھائیں سے موٹی رھتی ھیں ، نه
میرے پاس دولت ہے' نه نوکر اور نه ھی میں بلسیتی گھی
سے بنی کوئی چیز کھاتا ھیں ، بنسیتی گھی—سٹا ہے اِس سے
میرے پاس دولت ھی اُدہ ہوں کیا ہور ہوت ھی میں بلسیتی گھی
ھماری سرکار سے سرتینکیٹ حاصل کی ھوئی چیز جو تھہری !
بنی چیز بہت ھی اُدہ سرتینکیٹ حاصل کی ھوئی چیز جو تھہری !
بیسی بیدا ور بات ہے کہ ''بنسیتی گھی کے استمال سے تیسبی
بشت میں اولاد اندھی پیدا ھوئے لکتی ہے'' تیسری پشت—

ارے' آپ لوگ اُٹھنے لکے اُ شاہد چائے پینے کا وقت آگیا .
میں چائے پینے کا عادی نہیں ہوں صاحب ، ہوں اُ چائے میں
رکھا ھی کیا ہے آ اگر ایک پیالی چائے کے پیسے رہے تو ایک
ررکھی سوکھی ررتی کھا لیتا ہوں. چوئی رھی تو ایک وقت کا
کھانا مل جاتا ہے' چاہے اُدھ پیٹ ھی کیوں نہ ہو . اِس وقت
نو جیب بالکل ''ایمیٹی'' (empty) ہے ، نہ آج ررکھی
سوکھی روتی ھی ملیکی اور نہ ھی آدھ پیٹ کھانا اُ

ایں' یہ کیا 9 اٹھنی! مجھے معات کیجئے صاحب ، میں غریب ضرور ھوں' مکر بھکاری ٹھیں۔ آوارہ شاعر ھوں' بھکس ھوں' میرا دنیا میں کوئی نہیں' دریدر کی تھوکریں کیانا پھرتا آھوں' پھر بھی خودارھوں ، اٹھنی دیکر آپ شاید میری خوداری کو تھیس پھرنجانا چیھتے ھیں ، آپ اِس اُٹنی کے ہتیس پاؤ اُنے بتیس بھلایوں میں باتف دیجئے صاحب ،

أجها صاحب تسلهم ! آبكي توازش كا شكريه .

भी ब्लेडिमिर याकोबलेब

हिन्दुस्तान के द्रिया एस देश की भूमि को धोते हुए जीर वहाँ के उपजाक भैदानों में हर साल नई जान हालते हुए आह हिन्द महासागर में जनन्त जल ऊँडेलते रहते है. हस के बड़े-बड़े द्रिया बीच हस से जन्म लेकर दिन्सन के गरम समन्द्रों में या उत्तर के बर्शीले महासागर में अपने को साली करते रहते हैं.

हस के द्रिया चारों तरफ को बहते हैं और कीन जाने कहाँ भारत के गंगाजल की एक बूँद हस के बोल्गा (Volga) या यैनिस्सी (Yenissi) नदी की एक बूँद के साथ भिलकर उस बड़ी धार में मिल जाती है जो सब महा-द्वीपों के किनारों को धाती रहती है और जिसकी तरी सारी द्रानया को जीवन देती है.

इन दें नों देशों की अलग अलग कलचरें बेहद शानदार और मालामाल हैं. उनमें से हर एक की बाबत बहुत कुछ कहा जा सकता है. उनके बाहरी रंग रूप अलग-अलग हैं. पर यह अलग-अलग क्रौमी कलचरें मिलकर एक दूसरे को मालामाल करती हैं और एक दूसरे की कमी का पूरा करती हैं. इसके बाद भारत की कलचर और रूस की कलचर दोनों अपने सुन्दर चमकते हुए रंगों को एक दूसरे के अन्दर ताने बाने की तरह मिलाकर एक ऐसा सुन्दर गुल्दस्ता बना देनी हैं जिसे हम सारी इनसानी कीम के लिये एक मिली-जुली कलचर यानी इनसानी कलचर या मानत्र संस्कृति कह सकते हैं.

नेहरू ने अपनी किताब "हिसकवरी ऑफ इन्हिया" में लिखा है—"पुराने जमाने में हिन्दुस्तान का यही तरीक़ा रहा है कि वह वृसरी कलचरों का स्वागत करके उन्हें अपने में मिलाता रहा है. आज इसकी और भी प्यादा जरूरत है. क्योंकि कल हम दुनिया भर की उस एकता की तरफ बढ़ने वाले हैं जहाँ पहुँच कर सब अलग-अलग राष्ट्रों की अलग-अलग कलचरें सारी इनसानी क़ौम की एक अन्तर्राष्ट्रीय कलचर में मिलकर एक हो जावेंगी. इसलिये जरूरी है कि हमें जहाँ से भी अच्छी बातें, इस्म, जानकारी, दोस्ती और सहयांग मिल सके इम उसका स्वागत करें और जो बढ़े-बढ़े काम सारी इनसानी क़ौम के भले के हैं उनमें हम सबके साथ मिलकर छोशिश करें."

شرى وليتيمهر ياكووليو

ھندستان کے دریا اُس دیش کی بھومی کو دھوتے ھوئے اور ماں کے اُپنجاؤ میدانوں میں ھو سال نگی جان ڈالتے ھوئے ہوا کہ ھند مہاساگر میں اُننت جل اُنڈیلتے رہتے ہیں ۔ روس کے بھی دریا بیچ روس سے جنم لیکر دکھن کے گرم سمندروں یں یا اُتر کے بونیلے مہاساگر میں اُپنے کو خالی کرتے رہتے ہیں۔

روس کے دریا چاروں طرف کو بہتے ھیں اور کون جائے ہاں بھارت کے گنگا جل کی ایک ہوئد روس کے وواگا (Volga) ایینسی (Yenisse) ندی کی ایک ہوئد کے ساتھ ملکر س بڑی دھار میں مل جاتی ھو جو سب مہادیہیں کے کناروں و دھرتی رھتی ھے اور جس کی تری ساری دئیا کو جیروں بتی ھے ،

ان دونوں دیشوں کی انگ الگ کلچویں پے حد اندار اور مالا مال بھیں ۔ اُن میں سے ہو ایک کی بابت بہت چھ کہا جاسکتا ہے ۔ اُن کے باھری رنگ روپ الگ الگ ہیں۔ ربیہ انگ الگ قومی کلچویں مارکر ایک دسوے کو مالا مال رتی بھیں اور ایک دوسوے کی کمی کو پوزا کرتی بھیں ، اِس نے بعد بہارت کی کلچر اور روس کی کلچر دونوں اپنے سندر ایک دوسوے کے اندر تانے بائے کی طوح دیکتے ہوئے رنگوں کو ایک دوسوے کے اندر تانے بائے کی طوح لار ایک ایسا سندر گلیستہ بنادیتی بھیں جیسے ہم ساری نسانی قوم کے لئے ایک ملی جلی کلچر یعنی اِنسانی کلچر مائو سنسکرتی کے سکتے بھیں ۔

نہرو نے اپنی کتاب ''تسکوری آف اندیا'' میں لکھا ہے۔

'پرانے زمانے میں هندستان کا بھی طریقہ رہا ہے کہ وہ دوسوی انحجروں کا سواگت کرکے آذبیں اپنے میں ملاتا رہا ہے ۔ آج اِس اور بھی زیادہ ضرورت ہے ۔ کیونکہ کل ہم دنیا بھر کی اُس کتا کی طرف بڑھنے والے ہیں جہاں پہونچ کر سب الگ الگ شتروں کی الگ الگ کلچریں ساری اِنسانی قوم کی ایک شترواشڈریه کلچو میں ملکو ایک ہوجاوینگی۔ اِس لئے ضروری کہ ہمیں جہاں سے بھی اچھی باتیں' علم - جانکاری - دوستی ور سہیوگ مل سکے ہم اُس کا سواگت کریں اور جو بڑے بڑے بر ساری اِنسانی قوم کے بھلے کے ہیں اُن میں ہم سب کے ایک میں اُن میں ہم سب کے ایک ایک میں اُن میں ہم سب کے ایک ایک ایک ایک اُن میں ہم سب کے ایک ایک ایک اُن میں ہم سب کے ایک ایک اُن میں ہم سب کے ایک ایک اُن میں ہم سب کے ایک اُن میں اُن میں ہم سب کے ایک اُن میں اُن میں ہم سب کے ایک اُن میں گوشھی کریں ۔''

Park to the state

भारत के प्रधान मन्त्री की इस किताब का रूसी तर्जुमा इस साल निकल चुका है. रूस के लोगों ने इन वाक्यों को पढ़ा. हर रूसी नेहरू की इस बात के साथ सहमत है. सो-वियत रूस के लोगों के दिल और दिमाग और भारत के लोगों के दिल और दिमाग इस बात के लिये पूरी तरह खुले हुए हैं कि हम भाई-भाई की तरह एक दूसरे से विचारों और रूहानी सच्चाइयों का लेन-देन करें.

कैनिन ने हमें यह तालीम दी थी कि हक्तीकी सोशलिस्ट कलवर की तामीर उस समय तक नहीं की जा सकती जब तक कि हम उस सारी कहानी दौलत से अपने का मालामाल न कर लें जो इनसानी क्षीम ने आज तक पैदा की है. इसलिये हम क्षीमों क्षीमों के बीच बड़े से बड़े पैमाने पर कलवरी लेन देन के हक्तमें हैं. हमें यह दिखाई दे रहा है कि इससे न केवल अलग अलग देशों और अलग-अलग क्षीमों की अपनी-अपनी राष्ट्रीय संस्कृतियाँ ही और अधिक मालामाल होंगी, बल्कि हम एक दूसरे को भी अधिक अच्छी तरह समक सकेंगे और देशों देशों के बीच दोस्ती बढ़ सकेगी.

सोवियत यूनियन और भारत के बीच मित्रता और हर तरह के सहयोग के सम्बन्ध कायम हो चुके हैं. हमारे कल-चरी नाते बढ़ते जा रहे हैं. हमारा एक दूसरे के साथ सम्बंध केवल जबानी बातों में ही नहीं अमली कामों में भी गहरा और मजबूत होता जा रहा है.

इस साल जनवरी में भारत सरकार की दावत पर भारत पहुँच कर मुभे बड़ी खुशी हुई थी. हमारे डैलीगेशन के नेता रूसी शायर ऐलेक्सी सुरकाव (Alexi Surkov) थे. वह एक कलचरल डैलीगेशन था. हम इस पक्के विश्वास को लेकर रूस वापस आये कि भारत के लोगों के दिल सोवियत रूस के लोगों के साथ मित्रता के भावों से भरे हुए हैं. भारत के लोग रूस के लोगों के साथ कलचरी सहयोग को बदाना और अधिक मजबूत करना चाहते हैं. 'वोक्स' नामी रूसी संस्था के एक काम करने वाले की हैसियत से सुमे यहाँ आकर अपने साथियों से बार-बार यह धिक्कार सुननी पड़ी कि हमारी संस्था भारत और रूस के लोगों के बीच आपसी मेल जोल और कलचरी लेन-देन की बढ़ती हुई माँगों को पूरा करने के लिये काफी काम नहीं कर रही है.

एक हिन्दुस्तानी कहावत है कि हजार बार सुनने से एक बार देखना अधिक अच्छा है. तजरबा इस बात को साबित करता है कि एक दूसरे को समम्मने का और विचारों के लेन-देन का सबसे अच्छा तरीक्षा एक दूसरे से मिलना है. भारतबासियों की जबरदस्त कलचरी दौलत को और हनकी अमूल्य और प्राचीन पैत्रिक रूहानी सम्पत्ति को हमने अपनी आँखों से देखा, अपने देश बापस आकर हमने

بھارت کے پردھان منتری کی اِس کتاب کا روسی توجمه اِس سال نکل چکا ہے ۔ روس نے وگوں نے اِن وانیوں کو پڑھا ،

ار روسی نہور کی اِس بات کے ساتھ سہمت ہے ، سوویت روس کے کو گوس کے دل اور دماغ کے لوگوں کے دل اور دماغ اس بات کے لئے پوری طرح کیلے ہوئے میں کہ ہم بہائی بھائی ای طرح ایک دوسرے سے وچاروں اور روحائی سجھائیوں کا این دیس کریں ،

لیئن لے همیں یہ تعلیم دی تھی کہ حقیقی سشلست لیچر کی تعمیر آس سے تک نہیں کی جاستی جب تک ہم آس ساری روحانی دولت سے آپ کو مالا مال نہ کولیں ہو اِنسانی قوم نے آپ نک پیدا کی ہے، اس لئے هم قوموں وموں کے بیچ بڑے سے بڑے پیمانے پر کلحجری لین دین کے حق میں هیں، همیں یہ دنجائی درے رها ہے که اِس سے نه یہل ایک الگ دیشوں اور انگ انگ قو وں کی اپنی اپنی ایش اور انگ انگ قو وں کی اپنی اپنی ایش میں موروے کو بھی ادھک اچھی طرح سمجھ سمیں گے اور دیشوں دیشوں کے بیچ دوستی بڑھ سمیگی ،

سوویت یونین اور بھارت کے بیچ مترنا اور ھر طرح کے بہیچکے ھیں ، ھمارے کلچری ناتے بہیوگ کے سمبلدھ قائم ھوچکے ھیں ، ھمارے کلچری ناتے بقتے جارہے ھیں ، ھمارا ایک دوسرے کے ساتھ سمبندھ کیول بانی باتوں میں بھی گہرا اور غبوط ھوتا جارھا ہے ،

اِس سال جنوری میں بھارت سرکار کی دعوت پر بھارت ہونیج کر مجھے ہتی خوشی ہوئی تھی ، همارے دیلیکیشن کے بنا روسی شاعر ابلیکسٹی سرکور (Alexi Surkov) بھے ، ایک کلچرل دیلیکیشن تھا ، هم اِس پیم وشواس کو لیکر وس واپس آنے که بھارت کے لوگوں کے دل سوریت روس کے لوگوں کے سانع مترتا کے بھاؤں سے بھرے ہوئے ہیں بھارت کے لوگ روس کے کوں کے ساتھ مترتا کے بھاؤں سے بھرے ہوئے ہیں بھارت کے لوگ روس کے بساتھ کاچری سیمیوگ کو بترهانا اور ادھک غیرط کرنا چاہتے ہیں، واکس (Voks) نامی روسیسنستی کے نیا کام کرنے والے کی حیثیت سے مجھے یہاں آئر اپنے سانتھوں سے ابرار یہ دھکار ساندی چو کھ ہاری شاستھا بھارت اور روس کے لوگوں کے بیچ ایسی میل جول اور کلچری لین دین کی بترهتی نوئی مانگوں کو پورا کرنے کے لئے کانی کام نویس کر رھی گے ،

ایک هندستائی کہارت سے که هزار بار سننے سے ایک بار یکنا آدھک اچھا ہے۔ تجربہ اس بات کو ثابت کرتا ہے که یک دوسرے کو سمجھنے کا اور وچاروں کے لین دین کا سب سے چھا طریقہ ایک دوسرے سے ملنا ہے، بھارت واسمیں کی وہردست لیجری دولت کو اور ان کی امولیہ اور پراچھن پیٹرک روحانی سیتی کو اور ان کی امولیہ اور پراچھن پیٹرک روحانی سیتی کو هم نے اپنی انعھوں سے دیکھا، اپنے دیھی واپس آکو هم نے

अस्वारों में जलसों में, भारतीय जीवन की और अपने भारतीय दोस्तों की चरचा की. और इस इस बात की कोरीश कर रहे हैं कि इससे कहीं अधिक बढ़े पैमाने पर इमारे दोनों देशों की जबरदस्त कलचरें एक दूसरे से मिल-कर एक दूसरे को और अधिक मालामाल कर सकें.

सोवियत रूस के लोग बड़े प्यार के साथ मारत के कलचरी दूतों का स्वागत करते हैं. इस साल अभी तक अलग-अलग कलचरी काम करने वालों के अलावा उन्नीस हैलीगेशन भारत से सोवियत रूस था चुके हैं. इनमें भारत की पार्लीमेंट के भैम्बरों का हैलीगेशन, कई ट्रेड यूनियन हैलीगेशन, डाक्टरों का हैलीगेशन, अख़बार नवोसों का हैलीगेशन और साइंस वालों का हैलीगेशन सब शामिल हैं. जेनेवा में पेटमी शांक के शान्तिमय उपयोगों के बारे में साइंसदानों की जो कानफेंस हुई थी उसके चेयरभैन श्री ऐच. भाभा भारत के साइसदानों के हैल.गेशन के नेता थे.

उधर से भारत ने आठ हैलीगेशन इसी अर्से में सोवियत रूस से बुलाये. इनमें रूसी साइंसदानों का हैलीगेशन, कलवरी हैलीगेशन, डाक्टरों का हैलीगेशन और वकीलों का हैजीगेशन सब शामिल थे.

मास्को में हमें मालूम हुआ है कि रूस के महाकिष पुरिकन (Pushkin) की किवता 'जिंग्सी ज' (Gypsies) का आ डबस्यू आर. ऋषी ने हिन्दी भाषा में अनुवाद किया है और वह भारत में अप गया है. पुरिकन उन्नीसर्वी सदी का रूस का सब सं बड़ा किव था. रूसा जनता उसे सबसे अधिक चाहतां और पसन्द करती थी. अपने समय के रूस के हालात उसने बहुत ही चमकते हुए ढंग से अपनी किवताओं में बयान किये हैं. हमें इस बात की बड़ी खुशी है कि भारत के पढ़ने बाले भी पुरिकन की रचनाओं से बाकिक हा जायेगे.

भारतीय साहित्य श्रीर भारतीय कला के सुनहरे युग के सब से चमकते हुए तारे, जबरदस्त कलाकार और नाटक-कार महाकवि कालिदास के नाटक "शकुन्तला" का रूसी में अनुवाद हा चुका है और इसी साल रूस में शाया हो चुका है. कुष्णचन्द्र और मुल्कराज बानन्द की कहानियाँ श्रीर उनकी चुनी हुई रचनाएँ रूस में शाया हो चुकी हैं. उन्नीसवीं सदी का रूसी साईसदां आइ. पी. मिनायेव (I. P. Minayev) अपने समय में हिन्द्रस्तान और बरमा श्राया था. रूस के बहुत से विद्वानों का उसने हिन्द-स्तान के हालात बताये और हिन्दुस्तान की बाबत अधिक जानकारी हासिल करने का रूसियों में शौक पैदा किया. उसकी किताब "हिन्दुस्तान श्रीर बरमा के सफ्र का रोज-नामचा" रूस में पहली बार अब शाया हुआ है. रवीन्द्रनाथ देगार की कुछ चुनी हुई रचनात्र्यों की पहली जिल्द भी हसी भाषा में हाल में शाया हुई है. और जिल्दें निक्जने गली हैं.

خباروں میں' جلسوں میں' بھارتیہ جنون کی اور آپنے بھارتیہ دوستوں کی چرچا کی ، اور ہم اس بات کی کوشھی کو رہے میں کہ اِس سے کہیں ادعک ہوتے پیمانے پر ہمارے دونوں دیشوں کی زبردست کاچریں ایک دوسوے سے ملکر ایک دوسوے کو اور ادھک مالا مال کوسکیں ،

سوویت روس کے لوگ بڑے پیار کے ساتھ بھارت کے کامچری دوتوں کا سواگت کرتے ھیں ۔ اِس سال اُبھی نک الگ الگ کامچری کام کرنے والوں کے عالمود اُنیس کیلیکھٹن بھارت سے سوویت روس آچکے ھیں ۔ اِن میں بھارت کی پارلیمنٹ کے معبروں کا ڈیلیکیشن کئی ٹریڈ یونین ڈیلیکیشن ڈا ڈروں کا ڈیلیکیشن اخبار ڈویسوں کا ڈیلیکیشن اور ساننس والوں کا ڈیلیکیشن سب شامل ھیں ، جنیوا میں ایٹمی شکتی کے شائتی مئے اُپیوگوں کے بارے میں سائنس دانوں کی جو کافرینس ھوئی تھی اس کے اچیرمین شری آبھ ، بھابھا بھارت کے سائنس دانوں کی جو کافرینس موئیس کے ڈیلیکیشن کے ٹیکا تھے ، بھابھا بھارت کے سائنس دانوں کے ڈیلیکیشن کے ٹیکا تھے ،

اُدھر سے بھارت نے آئھ دیلیکیشن اِسی عرصہ میں سوویہ ت روس سے بھائے ۔ اِن میں روسی سائنس دانوں کا دیلیکیشن کا دیلیکیشن کا دیلیکیشن اور وکیلوں کا دیلیکیشن شامل تھے .

ماسکو میں همیں معلوم ، هے روس کے مها کوی پشکن (Pushkin) کی کویتا ''جہ سیز'' (Pushkin) کا شرق ذہلو ۔ آر ۔ رشی نے هادی بهاشا میں انواد کیا ہے اور وہ بهارت میں چہپ گیا ہے ۔ پشکن انیسویں صدی کا روس کا سب سے بڑا کوی تھا ، روسی جنتا آسے سب سے ادهک چاهتی اور پسند کرتی تنی ، اپنے سیئے کے روس کے حالات اُس نے بہت هی جہتے ہوئے دهنگ سے اپنی کویتاؤں میں بیان کئے هیں ، همیں اِس بات کی بڑی خوشی ہے که بهارت کے پڑهنے والے بهی بهشان کی رچناؤں سے وانف هو جائینگے ،

بھارنیہ ساھتیہ اور بھارتیہ کا کے سنہرے یک کے سب سے چمکتے ہوئے تارے' زہرست کاکار اور ناتک کار مہاکوی کالیداس کے ناتک ''شکنتا'' کا روسی میں انوواد ہو چکا ہے اور اِسی سال روس میں شائع ہو چکا ہے کرشن چندر اور ملک راج الند کی کہانیاں اور انکی چنی ہوئی رچنائیں روس میں شام ہو چکی ہیں انیسویں صدی کا روسی سائنسداں آئی، بی منابیہ (I. P. Minayev) اپنے سئے میں ہندستان اور برما آیا تھا . روس کے بہت سے ودوائیں کو اُس نے ہندستان کے حالات بتائے اور ہندستان کی بابت ادمک جان کاری حاصل کے خالات بتائے اور ہندستان کی بابت ادمک جان کاری حاصل اور برما کے سفر کا روزنامنچہ'' روس میں پہلی بار اب شائع ہوا اور برما کے سفر کا روزنامنچہ'' روس میں پہلی بار اب شائع ہوا اور برما کے سفر کا روزنامنچہ'' دوس میں پہلی بار اب شائع ہوا جد بھی روسی بیاشا میں حال میں شائع ہوئی ہے . اور جادیں خلنے والی ہیں .

روسی کار آے گراسیمرر (A. Gerasimov) حال میں بھارت کے تھے۔ آئیوں نے کچھ 'بھارتیہ چاتروں' تصویروں اور خاکوں کا آیک سنگرہ کتاب کی شکل میں نکالا ہے۔ وہ کتاب روس میں آئی که پہلی آیڈیشن روس میں آئی که پہلی آیڈیشن بالکل حتم ہو گئی اور آب نہیں سیکنڈ ھینڈ کتابوں کی دکائوں پر بھی دیکینے کو نہیں مل سکتی ۔

یہاں کی وہاں اور وہاں کی بہاں تماثشوں کے ہوئے سے بھی بہت ہڑا باندہ ہوا ہے ، جواہرال نہرو نے ماسکو میں جو بھاریہ دستکاریوں کی نمانھ کرائی یہ ہوا غفیب کا خیال تھا ، عزاروں ماسکونواسیوں نے اور ، سوویت روس کے دونے کونے سے آنے عونے الوارون الوكون لے أس شمائش كو ديكها اور بهارتهم طاور دست اراس کی ایک جیتنی جاگئی تصویر آن کے سامنے آگئی . اس سا على مين يائس هزار ضونے تھے ، بحیلے سل وعال بھارتیکہ چیزوں اور پتھر کی کیدائی کی چیزوں کی ایک تماثی موٹی تھی ۔ اُس نمائش کے بعد هدستانی چیزوں کی یہ سب سے ہوئی انمائش ہے جو ماسکو میں ہوئی گے ، ایک اور ندائش روس میں هوئی جسکا نام تها (ایهارت کی کلنچر اور ظا ۱۰۰ ایک عدستاني بهاشاؤل كے ساهيته كى نمائش موئى ، ماسكو كى يه سب نماشیں اُس سال بہت ھی کامیاب رھی ، اِن کے علاوہ روس کے اور بہت سے شہروں میں بھارت دی چیزوں نی نمانشیں ەرئىس-جىسە لىننى كراد (Leningrad) · أديسار Odessa) '(Cheliabinsk) چیلیا بینسک (Kuibyshev) کیربیشیر سرردارسک (Sverdlovsk) ایوانره (Ivanovo) كير (Kiev) لرؤر (Lvov)، تبايسي (Tbilisi) الله أنّا (Alma Ata) كرا كاندا (Karaganda) كارا كاندا ار (Petrozavodfik) پيٽرو زاؤردسک (Gomel) کومل (ناشقند بانو عشقاباد یدریوان (Yerevan) ریگا (Riga) 'تان' (Riga) وغيرة . إن سب نمائشوں كے لله هدائتیں سورئیت روس کے وہ آدمی دیتے تھے جو بھارت میں ھیں ، اور اُن کی ھدائیتوں کے عطابق اِن شہروں اور جاروں کی ساروجنک سنستھائیں وهاں کی لاجریریاں وهاں کی کلچری سوسائٹیاں اور وہاں کے ودیش سمبندھی محکمے اور خاص خاص آدمی إن تمانشون كا سارا سرانجام درتے تھے .

درسری طرف سووات روس کی ودیشوں کے سانھ کلتچری سبندھ کی سوسائٹی نے اِس سال ندیجے لکھی نمائشیں بھارت بھیجیں:

بیجیں:

''سووات روس کے کوڑا ملیں میں کلم کرنے والے مزدور کا کام اور آنکا جھیں،

''سوویت روس کی سندر سنکارباں'' ''بچوں کی نمائشیں دائی کی نمائشیں دائی کی نمائشیں دائی کی انترراشٹریہ نمائشی میں حصہ لونے کے لئے بھیجی گئی ھیں۔ دلی میں یہ روسی نمائشیں بھارت کی بھارت روس کلچرلسوسائٹی' وھاں کی روسوی کلچرسوسائٹی' تاکار بائیکا (Dr. Baliga)'شریمتی

हसी कलाकार ए. प्रासीमोव (A. Gerasimov) हाल में भारत आयेथे. उन्होंने कुछ भारतीय वित्रों, तस्वीरों और खाकों का एक संप्रह किताब की शकल में निकाला है. यह किताब भूस में इतनी जल्दी हाथों हाथ बिक गई कि पहली एडीशन बिलकुल खतम हो गई और अब कहीं सेकेंड-हैन्ड किताबों की दूकानों पर भी देखने को नहीं मिल सकती.

यहाँ की वहां और वहाँ की यहाँ नुमाइशों के होन से भी बहुत बड़ा फायदा हुआ है. जवाहरलाल नेहरू ने मास्का में जा भारतीय दस्तकारी की जुमाइश कराई यह बड़ा राज्य का ख्याल था. हजारों मास्का निवासियों ने ऋौर सीवियत रूस के काने-काने से आये हुए हजारों लोगों ने उस नुमाइश का देखा और भारतीय कला और दस्तकारियों की एक जीती जागती तस्त्रीर उनके सामने श्रा गई. उस नुमाइश में बाईस हजार नमूने थे. पिछले साल वहाँ भारतीय वाजों और पत्थर की खुदाई की चीजों की एक तुमाइश हुई थी उस तुनाइश के बाद हिन्दुस्तानी चीजों की यह सब से बड़ी जुनाइरा है जा मास्का में हुई है. एक श्रीर नुमाइश रूस में हुइ।जसका नाम था 'भारत की कलचर श्रीर कला." एक हिन्दुस्तानी भाषाश्री के साहित्य की नुमाइश हुई. मास्का की यह सब नुमाइशं इस साल बहुत ही कामयाब रही. इनके अलावा रूस के बहुत से शहरों में भारत की चीजों की नुमाइशें हुई — जैसे लै।ननपाड (Leningrad), उडेसा (Odessa), क्यूबंशिव (Kuibyshev), चिलियाबिस्क (Cheliabinsk), सुवर्डलाम्क (Sverdlovsk), ऐवानावा (Ivanovo), कीव (Kiev), लवाब (Lvov) तिबलिसी (Tbilisi), त्राल्मा बाटा (Alma Ata), कारागाँडा (Karaganda), गोमेल (Gomel) पैट्राजाश्रीहरक (Petrozavodsk), ताशक्रंद, बाकू, इरक्रवाद, यीरेवान (Yerevan). रीगा (Riga) तिल्लन (Fillhn) बरौरा. इन सब नुमाइशों के लिये हिदायतें सोवियत रूस के वह आदमी दंते थे जो भारत में हैं. श्रीर उनकी हिदायतों के मुताबिक इन शहरों श्रीर जगहों की सार्वजनिक संस्थाएँ, वहाँ की लाइबरेरियाँ, वहां की कलचरी सोसाइटियाँ श्रीर वहाँ क विदेश सम्बन्धी मोहकमे श्रीर खास खास त्रादमी इन नुमाइंदों का सारा सरंजाम करते थे.

दूसरी तरफ सावियत रूस की विदेशों के साथ कल नरी सम्बन्ध की सांसायटी ने इस साल नीचे लिखा नुनाइशें भारत भेजीं:— "सांवियत रूस के कपड़ा मिलों में काम करने वाले मजदूरों का काम और उनका जीवन", "सांवियत रूस की सुन्दर दस्तकारियाँ", "बच्चों की किताबों और गुड़ियों की नुमाइश" फोटों की नुमाइश "सोवियत उच्चेंगिस्तान" वरीरा. यह नुमाइशें दिल्ली की अन्तर्राष्ट्रीय नुमाइश में हिस्सा लेने के लिये भेजी गई हैं. दिल्ली में यह रूसी नुमाइशें भारत की भारत रूस कलचरल सोसायटी वहाँ की दूसरी कलचरल सोसायटी, डाक्टर बालिगा (Dr. Baliga), श्रीमती

. रामेश्वरी नेहरू और दूसरे हिन्दुस्तानी मित्रों की सहायता से संगठित की गई और सजाई गई.

हाल में सोवियत रूस के अन्दर भारत के मशहूर लेखक और नाटककार ख्याजा अहमद अन्वास हमारे मेह-मान थे. रूस का एक महान यात्री अकानासी निकितिन (Afanasi Nikitin) पंद्रहवी सदी ईस्वी में भारत आया था. ख्वाजा अहमद अन्वास उस जमाने के हालात का निगाह में रखते हुए अकानासी निकितिन के उस लम्ब सकर की एक तकसाली पुष्ठ भूमि तैयार कर रहे हैं. उस पुष्ठ भूमि के आधार पर रूस और भारत के किस्म बनान वाल मिलकर भारत के इस सच्चे मित्र रूसी यात्री के सकर की एक फिल्म तैयार करेंगे.

सन् 1951 में रूसी फिल्मकार प्रदोविकन (Pudovkin) श्रीर रूसी (फुल्म ऐक्टर चिरकासाव (Cherkassov दानों भारत आये थे. उसी साल हिन्दुस्तान क फिल्म वालों का एक डैजीगेरान ।जसक नता एम. मद्राचार्य थे सावियत रूस आया. तब सं अब तक जिन्दर्गा क इस खास मैदान के अन्दर सावियत रूस के कलाकारों और भारत के कलाकारों का सम्बन्ध बराबर बढता और श्राधक मजबूत होता जा रहा है. कला का यह मैदान और सब मेंदानों से ज्यादा सर्वितिय श्रीर दिलचरा है. श्राज हजारी मीटर किल्में तैयार हा चुका हैं जा भारत क जीवन का रुसियों के सामने श्रीर रूस के जीवन का भारत वालों के सामने दिखाती रहती हैं श्रीर एक दूसरे की बाबत एक दूसरे की जानकारी बढ़ाती रहती हैं. फिल्म की मदद से ही भारत के लाखों आदमी यह देख सके कि रूस ने अपने प्यारे मेहमान जवाहरलाल नेहरू का किस तरह श्रीर कितना जबरद्स्त स्वागत किया.

जवाहरजाल नेहरू के सावियत यूनियन आने से एक दूसरे की जानकारी बहुत बढ़ी और दाना में दास्ती और मजबूत हुई. इससे भारत और रूस में कलचरल सहयात का बढ़ना भी आसान हो गया. हम सावियत रूस के लोगों का पूरा विश्वास है कि एन० ए० बुलगानिन और एन० एस० खुराचेव के अब भारत आने से हमारे मिल्रता के बंधन और अधिक मजबूत होंगे और भारत और सावियत रूस में कलचरी सम्बन्ध और तेजी से बढ़ेगा. कलचर और तरक्षकी का सब से बड़ा मददगार और दोस्त दुनिया का अमन यानी इस धरती के सब देशों और सब लोगा में शान्ति और भाईचारा है. हमें पूरा विश्वास है कि बुलगानिन और खुराचेव की इस जवाबी भारत यात्रा सं उन काशिशों का बड़ी मदद मिलेगी जो भारत और रूस दानों मिल कर इस आलमगीर शान्ति और भाईचारे की जीत के लिये कर रहे हैं.

("न्यूज ऐन्ड व्यूज फ़ाम दी सावियत यूनियन" से)

میشوری نهرو اور دوسرے هادستانی متووں کی مهانتا سے منطقیت کے گئیں اور سعوانی گئیں ۔

حال میں سورنت روس کے اندر بھارت کے مشہور لیکھک اور بالک کار حواجد احمد عباس ھمارے مہمان تھے، روس کا ایک مہان انہی اداراسی نیکیٹن (Afanasi Nikitin)پندرھویں صدی یسوی میں بھارت ایا بھا، خراجہ احمداعباس اُس زمانہ کے حالات و نگاہ میں ردینے عورے اداراسی نکیتن کے اُس لمبے سفر بی ایک نصیبی پرشٹھ بھومی نیار کر رہے سیس ، اُس پرشٹھ بھومی کے نصر پر روس اور بھارت کے نام بدانے والے مل کر بھارت کے اُس حجے محر روسی یادری کے سعر ای ایک نام تیار کریں گے ،

سن 1001 سین روسی فلم کار پدؤوئن (Pudovkin) دو نوس بهارت آئی۔

رر روسی فلم ایکٹر چر اسؤو (Cherkassov) دو نوس بهارت آئی۔

سی سال سندستان کے فلم والوں کا ایک قابلیکیشن جس کے

بینا ایم، بھٹا چاریا بھے سرونت روس آیا، تب سے اب تک زندگی

یا اس حاص مدد ن کے اندر سورئت روس کے ناکاروں کے اور بھارت کے

اگاری کا سمبند برابر برستا اور اسک مضبوط ہوتا جا رہ ہے، کلا کا

اگاری کا سمبند برابر برستا اور اسک مضبوط ہوتا جا رہ ہے، کلا کا

میدان اور سب مداری سے زیادہ سروپریہ اور دلنچسپ ہے،

ہمیدان اور سب مداری سے زیادہ سروپریہ اور دلنچسپ ہے،

پر سزاری میڈر لمدر بیار ہو چکی ہیں جو بھارت کے جیون کو

رسیوں کے سامنے اور ورس کے جیون کو بھرت واسیوں کے سامنے

رسیوں کے سامنے اور ورس کے جیون کو بھرت واسیوں کے سامنے

بہان کاری برعاتی رہتی ہیں ، فلم کے کی مدد سے ہی بھارت کے

کویں آدمی یہ دیکھ سکے کہ روس نے اپنے پیارے مہمان چواہر

کوری آدمی یہ دیکھ سکے کہ روس نے اپنے پیارے مہمان چواہر

کی نہرو کا کس طرح اور فتنا زبردست سواگت کیا ،

جواهر الل نهرو کے سووئت یونین آنے سے ایک دوسرے کی الکاری بہت برقی اور دونوں سیس دوستی اور مضبوط قوئی ۔ س سے بھارت اور روس میں طلبچر لسبھوگ کا برتینا بھی آسان یو گیا ، هم سورئت روس کے لوگرں کو پورا رشواس ہے کہ این ، سے بلکانی اور این ایس، کهرشتچیو کے آب بھارت آلے سے همارے مترنا کے بندھن اور ادسک مضبوط هونگے اور بھارت اور سووئت روس میں طلبچری سمبندہ اور تیزی سے برقیکا ، کلتچر اور ترقی فل سب سے برا مددگار اور دوست دنیا کا امن یعنی اِس دھرتی کے سب دیشوں اور سب لوگوں میں شانتی اور بھائی چارا ہے ، فمیں پورا رشواس ہے نہ بلکانی اور کھروشتچیو کی اِس جوابی فلی س دوروں مل کر اِس عام کیر شانتی اور بھائی جارے کی جیت بونوں مل کر اِس عام کیر شانتی اور بھائی جارے کی جیت بونوں مل کر اِس عام کیر شانتی اور بھائی چارے کی جیت بونوں مل کر اِس عام کیر شانتی اور بھائی چارے کی جیت بونوں مل کر اِس عام کیر شانتی اور بھائی چارے کی جیت بونوں مل کر اِس عام کیر شانتی اور بھائی چارے کی جیت

("نهوز ایند ریوز فرام دی سورنت یونین" سے)



श्री बुलगानिन औरश्री खुशचेव भारत में

नवम्बर 1955 में सोवियत रूस के प्रधान मंत्री श्री
ंनिकालाई एलेक्क्जेन्डराविच बुलगानिन और रूस की
कन्युनिस्ट पार्टी की सेन्टरल कमेटी के कर्स्ट सेकेटरी श्री
निकीता सरगेयेविच खुशचेव का भारत आना आजकल
की दुनिया की शायद सबसं अधिक महस्त्र की घटना है.

श्री निकालाई एलेक्जेन्डरोविच बुलगानिन सन् 1895 में एक बहुत ही गरीब घर में पैदा हुए थे. उनके पिता किसी दफ्तर में एक छाटे से क्लर्क थे. बाइस साल की उमर में बह कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर बने. तब से श्रव तक उनका सारा जीवन कम्युनिस्ट पार्टी के साथ दश के मजदूरों की सेवा में बीता है. श्राज वह सोवियन कस की कम्युनिस्ट पार्टी के बड़े से बड़े नेताओं में ।गने जाते हैं और बहां के मं. श्रमंडल के चेयरभैन हैं.

श्री बुलगानिन कंवल राज-नीतिझ ही नहीं हैं, वह एक होशियार कारीगर और एनजीनियर भी हैं. मासकों के एक विजली के कारखाने के वह मैनेजर रह चुके हैं. बंक और साहुकार के काम का भी उन्हें खासा तजरवा है. सोवियत रूस के स्टेट बंक के बंदि के वह एक समय सभापित थे. भीजी कामों का भी उन्हें काकी तजरवा है. सन् 1941 से 1944 तक की जंग में वह श्रपन देश की कई कई कीजी कीनसिलों के मेम्बर थे.

दूसरे सडजन श्री निकीता सरगेयेविच खुशचेत्र सन्
1894 में एक छोटे से गांव में श्रीर भी श्राधक ग्रिश घर
में पैदा हुए थे. उनके पिता किसी खान में मजदूरी करते थे.
श्री खुराचेत्र का छाटी उमर से ही मजदूरी पर लगा दिया
गया. बहुत दिनों वह भेड़ें चराते रहे. कई कारखानों में
उन्होंने एएटर का काम किया. धीबीस बरस की उमर में
वह कम्यु नस्ट नर्टी के मेम्बर हुए. सन् 1941 से 1944
तक की जंग में वह एक मम्मूर्ला स्पाही की हैसियत से
जरमनी की कीज से लड़े. जंग क बाद वह फर खानों श्रीर
कारखानों में मजदूरी करते रहे. मजदूर की हैसियत से ही
उन्होंन एक ऐसे स्कूल में लिखना पदना सीखा जो खास

شرى بلكانى اور شرى كى شچير بهارت ميى

The state of the state of the state of

تومیر 1955 میں سوویت روس کے پردھاں منتری شری تعریفی الیکڑی آدر وہ باکائی اور روس کی کمیونسٹ پارٹی کی مینترل کمیتی کے فرسٹ سیکریزی شری نمیتا سرگیڈیدہ کوشچوں کا بھارت آنا آجکل کی دائیا کی شاید سب سے ادھک مہتو کی گیٹنا ہے ۔

شرق نکرائی الیکویندرو رچ باگائن سن 1895 میں ایک بہت ھی غریب گہر میں پندا ہوئے تھے ، اُن کے پتا کسی دفتر میں ایک چھرٹے سے ککرک تھے ، بائیس سال کی عمر میں وہ کمیونسٹ پارٹی کے میدبر بنے ، تب سے اب نک اُنکا سارا جیون کمیونسٹ پارٹی کے سانھ دیش کے مزدور وں کی سفوا میں بیتا ھے ، آج وہ سوریت روس کی کمیونسٹ پارٹی کے بڑے سے بیتا ہے ، آج وہ سوریت روس کی کمیونسٹ پارٹی کے بڑے سے بیتے قیداؤں میں گئے جاتے ھیں اور وہ س کے مفتری مفتل کے چیئرمین ھیں ۔

شری بلگانی کھول راج ٹیتکیء ھی ٹہیں ھیں وہ ایک ہوشیار کاریگر اور اینجینیں بھی مہیں مسکو کے ایک بجلی کے کارخالے کے وہ منیجر رہ چکے ھیں ، بنت کے اور ساھرڈر کے کام کا بھی اُنھیں خاصہ تجربہ ہے ، سوریت روس کے اِسٹیٹ مینک کے بورت کے وہ ایک سبئے سبھاہتی تھے ، فوجی کاموں کا بھی اُنھیں کافی نجربہ ہے ، سن 1911 سے 1944 تک کی جنگ میں وہ اپنے دیش کی کئی کئی فوجی کونسلوں کے سمبر تھے ،

درسوم سجس شری نیکیتا سرگیئے وچ کهرشچیو سن 1894 میں ایک چهرف سے کاؤں میں اور بھی ادھت غریب کھر میں پیدا ھوئے تھے ، ان کے پتا کسی کہاں میں مزدوری پر نگا دیا گیا ، بہت کھوشچیو کو چهرئی عمر سے ھی مزدوری پر نگا دیا گیا ، بہت کا کم کیا ، چوبیس جرس کی عمر میں وہ کمیونسٹ پارٹی کے کا کلم کیا ، چوبیس جرس کی عمر میں وہ کمیونسٹ پارٹی کے میمیر ھوئے ، سن 1941 سے 1944 تک کی جمگ میں وہ ایک معمولی سیاھی کی حیثیت سے جرمتی کی فوج سے ایک معمولی سیاھی کی حیثیت سے جرمتی کی فوج سے ایک مزدور کی حیثیت سے ھی انہوں نے مردوری کرتے رہے ، مزدور کی حیثیت سے ھی انہوں نے میں میں میں کھنا پڑھنا سیکھا جو خاص

तीर पर धड़ी धमर के मजदूरों के लिये खोला गया था. जंग के आखोर के दिनों में बहु एक इताके की फाजी की निसल के मेम्बर थे. सितम्बर सन् 1973 से बहु हान की कम्यु नेस्ट पार्टी की सेन्टरल कमेटी के फर्स्ट संकेटरी हैं, जो इसी कृम्युनिस्ट पार्टी का सबसे अधिक जिम्मेगरी का खोदवा है.

श्री शुलगानिन और श्री सुराचेत्र दोनों लेनिन के वफा-दार चेले हैं और स्टेलिन के साथ काम कर खुके हैं.

इन दोनों चोटो के रूसी नेताओं के भारत आने के अर्थ का समक्षते के लिये हमें इस समय की दुनिया की राजकाजी हालत पर एक निगाह डालनी होगी.

इसमें संदेह नहीं कि दुनिया धीरे धीरे शान्ति, एकता, संबंधी खाजादी, तरक्क़ी खीर खुशहाली की तरफ बढ़ रही है. किसी ने सब कहा है कि हाइड़ाजिन बम ने जन्म लेकर खीर कुछ किया हो या न किया हा बसने जंग का मार डाला. एक तरह यह एक शुभ लक्ष्मण है. पर मार्ग की सारी कठिनाइयां अभी दूर नहीं हुई हैं.

हाल में जनीवा में चार बड़े बड़े देशों—अमरीका, इंगलैन्ड, फ़ान्स और रूस—के विदश मंत्रियों की जा कानफ़रेंस हुई थी उसके सामने चार सास सवाल थे. एक यह
कि जरमनी के दोनों हिस्सों का मिलाकर फिर से एक संयुक्त
और आजाद जरमनी बना दिया जावे, दूसरा एटमी हाथयारों के इस्तेमाल की मनाही कर दी जावे और बाक़ी सब
तरह के हथियारों और फीजों का सब देशों में धीरे धीरे कम
करके, हथियारों और फीजों का बाम दुनिया पर से हटा
लिया जावे. तीसरा यह कि यूरप के सब राष्ट्रों के मिले जुले
सममौते से यूरप के अमन की सुरक्षित और यूरप में जंग
की सम्भावना को ख़तम किया जावे. चौथा यह कि पूरव
और पिछाम के बीच तिजारत, लेन देन, आना जाना, इस
तरह खोल दिया जावे कि आपस का मनसुटाव मिटे और
मेल मिलाप और दोस्ती बढ़े.

चारों देशों के विदेश मंत्रियों में कई दिन तक काफी बात चीत हाती रही. मालूम होता था सब शान्ति चाहते हैं, कोई जंग नहीं चाहता, लेकिन फिर भी इन चारों में से किसी बात पर भी वह मिलकर किसी फैसले पर नहीं पहुँच सके. जनीवा की इस कानफ़रेन्स से कोई नुक्रसान तो नहीं हुआ, वह फ़जूल भी नहीं गई, लेकिन उससे कोई खास नतीजा भी नहीं निकल सका.

जनीवा की इस कानफरेन्स का सम्बन्ध केवल यूरप से था. यह एक बात काफी मनोरंजक है कि ऊपर जो दो शब्द 'पूरब' चौर 'पश्चिम' इस्तेमाज किये गए हैं और जनीवा की बहस में बार बार चाए थे उनमें 'पूरब' से मतलब रूस भीर पूरबी यूरप के उन छोटे छोटे 6 देशों से है जो طرو پر بڑی عمر کے مزدوروں کے لئے کھولا گیا تھا ، جنگ کے آھیر کے دنہیں میں وہ آیک علاقے کی فوجی کونسل کے ممبر تھے ، ستمبر سن 19 آگ سے وہ ادعک روس کی کمیونسٹ پارٹی کی سینٹرل کمیائی کے فرسٹ سیمریڈری ہیں' جو روسی فمیونسٹ پارٹی کا سب سے فرسٹ سیمریڈری کا عب سے فرسٹ بارٹی کا سب سے فرسٹ بارٹی کا عب سے فرسٹ بارٹی کا بارٹی کا بیان کونسٹ بارٹی کا بارٹی کے بارٹی کا بارٹی کی کرنے کا بارٹی کا بارٹی کا بارٹی کا بارٹی کا بارٹی کی کرنے کی کرنے کا بارٹی کا

شری بلکانی اور شری کهرشدچیو دونوں لیلن کے وفادار چیلے هیں اور اسٹیلن کے ساتھ کام کر چکے هیں، اِن دونوں چوٹی کے رہسی ٹیتاؤں کے بھارت آنے کے اربھ کو سمجنے کے لئے همیں اِس سماء کی دنیا کی راجکاجی حالت پر ایک نگاہ ڈالنی ہوگی ۔

اِس میں سندیہہ نہیں کہ دائیا دھورے دھیوے شائتی ایکتا اسب کی آرادی اور حوشتمالی کی طرف بوتہ رہی ہے ۔ کسی نے سپے نہا ہے ته هاندروجن ہم بے جوم لیکر اور دیچ کیا ہویا نہ کیا ہو اُس نے جداک دو مار دالا ، ایک طرح یہ ایک شبھ لکشن ہے ، پر مارگ کی ساری فیتمانیاں ابھی دور فہیں ہوئی ھیں ،

حال میں جنیوا میں چار ہتے ہڑے دیشوں امریکہ انگلیند وانس اور روس کے ودیش مننویوں کی جو کانفونس ہوئی تھی اُس کے سامنے چار حاص سوال نعے ایک یہ کہ جرمنی کے درنوں حصوں دو ماہ در پھر سے ایک سنیکت آزاد جرمنی بنا دیا جاوے دوسرا ایٹمی هتیاروں کے استمال دی منا ھی دردی جاوے اور بادی سب طرح کے هتیاروں اور فوجوں کو سب دیشوں میں دیدرے دمفرے دم در کے هتیاروں اور نوجوں کا بوجھ دنیا پر سے مانا لیا جارے انیسرا یہ کہ یورپ نوجوں کا بوجھ دنیا پر سے مانا لیا جارے انیسرا یہ کہ یورپ کے سب راننٹروں کے ملے جلے سمجھوتے سے یورپ کے اس کو سورکشت اور یورپ میں جمگ دی سمجھوتے سے یورپ کے اس کو چوتھا یہ کہ پورپ اور یوچھم کے بدیج بعجارت لیں دیں آما جانا اس طرح کھول دیا جارے کہ آپس کا من مادی مادی میں اور دوستی برتا ہے۔

چاروں دیشوں کے ردیش منتریوں میں کئی دی نک کائی بات چیت ہوتی رہی ، معلوم موتا تیا سب شائتی چیفتے ہیں کوئی جنگ نہیں چاہتا الیکن پھر بھی اِن چاروں میں سے کسی بات پر بھی وہ ملکر کسی فیصلے پر نہیں پھوٹیج سکے جنبوا ہی اِس کانفرنس سے دوئی فقصان تو نہیں بھوا وہ مضرل بھی نہیں دیلی ایکن اُس سے کوئی حاص فاریجے بھی نہیں نکل سکا ۔

جمیوا کی اِس کاندرنس کا سمبندھ کیول یورپ سے تھا ، یہ ایک ہت کامی سدررنجک ہے نہ اُوپر جر دو شبد 'پورب' اور دپیچھم' اِستعدل نئیے گئے ہیں اور جنیوا کی بحث میں بار بار آئے تھے اُن میں 'پورپ' سے مطلب روس اور پربی یورپ کے اُن چھوتے چھونے چھ دیشوں سے ہے جو پربی یورپ کے اُن چھوتے چھونے چھ دیشوں سے ہے جو

कम्युनिस्ट या अर्ध-कम्युनिस्ट या रूस के साथी समझे जाते हैं. 'पिकछम' से मतलब समिता इंग्लैन्ड, फ्रान्स और हार्लेंड, बेलाजयम, पुर्तगाल जैसे दूसरी तरफ के देशों से है. इछ साल पहले तक एशिया को दूरव कीर सूरप को पश्छिम कहा जाता था. आज से पचास साल पहले के रूस-आपान युद्ध में जब उस समय का रूस जापान से जंग में हार गया सो एक बहुत बड़े यूरोपीय विद्वान ने जापान का न्याय की भोर मानते हुए और जापान की जीत पर सन्तोश प्रगट करते हुए भी कहा था:- "But After all the question is between the East and the West." यानी "कुछ भी हो सबाल प्रब और पन्छिम का है." रूस उस समय एक पिछमी देश था और उन्हें इस बात का दुख था कि एक प्रबी देश जापान ने एक पिछमी देश रूस का नीचा [हस्बाया, पचास बरस के अन्दर हवा बदल गई, चीन और भारत के साथ सब छोटे बढ़े देशों की आजादी के लिये खड़ा हाने वाला रूस आज एक 'पूरवी' देश है.

साम्राजशाही का मैदान अब धीरे धीरे सुकड़ता जा रहा है. इंगलैन्ड और फ़ान्स अपने साम्राजशाही रुमानों में आज शायद इतने पक्के नहीं रहे जितना अमरीका. कारण भी साफ है. यहा हम केवल यह कहना चाहते हैं कि हमें कोई अचरज न होगा अगर कुछ बरसों के बाद इगलैंड और फ़ान्स भी 'पूरव' में शामिल कर लिये जायं और पिच्छम से मतलब केवल संयुक्त राज अमरीका से रह जाय! हैं भी इगलैन्ड और फ़ान्स अमरीका के पूरव में और अमरीका इगलैन्ड और फ़ान्स के पच्छम में. यह है दुनिया के शब्दों की गति.

जहां तक हमारा सम्बन्ध है हम अपने पुराने आदर्श "बधुदैव कुटुम्बक" (सारी धरती एक छाटा सा कुटुम्ब है) कं अनुसार चाहते हैं कि सारी दुनिया इस पूरब थीर पश्छिम कं भेद भाव से उपर उठ जाय और इस धरती के सब रहने वाले एक मानव कुटुम्भ की तरह रहने लगें.

हमें इस बात की भी बड़ी खुशी है कि स्वयं श्री बुल-गानिन ने दिश्ली में एक बात ऐसी कही जिससे मालूम होता था कि वह सावियत रूस के एशियाई देश मान जाने में बहुत खुश हैं. कुछ लोग थह भी सोच रहे हैं कि एशिया अफ़रीकन कानफ़ेन्स में रूस को एक एशियाई देश की हैसियत से बराबर की जमह दी जावे.

एशिया, यूरप श्रीर सब मिलाकर दुनिया की शान्ति के रास्ते में श्राज खास खास बड़ी रुकावटें यह हैं :—

(1) ऐटमी ह्रियारों के इस्तेमाल की पूरी पूरी मनाही हर देने और वार्का सब तरह के ह्रियारों और कीजों का बीर-बीर कम करने में कुछ देशों का आना कानी करना. کمیونست یا ارده کمیونست یا روس کے ساتھی سمجھے جاتے ہیں۔ 'پچھم' پرتگال سے مطلب آمریکت آنکلینڈ' فرائنس آور ہالینڈ' بیلچیم' پرتگال کے دیشوں سے ہے۔ کچے سال پہلے تک ایشا کو پرت آور یورپ کو پچھم کہا جاتا تھا۔ آج سے پچاس سال پہلے کے روس حایان بدھ میں جب اُس سدئے کا روس جایان کے روس حایان بدھ میں جب اُس سدئے کا روس جایان کے جیت پر سے جنگ میں ہار گیا تو ایک بہت بڑے یورپینے ودران لے ساتھی پرگت کرتے ہوئے بھی کہا تھا:—But after all—بان کی جیت پر سنترھی پرگت کرتے ہوئے بھی کہا تھا:—the question is between the East and باک کرتے ہوئے بھی ہو سوال پررب آررپچیم کا ہے۔' روس اُس سنڈے ایک پچھمی دیش تھا اور آنھیں اِس بات کا روس اُس سنڈے ایک پچھمی دیش جایان نے ایک پچھمی دیش ورس اُس بات کا بورپی دیش جایان نے ایک پچھمی دیش روس کو نیچا دیما یا ۔ پچاس برس کے اندر ہوا بدل گئی ، دیش اور بھارت کے ساتھ سب چھرٹے بڑے دیشوں کی آزادی

, 是**从**是是有一种。这个一条人

کے لمگے کہوا ھوئے والا روس آج ایک 'پورٹی' دیش ہے ۔

سمراج شاھی کا میدان آب دھیرےدھیوے سکرتا جا رہا ہے ۔
انگلینڈ اور فرانس اپنے سامراج شاعی رحصانوں میں آج شاید لینے نہیں رهے تبا امریکہ ۔ کارن بھی صاف ھیں ۔ بہاں ھم کیول یہ کہنا چاھتے ھیں کہ عمیں کوئی اچرج نہ ھوگا اگر کچھ برسوں کے بعد انگلینڈ اور فرانس بھی 'جرب' میں شامل کو لئے جائیں اور پچھم سے مطلب نیول سنیکت راج امریکہ سے رہ جائیں اور پچھم سے مطلب نیول سنیکت راج امریکہ سے انگلینڈ اور فرانس امریکہ کے پورب میں اور امریکہ انگلینڈ اور فرانس کے بحجھم میں ، یہ ہے دنیا کے شہدوں کی گئی ۔

جہاں تک ممارا سمبندھ ہے ہم اپنے پرانے آدرش "وسو دیوکٹمبکم" (ساری دھرتی ایک چھوٹاسا کٹمب ہے) کے انوسار چاہتے ھیں که ساری دنیا اِس پورب اور پنچھم کے بھید بھاؤ سے آرپر آٹھ جائے اور اِس دھرتی کے سب رھنے والے ایک مانو کٹمب کی طرح رہنے لکیں۔

ھیں اِس بات کی بھی بڑی خوشی ہے کہ سویم شری بنگائی نے دلی میں ایک بات ایسی کہی جس سے معلوم عوتا تھا کہ وہ سوریت روس کے ایشھائی دیش مالے جالے میں بہت خوش ھیں ، کچھ لوگ یہ بھی سوچ رہے ھیں کہ ایشیا افریقی کانفرنس میں روس کو ایک ایشیائی دیش کی حیثیت سے برابر کی جگہ دی جاوے ،

ایشیا یورپ اور سب ملاکر دنیا کی شانتی کے رأستے میں آے خاص خاص بڑی رکارٹیں یہ میں :--

(1) ایٹسی هتیاروں کے استعمال کی پوری پوری مناعی کردینے اور ہاتی سب طرح کے هتیاروں اور فوجوں کو دهورے دهورے دهورے کم کرنے میں کچھ دیشوں کا آنا کانی کرنا ہ

the state of the s

- ('2) इस तरह के फीजी सममीते और फीजी गृट वन्दियां, जिनमें एक खास तरह के देशों को ही शामिल किया जाता है, इसकी सब से बड़ी मिसालें यूरप में 'नाटो' (NATO) और पराया में 'सीटो' (SEATO) हैं. हाल म रूस ने यूरप की सुरक्षा के लिये नाटो में शामिल हाने की इच्छा, प्रगट की थी, फिर भी उसे नहीं लिया गया. जब तक इस तरह की कीजी गुटें दुनिया में रहेंगी दुनिया की शान्ति पर खतरा बना रहेगा.
- (3) जरमनी के दो दुकड़ों का बना रहना और उनमें से एक दुकड़े का नाटो गुट की तरफ से हथियारों से लैस किया जाना. यूरप की ही नहीं दुनिया की शान्ति के लिये चावरयक है कि जरमनी के इन दोनों हिस्सों के लोगों को, बाहर की क्रीमों के दबाब या असर से आजाद होकर, एक स्वतंत्र, स्वाधीन और संयुक्त जरमनी बनाने का मौक्रा दिया जाबे
- (4) हिन्दचीन की बाबत जो सममौता रूस, चीन. भारत और दूसरे शान्ति प्रेमी देशों की कोशिशों से सन 1954 में जनीबा ही में हा चुका है उसके खिलाफ हिन्दचीन के कुछ लोगों का अपनी खास कौजी गुट में मिलाकर बाहर के कुछ देशों का उसमें रुकावटें डालते रहना. जब तक बाहर के कुछ देशों की इस तरह की दख्लअन्दाजी बन्द नहीं होगी और सन् 1954 वाले जनीवा के समस्रौते पर ईमानदारी से अमल, नहीं होगा, एशिया के उस अभागे कोने से दुनिया की शान्ति के भंग होने का खतरा बना रहेगा.
- (5) ताइवान यानी फारमूसा में अमरीकी फीजों का जबरदस्ती हरे डाले रहना. ताइवान चीन के शरीर का एक अंग है. किसी बाहर का शाक्ति का यह इक नहीं है कि नए चीन श्रीर ताइवान के घरंखू मामले में किसी तरह का दखल दे. अमरीकी कौजें अगर ताइवान से हटा ली जावें ता नई चीनी सरकार।श्रीर ताइवान के कुछ लागों के बीच का आपसी भगडा बिना किसी तरह की लड़ाई के एक दिन में तय हो सकता है. जब तक यह नहीं होता तब तक चीन को श्रीर दुनिया के अमन् को खतरा बना रहेगा.
- (6) दिक्सन कारिया का बराबर बढ़ावा दे देकर कोरिया के एक संयुक्त और त्राजाद देश बनने में कुछ लागों का रुकाबरें डालना. कारिया जब तक बाहर की शक्तियों कं दबाब से आजाद हाकर एक संयुक्त राष्ट्र न बन जायगा तब तक उस तरक से चीन कां, एशिया का और दुनिया की शान्ति को खतरा बना रहेगा.
- (7) जापान और दूसरे कुछ देशों में नाहर की शक्तियों के फ़ौजी श्राक्षों और छात्रांनयों की भौजूदगी. जब बक किसा भी बिदेशी शक्ति के इस तरह के फीजी अबे जापान या

- (2) اِس طرح کے فوجی سمجھوتے اور فوجی گٹ بلدیاں ا جن میں أیک خاص طرح کے دیشوں کو هی شامل کیا جاتا هـ اس كىسب سے برى مثالين يورپ مين اثاثوا (NATO) اور ایشیا میں 'سیٹو' (SEATO) هیں . حال میں روس نے یوپ کی سورکشا کے لئے ناتو میں شامل ھونے کی أجها ہرکت کی تھی' پھر بھی اسے نہیں لیا گیا . جب تک اس طرح ئی نہجی گٹیں دنیا میں رهیں گی دنیا کی شائتی پر خطرہ . Kes, li
- (3) جرمنی کے دو ٹعربی کا بنا رہنا اور ان میں سے ایک لكور كا دائر كات كي طرف سے متياروں سے ليس كيا جاتا . پورپ کی هی نہیں دنیا کی شانتی کے لئے اُوشیک هے که جرمنی کے ان دونوں حصوں کے لوگوں کو' بلعر کی قوموں ہے دیای یا اثر سے آزان موکر' ایک سوتنتر' سوادھیں اور سنیکت جرمني بنائے كا موقع ديا جائے .
- (4) هند چین کی بابت جو سنجهونا روس چون ا بھارت اور دوسرے شائعی پریمی دیشوں کی کوششوں سے سن 1954 میں جنبوا هی میں هوچکا فے اس کے حالف هند چین کے کچھ لوگرں کو اپنی خاص فوجی گٹ میں ملائر باہر کے نعچہ دیشوں کا اس میں رکاوٹیں ڈائٹے رہنا ۔ جب تک باءر کے کچے دیشرں كى إس طرح كى دخل الدازى بلد تهين هوكى أورسن 1944 واله جنیوا کے سمجھوتے یو ایدائداری سے عمل نہیں ہوگا ایشیا کے اس أبهاگے کوئے سے دلیا کی شائتی کے ببنگ ہوئے کا خطرہ بنا رہیگا ۔
- (5) تائوأن يعنى فارموسا مين أمريكي فوجون كا ربردستي تیرے ڈالے ہمنا ، تانوان چین کے شریر کا ایک انگ ہے . نسی ہامر کی شکتی کو یہ حق تہیں ہے که لئے چین اور نائوان کے تهریلو معاملے میں کسی طرح کا دخل دے . اسریکی فوجیں اگر تابوان سے مقالی جاویں تو تئی چینی سرکار اور باتوان کے نج لوگوں کے بیچے کا آیسی جھکڑا بنا کسی طاح کی لڑائی کے ایک دن میں طے هرسکتا هے ، جب نک یہ نہیں مونا دب تک چین کو اور دنیا کے اس نو خطرہ بنا رهیگا .
- (6) دیمن کوریا کو ہرابر بڑھارا دے دے کر کوریا کے ایک سنيعت اور أواد ديه بناء مير كنچه لوگون كا ركارثين داندا . کرریا جب بک باہر کی شکتیں کے داؤ سے آزاد موکر ایک سنهمت راشتر نه بن جائيكا تب تك بهي اس طرف ع چهن کو ایشیا کو اور دنیا کی شانتی کو خطرہ بنا رمیگا .
- (7) جايان أور دوسر عديم ديشون مين باهر كي شكتيون کے نہجی ادر چاونیس کی مہجودگی . جب تک کسی بھی ودیشی شکتی کے اِس طرح کے فوجی اُڈے جاہاں یا

کسی ہیں۔ دیش میں مہرجود عیں دنیا کے اس کو زبردست

AND THE REPORT OF THE PROPERTY OF A PROPERTY

(8) يو . ابن . آو . مين قلم چين جيسه سائه كوروز آدميس كو أجت أستهان كا فع ملنا . تائول كي چيانك كائي شیکی سوکار کے نمائلدے کو چین کا نمائلدہ مانکو ہو۔ أين. أو. مهر بيليانا ايك إننا بوا كها تحولك ابر انبائد هـ كم جب تك يه جاري هـ، نه يو ، أين . أو . سجيم معنى مين سنريت راشار سام کہا سکتا ہے نہ اس سے دنیا کے اس کو قایم رکینے میں مدد مل سکتی ہے اور نہ دنیا سے جنگ کا خطرہ جا سنتا هے ۔

(9) افریقه میں یا دنیا کے کسی حصے میں ہی کسی دیھی یا کسی قوم کے اُوپر کسی بھی ودیشی شکٹی کے شاسن پربھرتو یا دراؤ کا قایم رهنا یا دنیا کے کسی حصف میں بھی رقک یا نسل کے آدھار پر انسانیں کے بیاتھ الگب الگ طرح كا بيرهار هوال دانها مين جب تك غلب ديش يا إس طرح کے بھید بھاؤ موجود ھیں تب تک دُنیا کے اُس کو خطارہ , هيکا

سرویت روس اور بھارت کے قیتاؤں کے سرابری اور غیر سراری بیانس اور آبهی حال مهن شری بنگانی اور شری کهرشدهو کے دانی کے بہاشنوں سے صاف طاعر ہے کہ آوپر کی سب باتوں میں روس اور بھارت یعنی ان دونوں دیشوں کی جنتا اور ان کی سرکاریس بالی ایک رائے هیں ، یبی شری بلکانی اور شری کیرشچیو کے بدارت آئے کا سب سے بڑا مطلب ہے ، جب نگ دلیا د شالتی ترقی اور دیبودی کے راستے کی یه سب ركاوئين دور نهين هرتين تب تك عمارا فرض هے؛ همارا دهرم ھے اور عماری اور دلیا کی سلائی اِسی میں ھے که عم ملکو کھڑے ھوں ۔ دنیا کی جاتا کو ایک کرانے کے ایٹے اور سابی دنیا کے بہلے کے لئے آوشیک ہے کہ بہلے ابشیا اور افریقہ کے سارے دھی، جن میں سے ادھکتر برادھینتا کے کردے انوبوی میں سے نعل چکے هيں يا نعل رهے هيں؛ طعر كورے هوں". أيشيا أور افریقہ کے سب دیشوں کے ملکر کھڑے ھونے کے لئے ضروری ہے که ابشیا کے تین سب سے بڑے دیھے۔۔روس' چین اور بھارت۔۔ ونیا کے اس اور سب نے بیلے کے فام پر ملکر نیزے ہوں۔ اِس ويوهارك نكاه سه شرى بلكاني أور شرى كارشنجير كا بهارت آلما إس سميركي سب ت ادعك مهدو كي كيدنا هي هدين يبرا رشواس هے نه رؤس چين اور بهارت کے اِس طرح ملكر کھوے ھونے کے بعد دنھاکے اس کے راستے کی سب رکاوٹیں ایک ایک کر دور هوجاوینگی اور سارا ماتو سمایے ایک بار سب کے بیلے سب کی ترقی آور سب کی خوشت آلی کی طرف بوها هوا دكهائي ديكا، يهي مسلم كاندهي كا بتايا هوا سروودنه كا أدرهي هم.

سسفر لال. 24.11.'55

किसी भी देश में सीजूद हैं दुनिया के अमन को जबरदस्त सत्तरा है.

🦪 ं (ð) बू. एन. भ्रो. में नए चीन जैसे साठ करोड़ अमादमियों का ड/चत स्थान का न मिलना, ताइवान की च्याँग काई शेकी सरकार के नमाइन्दे की चीन का तुमाइन्दा ्मानकर बू. एन. जां. में बैठाना एक इतना बढ़ा खुला ढोंग मीर भन्याय है, कि जब तक यह जारी है, न यू. एन. भी. सच्चे मानी में संयुक्त राष्ट्र संघ कहला सकता है, न उससे द्धनिया के अमन को क्रायम रखने में मदद मिल सकती है भीर न दुनिया से जंग का सतरा जा सकता है.

(9) अफ़रीक़ा में या दुनिया के किसी हिस्से में भी किसी देश या किसी क़ौम के ऊपर किसी भी विदेशी शक्ति 'के शासन, प्रभुत्व या दवाव का कायम रहना या दुनिया के किसी हिस्से में भी रंग या नसल के आधार पर इनसानों के साथ अलग अलग तरह का ब्योहार होना दुनिया में जब तक गुलाम देश या इस तरह के भेद भाव मौजूद है

तब तक दुनिया के अमन को खतरा रहेगा.

सोवियत रूस और भारत के नेताओं के सरकारी और रीर सरकारी बयानों और अभी हाल में श्री बुलगानिन और भी स्राचेव के दिल्ली के मापगों से साफ जाहिर है कि कपर की सब बातों में रूस और भारत यानी इन दोनों देशों की जनता और इन की सरकारें बिल्कुल एक राय हैं. यही श्री बुलगानिन और श्री झश्चेब के भारत आने का सब से बदा मतलब है. जब तक दुनिया की शान्ति, तरक्की और बहबूदी के रास्ते की यह सब इकावटें दूर नहीं हातीं तब तक हमारा कर्ज है, हमारा धर्म है और हमारी और दुनिया की सलामती इसी में है कि इम मिलकर खड़े हों. दुनिया की जनता का एक करने के लिये और सारी दुनिया के भले के लिये आवश्यक है कि पहले एशिया और अफ़रीक़ा के सारे देश, जिन में से अधिकतर पराधीनता के कड़वे अनुभवों में से निकल चुके हैं या निकल रहे हैं, मिलकर खड़े हों. ए। शया और अफ़रीक़ा के सब देशों के मिलकर खड़े हाने के लिये जहरी है कि एशिया के तीन सब से बढ़े देश - रूस, चीन और भारत-द्दनिया के अमन और सब के मले के नाम पर मिलकर खड़े हों. इस ब्योहारिक निगाह से श्री बुलगानिन और श्री क्रशचेव का भारत काना इस समय की सब से आधक महत्व की घटना है. हमें पूरा विश्वास है कि रूस, चीन, और भारत के इस तरह मिलकर खड़े हाने के बाद दुनिया के अमन के रास्ते की सब रुकावटें एक एक कर दूर हो जावेंगी और सारा मानव समाज एक बार सब के भले, सब की तरक्षकी और सब की खुशहाली की तरफ बढ़ता हुआ दिखाई देगा. यही महात्मा गाँधी का बताया हुआ सर्वोदय का आदर्श है. -सुन्दरलाल.

नबम्बर '55

24, 11, '55

सांस्कृतिक साहित्य

سانسكوتك ساهتيه

हजरत मोहम्मद श्रीर इसलाम

लेखक-पिछत सुन्दरलाल, मृत्य-तीन रुपया इसलाम के पैगम्बर के सम्बन्ध में भारतीय भाषात्रों में इस से मुन्दर कोई दूसरी पुस्तक नहीं

हजरत ईसा ऋौर ईसाई धर्म लेखक-पन्डित सुन्दरलाल, मूल्य-डेढ़ रूपया

महात्मा जरथुस्त्र ऋौर ईरानी संस्कृति लेखक-विश्वम्भरनाथ पांडे, क्रीमत—दो रुपया

यहदी धर्म और सामी संस्कृति लेखक-।वश्वमभरनाथ पांडे. कीमत-दा रुपया

प्राचीन मिस्र की सभ्यता और संस्कृति लेखक-विश्वमभरनाथ पांडे, कीमत-दो रुपया

सुमेर बाबुल श्रोर श्रसुरिया की प्राचीन संस्कृति

लेखक—विश्वमध्यनाथ पांडे, क्रीमत—दो काया

प्राचीन यूनानी सभ्यता ऋौर संस्कृति

लेखक-- विश्वम्भरनाथ पांडे, क्रीमत--दा रुपया

गंगा से गोमती तक

(प्रगतिशील कहानी संप्रह) क्रीमत-दा रूपया लेखक-श्री मुजीब रिज्ञशी,

आग ऋार आंस्

(भावपूर्न सामाजिक कहानियाँ)

लेखक-डाक्टर ऋस्तर हुसेन रायपुरी, कीमत-डेढ़ रुपया

कुरान और धार्मिक मतभेद

लेखक-भौलाना अबुलकलाम आजाद. क्रीमत-डेढ़ रूपया

भंकार

(प्रगतिशील कवितात्र्यों का संग्रह) लेखक-रघुपति सहाय फिराक़, क्रीमत-तीन रुपया حضوت محدد اور إسالم

ليه كم سيندت سندر الل موليه ستين روبيه مالم کے پیغمر کے سمبند میں بھارتیہ بھاشاؤں میں اِس سے سندر کوئی دوسری پستک نهین

حضرت عيسي اور عبسائي دهرم ليكهك - پندت سندر الل مولية - ديره روبيه

پاتها زر تهستر اور ایرانی سنسکرتی ليعهك - وشوميهر ثاته ياقذے الله عيمت در روييه

يهودي دهوم أرر ساسي سنسكرتي ليكوك وشومهور ناته بالذي ويمت دو رويعه

اچین مصر کی سبهیتا اور سنسکرتی لیکهک-رشوسهر ناته پاندے نیست-دو روپیه

بير عابل اور الورياكي بواچين سنسكرتي لیکھک -رشومبھر ثاتھ ہائدے ، فیست-دو رویبہ

راچیس برنانی سبهها اور سنسکرتی لیکهک-رشوسهرنانه پاندے تیست-در روپیه

گنگا سے گومتی تک

(پرگتی شیل کہائی سفارہ) لیکهک - شری مجیب رضوی میست - د رویه

اگ اور انسو

(بھاؤپورن سماجک کہانیاں) ھکھکسسةاكٹر اختر حسين رائے پوری وست – تيزھ روپه

قران اور ن هارمن من بهین ایکهک من بهین ایکهک می بهین ایرکلم آزاد ایکهک میت تیزه زوید ويمت--تيزه زوييه

جهنگار (پرگنیشیل کوبناؤں کا سنگوہ) ایکهک -- رگهوپتی سائے فراق فیمت - تین روپیه

मिलने का पता

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ही अपन अपनि उर्गेष

145 منبى كنج 'الهآباد علي العربي الع

भ नदी घर

هندی گهر

कलचर पर हर तरह कीं कितावें मिलने का एक बड़ी केन्द्र—पाठक हिन्दीं, उदू, श्रंग्रेजीं की अपनी मन-पसन्द किताबों के लिये हमें लिखें।

हमारी नई किताबें

महात्मा गान्धी की वसीयत

(हिन्दी और उद् में) लेखक—गान्धीबाद के माने जाने बिद्धान : श्री मंजर ऋकी मारुता सके 225, क्षीमन दो कपया

गान्धी बाबा

(बच्चों के लिये बहुत दिलच्हा किताब) लेखिका—कुद्दिया जैदी भूमिका—पन्डित जवाहरलाल नेहरू मोटा काराज, मोटा टाइप, बहुत-सी रंगीन तसवीरें दाम दो कपया

> ---: o: ---पंडित सुन्दरलाल जी की लिग्बी किताबें

गीता और क़ुरान

275 सके, दाम ढाई रुपया

हिन्दू मुसलिम एकता

100 सफे, दाम बारह आन

महात्मा गान्धी के बलिदान से सबक्र

क्रीमत बारह आन

पंजाब हमें क्या सिखाता है

क्रीमत चार आन

बंगाल और उससे सबक्र

ुक्तीमत दो आने

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी

145 मुद्रोगंज इलाहाबाद

ت ناچو پر هر طوح کی کتابیں ملنے کا ایک برا کیندر۔۔پاٹھک هندی ' اُردو' انگریزی کی می پسند کتابوں کے لئے همیں لکھیں ۔

ههاری نئی کتابیں

مهاتها گاندهی کی وصیت (عنبی اور آزمو میں)

(علی اور اردو میں)
لیکھئے۔۔۔گاندھیواد کے مانے جانے
ودوان: شوی منظر علی سوخته
صفحہ 225° قیمت دو روپید

كاندهي بابا

(سچرں کے اللہ بہت دانچسپ کتاب) لیکھکا۔۔قدسیم زیدی بھوہ کا۔۔پنذت جوانفر لال نہور موٹا کافذ موٹا ٹائپ' بہت سی رفکیں مصویریں

دام دو روپيه

پندت مندرال جي کي لکهي نتابيس

عيتا اور قران

7.75 مفتحه دام تفاني رويه

هندو مسلم ایکتا

100 صفحے دام بارہ آنے

مهاتما کاندھی کے بلیدان سے سبق اسمق نیت ہارہ آنے

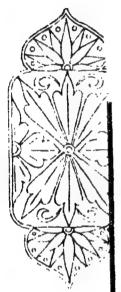
ہنجاب ھیں کیا سکھانا ھے تیت چار آنے

بنگال اور اُس سے سبق

هندستاني كلجر سوسائتي

145 متھی گنبے العآواد





इस नम्बर के म्हास लेख हुई की के कि हैं।

हिन्दुस्तानी कतचर (म्ब्स्भेलिचना) هندسة ألى كانجر (أيك) —पंडिन सुद्रातील चीनी इलाज की कहानी --श्री ली नार्की

स्वतंत्रता की यात्रा की चौथी पीढी ---श्री मगन भाई देसाई

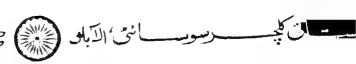
ــــئەرى مەل بھائى دىسائى --श्रीमती चेन कांत्रांग-यू ـــشریمتی چین کو**آنگ**۔بو

न्त्रीमों कौमों के बीच दोस्ती(भाषण (نوموں خوموں کے بدچ دوستی(بیاشی) -श्री निकंता खरचेव شرى نكيتا خرشهير

इसके अलावा

سوتفترنا کی یابرا کی چوتھی بھڑی

देस विदेस के मसलों पर हमारी राव में जहूरी सम्पादकी नोट دیس بدیس کے مثلوں پر عماری رائے میں ضروری سمیادکی نوت



NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

Editorial Board

Dr. Tara Chand M.A., D. Phil. (Oxon)

Mahatma Bhagwan Din

Dr. Syed Mahmud, M.A., Ph.D., Bar-at-Law

Pandit Sundarlal

Bishambhar Nath Pande

Editor-in-Charge

Bishambhar Nath Pande

Asst. Editors

Suresh Rambhai Mujib Rizvi

Annual Subscription

Iuland Rs. 6/-Foreign Rs. 40/-Single Copy As. /10/- only

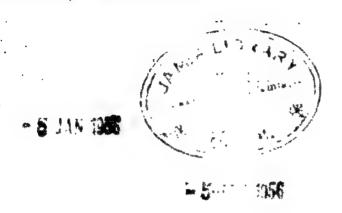
Can be had from -

Manager, NAYA HIND

145, MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3.



जिल्द 20 अर्ज् नम्बर 6 अंश



दिसम्बर 1955 भ्राप्त

दिसम्बर 1955 अ

क्या किस से		सका कां		کیا کس سے
1. हिन्दुस्तानी कलचर (एक आलोचना)				1. هندستانی کلچر (ایک آلوچنا)
—पंडित सुन्दरताल	•••	309	***	بلتت سلير ال
2. चीनी इलाज की कहानी				2. چینی علج کی کہائی
—श्री ली ताची	•••	319	•••	۔۔۔شری کی تاو
8. गांधी और कवीर				B. کائنھی اور کیور
 भी भन्नाशंकर नागर एम० प० 	•••	328	•••	حدوی امیاشنعر قاکر ایم . اے .
4. स्वतंत्रता की यात्रा की चौथी पीढ़ी				 4. سوتلترتا کی یاترا کی چوتھی پیچھی
—भी मगन भाई देखाई	***	331	•••	شر <i>ی</i> مکن بهائی دیسائی
5. ग्रहम्मद साहब के कुळ उपदेश				 محمد ملحب کے کچھ آپدیش
—अनुवादक श्री मुजीब रिज्वी	•••	336	•••	انوادک شری مجیب رضی
6. दुनिया भर की माओं के नाम				6۔ دنیا بھر کی ماؤں کے تام
—भीमती चेन कुमांग-यू	•••	339	***	ـــــــــــــــــــــــــــــــــــــ
7. क्रीमों क्रीमों के बीच दोस्ती (मावरा)				7. قوموں قوموں کے بیچے دوستی (بھاشن)
—श्री निकेता ् सुरचे व	•••	344	•••	ـــشری نکیتا خرشچیو
8. इमा री राय—	***	853	•••	8. هماری رائے۔۔
इमारे रूसी मेहमान; राजकुमारी असूत कौर				همارے روسی مهمان اوکماری
के चीन के अनुभव—सुन्द्रलाल; समक की				اموسائور کے چھن کے اثوبھو— سادر لال؛ سمجھ کی خوبیء؛ کاؤں
खूबी; गाँव की चाह—सुरेश राममाई				کی چاہ۔ سببہ کی ماری مرز

[एक चाली चना]

हैदराबाद की एशियाई अध्ययन समिति (Institute of Asian Studies) के बाइरेक्टर, मशहूर विद्वान, श्री भगवत शरण उपाध्याय ने अपना एक अपा हुआ अंगरेजी निवन्ध हमारे पास भेजा है. जिसका नाम है 'भारतीय संस्कृति की प्रगति' (March of Indian Culture). निवन्ध की कुछ चीजें लगभग उन्हों के शब्दों में हम नीचे देते हैं.

कलचर या संस्कृति की परिभाषा करते हुए लेखक ने लिखा है कि:--

"इतिहास की तरह कलचर या संस्कृति भी एक ऐसी चीज है जो लगातार फूलती फलती और बढ़ती रहती है और जिसका सम्बन्ध सारी दुनिया से है. कोई देश या कोई काल ऐसा नहीं है कि जहां खड़ा होकर कोई आदमी भी यह कह सके कि इसके आगे किसी चीज से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं, कलचर के अलग अलग रूप आस पास की तब्दीलियों के साथ बदलते रहते हैं, श्रीर यह तब्दीलियां अधिकतर अलग अलग जातियों के मिलने से पैदा होती हैं. इसलिये कलचर हम सब की मिली जुली बपौती है जो हम सबकी मिली जुली कोशिश से पैदा होती है. कलचर के अलग अलग हिस्से मिलकर एक शरीर बनाते हैं, फिर यह शरीर खुद एक इकाई बन जाता है, और इस तरह की बहुत सी इकाइयां मिलकर लगातार अपने में दूसरे हिस्सों श्रीर दूसरी इकाइयों को मिलाती श्रीर समोती रहती है, यहां तक कि यह सिलमिला सारी धरती के ऊपर फैला हुआ दिखाई देता है. कलचर हम सबकी सबको देन है."

इसके बाद लेखक ने शुरू से अब तक की दुनिया की बड़ी बड़ी सभ्यताओं, उनके विकास और एक दूसरे के साथ उनके सम्बन्ध की चरचा की है.

भारत की चरचा करते हुए लेखक ने कहा है कि :-

"इस मामले में कोई देश प्रकृति (कुद्रत) का इतना चहेता नहीं दिखाई वेता जितना हिन्दुस्तान. अनिगनत जातियां, सभ्य और असभ्य, हमारी सरहद को पार कर इस देश में आती रहीं और यहां के समाजी ताने बाने में मिलकर एक होजाती रही हैं. हमारे समाजी ढांचे को उन सब से बल मिला है और उसकी शान और मुन्दरता बढ़ी है. तरह तरह के नमूने और तरह तरह की शकतें भिलकर

[ایک آلوچنا]

حیدرآباد کی ایشیائی اددهین سمتی (Institute of کی ایشیائی اددهین سمتی (Asian Studies کے ڈائیریکٹر' مشہور ودران' شری بھکوت شرن آبادهیائے نے اپنا ایک چیها هوا انکریزی نباده همارے پاس بهیجا هے' جس کا نام هے 'بھارتیه سنسکرتی کی پرگٹی' ممارے پاس بهیجا هے' جس کا نام هے 'بھارتیه سنسکرتی کی پرگٹی' (March of Indian Culture) نباده کی کچه چیزیں لگ بهگ اُنهیں کے شہدوں میں هم نبیچے دیتے هیں۔

کلحور یا سنسکرتی کی پریبهاشا کرتے هوئے لیکھک نے لکھا اے که:--

اتہاس کی طرح کاچر یا سنسکرتی بھی ایک ایسی چھڑ عے جو لگاتار پھولتی پھلتی اور بڑھتی رھتی ہے اور جس کا سمبندھ ساری دنیا سے ہے . کوئی دیش یا کوئی کال ایسا نہیں ہے کہ جہاں کیڑا ھو کو کوئی آدمی بھی یہ کہہ سکے کہ اِس کے آگے کسی چیڑ سے میرا کوئی سمبندھ نہیں . کلچر کے الگ الگ روپ آس یاس کی تبدیلیوں کے ساتھ بداتم وھتے ھیں اور یہ تبدیلیاں ادھکٹر الگ الگ جاتموں کے ملنے سے پھدا ہوتی ہیں ایس لئے تلچر هم سب کی ملی جلی بیوتی ہے جو هم سب کی ملی جلی بیوتی ہے کے انگ الگ حصے ملکو ایک شریر بناتے ھیں پھر یہ شریر جو ماس کی اگل ہوں جاتا ہے اور اِس طرح کی بہت سی کے انگ الگ حصے ملکو ایک شریر بناتے ھیں پھر یہ شریر خود ایک اوائی بی جاتا ہے اور اِس طرح کی بہت سی کو مائی اور سموتی رہتی ہے کو ملاتی اور سموتی رہتی ہے کہاں تک کہ یہ ساسلہ ساری دھرتی کے اوپر پھیلا ھوا دکھائی دیتا ہے . کاچور ھم سب کی دھرتی کے اوپر پھیلا ھوا دکھائی دیتا ہے . کاچور ھم سب کی

اِس کے بعد لیکیک نے شروع سے ابتک کی دنیا کی بڑی ہڑی ہڑی سبھ یتاؤں' اُن کے وکاس اور ایک دوسرے کے ساتھ اُن کے سبندھ کی چرچا ئی ہے ۔

بھارت کی چرچا کرتے ہوئے لیکھک نے کہا ہے کہ:-

''اِس معاملے میں کوئی دیھی پرکرتی (قدرت) کا اننا چہیتا نہیں دکھائی دیتا جتنا هندستان ، انگنت جاتیاں' سبھتا اور اسبھت' هماری سرحد کو پار کر اِس دیش میں آتی رهیں اور یہاں کے سماجی تالے بائے میں ملکر آیک هو جاتی رهی هیں ، همارے سماجی قعانچے کو اُن سب سے بل ملا ہے اور اُس کی شان اور سندرتا 'برتھی ہے ، طرح طرح کی شکلیں ملکو

इस देश की कलंबर में सैकड़ों तरह के नए नए रंग और नई शान पैदा करते रहे हैं. हजारों बरस के अन्दर अनिगनत जातियों के मेल से आजकल की भारतीय संस्कृति बनी है."

लेखक का विचार है कि सन्धु नदी की पुरानी सभ्यता भीर दजला और फिरात निवयों के किनारे की प्राचीन समेरी सभ्यता दोनों में गहरा सम्बन्ध था.

जब जब कोई दो जातियां इस देश में मिलती थीं तो पहली टक्कर में लड़ाइयां और मगड़े होते थे. पर थोड़े ही दिनों में दोनों के मेल से एक नई और दोनों से अधिक सुन्दर चीज पैदा हो जाती थी, यहां तक कि दोनों के अलग अलग बजद का निशान तक न रह जाता था.

आर्य लोगों ने अपने से पहले के बारान्दों को नफ्रत के साथ 'कृष्ण' (काले आदमी), 'अनास' (जिनकी नाक दवी हुई थी), 'अदेवयु' (ईश्वर को न मानने वाले), 'अयंज्वन' (यहा न करने वाले), 'शिश्व देव' (लिंग पूजने बाले), 'दास' (गुलाम), 'दस्यु' (डाकू) जैसे नामों से पुकारा. उस समय के आर्य अधिकतर या तो उठाऊ चून्हा रहते थे या छोटी छोटी बस्तियों में बसते थे. यहां के पुराने बारान्दे, जो द्रविद कहलाते थे, बड़े बड़े शहरों में रहते थे, जिनके चारों तरफ, पक्की इंटों की ऊँची दीवारें होती थीं। सिदयों दोनों में लड़ाइयां होती रहीं। आखिर दोनों मिलकर एक दूसरे के रंग में रंग गए.

दुनिया के इतिहास में अकसर कम सभ्य जातियों ने अधिक सभ्य जातियों को जीता है. लेकिन अन्त में कलचर के मामले में जीतने वाली जाति ने हारी हुई क़ौम के सामने जुवा डाल दिया. ईरान में आर्थी के अन्दर शुद्र जाति नहीं थी. अथर्व बेद लिखे जाने के समय तक इस देश में चारों बड़ी बड़ी जातें रूप ले चुकी थीं जिनमें शूद्र सबसे नीचे थे. द्रविड़ों भौर आयों के मिल जाने से शुद्रों की गिनती बहुत बढ़ गई. द्रविड़ों के देवता 'शिव' की पूजा सारे देश में हाने लगी और धीरे धीरे लिंग के रूप में सब जगह चल पड़ी. योग और ध्यान, सांड और गाय की पूजा का भी इसी समय रिवाज हुआ. सांड ने नन्दी का रूप लिया. गाय के लिये विशंष आदर भी आर्यों ने इस देश के पुराने बाशिन्दों से सीखा. धीरे धीरे आयों के बहुत से नए नए शहर यहां श्राबाद हो गए जिनमें पुष्कलावती, तस्रशिला, हस्तिनापुर, इन्द्रप्रस्थ, काशी, अयोध्या और मिथिला अधिक मशहर हैं.

स्वर्गीय श्री बाल गंगाधर तिलक ने बताया था कि ऋग्-बेद और अथर्वेद में बहुत से मंत्र एंसे हैं जिनसे उस जमाने की आर्य सभ्यता और सुमेरी सभ्यता के गहरे सम्बन्ध का पता चलता है. श्री भगवत शरण उपाध्याय का कहना اِس دیش کی کلچور میں سیکوں طرح کے نئے نئے رنگ اور انگلات اور انگلات اللہ انگلات جانبوں کے اندر انگلات جانبوں کے مدل سے آجال کی بھارتیہ سلسکرتی بنی ہے ''

آ سلامک کا وجار ہے که سندھو ندی کی پرانی سبھیتا اور دجات اور فراط ندیوں کے کنارے کی پراچین سومیری سبھیتا دونوں میں گہرا سورندہ تھا .

جب جب کرئی دو جانیان اِس دیک میں ملتی تھیں تو پہلی تکر میں اوائیاں اور جھکڑے ہوتے تھے، پر تھوڑے ہی دنوں میں دوئوں کے میل سے ایک نئی اور دوئوں سے ادھک سندر چیز پیدا ہو جاتی تھی' یہائٹک که دوئوں کے الگ الگ رجود کا نشان تک نه رہ جاتا تھا۔

آریہ اوگوں نے اپنے سے پہلے کے باشدوں کو تفرت کے ساتھ 'کوشی' (کالے آدمی)' 'آناس' (جن کی ناک دبی ہوئی تبیی)' 'آدیویو' (ایشور کو نه ماننے والے) 'ایجون' (یکیه نه کرنے والے)' 'داس' (خالم)' 'داس' (خالم)' 'داس' (خالم)' 'داس' (خالم)' 'داس' و خالم)' 'داس' و خالم اللہ تبیہ ناموں سے پکارا، اُس سمئے کے آریه ادھکتر یا تو آئیاؤ چولها رہتے تبے یا چھوٹی چھوٹی بستیوں میں بستے تبیہ یہاں کے برانے باتندے' جو دروز کہائے تبیہ' بڑے بڑے شہروں میں رہتے نہے' بڑے بڑے شہروں میں رہتے نہے' جن کے چاروں طرف پکی آینٹوں کی آونچی دیواریں ہوتی تبیہ ، صدیوں درئوں میں لڑائیاں ہوتی رہیں ، دیواریں ماکر ایک دوسرے کے زنگ میں رنگ گئے ،

دنیا کے اِتہاس میں انثر کم سبھیہ چانیوں نے ادمک سبھیہ چانیوں کو جیتا ہے ۔ لیمن انت میں کلجور نے معاملہ میں جیتنے والی جاتی نے عاری ھوئی دوم کے سامنے جوا قال دیا ۔ ایران میں اربوں کے اندر شودر جابی نہیں تھی، اتهرو رید لکھے جانے کے سبئے تک اِس دیس میں چاروں بڑی بڑی جانیں ررپ لے چکی تھیں جن میں شودر سب سے نینچے تھے ، دردروں اور آربوں کے مل جانے سے شودروں کی گنتی بہت بڑھ گئی ، دروروں کے دیونا 'شو' کی پوجا سارے دیس میں عولے لکی اور دھیاں' سانت اور گانے کی پوجا سارے دیس سمئے زراج ھوا ۔ دھیرے دھیرے اور دھیاں' سانت اور گانے کی پوجا کا بھی اس سمئے زراج ھوا ۔ اور دھیاں' سانت اور گانے کی پوجا کا بھی اس سمئے زراج ھوا ۔ اور دھیاں' سانت اور گانے کئے بہت سے نئے نئے میں سے جکہ چل پڑی ، یوگ آربوں کے بہت سے نئے نئے شہر بہاں آباد ھو گئے جن میں پشکارتی' نکشلا' ھستناپور' آندر پرستو' کشی' ایردھیا اور میتھا اور میتھا

سورگید شری بال گنگا دھر تلک نے بتایا تھا که رگوید میں اور انهرووید میں بہت سے منتر ایسے ھیں جن سے اُس زمانے کی آرید سبیٹیتا اور سرموری سبیٹتا کے گہرے سبیٹدھ کا یتا چلتا ہے۔ شری بیکوت شرن آیادھیائے کا کہا

ھے کہ انہرہ وید کے ایک منتر میں جو دو شبد 'آلیگی' 'بہلیکی' آتے ھیں وہ سومیریا کے دو مشہور راجاؤں 'ایلولو' اور 'بیلولو' کے نام ھیں ۔ ایکھک کا خیال ہے بھارت کی انیک بھائیاں میں جر ادائے بلائے' شبد چلتے ھیں وکا اِنهیں ایلولو اور بیلولو سے بنے ھیں انہوروبد کے بہت سے جادر اور منتر پراچھی بیبیلونیا (بابل) کے ساھتھ اور رھاں کے اور منتر پراچھی بیبیلونیا (بابل) کے ساھتھ اور رھاں کے رواج سے لئے گئے ھیں ،

بھارت کے گرنتھ 'شت پتھ ہراھمن' میں طونان کی کہائی حضرت توج کے اُسی طونان کی کہائی ہے جو کہا جاتا ہے عیسی سے لگ بھاگ تھی مزار ہرس پہلے باہل میں آیا تھا ، یہ کہائی شت پتھ ہراھمن کے لکھے جائے سے کم سے کم ایک ہزا ہرس پہلے پراچھن اسوریا میں موجود تھی ، سومھری ساھیتہ میں اِس کے ساتھ دیو سدو کا نام لیا جاتا ہے' اِنجیل اور قرآن میں میں منوکا نام لیا جاتا ہے' اِنجیل اور قرآن میں میں منوکا نام لیا جاتا ہے اور سنسمرت ساھتیہ میں انہا ہے کہ جب اِند برے طونان کے بعد منو کی کشتی کسی پہاڑ پر جا کر لگی اور رمنو نے دیکھا کہ اُن کی کشتی میں طرح طرح کے جانداروں کے جوردے بھے گانے ھیں جن سے سرشتی اُکے کو چل سکے تو اُنھوں نے بہکوان کو دھنیہ باد دیا اور یکیہ کرنا چاھا ، پر اُنھوں نے دیکھا کہ یکیہ کرائے کے لئے پروھت اِس دیھی میں نہیں نہیں تھے۔' تب اسوریا یعنی بابل دیش سے پروھت اِس دیھی میں نہیں شہد پتھ ہراھمن میں 'اسور براھمن' کہا گیا ہے ، اسوریا کے لوگوں گو اُن دنوں اسور کہا جاتا تھا ،

اِس کے بعد بھارت میں اِیرائیوں کا آنا ھوا، ایرائی سمرات دارا کا سندھ اور پتھمی پنجاب تک راج تھا ، یہ راج سر برس سے اُوپر تک رھا ، چانکیہ اور چندرگھت موریہ نے اپنے دربار میں ایرائی طور طریقے اور ایران کے درباری ریت رواج جاری کیئے ، ایران کے اثر سے ھی بھارت میں وہ کھروشتمی لھی چلی جو فارسی کی طرح داھنے سے بائیں کو لکبی جاتی تھی ، سمرات اُشوک کے بہت سے شلا لیکھ اِسی کھروشتمی میں ھیں اور اُن اُشوک کے بہت سے ایرائی شبد آتے ھیں ، پہاڑوں ' چتانوں اور اُن اُرنچے اُرنچے کھمبوں پر سِ طرح کے لیکھ یا کتبے کھودنے کا اُرنچے اُرنچے کھمبوں پر سِ طرح کے لیکھ یا کتبے کھودنے کا رواج بھی ' جسے سمرات اُشوک نے دنیا میں اِندا ادعک چمکایا' بھارت نے اہران سے اور ایران نے اسوریا سے لیا ۔

آس زمانے کے بھارت کی مورتی فرمان کلا پر ایران اور آس کے آس پاس کے دیشوں کا گہرا اثر پڑا، مصر کے اندر عیسی سے تین ہزار برس پہلے سانت کی پوجا اور بھارت میں نندی کی پوجا کا ایک دوسرے کے ساتھ گہرا سمبندھ ہے، تکشلا اور دوسرے استہانوں کی بودھ مورتیوں میں ایرانی اور یونانی

है कि सथवेंबेद के एक मंत्र में जो दो राव्द 'झालिगी' और और 'बिलगी' झाते हैं वह सुमेरिया के दो मराहूर राजाओं 'एलुलू' और 'बेलुलू' के नाम हैं.. लेखक का ख्याल है भारत की अनेक भाषाओं में जो 'झलाय बलाय' शब्द चलते हैं वह इन्हीं एलुलू और बेलुलू से बने हैं. अर्थवेंद के बहुत से जादू और मंत्र प्राचीन बैबीलोनिया (बायुल) के साहित्य और बहां के रिवाज से लिये गए हैं.

भारत के प्रनथ 'शतपथ ब्राह्मण' में तुकान की कहानी इजरत नृह के उसी तूकान की कहानी है जा कहा जाता है ईसा से लगभग तीन हजार बरस पहले बाबुल में आया था. यह कहानी शतपथ शाह्मण के लिखे जाने से कम से कम एक हजार बरस पहले प्राचीन अधुरिया में मौजूद थी. सुमेरी साहित्य में इस कहानी के साथ जिय-सि का नाम लिया जाता है, इंजील श्रीर फ़रान में इसी के साथ हजरत नृह का नाम लिया जाता है और संस्कृत साहित्य में मनु का नाम लिया जाता है. संस्कृत साहित्य में लिखा है कि जब इतने बड़े तूमान के बाद मनु की किशती किसी पहाड़ पर जाकर लगी और मनु ने देखा कि उन ही किशती में तरह तरह के जानदारों के जादे बच गए हैं जिनसे सुध्द आगे को चल सके तो उन्होंने भगवान का धन्यवाद दिया और यह करना चाहा, पर उन्होंने देखा कि यह कराने के लिये पुराहित इस देश में नहीं थे, तब असुरिया यानी बाबुल देश से पुरोहित बुलाए गए जिन्हें शतपथ ब्राह्मण में 'ब्रासुर श्राद्याएं कहा गया है. असुरिया के लोगों का उन दिनों श्वसर कहा जाता था.

इसके बाद भारत में ईरानियों का आना हुआ. ईरानी सम्राट द्वारा का सिन्ध और पच्छमी पंजाब तक राज था. यह राज सा बरस से ऊपर तक रहा. चाएक्य और चन्द्र-गुप्त मौर्य ने अपने दरबार में ईरानी तौर तर्रकों और ईरान के दरबारी रीति रिवाज जारी किये. ईरान के असर से ही भारत में बहु खरोष्टि लिपि चली जो फ़ारसी की तरह दाहने से बांए को लिखां जाती थी. सम्राट अशोक के बहुत से शिला लेख इसी खराष्टि में हैं और उनमें बहुत से ईरानी शब्द आते हैं. पहाड़ों, चट्टानों और ऊँचे ऊँचे सम्बों पर इस तरह के लेख या कतवे खांदन का रिवाज भी, जिसे सम्राट अशोक ने दुनिया में इतना अधिक चमकाया, भारत ने ईरान से और ईरान ने असुरिया से लिया.

खस जमाने के भारत की मूर्ति निर्माण कला पर ईरान भीर उसके आस पास के देशों का गहरा असर पड़ा. भिश्न के अन्दर ईसा से तीन हजार बरस पहले साँड की पूजा, बाबुल और असुरिया में साँड की पूजा और भारत में नन्दी की पूजा का एक दूसरे के साथ गहरा सम्बन्ध है. तक्षशिला और दूसरे स्थानों की बौद्ध मूर्तियों में ईरानी और यूनानी असर भारतीय हैंग हैं होंगे हुए साफ दिखाई देते हैं. सांची जैसी जगहों के 'स्तूप' हमें मिझ के 'पिरेमिड' और धुमेर के 'जिग्गुरत' की याद दिलाते हैं. तीनों का मृत्यु के साथ सम्बन्ध था.

ईसा की शुरू की सदियों में भारत के अन्दर शहर के शहर यूनानियों के आवाद थे. बहुत से दूसरे शहरों में यूना-नियों के बड़े बड़े मोहल्ले थे. यूरप का दक्कित पूरव का धारा हिस्सा, मिस्र का उत्तर का भाग और आक्सस और गंगा नदी तक सारा एशिया यूनानियों के क्रब्जे में था. पाटलीपुत्र (पटना) तक उनके हमले हुए, उस जमाने की लिखी हुई गार्गी संहिता में इन यूनानिनों का 'दुष्ट विकान्त यवनः' यानी घदमारा चौर बहादुर यवन कहा गया है. लिखा है कि इन लोगों के पाटली पुत्र के एक इसले के बाद आस पास के तमाम इलाक़े से मर्द इतने अधिक मारे गए थे कि बाद में सारा काम काज औरतों को करना पड़ता था, कई कई बौरतें मजबूर डोकर एक मर्द से शादी करने लगी थीं और जब कभी इधर उधर अचानक कोई मदे दिखाई दे जाता था तो औरतें उसे हैरान हांकर देखती थीं. लेकिन इस क्लेग्राम के बाद भी जब यूनानी और हिन्दु-स्तानी मिल गए ता दोनों दुध और चीना की तरह एक हो गए और दोनों ने मिलकर भारतीय संस्कृति की रचना की.

उस जमाने में भारत के अन्दर यूनानी ड्रामे खेले जाते थे. यूनानी साहित्य का भारत की भाषाओं में अनुवाद होता था, और लांग उन किताबों को खूब शीक्र से पढ़ते थे. यूनानी भाषा का भी भारत की भाषाओं पर गहरा असर पड़ा. संस्कृत ड्रामों में 'यबनिका' शब्द यूनानी से लिया हुआ है. भारतीय ड्रामों पर यूनानी ड्रामों का असर है. उस जमाने के भारतीय सिक्के जाहिर करते हैं कि इस देश के बहुत से लांग उन दिनों यूनानी और खराष्ठि दांनों भाषाओं को समकते थे.

भारत की ज्योतिष विद्या पर भी यूनानी ज्योतिष का बहुत बड़ा असर पड़ा. आज तक हिन्दुओं की जन्म पत्री में जो 'होराचक्र' बनता है उसमें 'होरा' वही है जो अंगरेजी शब्द 'हारांस्कोप' का हारों है और दोनों भिस्न के सूर्य देवता 'होरस' से लिये गए है. हिन्दू विवाह के लिये सबसे ग्रुम लग्न जिसमें कालिदास ने शिव और पार्वती की शादी कराई है 'जामित्र' है जो यूनानी 'जियामेत्रान' से लिया गया है, गार्गी संहिता में लिखा है कि ज्योतिष विद्या का जन्म यवनों से ही हुआ और इसके लिये वह "पूज्य" हैं.

उससे पहले के हमारे सिक्के दूसरी शकल के होते थे. आजकल के सिक्कों की शकल हमने यूनानियों से ली. हिन्दी शब्द दाम, जिसके मानी मोल या क्रीमत है, यूनानी शब्द है. الر بہارتید رفک میں رفکے عرف صاف دکھائی دیتے عیں . سانچنی جیسی جگرس کے استوپ عمیں مصر کے اپریدن اور سرمیر کے ازگرت کی باد دلاتے عیں ، تینیں کا مرتبر کے ساتو سمبنید تھا ،

The state of the s

عیسی کی شروع کی صدیوں میں بھارت کے افدر شہر کے شہر یونانیوں کے آباد تھے ، بہت سے دوسرے شہروں میں یونائیس کے بڑے بڑے محلے تھے ، یورپ کا دکھن پورپ کا سارا ایشیا حصہ مصر کا اتر کا بھاگ اور آئسس اور گفتا ندی تک سارا ایشیا یونائیوں کے تبغیہ میں تھا ، پاٹٹی بٹر زیٹنہ) تک اُن کے حملے ہوئے ، اُس زمانے کی لکھی ہوئی گارگی سکھیئا میں اِن یونائیوں کو دشت وکرائت یونے یعنی بدمهاش اور بہادر یون کہا گیا تھے ، لکھا ہے کہ اِن لوگوں کے پانٹی پٹر کے ایک حملے کے بعد اُس پاس کے تمام علاقے سے مود اِننے اُن مک مارے گئے تھے کہ بعد میں سارا کام کاے عورتوں کو کرنا پڑتا تھا کئی کئی عورتیں مجبور ہو کر ایک مدد سے شادی کرنے لگی تبھی اور عورتیں مجبور ہو کر ایک مدد سے شادی کرنے لگی تبھی اور عورتیں آسے صیران ہو کر دیکہتی بھیں ، لیکن اِس فال عام کے عورتیں آسے صیران ہو کر دیکہتی بھیں ، لیکن اِس فال عام کے بعد جب یونائی اور ہندستانی مل گئہ تو دونوں دونوں دونہ ورتیں دونہ ورتیں دونہ اور ہندستانی مل گئہ تو دونوں دونوں دونہ ورتیں دونہ اور چانی کی طرح ایک ہو گئے اور دونوں نے ملکر بیارتیک سنسکرتی

أس زمانے میں بھارت کے اندر یونائی ڈرا مے کھیلے جاتے تھے ، یونائی سامتیہ کا بھارت کی بھاشاؤں میں انوراد ھوتا بھا اور لوگ اُن کتابوں کو خوب شوق سے پڑھتے تھے ، یونائی بھاشا کا بھی بھارت کی بھاشاؤں پر گہرا اثر پڑا ، سنسکوت ذراموں پر میں 'یونیکا' شبد یونائی سے لیا ھوا ھے ، بھارتیہ ڈراموں پر یونائی تراموں کا اثر ہے ، اس زمانے کے بھارتیہ سکے ظاہر کرتے ہیں نہ اِس دیش کے بہت سے لوگ اُن دنوں یونائی اور کورشتی دودوں بھاشاؤں کو سنجہتے نہے ،

بھارت کی جیرتھی ردیا پر بھی یوتاتی جیونھ کا بہت ہوا اثر پرا ، آج تک ھندوں کی جنم پتری میں جو اھررا چکرا بنتا ہے آس میں انھورا وھی ہے جو انگریؤی شبد انھاروسکرپ کا ھارو ہے اور دوئیں مصر کے سوریہ دیوتا انھورس سے لئے گئے ھیں ، ھندو رواہ کے لئے سب سے شبھ لکن جس میں کابداس نے شو اور پاروتی کی شادی کرائی ہے اجامترا ہے جو یوتانی ازیا میتران سے لیا گیا ہے ، کارگی سنگتا میں لیا ہے کہ جھوتھی ودیا کا جام ہوئیں سے ھی ھوا اور اِس کے لئے وہ الارجیہ انھیں ،

أس سے پہلے كے همارہ سكے دوسرى شكل كے هوتے تھے . آجكل كے سكوں كى شكل هم نے يونانيوں سے لى ، هندى شيد دام' جس كے معنى مول يا قيمرت ش' يونانى شيد ش . مہاتما بدھ لے آپنے چاہی کو ماقب غبدیں میں مائم کیا تھا که میری کسی طرح کی مورتی هرگز نه بنانا ، آسی کا تنیجه تھا که شروع کے بردھ دورم میں جسے 'هیلیان' کہا جاتا ہے بدھ کی کوئی مورتی ته بنتی تهی اور جهال کسی چاه کی فرورت یزتی تھی تو دیول چہتر یا چکر یا بودھی ورکش کی تصویر بنا دی جاتی تھی ، لیکن بدھ کے مرقے کے نئی سو برس بعث پہلے صدى عيسوى ميسحب بوده دهرم لي مهايال سمهردائه فايم هوكي تو بده کی موربیاں بھی جانبہ جانبہ بننے لکیں یہاں تک که دنیا میں شاید جتنی بدھ کی مہرتیاں بنے ھیں اُنٹی آج تک کسی درسرے کی نہیں بنیں . ثد رع سے آب تک بدھ کی إن مورتيس مين أور بوده مدرون مين يوتاني أثر ماف د هائي دیتا ہے لیکن وہ سارا اثر گہرے بھارست رنگ میں رنگا ہوا ہے .

> دھیرے دعیرے جیوں کے در میدان میں یونانی اور هلدستانی ماکر ایک هو گه . سیکرس یونانیس فے ویشنو دهرم سوئه ردیا أور لا ہوں نے بودید عجرم اپنایا ،

> یونائیوں کے بعد شک جاتی کے اوگوں نے باغر سے آئر بھارت کے بوے بوے حصوں پر رائے بھا ما لموہ اور مہاراتیار نک ان دی بستیاں اور اُن دی حدوست تھی ، اُن کے راجاؤں اور یہاں کے راحاؤں میں لرائیس بھی موئیں ، دعورے دعورے وہ سب بھی بھارت کے جیرن میں رل مل کئے ، اُجکل کی سنسكرت بهاشا أور سلسكرت ساعتهه دو سب سے ريادہ انفتى ودیشی شک راجاؤں هی نے دی ، جیرتش نے بھی آن کے زمانے میں بہت بڑی تردی کی جیونش کا مشہور بھارتیہ ودوان وره مهر حود شک جانی کا تها ، أس کا نام ايراني نام تها . پونانی و کهان بهی آن دنون اس دیش میں حوب پرسا جانا بها .

> هماری أجعل كى رأشتريه پوشاك أچعن أور پاجامه شروع میں شف جاتی نے لوگوں نے اِس دیش میں جاری کی عد میں منل بادشمیں نے اور اودم نے نوابوں نے اسے اور ادامک سندر روب دیا ، دربه اور شارار کی چال می ایس دیش میں شک ہوگوں سے می آنی ،

بهارت میں اسوریم، کی جو سب سے درانی مورتی ملکی ہے وہ پہلی صدی عیسوی کی بنی بعرثی ہے ، اُس کے شریر پر یہی ودیشی کرده ودیشی شلوار اور ودیشی چوفه دیهانی دینا هے . یاور میں اُرنجے ایشیائی جرتے هیں سر پر ایرانی ٹوپی ارر فر سے حسور للدا موار سی هندستانی دیوتا کو اُس سے پہلے اِس طرح کے 'ہڑے نہیں پہلانے جاتے تھے' نه اِس طرح کی ئربی نه اِس طرح کے جرتے ،

ریدک دعرم میں بھی سوریہ کی پوجا کا ذکر آتا کے لیکن شکہں سے پہلے یہاں سرریہ کی مہرتی نہوں بذتی تھی . سوریہ کی جو مرزنیاں دھرتی پہلے ھرنے اور قورته ذالہ ھوئے مالی

دسمير وورد

महात्मा बुद्ध थे अपने चेलों को साफ शब्दों में मना किया था कि मेरी किसी सरह की मूर्ति हरगिष व बनाना. इसी का नतीजा था कि शरू के बौद्ध धर्म में जिसे 'हीवयान' कहा जासा है बुद्ध की कोई मूर्ति न बनती थी, और जहां किसी चिन्ह की जहरत पहती थी तो केवल छत्र या चक या बोधि श्र की इसबीर बना दी जाती थी. लेकिन बुद्ध के मरते के कई सी बरस बाद पहली सदी ईसवी में जब बौद्ध धर्म की महायान सम्प्रदाय क्रायम हुई तो बुद्ध की मूर्तियां भी जगह जगह बनने लगीं, यहां तक कि दुनिया में शायद जितनी बुद्ध की मूर्तियां बनी हैं उतनी आज तक किसी दूसरे की नहीं बनी. शुरू से अब तक बुद की इन मृतियों में श्रीर बौद्ध मन्दिरों में यूनानी असर साफ दिखाई देता है लेकिन वह सारा असर गहरे भारतीय रग में रगा

घीरे धीरे जीवन के हर मैदान में यूनानी और हिन्दु-स्तानी मिलकर एक हो गए. सैकड़ों यूनानयों ने वैष्णव धर्भ स्वीकार किया और लाखों ने बौद्ध धमें अपनाया.

युनानियों के बाद शाक जाति के लागों ने बाहर से आकर भारत के बड़े बड़े हिस्सों पर राज किया, मालवा और महाराष्ट्र तक उनकी बसातयां और उनकी हुकूमत थी. उनके राजाओं भौर यहां के राजाओं में लड़ाइयां भी हुईं. धीरे धीरे वह सब भी भारत के जीवन में रल मिल गए. आजकल की संस्कृत भाषा और संस्कृत साहित्य को सबसे ज्यादा उन्नात विदेशी शक राजाच्या ही न दा. ज्यातिष न भी उनक जमाने में बहुत बड़ी तरक्की की. ज्यां.तष का मशहूर भारतीय विद्वान बराह मिहिर खुद शक जाति का था. उसका नाम ईरानी नाम था. यूनानी विकान भी उन दिनों इस देश में खुब पढ़ा जाता था.

इमारी आजकल की राष्ट्रीय पाशाक अवकन और पाजामा शुरू में शक जाति के लागों ने इस देश में जारी की. बाद में मुराल बादशाहों ने और अवध क नवाबों ने इसे श्रीर श्राधिक सुन्दर रूप दिया. कुरता श्रीर शलवार की चाल भी इस देश में शक लागों से ही आई.

भारत में 'सूर्य' की जा सब से पुरानी मूर्ति मिलती है वह पहली सदी इस्वी की बनी हुई है. उसके शरीर पर यही विदेशी करता, विदेशी शलवार और विदेशी चोगा दिखाई दता है. पांत्र में ऊँच पशियाइ जूते हैं, सिर पर ईराना ढापी श्रीर कभर से खंजर लटकता हुआ. किसी हिन्दुस्तानी देवता का बससे पहले इस तरह के कपड़े नहीं पहनाए जाते थे. न इस तरह की टांपी, न इस तरह के जूते.

वैद्वक धर्म में भी सूर्य की पूजा का जिक काता है लेकिन शकों से पहले यहां सूर्य की मूर्वि नहीं बनती बी. सूर्य की जो मूर्तियां धाती पहने हुए और द्वपट्टा डाले हुए मिलवी

هیں وہ سب بعد کی هیں ، جہاں تک معلیم هوتا ہے سرویہ کی مردی بناکر پوچنے کا رواج اِس دیش میں شک جاتی کے لوگیں سے هی آیا ، همارے پروانیں میں یہ کتھا آتی ہے کہ ملتان میں جب سوریہ کا پہلا مادر بنایا گیا تو مردتی کی استہاپنا کرنے اور محب کی پوچا شروع کرنے کی ودھی یہاں کے کسی براعمن کو نہیں آتی تھی ، اِس لئے اِس کام کے لئے باعر سے ''شک دوعهی براعمن'' بلانے گئے تھے ، آج نک بھارت میں شاک دوعهی براعمن موجود هیں اور اُتر بھارت میں بہت سے دوسرے براهمن اور اُتر بھارت میں بہت سے دوسرے براهمن اُن 'ودیشی' براهمنوں کا چھوا پانی نہیں پیتے ،

شک جائی کے لوگیں کی بہت بڑی تعداد بھارت کے رہانے والهن مين مل كئي . أج بيارت واسيس كے خون مين أن كے الساهتيه ميں' أن كى كلا آور وكيان ميں' أور أن كى كلمچر ميں وہ پوری طرح سمائی ہوئی ہے ، اُن کے بہت سے راجا اور سردار جو اشاهی اور اشهان شاهی کہلاتے تھے بھارت سے نکل کر بہت بر سائی کرر ماری اسانی در این اسائه پیزهیس تک وا آتر بعجمی سرحد پر جم کر باهر کے حملیں سے بھارت کی رکشا كرتے رهے . شرى بهكوت شرن أياد عيائه كا كهنا هے نه :-- نسنديم هماري أن كا جهونا كهمان كتنا جمك أتهتا هے جب هم يه ديكهته هيل كه جس سمه همارت پوجيه راجا بهوج أس الهلوازا کے شہر کو لوت رہے تھے جس کا راجا مسلمان حمله اوروں سے لوئے دور گیا ہوا تھا تھیک اُس سے بھارت کے بچھمی بھاٹک کے یہ بہادر سنتری مندوکش کی پہاریس کے ندر چوکیدار (شک راجا) اینی جکه بر دلی هوئه لگاتار أتر بچهم کے أن زېردست شتروں سے لوھا ليتے رھتے تھے جو بھارت يو حمله كرنے كي لئي إدهر برهتے تهے . أنت ميں وه إس باره كے سامنے نه تھھر سکے اور بےعزتی کی زندگی بتانے کی جگد اُنھوں نے آگ میں کوں کوں کر اپنے کو ختم کردیا ."

اِس میں سندیہ نہیں اِنہاس کے بہت سے بھولے ہوئے پلنے ممارے لئے کانی منورنجک اور شکشاررد موسکتے میں ، آ

آج تک ردیشی کنشک کا چلایا هوا شاکا سنوت مودیشی وکرمادتیه کے نام پر چلے هوئے وکرم سنوت کے مقابلہ میں بھارت کے انیک بھاگوں میں خاصکر جنم پتریوں اور پنتھانکوں میں ادھک پرتر مانا جاتا ہے .

کنشک کے رائے میں مدھیہ ایشیا کا بہت سا حصہ کشمیر' پنجاب اور آتر پردیش کا بہت سا حصہ شامل تھا . دھرم کے معلملے میں وہ حد درجہ کا آدار' سب دھرمی کو ایک نگاہ سے دیکھنے والا اور سب کے ساتھ ایکسا برتاؤ کرنے والا تھا ، بودہ دھرم کی سیوا ایک اشوک کو چھ تر کر کسی بھارتیہ راجا نے آس سے ادھک تہیں کی، چین کے ساتھ بھی اُس کا گہرا سیندھ تھا۔ پررسی پنجاب میں چینیوں کی سبسے پہلی آبادی 'چین مکتی' اسیکی

हैं वह सब बाद की हैं. जहां तक मातृब होता है सुच की मूर्ति बनाकर पूजने का रिवाज इस देश में शक जाति के लागों से ही आया. हमारे पुराशों में यह कथा बाती है कि मुलतान में जब सूर्य का पहला मन्दिर बनाया गया तो मूर्ति की स्थापना करने और उसकी पूजा शुरू करने की विधि यहां के किसं अध्याय का नहीं आती थी. इसलिये इस काम के लिये बाहर से 'शाक द्वीपी बाह्मण" बुलाए गए थे. आज तक भारत में शाक द्वीपी बाह्मण मीजूद हैं और उत्तर भारत में बहुत से दूमरे बाह्मण इन 'विदेशी' बाह्मणों का छुआ पानी नहीं पंती.

शक जाति के लोगों की बरुत बड़ी तादाद भारत के रहने वाला में मित गह भाग भागत वासियां के खन म. उनके साहित्य में, उनकी कला और विज्ञान में, और उनकी कलचर में वह पूरी तरह समाई हुई है. उनके बहुत से राजा श्रीर सरदार जी 'शाही' श्रीर शाहानशाही' कहलाते थे भारत से निकतकर बहुत दिनों तक अफ्तानिस्तान में राज करते रहे. स ठ पीदियों तक बहु उत्तर पश्चिमी सरहद पर जमकर बाहर के हमलों से भारत की रक्षा करते रहे. श्री भगवत शरण उराध्याय का कहना है कि:-"निस्सदेह हमारी आन का मूरा घमंड कितना चमक उठता है जब हम यह देखते हैं कि जिस समय हमारे पूज्य राजा भाज उस अन्दिलवाड़ा के शहर का लूट रहे थे जिसका राजा मुसलमान इमलावरों से लड़ने दूर गया हुआ था, ठीक उस समय भारत के पिछमा फाटक के यह बहादुर सन्तरी, हिन्दू कुश की पहाड़ियों के निडर चौकीद र (शक राजा) अपनी जगह पर इटे हुए लगातार उत्तर पच्छिम के उन जबरद्श्त शत्रुओं से लाहा लेते रहते थे जो भारत पर हमला करने के लिये इधर बढ़ते थे. घन्त में वह उस बाढ़ के सामने न ठहर सके भीर बेइज्जती की जिन्दगी बिताने की जगह उन्होंन आग में कुद कुद कर अपने का खतम कर दिया."

इस में सदेह नहीं इतिहास के बहुत से भूले हुए पन्ने इसारे तिये क का मनारजक और शिक्षापद हो सकते हैं.

आज तक विदेशी किनिष्क का चलाया हुआ शाका संवत स्वदेशी विक्रमादित्य के नाम पर चले हुए विक्रम सम्वत के मुक्ताबले में भारत के अनेक भागों में खासकर जन्म पत्रियों और पंचांगों में अधिक पत्रित्र माना जाता है.

कति क के राज में मध्य एशिया का बहुत सा हिस्सा, काशमीर, पंजाब और उत्तर प्रदेश का बहुत सा हिस्सा शामिल था. धर्म के मामले में वह हद दग्जे का उदार, सब धर्मों का एक निगःह से देखने बाला और सब के स.थ एक सा बर्ताव करने बाला था. बौद्ध धर्म की सेवा एक अशोक को छोड़कर किसी भारतीय राजा ने उससे अधिक नहीं की. चीन के साथ भी उसका गहरा सम्बन्ध था. पूरवी पंजाब में चीनियों की सबसे पहली आवादी 'चीन मुक्ति' उसी की कायम की हुई थी. आबू और नारापाती दोनों चीन से उसी के समय में आये. किनिक के जमाने के हालात को पढ़ने से मालूम होता है कि भारत की कलचर का रूप देने में थीन का भी बहुत बड़ा दिस्सा है. चीनी सम्राट 'रागं के पुत्र' कहलाते थे. उसी चाल पर किनिक 'देव पुत्र' कहलाता था. किनिक के सिक्के जिन पर कई कई धर्मों के देवी देवताओं के चित्र होते थे साबित करते हैं कि धर्म के मामले में भी उस समय चीनियों की मशहूर उदारता और उनके सर्व धर्म सम्भाव का हम पर गहरा असर पढ़ा. उस जमाने की कला, चित्रकारी आदि में साफ अने क देशों और अनेक धर्मों के रंग और उनकी छाप दिखाई देती है.,बाद के गुप्ता युग की सारी कला उसी उदार युग की पैदाबार है.

श्री भगवस् शरण का कहना है कि भारत के इतिहास में 'राष्ट्रीयता' की यानी भारत के एक राष्ट्र होने की सबसे पहली भलक हमें उस समय मिलती है जब कि विदेशी शक और कुशन बादशाहों ने जिन्हें शाही कहा जाता था सुबुक्तगीन और उसके बेटे महमूद के हमलों से भारत की रक्षा करने के लिये देश की सब शक्तियों को पहली बार मिलाने की कोशिश की. इतिहास में भारत की एकता हमें सबसे पहले उसी समय चमकती हुई दिखाई देती है.

गुप्ता युग भारत का सुनहरा युग माना जाता है. वास्तव में उस युग का सारा बड़प्पन इन ही बाहर के असरों की देन था.

हुण जाति के लोग जो सब से आखीर में भारत आए चीन की झूँग-नु जाति से सम्बन्ध रखते थे. यह वही हुण थे जिन्होंने रोमन साम्राज्य की कमर ताड़ी. यही लाग भारत के मैदानों में भी आकर बसे. चार हिन्दू जातों के अन्दर यह आसानी सेन खप सके. वह इतने शक्तिशाली थे कि उन सब ने शुद्र बनकर रहना स्त्रीकार नहीं किया. इसलिये उन्हें क्षत्री मानना पड़ा. बहुत बढ़े पैमाने पर आबू पहाड़ के ऊपर एक शुद्धि संस्कार हुआ. और पाँच राजपूत कुलों के नाम से जिन्हें 'अग्निकुल' कहा जाता है वे सब कं सब दिन्दुओं में मिला लिये गए. कहा गया कि वे दवन कुएड में से पैदा हुए हैं. इस तरह यह सब सोलह आने क्षत्री हो गए. राजपूत कियों में 'जीहर' का रिवाज उन्हीं से पड़ा. 'जीहर' एक बिदेशी शब्द है जिसका निकास एक इवरानी शब्द से है जिसके मानी आग और राशनी हैं.

श्रहीर, गूजर, जाट और राजपूत हिन्दू समाज का एक जबरदस्त श्रंग होते हुए भी श्रपने सुन्दर सुढील शरीरों और खास स्वभाव के कारण आज भी इस देश में सब से अधिक श्रलग चमकते हैं. कहने को यह सब विदेशी हैं.

लेखक का कहना है कि इसके बाद भारत में वह लोग आए जिन्होंने आजकल की भारत की कलवर को रूप देने قایم کی ہوئی تھی، آور اور قاشیاتی دونوں چھن سے اُسی کے سے موب آئے . کنشک کے زمانے کے حالات کو پڑھنے سے معلم ہوتا ہے کہ بھارت کی تلحی کو روپ دینے میں چھن کا بھی بہت بڑا حصہ ہے جائی سمرات 'سہرگ کے پتر' کہلاتے تھے۔ اُسی چال پر کنشک 'دیو پتر' کہلانا تھا ، کنشک کے سکے جن پر کئی کئی دھرموں کے دوس دوتاؤں کے چتر ہوتے تھے ڈبہت کرتے ھیں کہ دھرم کے معاملے میں بھی اُس سمے چیلھوں کی مشہور ادارتا اور اُن کے سردھرم سمبھاؤ کا ہم پر گہرا اگر پڑا ، مشہور ادارتا اور اُن کے سردھرم سمبھاؤ کا ہم پر گہرا اگر پڑا ، اُس زمانے کی بلا' چترکای آدی میں صاف انیک دیشوں اور اُس کی چھاپ دکیائی دیتی ہے ، انیک دیشوں اور انیک دھرمس کے رنگ اور اُن کی چھاپ دکیائی دیتی ہے ،

شری نهکرت شرن کا کہنا ہے کہ بھارت کے اِنہاس مھی اُراشقریتا کی یعنی بھارت کے ایک راشقر ہوتے کی سب سے پہلی جھلک ہیں اُس سے ملتی ہے جب نه ودیشی شک اور کشن بادشاہ اس نے جنبیں شاہی کیا جاتا نها سیکتگیں اور اِس کے بیٹے محصود کے حملوں سے بھارت کی رکھا کرنے کے لئے دیھی کی سب شکتیوں کو پہلی بار مالنے کی کوشش کی اِنہاس میں بھارت کی اِیکنا ہمیں سب سے پہلے اُسی سیے چمکتی ہوئی دکھائی دیتی ہے۔

گہت یک بہارت کا سنہرا یک مانا جانا ہے . واستو میں اُس یک کا سارا ہویں اِن ہی باہر کے اثروں کی دین تھا .

هن جاتی کے لوگ جو سب سے آخیر میں بھارت آنے چین کی ھیونگ - نو جاتی سے سمبندھ رکھتے ہے ۔ یہ وهی هن تھے جنہوں نے رومن سامراجیہ کی کمر ترقی ۔ بھی لوگ بھارت کے میدانہں میں بھی آکر بسے ۔ چار مغدو جاتوں کے آندر یہ آسانی سے نہ کیپ سکے ۔ وہ اِتنے شکتی شائی تھے کہ اُن سب نے شردر بینکر رهنا سوئرکار نہیں کیا ۔ اِس لئے اُنھیں چیتری مائنا پڑا ۔ بہت بڑے پیمالے پر آبو بھاڑ کے اُرپر ایک شدھی سنسکار ھوا ۔ اور بانچ راجبوت نلوں کے نام سے جنھیں 'اگنی کل' کہا جاتا ہو جاتا ہوں کہ میں سے پیدا ھوائے ھیں ، اِس طرح ، یہ سب سولہ آنے ھوں کھری داجھوں کے سب شریوں میں 'جبھر' کا رواج آنھیں سے چھتری ھوگئے ، راجھوت اُسٹریوں میں 'جبھر' کا رواج آنھیں سے چھتری ھوگئے ، راجھوت اُسٹریوں میں 'جبھر' کا رواج آنھیں سے چھتری ھوگئے ، راجھوت اُسٹریوں میں 'جبھر' کا رواج آنھیں سے چھتری ھوگئے ، راجھوت اُسٹریوں میں 'جبھر' کا رواج آنھیں سے چھتری ھوگئے ، راجھوت اُسٹریوں میں 'جبھر' کا رواج آنھیں سے چھتری ھوگئے ، راجھوت اُسٹریوں میں 'جبھر' کا رواج آنھیں سے چھتری ھوگئے ، راجھوت اُسٹریوں میں 'جبھر' کا رواج آنھیں سے چھتری ھوگئے ، راجھوت اُسٹریوں میں 'جبھر' کا رواج آنھیں سے چھتری ھوگئے ، راجھوت اُسٹریوں میں 'جبھر' کا رواج آنھیں سے خبرانی

اهیر' گوجر' جات اور راجهوت هندو سماج کا ایک زبردست انگ هوتے هوئے بھی اپنے سندر' سدول شریورں اور حاص سبھاؤ کے کارن آج بھی اِس دیعی میں سب سے ادھک انگ چمکتے هیں ، کہنے دو یہ سب ودیشی هیں ،

لیکیک کا کہنا ہے کہ اِس کے بعد بھارت میں وہ لوگ آئے جنھوں نے آجکل کی بھارت کی کلمچور کو روپ دینے

مهدر فاير سب سے اربعک عصه ليار نبن 712 عيسوس مين معمد این السم کے ادھیں عربوں کا حملہ ہوا۔ لیمیک کے شبد میں جسم المائو سبھٹرا کو چنکالے اور بوعالے میںعربوں لے سب سے ادعک سنجهداري لا حصه لها ه . • محمد صاحب كي مرتبو كي أسي برس کے اثار پررب میں سندعر اندی اور آکسس تدی سے لیکو یعجم میں اِسپین یونی انائنک میاساگر کے کنارے تک اور اُتو میں کوسین سدر سے لیعر دکھی میں ٹیل قدی تک کا سارا علام عربوں کے اُنھیں تھا ، اِس سارے علقے میں اُنھوں نے سب جگه ودیا کی خوب رکشا کی اور اُس کو ایک جگه سے لیجاکر درسری جکہ پرچار کیا ۔ اُنہوں نے یونانی فلسفے اور یونائی وكيان كي ركشا كي أور أنهين ساريه يورپ مين پهيلايا ، بهارت سه گنوٹ اور ویدک کو لیجاکر أن کی مدد سے أنهوں نے بورپ کے گیاں کو بوھایا ۔ نجین سے کاغل اور چھائنے کی کلا کو لیسجاکر آٹھوں نے دنیا بھر میں بھیلایا ، ودیا اور وگیاں کے اِس طرح بھیائے سے بعن میں جو جو چمتکار دیکھنے کو ملے وہ سب کو معلوم هیں . یہ سب آجکل کی دنیا کو عربوں کی دین ہے ."

اِس کے بعد جو مسلمان جاتیاں الک الگ دیشوں سے بھارت میں آئھں اور بس گئیں اُنھوں نے بھی بھارت کی ملی جئی کلچر کو روپ دینے میں بہت ہوا اور گہرا حصه لها فارسی اور عوبی دونوں زبانیں اُس دیش میں آئر ایک ہوے درجہ تک بھارت کے رلگ میں رنگ گئیں ، بہت سے باعر سے آنے والے مسلمانوں نے بھارت کی بھاشاؤں آور بولیوں میں اکھنا اور کاوید رچا کرل شروم کیا ۔ آتر میں کبری بولی کا ایک نیا روپ ساملے آیے جسے أردو كيا جاتا هے . لائيه أور سوئدريه فصاحت اور بالفت میں کھڑی ہولی کا یہ نیا روپ پہلے کے روپ سے کہیں ہوہ گیا ، ہندوں اور مسلمانیں دونوں لے ملکر کھڑی بولی کے أِس نَيْد روب كو جمكاياء أردو كا إسلام دهوم سے كوئي خاص سبادہ نہیں کے بولی بہارت سے باہر کسی بھی دوسرے دیک میں نہیں ہولی جاتی . یہ سب بھارت وآسیوں کی ملی جلی سيتي هي ، ذهير عديد هندي گدية ساهتيه كي رچنا مين بھی آس نے بہت ہوی مدد دی . اسلم کے ساتھ ساتھ مالو ایکتا کی ایورو کلینا نے اِس دیش میں جنم لیا . تصف یعنی ضفی وچاروں نے اِس دیھ میں آیک نئی سماجی کرائٹی پیدا کردیی . کبیر' نانک اور آنیک اور سنت مهانما اسی کرانتی کی یهداوار اور آس کے علم بردار تھے .

طرح طرح کی کا اور کاریکری میں بھی اِس دیش کے اُندر اِسلام کے آنے کے ساتھ ساتھ ایک نائی جان پیدا ہوگئی ، عبارترں کے بنانے میں مبل کا اُس سے نک کی سب سے

में शायद मधसे अधिक हिस्सा लिया. सन् 712 ईसवी में मुहम्मद बिन क्रासिम के अर्थ न अरबों का हमला हुआ. लेखक के शब्द हैं :- "मानव सभ्यता की चमकाने और बढाने में अरबों ने सब से अधिक समभवारी का हिरसा लिया है. मुहम्मन साम्ब की साय के अस्सी बास के अन्तर पूरव में सिन्धु नदी और आकसस नदी से लेकर पश्किम में स्पेन यानी अतलान्तिक महासागर के किनारे रक, और उत्तर में कैश्यियन समद से लेकर दक्खिन में नील मदी तक का सारा इलाक़ा अरबों के अधीन था. इस सारे इलाक़े में उन्होंने सब जगह विद्या की खब रक्षा की और इसको एक जगह से ले जाकर दूमरी जगह प्रचार किया. चन्होंने यूनानी फलमफ़े और यूनानी विज्ञान की रक्षा की श्रीर उन्हें सारे योरप में फैलाया. भारत से गणित श्रीर बैधक को लेजाकर उनकी मदद से उन्होंने योरप के ज्ञान को बढाया. चीन से काराज और छापने की कला का ले आकर उन्होंने दुनिया भर में फैलाया. विद्या और विज्ञान के इस तरह फैलने से बाद में जो जो चमरकार देखने की मिले वह सब की मालम हैं. यह सब आजकल की दुनिया को अवनों की देन हैं."

इसके बाद जा मुसलमान जातियां अलग-अलग देशों से भारत में आई और बस गई जन्होंने भी भारत की मिली ज्राती कलचर को हरा देने में बहुत बड़ा और गहरा हिस्सा लिया. फारसी और अग्बी दोनों जब नें इस देश में आकर एक बड़े दरजे तक भारत के रंग में रग गई', बहुन से बाहर से आने वाले मुमलमानों ने भारत की भाषाओं . श्रीर बोलियों में लिखना श्रीर काव्य रचना करना शरू किया. इतर में खड़ी बाली का एक नया रूप सामने आया जिसे डर्द कहा जाता है. लालिस्य श्रीर सीन्दर्य, फसाहत श्रीर बलारात में खड़ी बोली का यह नया रूप पहले के रूप से कहीं बढ गया. हिन्दु श्री श्रीर मुसलमानों दोनों ने मिलकर खड़ी बाली के इस नए रूप का चमकाया. उर्दे का इसलाम धर्म से कोई खास सम्बन्ध नहीं, यह बोली भारत से बाहर किसी भी दूसरे देश में नहीं बोली जाती. यह तब भारत-बासियों की मिली जुली सम्पत्ति है. धीरे-धीरे हिन्दी गद्य साहित्य की रचना में भी इसने बहुत बड़ी मदद दी, इसलाम के साथ साथ मानव एकता की अपूर्व करपना ने इस देश में जन्म लिया. तसन्त्रुफ यानी सुकी विचारों ने इस देश में एक नई समाजी क्रान्ति पैदा कर दी. कबीर, नानक और अनेक और सन्त महात्मा उसी क्रान्ति की पैदाबार और इसके अलमकादार थे.

तरह तरह की कला और कारीगरी में भी इस देश के अन्धर इसलाम के आने क साथ साथ एक नई जान पैदा हो गई. इसारतो के बनाने में सुराल कला उस समय तक की सबसे शानदार और सब से सुन्दर कला थी. नए ढंग की मीनारें और नए गुम्बद, में इर बें, महल, किले और मसिनदें, सुन्दर मक्कबरें, बारा चीर नई नई तरह के फल और फूल देश भर में दिखाई देने लगे. आगरे का ताज भारत के मस्तक पर कूमर की तरह चमकने लगा और दुनिया भर की सुन्दर से सुन्दर इमारतों में गिना जाने लगा. मुराल चित्र कला अपने पुराने नमूने ईरानी चित्र कला से सुन्दरता में कहीं बढ़ गई. सगीत में भी उस जमाने की देन उतनी ही गहरी थी. नए रागों और नई नई लयों ने भारत के संगीत में चार चाँद लगा (दये.

भी भगवत शरण उपाध्याय का कहना है कि सम्राट अक्षय की धार्मिक उदारता को देखकर हमें सम्राट अशोक की फिर से थाद भा जाती है. यह दूसरी बात है कि अपने दीने इलाही के अन्दर सब धर्मी की बुनियादी बातों को मिला देने की कोशिश में अकबर समय से शायद तीन सौ बरस पहले पैदा हो गया था. मुग्नां ने ही भारत की राष्ट्रीय पोशाक को रूप दिया. राटी और तबा, केवल यह दानों शब्द ही बाहर के नहीं हैं इनका उपयोग भी हमने आगन्तुक मुसलमानों से ही सीखा. आज राटी शब्द चपाती के मानी में भी और साधारण माजन के माने में भी भारत के कोने कोने में बोला जाता है.

श्री भगवत शरण के अनुसार योरप वालों या अंगरें जों की देन भी हिन्दुस्तानी कलचर की इतनी कम नहीं हैं. हमारी आजकल की राष्ट्रीयता की कल्पना, भारत के एक देश होने का विचार, राजकाजी आजादी का प्रेम. हमारा आज का ममाजी जीवन, हमारे कल कारखाने, नया विज्ञान, हमारी पालिमेन्द, हमारी राजकाजो संस्थाएं, हमारी शिक्षा, हमारा साहित्य इन सब के अन्दर योरप का असर हमें साफ चमकता हुआ दिलाई दे रहा है. योरप वालों की नीयत में कहीं कहीं जो कुछ बुराई रही हो, और बुराई काफी थी, इसमें सन्देह नहीं कि योरप वालों ने ही हमारे बहुत से पुराने खजानों को खोद कर हमारे सामने रक्खा. उन्होंने ही सम्राट अशोक के शिलालेखों से हमारी जानकारी कराई. सैकड़ों बुराइयों के होते हुए भी हिन्दुस्तानी कलचर को चनकी देन एक स्थाई देन है.

धन्त में श्री भगवत शरण उपाध्याय ने संसार की कलचर को भारत की देन की चरचा की है. उन्होंने दिग्वाया है कि भारत ने हमेशा खुले दिन से दूसरों से लिया है और खुले दिल से दूसरों को दिया है. उनकी राय में महात्मा बुद्ध के समय से लेकर महात्मा गांधी तक और खाज तक दुनिया में शान्ति क्रायम करने के लिये भारत के प्रयत्न कुछ कम गर्व की चीज नहीं हैं. श्रभी दुनिया इतनी तेजी से बदल रही है कि उस पर खाँखों का टिक सकना भी कठिन है. شائدار اور سب سے سادر کلا تھی۔ نئے تھنگ کی میناریں اور نئے گمبد' محرابیں' محل' تلعے اور مسجدیں' سندر مقبرے' باغ اور نئے نئی نئی طرح کے پہل اور پہول دیش بھر میں دکھائی دینے لئے۔ اگرے کا تاج بھارت کے مستک پر جھومر کی طرح چمکنے لگا اور دنیا بھر کی سندر سے سندر عبارتوں میں گنا جانے اگا مخل چتر کلا سے سندرتا میں کہیں بچتر کلا سے سندرتا میں کہیں بچھ گئی ۔ سنکیت میں بھی اُس زمانے کی دین اُتلی ھی گہری تبی ، نئے راگوں اور نئی نئی لیوں نے بھارت کے سنگیت میں چار چاند لگا دیئے ،

شری بهکرت شرن آپادههائه کا کہنا ہے که سمرات اگرد کی دهارمک آدارتا کو دیکھکر همیں سمرات اشوک کی پھر سے یاد آ جاتی ہے ۔ یہ دوسری بات ہے که اپنے دین الہی کے اندر سب دهرموں کی بنیادی باتوں کو ملا دینے کی کوشش مهی اکبر سمے سے شاید تین سو برس پہلے پیدا هوگیا تھا ، مغلوں نے هی بھارت کی راشڈریه پوشاک کو روپ دیا ۔ روٹی اور نوا کھول یہ دونوں شبد هی باهر کے نہیں هیں اُن کا آپنوگ بھی هم نے آگننگ مسلمانوں سے هی سیکھا ، آج روٹی شبد چھاتی کے معنی میں بھی اور سادهاری بھوجی کے معنے میں بھی بھارت کے کوئے میں بھی بھارت کے کوئے میں بھی بھارت کے

شری بھتوت شرن کے انوسار یورپ والوں یا انگریؤوں کی دین بھی ھندستانی کلچو کو اِتنی کم قبیس ھیں ۔ ھماری اُجاک کی واشقرئیتا کی کلینا' بھارت کے ایک دیش ھولے کا وچار' راجکلجی آزادی کا پریم' ھمارا آج کا سماجی جیون' ھمارے کل کارخانے' نیا وگیان' ھماری پارایمنٹ' ھماری راجکلجی ساستھائیں' ھداری شکشا' ھمارا ساھتیۃ اِن سب کے اسر یورپ کا اثر ھمیں صاف چمکتا ھوا دکیائی دے رھا ھے ۔ یورپ والوں کی نیت میں کہیں کہیں جو کچھ برائی رھی ھو' اور برائی کئی نیت میں میدن سندنج نہیں کہ یورپ والوں نے ھی ھمارے بہت سے پرائے خزانوں کو کہوں کر ھمارے سامنے رکھا ، انھوں نے بہت سے پرائے خزانوں کو گھوں گر ھمارے سامنے رکھا ، انھوں نے ھی سماری جانکاری کرائی ۔ سیکورس برائیوں کے شوتے ھوئے بھی ھندستانی کلچور کو سیکورس ایک استھائی دیں ھے ،

الت میں شری بھترت شرن آپادھیائے نے سنسار کی کلچور کو بھارت کی دین کی چرچا کی ہے۔ اُنھوں نے دکھایا ہے کہ بھارت نے ممیشہ کینے دل سے دوسروں کو دیا ہے ۔ اُن کی رائے میں مہاتما بدھ کے سمے سے لیکر مہاتما کلادہ یک اور آج تک دنیا میںشانتی قایم کرنے کے لئے بھارت کے پریان کچھ کم گرو کی چیز نہیں ہیں ، اُبھی دنیا اِتنی تھڑی ہے بدل رہی ہے کہ اُس پر آنعوں کا تک سکنا بھی کلوں ہے .

हुनिया इतनी छोटी हो गई है कि सारी दुनिया हथेली पर रखकर एक साथ देखी जा सकती है, "दुनिया के लिये यह एक छुम लक्ष्मण है कि अब हम सारी दुनिया को देख सकते हैं और अलग अलग दुकड़ियों से ऊपर उठकर सारे मानव समाज को अपना कह सकते हैं. पिट्छम ने बाहर की मारी तरक्की में कमाल किया है. पूरब ने माहे को भी हहानी रूप दिया है. अब जरूरत है कि यह दोनों मिलकर एक मानव शरीर को रूप दें. भारत अपने हृदय को विशाल करके इस नेक और जरूरी काम में दुनिया को बहुत बड़ी मदद दे सकता है." हम श्री भगवत शरण उपाध्याय को उनके उदार प्रयत्नों पर बधाई देते हैं और चाहते हैं कि बह इस से कहीं अधिक बड़े अंथ के रूप में अपनी खोजों और उनके नतीजों को जल्द से जल्द देश के सामने रख सकें. دنیا اوننی چهوئی هوگئی هے که ساری دنیا هتیلی پر رکھر آیک ساته دیکھی جاسکتی هے "دنیا کے لئے یه آیک شبه لکشن هے که اب هم ساری دنیا کو دیکھ سکتے هیں اور الگ الگ تکویس سے آوپر آٹپکر سارے مانو سماج کو آپنا کو سکتے هیں ، پچھم نے باهر کی مادی ترقی میں کمال کیا هے ، پوب نے مادے کو بھی روحانی اورپ دیا هے ، آب ضرورت هے که یه دونوں ملکر ایک مفو شریر کو روپ دیں ، بهارت آپنے هردنے کو رشال کرکے اِس نیک آور ضروری کام میں دنیا کو بہت بڑی مدد دے سکتا هے" نیک آور ضروری کام میں دنیا کو بہت بڑی مدد دے سکتا هے" بھم شری بھکوت شری آپادهیائے کو آن کے آدار پریتنوں پر بدھائی درتے هیں آور چاھئے هیں که وہ اِس سے کہیں ادھک بوجہ گرنته کے روپ میں آپلی کووجوں اور آن کے نتیجوں کو جلد سے جلد دیش کے سامنے رکھ سکیں ،

The state of the s

—सुन्दरलाल

--سادر الل .

700 PAGES, 32 ILLUSTRATIONS 2 COLOURED MAPS

"CHINA TODAY"

PRICE

BY PANDIT SUNDARLAL

Rs. 7. 8. 0

A vivid narration of the glorious and wenderful achievements of New China... A picture of China which is both convincing and authentic... the best book that has come out so far on New China in the English language ... the most objective in approach and comprehensive in treatment.

—National Herald, Lucknow.

Highly informative...throws vivid light on conditions obtaining in that country...a book which deserves to be wide'y known

Leader, Allahabad.

Encolopacdic...characterized by acute observation of detail as well as by...instinctive grasp of the fundamental perspective...To read it is verifiably like accompanying the Mission on its thrilling voyage of discovery in New China.

— Blitz, Bombay

A mine of information which gives a picture of China as nothing else dose...the best guide to New. China...Those who would like to understand what is happeing in New China can do not better than to study it.

—Bharat Jyoti, Bombay

The wealth of information it gives on China new and old...makes fascinating reading...is comprehensive and informative and must therefore interest all students of public affairs.

—Indian Express, Madras

China Today is an eloquent tribute to his (Pandit Sundarlal's) shrewd understanding of men and matter... brings to the lighty mighty endeavour of the Chinese People to rebuild their great nation on firm new foundations for a tomorrow which is theirs.

—Vigil, Delhi.

श्री ली ताओ

شرى لى تاؤ

प्राचीन समय में अनेक बार द्वाएं तैयार करने में, 'छन्हें बरतने में और जराही यानी चीर फाइ की विद्या में चीन दुनिया को रास्ता दिखाता रहा है. लेकिन सामन्तशाही यानी खानदानी राजाओं और सरदारों का राज हमारे यहां इतने अधिक दिनों तक रहा कि उसके कारण जनता में बल न आ सका और हमारी प्राचीन वैद्यक विद्या का बढ़ना रुक गया. उसके बाद हमारे राजकाजी और कलचरी जीवन पर देशी और विदेशी सम्राजशाही का जोर रहा जिससे हमारे देश के नई तालीम पाए हुए डाक्टरों ने देश की पुरानी वैद्यक विद्या की तरक से बेपरवाही की.

फिर भी चीन की पुरानी वैद्यक विद्या बराबर जारी रही. उसके अनुसार इलाज करने वाले हकीम लाखों और करोड़ों जनता की सेवा करते रहे हैं और उन्हें अच्छा करते रहे हैं. सन् 1949 से, जब से हमारा मुल्क आजाद हुआ है, बहुत से उस्ज जिन्हें हमारी पुरानी बैद्यक विद्या ने मान रखा था और उसके इलाज के तरीक़े साइंसी ढक्क से परखे जा चुके हैं और आजकल के उन्नत से उन्नत विचारों के अनुसार ठीक साबित हा चुके हैं. इस तरह हमारी पुरानी बैद्यक विद्या की महान उपयागिता साबित हो चुकी है.

आजकल के चीन में पुराने ढक्क से इलाज करने वाले लोग और नए ढक्क से सीखे हुए डाक्टर दोनों मंजूद हैं. दोनों मिलकर काम करते हैं और दोनों एक दूसरे से सीखते हैं. पर चीनी वैद्यक विद्या और बाक़ी दुनिया के इलाज के तरीक़े इन दोनों के बीच सिद्यों से एक खाई पैदा हो गई है. इस खाई पर जिस दिन एक पुल बन जायगा तो हमें विश्वास है कि उससे चीनी जनता की तन्दुरुस्ती को और सारे मानव समाज की तन्दुरुस्ती दोनों को बड़ा लाभ होगा.

चीन की वैद्यक विद्या कितनी पुरानी है इसका अन्दाजा इस बात से लग सकता है कि चीन में ईसा से तेरह सौ वरस पहले के इस तरह के लेख हिड्डियों पर मिले हैं जिनमें आदमी की बहुत सी बीमारियों का जिक और उनका वयान दिया हुआ है. इसके थाड़े दिनों बाद का एक प्रथ The Book of Rites (रिवाजों की किताब) मौजूद है जिसमें खलग अलग रागों के लिये दवाओं, जराही, ताक़त की दबाओं, शक्ति देने वाले खानों और जानवरों

پراچین سم میں انیک بار دوائیں اتیار کرتے میں' آنھیں برتنے میں اور جراحی یعنی چیر پھاڑ کی ردیا میں چین دنیا کو راسته دنھاتا رہا ہے ۔ لیکن سامات شاهی یعنی خاندائی راجاؤں اور سرداروں کا راج همارے یہاں اتنے ادھک دنوں تک رہا کہ اِس کارن جنتا میں بل نہ آسکا اور هماری پراچین ریدیک ودیا کا بڑھنا رک گیا ۔ اِس کے بعد همارے راجکاجی اور تلچوں چیوں پر دیشی اور ودیشی سامراج شاهی کا زور رہا جس سے همارے دیش کے نئے تعلیم پائے ہوئے دائٹروں نے دیش کی پرائی ودیک دریا کی طرف سے پرواھی کی ،

پھر بھی چین کی پرانی ویدیک ودیا ہراہر جاری رھی ، اس کے انوسار علاج کونے والے حکیم لاکھوں اور کررزوں جنتا کی سھوا کرتے رہے ھیں۔ سن 1919 سے سھوا کرتے رہے ھیں۔ سن 1919 سے جب سے ھمارا ملک آزاد ھوا ھے، بہت سے آصول جنہیں ھماری پرائی ویدیک ودیا نے مان رکھا تھا اور اِس علاج کے طریقہ سائنسی تھنگ سے پرکھے جا چکے ھیں اور آجکل کے آنت سے آنسور تھاری برانی ویدیک ودیا کی مہان آپیوگتا ثابت ہو چکی ھے، ھماری پرائی ویدیک ودیا کی مہان آپیوگتا ثابت ہو چکی ھے،

آجکل کے چین میں پرائے تھنگ سے علاج کرنے والے لوگ اور نئے تھنگ سے سیکھے ھوئے ذاکٹر دونوں موجود ھیں ، دونوں ملکر کام کرتے ھیں اور دونوں آیک دوسرے سے سیکھتے ھیں ، پر چینی ویدیک ودیا اور باتی دنیا کے علاج کے طریقے اُن دونوں کے بیچ صدیوں سے ایک کھائی پیدا ھو گئی ھے ، اِس کھائی پر جس دن ایک پل بنجائیکا تو ھدیں رشواس ھے کہ اُس سے چینی جنتا کی تندرستی کو اور سارے مانو سماج کی تندرستی دونوں کی بہت ہوا لابھ ھوگا ،

چین کی ریدیک ردیا کتنی پرانی هے اِس کا اندازہ اِس بات سے لگ سکتا هے کہ چین میں عیسی سے تھرہ سو ہرس پہلے کے اِس طرح کے لیکھ ھڈیوں پر ملے ھیں جن میں آدمی کی بہت سی بیماریوں کا ذکر اور انکا بیان دیا ھوا هے۔ اِس کے تھوڑے دنوں بعد کا ایک گرنتھ The Book of Rites (رواجوں کی کتاب) مرجود هے جس میں انگ الگ روگوں کے لئے دراؤں ' جراحی' طاقت کی دواؤں' شکتی دینے والے کھانوں اور جانوروں

की बीमारियों के इलाज सबका बयान है. बसी जमाने की एक और किताब The Book of Odes (गीतों का संपद) है जिसमें सी से ऊपर जड़ी बूटियों और दवाओं को बयान किया गया है.

उसके बाद चीन के अलग अलग हिस्सों में तिजारत बदती गई और चीनी वैद्यक विद्या भी तिजारत के साथ साथ सारे देश में फैलती गई. उन दिनों चीनी वैद्य एक तरह की पत्थर की छुरी से फोड़ों को चीरते थे. उस छुरी को 'पीन शिह' कहते थे. रांगों के इलाज के लिये वह तरह तरह की जड़ी बृटियों को काम में लाते थे. दवाछों छीर चीर फाइ के अलावा उन दिनों के इलाज के दो तरीक़े खास तौर से बयान करने की चीज हैं. एक तरीक़े में लम्बी पतली धातु की सुइयों के जारिये उन सुइयों को जिस्म के अन्दर दाखिल करके आदमी की सुस्त पड़ी हुई नसों को फिर से जगाया और ठीक किया जाता है. यह इलाज अलग अलग बीमा-रियों के लिये शरीर के अलग अलग हिस्सों पर किया जाता है. इसे अगरंजी में ऐक्युपंकचर (Acupuncture) कहते हैं. दूसरा तरीका है जास तरह की यूटियों को जलाकर उनसे जिस्म क किसी खास हिस्से का संकना इससे भी नसों में जान आजाती है पर खाल को नुक्रस न नहीं पहुँचने पाता. इसे अंगरेजी में भौक्सीवशचन (Moxibustion) कहते हैं. यह दोनों तरीक्रे ईसा से बारह सी बरस पहल से चले आ रहे हैं. और आज तक चीन के सरकारी अस्पतालों तक में बहुत से रोगियों का अच्छा करने के लिय काम में लाए जाते हैं. रोगों के इलाज के लिये शरीर की मालिश भी उन दिनों तरह तरह से की जाती थी.

ईसा से पाँच सी बरस पहले चीन में आम वैद्य अलग होते थे जो जनता का इलाज करते थे और द्रवारी बैद्य अलग होते थे जो सम्राट और उनके घर वालों का इलाज करते थे. रोग का पता उन दिनों रोगी के सौंस लेने के ढक्क से, उसके चेहरे के रंग से और उसकी आवाज से लगाया जाता था.

ईसा से पाँच सौ बरस पहले चीन के एक मशहूर हकीम पीन चु एह ने दुनिया में पहली बार नच्छा (नाड़ी) से रोग का पता लगाने का तरीक़ा इंजाद किया. दुनिया की वैद्यक विद्या में यह एक बहुत बड़ा इन्क़लाब था. नच्छा यानी नाड़ी से रोग के पता लगाने का तरीक़ा छठी सदी ईसवी में चीन से कोरिया और वहां से जापान पहुँचा. नवीं सदी ईसवी में यह तरीक़ा खरब पहुँचा. मशहूर मुसलिम हकीम बू खली अबू सैना ने दसवीं सदी ईसवी में वैद्यक के उपर अपनी मशहूर किताब लिखी जिसमें उसने नच्छा से रोगों का पता लगाने की चरचा की. बू खली की यह किताब इग्रठारहवीं सदी ईसवी तक यूरप के सब हकीमों और کی بیماریوں کے علاج سب کا بیان ہے ۔ اِسی زماتہ کی ایک اور کتاب The Book of Odes (گیتوں کا سنکرہ) ہے جس میں سو سے اوپر جتری بوئیوں اور دواؤں کو بیان کیا ۔ گیا ہے ۔

اس کے بعد چین کے الگ الگ حصوں میں تجارت ہوھتی گئی اور چینی ویدک ودیا ہمی تجارت کے ساتھ ساتھ سارم دیش میں پهیلتی گئی . ان دنوں چینی وید ایک طرح کی پاہر کی چھری سے پھوڑرں کو چیرتے تھے ، اِس چھری کو "پین شفا" کہتے تھے ، درگوں کے علیے کے کے وہ طرح طرح کی جڑی ہوتیوں کو کم میں لاتے ہے . دواؤں اور چیز ہار کے عارہ اِن دنوں کے علیے کے دو طریقے حاص طور پر بیان درنے کی چیز ھیں ، ایک طریقے میں لمبی پالی سات کی سرایوں کے زریعہ ان سوئیس کو جسم کے آدر داحل کو کے آدمی کی سبت پڑی ھوئی نسرس کو پھر سے جگایا اور ٹھیک کیا جاتا ہے ، یہ علاج الک انگ بیماریس کے اٹیے شوہر کے انگ انگ حصوں پر کیا جانا في أم أنكريوى مين أيكيوبتكنجر (Acupuncture) کہتے میں، درسرا طریقہ فے حاص طرح کی ہوٹیہں کو جلا کر اِن سے جسم کے کسی خاص حصه کو سیکنا ، اس سے بھی ٹسوں میں جان أجاتي هے ير الل كو نقصان نهيں پهونچنے يانا . إس انکرنوی میں مواسی بشین (Moxibustion) کیتے ھیں . یه دونوں طریقے عیسی سے بارہ سو برس بہلے سے چلے آرہے میں، اور آج تک چین کے سرکاری اسپتالوں تک میں بہت سے روگیوں نو اچھا کانے کے لئے کام میں اللہ جاتے عیں، روگس کے علیے کے لئے شریر کی مالف بھی اِن دنہن طرح طرح سے کی چآنی تھی .

اسی سے پانچ سو برس پہلے چھن میں عام وید اگ ھوتے تھے جو جنتا کا علاج کوتے تھے اور درباری وید الگ ھوتے تھے جو سرات اور اُن کے گھر والوں کا علاج کرتے تھے ، درگ کا پٹا اِن دنوں روگی کے سانس لیانے کے دھنگ سے اِس کے چہرے کے رنگ سے اور اس کی آواز سے نکایا جاتا تھا ،

عیسی سے پانچ سو ہرس پہلے چین کے آیک مشہور حکیم پین چو، ایمے نے دنیا میں پہلے بار نبض (نازی) سے روگ کا پتم لگانے کا طریقہ آیجاد کیا ، دنیا کی ویدک ودیا میں یہ ایک بہت ہڑا آنقلاب تھا ، نبض یعنی فازی سے روگ کے پتا لگانے کا طریقہ چھٹی صدی عیسوی میں چین سے کوریا آور وہاں سے جاپان پہونیچا ، نویں صدی عیسوی میں یہ طریقہ عرب پہرنچا ، مشہ ر مسلم حکیم برعلی آبو سینا نے دسویں صدی عیسوی میں ویدک کے آور اپنی مشہور دتاب لکھی جس میں اس نے نبض سے روگن کا پتا لگانے کی چہچا کی ، ہوعلی کی اس نے نبض سے روگن کا پتا لگانے کی چہچا کی ، ہوعلی کی یہ کتاب آئیارھویں صدی عیسوی تک پورپ کے سب حکیموں آور

डाक्टरों को पहाई जाती थी और यूरपीय डाक्टरी की बुनियारी किताब मानी जाती थी. हिन्दुस्तान की वैचक की किताबों में तेरहवीं सदी ईसवी से पहले नक्ज देखने का जिक नहीं आता. इससे माजूम होता है कि हिन्दुस्तान ने भी नक्ज देखने का तरीका चीन ही से लिया.

चीन की पुरानी किताबों में लिखा है कि उस जमाने का एक चीनी राजकुमार बीमार पड़ा. वह बेहोश हो गया. दरबार के वैद्यों ने कह दिया कि राजकुमार मर चुका. पीन चु एह ने नब्ज देखकर पता लगाया कि राजकुमार अभी जिन्दा है. उसने इलाज किया और राजकुमार अच्छा हो गया.

पीन चु एह चीन की अलग अलग रियासतों में गया. एसने सब जगह के इलाज के तरीक़ों का अध्ययन किया और सब जगह अपने तरीक़े का प्रचार किया. उससे पहले धीन में कई जगह रोगों का इलाज जादू टांनों से किया जाता था. पीन चु एह ने इस तरह के अंध विश्वासों का कड़ा विरोध किया और साइंसी ढङ्ग से शरीर के अलग अलग अंगों और उनके कामों के अनुसार इलाज के तरीक़ पर कितावें लिखीं.

ईसा से दां ढाई सी बरस पहले सारे चीन पर पहली बार एक राज क्रायम हुआ. चीनी वैद्यक ।वद्या ने अब और तेजी के साथ तरक्षकी करनी शुरू की. ईसा से अब्बीस बरस पहले ली चु-कुचो नाम के एक चीनी हकीम ने बहुत सी पुरानी चीनों किताबों को दुइराया. इनमें एक मशहूर किताब 'हु आग ति नेईचिंग' बीसियों पीदियों तक चीनी इकीमों को काम देती रही. इस किताब की एक खास बात यह है कि आजकल के नए से नए डाक्टरी उसल के अनु-सार यह किताब रांग के पैदा हां जाने पर उसका इलाज करने की निसवत रोग के पैदा हाने ही को राकन पर अधिक जोर देती है. इसके अनुसार आदमी का शरीर सारे विश्व का एक हिस्सा है और आदमी अगर बाहर की तब्दी-लियों के अनुसार अपनी आदतो को भी बदलता रहे तो वह रांग से बचा रह सकता है. उसमें लिखा है कि बीमारी श्रा जाने के बाद उसका इलाज करना ऐसा ही है जैसा प्यास लगने पर कुवाँ खोदना, या लड़ाई छिड़ जाने पर हथियार गढ़ना. बीमारियों का इलाज बीमार पड़ने से पहले होना चाहिये, और उसका तरीक़ा है ठीक जीवन बिताना, ठीक तरह का खाना खाना, ठाक तरह से काम और आराम करना. और अपने दिल और दिमारा दानों का सदा शान्त रखना.

एक और पुरानी किताब 'शेन नुंग पेन त्साओ चिंग' है जो ईसा से लगभग एक सौ बरस पहले लिखी गई. उसमें तीन सौ से ऊपर दवाओं और उनके इस्तेमाल की चरचा قائلوں کو پڑھائی جاتی تھی اُور پورٹی قائلوں کی بایادی کتابوں میں کتابوں میں تیرھویں صدی عیسری سے پہلے نبص دیکنے کا ڈور نہیں آتا، اِس سے معلوم ہوتا ہے کہ هندستان نے بھی نبش دیکھنے کا طریقہ چھن ہے سے ایا ،

چینی کی پرائی کتابیں میں لکھا ہے کہ اِس زمائے کا ایک چینی رائے کمار بیمار پڑا ۔ وہ بیھرش ہو گیا ۔ دربار کے ویدیوں فے کہہ دیا که راجکمار صو چکا ۔ پین چو ایض نے تبض دیکھ کو پکا لگایا که راج کمار ابھی زندہ ہے ۔ اُس نے علاج کیا اور راج کمار ابھی وندہ ہے ۔ اُس نے علاج کیا اور راج کمار ابھی وندہ ہے ۔ اُس نے علاج کیا اور راج کمار ابھی وندہ ہے ۔ اُس نے علاج کیا اور راج کمار ابھی وندہ ہے ۔ اُس نے علاج کیا اور راج کمار ابھی وندہ ہے ۔ اُس نے علاج کیا اور راج کمار ابھا ہو گیا ۔

پین چو ایم چین کی الگ الگ ریاستوں میں گیا ۔ اُس نے سب جگہہ کے علاج کے طریقرں کا اددعین کیا اور سب جگہہ اپنے طریقہ کا پرچار کیا ۔ اِس سے پہلے چین میں کئی جگہہ روگوں کا علاج جدو ٹونوں سے کیا جانا تھا ، پین چو ایم نے اِسی طرح کے اددہ وشواسوں کا کڑا ورودہ کیا اور سازنسی ڈسنگ سے شریر کے الگ الگ الگ الگوں اور اُن کے کا۔وں کے انوسار علاج کے طریقہ پر کتاب س لکھیں ،

عیسیل سے دو دھائی سو ہرس پہلے سارے چین پر پہلی ہار ایک راج فائم ہوا ، چینی ویدک ردیا ہے آب اور تیزی کے سانھ ترقی درئی شروع کی ، عیسی سے چھپیس برس پہلے لی ، چو افواؤ نام کے ایک چینی حکیم نے بہت سی پرانی چینی كة بيرن و دهرايا . إن مين ايك مشهور نتاب العورانك مي ليكي چنگ بیسوؤں پیرمیوں نک چینی حکیموں کو کام دیتی رعی، اِس نتاب ہی ایک حاص بات یہ فے دد آجال کے نئے سے نئے قائشری أصول کے انرسار یہ ساب روک کے پیدا ہو جانے پر اِس کاعلاج درنے دی نسبت روگ کے پیدا مولے علی کو روکنے پر ادمک رور دیتی ہے . اِس کے انوسار آدمی کا شریر سارے وشو کا یک حصه فی اور آدمی ادر باهر دی تبدیلیوں کے اسرسار أيدى عاددون و بهى بدلتا رف مو وة روك سيجها وة سكتا هـ. إس میں نعیا مے نہ بیماری آجائے کے بعد اس کا علام کرنا ایسا عی هے جیسا پیاس لگنے پر داران کوردیا یا لزائی چهر جانے پر هتمار گرمدا ، بیماریوں کا عالم بیمار پرنے سے پہلے عوال چاھنے اور اس كا طريقه له أَمِيك جيرن بتان أَمِيك طرح كا كهانا كهانا أَمِيك طرح سے کام اور آرام درنا اور اپنے دل اور دماغ دونوں کو سدا شابت رديدا .

ایک اور پرائی کتاب 'شین ننگ پین تساؤچنگ' ہے۔ - جو عیسی سے لک بیک ایکسو برس پہلے لکھی گئی ۔ اُس میں تین سو سے اوپر دواؤں اور اُن کے استعمال کی چرچا

की गई है. दुनिया में यह पहली किताब है जिसमें खाल की बीमारिओं के लिये पारे और गंधक का इश्तेमाल बताया गया है. इन बीमारियों के लिये यह इलाज अरब और हिन्द्रस्तान में इसके एक हजार बरस बाद चला और यूरप

में सोलहवीं सदी ईसवी से जारी हन्ना.

दूसरी सदी ईसवी में चाँग चुंग-चिंग नाम के एक इकीम ने सरह तरह के बुखारों पर एक किताब लिखी जिसका नाम 'शाँग हान लुन' है, उसी ने वैद्य क विद्या के बुनियादी उसूलों पर एक श्रीर किताब लिखी जिसका नाम 'चिंग कुए यात्रा लुएह' है. इन दानों किताबों से चीन की बैद्यक विद्या में बहुत बड़ी तरक्क़ी हुई. इनमें तरह तरह के बुखारों श्रीर दूसरी बीमारियों के लियं श्रलग श्रलग नुसखे दिये हुए हैं. इसमें बखार क इलाज के लिये, दस्त लाने के लिये. पेशाब लाने के लिये, के कराने के लिये, ठंडक पैदा करने के लिये, गरमी लाने के लिये, हाजमा ठाक करने के लिये श्रीर दस्तों को रोकन के लिये लगभग श्रस्ती इस तरह के नुसक्षे दिये हुए हैं जो आज तक चीनी डाक्टरों की बहुत बड़ा काम देते हैं और उनके इलाज के तरीक्रों की बुनियाद कहे जा सकते हैं. 'शाँग हान लुन' का प्रचार कोरिया और जापान में भी खुब हुआ और उसके द्वारा वहां के लागों की तन्द्रस्ती का बहुत बड़ा फायदा पहुँ शा.

जरांही यानी चार फाड़ की विद्या ने भी प्राचीन चीन में काफी तरक्क़ी की थी. ईसाकी ग्ररू की सदा का एक मराहर इकीम 'हुआ तां' दवा के जारये यह प्रवन्ध करके कि रागी का पाड़ा अनुभव न हाने पावे, पेट के बड़े बड़े भापरेशन (Major abdominal operations) कर लेता था. श्रताङ्या के कीड़ा का इलाज करने क लिये वह की की द्वाएं देता था और जलमा का तरह तरह का इलाज वह पानी से करता था. आदभी के तन्दुरुस्त रहने के लिये **उसने एक नई** तरह की कसरत ईजाद की थी जिसमें पाँच तरह के जानवरों की चालें शामिल थीं-चीता, बारहसिगा, रीख, बन्दर और चिडिया, इस कसरत के जारये वह प्रानी पुरानी बीमारियों को अच्छा कर लेता था.

चीन कं दुर्भाग्य से उस जमान के एक अन्यायी शासक ने हुआ-तो को पकड़ कर फांसी पर लटका दिया जिसके बाद उसकी लिखी हुई बहुत सी किताबें सदा के लिये तच्ट हो गई.

इसके बाद की सदियों में बौद्ध धर्म के चीन पहुँचने के बाद प्राचीन ताओं धर्म के लांगों ने बहुत सी पुरानी चीनी वैद्यक किताबों का फिर से सम्पादन किया. बौद्ध धन के लोगों ने भारत की बहुत सी वैद्यक कितावों का चीनी में अनुवाद किया. जीवक और सुश्रुत की मशहूर संकृत किताबों का उसी समय चीनी म अनुवाद हुआ. इस तरह भारत की वैद्यक विद्या और चीनी वैद्यक विद्या दोनों चीन में मिल

کی گئی ہے ، دنیا میں یہ پہلی کتاب ہے جس میں کیال کی بیماریس کے لئے پارے اور گلدھک کا استمال بتایا گیا ہے۔ اِن بیماریس کے لئے یہ علاج عرب اور ہندستان میں اِس کے ایک ھوار برس بعد چلا اور يورپ ميں سواہويں صدى عيسوى سے جاری هوا .

درسری مدی عیسری میں چانگ چہنگ چنگ نام کے ایک حکیم نے طرح طرح کے بضاروں پر ایک کتاب لکھی جس کا نام الشانگ های لن اهم اسی فی وردیک ودیا کے بنیادی اُصواوں پر ایک اور کتاب لکھی جس کا نام چنگ کوئے باؤ لو آیہو' ھے . ان دونوں کتابوں سے چین کی ویدیک ودیا میں بہت بری ترقی هوئی ، اِن میں طرح ،طرح کے بخاروں اور دوسری بیماریوں کے لئے الگ الگ نسطے دیئے عوثے هیں . اِس موں بخار کے علام کے لئے' دست لانے کے لئے' پیشاب لانے کے لئے' قد کرانے کے لئے' ٹھنڈک پیدا کرنے کےلئے'گرمی لانے کےلئے' ھاضم ٹہنگ کرنے کے لئے اور دستوں کو روکنے کے لئے لگ بھگ آسی اِس طارح کے نسخےدیئے ہوئے میںجو آج تک چینی ذائڈروں کو بہت ہزا کام دیتے میں اور اُن کے علاج کے طریقرں کی بنیاد کہ جا سکتے ههی . اشانگ هان لن کا پرچار کوریا اور جاپان میں بھی خوب ہوا اور اُس کے دوارا وہاں کے لوگوں کی تندرستی کو بہت بوأ فايدة يهونجا .

جراحی یمنی چیر بھار کی ردیا نے بھی پراچھن چین میں کانی ترقی کی تھی ، عیسیل کی شررع کی صدی کا ایک سفہور حکیم 'مواتو' دراؤں کے ذریعے یہ پربندھ کرکے که روگی کو بیڑا انوبھو نه هولے پاوے' پیٹ کے بڑے بڑے آپریشن Major نه abdominal operations) کر لیتا بھا ۔ انتظریوں کے کیورں کا علاج کرنے کے لئے وہ قے کی دوائیں دیتا تھا اور زخموں کا طرح طرح کا علاج وہ پائی سے دریا بھا ۔ آدمی کے تندرست رهنے کے لئے اُس نے ایک نئی طرح کی کسرت ایجاد کی تھی جس میں پانچ طرح کی جانوروں کی چالیں شامل نھیں۔۔چیتا' بارہ سنگا' ریجے' بلدر اور چویا ، اِس کسرت کے ذریعے وہ پرانی مرائی بیماریوں کو اچھا کو لیتا تھا .

چیں کے دربہاگیہ سے اُس زمانے کے ایک آنیائی شاسک نے ھواتو کو پکو کر پھانسی پر نلکا دیا جس کے بعد اُس کی لایمی ھوئی بہت سی کااہیں سدا کے لئے نشت ھوئٹیں ۔

اس کے بعد کی صدیوں میں بودہ دھرم کے چین پہولچنے کے بعد پراچین تاؤ دھرم کے لوگوں نے بہت سی پرانی چینی ویدیک اور کتابوں کا پھر سے سمپادین کیا، بودھ دعرم کے اوگوں نے بهارت کی بہت سی ویدیک نتابوں کا چینی میں انواد لیا . جهوک آور سو شروت کی مشهور سنستوت تنابوں کا اُسی سملے چینی میں انواں ہوا، اِس طرح بھارت کی ویدیک ودیا اور چینی ویدیک ودیا دونوں چھن میں مل

गईं. इसका एक नतीजा यह हुआ कि ईसा से सी बरस पहले की लिखी हुई चीनी किताब 'रोन नुंग पेन त्सा नो चिंग' को पाँच सी ईसबी के लगभग जब दुहराया गया तो तीन सी दवाओं की जगह अब उसमें है सी से ऊपर द्वाएं दर्ज हो गई.

सावनीं सदी ईसनी से ननीं सदी ईसनी तक यूरप में अभी अन्यकार युग (Dark ages) का जमाना था. भारत उन दिनों बहुत सी छोटी छोटी रियासतों में बँटा हुआ था. उस समय वैद्यक निद्या की निगाह से चीन दुनिया का केन्द्र था. अरब, कोरिया, जापान और दूसरे देशों से बड़े बड़े निद्वान नैद्यक पढ़ने के लिये चीन आते थे और चीनी हकीम तालीम देने के लिये बाहर के देशों में बुलाए जाते थे. उससे पहले जापान में रोगों का इलाज जादू टोनों से ही होता था. चीनी नैद्यक निद्या ने नहाँ पहुँच कर लोगों को इन अंध निश्वासों से आ जाद किया और इलाज का ठीक तरीका बताया. इस नए तरीके का जापान में बड़ा आदर हुआ.

दुनिया भर में वैद्यक का सब से पहला विद्याल प (First Medical School) सातवीं सदी ईसवी के शुरू में चीन में क्रायम हुआ। इस का नाम 'वैद्यों का शाही विद्यालय' था. इटली का 'सालेरनों में डिकल स्कूल' इस के दो सी बरस बाद क्रायम हुआ, जो यूरप का सब से पहला में डिकल स्कूल था. इस चीनी वैद्यक विद्यालय के क्रायम होने से पहले चीन के इकीम अपने अपने शागिरदों को साथ रखकर ही वैद्यक सिखाया करते थे.

चीन के इस शाही विद्यालय में वैद्यक के चार महकमें थे जिन में लगभग साढ़े तीन सी विद्यार्थी शिक्षा पाते थे. इन चार महकमों में दवाओं के अलावा वह चीर फाड़, कान, नाक, मुँह और दाँत के रोगों का इलाज, और दवाएं बनाना आदि सब सिखाया जाता था. सरकार की मंजूर की हुई किताबें पढ़ाई जाती थीं और विद्यार्थियों को तीन साल से लेकर सात साल तक तालीम दी जाती थी.

चीन में रोगियों के लिये सब से पहला श्रस्पताल पाँच सौ दस ईसवी में कायम हुआ. कारन यह था कि उन दिनों चीन के शन्सी प्रान्त में कोई एक बीमारी फैल गई थी. इसके बाद की सिदयों में और श्रधिक श्रस्पताल खुलते गए. धीरे धीरे राज की तरफ से ग़रीबों के लिये बहुत से श्रस्पताल खुल गए. कोढ़ियों के लिये भी चीन में कई श्रस्पताल खुले.

'शेन नुंग पेन स्साओ निंग' नाम की किताब का अब एक और नया एडिशन निकाला गया जिसमें आठ सी चवालीस तरह की दवाओं का जिक है. ग्यारहवीं सदी ईसवीं में एक नया सरकारी महकमा कायम हुआ जिसने बढ़े बढ़े वैद्यों की मदद से सब पुरानी वैद्यक की किताबों کٹیں . اِس کا ایک تتیجہ یہ ہوا کہ عیسی سے سو ہرس پہلے کی لکھی ہوای چینی کتاب 'شین ننگ پین تساؤ چنگ کو پانچسو عیسوی کے اگ بیگ جب دوہرایا گیا تو تین سو دواؤں کی جکہہ اب اُس میں چھ سو سے آرپر دوائیں درج ہوگئیں .

سانویں صدی عیسری سے نویں صدی عیسوی تک یوپ میں ابھی اندنکار بگ (Dark ages) کا زمالت تھا ، بھارت اُن دنوں بہت سی چنوٹی چھوٹی ریاستوں میں بنتا ہوا تھا ، اُس سئے ریدیک ردیا کی نگاہ سے چنن دنیا کا کیندر تھا ، عرب کوریا' جاپان اور دوسرے دیشوں سے بڑے بڑے ودوان وردیک پڑھانے کے اُئے چین آتے تھے اور چینی حکیم تعلیم دیئے کے اُئے باہر کے دیشوں میں بلائے جاتے تھے ، اُس سے پہلے جاپان میں روگوں' کا علاج جادو ٹونیں سے ہے ہوتا تھا ، چینی ویدیک ودیا نے رہاں پہونچکر لوگوں کو اِن اندھ وشواسوں سے آزاد کیا اور علی کا تھیک طریقہ بتایا ، اِس نیٹے طریقہ کا جاپان میں بہا آدر ہوا ۔

وزیا بھر میں ویدک کا سب سے پہلا ودیالیہ First میں ویدی کے شروع میں Medical School) ساتریں صدی عسری کے شروع میں چین میں تایم ہوا۔ اِس کا نام 'وبدیکوں کا شائی ودیالیہ' تھا۔ اِٹلی کا 'سالیرنو میڈیکل اسکول' اِس کے دوسو برس بعد قایم ہوا' جو یورپ کا سب سے پہلا میڈیکل اسکول تھا۔ اس چینی ویدک ودیا یہ کے خایم ہوئے سے پہلے کے چین کے حکیم اینے اپنے میدک ساتھ رکھکر ھی ویدک سکھایا کرتے تھے۔

چین کے اِس شاھی ردیالیہ میں ویدک کے چار محکمے تھے جن میں اگ بیگ سارھے تین سو ودیارتھی شکشا پاتے تھے ، اِن چار محکموں میں دراؤں کے علاوہ وہ چیر پھاڑ' کلی' ٹاک' ملھ اور دائیں بنا آدی سب ملھ اور دائیں بنا آدی سب مکھایا جا ا نھا ، سرکار کی منظور کی ہوئی نتابیں پڑھائی جاتی تھیں اور ودیارتھیوں کو تیں سال سے لیکر سات سال تک تعلیم دی جاتی تھی ،

چین میں ردکوں کے نئے سب سے پہلا اسپتال پائنچسو دس عیسری میں فایم ہوا۔ کارن یہ تھا کہ اُن دنرس چین کے شانسی پرانت میں کوئی ایک بیماری پھیل گئی تھی ، اِس کے بعد کی صدیرں میں اور ادعک اسپتال کیلتے گئے ، دھیرے دھیرے راج کی طرف سے غریس کے لئے بہت سے اسپتال کھل گئے ، کورھیرں کے لئے بہی چین میں کئی اسپتال الے ،

اشین نیگ پین تساؤ چنگ نام کی کتاب کا آب ایک آور نیا ایدیشن نگالا گیا جس میں آٹھ سو چوالیس طرح کی دراؤں کا ذکر ہے ۔ گیارہویں صدی عیسوی میں ایک نیا سرکاری محکمہ قایم ہوا جس نے بڑے ہیے ویدیوں کی مدد سے سب پرانی ویدگ کی کتابوں

को दुहराया. इसी समय चीन में छापने की कला ई जाद हुई जिसकी क्दौलत चीन का वैद्यात साहरव देश भर में खुब फैल गया.

द्सवीं सदी ईसवी से चौदहवीं सदी ईसवी तक चीन, अरब और पूरबी यूरप के देशों में आना जाना बहुत बढ़ा. इन सब देशों में तिजारत भी खूब होने लगी. चीनी वैद्यक विद्या उन दिनों ही यूरप पहुँची. इस आने जाने के कारण चीनी वैद्यक विद्या में भी काफी तरक्की हुरे, श्रदरक, (चाइना रूट), कैसिया (Cassia), रुवाब (Rhubarb) चीन से दूसरे देशों को पहुँचे. चीनी वैद्यक विद्या के इस समय लगभग तेरह ऋलग ऋलग विभाग बन गए, जिनमें द्वाओं का विभाग, चीर फाड़, खियों की बीमारियाँ, आँख, सुँह और गले की बीमारियाँ, बच्चों की बीमारियाँ, नसों को सहयों से ठंक करना आदि आदि अलग अलग विभाग सममें जाने लगे. नसों की बीमारियों (नर्वस हिजीजेज) को सुइयों से ठीक करने का तरीक्षा जिसे acupuncture कहते हैं चीन का पुराना तरीका है जो धाज तक चीनी अस्पतालों में ख़ब काम में लाया जाता है. पन्दरहवीं सदी के हारू में चीन के बने हुए जहाज चीन से दक्खिन के देशों भीर यूरप तक ख़ब आते जाते थे और चीनी द्वाएँ उन दिनों यूरप में खब विकती और इस्तेमाल की जाती थीं.

सोलहवीं सदी में चीनी हकीमों का ध्यान चेचक की बीमारी को रोकने की तरफ गया. पचास से ऊपर किताबें इस विषय पर लिखी गई'. एक खास महकमा इसी बीमारी के लिये कायम हुआ. उसी सदी में चीनी हकीमों ने चेचक का एक तरह का टीका ईजाद किया. चेचक के दानों में से मवाद निकाल कर उसे सुखा लिया जाता था श्रीर फिर उसे था तो फुंकनी के जरिये आदमी के नथनों में पहुँचा दिया जाता था या रुई पर रखकर नथनों के ऊपर रख दिया जाता था, राकि साँस के साथ अन्दर चला जावे. जिन लोगों के साथ यह किया जाता था वह फिर चेचक के हमले से बच जाते थे. यानी आजकल के चेचक के टीके की तरह यह भी तनदरुस्त आदमी को चेचक के हमले से बचाए रखने का एक तरीका था. सतरहवीं और अठारहवीं सदियों में यह तरीका सारे चीन में फैल गया. सतरहवीं सदी में हस से कुछ हकीमों ने चीन आकर इस तरीक़ को सीख़ा, कस से इसका रिवाज टरकी में फैता. सन् 1717 में अंग्रेजों ने इसे सुरकों से सीखा. इसके अस्सी बरस बाद यूरप में जेनर ने गाय की चेचक के मबाद से टीका लगाने का वह तरीका निकाला जो आज तक जारी है. इस तरह आजकल के चेवक का टीका पुराने चीनी तरीक़े से ही निकला है और उसका एक सुधरा हु आ रूप है. दोनों का उसूल एक है.

सन् 1578 ईसवी में मशहूर चीनी हकीम जी शिह-चन

کو دوهرآیا ۔ اِسی سے چین میں چہاپنے کی کا آیجاد هوئی جس کی بدولت چین کا ویدک ساهندہ دیش بهر میں خوب بھیل گیا .

فسریں مدی عیسوی سے چودھویں مدی عیسوی تک چیں' عرب اور پورمی یورپ کے دیشوں میں آنا جاتا بہت بڑھا۔ إن سب ديهي مين تجارت يهي خرب هرنے لكى . چينى ربدك وديا أن دنون هي يورب پهونجي . اِس آنه جالے كے کارن چینی ویدک ودیا میں بھی کانی ترقی هوئی ، ادرک (Rhubarb) روبارب (Cassia) کیسیا (Rhubarb) جنن سے دوسوے دیشوں کو پہوٹھے . چینی ویدک ودیا کے اس سب لك بهك تيرة الك الك ربهاك بن كله عن من دوآؤں کا وبھاگ چیر پھاڑ' اِستریس کی بیماریاں' اِنکھ' ملھ اور گلے کی بیماریاں' نسوں کو سوئیوں سے ٹھیک کرتا آدی آدی الگ الگ ربهاک سنجے جانے لکے ، نسوں کی بیماریوں (تبوس تیوبوز) کو سوئیوں سے تھیک کرنے کا طریقه جسے acupuncture کہتے ہیں چین کا پرانا طریقہ ہے جو آج تك چيلى أسهالون مين خوب كلم مين لايا جانا هي بلد هوين صدی کے شررع میں چین کے بنے ھوئے جہاز چین سے دکون کے دیشیں اور بورپ تک خوب آتے جاتے تھے اور چھای درائیں اُن دنوں بورپ میں خوب بعتی آور استعمال کی جاتی تھیں .

سولهویں صدی میں چھلی حکیموں کا دھیان چیچک کی بیماری کو روکنے کی طرف گیا ۔ پنچاس سے اُوپر کتابیں اِس وشے پر لکھی کٹیں . ایک خاص سحکمت اِس بیماری کے اللہ قایم ہوا . اُسی صدی میں چینی حکیموں نے چیچک کا ایک طرے کا ٹیکہ ایجاد کیا، چیچک کے دانوں میں سے مواد نکالکو أس سمها لها جاما تها اور پهر أسم يا توبهمني كے ذراح آدمي کے نتینس میں پہواچا دیا جاتا تھا یا روئی پر رکھر تتھنوں کے أوير ركه ديا جاتا تها تاكه سائس كي ساته أندر چا جارم ، جن لوگرں کے ساتھ یہ کیا جاتا تھا وہ پھر چرحیک، کے حملے سے بیج جاتے تھے ۔ یعنی آجکل کے چیچک کے ٹیکے کی طرح بد بھی تندرست أدمى كو چيچك كے حملے سے بعجائے ركينے كا الك طريقه تها . سترهوين اور أثبارهوين صديون مين يه طريقه سارے چین میں پیل گیا . سترهریں مدی میں روس سے کچھ حکیموں نے چینی آئو اِس طریقے کو سیکھا ، روس سے اِس کا رواج ٹرکی میں پیلا۔ س 1717 میں انگریزوں نے اِھ ترکیں سے سرکھا . اِس کے اسی برس بعد یورپ میں جینرلے گائے کی چرچک کے مران سے تیکے لگانے کا وہ طریقہ ٹکالا جو آج نک جاری ہے . اِس طرح آجکل کے چیچک کا ٹیکه پرانے چینی طریقے سے می نکالا فی اور اُس کا ایک سدھارا ھوا روپ فی۔ ذوروں کا اصول ایک ھے۔

سن 1578 عيسري ميں مشہور چيني حكيم لي شه چين

نے 177 برس کی لگاتار کہیے کے بعد چینی دواؤں پر "پھن تساؤ کانگ مو" نام کی کتاب لیمی . یه کتاب نه گیول چینی ویدک ودیا کی دواؤں کی سب سے بڑی کتاب ہے بلکم آجکل کی یوروییه دانتری میں بھی اس نے بہت بڑا حصہ نیا ہے اِس میں 1892 دواؤں کا ذکر ہے اور اُن کے لگ بھگ دس ہزار نسخے درج ہیں . اِن 1892 دواؤں میں سے 1094 بنسپتی سے بنتی ہیں . اِن کی سوله قسمیں بھی اور سوله کی پھر ساتھ قسمیں بھیں اور سوله کی پھر ساتھ قسمیں بھیں اور سوله کی پھر ساتھ قسمیں بھیں ، اِن کی سوله قسمیں بھی اور سوله کی پھر ساتھ دیئے ہوئے ہیں ، اِس طرح ونسپتی وگیان یعنی باتنی کے پڑھنے میں اِس چینی کتاب کا انہواد الطینی وانسیسی ، ررسی انکریزی ، جرس اور جاپانی انہواد الطینی وانسیسی ، ررسی انکریزی ، جرس اور جاپانی جو بھاشاؤں میں ہوچکا ہے .

سترھویں صدی کے آخیر میں چین میں مائی خاندان کا راج شورع ھوا ۔ مائی سمرائوں نے ودیشیوں کے اثر شع بچنے کے لئے باھر کے دیشوں سے تجارت اور آنا جانا بند کردیا ، یہ کی جیوتش ودیا میں کھرج کرنا چاھا تو آنھیں پھائسی پر لگا دیا گیا ، ایک یوروپین عیسائی پادری نے شریر ویچھید ودیا یعنی اینانامی پر ایک فرانسیسی پادری نے شریر ویچھید ودیا یعنی اینانامی پر ایک فرانسیسی کتاب کا چینی میں ترجمه کیا تو اُس کتاب کا چینی میں ترجمه کیا تو اُس کتاب کا چلن چین میں قانونا بند کردیا گیا ، چینی ویدک ودیا کی بھی آننتی رک گئی ، کیول پرائی چیزی پر بحثیں رہ گئیں ، لگ بھگ تھائی سو برس کے مائی و شاس میں چین آئے بڑھانے کے بجائے ھرطرے کیول پیچھے ھی کو ھتتا رھا ،

یورپ کے سامراج رائی پوٹجی پتیوں نے زبردستی چین کے دروازے اپنے لئے کھاوائے ۔ سن 1840 میں چین کی مشہور 'انیم جنگ' کے بعد ایسٹ اِندیا کہنی نے چدن کے دو شہوری سے سماؤ اور کینٹی سمیں اپنے اسپتال کھولے ۔ پر اُسسے یورپ کی قائقری کسی طرح بھی چینی قائقری یا چینی ویدک ودیا سے بڑھی ہوئی ٹھیں تھی ۔

سی 1816 میں یورپ کی سرجری کے اندر ایتھر کا استعمال رہلی ہار شروع ہوا ، 1867 میں یورپ میں چھر پھاڑ کے ساتھ تحجی نئی دوائیں استعمال دولے لگیں جن سے زخم سر لے نه پارے ، اِس کے بعد یورپ کی ویدک ودیا نے خاص ترقی کرنی شروع کی ، چینیوں کے داوں میں بھی یورپ کے چیر پھاڑ کے طریقوں کی قدر بڑھی ، لیکن چونکھ یورپ کی یہ تا تری اندم جنگ کے ظالم حمله آوروں کے ساتھ ساتھ آئی تھی اِس لئے چیندوں کے داوں میں اُس کی طرف سے شک برابر اِس اِن اِس ا

دَاكْتُر سَن يَاتَ سَيْنَ كَى الْوَائْيُ مِيْنَ سَنِ 1911 مَهِنَّ مانْتِي شَاسَنَ كَا انْتَ هَرِيْناً فِي سِنْ 1912 مَهِنَّ جِيْنِي

ने 27 बरस की लगातार खोज के बाद चीनी द्वाओं पर 'पेन स्साओं काँग मुं' नाम की किताब लिखी. यह किताब न केवल चीनी वैद्यक बिद्या की द्वाओं की सब से बड़ी किताब है, बल्क आजकल की यूरोपीय डाक्टरी में भी इसने बहुत बढ़ा हिस्सा लिया है. इसमें 1892 द्वाओं का जिक है और उनके लगभग दस हजार नुसखे दर्ज हैं. इन 1892 द्वाओं में से 1094 चनस्पति से बनती हैं. इनकी सोलह किसमें हैं और सालह की किर साठ किसमें हैं. किताब में इन सब बनस्पतियों के चित्र भी दिये हुए हैं. इस तरह बनस्पति विज्ञान यानी बाटनी के पढ़ने में इस किताब से बड़ी मदद मिलती है. इस चीनी किताब का अनुवाद लातीनी, फ्रांसीसी, कसी, अंग्रेजी, जरमन और जापानी के भाषाओं में हो चुका है.

A STANDARD STANDARD STANDARD STANDARD STANDARD

सतरहवीं सदी के आखीर में चीन में मान्चु सानदान का राज ग्रुस हुआ. मानचु सम्राटों ने विदेशियों के असर से बचने के लिये बाहर के देशों से तिजारत और आना जाना बन्द कर दिया. यह बहम यहाँ तक बढ़ा कि जब चीन के कुछ ज्योतिषियों ने यूरप की ज्योतिष विद्या में स्रोज करना चाहा तो उन्हें फाँसी पर लटका दिया गया या देश निकाला दे दिया गया. एक यूरोपियन ईसाई पादरी ने शरीर विच्छेद विद्या यानी ऐनेटामी पर एक फ्रांसीसी किताब का चीनी में तर्जुमा किया तो उस किताब का चलन चीन में कानूनन बन्द कर दिया गया. चीनी वैद्यक विद्या की भी उन्नति कक गई. केवल पुरानी चीजों पर बहसें रह गई. लगभग ढाई सी बरस के मानचु शासन में चीन आगे बढ़ने के बजाय हर तरह केवल पीछे ही को हटता रहा.

यूरप के साम्राजवादी पूँजीपितयों ने जबरदस्ती चीन के दरवाज अपने लिये खुलवाए. सन् 1840 में चीन की मशहूर 'अफ़ीम जंग' के बाद ईस्ट इंडिया कम्पनी ने चीन के दो शहरों—मकाओ और कैन्टन—में अपने अस्ताल खाले. पर उस समय यूरप की डाक्टरी किसी तरह भी चीनी डाक्टरी या चीनी वैद्यक विद्या से बढ़ी हुई नहीं थी.

सन् 1846 में यूरप की सरजरी के अन्दर ईथर का इस्तेमाल पहली बार शुरू हुआ. 1867 में यूरप में चीर फाइ के साथ कुछ नई दवाएँ इस्तेमाल होने लगी जिनसे जख़म सड़ने न पाने. इसके बाद यूरप की वैद्यु कि विद्या ने ख़ास तरक्षकी करनी शुरू की. चीनियों के दिलों में भी यूरप के चीर फाइ के तरीकों की कदर बढ़ी. लेकिन चूँ कि यूरप की यह डाक्टरी 'आफीम जंग' के जालिम इमलावरों के साथ साथ आई थी इसलिये चीनियों के दिलों में उसकी तरफ से शक बराबर बना रहा.

डाक्टर सुनयात सेन की अगुबाई में सन् 1911 में मानचु शासन का अन्त हा गया. सन् 1912 में बीनी

(325)

सरदार यू आन शिह-काई ने क्रान्तिकारियों के साथ द्राा करके देश को यूरप के साम्राजवादियों का श्रीर अधिक गुलाम बना दिया. सरकारी लोगों में पुरानी चीनी वैद्यक विचा रौर साइंसी ऋौर पिछड़ी हुई समकी जाने लगी. नए सरकारी स्कूल फ़ायम हुए जिनमें केवल यूरप की डाक्टरी पदाई जाती थी. इस के बाद च्यांग काई शे क का जमाना बाया. सन् 1929 में च्याँग काई शेक ने पुराने चीनी तरीक्रे से इलाज करना तक रौर कानूनी ऐतान कर दिया. चीनी इकीमों के लिये अब कोई जगह न रह गई. लोगों ने इस पर पाबरदस्त एतराज किया. जनता की उत्तेजना से और जनता के साथ मिलकर तीन सी चीनी हकीमों ने कांमिनटाँग की राजधानी नानिकंग में एक बहुत बड़ा प्रदर्शन किया. कोमिन-टाँग को कुछ मुकना पड़ा लेकिन फिर भी बह चीनी वैधक विधा के रास्ते में रुकावटें ही डालते रहे, उन्होंने उसे पनपने न दिया, और यूरोपीय ढंग के डाक्टरों और पुराने ढंग के चीनी इकीमों को एक दूसरे से लड़ाते रहे.

सन् 1949 में नई जनता की सरकार क्रायम हुई. खसने खसी समय से यूरोपीय डाक्टरी और चीनी वैद्यक के बीच की खाई को पाटना शुरू किया. सन् 1950 में चीन की पहली राष्ट्रीय स्वास्थ्य कानफरेन्स हुई. उसने यह बुनियादी उसूल तय किया कि दोनों तरह के इलाज के तरीक़ों से पूरा पूरा फायदा उठाया जाने और इलाज के उन तरीक़ों पर सब से ज्यादा जार दिया जाने जो ग्ररीबों, मखदूरों, किसानों और सिपाहियों का मला कर सकें, और जिनमें रोग के पैदा हो जाने पर इलाज करने की निस्थत रोगों के पैदा न होने पर ज्यादा जार दिया जाने.

पिछले साल यानी सन् 1954 में चीन के सबसे बड़े समाचार पत्र "पीपुल्स डेली" (जन दैनिक) ने पुरानी चीनी वैद्यक विद्या की तरफ सरकार के रुख़ को बिलकुल साफ कर दिया. उसने कहा कि चीनी वैद्यक के पीछे हजारों साल का तजरबा है, इस सारे अरसे में उसने जनता के स्वास्थ्य को ठीक करने और ठीक रखने में बहुत बड़ी मदद दी है. साथ ही उसमें कुदरती तौर पर कुछ किमयाँ भी हैं जिन की बजह से वह और अधिक नहीं बढ़ सकी. सरकार चाहती है कि जो चीनी लोग यूरप की डाक्टरी में तालीम पाए हुए हैं वह पुराने ढंग के चीनी वैद्यों और हकीमों के साथ मिलकर काम करें ताकि पुराने तरीक की किमयाँ पूरी हो सकें, उसे साइंसी ढक्न से चलाया जा सके और आजकल की चीनी डाक्टरी विद्या का वह एक आवश्यक और ख़ास अंग बन जावे.

इसी आधार पर सरकार ने सब जन-स्वास्थ्य महकमों को अमली हिदायतें भेज दी हैं. नई आजादी के बाद चीन , के स्वास्थ्य मंत्रालय में पुराने चीनी इलाज के वरीके का سرداریو آن شہ کائی نے کرائٹیکاریس کے ساتھ دفا کرکے دیک کو بورپ کے سامراج رادیوں کا اور ادھک غلام بنا دیا۔ سرکاری لوگوں میں پرانی چینی ویدک ودیا غیر سائنسی اور پھیجتی ہوئی کسمجھی جانے لکی . نئے سرکاری اِسکول قایم ہوئے جن میں کیول یورپ کی ڈائٹری پتھائی جاتی تھی . اِس کے بعد چیانگ کائی شیک کا زمانہ آیا . سن 1929 میں چیانگ کائی شیک نے پرانے چینی طریقے سے علج کرنا تک غیر قانوئی اعلن کردیا . چینی حکیموں کے لئے اب کوئی جگہ نہ رہ گئی ، لوگوں نے اِس پر زبردست اعتراض کیا ، جنتا کی اُتیجنا سے اور جینی حکیموں نے کومن ٹانگ کی راجدھائی ٹائکنگ میں ایک بہت ہوا پردیشن کیا . کومن وائگ کی راجدھائی ٹائکنگ میں ایک بہت ہوا پردیشن کیا . کومن وائٹگ کی راجدھائی ٹائکنگ میں ایک بہت ہوا پردیشن کیا . کومن وائٹگ کی دوست جا پردیشن کیا . کومن وائٹگ کی دوست جا لیکن پھر بھی وہ چینی ویدک ودیا کے دیائی دوسروییہ قمنگ کے ڈائٹووں اور پرائے ڈعنگ کے چینی اور یوروپیہ قمنگ کے ڈائٹووں اور پرائے ڈعنگ کے چینی اور یوروپیہ قمنگ کے ڈائٹووں اور پرائے ڈعنگ کے چینی

سن 1949 میں نئی جلتا کی سرکار قایم ہوئی، اُس نے اُسی سے سے بوررپیہ تائٹری اور چینی ریدک کے بیچ کی کیائی کو پائنا شروع کیا ۔ سن 1950 میں چین کی پہلی راشتریہ سواستھ کانفرنس ہوئی ۔ اُس نے یہ بنیادی اُصول طے کیا که درنوں طرح کے علاج کے طریقوں سے پورا پورا نایدہ اُٹھایا جارے اور علاج کے اُن طریقوں پر سب سے زیادہ زور دیا جارے جو غریبوں وزدوروں کسانوں اور سیاھیوں کا بھلا کوسکیں اُور جن میں روگ کے پیدا ہو جانے پر علاج کرنے کی نسبت روگوں کے بیدا ہو جانے پر علاج کرنے کی نسبت روگوں کے پیدا ہو جانے پر علاج کرنے کی نسبت روگوں کے پیدا ہو جانے پر علاج کرنے کی نسبت روگوں کے پیدا ہو جانے پر علاج کرنے کی نسبت روگوں کے

پچپلے سال یعنی سن 1954 میں چین کے سب سے بڑے سماچار پٹر ''پیپلس ڈیلی'' (جن دینک) نے پرانی چینی ویدک ویدک وید کی بالکل صاف کردیا ۔ اُس فی کہا کہ چینی ویدک کے پیچھے ھزاروں سال کا تعجربہ ہے' اِس سارے عرصے میں اُس نے جنتا کے سواستھیء کو ٹھیک کرنے اور ٹھیک رکھنے میں بہت بڑی مدن دی ہے ۔ ساتھ ھی اُس میں قدرتی طور پر کچھ کمیاں بھی ھیں جن کی وجہ سے وہ اور ادھک نہیں بڑھ سکی ، سرکار چاھتی ہے کہ جو چینی اور ادھک نہیں وہ پرانے اور ادھک کے چینی ویدیوں اور حکیموں کے سانع ملمر کام کویں تعلیم پرائے ھوئے ھیں وہ پرانے تاکہ پرائے طریقے کی کمیاں پوری دور ھوسکیں' اُسے سانع ملمر کام کویں سے چیایا جاسکے اور آجکل کی چینی قانٹوی ودیا کا وہ ایک سے چینی اور خاص انگ بن جارے ۔

اسی آدھار پر سرکار نے سب جن سوانھیدہ محکموں کو عملی جدایتیں بھیج دی ھیں ، نئی آزادی کے بعد چون کے سراستھید منترالئے میں پرانے چیلی علی کے طریقے کا

एक अलग महकमा क्रायम हुआ. इस महकमे को अब बहुत बढ़ा दिया गया है. पेकिंग में एक राष्ट्रीय अकादमी कायम हुई है जिसका काम ही पुरानी वैद्यक विद्या में पूरी परी खोज करना है. शंधाई, नानिक्रंग, पेकिंग और दूसरे शहरों में सरकारी अस्त्रताल खोल दिये गए हैं जिनमें पुरानी वैद्यक विद्या के तरीक़े से ही रागियों का इलाज किया जाता है, श्रीर पुराने ढंग से बारीक सुइयों के जरिये नसों की भीमारियों (Nervous diseases) का इलाज किया जाता है. पेकिंग में एक संस्था क़ायम की गई है जिसमें नसीं के इलाज के इस पुराने तरीक़े (acupuncture) और जड़ी बृटियों से दारा कर दर्दी का दूर करने के पुराने तरीक्के (Moxibustion) दोनों पर तजरबे करके नए से नए डाक्टरी तरीकों से इनका मुकाबला करके, इस बात को दिखाते हुए कि बोमारी और तन्दुरुस्ती का नसों के साथ कितना गहरा सम्बन्ध है, इन दोनो पुराने तरीक़ों को नए साईसी द्वंग पर चलाया जा रहा है. नसों की बीमारियों के इलाज में, पेट यानी हाजमें की बीमारियों के इलाज में और हाथों पैरों की बीमारियों के इलाज में इन पुराने तरीक़ों से बहुत अच्छे अच्छे नतीजे पैदा किये जाते हैं.

चीन में यूरोपीय डाक्टरी के भी अस्पताल मौजद हैं. इनमें बहुत से अस्पतालों ने अपने अलग महकमे खोल दिये हैं जिनमें पुराने ढंग से ही रागियों का इलाज होता है, इन अस्पतालों के अधिकारी पुराने ढंग के चीनी डाक्टरों को अपने यहाँ रखते हैं और सब चीजों में उनसे सलाहें करते हैं. थांड़े ही दिनों में चीन के बहुत से में डिकल का।लजों में पुरानी वैद्यक की किताबें और उनके इलाज के तरीक़े भी विद्यार्थियों को पढ़ाए और सिखाए जार्येंगे. पुरानी चीनी वैद्यक की किताबें फिर से छापी जा रही हैं और हमारे नए ढंग के डाक्टर उन किताबों को ध्यान के साथ पढ रहे हैं. चीन में दवाएँ तैयार करने की जो सबसे बड़ी सासाइटी है The Chinese Pharmaceutical Society 45 श्रमले पॉच बरस के श्रम्द्र कई सी पुरानी चीनी द्वाश्रों पर तजरबे करके उन्हें ठीक ठांक तैयार करने की योजना बना रही है, चीन में डाक्टरों की सब से बड़ी ऐसासिएशन 'चाइनीज मेडिकल एसोसिएशन' है. पहले उसके मेम्बर केवल यूरापियन ढंग के डाक्टर ही हो सकते थे. अब इस एसासएशन ने देश भर में अपनी सब शाखों का हिदायत मेज दी है कि पुराने ढंग के तजरबेकार चीनी हकीमों को भी उसी तरह से ऐसांसिएशन का मेम्बर बनाया जाय जिस तरह नए ढंग के डाक्टरों कां.

दोनों तरह के डाक्टर चीन में मिलकर काम कर रहे हैं. दोनों तरीकों में खोज जारी है. मकसद यह है कि देश में जो खाम इलाज के तरीके आगे का चलें उनमें पुराना चानी

أيك أنك محمه قايم هوا. إسمحمد كو أب بهت بوها ديا كياهم پهکنگ ميں ايک راشتريه ايکادمي قايم هوئي هے جس کا کلم هي ڀرائي ریدک ردیا میں پرری پوری کہرے کرتا ہے شنکھائی ' ثانکنگ' أور دوسرے شہروں میں سرکاری اُسپتال کھول دیئے گئے میں جن میں پرانی ریدک ردیا کے طریقے سے ھی ررگیس کا علام کیا جانا ہے، اور پرائے دمنگ سے باریک سوئیوں کے ذریعے نسوں کی ا علم كيا جاتا هـ (Nervous, diseases) بيداريون ا پیکنگ میں ایک سنستھا قایم کی گئی ہے جس میں نسوس کے علم کے اِس پرائے طریتے (acupuncture) اور جوی ہوٹیوں سے داغ کر دردوں کو دور کرنے کے پرانے طریقے (Moxibustion) دونوں پر تجورے کرکے نئے سے نئے ڈاکٹری طریقوں سے اِن کا مقابلہ کرکے اُس بات کو دکھاتے ھوٹے کہ بیماری اور تندرستی کا نسوں کے ساتھ کانا گہرا سمبندہ ہے اوں دونوں يرائے طريقوں کو نئے سائنسي تھنگ يو چلايا جا رہا ہے ، نسوں کی ہیماریوں کے علاج میں' پیٹ یعنی هاضمے کی بیماریوں کے عالم میں اور ھاتھوں پھروں کی بھماریوں کے عالم میں اِن پرائے طريقوں سے بہت اچھ اچھ نتيجے بيدا کئے جاتے هيں .

چین میں یوروپه تاکتری کے بھی اسپتال -وجرد هیں . ان میں سے بہت سے اسپتالی نے اپنے آنگ محکمے کھول دیئے ھیں جن میں پرائے تھنگ سے ھی ررگیوں کا علاج ھوتا ہے . اِن اسپتالوں کے ادھیکاری پرائے تھنگ کے چینی ڈائٹروں کو اننے بہاں رکھتے میں اور سب چیزوں میں أن سے صلاحیں كرتے ھیں ، تھوڑے ھی دنس میں چین کے بہت سے میذیکل کالجوں میں پرانی ویدک کی کتابیں اور اُن کے علام کے طریقے بھی وديارتهدون كو يزهائه أور سكهائه جانينكم ، يراني چيني ويدك کی کتابیں پھر سے چھاپی جا رھی ھیں اور سمارے نیاے دھنگ کے ڈاکٹر اُن کتابوں کو دھیان کے ساتھ پڑھ رہے ھیں ۔ چھن میں دوائیں تیار کرنے کی جو سب سے بڑی سوسانٹی ہے s, The Chinese Pharmceutical Society اکلے پانیج ہرس کے اندر کئی سو پرانی چینی دراؤں پر تجربے کرکے اُنھیں تھیک تھیک تیار کرنے کی یوجنا بنا رھی ہے ۔ چین میں دائلروں کی سب سے بڑی ایسوسئیشی 'چاننیز میدیکل ایسوسٹیشن ہے . پہلے اُس کے سمبر کیول یوروپین دَعنگ کے دَائِتُر هي هوسكته تهي اب اِس ايسوسئيشي لے ديش بهر ميں اپنی سب شاخوں کو ہدایت بھیج دی ہیں که پرآنے تعنگ کے تجربهکار چینی حکیموں کو بھی اسی طرح سے ایسوسئیشن کا ممبر بنایا جائے جس طرح نئے تعنگ کے تاکروں کو ۔

دونوں طرح کے تاکثر چین میں ملکر کم کر رہے ھیں ۔ دونوں طریقوں میں کھرے جاری ہے ۔ مقصد یہ ہے کہ دیش میں جو عام علاج کے طریقہ آگہ کو چلیں اُن میں پرانی چینی

A STATE OF THE STA

वैद्यक की सारी विरासत को खपा लिया जावे. इस काम में अभी बरसों लगेंगे, लेकिन जब यह पूरा हो जायगा तो चीन के लागों की तन्दुरुस्ती को इस से बहुत बड़ा फायदा पहुंचेगा और दुनिया भर का वैद्यक विज्ञान इस से और अधिक मालामाल होगा.

("चाइना रीकन्सट्रक्टस" से)

ویدگت کی ساری وراثت کو کیها لیا جارہ ۔ اس کام میں ابھی برسیں لکیں گے ۔ لیکن جب یه پورا هوجائیگا تو چین کے اوگرں کی تندرستی کو اِس سے بہت بڑا نایدہ پہوٹنچیگا اور دنیا بیر کا ویدگت وگیان اِس سے اور ادھک مالامال عوکا ۔

("چائلا ريكنسٽركٽس" سے)

गांधी और कबीर

گاندهی اور کبیر

श्री अम्बाशंकर नागर एस. ए.

شرى أمبا شنكر فاكر أيم أه .

इन दोनों महापुरुषों का जीवन एक दूसरे से इतना क्यादा मिलता-जुलता है कि एक के बारे में बिचार करते कक्त दूसरे का खयाल आये बिना नहीं रहता. दोनों ने अपने जमाने की माँग को महसूस किया था. दोनों ने कक्त और हालात की जरूरतों को सममा था और दोनों ही आम जनता की मुश्किलों को रका करने में जीवन भर लगे रहे. इतना ही नहीं, इन दोनों महापुरुषों ने आगे बढ़कर अँधेरे में भटकते हुए लोगों को उस समय सहारा दिया था जिस समय उन्हें इस इमदाद की बड़ी जरूरत थी.

दोनों हिन्द्-मुसलिम एकता के समर्थक

कबीर और गाँधी दोनों ही कुचले और सताये वर्ग के पैराम्बर थे. दोनों ऊँच-नीच और जाति-पांति के भेद को फिज्जूल मानते थे. दोनों नेपुरानी कृदियों और श्रंधविश्वासों के खिलाफ आवाज उठाई थी. धर्म और मजहब, मंदिर और मस्जिद, ईश्वर और अल्लाह के नाम पर लड़ने वाले हिन्दू और मुसलमानों में एकता कायम करने के लिए तां ये दोनों ही महारमा जीवन भर लगे रहे.

कबीर अगर कहते थे-

"भाईरे, दुइ जगदीस कहाँ ते आया।
जल्लाह राम करीमा केसी हरि हजरत नाम धराया॥
तो गाँधी भी प्राथना में 'ईश्वर अल्लाह तेरा नाम' कह
कर सबको उसी एकता का पाठ पढ़ाते थे.

اِن دونوں مہاپرشوں کا جنبوں ایک دوسرے سے اِتنا زیادہ ملتا جلتا ہے کہ ایک کے بارے میں وچار کرتے وقت دوسرے کا خیال آئے بنا نہیں رہنا . دونوں نے آپنے زمانے کی مانگ کو مصسوس کیا تھا ، دونوں نے وقت اور حالات کی ضرورتوں کو سنجھا تھا اور دونوں ہی عام جنتا کی مشکلوں کو رفع کرتے میں جنبوں بھر لگے رہی آن دونوں مہا پرشوں لے آگے بوسکر آندھیرے میں بیٹکتے ہوئے لرگوں کو آس سنگے سہارا دیا تھا جس سنگے آنہیں اِس آمداد کی بڑی ضرورت تھی ،

دونوں هدو مسام ایکٹا کے سمرتھک

کبیر اور کاندھی درارں ھی کیلے اور ستائہ ورگ کے پیغمبر تھے، اُونچ نیچ اور جاتی پانتی کے بھید کو فضول سائے تھے، دونوں نے پرائی روزھیوں' اور اندھ وشواسوں کے حان آواز اُٹھائی تھی، دھرم اور مذھب' مندر اور مسجد' ایشور اُو، الله کے نام پر لڑنے والے ھندو اور مسلمانوں میں ایکٹا قایم کرنے کے لئے تو یہ دونوں ھی مہاتما جیوں بھر لگے رہے ۔

کبیر اگر کہتے تھے۔

بھائی رے' دوئی جگدیس کہاں تے آیا'' الله رام کریما کیسو' ہری حضرت نام دعرایا ۔''

تو گاندھی بھی پرارتھنا میں ایثور الله تیرا نام کہ کو سب کو اُسی ایکنا کا پالھ پڑھاتے تھے ،

درنوں اچھرتوں کے مسیحا

दोनों अछूतों के मसीहा

कबीर ने अगर-

"जात पांत पृष्ठी नहीं कोई। इरिको भजे सा इरिका होई।।

कह कर सबको भक्ति का अधिकारी माना था तो गाँवी ने युग युग से दलित अझूतों को सामाजिक कार्यों में शरीक होने का और मंदिरों में प्रवेश करने का अधिकारी करार दिया था. गाँधी अझूतों के मसीहा थे. अझूत उद्धार के जिस नेक काम को कबीर ने शुरू किया था गांधा ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर उसे पूरा कर दिखाया.

दोनों की 'करनी' और 'कथनी' में समानता

ये दोनों ही महात्मा सत्य और ज्ञान के पुजारी थे.

असत्य और अज्ञान का मिटाना ही जैसे इनके जीवन का

मक्तसद था. दोनों ही आचार और विचार की शुद्धि को

व्यक्ति और समाज के लिए जरूरी मानते थे. सबसे बढ़ी

वात तो यह है कि इन दोनों महापुरुषों की 'करनी' और
'कथनी' में जरा सा भी भेद नहीं था. जैसा सुद्द करते थे

वैसा ही व दूसरों का करने के लिए कहते थे. 'करनी' के

बिना 'कथनी' बिलकुल बेकार है; इस सचाई को समम

कर ही इन महापुरुषों ने अपने काम में हाथ डाला था.

यही वजह है कि इनकी ज्ञान में वह तासीर पैदा हुई कि

जिसकी वजह से न कवल इस दश की बल्कि एक युग की
काया पलट हा गई. जो काम कबार की वाणी न सालहवीं

सदी माकया था वही काम इस बीसवीं सदा में महात्मा

गांधी की ज्ञान ने किया. इस तरह अगर हम चाहें ता

गांधी का बीसवीं सदी का कबीर भी कह सकते हैं.

दोनों अहिंसा के पुजारी

कबीर और गांधी दोनों अहिंसा के उसूल को मानते थे. जानवरों को मारकर उनका मांस खाने का वे अप्राकृतिक कहते थे. कबार ने गोश्त-कारों का इस तरह फटकारा है—

> "बकरी पाती खाति है, तिसकी कादी खाल। जे नर बकरी खात है, तिनका कीन हवाल?"

"बकरी पत्ते खाती है, इस पर ता हम उसकी खाल खींच लेते हैं, जो आदमी बकरी को खाते हैं उनकी क्या दशा हागी ? जरा कल्पना तो कीजिये!"

दोनों ने अम का महत्त्व बढ़ाया

इन दोना महात्माओं ने अभ के महत्व को समका था. कबीर अगर रात दिन सूत का ताना बुनते रहते थे ता गांधी जी भी सदा चरखे और तकती का लंकर सूत कातने में क्षारे रहते थे. गांधी ने अपने जीवन में जा बढ़े काम किए کبور نے اگر۔۔۔ ''جات پانت پرچ**نے نہی**ں کرٹی ھری کر بھچے سو ھری کا ھوٹی ¹¹

کہ در سب کو بہکتی کا اُدھیکا ہی ماتا تھا تو گاندھی نے یک یک سے دات اُچھوتوں کو ساماجک کاریوں میں شویک ھونے کا اُر مندروں میں پرویش کرنے کا اُدھیکاری قرار دیا تھا ، گاندھی اچھوتوں کے جس ٹیک کاندھی اچھوت اُدھار کے جس ٹیک کام کو کبیر نے شروع کیا تھا گاندھی لے اپنے پرانوں کی بازی لگا کر آسے پرا کر دنھایا ،

فونوں کی ^وکرئی اور ^ونتھنی میں سمانکا

یه دونوں هی مہانما ستیه اور گیان کے پجاری تھے . اِستیه اور اگیان کو حقانا هی جیسے آن کے جیون کا مقصد تھا . دونوں هی آچار اور وچار کی شدهی دو ویکٹی اور سماج کے لئے ضروری مائتے تھے . سب سے برتی بات تو یہ هے که اِن دونوں مہا پرشوں کی 'درنی' اور 'دتینی' میس ذرا سا بھی بھید نہیں تھا ، جیسا خود کرتے تھے ویسا هی وے دوسرون کو کرنے کے لئے کہتے تھے، 'درنی' کے بنا 'کتینی' باکل بیکار هے؛ اِس سپاتی کو سبجھ کو سی اِن مہاپرشوں اپنے کام میں ہاتم تالا نها . یہی وجه هے که اِن کی زبان میں وہ تاثیر پیدا ہوئی که جس ای وجهه سے نہ دیول اِس دیش کی بلکه ایب یک ی کایا پلت مو گئی۔ چو کام دیور دی بانی نے سولهویں صدی میں دیا بها وعی کام چو کام دیور دی بانی نے سولهویں صدی میں دیا ، اِس جو کام دیور دی بانی نے سولهویں صدی میں دیا ، اِس جو کام دیور دی بانی نے سولهویں صدی کی زبان نے دیا ، اِس طرح ادر سم چا میں تو کامدمی دو بیسویں صدی کا دبیر بھی طرح ادر سم چا میں تو کامدمی دو بیسویں صدی کا دبیر بھی

دودوں اهسا کے پجاری

کبھر اور کامدھی دونوں اھنساکے اصول کو مانتے تھے، جانوروں کو مارکر اُن کا مانس کھانے کو وہ اپرادریک کہتے تھے۔ کبھر نے گوشت حوروں کو اِس طرح پہٹکارا ہے۔

اُقْبِعُرِی پانی کھانی کے ا

ىس كى كازىقى كهال ،

ھے اور ہکری کھات ہے

تن کا دون حوال 9"

''ہکری پتے کہائی ہے' اِس پر تو ام اُس کی کہال کھینچ لیتے ا ھیں ، جو آدمی ہکری تو نہاتے ھیں اُن نی بیا دشا ھوگی ؟ ذرا کلپنا تو کیجئے !''

دونوں نے شرم کا مہتر بڑھایا

اِن دونوں مہاناؤں نے شرم کے مہتو کو سنجیا تھا ۔ کبیو اگر رات دن سوت کا مانا بنتے رمتے تھے تو گاندھی جی بھی سدا چرحے اور تعلی کو لیکر سوت کاننے میں لگے رہتے تھے ، گاندھی نے اپنے جیوں میں جو بڑے کام کئے हैं उनमें से एक यह भी है कि इन्होंने उपेक्षित अस की फिर से मितृष्ठा की अमेजी सभ्यता की चकाचौंध से लोगों की आँखें चकरा गई थीं दिमारा में बाबूगीरी की ऐसी बू भर गई थी कि लोग हाथ से काम करने में अपनी तौहीन सममते थे. ऐसे समय में गांधी जी माड़ू लेकर खुद मंगी का काम करने लगे. जो काम सबस नीचा सममा जाता था उसी से उन्होंने शुरूशात की. पेशों में जुलाहे का पेशा बुरा माना जाता था उसे भी गांधी जी ने ऐसी इंपजत बस्शी कि चरसा कातना आज सब इंपजत का काम सममते हैं.

भाषा की समस्या पर दोनों एक मत

कहाँ तक कहूँ, मैं तो हर काम में इन दोनों को एक पाता हूँ. हर मधल पर इनके विचार इतने मिलते-जुलते नष्पर आते हैं कि ताञ्जुब हुए बिना नहीं रहता. आजकल भाषा का सवाल एक अहम सवाल बना हुआ है. पर इस सवाल पर भी इन दोनों पीर-मुर्शिदों की एक ही राय थी. कबीर कहा करते थे—

> "संस्किरत जलकूप कवीरा, भाषा बहुता नीर."

गांधी जी भी सरल और चलती भाषा के हिमायती थे. बे-कहा करते थे कि भाषा तो विचार का बाहन है. हमें भाषा पर ध्यान देने से ज्यादा भाव या विचार पर ध्यान देना चाहिये.

बीवन ही नहीं मृत्यु में भी समानता

न केवल जीवन में बाल्क इन दानों महात्माओं की मृत्यु में भी मुक्ते तो एक अजीवा ग्ररीव किस्म की समानता दिखाई देती है.

कबीर मगहर में जाकर मरे यह साबित करने के लिए कि हिन्दुओं का ख्याल रालत है कि काशी में मरने से आदभी स्वर्ग में और मगहर में मरने से नकी में जाता है. वे हिन्दू मुसलमानों के अधावश्वासों को मिटाकर उनमें बुनियादी एकता क्रायम रना चाहते थे.

कबीर की पृत्यु की कहानी भी बड़ी दिलचस्प है. वे मगहर में जाकर भरे. उनकी लाश को लेकर हिन्दू मुसलमान लड़ने लगे. (हन्दू उनके शव को जलाना चाहते थे और मुसलमान गाड़ना. लड़ाई की नौबत आ। गई, तलबारें तन गई'. पर जब किसी समभदार ने क़फन को उठाकर देखा तो वहाँ सिर्फ एक फूलों का ढेर ! दोनों ने फूलों को आधा आधा बाँट लिया. हिन्दु ओं ने काशी में उन्हें हिन्दू विधि से जलाया, मुसलमानों ने मगहर में गाड़ा.

में तो यह कहूँगा कि कबीर ने न केवल जीते जी बल्कि मर कर भी हिन्दू मुसलमाना को एकता के सूत्र में बांधा. هیں انہیں سے ایک یہ بھی ہے کہ انہوں نے آپیکشت شرم کی پھر سے
پرتشتہا کی۔ انگریزی سبھیتا کی چکا چوندہ سے لوگوں کی انگھیں چگرا
گئی تھیں۔ دماغ میں باہوگیری کی ایک ایسی ہو بھر گئی تھی نہ
لوگ ہاتھ سے کام کرنے میں اپنی توھیں سمجیتے تھے ۔ ایسے
سے میں کاندھی جی جہازو لیکر خود بھنکی کا کام کرنے لئے ۔
جو کام سب سے نیمچا سمجھا جانا نیا اسی سے انھوں نے
شروعات کی ، پرشوں میں جاھے کا پرشتہ برا مانا جانا تیا اُسے
بھی کاندھی جی نے ایسی عزت بخشی که چرجہ کاننا آج سب
عزت کا کام سمجھتے ھیں ،

بهاشا کی سمسیا پر بھی دونوں ایک ست

کہاں تک کہوں' میں تو ھر کلم میں اِن دونوں کو ایک پاتا ھوں ۔ ھر مسلے پر اِن کے وچار اِتنے ملتے جلتے فظر آتے ھیں کہ تعجب ھوئے بنا نہیں رہتا ۔ آجکل بھاتا کا سوال ایک اُھم سوال بنا ھوا ھے ۔ پر اِس سرال پر بھی اِن دونوں پھر مرشدوں کی ایک ھی رائے تھے۔

"سنسترت جل كوپ كبهراً بهاشا بهتا نير."

کاندھی جی بھی سرل اور چلتی بھاشا کے حمایتی تھے، وسے کہا کرتے تھے که بھاشا تو وچار کا واقعن سے ، همیں بھاشا پر دهیاں دینے سے زیادہ بھاڑ یا وچار پر دهیاں دینا چاہئے .

جدون میں هی نهیں مرتبو میں بھی سمانتا

نے کیول جیوں میں بلکہ اُن دونوں مہاتماؤں کی مُرتیو میں بھی مجھے تو ایک عجیب و غریب قسم کی سمانتا دہائی دیتے ہے ،

کبیر مگہر میں جاکر مرے علیہ ثابت کرنے کے اللہ که هندوں کا یہ خیال خاط ہے ته کلشی میں مرنے سے آدمی سراک میں اور مگہر میں مرنے سے نبرک میں جانا ہے ، وے هندو مسلمانوں کے انده وشواسوں کو مقاکر اُنسیں بنیادی ایکنا قایم کرنا چاہتے ہے .

کبیر کی مرتبو کی کہائی بھی ہڑی دلنچسپ ہے . وہ سگہر میں جاکر مرہ . اُن کی لاش کو لیکر هندو مسلمان لونے لئے ، هندو اُن کے شو کو جلانا چاہتے تھے اور مسلمان گارنا ، لوائی کی نہوبت آگئی' تلواریں تن گئیں ، پر جب کسی سمجھدار نے کفن کو اُٹھائو دیکھا تو وہاں صرف ایک پھولوں کا تعفیر ! دونوں نے پھولوں کو آدھا آدھا بانت لیا ، هندوں نے کلئی میں اُنھیں هندو ودھی سے جلایا' مسلمانوں نے مگھر میں گارا ،

میں تو یہ کہونگا که نبیر نے نه کیول جیتے جی بلکه مرکز بھی هندو مسلمانوں کو آیکٹ کے سرتر میں باندھا۔

ىسىر ۋۇ"

स्वतन्त्रता की यात्रा की चीवी पीडी

जो काम उनके जीवन ने न किया वह उनकी सृत्यु ने कर दिखाया. आज कबीर पंथ के मानने वाले हिन्दू और मुसलमान दोनों हैं. और दोनों जीवन के बुनियादी उस्लों में एक हैं.

गांधी जी ने भी इसी हिन्दू-मुसलिम एकता की खातिर प्राया दिये. अपनी जीवन की आखरी सांस तक वे इन दोनों जातियों में एकता क्रायम करने के लिए कोशिश करते रहे. जीवन की ही तरह गांधी जी की सत्यु भी महान थी. वे उस समय मरे जब वे प्रार्थना कर रहे थे, राम नाम ले रहे थे और लोगों का जीने का सही तरीका सिखा रहे थे.

गांधी जी की सत्यु भी कबीर की सत्यु की तरह समाज के लिए बड़ी प्रभावशाली साबित हुई. अपने बापू को अपने हाथों से मारकर हिन्दुओं का कलेजा ठंडा हुआ. शर्म से हिन्दुओं का सर अपने आप मुक गया. ऐसा न हुआ होता तो पता नहीं उस समय उस जाशे-जुनून में लोग और क्या-क्या करते!

سرتنترا کی یاترا کی چرتی پیرهی

جو کام اُن کے جدوں نے تع کیا وہ اُن کی مرتبو نے کر دکھایا۔ آج کبیر پنتھ کے ماننے والے هندو اور مسلمان دونوں هیں۔ اور دونوں جیون کے بنیادی اُصولوں میں ایک هیں ۔

کاندھی جی نے بھی اِسی ھندو مسلم اُیکٹا کی خاطر اُپنے پران دیئے . اپنے جیون کی آخری سائس تک وے اِن دوثوں جاتمیں میں ایکٹا تایم کرنے کے لئے کوشھی کرتے رہے . جمون کی ھی طرح کاندھی جی کی مرتمو بھی مہان تھی ، وے اُس سمی مرے جب وے پرارتهنا کو رہے تھے' رام نام نے رہے تھے اور لوگوں کو جینے کا صحورے طریقہ سکھا رہے تھے۔

گائدھی جی کی مرتبو بھی کبیر کی مرتبو کی طرح سماج کے لئے ہوی پربھاؤشائی ڈابت ھرئی ، آپنے باپو کو آپنے ھانہیں سے مارکو ھندؤں کا طبحہ ٹھنڈا ھوا ، شرم سے ھندؤں کا سر اپنے آپ جھک گیا ، ایسا نہ ھوا ھوتا تو پتہ نہیں اس سمے جوش جنرن میں لوگ آرر کیا کیا کرتے ا

स्वतन्त्रता की यात्रा की चौथी पीढ़ी

سوتنترتا کی یاترا کی چرتھی پیرھی

श्री मगनभाई देसाई

दक्षिण अफ्रिका से 1917 में गांधी जी भारत आये.
युरोपीय जंग उस ममय शुरू हो चुका था. भारत आने के
बाद उन्होंने जो काम अपने हाथ में लिये उनमें एक खास
काम रंगरूटों की भरती काथा. उसके साथ ही साथ 1917
से दूसरे काम भी शुरू हुए—चंपारण और खेड़ा का सत्याप्रह अहमदाबाद की मजदूर हड़ताल, विरमगाम की नाकाबंदी
इत्यादि सत्याप्रह क प्रयोग थे. और उसके साथ साथ स्वतन्त्र्य
यात्रा की नई, हमारी गिनती के मुताबिक चौथी, पीदी शुरू
हई.

इस चौथी पीढ़ी को 1915 या 1920 के गिना जाय तो उसे तब से लेकर 1948 तक माना जा सकता है. मतलब यह कि वह पूरी तीस साल की पीढ़ी है कि जिसके दरिमयान एक नई पीढ़ी भी पैदा हो सकती है और हुई भी है फिर भी उस पीढ़ी ने अपनी बुजर्ग पीढ़ी के मातहत रहकर ही काम किया है, वह अपना खुद का असर डाल सके उतनी

شری مکن بهائی دیسائی

دکشن انریقہ سے 1915 میں کاندھی جی بیارت آئے کے بعد یوروپیہ جنگ اُس سیے شروع ھوچکا تھا ۔ بھارت آئے کے بعد انہوں نے جو کام اپنے ھانھ میں لئے اُن میں ایک خاص کام درسوے کام بھی شروع ھوئے—چمھاری اور کھیڑا کا ستیاگرہ الحمدآباد کی مزدور ھڑتال' ررم گام کی ناکمبندی اتیادی ستراگرہ کے پریوگ تھے ۔ اور اُس کے ساتھ ساتھ سوتنتریہ یاتوا کی نئی' ھماری گنتی کے مطابق چوتھی' پیڑھی شروع ھوئی ۔ اِس چوتھی پیڑھی کو 1917 یا 1920 سے گنا جائے تو اِس چوتھی پیڑھی کو 1915 یا 1920 سے گنا جائے تو اس چوتھی بیرھی کی بیڑھی ھے کہ جس کے درمیاں ایک نئی پیڑھی ہیں ہیں پیڑھی ھے کہ جس کے درمیاں ایک نئی پیڑھی نے اپنی بیڑھی ھے کہ جس کے درمیاں ایک نئی پیڑھی کے مانتخت ایر ھوئی بھی گے کے مانتخت ایر کی پیڑھی کے کا اُن دال سکے آتنی بھی اُس پیڑھی نے اپنی بزرگ پیڑھی کے مانتخت کی کی گر ھی کام کیا ھے، وہ اپنی بزرگ پیڑھی کے کا اُن دال سکے آتنی بھی اُس پیڑھی نے اپنی بزرگ پیڑھی کے کا اُن دال سکے آتنی ہے۔

शक्तिशाली या धपने अलग आदर्श रम्बने वाली नहीं थी. इस तरह यह एक सिलसिलेबार युग होने से उसे गांधी युग भी कह सकते हैं.

इस युग का इतिहास हमारे देश का एक शानदार और बुलन्द इतिहास है. उमका सही माल भित्रय के इतिहास-कार आँक सकेंगे. उसका असर सारी दुनिया के इतिहास भवाइ पर भी हो रहा है; इसमे वह इक्कीक़त विश्व-इतिहास में भी एक नया बाब शुरू करने वाली साबित हुई है. उसकी बजह से न सिर्फ विदेशियों की गुलामी का अन्त हो कर भारत का अपना स्वतंत्र इतिहास फिर से शुरू हुआ है, बिल्क उस घटना से, विश्व-इतिहास में उन्नीसवीं सदी में जो साम्राज्य-युग और यंत्राद्यागवाद शुरू हुए, उसमें भी भारी फेरफार और महान क्रान्ति के बीज उसने बाये हैं.

इस क्रान्ति से श्रव दुनिया में नये सवाल श्रीर नया पृष्ठ शुरू होता है, जिसकी पहली कड़ी भारत की स्वतंत्रता है. गांधी युग की पीढ़ी ने ऐसी महान घटना को देखा, उसमें हिस्सा लिया श्रीर उसे पैदा करने में यह पीढ़ी खास सबब बनी. स्वतंत्र यात्रा के बिचार के पीढ़ीनामे को मुख्तसिर में एक बार याद करके उस वी इस चौथी पीढ़ी के खास खास मुद्दों को हम देखेंगे.

इमने इस प्रकार पीढ़ियों की चर्चा की है :-

पहली पीढ़ी-राजा राममोहन राय.

दूसरी पीड़ी—सन् 1867 और उसके बाद की तरक्की का जमाना.

तीसरी पीढ़ी—जाब्तगी से राष्ट्र सेवा का युग. उसके दो मवाह—जहाल श्रीर मधाल.

इसके बाद आने वाली चौथी पीढ़ी—राष्ट्र की सव शक्तियों को मिलाकर इकट्टा करने का युग.

[2]

इस समय के दरमियान देश की आजादी के नुक्ते नजर से देखते हुए उसे हासिल करने के लिए जो काशिशं शुक्र हुई, उनके अगर माटे तौर पर हिस्से किये जायँ, ता वे दो थे ऐसा बताया जा सकता है—

(1) जनता का ज्ञान, उसकी समक, सुधार और विकास क्यादि शक्तियों के जरिये आगे बढ़ने का तरीका जो राजा राममोहन राय से शुरू हुआ, ऐसा कहा जा सकता है

श्वागे चलकर यह तरीका बंधारणीय पद्धति इत्यादि नाम से पहचाना गया, जो आगे चलकर गांधी युग में शांत सस्याग्रह तक विकसित हुआ.

(2) हथियारों और बाहर की राज्यद्वारी मद्द से लहकर काम आगे चलाने की कोशिश.

شعتی شائی یا اپنے الگ آدھی رابلہ رالی ٹیفن تھی ایس طرح یہ ایک سلسلےوار بگ موتے سے آسے مم کاندھی یگ بھی کے سکتے میں .

The state of the s

اِس یک کا اِنہاس هدارے دیش کا ایک شائدار اُور بہت
بلند اِنہاس هے اُس کا صحیح مہل بہشدہ کے اِنہا۔ کار آنک
سکیلگے اس کا اثر ساری دنیا کے اِنہاس پرواہ پر بھی هورها
هے؛ اِس سے وہ حقیقت وشو اِنہاس میں بھی ایک نیا باب
شورع کوئے والی ثابت هوئی هے اُس کی وجه سے نہ صوف
ودیشیوں کی غلمی کا انت هوئی بیارت کا اُپنا سوتلتر اِنہاس
بھر سے شروع هوا هے؛ بلکہ اُس گھتنا سے، وشو اِنہاس میں
بھر سے شروع هوا هے؛ بلکہ اُس گھتنا سے، وشو اِنہاس میں
انیسیوں صدی میں جو سامراجیم یک اور ینترودیوگاواد
شورع هوئے؛ اُس میں بھی بہاری بھیر پار اور مہاں کرانتی کے
بیم اُس نے ہوئے هیں ،

اس کرانتی سے اب دنیا میں نئے سوال اور نیا پرشتہ شروع ہوتا ہے، چس کی پہلی کری بھارت کی سوتنتونا ہے ، کاندھی یک کی پیڑھی نے ایسی مہاں گھتا کو دیکھا، اُس میں حصہ لیا اور اُسے پیدا کرنے میں یہ پاڑھی خاص سبب بنی ، سوتنتویہ یاتوا کے رچار کے پیڑھی نامے کو متختصر میں ایک بار یاد کرکے اُس کی اِس چوتھی پیڑھی کے خاص خاص مدوں کو اُس کی اِس چوتھی پیڑھی کے خاص خاص مدوں کو ھم دیکھیلگے ،

ھم نے اِس پرکار پیڑھیوں کی چرچا کی ہے:--پہلی پیڑھی---راجا رام موھن رائے .

درسری پیرهی۔۔۔سی 1857 اور اُس کے بعد کی ترقی کا زمالت ،

تیسری پیرهی الله الله علی سے راشتر سیوا کا یک ، اُس کے دو پرواد - جہال اور موال ،

اُس کے بعد ، آنے والی ، چوتھی ، پیڑھی۔۔راشٹر کی سب شعبیں کو ملاکر اکٹھا کرنے کا یگ ،

[2]

(1)-جنتا کا گیان' اُس کی سمجھ' سدھار اور رکاس اتیادی شکتیوں کے ذریعے آگے بڑھنے کا طریقہ' جو راجا رام موھن رائے سے شروع ہوا' ایسا کھا جاسکتا ہے ۔

رائے ہوری ہو طریقہ بندھارنیہ پدھتی انیادی گام سے پہنچانا گیا' جو آگے چلکو گاندھی یگ میں شانت ستیاگرہ تک

(2) مدد سے اور باہر کی راجیددراری مدد سے اوکر کام آگے چانے کی کوشش .

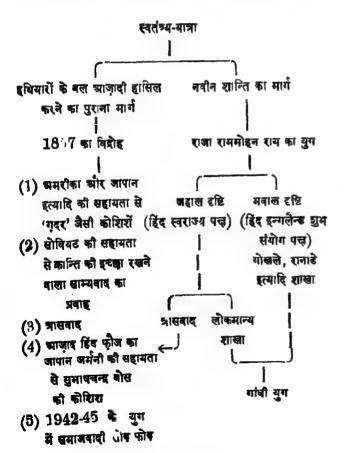
बह सरीका ई० सन् 1757 से 1857 तक के सी साल में बरता गया है. 1857 के बाद, राख बन्दी के होते हुए भी, बह एक या दूसरे हम से चलता रहा है और उसका प्रवाह 1947 तक चलता दिखाई देता है.

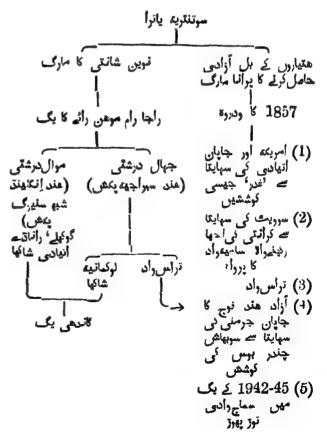
पहला तरीका नया है और दूसरा तरीका इतना पुराना है, जितना मानव-समाज का इतिहास. पहले तरीके की रिति-रस्में अवीचीन हैं, हमने उन्हें अमेजों के इतिहास और उनके साहित्य में से तथा भारत में उनके राज्य-तंत्र के अनुभव में से सीखा और उसे उपयाग में लाकर प्रह्ण करते गये. इन पद्धतियों को बंबारणीय पद्धतियाँ कहें या लाक-शाही की पद्धतियाँ, उनके अलग अलग रूप या भिन्न-भिन्न प्रकार बताते हैं. इसका कारण यह है कि उसमें जनता की शक्ति, विद्रोह, हथियारवन्दी या राज कारण के दाँव पेचों के रास्ते से नहीं, बल्क उसकी समझ, शक्ति तथा सत्कारिता और मेल जांल इत्यादि गुणों के जरिये काम देती है. गांधी जी ने इसमें उसके कलगी स्वरूप सत्याप्रह का नवीन शस्त्र जोड़ दिया.

आजादी की मंजिल की किस्में और तरक्षकी विकास संबंधी इस विचार का मुख्तसिर में इस तरह आलेखन किया जा सकता है— یہ طریقہ عیسری سن 1757 سے 1857 تک کے سو سال میں ہرتا گیا ہے . 1857 کے بعد شستر بندی کے هوتے هوئے بھی و وہ ایک یا درسرے تھنگ سے چلتا رہا ہے اور اُس کا پرواہ 1947 تک چلتا دکھائی دیتا ہے .

پہلا طریقہ نیا ہے اور دوسرا طریقہ اِتنا پرانا ہے، جتنا مائو
سماج کا اِنہاس، پہلے طریقہ کی ریتی رسمیں اورانی ہیں،
ھم نے اِنہیں انکویوں کے اِنہاس اوران کے ساھتیہ میں سے
تتھا بھارت میں اُن کے راجیہ تنتر کے انوبھو میں سے سیکھا، اور
اُسے اُپیوگ میں لاکر گرھن کرتے گئے، اِن پدھتیوں کو بدھارتیہ
پدھتیاں کہیں یا لوک شاھی کی پدھتیاں؛ اُن کے انگ انگ
روپ یا بھی بھی پرکار بتاتے ھیں، اِس کا کارن یہ ہے کہ اُس
میں جنتا کی شکتی، ودروء متیار بندی یا راج کارن کے داؤں
پیچوں کے راستے سے نہیں، بلکہ اُس کی سمجھ، شکتی تتھا
ستکاربنا اور میل جول اتهادی گنوں کے ذریعے کام دیتی ہے۔
گاند کی جی نے اِس میں اُس کے کلنی سوروپ ستھاگرہ کا ٹوین

اًزادی کی مازل کی قسمیں اور ترقی وکلس سمبندھی اِس وچار کا مختصر میں اِس طرح آلیکھن کیا جاسکتا ہے۔۔





Marie Committee Committee

[3]

पाठक देखेंगे कि बंशवृक्ष में गाँधी युग के अन्दर जहाल भीर मवाल पश्च के दो अलग अलग धाराओं का संगम बताया है, मतलब यह कि गाँधी जी लोकमान्य पीढ़ी और रानाडे-गोखले पीढ़ी के इकट्टा पीढ़ीधर थे. गांधी जी ने अपनी सियासी पहचान 'गोखले मेरे सियासी गुरू हैं;" इस प्रकार षी है. इन दो पक्षों में अगर कोई बुनियादी भेद है तो वह यह कि, गोखले शाखा की ऐसी मान्यता थी कि हिन्द श्रीर इंगलेन्ड का संयोग ईश्वरदत्त शुभ वस्तु है; जबकि तिलक-शाखा की मान्यता थी कि भारत एक स्वतन्त्र राष्ट्र है श्रीर उसका स्वराज्य स्वतन्त्र ही हो सकता है. गांधी जी 1915 में जब भारत आये तब पहले मत के थे, फिर भी वे गोखले शाखा की राजकीय रीति-रस्मों के अतिरिक्त सत्यामह की पद्धति में भी श्रद्धा रखते थे. और उस शस्त्र का सफल प्रयोग करने के बाद ही भारत आये थे. उनके न्यक्तित्व और उनकी प्रतिभा का यह अंश उन्हें गोखले-राज्य कारण में शामिल होकर, उनके भारत सेवक समाज के द्वारा कार्य करने में बाधा रूप हुआ. रूसरी ओर, इस चीज के कारण तिलक-राज्यकारण-शाखा को, उसमें अपने जहाल राजकारण से इन्छ नवीनता का अनुभव जरूर हुआ, लेकिन उसकी उपता के कारण उसमें उन्होंने सहधार्भिकता और समानता का अनुभव किया. इस प्रकार गांधी युग के प्रारम्भ में, गांधी जी में जहाल श्रीर मवाल दोनों टिप्टियों का संगम देखन को मिलता है.

इतना ही नहीं, दोनों पक्षों की कार्य-प्रणालियाँ उनके युग में एकत्र होकर एक अखंड कार्य प्रणाली के रूप में जन्म लेती हैं. इस पद्धति के लिए जिस प्रकार की रहनुमाई चाहिये वैसा ही गांधी जी की जीवन प्रतिभा पूरा करती है.

इससे क्रीम के अन्दर एक हिंद, एक काशिश, तथा एक नीति-नेतृत्व बरीरह एक नये ही ढक्न से अपने आप पैदा होते गये. स्वराज्य प्राप्ति अब सारी जनता का पुरुषार्थ बनता है, इसके आंग उपांगों की गहराई तक जाकर वह अपना असर डालने लगता है. ऐसा ही कहना चाहिए कि शस्त्रास्त्र के परंपरागत हिंसा मार्ग को छोड़कर, प्रजा, शांति-अहिंसा मार्ग के नये प्रयोग की पूर्ण रूप से आजमाइश करने के लिए कमर कसती है। जग के व्यापक राज कारण पर गांधी युग का जो कुछ भी असर हुआ वह इसी कारण पर गांधी युग का जो कुछ भी असर हुआ वह इसी कारण से हो सका है. गांधी जी का वर्णन करते हुए श्री गांखले ने कहा था कि इस व्यक्ति में भारतीय संस्कृति अपने आला हर्जे तक पहुंची है. गांधी जी के गुरु ने 1916 से भी पहले उनका जो वर्णन किया था उसे गांधी जी पूर्ण रूप से सिद्ध कर दिखाते हैं. न केवल राजनीति में बल्क भारत की

انیک دیمینکے که ونش ورکش میں کاندھی یک کے اندر جہال اور موال پکھی کے دو الگ انگ دھاراؤں کا سنکم بتایا ہے۔ مناب یه که کامدهی جی لوکمانیه پیرهی اور رانات گوکیلے يورتني کے اِکٹھا پیرهی دهر تھے ، گاندهی جی نے اُپنی سیاسی پہنچان 'کوکیلے میرے سیاسی گرو ھیں' اِس پرکار دی ھے۔ ان دو پکشوں میں اگو کوئی بنیادی بھید ھے او وہ یہ که گوکھلے اللها کی ایسی مانیتا تھی که هند اور انگلیند کا سنیوگ الشوردت شبه وستو هے؛ جبکه تلک شاکها کی ماثنتا تھی که بيارت ايک سرتنتريم راشتر هے اور أس كا سوراجيم سوتنتر هي سر ساما ه . كاندهى جى 1915 ميں جب بهارت أنه تب يها مت کے تھے؛ رور بھی وے گواہلے شاکھا کی راجیدہ ریتی رسوں کے ایپرکت ستیا گرہ کی ہدھتی میں بھی شردھا رکھتے تھے' اور أس شدر كا سههل پريوگ كونے كے بعد هي بهارت آئے تھے . اُن کے ریکتو اور اُن کی پرتیبها کا یہ انش آنهیں گوکھلے راج الله میں شامل هو کو اُن کے بھارت سیوک سماج کے دوارا اراً کرتے میں بادھا روپ ہوآ ، دوسری اُور اُس چیز کے کارن ک راجیه کارن شاکها کو اسمیں اپنے جہال راج کارن سے کچھ نہ منا کا 'توبیو ضرور ہوا' لیکن اُس کی اُوگرتا کے کابن اُس میں الیوں نے سبعدھارمکتا اور سمانتا کا انوبھو کیا ، اِس پاکار الدعلى يگ کے پرارمجھ ميں کاندعى جى مين جہال ارد موال دونوں درشتیوں کا سنکم دیکھنے کو سلما ھے .

اِتنا ھی نہیں' دونوں پکشوں کی کاربہ پرنالیاں اُن کے رک میں ایکتر ھو کر اُنھنڈ کاریہ پرنالی کے روپ میں جنم ایتی ھیں ، اِس پدھتی کے لئے جس پرکار کی رهنمائمی چاھیئے ہیسا ھی گاندھی جی کی جدون پرتیبھا پررا کرنی ہے ،

اِس سے قوم کے اندر ایک درشتی ایک کوشش تھا ایک نیتی نیترڈر وغیرہ ایک نئے ھی قسک سے اپنے آپ پیدا ہوتے گئے۔
سرراجیت پراپتی آب ساری جنتا کا پروشارنم بنتا ہے؛ اُس کے اُسک اُرانکوں کی گہرائی تک جا کر وہ اُرنا اثر دَالنے لکتا ہے؛ اُس کے ایساتھی کہنا چاہئے کہ شاستر استر کے پرمپراگت هنسامارگ کو چھرز نرب پرجا شانتی اهنسا مارگ کے نئے پریوک کی پورن روپ سے آزمائش کرنے کے اُنے کمر کستی ہے ۔ جگ کے ریاپک راج نان پر گاندھی یک کا جو کستی ہیں اثر ہوا وہ اِسی کارن سے سروسکا ہے ۔ گاندھی جی کا ورنس کرتے ہوئے شری گودیلے نے کہا یا کہ اِس ویکتی میں بھارتیت سنسکرتی اپنے عالی درجہ تک بیا کہ ایس ویکتی میں بھارتیت سنسکرتی اپنے عالی درجہ تک بیا جو رونس کیا تھا اُسے گاندھی جی پورن روپ سے سدھ بی درکہاتے ہیں رہی سے سدھ کر دکھاتے ہیں ، نے کیول راج نیتی میں بلکہ بھارت کی

स्वतन्त्रता की यात्रा की चौथी पीढ़ी

ननता के समस्त जीवन में नया प्रकाश, नई हृष्टि, नया
प्रथं, नयी सार्थकता और नया सिरजन इस युग में प्रकट
शिता है. हिन्द की आजादी जनता की सर्वतामुखी शक्ति
अंग्रह के बल पर हासिल हो सकी है, और ऐसा होने से
हेन्द के इतिहास ने अपना रुख पलटा है।

उत्तर के वंशवृक्ष में पाठक देखेंगे कि परंपरागत हिंसातार्ग की धारा भी 1857 से लेकर कई शक्लों में वक्षत के
ताविक तबदील होकर 1945 तक चालू रही है. इस धारा
की भी पीढ़ियाँ और दृष्टियाँ रही हैं. स्वतंत्र यात्रा के इतितास में उसका भी एक अलग प्रकरण है. उस पद्धति को
अन्त में यश प्राप्त नहीं हुआ, बाकी उसमें भी त्याग और
तित्तान पूर्वक अपने आपका अपंग करने वाले और स्वतंत्र
स्रोत को जलता रखने वाले देशभक्त अवश्य थे.

त्रासवाद श्रीर तोड़-फोड़ की प्रवृत्ति की भी इसके साथ गनती की है क्योंकि उनका प्रकार हिंसावल की परंपरागत बचार पद्धति का था.

श्रनुवादक-कनुभाई नानालाल पटेल

मेरे मत से कम्युनियम कोई बुरी चीज हो ऐसी बात नहीं है. बुरी चीज यह है कि बह हिंसा से लादा जाता है. मुभे कम्युनियम से ढर बिलकुल नहीं लगता, क्योंकि हिन्दुस्तान की हजारों बरसों की कलचर हिंसा विरोधी है और गांधी जी ने हमारे देश को खहिंसा की ताक़त दी है. मुभे यक़ीन है कि हिन्दुस्तान उसी की बदौलत बचने वाला है. मुभे यह भी विश्वास है कि अमरीका जैसा देश डर को छोड़ कर अगर अहिंसा की ताक़त को आजमा कर देखेगा, तो वह सारी दुनिया को निडर करेगा और खुद भी निडर बनेगा.

---विनोबा

سوتندرتا کی یاترا کی چرتھی پدرھی

جنتا کے سیست جیوں میں نیا پرکاش نئی درشتی نیا ارتہ نئی درشتی نیا ارتہ نئی سارتهکتا اور نیا سرجن اِس یک میں پرگت هوتا هے . هند کی آزادی جنتا کی سررتومکھی شکتی سنگرہ کے بل پر حاصل هو سکی هے اور ایسا عونے سے هند کے انہاس نے اینا رخ بلتا هے .

آرپو کے ونش ورکش میں باتیک دیکھینگے که پرمھراگت هنسا ، ارک کی دمارا بھی 7511 سے لیکر کئی شکلوں میں وقت کے مطابق تبدیل ہو کو 1945 تک چالو رہی ہے ، اِس دھارا کی بھی پیزھیاں اور درشتیاں رہی هیں ، سوتنتر یاترا کے اِتہاس میں اُس کا بھی ایک الگ پرکون ہے ، اُس پدھتی کو انت میں یش پراپت نہیں ہوا بافی اِس میں بھی تیاگ اور بلیدان پورک اپنے آپ کو اُرین کرنے والے اور سوتنتر جیوت کو جیتا رکھنے والے دیش بھکت اُشیع تھے ،

تراس واد اور توز پھور کی پرورتی کی بھی اُس کے ساتھ گنتی کی هے کیونکم اُن کا پرکار هنسا بل کی پرمھراگت وچار پدھتی کا تھا ۔

انوادك كنو بهائي نانا لال پتيل

میرے مت سے کمیونوم کوئی بری چیز ہو ایسی بات نہیں ہے ۔ ہری چیز یہ ہے کا وہ هنسا سے لادا جاتا ہے مجھے کمیونوم کی الکتاء کیونکہ هندستان کی هزاروں برسوں کی المچر هنسا ورودهی ہے اور گاندهی جی لے همارے دیش کو الهنسا کی طافت دی ہے . مجھے یتین ہے که هندستان اُسی کی بدولت بچنے والا ہے . مجھے یہ بھی وشواش ہے که آمریکہ جیسا دیش تر کو جھوز کر اگر الهنسا کی طافت کو آزما کر دیکھیگا، تو وہ ساری دنیا کو ندر کویگا اور خود بھی ندر بنیگا ،

---ونوبا

मुहम्मद साहब के कुछ उपदेश

محمد صاحب کے کچھ أبديش

मुहम्मद साहब ने कहा:—"न क्रबरों पर वैठा श्रौर न उनकी तरफ मुंह करके दुश्रा मांगो."

-- अबु मरसद् अलग्तनवी, मुसलिम.

محمد صاهب نے کہا:۔۔۔ "نه قبروں پر بیتھو اور نه أن كى طرف منه كر كے دعا مانكو ."

سراً بو مودد الغاوي مسلم.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"ऐ श्रन्लाह ! मेरी क्रज़ को बुत बना कर काई उसे न पूजे; श्रन्लाह का जबरदस्त क्रोध उन पर नाजिल होता है जो श्रपने पैराम्बरों की क़बरों को पूजते हैं।"

-श्रताविन यसार, मालिक.

متحمد صاحب نے کہا:۔۔''اے اللہ! مهری قبر کو بت بنا اور کوائی اُسے نہ پرچے ؛ اللہ کا زبردست کرودھ اُن پر نازل ہوتا ہے جو اپنے پہنمبروں کی قبروں کو پوجتے میں!''

-عطاس يسار مالك .

मुहम्मद साहब ने कहा:—"दो भूखे भेड़िये श्रगर भेड़ों के किसी गल्ले में छोड़ दिये जावें तो वह भेड़ों को इतना बरबाद नहीं कर सकते जितना धन श्रीर बड़प्पन का लाभ श्रादमी के दीन को बरबाद कर देता है."

-काव विन मालिक, तिरमिजी: दारिमी.

محمد صاحب نے کہا:۔۔''دو بھو کے بھیزیئے اگر بھیزوں کے نسی گلے میں چھوڑ دیئے جاویں تو وہ بھیزوں کو اِبنا بریاد انہیں در سکتے جتنا دھی اُور ہزیں کا لوبھ آدمی کے دین کو بریاد کر دیتا ہے ''

-- كعببن مالك ترمزى: داريمى .

मुहम्मद साहब ने कहा:—"कोई जालिम जन्नत में दाखिल नहीं होगा."

> — उक्तबह बिन आमिर, अबुदाऊदः अहमदः दारिमी.

محمد ماحب نے کہا:۔۔۔"کوئی ظالم جنت میں داخل نہیں شوگا ۔"

-عقبه بن عامر ابوداؤد: احدد: داریمی .

मुह्म्मद साहब ने कहा:—"सब से बड़ा जेहाद वह आदमी करता है जो एक जालिम हार्किम के सामने भी सच्ची बात कहता है."

> ---श्रबु सईद, तिरमिजी: श्रबुदाउद: इब्ने माजह; तारिक विन शिहाब, नसाई: श्रहमद.

محمد صاحب نے کہا:۔۔''سب سے بڑا جہاں وہ آنمی کرتا ہے ظالم حاکم کے سامنے بھی سچی بات کہتا ہے ۔''

- أبو سعيد' ترمذي: أبوداؤد: أبن ماجه؛ طارق بن شهاب' نسائ: أحمد .

मुहम्भद साहब ने कहा:—"जैसे तुम होगे वैसे ही वह हो जायेंगे जो तुम्हारे अपर हाकिम बनाए जायेंगे."

> —यहिया बिन हाशिम ने यूनुस बिन श्रबु इसहाक्त से श्रीर उसने श्रपने बाप से सुना, बेहकी

متعدی صاحب نے کہا:۔۔۔''جیسے تم ہوگے ویسے ہی وہ ہو جائینگے ہے نمہارے آرپر حاکم بنائے جائینگے ۔''

۔۔یحیی بن ہائم نے یونس بن ابو اسحاق سے اور اُس نے اپنے باپ سے سنا' بہرتی ،

एक श्रीरत ने पैरान्वर से आकर कहा:-"मेरा पेट सचमुच इस मेरे बेटे का घर बना रहा है; मेरी छाती इसकी महक थी जिससे यह अपनी भूख प्यास बुकाता था; मेरी गाद वह जगह थी जहां इसे आश्रय मिलता था; श्रीर अव इसके बाप ने मुक्ते तलाक दे दिया है और इस भी मुक्तस ले लेना चाहता है." पैराम्बर ने कहा:-"तुम्हें इस लड़के का अधन का ज्यादा हक है, जब तक कि तुम दूसरी शादी न करां."

--अमरू बिन शुएब, अबुदाऊद.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"रात को मेहमान की सेवा श्रीर सातिरदारी करना हर मुसलमान का फर्ज है, चाहे कोई भी उसके सेहन में आकर उतरे."

मेंन पूछा:--- ''ऐ अल्लाह के रसूल ! एक आदमी है जो जब में सफर में होता हूँ तो मरे साथ मेहमान के हक को नहीं निवाहता; तो क्या जब वह सफर में हो तो मैं उसे अपना महमान मान श्रीर उसके साथ श्रपन कर्ज को पूरा 死~?"

प्राम्बर ने जवाब दिया .- "हां, उसका स्वागत करा श्रीर उसकी खातिरदारी करा."

— श्रीफ विन मालिक, तिरमिजी.

गुहम्मद साहब ने कहा :—''सचमुच ब्रादमी के जिस्म के अन्दर गोशत का एक दुकड़ा है जिस दिल कहते हैं : जब वह ठीक रहता है तो सारा जिस्म ठीक रहता है, श्रीर जब वह खराव होता है तो सारा जिस्म खराव होता है."

--नामान विन वशीर, बुखारी: मुसलिमः श्रबूदा उदः तिरमिजीः नसाई.

मुहम्मद साहब ने कहा: -- काम, कोघ, लोभ, मोह के बाद दाज़स्त की आग है, और कप्टों के बाद जन्नत हैं."

—श्रबुद्धरेरा. बुखारी: मुसलिम.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"मुनाफिक यानी ढोंगी श्रादमी की तीन पहचानें हैं, वह राजे रखता है श्रीर नमाज पद्ता है और सममता है कि मैं मुसलमान हूँ, पर जब बालता है ता मूट बोलता है, जब बादा करता है ता उस पूरा नहीं करता, और जब उस र एतबार किया जाता है ता दशा देता है."

-अबु हुरैरा, मुसलिम.

ابک عبرت نے یشمر سے آکر کہا:۔۔"میرا پیٹ سے میے اِس میرے بیا ی کا کھر بنا رہا ہے؛ میری چھاتی اِس کی مشک تھی جس سے یہ اپنی بھوک پیاس بجھاتا تھا؛ میری گوں وہ جکہ بھی جہاں اِسے آشرئے ملتا تھا؛ اور اب اس کے باپ لے سجهے طالق دے دیا ہے اور اسے بھی مجھ سے لے لینا چاعتا هے " بينمبر نے کہا: ۔ "تنهيں اِس آوکے کو رکھنے کا زيادہ حق هـ ، جب نک نه تم دوسري شادي ته کرو . ١٠٠

-امرو بن شعیب ابوداؤه .

محمد صاحب نے کہا:۔۔ "رات کو مہمان کی سیوا اور خاطر داری کرنا هر مسلمان کا فرض هے ' چاهے کوئی بھی آس کے صحص میں آئر اُترہے .

میں نے پُوچھا:۔۔''اے الله کے رسول! ایک آدمی ہے جو جب میں سفر میں ہوتا عوں نو میرے سانھ مهدان کے حق کو فهين لبالما أ تو كيا جب ولا سعر مين هو تو مين أس أيما مهمان مانوں اور اُس کے ساتھ اپنے فرض کو پورا کروں ہے ،، يفعمبر نے جواب ديا۔ "ديال" أس كا سواكت كرو اور أس

کی خاطرداری کرو ."

-عوف بن مالک، نومنی .

معمد ماحب نے کہا :۔ "سپ مپ آدمی کے جس کے الدر گرشت كا ايك تَكرا في جيم دل كهتم هين : جب وه تهيك رهنا هي تو سارا جسم تُهيك رفعًا في أور جب ولا خراب هونا هي تو سارا جسم حراب عودا عے "

-- نومان بن بشير بخارى : مسلم : ابوداؤد: ترمذي: نسائي.

محمد صاحب نے کہا :۔۔ "کام ، کرودھ اوبھ موہ کے ہدد دوزج کی آک شے اور دشتوں نے بعد جدت ھے "

-- ابوهزيروا بكارى: مسلم .

متدمد صاحب نے کہا :۔۔۔ المذائق یعنی تھونکی أدمی کی تین پہنچانیں هیں' وہ روزے رفیۃ شے اور نماز پوهتا ہے اور سمندها هے که میں مسلمان طوں پر جب بولتا نے تو جھوت بولتا هے جب وعدہ دردا ف تو أسے پورا نہیں درتا اور جب أس پر اعتبار كيا جاتا هے تو دغا ديتا هے '،،

ـــالبوهريرة مسلم .

मुहम्मद साहब ने कहा:—"एक दिन आएगा जब ऐसे लोग पैदा होंगे जो दीन के नाम पर दुनिया को धोका देंगे, लोगों के सामने वह नम्रता से भेड़ बने रहेंगे, उनकी जबान चीनी से भी अधिक मीठी होगी पर उनके दिल भेड़ियों के से दिल होंगे. अल्लाह कहता है:—'क्या वह ध्यान न देंगे? और मुक्त पर भूटी ताहमत लगाएंगे? में अपनी क्रसम खाकर कहता हूँ में उन ही में से ऐसे लोग पैदा कर दूँगा जो उनके लिये आक्रत हो जायंगे और उनमें जो सबसे अधिक बने हुए होंगे वह घवरा जायंगे'."

--श्रबु हुरैश, तिरमिजी.

मुहम्मद साहब ने कहा:—"सचमुम आदम की श्रौलाद में शैनान का भी जार है श्रौर फिरिश्ते का भी जार है, शैनान का जार आदमी को बदी की तरफ श्रौर सच को मूट बनाने की तरफ ले जाता है, श्रौर फिरिश्ते का जार उसे नेकी की तरफ श्रौर साम्मा सच मानने की तरफ ले जाता है; इसलिये जो शिई जितना अपने अन्दर फिरिश्ते का जार अनुभव करे उसे जानना चाहिये कि यह अल्लाह की तरफ से है, इसके लिये उसे अल्लाह का शुक्रगुजार होना चाहिये; श्रौर जो कोई जितना अपने अन्दर शैनान का जोर अनुभव करे उसे चाहिये कि शैनान से बचने के लिये अल्लाह की पनाह ले."

सहस्मद साहब ने कहा:—''जो कोई किसी आदमी की किसी कमजोरी को देख लेता है और उसे दूसरों से छिपाता है वह उस आदमी की तरह है जो किसी जिन्दा गड़ी हुई जड़की को निकालकर फिर से पाल लेता है."

-- उक्तवा विन श्रामिर, श्रवुदाऊद्.

-इब्ने मसऊद, तिरमिजी.

मुहम्मद साहब ने कहा:—''जो श्रादमी चीजों के खरीदने या बेचने में या अपने कर्जादारों से कर्जा वसूल करने में नरभी से काम लेता है श्राल्लाह उस पर रहम करेगा."

—जाबिर, बुखारी.

श्रनुवादक—श्री मुजीब रिजवी.

محمد صاحب لے کہا :—''ایک دن آنے جب ایسے رکی ہیں اُ ہوئی جو دین کے نام پر دنیا کو دعوکا دینکے' لوگیں کے سامنے وہ نمرتا سے بھیر بنے رھیلگے' اُن کی زبان چینی سے میں اُدھک میٹھی ھوگی پر اُن کے دل بھیریس کے سے دل بہرتے ۔ الله کہتا ہے :—'کہا وہ دھیان نه دینکے ؟ اور مجھ پر جموئی تہمت لگائیں گھ ؟ میں اپنی قسم کیاکر کہتا ھوں میں جموئی میں سے ایسے لوگ پیدا کردونکا جو اُن کے لئے آنت بہجائیںگے اور اُن میں جو سب سے آدھت بنے ھوئے عونکے وہ نہوا جائینگے ۔''

--أبه هريرة ترمذي .

-ابن مسعود ترمذی ه

محدد صاحب نے کہا :۔۔۔ وجود کوئی کسی آدمی کی کسی 'مزرری کو دیکھ لیتا ہے اور اُسے دوسروں سے چھپانا ہے وہ اُس اُدمی کی طرح ہے جو کسی زندہ گڑی ہونی ارکی کو نکال کر پھر سے پال ایتا ہے ۔''

-عقبه بن عامر ٔ أبهداؤد .

محمد صاحب لے کہا: ۔۔۔ ''جو آدمی چیزوں کے خریدنے یا بیچنے میں یا اپنے قرضداروں سے قرضہ وصول کرنے میں قرمی سے کام لیتا ہے اللہ اُس پر رحم کرے گا ۔''

-جابر' بخاری .

آنورادكسشرى مجيب رضوى .

श्रीमती चेन कुआंग-यू

شريبتي چين كوآنگ-يو

[जोलाई सन् 1955 में सुइजरलैंड के शहर लासेन में 'दुनिया भर की माश्रों की पहली कांगरेस' हुई थी. उसमें दूर दूर के खयासठ देशों से बारह सौ माएं श्राकर जमा हुई थीं. चीन और हिन्दुस्तान की कुछ माश्रों ने भी उसमें हिस्सा लिया था. यह लेख एक ऐसी चीनी मां का लिखा हुआ है जो किसी कारण उस कांग्रेस में नहीं पहुँच सकी—एडिटर.]

\$ \$ \$ \$

जिस समय सब देशों की माश्रों के नुमाइन्दे लासेन में जमा हो रहे थे मैं पेकिंग के पाँचवें म्युनिस्पल श्रम्पताल के षच्चाखाने (मैटरनिटी वार्ड) में पड़ी हुई थी. मेरे बच्चा होने बाला था. श्रम्पताल का वह वार्ड मुक्ते बहुत ही प्यारा लगता था, ठंडी श्रीर शान्त जगह, सकेद बिस्तरे, सकेद दीवारें श्रीर सकेद बरिद्यां पहने हुए नरसें. थाड़ी थाड़ी देर के बाद कांइ नर्स दवाशों का तास हाथ में लिये टप टप करती हुई किसी एक पच्चाघर की तरफ जाती हुई मालूम होती थी, जिस से पता लग जाता था कि किसी कमरे में एक श्रीर नई जान पैदा होने वाली है. बड़ी-बड़ी खिड़कियों के बाहर सुन्दर दरखतों की हरी कोमल शाखें हवा में लहरा रही थीं. कभी कभी मींगुर की आवाज सुनाई दे जाती थी.

2 जोलाई को मेरे बच्चा पैदा हुआ. यह मेरा चौथा बच्चा था. जब मैंने उसका छोटा सा गुलाबी चेहरा, काले बाल और गुदगुदे छोटे छोटे हाथ देखे तो मैंने अपने गर्भवती रहने के दिनों की सारी तकली के और बच्चा पैदा होने के समय के सब दर्द भूल गई. मैंने अपनी आँख फिरा कर वार्ड की दूसरी औरतों की तरफ देखा. कई के अभी अभी उनका पहला बच्चा पैदा हुआ था. और कई के पहले भी कई कई बच्चे हा चुके थे. वह भी मेरी तरफ देख के सुसकराने लगीं. जाहिर है वे सब उतनी ही खुश थीं जितनी में. और खुश क्यों न हाती ? बच्चे ही माआ की उम्मीदें हाते हैं. बच्चे मानव समाज के फूल हाते हैं.

अपने बिस्तरे में पड़ी हुई मैं बहुत कुछ सोचती रही. सब से अधिक मुफ्ते यह विचार आता था कि पहले के मुकाबले में माओं के साथ चीन में अब कितना अधिक अच्छा सलूक होता है. पुराने चीन में औरत होना कोई मजाक [جولائی سن 1975 میں سوٹیزرلیلڈ کے شہرال سین میں ادنیا بھر کی ماؤں کی پہلی کانکریس' ہوئی تھی ، اُس میں دور دور کے چھیاسٹھ دیشرں سے ہارہ سو مائیں آکر جمع ہوئی تھیں ، چین اور ہندستان کی کچھ ماؤں نے بھی اُس میں حصہ لیا تھا ، یہ لیکھ ایک ایسی چینی ماں کا لکھا ہوا ہے جو کسی کارن اُس کانکریس میں نہیں پہونچ سکی ایڈیٹر ،]

جس سمی سب دیشوں کی ماؤں کے نمائندے لا سین میں جمع رہے تھے میں پیکنگ کے پانچویں مونسول اسھٹال کے زچھ حانے (میٹرنٹی وارڈ) میں پڑی ہوئی تھی ، میرے بچھ ہوئے والا تھا ، اسھٹال کا وہ وارڈ مجھے بہت ھی پیارا اکتا تھا تھندی اور شانت ہجہکہ سفید بسترے سفید دیواریں اور سفید وردیاں پہنے ہوئے ترسیں، نھوڑی تھرزی دیر کے بعد کوئی ترسدواؤں کا تاس عانه میں ائے تب تب درنی ہوئی کسی ایک زچہ گھر کی طرف جانی ہوئی معلوم ہوتی تھی جس سے پتہ لگ جانا تھا کہ کسی کمرے میں ایک اور نئی جان پیدا ہوئے والی ہے ، بڑی بڑی کھڑکیوں کے باہر سندر درختوں کی ہری کورل شاخیں ہوا میں ایرا رہی تھیں ، کبھی کبھی جھینکر دی آواز شاخیں ہوا میں ایرا رہی تھیں ، کبھی کبھی جھینکر دی آواز سندی جھینکر دی آواز

2 جولائی کو میرے بچہ پادا ہوا ، یہ میرا چوتھا بچہ تھا ، جب میں نے آس کا چھرٹا سا گلابی چھرہ کالے بال اور گدگدے چھوٹے چھوٹے چھوٹے ھاتھ دیکھے تو میں لینے گربھوتی رہنے کے دنوں کی ساری تعلیمیں اور بیچہ پیدا ھولے کے سب درد بھول گئی، مینے اپنی آنکھ بھوا کو وارد کی دوسری عورتوں کی طرف دیکھا ، کئی کے ابھی ابھی اُن کا پہلا بیچہ پیدا ھوا تھا ، اور کئی کے پہلے بھی کئی کئی بیچے ھو چکے تھے ، وہ بھی میری طرف دیکھ کے مسکرانے لکیں ، ظاھر ھے وے سب اُننی ھی خوش تھیں جتنی میں ، اور خوش کیوں نہ ھوتیں ہے بچے ھی ماؤں کی جتنی میں ، اور خوش کیوں نہ ھوتیں ہے بھول ھوتے ھیں ،

اپنے بسترے میں پڑی ہوئی میں بہت کچھ سوچتی رھی۔
سب سے ادمک مجھے یہ وچار آنا تھا کہ پہلے کے مقابلے میں
ماؤں کے ساتھ چین میں اب کتنا ادھک اچھا سلوک
ہوتا ھے پرائے چین میں عورت ہوئا کوئی مذاق

नहीं था. एक गीत में यह शब्द आते हैं :— पुराना चीन गड्दा 'था, अथाह, भयंकर और मनहस,

> धाम जनता उस गठ्हे में कुचली जाती थी, पर सब से अधिक दुगेत औरतों की होती थी.

बात बिलकुल सच्ची है. उन दिनों मां बाप अपनी लड़कियों को एक ऐसे नाम से प्रकारा करते थे जिसके मानी हैं "वह माल जिस पर घाटा ही घाटा हो." बहुत सी माएं धगर उनके लड़की होती थी तो पैदा होते ही उसे पानी में इबो कर मार डालती थीं, लड़कियाँ जब बड़ी हो जाती थीं तो बिलकल माल असवाब की तरह बेची और खरीदी जाती थी. आम तौर पर बचपन में ही उनकी सगाई कर वी जाती थीं. कभी कभी ऐसा भी होता था कि जिस लड़के के साथ किसी लड़की की सगाई कर वी जाती थी वह लड़का अगर शादी से पहले मर जाता था तो उस लड़की की शादी लकड़ी की एक ऐसी पड़ी के साथ कर दी जाती थी जिस पर उस लक्के का नाम लिखा होता था. समभा जाता था कि इस तरह लड़की की "शादी" लड़के की रूह के साथ हो गई. जो लड़िकयां छोटी उमर में विधवा हो जाती थीं उन्हें उस जमाने के रिवाज के अनुसार दूसरी शादी करने की हिम्मत न हो सकती थी. सब से बुरी बात यह थी कि जो माएं चाहती थीं कि उनके बच्चे हों उन्हें हराया जाता था. क्योंकि हर नए बच्चे का मतलब यह था कि एक और नए सुँह को खाना देना पढ़ेगा. जो माएं यह चाहती थीं कि उनके बच्चों को भले दिन दखने को मिलें उनकी आशाओं के रास्ते में एक हजार एक मुसीबतें थीं. भूक, सरदी, बीमारी भीर मौत तक सदा बच्चों के सामने नाचती रहती थीं. मां का जीवन उन दिनों दुख और चिन्ताओं से भरा रहता था.

इसके बाद इतिहास ने नया पनना पलटा. सन् 1949 में चीन के अन्दर जनता के राज ने जनम लिया. हम श्रीरतों को, जिन्हें उससे पहले कुचला जाता था श्रीर गुलाम बनाकर रखा जाता था, श्रव समाज के अन्दर गर्व के साथ उचित स्थान मिला. तब से लेकर श्रीरतों को राजकाजी, माली, समाजी श्रीर गृहस्थी के जीवन में मरदों के साथ साथ बराबर के श्रधिकार मिलने लगे. सरकार ने श्रीरतों श्रीर बच्चों की खास तरह से रक्षा करनी शुरू की. नए चीन के विधान में श्रीरतों के श्रधिकार ऐसे शब्दों में लिखे हुए हैं जिनके काई दां श्रर्थ नहीं लगाए जा सकते.

धीरतों को सब तरह की नौकरियां मिलने लगीं. सब धंचे धौर सब कारबार उनके लिये खाल दिये गए. समाचार पत्रों में धाए दिन तरह तरह की "पहली धौरतों" की चरचा होने लगी, जैसे—पहली ट्रैक्टर चलाने वाली धौरत, पहली इंजिन चलाने वाली घौरत, पहली हवाई जहाज चलाने نہیں تھا ، ایک گیت میں یہ شبد آتے ہیں:-

پرانا چین ایک گذها نیا ⁴ اتهاه بهینکر اور منحوس ⁴

عام جلتا أس گذهے میں کچلی جاتی تھی ' پرسب سے ادھک درگت عبرتیں کی ہوتی تھی۔

بات بالكل سجى ه . أن دونون مان باپ أيني لركيون کو ایک ایسے نام سے پکارا کرتے تھے جس کے معلی ھیں "وہ مال جس ير كهانا هي كهانا هو ." بهت سي مائين أكر أن کے لڑکی ہوتی تھی تو پیدا ہوتے ہی اُسے یالی میں تہو کو مار دَأَلتي تهين ، لركيان جب برى هوجاتي تهين تو يالكل مال أسباب كي طرح بيجي أور خريدي جاتي نهين ، عام طور پر بچہن میں هی اُن کی سکائی کردی جانی نهی ، کبھی کبھی ایسا بھی ہوتا تھا کہ جس لوکے کے ساتھ کسی لوکی کی سکائی کو دمی جائی تھی وہ لوکا اگر شادی سے پہلے مر جاتا تھا تو اُس لوکی کی شادی الکوی کی ایک ایسی بائی کے ساتھ کر دی جاتی تمي جس پر أس لوكے كا نام لكها هوتا تها . سمجها جاتا تها که اِس طرح لرکی کی 'تشادی'' لرکے کی روح کے ساتھ مو گئی ، جو لڑکیاں چھوٹی عمر میں ودھوا ھو جاتی تھیں اُنھیں اُس زمانے کے رواج کے افرسار دوسری شادی کرنے کی همت نه هو سکتی تھی ۔ سب سے بری بات یہ تھی کہ جو مائیں چاھتی تھیں کہ اُن کے بجے ہوں اُنھیں قرایا جاتا تھا' کیونکہ ہو نئے بجع كا مطلب يه تها كه أيك أور نائه منه كو كهانا دينا پر كا . جو مائیں یہ چاہتی تہیں که اُن کے بچوں کو بیلے دن دیکنے کو ملیں آن کی آشاؤں کے راستہ میں ایک عزار ایک مصیبتیں تھیں بھوک سردی بیماری اور موت تک سدا بھوں کے سامام ناچتی رهای تهیں . ماں کا جیون آن دنوں دکھ آور چنتاؤر ، سے بھرا رهتا تھا ،

اِس کے بعد اِتہاس نے نیا پننا پلتا ، سن 19:49 میں چین کے اندر جنتا کے راج فے جنم لیا ، هم عورتوں کو' جنهیں اُس سے پہلے تعیلا جاتا تھا اور غلم بنا کر رکھا جاتا تھا' اب سماج کے اندر گرو کے ساتھ اُچت استہان ملا ، تب سے لیکر عررتوں دو راجکاجی' مالی' سماجی اور گرهستی کے جیون میں سردوں کے ساتھ ساتھ براہر کے ادھیکار مانے لگے ، سرکار نے عورتوں اور بھیوں کی خاص طرح سے رکھا کوئی شرع کی ، نئے چین کے ودھان میں عورتوں کے ادھیکار آیسے شہدوں میں لکھے ہوئے ہیں کے ودھان کے کوئی دو ارتھ نہیں لگائے جا سکتے ۔

عورتوں کو سب طرح کی نودریاں ملنے اکیں اسب سب ماہی سب ماہی اور سب کاربار اُن کے لئے کھول دیئے گئے ، مماچار پتروں میں آئے دین طرح طرح کی ''پہلی عورتوں'' کی چرچا ہوئے لکی' جیسے۔۔پہلی تریکز چلانے والی میرت' پہلی ہوائی جہاز چلانے

बाली जीरत, बरौरा बरौरा. जाज जीरतें कारखानों की डाइरेक्टर हैं, जीरतें सरकारी बजीर हैं. जाज वह सब बातें बिलकल मामली हो गई हैं.

चीनी सरकार जनता की सरकार है. इस जनता की सरकार ने औरतों और बच्चों के लिये बड़ी बड़ी अजीव बातें कर बाली हैं. मैं पेकिंग के नम्बर 4 म्युनिसिपल गर्ल्स मिडिल स्कूल में पढ़ाती हूँ. सन् 1949 से पहले भी मैं वहां पढाती थी. पर छन दिनों मेरी नौकरी हर समय खतरे में रहती थी. यह डर रहता था कि जहां किसी पढ़ाने वाली भौरत के एक भौर बच्चा हुआ तुरन्त वह नौकरी से अलग कर दी गई. अब नौकरी के मामले में मैं बिलकल निश्चिन्त हूँ. दूसरी पढ़ाने बाली कियों की तरह सुमे बच्चा पैदा होने के समय 56 दिन की छुट्टी पूरी तनखाह पर मिलती है. अस्पताल में सुमे एक पैसा भी खर्च नहीं करना पड़ता. राज की तरक से मुक्ते मुक्त दवा और अच्छे से अच्छा हताज मिलता है, अभी जो मेरे बच्चा हुआ है वह लड़की है, मेरी इस लड़की का लड़कपन उसकी मां के लकड़पन के मुकाबले में कहीं अधिक सुख से बीतेगा. नई सरकार की बदौलत अब लक्कों और लक्कियों सब के लिये हजारों नरसरी हैं, किन्डर गारटन हैं, प्राइमरी और सेकन्डरी स्कूल हैं और कालिज हैं. सारी तालीम या तो बिलकुल मुफ्त है और या नाम को थाड़ी सी कीस ली जाती है. इन सब संस्थाओं को सरकार से बड़ी बड़ी प्रान्टें मिलती हैं. मेरी लड़की को हर तरह की तालीम ठीक ठीक मिल सकेगी. अपनी तबीयत और अपने रुजहान के अनुसार वह जिस धंधे या जिस कारबार को चाहेगी अपना सकेगी. सारांश यह कि अपने देश और अपने समाज के लिये एक उपयोगी स्त्री बनने का उसे पूरा पूरा अवसर मिलेगा.

में खूब जानती हूँ कि दुनिया में अभी तक मुट्टी भर आदमी इस तरह के हैं जा अपनी जेवें भरने के लिये दुनिया की जनता को एक दूसरे से लड़ाना और एक दूसरे से कटवा देना चाहते हैं. यह मुट्टीभर लाग डर श्रीर घवराहट की हवा पैदा कर रहे हैं श्रीर एक नई बड़ी जंग खड़ी कर देने की फ़िक़ में हैं. बंकों में अपनी जमा बढ़ाने के लिये और उद्योगी कल कारखानों में अपने हिस्सों की कीमत बढ़ा देने के लिये यह लोग जान बूमकर इस तरह की साखिशों कर रहे हैं जिनसे लाखों आदमी मजबूर हाकर इनकी तांपों का चारा बन जावें और दुनिया की औरतों से इनके पति और उनके बच्चे छिन जावें.

मैं जिस समय बैठी हुई यह लिख रही हूँ मेरे सामने दो दिन का एक पुराना अखबार पढ़ा हुआ है. उसमें लिखा है कि संयुक्त राज अमरीका में 15 जून से 17 जून तक हाइडोजिन बम के हमले का एक प्रदर्शन किया गया. यह والی عربت و بنیرہ و بنیرہ آ ہے عورتیں کارخانیں کی تأثیریکٹر هیں ، عربیں سرکاری وزیر هیں ، آ ہے یہ سب باتیں باتکل مسولی هو گئی هیں ،

چینی سرکار جنتا کی سرکار ہے ۔ اِس جنتا کی سرکار نے عررس اور بحوس کے لئے بڑی بڑی عصیب باتیں کر ڈالی میں . میں باکنگ کے تعبر 🗗 میونسیل گراس مڈل اسکول میں پرهاتی هرس , سن 1949 سے پہلے بھی میں رهاں پرهاتی تهی ، یر آن دنون مهری نوکری هر سب خطرت مین رهتی تھی . یہ قر رہتا تھا کہ جہاں کسی یوها لے والی عورت کے ایک ارر بحجه بهذا هوا ترنت وه نواري سه الك كردي كثي . أب ٹوکری کے معاملے میں میں بالکل ٹشعیات ہوں ، دوسری پڑھانے والی اِستریوں کی طرح مجھے بچتہ پیدا ہونے کے سالہ 56 دن کی چہتی یوری تلخواہ پر ملتی ہے . اسپتال میں مجھ أیک پیسه بھی خرچ ٹہیں کرٹا پرتا۔ راج کی طرف سے مجھ مفت دوا اور اچھ سے اچھا علے ملکا ہے . ابھی جو معرے بچھ ہوا ھ وہ نوکی ھے ، مہری اِس نوکی کا لوکین اُس کی ماں کے لڑکھن کے مقابلہ میں کہیں ادھک سکھ سے بیٹیکا . نئی سرکار کی بدولت اب لوکیں آور لوکیس سب کے لئے ہواری فرسری هیں كَلْتُوكُورُتِي هِينَ يُواتُمُونُ أُورُ سَيْعُلْتُرِي أَسْعُولُ هِينَ أُورُ كَالِمِ هَيْنِ . سارى تعليم يا تو بالكل صفت هے أور يا نام كو تهرزى سى نيس لی جاتی ہے ، اِن سب سنستہاؤں کو سرکار سے بڑی بڑی گرانتیں ملتی هیں ، میری لوکی کو هر طرح کی تعلیم ٹھیک ٹھک مل سے کی . اپنی طبعت اور ایئے رجعان کے انوسار وہ جس حمادهے یا جس کاربار کو چامیکی ابنا سکیکی . ساراٹش یه که اپنے دیص اور اپنے ساہے کے لئے ایک آپدوگی استری بانے کا اُسے يورا يورا أوسر مليكا .

میں خرب جانتی ہوں که دنیا میں ابھی تک مٹھی بھر آدمی اِس طرح کے ہیں جو اپنی جیبیں بھرنے کے لئے دنیا کی جنتا کو ایک دوسرے سے کٹوا دینا کی جنتا کو ایک دوسرے سے کٹوا دینا کو رہے میں اور ایک نئی بڑی جنگ کھڑی کردینے کی خاب میں ہیں اور ایک نئی بڑی جنگ کھڑی کردینے کی ناہو میں ہیں ، بینکوں میں اپنی جمع بڑھانے کے لئے اور ادیوگی کل کارخانوں میں اپنے حصوں کی قیمت بڑھا دینے کے لئے یہ لوگ جان ہوجھکر اِس طرح کی سازشمی کو رہے میں جن سے لاہوں آدمی مجبور ہوکر اُن کی توپوں کا چارا بی جاویں اور فنیا کی عورتوں سے اُن کے بتی اور اُن کے بتیے چھی جاویں ،

میں جس سے بیٹھی ہوئی یہ اکم رہی ہوں مہرے ساملے دو دن کا ایک پرانا اخبار پڑا ہوا ہے ۔ اُس میں لکھا ہے که سنجکت راج امریکہ میں 15 جون سے 17 جون تک ھاکتروجن ہم کے حملے کا ایک پردرشن کیا گیا ۔ یہ

एक बहुत बड़ा प्रदर्शन था जिसके घेरे में वाशिंगटन और न्युयार्क को मिलाकर 50 से ऊपर शहर श्रागए थे. यूनाइटेड प्रेस नाम की खबर देने वाली एजेन्सी ने इसकी बाबत लिखा है कि इस तरह का इतना बड़ा प्रदर्शन कभी नहीं हुआ था श्रीर "यह एक भयंकर पूरी पूरी नक़ल थी जो बिलकुत असल के मुताबिक थी."

यह सब क्यों हो रहा है ? क्या कोई अमरीका के ऊपर हाइड़ोजिन बम फेंकने जा रहा है ? नहीं, हरिगज नहीं ! अमरीका के कल कारखानों के बड़े बड़े अरबपित और खरबपित सरमायादार और वहां के कौजी जनरल ही एटम बम और हाइडोजिन बम पर इतने अधिक लट्टू हैं. वे ही इस तरह की "नक्षलें" कराते हैं और उनसे आजकल की ठंडी जंग को गरमा गरम जंग में बदल देना चाहते हैं. जा देश अमन और जनता के हित की तरफ है वह शुरू से यह कह रहें हैं कि एटमी हथियारों पर बंदिश लगा दी जावे और आम हथियार भी कम किये जावें. सब माएं अमन बाहती हैं. हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे अपने बिस्तरों में शान्ति से सोवें. हमने कभी दूसरों को धमिकयों नहीं दीं, और नहम दसरों की धमिकयों से डरते हैं.

मेरी दूसरी बेटी पेई पेई ने जब किसी को यह कहते सुना कि कुछ लोग ऐसे भी हैं जो शान्ति पसन्द नहीं करते और जंग छेड़ देना चाहते हैं तो उसने घबराकर मेरी तरक देखा और पूछा:—''क्या उन लोगों के सारे बदन पर जान-बरों की तरह बाल हैं ? क्या उनके बड़े बड़े दांत और तेज पंजे हैं ?"

हम हंस पड़े. पर सच्ची बात यह है कि यह बात इतनी हंसी की नहीं है. मेरी वह बच्ची अपने छोटे से दिमारा से यह सममती है कि हर आदमी में छुछ शान और आन होना जरूरी है. सचमुच जो लोग आदमियों के खून से डालर ढालना चाहते हैं वह आदमी नहीं हैं. वह आदमियों के रूप में दरिन्दे हैं.

मेरे सब से बड़े बेटे का नाम कांग कांग है. वह श्रव दो बरस से स्कूल जा रहा है श्रीर सममता है कि मैं कुछ जानता हूँ. उसने कहा कि:—"श्रगर वह लोग दिरन्दे हैं तो उन्हें जीजीरों से बाँधकर रखना होगा. हम यह नहीं देख सकते कि वह लोगों को खा जाएं." उसका कहना भी ठीक है. हमें ऐसा करना ही पड़ेगा.

हम मानव जाति की माएं हैं. माएं सदा शान्ति चाहती हैं और जंग का विरोध करती हैं. माएं दुनिया भर में बच्चों को पालने पोसने में लिगी रहती हैं. वह नहीं चाहतीं कि उनके बेटे बेटियां जंग में मिट जांय वह यह नहीं चाहतीं कि उनके बेटे दूसरी माध्यों के बेटों को काटें, न वह यह चाहती हैं कि दूसरी माध्यों के बेटे उनके बेटों को काटें. जो जान पैदा करती हैं उन्हीं का काम जान की रक्षा करना भी है. ایک بہت ہڑا پردرش تھا جس کے گھیرے میں واشنکٹن اور نیویارک کو ملاکر 50 سے آرپر شہر آگئے تھے ۔ یونائیٹن پریس نام کی خبر مینے والی اجینسی نے اس کی بابت لکھا ہےکہ اِس طرح کا اِننا ہڑا پردرشن کبھی نہیں ہوا تھا اور ''یہ ایک بھینکر پروی پوری نقل تھی جو بالکل اصل کے مطابق تھی ۔''

یه سب کیس هو رها هے ؟ کیا کوئی امریکہ کے آوپر هاند ۔
روجن ہم پھینکنے جا رها هے ؟ نہیں' هوگز نہیں المریکہ کے کل
کارخانوں کے بڑے بڑے آرب پتی اور کھرب پتی سرمایدار آور
وهل کے نوجی جنرل هی آیتم ہم اور هاند روجن ہم پر اِتنے
ادهک لتو هیں ، وہ هی اِس طرح کی "نقلیں" کراتے هیں
اور اُن سے آجکل کی تهندی جنگ کو گرما کرم جنگ میں
بدل دینا چاهتے هیں ، جو دیش اُمن اور جنتا کے هت کی
طرف هیں وہ شروع سے یہ کو رهے عیں که آیتی هتیاروں پر
بندھی لگادی جارہ اور عام هتیار بھی کم نئے جاویں، سب مائیں
امن چاهتی هیں، هم چاهتے هیں که همارہ بیچے آپنے بستروں
میں شانتی سے سوئیں ، هم لے کبھی دوسروں کو دهمکیاں
میں شانتی سے سوئیں ، هم لے کبھی دوسروں کو دهمکیاں
میں دیں' اور نه هم دوسروں کی دهمکیوں سے ترتے هیں ،

مهری دوسری بیتی پیئی پهئی نے جب کسی کو یہ کہتے سنا کہ کچھ لوگ آیسے بھی هیں جو شائتی پسند نہیں کرتے اور جنگ چھیز دینا چاھتے هیں تو اُس نے گھبرا کو مهری طرف دیکھا اور پوچھا :—"نیا اُن لوگوں کے سارے بدی پر جانوروں کی طرح بال هیں ﴿ کیا اُن کے بڑے بڑے دانت اور تیو پنچے هیں ﴿ '''

ھم ھنس پڑے، پر سچی بات یہ ہے کہ یہ بات اِتنی ھنسی کی نہیں ہے۔ پر سچی اپنے چھرتے سے دماغ سے یہ سجھتی ہے کہ عمر آدمی میں کچھ شان اور آن ھونا ضروری ہے۔ سچے مچ جو لوگ آدمیوں کے خون سے ڈائر تھائنا چاھتے ھیں وہ آدمی نہیں ھیں ، وہ آدمیوں کے روپ میں درندے ھیں ہ

مهرم سب سے برتے بیتے کا نام کانگ کانگ ھے ۔ وہ اب دو برس سے اسکول جا رہا ھے اور سمجھتا ھے کہ میں کچھ جانتا ھوں ۔ اُس نے کہا کہ :—'اگر وہ لوگ درندے ھیں تو اُنھیں زنجیروں سے باندھکر رکھنا ھوگا ۔ ھم یہ نہیں دیکھ سکتے کہ وہ لوگوں کو کہا جائیں ۔'' اُس کا کہنا بھی تھیک ھے ، ھمیں ایسا کرنا ھی پریگا ،

ھم مانو جاتی کی مائیں ھیں۔ مائیں سدا شانتی چاھتی ھیں اور جنگ کا ورودھ کرتی ھیں۔ مائیں دنیا بھر میں بچوں کو پالنے پوسنے میں لکی رھتی ھیں، وہ نہیں چاھتیں که اُن کے بیتے بیتیاں جنگ میں مت جائیں۔ وہ نہیں چاھتیں که که اُن کے بیتے دوسری ماؤں کے بیتے اُن کے بیترں کو کاٹیں' نه وہ یه چاھتی ھیں که دوسری ماؤں کے بیتے اُن کے بیترں کو کاٹیں۔ جو جان میں گنیں کا کام جان کی رکھا کرنا بھی ھے۔

दुनिया भर की माएं यह कभी नहीं भूल सकतीं कि दूसरे महायुद्ध में चार करोड़ से ऊपर आदमी मरे थे जिनमें बहुत से उनके अपने पित और पुत्र थे. हम माइदानेक, बेलसेन और आसवीशिन के उन जेल कैम्पों को कभी नहीं भूलोंगे जिनमें लाखों युद्ध के क़ैदी रखे जाते थे. लिडाइस शहर के क़लेआम को हम कभी नहीं भूलोंगे, न हम हीरो-शिमा और नागास्मकी पर ऐटम बम बरसाए जाने को कभी भूलोंगे, न हम हाल में जंग के कारण कोरिया और वीतनाम की बरबादी को भूल सकते हैं. चीन की माओं को जंग का काकी भयंकर तजरबा है.

यह सब चीजें हमारे दिमातों में श्रमी ताजा हैं. ऐसी हालत में दूसरे महायुद्ध के खतम हाने के दस बरस के श्रन्दर हमें ऐसा लगता है कि एक नए महायुद्ध का खतरा हमारे श्रीर हमारे बच्चों के सामने है.

यही कारण था कि जब मैंने अस्पताल में पड़े पड़े वायरलेस से यह ख़बर सुनी कि दुनिया भर की माश्रों की पहली कांगरेस होने जा रही है तो जांश और ख़ुशी से मेरे रोंगटे खड़े हों गए. इसके बाद जब मैं घर वापिस गई तो मैंने अखबारों में वह एलान पढ़ा जो उस कांगरेस ने शाया किया था. उस एलान में यह माँग की गई थी कि सब पेटमी हथियारों का इस्तेमाल बन्द कर दिया जावे और इस तरह के सब हथियारों का नष्ट कर दिया जावे, एटमी शक्ति को शान्ति के रचनात्मक कामों में लगाया जावे, सब देशों में हथियारों और की जों कम किया जावे, और जो रूपया इस तरह से बचे उसे समाज सेवा के कामों में और बच्चों की मलाई के कामों में लगाया जावे. दुनिया भर की माओं ने संयुक्त राष्ट्र संघ से और चार बड़ी सरकारों की कान-फरेन्स से यही अपील की है.

मेरा द्दाल का बच्चा यानी मेरी चौथी लड़की अभी अभी जाग गई है. मुझे उसे दूध पिलाना है. मैं और मेरे पित उसके बिस्तरे की तरफ जा रहे हैं. वह अपनी छोटी छोटी प्यारी आँखें खोलकर हमें देख रही है. पास की मेज पर से सकेद चमेली के फूलों की भीनी भीनी महक आ रही है. सुनहरी मछलियां खशी खुशी पास के तालाब में तैर रही हैं. हमारा दो बरस का बच्चा येन येन सहन में इधर छघर खेल रहा है और खुशी से चिल्ला रहा है. हर चीज जीवन और आनन्द से भरी हुई मालूम होती है.

मैं चाहती हूँ कि दुनिया भर के बच्चे फूलों की सुगंध का धानन्द लें और बारूद की दुगंध से बचे रहें. मैं चाहती हूँ कि हमारे सब के बच्चे जीवन के सुख को अनुभव करें, जंग की लानत को नहीं. मैं एक मामूली चीनी औरत हूँ. मैं चार बच्चों की मां हूँ. मैं दुनिया भर की माओं को सलाम करना चाहती हूँ और एलान करती हूँ कि लासेन की دنیا بهر کی مائیں یہ کبھی نہیں بهرال سکتیں که دوسرے مہایدھ میں چار کرور سے اُوپر آدمی مرے تھے جن میں بہت سے اُن کے اپنے پتی اُور پتر تھے . هم مائیدائیک بیلسین اُور اُسیشن کے اُن جیل کیمیوں کو کبھی نہیں بهولیںگے جن میں لاکھوں یدھ کے قیدی رکھے جاتے تھے ، لیڈائس شہر کے قتل عام کو هم کبھی نہیں بهولینگے قت هم هیروشما اُور ناگا سا کی پر عام کو هم درسائے جانے کو کبھی بهولینگے نت هم حال میں جنگ کے اُن کوریا اُور ویتنام کی بربادی کو بهول سکتے هیں ، چین کی ماؤں کو جنگ کا کانی بهیادی تجربت ہے ۔

یہ سب چیزیں همارے دماغوں میں أبھی تازہ هیں ، أیسی حالت میں دوسرے مہایده کے ختم هوئے کے دس برس کے اندر همیں أیسا لکتا هے کہ أیک نائے مہایده کا خطرہ همارے أور همارے بحوس کے سامنے هے .

یہی کارن تیا کہ جب میں نے آسپتال میں پڑے پڑے وائرلیس سے یہ خبر سنی کہ دنیا ہور کی ماؤں کی پہلی کانگریس ہونے جا رہی ہے تو جوش اور خوشی سے مہرے رونگئے کہتے ہوگئے ۔ اس کے بعد جب میں گور واپس گئی تو میں نے اخباروں میں وہ اعلان پڑھا جو آس کانگریس نے شانع کیا تھا، کا استعمال بند کردیا جاوے اور اِس طرح کے سب ستیاروں کو اُسمت کردیا جاوے اور اِس طرح کے سب ستیاروں کو شمت کردیا جاوے ایتمی شکتی کو شانتی کے رچناتمک کاموں میں لگایا جاوے سب دیشوں میں مقاوروں اور فوجوں کو کم کیا جارے اور جو روپیہ اِس طرح سے بچے اُسے سماج سیوا کے کاموں میں اور بچوں کی بیلائی کے کاموں میں اگایا جارے دنیا بھر کی ماؤں نے سنجکت راشتر سنتھ سے اور چار ہڑی دنیا بھر کی ماؤں نے سنجکت راشتر سنتھ سے اور چار ہڑی

میرا حال کا بچه یعنی میری چونهی لرکی ابهی ابهی جاگ گئی هے . مجهے اُس دوده پلانا هے . میں اور میرے پتی اُس کے بسترے کی طرف جارهے هیں . وہ اُپنی چهوئی چهوئی پیاری اُنکهیں کهراکر همیں دیکھ رهی هے . پاس کی میز پر سے سفید چمیلی کے پهراری کی بهینی بهینی مهک اُرهی هے . سفید چمیلیاں خرشی خوشی پاس کے تالاب میں تیر رهی هیں . همارا دو برس کا بچه یوں بین صحن میں اِدهر اُدهر کهیل رها هے اور خرشی سے چلا رها هے ، هر چیز جمیوں اور آتند سے بهری هوئی معلوم هوتی هے .

میں چاھتی ہوں کہ دنیا بھر کے بحجے پھولوں کی سکندھ کا آنند لیں اور بارود کی درگندھ سے بحجے رھیں ، میں چاھتی ہوں کہ ھمارے سب کے بحجے جیوں کے سکھ کو آنوبھو کریں' جنگ کی امنت کو نہیں ، میں ایک معمولی چینی عورت ہوں ، میں دنیا بھر کی ماؤں کو سلام کرنا چاھتی ہوں اور اعلان کرتی ہور کہ السین کی

the company of the second

Part Land

माओं की कॉंगरेंस ने को एलान निकाला है उससे मैं पूरी तरह सहमत हूँ. मेरी अपनी छोटी सी कोशिशों से बहुत कुछ नहीं हो सकता, पर यदि सब देशों की माएं उठ खड़ी हों और इस काम में लग जावें तो मुक्ते विश्वास है कि हम जंग के खूनी हाथ को रोक सकते हैं, और इस बात का पक्का प्रबन्ध कर सकते हैं कि हमारे बच्चों का मविष्य शान्ति और मुख से भरा हुआ हो.

यदि हम सब मिलकर खढ़े हो जावें तो कोई हमें जीत नहीं सकता. ماؤں کی کانگریس لے جو آمان لکا ہے آس سے میں پیری طرح جبیت ہیں۔ میری آپئی چھوٹی سی کوشش سے بیت کچھ نہیں ہوسکتا پر یدی سب دیشرں کی مائیں آئے کوڑی ہوں اور اِس کامیں لگ جاریں تو مجھے رشواس ہے کہ ہم جنگ کے خونی ہاتے کو روک سکتے ہیں' اور اِس بات کا پکا پربندھ کرسکتے ہیں کہ ہمارے بچوں کا بھوشیہ شانتی اور سکھ سے بھوا ہو ،

یدی هم سپ ملکر نوزے هوجاویں تو کوئی همیں جیت لهیں سکتا ،

("पीपुरुप चाइना" से)

("پرہلس چائنا" سے)

क्रोमों क्रोमों के बीच दोस्ती

قوموں قوموں کے بیبے دوستی

भी निकिता सूरचेव

[24 नवम्बर सन् 1955 की शाम को बम्बई में हिन्द-स्रोवियत कलचरल सोसाइटी की तरफ से भी बुलगानिन और भी खुरचेद की स्वागत सभा में भी निकिता सुरचेद का भाषण्.]

\$ \$ \$ \$

बोस्तो,

हम सब दोरत हैं, क्योंकि यह जलसा एक ऐसी सोसाइटी की तरफ़ से है जिसका मक़सद ही भारत और सोबियत यूनियन में दोस्ती को बद्दाना और मजबूत करना है.

अपने दोस्त निकोलाई बुलगानिन की तरह मैं भी इस सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट डाक्टर बालीगा को धन्यवाद देता हूँ. मैं बम्बई के गवर्नर श्री महताब को भी धन्यवाद देता हूँ क्योंकि वह इस सोसाइटी के काम में मदद देते हैं और उन्होंने कुपा करके हमें आपके इस अद्भुत शहर में आने की दावत दी है.

मैं आपकी रियासत के चीफ मिनिस्टर श्री देसाई का भी शुक्रिया अदा करता हूँ. मैं आप सब को जो हम से मिलने के लिये यहां आप हैं धन्यवाद देता हूँ. شرى نكيتا خرشچير

[24 نومبر سن 1955 کی شام کر بمبئی میں هند سوریت کلچرل سرسائٹی کی طرف سے شری بلکانی اور شری خوشچیو کی سراگت سبھا میں نکیتا خوشچیو کا بھاشن .]

که که که هه میکان درستر^ه

هم سب درست هیں' کیرنت یہ جلسے ایک ایسی سوسائٹی کی طرف سے فے جس کا مقصد هی بهارت اور سرویت یونین میں درستی کو بڑھاتا اور مضبوط کرتا ھے ۔

اپنے دوست نکولائی بلکانی کی طرح میں بھی اِس سوسائٹی کے پریسیڈینت ڈاکٹر بالیکا کو دھنیتواد دیتا ھوں ۔ میں ہمبئی کے گورنر شری مہتاب کو بھی دھنیہ واد دیتا ھوں کیونکہ وہ اس سوسائٹی کے کام میں مدد دیتہ ھیں اور اُنھوں نے کہا کو کے ھمیں آپ کے اِس اُدبہت شہر میں آنے کی دعوت دی ھے ۔

میں آپ کی ریاست کے چیف منسار شری دیسائی کا یعی شکریہ ادا کرتا ہیں۔ میں آپ سب کو جو ہم سے مالمے کے لیٹے یہاں آئے میں دھنیہواد دینا ہوں ۔

कभी कभी जब आद्मी बोलने लगता है तो भाकुकता की बजह से बह अपने भाषया को ठीक ठीक रूप नहीं दे पाता.

ऐसा लगता है कि इस समय मेरे लिये सबसे मुनासिक मजमून क्रीमों क्रीमों के बीच की दास्ती है.

दोस्तियां कई तरह की होती हैं. एक दोस्ती वह होती है कि जिस में लोग एक दूसरे से युल मिलकर सन्मुच दांस्तों की तरह रहते हैं. लेकिन एक तरह की "दास्ता" वह भी होती है जिसमें लोग एक दूसरे के पास पास पड़ासियों की तरह रहते हैं लेकिन एक दूसरे का अपने यहां आने की दावत नहीं देते. यही हालत देशों और राज्यों का है. कुछ लोग अगरचे एक ही धरती पर रहते हैं फिर भी उनमें सच्ची दोस्ती नहीं होती. ऐसी सूरत में आप पसन्द करें या न करें आप को किसी न किसी तरह एक दूसरे से निवाहना ही पड़ता है.

इमारा महान नेता लैनिन इस तरह के बिनाइने को "को-एगिजस्टेन्स" यानी "साथ-साथ रहना" कहा करता था.

यह साथ साथ रहने की बात बहुत ही मजे की है. दुनिया में कुछ लोग ऐसे हैं जो पूछते हैं कि क्या इस तरह साथ साथ रहना मुमकिन है ? मुमे लगता है कि यह सवाल ही नहीं उठता, क्यों इस तरह के देश अमल में साथ साथ रह ही रहे हैं. फिर भी लोग यह सवाल उठाते रहते हैं. मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि बच्चा पैदा हो या न हो यह बात मां बाप के हाथों में जरूर है लेकिन यह बात उनके हाथों में नहीं है कि बच्चा किस दिन और किस घड़ी पैदा हो या बच्चा वैसा ही हो जैसा वह चाहते हैं.

इतिहास की प्रगति को रांक सकना कैसे मुमकिन हो सकता है, और नई नई समाजी व्यवस्थाओं की पैदायश को भी कौन रोक सकता है ? जिस तरह सूरज रोज सुबह निकलता है उसी तरह पुराने समाजी ढाँचों की जगह नए और अधिक प्रगतिशील ढाँचों का पैदा होते रहना भी जहरी है.

ठीक इसी नियम के अनुसार हमारे सोवियत राज का जन्म हुआ. दुनिया में अपने हाथ पाँव से काम करने वालों का यह पहला राज था. यह मजदूरों और किसानों का राज है. जब यह नया राज पैदा हुआ तो और सब देशों और राजों ने घंटे बजाकर उसका स्वागत नहीं किया.

रूस के अन्दर पुरानी जारशाही का ढाँचा बिलकुल स्रोसला हो चुका था और सड़ चुका था. इसलिये हमारा अक्तूबर (1917) का इनक्रलाब लगभग बिना खून बहे ही सफल हो गया. लेकिन बाद में हमसे यह कहा गया, शब्दों में नहीं और सरकारी तौर पर नहीं, लेकिन कामों के आरिये कहा गया कि इस सा।वयत राज के पैदा होने की کبھی کبھی جب آدمی بولئے لکتا ہے تو بھاوکتا کی وجہہ سے اپنے بھاشن کو ٹھیک ٹھیک روپ نہیں دے پانا ،

ایسا لکتا ہے که اِس سینے مهرے لئے سب سے مقلسی مغمون قوموں قوموں کے بیچ کی درستی ہے ،

دوستیاں دئی طرح کی هوتی هیں . ایک دوستی وہ هوتی هے کہ جس میں لوگ ایک دوسرے سے گهل ملکر سے میے دوستوں کی طرح رهنے هیں ، لیکن ایک طرح کی ''دوستی'' پروسیوں کی طرح رهنے هیں لوگ ایک دوسرے کو آننے یہاں آنے پروسیوں کی طرح رهنے هیں لیکن ایک دوسرے کو آننے یہاں آنے کی دعوت نہیں دیتے ، یہی حالت دیشوں اور راجیوں کی ہے ، کچ ہلوگ اگرچه ایک هی دهرتی پر رهنے هیں پهر بھی آن کچ ہلوگ اگرچه ایک هی دهرتی پر رهنے هیں پهر بھی آن میں سحتی دوستی نہیں هو دیس نہ کسی طرح آیک دوسرے سے کویں یا نے کویں اپ کو کسی نہ کسی طرح آیک دوسرے سے نہانا هی پرنا ہے ،

هماراً مہاں نیتا لینی اِس طرح کے تباهلے کو ⁷⁷کو۔ آیکوسالینس'' یعنی '^دساتہ ساتہ رهنا'' کہا کرتا تھا ۔

یه ساته ساته رهنے کی بات بہت هی مزے کی هے . دنیا میں کچھ لوگ ایسے هیں جو پوچھتے هیں کہ کیا اِس طرح ساته ساته رهنا ممکن هے ؟ مجھے لکتا هے که یه سوال هی نہیں اُلها کیونکه اِس طرح کے دیش عمل مهں سانه ساته ره هی ره هیں . پهر بهی لوگ یه سوال اُنهاتے رهتے هیں ، میں اُله سے کہنا چاهتا هوں که بچه پیدا هو یا نه هو یه بات ماں باله کے هاتهوں میں ضرور هے لیکن یه بات اُن کے هاتهوں میں ضورور هے لیکن یه بات اُن کے هاتهوں میں نہیں هے که بچه کس دن اور کس گهری پهدا هو یا بچه ویسا هی هه جیسا وہ چاهتے هیں ،

اتهاس کی پرگتی کو روک سکنا کیسے ممکن هو سکتا هے؛ اور نئی نئی سماجی ویوستهاؤں کی پیدایش کو بھی کون روک سکتا هے اسی طرح پرائے سکتا هے اسی طرح پرائے سماجی تمانچوں کی جکہت نئے اور ادعک پرگتی شیل فعادچوں کا یدرا فوتے رفتا بھی ضروری هے ،

. ٹھیک اِسی تیم کے انوسار ھمارے سوویت راج کا جنم ھوا ، دنیا میں اپنے ھانے چاؤں سے کام کرھے والوں کا یہ چہلا راج تھا ، یہ مزدوروں اور کسانوں کا راج ھے ، جب یہ نیا واج پیدا ھوا تو اور سب دیشوں اور راجوں نے گھنٹے بجائر اُس کا سواگت نہیں کیا ،

روس کے اندر پرانی زار شامی کا تعانیت بالکل کھوکھا ھو چکا بھا اور سر چکا نھا۔ اِس لئے عمارا انقربر (1917) کا اِنقلاب لگ بیک بنا حرن بھے ھی سھال ھو گیا ۔ لیکن بعد مھیھم سے یہ دہا گیا شبدوں میں نہیں اور سرکاری طور پر نہیں لیکن کاموں کے ذریعہ دہا گیائہ اِسسوویت اے کے پیدا ھولے کی

क्या जरूरत थी १ मजदूरों और किसानों को इक्स्मत अपने

सोगों ने यह सिर्फ कहा ही नहीं उन्होंने नए पैदा हुए सोवियत राज के खिलाफ अपनी भीजें मैदान में उतार दीं. फ्रांसीसियों ने जबरदस्ती अपनी कीजें हमारे ओडेसा के बन्दरगाह पर उतारीं. श्रंगरेजी भीजें आक एस्जल्स पर चा धमकीं, अमरीकी फ्रीजें व्लैडीबास्टक में पहुँच गईं. इन सब के पीछे पीछे जापानी फौजें भी हमारे खिलाफ पहुंच गई'. इस सब से नतीजा क्या निकला यह सारी दुनिया को अच्छी तरह मालूम है. सीवियत रूस के लोगों ने इन सब हमलावर की जों को इसी तरह खदेड़ कर अपने मुल्क से बाहर निकाल दिया जिस तरह एक अच्छी सघड़ औरत अपने घर से कड़े कचरे को माद बहार कर बाहर फेंक देती है, लेकिन कुछ देशों को इससे भी सन्तोष नहीं हुआ। वह अपने तजरबे को दुहराना चाहते थे और इसके लिये चन्होंने इसरा महायुद्ध खड़ा कर दिया. इन लोगों ने सोवियत रूस के खिलाफ हिटलरी जरमनी की अनिगनत हथियारबन्द क्रीजों को भिड़ा दिया.

सारी दुनिया अच्छी तरह जानती है कि इसका भी नतीजा क्या हुआ. सावियत यूनियन ने फिर एक बार अपने दुशमनों पर विजय प्राप्त की. उस जंग से कवल इतना ही नहीं हुआ कि सोवियत यूनियन कमजोर नहीं हुई बल्कि उसकी शिक और बढ़ गई. उस जंग से जो घाव हमारे लगे थे आज सोवियत यूनियन के लागो की कोशिशों से वह सब बाब भर चुके हैं और अच्छे हा गए हैं. युद्ध के कारण हमारा जो कारबार बरबाद हा गया था उसे सोवियत के लोगों ने फिर से ठीक कर लिया है. यहां तक कि हमने कामयाबी के साथ जंग के बाद की अपनी पहली पंचवर्षी योजना पूरी कर ली है और हम दूसरी पंचवर्षी योजना पूरी कर रहे हैं. हमारा देश तेजी से बढ़ रहा है और शान के साथ फलता फूलता जा रहा है.

मुक्ते अक्तूबर के इनक्रताब के शुरू के दिन याद हैं. मुक्ते अपने यहां की घरेलू जंग की भी याद है. उस समय केवल एक लैनिन देश के भविष्य को साक साक देख सकता था. लैनिन को ही इसका अन्दाजा था कि नया पैदा हुआ सोवियत राज थांदे दिनों में कितना शक्तिशाली हो जायगा.

जो लोग यहां इस जलसे में मौजूद हैं उनमें बहुत बड़ी तादाद दिमागी काम करने वालों की है. इस सम्बन्ध में मैं आपको अपना उस समय का एक तजरबा बताना चाहता हूँ. उस जमाने के रूस के दिमागी काम करने वालों में उस इनक्कलाब को किस निगाह से देखा गया. बहुत से दिमागी काम करने वालों ने उसका स्वागत किया और वह ईमानदारी के साथ नए सोवियत राज की सेवा में लग गए. लेकिन कुछ

کیا ضرورت تھی ؟ مزدوروں أور کسائوں کو حکومت أپنے هاتھ میں لینے کا کیا حق تیا ؟

لوگوں نے یہ مرف کہا ھی نہیں آنہوں نے نئے پیدا ھوئے سوویت راج کے خلاف اپنی فوجیں میدان میں آتار دیں ، فرانسیسیوں نے زبردستی اپنی فوجیں ھمارے ارتیست کے بلارگاہ پر آتاریں ، انگربزی فوجیں آرک ایلجاکس پر آدھمکیں ، امریکی فوجیں ولیڈیواسٹک میں پہونچ گیئں ، اُن سب کے اس سب سے نتیجے جاپائی فوجیں بھی ھمارے خلاف پہونچ گئیں ، اِس سب سے نتیجے کیا نکا یہ ساری دنیا کو اچھی طرح معلوم اِس سب سے نتیجے کیا نکا یہ ساری دنیا کو اچھی طرح معلوم اِسی طرح کو اِس سے باہر نکال دیا جس طرح ایک اِسی طرح کو جہاز ہوھار کر اِسی سکورے کو جہاز ہوھار کر اہم سنترش نہیں ھوا ، وہ اپنے تجربے کو دوھرانا چاھتے تھے اور اِس سے سی سنترش نہیں ھوا ، وہ اپنے تجربے کو دوھرانا چاھتے تھے اور اِس سے سوویت روس کے خلاف ھٹاری جرمنی کی انگنت ھٹھار بند فوجوں کو بہزا دیا ، اُن لوگوں نے سوویت روس کے خلاف ھٹاری جرمنی کی انگنت ھٹھار بند

ساری دنیا اچھی طرح جائٹی ہے کہ اِس کا بھی نتیجہ کیا ھوا ، سوویت یونین نے پھر ایک بار اپنے دشمنوں پر وجئہ پراپت کی ، اس جنگ سے کیول اِتفاعی نہیں ہوا کہ سوویت ہوئیں کمزور نہیں ھوئی بلکہ اِس کی شکتی اور بڑھ گئی ، اُس جنگ سے جو گھاؤ ھمارے لگے تیے آج سوویت یونین کے لوگوں کی کوششوں سے وہ سب گھاؤ بھر چکے ھیں اور اچھے ھو گئے ھیں ، یدھ کے کارن ھمارا جو کاربار برباد ھوگیا تھا آسے سوویت کے لوگوں نے پھر سے تھیک کر لھا ھے ، یہاں تک کہ ھم نے کامیابی کے ساتھ جنگ کے بعد کی اپنی پہلی پنج ورشی یوجنا پروی کر رہے ہیں کو لی ہے اور ھم دوسری پنج ورشی یوجنا پروی کر رہے ھیں ، ھمارا دیش تیزی سے بڑھ رھا ہے اور شان کے ساتھ پھلنا بھانا جا رھا ہے ،

مجھے انتربر کے انقلاب کے شروع کے دن یاد ھیں ، مجھے اپنے بہاں کی گھریلو جلگ کی بھی یاد ھی اس سماّء کھرل ایک لیٹن دیکھ سکتا تھا ، ایک لیٹن کو ھی ایس کا اندازہ تھا کہ نیا پیدا ھوا سوریت رأج تھوڑے دئوں میں کتنا شکتی شالی ھو جائیگا ،

جو لوگ یہاں اِس جلسے میں موجود بھیں اُن میں بہت ہتی تعداد دماغی کام کرنے والوں کی ہے ۔ اِس سمبندہ میں مہیں آپ کو اپنا اُس سیئے کا ایک تجربه بتانا چاعتا بھی ۔ اُس زمانے کے روس کے دماغی کام کرنے والوں میں اُنتالب کو کس نگاہ سے دیکھا گیا ، بہت سے دماغی کام کرنے والوں نے اُس کا سواگت کیا اور وہ ایمانداری کے ساتھ لئے سوریت راج کی ساوا میں لگ گئے ، لیکن کچھ

दिमारी काम करने वालों को तरह तरह की दलीलें स्कने लगीं. वह सोचने लगे कि न जाने क्या होने जा रहा है ? लैनिन ने और कम्युनिस्टों ने देश के शासन का काम मजदूरों और किसानों के हाथों में दे दिया है. मजदूर अनपढ़ हैं. किसान उनसे भी अधिक अनपढ़ हैं. यह लोग देश के नेता बन गए हैं ! अब रूसी कलचर का क्या हागा? रूसी आर्ट की क़ब्र कीन करेगा ? वह रूसी बैले (नाच) जो सारी दुनिया में मशहूर थे वह अब सदा के लिये खतम हो जायंगे! रूसी ओपरा (इामा) की वह कला जो इनक्र लाख से पहले इतनी जबरदस्त तरक्षकी कर चुकी थी अब मिट जायंगी! इसी तरह दूसरी तरह के आर्ट, कला और हुनर भी अब मिट जावेंगे! क्योंक उनकी सच्ची क़द्र करने वाला अब कोई न रहेगा!

लेकिन इतने दिनों के इतिहास ने इन सब राकों को मूठा साबित कर दिया है. नई सोवियत कलचर पुरानी रूसी कलचर के मुकाबले में इतनी ऊँची पहुँच चुकी है कि दोनों में कोई तुलना नहीं रही.

आप में से बहुत से इसी साल सोवियत यूनियन जा चुके हैं. आपने अपनी आंखों से देला है कि सोवियत यूनियन के अन्दर आट और कला की जितनी क़दर आज होती है उतनी इनक़लाब से पहले के रूस में नहीं होती थी. सोवियत कला ने पहले कभी भी इतनी तरक़क़ी नहीं की थी. मजदूरों और किसानों ने अपने अन्दर से अच्छे से अच्छे होनहार लोगों को चुनकर यूनीवर्सिटियों और इसी तरह की दूसरी संस्थाओं में भेजा. जो मजदूर और किसान अपने काम में लगे रहे उनमें भी कलचर ने बहुत उन्नित की. हमें इसका अभिमान है. हमारे दुशमन इसे पसन्द करें या न करें सोवियत यूनियन जिन्दा है और केवल जिन्दा ही नहीं है, बढ़ रही है और उन्नित कर रही है. हमारा कारवार और हमारी माली हालत बहुत मजबूत है, कलचर बढ़ रही है. लोगों की ख़शहाली भी बढ़ती चली जा रही है.

यह सब ऐसी हालत में हो रहा है जबकि इस तरह की शिक्तयां मीजूद हैं जिन्हें हम से दुशमनी है, जिन्होंने अभी तक हमारे देश का गला घोंट कर उसे ख़वम कर देने का बिचार छोड़ा नहीं है. हमें मजबूर होकर अपने देश की रक्षा के लिये अपनी बहुत सी शिक्त और अपना बहुत सा धन सामान खर्च करना पड़ रहा है. जितना धन और सामान हम हथियारों पर खच कर रहे हैं उस सब को अगर हम शान्ति के कामों में लगा सकते तो हमारे देश के लागों की खुशहाली इससे भी कहीं अधिक बढ़ जाती, जिसका अन्दाजा कर सकना भी कठिन है.

हमारे दुशमन इस बात को सममते हैं. यही कारण है कि कुछ विदेशी राज-नीतिक अब हथियारबन्दा की सच्ची دمانی کلم کرنے والوں کو طرح طرح کی دایلیں سوجھنے اللہ ، وہ سوچنے لئے کہ نہ جانے کیا ہونے جا رہا ہے ؟ لینی نے اور کمیونسٹوں نے دیش کے شاسی کا کلم مزدوروں اور کسائیں کے ہاتھوں میں دسے دیا ہے ، مزدول انہزہ ہیں ، کسان ان سے بھی ادھک انہزہ ہیں ، یہ لوگ دیش کے نیٹا بن گئے ہیں! اب روسی کلچو کا کیا ہوگا ؟ روسی آرت کی قدر کون کریگا ؟ وہ روسی بھلے (ناچ) جو سازی دنیا میں مشہور تھے وہ اب سدا کے لئے ختم ہو جانھیگے ، روسی اُپیرا (تراما) کی وہ کا جو انقلب سے پہلے اِتنی زبردست روسی اُپیرا (تراما) کی وہ کا جو انقلب سے پہلے اِتنی زبردست کرتی کر چکی تھی اب مت جائیگی ! اِسی طرح درسری طرح کے آرت' کا اور عنر بھی اب مت جارینکے ! دونکہ اُن کی سچی قدر کرنے والا اب درئی نہ رہیگا !

لیکن اِتنے دنوں کے اِتہاس نے اِن سب شکوں کو جھوٹا ثابت در دیا ہے ، نئی سرویت دلچر پرائی روسی کلچر کے مقابلے میں اِتنی اونجی پہونچ چکی ہے ته دونوں میں کوئی تلنا نہیں رھی ،

آپ میں سے بہت سے اِسی سال سوریت یونین جا چکے میں ، آپنے اپنی آنکھوں سے دیکھا ہے کہ سوریت یونین کے اندر آرے اور کلا کی جتنی فدر آج هوتی هے آننی آنتاب سے پہلے کے روس میں نہیں ہوتی تھی ، سوریت بلا نے پہلے کبھی بھی اِننی ترقی نہیں کی تھی ، مزدوروں اور کسانوں نے اپنے آندر سے اچھے سے اچھے بھونہار لوکس کو چی در یونیورسٹیوں اور اِسی طرح کی درسری سنستھاؤں میں بھیجا ، جو مزدور اور کسان اپنے کام میں لیے رھے آن میں بھی دلچر نے بہت آننتی دی ، همیں اِس کا ابھیمان ہے ، همارے دشمن اِسے پسند کریں یا نہ کریں سوریت یونیس زددہ ہے اور کیول زندہ هی نہیں ہے، بڑھ رهی ہے اور کیول زندہ هی نہیں ہے، بڑھ رهی ہے اور میاری مالی حالت بہت منبوط ہے، کلچر بڑھ رهی ہے ، ارکوں کی خوشحالی بھی بڑھتی جانے جانے جانے رہی ہے ، وہی ہے ، ارکوں کی خوشحالی بھی بڑھتی جانے جانے جانے رہی ہے ،

یه سب ایسی حالت میں هو رها هے جب که اِس طرح کی شکتیاں موجود هیں جاہیں هم سے دشمنی ها جاہیں نے ایهی تک همارے دیش کا گلا گهونث کر اُسے ختم کردیائے کا وچار چھرزا نہیں هے ، همدں متجبور هو کر اپنے دیش کی رکشا کے لئے اپنی بہت سی شکتی اور اپنا بہت سا دهن سامان خرچ کرنا پر رها هے ، جننا دهن اور سلمان هم هتیاروں پر خرچ کر رهے هیں اُس سب کو اگر هم شانتی کے کاموں میں لگا سکتے تو همارے دیش کے لوگوں کی خوشعالی اِس سے بھی کہیں همارے دیش کے لوگوں کی خوشعالی اِس سے بھی کہیں ادھک بڑھ جاتی' جس کا اندازہ کو سکنا بھی کہیں ہے ۔

همارے دشمن اس بات کو سمجھتے هيں ، يہی کارن هے که کچھ ردیشی راج نینکیه اب متیار بندی کی سچی

بات کرتے سے درتے ھیں۔ وہ دیشرں کے بیچ کے تناو کو مثالا نہیں چاہتے۔ اُنہیں در ہے که روس کا جو دھن اور جو شکتی اِس سیٹے فہجی رکشا کے کاموں میں خرچ ھو رھی ہے اُسے پور ھم بیچا کو دیھی کی شائتی مئے رچنا کے کاموں میں لگا سکینکے ۔

باد جود اِس سب کے همیں پررا وشواس ہے که اَجال کی عالمیں میں بھی پولنجی پتی ویستھا (کھیی ایاست سسلم) اور ساج وادی ویوستھا (سرشلست سسلم) دونوں اگر شائتی کے ساتھ جنس اور دوسروں کو جینے دیں اور ماکر چلیں تو آخیر میں هم جینائکے، ساج واد جینے گا۔

ایکبار کویسلی (اسکو) کے ایک جاسے میں میں نے یہی بات ماف ماف کہ دیں اس پر پوئنجی پتی دیشوں کے اخبار والوں نے دنیا بھر میں یہ اعلان کر دیا کہ خوشچیو نے سارا بھید نھول دیا اور بالشیوکوں نے اپنی راجکاجی یہجناوں کو چھوڑا نہیں ہے ، نہیں' مینے کوئی بھید نہیں کھولا تھا اور نہ میں کوئی بھول کی تھی جو هم مانیے ہیں ، اپنا راج کاجی کام هم نے تم کبھی چھوڑا تھا اور نم همکبھی جھوڑیا کی ایک کام ہم نے کبھی چھوڑا تھا اور نم همکبھی اپنا راجکاجی پروگرام هم نے کبھی نہیں چھوڑا آور نم هم اپنا راجکاجی پروگرام هم نے کبھی نہیں چھوڑا' اور نم هم چھوڑیا گھوڑا' اور نم هم چھوڑیا گھ

همارہ یہاں کی آیک کہاوت ہے۔۔''جس کسی کے پاس کرئی آچھی چیز ہے وہ پھر کسی گھٹیا چیز کی طرف نگاہ نہیں ڈالای '''

ھارا دیھی سیکورں ہرس تک ایک پچھڑا ہوا دہھی رھنے کے بعد جس چیز کی بدولت آس حالت سے نکل کو اُن دیشوں کے برابر میں پہرنیج کیا ہے جو اُدیوگ دھندوں کی نگا: سے اور اُریکٹ نگا: سے اور اُریکٹ نگا: سے سے ادھک اُننت اور بڑھ چڑھ ھیں' اُس چیز کو ھم کیوں چھڑ کے لئے چیز کو ھم کیوں چھڑ کے لئے چیز کو ھم کیوں چھڑ کے لئے

اسی لئے هم آن بیلے مانسوں سے' جو یہ آمید کرتے هیں که سبویت یونین آپنا راجکاجی پروگرام بدل دیگی' یہ کہتے هیں که آپ اپنی آمید کے پورا هوئے کے لئے آس سے تک انتظار کیچئے جب تک که مجھلیاں سیٹی بجانا نه شروع کردیں اور آپ جانتے هیں مجھلیاں سیٹی بجانا کب شروع کردیں ا

اِس لله راسته کهول ایک هی و ه یه که دونوں ویوستهائیں ساتھ ساتھ رهیں و پونجی وادمی ویوستها بھی رهے اور سماج وادمی ویوستها بھی رهے ایسی کا قام (پیسنل کو - ایکوسٹینس) هی ا

میں خود پولجیوادی ویستیا کو پسند نبھی کرنا ، میں ساتھ رہلے کی بات اِس لئے نہیں کہتا کیونکہ میں یہ چاھٹا ھوں که پوئجیواد چلتا رہے، بلکہ اِس لئے کہتا ھوں کھونکہ میں یہ دیکھ رھا ھوں که پوئجیوادی ویستھا بھی

बात करने से डरते हैं. वह देशों के बीच के तनाव को मिटाना नहीं चाहते. उन्हें डर है कि रूस का जो धन और जो शक्ति इस समय कौजी रक्षा के कामों में खर्च हो रही है उसे फिर हम बचा कर देश की शान्तिमय रचना के कामों में लगा सकेंगे.

बावजूद इस सबके हमें पूरा विश्वास है कि आजकल की हालतों में भी पूँजीपित व्यवस्था (कैपिटेलिस्ट सिस्टम) और समाजवादी व्यवस्था (सोशिलिस्ट सिस्टम) दोनों अगर शान्ति के साथ जियें और दूसरों को जीने दें और मिलकर चलेंं तो आखीर में हम जीतेंंगे. समाजवाद जीतेगा.

एक बार क्रेमिलन (मास्को) के एक जलसे में मैंने यही बात साफ साफ कह दी. इस पर पूँजीपति देशों के अखबार वालों ने दुनिया भर में यह ऐलान कर दिया कि सुरचेब ने सारा भेद खोल दिया और वालशेबिकों ने अपनी राजकाजी थोजनाओं को छोड़ा नहीं है. नहीं, मैंने कोई भेद नहीं खोला था और न मैंने कोई भूल की थी. मैंने बही बात कही थी जो हम मानते हैं. अपना राजकाजी काम हमने न कभी छोड़ा था और न हम कभी छोड़ेंगे. यह बह रास्ता है जो महान लैनिन ने हमें दिखाया है. अपना राजकाजी शोशाम हमने कभी नहीं छोड़ा, और न हम छोड़ेंगे.

हमारे यहाँ की एक कहावत है—''जिस किसी के पास कोई अच्छी चीज है वह फिर किसी घ टया चीज की तरक निगाह नहीं डालता."

हमारा देश सैकड़ों बरस तक एक पिछड़ा हुआ देश रहने के बाद जिस चीज की बदौतत उस हालत से निकल कर उन देशों के बराबर में पहुँच गया है जा उद्योग धंदों की निगाह से और आर्थिक निगाह से सबस अधिक उन्नत और बदे बदे हैं, उस चीज का हम क्यों छाड़ें ? उसे हम क्यों और किस चीज के लिये छाड़ें ?

इसीलिये हम उन भले मानसों से, जो यह उम्मीद करते हैं कि सोवियत यूनियन अपना राजकाजी प्रामाम बदल देगी, यह कहते हैं कि आप अपनी उम्मीद के पूरा होने के लिये उस समय तक इन्तजार कीजिये जब तक कि मछलियां सीटी बजाना न शुरू कर दें! और आप जानते हैं मछलियां सीटी बजाना कब शुरू करंगी!

इसिलिये रास्ता केवल एक है. वह यह कि दोनों व्यवस्थाएं साथ साथ रहें. पूँजीवादी व्यवस्था भी रहे और समाजवादी व्यवस्था भा रहे. इसी का नाम "पीसकुल को-एगजिस्टेन्स" है.

में जुद पूँजीवादी व्यवस्था को पसन्द नहीं करता. मैं साथ रहन की बात इसलिये नहीं कहता क्योंकि मैं यह चाहता हूं कि पूँजीबाद चलता रहे, बल्कि इसलिये कहता हूँ क्योंकि मैं यह देख रहा हूँ कि पूँजीवादी व्यवस्था भी मीजूद है भीर सुमे वह मानना पड़ता है कि इस व्यवस्था का वजूद दुनिया में है.

The second of the second of the second

लेकिन वृसरी तरफ के लाग यह मानना ही नहीं चाहते कि समाजवादी व्यवस्था भी है. वह उसे देखना ही नहीं चाहते. हालांकि अकेले हम सोवियत इस बाले ही नहीं हैं जिन्होंने अपने यहां समाजवादी व्यवस्था कायम कर रखी है. और भी बहुत से देश इसी राह पर चल रहे हैं. हमारे बढ़े दोस्त महान चीनी राष्ट्र के लोग भी अपने यहां समाजवाद की रचना कर रहे हैं. यह एक ऐसी हालत है जिसे कोई आँख से अभिकत नहीं कर सकता. यूरप और प्रशिया के कई देश जो सोवियत यूनियन के साथ खड़े हैं अपने अपने यहां समाजवाद की रचना कर रहे हैं.

भारत के प्रधानमंत्री भी नेहरू ने भी ऐलान कर दिया है कि भारत भी इसी समाजवादी राह पर चल रहा है. यह बात बहुत अच्छी है. यह अलग बात है कि हम 'समाज-बाद' से जो कुछ समफते हैं वह और चीज है. आप जो समफते हैं वह कुछ और है. फिर भी हम इस ऐलान का और इस तरह के रुजहान का स्वागत करते हैं.

बस समाजवादी व्यवस्था दुनिया में है और इसके लिये इमें किसी की इजाजत लेने की जरूरत नहीं है. इम हैं केवल इतना ही नहीं, बल्कि हम अपने बजूद की रक्षा करने की भी अपने में शक्ति रखते हैं. अगर हम अब तक दूसरों से यही प्रार्थ नाएं करते रहते कि हमें भी अपने साथ साथ रहने हो तो हम अब तक कभी के मिटा दिये गए होते.

और हमारे दुशमन कितना भी यह जाहें कि हम मिट जावें मगर हमें मिटाना चनके बृते की चीज नहीं है.

इसका अर्थ यह है कि आप चाहें या न चाहें, पसन्द करें या न करें, समाजवादी राज और पूँजीवादी राज दोनों को इसी धरती पर रहना है.

हम पूँजीवादी देशों से कहते हैं कि आप हमें पसन्द नहीं करते तो हमें अपने यहां बुलाकर दावत न दीजिये, लेकिन इसके बिना भी हम क़ायम रहेंगे.

माज दुनिया की दालत ठीक यही है.

हम इस तरह से साथ साथ रहना चाहते हैं जिससे सब क़ौमों की चन्नति में मदद मिले, जिससे सब देशों के आपसी सम्बन्ध बढ़ें. ख़ासकर हम सब देशों के साथ तिजास्त करने के पक्ष में हैं. वह हमसे चीजें खरीदें, हम चन्नसे चीजें ख़रीदें.

इस समय तिजारत के मामले में वे लोग इमसे मेव भाव बरतने की कोशिश कर रहे हैं. जास सास तरह की भीर काम की बीजों में वह इमारे साथ तिजारत करना नहा चाहते. लेकिन बनकी इस कोशिश के वावजूद इमारा देश वह रहा है और अधिक शक्तिशाली होता जा रहा है. مہجود ہے آور مجھے یہ ماتیا پرتا ہے کہ اِس ویوسٹھا کا وجود دائھا میں ہے .

A CARLEST AND A SECTION OF

لیکن دوسری طرف کے لوگ یہ مافنا هی نہیں چاھتے که سماجرادی وبوستها بھی ہے ۔ وہ آسہ دیکھنا هی نہیں جائتے ۔ حالانکہ اکیلے هم سوویت روس والے هی نہیں هیں جائیں لے دیکھنا ہی اپنے بہاں سماجوادی وبوستها قاہم کو رکھی ہے ۔ اور بھی بہت سے دیھی اِسی راہ پر چل رہے ھیں ۔ همارے بڑے دوست مہان چینی راشتر کے لوگ بھی اپنے یہاں سماجواد کی رچنا کو رہے میں ، یہ ایک ایسی حالت ہے جسے کوئی آنکه سے آوجھل نہیں کوسکتا ۔ یورپ اور آیشها کے کئی دیھی جو سوویت یونین کے ساتھ کھڑے هیں اپنے لینے یہاں سماجواد کی رچنا کروہے هیں ۔ کے ساتھ کھڑے هیں اپنے لینے یہاں سماجواد کی رچنا کروہے هیں ، بہارت بھی اسی سماجوادی راہ پر چل رہا ہے ۔ یہ بات کہ بھارت بھی اسی سماجوادی والی بات ہے کہ هم اسماجواد کے رجحان کا اور ہی جو کچھ بہت اچھی ہے ۔ یہ الگ بات ہے کہ هم اسماجواد کے رجحان کا اور ہی ہی ہو کچھ اور چیز ہے ۔ آپ جو سمجھڑے هیں وہ کچھ اور ہی ہم اِس اعلیٰ کا اور اس طرح کے رجحان کا

ہس سماہ وادی ویوستھا دئیا میں ہے اور اِس کے لئہ
ھمیں کسی کی اِجازت لینے کی ضرورت نہیں ہے ، هم هیں
کھول اِتنا هی نہیں' بلکہ هم اپنے وجود کی رکشا کرنے کی بھی
اپنے میں شکتی رکھتے هیں ۔ اگر هم آب تک دوسروں سے یہی
پوارتھنائیں کرتے رہتے کہ همیں بھی اپنے ساتھ ساتھ رہنے دو تو هم
اب تک کبھی کے مثا دیئے گئے ہوتے ،

اور همارے دشمن اتنا بھی یہ چاھیں که هم سے جاویں مگر همیں متانا اُن کے ہوتے کی چیز نہیں ہے .

اِس کا ارته یه هے که آپ چاهیںیا ته چاهیں پسند کریں یا نه کریں اسلے وادی راج اور پوئنجی وادی راج دونوں کو اِسی دھرتی پر رہنا هے .

م پونجی وادی دیشوں سے کہتے ھیں که آپ ھمیں پسند نہیں کرتے تو ھمیں اپنے یہاں بالکو دعوت نه دینجیئے کیکی اِس کے بنا بدی ھم نایم زھینکے .

آج دنیا کی حالت ٹھیک یہی ہے .

ھم اِس طارے سے ساتھ ساتھ رھنا چاہتے ھیں جس سے سب قوموں کے قوموں کی آننتی میں صدد ملے' جس سے سب دیشوں کے آپسی سمبندھ بڑھیں ، خاصکر ھم سب دیشوں کے ساتھ تجارت کرنے کے پکھی میں ھیں ، ولا ھم سے چیزیں خریدیں' ھم اُن سے چیزیں خریدیں ،

اِس سے تجارت کے معاملے میں وے لوگ هم سے بهید بھاؤ برتنے کی کوشش کر رہے هیں ۔ خاص خاص طرح کی اور کام کی چیزوں میں وہ همارے ساتھ تجارت کوئا نہیں چاہتے ، لیکن اُن کی اِس کوشش کے بارجود هماراً دیش بڑھ وہا ہے اور اُدھک شکتی شالی ہوتا جا اہا ہے ۔ أور میں آپ کو ایک گیت بات بتانا چاھتا ھی وہ یہ که آن کے اِس بید بیاؤ کا نتیجه کیول یہ ہوا که مھیں مجبور هوکو اپنی ساری شکتی آن چیزوں کے پیدا کرنے میں لگانی پڑی جو یہ پونجی پتی همارے هاته بیچنا نہیں چاھتے تھے، آب هم اِس طرح کا سب مال خود پیدا کو رہے هیں آور اِس کام میں برھتے چلے جارہ هیں، اِس طرح تجارتی بید بیاؤ کی اِس چال نے همیں نقصان نہیں طرح تجارتی بید بیاؤ کی اِس چال نے همیں نقصان نہیں بہونجیایا باکہ همیں آور مدد دی ہے،

ھم اِس بات کے پکھی میں ھیں که دیشوں دیشوں کے بھی کلچوں سبندھ بڑھے۔ ھم اِسے پسند کرینکے که پوئنجی ہتی دیشوں سے اور ادھک لوگ ھمارے دیشوں میں آویں اور ھمارے لوگ اُن کے دیشوں میں جاویں ۔

هم پر یہ الزام لگایا گیا تھا کہ هم نے کسی طرح کا "آهنی پردہ" بناکر اپنے آوپر ڈال رکھا ہے ، پر کیول اِسی سال کے اندر امریکہ کی سینیت کے بہت سے ممبر سوریت روس آئے ، بہت سے امریکہ کی سائنسداں همارے یہاں آئے ، وهاں کے اخباروں کے پرتیندهی همارے یہاں آئے ، امریکہ اور انکلستان کے کسان همارے یہاں آئے ، اور دوسرے مہایدھ کے تھے ہوئے امریکی سیاهی بھی همارے یہاں آئے ،

جو لوگ همارے دیش آنا چاہتے هیں انهیں هم 'رسا' یعنی آنے کی اِجازت دینے سے اِنکار نہیں کرتے ،

میں سبجہتا ہوں آپنے انجیل کے اندر نوے کی کشتی کی کہانی سن رکھی ہوگی ، حضرت نوے نے اپنی کشتی میں رکھنے کے لئے جب جانور چنے تو اُنھرں نے سات جوڑے پاک جانوروں کے اپنے ساتھ لئے اور سات تاپاک جانوروں کے لئے میں آپ سے کہ سکتا ہوں کہ پاک کے مقابلے میں ہمارے یہاں ناپاک ادھک آئے ہیں، پر ہم نے آئی سب کا سواگت کیا، ہمیں کسی کامتر نہیں، ہم نے یہی سوچا کہ اگر کوئی تاپاک بھی ہمارے پاس آئیکا تو ہمیں ناپاک نہیں کردیگا ۔

اِس کا مطلب یہ ہے کہ اگر دیشرں دیشرں کے بیچ کلحوری آنا جاتا اِتنی تیزی سے نہیں ہڑھ رہا ہے جتنی تیزی سے بڑھنا چاھئے تو اُس میں قصور ھمارا نہیں ہے ۔

'پیسفل کوایکوسٹینس' یعنی شانٹی پوروک ساتھ ساتھ رہنے کے سوال کے یہ کچھ پہلو ہیں ، میں سمجھتا ہوں کہاگو آپ کو پیسنل کوایکوسٹینس کا سب سے اچھا تمونہ چاہئے تو بھارت کے ساتھ ساتھ ساتھ ساتھ ساتھ ساتھ ساتھ موجود ہیں بلکہ کئی سوالوں پر ھمارا الگ الگ درشٹی کوئٹ ہوتے ہوئے بھی ہم ایک درسرے کے بیوست میں . اِس درسٹی کی بنیاد یہ ہے کہ ہم دوئوں ملکو امن قایم کرنے کی کوشھوں میں لگے ہیں ، اِسی درستی کی بنیاد یہ ہے کہ ہم دوئوں ایس اسی اِسی اُسی قایم کرنے کی کوشھوں میں لگے ہیں ، اِسی لئے ہیں ، اِسی لئے ہیں ، اِسی لئے ہیں اِس

श्रीर में श्रापको एक गुप्त बात बताना चाहता हूँ, वह यह कि उनके इस भेदभाव का नतीजा केवल यह हुआ कि हमें मजबूर होकर अपनी सारी शक्ति उन चीजों के पैदा करने में लगानी पड़ी जो यह पूँजीपति हमारे हाथ बेचना नहीं चाहते थे. अब हम इस तरह का सब माल खद पैदा कर रहे हैं और इस काम में बदते चले जा रहे हैं. इस तरह तिजारती भेद भाव की इस , चाल ने हमें, नुक्तसान नहीं पहुँचाया, बलकि हमें और मदद दी है.

हम इस बात के पश्च में हैं कि देशों देशों के बीच कल-चरी सम्बन्ध बढ़े. हम इसे पसन्द करेंगे कि पूँजीपति देशों से और अधिक लाग हमारे देशों में आवें, और हमारे लोग उनके देशों में जावें.

हम पर यह इलजाम लगाया गया था कि हमने किसी तरह का "आहिनी परदा" बनाकर, अपने ऊपर डाल रखा है. पर केवल इसी साल के, अन्द्र अमरीका की सेनेट के बहुत से मेन्बर सोवियत रूस आए, बहुत से अमरीकी साइन्सदां हमारे यहां आए, बहां के अखबारों के प्रतिनिधि हमारे यहां आए, अमरीका और इंगलिस्तान के किसान हमारे यहां आए, और दूसरे महायुद्ध के तपे हुए अमरीकी सिपाही भी हमारे यहां आए.

जो लोग हमारे देश आना चाहते हैं उन्हें हम 'विसा' यानी आने की इजाजत देने से इनकार नहीं करते.

मैं सममता हूँ घापने इंजील के अन्दर नृह की किशती की कहानी सुन रखी होगी. 'हजरत नृह ने अपनी किशती में रखने के लिये जब जानवर चुने तो उन्होंने सात जोड़े पाक जानवरों के अपने साथ लिये और सात नापाक जान-बरों के लिये. मैं आपसे कह सकता हूँ कि पाक के मुक्ताबले में हमारे यहां नापाक अधिक आए हैं. पर हमने उन सबका स्वागत किया. हमें किसी का डर नहीं. हमने यही सोचा कि अगर कोई नापाक भी हमारे पास आयेगा तो वह हमें नापाक नहीं कर देगा.

इसका मतलब यह है कि अगर देशों देशों के बीच फलचरी आना जाना इतनी तेजी से नहीं बढ़ रहा है जितनी तेजी से बढ़ना चाहिये तो इसमें क्रसूर हमारा नहीं है.

'पीसकुल को-एगजिस्टेन्स' यानी शान्ति पूर्वक साथ साथ रहने के सवाल के ये कुछ पहलू हैं. मैं सममता हूँ कि अगर आपको पीसकुल को-एगजिस्टेन्स का सबसे अच्छा नमूना चाहिये तो भारत के साथ हमारा सम्बन्ध इसका अबसे अच्छा नमूना है. यही नहीं है कि हम दोनों साथ साथ मौजूद हैं बलकि कई सवालों पर हमारा अलग अलग हिस्कोण हाते हुए भी हम एक दूसरे के दोस्त हैं. इस दोस्ती की बुनियाद यह है कि हम दोनों मिलकर अमन कायम करने की कोशिशों में लगे हैं. इसीलिये हमें इस मायले में अपनी कोरिशों को ढीला होने देना नहीं चाहिये. राान्ति पूर्वक साथ साथ रहने के रास्ते में जितनी दकावटें हैं वन सबको हमें दूर करते रहना चाहिये और अलग अलग देशों के शान्ति पूर्वक साथ साथ रहने में जितनी चीजें मदद दे सकती हैं वन्हें हमें मजबूत करना चाहिये.

इस सम्बन्ध में हाल में जनीवा में चार बड़ी शक्तियों के विदेश मंत्रियों की जो कानफरेन्स हुई है उससे हमें बहुत ही कम सफलता मिली है या यूँ कहना जाहिये कि जो सफलता मिली है वह इतनी कम है कि उसे देखने के लिये खुईबीन की जरूरत है. यह कानफरेन्स अभी हाल में खतम हुई है. पर उससे जिन नतीजों की आशा थी वह पैदा नहीं हुए. लेकिन इससे हमें कोई खास दुख भी नहीं है. जाहिर है कि अभी बक्त नहीं आया. अभी यह सवाल इतना पक नहीं पाया है कि तय हो सके. हमारे दूसरी तरफ के साथी अभी तक यही चाहते हैं कि "अपना बल दिखाकर" हमसे सममौते की बात चीत करें. उन्होंने अभी तक इस विचार को छोड़ा नहीं है.

मजबूर होकर मुमे फिर एक बार उन लोगों को साव-धान कर देना पड़ता है कि जो लोग "अपना बल दिखा कर" हमसे बातचीत करना चाहते हैं वह कोई लाभ नहीं इटा सकते.

आहिर है कि जो जो सवाल जनीवा कानफरेन्स के सामने पेश थे उन सबके हल होने के लिये अभी हमें कुछ और इन्तज़ार करना पड़ेगा. इसमें बात ही क्या है ? हम इन्तजार करने को तैयार हैं. हम पर कोई आफ़त नहीं आ रही है. हम मौसम के अधिक अच्छा होने तक इन्तजार करेंगे. हम उस वक्ष्त तक इन्तजार करेंगे. हम उस वक्ष्त तक इन्तजार करेंगे जब तक कि इन सब सवालों का फैसला दुनिया की जनता के हित में न हो सके.

हाल में भारत में रहते हुए मैंने कई विदेशी नीतिझयों की तक़रीरें पढ़ी हैं जिनमें उन्होंने जनीवा कानफ़रेंस पर अपनी अपनी राय जाहिर की है. मुक्ते इस बात से तसल्ली है कि जनीवा कानफ़रेन्स में जिन लोगों ने हिस्सा लिया था उनकी तक़रीरों में काफी संयम है. इससे यह बात जाहिर है कि वह कोई इस तरह के भाव प्रगट करना नहीं चाहते जिनसे अन्तर्राष्ट्रीय तनाव के बढ़ने का डर हो.

अब मैं अपना भाशाया खतम करना चाहता हूँ. सबको साथ साथ तो रहना ही है. इसके लिये न हम किसी से कोई माँग करते हैं और न किसी से कोई दरखास्त करते हैं. हम दुनिया में हैं वैसे ही जैसे कि पूँजीवादी देश हैं. कोई हमें पकड़ कर इस धरती से मंगल तारे में नहीं भेज सकता. अभी तक साइन्स वालों ने भी इसका कोई तरीका नहीं निकाला. यह भी जाहिर है कि पूँजीवादी देश भी, यहाँ से معاملے میں اپلی کوششوں کو تھیا ہوئے دینا تھیں چاہئے۔ شائعی پوروک ساتھ ساتھ رہنے کے راستے میں جاتلی روکاوائیں عیں اُن سب کو همیں دور کرتے رهنا چاہئے اور الک الگ دیشوں کے شائعی پوروک ساتھ ساتھ رہنے میں جاتلی چیڑیں مدد دے سکتی هیں اُنہیں همیں مفہوط کونا چاہئے ۔

اِس سبندہ میں حال میں جنیوا میں چار ہتی شکتیوں کے ودیش منتریوں کی جو کانفرنس ہوئی ہے اُس سے ہمیں پہت ہی کم سپھلتا ملی ہے یا یوں کہنا چاہئے که جو سپھلتا ملی ہے وہ اِنٹی کم ہے کہ اُس دیکھنے کے لئے خوردیوں کی ضرورت ہے یہ کانفرنس ابھی حال میں ختم ہوئی ہے ، پر اُس سے ہیں نتیجوں کی آشا تھی وہ پیدا نہیں ہوئے ، لیکن اِس سے ہمیں کوئی خاص دکھ بھی نہیں ہے ، ظاہر ہے کہ ابھی وقت نہیں آیا ، ابھی یہ سوال اِنٹا پک نہیں پایا ہے که طے ہوسکے همارے دوسری طرف کے ساتھی ابھی تک یہی چاہتے ہیں که "اٰلہٰ بل دکھاکر" ہم سے سحجوتے کی بات چیت کریں ، اُنہوں نے ابھی تک اِس وچار کو چھڑا نہیں ہے ،

متجبور هوکر متعهے بهر اِیک اِد اُن لوگوں کو ساودهان کردینا پرتا هے که جو لوگ ''اپنا بل دکھاکو'' هم سے بات چیت کرنا چاهتے هیں وہ کوئی لابھ نہیں اُٹھا سکتے .

ظاهر ہے کہ جو جو سوال جنیوا کانفرنس کے سابنے پیش تھے اُن سب کے حل هونے کے لئے ابھی همیں کچھ اور انتظار کرنا پرگا ۔ اِس میں بات هی کیا ہے ﴾ هم اِنتظار کرنے کو تیار هیں۔ هم پر کوئی آفت نہیں آرهی ہے . هم موسم کے اُدھک اُچھا هوئے تک اِنتظار کرینئے جب تک فخہ اُن سب سوالوں کا فیصلہ دنیا کی جنتا کے هت میں نے هوسکے .

حال میں بھارت میں رہتے ہوئے میں نے کئی ودیشی فیتکھوں کی تقریریں پڑھی ہیں جن میں آنہوں نے جنیوا کانفرنس پر اپنی اپنی رائے ظاہر کی ہے ، مجھے اِس بات سے تسلی ہے کی جنیوا کانفرنس میں جن لوگوں نے حصے لیا تھا اُن نی تقریروں میں کانی سنیم ہے ، اس سے یہ بات ظاہو ہے کہ وہ کوئی اِس طرح کے بھاؤ پرگت کرنا نہیں چاہتے جن سے اندراشڈریہ تناؤ کے بڑھنے کا در ہو ،

اب میں اپنا بھاشی ختم کرنا چاھٹا ھوں ۔ سب کو ساتھ ساتھ تو رھنا ھی ھے ۔ اِس کے لئے نہ ھم کسی سے کوئی ماسک کرتے ھیں اور نہ کسی سے کوئی درخواست کرتے ھیں ۔ ھم دنیا میں ھیں ویسے ھی جیسے که پونجی وادی دیش ھیں ۔ کوئی ھمیں پکڑ کر اِس دھرتی سے ملکل نارے میں نہیں بھیجے سکتا۔ ابھی تک سائنس والوں نے بھی اِس کا کوئی طویقہ نہیں ابھی تک سائنس والوں نے بھی اِس کا کوئی طویقہ نہیں سے کانالہ یہ بھی ظاھر ھے کہ پونجی وادی دیش بھی یہاں سے

च्ठकर मंगल धारे में चले जाना नहीं चाहते. इसका मतलब यह है कि हम दोनों को इसी घरती पर रहना है. और दोनों के रहने का मतलब ही "साथ साथ रहना" है.

इन हालात में इमारे लिये काम केवल यह है कि को देश अपनी शक्ति दिखाते रहते हैं उन्हें नई जंग न झेवने दिया जावे.

सारे मानव समाज की कोशिश यही होनी चाहिये कि शान्ति पूर्वक साथ साथ रहने के इस सवाल को इल होने में मदद मिले. जितना जितना हम एक दूसरे को अधिक अच्छी तरह सममने लगेंगे, जितना जितना हम मिलकर काम करेंगे, जितनी जितनी हम एक दूसरे की मदद करेंगे, उतना उतना ही शान्ति की ताक़तों को बल मिलेगा, और उतना उतना ही जंगजू ताक़तें रुकी रहेंगी. इस तरह के जंगजू लोगों को जंग की चाह से हटाना असम्भव है. लेकिन अगर दुनिया की जनता शान्ति बनाए रखने के लिये अमली कोशिश करती रहे तो उन्हें जंग झेड़ने से रांका जा सकता है और रोक कर रखा जा सकता है.

आप जितने लोग यहां मौजूद हैं और जितने लोग पूरी लगन के साथ इस मक्ससद के लिये काम करते हैं उन सबकी तन्दुकस्ती के नाम पर मैं अपना प्याला ऊँचा करता हूँ और उनकी तन्दुकस्ती के लिये दुआ करता हूँ !

दोस्तो ! मैं दोस्ती के लिये और आप सबकी तन्दुरुस्ती के लिये दुष्मा करता हूँ.

घनुवादक—सुन्द्रलाल.

इन्सान आम तौर पर सांप को बिना जान से मारे नहीं झोइता, चाहे वह जहरीला हो या बिना जहर के, बाहे वह चोट करे यह नहीं, अपने भाइयों की मौत का सांप अगर बदला लेने पर उतारू हो जाये तो वह क्या नहीं कर सकता. ग्रनीमत है कि इन्सान और सांप अलग अलग रहते हैं. कहने को सांप बदनाम है मगर आज इन्सान इन्सान को इस रहे हैं. सांप से बचना ग्रुमिकन है क्योंकि वह अपने जहर को अपनी रक्षा के लिये ही काम में लाता है मगर जब इन्सान इस जहर को काम में लाये तो फिर भगवान ही खैर कर सकता है.

--- সহাত

آٹھٹو منٹل تارہ میں چلے جاتا تہیں جامتے ۔ اِس کا مطلب یہ ہے کہ ہم دوئیں کو اِسی دھرتی پر رہنا ہے ۔ آور دوئوں کے رہنے کا مطلب ہی ''ساتھ ساتھ رہنا'' ہے ۔

اِن حالات میں همارے اللہ کام کیول یہ ہے که جو دیش اپنی شکتی دکیاتے رہتے ہیں اُنہیں نئی جنگ نہ چھیڑنے دیا جارے

سارے مائو ساج کی کوشش یہی ہوئی چاہئے کہ شائتی پوروک ساتھ ساتھ رہنے کے اِس سوال کو حل ہونے میں مدد ملے، جتنا جتنا ہم ایک دوسرے کو ادھک اچھی طرح سمجھنے لکیں گئ جتنا جتنا ہم ملکر کام کرینگئ جتنی جتنی ہم ایک دوسوے کی مدد کریں گئ آتنا آتنا ہی شائتی کی طاقتیں کو بلل ملیگا اور آتنا آتنا ہی جنعجو طاقتیں رکی رہینگی ۔ اس طرح کے جنکجو لوگیں کو جنگ کی چاہ سے متانا اسمبھو ہے ۔ لیکن اگر دنیا کی جنتا شائتی بنائے رکونے کے لئے عملی کوشش کرتی رہے تو آنہیں جنگ چھیڑنے سے رکا جاسکتا ہے اور کوشش کرتی رہے تو آنہیں جنگ چھیڑنے سے رکا جاسکتا ہے اور رکا جاسکتا ہے اور

آپ جتنے لوگ یہاں موجود هیں اور جتنے لوگ پوری اکن کے ساتھ اِس مقصد کے لئے کام کرتے هیں اُن سب کی تفدوستی کے نام پر میں اپنا پھاله اُونچا کرتا هوں اور اُن کی تفدوستی کے لئے دعا کرتا هوں اِ

درستو ! میں دوستی کے لئے اور آپ سب کی تقدرستی کے لئے دعا کرتا ہوں .

أنورادك-سندر لال

اِنسان عام طور پر سانب کو بنا جان سے مارہ لمہیں چھہردا کیا جاھے وہ چوگ کرے چھہردا چھے وہ چوگ کرے یا نہیں . اپنے بھائیوں کی مہت کا سانب اگر بداء لینے پر آمارو ھو جائے تو وہ کیا نہیں کرسکتا ۔ غنیمت ہے که اِنسان اور سانب الگ الگ رفتے دھیں ۔ کہنے کو تو سانب بدنام ہے مگر آج تو اِنسان اِنسان کو دس رہے ھیں ۔ سانب سے تو بچہنا ممکن ہے کھرنکہ وہ اپنے زھر کو اپنی رکشا کے لئے ھی کام میں لانا ہے مگر جب انسان اِس زھر کو کام میں لائے تو یعر بھکوان ھی خور کرسکتا ہے ۔

ـــاگیات



हमारे इसी मेहमान

ھیارے روسی مہمان

जिस समय इम यह लाइनें लिख रहे हैं शी निकोलाई खुलगानिन, शी निकिता , खुरचेव और उनके साथियों की भारत यात्रा आधी से अधिक समाप्त हो चुकी है. जगह जगह भारत सरकार और भारत की जनता दोनों ने जिस तरह अपने प्यारे रूसी मेहमानों का स्वागत किया और उनके स्वागत में जितना जोश दिखाया उसने दुनिया भर में एक तहलका सा मचा दिया है. एशिया और अफ़ीक़ा के अधिकतर देशों में इस स्वागत से एक नया उतसाह, नई आशा और नई उनंग पैदा हो गई है. कुछ साम्राजी देश योड़ा बहुत बबरा गए हैं, और उनमें से कुछ तो बीसलाकर इस तरह की बार्ते भी करने लगे हैं कि जिनसे न मानवता का मान बढ़ सकता है और न किसी को कोई लाभ हो सकता है.

कलकते में तो जनता का उत्साह हद को पहुंच गया. कम से कम 20 लाख आदमी अपने प्यारे मेहमानों को देखने के लिये चारों तरफ से उमड़ पड़े. उनकी बाद रोके न हकी, यहां तक की सरकार को अपना प्रोप्राम बदलना पड़ा. कहा जासा है कि जनता की इतनी बड़ी भीड़ आज तक किसी मीक्ने पर दुनिया में कहीं जमा नहीं हुई थी. उनका जोश और उनका उबलता हुआ प्रेम उनकी तादाद को भी मात कर रहा था. फिर भी यह एक बड़ी बात है कि स्वबं जबाहरलाल जी ने जनता के जोश को सराहते हुए यह कहा कि इतनी बड़ी भीड़ ने पूरी शान्ति, शिस्त और राजब के अनुशासन से काम लिया. किसी तरह की एक भी दुर्घटना कहीं नहीं हो पाई.

हमारे कसी सेहमानों के दिलों पर भी इस सब का बहुत गहरा असर हुआ. कसी मेहमानों में दो मुसलमान थे, उन्नवेकित्सान के बढ़े बजीर श्री राशिद और वहां के लेती बजीर श्री रसूल. इन दोनों ने कलकत्ते के स्वागत के बाद अपने और अपने साथियों के भाव प्रगट करते हुए कहा कि—'ग्यह स्वागत कुछ भोड़े से आदमियों या थोड़े से लोगों جس سائے هم یه لاللیں لکه رهے هیں هری تکولائی بلکانی اهری تکولائی بلکانی هری تکولائی بلکانی هری تکولائی بلکانی هری تکیدا خوشچهو اور أن کے سانهیوں کی بهارت یادرا آدهی سازت کی جنتا دونوں نے جس طرح اپنے پیارے روسی مہمائوں کا سواکت کیا اور آن کے سواکت میں جاتا جوش دکھایا آس نے دلیا بهر میں ایک تہلک سامچا دیا ہے ایشیا اور انریقه کے ادهکتر دیشوں میں اِس سواکت سے ایک نیا آنساہ نئی کے ادهکتر دیشوں میں اِس سواکت سے ایک نیا آنساہ نئی آشاہ نئی اُملک پیدا هو گئی ہے کچھ سامراجی دیش تهورا بہت گہرا گئے هیں اور اُن میں سے کچھ تو ہوکھ کر اِس طرح کی باتیں بھی کرنے لئے هیں که جن سے نئے مائوتا کا مان بڑھ سکتا ہے اور نئے کسی کو کوئی لابھ هو سکتا ہے ۔

کلکتے میں تو جنتا کا اُنساہ حد کو پہرٹیج گیا ۔ کم سے کم 20 لاتھ آدسی اپنے پھارے مہمائوں کو دیکھنے کے لئے چاروں طرف وہ آمت پرے ۔ اُن کی باڑھ روکے تھ رکی ، یہاں تک که سرکار کو اپنا پررگرام بدلنا پڑا ۔ کہا جاتا ہے که جنتا کی اِنٹی بڑی بھی آن کا جرش اور اُن کا اُبلتا ہوا پریم اُن کی تعداد کو بھی مات کر رہا ہا ، پھر بھی یہ ایک بڑی بات ہے که سویم جواھرال جی نے جنتا کے جوش کو سراھتے ہوئے یہ کہا کہ اُنٹی بڑی بھیڑ لے پروی شانتی 'شست اور غضب کے انوشاسی سے کام لیا ، کسی بروی شانتی 'شست اور غضب کے انوشاسی سے کام لیا ، کسی طرح کی ایک بھی درگھانا کہیں نہیں ہو پائی ،

ھمارے روسی مہمالیں کے داہی پر بھی اِس سب کا بہت گہرا اور ھوا ، روسی مہمالی میں دو مسلمان تھے گہرا اور ھوا ، ورسی مہمالی راشد اور وھاں کے کھیتی وزیر شری راشد اور وھاں کے کھیتی وزیر شری رسول ، اِن دونوں نے کلکتے کے سواگت کے بعد اپنے اور اپنے ساتھوں کے بھاؤ پرگٹ کرتے ھوٹے کہا کھی۔ اپنے سواگٹ کچے تھوڑے سے آدمیوں یا تھوڑے سے لوگوں

کی طرف سے نہیں ہے، یہ سواگت بھارت کی جلتا کی طرف سے ہے۔ آسے دیکھ کر یہ پکا رشراس جم جاتا ہے کہ بھارت اور روس کی دوستی آب کسی کے ترزے ٹوٹ نہیں سکتی!"

اِس میں سلدیہ فہیں شرق نکولئی بلکانی شری نکیتا خوشچیو اور آن کے ساتھیوں کے سواگت نے یہ تابت کر دیا که بہارت کی جلتا روس اور روسیوں کے ساتھ نہ کھول سچی اور گہری دوستی هی رکھتی ہے بلکہ سریم اپنے آگے کے راستے کے لئے بھی' تھوڑی یا بہت' روس کی طرف نکاہ لگائے ہوئے ہے ۔

فھنبی چیتی بھائی بھائی' کی آواز سارے بھارت اور سارے چیس میں گونج چکی ہے ، ھمارے روسی مہمانوں کی اِس یاترا کے سمئے 'ھندی روسی بھائی بھائی' کی نئی آواز اُٹھی اور یہ آواز بھی ترنت بجلی کی طرح بھارت اور روس دونوں میں گونج گئی ،

اِس سواکت میں نہجے لکھی پانچ ہاتیں سب سے ادھک صک آئمد :--

(1) یہ ٹھیک ہے کہ بھارت کی جنتا اپنی سرکار کی وديشي نيتي سے سبت اور خوش هے ، پر يه سواکت جن لوگوں نے اور جس طرح کیا وہ کیول سرکار کی ودیشی نیتی سے سہدت هولے کا هی تربیجة نهیں تها . سرکار اور سرکاروں کو الک رکھ کر وہ جنتا کے هردئے کی اُمنگ تھی ، بمبئی کے اندر اُن لوگس نے بھی جو ۔ بھیک یا ہے تھیک ۔ کسی بات پر سرکار سے کانی استشف تیے اس استرش کو اور اور سب بانوں کو تهرزی دیر کے لئے الگ رکھ کو' اپنے مہمائوں کا دال کھولکر سواگت کھا ، کلکته کی جنتا بھی سب کی سب آپنے یہاں کی سرکار سے پوری طرح سنتشف نہیں ہے ۔ اِس استرش کے پردرشن انیک بار کلیتے میں هو چکے هیں اور سرکار کی طرف سے بھی اُن کا کوائی کے ساتھ جواب دیا جا چکا ہے . ظاهر هے کلعته کی جنتا کا یہ ایپررو انساہ سرکار طرف چنتا کے بھاؤں سے کوئی سمبندھ نہوں رکھٹا ۔ یہ نتیجہ تھا روس کے سانھ جنتا کے دریم کا ،سرکاری لوگ كېيى كچھ بھى سىجو بيتھوں اِس ميں سنديه، نهيں جنتا سرکار کو چالتی هے ٔ سرکارین جنتا کو نہیں چالتیں . جنتا كا بل هي سركار اور سركارون كا أيك ماتربل هوتا هي .

(2) اِس میں بھی سندیہ، نہیں کہ ھمارے روسی مہمان بھارت کے ستھے درست ھوتے ھوئے بھی کانی سمجھدار اور جاگروک ھیں، شاید ھم سے ستھے پریم کے کارن ھی وہ اِنقے اُدھک جاگروک ھیں، اُنھوں نے ھماری اچہائیوں کے ساتھ ساتھ ھماری کنزوریوں کو بھی کائی دیکھ لیا، اُنھوں نے اُنیے وچاروں کو چھایا بھی نہیں ، ستھے پریم کا یہی تقافا وچاروں کو چھایا بھی نہیں ، ستھے پریم کا یہی تقافا تھا، ھمارے انجینزیوں کو جہاں کنکریت سے کام چل سکتا

की तरफ से नहीं है, यह स्वागत भारत की जनता की तरफ से है. उसे देखकर यह पक्का विश्वास जम जाता है कि भारत और रूस की दोस्ती अब किसी के तोड़े दूट नहीं सकती!"

इसमें संदेह नहीं श्री निकोलाई बुलगानिन, श्री निकिता , सुरचेद और उनके साथियों के स्वागत ने यह साबित कर दिया कि भारत की जनता रूस और रूसियों के साथ न केवल सच्ची और गहरी दोस्ती ही रखती है बल्कि स्वयं अपने आगे के रास्ते के लिये भी, थोड़ी या बहुत, रूस की सरफ निगाह लगाए हुए है.

'हिन्दी चीनी भाई भाई' की आवाज सारे भारत और सारे चीन में गूँज चुकी है. हमारे रूसी मेहमानों की इस यात्रा के समय 'हिन्दी रूसी भाई भाई' की नई आवाज चठी और यह आवाज भी द्वुरन्त विजली की तरह भारत और रूस देनों में गूँज गई.

इस स्थागत में नीचे लिखी पाँच बातें सब से अधिक चमक डठीं :—

- (1) यह ठीक है कि भारत की जनता अपनी सरकार की विदेशी नीति से सहमत और खश है. पर यह स्वागत जिन लोगों ने और जिस तरह किया वह केवल सरकार की बिदेशी नीति से सहमत होने का ही नतीजा नहीं था. सरकार भीर सरकारों को अलग रखकर वह जनता के हृद्य की हमंग थी. बन्बई के झन्दर उन लोगों ने भी जो-ठीक या बेठीक-किसी बात पर सरकार से काकी असन्तुष्ट थे, उस असम्बोष को और और सब बातों को थोड़ी देर के लिये अलग रसकर, अपने मेहमानों का दिल खोलकर स्वागत किया. कलकरों की जनता भी सब की सब अपने यहां की सरकार से पूरी तरह सन्तुष्ट नहीं है. इस असन्तोष के प्रदर्शन अनेक बार कलकरों में हो चुके हैं और सरकार की तरफ से भी उनका कड़ाई के साथ जवाब दिया जा चुका है. जाहिर है कलकत्ते की जनता का यह अपूर्व उत्साह सरकार की तरफ जनता के भावों से कोई सम्बन्ध नहीं रखता. यह नतीजा था रूस के साथ जनता के प्रेम का. सरकारी लोग कहीं कुछ भी सममः बैठें, इस में संदेह नहीं जनता सरकार को चलाती है. सरकारें जनता को नहीं चलातीं. जनता का बल ही प्रकार और सरकारों का एक मात्र बल होता है.
- (2) इसमें भी संदेह नहीं कि हमारे रूसी मेहमान मारत के सच्चे दोस्त होते हुए भी काफी सममदार और जागरूक हैं. शायद हम से सच्चे प्रेम के कारण ही वह इतने अधिक जागरूक हैं. उन्होंने हमारी अध्आइयों के साथ साथ हमारी कमजोरियों को भी काफी देख लिया. उन्होंने अपने विचारों को छुपाया भी नहीं. सच्चे प्रेम का यही तक्राजा था. हमारे इंजीनियरों को जहां कंकरीट से काम चल सकता

تها وهاس کلکریت کی جگه، فوقد (استیل) استعمال کرتے دیکھکر وہ كهدهى بيتهيك بهارت جيسي غربب ديش كيائي به طريقه غلط هي همارے انجیندروں کے سمجھائے بجھائے پر اُنھوں نے یہ بھی صاف کہا که کچھ دنوں پہلے روس کے انجینیر بھی اپنی سرکار کو اور رھاں کی جنتا کو اِسی طرح سمجها بجها دیا کرتے تھے . پر آب رهاں یہ چیز نہیں چلتی . یارت سرکار کے اِس اعلیٰ کا سواگت کرتے ہوئے بھی که بھارت آگے کو سماہرادی ریوستھا کی طرف جائيگا' أنهر نے يه ماف کيه ديا که هم سال واد سے جو کنچه سنجه الله اور وه رسماج وأد كا جو كنچه مطلب ليته هيس دونوں میں فرق ہے ، اُنہوں لے بھارت کو ابھی اُن دیشوں میں ھی گلا ہے جن کے ساتھ وہ اکو۔ ایکنسٹ کرنا چاہتے میں یعنی کانی فرق کے هوتے هوا۔ بھی اساته ساته جینا اور اساته سانه رهنا کا چاهتے هیں ، هماری سرکار بھی ادهکتر یہی کہتی رھتی ہے اور اِسی پر زور دیتی رھتی ہے . پنچ شیل کے اُمول پر ایمانداری سے عمل کرتے ہوئے ہمارے روسی دوست ہمارے اندر کے معاملیں میں عماری اچھا کے ورودھ کسی طرح کا دخل دینا نہیں چاہتے ، پر روسی مہمانیں کی اِس یاترا کے سبئے جنتا کے اُنساہ اور اُس کے رخ نے ٹابت کو دیا که جنتا کچھ اور آگے ہوھنا چاھتی ہے اور ھمارے روسی مهمانوں نے یہی یہ دکھا ديا كه جننا هم بوهنا خاهيس أتنًا وه بهي بوهن كو تيار هيل . ھمیں اِس میں کوئی سندیہ تہیں کہ اِس بڑھنے کے لئے بھی أبهى كاني كنجائش هے .

(3) جس دن دلی میں روسی مہمالوں کا آگن ہوا أس دن همارے متر' بھارت کے پرالے اِنقلای' راجا مهيندر پرتاپ ہی کچھ گھنٹرں کے الے دلی میں تھے ۔ وہ ھییں ایک چھوٹی سی گھٹنا سناتے نبے که ٹھیک جس سے سواگت کا جلوس فملنے والا تها دلی کے ایک یل کے نیچے ایک بیمار بھکمنگا ھاتھ یسارے یاس سے نکلنے والی موڈروں میں بیٹے ہوئے لوگوں سے کیچے بھیک لینے کی کوشش کر رہ نیا ، دلی ایک شاندار شہر هے بہارت کی راجدهائی هے ، پر لنجا اور دکھ کے ساتھ یہ مائنا پوتا ہے که دلی میں بهکمنگوں کی تعداد سیکروں نہیں هزاروں هے سراکت میں جنتا کا جرش همیں بھی بہت اچھا لکا پر سوکار نے سواگت کی تیاری میں اور مہمانوازی میں جس طرح سے خرچ کیا آسے دیکھکر اور سنکو همیں ایسا لگا که ایسے موقعوں ير همارے شاسک اور نيتا يه يهول جاتے هيں که جو دهن ولا خرچ کر رہے میں وہ نه أن كا پيدا ديا هوا هے نه كسى پوئجى يتى يا سركاري انسر كا بددا كيا هوا هـ؛ وه أن غويب كسائون أور مزدروں کا بیدا کیا ہوا ہے جنہوں نے خوں پسینہ ایک کرکے اسے ییدا کیا ہے؛ اور جن سے اب بھی خرچ کے معاملے میں کوئی

या वहां कंकरीट की जगह फीलाद (स्टील) इस्तेमाल करते देखकर वह कह ही बैठे कि भारत जैसे रारीब देश के लिये यह तरीका पलत है. हमारे इंजीनियरों के समझाने बुमाने पर उन्होंने यह भी साफ कहा कि कुछ दिनों पहले रूस के इंजीनियर भी अपनी सरकार को और वहां की जनता को इसी तरह समका बुका दिया करते थे. पर अब वहां यह चीज नहीं चलती. भारत सरकार के इस एलान का स्वागत करते हुए भी कि भारत जागे को समाजवादी व्यवस्था की तरफ जायगा, उन्होंने यह साफ कह दिया कि इम समाज-वाद से जो कुछ समभते हैं और वह समाजवाद का जो कुछ मतलब लेते हैं दोनों में फरक है. उन्होंने भारत को अभी उन देशों में ही गिना है जिन के साथ वह 'को-एगजिस्ट' करना चाइते हैं, यानी काफी फ्रक के होते हुए भी 'साथ साथ जीना' और 'साथ साथ रहना' चाहते हैं. हमारी सरकार भी अधिकतर यही कहती रहती है और इसी पर जोर देती रहती है. पंचशील के उसल पर ईमानदारी से अमल करते हुए हमारे रूसी दोस्त हमारे अन्दर के मामलों में हमारी इच्छा के विश्व किसी तरह का दखल देना नहीं चाहते. पर रूसी मेहमानों की इस यात्रा के समय जनता के उत्साह और इसके दख ने साबित कर दिया कि जनता कुछ और आगे बढ़ना चाहती है और हमारे रूसी मेहमानों ने भी यह दिखा दिया कि जितना हम बढ़ना चाहें उतना वह भी बढ़ने को तैयार हैं. हमें इसमें कोई संदेह नहीं कि इस बढ़ने के लिये भी खभी काफी गंजायश है.

(3) जिस दिन दिल्ली में रूसी मेहमानों का आगमन हुआ इस दिन हमारे मित्र, भारत के पुराने इनक़लावी, राजा महेन्द्र प्रताप भी कुछ घंटों के लिये दिल्ली में थे. वह हमें एक छोटी-सी घटना सुनाते थे कि ठीक जिस समय स्वागत का जलुस निकलने वाला था दिल्ली के एक पुल के नीचे एक बीमार भिखमंगा हाथ पसारे पास से निकलने बाली मोटरों में बैठे हुए लोगों से कुछ भीक लेने की कोशिश कर रहा था. दिल्ली एक शानदार शहर है, भारत की राजधानी है. पर लज्जा और दुख के साथ यह मानना पढ़ता है कि दिल्ली में भिखमंगों की तादाद सैकड़ों नहीं हजारों है. स्वागत में जनता का जोश हमें भी बहुत अच्छा लगा पर सरकार ने स्वागत की तैयारी में और मेहमानवाजी में जिस तरह से खर्च किया उसे देखकर और सुनकर हमें ऐसा लगा कि ऐसे मौक्रों पर हमारे शासक और नेता यह मूल जाते हैं कि जो धन वह खर्च कर रहे हैं वह न उनका पैदा किया हुआ है न किसी पूँजीपति या सरकारी अकसर का पैदा किया हुआ है, वह उन गरीब किसानों और मजदूरों का पैदा किया हुआ है जिन्होंने खून पसीना एक करके उसे पैदा किया है, और जिन से अब भी खर्च के मामले में कोई

رائی نهیںلی جاتی اور نه اِس ویوستیا میں لی جاسکتی ہے ہم اِس معامله کو اِس سے ہوعانا نهیں چاھگئے ۔ پر همیں وشواس مے که سواگت کا بہت سا خرچ گیتایا جاسکتا تیا اور اُس سے سواگت کی شان بوعتی هی' گیتتی نهیں ۔

دلی سے مے اب سواگتوں دعوتوں لنچوں تقور اور رسیپھنوں کا شہر بنتا جا رہا ہے ۔ باتیں یہ سب اچھی ہیں اور ایک حد تک ضروری بھی ہیں ۔ پر یہ راہ بڑی پسلنی راہ ہے اِس پر سنبھل سکنا بھی خاصکر اُن کے لیّے بہت مشکل ہے جن کے پاؤی میں خود کبھی بوائی نہ بھتی ہو ۔

(4) اس پیار بهری یاترا میں ایک خاص بات یہ بھی چمکی کہ همارے روسی مہمان کاتی ماہ پھٹ هیں . خاصر روسی کمیونسٹ پارٹی کے جارل سکریاری شری نکیا خرشچیو تو اِس معاملے میں رقم هی نکلے، اُن کی باتوں میں ایک سادگی و معائی سچائی اور تازگی تھی جو طبعت کو کھاکھا دیتی تھی۔ کہیں کہیں تو هدیں تر فے که وہ انترراشاریه راجکاجی ششاچار کے نیموں کا بھی الذین کرگئے ، کم سے کم اِس میں کوئی شک نہیں اُنہوں نے کئی باتیں ایسی کہیں جامیں دیش کے کچھ سرکاری درباری یہ فرور چاھتے تھے که وہ نه کہتے تو لچھا تھا ، هاهوں درباری یہ فرور چاھتے نہیں بھی تو وہ کل کے مزدورا انہیں اِنا تجربه بھی کہاں ہے ! نمولے کے درباری ششاچار کا اُنہیں اِننا تجربه بھی کہاں ہے ! نمولے کے طور پر هم شری نکھا خرشچیو کی بمبئی کی ایک تقریر طور پر هم شری نکھا خرشچیو کی بمبئی کی ایک تقریر واتیا ہاں دے رہے ہیں ،

(5) آخری چیز جس کی طرف همارا دهیان اِس یاترا کے کارن اور ادھک زور کے ساتھ جانے لگتا ہے همارا اپنا بھوشیه کا مارك هي همين يه بهت غلط أور هاڻيكر خبط هوگيا هے كه دیش کو اُوپر اُنَّهَائے کے لئے میں بلعر سے پیسے کی مدد کی ضرورت هے . قدرتی طور پر اِس خبط میں پڑکر هم بار بار باهر کے سامراہ وادی دیشوں کی طرف دیکھنے لگانے هیں ، بات بالكل غلط هے . جہاں تك دهن كا سوال هے هميں ايك پيسے کی بھی باہر سے ضرورت نہیں تھ . سات سال پہلے چین بھی هم سے کم غریب دیش نہیں تھا ۔ اُس نے اپنے سدھار اور ترقی کے لئے کسی سے ایک پیسے اُدھار یا دان نہیں لیا ، روس کے ساته اِس سباده میں چین کا جو کچھ سنجھوتا ہوآ ہے وہ ہمی کیول ویاپاری تھنگ کا لین دین ہے . جتنی دیر کے لئے روس کا مال چین میں اٹکتا ہے یعنی چین اُس کے بدلے کا مال روس نہیں بھیم پاتا اُتنی دیر کے لئے چین ایک فیصدی سالانه سود دیا هے؛ جو مال هی کی شکل میں أدا كيا جاتا هے رھمیں معلوم ہے که کاندھی جی کے وچار بھی اِس بارے منب تهیک یہی تھے اور بڑے پکے تھے، غلطی ھاری تکاهوں'

राय नहीं ली जाती और न इस व्यवस्था में ली जा सकती है. इम इस मामले को इस समय बढ़ाना नहीं चाहते. पर इमें विश्वास है कि स्वागत का बहुत सा खन्न घटाया जा सकता था और उससे स्वागत की शान बढ़ती ही, घटती नहीं.

दिल्ली सचमुच अब स्वागतों, दावतों, तंचों, दिनरों और रिसेपरानों का राहर बनता जा रहा है. बातें यह सब अच्छी हैं और एक हद तक जरूरी भी हैं. पर यह राह बड़ी फिसलनी राह है. इस पर संभल सकना भी खासकर इनके लिये बहुत मुश्किल है जिनके पाँव में खद कभी विवाह न फटी हो.

- (4) इस प्यार भरी यात्रा में एक लास बात यह भी वमकी कि हमारे रूसी मेहमान काफी मुँ इफट हैं. खासकर रूसी कम्युनिस्ट पार्टी के जनरल सेकेटरी, श्री निकिता सुरुपेव तो इस मामले में रक्षम ही निकले. उनकी बातों में एक सादगी, सफ़ाई, सबाई और ताजगी थी जो तबीयत को खिलखिला देती थी. कहीं कहीं तो हमें डर है कि वह अन्तर्राष्ट्रीय राजकाजी शिष्टाचार के नियमों का भी उल्लंघन कर गए. कम से कम इसमें कोई शक नहीं उन्होंने कई ऐसी बाठें कहीं जिन्हें देश के कुछ सरकारी दरबारी यह खरूर बाहते ये कि वह न कहते तो अच्छा था. जाहिर है नवजागृत रूस पुराने नियमों और फ़ारमूलों में इतना अधिक वैंध कर रहना नहीं बाहता. हैं भी तो वह कल के मजदूर, इरबारी शिष्टाचार का उन्हें इतना तजरबा भी कहां है! नमूने के तौर पर हम श्री निकिता ख़ुरुचेव की बम्बई की एक तकरीर ''नया हिन्द' में दे रहे हैं.
- (5) आखिरी चीज जिस की तरक हमारा ध्यान इस यात्रा के कारण और अधिक जोर के साथ जाने लगता है हमारा अपना भविष्य का मार्ग है. हमें यह बहुत रालत और हानिकर खब्त हो गया है कि देश को ऊपर उठाने हे लिये हमें बाहर से पैसे की मदद की जरूरत है, फ़दरती तौर पर इस खब्त में पड़कर हम बार बार बाहर के साम्रजवादी देशों की तरफ देखने लगते हैं. बात बिलकुल रालत है. जहां सक धन का सवाल है हमें एक पैसे की भी बाहर से जरूरत नहीं है. सात साल पहले चीन भी हमसे कम ग़रीब देश नहीं था. इसने अपने सुधार और तरककी के लिये किसी से एक पैसा उधार या दान नहीं लिया. रूस के साथ इस सम्बंध में चीन का जो कुछ सममौता हुआ है वह भी केवल ज्यापारी ढक्क का लेन देन है. जितनी देर के लिये रूस का माल चीन में घटकता है यानी चीन उसके बदले का माल हस नहीं भेज पाता उतनी देर के लिये चीन एक फीसदी सलाना सुद देता है, जो माल ही की शकल में अदा किया जाता है. हमें माजूम है कि गांधी जी केविचार भी इस बारे में ठीक यही थे और बड़े पक्के थे. रालवी हमारी निगाहों.

इमारी समम, इमारे तरीक़ों और इमारी योजनाओं में है. इसके लिये अगर इम गांधी जी के उपदेशों और उनके विचारों को फिर से कुछ प्रेम और अद्धा के साथ पढ़ें, और इस और चीन जैसे देशों की व्यवस्थाओं और उनके कामों को भी ध्यान से देखें और सममें तो इम बहुत सी मुसीवतों से बच सकते हैं. यदि इमारे इसी मेहमानों की भारत यात्रा से यह नतीजा भी निकल सके कि इमारा लेन देन, सलाह, मशिवरा इस जीर चीन जैसे देशों के साथ बढ़े और इमारी निगाहें इस तरह के मामलों में पूँजीपित देशों की तरफ से इछ इटें, तो इस में इमारा भी भला है, दूसरों का भी भला है और खुद आज के पूँजीपित देशों का भी भला है.

3-12-'55

—सुन्दरलाल

राजकुमारी अमृतकौर के चीन केअनुभव

भारत की दैल्थ मिनिस्टर राजकुमारी अमृतकीर हाल में चीन गई हुई थीं. वहाँ से लीटकर 31 अक्तूबर को दिल्ली में उन्होंने एक प्रेस कानकरेन्स में चीन के अपने अनुमन्न बयान किये. राजकुमारी अमृतकीर खुद डाक्टर नहीं हैं. लेकिन वह सारे देश के स्वास्थ्य विभाग की वजीर हैं. इसलिये डाक्टरी के काम से उनका गहरा सम्बन्ध है. अधिकतर उसी के सम्बन्ध में वह चीन गई थीं. किर भी वहां के दूसरे आम हालात पर उन्हों ने जो बातें कही हैं उनमें से कुछ हम निचे देते हैं.

राजकुमारी ने कहा कि—"जनता की तन्दुरूस्ती के खस्लों के बारे में, देश के अन्दर इस तरह की समाजी हका पैदा कर देने के बारे में जिमें चोरी और शराव पीकर बदहवासी की घटनाएँ हों, उस देश से लगभग गुम हो शई हैं, और इसी तरह की और बातों में भारत को चीन से बहुत कुछ सीखना है."

बहाँ की वालीम के बारे में उन्हों ने कहा कि—
"चीन के अन्दर हर तरह की वालीम मुफ्त दी जाती है.
बिद्यार्थियों को रहने की जगह भी मुफ्त दी जाती है
उन से केवल खाने का खर्च लिया जाता है जो एक
बिद्यार्थी पर बाईस इपये माहवार से अन्वीस रूपये महावार
तक पढ़ता है. मेडिकल स्कूलों और कालिजों में सरकार
जीसतन हर विद्यार्थी पर दो हजार रूपया सालाना खर्च
करती है."

"डाक्टरी की तालीम पाने वाले विद्यार्थियों को केवल अपने खाने और किताबों का खर्च देना होता है." ھاری سامجھ' ھمارے طریقوں اور ھماری یہجناؤں میں ہے' اِس کے اللہ اگر ھم کاندھی جی کے آپدیشوں اور اُن کے وچاروں کو پور سے کچھ پریم اور شردھا کے ساتھ پڑھیں' اور روس اور چھن جرسے دیشوں کی ویوستھاؤں اور آن کے کلموں کو بھی دھیان سے دیکھیں اور سمجھیں تو ھم بہت سی مصیبتوں سے بچے سکتے ھیں . یدی ھمارے روسی مہمانوں کی بھارت یانوا سے یہ نتھجکہ بھی نکل سکے کہ همارا لین دین' صلاح' مشورہ روس اور چین جیسے دیشوں کے ساتھ بڑھے اور ھماری نگامیں اِس طرح کے معاملوں میں پونجی پتی دیشوں کی طرف سے کچھے ھٹیں' تو اِس میں عمارا بھی بھلا ھے' دوسروں کا بھی ایلا ہے اور خود آجے کے پونجی بتی دیشوں کا بھی ایلا ہے اور خود آجے کے پونجی بتی دیشوں کا بھی ایلا ہے اور خود

--ستبر لال

3.12.755

راجعاری امرے کور کے چیں کے انوبھو

بھارت کی ھیلتھ سلستر راجکماری امرت کور حال میں چھن گئی ھوئی تھیں ۔ وھاں سے لوت کو 81 اکتوبر کو دای میں آنھوں نے ایک پریس کانفرنس میں چھن کے اپنے آنوبھو بیان کئے ۔ راجکماری امرت کور خود ڈاکٹر نہیں ھیں ۔ لیکن وہ سارے دیش کے سواستھیت وبھاک کی وزیر ھیں ۔ اِس لئے ڈاکٹری کے کام سے اُن کا گہرا سمبندھ ہے ۔ ادھکٹر اُسی کے سمبندھ میں وہ چین گئی تیفی ، پھر بھی وھاں کے دوسرے عام حالات پر آنھوں نے جو باتیں کہی ھیں اُن میں سے کچھ ھم نیچے دیتے ھیں ،

راجکماری نے کہا کئے۔''جنتا کی نندرستی کے اصوابی کے ہارے میں' دیش کے اندر اِس طرح کی سماجی ہوا پیدا کردھنے کے ہارے میں جس میں چرری اور شراب پی کر بدحواسی کی گہتائیں ہوں اُس دیش سے اگ بیگ گم ہوگئی ہیں' اور اِسی طرح کی اور ہاتوں میں بھارت کو چین سے بہت کچھ سیکھنا ہے۔''

وهاں کی تعایم کے بارے میں اُنھوں نے کہا کہ :۔۔"چین کے اُندر هر طرح کی تعلیم مفت دی جاتی ہے ۔ ودیارتھیوں کو رمغے کی جگہ بھی مفت دی جاتی ہے اُن سے کیول کھانے کا خرچ لیا جانا ہے جو ایک ودیارتھی پر بائیس روپئے ماہوار سے چھییس روپئے ماہوار تک پڑتا ہے ۔ میذیکل اسکولوں اور کالعجوں میں سرکار اوصطا ُ هر ودیارتھی پر دو هزار روپیہ سالانہ خرچ کرتی ہے ."

"دَاكْترى كى تعليم پالے والے وديارتهيوں كو كيول أينے كهائے أور كتابوں كا خرج دينا هوتا هے "

उन्हों ने बताया कि:—"गांव में स्वास्थ्य केन्द्रों पर माओं और बच्चों की तन्दुरुस्ती पर सब से जियादा जोर दिया जाता है. शुरू से लेकर बच्चों की खबरगीरी और उनकी तन्दुरुस्ती का खयाल चीन में सब से जरूरी काम सममा जाता है."

पेकिंग में पहली अक्तूबर को चीनी राष्ट्रीय दिवस के जलूसों में छै लाख लोगों ने भाग लिया. राजकुमारी ने उन लोगों की शिस्त की बड़ी तारीफ की. उनहों ने यह भी कहा कि चीन में सब के रहने के लिये नए मकान जिस तेजी से बनते जा रहे हैं बसे देखकर वह चिकत रह गईं. अच्छी और चौड़ी सड़कों पर वहाँ बहुत जोर दिया जाता है. वह यह देखकर खुश हो गई कि खुली जगहों में जंगल लगाने और चारों तरफ दरखत लगाने का चीनियों को कितना जबरदस्त शीक है. कोई आदभी बिना इजाजत के कोई दरखत नहीं काट सकता. "खास खास बड़ी बड़ी सड़कों और रास्तों पर चलते हुए बिलकुत यह मालून होता है कि आदमी दरखतों के कुँ ज में से चला जा रहा है. जहाँ पुराने घटिया मकानों को गिराया और साफ किया गया है वहाँ अकसर बच्चों के लिये बारी चे और खेलने के मैदान बना दिये गए हैं."

राजकुमारी का कहना है कि:—"भारत के साथ होस्ती की इच्छा और शान्ति की इच्छा चीन वालों में सक्वी और साफ चमकती है. चीन के लोगों में एकता और जोश उनकी उन्नति के खास कारण हैं."

उन्हों ने यह भी बताया कि:— "चीन में 'क्रेमिली फ्लेनिंग' यानी बच्चों की पैदाइश को रोकने का प्रोप्राम नहीं बलता और चीनी सरकार को आबादी के बद जाने की काई जिन्ता नहीं है." पर उस देश में इस बात पर जार दिया जाता है कि कोई एक से अधिक शादी न करे. दाता या रखैत रखने का पुराना रिवाज बिलकुल बन्द कर दिया गया है. कोई लड़की अठारह बरस की उमर से पहले और कोई लड़का इकीस साल की उमर से पहले शादी नहीं कर सकता. औरतों की एक बड़ी संस्था है जिसका नाम 'बीमेन्स डेमोकेटिक फेडरेशन' है. यह संस्था बहुत ही शक्तिशाली और बाअसर संस्था है. बह देखती रहती है कि शादी वरोरा के बारे में कोई इस तरह का नियम न तोड़ने पाने.

"बीनी लड़कियाँ और चीनी सियाँ बहुत आजाद हैं और साथ ही उनका सदाचार का आदर्श (मयार) और अपनी आवरू और आन का मयार भी बहुत ही ऊँचा है. पुरुषों और खियों को बराबर का दरजा दिया जाता है. तालीम दोनों को साथ साथ दी जाती है. चोरी का चीन में कहीं नाम नहीं है. होटलों के कमरों को कभी ताले یهکنگ میں پہلی انتوبر کو چینی راشتریہ دیوس کے جلوس میں چھ لانھ لوگوں نے بھاک لیا ، راجکماری نے اُن لوگوں کی شست کی بڑی تعریف کی ، انھوں نے یہ بھی کہا کہ چین میں سب کے رہنے کے لئے نئے مکان جس تیزی سے بنتے جارہے ہیں اُسے دیکھکر وہ چکت رہ گئیں۔ اچھی اور چرزی سرکوں پر وہاں بہت زور دیا جاتا ہے ، وہ یہ دیکھکر خوش ہوگئین که کہلی جگہوں میں جنکل لگائے اُور چاروں طرف درخت لگائے اور چاروں طرف بنا اِجازت کے کوئی درخت ٹیمیں کات سکتا ، "خاص خاص بنتی بڑی بری سرکوں اور راستیں پر چلتے ہوئے بالکل یہ معلوم ہوتا ہو کہ آدمی درختیں کے کئیے میں سے چلا جارہا ہے ، جہاں پرائے گیٹیا مکانوں کو گرایا اور ماف کیا گیا ہے وہاں اکثر بچوں پرائے گیٹیا مکانوں کو گرایا اور ماف کیا گیا ہے وہاں اکثر بچوں کے لئے باغیجے اور کھیانہ کے میدان بنا دیئے گئے ہیں ."

راجکماری کا کہنا ہے کہ: ۔۔ (دیبارت کے ساتھ درستی کی اِچہا اور شانتی کی اِچہا چین والس میں سچی اور صاف چمکتی ہے ۔ چین کے لوگوں میں ایکتا اور جوش اُن کی اُنتنی کے خاص کارن ھیں ۔''

آنہوں نے یہ بھی بتایا دہ:—"چین میں 'نیملی پلیننگ'
یملی ہچوں کی پیدائش کو زوکنے کا پروگرام نہیں چلتا اور چینی
سرکار کو آبادی کے بچھ جانے کی کوئی چنتا نہیں ہے ۔"پر
آس دیش میں اِس بات پر زور دیا جاتا ہے کہ کوئی آیک سے
ادھک شادی نہ کوے داشته یا رکھیت رکھنے کا پرانا رواج بالکل
بند کو دیا گیا ہے ۔ کوئی لڑکی آئیارہ برس کی عمر سے پہلے اور
کوئی لڑکا اِکیس سال کی عمر سے پہلے شادی نہیں کو سکتا
عبرتیں کی ایک بڑی سنستیا ہے جس کا نام 'ویمینس تیموکریٹک
بیتریشن' ہے ۔ یہ سنستیا ہے جس کا نام 'ویمینس تیموکریٹک
بیتریشن' ہے ۔ یہ سنستیا ہیت ھی شکتی شالی اور با اثر
سنستیا ہے ۔ وہ دیکھتی رہتی ہے کہ شادی رغیرہ کے بارے میں
سنستیا ہے ۔ وہ دیکھتی رہتی ہے کہ شادی وغیرہ کے بارے میں

"چینی لڑکیاں أور چینی استریاں بہت آزاد هیں اور ساتھ هی اُن کا سداچار کا آدرهی (میمار) اپنی آبرو اور آن کا میمار بھی بہت هی اونچا هے پرشوں اور استریوں کو برابر کا درجه دیا جاتا هے ، تعلیم دونوں کو ساتھ ساتھ دی جاتی هے ، چوری کا چین میں کہیں نام نہیں هے ، هوٹلوں کے کمروں کو کبھی تالے

नहीं जगाने जाते. होटलों नग्नैरा में कहीं कोई किसी को इनाम या नखरीश नहीं लेता देता. शरान पीकर नद-हवास नहीं कोई दिखाई नहीं दे सकता. अगर कोई इस तरह शरान पिये पाया जाता है तो समाज में उसका नायकाट हो जाता है. "

यहाँ तक तो हमने चीन के बारे में राजकुमारी के भाम अनुभव बयान किये हैं. पर इनके अलावा राजकमारी अमृतकौर ने चीन में नइ डाक्टरी, वहाँ की पुरानी वैद्यक विद्या आदि के बारे में क ऐसी बातें कहीं हैं जिनमें से कुछ को पदकर हमें अवरज और दुख भी हुआ. राज-कुमारी देश की हेल्थ मिनिस्टर हैं. अंगरेजी इलाज, देस इलाज बरौरा के बारे में राजकमारी के विचार भी सब को मालम हैं. इस सम्बन्ध में चीन की बाबत जो कुछ उन्होंने कहा है उस से इस सचाइ का सबूत मिलता है कि जिन बातों में हमारे विचार जोरों से जमे हुए होते हैं उनमें हम अकसर वही देखते हैं जो इस देखना चाहते हैं और वही सुनते भी हैं जो इम सुनना चाहते हैं. शायद इम में से कोई भी नंगी आँखों से दुनिया को नहीं देख सकता, हमारे अपने पहले से बने विचारों, विश्वासों, मानताओं और भावों का चरमा हमारी आखों पर बराबर लगा ही रहता है. और इसी चरमे के अन्दर से हम दुनिया को देखते हैं. फरक केवल इतना होता है कि किसी के चश्मे का रंग गहरा होता है और किसी का हल्का. किर भी राजकमारी ने कुछ बातें ऐसी कहीं हैं जिन से काफी ग़लतफहमी पैदा होती है.

राजकुमारी ने कहा है कि भारत में डाक्टरी की तालीम का स्तर चीन के स्तर से ऊँचा है और यहाँ डाक्टर भी चीन के डाक्टरों से गिनती में अधिक और अधिक 'योग्य' है. उन्होंने बताया है कि चीन की आवादी साठ करोड़ है और आजकल की पच्छमी डाक्टरी में योग्यता रखने वाले डाक्टर वहां 'केवल तीस हजार और चालीस हजार के बीच में हैं. भारत की आवादी चीन से बहुत कम है पर यहां योग्य डाक्टरों की तादाद उनके अनुसार इससे लगभग दुगनी है. इससे राजकुमारी' ने शायद यह बताना चाहा है कि जनता के स्वास्थ्य की देख रेख जितनी भारत में की जाती है उतनी चीन में नहीं की जाती.

इस बात का राजकुमारी की निगाह में अधिक महत्व नहीं है कि नई बीनी सरकार पच्छमी डाक्टरी के इन माहिरों के अलावा पुरानी चीनी वैद्यक विद्या के जानकार और तजरवेकार इकीमों या वैद्यों से लाम उठाने की पूरी कोशिश करती है. उनकी मदद से जगह जगह गाँव के अन्दर स्वास्थ्य केन्द्र बने हुये हैं जहाँ केवल रोगियों का इलाज ही नहीं किया जाता, इस बात की भी कोशिश की जाती है कि نہیں اگائے جاتے ، ھرٹلوں رفیرہ میں کہیں کوئی کسی کو اُتعام یا بخشیمی ٹہیں لیٹا دیتا ، شراب ہی کر بدحواس رھاں لوئی دکھائی ٹہیں دیے سکتا ، اگر کوئی اِس طرح شراب پیئے ہایا جاتا ہے تو سماے میں اُس کا بائیکات ھو جاتا ہے ۔"

یہاں تک تو هم نے چین کے دارے میں راجکماری کے عام نوبھو بھاں کئے ھیں . پر اِن کے علاوہ راجعماری امرت کور نے چھن س نئی ڈاکٹری' وہاں کی پرانی ویدک ودیا آدی کے بارے میں کئی ایسی باتیں کہی میں جن میں سے کچھ کو پرمکر میں اچرے اور دکھ بھی ہوا ۔ راجکماری دیش کی هلیتھ منستر میں انکریزی علاج ادیسی علاج وغورہ کے بارے میں راجماری کے بچار بھی سب کو معلوم دوں ۔ اِس سمبلدھ میں چین کی بابت جو کچھ اُنہوں نے کہا ہے اُس سے اِس سچائی کا ثبوت ملنا هے که جن باتوں میں همارے وچار زوروں سے جدے هوئے عوتے هیں أن میں هم أنثر وهي ديكيتے هيںجو هم ديكينا چاهتے هيں أور وهي سنتے بھي هيں جو هم سننا چلفتے هيں ، شايد هم میں سے کوئی بھی نلکی آئکھون سے دنیا کو نہیں دیکھ سکتا ۔ همارے اپنے پہلے سے بنے وچاروں وشواسوں سانتاؤں اور بھاؤں کا چشمہ مماری آنکہیں پر برابر لکا هی رمتا هے؛ اور اُسی چشیے کے اندر سے هم دنیا کو دیکھتے هیں ، فرق کھول اتنا هوتا هے که کسی کے چشمے کا رنگ گہرا ہرتا ھے اور کسی کا ہلکا ۔ پھر بھی راجکماری لے کچھ ہاتیں ایسی کہی هیں جن سے کافی غاط فہمی ييدا هوتي هے .

راجکماری نے کہا ہے کہ بھارت میں قائلری تعلقم کا استر چین کے استر سے اُونچا ہے، اور یہاں قائلر بھی چین کے قائلاروں سے گنتی میں ادھک اور ادھک یوگیہ ھیں ، انہوں نے بتایا ہے کہ چین کی آبادی ساتھ کروڑ ہے اور آجکل کی پنچھمی قائلاری میں یوگنا رکھنے والے قائلار وھاں کیبل تیس ھزار اور چالیس ھزار کے بیچ میں ھیں ، بھارت کی آبادی چین سے بہت کم ہے پر یہاں یوگیہ قائلاروں کی تعداد اُن کے انوسار اُس سے لگ بیگ دوگئی ہے ، اس سے راجکماری نے شاید یہ بتانا چاھا ہے کہ جنتا کے سواستھ کی دیکھ ریکھ جتنی بھارت میں کی جاتی ہے اتنی ہے اتنی ہے اور کی جاتی ،

اس بات کا راجکماری کی نگاہ میں ادھک مہتو نہوں کے اُلی کہ نئی چینی سرکار پنچھمی ڈاکٹری کے اُلی ماھررں کے علاوہ پرانی چینی ریدک ودیا کے جانکار اور تجربهکار حکیموں یا ویدوں سے لابھ اُلیانے کی پوری کوشش کرتی ہے ۔ اُن کی مدد سے جگہ جگہ گؤں کے اندر سواستہ کیندر بنے ھوئے ھیں جہاں کیول روگیوں کا علیے ھینہیں کیا جاتی ہے کہ کہ کے اندر سواستہ کیادر بنے ھوئے میں کوشش کی جاتی ہے کہ کہ

والإنجائها والهام الإساميان أحاد

लोग "बामार न पढ़ें." ये पुराने ढंग के चीनी हकीम और वैद्य अधिकतर इलाज तो अपने पुराने सस्ते तरीकों और जड़ी यूटियों से ही करते हैं, पर राजकुमारी ही के अनुसार सरकार इन सबको तन्दुकस्ती और सफाई के नए से नए उसूल, जख्मों की मरहम पट्टी के नये से नये तरीको और कुछ सीधी सस्ती नई दवाओं का इस्तेमाल भी सिखा देती है. राजकुमारी ही के अनुसार सरकार के द्वारा अपनाए हुये इस तरह के हकीमों की तादाद चीन में लगभग तीन लाख है.

इसके साथ साथ बड़े बड़े डाक्टरों के अलावा चीनी सरकार कुछ कम पढ़े लेकिन सस्ते डाक्टर भी तीन-तीन साल की तालीम देकर तैयार कर रही है. राजकुमारी ही के अनुसार इस तरह के तीन साल के कार्स में पढ़ने बालों की तादाद इस समय अष्टावन हजार है. वहां के इक्तीस बड़े बड़े मेडीकल कालिजों में इस समय चौंतीस हजार "योग्य" डाक्टर भी और तैयार हो रहे हैं.

बात बड़ी सीधी सी है. राजकुमारी और उन जैसे ऊंचे बैठे हुये लोगों को यह नहीं मालूम कि इन "योग्य" पच्छमी ढंग के डाक्टरों का इलाज, मामूली ग्रीब आदमियों की तो बात ही क्या, हमारे बीच के दरजे के देश-बासियों के लिये भी कितना मँहगा और मुसीबत का होता है. हमारे एक मित्र को जिन्हें, आठ सौ रुपैया महीना नेतन मिलता है पेट का आपरेशन कराने की जरूरत पड़ी. आपरेशन के सर्चके अलावा उन्हें कई हजार की ऊपर से इस्तेमाल की पेटेंट द्वाएं खरीदनी पड़ीं जिनमें से तीन चौथाई से अधिक किसी भी काम न आईं और फेंकनी पड़ीं. अपने इस इलाज में उन्हें अपनी पत्नी का जेवर बेचना पड़ा. यह केबल एक मिसाल नहीं है. लगभग हर भिडिल छास के घर से इसी तरह की कहानी सुनी जा सकती है. हमारे अधिक तर पच्छमी हंग के डाक्टर बेचारे आजकल की हालत में इस गरीब देश के अन्दर करोड़ों रूपये की विदेशी पेटेंट दवाओं के मंगवाने और खपाने वाले एजेन्ट बने हुए हैं. और हमें विश्वास है कि इनमें से अधिकतर द्वाएं निकम्मी ही नहीं हानिकर भी हैं, यह 'हानिकर' शब्द हमने सोच समभकर उपयोग किया है. आए दिन के अपने तज़रबों को छोड़कर कुछ दिन हुए इमने यूरप के एक बहुत बड़े डाक्टर की, जो चालीस साल तक दुनिया के एक बहुत बड़े अस्पताल के चार्ज में रह चुके थे, पच्छमी दवाओं की बाबत, तह राय पढ़ी थी:--

"If the contents of all the apothecaries' shops could be emptied into the sea, the consequences to the fish may be langerous, but mankind will be happier and healthier." انہ اللہ المحکور علی توں ۔'' یہ پرانے دھلگ کے چینی حکم اور وید ادھک الرعام تو اپنے پرانے سستے طریقوں اور جوی بوقوں سب کو سنے ھی کرتے ھیں' پر راجکماری ھی کے انوسار سرکار ان سب کو کلنرسٹی اور صفائی کے نئے سے نئے اصول' زخموں کی مرهم پتی کے نئے سے نئے طریقے اور کیچے سیدھی سستی نئی دواؤں کا استعمال بھی سکھا دیتی ہے ۔ راجکماری ھی کے انوسار سرکار کے دوارا اپنائے ھوئے اس طرح کے حکیموں کی تعداد چھی میں انہ ہے ۔

اس کے ساتھ ساتھ بڑے بڑے قاکتروں کے علاوہ چھٹی سرکار کھچھ کم پڑھ لکھے لیکن سستے قائتر بھی تین تین تین سال کی تعلیم دیے دیے تیار کو رہی ہے ، راجکماری ہی کے انوسار اس طرح کے تین سال کے کورس میں پڑھتے والوں کی تعداد اس سے آٹھاوں ہوار ہے ، وہاں کے انتیس بڑے بڑے مذیکل کالجوں میں اس سے چونتیس ہوار ''یوگیء'' قائلر بھی اور تیار ہو رہے ہیں ،

بات ہوی سیدھی سی ہے . راجکماری اور اُن جیسے اُونچے بیتے ہوئے لوگوں کو یہ نہیں معارم که ان "دیوگیه" پچھسی تعنگ کے ڈانٹروں کا علاج' معمولی غریب آدمیوں کی تو بات ھی کیا همارے بیچے کے درجہ کے دیش واسیوں کے لئے بھی كتنا مهنكا اور مصيبت كا هوتا هي هماري أيك متر كو جنهين آئه سو رویه، مهدنه ویتن ملتا هے پیت کا آپریشن کرائے کی ضرورت بڑی ، آپریشن کے خرچ کے علاوہ انہیں کئی ہزار کی أوبر سے استعمال كى پهتينت دوائهاں خريدنى پرين جن میں سے نین چوتھائی سے ادھک کسی بھی کام نے آئیں اور پهينکلي پڙين ۔ اپنے اس علام مين انہيں اپني پتني کا زيور بيجنا يراً يه كيرل أيك مثال نهين هـ . لك بهك هر مدّا علاس کے گہر سے اسی طرح کی کہانی ستی جاسکتی ہے۔ ہمارے ادهکتر بچہمی تشک کے ذاکٹر بیچارے آجکل کی حالت میں اس غریب دیش کے اندر کروزرں روپئے کے بدیشی پیٹینٹ دواؤں کے منکوانے اور رکھنے والے ایجینٹ بنے دوئے میں اور همیں وشواس هے که ان میں سے ادھکتر دوائیں تکسی هی نہیں ھائیکر بھی ھیں . یه 'ھائیکر' شبد ھم نے سوچ سمنچهکر آیہ ک کیا ہے ۔ آئے دن کے اپنے تجربوں کو چھوزکر کچھ دن ھوٹے ھو نے پیرپ کے ایک بہت ہوے ذائقر کی جو چالیس سال تک دفیا کے ایک بہت ہوے اسپتال کے چارج میں رہ چکے تھے' پھپمی دراؤں کی باہت یہ رائے پڑھی تھی :--

"If the contents of all the apothecaries' shops could be emptied into the sea, the consequences to the fish may be dangerous, but mankind will be happier and healthier."

व्यर्थात्-''यदि डाक्टरी की सब दुकामों की सारी शीशियाँ समन्दर में चलट कर खाली कर ली आँय तो नतीजा मद्धतियों के लिये खतरनाक हो सकता है लेकिन मानव समाज अधिक सुखी और अधिक खस्थ रहेगा."

हमें ध्यान रखना चाहिये कि ऊपर के वाक्य में • पेंलोपेशिक दवाओं की बात कही गई है. पुरानी वैद्यक या यूनानी जदी बूटियों या नन्ही नन्ही होमियोपैथिक गोलियों की नहीं.

हमने सुना था कि आजकल जो बहुत से हमारे डैलिगेशन चीन और रूस जा रहें हैं उनमें से एक डेलीगेशन के एक हिद्रस्तानी मेम्बर ने रूस के स्वास्थ्य बजीर से पूछा था कि क्या आप अमरीकी द्वाएं अपने देश में नहीं इन्पोर्ट करते. सुना है रूसी ने जवाब दिया कि इम न उनकी द्वाएं इम्पोर्ट करते हैं और न उनकी बीमारियां, इस जवाब में श्राधा मजाक जहर था पर इसका श्राधा सच बहुत गहरा

इमें विश्वास है कि महात्मा गांधी इस देश के पच्छमी ढंग के डाक्टरों को जब देश के दो सबसे खतरनाक और हानिकर गिरोहों में गिना करते थे तो उनकी बात में बहुत बड़ी सच्चाई थी. हम आजकल पूरी नेक नीयती के साथ पर उतनी ही पूरी नासमकी के साथ, इस मामले में उसी खतरे की तरक दुलकते चले जा रहे हैं जिससे गांधी जी हमें बचाना चाहते थे.

चीनी शासक इस बारे में हमसे कहीं अधिक समभदार हैं. जहां तक आम जनता का सवाल है चीन आज उतना रारीब देश नहीं है जितना भारत. फिर भी वह हर साल करोड़ों रूपया विदेशी दवाओं पर नहीं खोते और-यह एक मानी हुई चीज है कि-अपनी जनता और अपने बच्बों को हमसे कहीं अधिक तन्दुरुस्त, मोटा ताजा और स्तरा रख रहे हैं.

अपने देश के पुराने इलाज के तरीक़े की तरक चीनी सरकार का जो रुख है उसकी बाबत राजकुमारी के बयान से काफी रालतफ़ह्मी पैदा हो सकती है. राजकुमारी ने कहा कि चीनी सरकार पुराने इलाज के तरीक्रे का खतम कर देना और उसकी जगह पच्छिम की नई साइन्सी डाक्ट्री को ही चलाना चाहती है. इस पर किसी समाचार पत्र के प्रति-निधि ने पूछ ही लिया कि-"चीन की मिसाल के खिलाफ, क्या भारत सरकार आजकल आयुर्वेद और दूसरे देशी इलाज के तरीक़ों की अलग तरीक़ों की हैसियत से बदावा नहीं दे रही है ?"राजकुमारी ने माना कि सरकार बढ़ावा दे रही है पर उसे ग़लती स्वीकार करते हुये राजकुमारी ने उस पर दुख प्रकट किया ! किसी ने उन्हें बताया कि हाल में यूनियन प्तीनंग मिनिस्टर श्री गुलजारी लाल नन्दा ने आयुर्वेद ارتہات—''یدی ڈاکاری کی سب دوکالوں کی ساری هیشیان سندر میں اُلٹ کو خالی کو لی جائیں تو نایجہ مجہلیوں کے لئے خطرناک موسکتا ہے لیکن مانو سمایے ادھک سكهر أور ادهك سيسته رهيكا يا

ھیں دھیاں رکھنا چاھئے کہ اُوپر کے واکیہ میں ایلویفتیک دواؤں کی باس کہی گئی ہے ، پرانی ویدک یا یونائی جوی بوتھوں یا لمنهی فلهی هومیوپیتیک گونیوں کی فهیں .

ھر نے سنا تیا کہ آجکل جو بہت سے ھدارے دیایکیشن چین اور روس جا رہے میں آن میں سے ایک ڈاکیشن کے ایک ھندستائی میمبر نے روس کے سواستھ وزیر سے پوچھا تھا کہ کیا آپ امریکی دوائیں اپنے دیش میں نہیں امهروت کرتے، سا ہے روسی نے جواب دیا کہ ہم نہ ان کی دوائیں امہورے کرتے ہیں أور نه ان كي بهاريان ، اس جواب مين أدهامذاق فرور تها يو اس كا أدها سے بہت كبرا هـ.

ھیں وہواس ہے کہ مہانیا کاندھی اس دیش کے بچھیے تھنگ کے دانٹروں کو جب دیش کے دو سب سے خطرناک أور ھائيكر گروھوں ميں گذا كرتے تھے تو أن كے بات ميں بہت برى سچائی تھی ، هم آجکل پری نیک نیتی کے سانہ پر اننی هی پوری ناسمجھی کے ساتھ' اس معاملہ میں اسیخطرے کی طرف تملکتے کے جا رہے میں جس سے کاندھی جی میں بچانا عواهتے تھے ۔

چینی شاسک اس بارے میں هم سے کہیں ادھک سنجهدار هيں . جہاں تک عام جنتا كا سوال هے چين آج إتنا غريب ديمي نهيل هے جتنا بهارت ، يهر بھي وہ هر سال کرروں روپاي بدیشی دواؤں پر نہیں کھوتے اور سید ایک مانی ہوئی چیز هے که اپنی جنتا اور اپنے بچوں کو هم سے کہیں آدهک تلدرست أموتًا تازة أور خوش ركم رقم هي .

اینے دیش کے پرانے علام کے طریقے کی طرف چینی سرکار کا جو رمع ہے اس کی بابت راچکماری کے بیان سے کانی غلط فہمی پیدا ہوسکتی ہے ، راجکماری نے کہا که چینی سرکار پرانے علیے کے طریقے کو ختم کردینا اور اس کی جکه پھھم کی نئی سائنسی ڈاکٹری کو عی چانا چاعتی ہے اس پر کسی سماچارپار کے پرتی ندھی نے پوچھ ھی لیا کہ'۔۔۔' چین کی مثال کے خلف کیا بھارت سرکار أجكل أيورويد اور دوسرے ديھى علاج کے طریقوں کو الگ طریقوں کی حیثیت سے برتھارا نہیں دے رھی ھے ؟ '' راجکماری نے مانا که سرکار برتفاواً دے رھی ھے پر آسے غلطی سوئیکار کرتے ھوئے راجکماری نے اس پر دکھ پرگٹ نیا ا کسی نے اُنھیں بتایا که حال میں يُنهِنِ يليننگ منستر شرى كلواري قل ندالے أيورويد

راجساری نے اِسی طح کی اور بھی کچھ باتیں نہیں جن پر همیں اُس سے کہیں ادھک دکھ ہوا جتنا راجعماری کو شری گزاری لال نندا کے بیان پریا سرکاریا سرکاروں کے آیلویہ تھی کے علاوہ علام کے درسوے طریقوں کو برتھاوا دینے پر ھے این سب باتوں ير هم كيول إتناهى كهنا چاهتے هيں كه هم راجساري بہن سے بالکل اسہمت ھیں ، چین میں وھاں کے پرانے علم کے طریقے کی طرف نئی چینی سرکار کا کیا رخ هے یه ایک صاف اور سهرها سوال هے ، بیکنگ سے انگریزی بهآشا میں ایک ماسک يتربكا نامي هـ 'China Reconstructs' ارتبات انثر چیں کی پھر سے تعیر! اِس میں وہاں کی سرکار بڑے گرو کے ساتھ یہ بتاتی ہے کہ وہ اپنے دیش کی نئے سرے سے تعمیر کس کس طرح کر رھی ھے اور کیا کیا کر رھی ھے ، اِس پتریکا کا حال کا انک راجکماری کی بات چیت کے ساتھ سانھ سمھی ملاھے. سوبھاگھت سے اس میں چونی ودوان لی تاؤ کا ایک ہوا سندر ليم The Storyof Chinese Medicine ارتبات اچینی علے کی کہائی ور شے ، هم اِس پورے لیکھ کا هندستائی اثواد ' ''نیاهند میں درسری جمهه درم رهے هیں . اُس لیکه سے یاٹھکوں کو پات چایگا کہ ٹئی چینی سرکار اپنے یہاں کے عالم کے برائے طریقے کی کتنی تدر کرتی ہے اُسے کتنا برهاوا دیتی ہے اُ أس خُتم كرنْ كے بجائے كس طرح أس امر بنانے كى فكر ميں ھے' اپنی پرانی ویدک ردیا پر پرانی کتابوں کے لئے ایدیشن المارا رمی هے، بوجنائیں بنا رهی هے که پرائے علیے کے طریقے دید کے میڈیکل کالجوں میں سکھائے جانیں اور اُن کی کتابیں سب کو پرهائی جائیں، وہ نئی پچھی قائٹری کو يرائي ويديك وديا كي جكره ديلا فهون چاهتي بلكه

ब्हीर होमियोपैथी के पक्ष में राय जाहिर की है और कहा है कि इलाज के ये वानों तरीक्रे ऐलापेशिक तरीक्रे से सस्ते हैं और कारगर हैं यानी लोग इनसे अच्छे होते हैं. राज-क्रमारी ने इस पर साफ कहा-"मैं श्री नन्दा की राय से इसफाक नहीं करती," आयुवद, यूनानी और होमियोपैथी जैसे इलाजों को सरकार जो कुछ भी बढ़ावा या मदद दे रही है वह राजक्रमारी की राय में रालत है! राजकुमारी ने इस बात पर भी दुख प्रकट किया कि स्वास्थ्य के मामले में अलग अलग प्रान्त या प्रदेश चूंकि आजाद हैं इसलिए यूनियन सरकार उन्हें इस तरह की रालतियों से नहीं रोक सकती ! जाहिर है उनका बस चले तो वह सारे भारत के लिये फरमान जारी कर दें कि सिवाय ऐलोपैथी के इन सब भौर 'फ़ज़ूलियात' को बन्द और खतम कर दिया जावे. उन्होंने इसे पर भी असन्तोष प्रकट किया कि प्रान्तों की सरकारें क्राफी बड़ी-बड़ी तनखाहें देकर सचमुच "योग्य" डाक्टरों को "गांव गांव" में नियुक्त नहीं कर रही हैं!

राजकुमारी ने इसी तरह की और भी कुछ बातें कहीं जिन पर हमें उससे कहीं अधिक दुख हुआ जितना राज-इमारी को श्री गुलजारी लाल नन्दा के बयान पर या सरकार या सरकारों के ऐलोपैथी के अलावा इलाज के दसरे तरीकों को बढ़ावा देने पर है. इन सब बातों पर हम केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि हम राजकुमारी बहन से विलक्कल असहमत हैं. चीन में वहां के प्रराने इलाज के तरीके की सरफ नई चीनी सरकार का क्या रूख है यह एक साफ और सीधा सवाल है. पेकिंग से अंगरेजी भाषा में एक माधिक पत्रिका निकलती है 'China Reconstructs' अर्थात 'नए चीन की फिरसे तामीर'. इसमें वहां की सरकार बढ़े गर्ब के साथ यह बताती है कि वह अपने देश की नये सिरे से तामीर किस किस तरह कर रही है, और क्या क्या कर रही है. इस पत्रिका का हाल का अक्र राज-5मारी की बात चीत के साथ-साथ हमें मिला है. सौभाग्य से उसमें चीनी विद्वान ली ताओं का एक बड़ा सुन्दर लेख The Story of Chinese Medicine अर्थात 'नीनी इलाज की कहानी' पर है. हम उस पूरे लेख का हिन्दुस्तानी अनुवाद "नया हिन्द" में दूसरी जगह दे रहे हैं. उस लेख से पाठकों को पता चलेगा कि नई चीनी सरकार अपने यहां के इलाज के पुराने तरीक्षे की कितनी क़दर करती है, उसे कितना बढ़ावा देती दे, उसे खत्म करने के बजाय किस तरह चसे अमर बनाने की फ़िक्र में है, अपनी पुरानी वैद्यक विद्या पर प्ररानी किताबों के नए एडीशन निकलवा रही है. योजनाएँ बना रही है कि पुराने इलाज के तरीक्रे देश के मेडिकल कालिजों में सिखाय जांच और उनकी कितावें सबको पढ़ाई जायं. वह नई पच्छमी बाटकरी को पुरानी वैश्वक विद्या की जगह देना नहीं चाहती बल्कि

دونہ کے میل سے ایک کیا سنوئے یا سنام بانا چاہتی ہے جس سے چین کی سرار کو وشواس ہے کہ کیوال چین ہیں بلکہ ساری دنیا کے لوگوں کے سواته کو بہت بڑا لابھ ہوگا ۔ اُس لیکھ سے پاٹھکوں کو یہ بھی معلوم ہوگا کہ اپنے دیش کے علاج کے پڑائے طریقوں کی طرف اور ایلو پیتھی کو چھوڑ کر' دوسرے طریقوں کی طرف راجنداری اسرت کور اور اُن کے ہم خیال شاسکوں کا ٹییک وہی رخ ہے اسرت کور اور اُن کے ہم خیال شاسکوں کا ٹییک وہی رخ ہے جو چیانگ کائی شیک کے شاسن کے دنوں میں کومنکانگ شاسکوں کا چین کی طرف تھا ۔ نئی شیمی کی طرف تھا ۔ نئی سمجھداری کا ہے ،

دلی کے چینی دوتاواس سے بھی انگریزی سماچار بولیاتی نکتا ہے ۔ اُس کے دو نمبر سن 55 کے انک میں مشہور چینی نیبرز ایجینسی Hsinhua News کی طرف سے انسیسنیائٹس (Encephalitis) نام کی بیماری کے بارے میں جس میں دماغ کے اندر سوجن آجاتی ہے اور جس کا ٹھیک گارن یا عالم ایلوپیٹیک قاداروں کو بھی نہیں سوجھا نیجے لکھی خبر اِسی سرنامے کے ساتھ چھی ہے:—

''انسینیلائٹس کے علیے میں کامیابی''

چین کے اسپتیات منستر آن پبلک هیلته شری کوتؤو هورا نے 20 انتوبر کے پیکنگ کے سرکاری اخبار ''پیپلس ڈیلی'' میں ایک خاص لیکھ میں بیان کیا ہے کہ اِس سال جولانی اور اگست کے مہینوں میں انسینیلائٹس کے روگ کے بیس روگی دیکھے گئے جن میں نوے نیصدی چین کے پرانے علاج کے طریتے سے اچھے ہو گئے ،

''تانٹروں کا ایک گروہ تھا جن میں نئی پچھمی تعنگ کے چینی تانٹر اور پرانے تھنگ کے چینی تانٹر دوئوں شامل تھے ، اس کے نیٹا تھے یہی جن سواستم کے نائب زویر شری کوتزؤ ہورا، ان لوگوں نے پچھلے اگست کے مہینے میں شہی چیا چوان کے ایک اسپتال میں جاکر انسینیلانٹس کے علاج کا ادمعین کیا ،

"نائب رزیر نے کہا ہے کہ هم لے جن بیس روگیوں کو دیکھا اِن کی عمریں چھ مہینے سے لیکر اکسٹھ سال تک کی تھیں ، اِن بیس روگیوں میں سے ایک بیس روگیوں میں سے کیول تیں مرے ، اِن تین میں سے ایک کو کچھ دوسری بیماریاں بھی تھیں ، نائب رزیر نے یہ بھی کہا ہے کہ پچلے سال اِس اُسپتال میں اِسی طرح اکتھس روگیوں کا علاج کیا گیا تھا جن میں آدھ سے ادعک کی حالت بہت گہیمر تھی، اِسی علج سے سو فیصدی یعنی سب کے سب اچھ هو گئے ،

''نو توو ، هو والے دیکھا که پرائی چینی ویدک کی کتابوں میں اِس بیماری (انسینیلائٹس) کا ذکر ہے اور شہی چیا چوآں کے اسپتال میں پرائے چینی تعنگ سے اُس روگ

दोनों के मेल से एक नया समन्वय या संगम बनाना वाहती है जिससे जीन की सरकार को विश्वास है कि केवल जीन ही के नहीं बल्कि सारी दुनिया के लोगों के स्वास्थ्य को बहुत बढ़ा लाभ होगा. उस लेख से पाठकों को यह भी माजूम होगा कि अपने देश के हलाज के पुराने तरीक़ों की तरफ और पलोपैयी को झोड़कर, वूसरे तरीक़ों की तरफ राजकुमारी अमृतकीर और उनके हम-स्थाल शासकों का ठीक वही उस है जो ज्यांग काई शेक के शासन के दिनों में कोसिंगतांग शासकों का जीन के पुराने इलाज के वरीक़े की तरफ था. नई जीनी सरकार का उस इस मामले में विलक्कल वूसरा और कहीं अधिक समम्मदारी का है.

दिल्ली के चीनी दूताबास से भी एक अंग्रेजी सामाचार कुलेटिन निकलता है. उसके दो नम्बर सन् '55 के अंक में मशहूर न्यूज एजेन्सी Hsinhua News की तरफ से ऐनसेफेलाइटिस (Encephalitis) नाम की बीमारी के बारे में, जिसमें दिमारा के अन्दर सूजन आ जाती है और जिसका ठीक ठीक कारण या इलाज एलोपेथिक डाक्टरों को अभी नहीं सूमा, नीचे लिखी खबर इसी सरनामे के साथ अपी है:—

"पेनसेफ़ लाईटिस के इलाज में कामयावी"

"नीन के असिस्टेन्ट मिनिस्टर आफ पब्लिक हैस्थ श्री कोत्जू-हुआ ने 20 अक्तूबर के पेकिंग के सरकारी अखबार "पीपुल्स ढेली" में एक खास लेख में बयान किया है कि इस साल जुवाई और अगस्त के महीनों में एनसेकेलाइटिस के रोग के बीस रोगी देखे गए जिनमें नव्बे कीसदी चीन के पुराने इलाज के तरीक़े से अच्छे हो गए.

"डाक्टेरों का एक गिरोह था जिनमें नए हच्छमी ढंग के चीनी डाक्टर और पुराने ढंग के चीनी डाक्टर दोनों शामिल थे. उसके नेता थे, यही जन स्वास्थ्य के नायब बजीर श्री कोत्जू-हुआ। इन लोगों ने पिछले अगस्त के महीने में शिह्यिया चुआन के एक अस्पताल में जाकर ऐनसेके-लाइटिस के इलाज का अध्ययन किया.

"नायब बजीर ने कहा है कि हमने जिन बीस रोगियों को देखा उनकी उमरें छै महीने से लेकर इकसठ साल तक की थीं. इन बीस रोगियों में से केवल तीन मरे. इन तीन में से एक को कुछ दूसरी बीमारियाँ भी थीं. नायब बजीर ने यह भी कहा है कि पिछले साल इस अस्पताल में इसी तरह इकत्तीस रोगियों का इलाज किया गया था, जिनमें आधे से अधिक की हालत बहुत गम्भीर थी. इस इलाज से सी कीसदी यानी सब के सब अच्छे हो गए.

"कोत्जू-हुआ ने देखा कि पुरानी चीनी वैद्यक की किताबों में इस बीसारी (पेनसेफेलाइटिस) का जिक है, और शिह-बिया जुआन के अस्पताल में पुराने चीनी ढक्क से इस रोग का जो इलाज किया गया वह अठारहवीं सदी के एक चीनी इकीस यू शिह-यू की एक किताब के आधार पर था."

हम मानते हैं कि पिच्छम की ऐलोपैथिक हाक्टरी से भी हम बहुत कुछ कायदा उठा सकते हैं, हमें उठाना चाहिये भीर चीनी भी उस से पूरा पूरा कायदा उठा रहे हैं. नई भीर पुरानी हर चील से हमें जो लाभ मिल सकता हो लेना चाहिये. पर हमें वैद्यक और यूनानी जैसे अपने पुराने तरीक़ों और होमियोपैथी, नैचुरोपैथी जैसे दूसरे नए तरीक़ों को भी हर तरह का मौक्ता और बढ़ावा देना चहिये और उनसे पूरा लाभ उटाना चाहिये. भारत जैसे देशों की जनता के लिये यही कल्याया का माग है. इसके खिलाफ पश्चपात संकीर्यंद्या है, नासमकी है और देश की कराड़ों रारीच जनता के साथ और खुद विद्या के साथ अन्याय है.

5-11-'55

-- सुन्द्रलाब

समभ की खूबी

बोदे दिन हुए मध्यभारत के उत्तरी हिस्से में पुलिस बौर डाकुमों के एक गिरोह का मुकाबिला हुमा, उसमें दोवों तरफ़ के कई आव्मियों की जानें गई, जाने वालों में शक डाकू भी बताया जाता था जिसकी बहुत दिनों से तलाका की बौर जिसकी गिरफ्तारी या मौत के लिये हजारों इपयों की बाजी लगाई गई थी.

इस घटना के बाद मरने वाले की लाश का कोटो सर-कार की तरफ से अखबारों में भेजा और अपाया गया. उसके बदन पर रिस्सयां बंधी थीं, और भी निशान थे. बेहरा देखने में कोई ऐसा भयानक तो लगता नहीं था कि कई प्रदेशों की सरकारें उससे डरा करें या पुलिस वाले उसका पीछा करने से घवराया करें. लेकिन कोई ऐसी युन्दर बीज भी नहीं थी कि जिसकी अच्छी या मीठी छाप देखने बालों पर पड़ती. शायद मध्यभारत की सरकार ने अपने निजाम का इसे सबसे बड़ा कारनामा समका और उसका ज्यादा से ज्यादा प्रापेगेन्डा कराकर वाहवाही बूटने की कोशिश की. आजकल के वैज्ञानिक जमाने में, हुकूमतों या सरकारों का इस तरह एक व्यक्ति पर लट्ट हो जाना कोई ज्यादा बहादुरी नहीं मानी जायेगी. और न इसमें राजनीतिक दूरअंदेशी ही है.

लेकिन हमें ज्यादा ताज्जुब तो तब हुआ जब हमने सध्यभारत के पुलिस मिनिस्टर का एक बयान पढ़ा. इसमें धन्होंने कहा कि मैंने क्रसम खाई थी कि अगर एक साल के अंदर वह (मरने वाला) नहीं मारा जाता है तो मैं मिनिस्ट्री से इस्तीफा दे दूँगा. हमें पता नहीं कि धन्होंने अपना बह इरादा इस घटना के पहले जाहिर किया था या नहीं. अगर

گا جو علیے کہا گیا وہ اتبارہویں صدی کے ایک چینی حکیم ہو . شیع ، یو کی ایک کتاب کے آدھار پر تھا ۔''

هم ماقتے هیں که پچهم کی آیارپیتیک تا گری سے بھی هم بہت کچه نائدہ اتها سکتے هیں' همیں اتهانا چاهئے اور چینی بھی اِس سے پورا پورا فائدہ اتها رہے هیں ۔ نئی اور پرانی هر چین سے پورا پورا فائدہ اتها رہے هیں ۔ نئی اور پرانی هر ویدک چین سے میں جیسے اپنے پرانے طریقیں اور هرمهوپیتھی' نیچور پیٹھی جیسے دوسرے نئے طریقیں کو بھی هر طرح کا موقع اور پرهاوا دینا چاهئے اور اِن سے پیرا لابه اتهانا چاهئے ، بهارت جسیے دیھی کی جینا کے لئے بھی کلیان کا مارک ہے ، اس کے خلاف دیھی سنیکرنتا ہے' ناسمجھی ہے اور دیھی کی کروزوں غویب چنتا کے ساته اور خود ودیا کے ساته اُنہائے ہے۔

---سادرلال

5 .11 .55

سيجه کي خوبي

تھوڑے دیں ھوئے مدھیت بھارت کے آتری حصے میں پولس اور ڈاکروں کے آبک گروہ کا مقابلت ھوا ۔ اُس میں دونوں طرف کے کئی آدمیس کی جانیں کئیں' جانے والوں میں ایک ڈاکو بھی بتایا جاتا تھا جس کی بہت دنوں سے تلاش تبی اور جس کی گرفتاری یا موت کے لئے ھزاروں روپیوں کی بازی لگائی گئی تھی .

اِس گهتنا کے بعد صرفے والے کی اٹھی کا نوٹو سرکار کی طرف سے اخباروں میں بھیجا اور چھپایا گیا ، اُس کے بدن پر رسیاں بندھی تبیں' اور بھی نشان تھے ، چہرہ دیکھنے میں کوئی ایسا بھیانک تو لکتا نہیں تھا کہ کئی پردیشوں کی سرکاریں اُس سے ترا کریں یا پولس والے اُس کا پہنچھا کرنے سے گھرایا کریں، لیکن کوئی ایسی سندر چیز بھی نہھی تھی کہ جس کی اچھی یا میٹھی چھاپ دیکھنے والے پر پرتی ، شاید مدھیہ بھارت کی سرکار نے اپنے نظام کا اِسے سب سے بڑا کارنامہ سمجھا اور اُس کا زیادہ سے زیادہ پروپیکینڈا کراکر واہ واھی لوئنے کی کوشھی کی ، آجکل کے ویکیانک زمانے میں' حکومتیں یا کوشھی کی ، آجکل کے ویکیانک زمانے میں' حکومتیں یا سرکاروں کا اِس طرح ایک ویکتی پر لاتو ھو جانا کوئی زیادہ بہادری نہیں مانی جائیگی ، اور تہ اِس میں راجنیتک دور ۔

لیکن همیں زیادہ تعجب تو تب هوا جب هم نے مدهیہ بہارت کے پولس منستر کا ایک بیان پڑھا ۔ اِس مهں آنهوں نے کہا کد میں نے تسم کہائی تھی کہ اگر آیک سال کے اندر وہ (مرنے والا) نہیں مارا جاتا ہے تو میں منستری سے اِستعنی دے دونگا ۔ همیں پتد نہیں کہ آنهوں نے اِستعنی دے دونگا ۔ همیں پتد نہیں کہ آنهوں نے اِستعنی دے دونگا ۔ همیں پتد نہیں کہ آنہوں نے اُستعنی دے اِرادہ اِس گیتنا کے پہلے طاهر کیا تھا یا نہیں ۔ اگر

जाहिर किया था तो उन्हें बचाई की उम्मीद करनी चाहिये और वह हम भी दे देंगे. अगर नहीं जाहिर किया था तो वह बाहेंगे कि 'चंद सवारों' में उनका नाम भी दर्ज कर लिया जाये. तो येसा कर लेने में किसी का क्या घटा जाता है ? पर मिनिस्टर साहब अपनी क्रसम बता कर ही नहीं रह गये. उन्होंने (या शायद उनके किसी कोलीग ने) यह भी कहा कि आजादी के बाद मध्यमारत की यह सबसे बढ़ी घटना है. यही नहीं, मध्यमारत—विशेषकर म्वालियर, निंड, मोरेना और आसपास के लोग—अब यह सचमुच महसूस करेंगे कि उन्हें आजादी हासिल हुई!

हमें नहीं मालूम था कि मध्यभारत में--मिनिस्टर साहब की निगाह से-आजादी का चिराग्र अब रौरान हुआ, पर इस इसे सच माने लेते हैं. और यह भी सच माने जेते हैं कि यह मध्मारत की इन कई बरसों की सबसे बड़ी घटना है, पर हमारी समम में नहीं जाता कि मध्यभारत में जो 'विकास' नाम से अनेक योजनायें चल रही हैं, तो क्या वह केवल काराज पर हैं ? क्या इन योजनाओं का कोई बास्ता मध्यभारत के जीवन से नहीं है ? अगर एक-एक आदमी की जिल्ह्मी या मौत पर एक पूरे इलाक़े की भाजादी या रालामी मनहसिर थी तो इम जानना चाहेंगे कि उसके पीछे सारी ताक्रत क्यों नहीं लगा दी गई ? उस वक्त तक योन-नाओं का नाटक करने की कोई जरूरत भी नहीं थी. और न अब रंगभूम में जहरत रह जाती है जब वह आजादी हासिल हो गई जिसके लिये मध्यभारत के लोगों को - अगर मिनिस्टर खाइब की बातों पर इस विश्वास करें-बबी मानसा थी.

मिनिस्टर साहब ने यह भी फ़रमाया कि मरने बाले को जिन्दा पकड़ना तो इस बजह से मुश्किल था कि उसे अपने इलाफ़े के लोगों की इमदर्वी हासिल थी. कोई उसका राज बताता ही नहीं था. तो क्या इससे हम यह सममें कि उस इलाफ़े में सरकार से ज्यादा असर उस एक आदमी का था और उसने आम या रारीब जनता पर अपना जादू कर रखा था ? तब फिर हम यह कैसे मान लें कि उसके चले जाने के माने यह होगये कि मानो उस इलाफ़े के लोगों को आजादी हासिल हो गई. हमारी समम में नहीं आता कि मिनिस्टर साहब की समम की क्या तारीफ करें.

शायद जाने वाजे की मौत पर मिनिस्टर साहब खुशी से कूले न समाये और आपे से बाहर हो गये. ऐसे भीके पर तिल का ताब कर देना कोई नई बात नहीं है. लेकिन ज़ब एक मिनिस्टर की ही बात में वजन न होगा तो कौन उसका खिहाज करेगा और तब कैसे कोई हुकूमत टिकी रह सकती है. सरने बाला बला ही गया. हमें उससे कोई वाक़िक्यत क्यों सी. न हम यही जानते हैं कि उसका कहाँ. कैसा

ظاهر کیا تیا تو آنہیں بدھائی کی آمدد کرئی چاھئے اور وہ عم بھی دے دینئے ۔ اگر نہیں ظاهر کیا تیا تو وہ چاھئی دے دینئے ۔ اگر نہیں ظاهر کیا تیا تو وہ چاھیئے کہ ٹچند سواروں میں آن کا نام بھی درج کرلیا جائے ۔ سو آیسا کرلینے میں کسی کا کیا گیٹا جاتا ہے وہ مسئر صاحب آپنی قسم بتاکر ھی نہیں رہ گئے ۔ آنہوں نے (یا شاید آن کے کسی کو لیگ نے) یہ بھی کیا که آزادی کے بعد مدھیہ بھارت کی یہ سب سے بڑی گیٹنا ہے ، یہی نہیں مدھیہ بھارت سوشیش کو گوالیں بھنڈ مورینا آور آس نہیں کے لوگ ارب اب یہ سے میے محسوس کرینکے کہ آنہیں بیاس کے لوگ اب یہ سے میے محسوس کرینکے کہ آنہیں بیاس کے لوگ اب یہ سے میے محسوس کرینکے کہ آنہیں بیاس کے لوگ اب یہ سے میے محسوس کرینکے کہ آنہیں بیات کا آنہیں حاصل ہوئی ا

هيهن لهين معلوم تها كه مدهيه بهارت مين سمسلسلار صاحب کی نگاہ سے آزادی کا چرانے اب روشن ہوا . پر ہم اِسے سے مانے لیتے هیں ، اور یہ بھی سے مانے لیتے هیں که یه موهیه بھایت کی اِن کئی برسوں کی سب سے بڑی گیٹنا ہے . پر ھماری سمج میں نہیں آتا که مرهبه بهارت میں جو 'وکاس' نام سے المیک بوجنائیں چل رهی هیں' تو کیا وہ کیول کافل پر هیں 🖣 کھا این یوجناؤں کا کوئی واسطه مدهیة بهارت کے جنیوں سے فہوں ھے ؟ اگر ایک ایک آدمی کی زندگی یا موت پر پورے علانہ كى آزادى يا غلامى منحصر تهى تو هم جاننا چاهينام كه أس کے پیچے سازی طاقت کیوں نہیں لگا دی گئی ؟ اُس وقت تک پہچناؤں کا ناٹک کرنے کی کوئی ضرورت بھی شہیں تھی ہ اور نم آب رنگ بهوم میں ضرورت رہ جاتی ہے جب رہ آزادی حاصل هوکئی جس کے لئے مدهیم بهارت کے لوگوں کو۔۔اگر منسٹر صاحب کی باتوں پر هم وہواس کویں۔۔۔بری لالسا تھی ، منسٹر صاحب نے یہ بھی قومایا که مرنے والے کو زندی پکونا تو اِس وجہ سے مشکل تھا کہ اُسے اپنے علاقہ کے لوگوں کی مُمدردي حاصل تهي . كوئي أس كا راز بتاتا هي تههن تها . تو كيا اس سے مم يه معمجين كه أس علانه ميں سركار سه زيادة اثر أس ایک آدمی کا تها اور أس نے عام یا غریب جنتا پر اپنا جادو کر رکیا تھا ؟ تب یور هم یه کیسے سان لیں که اُس کے چلے جانے کے ممنے یہ ھوگئے که مائو اس علاقے کے لوگیں کو آزادی حاصل هرگئی . هماری سمجهمیں نہیں آتا که منستو صاحب کی سبح کی کیا تعریف کریں

شاید جانے رائے کی موت پر منسٹر صاحب خوشی سے پھولے نہ سمائے اور آپ سے باہر ہوگئے . آیسے موتع پر تل کا تار کردینا کرئی نئی بات نہیں ہے . لیکن جب ایک منسٹر کی ہی بات میں رزن نہ ہوگا تو کرن اُس کا لحاظ کریکا اور تب کیسے کوئی حکومت تکی رہ سکتی ہے . مرنے والا چلا ہی گیا . ہمیں اُس سے کوئی واقفیت نہیں والا چلا ہی گیا . ہمیں اُس سے کوئی واقفیت نہیں ۔ تھی کہ اُس کا کہاں کیسا

असर है. हम यह भी मान लेते हैं कि उसका चला जाना बहुत अच्छा हुआ. लेकिन इस चीज को एक तारीखी महत्व देना और उसको इतनी शोहरत देना किसी भी तरह से जायज नहीं.

पक बात और भी है. मसल मशहूर है कि कंजूस का बेटा चोर. तो आज जो हमारे देश में चोरियां, ढाके बढ़ रहे है, क्या इसके लिये हमारे यहां का आर्थिक और सामा-जिक ढाँचा जिम्मेदार नहीं है १ जब आये दिन पुरानी व्स्तकारियां मिटाई जायेंगी, कारीगर लोगों की रोटी मारी जायेगी—तब चोरियां और इकैतियां नहीं बढेंगी तब और क्या होगा ? जब हमारे यहां ऊपर की और नीचे की तन-खाहों में. ऊपर की और नीचे की आमद्नियों में सेकड़ों भीर हजारों का कर्क होगा, जब समाज में धनी का धन बढ़ेगा और दुली का दु:ल-तो सरकार और प्रजा में तनाजा बढ़ेगा ही और आदमी वह काम करने पर मजबूर होगा जिन्हें वह ग़लत और नामुनासिव सममता है, अगर षारा बारीक निगाह से देखें तो क्या हमारे सेठ-व्यापारी. मिनिस्टर, जज, बकील और प्रोफेसर दिन के बाकू या लुटेरे नहीं ठहराये जावेंगे. यह तो इत्तफाक की बात है कि दिन-पहाड़े की चोरी-डकैती को सभ्यता, शराकत और प्रजातंत्र का नाम दे दिया गया है. इन बहादुरों को इल्जत की निगाह से देखा जाता है और जो बेचारे मजबूरी से रात में अपनी गुजर खोजते फिरते हैं उन्हें समाज में बुरी निगाह से देखा जाता है. यह कौन कह सकता है कि दिन वाले अच्छे हैं भीर रात वाले बरे १

हमें यहां रामकृष्ण परमहंस की कही एक कथा याद मा रही है, एक बार वह सुनाते थे कि किसी बड़े मन्दिर के पास ही एक वैश्या रहती थी. मन्दिर के पुजारी बढ़े भगत माने जाते थे. दिन रात पूजा-पाट में लगे रहते श्रीर कीर्तन कराते थे. उनके झान, उनके गले और उनके घरम-नेम की तारीफ भी बहुत थी. वैश्या विचारी का कहना ही क्या, वैश्या ठहरी. किसी तरह दिन काटती थी. होनहार की बात कि बढ़ पुजारी जी और इस वैश्या की मौत एक ही घड़ी में हुई तो दोनों को लिवाने यमराज के दूत पहुँचे. पंडित ने उनसे पुद्धा-"मुक्ते कहां जाना है ? जवाब दिया गया-"नरफ जाना है." पंडित जी गुस्से में आकर बोले—"क्या कहा, नरक जाना है! श्रीर उस चुड़ैल (वैश्या) को कहां ले आधोगे ? "द्तों ने कहा-"स्वर्ग में." अब तो पंडित जी का पारा और भी चढ़ गया और बोले-"यह अंधेर नहीं चल सकता. मैं जाऊँ नर्क में श्रीर वह वैश्या की जात जये स्वर्ग में ! जरूर तुम्हारे काराजों में कुछ इन्दराज रालत हो गये हैं, जरूर कहीं धोखा हुआ है. जाओ, ठीक से तहकी-कात करके बाबो किसे कहां ले जाना है."

الر هے ، هم يه بھى مان ليتے هيں كه أس كا چلا جاتا بہت اچا هوا ، ليكن أس چيز كو ايك تاريخى مهتو _ دينا اور أس كو اِتلى شہرت دينا كسى بھى طرح سے جَابِر نہيں ،

أيك بات أبر بهي هـ مثل مشهر هـ كه كنجرس كا بيتا چور. تو آبے جو همارے ديش ميں چورياں' داکے بڑھ رہے هيں' کیا اِس کے لئے همارے یہاں کا آرتیک اور ساماجک تھانچہ ذمعدار لهين في الله جب أله دن يراني دستكاريان مثائي جائینگی' کاریکو لوگوں کی روٹی ماری جائیکی۔۔تب چوریاں اور تايتيان نهين بوهيلكي تو أور كيا هولا ؟ بجب همارت يهان اربر کی اور نبیجے کی تخواہوں میں اوپر کی اور نبیجے کی آمدنیس میں سیکوں اور هزاروں کا فرق رهیکا جب سماج میں دھنے کا دھن ہوھیکا اور دکھے کا دکھستو سرکار اور پرجا میں تنازع برهیکا هی اور آدمی وه وه کام کرنے پر محبور هوگا جنهين ولا غلط أور قامناسب سنجهتا هي أكر ذرأ باريك نكاء سے ديمهين تو كيا هاره سيته وباياري منستر جبع وكيل أور یرونیسر دیں کے ڈاکو یا لٹیرے نہیں تھیرائے جائینگے ، یہ تو إنفاق كي بات هے كه دين دھارے كى چورى ذكيتى كو ساھئيتا؛ شرافت أور يرجاتنتر كا نام دے ديا گيا هے . ان بهادروں كو عزت کی نگاہ سے دیکھا جاتا ہے اور جو بیجارے مجبوری سے رات میں اینی گذر کهرجتے پهرتے هیں آنهیں ساج میں بری نکاه سے دیکھا جاتا هے ، يه كوں كم سكتا هے كه دين والے اچهے هيں اور رات

ھیں۔ یہاں رام کرشن پرم ہنس۔ کی کہی ایک کتھا یاد آ رهی هے آیک بار وہ سالتے تھے که کسی بڑے مندر کے پاس هی ایک ویشیا رهتی تهی . مندر کے پنجاری برے بھات مانے جاتے تھے ، دن رأت يوجا يات ميں لكم رهتم أور كيرتن حواتے تھے . أن كے كيان أن كے كلے اور ان كے دهرم نهم كى تعريف بھى بهت تهی . ویشیا بحچاری کا کهنا هی کیا اورشیا تههری . کسی طرے دیں کاٹٹی تھی ، ھونہار کی بات که برے پنجاری جی اور اس ويهيا كي موت ايك هي گهڙي مين هوئي تو دونون كو لوائد یم راج کے دوت پہرنچے۔ پندت نے اُن سے پرچھا۔"مجھ کہاں جانا في إ" جواب ديا كيا-"نرك جانا هي " يندت جي فصے میں آکر بولے۔ "لیا کہا اورک جاتا ہے! اور اُس چویل (ویشیا) کو کہاں لہ جاؤگہ ؟ " دوتوں نے کہا۔ "سورگ ميں ." اب تو پنڌت جي کا پاره اور يعي چڙھ کيا اور بولي-اله الرهير نهيل چل سكتا ، ميل جاؤل نوك ميل اور وا ویشها کی ذات جائے سررگ میں ! ضرور تمہارے کاغذوں میں كيه الدراج غلط هوكله هيل. فرور كهيل دهوكا هوا هـ. جاءِ ٹییک سے تحقیقات کرکے آو که کسے کہاں لیجانا ھے ."

पंडिस जी के हुक्म पर दूत यमराज के पास लौटे और सब हाल कह सुनाया. यमराज ने धन्हें समन्ता दिया कि पहले बाला फैसला ही सही है. दूतों ने फरमान पंडित जी को सुना दिया. पंडित जी के कार्टी तो खून नहीं. लेकिन पंडित जी जो ठहरे. फिर खिद की और बोले कि, "मेरी समफ में नहीं जाता तुम लोगों की इरकत क्या है. आखिर कोई बजह भी है जो मेरे साथ यह अन्याय हो रहा है. दुनिया में मेरी इज्जल है, मेरी दार्थी किस शान के साथ उठेगी. नगर का कोई बढ़ा आदमी ऐसा नहीं है जो उसमें शरीक न हो. मेरा तो यह हाल. लेकिन उस चुड़ैल को वहाँ ले जाओंगे और यहाँ उसे कोई पूछता तक नहीं. उस की लाश को उठाने वाला भी कोई नहीं. कुत्ते और कींबे सायेंगे." यह सुन कर दूतों में जो सब से बुजुर्ग थे चन्हों ने कहा, "पंडितजी ! आप सही कह रहे हैं. द्विनया बाले आपकी बहुत भक्ति व इफ्जत करते हैं और उस बेचारी को निची निगाह से देखते हैं. लेकिन इन दुनिया बालों को किसी के दिल के अन्दर का हाल क्या माजुम ? वह तो बाहर का रूप-रंग देखते हैं और उसी के अलावे में रहते हैं. पर मैं आप से पूछता हूँ. आप अपना दिल टटोल कर देखिये. आप ही कहिये कि किया आप उस वैश्या के जीवन पर ईर्ष्या की निगाह से नहीं देखते थे १ उसे देख कर आप के हृद्य में वासना की लपट नहीं उठती थी ? आप यही चाहते रहे कि कहाँ पूजा-आरती के जंजाल में पढ़ गया, ठाठ से उस बैश्या की तरह जीवन विताता और आनन्द करता. लेकिन वह दुखिया पाप तो करती थी मगर मजबूरी से. समाज में उसके लिये दूसरा चारा नहीं. घर वाले उसे लेते नहीं थे. वह करती तो क्या करती ? मगर उसकी नेकी देखिये कि उसे हमेशा आपके जीवन से ईर्म्या होती थी. वह मन ही मन यही कहा करती कि कब मुक्ते इस पाप से छुट्टी मिले और आप (पंडितजी) की तरह भक्ति और पूजा की जिन्दगी विताये. दुख में भी वह भगवान की याद किया करती पर आपको इतना समय कहाँ कि किसी को याद करें." पंडितनी के पास कोई जवाब नहीं रहा और चुप हो गये.

जैसा हमने कपर कहा हम मध्यभारत सरकार को उसके कारनामे पर बधाई देते हैं. मगर अससे इतना प्रकर अर्थ करेंगे कि वह अपना बैलेंस न खोये, चीजों का उनके सही व असली रंग में देखकर ही लोगों के आगे रक्खा करे. और मध्यभारत के अन्दर जो आर्थिक असमानता और रारीबी है उसे बुनियाद से दूर करने की कोरिशा करे.

- सुरेश राममाई

پلتس جی کے عام پر دوت یم راج کے باس لوٹ اور سب حال که، سایا . یم رأم نے أنهیں سنجها دیا که پہلے وألا نیصله هی محیم هے. درنوں نے نومان پنتسجی کو سلا دیا۔ پنتسجی کے کاثو تو خون نہیں . لیکن پنتس جی جو نہرے، بعر فدكى أور بوله كه "مهرى سنج مين نهين أنا كه تم لوكين كى حركت كيا هـ ، أخر كوئى وجهه بهى هـ جو مير ساته يه انیائے هر رها هے . دنیا میں میری عزت هے . میری ارتهی کس شان کے ساتھ اُٹھیکی ، نکر کا کوئی بڑا آدمی ایسا نہیں ہے جو أسى ميں شريك نه هو. ميرا تو يه حال ، ليكن أس چويل كو وهاں لیجاؤ گے اور یاں اُسے کوئی پوچھٹا تک نہیں ۔ اُس کی لاص کو اُٹھانے والا بھی کوئی نہیں . کتے اور کوئے کھاٹیس کے " یع سندر دوتوں میں جو سب میں ہزرگ تھے اُنھوں نے کہا' ''یندسجی اِ آپ صحیح کہ، رقے میں . دنیا والہ آپ کی بہت بھکٹی و عزت کرتے هیں اور اُس بینچاری کو نینچی نگاہ سے دیمیتے ھیں۔ ایکن اِن دنیا وااس کو کسی کے دل کے اندر كا حال كيا معاوم ؟ وه تو باهر كا روب رنگ ديكيتم هيس أور أسى کے بھلوم میں رہتم ہیں ، پر میں آپ سے پرچھتا ہوں ، آپ ابنا دل تُترل کو دیکھا، آپ می کھا کہ کیا آپ اُس ویشیا کے جهرن پر ایرشیا کی نگاہ سے نہوں دیاہتے تھے ؟ اُسے دیکھ کر آپ کے هردئے میں واسنا کی لیث نہیں اُٹھتی تھی ؟ آپ یہی چاھتے رہے که کہاں پرجا آرتی کے جنجال میں ہے گیا ، ٹھاٹھ سے اُس ریشا کی طرح جیرن بتا تا اور آئند کرتا ، لیکن وہ دکھیا یاپ تو کرائی تھی مگر مجبوری سے ، سماج میں اُس کے لئے دوسرا چارہ نہیں ، گھر والے اُسے اُمِنّے نہیں تھے، وہ کرتی تو کیا کرتی ؟ مكر أس كى نيكى ديكيئے كه أسم ھمیشہ آپ کے جیرن سے ایرشیا ھونی تھی ، وہ من ھی من یہی کہا کرتی که کب مجھے اِس پاپ سے چہتی ملے اور آپ (پادت جی) کی طرح بهکٹی اور پوجا کی زندگی بتائے ، دکھ میں بھی وہ بھاواں کی یاد کرتی پر آپ کو اُتنا سمام کہاں که کسی کو باد کریں ." پنتسجی کے پاس کوئی جواب رها نمهیں اور چپ هو گئے.

جیسا می نے آویو کہا هم مدهیہ بھارت سرکار کو اُس کے کارتاجے پر بدھائی دیتے هیں مکر اُس سے اِننا ضرور عرض کرینگے کہ وہ اپنا بیلینس نہ کھڑے' چیزوں کے اُن کے صحیح و اُصلی رنگ میں دیکھ کر هی لوگوں کے آگے رکھا کرے ، اور مدهیه بھارت کے اندر جو آرتھک اسمانتا اور غریبی هے اُسے بنیاد سے دور کرنے کی کیشش کرے ،

سسويص رام بهائي

کاؤں کی چاہ

हाल ही में हमारे राष्ट्रपित हैदराबाद गये थे. वहाँ पर, कहीं नजदीक में, वह कस्त्रवा स्मारक निधि से देहात में चलने वाले एक केन्द्र को भी देखने गये. वहनों के काम की तारीफ करते हुए उन्होंने कहा कि मैं रहता तो ज़कर शहर में हूँ लेकिन मेरा दिल यह चहता है कि आपकी ही तरह देहात में जाकर रहूँ. राष्ट्रपित के दिल और दिमारा की यह टकर बहुत पुरानी है. चादिल सम्मेलन के मौक्ने पर भी (मार्च 1953) उन्होंने उसे जाहिर किया था. उस टकर के लगातार कायम रहते हुए राष्ट्रपित इनना ज्यादा काम संभाल लेते हैं. दिल और दिमारा को इस तरह अलग अलग रख सकना किसी मामूली आदमी के बस की तो बात हो भी नहीं सकती.

पर ताज्जुब की बात यह है कि एक तरफ जहाँ राष्ट्र-पित ने बहनों को अपने काम में लगे रहने की नेक सलाह दी, वहाँ दूसरी तरफ हैदराबाद को अपनी उप-राजधानी बनाया. हैदराबाद शहर के नजदीक जो अप्रेजी रेजीडेन्ट का महल था, उसे केन्द्रीय सरकार की तरफ से लेकर उसे अपने हैदराबाद ठहरने का स्थान बनाया और नाम दिया राष्ट्रपित नीलयम. इसका मतलब वह हुआ कि अप्रेजी सरकार के जहाँ दो ठिकाने थे—नई दिखी, और शिमला, बहाँ मारत सरकार के तीन होंगे—नई दिखी, शिमला और हैदराबाद. जाहिर बात है कि इससे हुकूमत का खर्च और भी बढ़ जायेगा और जनता को नया बोम उठाना पड़ेगा. गाँव की चाह रखने वाले राष्ट्रपित से उस्मीद तो यह थी कि अप्रेजी सरकार के दो अड्डों में से एक को खत्म करके देश का भार हलका करते, लेकिन हो उस्टा ही रहा है.

इसी सिलसिले में हमें इत्तर प्रदेश की एक खबर का ध्यान हो आया. पता नहीं वह सच है या गल्त. अगर सच है तो बड़ी दुखदायी है. अंग्रेजी राजकाल में यहाँ की जनता क्या, उसके नेता क्या—सभी अंग्रेजी सरकार को लानत भेजत थे कि वह नैनीताल में गर्मा यों में दफ्तर ले जाकर नाहक खर्च बढ़ाती और हाकिम-महकूम के बीच दीवार खड़ी करती है. हमारी कांग्रेस सरकार मानो उस दर्द को मूल गई और नैनीताल की गही को बदस्त्र बनाये रखा. शायद इसकी एक बजह यह भी रही हो कि यहाँ के पिछले मुख्य मंत्री नैनीताल जिले के रहने वाले थे. लेकिन अब पता चला है कि आगामी गर्मियों में उत्तर प्रदेश के नये मुख्य मंत्री अगले साल गर्मियों में पंद्रह दिन या कुछ समय के लिये दफ्तर सहित मस्री रहेगें ओर इस स्नी कही जाने वाली बस्ती

محال هی میں همارے راشتریتی حیدرآباد گئے تھے، وهاں پر کہیں نودیک میں وہ کستررہا اِسارک ندهی سے دیہات میں چانے والے آیک کیندر کو یعی دیکھنے گئے، بہنوں کے کام کی تعریف کوتے هوئے آنھوں نے کہا کہ میں رهتا تو ضرور شہر میں هوں لیکن میرا دل یہ چاهتا ہے کی آپ هی کی طرح دیہات میںجا کر رهوں، راهتریتی کے دل اور دماغ کی یہ تعر بہت پرانی ہے ، چادل سمیلن کے موقع پور بھی (مارچ 1953) آنھوں نے آسے ظاهر کیا گیا ، اُس تحر کے اگانار قائم رهیتے هوئے راشتریتی اِتنا زیادہ کام سنبھال لیتے هیں، دل اور دماغ کو اِس طرح الگ الگ رئو سکنا کسی معمولی آدمی کے بس کی تو بات هو یهی نہیں سکتی ،

پر تعجب کی بات یہ ہے کہ ایک طرف جہاں راشقربتی نے مہنوں کو اپنے کام میں لگے رہنے کی نیک صلح دی وہاں دوسری طرف حیدرآباد کو اپنی آپ راجدہانی بنا یا ۔ حیدرآباد شہر کے فزدیک جو انگریزی ریذیدنٹ کا محل تھا اُسے کیندریہ سرکار کی طرف سے لیکر اُسے اپنے حیدرآباد تہرنے کا استهاں بنایا اور نام دیا راشقربتی نیلیم ۔ اِس کا مطلب یہ ہوا کہ انگریزی سرکار کے جہاں دو تَبکانے تھے۔نئی دلی اور شمله وہاں بهارت سرکار کے تین ہونگے۔نئی دلی اور شمله اور جیدرآباد ، ظاہر بات ہے کہ اِس سے حکومت کا خرج اور بھی بڑھ جائیگا اور جنتا کو نیا بہجھ اُتھانا پڑیگا ، اور بھی سرکار کے دو اُتوں میں سے ایک کو خام کرکے دیش کا بہار ہلکا سرکار کے دو اُتوں میں سے ایک کو خام کرکے دیش کا بہار ہلکا گرتے کو لیکن ہو اُلڈا ہی رہا ہے ۔

اِس سلسلے میں همیں آتر پردیش کی ایک خبر کا دهیاں هو آیا، پکھ نہیں وہ سے هے یا غلط اگر سے هے تو بڑی دکودائی هے انگویزی راہ کال میں یہاں کی جنتا کیا' اُس کے نیتا کیاسسنبھی انگریزی سرکار کو لعنت بہتیتے تھے که وہ نینی تال میں گرمیوں میں دنتر لیجا کر ناحق خرچ بڑھاتی اور حاکم محکوم کے بیچے دبوار کھڑی کرتی هے ، هماری کانگریس سرکار مائو اُس درد کو بھول گئی اور ،نینی تال کی گدی کر بدستور بنائے اُس درد کو بھول گئی اور ،نینی تال کی گدی کر بدستور بنائے مکیم منتری ایک وجہتے یہ بھی رهی هو که یہاں کے پیچھلے مکیم منتری آئے سنتی اب پت چھ که آگئی گرمیوں میں آتر پردیش کے نئے سکیم منتری آئلے سال گرمیوں میں پدرہ دی یا کچھ سنٹی کے لئے دفتر سہت مصوری رهیئے اور اِس سوئی کی جانے رالی بستی مصوری رهیئے اور اِس سوئی کی جانے رالی بستی

को इस-मरा बनावेंगे. इसके पीछे कई कारण ही सकते हैं— बा तो क्यफिलत या सार्वजनिक. व्यक्तिय वह कि कर्ने वहाकों से बिरोष प्रेम है और इसकिए वन्हें मस्री निवास फरूरी हो. सार्वजनिक यह कि मस्री जिला देहरावून में पढ़ता है जिसकी वपेक्षा की सच्ची-मूठी रिकावत परिचम वचर प्रदेश वाले करते हैं और जलग प्रदेश की मांग करते हैं. इसलिए नकी इस शिकायत की दूर करने के लिये ओर उत्तर प्रदेश की तकसीम शेकने के ज़िये मस्री भी मुख्य मंत्री को रहना चाहिये। हम नहीं जानते असलियत क्या है ? लेकिम हम इतना जरूर कह सकते हैं कि मुख्य मंत्री का मस्री को वप-राजधानी बनाना सकेंद्र हाथी को राय देना है और जनता के जले धाव पर नमक छिड़कना है.

इस रोशनी में जब हम प्रधान मंत्री की इह नसीहत को देखते हैं—कि महलों में रहने का ज्याल छोड़कर सरकारी कर्मचारियों को जनता से घुल-मिल जाना बाहिये—तो ऐसा लगता है कि यह नसीहत अमल के लिये नहीं है. बल्कि यह एक महज ज्याल है जिसे बढ़िया काराज पर लिखकर सुन्दर सुनहले बोर्डर से सजा कर आने बाजी पीढ़ियों को दिखाने की खातिर संभाल कर रखा जाये, जिस सरकार के हुक्कामों को गाँव की चाह होगी और देहातियों का दर्जा उठाना मंजूर होगा वह कभी ऐसा नहीं कर सकती.

—सुरेश रामभाई

کو ہوا بھرا بالفیکے ۔ اِس کے پھیچے کئی کارن ہو سکتے
ھیں۔۔۔۔۔۔۔۔۔ تو ویکٹی گت یا ساروجنک ، ویکٹی گت یہ کہ آنھیں
پہاڑوں سے رشیش پریم ہے اور اِس اٹے انہیں مصوبی
نواس ضروری ہو ، ساروجنک یہ کہ مصوبی ضلع دھرادوں
میں پرتا ہے جس کی آبھکا کی سچی جھوٹھی شکایت
پشچم آتر پردیش والے کرتے ھیں اور الگ پردیش کی
مانک کرتے ھیں ، اِس لئے اُن کی اِس شکایت کو دور کرنے کے
نئے اور اُتر پردیش کی تقسیم روکنے کے لئے مصوبی بھی مکھیہ
منتری کو رہنا چاھیئے ! ہم نہیں جانتے اصلیت کیا ہے ? لیکن
مم آتنا ضرور کہ سکتے ھیں کہ مکھیہ منتری کا مصوری کو آپ -
ماہری بنانا سنید ہاتھی کو رائے دینا ہے اُور جنتا کے جلے
واجرہائی بنانا سنید ہاتھی کو رائے دینا ہے اُور جنتا کے جلے
واجرہائی بنانا سنید ہاتھی کو رائے دینا ہے اُور جنتا کے جلے
واجرہائی بنانا سنید ہاتھی کو رائے دینا ہے اُور جنتا کے جلے
واجرہائی بنانا سنید ہاتھی کو رائے دینا ہے اُور جنتا کے جلے
واجرہائی بنانا سنید ہاتھی کو رائے دینا ہے اُور جنتا کے جلے
واب نہک، چھوکنا ہے .

اِس روشلی میں جب م پردھان مئتری کی اِس تصحیت کو دیکھے ھیں۔۔ که محلوں میں رہنے کا خیال چھرز کر سرکاری کرمجازیوں کو جنتا سے کیل مل جاتا چاھیئے۔۔۔ تو ایسا لکتا ہے کہ ید تصیحت عمل کے لئے تہیں ہے ، یلکہ یہ ایک محض خیال ہے جسے بڑھیا گافڈ پر لکھ کر⁴ سادر ساملے بورڈر سے سجا کو آئے والی پیوھیوں کو دکھانے کی خاطر سابھالکر رکھا جائے ، جس سرکو کے جامل سابھالکر رکھا جائے ، جس سرکو کے جامل سابھالکر رکھا جائے ، جس سرکو کے جامل سابھالکر رکھا جائے ، جس سرکو کے حکمی کو توجہ کی جامل سابھالکر رکھا جائے ، جس سرکو کے جامل سابھالکر رکھا جائے ، جس سرکو کے بیانی کی جامل کی جامل کی بیانیوں کا درجہ آئیاتا منظور ہوتا وہ کبھی ایسا قبیل کر سکتی ،

سسريش رأم بهائي

इसारे यहां निवने वाबी कुछ चौर कितावें سارے بہاں ملنے والی کچھ اور کتابیں							
नोदः—यह कितावें सिर्फ हिन्दी में हैं							
· , · .	्रमाङ्गः चर् ।कः नाम किताय	ले सक		वाम)	المالية	نام کتاب
	शेर-बो-ग्रायरी	भी अयोध्या प्रसाद गोयलीय	8	0			1. شعر و شاعري
2	शेर-धो-पुखन		8	0	0	Ť	
	गहरे पानी पैठ	"	2	8	0	"	3. کېږے پائی پیٽو
	हमारे बाराध्य	" श्री बनारसीदास	3	0	0	دو هری بغارسی داس	4. هماری آرادهیه
-34	Guic alci-a	चतुर्वेदी				عربی بدرسی دس	(Comp. 12
5.	संस्मरण	.8-11.	3	0	0	U-1)/	5° سلسدرن
	दो इजार वर्ष पुरानी कहानियां	श्री जगदीशयन्त्र जैन	3	0	Ó	غري جگذيش جلدر حدر	8. دو هواُر ورض پرانی کهانها <i>ن</i>
	मान गंगा	भी नारायण साद जैन	6	0	0	شري نارائن پرساد جين	7. کیان کلکا
-	पथ चिन्ह	भी शान्ति प्रिय दिवेदी	2	0	0	هری شانعی پریهدریدی	8. يته جنه
	वंश प्रदीप	शान्ति एम. ए.	2	0	0	شانعی ایم . آیے	9. پنج پردیپ
10.	बाकाश के तारे घरती के फूब	श्री कन्हैयातात मिश्र प्रमाकर	2	0	0	هری کلهیالل مهر پربهاکر	10. آگھی کے تاریے دھرتی کے پھول
	मुक्ति दूत	भी बीरेन्द्र कुमार जैन एम. ए.		0	0	شری ویریندر کمآر جین ایم . اے	11. مکتی درت
12.	मिलन यामिनी	श्री बच्चन	4	0	0	شری بحون	12. ملن ياملى
13.	रजत ररिम	डाक्टर रामकुमार वर्मा	2	8	0	ةاكلر رام كمار ورسا	.13 رجت رشی
14.	मेरे बापू	भी तन्मय बुद्धारिया	\$	8	0	عرى تلب بطاريا	14. مهرے باہو
.,	विरव संघ की और	पंडित सुन्दरकाल भगवानवास केला	3	0	Ō	پندت حندرلال بهکران داس کها	<u>15</u> , وهو سنگه کی اور
16.	मारतीय वर्षशास	भी भगवानदास केला		0	0	شری بهکوان داس کیلاء	16. بهارته، ارته شاستر
17.	मारतीय शासन	7)	3	0	0		17. بهارتیه شاسی
18.	नागरिक शास्त्र	`b	2	4	0	"	18. ناگرک هاستر
	साम्राज्य चौर चनका पतन्	n	-2	8	0	1)	19. سامواج اور أن كا يعين
20.	भारतीय स्वाधीनता अन्दोत्तन	***		4		,1	20. بهارتیه سرادهیفتا آندولن
21.	सर्वीवय अर्थ ज्यवस्था	"	1	8	O	A	.21 مروودے ارتب ویوستها
22 .	इमारी आदिम जातियां	चौर भी चालल विनय	3		0	رہ شری بھکوان دا <i>س</i> ک یڈ اور ھری اکبل رنے	22. هماری آدم جاتیاں
23.	वर्षशास्त्र शब्दावती	भी दया शंकर दुवे,	2	0	0		23. ارته شاستار شهداولی
•		एम. ए. एक एक बी.				ايم . ايم . ايل ايل . يي .	G / / 47 100
	श्रा गणाघर त्रसाव, जान्युष्ट, (जन्मका श्रीका क्रांक्ट						
		भी भगवानदास केला			2	بهکوان داس کیلا	
	नागरिक शिका	श्री भगवानदास केला भी दवाशंकर दुवे	1	8	0,	هری پهکوان داس کها دیا هنکر دریے	24. نافرک هکما
25.	रार्ट्र मंडल शासन	भी र्याशंकर दुवे		8	-	دیا هلکر دوی	25. راغتر مندل غاسی
26.	जवानी	महात्मा मगवानदीन	-	-	0	مهاتما بهکوان دین	.26 جوانو
27.	मारने की हिम्मत !	33	1	_	0	•	27ے مارنے کی هست ا
	सबोना सप		0	-	0	"	.28 ماولا سے
	मेरे साथी	33	1	0	0	19	29 مدر سالمر
भवन का पर्वा—							
						مهنهجر الها هندا	61.45
المالي كذي الداباد على كذي الداباد على المالية							

•

सांस्कृतिक साहित्य

سانسكوتك ساهتيه

हजरत मोहम्मद और इसलाम

लेखक-पिडित सुन्दरलाल, मूल्य-तीन रुपया इसलाम के पैग्रवर के सम्बन्ध में भारतीय भाषाओं में इस से सन्दर कोई दूसरी पुस्तक नहीं

हजरत ईसा ऋौर ईसाई धर्म

लेखक-पन्डित सुन्दरलाल, मूल्य-डेढ़ रुपया महात्मा जरथुस्त्र ऋौर ईरानी संस्कृति

लेखक-विश्वमभरनाथ पांडे, कीमत-दो रूपया यहृदी धर्म श्रोर सामी संस्कृति

लेखक-विश्वम्भरनाथ पांडे, क़ीमत – दो रूपया

प्राचीन मिस्र की सभ्यता और संस्कृति

लेखक-विश्वमभरनाथ पांडे. क्रीमत-दो रुपया

मिर बाबुल और असुरिया की प्राचीन संस्कृति

लेखक-विश्वम्भरनाथ पांडे, क्रीमत-दो रुपया

प्राचीन यूनानी सभ्यता ऋार संस्कृति

लेखक-विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत-दो रुपया

गंगा से गोमती तक

(प्रगतिशील कहानी संप्रह)

क्रीमत-दो रूपया लेखक-श्री मुजीब रिजवी,

त्राग ऋोर ऋाँस्

(भावपूर्न सामाजिक कहानियाँ)

नेखक—डाक्टर श्रख्तर हुसेन रायपुरी, कीमत—डेढ़ रूपया

.कुरान ऋोर धार्मिक मतभेद

तेखक-मौलाना श्रबुलकलाम श्राजाद, क्रीमत-डेढ़ रूपया

भंकार

(प्रगतिशील कवितात्रों का संप्रह)

लेखक—रघुपति सहाय फिराक, क्रीमत—तीन रुपया

मिलने का पता ملنے کا یکھ

ليه كـ _ يندت سندر الل

حضرت محمد أور إسلام

اسلام کے پینمور کے سمبندھ میں بھارتیہ بھاشاؤں میں اِس سے سندر کوئی دوسری پستک نهین

حضرت عيسي اور عبسائي دهرم ليك ديده ربيه

مهاقها زر تهستر اور ایرانی سنسکرتی ليكهك - وشومهر فاته واقدَّ فيمتدو، رويعه

یهودی دهوم آور ساسی سنسکوتی

پراچین ، صر کی سبهیتا اور سنسکرتی ایکهک رویه

سبير ابابل اور اسوريا عي پراچين سنسكرتي ليكهك رشومبهر ناته ياندے فيمت دو رويبه

براچین برنانی سبعیتا اور سنسکرتی لیکھک - وشومبھر فاتھ دائدے ' قیمت - در رویبہ

گنگا سے گومتی تک

(پرگتی شیل کهانی سدوه) لیکهک - شری منجیب رضوی

أگ اور انسو

(بهاؤپورن سمآجک کهانیان)

لیکھک - قائم اختر حسین رائے بوری عیست - قیرتھ روپیم

قرأن اور دهارمک معابهید لیکهک-موانا ابوظم آزاد نیست-تیزه زویده

جهنگار (پرگتیشیل کویتاؤں کا سنکوہ)

لیکھک سرگہوپتی سائے فراق " قیدست سین رویه

बंदन्तानी कलचर रोह्स्एएस् उगिल्लामा अध्या

145 मुट्टीगंज, इलाहाबाद المآباد 145

بالسااب السنااي السنااي الساراي

हिन्दी घर

कलचर पर हर तरह की कितावें मिलने का एक बड़ी केन्द्र—पाठक हिन्दीं, उदू, श्रंग्रेजीं की अपनी मन-पसन्द कितावों के लिये हमें लिखें।

हमारी नई कितावें

महत्मा गान्धी की वसीयत

(हिन्दी और उट्टू में) लेखक- गान्धीबाद के माने जाने विद्वान : श्री मंत्रर श्रालं, मारना सके 225, क्रीमन दो करवा

गान्धी वावा

(बच्चों के लिये बहुत दिलच्चम किताय) लेखिका—बद्धिया औदी भूभिका—पी-इन अवाहरलान नेटम्य मोटा काराच, मोटा टाइप, बदुत-सी रंगीन नस्वीरें दोम दो रुपया

चंडित सुन्दरभाग भी की निर्म्या किताब

्र गोता श्रीर ऋुरान

275 सर्वे. दाम डाई रूपया

ंहिन्दू मुसलिम **एक**ना

1(0) सफे. दाम बाग्ड यान

महात्मा गान्धी के वलिदान से सबक

क्रीमन बारह् आन

पंजाब हमें क्या सिम्बाता है

🗻 क्रीयन चार आन

वंगाल और उससे सबक्र

क़ीमन दो आन

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी

145 मुट्टोगंज इलाहाबाद

هندي گهر

تاریخ پر ہر طرح کی کتابیں ملنے ایک بڑا کیندر۔۔پاٹھک ھندی کردو انگریزی کی میں پسند کتابوں کے گئے ہوں لکھیں .

هماری نئی کتابیر

مهانها گاندهی کی وصبت

كندهي بابا

(بنچاں کے اللہ بہت دانچسپ دانی) لیمیکاسٹنسید رانجے

يهوه كالسيفارت جوالله الال أفوره

مونا كادن مُونا تابي مرت سي رفكيني صوريق دام دو رويه

پندت سدرالل جي عي اعني فتايس

گيتا اور قران

17.5 ance 15 : 23mo 97.5

هندو مسام ايكتا

1(1) مسحد دام بارد آنے

مہاتما کاندھی کے بلیدان سے سبق

بنجاب همیں کیا سکھانا شے

بنگال اور اس سے سبق

هندستاني كليجر سوسائتي

145 منهى كنب الداباد

